बाल-शब्दसागर

अ

अ–संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का पहला अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है, *व्यंजनों का उच्चारण इस* अक्षर की सहायता के बिना अलग नहीं हो सकता।

अंक–संज्ञा पुं० [वि० अंक्य] १. चिह्न। निशान। २. लेख। अक्षर। लिखावट। ३. संख्या का चिह्न; जैसे—१, २, ३। ४. भाग्य। ५. डिठौना। दाग़। धब्बा। ६. नौ की संख्या। ७. नाटक का एक अंश जिसके अंत में जवनिका गिरा दी जाती है। ८. गोद। ९. अंग। देह। १०. पाप। दुःख। ११. बार। दफ़ा। मर्तबा।

अंकगणित–संज्ञा पुं० १, २, ३ आदि संख्याओं का हिसाब। संख्या की मीमांसा।

अँकटा–संज्ञा पुं० कंकड़ का छोटा टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री० अँकटी।

अँकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. कँटिया। हुक। २. तीर का मुड़ा हुआ फल। टेढ़ी गाँसी। ३. बेल। लता। ४. लग्गी।

अंकन–संज्ञा पुं० [वि० अंकनीय, अंकित, अंक्य] १. चिह्न करना। निशान करना। लिखना। २. शंख, चक्र या *त्रिशूल के चिह्न गरम धातु से बाहु* पर छपवाना। ३. गिनती करना।

अंकपाली–संज्ञा स्त्री० धाय। दाई।

अंकमाल–संज्ञा पुं० गले लगना। भेंट।

अंकमालिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटी माला। २. आलिंगन। भेंट।

अँकरा–संज्ञा पुं० एक खर जो गेहूँ के पौधों के बीच जमता है।
संज्ञा स्त्री० अँकरी।

अँकरोरी, अँकरौरी–संज्ञा स्त्री० कंकड़ या खपड़े का बहुत छोटा टुकड़ा।

अँकवार–संज्ञा स्त्री० गोद। छाती।
यौ०—भेंट अँकवार = आलिंगन। मिलना।

अंकविद्या–संज्ञा स्त्री० दे० "अंकगणित"।

अँकाई–संज्ञा स्त्री १. अंदाज़ा। अटकल। तख़मीना। २. फ़सल में से ज़मींदार और काश्तकार के हिस्सों का ठहराव।

अँकाना–क्रि० स० मूल्य निर्धारित

कराना। अंदाज़ कराना। परखाना।

अँकाव–संज्ञा पुं० [हिं० आँकना] कूतने या आँकने का काम। कुताई। अंदाज़।

अंकित–वि० [सं०] १. चिह्नित। निशान किया हुआ। २. लिखित।

अँकुड़ा–संज्ञा पुं० लोहे का टेढ़ा काँटा या छड़। गाय-बैल के पेट का दर्द या मरोड़।

अँकुड़ी–संज्ञा स्त्री० टेढ़ी कँटिया या छड़।

अँकुड़ीदार–वि० जिसमें अँकुड़ी या कँटिया लगी हो। जिसमें अटकाने के लिये हुक लगा हो। हुकदार।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का कशीदा। गड़ारी।

अंकुर–संज्ञा पुं० [सं०] [क्रि० अँकुरना, वि० अंकुरित] १. अँखुआ। गाभ। अँगुसा। २. डाभ। कल्ला। कनखा। कोंपल। आँख। ३. कली। नोक। ४. रुधिर। ५. रोयाँ। ६. जल। ७. मांस के बहुत छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय उत्पन्न होते हैं। अंगूर। भराव।

अँकुरना, अँकुराना–क्रि० अ० अंकुर फोड़ना। जमना।

अंकुरित–वि० जिसमें अंकुर हो गया हो।

अंकुश–संज्ञा पुं० १. हाथी को हाँकने का दो-मुँहा भाला। आँकुस। २. दबाव। रोक।

अंकुशग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] महावत। हाथीवान्।

अँकुसी–संज्ञा स्त्री० टेढ़ी या झुकी कील जिसमें कोई चीज़ लटकाई या फँसाई जाय। हुक।

अँकोर–संज्ञा पुं० १. अंक। गोद। २. भेंट। घूस। रिश्वत। ३. खुराक या कलेवा जो खेत में काम करनेवालों के पास भेजा जाता है।

अँकोरी–संज्ञा स्त्री० १. गोद। अंक। २. आलिंगन।

अँकोल–संज्ञा पुं० एक पहाड़ी पेड़।

अँखड़ी†–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

अँख-मीचनी–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौली"।

अँखिया–संज्ञा स्त्री० १. हथौड़ी से ठोंक ठोंककर नक्काशी करने की कलम या ठप्पा। ‡ २. दे० "आँख"।

अँखुआ–संज्ञा पुं० [क्रि० अँखुआना] बीज से फूटकर निकली हुई टेढ़ी नोक जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं। अंकुर। डाभ। कल्ला। कोंपल।

अँखुआना–क्रि० अ० अंकुर फोड़ना या फेंकना। उगना। जमना।

अंग–संज्ञा पुं० १. शरीर। २. भाग। खंड। ३. भेद। प्रकार। उपाय। ४. अनुकूल पक्ष। सहायक। पक्ष का तरफ़दार। ५. बंगाल में भागलपुर के आस-पास का प्रदेश जिसकी राजधानी चंपापुरी थी। ६. एक संबोधन। प्रिय। ७. छः की संख्या। ८. नाटक में अप्रधान रस। ९. सेना के चार विभाग; यथा—हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। योग के आठ विधान। १०. राजनीति के सात अंग।
वि० अप्रधान। उलटा।

अंगज–वि० शरीर से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. पुत्र। बेटा। लड़का। २. पसीना। बाल। केश। रोम। ३. काम, क्रोध आदि विकार। ४. साहित्य में कायिक अनुभाव। ५. कामदेव। मद। ६. रोग।

बाल-शब्दसागर

अर्थात्

हिंदी-शब्दसागर

का

बालकोपयोगी संस्करण

संकलनकर्ता

श्यामसुंदरदास

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३५

प्रथम संस्करण] [मूल्य २)

अंगजा–संज्ञा स्त्री० कन्या । पुत्री ।
अंगड़-खंगड़–वि० १. बचा-खुचा । गिरा-पड़ा । २. टूटा-फूटा ।
संज्ञा पुं० लकड़ी, लोहे आदि का टूटा-फूटा सामान ।
अँगड़ाई–संज्ञा स्त्री० देह टूटना । बदन टूटना ।
अँगड़ाना–क्रि० अ० देह तोड़ना । सुस्ती से ऐंठना ।
अंगण–संज्ञा पुं० आँगन । सहन ।
अंगत्राण–संज्ञा पुं० शरीर को ढकनेवाला । अँगरखा । कुरता । कवच ।
अंगद–संज्ञा पुं० १. बाहु पर पहनने का एक गहना । बाजूबंद । २. बालि का पुत्र जो रामचंद्रजी की सेना में था ।
अंगदान–संज्ञा पुं० १. पीठ दिखलाना । युद्ध से भागना । २. तनुदान । तन-समर्पण ।
अँगना–संज्ञा पुं० दे० "आँगन" ।
अंगना–संज्ञा स्त्री० अच्छे अंगवाली स्त्री । कामिनी ।
अँगनाई–संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन" ।
अँगनैया–संज्ञा स्त्री० दे० "आँगन" ।
अंगन्यास–संज्ञा पुं० शास्त्र के मंत्रों को पढ़ते हुए एक एक अंग को छूना ।
अंगभंग–संज्ञा पुं० अंग का खंडित होना । स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा । अंगभंगी ।
वि० जिसका कोई अवयव कटा या टूटा हो । अपाहज । लँगड़ा लूला । लुंज ।
अंगभंगी–संज्ञा स्त्री० १. चेष्टा । २. स्त्रियों की मोहित करने की क्रिया ।
अंगभाव–संज्ञा पुं० संगीत में नेत्र, भृकुटी और हाथ पैर आदि अंगों से मनोविकार का प्रकाश ।
अंगभूत–वि० १. अंग से उत्पन्न । २. अंतर्गत । भीतर ।
संज्ञा पुं० पुत्र । बेटा ।
अंगमर्द–संज्ञा पुं० हड्डियों में दर्द, हड़फूटन । हाथ-पैर दबानेवाला नौकर ।
अंगरक्षा–संज्ञा स्त्री० शरीर की रक्षा । देह का बचाव ।
अँगरखा–संज्ञा पुं० एक पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लंबा होता है और जिसमें बाँधने के लिये बंद टँके रहते हैं । चपकन ।
अँगरा–संज्ञा पुं० दहकता हुआ कोयला । अंगारा ।
अंगराग–संज्ञा पुं० १. चंदन आदि का लेप । उबटन । २. वस्त्र और आभूषण । ३. शरीर की शोभा के लिये महावर आदि रँगने की सामग्री । ४. स्त्रियों के शरीर के पाँच अंगों की सजावट ।
अगराना–क्रि० अ० दे० "अँगड़ाना" ।
अँगरेज़–संज्ञा पुं० [वि० अँगरेज़ी] इँगलैंड देश का निवासी ।
अँगरेज़ी–वि० अँगरेज़ों का । इँगलैंड देश का । विलायती ।
संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ लोगों की बोली । इँगलैंड-निवासियों की भाषा ।
अँगवना–क्रि० स० १. अंगीकार करना । स्वीकार करना । २. ओढ़ना । सहना । उठाना ।
अँगवारा–संज्ञा पुं० गाँव के एक छोटे भाग का मालिक । खेत की जोताई में एक दूसरे की सहायता ।
अंगविकृति–संज्ञा स्त्री० अपस्मार । मृगी या मिरगी रोग । मूर्छा रोग ।

अंगविक्षेप–संज्ञा पुं० चमकना। मटकना।

अंगविद्या–संज्ञा स्त्री० सामुद्रिक विद्या।

अंगशोष–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें शरीर सूखता है। सुखंडी रोग।

अंगसिहरी–संज्ञा स्त्री० ज्वर आने के पहले देह की कँपकँपी। जूड़ी।

अंगहार–संज्ञा पुं० नृत्य। नाच। चमकना। मटकना।

अंगहीन–वि० जिसका कोई एक अंग न हो।

संज्ञा पुं० कामदेव का एक नाम।

अंगांगिभाव–संज्ञा पुं० अंश का संपूर्ण के साथ संबंध। अलंकार में संकर का एक भेद।

अंगा–संज्ञा पुं० अँगरखा। चपकन।

अंगाकड़ी–संज्ञा स्त्री० अंगारों पर सेंकी हुई मोटी रोटी। लिट्टी। बाटी।

अंगार–संज्ञा पुं० [सं०] दहकता हुआ कोयला।

अंगारक–संज्ञा पुं० १. अंगारा। २. मंगल ग्रह। ३. भृंगराज। ४. कटसरैया का पेड़।

अंगारपुष्प–संज्ञा पुं० इंगुदी वृक्ष। हिंगोट का पेड़।

अंगारमणि–संज्ञा पुं० मूँगा।

अंगारवल्ली–संज्ञा स्त्री० गुंजा। घुँघची या चिरमटी।

अंगारा–संज्ञा पुं० दे० "अंगार"।

अंगारिणी–संज्ञा स्त्री० १. अँगीठी। बोरसी। आतिशदान। २. ऐसी दिशा जिस पर डूबे हुए सूर्य की लाली छाई हो।

अंगारी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा अंगारा। २. चिनगारी। † ३. लिट्टी। बाटी। अंगाकड़ी। † ४. बोरसी।

अँगारी–संज्ञा स्त्री० १. ईख के सिर पर की पत्ती। २. गँडेरी। गड़ी। गन्ने के छोटे कटे टुकड़े।

अँगिया–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों की चोली। कुरती। कंचुकी।

अंगिरस–संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २. बृहस्पति। ३. कटीला गोंद।

अंगिरा–संज्ञा पुं० दे० "अंगिरस"।

अंगी–संज्ञा पुं० १. देहधारी। २. प्रधान। मुख्य। ३. चौदह विद्याएँ।

अंगीकार–संज्ञा पुं० स्वीकार। मंजूर।

अंगीकृत–वि० स्वीकृत। मंजूर।

अँगीठा–संज्ञा पुं० बड़ी अँगीठी। बड़ी बोरसी। आग रखने का बरतन।

अँगीठी–संज्ञा स्त्री० आग रखने का बरतन। आतिशदान।

अंगुर†–संज्ञा पुं० दे० "अंगुल"।

अंगुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

अंगुल–संज्ञा पुं० आठ जौ की लंबाई।

अंगुलित्राण–संज्ञा पुं० गोह के चमड़े का बना हुआ दस्ताना जिसे बाण चलाते समय उँगलियों में पहनते हैं।

अंगुलिपर्व–संज्ञा पुं० उँगलियों की पोर।

अंगुली–संज्ञा स्त्री० † १. उँगली। २. हाथी के सूँड़ का अगला भाग।

अंगुश्तरी–संज्ञा स्त्री० अँगूठी। मुँदरी।

अंगुश्ताना–संज्ञा पुं० १. उँगली पर पहिनने की लोहे या पीतल की एक टोपी। २. आरसी। हाथ के अँगूठे की एक प्रकार की मुँदरी।

अंगुष्ठ–संज्ञा पुं० हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली। अँगूठा।

अँगुसी–संज्ञा स्त्री० १. हल का फाल। २. सोनारों की बकनाल या टेढ़ी नली।

भूमिका

काशी-नागरीप्रचारिणी सभा जिन दिनों 'हिंदी-शब्दसागर' के बृहत् और प्रामाणिक कोष का प्रणयन करा रही थी उन्हीं दिनों मुझे उसके एक संक्षिप्त संस्करण की आवश्यकता का अनुभव हो गया था। 'शब्दसागर' के बृहदाकार में ही उसे संक्षिप्त करने की प्रेरणा निहित है और उसकी प्रामाणिकता एक ऐसी दृढ़ नींव है जिस पर हिंदी-भाषा-कोष के छोटे-बड़े अनेक भवन बनाए जा सकते हैं तथा वे अपनी दृढ़ता के कारण शताब्दियों तक हिंदी-भाषी जनता के भाषा-भवन का काम दे सकते हैं। मेरे सामने प्रश्न इतना ही था कि उक्त संक्षिप्त संस्करण का स्वरूप क्या हो और वह सिद्धांत तथा व्यवहार की किन दृष्टियों को सम्मुख रखकर प्रस्तुत किया जाय।

'हिंदी-शब्दसागर' में मूल शब्द की संख्या प्रायः एक लाख तक पहुँची है, जो भारतीय भाषाओं के कोषों की तुलना में सबसे बड़ी हुई कही जा सकती है। इस संख्या के द्वारा हिंदी अपनी राष्ट्र-भाषा बनने की योग्यता को एक ओर सिद्ध कर सकी और दूसरी ओर यह संसार की अन्य उन्नत भाषाओं के समकक्ष रखे जाने का पुष्ट प्रमाण भी दे सकी। 'हिंदी-शब्दसागर' के द्वारा इन दोनों ही उन्नत लक्ष्यों की पूर्ति हुई। इन दोनों ही लक्ष्यों का महत्त्व राष्ट्रीय और जातीय सभ्यता तथा संस्कृति की दृष्टि से कितना बड़ा है, यह वे अच्छी तरह समझ सकते हैं जो भाषा के विस्तार, सौंदर्य और उन्नति को उस देश के और उस समाज के विकास का मापदंड मानते हैं। यहाँ उसकी अधिक व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं। प्रसन्नता की बात है कि 'हिंदी-शब्दसागर' का महत्त्व भारतीय और विदेशी विद्वानों ने बहुत कुछ समझ लिया है और समय की गति के साथ अधिकाधिक समझते जायँगे।

अँगूठा—संज्ञा पुं० मनुष्य के हाथ की सबसे छोटी और मोटी उँगली। पहली उँगली।
अँगूठी—संज्ञा स्त्री० मुँदरी। मुद्रिका। छल्ला।
अंगूर—संज्ञा पुं० दाख। द्राक्षा।
अँगूरी—वि० १. अंगूर से बना हुआ। २. अंगूर के रंग का। संज्ञा पुं० हलका हरा रंग।
अँगेजना—क्रि० स० १. सहना। बरदाश्त करना। उठाना। २. अंगीकार करना। स्वीकार करना।
अँगेठी—संज्ञा स्त्री० दे० "अँगीठी"।
अँगेरना—क्रि० स० १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. सहना। बरदाश्त करना।
अँगोछना—क्रि० अ० गीले कपड़े से देह पोंछना।
अँगोछा—संज्ञा पुं० देह पोंछने का कपड़ा। तौलिया। गमछा।
अँगोछी—संज्ञा स्त्री० १. देह पोंछने के लिये छोटा कपड़ा। २. छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय।
अँगोरा—संज्ञा पुं० मच्छर।
अँगोरिया—संज्ञा पुं० वह हलवाहा जिसे कुछ मजदूरी न देकर हल-बैल उधार देते हैं।
अंघस—संज्ञा पुं० पाप। पातक।
अंघिया—संज्ञा स्त्री० आटा या मैदा चालने की छलनी। अँगिया।
अंघ्रि—संज्ञा पुं० पैर। चरण। पाँव।
अंघ्रिप—संज्ञा पुं० पेड़। वृक्ष।
अँचरा—संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।
अंचल—संज्ञा पुं० १. साड़ी का छोर। आँचल। पल्ला। छोर। दे० "आँचल"। २. किनारा। तट।
अँचला—संज्ञा पुं० १. दे० "आँचल"। २. कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधु लोग धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं।
अंचित—वि० पूजित। आराधित।
अंछर—संज्ञा पुं० १. मुँह के भीतर का एक रोग जिसमें काँटे से उभर आते हैं। † २. अक्षर। ३. टोना। जादू।
अंज—संज्ञा पुं० दे० "कंज"।
अंजन—संज्ञा पुं० १. सुरमा। काजल। २. स्याही। ३. छिपकली। ४. नटी। ५. एक पर्वत। ६. लेप। ७. माया।
अंजनकेश—संज्ञा पुं० दीपक। दीया।
अंजन-शलाका—संज्ञा स्त्री० अंजन या सुरमा लगाने की सलाई।
अंजनसार—वि० सुरमा लगा हुआ।
अंजनहारी—संज्ञा स्त्री० १. आँख की पलक के किनारे की फुंसी। बिलनी। २. एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जिसे कुम्हारी या बिलनी भी कहते हैं।
अंजना—संज्ञा स्त्री० १. केशरी नामक बंदर की स्त्री जिसके गर्भ से हनुमान् उत्पन्न हुए थे। २. बिलनी।
अंजनानंदन—संज्ञा पुं० अंजना के पुत्र हनुमान्।
अंजनी—संज्ञा स्त्री० १. हनुमान् की माता अंजना। २. कुटकी। ३. आँख की पलक की फुड़िया। बिलनी।
अंजरपंजर—संज्ञा पुं० देह का बंद। शरीर का जोड़। ठठरी। पसली।
अंजलि, अंजली—संज्ञा स्त्री० १. दोनों हथेलियों को मिलाकर बनाया हुआ संपुट। २. उतनी वस्तु जितनी एक अँजुली में आवे। दो पसर। ३.

मैं यह स्वीकार करता हूँ कि अँगरेजी तथा कुछ पाश्चात्य भाषाओं के बड़े बड़े कोषों में शब्दों की संख्या 'हिंदी-शब्दसागर' की अपेक्षा द्विगुणित और त्रिगुणित भी है, परंतु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो इसका एक प्रधान कारण उनमें विज्ञान की अनेकानेक शाखाओं के सहस्रों पारिभाषिक शब्दों की बहुलता ही है। नित्यप्रति व्यवहार में आनेवाले अथवा कवियों और साहित्यिकों के द्वारा प्रयुक्त होनेवाले शब्दों की संख्या की तुलना में 'हिंदी-शब्दसागर' किसी भी विदेशी भाषा के सम्मुख संकुचित नहीं हो सकता। इस बात को पुष्ट करने के लिये भी शब्दसागर के एक संक्षिप्त संस्करण की—जिसे व्यावहारिक तथा बालकोपयोगी संस्करण भी कहा जा सकता है—आवश्यकता समझ पड़ती थी। अतः इस संस्करण का संपादन करते हुए मैंने मूल शब्दसागर के शब्दों को कम करने की उतनी चेष्टा नहीं की जितनी शब्दों के पर्यायों और लाक्षणिक प्रयोगों (मुहाविरों) को घटा देने तथा शब्दों की व्युत्पत्ति छोड़ देने का उपक्रम किया है। इस कार्य में मुझे सभा की ओर से प्रकाशित, श्रीयुक्त रामचंद्र वर्मा द्वारा संपादित, 'संक्षिप्त हिंदी-शब्दसागर' का आधार और आभार स्वीकार करना चाहिए। वर्माजी के 'संक्षिप्त हिंदी-शब्दसागर' और प्रस्तुत संस्करण में मुख्य अंतर यही है कि इसमें शब्दों की संख्या उससे विशेष न्यून न होती हुई भी इसका आकार लगभग उसका आधा कर दिया गया है।

मेरा यह विश्वास है कि व्यावहारिक दृष्टि से यह क्रिया हानिकारिणी नहीं हुई वरन् यह साधारण जनता और विद्यार्थियों के लिये अधिक ग्राह्य और अभीष्ट हुई है। साथ ही यह बात भी ध्यान में रखी गई है कि जहाँ 'संक्षिप्त हिंदी-शब्दसागर' कालेज के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है वहाँ यह संस्करण विशेषकर स्कूली विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये प्रस्तुत किया गया है।

हथेलियों से दान देने के लिये निकाला हुआ अन्न।
अंजलिगत–वि० १. अँजली में आया हुआ। २. हाथ में आया हुआ।
अंजलिपुट–संज्ञा पुं० अंजली।
अंजलिबद्ध–वि० हाथ जोड़े हुए।
अँजवाना–क्रि० स० अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।
अंजही–संज्ञा स्त्री० वह बाज़ार जहाँ अन्न बिकता है। अनाज की मंडी।
अँजाना–क्रि० स० अंजन लगवाना। सुरमा लगवाना।
अंजाम–संज्ञा पुं० १. समाप्ति। पूर्ति। अंत। २. फल।
अंजित–वि० अंजन लगाए हुए।
अंजीर–संज्ञा पुं० एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।
अँजुरी, अँजुलीं†–संज्ञा स्त्री० दे० "अंजलि"।
अँजोरं†–संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
अँजोरनां†–क्रि० स० १. बटोरना। २. छीनना। हरण करना। ३. प्रकाशित करना। बालना। जैसे—दीपक अँजोरना।
अँजोरा†–वि० दे० "उजाला"।
अँजोरीं†–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। रोशनी। चमक। उजाला। २. चाँदनी। चंद्रिका।
अंझा–संज्ञा पुं० नागा। तातील। छुट्टी।
अँटना–क्रि० अ० १. समाना। २. ठीक चिपकना। ३. भर जाना। ढँक जाना। ४. पूरा पड़ना। ५. पूरा होना। खपना।
अंटा–संज्ञा पुं० [सं० अंड] १. बड़ी गोली। गोला। २. सूत या रेशम का लच्छा। ३. बड़ी कौड़ी। ४. बिलियर्ड का अँगरेज़ी खेल।
अंटा गुड़गुड़–वि० नशे में चूर। बेहोश। बेसुध। अचेत।
अंटाघर–संज्ञा पुं० वह घर जिसमें गोली या खेल खेला जाय।
अंटाचित–क्रि० वि० पीठ के बल। सीधा। पीठ ज़मीन पर किए हुए।
अँटिया–संज्ञा स्त्री० घास, खर या पतली लकड़ियों आदि का बँधा हुआ छोटा गट्ठा। गठिया।
अँटियाना–क्रि० स० १. उँगलियों के बीच में छिपाना। हथेली में छिपाना। २. गायब करना। हजम करना।
अंटी–संज्ञा स्त्री० १. उँगलियों के बीच का स्थान या अंतर। घाई। २. धोती की वह लपेट जो कमर पर रहती है। गाँठ। ३. जब कोई लड़का अंत्यज या अपवित्र वस्तु को छू लेता है, तब और लड़के छूत से बचने के लिये ऐसी मुद्रा बनाते हैं। ४. सूत या रेशम का लच्छा। सूत लपेटने की लकड़ी। ५. मुरकी।
अंठी–संज्ञा स्त्री० १. चीयाँ। गुठली। बीज। २. गाँठ। गिरह। ३. गिलटी। कड़ापन।
अंड–संज्ञा पुं० १. अंडा। २. अंडकोश। फोता। ३. ब्रह्मांड। लोकमंडल। विश्व। ४. कस्तूरी का नाफ़ा। मृगनाभि। ५. पिंड। शरीर।
अंडकटाह–संज्ञा पुं० ब्रह्मांड। विश्व।
अंडकोश–संज्ञा पुं० १. फोता। २. ब्रह्मांड। लोकमंडल। संपूर्ण विश्व। ३. सीमा। हद। ४. फल का छिलका

इस प्रकार हिंदी-शब्दसागर का यह व्यावहारिक संस्करण जिन उद्देशों को सम्मुख रखकर प्रस्तुत किया गया है, आशा है, उनकी पूर्ति इससे हो सकेगी। इसका नाम 'बाल-शब्दसागर' इस आशय से रखा गया है कि यह मूल 'शब्दसागर' की सबसे लघु और सबसे नवीन संतान है और इसका उपयोग विशेषतः स्कूली विद्यार्थियों द्वारा ही सबसे अधिक किए जाने की संभावना है। परंतु सिद्धांत और व्यवहारोपयोगिता के विचार से इसे संपूर्ण हिंदी जनता की वस्तु बनाने की चेष्टा भी की गई है।

श्यामसुंदरदास

अंडज–संज्ञा पुं० अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव; जैसे–सर्प, पक्षी, मछली इत्यादि।

अंडबंड–संज्ञा स्त्री० १. बे सिर-पैर की बात। अनाप-शनाप। व्यर्थ की बात। २. गाली।

अंडस–संज्ञा स्त्री० कठिनाई। मुश्किल। असुविधा।

अंडा–संज्ञा पुं० [वि० अंडैल] १. वह गोल वस्तु जिसमें से पक्षी, जलचर और सरीसृप आदि अंडज जीवों के बच्चे फूटकर निकलते हैं। २. बैज़ा।

अंडाकार–वि० अंडे के आकार का। लंबाई लिए हुए गोल।

अंडाकृति–संज्ञा स्त्री० अंडेका आकार।

अंडी–संज्ञा स्त्री० १. रेंड़ी। २. रेंड़या एरंड का पेड़। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

अँडुआ–संज्ञा पुं० दे० "आँड़"।

अँडुआना–क्रि० स० बधिया करना। बछड़े के अंडकोश को कुचलना।

अँडुआ बैल–संज्ञा पुं० १. बिना बधियाया हुआ बैल। साँड़। २. सुस्त आदमी।

अंडैल–वि० जिसके पेट में अंडे हों। अंडेवाली।

अंत–संज्ञा पुं० [वि० अंतिम, अंत्य] १. समाप्ति। आख़ीर। अवसान। इति। २. सीमा। हद। ३. अंतकाल। मृत्यु। ४. फल। नतीजा। ५. प्रलय। ६. मन। ७. भेद। रहस्य।

अंतक–संज्ञा पुं० १. अंत करनेवाला। २. यमराज। काल। ३. सन्निपात। ज्वर का एक भेद। ४. ईश्वर, जो प्रलय में सबका संहार करता है। ५. शिव।

अंतकारी–संज्ञा पुं० अंत करनेवाला। मार डालनेवाला।

अंतक्रिया–संज्ञा स्त्री० अंत्येष्टि कर्म्म। मरने के पीछे का क्रिया-कर्म्म।

अंतग–संज्ञा पुं० जानकारी में पूरा। निपुण।

अंतगति–संज्ञा स्त्री० अंतिम दशा। मृत्यु। मौत।

अँतड़ी–संज्ञा स्त्री० आँत।

अंतपाल–संज्ञा पुं० १. द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। २. राज्य की सीमा पर का पहरेदार।

अंतरंग–वि० भीतरी। घनिष्ठ। जिगरी। दिली।

अंतर–संज्ञा पुं० १. फ़र्क़। भेद। २. फ़ासला। दूरी। दो वस्तुओं के बीच में का स्थान। ३. ओट। आड़। परदा। दो वस्तुओं के बीच में पड़ी हुई चीज़। ४. छिद्र। छेद। संज्ञा पुं० हृदय। अंतःकरण।

अंतरजामी–संज्ञा पुं० दे० "अंतर्यामी"।

अंतरदिशा–संज्ञा स्त्री० दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

अंतरपट–संज्ञा पुं० १. परदा। आड़। ओट। २. विवाह-मंडप में मृत्यु की आहुति के समय अग्नि और वर कन्या के बीच में डाला हुआ परदा। ३. कपड़मिट्टी। कपड़ौरी। ४. गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ कपड़ा।

अंतरसंचारी–संज्ञा पुं० संचारी भाव। (साहित्य)

अंतरस्थ–वि० भीतर का। अंदर का। भीतर रहनेवाला।



अँतरा-संज्ञा पुं० १. श्रंतरा। नागा।
२. वह ज्वर जो एक दिन नागा देकर आता है।
अंतरा-क्रि० वि० १. मध्य। २. निकट। ३. अतिरिक्त। सिवाय। ४. पृथक्। ५. विना।
संज्ञा पुं० किसी गीत में स्थायी या टेक के अतिरिक्त बाक़ी और पद या चरण।
अंतरात्मा-संज्ञा स्त्री० १. जीवात्मा। २. अंतःकरण।
अंतराय-संज्ञा पुं० विघ्न। बाधा।
अंतराल-संज्ञा पुं० १. घेरा। मंडल। २. मध्य। बीच।
अंतरिक्ष-संज्ञा पुं० १. पृथिवी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान। आकाश। अधर। शून्य। २. स्वर्गलोक।
अंतरित-वि० भीतर किया हुआ। छिपा हुआ।
अंतरीप-संज्ञा पुं० १. द्वीप। टापू। २. पृथ्वी का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर तक चला गया है।
अंतरीय-संज्ञा पुं० कमर में पहनने का वस्त्र। धोती।
अँतरौटा-संज्ञा पुं० साड़ी के नीचे पहनने का महीन कपड़ा।
अंतर्गत-वि० १. भीतर आया हुआ। समाया हुआ। २. भीतरी। छिपा हुआ। गुप्त।
अंतर्गति-संज्ञा स्त्री० १. मन का भाव। २. हार्दिक इच्छा। कामना।
अंतर्गृही-संज्ञा स्त्री० तीर्थस्थान के भीतर पड़नेवाले प्रधान स्थलों की यात्रा।
अंतर्जानु-वि० हाथों को घुटनों के बीच किए हुए।
अंतर्दशा-संज्ञा स्त्री० फलित ज्योतिष के अनुसार मनुष्य के जीवन में ग्रहों के नियत भोगकाल।
अंतर्द्धान-संज्ञा पुं० लोप। छिपाव।
वि० छिपा हुआ। लुप्त।
अंतर्निविष्ट-वि० १. भीतर बैठा हुआ। २. मन में जमा हुआ। हृदय में बैठा हुआ।
अंतर्बोध-संज्ञा पुं० आत्मज्ञान। आत्मा की पहचान।
अंतर्भावना-संज्ञा स्त्री० १. ध्यान। सोच-विचार। चिंता। २. गुणनफल के अंतर से संख्याओं को ठीक करना।
अंतर्भूत-वि० अंतर्गत। शामिल।
संज्ञा पुं० जीवात्मा। प्राण। जीव।
अंतर्मुख-वि० जिसका मुँह भीतर की ओर हो। भीतर मुँहवाला। जिसका छिद्र भीतर की ओर हो। जैसे, अंतर्मुख फोड़ा।
अंतर्यामी-वि० १. भीतर जानेवाला। २. अंतःकरण में स्थित होकर प्रेरणा करनेवाला। ३. भीतर की बात जाननेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर। परमात्मा। परमेश्वर।
अंतर्लंब-संज्ञा पुं० वह त्रिकोण क्षेत्र जिसके भीतर लंब गिरा हो।
अंतर्लीन-वि० भीतर छिपा हुआ। डूबा हुआ। ग़र्क़। विलीन।
अंतर्वती-वि० स्त्री० १. गर्भवती। हामिला। २. भीतरी। अंदर रहनेवाली।
अंतर्वाणी-संज्ञा पुं० शास्त्रज्ञ। पंडित। विद्वान्।
अंतर्विकार-संज्ञा पुं० शरीर का धर्म। जैसे भूख, प्यास, पीड़ा इत्यादि।
अंतर्वेद-संज्ञा पुं० [वि० अंतर्वेदी] १.

संकेताक्षरों का विवरण

अ० = अरबी भाषा
अनु० = अनुकरण शब्द
अल्पा० = अल्पार्थक प्रयोग
अव्य० = अव्यय
उप० = उपसर्ग
क्रि० = क्रिया
क्रि० अ० = क्रिया अकर्मक
क्रि० वि० = क्रिया-विशेषण
क्रि० स० = क्रिया सकर्मक
दे० = देखो
पुं० = पुँल्लिंग

प्रत्य० = प्रत्यय
प्रे० = प्रेरणार्थक
फा० = फ़ारसी भाषा
बहु० = बहुवचन
भाव० = भाववाचक
वि० = विशेषण
व्या० = व्याकरण
सं० = संस्कृत
सर्व० = सर्वनाम
स्त्री० = स्त्रीलिंग
हिं० = हिंदी

☆ यह चिह्न सूचित करता है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

† यह चिह्न सूचित करता है कि इस शब्द का प्रयोग प्रांतिक है।

‡ यह चिह्न सूचित करता है कि शब्द का यह रूप ग्राम्य है।

देश जिसके अंतर्गत यज्ञों की वेदियाँ हों। २. गंगा और यमुना के बीच का देश। ब्रह्मावर्त। ३. दो नदियों के बीच का देश। दोआब।

अंतर्वेदी–वि० अंतर्वेद का निवासी। गंगा यमुना के दोआब में बसनेवाला।

अंतर्वेशिक–संज्ञा पुं० अंतःपुर-रक्षक।

अंतर्हित–वि० गुप्त। छिपा हुआ।

अंतवर्ण–संज्ञा पुं० अंतिम वर्ण का। शूद्र।

अंतशय्या–संज्ञा स्त्री० १. मृत्युशय्या। २. श्मशान। मरघट। ३. मृत्यु।

अंतस–संज्ञा पुं० अंतःकरण। हृदय। चित्त।

अंतसद्–संज्ञा पुं० शिष्य। चेला।

अंतस्थ–वि० [विशे० अंतस्थित] १. भीतर का। भीतरी। २. बीच में स्थित। मध्य का। मध्यवर्ती। बीच-वाला। ३. य, र, ल, व, ये चारों वर्ण।

अंतस्नान–संज्ञा पुं० वह स्नान जो यज्ञ समाप्त होने पर किया जाता है।

अंतस्सलिल–वि० जिसके जल का प्रवाह बाहर न देख पड़े, भीतर हो। जैसे–अंतस्सलिला सरस्वती।

अंतस्सलिला–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती नदी। २. फल्गू नदी।

अंतावरी–संज्ञा स्त्री० अंतड़ी। आँतों का समूह।

अंतिम–वि० [सं०] १. जो अंत में हो। अंत का। आखिरी। सबके पीछे का। २. चरम। सबसे बढ़कर। हद दरजे का।

अंतेउर, अंतेवरꕥ–संज्ञा पुं० अंतःपुर। जनानखाना।

अंतेवासी–संज्ञा पुं० १. गुरु के समीप रहनेवाला। शिष्य। २. ग्राम के बाहर रहनेवाला। चांडाल। अंत्यज।

अंतःकरण–संज्ञा पुं० १. वह भीतरी इंद्रिय जो संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण तथा सुख-दुःखादि का अनुभव करती है। मन। २. विवेक। नैतिक बुद्धि।

अंतःपटी–संज्ञा स्त्री० १. किसी चित्रपट में नदी, पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य। २. नाटक का परदा।

अंतःपुर–संज्ञा पुं० जनानखाना। जनाना। भीतरी महल। रनिवास। हरम।

अंतःपुरिक–संज्ञा पुं० अंतःपुर का रक्षक। कंचुकी।

अंतःराष्ट्रीय–वि० दे० "सार्वराष्ट्रीय"।

अंत्य–वि० अंत का। अंतिम। आखिरी। सबसे पिछला।

संज्ञा पुं० १. वह जिसकी गणना अंत में हो। २. दस सागर की संख्या (१०००,०००,०००,०००,०००)। यम।

अंत्यकर्म–संज्ञा पुं० अंत्येष्टि क्रिया।

अंत्यज–संज्ञा पुं० वह जो अंतिम वर्ण में उत्पन्न हो। शूद्र।

अंत्यवर्ण–संज्ञा पुं० १. अंतिम वर्ण। शूद्र। २. अंत का अक्षर 'ह'।

अंत्या–संज्ञा स्त्री० चांडाली। चांडाल की स्त्री। चांडालिनी।

अंत्याक्षर–संज्ञा पुं० १. किसी शब्द या पद के अंत का अक्षर। २. वर्णमाला का अंतिम अक्षर 'ह'।

अंत्याक्षरी–संज्ञा स्त्री० किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अंतिम अक्षर से



आरंभ होनेवाला दूसरा श्लोक पढ़ना।

अंत्यानुप्रास–संज्ञा पुं० पद्य के चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। तुक।

अंत्येष्टि–संज्ञा पुं० मृतक का शवदाह से सपिंडन तक कर्म्म। क्रिया-कर्म्म।

अंत्री॰–संज्ञा स्त्री० अँतड़ी।

अंदर–क्रि० वि० भीतर।

अँदरसा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई।

अंदरी–वि० भीतरी।

अंदरूनी–वि० भीतरी। भीतर का।

अंदाज़–संज्ञा पुं० १. अटकल। नाप-जोख। कूत। तख़मीना। २. तौर। तर्ज़। ३. मटक।

अंदाज़न–क्रि० वि० [फ़ा०] १. अंदाज़ से। अटकल से। २. लगभग। क़रीब।

अंदाज़ा–संज्ञा पुं० [फ़ा०] अटकल। अनुमान। कूत।

अंदु, अंदुक–संज्ञा पुं० पैर में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। पाजेब।

अँदुआ–संज्ञा पुं० हाथियों के पिछले पैर में डालने के लिये लकड़ी का बना काँटेदार यंत्र।

अंदेशा–संज्ञा पुं० १. सोच। २. संशय। संदेह। ३. खटका। आशंका। ४. हरज। हानि। ५. असमंजस। आगा-पीछा। पसोपेश।

अंध–वि० [सं०] [संज्ञा अंधता] १. नेत्र-हीन। बिना आँख का। अंधा। २. अज्ञानी। अजानकार। ३. असाव-धान। ग़ाफ़िल। ४. उन्मत्त। मत-वाला। मस्त।
संज्ञा पुं० १. अंधा। २. जल। ३. उल्लू। ४. चमगादड़। ५. अँधेरा। अंधकार। ६. कवियों के बाँधे हुए पथ के विरुद्ध चलने का काव्यसंबंधी दोष।

अंधक–संज्ञा पुं० १. नेत्रहीन मनुष्य। अंधा। २. कश्यप और दिति का पुत्र एक दैत्य।

अंधकार–संज्ञा पुं० [सं०] अँधेरा।

अंधकूप–संज्ञा पुं० [सं०] १. अंधा कूँआ। २. एक नरक का नाम।

अंधखोपड़ी–संज्ञा स्त्री० जिसके मस्तिष्क में बुद्धि न हो। मूर्ख। भोंदू।

अंधड़–संज्ञा पुं० गर्द लिए हुए बड़े झोंके की वायु। आँधी। तूफ़ान।

अंधतमस–संज्ञा पुं० महा अंधकार। गहिरा अँधेरा। गाढ़ा अँधेरा।

अंधतामिस्र–संज्ञा पुं० घोर अंधकार-युक्त नरक। बड़ा अँधेरा नरक।

अंधधुंध॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अंधा-धुंध"।

अंधपरंपरा–संज्ञा पुं० बिना समझे बूझे पुरानी चाल का अनुकरण।

अंधबाई॰–संज्ञा स्त्री० आँधी। तूफ़ान।

अँधरा॰–वि० दे० "अंधा"।

अँधरी–संज्ञा स्त्री० १. अंधी। अंधी स्त्री। २. पहिए की पुट्ठियों अर्थात् गोलाई को पूरा करनेवाली धनुषा-कार लकड़ियों की चूल।

अंधा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अंधी] बिना आँख का जीव। वह जिसको कुछ सूझता न हो। दृष्टिरहित जीव।
वि० १. बिना आँख का। २. विचार-रहित। भले-बुरे का विचार न रखने-वाला।

अंधाधुंध–संज्ञा स्त्री० १. बड़ा अँधेरा। घोर अंधकार। २. अंधेर। गड़बड़। अन्याय। धींगाधींगी।

वि० अधिकता से। बहुतायत से।
अँधियार†-संज्ञा पुं० वि० दे० "अँधेरा"।
अँधियारा‡-संज्ञा पुं० वि० दे० "अँधेरा"।
अँधियारी-संज्ञा स्त्री० उपद्रवी घोड़ों, शिकारी पक्षियों और चीतों की आँख पर बाँधी जानेवाली पट्टी।
अँधेर-संज्ञा पुं० १. अन्याय। अत्याचार। २. उपद्रव। गड़बड़।
अँधेर-खाता-संज्ञा पुं० हिसाब-किताब और व्यवहार में गड़बड़ी। अन्याय। कुप्रबंध।
अँधेरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अँधेरी] अंधकार। तम। धुंध।
अँधेरा उजाला-संज्ञा पुं० कागज़ मोड़कर बनाया हुआ लड़कों का एक खिलौना।
अँधेरिया-संज्ञा स्त्री० १. अँधेरी रात। काली रात। २. अँधेरा पक्ष। अँधेरा पाख।
संज्ञा स्त्री० ऊख की पहली गोड़ाई।
अँधेरी-संज्ञा स्त्री० १. अंधकार। तम। प्रकाश का अभाव। २. अँधेरी रात। काली रात। ३. आँधी। अंधड़। ४. घोड़ों या बैलों की आँख पर डालने का परदा।
अँधौटी-संज्ञा स्त्री० बैल या घोड़े की आँख बंद करने का ढक्कन या परदा।
अँध्यार*†-संज्ञा पुं० दे० "अँधेरा"।
अँध्यारी‡†-संज्ञा स्त्री० दे० "अँधेरी"।
अंब-संज्ञा स्त्री० दे० "अंबा"।
संज्ञा पुं० आम का पेड़।
अंबक-संज्ञा पुं० १. आँख। २. पिता।
अंबर-संज्ञा पुं० १. वस्त्र। कपड़ा। २. स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की एकरंगी किनारेदार धोती। ३. आकाश। आसमान। ४. कपास। ५. एक सुगंधित वस्तु। ६. एक इत्र। ७. अबरक। ८. अमृत। ९. बादल। मेघ। (क०)
अंबर डंबर-संज्ञा पुं० सूर्यास्त के समय की लाली।
अंबरबेलि-संज्ञा स्त्री० आकाश बेल।
अँबराई-संज्ञा स्त्री० आम का बगीचा। आम की बारी।
अंबरीष-संज्ञा पुं० अयोध्या का एक सूर्य्यवंशी परम वैष्णव राजा।
अंबरौक-संज्ञा पुं० [सं०] देवता।
अंबष्ठ-संज्ञा पुं० [स्त्री० अंबष्ठा] १. पंजाब के मध्यभाग का पुराना नाम। २. ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न एक जाति। (स्मृति) ३. महावत। हाथीवान। फ़ीलवान।
अंबा-संज्ञा स्त्री० १. माता। जननी। २. पार्वती। देवी। दुर्गा। ३. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में सबसे बड़ी जिन्हें भीष्म पितामह अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिये हरण कर लाए थे।
अंबापोली-संज्ञा स्त्री० अमावट। अमरस।
अंबार-संज्ञा पुं० ढेर। समूह।
अंबारी-संज्ञा स्त्री० १. हाथी की पीठ पर रखने का हौदा जिसके ऊपर एक छज्जेदार मंडप होता है। २. छज्जा।
अंबालिका-संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में से सबसे छोटी जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिये हर लाए थे।
अंबिका-संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ।

अगौरा—संज्ञा पुं० ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग।
अगौहैं—क्रि० वि० आगे की ओर।
अग्नि—संज्ञा स्त्री० १. आग। ताप और प्रकाश। २. वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३. जठराग्नि। पाचन-शक्ति। ४. तीन की संख्या।
अग्निकर्म—संज्ञा पुं० १. अग्निहोत्र। हवन। २. शवदाह।
अग्निकीट—संज्ञा पुं० समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।
अग्निकुमार—संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।
अग्निकुल—संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक कुल या वंश।
अग्निकोण—संज्ञा पुं० पूर्व और दक्षिण का कोना।
अग्निक्रिया—संज्ञा स्त्री० शव का अग्निदाह। मुर्दा जलाना।
अग्निक्रीड़ा—संज्ञा स्त्री० आतिशबाज़ी।
अग्निगर्भ—संज्ञा पुं० सूर्यकांत मणि। आतिशी शीशा।
वि० जिसके भीतर अग्नि हो।
अग्निजिह्व—संज्ञा पुं० देवता।
अग्निजिह्वा—संज्ञा स्त्री० आग की लपट।
अग्निज्वाला—संज्ञा स्त्री० आग की लपट।
अग्निदाह—संज्ञा पुं० १. जलाना। २. शवदाह। मुर्दा जलाना।
अग्निदीपक—वि० जठराग्नि को बढ़ानेवाला।
अग्निदीपन—संज्ञा पुं० पाचन-शक्ति की बढ़ती।
अग्निपरीक्षा—संज्ञा स्त्री० १. जलती हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ पानी, तेल या लोहा छुलाकर किसी व्यक्ति के दोषी या निर्दोष होने की जाँच। २. सोने चाँदी आदि को आग में तपाकर परखना।
अग्निपुराण—संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक।
अग्निमांद्य—संज्ञा पुं० भूख न लगने का रोग। मंदाग्नि।
अग्निमुख—संज्ञा पुं० १. देवता। २. प्रेत। ३. ब्राह्मण। ४. चीते का पेड़।
अग्निवंश—संज्ञा पुं० अग्निकुल।
अग्निशाला—संज्ञा स्त्री० वह घर जिसमें अग्निहोत्र की अग्नि स्थापित हो।
अग्निशिखा—संज्ञा स्त्री० आग की लपट।
अग्निसंस्कार—संज्ञा पुं० १. तपाना। जलाना। २. शुद्धि के लिये अग्नि-स्पर्श करना। ३. मृतक का दाह-कर्म।
अग्निहोत्र—संज्ञा पुं० वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया।
अग्निहोत्री—संज्ञा पुं० अग्निहोत्र करनेवाला।
अग्न्यस्त्र—संज्ञा पुं० वह अस्त्र जिससे आग निकले।
अग्य—वि० दे० "अज्ञ"।
अग्यारी—संज्ञा स्त्री० १. अग्नि में धूप आदि सुगंध-द्रव्य देना। धूपदान। २. अग्निकुंड।
अग्र—संज्ञा पुं० आगे का भाग। अगला हिस्सा।
क्रि० वि० आगे।
वि० १. प्रथम। २. श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रगण्य—वि० जिसकी गिनती सबसे पहले हो। प्रधान। श्रेष्ठ।
अग्रज—संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई। २. अगुआ। ३. ब्राह्मण।
० वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

२. दुर्गा । भगवती । देवी । पार्वती । ३. जैनियों की एक देवी । ४. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में मझली जिन्हें भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य्य के लिये हर लाए थे ।
अंबिकेय–संज्ञा पुं० १. अंबिका के पुत्र । २. गणेश । ३. कार्त्तिकेय । ४. धृतराष्ट्र ।
अँबिया–संज्ञा स्त्री० आम का छोटा कच्चा फल जिसमें जाली न पड़ी हो । टिकोरा ।
अँबिरथा०–वि० वृथा । व्यर्थ ।
अंबु–संज्ञा पुं० १. जल । पानी । २. सुगंधवाला । ३. चार की संख्या ।
अंबुज–संज्ञा पुं० १. जल से उत्पन्न वस्तु । २. कमल । ३. बेंत । ४. वज्र । ५. ब्रह्मा । ६. शंख ।
अंबुद–वि० जो जल दे ।
संज्ञा पुं० १. बादल । २. मोथा ।
अंबुधर–संज्ञा पुं० बादल ।
अंबुधि–संज्ञा पुं० समुद्र ।
अंबुनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र ।
अंबुप–संज्ञा पुं० १. समुद्र । सागर । २. वरुण ।
अंबुपति–संज्ञा पुं० १. समुद्र । २. वरुण ।
अंबुभृत–संज्ञा पुं० १. बादल । २. समुद्र ।
अंबुराशि–संज्ञा पुं० समुद्र ।
अंबुरुह–संज्ञा पुं० कमल ।
अंबुवाह–संज्ञा पुं० बादल ।
अंबुशायी–संज्ञा पुं० विष्णु ।
अंबोह–संज्ञा पुं० भीड़-भाड़ । जमघट । झुंड ।
अंभ–संज्ञा पुं० १. जल । पानी । २. पितर लोक । ३. देव । ४. असुर । ५. पितर ।
अंभोज–वि० जल से उत्पन्न ।
संज्ञा पुं० १. कमल । २. सारस पक्षी । ३. कपूर । ४. चंद्रमा । ५. शंख ।
अंभोधर–संज्ञा पुं० बादल । मेघ ।
अंभोनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र । सागर ।
अंभोराशि–संज्ञा पुं० समुद्र ।
अंभोरुह–संज्ञा पुं० कमल ।
अँवरा–संज्ञा पुं० दे० "आँवला" ।
अंश–संज्ञा पुं० १. भाग । विभाग । २. भाज्य अंक । ३. भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या । ४. कला । ५. वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग जिसे एकाई मानकर कोण वा चाप का प्रमाण बतलाया जाता है । ६. कंधा ।
अंशक–संज्ञा पुं० १. भाग । टुकड़ा । २. हिस्सेदार । साझीदार । पट्टीदार ।
अंशपत्र–संज्ञा पुं० वह कागज़ जिसमें पट्टीदारों का अंश या हिस्सा लिखा हो ।
अंशावतार–संज्ञा पुं० वह अवतार जिसमें परमात्मा की शक्ति का कुछ भाग ही आया हो । वह जो पूर्णावतार न हो ।
अंशी–वि० [स्त्री० अंशिनी] १. अवतारी । २. अंशधारी ।
संज्ञा पुं० हिस्सेदार । साझीदार । अवयवी ।
अंशु–संज्ञा पुं० १. किरण । प्रभा । २. लता का कोई भाग । ३. सूत । तागा ।
अंशुक–संज्ञा पुं० १. पतला या महीन कपड़ा । २. रेशमी कपड़ा । ३. उपरना । दुपट्टा । ४. ओढ़नी ।
अंशुमान्–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य । २. अयोध्या के एक सूर्यवंशीय राजा ।

अग्रजन्मा–संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई। २. ब्राह्मण। ३. ब्रह्मा।
अग्रणी–वि० अगुआ। श्रेष्ठ।
अग्रशोची–संज्ञा पुं० आगे विचार करनेवाला। दूरदर्शी।
अग्रसर–संज्ञा पुं० १. आगे जानेवाला व्यक्ति। अगुआ। २. आरंभ करनेवाला। ३. मुखिया। प्रधान व्यक्ति।
अग्रहायण–संज्ञा पुं० अगहन। मार्गशीर्ष मास।
अग्राशन–संज्ञा पुं० भोजन का वह अंश जो देवता के लिये पहले निकाल दिया जाता है।
अग्राह्य–वि० १. न ग्रहण करने योग्य। २. त्याज्य। ३. न मानने लायक़।
अग्रिम–वि० १. अगाऊ। पेशगी। २. आगामी। ३. प्रधान।
अघ–संज्ञा पुं० १. पाप। पातक। २. दुःख। ३. व्यसन। ४. अघासुर।
अघट–वि० १. जो घटित न हो। २. दुर्घट। कठिन। ॐ ३. जो ठीक न घटे। बे मेल।
वि० १. जो कम न हो। अक्षय। २. एकरस।
अघटित–वि० १. जो घटित न हुआ हो। २. असंभव। न होने योग्य। ॐ ३. अवश्य होनेवाला। अमिट। अनिवार्य।
ॐ वि० [हिं० घटना] बहुत अधिक। जो घटकर न हो।
अघातॐ–संज्ञा पुं० दे० "आघात"। वि० खूब। अधिक।
अघाना–क्रि० अ० १. भोजन से तृप्त होना। २. संतुष्ट होना। ३. प्रसन्न होना। ४. थकना।
अघारि–संज्ञा पुं० १. पाप का शत्रु। पापनाशक। २. श्रीकृष्ण।
अघासुर–संज्ञा पुं० कंस का सेनापति अघ दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
अघी–वि० पापी। पातकी।
अघोर–वि० १. अत्यंत घोर। बहुत भयंकर। २. सौम्य। सुहावना।
संज्ञा पुं० १. शिव का एक रूप। २. एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मद्य-मांस का व्यवहार करते हैं और मल-मूत्र आदि से घृणा नहीं करते।
अघोरनाथ–संज्ञा पुं० शिव।
अघोरपंथ–संज्ञा पुं० अघोरियों का मत। औघड़ संप्रदाय।
अघोरी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अघोरिन्] अघोर मत का अनुयायी। औघड़। वि० घृणित। घिनौना।
अघौघ–संज्ञा पुं० पापों का समूह।
अचंभा–संज्ञा पुं० १. आश्चर्य। अचरज। विस्मय। २. अचरज की बात।
अचंभितॐ–वि० आश्चर्यान्वित। चकित। विस्मित।
अचंभोॐ–संज्ञा पुं० दे० "अचंभा"।
अचक–वि० भरपूर। बहुत।
संज्ञा पुं० घबराहट। विस्मय।
अचकन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लंबा अंगा।
अचक्का–संज्ञा पुं० अनजान।
अचर–वि० न चलनेवाला। स्थावर। जड़।
अचरज–संज्ञा पुं० आश्चर्य। अचंभा। तअज्जुब।
अचल–वि० १. जो न चले। २. चिरस्थायी। सब दिन रहनेवाला। ३. ध्रुव। ४. जो नष्ट न हो।
संज्ञा पुं० पर्वत। पहाड़।

अंशुमाली–संज्ञा पुं० सूर्य्य ।

अंस–संज्ञा पुं० दे० "अंश" ।

अंसुआ, अँसुआ०†–संज्ञा पुं० दे० "आँसू" ।

अंह–संज्ञा पुं० १. पाप । दुष्कर्म । अपराध । २. दुःख । व्याकुलता । ३. विघ्न । बाधा ।

अँहड़ा–संज्ञा पुं० तौलने का बाट । बटखरा ।

अ–उप० संज्ञा और विशेषण शब्दों से पहिले लगकर यह उनके अर्थों में फेरफार करता है । जिस शब्द के पहले यह लगाया जाता है, उस शब्द के अर्थ का प्रायः अभाव सूचित करता है । जैसे—अधर्म, अन्याय, अचल । कहीं कहीं यह अक्षर शब्दके अर्थ को दूषित भी करता है । जैसे—अभागा, अकाल । स्वर से आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब इस अक्षर को लगाना होता है, तब उसे "अन" कर देते हैं । जैसे—अनंत, अनेक, अनीश्वर ।

संज्ञा पुं० [सं०] १. विष्णु । २. विराट । ३. अग्नि । ४. विश्व । ५. ब्रह्मा । ६. इंद्र । ७. ललाट । ८. वायु । ९. कुबेर । १०. अमृत । ११. कीर्त्ति । १२. सरस्वती ।

वि० १. रक्षक । २. उत्पन्न करनेवाला ।

अउर०–संयो० दे० "और" ।

अकंटक–वि० १. बिना काँटे का । २. निर्विघ्न । बिना रोक-टोक का । ३. शत्रु-रहित ।

अकंपन–वि० [वि० अकंपित, अकंप्य] न काँपनेवाला । स्थिर ।

अक–संज्ञा पुं० १. पाप । २. दुःख ।

अकच्छ–वि० १. नंगा । २. व्यभिचारी । परस्त्रीगामी । ३. परेशान । पीड़ित ।

अकड़–संज्ञा स्त्री० १. ऐंठ । तनाव । २. घमंड । अहंकार । शेखी । ३. ढिठाई । ४. हठ ।

अकड़ना–क्रि० अ० [संज्ञा अकड़, अकड़ाव] १. ऐंठना । २. ठिठुरना । सुन्न होना । ३. तनना । ४. शेखी करना । ५. ढिठाई करना । ६. हठ करना । ७. चिटकना ।

अकड़बाज़–वि० ऐंठदार । शेखीबाज़ । अभिमानी ।

अकड़बाज़ी–संज्ञा स्त्री० ऐंठ । शेखी । अभिमान ।

अकड़ाव–संज्ञा पुं० ऐंठन । खिंचाव ।

अकड़ू†–संज्ञा पुं० दे० "अकड़बाज़" ।

अकड़ैत–वि० दे० "अकड़बाज़" ।

अकत०–वि० सारा । समूचा ।

क्रि० वि० बिलकुल । सरासर ।

अकत्थ–वि० दे० "अकथ" ।

अकथ–वि० १. जो कहा न जा सके । अकथनीय । २. न कहने योग्य ।

अकथनीय–वि० न कहे जाने योग्य ।

अकथ्य–वि० न कहने योग्य ।

अकधक०†–संज्ञा पुं० आशंका । आगा-पीछा । सोच-विचार । भय । डर ।

अकनना†–क्रि० स० कान लगाकर सुनना । आहट लेना ।

अकना–क्रि० अ० ऊबना । घबराना ।

अकबक–संज्ञा स्त्री० १. निरर्थक वाक्य । अनाप शनाप । २. घबराहट । खटका ।

वि० [सं० अवाक्] भौचक्का ।

अचला–वि० स्त्री० जो न चले। स्थिर। ठहरी हुई।
संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

अचला सप्तमी–संज्ञा स्त्री० माघ शुक्ला सप्तमी।

अचवन–संज्ञा पुं० १. आचमन। पीने की क्रिया। २. भोजन के पीछे हाथ-मुँह धोकर कुल्ला करना।

अचाका०–क्रि० वि० अचानक। सहसा।

अचानक–क्रि० वि० एकबारगी। सहसा। अकस्मात्।

अचार–संज्ञा पुं० मसालों के साथ तेल में कुछ दिन रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी। कचूमर।
० संज्ञा पुं० दे० "आचार"।
संज्ञा पुं० चिरौंजी का पेड़।

अचारज०–संज्ञा पुं० दे० "आचार्य्य"।

अचारी०–संज्ञा पुं० १. आचार-विचार से रहनेवाला आदमी। २. रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।
संज्ञा स्त्री० छिले हुए कच्चे आम की धूप में सिझाई फाँक।

अचिंत०–वि० चिंतारहित। निश्चिंत। बेफ़िक्र।

अचिंतनीय–वि० जो ध्यान में न आ सके। अज्ञेय। दुर्बोध।

अचिंतित–वि० १. जिसका चिंतन न किया गया हो। बिना-सोचा विचारा। २. आकस्मिक। ३. निश्चिंत। बेफ़िक्र।

अचिंत्य–वि० १. जिसका चिंतन न हो सके। २. जिसका अंदाज़ा न हो सके। अतुल्य। ३. आशा से अधिक। ४. आकस्मिक।

अचित्–संज्ञा पुं० जड़ प्रकृति।

अचिर–क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

अचीता–वि० [स्त्री० अचीती] १. जिसका पहले से अनुमान न हो। आकस्मिक। २. बहुत।
वि० [सं० अचिंत] निश्चिंत। बेफ़िक्र।

अचूक–वि० [सं० अच्युत] १. जो अवश्य फल दिखावे। २. ठीक। पक्का।
क्रि० वि० १. सफ़ाई से। कौशल से। २. ज़रूर।

अचेत–वि० १. बेसुध। बेहोश। २. व्याकुल। ३. अनजान। बेख़बर। ४. नासमझ। मूढ़। ० ५. जड़।
० संज्ञा पुं० जड़ प्रकृति। जड़त्व। माया। अज्ञान।

अचेतन–वि० १. जिसमें सुख-दुःख आदि के अनुभव की शक्ति न हो। चेतना रहित। जड़। २. मूर्च्छित।

अचैतन्य–संज्ञा पुं० वह जो ज्ञान-स्वरूप न हो। अनात्मा। जड़।

अचौना०–संज्ञा पुं० आचमन करने या पीने का बरतन। कटोरा।

अच्छ–वि० स्वच्छ। निर्मल।
संज्ञा पुं० दे० "अक्ष"।

अच्छत–संज्ञा पुं० दे० "अक्षत"।

अच्छर†–संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

अच्छरा, अच्छरी०–संज्ञा स्त्री० अप्सरा।

अच्छा–वि० उत्तम। बढ़िया। उमदा।

अच्छाई–संज्ञा स्त्री० अच्छापन। उत्तमता।

अच्छौहिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी"।

अच्युत–वि०[सं०] १. जो गिरा न हो। २. अटल। स्थिर। ३. नित्य। अविनाशी। ४. जो विचलित न हो।

अकचकाना-क्रि० अ० चकित होना। घबराना।

अकथरी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई। २. लकड़ी पर की एक नक्काशी।

अकथाल-संज्ञा पुं० दे० "इकबाल"।

अकर-वि० १. न करने योग्य। कठिन। २. बिना हाथ का। ३. बिना कर या महसूल का।

अकरकरा-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

अकरण-संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अकरणीय] १. कर्म का अभाव। २. कर्म का न किए हुए के समान या फल-रहित होना। ३. इंद्रियों से रहित, ईश्वर। परमात्मा।
वि० न करने योग्य। कठिन।
*वि० [सं० अकारण] बिना कारण का।

अकरणीय-वि० [सं०] न करने योग्य।

अकरा-वि० १. न मोल लेने योग्य। महँगा। २. खरा। श्रेष्ठ। उत्तम।

अकरास-संज्ञा स्त्री० [हिं० अकड़] अँगड़ाई। देह टूटना।
संज्ञा स्त्री० आलस्य। सुस्ती।

अकरासू-वि० स्त्री० गर्भवती।

अकरी-संज्ञा स्त्री० हल में लगा लकड़ी का चोंगा जिसमें बीज डालते जाते हैं।

अकर्त्ता-वि० कर्म का न करनेवाला। कर्म से अलग।

अकर्तृक-संज्ञा पुं० बिना कर्त्ता का। जिसका कोई कर्त्ता या रचयिता न हो।

अकर्म-संज्ञा पुं० १. न करने योग्य कार्य। बुरा काम। २. कर्म का अभाव।

अकर्मक-संज्ञा पुं० वह क्रिया जिसे किसी कर्म की आवश्यकता न हो। (व्या०)

अकर्मण्य-वि० कुछ काम न करने-वाला। आलसी।

अकर्मी-संज्ञा पुं० [स्त्री० अकर्मिणी] बुरा कर्म करनेवाला। पापी। अपराधी।

अकलंक-वि० निष्कलंक। दोषरहित।
† संज्ञा पुं० दोष।

अकलंकित-वि० निष्कलंक। निर्दोष।

अकल-वि० १. जिसके खंड न हों। समूचा। २. परमात्मा का एक वि-शेषण।
वि० विकल। व्याकुल। बेचैन।
संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल"।

अकवन-संज्ञा पुं० आक। मदार।

अकस-संज्ञा पुं० बैर। द्वेष।

अकसना-क्रि० स० १. अकस रखना। बैर करना। २. बराबरी करना।

अकसर-क्रि० वि० प्रायः। बहुधा।
*क्रि० वि०। वि० (प्रत्य०) अकेले। बिना किसी के साथ।

अकसीर-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन। कीमिया। २. वह ओषधि जो प्रत्येक रोग को नष्ट करे।
वि० अव्यर्थ। अत्यंत गुणकारी।

अकस्मात्-क्रि० वि० १. अचानक। एकबारगी। सहसा। २. दैव-योग से।

अकह*-वि० दे० "अकथ"।

अकांड-वि० बिना शाखा का।
क्रि० वि० अकस्मात्। सहसा।

अकांडतांडव-संज्ञा पुं० व्यर्थ की उछल-कूद। व्यर्थ की बकवाद। वितं-डावाद।

संज्ञा पुं० विष्णु।
अछकः–वि० बिना छका हुआ। अतृप्त। भूखा।
अछतः–क्रि० वि० ['आछना' का कृदंत रूप] रहते हुए। सम्मुख। सामने।
अछनाः–क्रि० अ० विद्यमान रहना।
अछयः–वि० दे० "अक्षय"।
अछराः–संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा"।
अछरी–संज्ञा स्त्री० दे० "अछरा"।
अछरौटी–संज्ञा स्त्री० वर्णमाला।
अछवानी–संज्ञा स्त्री० अजवाइन, सोंठ तथा मेवों को पीसकर घी में पकाया हुआ मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।
अछामः–वि० १. मोटा। २. बड़ा। भारी। ३. हृष्ट-पुष्ट। बलवान्।
अछूत–वि० १. जो छुआ न गया हो। अस्पृष्ट। २. जो काम में न लाया गया हो। नया। ताज़ा। ३. जिसे अपवित्र मानकर लोग न छूएँ। अस्पृश्य। (आधुनिक)
अछूता–वि० [स्त्री० अछूती] १. जो छुआ न गया हो। अस्पृष्ट। २. जो काम में न लाया गया हो। नया। कोरा। ताज़ा।
अछेद्य–वि० १. जिसका छेदन न हो सके। अभेद्य। २. अविनाशी।
अछेवः–वि० छिद्र या दूषण-रहित। निर्दोष। बेदाग़।
अछेहः–वि० १. निरंतर। लगातार। २. बहुत अधिक। ज़्यादा।
अछोपः–वि० १. आच्छादन-रहित। नंगा। २. तुच्छ। दीन।
अछोह–संज्ञा पुं० १. क्षोभ का अभाव। शांति। स्थिरता। २. दया-शून्यता। निर्दयता।
अछोही–वि० दे० "अछोह"।
अज–वि० जिसका जन्म न हो। अजन्मा। स्वयंभू।
संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कामदेव। ५. सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे। ६. बकरा। ७. भेंड़ा। ८. माया। शक्ति।
ःक्रि० वि० अब। अभी तक। (यह शब्द "हूँ" के साथ आता है।)
अजगर–संज्ञा पुं० बहुत मोटी जाति का साँप जो अपने शरीर के भारीपन के लिये प्रसिद्ध है।
अजगरी–संज्ञा स्त्री० अजगर की सी बिना परिश्रम की जीविका।
वि० १. अजगर का सा। २. बिना परिश्रम का।
अजगव–संज्ञा पुं० शिवजी का धनुष। पिनाक।
अजगुत–संज्ञा पुं० [सं० अयुक्त, पुं० हिं० अजुगुति] १. युक्ति-विरुद्ध बात। अचंभे की बात। २. अनुचित बात। असंगत बात।
वि० १. आश्चर्यजनक। २. असंगत।
अजदहा–संज्ञा पुं० दे० "अजगर"।
अजनबी–वि० १. अपरिचित। २. नया आया हुआ। परदेसी। ३. अनजान। नावाक़िफ़।
अजन्म–वि० दे० "अजन्मा"।
अजन्मा–वि० जो जन्म के बंधन में न आवे। अनादि। नित्य।
अजपा–वि० १. जिसका उच्चारण न किया जाय। २. जो न जपे या भजे।
संज्ञा पुं० उच्चारण न किया जानेवाला तांत्रिकों का एक मंत्र।
अजब–वि० विलक्षण। अद्भुत।

अकाज-संज्ञा पुं० [क्रि० अकाजना, वि० अकाजी] १. नुकसान । हर्ज । विघ्न । बिगाड़ । २. दुष्कर्म । खोटा काम । ⊙क्रि० वि० व्यर्थ । बिना काम । निष्प्रयोजन ।

अकाजना⊙-क्रि० अ० १. हानि होना । २. गत होना । मरना । क्रि० स० हानि करना ।

अकाट्य-वि० जिसका खंडन न हो सके । दृढ़ । मज़बूत ।

अकाम-वि० बिना कामना का । इच्छाविहीन ।
क्रि० वि० [सं० अकर्म] बिना काम के । व्यर्थ ।

अकाय-वि० १. बिना शरीरवाला । २. शरीर न धारण करनेवाला । जन्म न लेनेवाला । ३. निराकार ।

अकार-संज्ञा पुं० "अ" अक्षर ।

अकारज⊙-संज्ञा पुं० कार्य की हानि । नुकसान । हर्ज ।

अकारण-वि० १. बिना कारण का । २. जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो । स्वयंभू ।
क्रि० वि० बिना कारण के । बे सबब ।

अकारथ⊛†-क्रि० वि० बे काम । फ़जूल । वृथा ।

अकाल-संज्ञा पुं० १. दुष्काल । दुर्भिक्ष । मँहगी । कुसमय ।
क्रि० प्र०—पड़ना ।
२. घाटा । कमी ।

अकालकुसुम-संज्ञा पुं० १. बिना समय या ऋतु में फूला हुआ फूल । (अशुभ) २. बे समय की चीज़ ।

अकालमृत्यु-संज्ञा स्त्री० बे समय की मृत्यु । असामयिक मृत्यु । थोड़ी अवस्था में मरना ।

अकाली-संज्ञा पुं० नानकपंथी साधु जो सिर में चक्र के साथ काले रंग की पगड़ी बाँधे रहते हैं ।

अकास⊙-संज्ञा पुं० दे० "आकाश" ।

अकासबानी-संज्ञा स्त्री० दे० "आकाश-वाणी" ।

अकासबेल-संज्ञा स्त्री० अंबर-बेलि । अमरबेल ।

अकासी⊙†-संज्ञा स्त्री० १. चील । २. ताड़ी ।

अकिंचन-वि० [सं०] निर्धन । कंगाल ।

अकिल†-संज्ञा स्त्री० दे० "अक्ल" ।

अकिलदाढ़-संज्ञा पुं० पूरी अवस्था प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त दाँत ।

अकीर्त्ति-संज्ञा स्त्री० अयश । अपयश । बदनामी ।

अकुंठ-वि० [सं०] १. तीक्ष्ण । चोखा । २. खरा । उत्तम ।

अकुताना⊙-क्रि० अ० दे० "उक-ताना" ।

अकुल-वि० [सं०] १. जिसके कुल में कोई न हो । २. बुरे या नीच कुल का ।
संज्ञा पुं० बुरा कुल । नीच कुल ।

अकुलाना-क्रि० अ० १. जल्दी करना । २. घबराना । ३. मग्न होना ।

अकुलीन-वि० तुच्छ वंश में उत्पन्न । कमीना ।

अकूत-वि० [सं० अ + हिं० कूतना] जो कूता न जा सके । बहुत अधिक ।

अकृत-वि० १. बिना किया हुआ । २. बिगाड़ा हुआ । ३. जो किसी का बनाया न हो । स्वयंभू । ४. निक-

विचित्र । अनोखा ।
अज़माना–क्रि० स० दे० "आज़-माना" ।
अजय–संज्ञा पुं० पराजय । हार । वि० जो जीता न जा सके । अजेय ।
अजया–संज्ञा स्त्री० विजया । भाँग । * संज्ञा स्त्री० बकरी ।
अजर–वि० १. जरा-रहित । जो बूढ़ा न हो । २. जो सदा एकरस रहे । वि० जो न पचे । जो न हज़म हो ।
अजराल–वि० बलवान् ।
अजवायन–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं । यवानी ।
अजस*–संज्ञा पुं० अपयश । अप-कीर्ति । बदनामी ।
अजसी–वि० अपयशी । बदनाम । निंद्य ।
अजस्र–क्रि० वि० सदा । हमेशा ।
अज़हद–क्रि० वि० हद से ज़्यादा । बहुत अधिक ।
अजा–वि० स्त्री० जिसका जन्म न हुआ हो । जन्म-रहित । संज्ञा स्त्री० १. बकरी । २. शक्ति । दुर्गा ।
अजात–वि० जो पैदा न हुआ हो । जन्म-रहित । अजन्मा ।
अजातशत्रु–वि० जिसका कोई शत्रु न हो । शत्रुविहीन ।
अजाती–वि० जाति से निकाला हुआ ।
अजान–वि० [सं० अज्ञान] १. जो न जाने । अनजान । २. अपरिचित । संज्ञा पुं० अज्ञानता । संज्ञा पुं० नमाज़ की पुकार जो मस-जिदों में होती है । बाँग ।
अजामिल–संज्ञा पुं० पुराणों के अनु-सार एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र 'नारायण' का नाम पुकारने से तर गया था ।
अजाय*–वि० बेजा । अनुचित ।
अजायब–संज्ञा पुं० अजब का बहु-वचन । विलक्षण पदार्थ या व्यापार ।
अजायबख़ाना–संज्ञा पुं० वह भवन जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ रखते हैं । अद्भुत-वस्तु-संग्र-हालय । म्यूज़ियम ।
अजार*–संज्ञा पुं० दे० "आज़ार" ।
अजिऔरा*†–संज्ञा पुं० आजी या दादी के पिता का घर ।
अजित–वि० जो जीता न गया हो । संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. शिव । ३. बुद्ध ।
अजितेंद्रिय–वि० [सं०] जो इंद्रियों के वश में हो ।
अजिर–संज्ञा पुं० १. आँगन । सहन । २. वायु । हवा ।
अजी–अव्य० संबोधन शब्द । जी ।
अजीत–वि० दे० "अजित" ।
अजीब–वि० विलक्षण । विचित्र ।
अजीरन–संज्ञा पुं० दे० "अजीर्ण" ।
अजीर्ण–संज्ञा पुं० [सं०] १. अपच । बदहज़मी । २. बहुतायत । जैसे—बुद्धि का अजीर्ण । (व्यंग्य)
अजुगुत–संज्ञा पुं० दे० "अजगुत" ।
अजूँ*–अव्य० दे० "अर्जी" ।
अजूबा–वि० अद्भुत । अनोखा ।
अजेय–वि० जिसे कोई जीत न सके ।
अजोग–वि० दे० "अयोग्य" ।
अजोता–संज्ञा पुं० चैत्र की पूर्णिमा । (इस दिन बैल नहीं नाधे जाते ।)
अजौं*–क्रि० वि० अब भी । अब तक ।
अज्ञ–वि० संज्ञा पुं० अज्ञानी । जड़ ।

म्मा। बेकाम। ५. बुरा। मंदा।

अकेला-वि० [स्त्री० अकेली] १. जिसके साथ कोई न हो। तनहा। २. अद्वितीय। निराला।
संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

अकेले-क्रि० वि० १. किसी साथी के बिना। २. सिर्फ। केवल।

अकोतर सौ-वि० सौ के ऊपर एक। एक सौ एक।

अकोसना-क्रि० स० दे० "कोसना"।

अकौआ-संज्ञा पुं० १. आक। मदार। २. गले में का कौआ। घंटी।

अक्खड़-वि० [हिं० अड़+खड़ा] १. किसी का कहना न माननेवाला उद्धत। २. झगड़ालू। ३. निर्भय। ४. असभ्य। ५. उजड्ड। ६. खरा।

अक्खड़पन-संज्ञा पुं० [हिं० अक्खड़+पन] १. अशिष्टता। २. उग्रता। ३. स्पष्टवादिता।

अक्खर-संज्ञा पुं० दे० "अक्षर"।

अक्खो मक्खो-संज्ञा पुं० दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुँह पर 'अक्खोमक्खो' कहते हुए फेरना। (नजर से बचाने के लिये)

अक्रम-वि० अंड-बंड। बे सिलसिले।
संज्ञा पुं० क्रम का अभाव। व्यतिक्रम।

अक्रिय-वि० १. जो कर्म न करे। क्रियारहित। २. निश्चेष्ट। जड़।

अक्रूर-वि० जो क्रूर न हो। सरल।
संज्ञा पुं० श्वफल्क का पुत्र एक यादव जो श्रीकृष्ण का चाचा लगता था।

अक्ल-संज्ञा स्त्री० बुद्धि। समझ। ज्ञान। प्रज्ञा।

अक्लमंद-संज्ञा पुं० बुद्धिमान्। चतुर।

अक्लमंदी-संज्ञा स्त्री० समझदारी। चतुराई।

अक्लिष्ट-वि० १. कष्ट-रहित। २. सुगम।

अक्ष-संज्ञा पुं० [स्त्री० अक्षा] १. खेलने का पासा। २. चौसर। ३. वह कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के भीतरी केंद्र से होती हुई उसके आर-पार दोनों ध्रुवों पर निकली है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई मानी गई है। ४. तराजू की डाँडी। ५. आँख। ६. रुद्राक्ष।

अक्षक्रीड़ा-संज्ञा स्त्री० पासे का खेल। चौसर। चौपड़।

अक्षत-वि० बिना टूटा हुआ। अखंडित। समूचा।
संज्ञा पुं० १. बिना टूटा हुआ चावल जो देवताओं की पूजा में चढ़ाया जाता है। २. धान का लावा। ३. जौ।

अक्षतयोनि-वि० स्त्री० (कन्या) जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो।

अक्षता-वि० स्त्री० जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो (स्त्री)।
संज्ञा स्त्री० वह पुनर्भू स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

अक्षपाद-संज्ञा पुं० १. न्यायशास्त्र के प्रवर्त्तक गौतम ऋषि। २. तार्किक। नैयायिक।

अक्षम-वि० [संज्ञा अक्षमता] १. असमर्थ। अशक्त। २. असहिष्णु।

अक्षय-वि० जिसका क्षय न हो। अविनाशी।

अक्षय तृतीया-संज्ञा स्त्री० वैशाख

अज्ञता-संज्ञा स्त्री० मूर्खता । नादानी ।
अज्ञा॰-संज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा" ।
अज्ञात-वि० [सं०] बिना जाना हुआ । अप्रकट ।
॰क्रि०वि० बिना जाने । अनजान में ।
अज्ञातवास-संज्ञा पुं० ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके ।
अज्ञान-संज्ञा पुं० जड़ता । मूर्खता ।
वि० मूर्ख । जड़ । नासमझ ।
अज्ञानता-संज्ञा स्त्री० जड़ता । मूर्खता । अविद्या । नासमझी ।
अज्ञानी-वि० मूर्ख । नासमझ ।
अज्ञेय-वि० जो समझ में न आ सके ।
अज्यों॰-क्रि० वि० दे० "अजौं" ।
अटंबर-संज्ञा पुं० अटाला । ढेर । राशि ।
अट-संज्ञा स्त्री० शर्त । कैद । प्रतिबंध ।
अटक-संज्ञा स्त्री० [क्रि० अटकना । वि० अटकाऊ] १. रोक । रुकावट । अड़चन । २. संकोच । हिचक । ३. सिंध नदी ।
अटकन-बटकन-संज्ञा पुं० [देश०] छोटे लड़कों का एक खेल ।
अटकना-क्रि० अ० रुकना । ठहरना । अड़ना ।
अटकरना-क्रि० स० अंदाज़ करना । अटकल लगाना ।
अटकल-संज्ञा स्त्री० १. अनुमान । कल्पना । २. अंदाज़ । कूत ।
अटकलना-क्रि०स० अटकल लगाना । अनुमान करना ।
अटकल पच्चू-संज्ञा पुं० मोटा अंदाज़ । कल्पना ।
वि० खयाली । ऊटपटांग ।
क्रि० वि० अंदाज़ से । अनुमान से ।
अटका-संज्ञा पुं० जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात और धन ।
अटकाना-क्रि० स० १. रोकना । २. फँसाना । ३. पूरा करने में विलंब करना ।
अटकाव-संज्ञा पुं० १. रोक । रुकावट । २. बाधा । विघ्न ।
अटखट॰-वि० अट्टसट्ट । अंडबंड ।
अटन-संज्ञा पुं० घूमना । फिरना ।
अटना-क्रि० अ० घूमना । फिरना ।
क्रि० अ० आड़ करना । ओट करना । छेकना ।
अटपट-वि० [स्त्री० अटपटी] १. विकट । कठिन । २. दुर्गम । दुस्तर । ३. गूढ़ । जटिल । ४. ऊटपटांग ।
अटपटाना-क्रि० अ० [हिं० अटपट] अटकना । लड़खड़ाना ।
अटपटी॰-संज्ञा स्त्री० अज्ञेय । जो समझ में न आवे ।
अटल-वि० जो न टले । स्थिर । नित्य । चिरस्थायी । ध्रुव । पक्का ।
अटवी-संज्ञा स्त्री० वन । जंगल ।
अटा-संज्ञा स्त्री० घर के ऊपर की कोठरी । अटारी ।
संज्ञा पुं० अटाला । ढेर । राशि । समूह ।
अटारी-संज्ञा स्त्री० घर के ऊपर की कोठरी या छत । चौबारा । कोठा ।
अटाल-संज्ञा पुं० बुर्ज । धरहरा ।
अटाला-संज्ञा पुं० १. ढेर । सामान । असबाब । २. कसाइयों की बस्ती ।
अटूट-वि० १. न टूटने योग्य । मज़बूत । २. जिसका पतन न हो । अजेय । ३. अखंड । ४. बहुत अधिक ।
अटेरन-संज्ञा पुं० [क्रि० अटेरना] १. सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यंत्र । २. घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति ।
अटेरना-क्रि० स० १. अटेरन से सूत

शुक्ल तृतीया । आखा तीज । (स्नान-दान)

अक्षय नवमी-संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ला नवमी । (स्नान दान आदि)

अक्षयवट-संज्ञा पुं० प्रयाग और गया में एक बरगद का पेड़, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते ।

अक्षय्य-वि० अक्षय । अविनाशी ।

अक्षर-वि० अविनाशी । नित्य ।
संज्ञा पुं० १. अकारादि वर्ण । हरफ़ । २. आत्मा । ३. ब्रह्म । ४. आकाश । ५. धर्म । ६. तपस्या । ७. मोक्ष । ८. जल ।

अक्षरशः-क्रि० वि० एक एक अक्षर । बिलकुल । सब ।

अक्षरेखा-संज्ञा स्त्री० वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के भीतर केंद्र से होकर दोनों पृष्ठों पर लंब रूप से गिरे ।

अक्षरौटी-संज्ञा स्त्री० १. वर्णमाला । २. लेख । ३. वे पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं ।

अक्षांश-संज्ञा पुं० १. भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागों पर से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व पश्चिम मानी गई हैं । २. वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है । ३. भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थान के बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर ।

अक्षि-संज्ञा स्त्री० आँख । नेत्र ।

अक्षुण्ण-वि० बिना टूटा हुआ । समूचा ।

अक्षोट-संज्ञा पुं० अखरोट ।

अक्षोनी*-संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षौहिणी" ।

अक्षोभ-संज्ञा पुं० क्षोभ का अभाव । शांति ।
वि० १. शांत । २. मोहरहित । ३. निडर ।

अक्षौहिणी-संज्ञा स्त्री० पूरी चतुरंगिणी सेना जिसमें १,०६,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और २१,८७० हाथी होते थे ।

अक्स-संज्ञा पुं० १. प्रतिबिंब छाया । २. तसवीर ।

अक्सर-क्रि० वि० दे० "अकसर" ।

अखंड-वि० १. जिसके टुकड़े न हों । २. लगातार । ३. बेरोक । निर्विघ्न ।

अखंडनीय-वि० १. जिसके टुकड़े न हो सकें । २. जिसके विरुद्ध न कहा जा सके । पुष्ट । युक्तियुक्त ।

अखंडल०-वि० १. अखंड । २. समूचा ।
संज्ञा पुं० दे० "आखंडल" ।

अखड़ैत-संज्ञा पुं० मल्ल । बलवान् पुरुष ।

अखती, अखतीज-संज्ञा स्त्री० दे० "अक्षय तृतीया" ।

अखनी-संज्ञा स्त्री० मांस का रसा । शोरबा ।

अखबार-संज्ञा पुं० समाचारपत्र । संवादपत्र । खबर का कागज़ ।

अखरना-क्रि० स० खलना । बुरा लगना ।

अखरा*-वि० भूठा । बनावटी ।

की घाटी बनाना। २. मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना।
अटोक॰–वि॰ बिना रोक-टोक का।
अट्टसट्ट–संज्ञा पुं॰ [अनु॰] अनाप-शनाप। व्यर्थ की बात।
अट्टहास–संज्ञा पुं॰ ज़ोर की हँसी।
अट्टालिका–संज्ञा स्त्री॰ अटारी। कोठा।
अट्टी–संज्ञा स्त्री॰ अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन। लच्छा।
अट्ठा–संज्ञा पुं॰ ताश का वह पत्ता जिस पर किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।
अट्ठाईस–वि॰ बीस और आठ।
अट्ठानवे–वि॰ एक संख्या। नब्बे और आठ।
अट्ठावन–वि॰ पचास और आठ।
अट्ठासी–वि॰ दे॰ "अठासी"।
अठ*–वि॰ दे॰ "आठ"। (समास में)।
अठई–संज्ञा स्त्री॰ अष्टमी तिथि।
अठकौसल–संज्ञा पुं॰ १. गोष्ठी। पंचायत। २. सलाह। मंत्रणा।
अठखेली–संज्ञा स्त्री॰ विनोद। क्रीड़ा। चुलबुलापन।
अठत्तर–वि॰ दे॰ "अठहत्तर"।
अठन्नी–संज्ञा स्त्री॰ आठ आने का चाँदी का सिक्का।
अठपहला–वि॰ [सं॰ अष्टपटल] आठ कोनेवाला।
अठमासा–संज्ञा पुं॰ दे॰ "अठवाँसा"।
अठमासी–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ आठ+ माशा] आठ माशे का सोने का सिक्का। सावरिन। गिनी।
अठलाना॰–क्रि॰ अ॰ १. ऐंठ दिखलाना। इतराना। २. चोचला करना। ३. मस्ती दिखाना।
अठवाँसा–वि॰ [सं॰ अष्टमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो जाय।
संज्ञा पुं॰ १. सीमंत संस्कार। २. वह खेत जो असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय।
अठवारा–संज्ञा पुं॰ आठ दिन का समय। सप्ताह। हफ़्ता।
अठहत्तर–वि॰ सत्तर और आठ। ७८।
अठाई॰†–वि॰ उत्पाती। नटखट।
अठान॰–संज्ञा पुं॰ १. अयोग्य या दुष्कर कर्म। २. बैर। शत्रुता।
अठाना॰†–क्रि॰ स॰ सताना। पीड़ित करना।
क्रि॰ स॰ मचाना। ठानना।
अठारह–वि॰ दस और आठ।
अठासी–वि॰ अस्सी और आठ।
अठिलाना॰–क्रि॰ अ॰ दे॰ "अठलाना"।
अठेल॰–वि॰ बलवान्। ज़ोरावर।
अठोतरी–संज्ञा स्त्री॰ एक सौ आठ दानों की जपमाला।
अड़ंगा–सं॰ टाँग अड़ाना। रुकावट।
अड़ंड॰–वि॰ दे॰ "अदंड्य"।
अड़–संज्ञा पुं॰ [सं॰ हठ] हठ। ज़िद।
अडग–वि॰ न डिगनेवाला।
अड़गड़ा–संज्ञा पुं॰ १. बैलगाड़ियों के ठहरने का स्थान। २. बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।
अड़गोड़ा–संज्ञा पुं॰ लकड़ी का टुकड़ा जिसे नटखट चौपायों के गले में बाँधते हैं।
अड़चन–संज्ञा स्त्री॰ कठिनाई। दिक़्क़त।
अड़तालीस–वि॰ चालीस और आठ।
अड़तीस–वि॰ तीस और आठ।

संज्ञा पुं० भूसी मिला हुआ जौ का आटा।

अखरावट, अखरावटी–संज्ञा स्त्री० दे० "अखरौटी"।

अखरोट–संज्ञा पुं० एक फलदार ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफ़ग़ानिस्तान तक होता है।

अखाड़ा–संज्ञा पुं० १. कुश्ती लड़ने या कसरत करने के लिये बनाई हुई चौखूँटी जगह। २. साधुओं की सांप्रदायिक मंडली। जमायत। ३. तमाशा दिखानेवालों और गाने-बजानेवालों की मंडली। ४. सभा। दरबार।

अखिल–वि० १. संपूर्ण। २. सर्वांगपूर्ण। अखंड।

अखीर–संज्ञा पुं० १. अंत। छोर। २. समाप्ति।

अखूट–वि० जो न घटे या चुके। अक्षय। बहुत।

अखैबर–संज्ञा पुं० अक्षयवट।

अखोह–संज्ञा पुं० ऊँची-नीची या ऊबड़-खाबड़ भूमि।

अखोट, अखोटा–१. जाँते या चक्की के बीच की खूँटी। किली। २. लकड़ी या लोहे का डंडा जिस पर गड़ारी घूमती है।

अख्खाह!–अव्य० उद्वेग या आश्चर्य-सूचक शब्द।

अख्तियार–संज्ञा पुं० दे० "इख्तियार"।

अख्यान*–संज्ञा पुं० दे० "आख्यान"।

अग–वि० १. न चलनेवाला। स्थावर। २. टेढ़ा चलनेवाला।
संज्ञा पुं० १. पेड़। वृक्ष। २. पर्वत। ३. सूर्य। ४. साँप।

अगज–वि० पर्वत से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. शिलाजीत। २. हाथी।

अगड़धत्ता–वि० १. लंबा-तड़ंगा। ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

अगड़बगड़–वि० अंड बंड।
संज्ञा पुं० १. बे सिर पैर की बात। प्रलाप। २. अंड बंड काम।

अगड़ा†–संज्ञा पुं० अनाजों की बाल जिसमें से दाना झाड़ लिया गया हो।

अगण–संज्ञा पुं० छंदःशास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणनीय–वि० १. न गिनने योग्य। सामान्य। २. अनगिनत।

अगणित–वि० जिसकी गणना न हो।

अगण्य–वि० १. न गिनने योग्य। २. सामान्य। तुच्छ। ३. असंख्य। बेशुमार।

अगति–संज्ञा स्त्री० १. बुरी गति। दुर्दशा। खराबी। २. मृत्यु के पीछे की बुरी दशा। नरक। ३. स्थिरता।

अगतिक–वि० जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो। अशरण।

अगती–वि० [सं० अगति] बुरी गति-वाला। पापी।
†वि० स्त्री० अगाऊ। पेशगी।
क्रि० वि० आगे से। पहले से।

अगम–वि० [सं० अगम्य] १. जहाँ कोई जा न सके। २. विकट। कठिन। ३. बुद्धि के परे। दुर्बोध। ४. अथाह।
* संज्ञा पुं० दे० "आगम"।

अगमन*–क्रि० वि० आगे। पहले।

अगमानी*–संज्ञा पुं० अगुआ। नायक। सरदार।
† संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अड़दार-वि० १. अड़ियल। २. ऐंड़दार। ३. मस्त।

अड़ना-क्रि० अ० १. रुकना। ठहरना। २. हठ करना।

अड़बंगः†-वि० पुं० १. टेढ़ा-मेढ़ा। २. कठिन। दुर्गम। ३. विलक्षण।

अडरः-वि० निडर। बेख़ौफ़।

अड़सठ-वि० साठ और आठ की संख्या।

अड़हुल-संज्ञा पुं० देवीफूल। जपा या जवा पुष्प।

अड़ाड़-संज्ञा पुं० चौपायों के रहने का हाता।

अड़ान-संज्ञा स्त्री० १. रुकने की जगह। २. पड़ाव।

अड़ाना-क्रि० स० टिकाना। रोकना। ठहराव। अटकाना।

अड़ार-संज्ञा पुं० १. समूह। ढेर। २. ईंधन का ढेर जो बेचने के लिये रक्खा हो।

ः वि० टेढ़ा। तिरछा। आड़ा।

अड़ियल-वि० १. अड़कर चलनेवाला। २. सुस्त। मट्ठर। ३. हठी।

अड़ी-संज्ञा स्त्री० १. ज़िद। २. रोक।

अड़ूलनाः-क्रि० स० जल आदि ढालना। उड़ेलना।

अड़ूसा-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके फूल और पत्ते कास, श्वास आदि की औषध हैं।

अडोल-वि० १. जो हिले नहीं। अटल। स्थिर। २. स्तब्ध। ठकमारा।

अड़ोस पड़ोस-संज्ञा पुं० आस पास। क़रीब।

अड्डा-संज्ञा पुं० [सं० अट्टा = ऊँची जगह] १. टिकने की जगह। २. मिलने या इकट्ठा होने की जगह। ३. केंद्र स्थान। कबूतरों की छतरी।

अढ़तिया-संज्ञा पुं० १. वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल ख़रीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता है। आढ़त करनेवाला। २. दलाल।

अढ़वनाः-क्रि० स० आज्ञा देना। काम में लगाना।

अढ़ुकना-क्रि० अ० १. ठोकर खाना। २. सहारा लेना।

अढ़ैया-संज्ञा पुं० १. २½ सेर की तौल या बाट। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

अणिमा-संज्ञा स्त्री० अष्ट सिद्धियों में पहली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते।

अणु-संज्ञा पुं० [सं०] १. छोटा टुकड़ा या कण। २. अत्यंत सूक्ष्म मात्रा।
वि० १. अति सूक्ष्म। अत्यंत छोटा। २. जो दिखाई न दे।

अणुवादी-संज्ञा पुं० १. नैयायिक। २. रामानुज का अनुयायी।

अणुवीक्षण-संज्ञा पुं० सूक्ष्मदर्शक यंत्र। ख़ुर्दबीन।

अतंद्रिक-वि० १. आलस्य-रहित। २. व्याकुल। बेचैन।

अतः-क्रि० वि० इस वजह से। इसलिये।

अतएव-क्रि० वि० इसलिये। इस हेतु से। इस वजह से।

अतनु-वि० शरीर-रहित। बिना देह का।
संज्ञा पुं० अनंग। कामदेव।

अतर-संज्ञा पुं० फूलों की सुगंधि का सार। निर्यास। पुष्पसार।

अगम्य-वि० १. जहाँ कोई न जा सके। अवघट। २. कठिन। मुश्किल। ३. बहुत। अत्यंत। ४. जिसमें बुद्धि न पहुँचे। ५. बहुत गहरा।

अगर-संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है।
अव्य० यदि। जो।

अगरई-वि० श्यामता लिए हुए सुनहले सेंदली रंग का।

अगरचे-अव्य० गोकि। यद्यपि।

अगरबत्ती-संज्ञा स्त्री० सुगंध के निमित्त जलाने की पतली सींक या बत्ती।

अगरा*-वि० १. अगला। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. अधिक।

अगरु-संज्ञा पुं० अगर लकड़ी। ऊद।

अगल बगल-क्रि० वि० इधर उधर। दोनों ओर। आसपास।

अगला-वि० [स्त्री० अगली] १. आगे का। सामने का। २. पहले का। ३. पुराना। ४. आगामी। आनेवाला। ५. दूसरा।
संज्ञा पुं० १. अगुआ। २. चतुर आदमी। ३. पुरखा।

अगवाई-संज्ञा स्त्री० अगवानी। अभ्यर्थना।
संज्ञा पुं० आगे चलनेवाला।

अगवाड़ा-संज्ञा पुं० घर के आगे का भाग। "पिछवाड़ा" का उलटा।

अगवान-संज्ञा पुं० [सं० अग्र+यान] विवाह में कन्या पक्ष के लोग जो बरात को आगे से जाकर लेते हैं।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगवानी-संज्ञा स्त्री० १. अतिथि के निकट पहुँचने पर उससे सादर मिलना। अभ्यर्थना। पेशवाई। २. विवाह में बरात को आगे से लेने की रीति।
* संज्ञा पुं० अगुआ। नेता।

अगवाँसी-संज्ञा स्त्री० १. हल की वह लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है। २. पैदावार में हलवाहे का भाग।

अगसार*-क्रि० वि० आगे।

अगस्त-संज्ञा पुं० दे० "अगस्त्य"।

अगस्त्य-संज्ञा पुं० १. एक ऋषि जिन्होंने समुद्र सोखा था। २. एक तारा। ३. एक पेड़ जिसके फूल अर्धचंद्राकार लाल या सफ़ेद होते हैं।

अगह*-वि० १. हाथ में न आने लायक। चंचल। २. जो वर्णन और चिंतन के बाहर हो। ३. कठिन। मुश्किल।

अगहन-संज्ञा पुं० [वि० अगहनिया, अगहनी] हेमंत ऋतु का पहला महीना। मार्गशीर्ष। मृगसिर।

अगहनी-संज्ञा स्त्री० वह फ़सल जो अगहन में काटी जाती है।

अगहुँड़-क्रि० वि० आगे। आगे की ओर।

अगाऊ-क्रि० वि० अग्रिम। पेशगी।
*वि० अगला। आगे का।
*क्रि० वि० आगे। पहले। प्रथम।

अगाड़ा-संज्ञा पुं० १. कछार। तरी। २. यात्री का वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।

अगाड़ी-क्रि० वि० १. आगे। २. पूर्व। पहले।

अगाध-वि० १. अथाह। २. बहुत। ३. समझ में न आने योग्य।
संज्ञा पुं० छेद। गड्ढा।

अगार-संज्ञा पुं० दे० "आगार"।

अतरदान-संज्ञा पुं० इत्र रखने का चाँदी का बरतन।
अतरसों-क्रि० वि० १. परसों के आगे का दिन। २. परसों से पहले का दिन।
अतर्कित-वि० आकस्मिक। बेसोचा समझा। जो विचार में न आया हो।
अतर्क्य-वि० जिस पर तर्क-वितर्क न हो सके।
अतल-संज्ञा पुं० सात पातालों में दूसरा पाताल।
अतलस-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
अतलस्पर्शी-वि० अथाह।
अतसी-संज्ञा स्त्री० अलसी।
अति-वि० बहुत। अधिक।
संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती।
अतिकाय-वि० स्थूल। मोटा।
अतिकाल-संज्ञा पुं० विलंब।
अतिक्रम-संज्ञा पुं० नियम या मर्य्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।
अतिक्रमण-संज्ञा पुं० हद के बाहर जाना। बढ़ जाना।
अतिक्रांत-वि० [सं०] हद के बाहर गया हुआ। व्यतीत।
अतिथि-संज्ञा पुं० १ घर में आया हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति। अभ्यागत। मेहमान। पाहुन। २. अग्नि।
अतिथियज्ञ-संज्ञा पुं० अतिथि का आदर-सत्कार। अतिथिपूजा।
अतिपातक-संज्ञा पुं० पुरुष के लिये माता, बेटी और पतोहू के साथ और स्त्री के लिये पुत्र, पिता और दामाद के साथ गमन।
अतिबल-वि० प्रबल। प्रचंड।
अतिमुक्त-वि० विषयवासना-रहित।
अतिरंजन-संज्ञा पुं० बढ़ा चढ़ाकर कहने की रीति। अत्युक्ति।
अतिरथी-संज्ञा पुं० वह जो अकेले बहुतों के साथ लड़ सके।
अतिरिक्त-क्रि० वि० सिवाय। अलावा। छोड़कर।
वि० १. शेषबचा हुआ। २. अलग। जुदा। भिन्न।
अतिरोग-संज्ञा पुं० यक्ष्मा। छयी।
अतिवाद-संज्ञा पुं० १. सच्ची बात। २. कड़ुई बात। ३. डींग। शेखी।
अतिवृष्टि-संज्ञा स्त्री० छः ईतियों में से एक। अत्यंत वर्षा।
अतिशय-वि० बहुत। ज्यादा।
अतिशयोक्ति-संज्ञा स्त्री० एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु को बहुत बढ़ाकर वर्णन करते हैं।
अतिसंध-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना।
अतिसंधान-संज्ञा पुं० विश्वासघात। धोखा।
अतिसार-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है।
अतींद्रिय-वि० जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर। अव्यक्त।
अतीत-वि० १. गत। बीता हुआ। २. जुदा। अलग। ३. मृत। मरा हुआ।
क्रि० वि० परे। बाहर।
संज्ञा पुं० संन्यासी। यति। साधु।
अतीव-वि० बहुत। अत्यंत।
अतीस-संज्ञा पुं० [सं०] एक पहाड़ी

क्रि० वि० आगे। पहले।

अगासः–संज्ञा पुं० द्वार के आगे का चबूतरा।

अगाहः–वि० अथाह। बहुत गहरा।
क्रि० वि० आगे से। पहले से।
ःवि० विदित। प्रकट।

अगाही†–संज्ञा स्त्री० किसी बात के होने का पहले से संकेत या सूचना।

अगिनः–संज्ञा स्त्री० [क्रि० अगियाना] १. आग। २. गौरैया या बया के आकार की एक छोटी चिड़िया। ३. अगिया घास।

अगिनबोट–संज्ञा पुं० वह बड़ी नाव जो भाप के इंजिन के ज़ोर से चलती है। स्टीमर। धूम्रपोत।

अगिनितः–वि० दे० "अगणित"।

अगियाना–क्रि० अ० अंग का तप उठना। जलन या दाहयुक्त होना।

अगिया बैताल–संज्ञा पुं० १. विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक। २. मुँह से लुक या लपट निकालनेवाला भूत। ३. बहुत क्रोधी आदमी।

अगियार, अगियारी–संज्ञा स्त्री० आग में सुगंध-द्रव्य डालने की पूजनविधि। धूप देने की क्रिया।

अगिया सन–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की घास। २. एक कीड़ा। ३. एक चर्मरोग जिसमें झलकते हुए फफोले निकलते हैं।

अगिला†–वि० दे० "अगला"।

अगुआ–संज्ञा पुं० १. आगे चलनेवाला। नेता। २. मुखिया। ३. मार्ग बतानेवाला। ४. विवाह की बातचीत ठीक करनेवाला।

अगुआई–संज्ञा स्त्री० सरदारी।

अगुआना–क्रि० स० अगुआ बनाना।
क्रि० अ० आगे होना। बढ़ना।

अगुण–वि० १. रज, तम आदि गुण से रहित। निर्गुण। २. निर्गुणी। मूर्ख।
संज्ञा पुं० अवगुण। दोष।

अगुरु–वि० १. हलका। २. जिसने गुरु से उपदेश न पाया हो।
संज्ञा पुं० १. अगर वृक्ष। ऊद। २. शीशम।

अगुवा–संज्ञा पुं० दे० "अगुआ"।

अगूठना†–क्रि० स० १. ढाकना। २. घेरना।

अगूठा–घेरा।

अगूढ़–वि० १. जो छिपा न हो। २. स्पष्ट। प्रकट। ३. सहज। आसान।

अगूता–क्रि० वि० आगे। सामने।

अगोचर–वि० जिसका अनुभव इंद्रियों को न हो।

अगोट–संज्ञा पुं० [सं० अग्र+हिं० ओट] १. ओट। आड़। २. आश्रय। आधार।

अगोटना–क्रि० स० १. रोकना। २. पहरे में रखना। क़ैद करना। ३. छिपाना।
क्रि० स० १. अंगीकार करना। २. चुनना।
क्रि० अ० १. रुकना। ठहरना। २. फँसना।

अगोरना–क्रि० स० १. राह देखना। २. रखवाली या चौकसी करना। ३. रोकना।

अगोरिया–संज्ञा पुं० रखवाली करनेवाला। रखवाला।

अगौढ़†–संज्ञा पुं० पेशगी। अगाऊ।

अगौनीः–क्रि० वि० आगे।
संज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

पौधा जिसकी जड़ दवाओं में काम आती है। विषा। अतिविषा।
अतीसार–संज्ञा पुं० दे० "अतिसार"।
अतुराई॰–संज्ञा स्त्री० १. आतुरता। जल्दी। २. चंचलता।
अतुल–वि० [सं०] १. जिसकी तौल या अंदाज़ न हो सके। बहुत अधिक। २. अनुपम। बेजोड़।
संज्ञा पुं० तिल का पेड़।
अतुलनीय–वि० अपरिमित। अपार। अनुपम।
अतुलित–वि० १. बिना तौला हुआ। २. बहुत अधिक।
अतुल्य–वि० १ असमान। २. अनुपम। बेजोड़।
अतूल॰–वि० दे० "अतुल"।
अतृप्त–वि० [संज्ञा अतृप्ति] १. जो तृप्त या संतुष्ट न हो। २. भूखा।
अतृप्ति–संज्ञा स्त्री० मन न भरने की दशा।
अत्त॰†–संज्ञा स्त्री० अति। अधिकता। ज्यादती।
अत्तार–संज्ञा पुं० १. इत्र या तेल बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवा बनाने और बेचनेवाला।
अत्ति॰†–संज्ञा पुं० दे० "अत्त"।
अत्यंत–वि० बहुत अधिक। हद से ज्यादा।
अत्यंतिक–वि० १. समीपी। नज़दीकी। २. बहुत घूमनेवाला।
अत्यम्ल–संज्ञा पुं० इमली।
वि० बहुत खट्टा।
अत्याचार–संज्ञा पुं० १. अन्याय। ज्यादती। २. दुराचार। पाप।
अत्याचारी–वि० अन्यायी। निठुर। ज़ालिम।
अत्याज्य–वि० १. न छोड़ने योग्य। २. जो छोड़ा न जा सके।
अत्युक्ति–संज्ञा स्त्री० बढ़ा चढ़ाकर वर्णन करने की शैली।
अत्र–क्रि० वि० यहाँ। इस जगह।
॰ संज्ञा पुं० "अस्त्र" का अपभ्रंश।
अत्रक–वि० १. यहाँ का। २. इस लोक का। ऐहिक।
अत्रि–संज्ञा पुं० १. सप्तर्षियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। २. एक तारा जो सप्तर्षि-मंडल में है।
अथऊ†–संज्ञा पुं० वह भोजन जो जैन लोग सूर्यास्त के पहले करते हैं।
अथक–वि० जो न थके। अश्रांत।
अथच–अव्य० और। और भी।
अथना॰–क्रि० अ० अस्त होना। डूबना।
अथरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अथरी] मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बरतन। नाँद।
अथर्व–संज्ञा पुं० चौथा वेद।
अथर्वन्–संज्ञा पुं० दे० "अथर्व"।
अथर्वनी–संज्ञा पुं० कर्मकांडी। यज्ञ करानेवाला। पुरोहित।
अथवना॰–क्रि० अ० १. अस्त होना। डूबना। २. लुप्त होना। गायब होना।
अथवा–अव्य० एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।
अथाई–संज्ञा स्त्री० १. बैठने की जगह बैठक। चौपारा। २. मंडली। सभा। जमावड़ा।
अथाह–वि० १. जिसकी थाह न

हो। बहुत गहरा। २. बहुत अधिक। ३. गंभीर। गूढ़।
संज्ञा पुं० १. गहराई। २. जलाशय। ३. समुद्र।
अथोरः–वि० अधिक। ज़्यादा। बहुत।
अदंड–वि० १. सज़ा से बरी। २. जिस पर कर या महसूल न लगे। ३. स्वेच्छाचारी। ४. उद्दंड।
संज्ञा पुं० वह भूमि जिसकी मालगुज़ारी न लगे। मुआफ़ी।
अदंड्य–वि० जिसे दंड न दिया जा सके। सज़ा से बरी।
अदंत–वि० १. जिसे दाँत न हो। २. बहुत थोड़ी अवस्था का। दुधमुहाँ।
अदग–वि० १. बेदाग़। शुद्ध। २. निरपराध। निर्दोष। ३. अछूता। अस्पृष्ट। साफ़।
अदत्ता–संज्ञा स्त्री० अविवाहिता कन्या।
अदद–संज्ञा स्त्री० संख्या। गिनती।
अदन–संज्ञा पुं० १. पैगंबरी मतों के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर ने आदम को बनाकर रखा था। २. एक बंदरगाह।
अदना–वि० १. तुच्छ। २. मामूली।
अदब–संज्ञा पुं० शिष्टाचार। क़ायदा।
अदबदाकर–क्रि० वि० टेक बाँधकर। अवश्य। ज़रूर।
अदभ्र–वि० बहुत। अधिक।
अदम पैरवी–संज्ञा स्त्री० किसी मुक़द्दमे में ज़रूरी कार्रवाई न करना।
अदम्य–वि० जिसका दमन न हो सके। प्रचंड।
अदय–वि० दया-रहित।
अदरक–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।
अदर्शन–संज्ञा पुं० लोप। विनाश।
अदर्शनीय–वि० १. जो देखने लायक न हो। २. कुरूप।
अदल–संज्ञा पुं० न्याय। इंसाफ़।
अदल बदल–संज्ञा पुं० उलट पुलट।
अदवान–संज्ञा स्त्री० चारपाई के पैताने बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिये उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। ओनचन।
अदहन–संज्ञा पुं० आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें दाल, चावल आदि पकाते हैं।
अदांत–वि० जिसे दाँत न आए हों।
अदांत–वि० १. जो इंद्रियों का दमन न कर सके। २ उद्दंड।
अदा–वि० चुकता। बेबाक़।
संज्ञा स्त्री० हाव भाव।
अदानः–वि० अनजान। नादान। नासमझ।
अदालत–संज्ञा स्त्री० [वि० अदालती] न्यायालय। कचहरी।
अदालत दीवानी–संज्ञा स्त्री० वह अदालत जिसमें संपत्ति या स्वत्व-संबंधी बातों का निर्णय होता है।
अदालत माल–संज्ञा स्त्री० वह अदालत जिसमें लगान और मालगुज़ारी संबंधी मुक़द्दमे दायर किए जाते हैं।
अदालती–वि० १. अदालत का। २. जो अदालत करे। मुक़द्दमा लड़नेवाला।
अदावत–संज्ञा स्त्री० शत्रुता। दुश्मनी। बैर। विरोध।
अदावती–वि० जो अदावत रखे।

अनोखापन–संज्ञा पुं० [प्रत्य०] १. अनूठापन। विलक्षणता। २. सुंदरता।

अनौचित्य–संज्ञा पुं० उचित बात का अभाव।

अन्न–संज्ञा पुं० १. अनाज। धान्य। दाना। गल्ला। २. पकाया हुआ अन्न। भात।

॰वि० दूसरा। विरुद्ध।

अन्नकूट–संज्ञा पुं० एक उत्सव जो कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा से पूर्णिमा पर्य्यंत किसी दिन होता है।

अन्नक्षेत्र–संज्ञा पुं० दे० "अन्नसत्र"।

अन्नजल–संज्ञा पुं० १. दाना-पानी। खाना-पानी। खान-पान। २. आब-दाना। जीविका।

अन्नपूर्णा–संज्ञा स्त्री० अन्न की अधिष्ठात्री देवी। दुर्गा का एक रूप।

अन्नप्राशन–संज्ञा पुं० बच्चों को पहले पहल अन्न चटाने का संस्कार।

अन्नमय कोश–संज्ञा पुं० पंचकोशों में से प्रथम। स्थूल शरीर। (वेदांत)

अन्नसत्र–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ भूखों को मुफ्त भोजन दिया जाता है।

अन्ना–संज्ञा स्त्री० दाई। धाय।

अन्य–वि० दूसरा। भिन्न। गैर।

अन्यत्र–वि० और जगह। दूसरी जगह।

अन्यथा–वि० १. विपरीत। उलटा। २. असत्य।

अव्य० नहीं तो।

अन्यपुरुष–संज्ञा पुं० व्याकरण में वह पुरुष जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। जैसे—'वह', 'यह'।

अन्यमनस्क–वि० जिसका जी न लगता हो। उदास।

अन्याय–संज्ञा पुं० [वि० अन्यायी] न्याय-विरुद्ध आचरण। अनीति।

अन्यायी–वि० अन्याय करनेवाला। ज़ालिम।

अन्योक्ति–संज्ञा स्त्री [सं०] वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय।

अन्योन्य–सर्व० परस्पर। आपस में।

अन्योन्याश्रय–संज्ञा पुं० [वि० अन्योन्याश्रित] परस्पर का सहारा। एक दूसरे की अपेक्षा।

अन्वय–संज्ञा पुं० [वि० अन्वयी] १. परस्पर संबंध। २. संयोग। मेल। ३. पद्यों के शब्दों को वाक्य-रचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य। ४. वंश। खानदान।

अन्वित–वि० युक्त। शामिल।

अन्वीक्षण–संज्ञा पुं० १. विचार। २. खोज।

अन्वीक्षा–संज्ञा स्त्री० ध्यानपूर्वक देखना।

अन्वेषक–वि० [स्त्री० अन्वेषिका] खोजनेवाला।

अन्वेषण–संज्ञा पुं० [स्त्री० अन्वेषणा] अनुसंधान। खोज। ढूँढ़। तलाश।

अन्वेषी–वि० [स्त्री० अन्वेषिणी] खोजनेवाला।

अन्हवाना॰–क्रि० स० स्नान कराना।

अप–संज्ञा पुं० जल। पानी।

अपंग–वि० [सं० अपांग] १. अंगहीन। २. लँगड़ा। लूला।

अप–उप० [सं०] उलटा। विरुद्ध। बुरा। अधिक।

सर्व० 'आप' का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में) जैसे—अपस्वार्थी। अपकाजी।

अधि–एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है।

अधिक–वि० १. बहुत। ज़्यादा। २. बचा हुआ। फ़ालतू।

अधिकता–संज्ञा स्त्री० बहुतायत। विशेषता।

अधिक मास–संज्ञा पुं० मलमास। लौंद का महीना।

अधिकरण–संज्ञा पुं० १. आधार। आसरा। सहारा। २. व्याकरण में सातवाँ कारक।

अधिकांग–वि० जिसे कोई अवयव अधिक हो। जैसे—छँगुर।

अधिकांश–संज्ञा पुं० अधिक भाग। ज़्यादा हिस्सा।
वि० बहुत।
क्रि० वि० १. ज़्यादातर २. प्रायः।

अधिकाई✻–संज्ञा स्त्री० १. ज़्यादती। बहुतायत। २. बड़ाई। महिमा।

अधिकार–संज्ञा पुं० १. कार्य्यभार। प्रभुत्व। २. स्वत्व। हक़। ३. कब्ज़ा। ४. शक्ति। ५. योग्यता।
†✻ वि० पुं० अधिक।

अधिकारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिकारिणी] १. स्वामी। मालिक। २. हक़दार। ३. योग्यता या क्षमता रखनेवाला।

अधिकृत–वि० अधिकार में आया हुआ।
संज्ञा पुं० अधिकारी। अध्यक्ष।

अधिगत–वि० १. पाया हुआ। २. जाना हुआ।

अधित्यका–संज्ञा स्त्री० पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदान।

अधिदेव–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिदेवी] इष्टदेव। कुलदेव।

अधिदैव–वि० [सं०] दैविक। आकस्मिक।

अधिनायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिनायिका] सरदार। मुखिया।

अधिप–संज्ञा पुं० स्वामी। मालिक।

अधिपति–संज्ञा पुं० [सं०] [स्त्री० अधिपत्नी] नायक। अफ़सर। मुखिया।

अधिमास–संज्ञा पुं० दे० "अधिक मास"।

अधिया–संज्ञा स्त्री० आधा हिस्सा।
संज्ञा पुं० गाँव में आधी पट्टी का मालिक।

अधियाना–क्रि० स० आधा करना।

अधियार–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधियारिन] १. किसी जायदाद में आधा हिस्सा। २. आधे का मालिक।

अधियारी–संज्ञा स्त्री० किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।

अधिरथ–संज्ञा पुं० [सं०] रथ हाँकनेवाला। गाड़ीवान।

अधिराज–संज्ञा पुं० राजा। बादशाह।

अधिरोहण–संज्ञा पुं० चढ़ना। सवार होना।

अधिवास–संज्ञा पुं [वि० अधिवासित] रहने की जगह।

अधिवासी–संज्ञा पुं० निवासी। रहनेवाला।

अधिवेशन–संज्ञा पुं० बैठक। सम्मेलन।

अधिष्ठाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अधिष्ठात्री] १. अध्यक्ष। मुखिया। प्रधान। २. ईश्वर।

अधिष्ठान–संज्ञा पुं० [वि० अधिष्ठित] १. वासस्थान। रहने का स्थान। २.

अपकर्त्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अपकर्त्री] १. हानि पहुँचानेवाला। २. पापी।

अपकर्म–संज्ञा पुं० बुरा काम।

अपकर्ष–संज्ञा पुं० १. नीचे को खींचना। गिराना। २. अपमान।

अपकाजी–वि० स्वार्थी। मतलबी।

अपकार–संज्ञा पुं० बुराई। नुकसान। अहित।

अपकारक–वि० [सं०] अपकार करनेवाला।

अपकारी–वि० [सं० अपकारिन्] [स्त्री० अपकारिणी] हानिकारक।

अपकीरति☆–संज्ञा स्त्री० दे० "अपकीर्त्ति"।

अपकीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० अपयश। अयश। बदनामी। निंदा।

अपकृत–वि० [सं०] जिसका अपकार किया गया हो।

अपकृष्ट–वि० [संज्ञा अपकृष्टता] १. गिरा हुआ। पतित। २. बुरा। खराब।

अपक्रम–संज्ञा पुं० क्रमभंग। गड़बड़। उलट-पलट।

अपक्व–वि० [सं०] [संज्ञा अपक्वता] १. बिना पका हुआ। २. अनभ्यस्त।

अपघात–संज्ञा पुं० [वि० अपघातक, अपघाती] १. हत्या। हिंसा। २. विश्वासघात।
संज्ञा पुं० आत्महत्या।

अपच–संज्ञा पुं० [सं०] अजीर्ण।

अपचार–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अपचारी] १. अनुचित बर्त्ताव। २. बुराई। ३. निंदा। अपयश। ४. कुपथ्य।

अपचाल☆–संज्ञा पुं० कुचाल।

अपछरा☆–संज्ञा स्त्री० दे० "अप्सरा"।

अपजस†☆–संज्ञा पुं० दे० "अपयश"।

अपटन†–संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।

अपठ–वि० १. अपढ़। जो पढ़ा न हो। २. मूर्ख।

अपडर☆–संज्ञा पुं० भय। शंका।

अपढ़–वि० बिना पढ़ा। मूर्ख।

अपत☆–वि० १. पत्रहीन। बिना पत्तों का। २. नग्न।
वि० अधम। नीच।
वि० निर्लज्ज।

अपति☆–वि० स्त्री० बिना पति की। विधवा।
वि० [सं० अ+पति=गति] पापी। दुष्ट।
संज्ञा स्त्री० १. दुर्गति। २. अनादर।

अपत्य–संज्ञा पुं० संतान। औलाद।

अपथ–संज्ञा पुं० बीहड़ राह।

अपथ्य–वि० जो पथ्य न हो। स्वास्थ्य-नाशक।
संज्ञा पुं० रोग बढ़ानेवाला आहार-विहार।

अपद्–संज्ञा पुं० बिना पैर के रेंगनेवाले जंतु। जैसे—साँप, केंचुआ आदि।

अपद्रव्य–संज्ञा पुं० [सं०] १. निकृष्ट वस्तु। २. बुरा धन।

अपन☆–सर्व० दे० "अपना"। "हम"।

अपनपौ☆–संज्ञा पुं० अपनायत। आत्मीयता।

अपनयन–संज्ञा पुं० [वि० अपनीत] दूर करना। हटाना।

अपना–सर्व० [क्रि० अपनाना] निजका। (तीनों पुरुषों में)
संज्ञा पुं० आत्मीय। स्वजन।

अपनाना–क्रि० स० १. अपने अनुकूल करना। २. अपना बनाना। ३. अपने अधिकार में करना।

वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे रज्जु में सर्प और शुक्ति में रजत का। ३. अधिकार। शासन। राजसत्ता।
अधिष्ठित-वि० १. ठहरा हुआ। स्थापित। २. निर्वाचित। नियुक्त।
अधीन-वि० १. आश्रित। मातहत। २. अवलंबित। मुनहसर।
संज्ञा पुं० दास। सेवक।
अधीनता-संज्ञा स्त्री० १. परवशता। २. बेबसी।
अधीर-वि० पुं० [संज्ञा अधीरता] १. धैर्यरहित। घबराया हुआ। २. बेचैन। ३. उतावला। ४. असंतोषी।
अधीश, अधीश्वर-संज्ञा पुं० [स्त्री० अधीश्वरी] मालिक। स्वामी।
अधूत-संज्ञा पुं० १. निर्भय। निडर। २. ढीट। ३. उचक्का।
अधूरा-वि० [स्त्री० अधूरी] अपूर्ण। जो पूरा न हो।
अधेड़-वि० ढलती जवानी का।
अधेला-संज्ञा पुं० आधा पैसा।
अधेली-संज्ञा स्त्री० रुपए का आधा सिक्का। अठन्नी।
अधो-अव्य० दे० "अधः"।
अधोगति-संज्ञा स्त्री० पतन। अवनति।
अधोगामी-वि० [स्त्री० अधोगामिनी] नीचे जानेवाला।
अधोमुख-वि० १. नीचे मुँह किए हुए। २. औंधा। उलटा।
क्रि० वि० औंधा। मुँह के बल।
अधोवायु-संज्ञा पुं० अपान वायु। गुदा की वायु। पाद। गोज़।
अध्यक्ष-संज्ञा पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २. सरदार। मुखिया।
अध्ययन-संज्ञा पुं० पठन-पाठन।
अध्यवसाय-संज्ञा पुं० लगातार उद्योग।
अध्यवसायी-वि० [स्त्री० अध्यवसायिनी] लगातार उद्योग करनेवाला। उद्योगी।
अध्यात्म-संज्ञा पुं० ब्रह्मविचार। ज्ञानतत्त्व।
अध्यापक-संज्ञा पुं० [स्त्री० अध्यापिका] शिक्षक। गुरु।
अध्यापकी-संज्ञा स्त्री० पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।
अध्यापन-संज्ञा पुं० पढ़ाने का कार्य।
अध्याय-संज्ञा पुं० १. ग्रंथ-विभाग। २. पाठ। सर्ग। परिच्छेद।
अध्यारोप-संज्ञा पुं० [सं०] झूठी कल्पना। अन्य में अन्य वस्तु का भ्रम।
अध्यास-संज्ञा पुं० अध्यारोप। मिथ्याज्ञान।
अध्याहार-संज्ञा पुं० १. तर्क-वितर्क। २. अस्पष्ट वाक्य को स्पष्ट करने की क्रिया।
अध्यूढ़ा-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले।
अध्वर-संज्ञा पुं० यज्ञ।
अध्वर्यु-संज्ञा पुं० यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।
अन्-अव्य० अभाव या निषेधसूचक अव्यय। जैसे—अनंत, अनधिकार।
अनंग-वि० [स्त्री० अनंगना] बिना शरीर का।
संज्ञा पुं० कामदेव।
अनंगक्रीड़ा-संज्ञा स्त्री० [सं०] रति। संभोग।
अनंगना*-क्रि० अ० [सं०] शरीर की सुध छोड़ना। सुधबुध भुलाना।
अनंगारि-संज्ञा पुं० शिव।
अनंगी-वि० [स्त्री० अनंगिनी] अंग-

अपनापन–संज्ञा पुं० १. अपनायत। २. आत्माभिमान।
अपनायत–संज्ञा स्त्री० आत्मीयता। अपनापन।
अपभ्रंश–संज्ञा पुं० [वि० अपभ्रंशित] १. पतन। २. विकृति। ३. बिगड़ा हुआ शब्द।
वि० विकृत। बिगड़ा हुआ।
अपमान–संज्ञा पुं० अनादर। बेइज्जती।
अपमानित–वि० निंदित।
अपमानी–वि० [स्त्री० अपमानिनी] निरादर करनेवाला।
अपमृत्यु–संज्ञा स्त्री० कुमृत्यु। अकाल-मृत्यु।
अपयश–संज्ञा पुं० १. अपकीर्त्ति। २. कलंक।
अपरंच–अव्य० १. और भी। २. फिर भी।
अपरंपार॰–वि० जिसका पारावार न हो। असीम। बेहद।
अपर–वि० [स्त्री० अपरा] १. पहला। पूर्व का। २. पिछला। ३. अन्य। दूसरा।
अपरता–संज्ञा स्त्री० परायापन।
संज्ञा स्त्री० भेद-भाव-शून्यता। अपनापन।
॰ † वि० स्वार्थी।
अपरती॰–संज्ञा स्त्री० १. स्वार्थ। २. बेईमानी।
अपरना॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अपर्णा"।
क्रि० स० परीक्षा लेना। टोह लेना।
अपरलोक–संज्ञा पुं० परलोक। स्वर्ग।
अपरांत–संज्ञा पुं० पश्चिम का देश।
अपरा–संज्ञा स्त्री० १. लौकिक विद्या। पदार्थविद्या। २. पश्चिम दिशा।
अपराजिता–संज्ञा स्त्री० १. विष्णुक्रांता लता। कोयल। २. दुर्गा।
अपराध–संज्ञा पुं० [वि० अपराधी] १. दोष। कसूर। २. भूल। चूक।
अपराधी–वि० पुं० [सं० अपराधिन्] [स्त्री० अपराधिनी] दोषी।
अपराह्ण–संज्ञा पुं० [सं०] दोपहर के पीछे का काल।
अपरिग्रह–संज्ञा पुं० [सं०] १. दान का न लेना। दान-त्याग। २. विराग।
अपरिचित–वि० [सं०] जिससे परिचय न हो। अनजान।
अपरिच्छिन्न–वि० जिसका विभाग न हो सके।
अपरिपक्व–वि० जो पक्का न हो। कच्चा।
अपरिमित–वि० असीम। बेहद।
अपरिमेय–वि० बेअंदाज़। अकूत।
अपरिहार्य–वि० १. जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके। २. जिसके बिना काम न चले।
अपरूप–वि० [सं०] बदशकल। भद्दा।
अपर्णा–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
अपलक्षण–संज्ञा पुं० कुलक्षण।
अपवर्ग–संज्ञा पुं० मोक्ष। निर्वाण।
अपवश॰–वि० अपने अधीन। अपने वश का।
अपवाद–संज्ञा पुं० वह नियम जो व्यापक नियम से विरुद्ध हो।
अपवादक, अपवादी–वि० [सं०] १. निंदक। २. विरोधी। बाधक।
अपवारण–संज्ञा पुं० [वि० अपवारित] १. रोक। आड़। २. हटाने या दूर करने का कार्य।
अपविद्ध–वि० त्यागा हुआ।
संज्ञा पुं० वह पुत्र जिसको उसके माता-

रहित। बिना देह का।
संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. कामदेव।
अनंत–वि० जिसका अंत या पार न हो। असीम।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. शेषनाग। ३. लक्ष्मण। ४. बलराम। ५. आकाश। ६. बाहु का एक गहना। ७. सूत का गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी या अनंत-व्रत के दिन बाहु में पहनते हैं।
अनंतचतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० भाद्र शुक्ल चतुर्दशी।
अनंतर–क्रि० वि० १. पीछे। उपरांत। २. लगातार।
अनंता–वि० स्त्री० जिसका अंत या पारावार न हो।
संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. पार्वती। ३. कलियारी। ४. अनंतमूल। ५. दूब। ६. पीपर। ७. अनंतसूत्र।
अनंभ–वि० बिना पानी का।
⊙ वि० निर्विघ्न। बाधारहित।
अन⊙–क्रि० वि० बिना। बग़ैर।
वि० अन्य। दूसरा।
अनअहिवात–संज्ञा पुं० वैधव्य।
अनऋतु–संज्ञा स्त्री० १. विरुद्ध ऋतु। बेमौसिम। २. ऋतु के विरुद्ध कार्य।
अनक⊙–संज्ञा पुं० दे० "आनक"।
अनकना⊙–क्रि० स० सुनना।
अनकहा–वि० [स्त्री० अनकही] बिना कहा हुआ।
अनख–संज्ञा पुं० १. क्रोध। २. दुःख। ३. ईर्ष्या। ४. झंझट। ५. डिठौना।
वि० बिना नख का।
अनखना⊙–क्रि० अ० क्रोध करना। रुष्ट होना। रिसाना।
अनखाना⊙–क्रि० अ० क्रोध करना। रिसाना। रुष्ट होना।
क्रि० स० अप्रसन्न करना। नाराज़ करना।
अनखी⊙†–वि० क्रोधी। जो जल्दी नाराज़ हो।
अनगढ़–वि० १. बिना गढ़ा हुआ। २. स्वयंभू। ३. बेडौल।
अनगन⊙–वि० [स्त्री० अनगनी] अग-णित। बहुत।
अनगवना–क्रि० अ० रुककर देर करना। जान बूझकर विलंब करना।
अनगाना–क्रि० अ० दे० "अन-गवना"।
अनगिन–वि० दे० "अनगिनत"।
अनगिनत–वि० जिसकी गिनती न हो। असंख्य।
अनगैरी⊙–वि० ग़ैर। पराया।
अनघेरी⊙–वि० बिना बुलाया हुआ। अनिमंत्रित।
अनघोर⊙–संज्ञा पुं० अँधेर। अत्या-चार। ज्यादती।
अनजान–वि० १. अज्ञानी। नादान। २. अपरिचित।
अनट⊙–संज्ञा पुं० उपद्रव। अनीति। अन्याय।
अनत⊙–क्रि० वि० और कहीं। दूसरी जगह में।
अनति [सं०] कम। थोड़ा।
अनदेखा–वि० पुं० [स्त्री० अनदेखी] बिना देखा हुआ।
अनधिकार–संज्ञा पुं० [सं०] १. अधि-कार का अभाव। २. बेबसी। ला-चारी। ३. अयोग्यता।
वि० १. अधिकाररहित। २. अयोग्य।
अनधिकारी–वि० १. जिसे अधिकार न हो। २. अयोग्य।

पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्रवत् पाला हो। (स्मृति)
अपव्यय-संज्ञा पुं० निरर्थक व्यय। फ़जूलखर्ची।
अपव्ययी-वि० अधिक खर्च करनेवाला। फ़जूलखर्च।
अपशकुन-संज्ञा पुं० कुसगुन। असगुन।
अपशब्द-संज्ञा पुं० १. अशुद्ध शब्द। २. गाली।
अपसर्जन-संज्ञा पुं० विसर्जन। त्याग।
अपसोस*-संज्ञा पुं० दे० "अफ़सोस"।
अपस्नान-संज्ञा पुं० [वि० अपस्नात] वह स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं। मृतक-स्नान।
अपस्मार-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें रोगी काँपकर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है। मिरगी।
अपस्वार्थी-वि० मतलबी। खुदग़रज़।
अपहृत-वि० १. नष्ट किया हुआ। मारा हुआ। २. दूर किया हुआ।
अपहरण-संज्ञा पुं० [वि० अपहरणीय, अपहृत, अपहर्ता] १. छीनना। हर लेना। २. चोरी। ३. छिपाव। संगोपन।
अपहर्ता-संज्ञा पुं० [सं०] १ छीननेवाला। हर लेनेवाला। २. चोर।
अपहास-संज्ञा पुं० [सं०] उपहास।
अपह्नव-संज्ञा पुं० [सं०] १. छिपाव। दुराव। २. मिस। बहाना। टाल-मटूल
अपह्नुति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दुराव। छिपाव। २. बहाना। टाल-मटूल।
अपांग-संज्ञा पुं० [सं०] आँख का कोना। आँख की कोर। कटाक्ष। *वि० अंगहीन। अंगभंग।
अपात्र-वि० [सं०] १. अयोग्य। २. कुपात्र।
अपादान-संज्ञा पुं० [सं०] १. व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारंभ सूचित होता है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे—"घर से"। २. अलगाव।
अपान-संज्ञा पुं० १. आत्मभाव। २. आपा। ३. सुध। होश। * सर्व० दे० "अपना"।
अपार-वि० सीमारहित। अनंत।
अपाव*-संज्ञा पुं० अन्याय। उपद्रव।
अपावन-वि० पुं० [स्त्री० अपावनी] अपवित्र। अशुद्ध।
अपाहिज-वि० १. अंगभंग। २. काम करने के अयोग्य। ३. आलसी।
अपि-अव्य० १. भी। ही। २. निश्चय। ठीक।
अपितु-अव्य० १. किंतु। २. बल्कि।
अपील-संज्ञा स्त्री० निवेदन।
अपुत्र-वि० निःसंतान। पुत्रहीन।
अपूत-वि० अपवित्र। अशुद्ध। *वि० पुत्रहीन। निपूता। *संज्ञा पुं० कुपूत। बुरा लड़का।
अपूर*-वि० पूरा। भरपूर।
अपूरना*-क्रि० स० १. भरना। २. फूँकना। बजाना। (शंख)
अपूरा*-संज्ञा पुं० [स्त्री० अपूरी] भरा हुआ। फैला हुआ। व्याप्त।
अपूर्ण-वि० १. जो पूर्ण या भरा न हो। २. अधूरा।
अपूर्णभूत-संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया का वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाय। जैसे—वह खाता था।

अनध्याय–संज्ञा पुं० १. वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने का निषेध हो। (अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा।) २. छुट्टी का दिन।

अनन्नास–संज्ञा पुं० रामबाँस की तरह का एक छोटा पौधा जिसके डंठल के अंकुरों की गाँठ खटमीठी और खाने योग्य होती है।

अनन्य–वि० [स्त्री० अनन्या] अन्य से संबंध न रखनेवाला। एकनिष्ठ। एक ही में लीन। जैसे, अनन्य भक्त। संज्ञा पुं० विष्णु का एक नाम।

अनन्वित–वि० १. असंबद्ध। पृथक्। २. अंडबंड।

अनपच–संज्ञा पुं० अजीर्ण। बदहज़मी।

अनपढ़–वि० बेपढ़ा। मूर्ख। निरक्षर।

अनपेख–वि० बेपरवा।

अनपेक्षित–वि० जिसकी परवा न हो। जिसकी चाह न हो।

अनबन–संज्ञा पुं० बिगाड़। विरोध। खटपट। ❊ वि० भिन्न भिन्न। नाना। विविध।

अनबिधा–वि० बिना बेधा या छेद किया हुआ। जैसे, अनबिधा मोती।

अनबोल–वि० १. न बोलनेवाला। २. चुप्पा। ३. गूँगा।

अनबोलता–वि० गूँगा। बेज़बान। (पशु)

अनब्याहा–वि० [स्त्री० अनब्याही] अविवाहित। क्वाँरा।

अनभल❊–संज्ञा पुं० बुराई। हानि। अहित।

अनभिज्ञ–वि० [स्त्री० अनभिज्ञा, संज्ञा अनभिज्ञता] १. अज्ञ। मूर्ख। २. अपरिचित।

अनभिज्ञता–संज्ञा स्त्री० अज्ञता। अनाड़ीपन।

अनभ्यस्त–वि० १. जिसका अभ्यास न किया गया हो। २. जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।

अनभ्यास–संज्ञा पुं० अभ्यास का अभाव। मश्क़ न होना।

अनमन, अनमना–वि० उदास। अस्वस्थ।

अनमिख❊–वि०, संज्ञा पुं० दे० "अनिमिष"।

अनमिल❊–वि० बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध।

अनमीलना❊–क्रि० स० आँख खोलना।

अनमेल–वि० १. बेजोड़। असंबद्ध। २. बिना मिलावट का। विशुद्ध।

अनमोल–वि० १. अमूल्य। २. मूल्यवान्। ३. सुंदर। उत्तम।

अनय–संज्ञा पुं० १. अमंगल। २. अन्याय।

अनरस–संज्ञा पुं० १. रसहीनता। शुष्कता। २. रुखाई। ३. मनमोटाव। अनबन।

अनरसा❊–वि० अनमना। माँदा। बीमार।

अनराता❊–वि० १. बिना रँगा हुआ। सादा। २. प्रेम में न पड़ा हुआ।

अनरीति–संज्ञा स्त्री० कुरीति। कुचाल।

अनरूप❊–वि० १. कुरूप। बदसूरत। २. असमान।

अनर्गल–वि० १. बेरोक। बेधड़क। २. व्यर्थ। अंडबंड। ३. लगातार।

अनर्घ–वि० १. बहुमूल्य। क़ीमती। २. कम क़ीमत का। सस्ता।

अपूर्व–वि० १. जो पहले न रहा हो। २. अद्भुत। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

अपेक्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० अपेक्षित] १. आकांक्षा। इच्छा। २. आवश्यकता। ३. आश्रय। ४. तुलना। मुकाबिला।

अपेक्षाकृत–अव्य० मुकाबिले में। तुलना में।

अपेक्षित–वि० जिसकी अपेक्षा हो। जिसकी आवश्यकता हो।

अपेय–वि० न पीने योग्य।

अपेलॐ–वि० जो हटे या टले नहीं। अटल।

अप्रकृत–वि० १. अस्वाभाविक। २. बनावटी।

अप्रतिभ–वि० १. प्रतिभाशून्य। २. स्फूर्तिशून्य। ३. मतिहीन। निर्बुद्धि। ४. लजीला।

अप्रतिम–वि० अद्वितीय। अनुपम।

अप्रमेय–वि० १. जो नापा न जा सके। २. जो प्रमाण से न सिद्ध हो सके।

अप्रयुक्त–वि० जो काम में न लाया गया हो।

अप्रसन्न–वि० १. असंतुष्ट। नाराज़। २. खिन्न। दुखी। उदास।

अप्रसिद्ध–वि० जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात।

अप्रस्तुत–वि० जो प्रस्तुत या मौजूद न हो।
संज्ञा पुं० उपमान।

अप्राकृत–वि० अस्वाभाविक। असाधारण।

अप्राप्तव्यवहार–वि० [सं०] सोलह वर्ष से कम का (बालक)। नाबालिग़।

अप्राप्य–वि० जो प्राप्त न हो सके।

अप्रामाणिक–वि० [स्त्री० अप्रामाणिकी] १. जो प्रमाण से सिद्ध न हो। २. ऊटपटाँग।

अप्रासंगिक–वि० प्रसंग-विरुद्ध।

अप्रिय–वि० पुं० अरुचिकर।

अप्सरा–संज्ञा स्त्री० १. वेश्याओं की एक जाति। २. स्वर्ग की वेश्या। इंद्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना। ३. परी।

अफ़ग़ान–संज्ञा पुं० अफ़ग़ानिस्तान का रहनेवाला। काबुली।

अफ़यून–संज्ञा स्त्री० दे० "अफ़ीम"।

अफरा–संज्ञा पुं० अजीर्ण या वायु से पेट फूलना।

अफरानाॐ–क्रि० अ० भोजन से तृप्त करना।

अफ़वाह–संज्ञा स्त्री० उड़ती ख़बर। किंवदंती। गप्प।

अफ़सर–संज्ञा पुं० अधिकारी। हाकिम।

अफ़साना–संज्ञा पुं० क़िस्सा। कहानी। कथा।

अफ़सोस–संज्ञा स्त्री० शोक। रंज। पछतावा।

अफ़ीम–संज्ञा स्त्री० पोस्त के ढोंढ़ का गोंद जो कड़ुआ, मादक और विष होता है।

अफ़ीमची–संज्ञा पुं० वह पुरुष जिसे अफ़ीम खाने की लत हो।

अब–क्रि० वि० इस समय। इस क्षण। इस घड़ी।

अबधूॐ–वि० अज्ञानी। अबोध।
संज्ञा पुं० त्यागी। विरागी।

अबध्य–वि० [स्त्री० अबध्या] १. जिसे

अनर्थ–संज्ञा पुं० १. उलटा मतलब। २. नुकसान। ३. विपद्। अनिष्ट।
अनर्थक–वि० [सं०] व्यर्थ। बेमतलब। बेफ़ायदा।
अनल–संज्ञा पुं० १. अग्नि। आग। २. तीन की संख्या।
अनल्प–वि० बहुत। अधिक।
अनलमुख–संज्ञा पुं० १. देवता। २. ब्राह्मण।
अनलस–वि० आलस्यरहित। फुर्तीला। चैतन्य।
अनवच्छिन्न–वि० अखंडित। अटूट।
अनवट–संज्ञा पुं० पैर के अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।
संज्ञा पुं० कोल्हू के बैल की आँखों के ढक्कन। ढोका।
अनवद्य–वि० [सं०] निर्दोष।
अनवधान–संज्ञा पुं० असावधानी।
अनवधि–वि० असीम। बेहद।
क्रि० वि० सदैव। हमेशा।
अनवरत–क्रि० वि० [सं०] निरंतर। हमेशा।
अनवासना–क्रि० वि० नए बरतन को पहले पहल काम में लाना।
अनवाँसा–संज्ञा पुं० कटी हुई फ़सल का एक बड़ा मुट्ठा या पूला। अँवासा।
अनवाँसी–संज्ञा स्त्री० एक बिस्वे का $\frac{1}{20}$ भाग। बिस्वाँसी का बीसवाँ हिस्सा।
अनशन–संज्ञा पुं० उपवास। अन्नत्याग। निराहार व्रत।
अनश्वर–वि० नष्ट न होनेवाला।
अन-सखरी–संज्ञा स्त्री० पक्की रसोई। घी में पका हुआ भोजन।
अनसुना–वि० बेसुना। बिना सुना हुआ।
अनसूया–संज्ञा स्त्री० १. पराए गुण में दोष न देखना। २. ईर्ष्या का अभाव। ३. अत्रि मुनि की स्त्री।
अनहद-नाद–संज्ञा पुं० दे० "अनाहत"।
अनहित–संज्ञा पुं० १. अहित। बुराई। २. शत्रु।
अनहोता–वि० १. दरिद्र। ग़रीब। २. अलौकिक। अचंभे का।
अनहोनी–वि० स्त्री० न होनेवाली। अलौकिक।
संज्ञा स्त्री० अलौकिक बात।
अनाकानी–संज्ञा स्त्री० सुनी अनसुनी करना।
अनाखर्–वि० बेडौल। बेढंगा।
अनागत–वि० न आया हुआ। अनुपस्थित।
क्रि० वि० अचानक। सहसा।
अनाचार–संज्ञा पुं० १. दुराचार। निंदित आचरण। २. कुरीति। कुप्रथा।
अनाज–संज्ञा पुं० अन्न। दाना। गल्ला।
अनाड़ी–वि० १. नासमझ। २. जो निपुण न हो। अकुशल।
अनात्म–वि० आत्मरहित। जड़।
संज्ञा पुं० आत्मा का विरोधी पदार्थ। अचित्। जड़।
अनाथ–वि० १. बिना मालिक का। २. असहाय। ३. दीन। दुखी।
अनाथालय–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ दीन दुखियों और असहायों का पालन हो। यतीमख़ाना।
अनाथाश्रम–संज्ञा पुं० दे० "अनाथालय"।
अनादर–संज्ञा पुं० आदर का अभाव। निरादर।

अभिनिवेश–संज्ञा पुं० १. प्रवेश। २. मनोयोग। ३. तत्परता।

अभिनीत–वि० १. निकट लाया हुआ। २. सुसज्जित। ३. अभिनय किया हुआ। खेला हुआ। (नाटक)।

अभिनेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करनेवाला व्यक्ति। स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। नट। ऐक्टर।

अभिनेय–वि० खेलने योग्य (नाटक)।

अभिन्न–वि० [संज्ञा अभिन्नता] जो भिन्न न हो। एकमय।

अभिप्राय–संज्ञा पुं० [वि० अभिप्रेत] आशय। मतलब।

अभिभावक–वि० १. अभिभूत या पराजित करनेवाला। २. रक्षक। सरपरस्त।

अभिभूत–वि० १. पराजित। हराया हुआ। २. विचलित।

अभिमत–वि० १. मनोनीत। वांछित। २. सम्मत। राय के मुताबिक। संज्ञा पुं० १. मत। सम्मति। राय। २. विचार। ३. मनचाही बात।

अभिमति–संज्ञा स्त्री० १. अभिमान। गर्व। अहंकार। २. राय। विचार।

अभिमन्यु–संज्ञा पुं० अर्जुन के पुत्र का नाम।

अभिमान–संज्ञा पुं० वि० [अभिमानी] अहंकार।

अभिमानी–वि० [स्त्री० अभिमानिनी] घमंडी।

अभिमुख–क्रि० वि० सामने।

अभियुक्त–वि० [स्त्री० अभियुक्ता] जिस पर अभियोग चलाया गया हो।

अभियोक्ता–वि० [स्त्री० अभियोक्त्री] अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। मुद्दई।

अभियोग–संज्ञा पुं० १. किसी के किए हुए दोष या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन। नालिश। २. मुकद्दमा।

अभियोगी–वि० अभियोग चलानेवाला। नालिश करनेवाला। फ़रियादी।

अभिरनाः–क्रि० अ० [सं० अभि + रण = युद्ध] १. भिड़ना। २. टेकना। क्रि० स० भिड़ाना।

अभिराम–वि० [स्त्री० अभिरामा] मनोहर।

अभिरुचि–संज्ञा स्त्री० चाह। पसंद।

अभिलषित–वि० वांछित। चाहा हुआ।

अभिलाखनाः–क्रि० स० इच्छा करना। चाहना।

अभिलाखाः–संज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाषा"।

अभिलाष–संज्ञा पुं० इच्छा।

अभिलाषा–संज्ञा स्त्री० कामना। चाह।

अभिलाषी–वि० [स्त्री० अभिलाषिणी] इच्छा करनेवाला। आकांक्षी।

अभिवंदन–संज्ञा पुं० १. प्रणाम। २. स्तुति।

अभिवादन–संज्ञा पुं० १. वंदना। २. स्तुति।

अभिव्यंजक–वि० प्रकट करनेवाला।

अभिव्यक्त–वि० प्रकट या ज़ाहिर किया हुआ।

अभिव्यक्ति–संज्ञा स्त्री० प्रकाशन।

अभिशाप–संज्ञा पुं० १. शाप। २. मिथ्या दोषारोपण।

अभिषंग–संज्ञा पुं० १. पराजय। २. निंदा। ३. झूठा दोषारोपण।

अनादि–वि० जिसका आदि न हो। जो सब दिन से हो।

अनादृत–वि० जिसका अनादर हुआ हो। अपमानित।

अनाना%–क्रि० स० मँगाना।

अनाप-शनाप–संज्ञा पुं० १. ऊट-पटाँग। २. निरर्थक बकवाद।

अनाम–वि० [सं०] [स्त्री० अनामा] १. बिना नाम का। २. अप्रसिद्ध।

अनामय–वि० १. रोगरहित। तंदुरुस्त। २. निर्दोष।
संज्ञा पुं० १. तंदुरुस्ती। २. कुशल-क्षेम।

अनामिका–संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली।

अनायास–क्रि० वि० बिना प्रयास। अचानक।

अनार–संज्ञा पुं० एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।

अनारदाना–संज्ञा पुं० १. खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना। २. रामदाना।

अनार्य–संज्ञा पुं० १. वह जो आर्य न हो। २. म्लेच्छ।

अनावश्यक–वि० [संज्ञा अनावश्यकता] जिसकी आवश्यकता न हो।

अनावृत–वि० जो ढँका न हो। खुला।

अनावृष्टि–संज्ञा स्त्री० वर्षा का अभाव। सूखा।

अनाश्रय–वि० निराश्रय। अनाथ। दीन।

अनाश्रित–वि० बेसहारा।

अनास्था–संज्ञा स्त्री० १. आस्था का अभाव। २. अनादर।

अनाहत–वि० जिस पर आघात न हुआ हो।
संज्ञा पुं० १. शब्दयोग में वह शब्द जो दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है। २. हठयोग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक।

अनाहार–संज्ञा पुं० भोजन का अभाव या त्याग।
वि० निराहार। जिसने कुछ खाया न हो।

अनाहूत–वि० बिना बुलाया हुआ।

अनिच्छा–संज्ञा स्त्री० इच्छा का अभाव। अरुचि।

अनिच्छित–वि० १. जिसकी इच्छा न हो। अनचाहा। २. अरुचिकर।

अनिंद्य–वि० पुं० [सं०] जो निंदा के योग्य न हो। उत्तम।

अनित्य–वि० [स्त्री० अनित्या। संज्ञा अनित्यत्व, अनित्यता] १. जो सब दिन न रहे। २. नश्वर।

अनिद्र–वि० निद्रारहित। जिसे नींद न आवे।
संज्ञा पुं० नींद न आने का रोग।

अनिमा%–संज्ञा स्त्री० दे० "अणिमा"।

अनिमिष, अनिमेष–वि० स्थिर दृष्टि। टकटकी के साथ।
क्रि० वि० १. बिना पलक गिराए। एक टक। २. निरंतर।

अनियंत्रित–वि० बिना रोक टोक का।

अनियमित–वि० [सं०] १. नियम-रहित। अव्यवस्थित। २. अनिश्चित।

अनियारा%–वि० [स्त्री० अनियारी] नुकीला। पैना। धारदार। तीक्ष्ण।

अनिरुद्ध–वि० [सं०] जो रोका हुआ न हो। बेरोक।

४. आलिंगन। ५. शपथ। ६. भूत-प्रेत का आवेश। ७. शोक।

अभिषिक्त–वि० [स्त्री० अभिषिक्ता] जिसका अभिषेक हुआ हो।

अभिषेक–संज्ञा पुं० [सं०] १. जल से सिंचन। छिड़काव। २. मंत्र से जल छिड़ककर राजपद पर बैठाना।

अभिसंधि–संज्ञा स्त्री० १. वंचना। धोखा। २. कुचक्र। षड्यंत्र।

अभिसरण–संज्ञा पुं० १. आगे जाना। २. प्रिय से मिलने के लिये जा[ना]।

अभिसार–संज्ञा पुं० [वि० अभि[सारिका] अभिसारी] प्रिय से मिलने [के लिये] नायिका या नायक का सं[केतस्थान] में जाना।

अभिसारिका–संज्ञा स्त्री० संकेत-स्थान में प्रि[य से मिलने के] लिये स्वयं जाय य[ा...]

अभिसारिणी–[संज्ञा स्त्री०] अभि सारिका।

अभिसार[...] १. सा[...] मि[...]

[...]ान। [...]वह तिथि [...]हो। [...]स्कार। अप-[...]श्रय। भाग। [...] [सं०] १. जिसके अवयव हों। २. कुल।

[अव]**राधक**–वि० आराधना करने-वाला।

अवराधन–संज्ञा पुं० उपासना। पूजा।

अवरुद्ध–वि० रुँधा या रुका हुआ।

अवरूढ़–वि० ऊपर से नीचे आया हुआ। उतरा हुआ।

अवरेखनाः–क्रि० स० [सं० अव-लेखन] १. उरेहना। लिखना। २. देखना। कल्पना करना।

अवरेब–संज्ञा पुं० तिरछी चाल।

यौ०—अवरेबदार = तिरछी काट का। २. पेच। उलझन।

अवरोध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। २. घेर लेना। ३. अनुरोध।

अवरोधक–वि० रोकनेवाला।

अवरोधी–वि० [स्त्री० अवरोधिनी] अवरोध करनेवाला।

अवरोह–संज्ञा पुं० १. उतार। २. अवनति।

अवरोहण–संज्ञा पुं० [वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही] नीचे की ओर जाना।

ः क्रि० स० रोकना।

अवरोही (स्वर)–संज्ञा पुं० वह स्वर-साधन जिसमें पहले षड्ज का उच्चारण हो, फिर निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतरते हुए स्वर निकलें। विलोम। आरोही का उलटा।

अवर्ण–वि० १. वर्णरहित। २. बुरे रंग का। ३. वर्ण-धर्म-रहित।

अवर्ण्य–वि० जो वर्णन के योग्य न हो।

अवलंघना–क्रि० स० लाँघना।

अवलंब–संज्ञा पुं० आश्रय।

अवलंबन–संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवलंबित, अवलंबी] १. आधार। २. धारण। ग्रहण।

अवलंबित–वि० [सं०] १. सहारे पर स्थित। २. निर्भर।

अवलंबी–वि० पुं० [स्त्री० अवलंबिनी] १. सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।

अवलीः–संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। २. समूह। झुंड।

अवलीकः–वि० पापशून्य। शुद्ध।

अवलेखना–क्रि० स० [सं० अवलेखन] खोदना। खुरचना।

अवलेप–संज्ञा पुं० [सं० अवलेपन] उब-टन। लेप।

संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिनको ऊषा ब्याही थी।

अनिर्दिष्ट–वि० १. जो बताया न गया हो। २. अनिश्चित। ३. असीम।

अनिर्वचनीय–वि० जिसका वर्णन न हो सके।

अनिल–संज्ञा पुं० वायु। हवा।

अनिलकुमार–संज्ञा पुं० हनुमान्।

अनिवार्य–वि० १. जिसका निवारण न हो। २. जिसके बिना काम न चल सके।

अनिष्ट–वि० जो इष्ट न हो। अनभिलषित।
संज्ञा पुं० अमंगल। अहित। बुराई। खराबी।

अनी–संज्ञा स्त्री० १. नोक। सिरा। कोर। २. किसी चीज़ का अगला सिरा।
संज्ञा स्त्री० [सं० अनीक=समूह] १. समूह। झुंड। दल। २. सेना। फ़ौज।
संज्ञा स्त्री० ग्लानि।

अनीक–संज्ञा पुं० [सं०] सेना। फ़ौज।

अनीति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अन्याय। २. शरारत। ३. अंधेर।

अनीश–वि० [स्त्री० अनीशा] १. बिना मालिक का। २. अनाथ। ३. सबसे श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. जीव। माया।

अनीश्वरवाद–संज्ञा पुं० १. ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास। नास्तिकता। २. मीमांसा।

अनीश्वरवादी–वि० १. ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक। २. मीमांसक।

अनु–उप० एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले यह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों का संयोग करता है—१. पीछे। जैसे–अनुगामी। २. सदृश। जैसे–अनुकूल। अनुरूप। ३. साथ। जैसे—अनुपान। ४. प्रत्येक। जैसे–अनुक्षण। ५. बारंबार। जैसे—अनुशीलन।

अनुकंपा–संज्ञा स्त्री० दया। कृपा।

अनुकरण–संज्ञा पुं० [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] देखादेखी कार्य्य। नकल।

अनुकूल–वि० १. मुआफ़िक़। २. पक्ष में रहनेवाला। सहायक। ३. प्रसन्न।

अनुकूलना*–क्रि० स० १. हितकर होना। २. प्रसन्न होना।

अनुकृत–वि० अनुकरण या नकल किया हुआ।

अनुकृति–संज्ञा स्त्री० देखा-देखी कार्य। नकल।

अनुक्त–वि० [स्त्री० अनुक्ता] अकथित। बिना कहा हुआ।

अनुक्रम–संज्ञा पुं० क्रम। सिलसिला।

अनुक्रमणिका–संज्ञा स्त्री० १. क्रम। सिलसिला। २. सूची।

अनुक्षण–क्रि० वि० १. प्रतिक्षण। २. लगातार। निरंतर।

अनुग, अनुगत–संज्ञा पुं० सेवक। नौकर।

अनुगमन–संज्ञा पुं० १. पीछे चलना। २. विधवा का मृत पति के साथ जल मरना।

अनुगामी–वि० [स्त्री० अनुगामिनी] १. पीछे चलनेवाला। २. आज्ञाकारी।

अनुगृहीत–वि० जिस पर अनुग्रह किया गया हो।

अवलेपन–संज्ञा पुं० [सं०] १. लगाना। पोतना। २. लेप। ३. घमंड।
अवलेह–संज्ञा पुं० [अवलेह्य] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २. चटनी।
अवलोकन–संज्ञा पुं० [वि० अवलोकित, अवलोकनीय] १ देखना। २. जाँच-पड़ताल।
अवलोकनिः–संज्ञा स्त्री० [सं० अवलोकन] १. आँख। २. चितवन।
अवश–वि० विवश। लाचार।
अवशिष्ट–वि० शेष। बाकी।
अवशेष–वि० बचा हुआ। शेष। संज्ञा पुं० [सं०] [वि० अवशिष्ट] १. बची हुई वस्तु। २. अंत।
अवश्य–क्रि० वि० निश्चय करके। निःसंदेह।
वि० [सं०] [स्त्री० अवश्या] जो वश में न आ सके।
अवश्यमेव–क्रि० वि० अवश्य ही। ज़रूर।
अवसन्न–वि० [सं०] विषाद-प्राप्त। दुःखी।
अवसर–संज्ञा पुं० [सं०] १. समय। २. फ़ुरसत।
अवसाद–संज्ञा पुं० १. नाश। क्षय। २. विषाद। ३. थकावट।
अवसान–संज्ञा पुं० १. विराम। ठहराव। २. समाप्ति।
अवसेचन–संज्ञा पुं० १. सींचना। पानी देना। २. पसीजना। ३. शरीर का पसीना अथवा रक्त निकालना।
अवस्था–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. दशा। २. समय। ३. आयु। ४. स्थिति।
अवस्थान–संज्ञा पुं० १. स्थान। २. ठहराव।
अवस्थित–वि० विद्यमान। मौजूद।
अवस्थिति–संज्ञा स्त्री० स्थिति।
अवहेलना–संज्ञा स्त्री० अवज्ञा। तिरस्कार। बेपरवाही।
अवहेलित–वि० जिसकी अवहेलना हुई हो।
अवाँ–संज्ञा पुं० दे० "आवाँ"।
अवांतर–वि० अंतर्गत। मध्यवर्ती। संज्ञा पुं० मध्य। बीच।
अवाई–संज्ञा स्त्री० १. आगमन। २. गहिरी जोताई।
अवाक्–वि० १. चुप। मौन। २. स्तंभित।
अवाङ्मुख–वि० [सं०] १. अधोमुख। २. लज्जित।
अवाची–संज्ञा स्त्री० दक्षिण दिशा।
अवाच्य–वि० १. जो कुछ कहने योग्य न हो। २. जिससे बात करना उचित न हो। नीच।
संज्ञा पुं० कुवाच्य। गाली।
अवार–संज्ञा पुं० नदी के इस पार का किनारा। 'पार' का उलटा।
अवारजा–संज्ञा पुं० वह बही जिसमें प्रत्येक असामी की जोत आदि लिखी जाती है।
अवारनाः–क्रि० स० १. रोकना। मना करना। २. दे० "वारना"। संज्ञा स्त्री० किनारा। मोड़।
अवासः–संज्ञा पुं० दे० "आवास"।
अवि–संज्ञा पुं० [सं०] १. सूर्य। २. मंदार।
अविकल–वि० [सं०] १. ज्यों का त्यों। २. निश्चल। शांत।
अविकल्प–वि० [सं०] निश्चित।

अनुग्रह–संज्ञा पुं० [वि० अनुगृहीत, अनुग्राही, अनुग्राहक] कृपा। दया।
अनुग्राहक–वि० [स्त्री० अनुग्राहिका] अनुग्रह करनेवाला।
अनुचर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुचरी] १. दास। नौकर। २. साथी।
अनुचित–वि० अयुक्त। नामुनासिब।
अनुज–वि० जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। संज्ञा पुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई।
अनुज्ञा–संज्ञा स्त्री० आज्ञा। हुक्म।
अनुताप–संज्ञा पुं० [वि० अनुतप्त] १. जलन। २. दुःख। ३. पछतावा।
अनुदात्त–वि० [सं०] छोटा। तुच्छ।
अनुदिन–क्रि० वि० नित्यप्रति। प्रतिदिन।
अनुनय–संज्ञा पुं० विनय। विनती।
अनुनासिक–वि० जो (अक्षर) मुँह और नाक से बोला जाय। जैसे—ङ, ञ, ण।
अनुपम–वि० [संज्ञा अनुपमता] बेजोड़।
अनुपयुक्त–वि० अयोग्य। बेठीक।
अनुपयोगिता–संज्ञा स्त्री० निरर्थकता।
अनुपयोगी–वि० बेकाम। व्यर्थ का।
अनुपस्थित–वि० जो सामने मौजूद न हो।
अनुपस्थिति–संज्ञा स्त्री० ग़ैरमौजूदगी।
अनुपात–संज्ञा पुं० गणित की त्रैराशिक क्रिया।
अनुपातक–संज्ञा पुं० ब्रह्महत्या के समान पाप। जैसे,—चोरी, झूठ बोलना।
अनुपान–संज्ञा पुं० वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाय।
अनुप्रास–संज्ञा पुं० वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार आता है। वर्णवृत्ति। वर्णमैत्री।
अनुभव–संज्ञा पुं० [वि० अनुभवी] वह ज्ञान जो साक्षात् करने से प्राप्त हो। तजरबा।
अनुभवी–वि० अनुभव रखनेवाला।
अनुभाव–संज्ञा पुं० १. काव्य में रस के चार योजकों में से एक। २. चित्त के भाव को प्रकाश करनेवाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ।
अनुभूत–वि० १. जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २. परीक्षित।
अनुभूति–संज्ञा स्त्री० अनुभव।
अनुमति–संज्ञा स्त्री० आज्ञा। इजाज़त।
अनुमान–संज्ञा पुं० [वि० अनुमित] अटकल। अंदाज़ा।
अनुमित–वि० अनुमान किया हुआ।
अनुमिति–संज्ञा स्त्री० अनुमान।
अनुमेय–वि० अनुमान के योग्य।
अनुमोदन–संज्ञा पुं० १. प्रसन्नता का प्रकाशन। २. समर्थन।
अनुयायी–वि० [स्त्री० अनुयायिनी] पीछे चलनेवाला। संज्ञा पुं० अनुचर। सेवक। दास।
अनुरंजन–संज्ञा पुं० १. अनुराग। २. दिलबहलाव।
अनुराग–संज्ञा पुं० प्रीति। प्रेम।
अनुरागी–वि० [स्त्री० अनुरागिनी] अनुराग रखनेवाला। प्रेमी।
अनुराध–संज्ञा पुं० विनती। विनय।
अनुराधा–संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में १७वाँ नक्षत्र।
अनुरूप–वि० १. तुल्य रूप का। समान। २. योग्य।
अनुरोध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। २. प्रेरणा। ३. विनयपूर्वक किसी बात के लिये हठ।

अविकार-वि० [सं०] विकार-रहित। संज्ञा पुं० [सं०] विकार का अभाव।

अविकारी-वि० [स्त्री० अविकारिणी] जिसमें विकार न हो।

अविकृत-वि० पुं० जो बिगड़ा या बदला न हो।

अविगत-वि० जो जाना न जाय।

अविचल-वि० अचल। स्थिर। अटल।

अविच्छिन्न-वि० अटूट। लगातार।

अविच्छेद-वि० जिसका विच्छेद न हो।

अविज्ञात-वि० अनजाना।

अविज्ञेय-वि० पुं० जो जाना न जा सके।

अविद्यमान-वि० [सं०] १. अनुपस्थित। २ असत्।

अविद्या-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। २. माया का एक भेद। ३. कर्मकांड। ४. सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति। जड़।

अविधि-वि० विधि-विरुद्ध। नियम के विपरीत।

अविनय-संज्ञा पुं० ढिठाई। उद्दंडता।

अविनश्वर-वि० जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। चिरस्थायी।

अविनाश-संज्ञा पुं० विनाश का अभाव। अक्षय।

अविनाशी-वि० पुं० [स्त्री० अविनाशिनी] १. अक्षय। २. नित्य।

अविनीत-वि० [सं०] [स्त्री० अविनीता] १. उद्धत। २. सरकश। ३. ढीठ।

अविभक्त-वि० [वि० अविभाज्य] १. मिला हुआ। २. जो बाँटा न गया हो।

अविमुक्त-वि० पुं० जो विमुक्त न हो। बद्ध। संज्ञा पुं० [सं०] १. कनपटी। २. काशी।

अविरत-वि० १. निरंतर। २. लगा हुआ। क्रि० वि० [सं०] १. निरंतर। २. नित्य।

अविरति-संज्ञा स्त्री० [सं०] १. निवृत्ति का अभाव। २. विषयासक्ति।

अविरल-वि० १. मिला हुआ। २. घना। सघन।

अविराम-वि० [सं०] बिना विश्राम लिए हुए।

अविवाहित-वि० पुं० [स्त्री० अविवाहिता] जिसका ब्याह न हुआ हो। कुँआरा।

अविवेक-संज्ञा पुं० [सं०] विवेक का अभाव। अविचार। अज्ञान।

अविवेकी-वि० १. अज्ञानी। विवेक-रहित। २. मूढ़।

अविश्रांत-वि० १. जो रुके नहीं। २. जो थके नहीं।

अविश्वसनीय-वि० जिस पर विश्वास न किया जा सके।

अविश्वास-संज्ञा पुं० विश्वास का अभाव।

अविश्वासी-वि० १. जो किसी पर विश्वास न करे। २. जिस पर विश्वास न किया जाय।

अविषय-वि० [सं०] जो मन या इंद्रिय का विषय न हो।

अविहड़-वि० जो खंडित न हो। अखंड।

अवीरा-वि० स्त्री० १. पुत्र और पति-रहित (स्त्री)। २. स्वतंत्र (स्त्री)।

अवेक्षण-संज्ञा पुं० [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] अवलोकन। देखना।

अनुलेपन–संज्ञा पुं० १. लेपन। २. उबटन करना। घटना लगाना। ३. लीपना।

अनुलोम–संज्ञा पुं० १. ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार का सिलसिला। २. संगीत में सुरों का उतार। अवरोही।

अनुलोम विवाह–संज्ञा पुं० उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से किसी नीच वर्ण की स्त्री के साथ विवाह।

अनुवाद–संज्ञा पुं० १. पुनरुक्ति। २. भाषांतर। उल्था।

अनुवादक–संज्ञा पुं० अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। उल्था करनेवाला।

अनुवादित–वि० अनुवाद किया हुआ।

अनुशासक–संज्ञा पुं० १. आज्ञा या आदेश देनेवाला। २. शिक्षक। ३. देश या राज्य का प्रबंध करनेवाला।

अनुशासन–संज्ञा पुं० १. आज्ञा। २. उपदेश। शिक्षा।

अनुशीलन–संज्ञा पुं० १. चिंतन। मनन। २. अभ्यास।

अनुषंग–संज्ञा पुं० [वि० आनुषंगिक] १. करुणा। दया। २. संबंध। लगाव। प्रसंग।

अनुष्टुप–संज्ञा पुं० ३२ अक्षरों का एक वर्ण छंद।

अनुष्ठान–संज्ञा पुं० १. कार्य्य का आरंभ। २. फल के निमित्त किसी देवता की आराधना।

अनुसंधान–संज्ञा पुं० [सं०] खोज। ढूँढ़। तहक़ीक़ात।

अनुसरण–संज्ञा पुं० पीछे या साथ चलना।

अनुसार–वि० [सं०] अनुकूल। समान।

अनुस्वार–संज्ञा पुं० १. स्वर के पीछे उच्चारण होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, जिसका चिह्न (ं) है। २. स्वर के ऊपर की बिंदी।

अनुहरत॰–वि० १. अनुसार। अनुरूप। २. उपयुक्त। योग्य।

अनुहार–वि० [सं०] १. समान। २. अनुसार। अनुकूल।
संज्ञा स्त्री० १. भेद। प्रकार। २. मुखाकृति। ३. सादृश्य।

अनुहारना॰–क्रि० स० तुल्य करना। समान करना।

अनुहारी–वि० [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण या नकल करनेवाला।

अनूठा–वि० [स्त्री० अनूठी] १. अनोखा। २ अच्छा। बढ़िया।

अनूढ़ा–संज्ञा स्त्री० वह बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूदित–वि० १. कहा हुआ। किया हुआ। २. तर्जुमा किया हुआ।

अनूप–वि० १. जिसकी उपमा न हो। २. सुंदर।

अनृत–संज्ञा पुं० मिथ्या। असत्य।

अनेक–वि० एक से अधिक। बहुत।

अनेरा–वि० [स्त्री० अनेरी] १. झूठ। २. झूठा। ३. अन्यायी। ४. निकम्मा। क्रि० वि० व्यर्थ। फ़जूल।

अनैक्य–संज्ञा पुं० एका न होना। मत-भेद।

अनैस॰†–संज्ञा पुं० बुराई।
वि० बुरा। खराब।

अनैसा॰–वि० [हिं० अनैस] [स्त्री० अनैसी] अप्रिय।

अनैसे॰–क्रि० वि० बुरे भाव से।

अनोखा–वि० [स्त्री० अनोखी] अनूठा। निराला। विलक्षण।

अवैतनिक–वि० [सं०] बिना वेतन या तनख़्वाह के काम करनेवाला। आनरेरी।
अवैदिक–वि० [सं०] वेद-विरुद्ध।
अव्यक्त–वि०[सं०] अप्रत्यक्ष। अगोचर।
अव्यक्त गणित–संज्ञा पुं० बीज-गणित।
अव्यय–वि० १. जो विकार को प्राप्त न हो। सदा एकरस रहनेवाला। अक्षय। २. नित्य। आदि-अंत-रहित। संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, सब विभक्तियों और सब वचनों में समान रूप से प्रयोग हो। २. परब्रह्म। ३. शिव। ४. विष्णु।
अव्ययीभाव–संज्ञा पुं० समास का एक भेद (व्याकरण)।
अव्यर्थ–वि० १. जो व्यर्थ न हो। सफल। २. सार्थक। ३. अमोघ।
अव्यवस्था–संज्ञा स्त्री०[वि० अव्यवस्थित] १. नियम का न होना। बेक़ायदगी। २. गड़बड़।
अव्यवस्थित–वि० १. शास्त्रादि-मर्यादा-रहित। २. अस्थिर।
अव्यावृत–वि० निरंतर। लगातार। अटूट।
अव्याहत–वि० १. बेरोक। २. सत्य।
अव्युत्पन्न–वि० १. अनाड़ी। २. व्याकरण शास्त्रानुसार वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके।
अव्वल–वि० [अ०] १. पहला। २. उत्तम। संज्ञा पुं० आदि। प्रारंभ।
अशंक–वि० बेडर। निर्भय।
अशकुन–संज्ञा पुं० बुरा शकुन। बुरा लक्षण।
अशक्त–वि० [संज्ञा अशक्ति] निर्बल।
अशक्य–वि० असाध्य। न होने योग्य।
अशन–संज्ञा पुं० १. भोजन। २. खाने की क्रिया।
अशरण–वि० जिसे कहीं शरण न हो। अनाथ।
अशरफ़ी–संज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. सोलह से पचीस रुपए तक का सोने का एक सिक्का। मोहर। २. पीले रंग का एक फूल।
अशराफ़–वि० [अ०] शरीफ़। भद्र।
अशांति–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। चंचलता। २. क्षोभ। असंतोष।
अशिक्षित–वि० [सं०] जिसने शिक्षा न पाई हो। अनपढ़।
अशिष्ट–वि० [सं०] उजड्ड। बेहूदा।
अशिष्टता–संज्ञा स्त्री० [सं०] असाधुता। बेहूदगी।
अशुचि–वि० [अशौच] १. अपवित्र। २. गंदा।
अशुद्ध–वि० [सं०] १. अपवित्र। २. बिना शोधा। ३. ग़लत।
अशुन–संज्ञा पुं० अश्विनी नक्षत्र।
अशुभ–संज्ञा पुं० १. अमंगल। २. पाप। वि० [सं०] जो शुभ न हो। बुरा।
अशेष–वि० [सं०] १. पूरा। समूचा। २. अनंत।
अशोक–वि० [सं०] दुःख-शून्य। संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लंबी लंबी और किनारों पर लहरदार होती हैं।
अशोक-घाटिका–संज्ञा स्त्री० [सं०] १. शोक को दूर करनेवाला रम्य उद्यान। २. रावण का वह प्रसिद्ध बग़ीचा जिसमें उसने सीताजी को ले जाकर रखा था।

अशौच-संज्ञा पुं० [वि० अशुचि] अपवित्रता। अशुद्धता।
अश्मकुट्ट-संज्ञा पुं० एक प्रकार के वानप्रस्थ जो केवल पत्थर से अन्न कूटकर पकाते थे।
अश्रद्धा-संज्ञा स्त्री० [वि० अश्रद्धेय] श्रद्धा का अभाव।
अश्रांत-वि० जो थका-माँदा न हो। क्रि० वि० लगातार। निरंतर।
अश्रु-संज्ञा पुं० आँसू।
अश्रुत-वि० १. जो सुना न गया हो। २. जिसने कुछ देखा-सुना न हो।
अश्रुपात-संज्ञा पुं० आँसू गिराना।
अश्लिष्ट-वि० श्लेषशून्य।
अश्लील-वि० फूहड़। भद्दा।
अश्लीलता-संज्ञा स्त्री० फूहड़पन। लज्जा का उल्लंघन।
अश्लेषा-संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से नवाँ।
अश्व-संज्ञा पुं० घोड़ा।
अश्वकर्ण-संज्ञा पुं० एक प्रकार का शाल वृक्ष।
अश्वगंधा-संज्ञा स्त्री० असगंध।
अश्वतर-संज्ञा पुं० [स्त्री० अश्वतरी] १. नागराज। २. खच्चर।
अश्वत्थ-संज्ञा पुं० पीपल।
अश्वत्थामा-संज्ञा पुं० द्रोणाचार्य के पुत्र।
अश्वपति-संज्ञा पुं० १. घुड़सवार। २. रिसालदार।
अश्वपाल-संज्ञा पुं० साईस।
अश्वमेध-संज्ञा पुं० एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिये छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चर्बी से हवन किया जाता था।
अश्वशाला-संज्ञा स्त्री० अस्तबल। तबेला।
अश्वारोही-वि० घोड़े का सवार।
अश्विनी-संज्ञा स्त्री० १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।
अश्विनीकुमार-संज्ञा पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।
अषाढ़-संज्ञा पुं० दे० "आषाढ़"।
अष्ट-वि० [सं०] आठ।
अष्टधाती-वि० १. अष्टधातुओं से बना हुआ। २. दृढ़। मज़बूत। ३. वर्णसंकर।
अष्टधातु-संज्ञा स्त्री० आठ धातुएँ—सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।
अष्टपदी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जिसमें आठ पद होते हैं।
अष्टप्रकृति-संज्ञा स्त्री० राज्य के आठ प्रधान कर्मचारी। यथा—सुमंत्र, पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक और प्रतिनिधि।
अष्टभुजा-संज्ञा स्त्री० [सं०] दुर्गा।
अष्टम-वि० पुं० [सं०] आठवाँ।
अष्टमी-संज्ञा स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि।
अष्टांग-संज्ञा पुं० [वि० अष्टांगी] योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।
अष्टांगी-वि० आठ अंगोंवाला।
अष्टाक्षर-संज्ञा पुं० आठ अक्षरों का मंत्र।

वि० आनेवाला। आगामी।
आगमज्ञानी–वि० भविष्य का जाननेवाला।
आगमन–संज्ञा पुं० अवाई। आना।
आगमवाणी–संज्ञा स्त्री० भविष्यवाणी।
आगमविद्या–संज्ञा स्त्री० वेदविद्या।
आगमसोची–वि० दूरदर्शी। अग्रसोची।
आगमी–संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
आगर–संज्ञा पुं० [स्त्री० आगरी] १. खान। २. समूह। ३. कोष।
संज्ञा पुं० घर। गृह।
वि० [सं० अग्र] १. श्रेष्ठ। २. चतुर।
आगरी–संज्ञा पुं० नमक बनानेवाला पुरुष। लोनिया।
आगा–संज्ञा पुं० १. किसी चीज़ के आगे का भाग। २. शरीर का अगला भाग। ३. सेना या फ़ौज का अगला भाग। हरावल। ४. घर के सामने का मैदान। ५. आगे आनेवाला समय। भविष्य।
संज्ञा पुं० काबुली। अफ़ग़ान।
आगान०–संज्ञा पुं० बात। प्रसंग।
आगा-पीछा–संज्ञा पुं० १. हिचक। दुबधा। २. परिणाम। नतीजा।
आगामि, आगामी–वि० [स्त्री० आगामिनी] भावी। होनहार।
आगार–संज्ञा पुं० १. घर। मकान। २. खज़ाना।
आगाह–वि० जानकार।
० संज्ञा पुं० आगम। होनहार।
आगाही–संज्ञा स्त्री० जानकारी।
आगि०†–संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।
आगिल०–वि० दे० "अगला"।
आगी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "आग"।
आगे–क्रि० वि० १. और दूर पर। और बढ़कर। 'पीछे' का उलटा। २. सामने। ३. भविष्य में। ४. अनंतर। ५. पूर्व। पहले।
आग्नेय–वि० [स्त्री० आग्नेयी] १. अग्नि-संबंधी। २. अग्नि से उत्पन्न। ३. जिससे आग निकले। जलानेवाला।
संज्ञा पुं० १. सुवर्ण। २. रक्त। रुधिर। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. अग्नि के पुत्र कार्त्तिकेय। ५. ज्वालामुखी पर्वत। ६. वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे; जैसे—बारूद। ७. ब्राह्मण। ८. अग्निकोण।
आग्नेयास्त्र–संज्ञा पुं० प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।
आग्नेयी–वि० स्त्री० १. अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २. पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा।
आग्रह–संज्ञा पुं० १. अनुरोध। हठ। २. तत्परता।
आग्रहायण–संज्ञा पुं० अगहन।
आग्रही–वि० हठी। ज़िद्दी।
आघात–संज्ञा पुं० १. धक्का। २. मार। आक्रमण।
आघ्राण–संज्ञा पुं० [वि० आघ्रात, आघ्रेय] १. सूँघना। बास लेना। २. अघाना। तृप्ति।
आचमन–संज्ञा पुं० [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २. पूजा या धर्म-संबंधी कर्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।
आचमनी–संज्ञा स्त्री० एक छोटा

वि० [सं०] आठ अक्षरों का।
अष्टाध्यायी-संज्ञा स्त्री० पाणिनीय व्याकरण का प्रधान ग्रंथ जिसमें आठ अध्याय हैं।
अष्टावक्र-संज्ञा पुं० १. एक ऋषि। २. टेढ़े-मेढ़े अंगों का मनुष्य।
असंक-वि० दे० "अशंक"।
असंक्रांति मास-संज्ञा पुं० अधिक मास। मलमास।
असंख्य-वि० अनगिनत।
असंग-वि० [सं०] १. अकेला। एकाकी। २. निर्लिप्त।
असंगत-वि० अयुक्त। बेठीक।
असंगति-संज्ञा स्त्री० [सं०] बेसिलसिलापन। बेमेल होने का भाव।
असंबद्ध-वि० [सं०] १. जो मेल में न हो। २. पृथक्। ३. अनमिल।
असंभार-वि० १. जो सँभालने योग्य न हो। २. अपार। बहुत बड़ा।
असंभाव्य-वि० जिसकी संभावना न हो। अनहोना।
असंभाष्य-वि० १. न कहे जाने योग्य। २. जिससे बातचीत करना उचित न हो। बुरा।
असंयत-वि० [सं०] संयम-रहित।
असंस्कृत-वि० [सं०] बिना सुधारा हुआ। जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो।
असा-वि० इस प्रकार का। ऐसा।
असकताना-क्रि० अ० आलस्य में पड़ना। आलसी होना।
असगंध-संज्ञा पुं० [सं० अश्वगंधा] एक सीधी झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्टई और दवा के काम में आती है। अश्वगंधा।
असगुन-संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"।
असत्-वि० [सं०] १. अस्तित्व-विहीन। सत्ता-रहित। २. बुरा। ३. असाधु।
असत्ता-संज्ञा स्त्री० [सं०] सत्ता का अभाव। अनस्तित्व।
असत्य-वि० [सं०] मिथ्या। झूठ।
असवर्ग-संज्ञा पुं० [फा०] खुरासान की एक लंबी घास जिसके फूल रेशम रँगने के काम में आते हैं।
असबाब-संज्ञा पुं० चीज़। वस्तु। सामान।
असभ्यता-संज्ञा स्त्री० अशिष्टता। बेहूदगी। असभ्यता।
असभ्य-वि० अशिष्ट। गँवार।
असभ्यता-संज्ञा स्त्री० अशिष्टता।
असमंजस-संज्ञा स्त्री० दुबधा। आगा-पीछा।
असमंत-संज्ञा पुं० [सं० अश्मंत] चूल्हा।
असम-वि० [सं०] १. जो सम या तुल्य न हो। २. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।
असमय-संज्ञा पुं० विपत्ति का समय। क्रि० वि० कुअवसर। बे मौक़ा।
असमर्थ-वि० [सं०] सामर्थ्य-हीन। दुर्बल।
असमशर-संज्ञा पुं० कामदेव।
असम्मत-वि० [सं०] १. जो राज़ी न हो। २. जिस पर किसी की राय न हो।
असमान-वि० [सं०] जो समान या तुल्य न हो।
संज्ञा पुं० दे० "आसमान"।
असमाप्त-वि० [संज्ञा असमाप्ति] अपूर्ण। अधूरा।

चम्मच जिससे आचमन करते हैं।

आचरज☆-संज्ञा पुं० दे० "अचरज"।

आचरण-संज्ञा पुं० [वि० आचरणीय, आचरित] १. अनुष्ठान। २. व्यवहार। चाल-चलन।

आचरणीय-वि० व्यवहार करने योग्य। करने योग्य।

आचरन☆-संज्ञा पुं० दे० "आचरण"।

आचरना☆-क्रि० अ० आचरण करना। व्यवहार करना।

आचरित-वि० किया हुआ।

आचार-संज्ञा पुं० व्यवहार। चलन।

आचारज☆-संज्ञा पुं० दे० "आचार्य"।

आचारवान्-वि० [स्त्री० आचारवती] पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध आचार का।

आचार-विचार-संज्ञा पुं० आचार और विचार। रहने की सफ़ाई।

आचारी-वि० [स्त्री० आचारिणी] आचारवान्। चरित्रवान्।

संज्ञा पुं० रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।

आचार्य-संज्ञा पुं० [स्त्री० आचार्याणी] गुरु।

आच्छन्न-वि० १. ढका हुआ। आवृत। २. छिपा हुआ।

आच्छादक-संज्ञा पुं० ढाँकनेवाला।

आच्छादन-संज्ञा पुं० [वि० आच्छादित, आच्छन्न] १. ढकना। २. वस्त्र।

आच्छादित-वि० ढका हुआ। छिपा हुआ।

आछत-क्रि० वि० १. मौजूदगी में। सामने। २. अतिरिक्त।

आछा☆-वि० दे० "अच्छा"।

आछे☆-क्रि० वि० अच्छी तरह।

आछेप☆-संज्ञा पुं० दे० "आक्षेप"।

आज-क्रि० वि० वर्तमान दिन में। अब।

आजकल-क्रि० वि० इन दिनों। वर्तमान दिनों में।

आजन्म-क्रि० वि० जन्म भर।

आजमाइश-संज्ञा स्त्री० परीक्षा।

आजमाना-क्रि० स० परीक्षा करना। परखना।

आजा-संज्ञा पुं० [स्त्री० आजी] पितामह। बाप का बाप।

आज़ाद-वि० [संज्ञा आज़ादी, आज़ादगी] १. जो बद्ध न हो। बरी। २. बेपरवाह। ३. स्वतंत्र। ४. निडर।

आज़ादी-संज्ञा स्त्री० स्वतंत्रता।

आजानु-वि० जाँघ या घुटने तक लंबा।

आज़ार-संज्ञा पुं० रोग। बीमारी।

आजिज़-वि० १. दीन। २. हैरान।

आजीवन-क्रि० वि० जीवन-पर्यंत।

आजीविका-संज्ञा स्त्री० वृत्ति। रोज़ी।

आज्ञा-संज्ञा स्त्री० १. आदेश। २. अनुमति।

आज्ञाकारी-वि० [स्त्री० आज्ञाकारिणी] १. आज्ञा माननेवाला। २. सेवक।

आज्ञापक-वि० [स्त्री० आज्ञापिका] १. आज्ञा देनेवाला। २. प्रभु।

आज्ञापत्र-संज्ञा पुं० हुक्मनामा।

आज्ञापन-संज्ञा पुं० [वि० आज्ञापित] सूचित करना। जताना।

आज्ञापालक-वि० [स्त्री० आज्ञापालिका] १. आज्ञाकारी। २. दास।

आज्ञापित-वि० जताया हुआ।

आज्ञापालन-संज्ञा पुं० आज्ञा के अनुसार काम करना।

आटना-क्रि० स० तोपना। दबाना।

असयाना॰–वि॰ १. सीधा-सादा। २. अनाड़ी।
असर–संज्ञा पुं॰ प्रभाव।
असरार॰–क्रि॰ वि॰ निरंतर। लगातार। बराबर।
असल–वि॰ [अ॰] १. सच्चा। खरा। २. उच्च।
संज्ञा पुं॰ १. जड़। बुनियाद। २. मूल धन।
असलियत–संज्ञा स्त्री॰ तथ्य। सार।
असली–वि॰ १. सच्चा। खरा। २. शुद्ध।
असवार†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "सवार"।
असह॰–वि॰ दे॰ "असह्य"।
असहनशील–वि॰ [संज्ञा असहन॰शीलता] १. जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। २. चिड़चिड़ा। तुनक-मिजाज।
असहनीय–वि॰ न सहने योग्य।
असहयोग–संज्ञा पुं॰ [सं॰] १. मिलकर काम न करना। २. आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रकट करने के लिये उसके कामों से बिल्कुल अलग रहना।
असहाय–वि॰ जिसे कोई सहारा न हो।
असहिष्णु–वि॰ [संज्ञा असहिष्णुता] चिड़चिड़ा।
असही–वि॰ दूसरे को देखकर जलनेवाला।
असह्य–वि॰ जो बरदाश्त न हो सके।
असा–संज्ञा पुं॰ १. सोंटा। डंडा। २. चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा।
असाढ़–संज्ञा पुं॰ दे॰ "आषाढ़"।
असाढ़ी–वि॰ आषाढ़ का।
संज्ञा स्त्री॰ १. वह फ़सल जो आषाढ़ में बोई जाय। खरीफ़। २. आषाढ़ी पूर्णिमा।
असाधारण–वि॰ जो साधारण न हो। असामान्य।
असाध्य–वि॰ [सं॰] न होने योग्य। कठिन।
असामयिक–वि॰ [सं॰] जो नियत समय से पहले या पीछे हो।
असामर्थ्य–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] शक्ति का अभाव।
असामान्य–वि॰ असाधारण।
असामी–संज्ञा पुं॰ १. व्यक्ति। प्राणी। २. जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो।
संज्ञा स्त्री॰ नौकरी। जगह।
असार–वि॰ [संज्ञा असारता] १. सार-रहित। निःसार। २. तुच्छ।
असालतन्–क्रि॰ वि॰ स्वयं। खुद।
असावरी–संज्ञा स्त्री॰ छत्तीस रागिनियों में से एक।
असि–संज्ञा स्त्री॰ तलवार। खड्ग।
असित–वि॰ १. काला। २. दुष्ट। बुरा।
असिद्ध–वि॰ [सं॰] १. जो सिद्ध न हो। २. कच्चा।
असिद्धि–संज्ञा स्त्री॰ [सं॰] १. अप्राप्ति। २. कच्चापन।
असी–संज्ञा स्त्री॰ एक नदी जो काशी के दक्षिण गंगा से मिली है।
असीम–वि॰ [सं॰] सीमा-रहित। बे-हद।
असील॰–वि॰ दे॰ "असल"।
असीस॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "आशिष"।
असीसना–क्रि॰ स॰ आशीर्वाद देना। दुआ देना।

आटा–संज्ञा पुं० पिसान।
आठ–वि० चार का दूना।
आडंबर–संज्ञा पुं० [वि० आडंबरी] १. ऊपरी बनावट। तड़क-भड़क। २. आच्छादन।
आडंबरी–वि० ढोंगी।
आड़–संज्ञा स्त्री० १. ओट। परदा। २. रक्षा। आश्रय। ३. रोक।
संज्ञा पुं० [सं० अल=डंक] बिच्छू या भिड़ आदि का डंक।
संज्ञा स्त्री० [सं० आलि=रेखा] लंबी टिकली जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।
आड़न–संज्ञा स्त्री० ढाल।
आड़ना–क्रि० स० १. रोकना। छेंकना। २. बाँधना।
आड़ी–संज्ञा स्त्री० ओर। तरफ़।
आढ़त–संज्ञा स्त्री० किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय।
आढ़तिया–संज्ञा पुं० दे० "अढ़तिया"।
आढ्य–वि० [सं०] १. संपन्न। २. युक्त। विशिष्ट।
आणक–संज्ञा पुं० [सं०] एक रुपए का सोलहवाँ भाग। आना।
आतंक–संज्ञा पुं० १. रोब। दबदबा। २. भय।
आततायी–संज्ञा पुं० [स्त्री० आततायिनी] १. आग लगानेवाला। २. विष देनेवाला। ३. ज़मीन, धन या स्त्री हरनेवाला।
आतप–संज्ञा पुं० १. धूप। २. गर्मी।
आतपी–संज्ञा पुं० सूर्य।
वि० धूप का। धूप-संबंधी।
आतमा–संज्ञा स्त्री० दे० "आत्मा"।
आतश–संज्ञा स्त्री० आग। अग्नि।
आतशक–संज्ञा पुं० [वि० आतशकी] फिरंग रोग। गर्मी।
आतशदान–संज्ञा पुं० अँगीठी।
आतशपरस्त–संज्ञा पुं० अग्निपूजक। पारसी।
आतशबाज़ी–संज्ञा स्त्री० बारूद के बने हुए खिलौनों के जलने का दृश्य।
आतशी–वि० [फ़ा०] अग्नि-संबंधी।
आतिथ्य–संज्ञा पुं० मेहमानदारी।
आतिश–संज्ञा स्त्री० दे० "आतश"।
आतिशय्य–संज्ञा पुं० ज़्यादती।
आतुर–वि० [संज्ञा आतुरता] १. व्याकुल। व्यग्र। २. दुःखी।
क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।
आतुरता–संज्ञा स्त्री० १. व्याकुलता। २. जल्दी।
आतुरताई॰–संज्ञा स्त्री० दे० "आतुरता"।
आतुरी॰–संज्ञा स्त्री० १. घबराहट। २. शीघ्रता।
आत्म–वि० अपना।
आत्मगौरव–संज्ञा पुं० अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान।
आत्मघात–संज्ञा पुं० अपने हाथों अपने को मार डालने का काम।
आत्मज–संज्ञा पुं० [स्त्री० आत्मजा] १. पुत्र। लड़का। २. कामदेव।
आत्मज्ञ–संज्ञा पुं० जिसे निज स्वरूप का ज्ञान हो।
आत्मज्ञान–संज्ञा पुं० जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी।
आत्मज्ञानी–संज्ञा पुं० आत्मा और परमात्मा के संबंध में जानकारी रखनेवाला।
आत्मतुष्टि–संज्ञा स्त्री० आत्मज्ञान से

असूः—संज्ञा पुं० दे० "अश्व"।
असुविधा—संज्ञा स्त्री० कठिनाई। अड़चन।
असुर—संज्ञा पुं० [सं०] दैत्य। राक्षस।
असुरारि—संज्ञा पुं० १. देवता। २. विष्णु।
असूझ—वि० १. अँधेरा। अंधकारमय। २. जिसका वारपार न दिखाई पड़े।
असूतः—वि० विरुद्ध।
असूया—संज्ञा स्त्री० [वि० असूयक] पराए गुण में दोष लगाना। ईर्ष्या। डाह।
असूर्यपश्या—वि० जिसको सूर्य्य भी न देखे। परदे में रहनेवाली।
असूल—संज्ञा पुं० दे० १. "वसूल" और २. "वसूल"।
असेसर—संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जो जज को फौजदारी के मुकद्दमे में राय देने के लिये चुना जाता है।
असैलाः—वि० [स्त्री० असैली] रीति-नीति के विरुद्ध कर्म करनेवाला। कुमार्गी।
असोजः†—संज्ञा पुं० आश्विन। क्वार मास।
असोसः—वि० जो सूखे नहीं। न सूखनेवाला।
असौंधः—संज्ञा पुं० दुर्गंधि। बदबू।
अस्तंगत—वि० अस्त को प्राप्त।
अस्त—वि० [सं०] १. छिपा हुआ। २. डूबा हुआ (सूर्य्य, चंद्र आदि)। ३. नष्ट।
संज्ञा पुं० [सं०] लोप। अदर्शन।
अस्तबल—संज्ञा पुं० घुड़साल।
अस्तमन—संज्ञा पुं० [वि० अस्तमित] १. अस्त होना। २. सूर्यादि ग्रहों का अस्त होना।
अस्तमित—वि० [सं०] १. डूबा हुआ। २. नष्ट। ३. मृत।
अस्तर—संज्ञा पुं० [फा०] १. नीचे की तह या पल्ला। भितल्ला। २. वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं।
अस्तरकारी—संज्ञा स्त्री० १. चूने की लिपाई। कलई। २. गचकारी। पलस्तर।
अस्तव्यस्त—वि० उलटा-पुलटा।
अस्ताचल—संज्ञा पुं० वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर सूर्य्य का छिप जाना कहा जाता है।
अस्ति—संज्ञा स्त्री० [सं०] भाव। सत्ता।
अस्तित्व—संज्ञा पुं० [सं०] सत्ता का भाव। विद्यमानता। होना। मौजूदगी।
अस्तु—अव्य० [सं०] १. जो हो। चाहे जो हो। २. खैर।
अस्तुति—संज्ञा स्त्री० [सं०] निंदा। बुराई।
ःसंज्ञा स्त्री० दे० "स्तुति"।
अस्तुरा—संज्ञा पुं० बाल बनाने का छुरा।
अस्तेय—संज्ञा पुं० चोरी का त्याग।
अस्त्र—संज्ञा पुं० १. वह हथियार जिसे फेंककर शत्रु पर चलावें। २. वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड़ करते हैं।
अस्त्रचिकित्सा—संज्ञा स्त्री० वैद्यक-शास्त्र का वह अंश जिसमें चीर-फाड़ का विधान है।
अस्त्रवेद—संज्ञा पुं० धनुर्वेद।
अस्त्रशाला—संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रखे जायँ।

उत्पन्न संतोष या आनंद।
आत्मत्याग–संज्ञा पुं० दूसरों के हित के लिये अपना स्वार्थ छोड़ना।
आत्मबोध–संज्ञा पुं० दे० "आत्मज्ञान"।
आत्मभू–वि० १. अपने शरीर से उत्पन्न। २. आप ही आप उत्पन्न। संज्ञा पुं० ब्रह्मा। विष्णु। शिव।
आत्मरक्षा–संज्ञा स्त्री० अपनी रक्षा या बचाव।
आत्मविद्या–संज्ञा स्त्री० वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। ब्रह्मविद्या।
आत्मविस्मृति–संज्ञा स्त्री० अपने को भूल जाना।
आत्मसंयम–संज्ञा पुं० अपने मन को रोकना। इच्छाओं को वश में रखना।
आत्महत्या–संज्ञा स्त्री० अपने आपको मार डालना।
आत्मा–संज्ञा स्त्री० [वि० आत्मिक, आत्मीय] १. जीव। चैतन्य। २. देह।
आत्माराम–संज्ञा पुं० आत्मज्ञान से तृप्त योगी।
आत्मावलंबी–संज्ञा पुं० जो सब काम अपने बल पर करे।
आत्मिक–वि० [स्त्री० आत्मिका] १. आत्मा संबंधी। २. मानसिक।
आत्मीय–वि० [स्त्री० आत्मीया] निज का। अपना।
संज्ञा पुं० अपना संबंधी। रिश्तेदार।
आत्मीयता–संज्ञा स्त्री० मैत्री।
आत्मोत्सर्ग–संज्ञा पुं० दूसरे की भलाई के लिये अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना।
आत्मोद्धार–संज्ञा पुं० मोक्ष।
आत्यंतिक–वि० [स्त्री० आत्यंतिकी] जो बहुतायत से हो।
आत्रेय–वि० १. अत्रि-संबंधी। २. अत्रि गोत्रवाला।
आत्रेयी–संज्ञा स्त्री० एक तपस्विनी जो वेदांत में बड़ी निष्णात थी।
आथर्वण–संज्ञा पुं० अथर्व वेद का जाननेवाला ब्राह्मण।
आथि*–संज्ञा स्त्री० पूँजी।
आदत–संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्वभाव २. अभ्यास।
आदम–संज्ञा पुं० मनुष्यों का आदि प्रजापति।
आदमजाद–संज्ञा पुं० मनुष्य।
आदमियत–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यत्व। २. सभ्यता।
आदमी–संज्ञा पुं० १. मनुष्य। २. नौकर।
आदर–संज्ञा पुं० सम्मान।
आदरणीय–वि० आदर योग्य।
आदर भाव–संज्ञा पुं० सत्कार।
आदर्श–संज्ञा पुं० १. दर्पण। २. नमूना।
आदान-प्रदान–संज्ञा पुं० लेना-देना।
आदाब–संज्ञा पुं० नमस्कार। सलाम।
आदि–वि० प्रथम।
अव्य० वगैरह। आदिक।
आदिक–अव्य० आदि। वगैरह।
आदिकारण–संज्ञा पुं० मूल कारण।
आदित्य–संज्ञा पुं० १. देवता। २. सूर्य।
आदित्यवार–संज्ञा पुं० एतवार।
आदिम–वि० पहले का। पहला।
आदिल–वि० न्यायी। न्यायवान्।

अस्त्रागार–संज्ञा पुं० [सं०] अस्त्रशाला।
अस्त्री–संज्ञा पुं० [स्त्री० अस्त्रिणी] अस्त्रधारी मनुष्य। हथियारबंद।
अस्थि–संज्ञा स्त्री० हड्डी।
अस्थिर–वि० चंचल। चलायमान। डाँवाडोल।
⊙ वि० दे० "स्थिर"।
अस्पताल–संज्ञा पुं० औषधालय। दवाखाना।
अस्पृश्य–वि० [सं०] जो छूने योग्य न हो।
अस्फुट–वि० [सं०] जो स्पष्ट न हो।
अस्र–संज्ञा पुं० १. कोना। २. रुधिर।
अस्रप–संज्ञा पुं० [सं०] १. राक्षस। २. मूल नक्षत्र। ३. जोंक।
वि० रक्त पीनेवाला।
अस्वस्थ–वि० [सं०] रोगी।
अस्वाभाविक–वि० [सं०] १. प्रकृति-विरुद्ध। २. बनावटी।
अस्वीकार–संज्ञा पुं० [वि० अस्वीकृत] इनकार। नाहीं।
अस्वीकृत–वि० ना-मंजूर किया हुआ।
अस्सी–वि० सत्तर और दस की संख्या। दस का अठगुना।
अहं–सर्व० मैं।
संज्ञा पुं० अहंकार। अभिमान।
अहंकार–संज्ञा पुं० [वि० अहंकारी] १. अभिमान। २. "मैं हूँ" या "मैं करता हूँ" इस प्रकार की भावना।
अहंकारी–वि० [स्त्री० अहंकारिणी] अहंकार करनेवाला। घमंडी।
अहंता–संज्ञा स्त्री० अहंकार। गर्व।
अहंवाद–संज्ञा पुं० डींग मारना।
अह–संज्ञा पुं० दिन।
अव्य० आश्चर्य, खेद या क्लेश आदि का सूचक शब्द।
अहक⊙–संज्ञा स्त्री० इच्छा।
अहकना–क्रि० अ० लालसा करना। प्रबल इच्छा करना।
अहटाना⊙–क्रि० अ० आहट लगाना। पता चलना।
क्रि० स० आहट लेना। टोह लेना।
क्रि० अ० दुखना।
अहद–संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा। वादा।
अहदी–वि० पुं० आलसी।
संज्ञा पुं० [अ०] अकबर के समय के एक प्रकार के सिपाही जिनसे बड़ी आवश्यकता के समय काम लिया जाता था और जो सब दिन बैठे खाते थे।
अहन्–संज्ञा पुं० दिन।
अहना⊙†–क्रि० अ० होना। (अब यह क्रिया केवल वर्तमान रूप "अहै" में ही बोली जाती है।)
अहनिसि⊙–अव्य० दे० "अहर्निश"।
अहमक–वि० बेवकूफ। मूर्ख।
अहमिति⊙–संज्ञा स्त्री० १. दे० अहंकार। २. अविद्या।
अहमेव–संज्ञा पुं० गर्व। घमंड।
अहरन–संज्ञा स्त्री० निहाई।
अहरना†–क्रि० स० लकड़ी को छील-कर सुडौल करना।
अहरा–संज्ञा पुं० १. कंडे का ढेर। २. वह स्थान जहाँ लोग ठहरें।
अहर्निश–क्रि० वि० रात-दिन।
अहलकार–संज्ञा पुं० कर्मचारी।
अहलमद–संज्ञा पुं० अदालत का वह कर्मचारी जो मुकदमों की मिसिलें रखता तथा अदालत के हुक्म के अनुसार हुक्मनामे जारी करता है।

आदी–वि० अभ्यस्त।
† संज्ञा स्त्री० अदरक।
आदृत–वि० सम्मानित।
आदेश–संज्ञा पुं० [वि० आदेशक, आदिष्ट] १. आज्ञा। २. उपदेश।
आदेस०–संज्ञा पुं० दे० "आदेश"।
आद्यंत–क्रि० वि० आदि से अंत तक।
आद्य–वि० पहला।
आद्या–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
आद्योपांत–क्रि० वि० शुरू से आखीर तक।
आद्रा–संज्ञा स्त्री० दे० "आर्द्रा"।
आध–वि० आधा।
आधा–वि० [स्त्री० आधी] दो बराबर हिस्सों में से एक।
आधान–संज्ञा पुं० १. स्थापन। २. गिरवी या बंधक रखना।
आधार–संज्ञा पुं० १. आश्रय। २. बुनियाद।
आधारी–वि० [स्त्री० आधारिणी] सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला।
आधासीसी–संज्ञा स्त्री० आधे सिर की पीड़ा।
आधिक०–वि० आधा।
क्रि० वि० आधे के लगभग। थोड़ा।
आधिक्य–संज्ञा पुं० बहुतायत।
आधिपत्य–संज्ञा पुं० प्रभुत्व।
आधीन०–वि० दे० "अधीन"।
आधुनिक–वि० वर्तमान समय का।
आध्यात्मिक–वि० आत्मा-संबंधी।
आनंद–संज्ञा पुं० [वि० आनंदित, आनंदी] हर्ष। प्रसन्नता।
आनंद-बधाई–संज्ञा स्त्री० मंगल-उत्सव।
आनंदवन–संज्ञा पुं० काशी।
आनंदित–वि० हर्षित। प्रसन्न।
आनंदी–वि० १. हर्षित। २. प्रसन्न रहनेवाला।
आन–संज्ञा स्त्री० १. मर्यादा। २. शपथ। ३. ढंग। ४. एठ।
० वि० [सं० अन्य] दूसरा। और।
आनक–संज्ञा पुं० १. डंका। २. गरजता हुआ बादल।
आनकदुंदुभी–संज्ञा पुं० १. बड़ा नगाड़ा। २. कृष्ण के पिता वसुदेव।
आनन–संज्ञा पुं० १. मुख। २. चेहरा।
आनन फानन–क्रि० वि० अति शीघ्र। फौरन।
आनना†०–क्रि० स० लाना।
आनबान–संज्ञा स्त्री० १. सजधज। २. ठसक।
आनयन–संज्ञा पुं० १. लाना। २. उपनयन संस्कार।
आनरेरी–वि० अवैतनिक।
आनर्त्त–संज्ञा पुं० [वि० आनर्त्तक] १. नृत्यशाला। २. युद्ध।
आना–संज्ञा पुं० एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा।
क्रि० अ० १. आगमन करना। २. जाकर लौटना।
आनाकानी–संज्ञा स्त्री० १. न ध्यान देने का कार्य्य। २. टाल-मटूल।
आनि०–संज्ञा स्त्री० दे० "आन"।
आनुवंशिक–वि० वंशानुक्रमिक।
आनुषंगिक–वि० गौण। अप्रधान। प्रासंगिक।
आन्वीक्षिकी–संज्ञा स्त्री० १. आत्मविद्या। २. तर्कविद्या।
आप–सर्व० स्वयं। खुद।
आपगा–संज्ञा स्त्री० नदी।

अहल्या–संज्ञा स्त्री० गौतम ऋषि की पत्नी।
अहसान–संज्ञा पुं० १. किसी के साथ नेकी करना। २. कृतज्ञता।
अहह–अव्य० आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोक-सूचक एक शब्द।
अहा–अव्य० प्रसन्नता-सूचक एक शब्द।
अहाता–संज्ञा पुं० घेरा। हाता।
अहारना*–क्रि० स० १. खाना। २. चपकाना। ३. कपड़े में माँड़ी देना। ४. दे० "शहरना"।
अहाहा–अव्य० हर्ष-सूचक अव्यय।
अहिंसा–संज्ञा स्त्री० किसी को दुःख न देना। किसी जीव को न सताना या न मारना।
अहिंस्र–वि० जो हिंसा न करे।
अहि–संज्ञा पुं० साँप।
अहित–वि० शत्रु। वैरी।
संज्ञा पु० बुराई। अकल्याण।
अहिफेन–संज्ञा पुं० १. सर्प के मुँह की लार या फेन। २. अफीम।
अहिबेल*–संज्ञा स्त्री० नाग-बेल। पान।
अहिवात–संज्ञा पुं० [वि० अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य। सोहाग।
अहिवाती–वि० स्त्री० सौभाग्यवती।
अहीर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अहीरिन] ग्वाला।
अहीश–संज्ञा पुं० १. शेषनाग। २. शेष के अवतार लक्ष्मण और बलराम आदि।
अहुठ*–वि० साढ़े तीन। तीन और आधा।
अहेतु–वि० १. बिना कारण का। २. व्यर्थ। फ़जूल।
अहेतुक–वि० दे० "अहेतु"।
अहेर–संज्ञा पुं० १. शिकार। मृगया। २. वह जंतु जिसका शिकार किया जाय।
अहेरी–संज्ञा पुं० शिकारी।
अहो–अव्य० एक अव्यय।
अहोरात्र–संज्ञा पुं० दिन-रात।
अहोरा-बहोरा–संज्ञा पुं० विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन अपने घर लौट जाती है। हेराफेरी।

आ

आ–हिंदी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।
आँक–संज्ञा पुं० १. अंक। चिह्न। २. अदद। ३. अक्षर। ४. लकीर।
आँकड़ा–संज्ञा पुं० १. अंक। अदद।
आँकना–क्रि० स० [सं० अंकन] १. चिह्नित करना। २. अंदाज़ करना।
आँकर–वि० १. गहरा। २. बहुत अधिक।
वि० महँगा।
आँकुस*†–संज्ञा पुं० दे० "अंकुश"।
आँख–संज्ञा स्त्री० १. वह इंद्रिय

आपत्काल–संज्ञा पुं० १. विपत्ति। २. दुष्काल।
आपत्ति–संज्ञा स्त्री० १. दुःख। २. विपत्ति। ३. उज्र।
आपद्–संज्ञा स्त्री० विपत्ति।
आपदा–संज्ञा स्त्री० दुःख।
आपन, आपना ✲ †–सर्व० दे० "अपना"।
आपन्न–वि० आपद्ग्रस्त।
आपरूप–वि० अपने रूप से युक्त। साक्षात्।
आपस–संज्ञा स्त्री० १. संबंध। नाता। २. एक दूसरे का साथ।
आपा–संज्ञा पुं० १. अपना अस्तित्व। २. अहंकार। ३. होश-हवास।
आपात–संज्ञा पुं० पतन।
आपाततः–क्रि० वि० १. अकस्मात्। २. आखिरकार।
आपातलिका–संज्ञा स्त्री० एक छंद।
आपाधापी–संज्ञा स्त्री० १. अपनी अपनी धुन। २. लाग-डाँट।
आपापंथी–वि० मनमाने मार्ग पर चलनेवाला। कुपंथी।
आपी✲–संज्ञा पुं० पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।
आपीड़–संज्ञा पुं० सिर पर पहनने की चीज़।
आपु✲†–सर्व० दे० "आप"।
आपुन✲†–सर्व० दे० "अपना"। "आप"।
आपुस✲†–संज्ञा पुं० दे० "आपस"।
आपूरना✲–क्रि० अ० भरना।
आपेक्षिक–वि० १. अपेक्षा रखनेवाला। २. निर्भर रहनेवाला।
आप्त–वि० १. प्राप्त। २. दक्ष। संज्ञा पुं० ऋषि।
आप्तकाम–वि० पूर्णकाम।
आप्ति–संज्ञा स्त्री० प्राप्ति। लाभ।
आप्यायन–संज्ञा पुं० [वि० आप्यायित] १. वृद्धि। २. तृप्ति। तर्पण।
आप्लावन–संज्ञा पुं० [वि० आप्लावित] डुबाना। बोरना।
आफ़त–संज्ञा स्त्री० १. विपत्ति। २. दुःख।
आफ़ताब–संज्ञा पुं० [वि० आफ़ताबी] सूर्य।
आफ़ताबा–संज्ञा पुं० हाथ-मुँह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ।
आफ़ताबी–वि० सूर्य-संबंधी।
आफ़ू–संज्ञा स्त्री० अफ़ीम।
आब–संज्ञा स्त्री० १. चमक। २. पानी। छवि। संज्ञा पुं० पानी।
आबकारी–संज्ञा स्त्री० १. शराबखाना। २. मादक वस्तुओं से संबंध रखनेवाला सरकारी मुहकमा।
आबताब–संज्ञा स्त्री० चमक-दमक।
आबदस्त–संज्ञा पुं० सैचना। पानी छूना।
आब-दाना–संज्ञा पुं० १. अन्न-जल। २. जीविका।
आबदार–वि० चमकीला।
आबदारी–संज्ञा स्त्री० कांति।
आबद्ध–वि० १. बँधा हुआ। २. कैद।
आबनूस–संज्ञा पुं० [वि० आबनूसी] एक जंगली पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत काली होती है।
आबनूसी–वि० १. आबनूस का सा काला। २. आबनूस का बना हुआ।
आबपाशी–संज्ञा स्त्री० सिंचाई।
आबरवाँ–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।

जिससे प्राणियों को रूप अर्थात् वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। लोचन। २. दृष्टि। नज़र। ध्यान। ३. विचार। विवेक। परख। शिनाख्त। पहचान। ४. कृपादृष्टि। दया-भाव। ५. संतति। संतान। लड़का-बाला। ६. आँख के आकार का छेद या चिह्न। जैसे—सूई का छेद।

आँखड़ी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

आँखफोड़ टिड्डा–संज्ञा पुं० १. हरे रंग का एक कीड़ा या फतिंगा। २. कृतघ्न। बे-मुरौअत।

आँखमिचौली, आँखमीचली–संज्ञा स्त्री० लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँख मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं जिन्हें वह आँख मूँदनेवाले लड़के को ढूँढ़कर छूना पड़ता है।

आँग⊙†–संज्ञा पुं० अंग।

आँगन–संज्ञा पुं० घर के भीतर का सहन।

आँगिरस–संज्ञा पुं० [सं०] अंगिरा के पुत्र।

वि० अंगिरा-संबंधी। अंगिरा का।

आँगी⊙†–संज्ञा स्त्री० दे० "अँगिया"।

आँगुरी⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "उँगली"।

आँच–संज्ञा स्त्री० १. गरमी। २. आग की लपट। लौ। ३. आग। ४. आघात। चोट। ५. हानि।

आँचना⊛–क्रि० स० जलाना।

आँचर⊙†–संज्ञा पुं० दे० "आँचल"।

आँचल–संज्ञा पुं० १. धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग। पल्ला। छोर। २. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है।

आँजना–क्रि० स० अंजन लगाना।

आँजनेय–संज्ञा पुं० अंजना के पुत्र हनुमान्।

आँट–संज्ञा स्त्री० १. हथेली में तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान। २. गिरह। गाँठ।

आँटना⊙–क्रि० अ० दे० "अँटना"।

आँटी–संज्ञा स्त्री० १. लंबे तृणों का छोटा गट्ठा। २. सूत का लच्छा।

आँठी–संज्ञा स्त्री० १. दही, मलाई आदि वस्तुओं का लच्छा। २. गुठली। बीज।

आँत–संज्ञा स्त्री० प्राणियों के पेट के भीतर की लंबी नली। अंत्र। अँतड़ी।

आँतर†–संज्ञा पुं० दे० "अंतर"।

आंदोलन–संज्ञा पुं० [सं०] १. बार बार हिलना-डोलना। २. उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। हलचल। धूम।

आँधी–संज्ञा स्त्री० बड़े वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठती है कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अंधड़।

वि० आँधी की तरह तेज़।

आंध्र–संज्ञा पुं० ताप्ती नदी के किनारे का देश।

आँय-बाँय–संज्ञा स्त्री० अनाप-शनाप। व्यर्थ की बात।

आँव–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना सफ़ेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

आँवठ–संज्ञा पुं० किनारा।

आँवला–संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके

आवरू–संज्ञा स्त्री० इज्ज़त। मान।
आब-हवा–संज्ञा स्त्री० जल-वायु।
आबाद–वि० बसा हुआ।
आबादकार–संज्ञा पुं० वे काश्तकार जो जंगल काटकर आबाद हुए हों।
आबादी–संज्ञा स्त्री० १. बस्ती। २. जनसंख्या।
आब्दिक–वि० वार्षिक।
आभरण–संज्ञा पुं० [वि० आभरित] गहना।
आभरन॰–संज्ञा पुं० दे० "आभरण"।
आभा–संज्ञा स्त्री० चमक। कांति।
आभार–संज्ञा पुं० १. बोझ। २. एह-सान। उपकार।
आभारी–वि० उपकार माननेवाला। उपकृत।
आभास–संज्ञा पुं० १. झलक। २. पता।
आभीर–संज्ञा पुं० [स्त्री० आभीरी] १. अहीर। ग्वाल। गोप। २. ११ मात्राओं का एक छंद। ३. एक राग।
आभीरी–संज्ञा स्त्री० एक संकर रागिनी।
आभूषण–संज्ञा पुं० [वि० आभूषित] गहना। ज़ेवर।
आभूषन॰–संज्ञा पुं० दे० "आभूषण"।
आभ्यंतर–वि० भीतरी।
आभ्यंतरिक–वि० भीतरी।
आमंत्रण–संज्ञा पुं० [वि० आमंत्रित] बुलाना। न्योता।
आमंत्रित–वि० १. बुलाया हुआ। २. निमंत्रित।
आम–संज्ञा पुं० १. एक बड़ा पेड़ जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान फल है। रसाल। २. इस पेड़ का फल। वि० साधारण। मामूली।
आमड़ा–संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़ जिसके फल खट्टे और बड़े बेर के बराबर होते हैं।
आमद–संज्ञा स्त्री० १. अवाई। आग-मन। आना। २. आय।
आमदनी–संज्ञा स्त्री० आय।
आमना सामना–संज्ञा पुं० मुकाबला।
आमने सामने–क्रि० वि० एक दूसरे के समक्ष।
आमय–संज्ञा पुं० रोग।
आमरक्तातिसार–संज्ञा पुं० आँव और लहू के साथ दस्त होने का रोग।
आमरख॰–संज्ञा पुं० दे० "आमर्ष"।
आमरखना॰–क्रि० अ० दुःखपूर्वक क्रोध करना।
आमरण–क्रि० वि० ज़िंदगी भर।
आमरस–संज्ञा पुं० दे० "अमरस"।
आमर्दन–संज्ञा पुं० [वि० आमर्दित] ज़ोर से मलना।
आमर्ष–संज्ञा पुं० १. क्रोध। २. असहनशीलता।
आमलक–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्प० आम-लकी] आँवला।
आमला–संज्ञा पुं० दे० "आँवला"।
आमशूल–संज्ञा पुं० आँव के कारण पेट में मरोड़ होने का रोग।
आमातिसार–संज्ञा पुं० आँव के कारण अधिक दस्तों का होना।
आमात्य–संज्ञा पुं० दे० "अमात्य"।
आमादा–वि० उद्यत। तत्पर।
आमाशय–संज्ञा पुं० पेट के भीतर की वह थैली जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।
आमिख–संज्ञा पुं० दे० "आमिष"।
आमिल–संज्ञा पुं० १. काम करने-

गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।

आँवलासार गंधक–संज्ञा स्त्री॰ खूब साफ़ की हुई गंधक जो पारदर्शक होती है।

आँवाँ–संज्ञा पुं॰ वह गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

आंशिक–वि॰ अंश-संबंधी।

आंशुक जल–संज्ञा पुं॰ वह जल जो दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय। (वैद्यक)

आँस०–संज्ञा पुं॰ दे॰ "आँसू"।

आँसी०†–संज्ञा स्त्री॰ भाजी। बैना। मिठाई जो इष्ट-मित्रों के यहाँ बाँटी जाती है।

आँसू–संज्ञा पुं॰ वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है। अश्रु।

आँहड़–संज्ञा पुं॰ बरतन।

आँहाँ–अव्य॰ अस्वीकार या निषेध-सूचक एक शब्द। नहीं।

आ–अव्य॰ एक अव्यय जिसका प्रयोग सीमा, व्याप्ति, थोड़े और अतिक्रमण के अर्थों में होता है।

उप॰ एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगता है और उनके अर्थों में कुछ थोड़ी सी विशेषता कर देता है; जैसे—आरोहण, आकंपन। जब यह 'गम्' (जाना), 'या' (जाना), 'दा' (देना) तथा 'नी' (ले जाना) धातुओं के पहले लगता है, तब उनके अर्थों को उलट देता है; जैसे–'गमन' से 'आगमन', 'नयन' से 'आनयन', 'दान' से 'आदान'।

आइंदा–वि॰ आनेवाला। भविष्य। संज्ञा पुं॰ [फ़ा॰] भविष्य-काल। क्रि॰ वि॰ आगे। भविष्य में।

आइ०–संज्ञा स्त्री॰ आयु। जीवन।

आइना†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "आईना"।

आईन–संज्ञा पुं॰ १. नियम। २. क़ानून।

आईना–संज्ञा पुं॰ आरसी।

आईनी–वि॰ क़ानूनी। राजनियम के अनुकूल।

आउ*–संज्ञा स्त्री॰ जीवन। उम्र।

आउज०–संज्ञा पुं॰ ताशा।

आकंपन–संज्ञा पुं॰ काँपना।

आक–संज्ञा पुं॰ मदार। अकौआ।

आकड़ा†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "आक"।

आक़बत–संज्ञा स्त्री॰ मरने के पीछे की अवस्था।

आकर–संज्ञा पुं॰ १. खान। २. ख़ज़ाना। ३. क़िस्म।

आकरिक–संज्ञा पुं॰ खान खोदनेवाला।

आकरी–संज्ञा स्त्री॰ खान खोदने का काम।

आकर्ण–वि॰ कान तक फैला हुआ।

आकर्ष–संज्ञा पुं॰ [सं॰] १ एक जगह के पदार्थ का बल से दूसरी जगह जाना। खिंचाव। २. पासे का खेल। ३. बिसात। चौपड़।

आकर्षक–वि॰ आकर्षण करनेवाला। खींचनेवाला।

आकर्षण–संज्ञा पुं॰ [वि॰ आकर्षित, आकृष्ट] किसी वस्तु का दूसरी वस्तु

वाला। कर्मचारी। २. हाकिम। ३. सिद्ध।
आमिष–संज्ञा पुं० मांस।
आमिषाशी–वि० [स्त्री० आमिषाशिनी] मांसभक्षक।
आमुख–संज्ञा पुं० नाटक की प्रस्तावना।
आमेजना*–क्रि० स० मिलाना। सानना।
आमोद–संज्ञा पुं० [वि० आमोदित, आमोदी] १. आनंद। हर्ष। २. दिल-बहलाव।
आमोद-प्रमोद–संज्ञा पुं० भोग-विलास। हँसी-खुशी।
आमोदित–वि० १. प्रसन्न। २. जी बहला हुआ।
आमोदी–वि० खुश रहनेवाला।
आम्र–संज्ञा पुं० आम का पेड़ या फल।
आयँती पायँती†–संज्ञा स्त्री० सिर-हाना। पायताना।
आय–संज्ञा स्त्री० आमदनी। प्राप्ति।
आयत–वि० विस्तृत। दीर्घ।
संज्ञा स्त्री० [अ०] इंजील या क़ुरान का वाक्य।
आयतन–संज्ञा पुं० मकान।
आयत्त–वि० अधीन।
आयत्ति–संज्ञा स्त्री० अधीनता।
आयस–संज्ञा पुं० [वि० आयसी] लोहा।
आयसी–वि० लोहे का।
संज्ञा पुं० कवच। ज़िरहबक्तर।
आयसु*–संज्ञा स्त्री० आज्ञा। हुक्म।
आया–क्रि० अ० आना का भूत-कालिक रूप।
संज्ञा स्त्री० धाय। धात्री।
अव्य० क्या। कि।
आयात–संज्ञा पुं० देश में बाहर से आया माल।
आयाम–संज्ञा पुं० लंबाई। विस्तार।
आयास–संज्ञा पुं० परिश्रम। मेहनत।
आयु–संज्ञा स्त्री० उम्र।
आयुध–संज्ञा पुं० हथियार। शस्त्र।
आयुर्बल–संज्ञा पुं० उम्र।
आयुर्वेद–संज्ञा पुं० [वि० आयुर्वेदीय] आयु-संबंधी शास्त्र। चिकित्सा-शास्त्र।
आयुष्मान्–वि० [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरजीवी।
आयुष्य–संज्ञा पुं० उम्र।
आयोजन–संज्ञा पुं० [स्त्री० आयोजना। वि० आयोजित] १. किसी कार्य्य में लगाना। २. प्रबंध। ३. सामान।
आरंभ–संज्ञा पुं० शुरू।
आरंभना†–क्रि० अ० शुरू होना। क्रि० स० आरंभ करना।
आर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बिना साफ़ किया निकृष्ट लोहा। २. कोना।
आरक्त–वि० लाल।
आरज*–वि० दे० "आर्य्य"।
आरजा–संज्ञा पुं० रोग।
आरज़ू–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. अनुनय। विनय। विनती।
आरण्य–वि० वन का।
आरण्यक–वि० [स्त्री० आरण्यकी] वन का। जंगली।
आरत*–वि० दे० "आर्त्त"।
आरति–संज्ञा स्त्री० १. विरक्ति। २. दे० "आर्त्ति"।
आरती–संज्ञा स्त्री० १. किसी मूर्त्ति के ऊपर दीपक को घुमाना। २. वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है।

के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना।

आकर्षण शक्ति–संज्ञा स्त्री० भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षित–वि० खींचा हुआ।

आकलन–संज्ञा पुं० [वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। २. संग्रह। ३. गिनती करना।

आकली–संज्ञा स्त्री० आकुलता। बेचैनी।

आकस्मिक–वि० जो बिना किसी कारण के हो।

आकांक्षा–संज्ञा स्त्री० इच्छा। अभिलाषा।

आकांक्षित–वि० १. इच्छित। २. अपेक्षित।

आकांक्षी–वि० [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला।

आकार–संज्ञा पुं० १. स्वरूप। २. डील-डौल। ३. बनावट।

आकारी–वि० [स्त्री० आकारिणी] आह्वान करनेवाला। बुलानेवाला।

आकाश–संज्ञा पुं० अंतरिक्ष। आसमान।

आकाशकुसुम–संज्ञा पुं० १. आकाश का फूल। २. अनहोनी बात।

आकाशगंगा–संज्ञा स्त्री० बहुत से छोटे छोटे तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है।

आकाशचारी–वि० आकाश में फिरनेवाला।

संज्ञा पुं० १. सूर्यादि ग्रह। नक्षत्र। २. वायु। ३. पक्षी। ४. देवता।

आकाशदीया–संज्ञा पुं० वह दीपक जो कार्तिक में हिंदू लोग कंडील में रखकर एक ऊँचे बाँस के सिरे पर बाँधकर जलाते हैं।

आकाशबेल–संज्ञा स्त्री० दे० "अमरबेल"।

आकाशभाषित–संज्ञा पुं० नाटक के अभिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देखकर किसी प्रश्न को इस तरह कहना मानो वह उससे किया जा रहा है और फिर उसका उत्तर देना।

आकाशमंडल–संज्ञा पुं० खगोल।

आकाशलोचन–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है। मानमंदिर। अबजरवेटरी।

आकाशवाणी–संज्ञा स्त्री० [सं०] वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें।

आकाशवृत्ति–संज्ञा स्त्री० ऐसी आमदनी जो बँधी न हो।

आकाशी–संज्ञा स्त्री० वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिये तानी जाती है।

आकिल–वि० बुद्धिमान्।

आकीर्ण–वि० व्याप्त। पूर्ण।

आकुंचन–संज्ञा पुं० सिकुड़ना।

आकुंठन–संज्ञा पुं० [वि० आकुंठित] १. गुठला या कुंद होना। २. लज्जा।

आकुल–वि० [संज्ञा आकुलता] व्यग्र। घबराया हुआ।

आकुलता–संज्ञा स्त्री० [वि० आकुलित] १. व्याकुलता। २. व्याप्ति।

आकुलित–वि० १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. व्याप्त।

आरन*–संज्ञा पुं० जंगल।
आर पार–संज्ञा पुं० यह छोर और वह छोर।
क्रि० वि० एक तल से दूसरे तल तक।
आरब्ध–वि० आरंभ किया हुआ।
आरस*–संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।
संज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।
आरसी–संज्ञा स्त्री० आईना।
आरा–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० आरी] लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है।
आराति–संज्ञा पुं० शत्रु। वैरी।
आराधक–वि० [स्त्री० आराधिका] उपासक। पूजा करनेवाला।
आराधन–संज्ञा पुं० सेवा। पूजा।
आराधना–संज्ञा स्त्री० पूजा। उपासना।
आराम–संज्ञा पुं० [सं०] बाग। उपवन।
संज्ञा पुं० [फा०] १. चैन। सुख। २. चंगापन। ३. विश्राम। दम लेना।
आराम कुरसी–एक प्रकार की लंबी कुरसी।
आराम-तलब–वि० १. सुख चाहनेवाला। सुकुमार। २. सुस्त। आलसी।
आरी–संज्ञा स्त्री० [हिं० आरा का अल्पा०] लकड़ी चीरने का बढ़ई का एक औज़ार। छोटा आरा।
आरूढ़–वि० [सं०] १. चढ़ा हुआ। २. दृढ़। ३. तत्पर।
आरोग्य–वि० रोग-रहित। स्वस्थ।
आरोग्यता–संज्ञा स्त्री० स्वास्थ्य।
आरोधना*–क्रि० स० रोकना।
आरोप–संज्ञा पुं० स्थापित करना।
आरोपण–संज्ञा पुं० १. स्थापित करना। २. रोपना।
आरोपना*–क्रि० स० स्थापित करना।
आरोपित–वि० १. स्थापित किया हुआ। २. रोपा हुआ।
आरोह–संज्ञा पुं० १. चढ़ाव। २. आक्रमण। ३. सवारी।
आरोहण–संज्ञा पुं० चढ़ना। सवार होना।
आरोही–वि० [स्त्री० आरोहिणी] चढ़नेवाला।
संज्ञा पुं० १. संगीत में वह स्वर-साधन जो षड्ज से लेकर निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाय। २. सवार।
आर्त्त–वि० १. पीड़ित। २. दुखी। ३. अस्वस्थ।
आर्त्तता–संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा। २. दुःख।
आर्त्तनाद–संज्ञा पुं० दुःख-सूचक शब्द।
आर्त्तस्वर–संज्ञा पुं० दुःख-सूचक शब्द।
आर्थिक–वि० धन-संबंधी। द्रव्य-संबंधी।
आर्द्र–वि० गीला।
आर्द्रा–संज्ञा स्त्री० १. सत्ताईस नक्षत्रों में छठा नक्षत्र। २. वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है।
आर्य्य–वि० श्रेष्ठ। पूज्य।
संज्ञा पुं० मनुष्यों की एक जाति जिसने संसार में बहुत पहले सभ्यता प्राप्त की थी।
आर्य्यपुत्र–संज्ञा पुं० पति को पुकारने का संबोधन।

आकृति–संज्ञा स्त्री० बनावट। गढ़न।
आक्रंदन–संज्ञा पुं० रोना। चिल्लाना।
आक्रमण–संज्ञा पुं० १. हमला। चढ़ाई। २. आघात पहुँचाने के लिये किसी पर झपटना।
आक्रमित–वि० [स्त्री० आक्रमिता] जिस पर आक्रमण किया गया हो।
आक्रांत–वि० १. जिस पर आक्रमण हो। २. वशीभूत। पराजित।
आक्रोश–संज्ञा पुं० कोसना। शाप देना।
आक्षिप्त–वि० १. फेंका हुआ। २. निंदित।
आक्षेप–संज्ञा पुं० [सं०] १. फेंकना। २. दोष लगाना।
आक्षेपक–वि० [स्त्री० आक्षेपिका] १. फेंकनेवाला। २. आक्षेप करनेवाला। निंदक।
आखत*†–संज्ञा पुं० अक्षत।
आखन*–क्रि० वि० प्रतिक्षण। हर घड़ी।
आखना*–क्रि० स० कहना।
क्रि० स० [सं० आकांक्षा] चाहना।
क्रि० स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।
आखर*–संज्ञा पुं० अक्षर।
आखा–संज्ञा पुं० झीने कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी।
वि० पूरा। अक्षय।
आखिर–वि० अंतिम। पीछे का।
संज्ञा पुं० अंत।
क्रि० वि० अंत में। अंत को।
आखिरी–वि० अंतिम। पिछला।
आखु–संज्ञा पुं० मूसा। चूहा।
आखुपाषाण–संज्ञा पुं० १. चुंबक पत्थर। २. संखिया।
आखेट–संज्ञा पुं० अहेर। शिकार।
आखेटक–वि० [सं०] शिकारी। अहेरी।
आखेटी–संज्ञा पुं० [स्त्री० आखेटिनी] शिकारी। अहेरी।
आख्या–संज्ञा स्त्री० १. नाम। २. कीर्ति।
आख्यात–वि० प्रसिद्ध। विख्यात।
आख्याति–संज्ञा स्त्री० नामवरी। ख्याति। शुहरत।
आख्यान–संज्ञा पुं० १. वर्णन। २. कथा। कहानी।
आख्यायिका–संज्ञा स्त्री० १. कथा। कहानी। २. वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले।
आगंतुक–वि० १. जो आवे। २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय।
आग–संज्ञा स्त्री० १. तेज और प्रकाश का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा जाता है। अग्नि। २. जलन। ताप। ३. कामाग्नि। ४. डाह। ईर्ष्या।
वि० १. जलता हुआ। बहुत गरम। २. जो गुण में उष्ण हो।
आगत–वि० [स्त्री० आगता] आया हुआ।
आगतपतिका–संज्ञा स्त्री० वह नायिका जिसका पति परदेश से लौटा हो।
आगत स्वागत–संज्ञा पुं० आव-भगत।
आगम–संज्ञा पुं० १. अवाई। आगमन। २. भविष्य काल। ३. वेद। ४. शास्त्र।

आर्य्य-समाज–संज्ञा पुं० एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे।

आर्य्या–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. सास। ३. दादी। पितामही। ४. एक अर्द्ध मात्रिक छंद।

आर्य्या-वर्त–संज्ञा पुं० उत्तरीय भारत।

आर्ष–वि० ऋषि-संबंधी। ऋषि-कृत।

आलंकारिक–वि० १. अलंकार-संबंधी। २. अलंकारयुक्त। ३. अलंकार जाननेवाला।

आलंब–संज्ञा पुं० आश्रय। सहारा।

आलंबन–संज्ञा पुं० १. सहारा। २. रस में वह वस्तु जिसके अवलंब से रसकी उत्पत्ति होती है। ३. साधन।

आलकस–संज्ञा पुं० दे० "आलस्य"।

आलथी पालथी–संज्ञा स्त्री० बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एँड़ी बाएँ जंघे पर और बाईं एँड़ी दाहिने जंघे पर रखते हैं।

आलपीन–संज्ञा स्त्री० एक घुंडीदार सूई जिससे कागज़ आदि के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।

आलम–संज्ञा पुं० १. संसार। २. अवस्था। ३. जन-समूह।

आलमारी–संज्ञा स्त्री० दे० "अल-मारी"।

आलय–संज्ञा पुं० १. घर। २. स्थान।

आलस–वि० आलसी। सुस्त।

आलसी–वि० सुस्त। काहिल।

आलस्य–संज्ञा पुं० सुस्ती। काहिली।

आला–संज्ञा पुं० ताक। ताखा।

आलान–संज्ञा पुं० बंधन।

आलाप–संज्ञा पुं० बातचीत। तान।

आलापक–वि० १. बात-चीत करने-वाला। २. गानेवाला।

आलापना–क्रि० स० गाना। सुर खींचना। तान लड़ाना।

आलापी–वि० १. बोलनेवाला। २. आलाप लेनेवाला। तान लगाने-वाला। गानेवाला।

आलिंगन–संज्ञा पुं० गले से लगाना। परिरंभण।

आलिंगना–क्रि० स० भेंटना। लपटाना। गले लगाना।

आलि–संज्ञा स्त्री० १. सखी। सहेली। २. बिच्छू। ३. भ्रमरी। ४. पंक्ति।

आलिम–वि० विद्वान्। पंडित।

आली–संज्ञा स्त्री० सखी।
वि० उच्च। श्रेष्ठ।

आलीशान–वि० भव्य। भड़कीला। शानदार। विशाल।

आलू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद जो बहुत खाया जाता है।

आलूचा–संज्ञा पुं० १. एक पेड़ जिसका फल पंजाब इत्यादि में बहुत खाया जाता है। २. इस पेड़ का फल। भोटिया बदाम। गर्दालू।

आलूबुखारा–संज्ञा पुं० आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल।

आलेख–संज्ञा पुं० लिखावट। लिपि।

आलेख्य–संज्ञा पुं० चित्र। तसवीर।

आलोक–संज्ञा पुं० १. प्रकाश। २. चमक।

आलोचक–वि० १. देखनेवाला। २. जो आलोचना करे।

आलोचन–संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. गुण-दोष का विचार।

आलोचना–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के गुण-दोष का विचार।

आलोड़न–संज्ञा पुं० १. मथना। हिलोरना। २. विचार।

आलोड़ना–क्रि० स० १. मथना। २. हिलोरना।

आल्हा–संज्ञा पुं० १. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। २. बहुत लंबा-चौड़ा वर्णन। ३. आल्हखंड पुस्तक।

आव०–संज्ञा स्त्री० आयु।

आवन०–संज्ञा पुं० आगमन। आना।

आवभगत–संज्ञा स्त्री० आदर-सत्कार।

आवरण–संज्ञा पुं० १. ढकना। २. वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो।

आवर्त्त–संज्ञा पुं० १. पानी का भँवर। २. वह बादल जिससे पानी न बरसे।

आवर्त्तन–संज्ञा पुं० १. चक्कर देना। फिराव। घुमाव। २. मथना। हिलाना।

आवश्यक–वि० १. जिसे अवश्य होना चाहिए। ज़रूरी। २. प्रयोजनीय। जिसके बिना काम न चले।

आवश्यकता–संज्ञा स्त्री० १. ज़रूरत। अपेक्षा। २. प्रयोजन। मतलब।

आवश्यकीय–वि० ज़रूरी।

आवाँ–संज्ञा पुं० गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

आवागमन–संज्ञा पुं० आना-जाना।

आवाज़–संज्ञा स्त्री० १. शब्द। ध्वनि। नाद। २. बोली। वाणी। स्वर।

आवाज़ा–संज्ञा पुं० [फा०] बोली-ठोली। ताना। व्यंग्य।

आवाजाही–संज्ञा स्त्री० आना-जाना।

आवारगी–संज्ञा स्त्री० आवारापन।

आवारजा–संज्ञा पुं० जमा-खर्च की किताब।

आवारा–वि० १. व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला। निकम्मा। २. बे ठौर ठिकाने का। उठल्लू। ३. बदमाश। लुच्चा।

आवारागर्द–वि० व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला। उठल्लू। निकम्मा।

आवास–संज्ञा पुं० १. रहने की जगह। निवास-स्थान। २. मकान। घर।

आवाहन–संज्ञा पुं० १. मंत्र द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य्य। २. निमंत्रित करना। बुलाना।

आविद्ध–वि० १. छिदा हुआ। भेदा हुआ। २. फेंका हुआ।

आविष्कर्त्ता–वि० आविष्कार करनेवाला।

आविष्कार–संज्ञा पुं० [वि० आविष्कारक, आविष्कर्त्ता, आविष्कृत] कोई ऐसी वस्तु तैयार करना जिसके बनाने की युक्ति पहले किसी को न मालूम रही हो।

आविष्कारक–वि० दे० "आविष्कर्त्ता"।

आविष्कृत–वि० १. पता लगाया हुआ। २. ईजाद किया हुआ।

आवृत–वि० छिपा हुआ। ढका हुआ।

आवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. बार बार किसी बात का अभ्यास। २. पढ़ना।

आवेग–संज्ञा पुं० १. चित्त की प्रबल वृत्ति। मन की झोंक। जोश। २. घबराहट।

आवेदक–वि० निवेदन करनेवाला।

आवेदन–संज्ञा पुं० अपनी दशा को सूचित करना। निवेदन। अर्ज़ी।

आवेदनपत्र–संज्ञा पुं० अरज़ी।

आवेश–संज्ञा पुं० १. दौरा। २. प्रवेश। ३. जोश। ४. मृगी रोग।

आवेष्टन–संज्ञा पुं० १. छिपाने या ढँकने का कार्य्य। २. छिपाने, लपे-

उचाट-संज्ञा पुं० विरक्ति। उदासीनता।
उचाटन-संज्ञा पुं० दे० "उचाटन"।
उचाटना-क्रि० स० उचाटन करना। जी हटाना।
उचाड़ना-क्रि० स० लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना।
उचाना†-क्रि० स० १. ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २. उठाना।
उचार०-संज्ञा पुं० दे० "उचार"।
उचारना०-क्रि० स० उचारण करना। क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।
उचित-वि० योग्य। ठीक। मुनासिब।
उचेलना†-क्रि० स० दे० "उकेलना"।
उचौहाँ०-वि० ऊँचा उठा हुआ।
उच्च-वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।
उच्चता-संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई। २. श्रेष्ठता।
उच्चरण-संज्ञा पुं० कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुँह से शब्द फूटना।
उच्चाट-संज्ञा पुं० १. उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २. अनमनापन।
उच्चाटन-संज्ञा पुं० १. लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना। २. किसी के चित्त को कहीं से हटाना। ३. विरक्ति।
उच्चार-संज्ञा पुं० मुँह से शब्द निकालना। कथन।
उच्चारण-संज्ञा पुं० कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना।
उच्चारना०-क्रि० स० मुँह से निकालना। बोलना।
उच्चारित-वि० जिसका उच्चारण किया गया हो। बोला या कहा हुआ।
उच्चार्य्य-वि० उच्चारण के योग्य।
उच्चैःश्रवा-संज्ञा पुं० खड़े कान और सात मुँह का इंद्र या सूर्य्य का सफ़ेद घोड़ा जो समुद्र-मथन के समय निकला था। वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।
उच्छन्न-वि० दबा हुआ। लुप्त।
उच्छलना०-क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उच्छव०-संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।
उच्छाव०-संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।
उच्छाह०-संज्ञा पुं० दे० "उछाह"।
उच्छिन्न-वि० १. कटा हुआ। खंडित। २. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।
उच्छिष्ट-वि० १. जूठा। २. दूसरे का बर्ता हुआ। संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शहद।
उच्छू-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से आने लगती है।
उच्छृंखल-वि० १. अंडबंड। २. स्वेच्छाचारी। ३. उद्दंड।
उच्छेद, उच्छेदन-संज्ञा पुं० १. उखाड़-पखाड़। खंडन। २. नाश।
उच्छ्वसित-वि० १. साँस लेता हुआ। २. विकसित। प्रफुल्लित। ३. जीवित।
उच्छ्वास-संज्ञा पुं० १. ऊपर को खींची हुई साँस। उसास। २. साँस।
उछंग-संज्ञा पुं० १. गोद। २. हृदय। छाती।
उछकना-क्रि० अ० नशा हटना। चेत में आना।
उछरना†-क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उछल-कूद-संज्ञा स्त्री० १. खेल-कूद। २. हलचल।

ढकने या ढँकने की वस्तु।
आशंका–संज्ञा स्त्री० १. डर। भय। २. शक। संदेह। ३. अनिष्ट की भावना।
आशना–संज्ञा उभ० १. जिससे जान-पहचान हो। २. प्रेमी।
आशनाई–संज्ञा स्त्री० १. जान-पहचान। २. प्रेम। प्रीति। दोस्ती। ३. अनुचित संबंध।
आशय–संज्ञा पुं० १. अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २. वासना। इच्छा। ३. उद्देश्य। नीयत।
आशा–संज्ञा स्त्री० १. उम्मीद। २. अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के थोड़े बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष। ३. दिशा।
आशिक़–संज्ञा पुं० प्रेम करनेवाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।
आशिष–संज्ञा स्त्री० आशीर्वाद। असीस। दुआ।
आशीर्वाद–संज्ञा पुं० आशिष। दुआ।
आशु–क्रि० वि० शीघ्र। जल्द।
आशुतोष–वि० शीघ्र संतुष्ट होनेवाला।
संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
आश्चर्य्य–संज्ञा पुं० अचंभा। विस्मय। तअज्जुब।
आश्चर्यित–वि० चकित।
आश्रम–संज्ञा पुं० १. ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान। तपोवन। २. विश्राम-स्थान। ठहरने की जगह। ३. ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास आदि चार आश्रम।
आश्रमी–वि० १. आश्रम-संबंधी। २. आश्रम में रहनेवाला।
आश्रय–संज्ञा पुं० १. आधार। सहारा। २. शरण। पनाह।
आश्रयी–वि० आश्रय लेने या पानेवाला।
आश्रित–वि० १. सहारे पर टिका हुआ। २. भरोसे पर रहनेवाला।
आश्लेषा–संज्ञा पुं० श्लेषा नक्षत्र।
आश्वास, आश्वासन–संज्ञा पुं० दिलासा। तसल्ली। सांत्वना।
आश्विन–संज्ञा पुं० क्वार का महीना
आषाढ़–संज्ञा पुं० असाढ़।
आषाढ़ा–संज्ञा पुं० पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।
आषाढ़ी–संज्ञा स्त्री० आषाढ़ मास की पूर्णिमा। गुरुपूजा।
आसंग–संज्ञा पुं० १. संग। २. संबंध। ३. आसक्ति।
आस–संज्ञा स्त्री० १. आशा। २. लालसा। ३. भरोसा।
आसकत–संज्ञा स्त्री० आलस्य।
आसकती–वि० दे० "आलसी"।
आसक्त–वि० १. अनुरक्त। लिप्त। २. आशिक़। लुब्ध।
आसक्ति–संज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति। लिप्तता। २. लगन। चाह। प्रेम।
आसतेः–क्रि० वि० धीरे धीरे।
आसन–संज्ञा पुं० १. स्थिति। बैठने की विधि। २. वह वस्तु जिस पर बैठें।
आसनी–संज्ञा स्त्री० छोटा आसन। छोटा बिछौना।
आसन्न–वि० निकट आया हुआ।
आसन्नभूत–संज्ञा पुं० भूतकालिक ... जिससे क्रिया की ... ने उसकी समी-

कराना । ३. पचे हुए माल को निकलवाना ।
उगवना*–क्रि० स० दे० "उगाना"।
उगसाना०–क्रि० स० दे० "उकसाना"।
उगाना–क्रि० स० जमाना । अंकुरित करना ।
उगार,उगाल०–संज्ञा पुं० पीक। थूक। खखार ।
उगालदान–संज्ञा पुं० थूकने या खखार आदि गिराने का बरतन। पीकदान ।
उगाहना–क्रि० स० वसूल करना ।
उगाही–संज्ञा स्त्री० १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम । वसूली । २. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा ।
उगिलना०†–क्रि० स० दे० "उगलना"।
उग्र–वि० प्रचंड । तेज़ ।
संज्ञा पुं० १. महादेव । २. वत्सनाग विष ।
उग्रता–संज्ञा स्त्री० तेज़ी । प्रचंडता ।
उघटना–क्रि० अ० १. ताल देना । सम पर तान तोड़ना । २. दबी-दबाई बात को उभाड़ना । ३. कभी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना ।
उघटा–वि० किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला । एहसान जतानेवाला ।
संज्ञा पुं० उघटने का कार्य्य ।
उघड़ना–क्रि० अ० १. आवरण का हटना । २. भंडा फूटना ।
उघरना०†–क्रि० अ० दे० "उघड़ना"।
उघाड़ना०–क्रि०स० १. आवरण का हटाना । २. आवरण रहित करना । ३. नंगा करना । ४. गुप्त बात को खोलना ।
उघारना०–क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।
उचकन–संज्ञा पुं० ईंट, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज़ को एक ओर ऊँचा करते हैं ।
उचकना–क्रि० अ० १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एड़ी उठाकर खड़ा होना । २. उछलना । कूदना ।
क्रि० स० उछलकर लेना । लपककर छीनना ।
उचका०–क्रि० वि० अचानक। सहसा।
उचकाना–क्रि० स० उठाना । ऊपर करना ।
उचक्का–संज्ञा पुं० [स्त्री०] १. उचककर चीज़ ले भागनेवाला आदमी । ठग । २. बदमाश ।
उचटना–क्रि० अ० १. उचड़ना । २. अलग होना । ३. भड़कना । ४. विरक्त होना ।
उचटाना०–क्रि० स० १. उचाड़ना । २. अलग करना । ३. उदासीन करना । ४. भड़काना ।
उचड़ना–क्रि० अ० सटी या लगी हुई चीज़ का अलग होना ।
उचना०–क्रि० अ० १. उचकना । २. उठना ।
क्रि० स० ऊँचा करना । उठाना ।
उचनि०–संज्ञा स्त्री० उभाड़ ।
उचरंग†–संज्ञा पुं० पतिंगा ।
उचरना०–क्रि० स० उच्चारण करना । बोलना ।
क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना ।
†० क्रि० अ० दे० "उचड़ना"।

आस-पास–क्रि० वि० चारों ओर। निकट। इधर-उधर।
आसमान–संज्ञा पुं० [वि० आसमानी] १. आकाश। २. स्वर्ग।
आसमानी–वि० १. आकाश-संबंधी। २. आकाश के रंग का। हलका नीला। संज्ञा स्त्री० ताड़ी।
आसमुद्र–क्रि० वि० समुद्र-पर्यंत।
आसरा–संज्ञा पुं० १. सहारा। अवलंब। २. भरोसा। ३. शरण। पनाह। ४. प्रतीक्षा।
आसा–संज्ञा स्त्री० दे० "आशा"।
आसाइश–संज्ञा स्त्री० आराम। सुख। चैन।
आसान–वि० सहज।
आसानी–संज्ञा स्त्री० सरलता। सुबीता।
आसार–संज्ञा पुं० चिह्न। लक्षण।
आसावरी–संज्ञा स्त्री० श्री राग की एक रागिनी।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर।
आसिख*–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।
आसिन–संज्ञा पुं० दे० "आश्विन"।
आसीन–वि० बैठा हुआ। विराजमान।
आसीस–संज्ञा स्त्री० दे० "आशिष"।
आसु*–क्रि० वि० दे० "आशु"।
आसुर–वि० असुर-संबंधी।
आसुरी–वि० असुर-संबंधी। राक्षसी। संज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री।
आसूदा–वि० १. संतुष्ट। २. संपन्न।
आसेब–[वि० आसेबी] भूत प्रेत की बाधा।
आसोज–संज्ञा पुं० आश्विन मास। कार का महीना।
आसौं*–क्रि० वि० इस वर्ष।
आस्तिक–वि० ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला।
आस्तिकता–संज्ञा स्त्री० ईश्वर में विश्वास।
आस्तीन–संज्ञा स्त्री० पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढँकता है। बाँही।
आस्था–संज्ञा स्त्री० १. पूज्य बुद्धि। श्रद्धा। २. सभा। बैठक।
आस्पद–संज्ञा पुं० १. स्थान। २. कार्य्य। ३. पद। प्रतिष्ठा। ४. वंश। जाति।
आस्य–संज्ञा पुं० मुँह।
आस्वाद–संज्ञा पुं० रस। स्वाद।
आस्वादन–संज्ञा पुं० स्वाद लेना।
आह–अव्य० पीड़ा, शोक, खेद और ग्लानि-सूचक अव्यय।
संज्ञा स्त्री० दुःख या क्लेश-सूचक शब्द। ठंढी साँस।
आहट–संज्ञा स्त्री० वह शब्द जो चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है। खटका।
आहत–वि० घायल। ज़ख़मी।
आहन–संज्ञा पुं० लोहा।
आहर*–संज्ञा पुं० समय।
संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।
आहरण–संज्ञा पुं० १. छीनना। हर लेना। २. किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। ३. ग्रहण।
आहवन–संज्ञा यज्ञ करना। होम करना।
आहाँ–संज्ञा स्त्री० १. हाँक। दुहाई। घोषणा। २. पुकार।
आहा–अव्य० आश्चर्य और हर्ष-सूचक अव्यय।
आहार–संज्ञा पुं० १. खाना। २. खाने की वस्तु।

उचाट-संज्ञा पुं० विरक्ति। उदासीनता।
उचाटन-संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"।
उचाटना-क्रि० स० उचाटन करना। जी हटाना।
उचाड़ना-क्रि० स० लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना।
उचाना†-क्रि० स० १. ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २. उठाना।
उचार॰-संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।
उचारना॰-क्रि० स० उच्चारण करना। क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।
उचित-वि० योग्य। ठीक। मुनासिब।
उचेलना†-क्रि० स० दे० "उकेलना"।
उचौहाँ॰-वि० ऊँचा उठा हुआ।
उच्च-वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।
उच्चता-संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई। २. श्रेष्ठता।
उच्चरण-संज्ञा पुं० कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुँह से शब्द फूटना।
उच्चाट-संज्ञा पुं० १. उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २. अनमनापन।
उच्चाटन-संज्ञा पुं० १. लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना। २. किसी के चित्त को कहीं से हटाना। ३. विरक्ति।
उच्चार-संज्ञा पुं० मुँह से शब्द निकलना। कथन।
उच्चारण-संज्ञा पुं० कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना।
उच्चारना॰-क्रि० स० मुँह से निकालना। बोलना।
उच्चारित-वि० जिसका उच्चारण किया गया हो। बोला या कहा हुआ।
उच्चार्य-वि० उच्चारण के योग्य।
उच्चैःश्रवा-संज्ञा पुं० खड़े कान और सात मुँह का इंद्र या सूर्य का सफ़ेद घोड़ा जो समुद्र-मथन के समय निकला था।
वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।
उच्छन्न-वि० दबा हुआ। लुप्त।
उच्छलना॰-क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उच्छव॰-संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।
उच्छाव॰-संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।
उच्छाह॰-संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।
उच्छिन्न-वि० १. कटा हुआ। खंडित। २. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।
उच्छिष्ट-वि० १. जूठा। २. दूसरे का बर्ता हुआ।
संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शहद।
उच्छू-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से आने लगती है।
उच्छृंखल-वि० १. अंडबंड। २. स्वेच्छाचारी। ३. उद्दंड।
उच्छेद, उच्छेदन-संज्ञा पुं० १. उखाड़-पछाड़। खंडन। २. नाश।
उच्छ्वसित-वि० १. साँस लेता हुआ। २. विकसित। प्रफुल्लित। ३. जीवित।
उच्छ्वास-संज्ञा पुं० १. ऊपर को खींची हुई साँस। उसास। २. साँस।
उछंग-संज्ञा पुं० १. गोद। २. हृदय। छाती।
उछकना-क्रि० अ० नशा हटना। चेत में आना।
उछरना॰†-क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उछल-कूद-संज्ञा स्त्री० १. खेल-कूद। २. हलचल।

टने या ढँकने की वस्तु।

आशंका–संज्ञा स्त्री० १. डर। भय। २. शक। संदेह। ३. अनिष्ट की भावना।

आशना–संज्ञा उभ० १. जिससे जान-पहचान हो। २. प्रेमी।

आशनाई–संज्ञा स्त्री० १. जान-पहचान। २. प्रेम। प्रीति। दोस्ती। ३. अनुचित संबंध।

आशय–संज्ञा पुं० १. अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २. वासना। इच्छा। ३. उद्देश्य। नीयत।

आशा–संज्ञा स्त्री० १. उम्मीद। २. अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के थोड़े बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष। ३. दिशा।

आशिक़–संज्ञा पुं० प्रेम करनेवाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।

आशिष–संज्ञा स्त्री० आशीर्वाद। आसीस। दुआ।

आशीर्वाद–संज्ञा पुं० आशिष। दुआ।

आशु–क्रि० वि० शीघ्र। जल्द।

आशुतोष–वि० शीघ्र संतुष्ट होनेवाला।

संज्ञा पुं० शिव। महादेव।

आश्चर्य्य–संज्ञा पुं० अचंभा। विस्मय। तअज्जुब।

आश्चर्यित–वि० चकित।

आश्रम–संज्ञा पुं० १. ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान। तपोवन। २. विश्राम-स्थान। ठहरने की जगह। ३. ब्रह्मचर्य्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास आदि चार आश्रम।

आश्रमी–वि० १. आश्रम-संबंधी। २. आश्रम में रहनेवाला।

आश्रय–संज्ञा पुं० १. आधार। सहारा। २. शरण। पनाह।

आश्रयी–वि० आश्रय लेने या पानेवाला।

आश्रित–वि० १. सहारे पर टिका हुआ। २. भरोसे पर रहनेवाला।

आश्लेषा–संज्ञा पुं० श्लेषा नक्षत्र।

आश्वास, आश्वासन–संज्ञा पुं० दिलासा। तसल्ली। सांत्वना।

आश्विन–संज्ञा पुं० क्वार का महीना

आषाढ़–संज्ञा पुं० असाढ़।

आषाढ़ा–संज्ञा पुं० पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र।

आषाढ़ी–संज्ञा स्त्री० आषाढ़ मास की पूर्णिमा। गुरुपूजा।

आसंग–संज्ञा पुं० १. संग। २. संबंध। ३. आसक्ति।

आस–संज्ञा स्त्री० १. आशा। २. लालसा। ३. भरोसा।

आसकत–संज्ञा स्त्री० आलस्य।

आसकती–वि० दे० "आलसी"।

आसक्त–वि० १. अनुरक्त। लिप्त। २. आशिक़। लुब्ध।

आसक्ति–संज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति। लिप्तता। २. लगन। चाह। प्रेम।

आसते–क्रि० वि० धीरे धीरे।

आसन–संज्ञा पुं० १. स्थिति। बैठने की विधि। २. वह वस्तु जिस पर बैठें।

आसनी–संज्ञा स्त्री० छोटा आसन। छोटा बिछौना।

आसन्न–वि० निकट आया हुआ।

आसन्नभूत–संज्ञा पुं० भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्त्तमान से उसकी समीपता पाई जाय।

उछलना—क्रि० अ० १. वेग से ऊपर उठना और गिरना। २. कूदना। ३. अत्यंत प्रसन्न होना।

उछलवाना—क्रि० स० उछलने में प्रवृत्त करना।

उछलाना—क्रि० स० उछालने में प्रवृत्त करना।

उछाँटना—क्रि० स० उचाटना। उदासीन करना। विरक्त करना।

☆ क्रि० स० छाँटना। चुनना।

उछारना☆—क्रि० स० दे० "उछालना"।

उछाल—संज्ञा स्त्री० १. सहसा ऊपर उठने की क्रिया। २. कै। वमन। ३ पानी का छींटा।

उछालना—क्रि० स० ऊपर की ओर फेंकना।

उछाह☆—संज्ञा पुं० १. उत्साह। २. उत्सव। ३. जैन लोगों की रथ-यात्रा। ४. इच्छा।

उछाला—संज्ञा पुं० १. जोश। उबाल। २. वमन। कै।

उजड़ना—क्रि० अ० १. उखड़ना-पुखड़ना। २ गिर-पड़ जाना। ३. बरबाद होना।

उजड़वाना—क्रि० स० किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजड्ड—वि० १. वज्र मूर्ख। असभ्य। २. उद्दंड।

उजड्डपन—संज्ञा पुं० उद्दंडता। अशिष्टता। असभ्यता।

उजबक—मूर्ख। उजड्ड।

उजरत—संज्ञा स्त्री० १. मजदूरी। २. किराया।

उजरना☆—क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

उजराना☆—क्रि० स० साफ़ कराना। क्रि० अ० सफ़ेद या साफ़ होना।

उजलत—संज्ञा स्त्री० जल्दी।

उजलवाना—क्रि० स० गहने या अस्त्र आदि का साफ़ करवाना।

उजला—वि० १. श्वेत। २. स्वच्छ। साफ़।

उजागर—वि० १. प्रकाशित। २. प्रसिद्ध।

उजाड़—संज्ञा पुं० १. उजड़ा हुआ स्थान। २. निर्जन स्थान। ३. जंगल।

वि० १. गिरा-पड़ा। २. निर्जन।

उजाड़ना—क्रि० स० १. गिराना-पड़ाना। २. नष्ट करना।

उजार☆—संज्ञा पुं० दे० "उजाड़"।

उजारा☆—संज्ञा पुं० उजाला।

वि० प्रकाशवान्। कांतिमान्।

उजालना—क्रि० स० १. चमकाना। निखारना। २. प्रकाशित करना। ३. जलाना।

उजाला—संज्ञा पुं० प्रकाश।

वि० प्रकाशवान्।

उजाली—संज्ञा स्त्री० चाँदनी।

उजास—संज्ञा पुं० चमक। प्रकाश।

उजियर☆—वि० दे० "उजला"।

उजियरिया‡—संज्ञा स्त्री० दे० "उजाली"

उजियार☆—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजियारना☆—क्रि० स० १. प्रकाशित करना। २. जलाना।

उजियारा☆—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजियाला—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजीर☆‡—संज्ञा पुं० दे० "वज़ीर"।

उजेर☆—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।

उजेला—संज्ञा पुं० प्रकाश। चाँदनी। रोशनी।

वि० प्रकाशवान्।

इंद्रगोप–संज्ञा पुं० बीरबहूटी नाम का कीड़ा।

इंद्रजव–संज्ञा पुं० कुड़ा। कौरैया का बीज।

इंद्रजाल–संज्ञा पुं० मायाकर्म। जादूगरी। तिलस्म।

इंद्रजाली–वि० इंद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

इंद्रजित्–वि० इंद्र को जीतनेवाला। संज्ञा पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रजीत–संज्ञा पुं० दे० "इंद्रजित्"।

इंद्रदमन–संज्ञा पुं० मेघनाद का एक नाम।

इंद्रधनुष–संज्ञा पुं० सात रंगों का बना हुआ एक अर्द्धवृत्त जो वर्षा-काल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।

इंद्रनील–संज्ञा पुं० नीलम।

इंद्रप्रस्थ–संज्ञा पुं० एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।

इंद्रलोक–संज्ञा पुं० स्वर्ग।

इंद्रवधू–संज्ञा स्त्री० बीरबहूटी।

इंद्राणी–संज्ञा स्त्री० १. इंद्र की पत्नी। २. बड़ी इलायची। ३. इंद्रायन।

इंद्रायन–संज्ञा पुं० एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़वा होता है। इनारू।

इंद्रायुध–संज्ञा पुं० १. वज्र। २. इंद्र-धनुष।

इंद्रासन–संज्ञा पुं० इंद्र का सिंहासन।

इंद्रिय–संज्ञा स्त्री० १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। २. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। ३. वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न भिन्न कर्म किए जाते हैं।

इंद्रियजित्–वि० जिसने इंद्रियों को जीत लिया हो। जो विषयासक्त न हो।

इंद्रियनिग्रह–संज्ञा पुं० इंद्रियों के वेग को रोकना।

इंद्री॰–संज्ञा स्त्री० दे० "इंद्रिय"।

इंसाफ–संज्ञा पुं० १. न्याय। २. निर्णय।

इ–संज्ञा पुं० कामदेव।

इकट्ठा–वि० एकत्र। जमा।

इकता॰–संज्ञा स्त्री० दे० "एकता"।

इकताई॰–संज्ञा स्त्री० १. एक होने का भाव। एकत्व। २. अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान।

इकतान॰–वि० एकरस। एक सा। स्थिर।

इकतार–वि० बराबर। एकरस। क्रि० वि० लगातार।

इकतारा–संज्ञा पुं० १. सितार के ढंग का एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार रहता है। २. एक प्रकार का हाथ से बुना जानेवाला कपड़ा।

इकतीस–वि० तीस और एक। संज्ञा पुं० तीस और एक की संख्या। ३१।

इकत्र॰–क्रि० वि० दे० "एकत्र"।

इकबाल–संज्ञा पुं० दे० "एकबाल"।

इकराम–संज्ञा पुं० १. इनाम। २. इज्जत।

इकरार–संज्ञा पुं० १. प्रतिज्ञा। २. कोई काम करने की स्वीकृति।

इकला–वि० दे० "अकेला"।

इकलौता–संज्ञा पुं० वह लड़का जो अपने माँ-बाप का अकेला हो।

इकल्ला–वि० १. एकहरा। एक पर्त का। ॰† २. अकेला।

उजार*—वि० दे० "उज्ज्वल"।
उजाल—क्रि० वि० नदी के चढ़ाव की ओर।
* वि० दे० "उज्ज्वल"।
उज्जयिनी—संज्ञा स्त्री० मालवा देश की प्राचीन राजधानी।
उज्जैन—संज्ञा पुं० दे० "उज्जयिनी"।
उज्यारा*—संज्ञा पुं० दे० "उजाला"।
उज्र—संज्ञा पुं० १. बाधा। विरोध। २. किसी बात के विरुद्ध विनय-पूर्वक कुछ कथन।
उज्रदारी—संज्ञा स्त्री० किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करना चहता हो।
उज्ज्वल—वि० [संज्ञा उज्ज्वलता] १. प्रकाशवान्। २. निर्मल। ३. बेदाग़। ४. सफ़ेद।
उज्ज्वलता—संज्ञा स्त्री० १. कांति। चमक। २. स्वच्छता। ३. सफ़ेदी।
उज्ज्वलन—संज्ञा पुं० [वि० उज्ज्वलित] १. प्रकाश। २. स्वच्छ करने का कार्य्य।
उज्ज्वला—संज्ञा स्त्री० बारह अक्षरों की एक वृत्ति।
उझकना*—क्रि० अ० १. उचकना। २. चौंकना।
उझलना—क्रि० स० डालना। उँडेलना। क्रि० अ० उमड़ना। चढ़ना।
उटंगन—संज्ञा पुं० एक घास जिसका साग खाया जाता है। चौपतिया।
उटकना*—क्रि० स० अनुमान करना।
उटज—संज्ञा पुं० झोपड़ी।
उठँगन—संज्ञा पुं० १. आड़। टेक। २. बैठने में पीठ को सहारा देने-वाली वस्तु।
उठँगना—क्रि० अ० १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २. लेटना। पड़ रहना। ३. (किवाड़) भिड़ाना या बंद करना।
उठना—क्रि० अ० १. ऊँचा होना। २. जागना। ३. सहसा आरंभ होना। ४. उमड़ना। ५. उफनाना। ६. किसी दूकान या कारखाने का काम बंद होना। ७. खर्च होना। ८. बिकना या भाड़े पर जाना। ९. गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना या अलंग पर आना।
उठल्लू—वि० [हिं० उठना + लू (प्रत्य०)] १. एक स्थान पर न रहनेवाला। २. आवारा।
उठवाना—क्रि० स० उठाने का काम दूसरे से कराना।
उठाईगीरा—वि० १. आँख बचाकर चीज़ों को चुरा लेनेवाला। २. बदमाश
उठान—संज्ञा स्त्री० १. उठना। २. बढ़ने का ढंग। ३. खर्च।
उठाना—क्रि० स० १. लेटे हुए प्राणी को बैठाना। २. नीचे से ऊपर ले जाना। ३. धारण करना। ४. जगाना। ५. आरंभ करना। ६. खर्च करना। ७. किराये पर देना।
उठाव—संज्ञा पुं० "उठान"।
उठौआ—वि० दे० "उठौवा"।
उठौनी—संज्ञा स्त्री० १. उठाने की क्रिया। २. उठाने की मजदूरी या पुरस्कार। ३. वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिये पेशगी दिया जाय। ४. बनियों या दूकानदारों के साथ उधार का लेन-देन।

आहार-विहार–संज्ञा पुं० खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन।

आहारी–वि० खानेवाला। भक्षक।

आहार्य–वि० १. ग्रहण किया हुआ। २. खाने योग्य।

आहित–वि० १. स्थापित। २. धरोहर या गिरों रखा हुआ।

आहिस्ता–क्रि० वि० धीरे से। धीरे धीरे। शनैः शनैः।

आहुत–संज्ञा पुं० १. आतिथ्य-सत्कार। २. भूतयज्ञ।

आहुति–संज्ञा स्त्री० १. मंत्र पढ़कर देवता के लिये द्रव्य को अग्नि में डालना। होम। हवन। २. हवन में डालने की सामग्री। ३. होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञकुंड में डाली जाय।

आहूत–वि० आह्वान किया हुआ। निमंत्रित।

आह्निक–वि० दैनिक।

आह्लाद–संज्ञा पुं० आनंद। हर्ष।

आह्वान–संज्ञा पुं० [सं०] १. बुलाना। २. बुलावा।

इ

इ–वर्णमाला में स्वर के अंतर्गत तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालु और प्रयत्न विवृत है। ई इसका दीर्घ रूप है।

इंगला–संज्ञा स्त्री० इड़ा नाम की एक नाड़ी।

इँगलिस्तान–संज्ञा पुं० इँगलैंड।

इंगित–संज्ञा पुं० अभिप्राय को किसी चेष्टा द्वारा प्रकट करना। इशारा।

इंगुदी–संज्ञा स्त्री० हिंगोट का पेड़।

इँगुरौटी–संज्ञा स्त्री० इँगुर या सिंदूर रखने की डिबिया। सिँधोरा।

इंच–संज्ञा स्त्री० एक फ़ुट का बारहवाँ हिस्सा।

इँचना॰–क्रि० अ० दे० "खिंचना"।

इंजन–संज्ञा पुं० रेलवे ट्रेन में वह गाड़ी जो भाप के ज़ोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर–संज्ञा पुं० १. कलों का बनाने या चलानेवाला। २. वह अफ़सर जिसके निरीक्षण में सरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।

इंजील–संज्ञा स्त्री० ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।

इंतकाल–संज्ञा पुं० मृत्यु।

इंतजाम–संज्ञा पुं० प्रबंध।

इंतजार–संज्ञा पुं० प्रतीक्षा।

इंदिरा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

इंदीवर–संज्ञा पुं० नील-कमल।

इंदु–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।

इंद्र–वि० [सं०] १. ऐश्वर्यवान्। २. श्रेष्ठ। बड़ा।
संज्ञा पुं० १. एक वैदिक देवता। २. देवताओं का राजा।

इंद्रकील–संज्ञा पुं० मंदराचल।

उठौंघा—वि० जिसका कोई स्थान नियत न हो।
उड़ंकू—वि० उड़नेवाला।
उड़न—संज्ञा स्त्री० उड़ने की क्रिया। उड़ान।
उड़नखटोला—संज्ञा पुं० उड़नेवाला खटोला। विमान।
उड़नछू—वि० चंपत। गायब।
उड़ना—क्रि० अ० १. आकाशमार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. छितराना। ३. फहराना। ४. भागना। ५. लापता होना। ६. खर्च होना। ७. धीमा पड़ना। ८. चकमा देना।
उड़प—संज्ञा पुं० रागों की एक जाति।
उड़पाना—क्रि० स० उड़ाने में प्रवृत्त करना।
उड़सना—क्रि० अ० १. बिस्तर या चारपाई उठाना। २. नष्ट होना।
उड़ाऊ—वि० १. उड़नेवाला। २. खर्च करनेवाला।
उड़ाका, उड़ाकू—वि० उड़नेवाला। जो उड़ सकता हो।
उड़ान—संज्ञा स्त्री० १. उड़ने की क्रिया। २. छलाँग।
उड़ाना—क्रि० स० १. किसी उड़नेवाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना। २. हवा में फैलाना। ३. चुराना। ४. खर्च करना। ५. मारना।
उड़ायक॰—वि० उड़ानेवाला।
उड़ास॰—संज्ञा स्त्री० वास-स्थान।
उड़ासना—क्रि० स० १. बिस्तर उठाना। २. उजाड़ना।
उड़िया—वि० उड़ीसा देश का रहनेवाला।
उड़ंबर—संज्ञा पुं० गूलर। ऊमर।
उडु—संज्ञा स्त्री० १. नक्षत्र। तारा। २. पक्षी। चिड़िया। ३. केवट। ४. जल।
उडुप—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. नाव। ३. बड़ा गरुड़।
उडुपति—संज्ञा पुं० चंद्रमा।
उडुराज—संज्ञा पुं० चंद्रमा।
उडुस—संज्ञा पुं० खटमल।
उड़ुनी—संज्ञा स्त्री० जुगनू।
उड्डयन—संज्ञा पुं० उड़ना।
उड्डीयमान—वि० [स्त्री० उड्डीयमती] उड़नेवाला। उड़ता हुआ।
उढ़कना—क्रि० अ० १. अड़ना। २. टेक लगाना।
उढ़काना—क्रि० स० १. किसी के सहारे खड़ा करना। २. भिड़ाना।
उढ़रना॰—क्रि० अ० विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ निकल जाना।
उढ़री—संज्ञा स्त्री० रखेली स्त्री।
उढ़ाना—क्रि० स० दे० "ओढ़ाना"।
उढ़ावनी*†—संज्ञा स्त्री० दे० "ओढ़नी"।
उतंक—संज्ञा पुं० १. एक ऋषि जो वेद-मुनि के शिष्य थे। २. एक ऋषि जो गौतम के शिष्य थे।
वि०॰ ऊँचा।
उतंग॰—वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।
उत*†—क्रि० वि० वहाँ। उधर। उस ओर।
उतना—वि० उस मात्रा का। उस कदर।
उतर॰—संज्ञा पुं० दे० "उत्तर"।
उतरन—संज्ञा स्त्री० पहने हुए पुराने कपड़े।
उतरना—क्रि० अ० १. ऊँचे स्थान से सँभलकर नीचे आना। २. अवनति पर होना। ३. शरीर में किसी जोड़

ई

ई–हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

ईंगुर–संज्ञा पुं० गंधक और पारे से घटित एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है। सिंगरफ।

ईंट–संज्ञा स्त्री० १. साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार उठाई जाती है। २. धातु का चौखूँटा ढला हुआ टुकड़ा। ३. ताश का एक रंग।

ईंटा–संज्ञा पुं० दे० "ईंट"।

ईंडरी–संज्ञा स्त्री० कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे भरा घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुरी।

इंधन–संज्ञा पुं० जलाने की लकड़ी या कंडा। जलावन।

ईक्षण–संज्ञा पुं० [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य] १. दर्शन। २. आँख। ३. विचार।

ईख–संज्ञा स्त्री० गन्ना। ऊख।

ईखना०–क्रि० स० देखना।

ईछन०–संज्ञा पुं० आँख।

ईछना०–क्रि० स० इच्छा करना। चाहना।

ईछा०–संज्ञा स्त्री० इच्छा।

ईजाद–संज्ञा स्त्री० आविष्कार।

ईठ०–संज्ञा पुं० मित्र। सखा।

ईठना०–क्रि० स० इच्छा करना।

ईढ़०–संज्ञा स्त्री०[वि० ईढ़ी] ज़िद। हठ।

ईति–संज्ञा स्त्री० खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव जो छः प्रकार के हैं।

ईद–संज्ञा स्त्री० मुसलमानों का एक त्यौहार जो रोज़ा खतम होने पर होता है।

ईदृश–क्रि० वि० इस प्रकार। ऐसे। वि० इस प्रकार का। ऐसा।

ईप्सा–संज्ञा स्त्री० इच्छा। अभिलाषा।

ईप्सित–वि० चाहा हुआ।

ईमान–संज्ञा पुं० १. धर्म-विश्वास। २. अच्छी नीयत। ३. धर्म। ४. सत्य।

ईमानदार–वि० १. विश्वास रखनेवाला। २. *विश्वासपात्र*। ३. सच्चा।

ईरखा०–संज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।

ईरान–संज्ञा पुं० [फ़ा०] फ़ारस देश।

ईरषा०–संज्ञा स्त्री० ईर्षा। डाह।

ईर्षा–संज्ञा स्त्री० डाह। हसद।

ईर्षालु–वि० ईर्षा करनेवाला।

ईश–संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. राजा। ३. ईश्वर। ४. महादेव।

ईशता–संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व।

ईशान–संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. शिव। ३. ग्यारह की संख्या। ४. ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. पूरब और उत्तर के बीच का कोना।

ईश्वर–संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. परमेश्वर। भगवान्। ३. महादेव। शिव।

ईश्वरप्रणिधान–संज्ञा पुं० ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति रखना।

ईश्वरीय–वि० १. ईश्वर-संबंधी। २. ईश्वर का।

ईषत्–वि० थोड़ा। कम।

ईषना०–संज्ञा स्त्री० प्रबल इच्छा।

या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४. भाव का कम होना। ५. डेरा करना। ६. नकल होना। ७. धारण की हुई वस्तु का अलग होना। क्रि० स० नदी, नाले या पुल का पार करना।

उतरवाना–क्रि० स० उतारने का काम कराना।

उतराई–संज्ञा स्त्री० १. ऊपर से नीचे आने की क्रिया। २. नदी के पार उतारने का महसूल। ३. ढालू ज़मीन।

उतराना–क्रि० अ० १. पानी के ऊपर आना। २. उफान खाना।

उतान–वि० पीठ को ज़मीन पर लगाए हुए। चित।

उतायल०–वि० जल्दी।

उतार–संज्ञा पुं० १. उतरने की क्रिया। २. क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति। ३. उतरने योग्य स्थान।

उतारन–संज्ञा स्त्री० १. वह पहनावा जो पहनने से पुराना हो गया हो। २. निछावर।

उतारना–क्रि० स० १. ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। २. खींचना। ३. पहनी हुई चीज़ को अलग करना। ४. ठहराना। डेरा देना। ५. बाजे आदि की कसन को ढीला करना। क्रि० स० नदी-नाले के पार पहुँचाना।

उतारा–संज्ञा पुं० [हिं० उतरना] १. टिकने का कार्य्य। २. पड़ाव। ३. नदी पार करने की क्रिया।

उतारू–वि० तत्पर।

उताल०–क्रि० वि० शीघ्र। संज्ञा स्त्री० शीघ्रता।

उताली०–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। क्रि० वि० जल्दी से।

उतावल०–क्रि० वि० जल्दी जल्दी। शीघ्रता से।

उतावला–वि० [स्त्री० उतावली] १. जल्दी मचानेवाला। २. व्यग्र।

उतावली–संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता। २. व्यग्रता।

उतृण–वि० उऋण।

उत्कंठा–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्कंठित] प्रबल इच्छा।

उत्कंठित–वि० चाव से भरा हुआ।

उत्कंठिता–संज्ञा स्त्री० संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका।

उत्कट–वि० तीव्र। उग्र।

उत्कर्ष–संज्ञा पुं० बड़ाई।

उत्कर्षता–संज्ञा स्त्री० बड़ाई।

उत्कल–संज्ञा पुं० उड़ीसा देश।

उत्कीर्ण–वि० लिखा हुआ। खुदा हुआ।

उत्कुण–संज्ञा पुं० खटमल।

उत्कृष्ट–वि० उत्तम। श्रेष्ठ।

उत्कृष्टता–संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठता। बड़प्पन।

उत्कोच–संज्ञा पुं० घूँस। रिशवत।

उत्तंग०–वि० दे० "उत्तुंग"।

उत्तंस०–संज्ञा पुं० दे० "अवतंस"।

उत्त०–संज्ञा पुं० १. आश्चर्य। २. संदेह।

उत्तप्त–वि० १. खूब तपा हुआ। २. दुःखी।

उत्तम–वि० [स्त्री० उत्तमा] श्रेष्ठ। सबसे भला।

उत्तमतया–क्रि० वि० अच्छी तरह से। भली भाँति से।

उत्तमता–संज्ञा स्त्री० श्रेष्ठता।

उत्तमत्व–संज्ञा पुं० अच्छापन।

उत्तम पुरुष–संज्ञा पुं० व्याकरण में वह

इलायची–संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार पेड़ जिसके फल के बीजों में बड़ी तीक्ष्ण सुगंध होती है।

इलाही–संज्ञा पुं० ईश्वर। खुदा। वि० दैवी। ईश्वरीय।

इलज़ाम–संज्ञा पुं० आरोप। दोषारोपण।

इल्तिजा–संज्ञा स्त्री० निवेदन।

इल्म–संज्ञा पुं० विद्या। ज्ञान।

इल्लत–संज्ञा स्त्री० १. रोग। बीमारी। २ झंझट। ३. दोष।

इल्ला–संज्ञा पुं० छोटी कड़ी फुंसी जो चमड़े के ऊपर निकलती है।

इल्ली–संज्ञा स्त्री० चींटी के बच्चों का वह रूप जो अंडे से निकलते ही होता है।

इव–अव्य० उपमावाचक शब्द। समान। नाईं। तरह।

इशारा–संज्ञा पुं० १. सैन। संकेत। २. संक्षिप्त कथन। ३. बारीक सहारा। ४. गुप्त प्रेरणा।

इश्क–संज्ञा पुं० मुहब्बत। प्रेम।

इश्तहार–संज्ञा पुं० विज्ञापन।

इष्ट–वि० १. चाहा हुआ। २. पूजित। संज्ञा पुं० अग्निहोत्रादि शुभ कर्म।

इष्टता–संज्ञा स्त्री० इष्ट का भाव।

इष्टदेव, इष्टदेवता–संज्ञा पुं० आराध्य देव। पूज्य देवता।

इष्टि–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. यज्ञ।

इस–सर्व० 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप। जैसे—इसको।

इसपंज–संज्ञा पुं० समुद्र में एक प्रकार के अत्यंत छोटे कीड़ों के योग से बना हुआ मुलायम रूई की तरह का सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है। मुर्दा बादल।

इसपात–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा लोहा।

इसबगोल–संज्ञा पुं० फ़ारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा में काम आते हैं।

इसलाम–संज्ञा पुं० [वि० इसलामिया] मुसलमानी धर्म।

इसलाह–संज्ञा स्त्री० संशोधन।

इसे–सर्व० 'यह' का कर्म कारक और संप्रदान कारक का रूप।

इस्तमरारी–वि० सब दिन रहनेवाला। नित्य।

इस्तिरी–संज्ञा स्त्री० कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरज़ियों का औज़ार।

इस्तीफा–संज्ञा पुं० नौकरी छोड़ने की दरख्वास्त। त्यागपत्र।

इस्तेमाल–संज्ञा पुं० प्रयोग। उपयोग।

इह–क्रि० वि० इस जगह। यहाँ।

इहाँ–क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है।

उत्तमर्ण–संज्ञा पुं० महाजन।

उत्तमोत्तम–वि० अच्छे से अच्छा।

उत्तर–संज्ञा पुं० १. दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। २. जवाब। ३. बदला।
वि० १. पिछला। बाद का। २. ऊपर का।
क्रि० वि० पीछे। बाद।

उत्तर-कोशल–संज्ञा पुं० अयोध्या के आस-पास का देश। अवध।

उत्तरक्रिया–संज्ञा स्त्री० अंत्येष्टि क्रिया।

उत्तरदाता–संज्ञा पु० [स्त्री० उत्तरदात्री] जवाबदेह। ज़िम्मेदार।

उत्तरदायित्व–संज्ञा पुं० जवाबदेही। ज़िम्मेदारी।

उत्तरदायी–वि० [स्त्री० उत्तरदायिनी] जवाबदेह। ज़िम्मेदार।

उत्तरपथ–संज्ञा पुं० देवयान।

उत्तरमीमांसा–संज्ञा स्त्री० वेदांत-दर्शन।

उत्तरा–संज्ञा स्त्री० अभिमन्यु की स्त्री जिससे परीक्षित उत्पन्न हुए थे।

उत्तराखंड–संज्ञा पुं० भारतवर्ष का हिमालय के पास का उत्तरीय भाग।

उत्तराधिकार–संज्ञा पुं० किसी के मरने के पीछे उसके धनादि का स्वत्व। वरासत।

उत्तराधिकारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० उत्तराधिकारिणी] वह जो किसी के मरने पर उसकी संपत्ति का मालिक हो।

उत्तराभास–संज्ञा पुं० अंडबंड जवाब।

उत्तरायण–संज्ञा पुं० सूर्य्य की मकर रेखा से उत्तर कर्करेखा की ओर गति।

उत्तरार्द्ध–संज्ञा पुं० पीछे का अर्द्ध भाग।

उत्तरीय–संज्ञा पुं० चद्दर। ओढ़ना।
वि० १. ऊपरवाला। २. उत्तर दिशा का।

उत्तरोत्तर–क्रि० वि० एक के पीछे एक।

उत्ता–वि० दे० "उतना"।

उत्तान–वि० चित।

उत्ताप–संज्ञा पुं० [वि० उत्तप्त, उत्तापित] १. गर्मी। २. कष्ट। ३. शोक।

उत्तीर्ण–वि० १. पार गया हुआ। २. परीक्षा में कृत-कार्य्य।

उत्तुंग–वि० बहुत ऊँचा।
वि० बदहवास।

उत्तेजक–वि० प्रेरक।

उत्तेजन–संज्ञा पुं० दे० "उत्तेजना"।

उत्तेजना–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १. प्रेरणा। प्रोत्साहन। २. वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्थान–संज्ञा पुं० १. उठने का कार्य्य। २. उन्नति।

उत्थापन–संज्ञा पुं० ऊपर उठाना।

उत्पत्ति–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्पन्न] १. जन्म। २. सृष्टि। ३. आरंभ।

उत्पन्न–वि० [स्त्री० उत्पन्ना] जन्मा हुआ। पैदा।

उत्पल–संज्ञा पुं० कमल।

उत्पाटन–संज्ञा पुं० [वि० उत्पाटित] उखाड़ना।

उत्पात–संज्ञा पुं० १. उपद्रव। २. हलचल। ३. ऊधम। दंगा।

उत्पाती–संज्ञा पुं० [स्त्री० उत्पातिन] उपद्रवी। नटखट।

उत्पादक–वि० [स्त्री० उत्पादिका] उत्पन्न करनेवाला।

उचाट–संज्ञा पुं० विरक्ति। उदासीनता।
उचाटन–संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"।
उचाटना–क्रि० स० उच्चाटन करना। जी हटाना।
उचाड़ना–क्रि० स० लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना।
उचाना†–क्रि० स० १. ऊँचा करना। ऊपर उठाना। २. उठाना।
उचार०–संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।
उचारना०–क्रि० स० उच्चारण करना। क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।
उचित–वि० योग्य। ठीक। मुनासिब।
उचेलना†–क्रि० स० दे० "उकेलना"।
उचौहाँ०–वि० ऊँचा उठा हुआ।
उच्च–वि० १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।
उच्चता–संज्ञा स्त्री० १. ऊँचाई। २. श्रेष्ठता।
उच्चरण–संज्ञा पुं० कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना। मुँह से शब्द फूटना।
उच्चाट–संज्ञा पुं० १. उखाड़ने या नोचने की क्रिया। २. अनमनापन।
उच्चाटन–संज्ञा पुं० १. लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना। २. किसी के चित्त को कहीं से हटाना। ३. विरक्ति।
उच्चार–संज्ञा पुं० मुँह से शब्द निकालना। कथन।
उच्चारण–संज्ञा पुं० कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के प्रयत्न द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना।
उच्चारना०–क्रि० स० मुँह से निकालना। बोलना।
उच्चारित–वि० जिसका उच्चारण किया गया हो। बोला या कहा हुआ।
उच्चार्य्य–वि० उच्चारण के योग्य।
उच्चैःश्रवा–संज्ञा पुं० खड़े कान और सात मुँह का इंद्र या सूर्य्य का सफ़ेद घोड़ा जो समुद्र-मथन के समय निकला था।
वि० ऊँचा सुननेवाला। बहरा।
उच्छन्न–वि० दबा हुआ। लुप्त।
उच्छलना०–क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उच्छव०–संज्ञा पुं० दे० "उत्सव"।
उच्छाव०–संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।
उच्छाह०–संज्ञा पुं० दे० "उत्साह"।
उच्छिन्न–वि० १. कटा हुआ। खंडित। २. उखाड़ा हुआ। ३. नष्ट।
उच्छिष्ट–वि० १. जूठा। २. दूसरे का बर्ता हुआ।
संज्ञा पुं० १. जूठी वस्तु। २. शहद।
उच्छू–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी इत्यादि के रुकने से आने लगती है।
उच्छृंखल–वि० १. अंडबंड। २. स्वेच्छाचारी। ३. उद्दंड।
उच्छेद, उच्छेदन–संज्ञा पुं० १. उखाड़-पछाड़। खंडन। २. नाश।
उच्छ्वसित–वि० १. साँस लेता हुआ। २. विकसित। प्रफुल्लित। ३. जीवित।
उच्छ्वास–संज्ञा पुं० १. ऊपर को खींची हुई साँस। उसास। २. साँस।
उछंग–संज्ञा पुं० १. गोद। २. हृदय। छाती।
उछकना–क्रि० अ० नशा हटना। चेत में आना।
उछरना०†–क्रि० अ० दे० "उछलना"।
उछल-कूद–संज्ञा स्त्री० १. खेल-कूद। २. हलचल।

उत्पादन–संज्ञा पुं० [वि० उत्पादित] उत्पन्न करना। पैदा करना।
उत्पीड़न–संज्ञा पुं० [वि० उत्पीड़ित] तकलीफ़ देना। सताना।
उत्प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० [वि० उत्प्रेक्ष्य] उद्भावना। आरोप।
उत्फुल्ल–वि० विकसित।
उत्सर्ग–संज्ञा पुं० [वि० उत्सर्गी, औत्सर्गीय, उत्सर्ग्य] १. त्याग। २. दान। ३. समाप्ति।
उत्सर्जन–संज्ञा पुं० [वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट] १. त्याग। २. दान।
उत्सव–संज्ञा पुं० १. मंगल-कार्य्य। धूम-धाम। २. पर्व। ३. आनंद।
उत्साह–संज्ञा पुं० [वि० उत्साहित, उत्साही] १. उमंग। जोश। २. हिम्मत। (वीररस का स्थायी भाव)
उत्साही–वि० हौसलेवाला।
उत्सुक–वि० उत्कंठित।
उत्सुकता–संज्ञा स्त्री० आकुलता। इच्छा।
उथपना*–क्रि० स० १. उठाना। २. उजाड़ना।
उथलना–क्रि० अ० १. डगमगाना। २. उलटना।
उथल-पुथल–संज्ञा स्त्री० उलट-पुलट।
उथला–वि० कम गहरा। छिछला।
उदंत–वि० जिनके दांत न जमे हों।
उद्–उप० एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें अर्थों की विशेषता करता है।
उदक–संज्ञा पुं० जल। पानी।
उदकक्रिया–संज्ञा स्त्री० तिलांजलि।
उदकना*–क्रि० अ० कूदना।
उदगार*–संज्ञा पुं० दे० "उद्गार"।
उदगारना*–क्रि० स० १. बाहर निकालना। २. उभाड़ना।
उदग्ग*–वि० १. उन्नत। २. उद्धत।
उदघटना*–क्रि० स० उदय होना।
उदघाटना*–क्रि० स० खोलना।
उदथ*–संज्ञा पुं० सूर्य।
उदधि–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. मेघ।
उदधिसुत–संज्ञा पुं० १. समुद्र से उत्पन्न पदार्थ। २. चंद्रमा। ३. अमृत। ४. शंख। ५. कमल।
उदधिसुता–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।
उदवस*–वि० [हिं० उद्वासन] १. उजाड़। २. स्थानापदेश।
उदवासना–क्रि० स० १. भगा देना। २. उजाड़ना।
उदमदना*–क्रि० अ० पागल होना।
उदमाद*–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।
उदय–संज्ञा पुं० [वि० उदित] ऊपर आना। प्रकट होना।
उदयगिरि–संज्ञा पुं० उदयाचल।
उदयाचल–संज्ञा पुं० पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहां से सूर्य निकलता है।
उदयाद्रि–संज्ञा पुं० उदयाचल।
उदर–संज्ञा पुं० १. पेट। २. मध्य।
उदरना–क्रि० अ० दे० "उगना"।
उदात्त–वि० १. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २. दयावान्। संज्ञा पुं० दान।
उदायन*–संज्ञा पुं० बाग़।
उदार–वि० [संज्ञा उदारता] १. दाता। २. बड़ा। ३. ऊँचे दिल का।
उदारचरित–वि० शीलवान्।
उदारचेता–वि० जिसका चित्त उदार हो।
उदारता–संज्ञा स्त्री० १. दानशीलता। २. उच्च विचार।

कराना। ३. पचे हुए माल को निकलवाना।

उगवना*–क्रि० स० दे० "उगाना"।

उगसाना◇–क्रि० स० दे० "उकसाना"।

उगाना–क्रि० स० जमाना। अंकुरित करना।

उगार,उगाल◇–संज्ञा पुं० पीक। थूक। खखार।

उगालदान–संज्ञा पुं० थूकने या खखार आदि गिराने का बरतन। पीकदान।

उगाहना–क्रि० स० वसूल करना।

उगाही–संज्ञा स्त्री० १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम। वसूली। २. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

उगिलना◇†–क्रि० स० दे० "उगलना"।

उग्र–वि० प्रचंड। तेज़। संज्ञा पुं० १. महादेव। २. वत्सनाग विष।

उग्रता–संज्ञा स्त्री० तेज़ी। प्रचंडता।

उघटना–क्रि० अ० १. ताल देना। सम पर तान तोड़ना। २. दबी-दबाई बात को उभाड़ना। ३. कभी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध को बार बार कहकर ताना देना।

उघटा–वि० किए हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। एहसान जतानेवाला। संज्ञा पुं० उघटने का कार्य्य।

उघड़ना–क्रि० अ० १. आवरण का हटना। २. भंडा फूटना।

उघरना◇†–क्रि० अ० दे० "उघड़ना"।

उघाड़ना◇–क्रि०स० १. आवरण का हटाना। २. आवरण रहित करना। ३. नंगा करना। ४. गुप्त बात को खोलना।

उघारना◇–क्रि० स० दे० "उघाड़ना"।

उचकन–संज्ञा पुं० ईंट, पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर किसी चीज़ को एक ओर ऊँचा करते हैं।

उचकना–क्रि० अ० १. ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एड़ी उठाकर खड़ा होना। २. उछलना। कूदना। क्रि० स० उछलकर लेना। लपककर छीनना।

उचका◇–क्रि० वि० अचानक। सहसा।

उचकाना–क्रि० स० उठाना। ऊपर करना।

उचक्का–संज्ञा पुं० [स्त्री०] १. उचककर चीज़ ले भागनेवाला आदमी। ठग। २. बदमाश।

उचटना–क्रि० अ० १. उचड़ना। २. अलग होना। ३. भड़कना। ४. विरक्त होना।

उचटाना◇–क्रि० स० १. उचाड़ना। २. अलग करना। ३. उदासीन करना। ४. भड़काना।

उचड़ना–क्रि० अ० सटी या लगी हुई चीज़ का अलग होना।

उचना◇–क्रि० अ० १. उचकना। २. उठना। क्रि० स० ऊँचा करना। उठाना।

उचनि*–संज्ञा स्त्री० उभाड़।

उचरंग†–संज्ञा पुं० पतिंगा।

उचरना◇–क्रि० स० उच्चारण करना। बोलना। क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना। †◇ क्रि० अ० दे० "उचड़ना"।

उद्वाह–संज्ञा पुं० विवाह।

उद्वाहन–संज्ञा पुं० [वि० उद्वाहनीय, उद्वाही, उद्वाहित, उद्वाह्य] १. ऊपर ले जाना। २. विवाह।

उद्विग्न–वि० १. आकुल। घबराया हुआ। २. व्यग्र।

उद्विग्नता–संज्ञा स्त्री० १. आकुलता। घबराहट। २. व्यग्रता।

उद्वेग–संज्ञा पुं० [वि० उद्विग्न] १. घबराहट। २ आवेश। जोश।

उधड़ना–क्रि० अ० खुलना।

उधर–क्रि० वि० उस ओर।

उधरना॰–क्रि० स० १. मुक्त होना। २. दे० "उधड़ना"।

उधराना–क्रि० अ० १. तितर-बितर होना। २. ऊधम मचाना।

उधार–संज्ञा पुं० १. ऋण। २. मँगनी। ३. उद्धार। छुटकारा।

उधारक॰–वि० दे० "उद्धारक"।

उधारना॰–क्रि० स० उद्धार करना। मुक्त करना।

उधारी॰–वि० [स्त्री० उद्धारिनी] उद्धार करनेवाला।

उधेड़ना–क्रि० स० १. उचाड़ना। २. सिलाई खोलना। ३. छितराना।

उधेड़बुन–संज्ञा स्त्री० सोच-विचार।

उन–सर्व० "उस" का बहुवचन।

उनचास–वि० चालीस और नौ।

उनतीस–वि० बीस और नौ।

उनमद॰–वि० उन्मत्त।

उनमना॰–वि० दे० "अनमना"।

उनमाथना॰–क्रि० स० [वि० उन्माथी] मथना। विलोड़न करना।

उनमाथी॰–वि० मथनेवाला।

उनमान॰–संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"। संज्ञा पुं० नाप। वि० तुल्य।

उनमानना–क्रि० स० अनुमान करना।

उनमुना॰– वि० [स्त्री० उनमुनी] मौन। चुपचाप।

उनमूलना॰–क्रि० स० उखाड़ना।

उनरना॰–क्रि० अ० १. उठना। २. कूदते हुए चलना।

उनवान॰–संज्ञा पुं० दे० "अनुमान"।

उनसठ॰–वि० पचास और नौ।

उनहत्तर–वि० साठ और नौ।

उनहार॰–वि० सदृश। समान।

उनहारि॰–संज्ञा स्त्री० समानता। सादृश्य।

उनाना॰†–क्रि० स० झुकाना। क्रि० अ० आज्ञा मानना।

उनींदा–वि० [स्त्री० उनींदी] ऊँघता हुआ।

उन्नइस॰†–वि० दे० "उन्नीस"।

उन्नत–वि० १.ऊँचा। २. बढ़ा हुआ। ३. श्रेष्ठ।

उन्नति–संज्ञा स्त्री० १.ऊँचाई। २.वृद्धि।

उन्नायक–वि० [स्त्री० उन्नायिका] उन्नत करनेवाला।

उन्नासी–वि० सत्तर और नौ।

उन्निद्र–वि० १. निद्रा-रहित। २. खिला हुआ।

उन्नीस–वि० दस और नौ।

उन्मत्त–वि० [संज्ञा उन्मत्तता] १. मतवाला। २. पागल।

उन्मत्तता–संज्ञा स्त्री० मतवालापन। पागलपन।

उन्माद–संज्ञा पुं० [वि० उन्मादक, उन्मादी] पागलपन। विक्षिप्तता।

उन्मादक–वि० १. पागल करनेवाला। २. नशा करनेवाला।

उन्मादन–संज्ञा पुं० उन्मत्त।
उन्मादी–वि० [स्त्री० उन्मादिनी] उन्मत्त। पागल।
उन्मार्ग–संज्ञा पुं० [वि० उन्मार्गी] १. कुमार्ग। २. बुरा ढंग।
उन्मीलन–संज्ञा पुं० [वि० उन्मीलक, उन्मीलनीय, उन्मीलित] खिलना।
उन्मीलना–क्रि० स० खोलना।
उन्मीलित–वि० खुला हुआ।
उन्मुख–वि० [स्त्री० उन्मुखी] १. ऊपर मुँह किए। २. उत्सुक। ३ तैयार।
उन्मूलक–वि० समूल नष्ट करनेवाला।
उन्मूलन–संज्ञा पुं० [वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] जड़ से उखाड़ना।
उन्मेष–संज्ञा पुं० [वि० उन्मिषित] १. खिलना। २. थोड़ा प्रकाश।
उप–उप० एक उपसर्ग। यह जिन शब्दों के पहले लगता है, उनमें विशेषता करता है।
उपकरण–संज्ञा पुं० सामग्री।
उपकरना–क्रि० स० उपकार करना। भलाई करना।
उपकर्त्ता–संज्ञा पुं० दे० "उपकारक"।
उपकार–संज्ञा पुं० १. हितसाधन। भलाई। २. लाभ।
उपकारक–वि० [स्त्री० उपकारिका] उपकार करनेवाला।
उपकारिता–संज्ञा स्त्री० भलाई।
उपकारी–वि० [स्त्री० उपकारिणी] उपकार करनेवाला।
उपकृत–वि० जिसके साथ उपकार किया गया हो।
उपकृति–संज्ञा स्त्री० उपकार।
उपक्रम–संज्ञा पुं० १. किसी कार्य्य को आरंभ करने के पहले का आयोजन। तैयारी। २. भूमिका।
उपक्रमणिका–संज्ञा स्त्री० किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषय-सूची।
उपग्रह–संज्ञा पुं० १. गिरफ्तारी। २. वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता है।
उपघात–संज्ञा पुं० १. नाश करने की क्रिया। २. अशक्ति। ३. रोग।
उपचय–संज्ञा पुं० १. वृद्धि। २. संचय।
उपचार–संज्ञा पुं० १. व्यवहार। २. दवा। ३. सेवा।
उपचारक–वि० [स्त्री० उपचारिका] १. सेवा करनेवाला। २. चिकित्सा करनेवाला।
उपचारना–क्रि० स० व्यवहार में लाना।
उपचारी–वि० [स्त्री० उपचारिणी] उपचार करनेवाला।
उपज–संज्ञा स्त्री० उत्पत्ति। पैदावार।
उपजना–क्रि० अ० उत्पन्न होना।
उपजाऊ–वि० जिसमें अच्छी उपज हो।
उपजाना–क्रि० स० उत्पन्न करना।
उपजीवन–संज्ञा पुं० [वि० उपजीवी, उपजीवक] जीविका।
उपजीवी–वि० [स्त्री० उपजीविनी] दूसरे के सहारे पर गुज़र करनेवाला।
उपटन–संज्ञा पुं० दे० "उबटन"।
उपटाना–क्रि० स० उबटन लगवाना।
उपटारना–क्रि० स० हटाना।
उपड़ना–क्रि० अ० उखड़ना।
उपत्यका–संज्ञा स्त्री० पर्वत के पास की भूमि।
उपदिशा–संज्ञा स्त्री० कोण।
उपदिष्ट–वि० १. जिसे उपदेश दिया गया हो। २. जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो।
उपदेश–संज्ञा पुं० शिक्षा। सीख।

ऊदल-संज्ञा पुं० महोबे के मुख्य सामंतों में से एक वीर।
ऊधम-संज्ञा पुं० उपद्रव। उत्पात।
ऊधमी-वि० [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला। उत्पाती।
ऊन-संज्ञा पुं० भेड़ बकरी आदि का रोयाँ।
वि० [स्त्री० ऊनी] १. कम। थोड़ा। २. तुच्छ। नाचीज़।
ऊनता-संज्ञा स्त्री० कमी। न्यूनता।
ऊना-वि० कम।
ऊनी-वि० कम। न्यून।
संज्ञा स्त्री० उदासी। रंज। खेद।
वि० ऊन का बना हुआ वस्त्र आदि।
ऊपर-क्रि० वि० [वि० ऊपरी] १. ऊँचाई पर। २. आधार पर।
ऊपरी-वि० १. ऊपर का। २. बाहर का। ३. दिखौआ।
ऊब-संज्ञा स्त्री० घबराहट।
संज्ञा स्त्री० उत्साह। उमंग।
ऊबट-संज्ञा पुं० कठिन मार्ग। अटपट रास्ता।
वि० ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा।
ऊबड़ खाबड़-वि० ऊँचा-नीचा।
ऊबना-क्रि० अ० उकताना। घबराना।
ऊमक-संज्ञा स्त्री० झोंक। वेग।
ऊरज-वि० संज्ञा पुं० दे० "ऊर्ज"।
ऊरध-वि० दे० "ऊर्ध्व"।
ऊरु-संज्ञा पुं० जंघा।
ऊरुस्तंभ-संज्ञा पुं० एक वात रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।
ऊर्ज-वि० बलवान्। शक्तिमान्।
संज्ञा पुं० [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी] १. बल। शक्ति। २. कार्तिक मास।
ऊर्जस्वी-वि० १. बलवान्। २. तेजवान्।
ऊर्ण-संज्ञा पुं० भेड़ या बकरी के बाल। ऊन।
ऊर्द्ध्व-क्रि० वि० ऊपर।
वि० १. ऊँचा। २. खड़ा।
ऊर्द्ध्वगति-संज्ञा स्त्री० मुक्ति।
ऊर्द्ध्वगामी-वि० १. ऊपर को जानेवाला। २. मुक्त। निर्वाण-प्राप्त।
ऊर्द्ध्वपुंड्र-संज्ञा पुं० खड़ा तिलक। वैष्णवी तिलक।
ऊर्द्ध्वरेता-वि० ब्रह्मचारी।
ऊर्द्ध्वलोक-संज्ञा पुं० १. आकाश २. वैकुंठ। स्वर्ग।
ऊर्द्ध्वश्वास-संज्ञा पुं० १. ऊपर को चढ़ती हुई साँस। २. श्वास की कमी या तंगी।
ऊर्मि, ऊर्मी-संज्ञा स्त्री० १. लहर। तरंग। २. पीड़ा।
ऊल-जलूल-वि० १. बे सिर-पैर का। २. अनाड़ी।
ऊषा-संज्ञा स्त्री० १. सवेरा। २. अरुणोदय।
ऊषाकाल-संज्ञा पुं० सवेरा।
ऊष्म-संज्ञा पुं० गरमी।
वि० गरम।
ऊष्मा-संज्ञा स्त्री० ग्रीष्मकाल।
ऊसर-संज्ञा पुं० वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और कुछ उत्पन्न न हो।
ऊह-अव्य० ओह।
संज्ञा पुं० अनुमान।
ऊहापोह-संज्ञा पुं० तर्क-वितर्क।

उपदेशक–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपदेशिका] शिक्षा देनेवाला।
उपदेश्य–वि० उपदेश के योग्य।
उपदेष्टा–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश देनेवाला। शिक्षक।
उपदेसना–क्रि० स० उपदेश करना।
उपद्रव–संज्ञा पुं०[वि० उपद्रवी] उत्पात। विप्लव।
उपद्रवी–वि० १. ऊधम मचानेवाला। २. नटखट।
उपधरना॰–क्रि०अ०अंगीकार करना।
उपधान–संज्ञा पुं० [वि० उपधृत] १. ऊपर रखना। २. तकिया।
उपनना॰–क्रि० अ० पैदा होना।
उपनय–संज्ञापुं० १. समीप ले जाना। २. उपनयन-संस्कार।
उपनयन–संज्ञा पुं० [वि० उपनीत, उपनेता, उपनेतव्य] यज्ञोपवीत संस्कार।
उपनाम–संज्ञा पुं० दूसरा नाम।
उपनिधि–संज्ञा स्त्री० धरोहर। थाती।
उपनिविष्ट–वि० दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।
उपनिवेश–संज्ञा पुं० एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना।
उपनिषद्–संज्ञा स्त्री० वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा,परमात्मा आदि का निरूपण है।
उपनीत–वि० जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो।
उपनेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपनेत्री] १. लानेवाला। २. उपनयन करानेवाला। आचार्य्य।
उपन्यास–संज्ञा पुं० [वि० उपन्यस्त] कथा। नावेल।
उपपति–संज्ञा पुं० वह पुरुष जिससे ... किसी दूसरे की स्त्री प्रेम ...
उपपत्ति–संज्ञा स्त्री० १. हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। २. हेतु।
उपपातक–संज्ञा पुं० छोटा पाप।
उपपादन–संज्ञा पुं० [वि० उपपादित, उपपन्न, उपपादनीय, उपपाद्य] १. सिद्ध करना। २. संपादन।
उपपुराण–संज्ञा पुं० १८ मुख्य पुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण।
उपभुक्त–वि० १. काम में लाया हुआ। २. जूठा।
उपभोक्ता–वि० [स्त्री० उपभोक्त्री] उपभोग करनेवाला।
उपभोग–संज्ञा पुं० १. बर्तना। २. किसी वस्तु का व्यवहार। उसका सुख।
उपमंत्री–संज्ञा पुं० वह मंत्री जो प्रधान मंत्री के नीचे हो।
उपमा–संज्ञा स्त्री० १. तुलना। मिलान। २. एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है।
उपमाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपमात्री] उपमा देनेवाला।
संज्ञा स्त्री० दूध पिलानेवाली दाई।
उपमान–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। २. २३ मात्राओं का एक छंद।
उपमित–वि० जिसकी उपमा दी गई हो।
उपमिति–संज्ञा स्त्री० उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान।
उपमेय–वि० जिसकी उपमा दी जाय। ...वि० योग्य।
...संज्ञा स्त्री० यथार्थता।

ऋ

ऋ–एक स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
संज्ञा स्त्री० १. देवमाता। २. निंदा।
ऋक्–संज्ञा स्त्री० वेदमंत्र।
संज्ञा पुं० दे० "ऋग्वेद"।
ऋक्ष–संज्ञा पुं० [स्त्री० ऋक्षी] १. भालू। २. तारा।
ऋक्षपति–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
ऋग्वेद–संज्ञा पुं० चार वेदों में से एक।
ऋग्वेदी–वि० ऋग्वेद का जानने या पढ़नेवाला।
ऋचा–संज्ञा स्त्री० वेदमंत्र।
ऋच्छ–संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"।
ऋजु–वि० १. सीधा। २. सरल।
ऋजुता–संज्ञा स्त्री० १. सीधापन। २. सज्जनता।
ऋण–संज्ञा पुं० [वि० ऋणी] कर्ज़। उधार।
ऋणी–वि० १. कर्ज़दार। २. अनुगृहीत।
ऋतु–संज्ञा स्त्री० १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के विभाग जो छः हैं। २. रजोदर्शन के उपरांत वह काल जिसमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य होती हैं।
ऋतुचर्या–संज्ञा स्त्री० ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था।
ऋतुमती–वि० स्त्री० रजस्वला। मासिक धर्मयुक्ता।
ऋतुराज–संज्ञा पुं० वसंत ऋतु।
ऋतुवती–वि०स्त्री०दे०"ऋतुमती"।
ऋतुस्नान–संज्ञा पुं० [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।
ऋत्विज–संज्ञा पुं० [स्त्री० आर्त्विजी] यज्ञ करनेवाला।
ऋद्ध–वि० संपन्न। समृद्ध।
ऋद्धि–संज्ञा स्त्री० १. समृद्धि। २. आर्या छंद का एक भेद।
ऋद्धि-सिद्धि–संज्ञा स्त्री० समृद्धि और सफलता।
ऋनिया–वि० ऋणी।
ऋभु–संज्ञा पुं० देवता।
ऋषभ–संज्ञा पुं० १. बैल। २. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा। ३. जैन-देवता।
ऋषि–संज्ञा पुं० वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। साधु।
ऋष्यमूक–संज्ञा पुं० दक्षिण का एक पर्वत।

ए

ए–संस्कृत वर्णमाला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्णमाला का आठवाँ स्वर वर्ण। यह अ और इ के योग से बना है; इसी लिये यह कंठ-तालव्य है।
एँच-पेंच–संज्ञा पुं० १. उलझन।

उपयोग–संज्ञा पुं० [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १. व्यवहार। २. आवश्यकता।
उपयोगिता–संज्ञा स्त्री० काम में आने की योग्यता।
उपयोगी–वि० [स्त्री० उपयोगिनी] १. काम में आनेवाला। २. लाभकारी।
उपरत–वि० १. विरक्त। २. मरा हुआ।
उपरति–संज्ञा स्त्री० १. विरति। २. मृत्यु।
उपरत्न–संज्ञा पुं० कम दाम के रत्न।
उपरना–संज्ञा पुं० दुपट्टा।
†क्रि० अ० उखाड़ना।
उपरफट,उपरफट्टू–वि० १. ऊपरी। २. बे ठिकाने का।
उपरांत–क्रि० वि० अनंतर। बाद।
उपराग–संज्ञा पुं० १. रंग। २. वासना। ३. चंद्र या सूर्य्य ग्रहण।
उपरा-चढ़ी–संज्ञा स्त्री० चढ़ा-ऊपरी।
उपराज–संज्ञा पुं० राजप्रतिनिधि।
*संज्ञा स्त्री० दे० "उपज"।
उपराजना*–क्रि० स० पैदा करना।
उपराना†–क्रि० अ० ऊपर आना। क्रि० स० उठाना।
उपराहना*–क्रि० अ० प्रशंसा करना।
उपराही*–क्रि० वि० दे० "ऊपर"। वि० बढ़कर। श्रेष्ठ।
उपरि–क्रि० वि० ऊपर।
उपरी-उपरा–संज्ञा पुं० चढ़ा-ऊपरी।
उपरोक्त–वि० ऊपर कहा हुआ।
उपरोध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। २. ढकना।
उपरोधक–संज्ञा पुं० १. बाधा डालनेवाला। २. भीतर की कोठरी।
उपर्युक्त–वि० ऊपर कहा हुआ।
उपल–संज्ञा पुं० १. पत्थर। २. ओला। ३. रत्न। ४. मेघ।
उपलक्षक–वि० अनुमान करनेवाला। ताड़नेवाला।
उपलक्षण–संज्ञा पुं० [वि० उपलक्षक, उपलक्षित] संकेत।
उपलक्ष्य–संज्ञा पुं० १. संकेत। चिह्न। २. उद्देश्य।
उपलब्ध–वि० पाया हुआ।
उपलब्धि–संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। २. बुद्धि।
उपला–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० उपली] कंडा। गोहरा।
उपलेप–संज्ञा पुं० १. लेप लगाना। लीपना। २. वह वस्तु जिससे लेप करें।
उपलेपन–संज्ञा पुं० [वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त] लीपने या लेप लगाने का कार्य्य।
उपल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० उपल्ली] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त्त या तह।
उपवन–संज्ञा पुं० १. बाग। २. छोटा जंगल।
उपवसथ–संज्ञा पुं० गाँव। बस्ती।
उपवास–संज्ञा पुं० भोजन का छूटना। फाका।
उपवासी–वि० [स्त्री० उपवासिनी] उपवास करनेवाला।
उपविष–संज्ञा पुं० हलका विष।
उपविष्ट–वि० बैठा हुआ।
उपवीत–संज्ञा पुं० [वि० उपवीती] १. जनेऊ। २. उपनयन।
उपवेशन–संज्ञा पुं० [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।
उपशिष्य–संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य।
उपसंपादक–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपसंपादिका]

२. घात।
एंजिन–संज्ञा पुं० दे० "इंजन"।
एँड़ा-बेंड़ा–वि० उलटा-सीधा।
एड़ी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का रेशम का कीड़ा जो अंडी के पत्ते खाता है। २. अंडी। मूगा।
संज्ञा स्त्री० दे० "एड़ी"।
एँडुआ–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० एँडुई] गेंडुरी।
ए–संज्ञा पुं० विष्णु।
अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग संबोधन या बुलाने के लिये करते हैं।
* सर्व० यह।
एकंग–वि० अकेला।
एकंगा–वि०[स्त्री०एकंगी] एक ओर का।
एकंत*–वि० दे० "एकांत"।
एक–वि० १. एकाइयों में सबसे छोटी और पहली संख्या। २. अद्वितीय। ३. कोई। ४. तुल्य।
एकचक्र–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य का रथ। २. सूर्य्य।
वि० चक्रवर्ती।
एकछत्र–वि० जिसमें कहीं और किसी दूसरे का राज्य या अधिकार न हो।
क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।
संज्ञा पुं० वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है।
वि० एक ही।
एकड़–संज्ञा पुं० पृथिवी की एक माप।
एकतः–क्रि० वि० एक ओर से।
एकतरफा–वि० १. एक ओर का। २. पक्षपातग्रस्त।
एकता–संज्ञा स्त्री० १. मेल। २. समानता।
वि० बेजोड़।
एकतान–वि० १. एकाग्रचित्त। २. मिलकर एक।
एकतारा–संज्ञा पुं० एक तार का सितार या बाजा।
एकतालीस–वि० चालीस और एक।
एकतीस–वि० गिनती में तीस और एक।
एकत्र–क्रि० वि० इकट्ठा।
एकत्रित–वि० दे० "एकत्र"।
एकनयन–वि० काना।
संज्ञा पुं० १. कौवा। २. कुबेर।
एकनिष्ठ–वि० एक ही पर श्रद्धा रखनेवाला।
एकन्नी–संज्ञा स्त्री० निकल धातु का एक आने मूल्य का सिक्का।
एकबारगी–क्रि० वि० १. एक ही दफे में। २. अचानक।
एकबाल–संज्ञा पुं० १. प्रताप। २. भाग्य।
एकभुक्त–वि० जो रात-दिन में केवल एक बार भोजन करे।
एकमत–वि० एक राय के।
एकमात्रक–वि० एक मात्रा का।
एकमुखी–वि० एक मुँहवाला।
एकरंग–वि० १. समान। २. जो चारों ओर एक सा हो।
एकरदन–संज्ञा पुं० गणेश।
एकरस–वि० एक ढंग का।
एकरार–संज्ञा पुं० १. स्वीकार। २. प्रतिज्ञा।
एकरूप–वि० समान आकृति का।
एकरूपता–संज्ञा स्त्री० समानता।
एकला*†–वि० दे० "अकेला"।
एकलिंग–संज्ञा पुं० शिव का एक नाम।

उपदेशक–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपदेशिका] शिक्षा देनेवाला ।
उपदेश्य–वि० उपदेश के योग्य ।
उपदेष्टा–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश देनेवाला । शिक्षक ।
उपदेसना–क्रि० स० उपदेश करना ।
उपद्रव–संज्ञा पुं०[वि० उपद्रवी] उत्पात । विप्लव ।
उपद्रवी–वि० १. ऊधम मचानेवाला । २. नटखट ।
उपधरना*–क्रि०स०अंगीकार करना।
उपधान–संज्ञा पुं० [वि० उपहृत] १. ऊपर रखना । २. तकिया ।
उपनना*–क्रि० अ० पैदा होना ।
उपनय–संज्ञा पुं० १. समीप ले जाना । २. उपनयन-संस्कार ।
उपनयन–संज्ञा पुं० [वि० उपनीत, उपनेता, उपनेतव्य] यज्ञोपवीत संस्कार ।
उपनाम–संज्ञा पुं० दूसरा नाम ।
उपनिधि–संज्ञा स्त्री० धरोहर । थाती ।
उपनिविष्ट–वि० दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ ।
उपनिवेश–संज्ञा पुं० एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना ।
उपनिषद्–संज्ञा स्त्री० वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है।
उपनीत–वि० जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो ।
उपनेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपनेत्री] १. लानेवाला । २. उपनयन करानेवाला। आचार्य्य ।
उपन्यास–संज्ञा पुं० [वि० उपन्यस्त] कथा । नावेल ।
उपपति–संज्ञा पुं० वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे ।
उपपत्ति–संज्ञा स्त्री० १. हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय । २. हेतु ।
उपपातक–संज्ञा पुं० छोटा पाप ।
उपपादन–संज्ञा पुं० [वि० उपपादित, उपपन्न, उपपादनीय, उपपाद्य] १. सिद्ध करना । २. संपादन ।
उपपुराण–संज्ञा पुं० १८ मुख्य पुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण ।
उपभुक्त–वि० १. काम में लाया हुआ । २. जूठा ।
उपभोक्ता–वि० [स्त्री० उपभोक्त्री] उपभोग करनेवाला ।
उपभोग–संज्ञा पुं० १. बर्तना । २. किसी वस्तु का व्यवहार । उसका सुख ।
उपमंत्री–संज्ञा पुं० वह मंत्री जो प्रधान मंत्री के नीचे हो ।
उपमा–संज्ञा स्त्री० १. तुलना । मिलान । २. एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है ।
उपमाता–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपमात्री] उपमा देनेवाला ।
संज्ञा स्त्री० दूध पिलानेवाली दाई ।
उपमान–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय । २. २३ मात्राओं का एक छंद ।
उपमित–वि० जिसकी उपमा दी गई हो ।
उपमिति–संज्ञा स्त्री० उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान ।
उपमेय–वि० जिसकी उपमा दी जाय ।
उपयुक्त–वि० योग्य ।
उपयुक्तता–संज्ञा स्त्री० यथार्थता ।

एकलौता–वि० [स्त्री० एकलौती] अपने माँ-बाप का एक ही (लड़का)।
एकवचन–संज्ञा पुं० व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो।
एकवेणी–वि० १. जो (स्त्री) एक ही चोटी बनाकर बालों को किसी प्रकार समेट ले। २. विधवा।
एकसठ–वि० साठ और एक।
एकसाँ–वि० बराबर। समान।
एकहत्तर–वि० सत्तर और एक।
एकहत्था–वि० जो एक ही के हाथ में हो।
एकहरा–वि० [स्त्री० एकहरी] एक परत का।
एकांग–वि० जिसे एक ही अंग हो।
एकांगी–वि० १. एकतरफ़ा। २. ज़िद्दी।
एकांत–वि० निर्जन।
संज्ञा पुं० निराला।
एकांतता–संज्ञा स्त्री० अकेलापन।
एकांतवास–संज्ञा पुं० [वि० एकांतवासी] निर्जन स्थान या अकेले में रहना।
एका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
संज्ञा पुं० मेल।
एकाई–संज्ञा स्त्री० १. एक का भाव। २. अंकों की गिनती में पहले अंक का स्थान।
एकाएक–क्रि० वि० अकस्मात्।
एकाकार–संज्ञा पुं० एकमय होना।
वि० समान।
एकाकी–वि० [स्त्री० एकाकिनी] अकेला।
एकाक्ष–वि० काना।
संज्ञा पुं० १. कौआ। २. शुक्राचार्य।
एकाक्षरी–वि० एक अक्षर का।
एकाग्र–वि० [संज्ञा एकाग्रता] चंचलता-रहित।
एकाग्रचित्त–वि० स्थिरचित्त।
एकाग्रता–संज्ञा स्त्री० अचंचलता।
एकात्मता–संज्ञा स्त्री० एकता।
एकादश–वि० ग्यारह।
एकादशी–संज्ञा स्त्री० प्रत्येक चांद्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन है।
एकाधिपत्य–संज्ञा पुं० पूर्ण प्रभुत्व।
एकार्थक–वि० समानार्थक।
एकीकरण–संज्ञा पुं० [वि० एकीकृत] मिलाकर एक करना।
एकीभूत–वि० मिश्रित।
एकोतरसो–वि० एक सौ एक।
एकोद्दिष्ट(श्राद्ध)–संज्ञा पु० वह श्राद्ध जो एक के उद्देश से किया जाय।
एकौभा०†–वि० अकेला।
एक्का–वि० अकेला।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की दो पहिए की गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है। २. ताश या गंजीफ़े का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। एक्की।
एक्कावान–संज्ञा पुं० एक्का हाँकनेवाला।
एक्की–संज्ञा स्त्री० १. वह बैलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय। २. ताश या गंजीफ़े का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। यक्का।
एक्यानवे–वि० नब्बे और एक।
एक्यावन–वि० पचास और एक।
एक्यासी–वि० अस्सी और एक।
एखनी–संज्ञा स्त्री० मांस का रसा या शोरबा।
एड़–संज्ञा स्त्री० एड़ी।
एड़ी–संज्ञा स्त्री० टखनी के पीछे पैर की गद्दी का निकला हुआ भाग।
एतद्–सर्व० यह।

उपयोग–संज्ञा पुं० [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १. व्यवहार। २. आवश्यकता।
उपयोगिता–संज्ञा स्त्री० काम में आने की योग्यता।
उपयोगी–वि० [स्त्री० उपयोगिनी] १. काम में आनेवाला। २. लाभकारी।
उपरत–वि० १. विरक्त। २. मरा हुआ।
उपरति–संज्ञा स्त्री० १. विरति। २. मृत्यु।
उपरत्न–संज्ञा पुं० कम दाम के रत्न।
उपरना–संज्ञा पुं० दुपट्टा।
†क्रि० अ० उखाड़ना।
उपरफट,उपरफट्टू–वि० १. ऊपरी। २. बे ठिकाने का।
उपरांत–क्रि० वि० अनंतर। बाद।
उपराग–संज्ञा पुं० १. रंग। २. वासना। ३. चंद्र या सूर्य्य ग्रहण।
उपरा-चढ़ी–संज्ञा स्त्री० चढ़ा-ऊपरी।
उपराज–संज्ञा पुं० राजप्रतिनिधि।
*संज्ञा स्त्री० दे० "उपज"।
उपराजना*–क्रि० स० पैदा करना।
उपराना†–क्रि० अ० ऊपर आना।
क्रि० स० उठाना।
उपराहना*–क्रि० अ० प्रशंसा करना।
उपराही*–क्रि० वि० दे० "ऊपर"।
वि० बढ़कर। श्रेष्ठ।
उपरि–क्रि० वि० ऊपर।
उपरी-उपरा–संज्ञा पुं० चढ़ा-ऊपरी।
उपरोक्त–वि० ऊपर कहा हुआ।
उपरोध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। २. ढकना।
उपरोधक–संज्ञा पुं० १. बाधा डालनेवाला। २. भीतर की कोठरी।
उपर्युक्त–वि० ऊपर कहा हुआ।
उपल–संज्ञा पुं० १. पत्थर। २. ओला। ३. रत्न। ४. मेघ।
उपलक्षक–वि० अनुमान करनेवाला। ताड़नेवाला।
उपलक्षण–संज्ञा पुं० [वि० उपलक्षक, उपलक्षित] संकेत।
उपलक्ष्य–संज्ञा पुं० १. संकेत। चिह्न। २. उद्देश्य।
उपलब्ध–वि० पाया हुआ।
उपलब्धि–संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। २. बुद्धि।
उपला–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० उपली] कंडा। गोहरा।
उपलेप–संज्ञा पुं० १. लेप लगाना। लीपना। २. वह वस्तु जिससे लेप करें।
उपलेपन–संज्ञा पुं० [वि० उपलेपित, उपलेप्य, उपलिप्त] लीपने या लेप लगाने का कार्य्य।
उपल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री०, अल्पा० उपल्ली] किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, पर्त्त या तह।
उपवन–संज्ञा पुं० १. बाग। २. छोटा जंगल।
उपवसथ–संज्ञा पुं० गाँव। बस्ती।
उपवास–संज्ञा पुं० भोजन का छूटना। फ़ाक़ा।
उपवासी–वि० [स्त्री० उपवासिनी] उपवास करनेवाला।
उपविष–संज्ञा पुं० हलका विष।
उपविष्ट–वि० बैठा हुआ।
उपवीत–संज्ञा पुं० [वि० उपवीती] १. जनेऊ। २. उपनयन।
उपवेशन–संज्ञा पुं० [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।
उपशिष्य–संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य।
उपसंपादक–संज्ञा पुं० [स्त्री० उपसंपादिका]

एतद्देशीय–वि० इस देश का।
एतबार–संज्ञा पुं० विश्वास।
एतराज़–संज्ञा पुं० विरोध।
एतवार–संज्ञा पुं० दे० "इतवार"।
एता॰†–वि० [स्त्री० एती] इतना।
एतादृश–वि० ऐसा।
एतिक॰†–वि० स्त्री० इतनी।
एरंड–संज्ञा पुं० रेंड़। रेंडी।
एलची–संज्ञा पुं० राजदूत।
एला–संज्ञा स्त्री० इलायची।
एवं–क्रि० वि० ऐसा ही।
एव–अव्य० १. एक निश्चयार्थक शब्द। ही। २. भी।
एवज़–संज्ञा पुं० बदला।
एवज़ी–संज्ञा स्त्री० स्थानापन्न पुरुष।
एह॰–सर्व० यह।
वि० यह।
एहसान–संज्ञा पुं० उपकार।
एहसानमंद–वि० कृतज्ञ।
एहि–सर्व० इसको।
एहो–अव्य० हे। ऐ।

ऐ

ऐ–संस्कृत वर्णमाला का बारहवाँ और हिंदी या देवनागरी वर्णमाला का नवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।
ऐँ–अव्य० १. एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी या समझी हुई बात को फिर से कह-लाने के लिये होता है। २. एक आश्चर्यसूचक अव्यय।
ऐँचना–क्रि० स० खींचना।
ऐँचा ताना–वि० जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिंचती हो। भेंगा।
ऐँचातानी–संज्ञा स्त्री० खींचा-खींची।
ऐँछना॰–क्रि० स० झाड़ना।
ऐँठ–संज्ञा स्त्री० १. अकड़। २. गर्व।
ऐँठन–संज्ञा स्त्री० लपेट।
ऐंठना–क्रि० स० १. मरोड़ना। २. कसना।
क्रि० अ० १. अकड़ना। २. घमंड करना। ३. टर्राना।
ऐँठवाना–क्रि० स० ऐँठने का काम दूसरे से करवाना।
ऐँड़–संज्ञा पुं० १. ऐँठ। गर्व। २. पानी का भँवर।
वि० निकम्मा।
ऐँड़दार–वि० घमंडी।
ऐँड़ना–क्रि० अ० ऐँठना।
क्रि० स० ऐँठना।
ऐँड़बैँड़॰–वि० टेढ़ा।
ऐँड़ा–वि० [स्त्री० ऐँड़ी] टेढ़ा। ऐंठा हुआ।
ऐँड़ाना–क्रि० अ० अँगड़ाई लेना। बदन तोड़ना।

उभयतः–क्रि० वि० दोनों ओर से ।
उभरना०†–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उभरौंहा०–वि० उभरा हुआ ।
उभाड़–संज्ञा पुं० उठान । ऊँचापन ।
उभाड़ना–क्रि० स० उत्तेजित करना ।
उभिटना०–क्रि० अ० हिचकना ।
उभै०–वि० दे० "उभय" ।
उमंग–संज्ञा स्त्री० चित्त का उभाड़ । मौज ।
उमंगना०–क्रि० अ० दे० "उमगना"।
उमँड़ना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना" ।
उमग०–संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग" ।
उमगना–क्रि० अ० १. उमड़ना । २. उल्लास में होना ।
उमचना०–क्रि० अ० हुमचना ।
उमड़–संज्ञा स्त्री० बाढ़ ।
उमड़ना–क्रि० अ० १. उतराकर बह चलना । २. उठकर फैलना । ३. जोश में आना ।
उमड़ाना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना" । क्रि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक रूप ।
उमदा–वि० दे० "उम्दा" ।
उमर–संज्ञा स्त्री० अवस्था ।
उमरा–संज्ञा पुं० प्रतिष्ठित लोग ।
उमराव०‡–संज्ञा पुं० दे० "उमरा" ।
उमस–संज्ञा स्त्री० वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है ।
उमहना०–क्रि० अ० दे० "उमड़ना" ।
उमा–संज्ञा स्त्री० शिव की स्त्री, पार्वती ।
उमाकना०–क्रि० अ० नष्ट करना ।
उमाकिनी०†–वि० स्त्री० खोदकर फेंक देनेवाली ।
उमाचना०†–क्रि० स० उभाड़ना ।
उमाद०–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद" ।
उमापति–संज्ञा पुं० शिव ।
उमाह–संज्ञा पुं० उत्साह ।
उमेठन–संज्ञा स्त्री० मरोड़ ।
उमेठना–क्रि० स० ऐंठना । मरोड़ना ।
उमेड़ना०–क्रि० स० दे० "उमेठना" ।
उमेलना०–क्रि० स० प्रकट करना ।
उम्दगी–संज्ञा स्त्री० अच्छापन । भलापन । खूबी ।
उम्दा–वि० अच्छा । भला ।
उम्मत–संज्ञा स्त्री० जमाअत ।
उम्मीद, उम्मेद–संज्ञा स्त्री० आशा । भरोसा । आसरा ।
उम्मेदवार–संज्ञा पुं० आसरा रखनेवाला ।
उम्मेदवारी–संज्ञा स्त्री० आशा । आसरा ।
उम्र–संज्ञा स्त्री० अवस्था ।
उर–संज्ञा पुं० हृदय ।
उरग–संज्ञा पुं० साँप ।
उरगना०–क्रि० स० स्वीकार करना ।
उरगारि–संज्ञा पुं० गरुड़ ।
उरगिनी०–संज्ञा स्त्री० सर्पिणी ।
उरझना–क्रि० अ० दे० "उलझना" ।
उरद–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है । माष ।
उरध०–क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व" ।
उरधारना–क्रि० स० दे० "उधेड़ना" ।
उरबसी–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वशी" ।
उरबी०–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी" ।
उरमना०†–क्रि० अ० लटकना ।
उरमाना०†–क्रि० स० लटकाना ।
उरमाल०–संज्ञा पुं० रूमाल ।
उरस–वि० फीका । नीरस ।

ऐंद्रजालिक–वि० इंद्रजाल करनेवाला। मायावी।
ऐंद्री–संज्ञा स्त्री० १. इंद्राणी। २. इलायची।
ऐ–संज्ञा पुं० शिव।
अव्य० एक संबोधन।
ऐक्य–संज्ञा पुं० एकत्व।
ऐगुन०†–संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।
ऐच्छिक–वि० जो अपनी इच्छा पर हो।
ऐतिहासिक–वि० इतिहास-संबंधी।
ऐन–संज्ञा पुं० दे० "अयन"।
वि० ठीक।
ऐनक–संज्ञा स्त्री० आँख में लगाने का चश्मा।
ऐपन–संज्ञा पुं० हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।
ऐब–संज्ञा पुं० [वि० ऐबी] दोष।
ऐबी–वि० नटखट।
ऐया†–संज्ञा स्त्री० १. बड़ी-बूढ़ी स्त्री। २. दादी।
ऐयार–संज्ञा पुं० [स्त्री० ऐयारा] धूर्त।
ऐयारी–संज्ञा स्त्री० चालाकी। धूर्तता।
ऐयाश–वि० [संज्ञा ऐयाशी] विषयी।
ऐयाशी–संज्ञा स्त्री० भोग-विलास।
ऐरा गैरा–वि० १. अजनबी। २. तुच्छ।
ऐरापति०–संज्ञा पुं० दे० "ऐरावत"।
ऐरावत–संज्ञा पुं० [स्त्री० ऐरावती] इंद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।
ऐरावती–संज्ञा स्त्री० ऐरावत हाथी की हथिनी।
ऐल०–संज्ञा पुं० [हिं० अहिला] १. बाढ़। २. अधिकता।
ऐश–संज्ञा पुं० आराम।
ऐश्वर्य–संज्ञा पुं० विभूति।
ऐश्वर्यवान्–वि० [स्त्री० ऐश्वर्यवती] वैभवशाली। संपन्न।
ऐस†–वि० दे० "ऐसा"।
ऐसा–वि० [स्त्री० ऐसी] इस प्रकार का।
ऐसे–क्रि० वि० इस ढंग से।
ऐहिक–वि० सांसारिक।

ओ

ओ–संस्कृत वर्णमाला का तेरहवाँ और हिंदी वर्णमाला का दसवाँ स्वर-वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।
ओं–अव्य० हाँ। अच्छा।
ओंइछना–क्रि० स० निछावर करना।
ओंकार–संज्ञा पुं० १. परमात्मा का सूचक "ओं" शब्द। २. सोहन चिड़िया।
ओंगना–क्रि० स० गाड़ी की धुरी में चिकनाई लगाना जिससे पहिया आसानी से फिरे।
ओंठ–संज्ञा पुं० होंठ।
ओंड़ा*–वि० गहरा।
संज्ञा पुं० गड्ढा।
ओ–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
अव्य० १. एक संबोधन-सूचक शब्द। २. ओह।

संज्ञा पुं० छाती।
उरसना–क्रि० अ० उथल-पुथल करना।
उरसिज–संज्ञा पुं० स्तन।
उरहना⊙–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
उराहना–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
उरिण, उरिन–वि० दे० "उऋण"।
उरु–वि० विस्तीर्ण।
⊙ संज्ञा पुं० जंघा। जाँघ।
उरुवा⊙–संज्ञा पुं० उल्लू की जाति की एक चिड़िया। रुरुग्रा।
उरूज–संज्ञा पुं० बढ़ती। वृद्धि।
उरेखना⊙–क्रि० स० दे० "अवरेखना"।
उरेह–संज्ञा पुं० चित्रकारी।
उरेहना–क्रि० स० खींचना। रचना।
उरोज–संज्ञा पुं० स्तन।
उर्द–संज्ञा पुं० दे० "उरद"।
उर्दू–संज्ञा स्त्री० वह हिंदी जिसमें अरबी, फ़ारसी के शब्द अधिक हों और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय।
उर्ध⊙–वि० ऊर्ध्व।
उर्फ–संज्ञा पुं० उपनाम।
उर्मि⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।
उर्वरा–संज्ञा स्त्री० उपजाऊ भूमि।
वि० स्त्री० उपजाऊ।
उर्वी–संज्ञा स्त्री० पृथिवी।
उर्वीजा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी से उत्पन्न, सीता।
उर्वीधर–संज्ञा पुं० १. शेष। २. पर्वत।
उर्स–संज्ञा पुं० १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। २. मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि।
उलंग⊙–वि० नंगा।
उलंघन⊙–संज्ञा पुं० दे० "उल्लंघन"।
उलंघना, उलँघना⊙–क्रि० स० १. नाँघना। २. अवज्ञा करना।
उलचना–क्रि० स० दे० "उलीचना"।
उलछना⊙†–क्रि० स० १. छितराना। २. उलीचना।
उलझन–संज्ञा स्त्री० १. गाँठ। २. चक्कर।
उलझना–क्रि० अ० १. फँसना। २. लड़ना-झगड़ना।
उलझा⊙–संज्ञा पुं० दे० "उलझन"।
उलझाना–क्रि० स० फँसाना। अटकाना।
उलझाव–संज्ञा पुं० अटकाव। फँसाव।
उलझौहाँ–वि० अटकाने या फँसानेवाला।
उलटना–क्रि० अ० पलटना।
क्रि० स० १. पटकना। २. उत्तर-प्रत्युत्तर करना। ३. कै करना।
उलट-पलट (पुलट)–संज्ञा स्त्री० अदल-बदल। गड़बड़ी।
उलट-फेर–संज्ञा पुं० परिवर्तन।
उलटा–वि० [स्त्री० उलटी] १. औंधा २. क्रम-विरुद्ध। ३. विरुद्ध।
संज्ञा पुं० बेसन से बननेवाला एक पकवान।
उलटाना⊙–क्रि० स० १. पलटाना। लौटाना। २. फेरना।
उलटा-पलटा (पुलटा)–वि० इधर का उधर। अंडबंड।
उलटा-पलटी–संज्ञा स्त्री० फेरफार। अदल-बदल।
उलटाव–संज्ञा पुं० पलटाव। फेर।
उलटी–संज्ञा स्त्री० १. वमन। कै। २. कलाबाज़ी।
उलटी सरसों–संज्ञा स्त्री० वह सरसों

ओक–संज्ञा पुं० घर।
संज्ञा स्त्री० कै।
ओकना–क्रि० अ० १. कै करना। २. भैंस की तरह चिल्लाना।
ओकपति–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. चंद्रमा।
ओकाई–संज्ञा स्त्री० कै।
ओकारांत–वि० जिसके अंत में "ओ" अक्षर हो।
ओखद†–संज्ञा पुं० दे० "औषध"।
ओखली–संज्ञा स्त्री० ऊखल।
ओग॰–संज्ञा पुं० कर। चंदा।
ओघ–संज्ञा पुं० समूह।
ओछा–वि० १. क्षुद्र। २. छिछला।
ओछापन–संज्ञा पुं० नीचता। क्षुद्रता।
ओज–संज्ञा पुं० १. प्रताप। २. प्रकाश।
ओजस्विता–संज्ञा स्त्री० तेज। कांति।
ओजस्वी–वि० [स्त्री० ओजस्विनी] शक्तिवान्। प्रभावशाली।
ओझल–संज्ञा पुं० ओट। आड़।
ओझा–संज्ञा पुं० १. सरजूपारी, मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २. भूत-प्रेत झाड़नेवाला।
ओझाई–संज्ञा स्त्री० ओझा की वृत्ति।
ओट–संज्ञा स्त्री० आड़।
ओटना–क्रि० स० १. कपास को चरखी में दबाकर रूई और बिनौलों को अलग करना। २. अपनी ही बात कहते जाना।
ओटनी, ओटी–संज्ञा स्त्री० कपास ओटने की चरखी।
ओटगना†–क्रि० अ० १. सहारा लेना। २. थोड़ा आराम करना।
ओठँगाना†–क्रि० स० १. सहारे से टिकाना। २. किवाड़ बंद करना।
ओड़व–संज्ञा पुं० वह राग जिसमें पाँच ही स्वर हों।
ओढ़ना–क्रि० स० १. शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना। २. अपने ऊपर लेना।
संज्ञा पुं० ओढ़ने का वस्त्र।
ओढ़नी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र।
ओढ़र॰†–संज्ञा पुं० बहाना।
ओढ़ाना–क्रि० स० ढाँकना।
ओत-प्रोत–वि० बहुत मिला-जुला।
ओद–संज्ञा पुं० नमी।
वि० गीला।
ओदन–संज्ञा पुं० पका हुआ चावल।
ओदरना†–क्रि० अ० विदीर्ण होना।
ओदा–वि० गीला।
ओदारना†–क्रि० स० विदीर्ण करना।
ओनचन–संज्ञा स्त्री० वह रस्सी जो चारपाई के पायताने की ओर बुनावट को खींचकर कड़ा रखने के लिये लगी रहती है।
ओनचना–क्रि० स० चारपाई के पायताने की खाली जगह में लगी हुई रस्सी को बुनावट कड़ी रखने के लिये खींचना।
ओनवना॰†–क्रि० अ० दे० "उनवना"।
ओप–संज्ञा स्त्री० चमक।
ओपना–क्रि० स० चमकाना।
ओफ़–अव्य० ओह।
ओम्–संज्ञा पुं० प्रणव मंत्र। ओंकार।
ओर–संज्ञा स्त्री० तरफ़।
संज्ञा पुं० छोर।
ओराना†–क्रि० अ० समाप्त होना।
ओराहना†–संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।

उभयतः–क्रि० वि० दोनों ओर से।
उभरना०†–क्रि० अ० दे० "उभड़ना"।
उभरौंहा०–वि० उभरा हुआ।
उभाड़–संज्ञा पुं० उठान। ऊँचापन।
उभाड़ना–क्रि० स० उत्तेजित करना।
उभिटना०–क्रि० अ० हिचकना।
उभै०–वि० दे० "उभय"।
उमंग–संज्ञा स्त्री० चित्त का उभाड़। मौज।
उमंगना०–क्रि० अ० दे० "उमगना"।
उमँड़ना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उमग०–संज्ञा स्त्री० दे० "उमंग"।
उमगना–क्रि० अ० १. उमड़ना। २. उल्लास में होना।
उमचना०–क्रि० अ० हुमचना।
उमड़–संज्ञा स्त्री० बाढ़।
उमड़ना–क्रि० अ० १. उतराकर बह चलना। २. उठकर फैलना। ३. जोश में आना।
उमड़ाना–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"। क्रि० स० "उमड़ना" का प्रेरणार्थक रूप।
उमदा–वि० दे० "उम्दा"।
उमर–संज्ञा स्त्री० अवस्था।
उमरा–संज्ञा पुं० प्रतिष्ठित लोग।
उमराव०†–संज्ञा पुं० दे० "उमरा"।
उमस–संज्ञा स्त्री० वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है।
उमहना०–क्रि० अ० दे० "उमड़ना"।
उमा–संज्ञा स्त्री० शिव की स्त्री, पार्वती।
उमाकना०–क्रि० अ० नष्ट करना।
उमाकिनी०†–वि० स्त्री० खोदकर फेंक देनेवाली।
उमाचना०†–क्रि० स० उभाड़ना।
उमाद०–संज्ञा पुं० दे० "उन्माद"।
उमापति–संज्ञा पुं० शिव।
उमाह–संज्ञा पुं० उत्साह।
उमेठन–संज्ञा स्त्री० मरोड़।
उमेठना–क्रि० स० ऐंठना। मरोड़ना।
उमेड़ना०–क्रि० स० दे० "उमेठना"।
उमेलना०–क्रि० स० प्रकट करना।
उम्दगी–संज्ञा स्त्री० अच्छापन। भलापन। खूबी।
उम्दा–वि० अच्छा। भला।
उम्मत–संज्ञा स्त्री० जमाअत।
उम्मीद, उम्मेद–संज्ञा स्त्री० आशा। भरोसा। आसरा।
उम्मेदवार–संज्ञा पुं० आसरा रखनेवाला।
उम्मेदवारी–संज्ञा स्त्री० आशा। आसरा।
उम्र–संज्ञा स्त्री० अवस्था।
उर–संज्ञा पुं० हृदय।
उरग–संज्ञा पुं० साँप।
उरगना०–क्रि० स० स्वीकार करना।
उरगारि–संज्ञा पुं० गरुड़।
उरगिनी०–संज्ञा स्त्री० सर्पिणी।
उरझना–क्रि० अ० दे० "उलझना"।
उरद–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है। माष।
उरध०–क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।
उरधारना–क्रि० स० दे० "उधेड़ना"।
उरबसी–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वशी"।
उरबी०–संज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी"।
उरमना०†–क्रि० अ० लटकना।
उरमाना०†–क्रि० स० लटकाना।
उरमाल०–संज्ञा पुं० रूमाल।
उरस–वि० फीका। नीरस।

ओल–संज्ञा पुं० सूरन।
वि० गीला।
ओलती–संज्ञा स्त्री० ओरी।
ओला–संज्ञा पुं० गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले। पत्थर।
वि० बहुत सर्द।
ओलियाना–क्रि० स० गोद में भरना।
क्रि० स० घुसाना।
ओली–संज्ञा स्त्री० १. गोद। २. अँचल।
ओषधि–संज्ञा स्त्री० जड़ी-बूटी जो दवा में काम आवे।
ओषधिपति, ओषधीश–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।
ओष्ठ–संज्ञा पुं० होंठ।
ओष्ठ्य–वि० ओंठ संबंधी।
ओस–संज्ञा स्त्री० शीत।
ओसाना–क्रि० स० दाँये हुए गल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय। बरसाना।
ओसार–संज्ञा पुं० फैलाव। विस्तार।
ओसारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० ओसारी] दालान।
ओह–अव्य० आश्चर्य, दुःख या बेपरवाई का सूचक शब्द।
ओहदा–संज्ञा पुं० पद।
ओहदेदार–संज्ञा पुं० पदाधिकारी।
ओहार–संज्ञा पुं० परदा।
ओहो–अव्य० आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द।

औ

औ–संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ+ओ के संयोग से बना है।
औंगा–वि० गूँगा।
औंगी–संज्ञा स्त्री० चुप्पी। गूँगापन।
औंगना–क्रि० स० गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।
औंघना, औंघाना†–क्रि० अ० झपकी लेना।
औंघाई†–संज्ञा स्त्री० झपकी।
क्रि० स० डालना।
औंठ–संज्ञा स्त्री० उठा या उभड़ा हुआ किनारा।
औंधना–क्रि० अ० उलटा होना।
क्रि० स० उलटा कर देना।
औंधा–वि० [स्त्री० औंधी] उलटा।
औंधाना–क्रि० स० उलटना।
औ*–अव्य० दे० "और"।
औक़ात–संज्ञा पुं० बहु० समय।
संज्ञा स्त्री० एक० हैसियत।
औगत*–संज्ञा स्त्री० दुर्दशा।
वि० दे० "अवगत"।
औगी–संज्ञा स्त्री० रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। पैना।
संज्ञा स्त्री० जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है।
औगुन*†–संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।
औघट*†–वि० दे० "अवघट"।

संज्ञा पुं० छाती।
उरसना-क्रि० अ० उथल-पुथल करना।
उरसिज-संज्ञा पुं० स्तन।
उरहना॰-संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
उराहना-संज्ञा पुं० दे० "उलाहना"।
उरिण, उरिन-वि० दे० "उऋण"।
उरु-वि० विस्तीर्ण।
॰ संज्ञा पुं० जंघा। जाँघ।
उरुआ॰-संज्ञा पुं० उल्लू की जाति की एक चिड़िया। रुरुआ।
उरूज-संज्ञा पुं० बढ़ती। वृद्धि।
उरेखना॰-क्रि० स० दे० "अवरेखना"।
उरेह-संज्ञा पुं० चित्रकारी।
उरेहना-क्रि० स० खींचना। रचना।
उरोज-संज्ञा पुं० स्तन।
उर्द-संज्ञा पुं० दे० "उड़द"।
उर्दू-संज्ञा स्त्री० वह हिंदी जिसमें अरबी, फ़ारसी के शब्द अधिक हों और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय।
उर्ध॰-वि० ऊर्ध्व।
उर्फ़-संज्ञा पुं० उपनाम।
उर्मि॰-संज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।
उर्वरा-संज्ञा स्त्री० उपजाऊ भूमि।
वि० स्त्री० उपजाऊ।
उर्वी-संज्ञा स्त्री० पृथिवी।
उर्वीजा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी से उत्पन्न, सीता।
उर्वीधर-संज्ञा पुं० १. शेष। २. पर्वत।
उर्स-संज्ञा पुं० १. मुसलमानों में पीर आदि के मरने के दिन का कृत्य। २. मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि।
उलंग॰-वि० नंगा।
उलंघन॰-संज्ञा पुं० दे० "उल्लंघन"।
उलंघना, उलँघना॰-क्रि० स० १. नाँघना। २. अवज्ञा करना।
उलचना-क्रि० स० दे० "उलीचना"।
उलछना॰†-क्रि० स० १. छितराना। २. उलीचना।
उलझन-संज्ञा स्त्री० १. गाँठ। २. चक्कर।
उलझना-क्रि० अ० १. फँसना। २. लड़ना-झगड़ना।
उलझा॰-संज्ञा पुं० दे० "उलझन"।
उलझाना-क्रि० स० फँसाना। अटकाना।
उलझाव-संज्ञा पुं० अटकाव। फँसान।
उलझौहाँ-वि० अटकाने या फँसानेवाला।
उलटना-क्रि० अ० पलटना।
क्रि० स० १. पटकना। २. उत्तर-प्रत्युत्तर करना। ३. कै करना।
उलट-पलट (पुलट)-संज्ञा स्त्री० अदल-बदल। गड़बड़ी।
उलट-फेर-संज्ञा पुं० परिवर्त्तन।
उलटा-वि० [स्त्री० उलटी] १. औंधा २. क्रम-विरुद्ध। ३. विरुद्ध।
संज्ञा पुं० बेसन से बननेवाला एक पकवान।
उलटाना॰-क्रि० स० १. पलटाना। लौटाना। २. फेरना।
उलटा-पलटा (पुलटा)-वि० इधर का उधर। अंडबंड।
उलटा-पलटी-संज्ञा स्त्री० फेरफार। अदल-बदल।
उलटाव-संज्ञा पुं० पलटाव। फेर।
उलटी-संज्ञा स्त्री० १. वमन। कै। २. कलाबाज़ी।
उलटी सरसों-संज्ञा स्त्री० वह सरसों

औघड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० औघड़िन] अघोरी ।
वि० अंड-बंड ।
औघर–वि० १. अंडबंड । २. अनोखा ।
औचक–क्रि० वि० अचानक ।
औचट–संज्ञा स्त्री० अंडस ।
क्रि० वि० अचानक ।
औचित्य–संज्ञा पुं० उपयुक्तता ।
औजार–संज्ञा पुं० हथियार ।
औटना–क्रि० स० खौलाना ।
औटाना–क्रि० स० दे० "औटना" ।
औढर–वि० मनमौजी ।
औतरना॰–क्रि० अ० दे० "अवतरना" ।
औतार॰–संज्ञा पुं० दे० "अवतार" ।
औत्सुक्य–संज्ञा पुं० उत्सुकता ।
औथरा॰–वि० दे० "उथला" ।
औदरिक–वि० १. उदर-संबंधी । २. पेटू ।
औदार्य–संज्ञा पुं० उदारता ।
औदुंबर–वि० १. उदुंबर या गूलर का बना हुआ । २. ताँबे का बना हुआ ।
संज्ञा पुं० गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र ।
औद्धत्य–संज्ञा पुं० उजड्डपन ।
औद्योगिक–वि० उद्योग-संबंधी ।
औध॰–संज्ञा पुं० दे० "अवध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।
औधि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।
औनि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि" ।
औना-पौना–वि० थोड़ा-बहुत ।
औपचारिक–वि० उपचार-संबंधी ।
औपनिवेशिक–वि० उपनिवेश-संबंधी।
औपन्यासिक–वि० १. उपन्यास-संबंधी । २. अद्भुत ।
संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक ।
औम॰–संज्ञा स्त्री० अवम तिथि ।
और–अव्य० दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द ।
वि० १. दूसरा । २. अधिक ।
औरत–संज्ञा स्त्री० स्त्री ।
औलाद–संज्ञा स्त्री० १. संतान । २. वंश-परंपरा ।
औला-मौला–वि० मनमौजी ।
औलिया–संज्ञा पुं० पहुँचे हुए फकीर ।
औवल–वि० १. पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।
संज्ञा पुं० आरंभ ।
औषध–संज्ञा पुं० स्त्री० दवा ।
औसत–संज्ञा पुं० बराबर का परता । सामान्य ।
वि० साधारण ।
औसर॰–संज्ञा पुं० दे० "अवसर" ।
औसान–संज्ञा परिणाम ।
संज्ञा पुं० सुध-बुध ।

क

क–हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण कंठ से होता है ।
कं–संज्ञा पुं० जल ।
कंक–संज्ञा पुं० [स्त्री० कंका, कंकी] सफेद चील ।

ऊ

ऊ–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
ऊँग–संज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ"।
ऊँगा–संज्ञा पुं० चिचड़ा।
ऊँघ–संज्ञा स्त्री० ऊँघाई।
ऊँघन–संज्ञा स्त्री० ऊँघ। झपकी।
ऊँघना–क्रि० अ० झपकी लेना।
ऊँच०†–वि० दे० "ऊँचा"।
ऊँचा–वि० [स्त्री० ऊँची] जो दूर तक ऊपर की ओर गया हो। उन्नत।
ऊँचाई–संज्ञा स्त्री० १. ऊपर की ओर का विस्तार। बलंदी। २. गौरव।
ऊँचे०–क्रि० वि० १. ऊपर की ओर। २. ज़ोर से।
ऊँछना–क्रि० अ० कंघी करना।
ऊँट–संज्ञा पुं० [स्त्री० ऊँटनी] एक ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ लादने के काम में आता है।
ऊँटवान–संज्ञा पुं० ऊँट चलानेवाला।
ऊँड़ा०†–संज्ञा पुं० १. वह बरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ दें। २. तहखाना।
वि० गहरा। गंभीर।
ऊँदरा–संज्ञा पुं० चूहा।
ऊँहूँ–अव्य० नहीं।
ऊ–संज्ञा पुं० १. महादेव। २. चंद्रमा।
*† अव्य० भी।
*† सर्व० वह।
ऊआबाई–वि० अंडबंड।
ऊक०–संज्ञा पुं० १. टूटता हुआ तारा। २. जलन।
संज्ञा स्त्री० भूल। चूक।
ऊकना०†–क्रि० अ० १. चूकना। २. भूल करना।
क्रि० स० भूल जाना।
क्रि० स० जलाना।
ऊख–संज्ञा पुं० ईख। गन्ना।
ऊखल–संज्ञा पुं० ओखली।
ऊगना–क्रि० अ० दे० "उगना"।
ऊज०–संज्ञा पुं० उपद्रव। ऊधम।
ऊजड़–वि० दे० "उजाड़"।
ऊजर०–वि० दे० "उजला"।
वि० उजाड़।
ऊजरा०–वि० दे० "उजला"।
ऊटक नाटक–संज्ञा पुं० व्यर्थ का काम।
ऊटना०–क्रि० अ० १. उत्साहित होना। २. तर्क-वितर्क करना।
ऊटपटाँग–वि० १. अटपट। २. व्यर्थ।
ऊड़ना०–क्रि० स० दे० "ऊढ़ना"।
ऊढ़–वि० [स्त्री० ऊढ़ा] विवाहित।
ऊढ़ना०–क्रि० अ० तर्क करना।
क्रि० अ० विवाह करना। ब्याहना।
ऊढ़ा–संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री।
ऊत–वि० १. निःसंतान। २. उजड्ड।
ऊतिम०†–वि० दे० "उत्तम"।
ऊद–संज्ञा पुं० अगर का पेड़ या लकड़ी।
संज्ञा पुं० ऊदबिलाव।
ऊदबत्ती–संज्ञा स्त्री० अगर की बत्ती जिसे सुगंध के लिये जलाते हैं।
ऊदबिलाव–संज्ञा पुं० नेवले के आकार का, पर उससे बड़ा, एक जंतु जो जल और स्थल दोनों में रहता है।

ओल–संज्ञा पुं० सूरन।
वि० गीला।
ओलती–संज्ञा स्त्री० ओरी।
ओला–संज्ञा पुं० गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले। पत्थर।
वि० बहुत सर्द।
ओलियाना–क्रि० स० गोद में भरना।
क्रि० स० घुसाना।
ओली–संज्ञा स्त्री० १. गोद। २. अँचल।
ओषधि–संज्ञा स्त्री० जड़ी-बूटी जो दवा में काम आवे।
ओषधिपति, ओषधीश–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।
ओष्ठ–संज्ञा पुं० होंठ।
ओष्ठ्य–वि० ओंठ संबंधी।
ओस–संज्ञा स्त्री० शीत।
ओसाना–क्रि० स० दाँये हुए गल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय। बरसाना।
ओसार–संज्ञा पुं० फैलाव। विस्तार।
ओसारा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० ओसारी] दालान।
ओह–अव्य० आश्चर्य, दुःख या बेपरवाई का सूचक शब्द।
ओहदा–संज्ञा पुं० पद।
ओहदेदार–संज्ञा पुं० पदाधिकारी।
ओहार–संज्ञा पुं० परदा।
ओहो–अव्य० आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द।

औ

औ–संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ+ओ के संयोग से बना है।
औंगा–वि० गूँगा।
औंगी–संज्ञा स्त्री० चुप्पी। गूँगापन।
औंगना–क्रि० स० गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।
औंघना, औंघाना†–क्रि० अ० झपकी लेना।
औंघाई†–संज्ञा स्त्री० झपकी।
क्रि० स० डालना।
औंठ–संज्ञा स्त्री० उठा या उमड़ा हुआ किनारा।
औंधना–क्रि० अ० उलटा होना।
क्रि० स० उलटा कर देना।
औंधा–वि० [स्त्री० औंधी] उलटा।
औंधाना–क्रि० स० उलटना।
औ☆–अव्य० दे० "और"।
औक़ात–संज्ञा पुं० बहु० समय।
संज्ञा स्त्री० एक० हैसियत।
औगत☆–संज्ञा स्त्री० दुर्दशा।
वि० दे० "अवगत"।
औगी–संज्ञा स्त्री० रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। पैना।
संज्ञा स्त्री० जानवरों को फँसाने का [illegible]।

औघड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० औघड़िन] अघोरी।
वि० अंड-बंड।
औघर–वि० १. अंडबंड। २. अनोखा।
औचक–क्रि० वि० अचानक।
औचट–संज्ञा स्त्री० अंडस।
क्रि० वि० अचानक।
औचित्य–संज्ञा पुं० उपयुक्तता।
औज़ार–संज्ञा पुं० हथियार।
औटना–क्रि० स० खौलाना।
औटाना–क्रि० स० दे० "औटना"।
औढर–वि० मनमौजी।
औतरना॰–क्रि० अ० दे० "अवतरना"।
औतार॰–संज्ञा पुं० दे० "अवतार"।
औत्सुक्य–संज्ञा पुं० उत्सुकता।
औथरा॰–वि० दे० "उथला"।
औदरिक–वि० १. उदर-संबंधी। २. पेटू।
औदार्य–संज्ञा पुं० उदारता।
औदुंबर–वि० १. उदुंबर या गूलर का बना हुआ। २. ताँबे का बना हुआ।
संज्ञा पुं० गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र।
औद्धत्य–संज्ञा पुं० उजड्डपन।
औद्योगिक–वि० उद्योग-संबंधी।
औध॰–संज्ञा पुं० दे० "अवध"।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
औधि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।
औनि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।
औना-पौना–वि० थोड़ा-बहुत।
औपचारिक–वि० उपचार-संबंधी।
औपनिवेशिक–वि० उपनिवेश-संबंधी।
औपन्यासिक–वि० १. उपन्यास-संबंधी। २. अद्भुत।
संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक।
औम॰–संज्ञा स्त्री० अवम तिथि।
और–अव्य० दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द।
वि० १. दूसरा। २. अधिक।
औरत–संज्ञा स्त्री० स्त्री।
औलाद–संज्ञा स्त्री० १. संतान। २. वंश-परंपरा।
औला-मौला–वि० मनमौजी।
औलिया–संज्ञा पुं० पहुँचे हुए फ़क़ीर।
औवल–वि० १. पहला। २. सर्वश्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० आरंभ।
औषध–संज्ञा पुं० स्त्री० दवा।
औसत–संज्ञा पुं० बराबर का परता। सामान्य।
वि० साधारण।
औसर॰–संज्ञा पुं० दे० "अवसर"।
औसान–संज्ञा परिणाम।
संज्ञा पुं० सुध-बुध।

क

क–हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है।
कं–संज्ञा पुं० जल।
कंक–संज्ञा पुं० [स्त्री० कंका, कंकी] सफ़ेद चील।

कनय*–संज्ञा पुं० दे० "कनक"।
कनरस–संज्ञा पुं० गाना-बजाना सुनने का आनंद।
कनरसिया–संज्ञा पुं० गाना-बजाना सुनने का शौक़ीन।
कनसार–संज्ञा पुं० ताम्रपत्र पर लेख खोदनेवाला।
कनसुई–संज्ञा स्त्री० आहट।
कनस्तर–संज्ञा पुं० टीन का चौखूँटा पीपा।
कनहार*–संज्ञा पुं० मल्लाह।
क़नात–संज्ञा स्त्री० मोटे कपड़े की वह दीवार जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं।
कनारी–संज्ञा स्त्री० १. मदरास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश की भाषा। २. कनारा का निवासी।
कनिश्चारी–संज्ञा स्त्री० कनक-चंपा का पेड़।
कनिका*–संज्ञा स्त्री० दे० "कणिका"।
कनियाँ†–संज्ञा स्त्री० गोद।
कनियाना–क्रि० अ० आँख बचाकर निकल जाना।
क्रि० अ० पतंग का किसी ओर झुक जाना।
† क्रि० अ० गोद लेना।
कनिष्ठ–वि० [स्त्री० कनिष्ठा] १. सबसे छोटा। २. जो पीछे उत्पन्न हुआ हो।
कनिष्ठा–वि० स्त्री० १. सबसे छोटी। २. हीन।
संज्ञा स्त्री० १. दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी या पीछे की विवाहिता स्त्री। २. छोटी उँगली।
कनिष्ठिका–संज्ञा स्त्री० कानी उँगली।
कनी–संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा।
कनीनिका–संज्ञा स्त्री० १. आँख की पुतली। २. कन्या।
कनेठा†–वि० काना।
कनेठी–संज्ञा स्त्री० कान मरोड़ने की सज़ा।
कनेर–संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसमें लाल या पीले सुंदर फूल लगते हैं।
कनौजिया–संज्ञा पुं० कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
कनौड़ा–वि० १. काना। २. अपंग। ३. कलंकित।
संज्ञा पुं० क्रीत दास।
कन्ना–संज्ञा पुं० [स्त्री० कन्नी] १. पतंग का वह डोरा जिसका एक छोर काँप और ढड्ढे के मेल पर और दूसरा पुछल्ले के कुछ ऊपर बाँधा जाता है। २. किनारा।
कन्नी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कन्ना] १. पतंग या कनकौवे के दोनों ओर के किनारे। २. वह धज्जी जो पतंग की कन्नी में इसलिये बाँधी जाती है कि वह सीधी उड़े।
कन्यका–संज्ञा स्त्री० १. क्वारी लड़की। २. पुत्री।
कन्या–संज्ञा स्त्री० १. क्वारी लड़की। २. पुत्री।
कन्याकुमारी–संज्ञा स्त्री० भारत के दक्षिण में रामेश्वर के निकट का एक अंतरीप।
कन्यादान–संज्ञा पुं० विवाह में वर को कन्या देने की रीति।
कन्याधन–संज्ञा पुं० वह स्त्री-धन जो स्त्री को अविवाहिता या कन्या-अवस्था में मिला हो।
कन्याराशी–वि० जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्या राशि में हो।
कन्हाई, कन्हैया–संज्ञा पुं० १. श्री-

ओल—संज्ञा पुं० सूरन।
वि० गीला।
ओलती—संज्ञा स्त्री० ओरी।
ओला—संज्ञा पुं० गिरते हुए मेह के जमे हुए गोले। पत्थर।
वि० बहुत सर्द।
ओलियाना—क्रि० स० गोद में भरना।
क्रि० स० घुसाना।
ओली—संज्ञा स्त्री० १. गोद। २. अंचल।
ओषधि—संज्ञा स्त्री० जड़ी-बूटी जो दवा में काम आवे।
ओषधिपति, ओषधीश—संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।
ओष्ठ—संज्ञा पुं० होंठ।
ओष्ठ्य—वि० ओंठ संबंधी।
ओस—संज्ञा स्त्री० शीत।
ओसाना—क्रि० स० दाँये हुए गल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय। बरसाना।
ओसार—संज्ञा पुं० फैलाव। विस्तार।
ओसारा†—संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० ओसारी] दालान।
ओह—अव्य० आश्चर्य, दुःख या बेपरवाई का सूचक शब्द।
ओहदा—संज्ञा पुं० पद।
ओहदेदार—संज्ञा पुं० पदाधिकारी।
ओहार—संज्ञा पुं० परदा।
ओहो—अव्य० आश्चर्य या आनंद-सूचक शब्द।

औ

औ—संस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ और हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ + ओ के संयोग से बना है।
औँगा—वि० गूँगा।
औंगी—संज्ञा स्त्री० चुप्पी। गूँगापन।
औंगना—क्रि० स० गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल देना।
औंघना, औंघाना†—क्रि० अ० झपकी लेना।
औंघाई†—संज्ञा स्त्री० झपकी।
क्रि० स० ढालना।
औंठ—संज्ञा स्त्री० उठा या उभड़ा हुआ किनारा।
औंधना—क्रि० अ० उलटा होना।
क्रि० स० उलटा कर देना।
औंधा—वि० [स्त्री० औंधी] उलटा।
औंधाना—क्रि० स० उलटना।
औ॰—अव्य० दे० "और"।
औक़ात—संज्ञा पुं० बहु० समय।
संज्ञा स्त्री० एक० हैसियत।
औगत॰—संज्ञा स्त्री० दुर्दशा।
वि० दे० "अवगत"।
औगी—संज्ञा स्त्री० रस्सी बटकर बनाया हुआ कोड़ा। पैना।
संज्ञा स्त्री० जानवरों को फँसाने का गड्ढा जो घास-फूस से ढँका रहता है।
औगुन॰†—संज्ञा पुं० दे० "अवगुण"।
औघट॰†—वि० दे० "अवघट"।

कृष्ण । २. प्रिय व्यक्ति ।

कपट-संज्ञा पुं० [वि० कपटी] छल ।

कपटना-क्रि० स० काटकर अलग करना ।

कपटी-वि० धूर्त्त ।

कपड़छन, कपड़छान-संज्ञा पुं० किसी पिसी हुई बुकनी को कपड़े में छानने का कार्य्य ।

कपड़द्वार-संज्ञा पुं० वस्त्रागार ।

कपड़ा-संज्ञा पुं० १. वस्त्र । २. पहनावा ।

कपर्द, कपर्दक-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दिका] १. (शिव का) जटाजूट । २. कौड़ी ।

कपर्दिका-संज्ञा स्त्री० कौड़ी ।

कपर्दिनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

कपर्दी-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दिनी] शिव ।

कपाट-संज्ञा पुं० किवाड़ ।

कपार*†-संज्ञा पुं० दे० "कपाल" ।

कपाल-संज्ञा पुं० [वि० कपाली, कपालिका] १. खोपड़ी । २. मस्तक । ३. भाग्य ।

कपालक*-वि० दे० "कापालिक" ।

कपालक्रिया-संज्ञा स्त्री० मृतक-संस्कार के अंतर्गत एक कृत्य जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं ।

कपालिका-संज्ञा स्त्री० खोपड़ी ।
संज्ञा स्त्री० काली ।

कपालिनी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

कपाली-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपालिनी] १. शिव । २. भैरव । ३. ठीकरा लेकर भीख माँगनेवाला ।

कपास-संज्ञा स्त्री० [वि० कपासी] एक पौधा जिसके ढेंढ़ से रूई निकलती है ।

कपासी-वि० कपास के फूल के रंग का ।
संज्ञा पुं० बहुत हलका पीला रंग ।

कपिंजल-संज्ञा पुं० १. पपीहा । २. तीतर ।
वि० पीले रंग का ।

कपि-संज्ञा पुं० १. बंदर । २. हाथी । ३. सूर्य्य ।

कपित्थ-संज्ञा पुं० कैथ का पेड़ या फल ।

कपिध्वज-संज्ञा पुं० अर्जुन ।

कपिल-वि० १. भूरा । २. सफ़ेद ।
संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. कुत्ता । ३. चूहा । ४. महादेव । ५. सूर्य्य ।

कपिलवस्तु-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का जन्मस्थान ।

कपिला-वि० स्त्री० १. भूरे रंग की । २. सफ़ेद रंग की । ३. भोली-भाली ।
संज्ञा स्त्री० सफ़ेद रंग की गाय ।

कपिश-वि० मटमैला ।

कपिशा-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का मद्य । २. कसार्ई ।

कपीश-संज्ञा पुं० वानरों का राजा ।

कपूत-संज्ञा पुं० बुरा लड़का ।

कपूती-संज्ञा स्त्री० पुत्र के अयोग्य आचरण ।

कपूर-संज्ञा पुं० एक सफ़ेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है । काफूर ।

कपूरी-वि० कपूर का बना हुआ ।
संज्ञा पुं० १. कुछ हलका पीला रंग । २. एक प्रकार का कड़ुआ पान ।

कपोत-संज्ञा पुं० [स्त्री० कपोतिका, कपोती]

औघड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० औघडिन] अघोरी ।
वि० अंड-बंड ।
औघर–वि० १. अंडबंड । २. अनोखा ।
औचक–क्रि० वि० अचानक ।
औचट–संज्ञा स्त्री० अंडस ।
क्रि० वि० अचानक ।
औचित्य–संज्ञा पुं० उपयुक्तता ।
औज़ार–संज्ञा पुं० हथियार ।
औटना–क्रि० स० खौलाना ।
औटाना–क्रि० स० दे० "औटना" ।
औढर–वि० मनमौजी ।
औतरना॰–क्रि० अ० दे० "अवतरना" ।
औतार॰–संज्ञा पुं० दे० "अवतार" ।
औत्सुक्य–संज्ञा पुं० उत्सुकता ।
औथरा॰–वि० दे० "उथला" ।
औदरिक–वि० १. उदर-संबंधी । २. पेटू ।
औदार्य–संज्ञा पुं० उदारता ।
औदंबर–वि० १. उदुंबर या गूलर का बना हुआ । २. ताँबे का बना हुआ ।
संज्ञा पुं० गूलर की लकड़ी का बना हुआ यज्ञपात्र ।
औद्धत्य–संज्ञा पुं० उजड्डपन ।
औद्योगिक–वि० उद्योग-संबंधी ।
औध॰–संज्ञा पुं० दे० "अवध" ।
संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।
औधि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि" ।
औनि॰–संज्ञा स्त्री० दे० "अवनि" ।
औना-पौना–वि० थोड़ा-बहुत ।
औपचारिक–वि० उपचार-संबंधी ।
औपनिवेशिक–वि० उपनिवेश-संबंधी ।
औपन्यासिक–वि० १. उपन्यास-संबंधी । २. अद्भुत ।
संज्ञा पुं० उपन्यास-लेखक ।
औम॰–संज्ञा स्त्री० अवम तिथि ।
और–अव्य० दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द ।
वि० १. दूसरा । २. अधिक ।
औरत–संज्ञा स्त्री० स्त्री ।
औलाद–संज्ञा स्त्री० १. संतान । २. वंश-परंपरा ।
औला-मौला–वि० मनमौजी ।
औलिया–संज्ञा पुं० पहुँचे हुए फ़कीर ।
औवल–वि० १. पहला । २. सर्वश्रेष्ठ ।
संज्ञा पुं० आरंभ ।
औषध–संज्ञा पुं० स्त्री० दवा ।
औसत–संज्ञा पुं० बराबर का परता । सामान्य ।
वि० साधारण ।
औसर॰–संज्ञा पुं० दे० "अवसर" ।
औसान–संज्ञा परिणाम ।
संज्ञा पुं० सुध-बुध ।

क

क–हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण कंठ से होता है ।
कं–संज्ञा पुं० जल ।
कंक–संज्ञा पुं० [स्त्री० कंका, कंकी] सफेद चील ।

१. कबूतर। २. पक्षी।
कपोतव्रत-संज्ञा पुं० चुपचाप दूसरे के अत्याचारों को सहना।
कपोती-संज्ञा स्त्री० कबूतरी। वि० कपोत के रंग का।
कपोल-संज्ञा पुं० गाल।
कपोलकल्पना-संज्ञा स्त्री० मनगढ़ंत।
कपोलकल्पित-वि० बनावटी।
कफ-संज्ञा पुं० बलगम।
कफ़-संज्ञा पुं० कमीज़ या कुर्ते की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं।
कफ़न-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिसमें मुर्दा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है।
कफ़नखसोट-वि० कंजूस।
कफनाना-क्रि० स० गाड़ने या जलाने के लिये मुर्दे को कफ़न में लपेटना।
कफनी-संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो मुर्दे के गले में डालते हैं।
क़फ़स-संज्ञा पुं० १. पिंजरा। २. बंदीगृह।
कबंध-संज्ञा पुं० रुंड। बिना सिर का धड़।
कब-क्रि० वि० किस समय? किस वक्त? (प्रश्नसूचक)।
कबड्डी-संज्ञा स्त्री० लड़कों का एक खेल जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं।
कबर-संज्ञा स्त्री० दे० "क़ब्र"।
कबरा-वि० [स्त्री० कबरी] सफ़ेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दाग़-वाला।
कबरिस्तान-संज्ञा पुं० दे० "क़ब्रि-स्तान"।
कबाड़-संज्ञा पुं० [संज्ञा कबाड़ी] अंगड़-खंगड़।
कबाड़ा-संज्ञा पुं० झंझट। बखेड़ा।
कबाड़िया-संज्ञा पुं० १. तुच्छ व्यव-साय करनेवाला पुरुष। २. झगड़ालू आदमी।
कबाड़ी-संज्ञा पुं० वि० दे० "कबा-ड़िया"।
कबाब-संज्ञा पुं० सीख़ों पर भूना हुआ मांस।
कबाबी-वि० १. कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।
कबार-संज्ञा पुं० व्यापार।
कबारना†-क्रि० स० उखाड़ना।
कबाला-संज्ञा पुं० वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधि-कार में चली जाय।
कबाहत-संज्ञा स्त्री० १. ख़राबी। २. दिक्कत।
कबीर-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. एक प्रकार का अश्लील गीत या पद जो होली में गाया जाता है। वि० श्रेष्ठ। बड़ा।
कबीरपंथी-वि० कबीर के संप्रदाय का।
कबीला-संज्ञा स्त्री० स्त्री।
कबुलवाना, कबुलाना-क्रि० स० कबूल कराना।
कबूतर-संज्ञा पुं० [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का एक प्रसिद्ध पक्षी।
क़बूल-संज्ञा पुं० स्वीकार।
कबूलना-क्रि० स० स्वीकार करना।
क़बूलियत-संज्ञा स्त्री० वह दस्तावेज़ जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले को लिख दे।
क़ब्ज़-संज्ञा पुं० १. ग्रहण। २. दस्त साफ़ न होना।
क़ब्ज़ा-संज्ञा पुं० १. दस्ता। २.

कंपित–वि० काँपता हुआ।

कंपू–संज्ञा पुं० छावनी।

कंबल–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कमली] ऊन का बना हुआ मोटा कपड़ा।

कंबु, कंबुक–संज्ञा पुं० १. शंख। २. घोंघा। ३. हाथी।

कँवल–संज्ञा पुं० दे० "कमल"।

कँवलगट्टा–संज्ञा पुं० कमल का बीज।

कंस–संज्ञा पुं० १. काँसा। २. प्याला। ३. मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का जो श्रीकृष्ण का मामा था और जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।

कई–वि० अनेक।

ककड़ी–संज्ञा स्त्री० ज़मीन पर फैलनेवाली एक बेल जिसमें लंबे लंबे फल लगते हैं।

ककहरा–संज्ञा पुं० 'क' से 'ह' तक वर्णमाला।

ककुभ–संज्ञा पुं० १. एक राग। २. एक छंद।

कक्का–संज्ञा पुं० दे० "काका"।

कक्ष–संज्ञा पुं० १. काँख। २. लाँग। ३. कछार। ४. कखरवार। ५. दर्जा।

कक्षा–संज्ञा स्त्री० १. परिधि। २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३. श्रेणी।

कखौरी†–संज्ञा स्त्री० काँख का फोड़ा।

कगर–संज्ञा पुं० कुछ ऊँचा किनारा। क्रि० वि० किनारे पर।

कगार–संज्ञा पुं० १. ऊँचा किनारा। २. नदी का करारा।

कच–संज्ञा पुं० १. बाल। २. सूखा फोड़ा या ज़ख्म। संज्ञा पुं० घँसने या खुभने का शब्द।

कचका†–संज्ञा स्त्री० कुचल जाने की चोट।

कचकच–संज्ञा स्त्री० बकवाद। झकझक।

कचकचाना–क्रि० अ० १. कचकच शब्द करना। २. दाँत पीसना।

कचदिला–वि० कच्चे दिल का।

कचनार–संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसमें सुंदर फूल लगते हैं।

कचपच–संज्ञा पुं० गिचपिच।

कचपची–संज्ञा स्त्री० १. कृत्तिका नक्षत्र। २. चमकीले बुंदे जिन्हें स्त्रियाँ माथे आदि पर चिपकाती हैं।

कचपेंदिया–वि० १. पेंदी का कमज़ोर। २. बात का कच्चा।

कचर-कचर–संज्ञा पुं० १. कच्चे फल के खाने का शब्द। २. बकवाद।

कचरकूट–संज्ञा पुं० १. मारकूट। †२. खूब पेट भर भोजन।

कचरना*†–क्रि० स० १. रौंदना। २. खूब खाना।

कचरी–संज्ञा स्त्री० कचरी के फल के तले हुए टुकड़े।

कचलोंदा–संज्ञा पुं० लोई।

कचलोन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लवण जो काँच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बनता है।

कचहरी–संज्ञा स्त्री० न्यायालय।

कचाई–संज्ञा स्त्री० कच्चापन।

कचायँध–संज्ञा स्त्री० कच्चेपन की महक।

कचारना–क्रि० स० कपड़ा धोना।

कचालू–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की अरुई। बंडा। २. एक प्रकार की चाट।

कचीची*–संज्ञा स्त्री० जबड़ा। दाढ़।

कचूमर–संज्ञा पुं० १. कुचलकर बनाया

किवाड़ या संदूक में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चद्दर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े। ३. अधिकार।

क़ब्ज़ादार—संज्ञा पुं० [भाव० संज्ञा कब्ज़ादारी] १. वह अधिकारी जिसका कब्ज़ा हो। २. दख़ीलकार असामी। वि० जिसमें कब्ज़ा लगा हो।

क़ब्ज़ियत—संज्ञा स्त्री० पाखाने का साफ़ न आना।

क़ब्र—संज्ञा स्त्री० १. वह गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई आदि अपने मुर्दे गाड़ते हैं। २. वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।

क़ब्रिस्तान—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हैं।

कभी—क्रि० वि० किसी समय।

कभूꣳ—क्रि० वि० दे० "कभी"।

कमंगर—संज्ञा पु० १ कमान बनाने-वाला। २. जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी को असली जगह पर बैठानेवाला। † वि० दक्ष।

कमंगरी—संज्ञा स्त्री० १. कमान बनाने का पेशा या हुनर। २. हड्डी बैठाने का काम।

कमंडल—संज्ञा पुं० दे० "कमंडलु"।

कमंडली—वि० १. साधु। २. पाखंडी।

कमंडलु—संज्ञा पुं० संन्यासियों का जल-पात्र, जो धातु, मिट्टी, तुमड़ी, दरियाई नारियल आदि का होता है।

कमंदꣳ—संज्ञा पुं० दे० "कबंध"। संज्ञा स्त्री० १. पाश। २. फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम—वि० थोड़ा। क्रि० वि० बहुधा नहीं।

कमअसल—वि० दोगला।

कमच्छा—संज्ञा स्त्री० दे० "कामाख्या"।

कमज़ोर—वि० दुर्बल।

कमज़ोरी—संज्ञा स्त्री० निर्बलता। दुर्बलता।

कमठ—संज्ञा पुं० [स्त्री० कमठी] १. कछुआ। २. साधुओं का तुंबा। ३. बाँस।

कमठा—संज्ञा पुं० धनुष।

कमठी—संज्ञा पुं० कछुई। संज्ञा स्त्री० बाँस की पतली लचीली धज्जी।

कमती—संज्ञा स्त्री० कमी। वि० कम।

कमनाꣳ†—क्रि० अ० कम होना।

कमनीय—वि० १. कामना करने योग्य। २. मनोहर।

कमनैत—संज्ञा पुं० तीरंदाज़।

कमनैती—संज्ञा स्त्री० तीर चलाने की विद्या।

कमबख़्त—वि० भाग्यहीन।

कमबख़्ती—संज्ञा स्त्री० बदनसीबी।

कमर—संज्ञा स्त्री० शरीर का मध्य भाग जो पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर होता है।

कमरकोट, कमरकोटा—संज्ञा पुं० १. वह छोटी दीवार जो किलों और चार-दीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और छेद होते हैं। २. रक्षा के लिये घेरी हुई दीवार।

कमरख—संज्ञा स्त्री० १. एक पेड़ जिसके फाँकवाले लंबे लंबे फल खट्टे होते हैं और खाए जाते हैं। कर्मरंग। २. इस पेड़ का फल।

कमरखी—वि० जिसमें कमरख के ऐसी उभड़ी हुई फाँकें हों।

हुआ अचार। २. कुचली हुई वस्तु।

कचोना—क्रि० स० चुभाना।

कचोरा⊙†—संज्ञा पुं० [स्त्री० कचोरी] कटोरा।

कचौड़ी, कचौरी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पूरी जिसके भीतर उरद आदि की पीठी भरी जाती है।

कच्चा—वि० १. हरा और बिना रस का। अपक्व। २. जो पुष्ट न हुआ हो। ३. कमज़ोर। ४. जो प्रामाणिक तौल या माप से कम हो।
संज्ञा पुं० १. वह दूर दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिस पर दरज़ी बखिया करते हैं। २. मसविदा।

कच्चा चिट्ठा—संज्ञा पुं० १. वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय। २. गुप्त भेद।

कच्चा माल—संज्ञा पुं० वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीज़ें बनती हों।

कच्चा हाथ—संज्ञा पुं० अनभ्यस्त हाथ।

कच्ची—वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग।
संज्ञा स्त्री० दे० "कच्ची रसोई"।

कच्ची चीनी—संज्ञा स्त्री० वह चीनी जो खूब साफ़ न की गई हो।

कच्ची बही—संज्ञा स्त्री० वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।

कच्ची रसोई—संज्ञा स्त्री० केवल पानी में पकाया हुआ अन्न।

कच्ची सड़क—संज्ञा स्त्री० वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो।

कच्ची सिलाई—संज्ञा स्त्री० दूर दूर पर पड़ा हुआ डोभ या टाँका और लंगर।

कच्चे-पक्के दिन—संज्ञा पुं० दो ऋतुओं की संधि के दिन।

कच्चे बच्चे—संज्ञा पुं० बहुत छोटे छोटे बच्चे। बहुत से लड़के-बाले।

कच्छ—संज्ञा पुं० १. जलप्राय देश। २. कछार।
[वि० कच्छी] गुजरात के समीप एक प्रदेश।
संज्ञा पुं० धोती की लाँग।
⊙संज्ञा पुं० कछुआ।

कच्छप—संज्ञा पुं० [स्त्री० कच्छपी] कछुआ।

कच्छपी—संज्ञा स्त्री० कछुई।

कच्छी—वि० १. कच्छ देश का। २. कच्छ देश में उत्पन्न।

कच्छू†—संज्ञा पुं० कछुआ।

कछवाहा—संज्ञा पुं० राजपूतों की एक जाति।

कछार—संज्ञा पुं० समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि।

कछु⊙†—वि० दे० "कुछ"।

कछुआ—संज्ञा पुं० [स्त्री० कछुई] एक जल-जंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक⊙—वि० कुछ।

कजरा†—संज्ञा पुं० १. दे० "काजल"। २. काली आँखोंवाला बैल।

कजराई⊙—संज्ञा स्त्री० कालापन।

कजरारा—वि० [स्त्री० कजरारी] काजलवाला।

कजरौटा†—संज्ञा पुं० दे० "कज-लौटा"।

कजलाना—क्रि० अ० काला पड़ना।
क्रि० स० आँजना।

कजली—संज्ञा स्त्री० १. कालिख। २. एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

कमरबंद–संज्ञा पुं० १. पटुका। २. पेटी।
वि० कमर कसे तैयार। मुस्तैद।
कमरा–संज्ञा पुं० १. कोठरी। २. फोटोग्राफी का वह औज़ार जिसके मुँह पर लेंस या प्रतिबिंब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है।
†संज्ञा पुं० दे० "कंबल"।
कमरिया–संज्ञा पुं० बौना हाथी।
‡संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।
कमरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कमली"।
कमल–संज्ञा पुं० १. पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २. इस पौधे का फूल। ३. कमल के आकार का एक मांस-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। क्लोमा। ४. जल।
कमलगट्टा–संज्ञा पुं० कमल का बीज।
कमलज–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
कमलनयन–वि० [स्त्री० कमलनयनी] जिसकी आँखें कमल की पंखड़ी की तरह बड़ी और सुंदर हों।
संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. राम। ३. कृष्ण।
कमलनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु।
कमलनाल–संज्ञा स्त्री० कमल की डंडी जिसके ऊपर फूल रहता है। मृणाल।
कमलयोनि–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
कमला–संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. धन। ऐश्वर्य्य। ३. संतरा।
कमलाक्ष–संज्ञा पुं० १. कमल का बीज। २. दे० "कमलनयन"।
कमलापति–संज्ञा पुं० विष्णु।
कमलालया–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।
कमलासन–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. योग का एक आसन। पद्मासन।
कमलिनी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा कमल। २. वह तालाब जिसमें कमल हों।
कमली–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
संज्ञा स्त्री० छोटा कंबल।
कमवाना–क्रि० स० कमाने का काम दूसरे से कराना।
कमसिन–वि० [संज्ञा कमसिनी] कम उम्र का।
कमसिनी–संज्ञा स्त्री० लड़कपन।
कमाई–संज्ञा स्त्री० १. कमाया हुआ धन। २. व्यवसाय।
कमाऊ–वि० कमानेवाला।
कमान–संज्ञा स्त्री० धनुष।
कमाना–क्रि० स० काम-काज करके रुपया पैदा करना।
क्रि० अ० मेहनत मज़दूरी करना।
†क्रि० स० [हिं० कम] कम करना। घटाना।
कमानिया–संज्ञा पुं० तीरंदाज़।
कमानी–संज्ञा स्त्री० [वि० कमानीदार] १. झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली। २. कमान के आकार की कोई झुकी हुई लकड़ी जिसके दोनों सिरों के बीच में रस्सी, तार या बाल बँधा हो।
कमाल–संज्ञा पुं० १. परिपूर्णता। २. कुशलता।
वि० १. पूरा। २. सर्वोत्तम।
कमालियत–संज्ञा स्त्री० १. परिपूर्णता। २. निपुणता।
कमासुत–वि० कमाई करनेवाला।
कमी–संज्ञा स्त्री० १. न्यूनता। २. हानि।
कमीज़–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कुर्ता जिसमें कली और चौबगले

कजलौटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कज-लौटी] काजल रखने की लोहे की डंडीदार डिबिया।
कज़ा–संज्ञा स्त्री० मौत।
कजाक⊕–संज्ञा पुं० लुटेरा।
कजाकी–संज्ञा स्त्री० १. लुटेरापन। २. छल-कपट।
कजिया–संज्ञा पुं० झगड़ा।
कजी–संज्ञा स्त्री० टेढ़ापन।
कज्जल–संज्ञा पुं० [वि० कज्जलित] अंजन। काजल।
कज्जाक–संज्ञा पुं० दे० "कजाक"।
कटक–संज्ञा पुं० सेना।
कटकई⊕–संज्ञा स्त्री० फ़ौज।
कटकट–संज्ञा स्त्री० १. दाँतों के बजने का शब्द। २. लड़ाई-झगड़ा।
कटकटाना–क्रि० अ० दाँत पीसना।
कटकाई⊕–संज्ञा स्त्री० सेना।
कटखना–वि० काट खानेवाला।
कटघरा–संज्ञा पुं० काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो।
कटती–संज्ञा स्त्री० बिक्री।
कटना–क्रि० अ० १. किसी धारदार चीज़ की दाब से दो टुकड़े होना। २. किसी धारदार चीज़ से घाव होना। ३. कतरा जाना।
कटनास†–संज्ञा पुं० नीलकंठ।
कटनी–संज्ञा स्त्री० १. काटने का औज़ार। २. काटने का काम।
कटर†–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी नाव जो चरखियों के सहारे चलती है।
क़टरा–संज्ञा पुं० छोटा चौकोर बाज़ार।
क़टवाँ–वि० जो काटकर बना हो।
कटहर⊕–संज्ञा पुं० दे० "कटहल"।
कटहरा–संज्ञा पुं० दे० "कटघरा"।
कटहल–संज्ञा पुं० १. एक सदाबहार घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं। २. इस पेड़ का फल जो खाया जाता है।
कटहा⊕–वि० [स्त्री० कटही] काट खानेवाला।
कटा⊕–संज्ञा पुं० मार-काट। वध।
कटाइक⊕–वि० काटनेवाला।
कटाई–संज्ञा स्त्री० काटने का काम।
कटाकट–संज्ञा पुं० १. कटकट शब्द। २. लड़ाई।
कटाकटी–संज्ञा स्त्री० मार-काट।
कटाक्ष–संज्ञा पुं० १. तिरछी नज़र। २. व्यंग्य।
कटाग्नि–संज्ञा स्त्री० घास-फूस की आग जिसमें लोग जल मरते थे।
कटाछनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कटा-कटी"।
कटान–संज्ञा स्त्री० काटने की क्रिया, भाव या ढंग।
कटाना–क्रि० स० काटने का काम दूसरे से कराना।
कटार–संज्ञा स्त्री० [स्त्री० अल्पा० कटारी] एक बालिश्त का छोटा तिकोना और दुधारा हथियार।
कटाव–संज्ञा पुं० काट। कतर-ब्योंत।
कटावदार–वि० जिस पर खोद या काटकर चिह्न और बेल-बूटे बनाए गए हों।
कटावन†–संज्ञा पुं० १. कटाई करने का काम। २. कतरन।
कटास–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बन-बिलाव।
कटाह–संज्ञा पुं० १. कड़ाह। २.

नहीं होते।
कमीना–वि० [स्त्री० कमीनी] नीच।
कमेरा–संज्ञा पुं० मज़दूर।
कमेला–संज्ञा पुं० वध-स्थान।
कमोदिन॥–संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी"।
कमोरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कमोरी, कमोरिया] घड़ा।
कया॥–संज्ञा स्त्री० दे० "काया"।
क़याम–संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. विश्राम-स्थान।
क़यामत–संज्ञा स्त्री० १. मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियों के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लेखा रखा जायगा। २. प्रलय।
क़यास–संज्ञा पुं० [वि० क़यासी] अनुमान।
करंक–संज्ञा पुं० १. मस्तक। २. नारियल की खोपड़ी। ३. पंजर।
करंज–संज्ञा पुं० १. कंजा। २. एक छोटा जंगली पेड़।
संज्ञा पुं० मुर्ग़ा।
करंजा–संज्ञा पुं० दे० "कंजा"।
वि० ख़ाकी।
करंड–संज्ञा पुं० १. शहद का छत्ता। २. तलवार। ३. डला।
संज्ञा पुं० कुरुल पत्थर जिस पर रखकर हथियार तेज़ किए जाते हैं।
कर–संज्ञा पुं० १. हाथ। २. हाथी की सूँड़। ३. सूर्य्य या चंद्रमा की किरण। ४. मालगुज़ारी। महसूल।
॥†प्रत्य० संबंध कारक का चिह्न। का।
करक–संज्ञा पुं० १. कमंडलु। २. अनार।
संज्ञा स्त्री० कसक।
करकच–संज्ञा पुं० समुद्री नमक।
करकट–संज्ञा पुं० कूड़ा। झाड़न।
करकना–क्रि० अ० दे० "कड़कना"।
॥ वि० [स्त्री० करकरी] खुरखुरा।
करकराहट–संज्ञा स्त्री० खुरखुराहट।
करकस॥–वि० दे० "कर्कश"।
करखा–संज्ञा पुं० १. दे० "कड़खा"। २. एक प्रकार का छंद।
संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।
करगता–संज्ञा पुं० सोने, चाँदी या सूत की करधनी।
करग्रह–संज्ञा पुं० ब्याह।
करघा–संज्ञा पुं० कपड़ा बुनने का यंत्र।
करचंग–संज्ञा पुं० १. ताल देने का एक बाजा। २. डफ।
करछा–संज्ञा पुं० [स्त्री० करछी] बड़ी करछी।
करछाल–संज्ञा स्त्री० उछाल।
करज–संज्ञा पुं० १. नख। २. उँगली।
करजोड़ी–संज्ञा स्त्री० हथाजोड़ी नाम की ओषधि।
करटक–संज्ञा पुं० कौआ।
करटी–संज्ञा पुं० हाथी।
करण–संज्ञा पुं० १. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करता है और जिसका चिह्न 'से' है। २. हथियार। ३. क्रिया। ४. हेतु।
॥ संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"।
करणीय–वि० करने योग्य।
करतब–संज्ञा पुं० [वि० करतबी] १. कार्य। २. कला।
करतबी–वि० काम करनेवाला।

कछुए की खोपड़ी।

कटि–संज्ञा स्त्री० कमर।

कटिजेब–संज्ञा स्त्री० करधनी।

कटिबंध–संज्ञा पुं० १. कमरबंद। २. गरमी-सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक।

कटिबद्ध–वि० १. कमर बाँधे हुए। २. तैयार।

कटिसूत्र–संज्ञा पुं० कमर में पहनने का डोरा।

कटीला–वि० [स्त्री० कटीली] तीक्ष्ण। वि० १. काँटेदार। २. नुकीला।

कटु–वि० बुरा लगनेवाला।

कटुता–संज्ञा स्त्री० कड़ुआपन।

कटुत्व–संज्ञा पुं० कड़ुआपन।

कटूक्ति–संज्ञा स्त्री० अप्रिय बात।

कटेरी–संज्ञा स्त्री० भटकटैया।

कटैया†–संज्ञा पुं० काटनेवाला।

कटोरदान–संज्ञा पुं० पीतल का एक ढक्कनदार बरतन जिसमें तैयार भोजन आदि रखते हैं।

कटोरा–संज्ञा पुं० खुले मुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेंदी का एक छोटा बरतन।

कटोरी–संज्ञा स्त्री० छोटा कटोरा।

कटौती–संज्ञा स्त्री० किसी रकम को देते हुए उसमें से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

कट्टर–वि० अंधविश्वासी।

कट्टहा–संज्ञा पुं० महापात्र।

कट्टा–वि० हट्टा-कट्टा।

कट्ठा–संज्ञा पुं० जमीन की एक माप जो पाँच हाथ चार अंगुल की होती है।

कठ–संज्ञा पुं० लकड़ी।

कठकेला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का केला जिसका फल रूखा और फीका होता है।

कठपुतली–संज्ञा स्त्री० १. काठ की गुड़िया या मूर्ति जिसको तार द्वारा नचाते हैं। २. वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे।

कठड़ा–संज्ञा पुं० १. कटहरा। २. कठौता।

कठफोड़वा–संज्ञा पुं० खाकी रंग की एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है।

कठबंधन–संज्ञा पुं० काठ की वह बेड़ी जो हाथी के पैर में डाली जाती है।

कठबाप–संज्ञा पुं० सौतेला बाप।

कठमलिया–संज्ञा पुं० १. काठ की माला या कंठी पहननेवाला वैष्णव। २. झूठा संत।

कठमस्त–वि० संड-मुसंड।

कठमस्ती–संज्ञा स्त्री० मुसंडापन।

कठरा–संज्ञा पुं० दे० "कटहरा" या "कठवरा"।

कठिन–वि० १. कड़ा। २. दुष्कर।

कठिनता–संज्ञा स्त्री० १. कठोरता। २. असाध्यता।

कठिनाई–संज्ञा स्त्री० मुश्किल।

कठियाना–क्रि० अ० सूखकर कड़ा हो जाना।

कठुवाना†–क्रि० अ० सूखकर काठ की तरह कड़ा होना।

कठूमर–संज्ञा पुं० जंगली गूलर।

कठोर–वि० कठिन। निष्ठुर।

कठोरता–संज्ञा स्त्री० १. कड़ाई। २. निर्दयता।

कठोरपन–संज्ञा पुं० कठोरता।

कठौता–संज्ञा पुं० काठ का एक बड़ा और चौड़ा बरतन।

करतल-संज्ञा पुं० [स्त्री० करतली] हथेली।
करतली-संज्ञा स्त्री० १. हथेली। २. ताली।
करता-संज्ञा पुं० दे० "कर्त्ता"।
करतार-संज्ञा पुं० ईश्वर।
†संज्ञा पुं० दे० "करताल"।
करतारी॰-संज्ञा स्त्री० दे० "करताली"।
वि० ईश्वरीय।
करताल-संज्ञा पुं० १. ताली बजना। २. मँजीरा।
करतूत-संज्ञा स्त्री० १. कर्म। २. हुनर।
करतूति॰-संज्ञा स्त्री० दे० "करतूत"।
करद-वि० कर देनेवाला।
करधनी-संज्ञा स्त्री० १. सोने या चाँदी का, कमरमेंपहनने का, एक गहना। २. कई लड़ों का सूत जो कमर में पहना जाता है।
करन॰-संज्ञा पुं० दे० "कर्ण"।
करनधार॰-संज्ञा पुं० दे० "कर्णधार"।
करनफूल-संज्ञा पुं० कान का एक गहना।
करनबेध-संज्ञा पुं० बच्चों के कान छेदने का संस्कार या रीति।
करना-संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें सफेद फूल लगते हैं। सुदर्शन।
संज्ञा पुं० बिजौरे की तरह का एक बड़ा नीबू।
॰ संज्ञा पुं० करनी।
क्रि० स० १. संपादित करना। २. रौंधना। ३. बनाना।
करनाई-संज्ञा स्त्री० तुरही।
करनाटक-संज्ञा पुं० मद्रास प्रांत का एक भाग।
करनाटकी-संज्ञा पुं० १. करनाटक प्रदेश का निवासी। २. कलाबाज़।
करनाल-संज्ञा पुं० १. नरसिंहा। २. एक प्रकार का बड़ा ढोल। ३. एक प्रकार की तोप।
करनी-संज्ञा स्त्री० १. कर्म। २. मृतक संस्कार। ३. दीवार पर पलस्तर या गारा लगाने का औज़ार।
करपर॰-संज्ञा स्त्री० खोपड़ी।
वि० कंजूस।
करपलई-संज्ञा स्त्री० दे० "करपल्लवी"।
करपल्लवी-संज्ञा स्त्री० उँगलियों के संकेत से शब्दों को प्रकट करने की विद्या।
करपीड़न-संज्ञा पुं० विवाह।
करपृष्ठ-संज्ञा पुं० हथेली के पीछे का भाग।
करबरना-क्रि० अ० कुलबुलाना।
करबला-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ ताज़िए दफ़न हों।
करबुल-संज्ञा पुं० हथियार लटकाने के लिये घोड़े की ज़ीन या चारजामे में टँकी हुई रस्सी या तसमा।
करभ-संज्ञा पुं० [स्त्री० करभी] १. हथेली के पीछे का भाग। २. ऊँट का बच्चा। ३. हाथी का बच्चा। ४. कमर।
करभोरु-संज्ञा पुं० हाथी की सूँड़ के ऐसा जंघा।
वि० सुंदर जाँघवाली।
करम-संज्ञा पुं० १. कर्म। २. भाग्य।
करमकल्ला-संज्ञा पुं० पत्ता-गोभी। पात-गोभी।
करमचंद॰†-संज्ञा पुं० कर्म। भाग्य।
करमट्ठा॰-वि० कंजूस।

कड़क–संज्ञा स्त्री० १. कठोर शब्द। २. वज्र। ३. कसक।
कड़कड़–संज्ञा पुं० घोर शब्द।
कड़कड़ाता–वि० [स्त्री० कड़कड़ाती] कड़कड़शब्दकरता हुआ। कड़ाके का।
कड़कड़ाना–क्रि० अ० कड़ कड़ शब्द होना। - क्रि० स० घी, तेल आदि को खूब तपाना।
कड़कड़ाहट–संज्ञा स्त्री० गरज।
कड़कना–क्रि० अ० १. कड़कड़ शब्द होना। २. डाँटना।
कड़क बिजली–संज्ञा स्त्री० १. कान का एक गहना। २. तोड़ेदार बंदूक।
कड़बड़ा–वि० जिसके कुछ बाल सफेद और कुछ काले हों।
कड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कड़ी] १. हाथ या पाँव में पहनने का चूड़ा। २. लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा। ३. एक प्रकार का कबूतर। वि० [स्त्री०कड़ी] १. कठोर। २. कसा हुआ। ३. कम गीला। ४. प्रचंड।
कड़ाई–संज्ञा स्त्री० कठोरता।
कड़ाका–संज्ञा पुं० १. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। २. फ़ाका।
कड़ाहा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।
कड़ाही–संज्ञा स्त्री० छोटा कड़ाहा।
कड़ी–संज्ञा स्त्री० १. ज़ंजीर या सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। २. गीत का एक पद। संज्ञा स्त्री० छोटी धरन। संज्ञा स्त्री० अँड़स।
कड़ीदार–वि० छल्लेदार।
कड़ुआ–वि० [स्त्री० कड़ुई] १. कटु। २. गुस्सैल।
कड़ुआ तेल–संज्ञा पुं० सरसों का तेल।
कड़ुआना–क्रि० अ० कड़ुआ लगना।
कड़ुआहट–संज्ञा स्त्री० कड़ुआपन।
कढ़लाना०†–क्रि० स० घसीटना।
कढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"।
कढ़ाना, कढ़वाना–क्रि० स० निकलवाना।
कढ़ाव–संज्ञा पुं० बूटे व शीदे का काम।
कढ़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सालन जो पानी में घोले हुए बेसन को आँच पर गाढ़ा करने से बनता है।
कढ़ैया‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ाही"। † संज्ञा पुं० निकालनेवाला।
कण–संज्ञा पुं० किनका।
कणिका–संज्ञा स्त्री० किनका।
कतई–अव्य० बिलकुल। एकदम।
कतना–क्रि० अ० काता जाना।
कतरन–संज्ञा स्त्री० कपड़े, कागज़ आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो काट-छाँट के पीछे बच रहते हैं।
कतरना–क्रि० स० कैंची या किसी औज़ार से काटना।
कतरनी–संज्ञा स्त्री० १. कैंची। २. काती।
कतर-ब्योंत–संज्ञा स्त्री० १. काट-छाँट। २. युक्ति।
कतरवाना–क्रि० स० दे० "कतराना"।
कतरा–संज्ञा पुं० खंड। संज्ञा पुं० बिंदु।
कतराई–संज्ञा स्त्री० कतरने का काम।
कतराना–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु या

फरमठ०†–वि० १. कर्मनिष्ठ। २. कर्मकांडी।
करमाली–संज्ञा पुं० सूर्य।
करमी–वि० कर्म करनेवाला।
करमुँहा–वि० १. काले मुँहवाला। २. कलंकी।
करराना, कर्राना०–क्रि० अ० १. चरमराकर टूटना। २. कर्कश शब्द करना।
करल०–संज्ञा पुं० कड़ाही।
करवट–संज्ञा स्त्री० हाथ के बल लेटने की मुद्रा।
करवत–संज्ञा पुं० आरा।
करवर०†–संज्ञा स्त्री० विपत्ति।
करवरना०–क्रि० अ० कलरव करना।
करवा–संज्ञा पुं० बधना।
करवा चौथ–संज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्ण चतुर्थी।
करवाना–क्रि० स० दूसरे को करने में प्रवृत्त करना।
करवार०–संज्ञा स्त्री० तलवार।
करवाल–संज्ञा पुं० १. नख। २. तलवार।
करवाली–संज्ञा स्त्री० छोटी तलवार।
करवीर–संज्ञा पुं० १. कनेर का पेड़। २. तलवार। ३. श्मशान।
करवैया०†–वि० करनेवाला।
करश्मा–संज्ञा पुं० चमत्कार।
करष–संज्ञा पुं० १. मनमोटाव। २. ताव।
करषना०–क्रि० स० १. खींचना। २. सुखाना। ३. बुलाना।
करसना०–क्रि० स० दे० "करषना"।
करसान०–संज्ञा पुं० दे० "कृषाण"।
करसायर, करसायल–संज्ञा पुं० काला हिरन।
करसी–संज्ञा स्त्री० उपले या कंडे का टुकड़ा।
करहंस–संज्ञा पुं० दे० "करहंस"।
करह०–संज्ञा पुं० ऊँट।
संज्ञा पुं० फूल की कली।
करांकुल–संज्ञा पुं० पानी के किनारे की एक बड़ी चिड़िया। कूँज।
करा०–संज्ञा स्त्री० दे० "कला"।
कराइत–संज्ञा पुं० एक प्रकार का काला साँप जो बहुत विषैला होता है।
कराई–संज्ञा स्त्री० उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।
संज्ञा स्त्री० कालापन।
संज्ञा स्त्री० करने या कराने का भाव।
करात–संज्ञा पुं० चार जौ की एक तौल जो सोना, चाँदी या दवा तौलने के काम में आती है।
कराना–क्रि० स० करने में लगाना।
कराबा–संज्ञा पुं० शीशे का बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।
करामात–संज्ञा स्त्री० चमत्कार।
करामाती–वि० करामात दिखानेवाला। सिद्ध।
क़रार–संज्ञा पुं० ठहराव।
करारना०–क्रि० अ० कॉं कॉं शब्द करना। कर्कश स्वर निकालना।
करारा–संज्ञा पुं० १. नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने। २. टीला।
वि० १. छूने में कठोर। कड़ा। २. तीक्ष्ण।
करारापन–संज्ञा पुं० कड़ापन।
कराल–वि० १. जिसके बड़े बड़े दाँत हों। २. डरावना।
कराली–संज्ञा स्त्री० अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।
क्रि० स० कटाना।
कतरी-संज्ञा स्त्री० कोल्हू का पाट जिस पर आदमी बैठकर बैलों को हाँकता है।
कतल-संज्ञा पुं० वध।
कतलबाज़-संज्ञा पुं० बधिक।
कतलाम-संज्ञा पुं० सर्वसंहार।
कतली-संज्ञा स्त्री० मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।
कतवार-संज्ञा पुं० कूड़ा करकट।
⁂† संज्ञा पुं० कातनेवाला।
कतहुँ, कतहूँ⁂†-अव्य० कहीं, किसी स्थान पर।
कता-संज्ञा स्त्री० १. बनावट। आकार। २. वज़ा।
कताई-संज्ञा स्त्री० १. कातने की क्रिया। २. कातने की मज़दूरी।
कताना-क्रि० स० किसी अन्य से कातने का काम कराना।
क़तार-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। २. झुंड।
कतारी*†-संज्ञा स्त्री० दे० "कतार"। संज्ञा स्त्री० ईख।
कतिपय-वि० कई एक।
कतौनी-संज्ञा स्त्री० कातने का काम या मज़दूरी।
कत्ता-संज्ञा पुं० बाँस चीरने का एक औज़ार।
कत्ती-संज्ञा स्त्री० १. चाकू। २. सोनारों की कतरनी।
कत्थई-वि० खैर के रंग का।
कत्थक-संज्ञा पुं० एक जाति जिसका काम गाना-बजाना और नाचना है।
कत्था-संज्ञा पुं० खैर की लकड़ियों को जमाकर सुखाया काढ़ा जो पान में खाया जाता है।
कथंचित्-क्रि० वि० शायद।
कथक-संज्ञा पुं० कथा या क़िस्सा कहनेवाला।
कथक्कड़-संज्ञा पुं० बहुत कथा कहनेवाला।
कथन-संज्ञा पुं० १. बखान। २. बात।
कथनी⁂-संज्ञा स्त्री० १. कथन। २. हुज्जत।
कथनीय-वि० कहने योग्य।
कथरी-संज्ञा स्त्री० गुदड़ी।
कथा-संज्ञा स्त्री० १. वह जो कहा जाय। २. धर्म-विषयक व्याख्यान।
कथानक-संज्ञा पुं० कथा।
कथावस्तु-संज्ञा स्त्री० प्लाट।
कथा-वार्ता-संज्ञा स्त्री० अनेक प्रकार की बातचीत।
कथित-वि० कहा हुआ।
कथोद्घात-संज्ञा पुं० १. प्रस्तावना। २. (नाटक में) सूत्रधार की बात, अथवा उसके मर्म को लेकर पहले-पहल पात्र का रंगभूमि में प्रवेश और अभिनय का आरंभ।
कथोपकथन-संज्ञा पुं० बातचीत।
कदंब-संज्ञा पुं० कदम।
क़द-संज्ञा पुं० ऊँचाई।
कदन-संज्ञा पुं० १. मरण। २. वध।
कदन्न-संज्ञा पुं० मोटा अन्न।
कदम-संज्ञा पुं० एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल लगते हैं।
क़दम-संज्ञा पुं० १. पैर। पाँव। २. पग।
क़दमबाज़-वि० क़दम की चाल चलनेवाला (घोड़ा)।

वि० डरावनी।
कराव, करावा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का विवाह या सगाई।
कराह-संज्ञा पुं० कराहने का शब्द। पीड़ा का शब्द।
*† संज्ञा पुं० दे० "कड़ाह"।
कराहना-क्रि० अ० व्यथासूचक शब्द मुँह से निकालना। आह आह करना।
कारद॰-संज्ञा पुं० १. उत्तम या बड़ा हाथी। २. ऐरावत हाथी।
करि-संज्ञा पुं० हाथी।
करिखा॰†-संज्ञा पुं० दे० "कालिख"।
करिणी-संज्ञा स्त्री० हथिनी।
करिया॰-संज्ञा पुं० १. पतवार। २. मल्लाह।
॰† वि० काला। श्याम।
करिल-संज्ञा पुं० कोंपल।
वि० काला।
करिवदन-संज्ञा पुं० गणेश।
करिहाँव†-संज्ञा स्त्री० कमर।
करी-संज्ञा पुं० हाथी।
संज्ञा स्त्री० कड़ी।
॰ १. कली। २. पंद्रह मात्राओं का एक छंद।
करीना॰-संज्ञा पुं० दे० "कैराना"।
क़रीना-संज्ञा पुं० ढंग।
क़रीब-क्रि० वि० समीप।
करीम-वि० कृपालु।
संज्ञा पुं० ईश्वर।
करीर-संज्ञा पुं० १. बाँस का नया कल्ला। २. करील का पेड़। ३. घड़ा।
करील-संज्ञा पुं० एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।
करीश-संज्ञा पुं० गजराज।
करीष-संज्ञा पुं० सूखा गोबर, जो जंगलों में मिलता है।
करुआ॰†-वि० दे० "कड़ुआ"।
करुआई॰-संज्ञा स्त्री० दे० "कड़ुआपन"।
करुण-संज्ञा पुं० १. दे० "करुणा"। (यह काव्य के नौ रसों में से है।) २. एक बुद्ध का नाम। ३. परमेश्वर।
वि० करुणायुक्त।
करुणा-संज्ञा स्त्री० १. दया। २. शोक।
करुणादृष्टि-संज्ञा स्त्री० दयादृष्टि।
करुणानिधान, करुणानिधि-वि० जिसका हृदय करुणा से भरा हो। बहुत बड़ा दयालु।
करुणामय-वि० बहुत दयावान्।
करुना॰-संज्ञा स्त्री० दे० "करुणा"।
करुर॰-वि० "कड़ुआ।
करुवा†-संज्ञा पुं० दे० "करवा"।
संज्ञा पुं० दे० "कड़ुआ"।
करू॰-वि० दे० "कड़ुआ"।
करेला†-संज्ञा पुं० हाथ में पहनने का कड़ा।
करेजा॰†-संज्ञा पुं० दे० "कलेजा"।
करेणु-संज्ञा पुं० हाथी।
करेणुका-संज्ञा स्त्री० हथनी।
करेमू-संज्ञा पुं० पानी में की एक घास जिसका साग खाया जाता है।
करेर॰†-वि० कठोर।
करेला-संज्ञा पुं० १. एक छोटी बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते हैं। २. माला या हुमेल की लंबी गुरिया जो बड़े दानों के बीच में लगाई जाती है।
करेली-संज्ञा स्त्री० जंगली करेला जिसके फल छोटे होते हैं।
करैत-संज्ञा पुं० काला फनदार साँप

क़दर–संज्ञा स्त्री० मान ।
कदरई*–संज्ञा स्त्री० कायरता ।
क़दरदान–वि० क़दर करनेवाला ।
क़दरदानी–संज्ञा स्त्री० गुणग्राहकता ।
कदराई–संज्ञा स्त्री० कायरपन ।
कदराना–क्रि० अ० डरना ।
कदर्थ– संज्ञा पुं० कूड़ा-करकट ।
कदर्थना–संज्ञा स्त्री० [वि० कदर्थित] दुर्गति ।
कदर्थित–वि० दुर्गति-प्राप्त ।
कदर्य–वि० [संज्ञा कदर्यता] कंजूस ।
कदली–संज्ञा स्त्री० केला ।
कदा–क्रि० वि० कब । किस समय ।
कदाचार–संज्ञा पुं० [वि० कदाचारी] बुरी चाल ।
कदाचित्–क्रि० वि० कभी । शायद ।
कदापि–क्रि० वि० कभी । हर्गिज़ ।
कदी–वि० हठी । ज़िद्दी ।
क़दीम–वि० पुराना ।
क़दीमी–वि० पुराना ।
कद्रुज–संज्ञा पुं० सर्प ।
कद्दू–संज्ञा पुं० लौकी ।
कद्दूकश–संज्ञा पुं० लोहे, पीतल आदि की छेददार चौकी जिस पर कद्दू को रगड़कर उसके महीन टुकड़े करते हैं ।
कन–संज्ञा पुं० बहुत छोटा टुकड़ा ।
कनक–संज्ञा पुं० १. सोना । २. धतूरा । संज्ञा पुं० गेहूँ ।
कनककशिपु–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।
कनकचंपा–संज्ञा स्त्री० मध्यम आकार का एक पेड़ ।
कनकटा–वि० जिसका कान कटा हो ।
कनकना–वि० [स्त्री० कनकनी] जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो ।
कनकनाना–क्रि० अ० [संज्ञा कनकनाहट] चुनचुनाना ।
कनकनाहट–संज्ञा स्त्री० कनकनी ।
कनकफल–संज्ञा पुं० १. धतूरे का फल । २. जमालगोटा ।
कनकाचल–संज्ञा पुं० १. सोने का पर्वत । २ सुमेरु पर्वत ।
कनकी–संज्ञा स्त्री० छोटा कण ।
कनकौवा–संज्ञा पुं० गुड्डी ।
कनखजूरा–संज्ञा पुं० गोजर ।
कनखियाना–क्रि० स० कनखी या तिरछी नज़र से देखना ।
कनखी–संज्ञा स्त्री० १. पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर ताकने की मुद्रा । २. आँख का इशारा ।
कनखैया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "कनखी" ।
कनखोदनी–संज्ञा स्त्री० कान की मैल निकालने की सलाई ।
कनगुरिया–संज्ञा स्त्री० सबसे छोटी उँगली ।
कनछेदन–संज्ञा पुं० हिंदुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चों का कान छेदा जाता है । कर्णवेध ।
कनटोप–संज्ञा पुं० कानों को ढँकनेवाली टोपी ।
कनपटी–संज्ञा स्त्री० कान और आँख के बीच का स्थान ।
कनफुँका–वि० [स्त्री० कनफुँकी] कान फूँकनेवाला । दीक्षा देनेवाला ।
कनफुसकी†–संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी" ।
कनमनाना–क्रि० अ० १. सोए हुए प्राणी का कुछ आहट पाकर हिलना-डोलना या सचेष्ट होना । २. किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना ।

जो बहुत विषैला होता है।
करैल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे मिलती है।
संज्ञा पुं० १. बाँस का नरम कल्ला। २. डोम-कौआ।
करैला–संज्ञा पुं० दे० "करेला"।
करैली मिट्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "करैल"।
करोटी॰–संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।
करोड़–वि० सौ लाख की संख्या, १०००००००।
करोड़पती–वि० वह जिसके पास करोड़ों रुपए हों। बहुत बड़ा धनी।
करोड़ी–संज्ञा पुं० रोकड़िया।
करोदना–क्रि० स० खुरचना।
करोना†–क्रि० स० खुरचना।
करोला॰†–संज्ञा पुं० करवा।
करौंछा॰†–वि० [स्त्री० करौंछी] कुछ काला।
करौंजी॰–संज्ञा स्त्री० दे० "कलौंजी"।
करौंट॰–संज्ञा स्त्री० दे० "करवट"।
करौंदा–संज्ञा पुं० १. एक कँटीला झाड़ जिसके बेर के से सुंदर छोटे फल खटाई के रूप में खाए जाते हैं। २. एक छोटी कँटीली जंगली झाड़ी जिसमें मटर के बराबर फल लगते हैं।
करौंदिया–वि० करौंदे के समान हलकी स्याही लिए हुए खुलता लाल।
करौत–संज्ञा पुं० [स्त्री० करौती] लकड़ी चीरने का आरा।
संज्ञा स्त्री० रखेली स्त्री।
करौता–संज्ञा पुं० दे० "करौत"।
करौती–संज्ञा स्त्री० आरी।
संज्ञा स्त्री० कराबा।
करौला॰–संज्ञा पुं० शिकारी।
करौली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सीधी छुरी।
कर्क–संज्ञा पुं० १. केकड़ा। २. अग्नि। ३. दर्पण।
कर्कट–संज्ञा पुं० [स्त्री० कर्कटी, कर्कटा] १. केकड़ा। २. कर्क राशि। ३. एक प्रकार का सारस। ४. लौकी।
कर्कटी–संज्ञा स्त्री० १. कछुई। २. ककड़ी। ३. साँप।
कर्कर–संज्ञा पुं० कंकड़।
वि० १. कड़ा। २. खुरखुरा।
कर्कश–संज्ञा पुं० १. ऊख। २. खड्ग। वि० १. कठोर। कड़ा। जैसे—कर्कश स्वर। २. खुरखुरा। ३. क्रूर।
कर्कशता–संज्ञा स्त्री० कठोरता।
कर्कशा–वि० स्त्री० लड़ाकी।
कर्कोट–संज्ञा पुं० १. बेल का पेड़। २. खेखसा।
कर्बूर–संज्ञा पुं० १. सोना। २. कचूर।
क़र्ज़, क़र्ज़ा–संज्ञा पुं० ऋण।
क़र्ज़दार–वि० उधार लेनेवाला।
कर्ण–संज्ञा पुं० १. कान। २. नाव की पतवार। ३. समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा।
कर्णकटु–वि० कान को अप्रिय।
कर्णकुहर–संज्ञा पुं० कान का छेद।
कर्णधार–संज्ञा पुं० १. मल्लाह। २. पतवार।
कर्णनाद–संज्ञा पुं० कान में सुनाई पड़ती हुई गूँज।
कर्णमूल–संज्ञा पुं० कनपेड़ा रोग।
कर्णवेध–संज्ञा पुं० कनछेदन।
कर्णाट–संज्ञा पुं० १. दक्षिण का एक देश। २. संपूर्ण जाति का एक राग।
कर्णाटक–संज्ञा पुं० दे० "कर्णाट"।

कर्णाटी–संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण जाति की एक शुद्ध रागिनी। २. कर्णाट देश की स्त्री। ३. कर्णाट देश की भाषा। ४. शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग ही के अक्षर आते हैं।

कर्णिका–संज्ञा स्त्री० १. कान का करनफूल। २. हाथ की बिचली उँगली। ३. कलम।

कर्णिकार–संज्ञा पुं० कनिआरी या कनकचंपा का पेड़।

कर्णी–संज्ञा पुं० बाण।

कर्त्तन–संज्ञा पुं० काटना।

कर्त्तनी–संज्ञा स्त्री० कैंची।

कर्त्तरी–संज्ञा स्त्री० १. कैंची। कतरनी। २. कटारी। ३. ताल देने का एक बाजा।

कर्त्तव्य–वि० करने के योग्य। संज्ञा पुं० धर्म।

कर्त्तव्यता–संज्ञा स्त्री० कर्त्तव्य का भाव।

कर्त्तव्यमूढ़–वि० जिसे यह न सुझाई दे कि क्या करना चाहिए।

कर्त्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० कर्त्री] १. करनेवाला। २. बनानेवाला। ३. ईश्वर। ४. व्याकरण में छः कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है।

कर्त्तार–संज्ञा पुं० १. करनेवाला। २. ईश्वर।

कर्त्तृक–वि० किया हुआ।

कर्त्तृत्व–संज्ञा पुं० कर्त्ता का भाव।

कर्त्तृवाचक–वि० कर्त्ता का बोध करानेवाला।

कर्त्तृवाच्य क्रिया–संज्ञा स्त्री० वह क्रिया जिसमें कर्त्ता का बोध प्रधान रूप से हो।

कर्दम–संज्ञा पुं० १. कीचड़। २. मांस। ३. पाप।

कर्पट–संज्ञा पुं० लत्ता।

कर्पटी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला। भिखारी।

कर्पर–संज्ञा पुं० १. कपाल। २. खप्पर।

कर्परी–संज्ञा स्त्री० खपरिया।

कर्पास–संज्ञा पुं० कपास।

कर्पूर–संज्ञा पुं० कपूर।

कर्बुर–संज्ञा पुं० १. सोना। २. धतूरा। वि० चितकबरा।

कर्म–संज्ञा पुं० १. कार्य्य। करनी। २. व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ३. भाग्य। ४. क्रिया-कर्म।

कर्मकर–संज्ञा पुं० दे० "कर्मकार"।

कर्मकांड–संज्ञा पुं० १. धर्म-संबंधी कृत्य। २. वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।

कर्मकांडी–संज्ञा पुं० यज्ञादि कर्म या धर्म-संबंधी कृत्य करानेवाला।

कर्मकार–संज्ञा पुं० १. कमकर। २. सेवक।

कर्मक्षेत्र–संज्ञा पुं० १. कार्य्य करने का स्थान। २. भारतवर्ष।

कर्मचारी–संज्ञा पुं० १. कार्य्यकर्त्ता। २. अमला।

कर्मठ–वि० काम में चतुर।

कर्मणा–क्रि० वि० कर्म द्वारा।

कर्मण्य–वि० उद्योगी।

कर्मण्यता–संज्ञा स्त्री० कार्य्य-कुशलता।

कर्मधारय समास–संज्ञा पुं० वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण हो।

कागज़ी–वि० १. कागज़ का बना हुआ। २. लिखित।
कागद†–संज्ञा पुं० दे० "कागज़"।
कागभुसुंड–संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडि"।
कागर⊙–संज्ञा पुं० दे० "कागज़"।
संज्ञा पुं० चिड़ियों के वे रूई के से मुलायम पर जो झड़ जाते हैं।
कागरी⊙–वि० तुच्छ।
काच-लवण–संज्ञा पुं० काला नोन।
काछी⊙–संज्ञास्त्री० दूधरखनेकीहाँड़ी।
काछ–संज्ञा पुं० १. पेड़ू और जाँघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान। २. धोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खोंसा जाता है। लाँग।
काछना–क्रि० स० १. कमर में लपेटे हुए वस्त्र के लटकते हुए भाग को जाँघों पर से ले जाकर पीछे कसकर बाँधना। २. बनाना।
क्रि० स० हथेली या चम्मच आदि से तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना।
काछनी–संज्ञा स्त्री० कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी।
काछा–संज्ञा पुं० कसकर और कुछ ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं। कछनी।
काछी–संज्ञा पुं० तरकारी बोने और बेचनेवाला आदमी।
काछे–क्रि० वि० निकट।
काज–संज्ञा पुं० कार्य्य।
संज्ञा पुं० वह छेद जिसमें बटन डालकर फँसाया जाता है।
काजर†–संज्ञा पुं० दे० "काजल"।
काजल–संज्ञा पुं० वह कालिख जो दीपक के धुएँ के जमने से लग जाती है और आँखों में लगाई जाती है।
काज़ी–संज्ञा पुं० मुसलमानों के धर्म और रीति-नीति के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।
काजू भोजू–वि० ऐसी दिखाऊ वस्तु जो अधिक दिनों तक काम न आ सके।
काट–संज्ञा स्त्री० १. काटने की क्रिया या भाव। २. तराश। ३. कुश्ती में पेंच का तोड़।
काटना–क्रि० स० १. वस्तु के दो खंड करना। २. किसी भाग को कम करना। ३. वध करना।
काटू–संज्ञा पुं० १. काटनेवाला। २. भयानक।
काठ–संज्ञा पुं० लकड़ी।
काठड़ा–संज्ञापुं० [स्त्री० काठड़ी] कठौता।
काठिन्य–संज्ञा पुं० दे० "कठिनता"।
काढ़ना–क्रि० स० १. किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना। निकालना। २. खोलकर दिखाना। ३. किसी वस्तु को किसी वस्तु से अलग करना। ४. लकड़ी, पत्थर, कपड़े आदि पर बेल-बूटे बनाना। ५. उधार देना। ६. पकाना।
काढ़ा–संज्ञा पुं० ओषधियों को पानी में उबाल या औटाकर बनाया हुआ शरबत।
कातना–क्रि० स० चरखा चलाना।
कातर–वि० १. अधीर। २. भयभीत। ३. डरपोक।
संज्ञा स्त्री० कोल्हू में लकड़ी का वह तख्ता जिस पर हाँकनेवाला बैठता है।

कर्मना†-क्रि० वि० दे० "कर्मणा"।
कर्मनाशा-संज्ञा स्त्री० एक नदी जो चौसा के पास गंगा में मिलती है।
कर्मनिष्ठ-वि० क्रियावान्।
कर्मभू-संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मक्षेत्र"।
कर्मभोग-संज्ञा पुं० १. कर्मफल। २. पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम।
कर्ममास-संज्ञा पुं० सावन मास।
कर्मयुग-संज्ञा पुं० कलियुग।
कर्मयोग-संज्ञा पुं० चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र-विहित कर्म्म।
कर्मरेख-संज्ञा स्त्री० भाग्य की लिखन।
कर्मवाच्य क्रिया-संज्ञा स्त्री० वह क्रिया जिसमें कर्म मुख्य होकर कर्त्ता के रूप से आया हो।
कर्मवाद-संज्ञा पुं० १. मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान है। २. कर्मयोग।
कर्मवादी-संज्ञा पुं० कर्मकांड को प्रधान माननेवाला। मीमांसक।
कर्मवान्-वि० दे० "कर्म्मनिष्ठ"।
कर्मविपाक-संज्ञा पुं० पूर्व जन्म के किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल।
कर्मशील-संज्ञा पुं० १. कर्मवान्। २. यत्नवान्।
कर्मशूर-संज्ञा पुं० उद्योगी।
कर्मसंन्यास-संज्ञा पुं० १. कर्म का त्याग। २. कर्म के फल का त्याग।
कर्मसाक्षी-वि० जिसके सामने कोई काम हुआ हो।
संज्ञा पुं० वे देवता जो प्राणियों के कर्मों को देखते रहते हैं और उनके साक्षी रहते हैं; जैसे—सूर्य, चंद्र, अग्नि।
कर्महीन-वि० १. जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। २. अभागा।
कर्मिष्ठ-वि० १. कर्म करनेवाला। २. पुं० "कर्मनिष्ठ"।
कर्मी-वि० [स्त्री० कर्मिणी] कर्म करनेवाला।
कर्मेंद्रिय-संज्ञा स्त्री० वह अंग जिससे कोई क्रिया की जाती है।
वि० कड़ा।
कर्राना†-क्रि० अ० कड़ा होना।
कर्ष-संज्ञा पुं० १. सोलह माशे का एक मान। २. खिंचाव।
कर्षक-संज्ञा पुं० १. खींचनेवाला। २. हल जोतनेवाला।
कर्षण-संज्ञा पुं० [वि० कर्षित, कर्षक, कर्षणीय, कार्य] १. खींचना। २. जोतना।
कर्षना†-क्रि० स० खींचना।
कलंक-संज्ञा पुं० १. दाग। २. लांछन। ३. दोष।
कलंकित-वि० लांछित।
कलंकी-वि० [स्त्री० कलंकिनी] दोषी।
† संज्ञा पुं० कल्कि अवतार।
कलंदर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त रहते हैं। २. रीछ और बंदर नचानेवाला।
कलंब-संज्ञा पुं० १. शर। २. कदंब।
कल-संज्ञा पुं० १. अव्यक्त मधुर ध्वनि। २. वीर्य्य।
वि० सुंदर।
संज्ञा स्त्री० १. आराम। २. संतोष।
क्रि० वि० १. आनेवाला दिन। २. बीता हुआ दिन।
संज्ञा स्त्री० युक्ति। ढंग।
कलई-संज्ञा स्त्री० १. रांगा। २.

कातरता–संज्ञा स्त्री० [वि० कातर] १. अधीरता। २. डरपोकपन।
काता–संज्ञा पुं० काता हुआ सूत। तागा।
कातिक–संज्ञा पुं० कार्त्तिक।
क़ातिल–वि० घातक।
कार्ती–संज्ञा स्त्री० कैंची।
कात्यायनी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
कादंबरी–संज्ञा स्त्री० १. कोयल। २. सरस्वती।
कादंबिनी–संज्ञा स्त्री० मेघमाला।
कादर–वि० डरपोक।
कान–संज्ञा पुं० १. सुनने की इंद्रिय। श्रवण। २. सोने का एक गहना जो कान में पहना जाता है।
संज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।
कानन–संज्ञा पुं० १. जंगल। २. घर।
काना–वि० [स्त्री० कानी] जिसकी एक आँख फूट गई हो।
वि० वे फल आदि जिनका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो।
कानाकानी–संज्ञा स्त्री० काना-फूसी।
कानाफूसी–संज्ञा स्त्री० वह बात जो कान के पास जाकर धीरे से कही जाय।
कानाबाती–संज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।
कानी–वि० स्त्री० एक आँखवाली।
वि० स्त्री० सबसे छोटी।
कानीहाउस–संज्ञा पुं० वह घर जिसमें किसी की हानि करनेवाले पशु पकड़कर बंद किए जाते हैं।
क़ानून–संज्ञा पुं० [वि० क़ानूनी] राज-नियम। विधि।
क़ानूनगो–संज्ञा पुं० माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के काग़ज़ों की जाँच करता है।
क़ानूनी–वि० १. जो क़ानून जाने। २. अदालती। ३. हुज्जती।
कान्यकुब्ज–संज्ञा पुं० १. प्राचीन समय का एक प्रांत जो वर्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था। २. इस देश का निवासी। ३. इस देश का ब्राह्मण।
कान्ह*–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
कान्हड़ा–संज्ञा पुं० एक राग।
कान्हर*–संज्ञा पुं० श्रीकृष्णजी।
कापालिक–संज्ञा पुं० शैव मत के तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिए रहते और मद्य मांसादि खाते हैं।
कापाली–संज्ञा पुं० [स्त्री० कापालिनी] शिव।
कापुरुष–संज्ञा पुं० कायर।
काफ़िर–वि० १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २. निर्दय।
काफ़ी–वि० पर्याप्त। पूरा।
काफ़ूर–संज्ञा पुं० [वि० काफ़ूरी] कपूर।
काफ़ूरी–वि० १. काफ़ूर का। २. काफ़ूर के रंग का।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत हलका रंग जिसमें हरेपन की झलक रहती है।
काब–संज्ञा स्त्री० बड़ी रिकाबी।
काबर–वि० चितकबरा।
काबा–संज्ञा पुं० अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान लोग हज करने जाते हैं।
क़ाबिज़–वि० १. अधिकारी। २. दस्त रोकनेवाला।
क़ाबिल–वि० [संज्ञा क़ाबिलीयत] योग्य।
क़ाबिलीयत–संज्ञा स्त्री० योग्यता।

मुलम्मा। ३. तड़क भड़क। ४. चूने का लेप। सफ़ेदी।

क़लईदार–वि० जिस पर क़लई या रांगे का लेप चढ़ा हो।

कलकंठ–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलकंठी] कोकिल।

वि० मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलक–संज्ञा पुं० १. बेचैनी। २. रंज।

कलकना–क्रि० अ० चिल्लाना।

कलकल–संज्ञा पुं० १. झरने आदि के जल के गिरने का शब्द। २. कोलाहल।

संज्ञा स्त्री० झगड़ा।

कलकूजिका–वि० स्त्री० मधुर ध्वनि करनेवाली।

कलगी–संज्ञा स्त्री० १. शुतुरमुर्ग आदि चिड़ियों के सुंदर पंख जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं। २. मोती या सोने का बना हुआ सिर का एक गहना। ३. चिड़ियों के सिर पर की चोटी। ४. इमारत का शिखर।

कलछा–संज्ञा पुं० बड़ी डाँड़ी का चम्मच या बड़ी कलछी।

कलछी–संज्ञा स्त्री० बड़ी डाँड़ी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं।

कलजिब्भा–वि० [स्त्री० कलजिब्भी] १. जिसकी जीभ काली हो। २. जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः ठीक घटें।

कलझँवाँ–वि० साँवला।

कलत्र–संज्ञा पुं० स्त्री। पत्नी।

कलदार–वि० जिसमें कल लगी हो।

संज्ञा पुं० सरकारी रुपया।

कलधूत–संज्ञा पुं० चाँदी।

कलधौत–संज्ञा पुं० १. सोना। २. चाँदी।

कलन–संज्ञा पुं० [वि० कलित] १. उत्पन्न करना। २. आचरण।

कलप–संज्ञा पुं० १. कलफ़। २. ख़िज़ाब।

कलपना–क्रि० अ० विलाप करना।

क्रि० स० काटना।

संज्ञा स्त्री० दे० "कल्पना"।

कलपाना–क्रि० स० दुःखी करना।

कलफ़–संज्ञा पुं० १. पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं। २. चेहरे पर का काला धब्बा।

कलबल–संज्ञा पुं० उपाय।

संज्ञा पुं० शोर-गुल।

कलबूत–संज्ञा पुं० १. ढाँचा। २. फ़रमा।

क़लम–संज्ञा पुं० स्त्री० १. लेखनी। २. किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैवंद लगाने के लिये काटी जाय। ३. वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड़ दिए जाते हैं। ४. बालों की कूची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं।

क़लमक़साई–संज्ञा पुं० वह जो कुछ लिख-पढ़कर लोगों की हानि करे।

क़लमकारी–संज्ञा स्त्री० क़लम से किया हुआ काम।

क़लमतराश–संज्ञा पुं० चाकू।

क़लमदान–संज्ञा पुं० क़लम, दावात आदि रखने का डिब्बा या छोटा संदूक।

कलमना–क्रि० स० काटना।

कलमलना–क्रि० अ० कुलबुलाना।

काबुक–संज्ञा स्त्री० कबूतरों का दरबा।
काबुल–संज्ञा पुं० [वि० काबुली] १. एक नदी जो अफ़ग़ानिस्तान से आकर अटक के पास सिंधु नदी में गिरती है। २. अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी।
काबुली–वि० काबुल का।
संज्ञा पुं० काबुल का निवासी।
काबू–संज्ञा पुं० वश।
काम–संज्ञा पुं० [वि० कामुक, कामी] १. इच्छा। २. कामदेव। ३. सहवास या मैथुन की इच्छा।
संज्ञा पुं० १. व्यापार। २. प्रयोजन। ३. नक्काशी।
कामकला–संज्ञा स्त्री० १. मैथुन। रति। २. कामदेव की स्त्री।
कामकाजी–वि० काम करनेवाला।
कामगार–संज्ञा पुं० दे० "कामदार"।
काम-चलाऊ–वि० जिससे किसी प्रकार काम निकल सके। जो बहुत से अंशों में काम दे जाय।
कामचारी–वि० १. जहाँ चाहे वहाँ विचरनेवाला। २. कामुक।
कामचोर–वि० आलसी।
कामज–वि० वासना से उत्पन्न।
कामजित्–वि० काम को जीतनेवाला।
संज्ञा पुं० महादेव।
कामज्वर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का ज्वर जो स्त्रियों और पुरुषों को अखंड ब्रह्मचर्य्य पालन करने से हो जाता है।
कामड़िया–संज्ञा पुं० रामदेव के मत के अनुयायी चमार साधु।
कामतरु–संज्ञा पुं० दे० "कल्पवृक्ष"।
कामता–संज्ञा पुं० चित्रकूट।
कामद–वि० [स्त्री० कामदा] मनोरथ पूरा करनेवाला।
कामद मणि–संज्ञा पुं० चिंतामणि।
कामदहन–संज्ञा पुं० कामदेव को जलानेवाले शिव।
कामदा–संज्ञा स्त्री० कामधेनु।
कामदार–संज्ञा पुं० अमला।
वि० जिस पर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों।
कामदुहा–संज्ञा स्त्री० कामधेनु।
कामदेव–संज्ञा पुं० १. स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। २. वीर्य्य।
काम धाम–संज्ञा पुं० काम-काज।
कामधेनु–संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय, वही मिलता है।
कामना–संज्ञा स्त्री० इच्छा।
कामबाण–संज्ञा पुं० कामदेव के बाण, जो पाँच हैं।
कामयाब–वि० सफल।
कामयाबी–संज्ञा स्त्री० सफलता।
कामरिपु–संज्ञा पुं० शिव।
कामरी॰–संज्ञा स्त्री० कमली।
कामरू–संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।
कामरूप–संज्ञा पुं० आसाम का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है।
कामल–संज्ञा पुं० कमल रोग।
कामला–संज्ञा पुं० दे० "कामल"।
कामली॰–संज्ञा स्त्री० कमली।
कामवती–संज्ञा स्त्री० काम या संभोग की वासना रखनेवाली स्त्री।
कामवान्–वि० [स्त्री० कामवती] काम या संभोग की इच्छा करनेवाला।
कामशर–संज्ञा पुं० दे० "कामबाण"।
कामशास्त्र–संज्ञा पुं० वह विद्या या ग्रंथ जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर

कलमा–संज्ञा पुं० १. वाक्य। २. वह वाक्य जो मुसलमान धर्म का मूल मंत्र है।
कलमी–वि० १. लिखित। २. जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो।
कलमुहाँ–वि० १. जिसका मुँह काला हो। २. कलंकित। ३. अभागा।
कलरव–संज्ञा पुं० मधुर शब्द।
कलवरिया–संज्ञा स्त्री० शराब की दुकान।
कलवार–संज्ञा पुं० एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है।
कलविंक–संज्ञा पुं० तरबूज़।
कलश–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कलशी] १. घड़ा। २. मंदिर, चैत्य आदि का शिखर। ३. चोटी।
कलशी–संज्ञा स्त्री० १. गगरी। २. मंदिर का छोटा कँगूरा।
कलस–संज्ञा पुं० दे० "कलश"।
कलसा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कलसी] १. गगरा। २. मंदिर का शिखर।
कलसी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा गगरा। २. छोटा शिखर या कँगूरा।
कलहंस–संज्ञा पुं० १. हंस। २. राजहंस। ३. श्रेष्ठ राजा। ४. परमात्मा। ५. क्षत्रियों की एक शाखा।
कलह–संज्ञा पुं० [वि० कलहकारी, कलही] विवाद।
कलहकारी–वि० [स्त्री० कलहकारिणी] झगड़ा करनेवाला।
कलहप्रिय–संज्ञा पुं० नारद।
वि० लड़ाका।
कलहांतरिता–संज्ञा स्त्री० वह नायिका जो नायक या पति का अपमान करके पीछे पछताती है।
कलहारी०–वि० स्त्री० लड़ाकी।
कलही–वि० [स्त्री० कलहिनी] झगड़ालू।
कलाँ–वि० बड़ा। दीर्घाकार।
कलांकुर–संज्ञा पुं० दे० "करांकुल"।
कला–संज्ञा स्त्री० १. अंश। २. हुनर। ३. शोभा। ४. तेज। ५. खेल।
कलाई–संज्ञा स्त्री० हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है।
संज्ञा स्त्री० १. सूत का लच्छा। २. हाथी के गले में बाँधने का कलावा।
कलाकंद–संज्ञा पुं० खोए और मिश्री की बनी बरफी।
कलाकौशल–संज्ञा पुं० १. किसी कला की निपुणता। कारीगरी। २. शिल्प।
कलादा०–संज्ञा पुं० हाथी की गर्दन पर वह स्थान जहाँ महावत बैठता है।
कलाधर–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. शिव।
कलानिधि–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
कलाप–संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। २. तरकश। ३. चंद्रमा।
कलापक–संज्ञा पुं० समूह।
कलापिनी–संज्ञा स्त्री० १. रात्रि। २. मोरनी।
कलापी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलापिनी] १. मोर। २. कोकिल।
वि० तरकशबंद।
कलाबत्तू–संज्ञा पुं० [वि० कलाबतूनी] सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय।
कलाबाज़–वि० नटक्रिया करनेवाला।
कलाबाज़ी–संज्ञा स्त्री० सिर नीचे करके उलट जाना।
कलाभृत्–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।
कामसखा–संज्ञा पुं० वसंत।
कामाक्षी–संज्ञा स्त्री० तंत्र के अनुसार देवी की एक मूर्त्ति।
कामातुर–वि० काम के वेग से व्याकुल।
कामिनी–संज्ञा स्त्री० १. कामवती स्त्री। २. मदिरा।
कामी–वि० [स्त्री० कामिनी] १. कामना रखनेवाला। २. विषयी।
कामुक–वि० [स्त्री० कामुका] १. इच्छा करनेवाला। चाहनेवाला। २. [स्त्री० कामुकी] विषयी।
कामोद्दीपक–वि० जिससे मनुष्य को सहवास की इच्छा अधिक हो।
कामोद्दीपन–संज्ञा पुं० सहवास की इच्छा का उत्तेजन।
काम्य–वि० १. जिसकी इच्छा हो। २. जिससे कामना की सिद्धि हो।
संज्ञा पुं० वह यज्ञ या कर्म्म जो किसी कामना की सिद्धि के लिये किया जाय।
काय–संज्ञा स्त्री० शरीर।
कायथ–संज्ञा पुं० दे० "कायस्थ"।
क़ायदा–संज्ञा पुं० नियम।
क़ायम–वि० ठहरा हुआ।
क़ायम-मुक़ाम–वि० एवज़ी।
कायर–वि० डरपोक।
कायरता–संज्ञा स्त्री० डरपोकपन।
क़ायल–वि० क़बूल करनेवाला।
कायस्थ–वि० काय में स्थित।
संज्ञा पुं० एक जाति का नाम।
काया–संज्ञा स्त्री० शरीर।
कायाकल्प–संज्ञा पुं० औषध के प्रभाव से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया।
काया-पलट–संज्ञा स्त्री० भारी हेर-फेर।
कायिक–वि० शरीर-संबंधी।
कारंड, कारंडव–संज्ञा पुं० हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।
कार–संज्ञा पुं० १. क्रिया। २. बनानेवाला।
संज्ञा पुं० कार्य्य।
*वि० दे० "काला"।
कारक–वि० [स्त्री० कारिका] करनेवाला।
संज्ञा पुं० व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।
कारख़ाना–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाती है। २. व्यवसाय।
कारगर–वि० १. प्रभावजनक। २. उपयोगी।
कारगुज़ार–वि० [संज्ञा कारगुज़ारी] अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह पूरा करनेवाला।
कारगुज़ारी–संज्ञा स्त्री० कर्त्तव्यपालन।
कारचोब–संज्ञा पुं० [वि० संज्ञा कारचोबी] कसीदे का काम करनेवाला।
कारचोबी–वि० ज़रदोज़ी का।
संज्ञा स्त्री० ज़रदोज़ी।
कारज*†–संज्ञा पुं० दे० "कार्य्य"।
कारण–संज्ञा पुं० वजह।
कारतूस–संज्ञा पुं० गोली-बारूद भरी एक नली जिसे टोंटेवाली और रिवाल्वर बंदूकों में भरकर चलाते हैं।
कारन*–संज्ञा पुं० दे० "कारण"।
संज्ञा स्त्री० करुण स्वर।

कलाम–संज्ञा पुं० १. वचन। २. कथन। ३. वाक्य।
कलार–संज्ञा पुं० दे० "कलवार"।
कलाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० कलाली] मद्य बेचनेवाला।
कलावंत–संज्ञा पुं० १. गवैया। २. नट।
वि० कलाओं का जाननेवाला।
कलावती–वि० स्त्री० १. जिसमें कला हो। २. शोभावाली।
कलावान्–वि० [स्त्री० कलावती] कला-कुशल।
कलिंग–संज्ञा पुं० १. मटमैले रंग की एक चिड़िया। २. तरबूज़। ३. एक समुद्र-तटस्थ देश जिसका विस्तार गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था।
वि० कलिंग देश का।
कलिंद–संज्ञा पुं० १. बहेड़ा। २. सूर्य।
कलिंदजा–संज्ञा स्त्री० यमुना नदी।
कलिंदी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कालिंदी"।
कलि–संज्ञा पुं० १. बहेड़े का फल या बीज। २. कलह। ३. पाप। ४. चार युगों में से चौथा युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता रहती है।
वि० काला।
कलिका–संज्ञा स्त्री० कली।
कलिकाल–संज्ञा पुं० कलियुग।
कलिमल–संज्ञा पुं० पाप।
कलिया–संज्ञा पुं० भूनकर रसेदार पकाया हुआ मांस।
कलियाना–क्रि० अ० १. कली लेना। कलियों से युक्त होना। २. चिड़ियों का नया पंख निकलना।
कलियारी–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ में विष होता है।
कलियुग–संज्ञा पुं० चार युगों में से चौथा युग। वर्तमान युग।
कलियुगी–वि० १. कलियुग का। २. कुप्रवृत्तिवाला।
कलिवर्ज्य–वि० जिसका करना कलियुग में निषिद्ध हो।
कलिहारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी"।
कलिंदा–संज्ञा पुं० तरबूज़।
कली–संज्ञा स्त्री० बिना खिला फूल।
संज्ञा स्त्री० पत्थर या सीप आदि का फुका हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनाया जाता है।
कलीट*†–वि० काला कलूटा।
कलील–संज्ञा पुं० थोड़ा।
कलीसिया–संज्ञा पुं० ईसाइयों या यहूदियों की धर्ममंडली।
कलुख–संज्ञा पुं० दे० "कलुष"।
कलुष–संज्ञा पुं० [वि० कलुषित, कलुषी] १. मलिनता। २. पाप।
वि० मलिन।
कलुषाई–संज्ञा स्त्री० बुद्धि की मलिनता।
कलुषित–वि० १. दूषित। २. क्षुब्ध।
कलुषी–वि० स्त्री० पापिनी। गंदी।
वि० पुं० मलिन।
कलूटा–वि० [स्त्री० कलूटी] काला।
कलेऊ*–संज्ञा पुं० दे० "कलेवा"।
कलेजा–संज्ञा पुं० १. हृदय। २. छाती। ३. साहस।
कलेजी–संज्ञा स्त्री० बकरे आदि के कलेजे का मांस।
कलेवर–संज्ञा पुं० शरीर।
कलेवा–संज्ञा पुं० १. जलपान। २. विवाह के अंतर्गत एक रीति जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है।

कारनिस–संज्ञा स्त्री० कगर।
कारपरदाज़–वि० कारिंदा।
कारबार–संज्ञा पुं० [वि० कारबारी] काम-काज।
कारबारी–वि० कामकाजी।
संज्ञा पुं० कारिंदा।
काररवाई–संज्ञा स्त्री० १. करतूत। २. कार्य-तत्परता।
कारसाज़–वि० [संज्ञा कारसाजी] काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।
कारसाज़ी–संज्ञा स्त्री० १. काम पूरा उतारने की युक्ति। २. चालबाज़ी।
कारस्तानी–संज्ञा स्त्री० कारसाज़ी।
कारा–संज्ञा स्त्री० कैद।
कारागार, कारागृह–संज्ञा पुं० कैद-खाना।
कारावास–संज्ञा पुं० कैद।
कारिंदा–संज्ञा पुं० कर्मचारी।
कारिका–संज्ञा स्त्री० किसी सूत्र की व्याख्या।
कारिख–संज्ञा स्त्री० दे० "कालिख"।
कारित–वि० कराया हुआ।
कारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कारिणी] करने-वाला।
वि० घातक।
कारीगर–संज्ञा पुं० [संज्ञा कारीगरी] शिल्पकार।
वि० निपुण।
कारीगरी–संज्ञा स्त्री० १. अच्छे अच्छे काम बनाने की कला। २. मनोहर रचना।
कारुणिक–वि० कृपालु।
कारुण्य–संज्ञा पुं० दया।
कारोबार–संज्ञा पुं० दे० "कारबार"।
कार्तिक–संज्ञा पुं० एक चांद्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है।

कार्पण्य–संज्ञा पुं० कंजूसी।
कार्मुक–संज्ञा पुं० धनुष।
कार्य–संज्ञा पुं० काम।
कार्यकर्त्ता–संज्ञा पुं० कर्मचारी।
कार्य कारण-भाव–संज्ञा पुं० कार्य और कारण का संबंध।
कार्यार्थी–वि० कार्य की सिद्धि चाहने-वाला।
कार्यालय–संज्ञा पुं० दफ़्तर। कारख़ाना।
कार्रवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "काररवाई"।
काल–संज्ञा पुं० १. समय। २. यम-राज। ३. दुर्भिक्ष। ४. [स्त्री० काली] शिव का एक नाम।
कलकंठ–संज्ञा पुं० १. शिव। २. नील-कंठ।
कालकूट–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अत्यंत भयंकर विष।
कालकोठरी–संज्ञा स्त्री० १. जेलख़ाने की बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें कैद-तनहाई वाले कैदी रखे जाते हैं। २. कलकत्ते के फोर्ट-विलियम नामक किले की एक तंग कोठरी जिसमें लोकापवाद के अनु-सार सिराजुद्दौला ने बहुत से अँगरेज़ों को कैद किया था।
कालक्षेप–संज्ञा पुं० समय बिताना।
कालचक्र–संज्ञा पुं० समय का हेर-फेर।
कालज्ञ–संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
कालज्ञान–संज्ञा पुं० १. स्थिति और अवस्था की जानकारी। २. मृत्यु का समय जान लेना।
कालदंड–संज्ञा पुं० यमराज का दंड।
कालधर्म–संज्ञा पुं० १. मृत्यु। २. समयानुसार धर्म।

कलेस॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "क्लेश"।
कलैया–संज्ञा स्त्री॰ कलाबाज़ी।
कलोल–संज्ञा पुं॰ आमोद-प्रमोद।
कलोलना॰–क्रि॰ अ॰ आमोद-प्रमोद करना।
कलौंजी–संज्ञा स्त्री॰ १. एक पौधा। २. इसकी फलियों के महीन काले दाने जो मसाले के काम में आते हैं। मँगरेला।
कलौस–वि॰ कालापन लिए।
संज्ञा पुं॰ कालापन।
कल्कि–संज्ञा पुं॰ विष्णु के दसवें अवतार का नाम जो संभल (मुरादाबाद) में एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।
कल्प–संज्ञा पुं॰ काल का एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२-०००००० वर्ष होते हैं।
वि॰ समान।
कल्पक–संज्ञा पुं॰ नाई।
वि॰ रचनेवाला।
कल्पतरु–संज्ञा पुं॰ कल्पवृक्ष।
कल्पद्रुम–संज्ञा पुं॰ कल्पवृक्ष।
कल्पना–संज्ञा स्त्री॰ अनुमान।
कल्पवास–संज्ञा पुं॰ माघ में महीने भर गंगा-तट पर संयम के साथ रहना।
कल्पवृक्ष–संज्ञा पुं॰ पुराणानुसार देवलोक का एक अविनश्वर वृक्ष जो सब कुछ देनेवाला माना जाता है।
कल्पसूत्र–संज्ञा पुं॰ वह सूत्र-ग्रंथ जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो।
कल्पांत–संज्ञा पुं॰ प्रलय।
कल्पित–वि॰ १. जिसकी कल्पना की गई हो। २. मनमाना। ३. नकली।
कल्य–संज्ञा पुं॰ १. सवेरा। २. शराब।
कल्यपाल–संज्ञा पुं॰ कलवार।
कल्याण–संज्ञा पुं॰ मंगल। शुभ।
वि॰ अच्छा।
कल्याणी–वि॰ १. कल्याण करनेवाली। २. सुंदरी।
कल्यान॰†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "कल्याण"।
कल्लातोड़–वि॰ मुँहतोड़।
कल्लादराज़–वि॰ [संज्ञा कल्लादराज़ी] मुँहज़ोर।
कल्लाना–क्रि॰ अ॰ चमड़े के ऊपर ही ऊपर कुछ जलन लिए हुए एक प्रकार की पीड़ा होना।
कल्लोल–संज्ञा पुं॰ १. तरंग। २. क्रीड़ा।
कल्लोलिनी–संज्ञा स्त्री॰ नदी।
कल्ह†–क्रि॰ वि॰ दे॰ "कल"।
कल्हरना॰–क्रि॰ अ॰ भुनना।
कल्हारना†–क्रि॰ स॰ कड़ाही में भूनना या तलना।
क्रि॰ अ॰ दुःख से कराहना।
कवच–संज्ञा पुं॰ [वि॰ कवची] १. आवरण। २. जिरह बकतर।
कवर–संज्ञा पुं॰ कौर।
कवरी–संज्ञा स्त्री॰ चोटी।
कवर्ग–संज्ञा पुं॰ [वि॰ कवर्गीय] क से ङ तक के अक्षरों का समूह।
कवल–संज्ञा पुं॰ १. कौर। २. कुल्ली।
कवलित–वि॰ खाया हुआ।
कवाम–संज्ञा पुं॰ चाशनी।
कवायद–संज्ञा स्त्री॰ लड़नेवाले सिपाहियों की युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।
कवि–संज्ञा पुं॰ कविता रचनेवाला।
कविका–संज्ञा स्त्री॰ लगाम।
कविता–संज्ञा स्त्री॰ काव्य।

कालनिशा–संज्ञा स्त्री० १. दिवाली की रात। २. अँधेरी भयावनी रात।
कालपाश–संज्ञा पुं० यमपाश।
कालपुरुष–संज्ञा पुं० १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल।
कालबंजर–संज्ञा पुं० वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो।
कालबूत–संज्ञा पुं० चमारों का वह काठ का साँचा जिस पर चढ़ाकर वे जूता सीते हैं।
कालभैरव–संज्ञा पुं० शिव के मुख्य गणों में से एक।
कालयापन–संज्ञा पुं० दिन काटना।
कालराति–संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि"।
कालरात्रि–संज्ञा स्त्री० १. अँधेरी और भयावनी रात। २. प्रलय की रात। ३. मृत्यु की रात्रि। ४. दिवाली की अमावास्या।
कालवाचक, कालवाची–वि० समय का ज्ञान करानेवाला।
काला–वि० [स्त्री० काली] १. स्याह। २. बुरा।
काला-कलूटा–वि० बहुत काला।
कालाक्षरी–वि० अत्यंत विद्वान्।
कालाग्नि–संज्ञा पुं० प्रलयकाल की अग्नि।
काला चोर–संज्ञा पुं० १. बहुत भारी चोर। २. बुरे से बुरा आदमी।
कालातीत–वि० जिसका समय बीत गया हो।
काला नमक–संज्ञा पुं० सज्जी के योग से बना हुआ एक प्रकार का पाचक लवण।
काला पहाड़–संज्ञा पुं० बहुत भारी और भयानक।
कालापानी–संज्ञा पुं० १. देश-निकाले का दंड। २. एंडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-निकाले के कैदी भेजे जाते हैं। ३. शराब।
कालाभुजंग–वि० बहुत काला।
कालिंग–वि० कलिंग देश का। संज्ञा पुं० १. कलिंग देश का निवासी। २. हाथी। ३. साँप।
कालिंदी–संज्ञा स्त्री० १. कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी। २. एक वैष्णव संप्रदाय।
कालि*–क्रि०वि० दे० "कल"।
कालिक–वि० समय-संबंधी।
कालिका–संज्ञा स्त्री० १. काली। २. कालापन। ३. मेघ। ४. मदिरा।
कालिकापुराण–संज्ञा पुं० एक उप-पुराण जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य आदि का वर्णन है।
कालि काला*–क्रि०वि० कदाचित्।
कालिख–संज्ञा स्त्री० स्याही।
कालिब–संज्ञा पुं० १. टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा जिस पर चढ़ाकर टोपियाँ दुरुस्त की जाती हैं। २. शरीर।
कालिमा–संज्ञा स्त्री० १. कालापन। २. अँधेरा।
काली–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. पार्वती।
काली घटा–संज्ञा स्त्री० घने काले बादलों का समूह।
काली जीरी–संज्ञा स्त्री० एक ओषधि जो एक पेड़ की बोंड़ी के भालदार बीज हैं।
कालीदह–संज्ञा पुं० वृंदावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।

कविताई॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कविता"।
कवित्त–संज्ञा पुं॰ कविता।
कवित्व–संज्ञा पुं॰ काव्य-रचना-शक्ति।
कविनासा॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कर्मनासा"।
कविराज–संज्ञा पुं॰ १. श्रेष्ठ कवि। २. भाट। ३. बंगाली वैद्यों की उपाधि।
कविराय–संज्ञा पुं॰ दे॰ "कविराज"।
कविलास॰–संज्ञा पुं॰ १. कैलास। २. स्वर्ग।
कवेला–संज्ञा पुं॰ कौए का बच्चा।
कश–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ कशा] चाबुक। संज्ञा पुं॰ १. खिंचाव। २. फूँक।
कश-मकश–संज्ञा स्त्री॰ खींचातानी।
कशा–संज्ञा स्त्री॰ रस्सी।
कशीदा–संज्ञा पुं॰ कपड़े पर सुई और तागे से निकाले हुए बेल-बूटे।
कश्चित्–वि॰ कोई।
कश्ती–संज्ञा स्त्री॰ १. नौका। २. शतरंज का एक मोहरा।
कश्मीर–संज्ञा पुं॰ पंजाब के उत्तर हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य और उर्वरता के लिये संसार में प्रसिद्ध है।
कश्मीरी–वि॰ कश्मीर का। संज्ञा स्त्री॰ कश्मीर देश की भाषा। संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ कश्मीरिन] कश्मीर देश का निवासी।
कश्यप–संज्ञा पुं॰ १. कछुआ। २. सप्तर्षि मंडल का एक तारा।
कषाय–वि॰ १. कसैला। २. गेरू के रंग का। संज्ञा पुं॰ कसैली वस्तु।
कष्ट–संज्ञा पुं॰ क्लेश।
कष्टसाध्य–वि॰ जिसका करना कठिन हो।
कष्टी–वि॰ पीड़ित।
कस–संज्ञा पुं॰ बल। संज्ञा पुं॰ सार। ॰† क्रि॰ वि॰ कैसे।
कसक–संज्ञा स्त्री॰ पुराना बैर।
कसकना–क्रि॰ अ॰ दर्द करना।
कसकुट–संज्ञा पुं॰ काँसा।
कसन–संज्ञा स्त्री॰ १. कसने की क्रिया या ढंग। २. कसने की रस्सी। संज्ञा स्त्री॰ दुःख।
कसना–क्रि॰ स॰ १. जकड़कर बाँधना। २. पुरज़ों को दृढ़ करके बैठाना। ३. साज़ रखकर सवारी के लिये तैयार करना। ४. ठूस ठूसकर भरना। क्रि॰ अ॰ १. जकड़ जाना। २. बँधना। क्रि॰ स॰ परखना।
कसनि॰†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कसन"।
कसनी–संज्ञा स्त्री॰ १. रस्सी जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. कसौटी। ३. जाँच।
कसबल–संज्ञा पुं॰ बल।
कसबा–संज्ञा पुं॰ [वि॰ कसबाती] बड़ा गाँव।
क़सबी–संज्ञा स्त्री॰ वेश्या।
क़सम–संज्ञा स्त्री॰ शपथ।
कसमसाना–क्रि॰ अ॰ खलबलाना।
कसमसाहट–संज्ञा स्त्री॰ कुलबुलाहट।
कसर–संज्ञा स्त्री॰ १. कमी। २. द्वेष।
कसरत–संज्ञा स्त्री॰ [वि॰ कसरती] व्यायाम। मेहनत।
कसरती–वि॰ १. कसरत करनेवाला। २. कसरत से पुष्ट और बलवान् बनाया हुआ।
कसवाना–क्रि॰ स॰ कसने का काम

कालीन-वि० काल-संबंधी।
कालीन-संज्ञा पुं० ग़लीचा।
कालीमिर्च-संज्ञा स्त्री० गोल मिर्च।
काली शीतला-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की शीतला या चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं।
काल्पनिक-संज्ञा पुं० कल्पना करनेवाला।
वि० कल्पित।
काल्ह†-क्रि० वि० दे० "कल"।
कावा-संज्ञा पुं० घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।
काव्य-संज्ञा पुं० वह वाक्य या वाक्य-रचना जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो।
काव्यलिंग-संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य के अर्थ द्वारा या पद के अर्थ द्वारा दिखाया जाय।
काश-संज्ञा पुं० एक प्रकार की घास।
काशिका-वि० स्त्री० प्रकाश करनेवाली।
संज्ञा स्त्री० काशीपुरी।
काशीकरवट-संज्ञा पुं० काशीस्थ एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे के नीचे कटकर अपने प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे।
काशीफल-संज्ञा पुं० कुम्हड़ा।
काश्त-संज्ञा स्त्री० १. खेती। २. ज़मींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी ज़मीन पर खेती करने का स्वत्व।
काश्तकार-संज्ञा पुं० १. किसान। २. वह जिसने ज़मींदार को लगान देकर उसकी ज़मीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो।
काश्तकारी-संज्ञा स्त्री० खेती-बारी।
काश्मरी-संज्ञा स्त्री० गंभारी का पेड़।
काश्मीर-संज्ञा पुं० एक देश का नाम। दे० "कश्मीर"।
काश्मीरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।
काश्यप-वि० कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का। कश्यप-संबंधी।
काषाय-वि० १. हड़, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। २. गेरुआ।
काष्ठ-संज्ञा पुं० लकड़ी।
काष्ठा-संज्ञा स्त्री० हद।
कास-संज्ञा पुं० खाँसी।
संज्ञा पुं० काँस।
कासा-संज्ञा पुं० प्याला।
कासार-संज्ञा पुं० १. तालाब। २. दे० "कसार"।
क़ासिद-संज्ञा पुं० हरकारा।
काहँ†-प्रत्य० दे० "कहँ"।
काह॰-क्रि० वि० क्या?
काहि॰-सर्व० किसको?
काहिल-वि० आलसी।
काहिली-संज्ञा स्त्री० सुस्ती।
काही-वि० कालापन लिए हुए हरा।
काहु॰-सर्व० दे० "काहू"।
काहू-सर्व० किसी।
संज्ञा पुं० गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।
काहे॰-क्रि० वि० क्यों?
किं-अव्य० दे० "किम्"।
किंकर-संज्ञा पुं० [स्त्री० किंकरी] दास।
किं-कर्त्तव्य-विमूढ़-वि० घबराया हुआ।
किंकिणी-संज्ञा स्त्री० करधनी।

दूसरे से कराना।
क़साई-संज्ञा पुं० [स्त्री० क़साइन] वधिक।
वि० निर्दय।
कसाना-क्रि० स० स्वाद में कसैला हो जाना। काँसे के योग से खट्टी चीज़ का बिगड़ जाना।
क्रि० स० दे० "कसवाना"।
कसार-संज्ञा पुं० पँजीरी।
कसाव-संज्ञा पुं० कसैलापन।
कसावट-संज्ञा स्त्री० खिंचावट।
कसीदा-संज्ञा पुं० दे० "कशीदा"।
क़सीदा-संज्ञा पुं० उर्दू या फ़ारसी भाषा की एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति या निंदा की जाती है।
कसूँभा-वि० कुसुम के रंग का। लाल।
क़सूर-संज्ञा पुं० अपराध।
क़सूरमंद, क़सूरवार-वि० दोषी।
कसेरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० कसेरिन] काँसे, फूल आदि के बरतन ढालने और बेचनेवाला।
कसेरू-संज्ञा पुं० एक प्रकार के मोथे की गँठीली जड़ जो मीठी होती है।
कसैला-वि० [स्त्री० कसैली] कषाय स्वादवाला।
कसैली†-संज्ञा स्त्री० सुपारी।
कसोरा-संज्ञा पुं० कटोरा।
कसौटी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। २. परीक्षा।
कस्तूर-संज्ञा पुं० कस्तूरी-मृग।
कस्तूरा-संज्ञा पुं० कस्तूरी मृग।
कस्तूरिका-संज्ञा स्त्री० कस्तूरी।
कस्तूरिया-संज्ञा पुं० कस्तूरी-मृग।
वि० कस्तूरी-मिश्रित।
कस्तूरी-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।
कस्तूरी-मृग-संज्ञा पुं० बहुत ठंडे पहाड़ी स्थानों में होनेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।
कहँ॰-प्रत्य० कर्म और संप्रदान का चिह्न 'को'।
॰ क्रि० वि० दे० "कहाँ"।
क़हत-संज्ञा पुं० दुर्भिक्ष।
कहता-संज्ञा पुं० कहनेवाला पुरुष।
कहन-संज्ञा स्त्री० १. कथन। २. कहावत।
कहना-क्रि० स० वर्णन करना।
संज्ञा पुं० कथन।
कहनावत-संज्ञा स्त्री० कहावत।
कहनूत†-संज्ञा स्त्री० कहावत।
कहलना॰-क्रि० अ० १. कसमसाना। २. दहलना।
कहलवाना-क्रि० स० दे० "कहलाना"।
कहलाना-क्रि० स० १. दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २. सँदेसा भेजना।
क्रि० अ० ऊमस या गरमी से व्याकुल या शिथिल होना।
कहवाँ॰†-क्रि० वि० दे० "कहाँ"।
क़हवा-संज्ञा पुं० एक पेड़ का बीज जिसके चूर को चाय की तरह पीते हैं।
कहवाना†-क्रि० स० दे० "कहलाना"।
कहवैया†-वि० कहनेवाला।
कहाँ-क्रि० वि० किस जगह।

किंगरी–संज्ञा स्त्री० छोटा चिकारा।
किंचन–संज्ञा पुं० थोड़ी वस्तु।
किंचित्–वि० कुछ।
किंजल्क–संज्ञा पुं० १. कमल। २. कमल के फूल का पराग।
वि० कमल के केसर के रंग का।
किंतु–अव्य० लेकिन।
किंवदंती–संज्ञा स्त्री० अफवाह।
किंवा–अव्य० अथवा।
किंशुक–संज्ञा पुं० पलाश।
कि–सर्व० क्या ?
अव्य० एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना इत्यादि कुछ क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है।
किकियाना–क्रि० अ० रोना।
किचकिच–संज्ञा स्त्री० बकवाद।
किचकिचाना–क्रि० अ० दाँत पीसना।
किचकिचाहट–संज्ञा स्त्री० किचकिचाने का भाव।
किचकिची–संज्ञा स्त्री० किचकिचाहट।
किचड़ाना–क्रि० अ० (आँख का) कीचड़ से भरना।
किछु०†–वि० दे० "कुछ"।
किटकिटाना–क्रि० अ० क्रोध से दाँत पीसना।
किट्ट–संज्ञा पुं० १. धातु की मैल। २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल।
कित०†–क्रि० वि० कहाँ।
कितक०†–वि०, क्रि० वि० कितना।
कितना–वि० [स्त्री० कितनी] किस परिमाण, मात्रा या संख्या का ?
क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में ? कहाँ तक ? २. अधिक। बहुत ज्यादा।
किता–संज्ञा पुं० १. ब्योंत। २. ढंग।
किताब–संज्ञा स्त्री० [वि० किताबी] पुस्तक।
किताबी–वि० किताब के आकार का।
कितिक०†–वि० दे० "कितक", "कितना"।
कितेक०†–वि० कितना।
किते०†–अव्य० दे० "कित"।
कितो०†–वि० [स्त्री० किती] कितना।
क्रि० वि० कितना।
किधर–क्रि० वि० किस ओर।
किधौं०–अव्य० अथवा।
किन–सर्व० 'किस' का बहुवचन।
क्रि० वि० क्यों न।
संज्ञा पुं० चिह्न।
किनका–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० किनकी] १. अन्न का टूटा हुआ दाना। २. चावल आदि की खुद्दी।
किनहा†–वि० (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों। कना।
किनार०–संज्ञा पुं० दे० "किनारा"।
किनारदार–वि० (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।
किनारा–संज्ञा पुं० १. अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती है। २. तीर।
किनारे–क्रि० वि० १. तट पर। २. अलग।
किन्नर–संज्ञा पुं० [स्त्री० किन्नरी] १. एक प्रकार के देवता जिन का मुख घोड़े के समान होता है। २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।
किन्नरी–संज्ञा स्त्री० किन्नर की स्त्री।
किफ़ायत–संज्ञा स्त्री० कमखर्ची।
किफ़ायती–वि० सँभालकर खर्च करनेवाला।

कहा०†-संज्ञा पुं० कथन।
क्रि० वि० किस प्रकार।
कहाना-क्रि० स० दे० "कहलाना"।
कहानी-संज्ञा स्त्री० कथा।
कहार-संज्ञा पुं० एक जाति जो पानी भरने और डोली उठाने का काम करती है।
कहावत-संज्ञा स्त्री० मसल।
कहा-सुना-संज्ञा पुं० भूल-चूक।
कहा-सुनी-संज्ञा स्त्री० वाद-विवाद।
कहियाॐ†-क्रि० वि० किस दिन।
कहीं-क्रि० वि० १. किसी अनिश्चित स्थान में। २. बहुत बढ़कर।
कहुँ-०-क्रि० वि० दे० "कहीं"।
कहूँ०-क्रि० वि० दे० "कहीं"।
काँइया-वि० चालाक।
काँई†-अव्य० क्यों।
सर्व० क्या।
काँकर०†-संज्ञा पुं० दे० "कंकड़"।
काँकरी०†-संज्ञा स्त्री० छोटा कंकड़।
कांक्षनीय-वि० इच्छा करने योग्य।
कांक्षा-संज्ञा स्त्री० [वि० कांक्षित] इच्छा।
कांक्षी-वि० [स्त्री० कांक्षिणी] चाहने-वाला।
काँख-संज्ञा स्त्री० बगल।
काँखना-क्रि० अ० १. श्रम या पीड़ा से ऊँह-आँह आदि शब्द मुँह से निकालना। २. मल या मूत्र को निकालने के लिये पेट की वायु को दबाना।
काँगड़ा-संज्ञा पुं० पंजाब प्रांत का एक पहाड़ी प्रदेश।
काँगड़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी अँगीठी जिसे जाड़े में कश्मीरी लोग गले में लटकाए रहते हैं।

काँच-संज्ञा स्त्री० लाँग।
संज्ञा पुं० शीशा।
कांचन-संज्ञा पुं० [वि० कांचनीय] १. सोना। २. धतूरा।
कांचनजंगा-संज्ञा पुं० हिमालय की एक चोटी।
काँचली०-संज्ञा स्त्री० साँप की केंचुली।
काँचा०-वि० दे० "कच्चा"।
काँजी-संज्ञा स्त्री० मट्ठे या दही का पानी। छाछ।
काँट०-संज्ञा पुं० दे० "काँटा"।
काँटा-संज्ञा पुं० [वि० कँटीला] १. कंटक। २. लोहे की झुकी हुई अँकुड़ियों का गुच्छा जिससे कूएँ में गिरे बरतन निकालते हैं। ३. तराजू की डाँडी पर वह सूई जिससे दोनों पलड़ों के बराबर होने की सूचना मिलती है। ४. पंजे के आकार का, धातु का बना हुआ, एक औज़ार जिससे अँगरेज़ लोग खाना खाते हैं।
काँटी-संज्ञा स्त्री० कील।
कांड-संज्ञा पुं० १. पोर। २. शाखा।
काँड़ना०†-क्रि० स० १. रौंदना। २. कूटना। ३. खूब मारना।
काँड़ी-संज्ञा स्त्री० लकड़ी का बड़ा डंडा।
कांत-संज्ञा पुं० पति।
कांता-संज्ञा स्त्री० १. प्रिया। २. पत्नी।
कांतासक्ति-संज्ञा स्त्री० भक्ति का एक भेद जिसमें भक्त ईश्वर को अपना पति मानकर पत्नी भाव से उसकी भक्ति करता है। माधुर्य भाव।
कांति-संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति। २. सौंदर्य।
काँथरि०-संज्ञा स्त्री० दे० "कथरी"।

क़िमारबाज़–संज्ञा पुं० जुआरी।

क़िबला–संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ते हैं।

क़िबलानुमा–संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाज़ों पर अरब मल्लाह करते थे।

किम्–वि०, सर्व० १. क्या ? २. कौन सा ?

किमाछ–संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।

क़िमाम–संज्ञा पुं० शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत।

किमाश–संज्ञा पुं० तर्ज़।

किमि–क्रि० वि० कैसे ?

क़िस्मत†–संज्ञा स्त्री० युक्ति।

कियत्–वि० कितना।

कियारी–संज्ञा स्त्री० क्यारी।

किरका–संज्ञा पुं० कंकड़।

किरकिरा–वि० कँकरीला।

किरकिराना–क्रि० अ० किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना।

किरकिराहट–संज्ञा स्त्री० आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा।

किरकिरी–संज्ञा स्त्री० धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है।

किरच–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है।

किरण–संज्ञा स्त्री० किरन।

किरणमाली–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

किरन–संज्ञा स्त्री० रोशनी की लकीर।

किरपा‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा"।

किरपान–संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"।

किरमाल–संज्ञा पुं० तलवार।

किरमिच–संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, थैले आदि बनते हैं।

किरराना–क्रि० अ० १. क्रोध से दाँत पीसना। २. किर्र किर्र शब्द करना।

किराँची–संज्ञा स्त्री० १ वह बैल-गाड़ी जिस पर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है। २. माल-गाड़ी का डब्बा।

किरात–संज्ञा पुं० [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] एक प्राचीन जंगली जाति।

किराना–संज्ञा पुं० दे० "केराना"। क्रि० स० दे० "केराना"।

किरानी–संज्ञा पुं० दे० "केरानी"।

किराया–संज्ञा पुं० भाड़ा।

किरायेदार–संज्ञा पुं० कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला।

किरासन–संज्ञा पुं० मिट्टी का तेल।

किरिच–संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।

किरिन†–संज्ञा स्त्री० दे० "किरण"।

किरिम–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।

किरिया†–संज्ञा स्त्री० १. शपथ। २. मृतकर्म।

किरीट–संज्ञा पुं० एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे पर बाँधा जाता था।

किरोलना–क्रि० स० करोदना। खुरचना।

किलक–संज्ञा स्त्री० किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया।

किलकना–क्रि० अ० किलकार मारना।

किलकार–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।

किलकारी–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।

किलकिला–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।

काँदना†–क्रि० अ० रोना।
काँदा–संज्ञा पुं० एक गुल्म जिसमें प्याज़ की तरह गाँठ पड़ती है।
काँदो*†–संज्ञा पुं० कीचड़।
काँध*†–संज्ञा पुं० दे० "कंधा"।
काँधना*–क्रि० स० उठाना।
काँधर, काँधा*†–संज्ञा पुं० दे० "कान्ह"।
काँप–संज्ञा स्त्री० बाँस आदि की पतली लचीली तीली।
काँपना–क्रि० अ० हिलना।
काँबोज–वि० कंबोज देश का।
काँय काँय, काँव काँव–संज्ञा पुं० १. कौवे का शब्द। २. व्यर्थ का शोर।
काँवर–संज्ञा स्त्री० बहँगी।
काँवरा†–वि० घबराया हुआ।
काँवरिया–संज्ञा पुं० काँवर लेकर चलनेवाला तीर्थयात्री।
काँवरू–संज्ञा पुं० दे० "कामरूप"।
काँस–संज्ञा पुं० एक प्रकार की लंबी घास।
काँसा–संज्ञा पुं० [वि० काँसी] कसकुट।
काँसागर–संज्ञा पुं० काँसे का काम करनेवाला।
काँस्य–संज्ञा पुं० काँसा।
का–प्रत्य० संबंध या षष्ठी का चिह्न।
काई–संज्ञा स्त्री० १. जल या सीड़ में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास या सूक्ष्म वनस्पति-जाल। २. मल।
काऊ*†–क्रि० वि० कभी।
सर्व० कोई।
काक–संज्ञा पुं० कौआ।
संज्ञा पुं० काग।
काकगोलक–संज्ञा पुं० कौवे की आँख की पुतली, जो एक ही दोनों आँखों में घूमती हुई कही जाती है।
काकदंत–संज्ञा पुं० कोई असंभव बात।
काकवंध्या–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसे एक संतति के उपरांत दूसरी न हुई हो।
काकबलि–संज्ञा स्त्री० श्राद्ध के समय भोजन का वह भाग जो कौओं को दिया जाता है।
काकभुशुंडि–संज्ञा पुं० एक ब्राह्मण जो लोमश के शाप से कौआ हो गए थे और राम के बड़े भक्त थे।
काकरी*–संज्ञा स्त्री० दे० "कँकड़ी"।
काकरेजा–संज्ञा पुं० काकरेजी रंग का कपड़ा।
काकरेजी–संज्ञा पुं० एक रंग जो लाल और काले के मेल से बनता है। कोकची।
वि० काकरेजी रंग का।
काका–संज्ञा पुं० [स्त्री० काकी] चाचा।
काकाक्षिगोलकन्याय–संज्ञा पुं० एक शब्द या वाक्य को उलट-फेरकर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना।
काकी–संज्ञा स्त्री० कौए की मादा।
संज्ञा स्त्री० [हिं० काका] चाची। चची।
काकु–संज्ञा पुं० व्यंग्य।
काकुल–संज्ञा पुं० ज़ुल्फ़।
काग–संज्ञा पुं० कौआ।
संज्ञा पुं० बोतल या शीशी की डाट जो एक पेड़ की छाल से बनती है।
कागज़–संज्ञा पुं० [वि० कागज़ी] १. सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं। २. दस्तावेज़। ३. समाचारपत्र।
कागज़ात–संज्ञा पुं० कागज़-पत्र।

किंगरी–संज्ञा स्त्री० छोटा चिकारा।
किंचन–संज्ञा पुं० थोड़ी वस्तु।
किंचित्–वि० कुछ।
किंजल्क–संज्ञा पुं० १. कमल। २. कमल के फूल का पराग।
वि० कमल के केसर के रंग का।
किंतु–अव्य० लेकिन।
किंवदंती–संज्ञा स्त्री० अफ़वाह।
किंवा–अव्य० अथवा।
किंशुक–संज्ञा पुं० पलाश।
कि–सर्व० क्या?
अव्य० एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना इत्यादि कुछ क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है।
किकियाना–क्रि० अ० रोना।
किचकिच–संज्ञा स्त्री० बकवाद।
किचकिचाना–क्रि० अ० दाँत पीसना।
किचकिचाहट–संज्ञा स्त्री० किचकिचाने का भाव।
किचकिची–संज्ञा स्त्री० किचकिचाहट।
किचड़ाना–क्रि० अ० (आँख का) कीचड़ से भरना।
किछु॰†–वि० दे० "कुछ"।
किटकिटाना–क्रि० अ० क्रोध से दाँत पीसना।
किट्ट–संज्ञा पुं० १. धातु की मैल। २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल।
कित॰†–क्रि० वि० कहाँ।
कितक॰†–वि०, क्रि० वि० कितना।
कितना–वि० [स्त्री० कितनी] किस परिमाण, मात्रा या संख्या का?
क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में? कहाँ तक? २. अधिक। बहुत ज्यादा।
किता–संज्ञा पुं० १. ब्योंत। २. ढंग।
किताब–संज्ञा स्त्री० [वि० किताबी] पुस्तक।
किताबी–वि० किताब के आकार का।
कितिक॰†–वि० दे० "कितक"; "कितना"।
कितेक॰†–वि० कितना।
किते†॰–अव्य० दे० "कित"।
कितो॰†–वि० [स्त्री० किती] कितना।
क्रि० वि० कितना।
किधर–क्रि० वि० किस ओर।
किधौं॰–अव्य० अथवा।
किन–सर्व० 'किस' का बहुवचन।
क्रि० वि० क्यों न।
संज्ञा पुं० चिह्न।
किनका–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० किनकी] १. अन्न का टूटा हुआ दाना। २. चावल आदि की खुद्दी।
किनहा†–वि० (फल) जिसमें कीड़े पड़े हों। कच्चा।
किनार॰–संज्ञा पुं० दे० "किनारा"।
किनारदार–वि० (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।
किनारा–संज्ञा पुं० १. अधिक लंबाई और कम चौड़ाईवाली वस्तु के वे दोनों भाग जहाँ से चौड़ाई समाप्त होती है। २. तीर।
किनारे–क्रि० वि० १. तट पर। २. अलग।
किन्नर–संज्ञा पुं० [स्त्री० किन्नरी] १. एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान होता है। २. गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।
किन्नरी–संज्ञा स्त्री० किन्नर की स्त्री।
किफ़ायत–संज्ञा स्त्री० कमखर्ची।
किफ़ायती–वि० सँभालकर खर्च करनेवाला।

क़िमारबाज़–संज्ञा पुं० जुआरी।
क़िबला–संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा जिस ओर मुख करके मुसलमान लोग नमाज़ पढ़ते हैं।
क़िबलानुमा–संज्ञा पुं० पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यंत्र जिसका व्यवहार जहाज़ों पर अरब मल्लाह करते थे।
किम्–वि०, सर्व० १. क्या ? २. कौन सा ?
किमाछ–संज्ञा पुं० दे० "केवाँच"।
क़िमाम–संज्ञा पुं० शहद के समान गाढ़ा किया हुआ शरबत।
किमाश–संज्ञा पुं० तर्ज़।
किमि॥–क्रि० वि० कैसे ?
किम्मत†–संज्ञा स्त्री० युक्ति।
कियत्–वि० कितना।
कियारी–संज्ञा स्त्री० क्यारी।
किरका–संज्ञा पुं० कंकड़।
किरकिरा–वि० कँकरीला।
किरकिराना–क्रि० अ० किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा करना।
किरकिराहट–संज्ञा स्त्री० आँख में किरकिरी पड़ जाने की सी पीड़ा।
किरकिरी–संज्ञा स्त्री० धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न करता है।
किरच–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है।
किरण–संज्ञा स्त्री० किरन।
किरणमाली–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
किरन–संज्ञा स्त्री० रोशनी की लकीर।
किरपा॥†–संज्ञा स्त्री० दे० "कृपा"।
किरपान॥–संज्ञा पुं० दे० "कृपाण"।
किरमाल॥†–संज्ञा पुं० तलवार।
किरमिच–संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन टाट सा मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते, बैग आदि बनते हैं।
किरराना–क्रि० अ० १. क्रोध से दाँत पीसना। २. किर किर शब्द करना।
किराँची–संज्ञा स्त्री० १ वह बैल-गाड़ी जिस पर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है। २. माल-गाड़ी का डब्बा।
किरात–संज्ञा पुं० [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] एक प्राचीन जंगली जाति।
किराना–संज्ञा पुं० दे० "केराना"।
क्रि० स० दे० "केराना"।
किरानी–संज्ञा पुं० दे० "केरानी"।
किराया–संज्ञा पुं० भाड़ा।
किरायेदार–संज्ञा पुं० कुछ दाम देकर किसी दूसरे की वस्तु कुछ काल तक काम में लानेवाला।
किरासन–संज्ञा पुं० मिट्टी का तेल।
किरिच–संज्ञा स्त्री० दे० "किरच"।
किरिन†–संज्ञा स्त्री० दे० "किरण"।
किरिम–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।
किरिया॥†–संज्ञा स्त्री० १. शपथ। २. मृतकर्म।
किरीट–संज्ञा पुं० एक प्रकार का शिरोभूषण जो माथे पर बाँधा जाता था।
किरोलना–क्रि० स० करोदना। खुरचना।
किलक–संज्ञा स्त्री० किलकने या हर्ष-ध्वनि करने की क्रिया।
किलकना–क्रि० अ० किलकार मारना।
किलकार–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।
किलकारी–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।
किलकिला–संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि।

की वसूली के लिये सरकार द्वारा जब्त किया जाता।

कुर्मी–संज्ञा पुं० दे० "कुनबी"।

कुलंग–संज्ञा पुं० मुर्गा।

कुलंजन–संज्ञा पुं० १. अदरक की तरह का एक पौधा जिसकी जड़ गरम और दीपन होती है। २. पान की जड़।

कुल–संज्ञा पुं० वंश।
वि० समस्त।

कुलकना–क्रि० अ० आनंदित होना।

कुलकलंक–संज्ञा पुं० अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।

कुलकानि–संज्ञा स्त्री० कुल की मर्यादा।

कुलकुलाना–क्रि० अ० कुल कुल शब्द करना।

कुलक्षण–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुलक्षणी] बुरा लक्षण।
वि० [स्त्री० कुलक्षणा] बुरे लक्षण-वाला।

कुलच्छन–संज्ञा पुं० दे० "कुलक्षण"।

कुलच्छनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुल-क्षणी"।

कुलट–वि० पुं० [स्त्री० कुलटा] बद-चलन।

कुलटा–वि० स्त्री० छिनाल। (स्त्री)
संज्ञा स्त्री० वह परकीया नायिका जो बहुत पुरुषों से प्रेम रखती हो।

कुलधर्म–संज्ञा पुं० कुल-परंपरा से चला आता हुआ कर्त्तव्य।

कुलपति–संज्ञा पुं० १. घर का मालिक। २. वह ऋषि जो दस हज़ार विद्या-र्थियों को शिक्षा दे।

कुलफ़०†–संज्ञा पुं० ताला।

कुलफ़त–संज्ञा स्त्री० चिंता।

कुलफा–संज्ञा पुं० एक साग।

कुलफ़ी–संज्ञा स्त्री० १. पेंच। २. टीन आदि का चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ़ जमाते हैं।

कुलबुल–संज्ञा पुं० [संज्ञा कुलबुलाहट] छोटे छोटे जीवों के हिलने डोलने की आहट।

कुलबुलाना–क्रि० अ० १. डोलना। २. चंचल होना।

कुलबोरन†–वि० कुल में दाग़ लगाने-वाला।

कुलवधू–संज्ञा स्त्री० कुलवती स्त्री। मर्यादा से रहनेवाली स्त्री।

कुलवंत–वि० [स्त्री० कुलवंती] कुलीन।

कुलवान्–वि० [स्त्री० कुलवती] कुलीन।

कुलह–संज्ञा स्त्री० १. टोपी। २. शि-कारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन।

कुलहा०†–संज्ञा पुं० दे० "कुलह"।

कुलही–संज्ञा स्त्री० कनटोप।

कुलांगार–संज्ञा पुं० कुल का नाश करनेवाला।

कुलाँच, कुलाँट०–संज्ञा स्त्री० छलाँग।

कुलाबा–संज्ञा पुं० लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाज़ू से जकड़ा रहता है।

कुलाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुलाली] १. कुम्हार। २. जंगली मुर्गा।

कुलाहल०–संज्ञा पुं० दे० "कोला-हल"।

कुलिंग–संज्ञा पुं० पक्षी।

कुलिक–संज्ञा पुं० १. शिल्पकार। २. कुल का प्रधान पुरुष।

कुलिश–संज्ञा पुं० १. हीरा। २. वज्र

कुली–संज्ञा पुं० मज़दूर।

कुलीन–वि० [संज्ञा कुलीनता] १.

संज्ञा पुं० मछली खानेवाली एक छोटी चिड़िया।
किलकिलाना–क्रि० अ० १. हर्षध्वनि करनेवाला। २. हलागुल्ला करना।
किलकिलाहट–संज्ञा स्त्री० किलकिलाने का शब्द या भाव।
किलनी–संज्ञा स्त्री० पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक कीड़ा।
किलबिलाना–क्रि० अ० दे० "कुलबुलाना"।
किलवाना–क्रि० स० कील लगवाना या जड़वाना।
किला–संज्ञा पुं० दुर्ग।
किलाना–क्रि० स० दे० "किलवाना"।
किलाबंदी–संज्ञा स्त्री० दुर्ग-निर्माण।
किलावा–संज्ञा पुं० हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा जिसमें पैर फँसाकर महावत उसे चलाता है।
किलोल–संज्ञा पुं० दे० "कलोल"।
किल्लत–संज्ञा स्त्री० १.कमी। २.तंगी।
किल्ला–संज्ञा पुं० बहुत बड़ी कील या मेख। खूँटा।
किल्ली–संज्ञा स्त्री० १. कील। २. किसी कल या पेंच की मुठिया जिसे घुमाने से वह चले।
किल्विष–संज्ञा पुं० पाप।
किवाड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० किवाड़ी] कपाट।
किशमिश–संज्ञा स्त्री० [वि० किशमिशी] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर।
किशमिशी–वि० १. जिसमें किशमिश हो। २. किशमिश के रंग का। संज्ञा पुं० एक प्रकार का अमौआ रंग।
किशलय–संज्ञा पुं० नया निकला हुआ पत्ता। कोमल पत्ता।
किशोर–संज्ञा पुं० [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. पुत्र।
किश्त–संज्ञा स्त्री० शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना। शह।
किश्ती–संज्ञा स्त्री० १. नाव। २. शतरंज का एक मोहरा। हाथी।
किष्किंधा–संज्ञा स्त्री० किष्किंध पर्वत-श्रेणी।
किस–सर्व० 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
किसब०–संज्ञा पुं० दे० "कसब"।
किसबत–संज्ञा स्त्री० वह थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।
किसमत–संज्ञा स्त्री० दे० "क़िस्मत"।
किसलय–संज्ञा पुं० दे० "किशलय"।
किसान–संज्ञा पुं० खेतिहर।
किसानी–संज्ञा स्त्री० खेती।
किसी–सर्व०, वि० "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है; जैसे—किसी ने।
किसू०–सर्व० दे० "किसी"।
क़िस्त–संज्ञा स्त्री० कई बार करके रुपया या देना चुकाने का ढंग।
क़िस्तबंदी–संज्ञा स्त्री० थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग।
क़िस्तवार–क्रि० वि० क़िस्त करके।
क़िस्म–संज्ञा स्त्री० १. भेद। तरह। २. ढंग।
क़िस्मत–संज्ञा स्त्री० प्रारब्ध।
क़िस्मतवर–वि० भाग्यवान्।
क़िस्सा–संज्ञा पुं० कहानी।

अच्छे घराने का। २. पवित्र।
कुलुफा‡–संज्ञा पुं० ताला।
कुलेल–संज्ञा स्त्री० क्रीड़ा।
कुलेलना॥–क्रि० अ० क्रीड़ा करना।
कुल्या–संज्ञा स्त्री० नहर।
कुल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुल्ली] मुँह को साफ़ करने के लिये उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया।
कुल्ली–संज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।
कुल्हड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा।
कुल्हाड़ी–संज्ञा स्त्री० [हिं० कुल्हाड़ा का स्त्री० अल्पा०] छोटा कुल्हाड़ा।
कुल्हिया–संज्ञा स्त्री० छोटा पुरवा या कुल्हड़।
कुवलय–संज्ञा पुं० कमल।
कुवाच्य–वि० जो कहने योग्य न हो। गंदा।
संज्ञा पुं० गाली।
कुवार–संज्ञा पुं० [वि० कुवारी] आश्विन का महीना।
कुविचार–संज्ञा पुं० बुरा विचार।
कुविचारी–वि० [स्त्री० कुविचारिणी] बुरे विचारवाला।
कुबेर–संज्ञा पुं० एक देवता जो यक्षों के राजा तथा इंद्र की नौ निधियों के भंडारी समझे जाते हैं।
कुश–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुशा, कुशी] १. कास की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था। २. रामचंद्र का एक पुत्र।
कुशल–वि० [स्त्री० कुशला] १. चतुर। २. राज़ी-खुशी।
कुशल-क्षेम–संज्ञा पुं० राज़ी-खुशी।
कुशलता–संज्ञा स्त्री० १. चतुराई। २. योग्यता।
कुशलाई, कुशलात॥–संज्ञा स्त्री० कल्याण।
कुशाग्र–वि० तीव्र।
कुशादा–वि० [संज्ञा कुशादगी] विस्तृत।
कुशासन–संज्ञा पुं० कुश का बना हुआ आसन।
कुशिक–संज्ञा पुं० विश्वामित्र।
कुशीनार–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ शाल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का निर्वाण हुआ था।
कुशीलव–संज्ञा पुं० १. कवि। २. नट।
कुश्ता–संज्ञा पुं० भस्म।
कुश्ती–संज्ञा स्त्री० मल्ल-युद्ध।
कुश्तीबाज़–वि० कुश्ती लड़नेवाला।
कुष्ठ–संज्ञा पुं० कोढ़।
कुष्ठी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुष्ठिनी] कोढ़ी।
कुष्मांड–संज्ञा पुं० कुम्हड़ा।
कुसंग–संज्ञा पुं० दे० "कुसंगति"।
कुसंगति–संज्ञा स्त्री० बुरों का संग।
कुसंस्कार–संज्ञा पुं० चित्त में बुरी बातों का जमना। बुरी वासना।
कुसगुन–संज्ञा पुं० असगुन।
कुसमय–संज्ञा पुं० १. बुरा समय। २ अनुपयुक्त अवसर।
कुसल॥‡–वि० दे० "कुशल"।
कुसलई॥–संज्ञा स्त्री० निपुणता।
कुसलाई॥–संज्ञा स्त्री० कुशलता।
कुसली॥–वि० दे० "कुशली"।
‡संज्ञा पुं० आम की गुठली।
कुसवारी–संज्ञा पुं० १. रेशम का जंगली कीड़ा। २. रेशम का कोया।

की–अव्य० हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग रूप ।
कीक–संज्ञा पुं० चीत्कार ।
कीकना–क्रि० अ० की की करके चिल्लाना । चीत्कार करना ।
कीकर–संज्ञा पुं० बबूल ।
कीच–संज्ञा पुं० कीचड़ ।
कीचड़–संज्ञा पुं० १. पानी मिली हुई धूल या मिट्टी । २. आँख का सफ़ेद मल ।
कीट–संज्ञा पुं० कीड़ा ।
संज्ञा स्त्री० मल ।
कीड़ा–संज्ञा पुं० छोटा उड़ने या रेंगने-वाला जंतु ।
कीड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा कीड़ा ।
कीननां†–क्रि० स० ख़रीदना ।
कीप–संज्ञा स्त्री० वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन में इसलिये लगाते हैं जिसमें द्रव पदार्थ उसमें डालते समय बाहर न गिरे ।
क़ीमत–संज्ञा स्त्री० दाम ।
क़ीमती–वि० बहुमूल्य ।
कीमिया–संज्ञा स्त्री० रसायन ।
कीर–संज्ञा पुं० १. सुग्गा । २. बहेलिया ।
कीरति*–संज्ञा स्त्री० दे० "कीर्त्ति" ।
कीर्त्तन–संज्ञा पुं० १. गुणकथन । २. कृष्णलीला-संबंधी भजन और कथा आदि ।
कीर्त्तनिया–संज्ञा पुं० कीर्त्तन करने-वाला ।
कीर्त्ति–संज्ञा स्त्री० १. पुण्य । २. यश ।
कीर्त्तिमान्–वि० यशस्वी ।
कीर्त्तिस्तंभ–संज्ञा पुं० १. वह स्तंभ जो किसी की कीर्त्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय । २. वह कार्य्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्त्ति स्थायी हो ।
कील–संज्ञा स्त्री० १. काँटा । २. नाक में पहनने का एक छोटा आभूषण । लौंग ।
कीलक–संज्ञा पुं० खूँटी ।
कीलन–संज्ञा पुं० बंधन ।
कीलना–क्रि० स० १. कील लगाना । २. वश में करना ।
कीला–संज्ञा पुं० बड़ी कील ।
कीलाल–संज्ञा पुं० १. अमृत । २. जल ।
कीलित–वि० जिसमें कील जड़ी हो ।
कीली–संज्ञा स्त्री० किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील जिस पर वह चक्र घूमता है ।
कीश–संज्ञा पुं० बंदर ।
कुँअर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँअरि] १. लड़का । २. राजकुमार ।
कुँअर-विलास–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान या चावल ।
कुँआरा–वि० [स्त्री० कुँआरी] बिन ब्याहा ।
कुँई–संज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी" ।
कुंकुम–संज्ञा पुं० १. केसर । २. रोली जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं ।
कुंकुमा–संज्ञा पुं० झिल्ली की कुप्पी या ऐसा बना हुआ लाख का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भरकर होली के दिनों में दूसरों पर मारते हैं ।
कुंज–संज्ञा पुं० वह स्थान जो वृक्ष, लता आदि से मंडप की तरह ढका हो ।
संज्ञा पुं० वे बूटे जो दुशाले के कोनों पर बनाए जाते हैं ।

कुसाइत–संज्ञा स्त्री० बुरा मुहूर्त।
कुसीद–संज्ञा पुं० [वि० कुसीदिक] १. सूद। २. ब्याज पर दिया हुआ धन।
कुसुंब–संज्ञा पुं० एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी जाठ और गाड़ियाँ बनाने के काम में आती है।
कुसुंभ–संज्ञा पुं० कुसुम। बर्रें।
कुसुंभी–वि० कुसुम के रंग का। लाल।
कुसुम–संज्ञा पुं० [वि० कुसुमित] १. फूल। २. आँख का एक रोग। ३. रजोदर्शन।
संज्ञा पुं० दे० "कुसुंब"।
संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं।
कुसुमपुर–संज्ञा पुं० पटना नगर का एक प्राचीन नाम।
कुसुमबाण–संज्ञा पुं० कामदेव।
कुसुमस्तवक–संज्ञा पुं० दंडक छंद का एक भेद।
कुसुमशर–संज्ञा पुं० कामदेव।
कुसुमांजलि–संज्ञा स्त्री० पुष्पांजलि।
कुसुमाकर–संज्ञा पुं० १. वसंत। २. छप्पय का एक भेद।
कुसुमायुध–संज्ञा पुं० कामदेव।
कुसुमावलि–संज्ञा स्त्री० फूलों का गुच्छा। फूलों का समूह।
कुसुमित–वि० फूला हुआ।
कुसूत–संज्ञा पुं० १. बुरा सूत। २. कुप्रबंध।
कुसेसय०–संज्ञा पुं० दे० "कुशेशय"।
कुहक–संज्ञा पुं० १. धोखा। २. धूर्त। ३. मुर्गे की कूक।
कुहकना–क्रि० अ० पक्षी का मधुर स्वर में बोलना।
कुहनी–संज्ञा स्त्री० हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी।
कुहप–संज्ञा पुं० राक्षस।
कुहर–संज्ञा पुं० छेद।
कुहरा–संज्ञा पुं० जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंढक पाकर वायु की भाप में जमने से उत्पन्न होता है।
कुहराम–संज्ञा पुं० १. रोना-पीटना। २. हलचल।
कुहाना०†–क्रि० अ० रिसाना।
कुहारा०–संज्ञा पुं० दे० "कुल्हाड़ा"।
कुहासा†–संज्ञा पुं० दे० "कुहरा"।
कुही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की शिकारी चिड़िया। कुहर।
कुहुक–संज्ञा पुं० पक्षियों का मधुर स्वर। पीक।
कुहुकना–क्रि० अ० पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना।
कहू–संज्ञा स्त्री० १. अमावास्या, जिसमें चंद्रमा बिलकुल दिखलाई न दे। २. मोर या कोयल की बोली।
कूँच–संज्ञा स्त्री० मोटी नस जो एँड़ी के ऊपर या टखने के नीचे होती है।
कूँचना†–क्रि० स० दे० "कुचलना"।
कूँचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कूँची] झाड़ू।
कूँची–संज्ञा स्त्री० १. कूँचा। छोटा झाड़ू। २. कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा जिससे चीज़ों की मैल साफ़ करते या उन पर रंग फेरते हैं। ३. चित्रकार की रंग भरने की कलम।
कूँज–संज्ञा पुं० क्रौंच पक्षी।
कूँड़–संज्ञा पुं० मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के

कुंजकुटीर–संज्ञा स्त्री० कुंजगृह ।

कुंजगली–संज्ञा स्त्री० १. बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ । २. पतली तंग गली ।

कुँजड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती है ।

कुंजर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुंजरा, कुंजरी] हाथी ।
वि० श्रेष्ठ ।

कुंजविहारी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण ।

कुंजी–संज्ञा स्त्री० १. चाभी । २. टीका ।

कुंठ–वि० १. जो चोखा या तीक्ष्ण न हो । २. मूर्ख ।

कुंठित–वि० मंद ।

कुंड–संज्ञा पुं० १. चौड़े मुँह का एक गहरा बर्तन । २. बहुत छोटा तालाब ।

कुंडरा–संज्ञा पुं० कुंडा । मटका ।

कुंडल–संज्ञा पुं० १. बाली । २. छंद में वह मात्रिक गण जिसमें दो मात्राएँ हों, पर एक ही अक्षर हो । ३. बाईस मात्राओं का एक छंद ।

कुंडलाकार–वि० गोल ।

कुंडलिका–संज्ञा स्त्री० कुंडलिया छंद ।

कुंडलिया–संज्ञा स्त्री० एक मात्रिक छंद जो एक दोहे और एक रोला के योग से बनता है ।

कुंडली–संज्ञा स्त्री० जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला एक चक्र जिसमें बारह घर होते हैं ।
संज्ञा पुं० १. साँप । २. विष्णु ।

कुंडा–संज्ञा पुं० बड़ा मटका ।
संज्ञा पुं० दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें साँकल फँसाई जाती है और ताला लगाया जाता है ।

कुंडी–संज्ञा स्त्री० पत्थर या मिट्टी का, कटोरे के आकार का, बरतन जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं ।
संज्ञा स्त्री० ज़ंजीर की कड़ी ।

कुंत–संज्ञा पुं० भाला ।

कुंतल–संज्ञा पुं० केश ।

कुंता‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कुंती" ।

कुंती–संज्ञा स्त्री० युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता ।
संज्ञा स्त्री० बरछी ।

कुँथना–क्रि० अ० मारा-पीटा जाना ।

कुंद–संज्ञा पुं० १. जूही की तरह का एक पौधा जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं । २. कनेर का पेड़ । ३. कमल ।
वि० गुठला ।

कुंदन–संज्ञा पुं० बहुत अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िए नगीने जड़ते हैं ।
वि० स्वच्छ ।

कुँदरू–संज्ञा पुं० एक बेल जिसमें चार-पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं जिनकी तरकारी होती है ।

कुंदलता–संज्ञा स्त्री० छब्बीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति ।

कुंदा–संज्ञा पुं० १. लकड़ी का बड़ा, मोटा और बिना चीरा हुआ टुकड़ा जो प्रायः जलाने के काम में आता है । २. बंदूक का चौड़ा पिछला भाग । ३. बेंट ।
संज्ञा पुं० १. डैना । २. कुश्ती का एक पेंच ।
संज्ञा पुं० खोवा ।

कुंदी–संज्ञा स्त्री० १. कपड़ों की सिकुड़न

लिये कुएँ से पानी निकालते हैं।

कुँड़ा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० कूँड़ी] १. पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन। २. गमला। ३. रोशनी करने की बड़ी हाँड़ी।

कूँड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पथरी। २. छोटी नाँद।

कूँथना०†–क्रि० अ० काँखना। क्रि० स० मारना।

कूईं–संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी।

कूक–संज्ञा स्त्री० १. लंबी सुरीली ध्वनि। २. मोर या कोयल की बोली।
संज्ञा स्त्री० घड़ी या बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया।

कूकना–क्रि० अ० कोयल या मोर का बोलना।
क्रि० स० कमानी कसने के लिये घड़ी या बाजे में कुंजी भरना।

कूकर†–संज्ञा पुं० [स्त्री० कूकरी] कुत्ता।

कूकर-कौर–स्त्री०, पुं० १. वह जूठा भोजन जो कुत्ते के आगे डाला जाता है। २. तुच्छ वस्तु।

कूका–संज्ञा पुं० सिक्खों का एक पंथ।

कूच–संज्ञा पुं० प्रस्थान।

कूचा–संज्ञा पुं० छोटा रास्ता। गली।

कूज–संज्ञा स्त्री० ध्वनि।

कूजन–संज्ञा पुं० [वि० कूजित] मधुर शब्द बोलना (पक्षियों का)।

कूजना–क्रि० अ० कोमल और मधुर शब्द करना।

कूजा–संज्ञा पुं० १. मिट्टी का पुरवा। २. मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई अर्द्ध गोलाकार मिसरी।

कूजित–वि० जो बोला या कहा गया हो। ध्वनित।

कूट–संज्ञा पुं० १. पहाड़ की ऊँची चोटी। २. गूढ़ अर्थ की पहेली।
वि० झूठा।
संज्ञा स्त्री० कूट नाम की ओषधि।
संज्ञा स्त्री० काटने, कूटने या पीटने आदि की क्रिया।

कूटता–संज्ञा स्त्री० १. कठिनाई। २. छल।

कूटना–क्रि० स० १. किसी चीज़ को तोड़ने आदि के लिये उस पर बार बार कोई चीज़ पटकना। २. मारना।

कूटनीति–संज्ञा स्त्री० दाँव-पेंच की नीति या चाल। घात।

कूटयुद्ध–संज्ञा पुं० वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय।

कूटसाक्षी–संज्ञा पुं० झूठा गवाह।

कूटस्थ–वि० १. आला दर्जे का। २. अविनाशी। ३. गुप्त।

कूट्टू–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है। काफर।

कूड़ा–संज्ञा पुं० १. कतवार। २. निकम्मी चीज़।

कूड़ाखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता हो।

कूढ़–संज्ञा पुं० बोने की वह रीति जिसमें हलकी गहारी में बीज डाला जाता है।
वि० नासमझ।

कूढ़मग़ज़–वि० मंदबुद्धि।

कूत–संज्ञा स्त्री० वस्तु की संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान।

कूतना–क्रि० स० अनुमान करना।

और ललाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे मोगरी से कूटने की क्रिया। २. खूब मारना।

कुंदुर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीला गोंद जो दवा के काम आता है।

कुँदेरना–क्रि० स० खुरचना।

कुँदेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँदेरी] खरादनेवाला।

कुंभ–संज्ञा पुं० १. मिट्टी का घड़ा। २. हाथी के सिर के दोनों ओर ऊपर उभड़े हुए भाग। ३. ज्योतिष में दसवीं राशि। ४. एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है।

कुंभकर्ण–संज्ञा पुं० एक राक्षस जो रावण का भाई था।

कुंभकार–संज्ञा पुं० १. कुम्हार। २. मुर्गा।

कुंभज, कुंभजात–संज्ञा पुं० १. घड़े से उत्पन्न पुरुष। २. अगस्त्य मुनि।

कुंभसंभव–संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि।

कुंभिका–संज्ञा स्त्री० १. जलकुंभी। २. वेश्या।

कुँभिलाना*–क्रि० अ० दे० "कुम्हलाना"।

कुंभी–संज्ञा पुं० हाथी।
संज्ञा स्त्री० छोटा घड़ा।

कुंभीनस–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुंभीनसा] १. क्रूर साँप। २. रावण।

कुंभीर–संज्ञा पुं० नक्र या नाक नामक जल-जंतु।

कुँवर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुँवरि] १. लड़का। २. राजपुत्र।

कुँवरेटा–संज्ञा पुं० बालक।

कुँवारा–वि० [स्त्री० कुँवारी] बिन ब्याहा।

कुँहकुँह*–संज्ञा पुं० केसर।

कु–उप० एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में "नीच", "कुत्सित" आदि का भाव बढ़ाता है।

कुआँ–संज्ञा पुं० कूप। इँदारा।

कुआर–संज्ञा पुं० [वि० कुआरी] आश्विन।

कुइयाँ–संज्ञा स्त्री० छोटा कुआँ।

कुईं–संज्ञा स्त्री० दे० "कुइयाँ"।
संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी।

कुकटी–संज्ञा स्त्री० कपास की एक जाति जिसकी रूई ललाई लिए होती है।

कुकड़ना–क्रि० अ० सिकुड़कर रह जाना।

कुकड़ी–संज्ञा स्त्री० कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा जो कातकर तकले पर से उतारा जाता है।

कुकरी*†–वन-मुरगी।

कुकरौंधा–संज्ञा पुं० पालक से मिलता-जुलता एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों से कड़ी गंध निकलती है।

कुकर्म–संज्ञा पुं० बुरा या खोटा काम।

कुकर्मी–वि० बुरा काम करनेवाला। पापी।

कुकुर–संज्ञा पुं० कुत्ता।

कुकुरखाँसी–संज्ञा स्त्री० वह सूखी खाँसी जिसमें कफ न गिरे।

कुकुरदंत–संज्ञा पुं० [वि० कुकुरदंता] वह दाँत जो किसी किसी को साधारण दाँतों के अतिरिक्त और उनसे कुछ नीचे आड़ा निकलता है तथा जिसके कारण होंठ कुछ उठ जाता है।

कुकुरमुत्ता–संज्ञा पुं० एक प्रकार की खुमी जिसमें से बुरी गंध निकलती है।

कूद–संज्ञा स्त्री० कूदने की क्रिया या भाव।
कूदना–क्रि० अ० १. उछलना। २. बीच में सहसा आ मिलना या दखल देना।
क्रि० सं० लाँघ जाना।
कूप–संज्ञा पुं० कुआँ।
कूपमंडूक–संज्ञा पुं० १. कुएँ में रहनेवाला मेढक। २. बहुत थोड़ी जानकारी का मनुष्य।
कूबड़–संज्ञा पुं० टेढ़ापन।
कूबरी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुबरी"।
कूर–वि० १. निर्दय। २. भयंकर।
कूरता–संज्ञा स्त्री० १. निर्दयता। २. मूर्खता।
कूरपन–संज्ञा पुं० दे० "कूरता"।
कूरम॰–संज्ञा पुं० दे० "कूर्म"।
कूरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कूरी] १. ढेर। २. भाग।
कूर्चिका–संज्ञा स्त्री० १. कूँची। २. कुंजी।
कूर्म–संज्ञा पुं० १. कच्छप। २. पृथिवी। ३. विष्णु का दूसरा अवतार।
कूर्मपुराण–संज्ञा पुं० अठारह मुख्य पुराणों में से एक।
कूल–संज्ञा पुं० १. किनारा। २. समीप। ३. बड़ा नाला। ४. तालाब।
कूल्हा–संज्ञा पुं० कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।
कूवत–संज्ञा स्त्री० बल।
कूबर–संज्ञा पुं० १. रथ का वह भाग जिस पर जूआ बाँधा जाता है। २. रथ में रथी के बैठने का स्थान। ३. कुबड़ा।
कूष्मांड–संज्ञा पुं० कुम्हड़ा।
कूह॰–संज्ञा स्त्री० १. चिंघाड़। २. चीख।
कृच्छ्र–संज्ञा पुं० कष्ट।
वि० कष्टसाध्य।
कृत–वि० १. किया हुआ। २. बनाया हुआ।
संज्ञा पुं० १. सतयुग। २. चार की संख्या।
कृतकार्य–वि० सफल-मनोरथ।
कृतकृत्य–वि० कृतार्थ।
कृतघ्न–वि० [संज्ञा कृतघ्नता] किए हुए उपकार को न माननेवाला।
कृतघ्नी॰†–वि० दे० "कृतघ्न"।
कृतज्ञ–वि० [संज्ञा कृतज्ञता] किए हुए उपकार को माननेवाला।
कृतज्ञता–संज्ञा स्त्री० किए हुए उपकार को मानना। एहसानमंदी।
कृतयुग–संज्ञा पुं० सतयुग।
कृतविद्य–वि० पंडित।
कृतांत–संज्ञा पुं० १. अंत करनेवाला। २. यम।
कृतार्थ–वि० १. सफल-मनोरथ। २. संतुष्ट।
कृति–संज्ञा स्त्री० १. करतूत। २. कार्य।
कृती–वि० १. कुशल। २. साधु।
कृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. मृगचर्म। २. चमड़ा।
कृत्तिवास–संज्ञा पुं० महादेव।
कृत्य–संज्ञा पुं० कर्म।
कृत्या–संज्ञा स्त्री० १. अभिचार। २. दुष्टा या कर्कशा स्त्री।
कृत्रिम–वि० नकली।
कृदंत–संज्ञा पुं० वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने।
कृपण–संज्ञा पुं० [वि० कृपणता] कंजूस।
कृपणता–संज्ञा स्त्री० कंजूसी।

कुकुही०†–संज्ञा स्त्री० वनमुर्गी।
कुक्कुट–संज्ञा पुं० मुर्गा।
कुक्कुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुक्कुरी] कुत्ता।
कुक्ष–संज्ञा पुं० पेट।
कुक्षि–संज्ञा स्त्री० १. पेट। २. कोख। संज्ञा पुं० १. एक दानव। २. राजा बलि।
कुखेत–संज्ञा पुं० बुरा स्थान।
कुख्यात–वि० निंदित।
कुख्याति–संज्ञा स्त्री० निंदा।
कुगति–संज्ञा स्त्री० दुर्गति।
कुघात–संज्ञा पुं० कुअवसर।
कुच–संज्ञा पुं० स्तन।
कुचकुचाना–क्रि० स० लगातार कोंचना।
कुचना०–क्रि० अ० सिकुड़ना।
कुचक्र–संज्ञा पुं० षड्यंत्र।
कुचक्री–संज्ञा पुं० षड्यंत्र रचनेवाला।
कुचलना–क्रि० स० १. मसलना। २. पैरों से रौंदना।
कुचला–संज्ञा पुं० एक वृक्ष जिसके विषैले बीज औषध के काम में आते हैं।
कुचाल–संज्ञा स्त्री० १. बुरा आचरण। २. बदमाशी।
कुचाली–संज्ञा पुं० कुमार्गी।
कुचाह०–संज्ञा स्त्री० अशुभ बात।
कुचील०†–वि० मैला-कुचैला।
कुचीला०†–वि० दे० "कुचैला"।
कुचेष्ट–वि० बुरी चेष्टावाला।
कुचेष्टा–संज्ञा स्त्री० [वि० कुचेष्ट] बुरी चेष्टा।
कुचैन०–संज्ञा स्त्री० कष्ट। वि० व्याकुल।
कुचैला–वि० [स्त्री० कुचैली] १. जिसका कपड़ा मैला हो। २. मैला।
कुच्छित०–वि० दे० "कुत्सित"।
कुछ–वि० १. थोड़ा सा। २. कोई।
कुजंत्र०–संज्ञा पुं० बुरा यंत्र।
कुज–संज्ञा पुं० १. मंगल ग्रह। २. वृक्ष।
कुजा–संज्ञा स्त्री० १. जानकी। २. कात्यायिनी।
कुजाति–संज्ञा स्त्री० बुरी जाति। संज्ञा पुं० बुरी जाति का आदमी।
कुजोग०†–संज्ञा पुं० १. कुसंग। २. बुरा अवसर।
कुजोगी०–वि० असंयमी।
कुटंत‡–संज्ञा स्त्री० मार।
कुट–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुटी] १. घर। २. कोट। संज्ञा पुं० कूटा हुआ टुकड़ा।
कुटका–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कुटकी] छोटा टुकड़ा।
कुटज–संज्ञा पुं० १. कुरैया। २. अगस्त्य मुनि।
कुटनहारी–संज्ञा स्त्री० धान कूटनेवाली स्त्री।
कुटना–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला। दूत। २. चुगलखोर। संज्ञा पुं० वह हथियार जिससे कुटाई की जाय। क्रि० अ० कूटा जाना।
कुटनापा–संज्ञा पुं० दे० "कुटनपन"।
कुटनी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाली स्त्री। २. दो व्यक्तियों में झगड़ा करानेवाली।
कुटवाना–क्रि० स० कूटने की क्रिया दूसरे से कराना।

कृपनाई॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कृपणता"।
कृपा–संज्ञा स्त्री॰ [वि॰ कृपालु] दया।
कृपाण–संज्ञा पुं॰ तलवार।
कृपापात्र–संज्ञा पुं॰ कृपा का अधिकारी।
कृपायतन–संज्ञा पुं॰ अत्यंत कृपालु।
कृपाल॰†–वि॰ दे॰ "कृपालु"।
कृपालु–वि॰ कृपा करनेवाला।
कृपिण॰†–वि॰ दे॰ "कृपण"।
कृमि–संज्ञा पुं॰ [वि॰ कृमिल] छोटा कीड़ा।
कृमिज–वि॰ कीड़ों से उत्पन्न।
कृमिरोग–संज्ञा पुं॰ आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।
कृश–वि॰ १. दुबला-पतला। २. छोटा।
कृशानु–संज्ञा पुं॰ अग्नि।
कृशित–वि॰ दुबला-पतला।
कृशोदरी–वि॰ स्त्री॰ पतली कमरवाली (स्त्री)।
कृषक–संज्ञा पुं॰ किसान।
कृषि–संज्ञा स्त्री॰ [वि॰ कृष्य] खेती।
कृष्ण–वि॰ काला।
संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ कृष्णा] १. यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के प्रधान अवतारों में हैं। २. अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद्। ३. अँधेरा पक्ष।
कृष्णचंद्र–संज्ञा पुं॰ दे॰ "कृष्ण" (१)।
कृष्णपक्ष–संज्ञा पुं॰ अँधेरा पाख।
कृष्णसार–संज्ञा पुं॰ काला हिरन।
कृष्णा–संज्ञा स्त्री॰ १. द्रौपदी। २. पीपल। पिप्पली। ३. दक्षिण देश की एक नदी।
कृष्णाष्टमी–संज्ञा स्त्री॰ भादों के कृष्णपक्ष की अष्टमी, जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।
कृष्य–वि॰ खेती करने योग्य (भूमि)।
कें कें–संज्ञा स्त्री॰ १. चिड़ियों का कष्टसूचक शब्द। २. झगड़ा या असंतोष-सूचक शब्द।
केंचली–संज्ञा स्त्री॰ सर्प आदि के शरीर पर का झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है।
केंचुआ–संज्ञा पुं॰ सूत के आकार का एक बरसाती कीड़ा जो एक बालिश्त लंबा होता है।
केंचुली–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "केंचली"।
केंद्र–संज्ञा पुं॰ ठीक मध्य का विंदु। २. मुख्य या प्रधान स्थान।
केंद्री–वि॰ केंद्र में स्थित।
के–प्रत्य॰ संबंधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप।
†सर्व॰ कौन ?
केउ†–सर्व॰ कोई।
केकड़ा–संज्ञा पुं॰ पानी का एक कीड़ा।
केकय–संज्ञा पुं॰ १. व्यास और शाल्मली नदी की दूसरी ओर के देश का प्राचीन नाम। २. [स्त्री॰ केकयी] केकय देश का राजा या निवासी। ३. दशरथ के श्वशुर और कैकेयी के पिता।
केकयी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "कैकेयी"।
केका–संज्ञा स्त्री॰ मोर की बोली।
केकी–संज्ञा पुं॰ मोर। मयूर।
केचित्–सर्व॰ कोई कोई।
केड़ा–संज्ञा पुं॰ नया पौधा।
केत–संज्ञा पुं॰ १. घर। २. स्थान। ३. ध्वजा।
केतक–संज्ञा पुं॰ केवड़ा।
वि॰ १. कितने। २. बहुत।

कुटाई–संज्ञा स्त्री० १. कूटने का काम। २. कूटने की मज़दूरी।

कुटिया–संज्ञा स्त्री० झोपड़ी।

कुटिल–वि० [स्त्री० कुटिला] १. वक्र। २. कपटी।
संज्ञा पुं० शठ।

कुटिलता–संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ापन। २. छल।

कुटिलाई०–संज्ञा स्त्री० दे० "कुटिलता"।

कुटी–संज्ञा स्त्री० झोपड़ी।

कुटीचर–संज्ञा पुं० दे० "कुटीचक"।
संज्ञा पुं० कपटी।

कुटीर–संज्ञा पुं० दे० "कुटी"।

कुटुंब–संज्ञा पुं० परिवार।

कुटुंबी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुटुंबिनी] १. परिवारवाला। २. संबंधी।

कुटुम०†–संज्ञा पुं० दे० "कुटुंब"।

कुटेक–संज्ञा स्त्री० अनुचित हठ।

कुटेव–संज्ञा स्त्री० खराब आदत।

कुट्टनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुटनी"।

कुट्टी–संज्ञा स्त्री० १. चारे को छोटे छोटे टुकड़ों में काटने की क्रिया। २. मैत्री-भंग।

कुठला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कुठली] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुठाँउँ–संज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव"।

कुठाँव०†–संज्ञा स्त्री० बुरी ठौर।

कुठाट–संज्ञा पुं० १. बुरा साज़। २. बुरा आयोजन।

कुठार–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुठारी] १. कुल्हाड़ी। २. परशु।

कुठारी–संज्ञा स्त्री० १. कुल्हाड़ी। २. नाश करनेवाला।

कुठाहर०–संज्ञा पुं० १. बुरा स्थान। २. बुरा अवसर।

कुठौर–संज्ञा पुं० बुरी जगह।

कुड़कुड़ाना–क्रि० अ० मन ही मन कुढ़ना।

कुड़कुड़ी–संज्ञा स्त्री० भूख या अजीर्ण से होनेवाली पेट की गुड़गुड़ाहट।

कुड़बुड़ाना–क्रि० अ० कुड़कुड़ाना।

कुडौल–वि० भद्दा।

कुढंग–संज्ञा पुं० बुरा ढंग। कुचाल। बुरी रीति।
वि० १. बुरे ढंग का। बेढंगा। भद्दा। बुरा। २. बुरी तरह का।

कुढंगा–वि० [स्त्री० कुढंगी] बेढंगा।

कुढ़न–संज्ञा स्त्री० चिढ़।

कुढ़ना–क्रि० अ० १. मन ही मन खीझना या चिढ़ना। २. जलना।

कुढव–वि० बेढब।

कुढ़ाना–क्रि० स० चिढ़ाना।

कुणप–संज्ञा पुं० १. शव। २. बरछा।

कुणपाशी–संज्ञा पुं० मुर्दा खानेवाला जंतु।

कुतका–संज्ञा पुं० १. मोटा डंडा। २. भंग-घोटना।

कुतना–क्रि० अ० कूता जाना।

कुतप–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. अग्नि।

कुतरना–क्रि० स० दाँत से छोटा सा टुकड़ा काट लेना।

कुतर्क–संज्ञा पुं० बुरा तर्क। वितंडा।

कुतर्की–संज्ञा पुं० व्यर्थ तर्क करनेवाला।

कुतवार०–संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतवाल–संज्ञा पुं० दे० "कोतवाल"।

कुतिया–संज्ञा स्त्री० कुत्ती।

केतकर॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "केतकी"।
केतकी–संज्ञा स्त्री॰ एक छोटा पौधा जिसमें कांड के चारों ओर तलवार के से लंबे काँटेदार पत्ते निकले होते हैं और कोश में बंद मंजरी के रूप में बहुत सुगंधित फूल लगते हैं।
केतन–संज्ञा पुं॰ १. निमंत्रण। २. ध्वजा। ३. घर।
केता॰†–वि॰ [स्त्री॰ केती] कितना।
केतिक॰†–वि॰ कितना।
केतु–संज्ञा पुं॰ १. निशान। २. पताका। ३. पुच्छल तारा। ४. एक बुरा ग्रह।
केतुमान्–वि॰ १. तेजवान्। २. ध्वजावाला।
केतुवृक्ष–संज्ञा पुं॰ पुराणानुसार मेरु के चारों ओर के पर्वतों पर के वृक्षों का नाम। ये चार हैं—कदंब, जामुन, पीपल और बरगद।
केतो॰–वि॰ [स्त्री॰ केती] कितना।
केदार–संज्ञा पुं॰ १. कियारी। २. थाँवला। ३. दे॰ "केदारनाथ"।
केदारनाथ–संज्ञा पुं॰ हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिसके शिखर पर केदारनाथ नामक शिवलिंग है।
केन–संज्ञा पुं॰ एक प्रसिद्ध उपनिषद्।
केयूर–संज्ञा पुं॰ बाँह में पहनने का भुजबंद।
केर†–प्रत्य॰ [स्त्री॰ केरी] का।
केरल–संज्ञा पुं॰ १. दक्षिण भारत का एक देश। कनारा। २. [स्त्री॰ केरली] केरल देश-वासी पुरुष।
केराना–संज्ञा पुं॰ नमक, मसाला, हलदी आदि चीज़ें जो पंसारियों के यहाँ मिलती हैं।
केरानी–संज्ञा पुं॰ १. वह जिसके माता पिता में से कोई। एक युरोपियन और दूसरा हिंदुस्तानी हो। २. क्लर्क।
केराव†–संज्ञा पुं॰ मटर।
केरोसिन–संज्ञा पुं॰ मिट्टी का तेल।
केला–संज्ञा पुं॰ गरम जगहों में होनेवाला एक पेड़ जिसके पत्ते गज़ सवा गज़ लंबे और फल लंबे, गूदेदार और मीठे होते हैं।
केलि–संज्ञा स्त्री॰ १. खेल। २. रति। ३. हँसी।
केलिकला–संज्ञा स्त्री॰ १. सरस्वती की वीणा। २. रति।
केवका–संज्ञा पुं॰ वह मसाला जो प्रसूता स्त्रियों को दिया जाता है।
केवट–संज्ञा पुं॰ एक संकर जाति जो आजकल नाव चलाने तथा मिट्टी खोदने का काम करती है।
केवटी दाल–संज्ञा स्त्री॰ दो या अधिक प्रकार की, एक में मिली हुई, दाल।
केवड़ई–वि॰ हलका पीला और हरा मिला हुआ सफ़ेद।
केवड़ा–संज्ञा पुं॰ १. सफ़ेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। २. इस पौधे का फूल। ३. इसके फूल से उतारा हुआ सुगंधित जल।
केवल–वि॰ १. एकमात्र। २. शुद्ध। श्रेष्ठ।
क्रि॰ वि॰ मात्र। सिर्फ़।
केवलात्मा–संज्ञा पुं॰ १. पाप और पुण्य से रहित, ईश्वर। २. शुद्ध स्वभाववाला मनुष्य।
केवली–संज्ञा पुं॰ मुक्ति का अधिकारी साधु।

क़ुतुब–संज्ञा पुं० ध्रुव तारा।
क़ुतुबनुमा–संज्ञा पुं० वह यंत्र जिससे दिशा का ज्ञान होता है। दिग्दर्शक यंत्र।
कुतूहल–संज्ञा पुं० [वि० कुतूहली] १. किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा। २. आश्चर्य।
कुतूहली–वि० जिसे वस्तुओं को देखने या जानने की अधिक उत्कंठा हो।
कुत्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुत्ती] १. कुक्कुर। २. क्षुद्र।
कुत्सा–संज्ञा स्त्री० निंदा।
कुत्सित–वि० १. नीच। २. निंदित।
कुदकना–क्रि० अ० दे० "कूदना"।
कुदक्का–संज्ञा पुं० उछल-कूद।
क़ुदरत–संज्ञा स्त्री० १. शक्ति। २. ईश्वरी शक्ति।
क़ुदरती–वि० ईश्वरीय।
कुदर्शन–वि० बदसूरत।
कुदाँव–संज्ञा पुं० कुघात।
कुदाई*–वि० छली।
कुदान–संज्ञा पुं० बुरा दान।
संज्ञा स्त्री० कूदने की क्रिया।
कुदाना–क्रि० स० कूदने में प्रवृत्त करना।
कुदाल–संज्ञा स्त्री० [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औज़ार।
कुदिन–संज्ञा पुं० आपत्ति का समय।
कुदिष्टि*–संज्ञा स्त्री० दे० "कुदृष्टि"।
कुदृष्टि–संज्ञा स्त्री० बुरी नज़र।
कुदेव–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
संज्ञा पुं० राक्षस।
कुद्रव–संज्ञा पुं० कोदो।
कुधर–संज्ञा पुं० १. पहाड़। २. शेषनाग।
कुधातु–संज्ञा स्त्री० १. बुरी धातु। २. लोहा।
कुनकुना–वि० आधा गरम।
कुनप–संज्ञा पुं० दे० "कुणप"।
क़ुनबा–संज्ञा पुं० कुटुंब।
कुनबी–संज्ञा पुं० कुरमी।
कुनवा–संज्ञा पुं० बर्तन आदि खरादनेवाला मनुष्य।
कुनह–संज्ञा स्त्री० [वि० कुनही] द्वेष।
कुनही–वि० द्वेष रखनेवाला।
कुनाम–संज्ञा पुं० बदनामी।
क़ुनैन–संज्ञा स्त्री० सिंकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो अँगरेज़ी चिकित्सा में ज्वर के लिये अत्यंत उपकारी माना जाता है।
कुपंथ–संज्ञा पुं० बुरा मार्ग।
कुपढ़–वि० अनपढ़।
कुपथ–संज्ञा पुं० बुरा रास्ता।
* संज्ञा पुं० वह भोजन जो स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो।
कुपथ्य–संज्ञा पुं० वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को हानिकारक हो।
कुपना*–क्रि० अ० दे० "कोपना"।
कुपाठ–संज्ञा पुं० बुरी सलाह।
कुपात्र–वि० अयोग्य।
कुपार*–संज्ञा पुं० समुद्र।
कुपित–वि० क्रुद्ध।
कुपुत्र–संज्ञा पुं० दुष्ट पुत्र।
कुप्पा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का बर्तन जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं।
कुप्पी–संज्ञा स्त्री० छोटा कुप्पा।

केघाँच–संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
केवा–संज्ञा पुं० १.कमल। २.केतकी।
संज्ञा पुं० बहाना।
केवाड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "किवाड़"।
केश–संज्ञा पुं० १. किरण। २. वरुण। ३. सूर्य्य। ४. सिर का बाल।
केशकर्म–संज्ञा पुं० बाल झाड़ने और गूँथने की कला।
केशपाश–संज्ञा पुं० बालों की लट।
केशरंजन–संज्ञा पुं० भँगरैया।
केशर–संज्ञा पुं० दे० "केसर"।
केशराज–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का भुजंगा पक्षी। २. भँगरैया।
केशरी–संज्ञा पुं० दे० "केसरी"।
केशव–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. कृष्ण-चंद्र।
केशविन्यास–संज्ञा पुं० बालों की सजावट।
केशांत–संज्ञा पुं० मुंडन।
केशिनी–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसके सिर के बाल सुंदर और बड़े हों।
केशी–संज्ञा पुं० [स्त्री० केशिनी] १. घोड़ा। २. सिंह।
वि० १. प्रकाशवाला। २. अच्छे बालोंवाला।
केस–संज्ञा पुं० दे० "केश"।
संज्ञा पुं० १. किसी चीज़ के रखने का खाना या घर। २. मुकद्दमा। ३. दुर्घटना।
केसर–संज्ञा पुं० १. बाल की तरह पतले पतले सींके या सूत जो फूलों के बीच में रहते हैं। २. एक पौधा जिसका केसर स्थायी सुगंध के लिये प्रसिद्ध है। ३. नागकेसर।
केसरिया–वि० १. केसर के रंग का। पीला। २. केसर-मिश्रित।
केसरी–संज्ञा पुं० १. सिंह। २. घोड़ा।
केसारी–संज्ञा स्त्री० दुबिया मटर।
केहरी॰–संज्ञा पुं० १. सिंह। २. घोड़ा।
केहि॰†–वि० किसको।
केहूँ॰–क्रि० वि० किसी प्रकार।
केहू†–सर्व० कोई।
कैंचा–वि० ऍचाताना।
संज्ञा पुं० बड़ी कैंची।
कैंची–संज्ञा स्त्री० कतरनी।
कै†–वि० कितना।
॰ अव्य० अथवा।
संज्ञा स्त्री० उलटी।
कैकस–संज्ञा पुं० राक्षस।
कैकेयी–संज्ञा स्त्री० १. कैकय गोत्र में उत्पन्न स्त्री। २. राजा दशरथ की रानी।
कैटभारि–संज्ञा पुं० विष्णु।
कैतव–संज्ञा पुं० १. धोखा। २. जुआ।
वि० १. धोखेबाज़। २. जुआरी।
कैतून–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बारीक लस जो कपड़ों में लगाई जाती है।
कैथ, कैथा–संज्ञा पुं० एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के कसैले और खट्टे फल लगते हैं।
कैथिन†–संज्ञा स्त्री० कायस्थ जाति की स्त्री।
कैथी–संज्ञा स्त्री० एक लिपि या लिखा-वट जो शीघ्र लिखी जाती है।
क़ैद–संज्ञा स्त्री० [वि० क़ैदी] १. बंधन। २. कारावास।
क़ैदक–संज्ञा स्त्री० काग़ज़ का बंद या पट्टी जिसमें काग़ज़ आदि रखे जाते हैं।
क़ैदख़ाना–संज्ञा पुं० जेलख़ाना।
क़ैद तनहाई–संज्ञा स्त्री० कालकोठरी।

कुफ़्र–संज्ञा पुं० मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत।
कुबंड–संज्ञा पुं० धनुष।
कुबजा–संज्ञा स्त्री० दे० "कुब्जा" या "कुबरी"।
कुबड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुबड़ी] वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई या झुक गई हो।
वि० टेढ़ा।
कुबड़ी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "कुबरी"। २. वह छड़ी जिसका सिरा झुका हुआ हो।
कुबरी–संज्ञा स्त्री० टेढ़िया।
कुबाक०–संज्ञा पुं० दे० "कुवाक्य"।
कुबानि–संज्ञा स्त्री० कुटेव।
कुबानी०–संज्ञा पुं० बुरा व्यापार।
कुबुद्धि–वि० दुर्बुद्धि।
संज्ञा स्त्री० मूर्खता।
कुबेला–संज्ञा स्त्री० बुरा समय।
कुब्ज–वि० [स्त्री० कुब्जा] कुबड़ा।
संज्ञा पुं० एक वायुरोग जिसमें छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है।
कुभंठी०–संज्ञा स्त्री० पतली लचीली टहनी।
कुमक–संज्ञा स्त्री० १. सहायता। २. पक्षपात।
कुमकी–वि० कुमक का। कुमक से संबंध रखनेवाला।
संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में सहायता करने के लिये सिखाई हुई हथनी।
कुमकुम–संज्ञा पुं० केसर।
कुमार–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुमारी] १. पाँच वर्ष की अवस्था का बालक। २. पुत्र। ३. युवराज।
वि० बिना ब्याहा।
कुमारग०–संज्ञा पुं० दे० "कुमार्ग"।
कुमारतंत्र–संज्ञा पुं० वैद्यक का वह भाग जिसमें बच्चों के रोगों का निदान और चिकित्सा हो।
कुमारिका–संज्ञा स्त्री० कुमारी।
कुमारी–संज्ञा स्त्री० बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या।
वि० स्त्री० बिना ब्याही।
कुमार्ग–संज्ञा पुं० [वि० कुमार्गी] बुरा मार्ग।
कुमार्गी–वि० [स्त्री० कुमार्गिनी] बदचलन।
कुमुख–वि० पुं० [स्त्री० कुमुखी] जिसका चेहरा देखने में अच्छा न हो।
कुमुद–संज्ञा पुं० १. कुईं। २. लाल कमल। ३. दक्षिण-पश्चिम कोण का दिग्गज।
कुमुदबंधु–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
कुमुदिनी–संज्ञा स्त्री० कुईं।
कुमुदिनीपति–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
कुमेरु–संज्ञा पुं० दक्षिणी ध्रुव।
कुम्हड़ा–संज्ञा पुं० एक फैलनेवाली बेल जिसके फलों की तरकारी होती है।
कुम्हड़ौरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बरी जो पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाती है।
कुम्हलाना–क्रि० अ० मुरझाना।
कुम्हार–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुम्हारिन] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।
कुम्ही०–संज्ञा स्त्री० जलकुंभी।
कुरंग–संज्ञा पुं० [स्त्री० कुरंगी] हिरन।
संज्ञा पुं० बुरा लक्षण।

क़ैद महज़–संज्ञा स्त्री० सादी क़ैद।
क़ैद सख़्त–संज्ञा स्त्री० वह क़ैद जिसमें क़ैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े।
क़ैदी–संज्ञा पुं० बंदी।
कैधौं॰†–अव्य० अथवा।
कैफ़–संज्ञा पुं० नशा।
कैफ़ियत–संज्ञा स्त्री० १. समाचार। २. ब्योरा।
कैफ़ी–वि० मतवाला।
कैबर†–संज्ञा स्त्री० तीर का फल।
कैबा†–संज्ञा स्त्री० अव्ययवत् कितनी बार।
कैरव–संज्ञा पुं० [स्त्री० कैरवी] १. कुमुद। २. सफ़ेद कमल। ३. शत्रु।
करा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कैरी] भूरा (रंग)।
वि० १. कैरे रंग का। २. कंजा।
कैलास–संज्ञा पुं० १. हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में रावण ह्रद से उत्तर ओर है। २. शिवलोक।
कैवत–संज्ञा पुं० केवट।
कैवल्य–संज्ञा पुं० १. शुद्धता। २. मोक्ष। ३. एक उपनिषद्।
कैसर–संज्ञा पुं० सम्राट्।
कैसा–वि० [स्त्री० कैसी] किस प्रकार का ?
कैसे–क्रि० वि० किस प्रकार से ?
कोंकण–संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक प्रदेश। २. उक्त देश का निवासी।
कोंचना–क्रि० स० चुभाना। गोदना।
कोंचा–संज्ञा पुं० दे० "कौंच"।
संज्ञा पुं० बहेलियों की वह लंबी छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने का लासा लगाए रहते हैं।
कोंछना–क्रि० स० दे० "कोंछियाना"।
कोंछियाना–क्रि० स० (स्त्रियों की) साड़ी का वह भाग चुनना जो पहनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है।
क्रि० स० (स्त्रियों के) अंचल के कोने में कोई चीज़ भरकर कमर में खोंस लेना।
कोंढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाती है।
वि० जिसमें कोंढ़ा लगा हो।
कोंपर†–संज्ञा पुं० छोटा अधपका या डाल का पका आम।
कोंपल†–संज्ञा स्त्री० नई और मुलायम पत्ती।
कोंहड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "कुम्हड़ा"।
कोंहड़ौरी†–संज्ञा स्त्री० कुम्हड़े या पेठे की बनाई हुई बरी।
को॰–सर्व० कौन ?
प्रत्य० कर्म और संप्रदान की विभक्ति।
कोआ–संज्ञा पुं० १. रेशम के कीड़े का घर। २. टसर नामक रेशम का कीड़ा। ३. कटहल के गूदेदार पके हुए बीजकोष।
कोइरी–संज्ञा पुं० साग, तरकारी आदि बोने और बेचनेवाली जाति। काछी।
कोइली–संज्ञा स्त्री० वह कच्चा आम जिसमें काला दाग़ पड़ जाता है और एक विशेष प्रकार की सुगंध आती है।
कोई–सर्व०, वि० ऐसा एक (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो।
क्रि० वि० क़रीब क़रीब।
कोउ॰†–सर्व० दे० "कोई"।
कोउक॰–सर्व० कोई एक।

वि० बदरंग।
कुरंगिन॰-संज्ञा स्त्री० हिरनी।
कुरंड-संज्ञा पुं० एक खनिज पदार्थ, जिसके चूर्ण को लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज़ करने की सान बनाते हैं।
कुरकी-संज्ञा स्त्री० दे० "कुर्क़ी"।
कुरकुर-संज्ञा पुं० खरी वस्तु के दब-कर टूटने का शब्द।
कुरकुरा-वि० [स्त्री० कुरकुरी] खरा और करारा जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो।
कुरकुरी-संज्ञा स्त्री० पतली मुलायम हड्डी।
कुरता-संज्ञा पुं० [स्त्री० कुरती] एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।
कुरना॰†-क्रि० अ० दे० "कुरलना"।
क़ुरबान-वि० जो निछावर या बलि-दान किया गया हो।
क़ुरबानी-संज्ञा स्त्री० बलिदान।
कुररर-संज्ञा पुं० गिद्ध की जाति का एक पक्षी।
कुररा-संज्ञा पुं० [स्त्री० कुररी] कर्रा-कुल। क्रौंच।
कुररी-संज्ञा स्त्री० १. आर्या छंद का एक भेद। २. 'कुररा' का स्त्रीलिंग।
कुरव-वि० बुरी बोली बोलनेवाला।
कुरसी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरी लगी रहती है। २. पुश्त।
कुरसीनामा-संज्ञा पुं० वंशवृक्ष।
क़ुरान-संज्ञा पुं० अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है।
कुराह-संज्ञा स्त्री० [वि० कुराही] १. बुरी राह। २. बुरी चाल।
कुराही-वि० कुमार्गी। संज्ञा स्त्री० दुराचार।
कुरिया†-संज्ञा स्त्री० १. कुटी। २. बहुत छोटा गाँव।
कुरियाल-संज्ञा स्त्री० चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना।
कुरी॰-संज्ञा स्त्री० वंश। संज्ञा स्त्री० टुकड़ा।
कुरीति-संज्ञा स्त्री० बुरी रीति।
कुरु-संज्ञा पुं० एक सोमवंशी राजा जिसके वंश में पांडु और धृतराष्ट्र हुए थे।
कुरई-संज्ञा स्त्री० मौनी।
कुरुक्षेत्र-संज्ञा पुं० एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अंबाले और दिल्ली के बीच में है। महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था।
कुरुखेत†-संज्ञा पुं० दे० "कुरुक्षेत्र"।
कुरुख-वि० नाराज़।
कुरूप-वि० [स्त्री० कुरूपा] बदसूरत।
कुरूपता-संज्ञा स्त्री० बदसूरती।
कुरेदना-क्रि० स० खोदना।
कुरैया-संज्ञा स्त्री० सुंदर फूलोंवाला एक जंगली पेड़ जिसके बीज "इंद्र-जौ" कहलाते हैं।
कुरौना॰†-क्रि० स० ढेर लगाना।
क़ुर्क़-वि० [संज्ञा क़ुर्क़ी] ज़ब्त।
क़ुर्क़-अमीन-संज्ञा पुं० वह सरकारी कर्मचारी जो अदालत के आज्ञा-नुसार जायदाद की क़ुर्क़ी करता है।
क़ुर्क़ी-संज्ञा स्त्री० क़र्ज़दार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने

कोऊ।०-सर्व० दे० "कोई"।
कोक-संज्ञा पुं० [स्त्री० कोकी] १. चकवा पत्ती। २. विष्णु। ३. मेंढक।
कोककला-संज्ञा स्त्री० रति-विद्या।
कोकदेव-संज्ञा पुं० कोकशास्त्र या रतिशास्त्र का रचयिता एक पंडित।
कोकनद-संज्ञा पुं० १. लाल कमल। २. लाल कुमुद।
कोकनी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का रंग। वि० छोटा।
कोकशास्त्र-संज्ञा पुं० कामशास्त्र।
कोकाबेरी, कोकाबेली-संज्ञा स्त्री० नीली कुमुदिनी।
कोकिल-संज्ञा स्त्री० कोयल चिड़िया।
कोकिला-संज्ञा स्त्री० कोयल।
कोकीन, कोकेन-संज्ञा स्त्री० कोका नामक वृत्त की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की मादक श्रोषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।
कोको-संज्ञा स्त्री० कौआ। लड़कों को बहकाने का शब्द।
कोख-संज्ञा स्त्री० १. उदर। २. गर्भाशय।
कोच-संज्ञा पुं० एक प्रकार की चौपहिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी। २. गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।
कोचवान-संज्ञा पुं० घोड़ा-गाड़ी हाँकनेवाला।
कोजागर-संज्ञा पुं० आश्विन मास की पूर्णिमा।
कोट-संज्ञा पुं० दुर्ग।
संज्ञा पुं० समूह।
संज्ञा पुं० अँगरेज़ी ढंग का एक पहनावा।
कोटपाल-संज्ञा पुं० दुर्ग की रक्षा करनेवाला।
कोटर-संज्ञा पुं० १. पेड़ का खोखला भाग। २. दुर्ग के आस-पास का वह कृत्रिम वन जो रक्षा के लिये लगाया जाता है।
कोटि-संज्ञा स्त्री० १. धनुष का सिरा। २. अस्त्र की नोक या धार। ३. श्रेणी। ४. समूह।
वि० करोड़।
कोटिक-वि० १. करोड़। २. अनगिनत।
कोटिशः-क्रि० वि० अनेक प्रकार से। वि० बहुत अधिक।
कोठरी-संज्ञा स्त्री० छोटा कमरा।
कोठा-संज्ञा पुं० १. बड़ी कोठरी। २. अटारी। ३. उदर।
कोठार-संज्ञा पुं० भंडार।
कोठारी-संज्ञा पुं० वह अधिकारी जो भंडार का प्रबंध करता हो। भंडारी।
कोठिला-संज्ञा पुं० दे० "कुठला"।
कोठी-संज्ञा स्त्री० १. बड़ा पक्का मकान। २. बँगला। ३. गर्भाशय।
संज्ञा स्त्री० उन बाँसों का समूह जो एक साथ मंडलाकार उगते हैं।
कोठीवाल-संज्ञा पुं० १. महाजन। २. बड़ा व्यापारी।
कोड़ना-क्रि० स० खोदना।
कोड़ा-संज्ञा पुं० चाबुक।
कोड़ी-संज्ञा स्त्री० बीस का समूह।
कोढ़-संज्ञा पुं० [वि० कोढ़ी] एक प्रकार का रक्त और त्वचा-संबंधी रोग जो संक्रामक और घिनौना होता है।
कोढ़ी-संज्ञा पुं० [स्त्री० कोढ़िन] कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण–संज्ञा पुं० १. एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के बीच का अंतर जो मिलकर एक न हो जाती हों। कोना। २. दो दिशाओं के बीच की दिशा।
कोतल–संज्ञा पुं० सजा-सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो।
कोतवाल–संज्ञा पुं० पुलिस का इंस-पेक्टर।
कोतवाली–संज्ञा स्त्री० वह मकान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय हो।
कोताॐ†–वि० [स्त्री० कोती] छोटा।
कोताह–वि० छोटा।
कोताही–संज्ञा स्त्री० त्रुटि।
कोथला–संज्ञा पुं० १. बड़ा थैला। २. पेट।
कोदंड–संज्ञा पुं० १. धनुष। २. धनु राशि। ३. भौंह।
कोदॐ†–संज्ञा स्त्री० दिशा।
कोदो, कोदों–संज्ञा पुं० एक कदन्न जो प्रायः सारे भारतवर्ष में होता है।
कोना–संज्ञा पुं० १. अंतराल। २. नुकीला सिरा।
कोप–संज्ञा पुं० [वि० कुपित] क्रोध।
कोपनाॐ–क्रि० अ० क्रोध करना।
कोपभवन–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठकर जा रहे।
कोपर†–संज्ञा पुं० डाल का पका हुआ आम। टपका।
कोपल–संज्ञा पुं० वृक्ष आदि की नई मुलायम पत्ती।
कोपि–सर्व० कोई।
कोपी–वि० क्रोधी।
कोफ्ता–संज्ञा पुं० कूटे हुए मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।
कोबी–संज्ञा स्त्री० दे० "गोभी"।
कोमल–वि० १. मृदु। २. सुंदर। ३. स्वर का एक भेद। (संगीत)
कोमलता–संज्ञा स्त्री० १. मृदुलता। २. मधुरता।
कोमला–संज्ञा स्त्री० वह वृत्ति या अक्षर-योजना जिसमें कोमल पद हों और प्रसाद गुण हो।
कोयॐ†–सर्व० दे० "कोई"।
कोयल–संज्ञा स्त्री० बहुत सुंदर बोलने-वाली काले रंग की एक छोटी चिड़िया।
कोयला–संज्ञा पुं० १. जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है। २. एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो कोयले के रूप का होता और जलाने के काम में आता है।
कोया–संज्ञा पुं० कटहल का गूदेदार बीजकोश जो खाया जाता है।
कोर–संज्ञा स्त्री० १. किनारा। २. द्वेष। ३. पंक्ति।
कोरक–संज्ञा पुं० कली।
कोर-कसर–संज्ञा स्त्री० १. ऐब और कमी। २. कमी-बेशी।
कोरमा–संज्ञा पुं० भुना हुआ मांस जिसमें शोरबा बिलकुल नहीं होता।
कोरहन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
कोरा–वि० [स्त्री० कोरी] १. नया। २. खाली। ३. बेदाग। ४. मूर्ख। संज्ञा पुं० बिना किनारे की रेशमी धोती।
†संज्ञा पुं० गोद।
कोरापन–संज्ञा पुं० नवीनता। अछूतापन।

खतियौनी–संज्ञा स्त्री० १. खाता। २. खतियाने का काम।
खतम–वि० दे० "खतम"।
खत्री–संज्ञा पुं० [स्त्री० खतरानी] हिंदुओं में एक जाति।
खदबदाना–क्रि० अ० उबलने का शब्द होना।
खदान–संज्ञा स्त्री० खान।
खदिर–संज्ञा पुं० १. खैर का पेड़। २. कत्था।
खदेरना–क्रि० स० दूर करना।
खद्दड़, खद्दर–संज्ञा पुं० खादी। गाढ़ा।
खद्योत–संज्ञा पुं० १. जुगनूँ। २. सूर्य।
खनक†–संज्ञा पुं० दे० "चण"।
खनक–संज्ञा पुं० १. ज़मीन खोदनेवाला। २. खान। ३. भूतत्त्व-शास्त्र जाननेवाला।
संज्ञा स्त्री० धातुखंडों के टकराने या बजने का शब्द।
खनकना–क्रि० अ० खनखनाना।
खनकाना–क्रि० स० धातुखंड आदि से शब्द उत्पन्न करना।
खनखनाना–क्रि० अ० खनकना।
क्रि० स० खनकाना।
खनना*†–क्रि० स० खोदना।
खनिज–वि० खान से खोदकर निकाला हुआ।
खपड़ा–संज्ञा पुं० १. पटरी के आकार का मिट्टी का पका टुकड़ा जो मकान छाने के काम आता है। २. ठीकरा। ३. कछुए की पीठ पर का कड़ा ढक्कन।
खपड़ी–संज्ञा स्त्री० १. नाँद की तरह का मिट्टी का छोटा बरतन। २. दे० "खोपड़ी"।
खपड़ैल–संज्ञा स्त्री० दे० "खपरैल"।
खपत, खपती–संज्ञा स्त्री० १. समाई। २. माल की कटती या बिक्री।
खपना–क्रि० अ० [संज्ञा खपत] १. कटना। २. निभना।
खपरिया–संज्ञा स्त्री० भूरे रंग का एक खनिज पदार्थ।
खपरैल–संज्ञा स्त्री० खपड़े से छाई हुई छत।
खपाना–क्रि० स० १. काम में लाना। २. निभाना।
खपुष्प–संज्ञा पुं० १. आकाश-कुसुम। २. असंभव बात।
खप्पर–संज्ञा पुं० १. तसले के आकार का कोई पात्र। २. खोपड़ी।
ख़फ़गी–संज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता २. क्रोध।
ख़फ़ा–वि० १. अप्रसन्न। २. क्रुद्ध
ख़फ़ीफ़–वि० १. थोड़ा। २. हलका।
ख़बर–संज्ञा स्त्री० १. समाचार। २. चेत। ३. पता।
ख़बरदार–वि० होशियार।
ख़बरदारी–संज्ञा स्त्री० सावधानी।
ख़बीस–संज्ञा पुं० वह जो दुष्ट और भयंकर हो।
ख़ब्त–संज्ञा पुं० [वि० ख़ब्ती] पागलपन।
ख़ब्ती–वि० सनकी।
खभरना*†–क्रि० स० १. मिश्रित करना। २. उथल-पुथल मचाना।
ख़म–संज्ञा पुं० टेढ़ापन।
ख़मदम–संज्ञा पुं० पुरुषार्थ।
खमा*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।
ख़मीर–संज्ञा पुं० १. गूँधे हुए आटे का सड़ाव। २. कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो तंबाकू में डाला जाता है।

कोरी–संज्ञा पुं० [स्त्री० कोरिन] हिंदू जुलाहा।
कोल–संज्ञा पुं० १. सूअर। २. गोद। ३. एक जंगली जाति।
कोलाहल–संज्ञा पुं० शोर।
कोली–संज्ञा स्त्री० गोद।
संज्ञा पुं० कोरी।
कोल्हू–संज्ञा पुं० दानों से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र।
कोविद–वि० [स्त्री० कोविदा] पंडित।
कोविदार–संज्ञा पुं० कचनार।
कोश–संज्ञा पुं० १. डिब्बा। २. आवरण। ३. संचित धन। ४. वह ग्रंथ जिसमें अर्थ या पर्याय के सहित शब्द इकट्ठे किए गए हों।
कोशकार–संज्ञा पुं० १. म्यान बनानेवाला। २. शब्द-कोश बनानेवाला।
कोशपाल–संज्ञा पुं० खज़ाने की रक्षा करनेवाला।
कोशल–संज्ञा पुं० १. सरयू या घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। २. उपर्युक्त देश में बसनेवाली क्षत्रिय जाति। ३. अयोध्या नगर।
कोशागार–संज्ञा पुं० खज़ाना।
कोशिश–संज्ञा स्त्री० प्रयत्न।
कोष–संज्ञा पुं० दे० "कोश"।
कोषाध्यक्ष–संज्ञा पुं० खज़ानची।
कोष्ठ–संज्ञा पुं० १. पेट का भीतरी हिस्सा। २. भंडार।
कोष्ठक–संज्ञा पुं० किसी प्रकार की दीवार, लकीर या और किसी वस्तु से घिरा स्थान। खाना। कोठा।
कोष्ठबद्ध–संज्ञा पुं० कब्ज़ियत।
कोष्ठी–संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री।
कोस–संज्ञा पुं० दूरी की एक नाप। दो मील की दूरी।
कोसना–क्रि० स० शाप के रूप में गालियाँ देना।
कोसा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशम।
संज्ञा पुं० [स्त्री० कोसिया] मिट्टी का बड़ा दीया।
कोसा-काटी–संज्ञा स्त्री० बददुआ।
कोसिला‡–संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्या"।
कोहड़ौरी–संज्ञा स्त्री० उर्द की पीठी और कुम्हड़े के गूदे से बनाई हुई बरी।
कोह–संज्ञा पुं० पर्वत।
†* संज्ञा पुं० क्रोध।
कोहनी–संज्ञा स्त्री० दे० "कुहनी"।
कोहनूर–संज्ञा पुं० भारत की किसी खान से निकला हुआ एक बहुत बड़ा प्राचीन और प्रसिद्ध हीरा।
कोहबर–संज्ञा पुं० वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं।
कोहान–संज्ञा पुं० ऊँट की पीठ पर का डिल्ला या कूबड़।
कोहाना*†–क्रि० अ० रूठना।
कोहिस्तान–संज्ञा पुं० पहाड़ी देश।
कोही–वि० क्रोध करनेवाला।
वि० पहाड़ी।
कौंच–संज्ञा स्त्री० केवाँच।
कौंछ–संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच"।
कौंध–संज्ञा स्त्री० बिजली की चमक।
कौंधना–क्रि० अ० बिजली का चमकना।
कौंला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मीठा नींबू या संगतरा।
कौआ–संज्ञा पुं० दे० "कौवा"।
कौआना†–क्रि० अ० १. भौचक्का होना। २. अचानक कुछ बड़बड़ा उठना।

ख़मीरा–वि० पुं० [स्त्री० ख़मीरी] ख़मीर उठाकर बनाया या ख़मीर मिलाया हुआ।

खय०†–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

ख़यानत–संज्ञा स्त्री० १. धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना। २. बेईमानी।

ख़याल–संज्ञा पुं० दे० "ख़्याल"।

खर–संज्ञा पुं० १. गधा। २. ख़च्चर। ३. तृण।
वि० कड़ा।

खरक–संज्ञा पुं० १. बाड़ा। २. पशुओं के चरने का स्थान।

खरकना–क्रि० अ० १. दे० "खड़कना"। २. सरकना।

खरका–संज्ञा पुं० तिनका।

खरग–संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।

ख़रगोश–संज्ञा पुं० खरहा।

ख़रच–संज्ञा पुं० दे० "ख़र्च"।

खरचना–क्रि० स० १. व्यय करना। २. व्यवहार में लाना।

खरचा–संज्ञा पुं० दे० १. "खरका"। २ दे० "ख़र्च"।

खरतल†–वि० १. खरा। २. साफ़।

खरदूषण–संज्ञा पुं० खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण के भाई थे।

खरधार–संज्ञा पुं० तेज़ धारवाला अस्त्र।

खरब–संज्ञा पुं० सौ अरब की संख्या।

ख़रबूज़ा–संज्ञा पुं० ककड़ी की जाति का एक प्रसिद्ध गोल फल।

खरभर†–संज्ञा पुं० १. शोर। २. हलचल।

खरभराना–क्रि० अ० १. खरभर शब्द करना। २. शोर करना। ३. व्याकुल होना।

खरमास–संज्ञा पुं० दे० "खरवाँस"।

खरल–संज्ञा पुं० पत्थर की कूँड़ी जिसमें ओषधियाँ कूटी जाती हैं। खल।

खरवाँस–संज्ञा पुं० [हिं० खर+मास] पूस और चैत का महीना जब कि सूर्य्य धन और मीन का होता है। (इनमें मांगलिक कार्य्य करना वर्जित है।)

खरसा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पकवान।

खरसान–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सान जिस पर हथियार तेज़ किए जाते हैं।

खरहरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर के डंठलों से बना हुआ झाड़ू। २. घोड़े के रोएँ साफ़ करने के लिये दाँतीदार कंघी।

खरहा–संज्ञा पुं० ख़रगोश जंतु।

खरा–वि० १. तेज़। २. अच्छा। ३. सेंककर कड़ा किया हुआ। ४. सच्चा। †० बहुत। अधिक। ज़्यादा।

खराई–संज्ञा स्त्री० खरापन।

ख़राद–संज्ञा पुं० एक औज़ार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है।
संज्ञा स्त्री० गढ़न।

ख़रादना–क्रि० स० १. ख़राद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ़ और सुडौल करना। २. काट-छाँटकर सुडौल बनाना।

ख़रादी–संज्ञा पुं० ख़रादनेवाला।

खरापन–संज्ञा पुं० १. खरा का भाव। २. सत्यता।

ख़राब–वि० बुरा।

ख़राबी–संज्ञा स्त्री० बुराई।

खरायँध–संज्ञा स्त्री० १. क्षार की सी

कौटिल्य–संज्ञा पुं० १. टेढ़ापन। २. चाणक्य का एक नाम।
कौटुंबिक–वि० कुटुंब-संबंधी।
कौड़ा–संज्ञा पुं० बड़ी कौड़ी।
संज्ञा पुं० जाड़े के दिनों में तापने के लिये जलाई हुई आग।
कौड़िया–वि० कौड़ी के रंग का।
संज्ञा पुं० कौड़िल्ला पक्षी।
कौड़ियाला–वि० कौड़ी के रंग का।
संज्ञा पुं० १. कोकई रंग। २. एक प्रकार का विषैला साँप। ३. कौड़िल्ला पक्षी।
कौड़िल्ला–संज्ञा पुं० मछली खानेवाली एक चिड़िया।
कौड़ी–संज्ञा स्त्री० १. समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह एक अस्थि-कोश के अंदर रहता है और जिसका अस्थिकोश सबसे कम मूल्य के सिक्के की तरह काम आता है। २. जंघे, काँख या गले की गिल्टी।
कौणप–संज्ञा पुं० राक्षस।
कौतिग*†–संज्ञा पुं० दे० "कौतुक"।
कौतुक–संज्ञा पुं० [वि० कौतुकी] १. कुतूहल। २. आश्चर्य्य।
कौतुकिया–संज्ञा पुं० १. कौतुक करनेवाला। २. विवाह-संबंध करानेवाला, नाऊ या पुरोहित।
कौतुकी–वि० १. कौतुक करनेवाला। २. विवाह-संबंध करानेवाला।
कौतूहल–संज्ञा पुं० दे० "कुतूहल"।
कौन–सर्व० एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है।
कौपीन–संज्ञा पुं० काछा।
कौम–संज्ञा स्त्री० वर्ण। जाति।
कौमार–संज्ञा पुं० [स्त्री० कौमारी] कुमार अवस्था।
कौमारी–संज्ञा स्त्री० १. किसी पुरुष की पहली स्त्री। २. पार्वती।
क़ौमी–वि० कौम का।
कौमुदी–संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी। २. कुमुदिनी।
कौमोदी, कौमोदकी–संज्ञा स्त्री० विष्णु की गदा।
कौर–संज्ञा पुं० ग्रास। निवाला।
कौरना†–क्रि० स० सेंकना।
कौरव–संज्ञा पुं० [स्त्री० और वि० कौरवी] कुरु-वंशज।
वि० [स्त्री० कौरवी] कुरु-संबंधी।
कौरवपति–संज्ञा पुं० दुर्योधन।
कौरी–संज्ञा स्त्री० गोद।
कौल–संज्ञा पुं० उत्तम कुल में उत्पन्न।
संज्ञा पुं० कौर।
क़ौल–संज्ञा पुं० १. कथन। वाक्य। २. प्रतिज्ञा।
कौवा–संज्ञा पुं० [स्त्री० कौवी] १. एक बड़ा काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिये प्रसिद्ध है। काक। २. काइयाँ।
कौवाल–संज्ञा पुं० क़ौवाली गानेवाला।
क़ौवाली–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का भगवत्प्रेम-संबंधी गीत जो सूफ़ियों की मजलिसों में होता है। २. इस धुन में गाई जानेवाली कोई ग़ज़ल। ३. क़ौवालों का पेशा।
कौशल–संज्ञा पुं० १. कुशलता। २. कोशल देश का निवासी।
कौशलेय–संज्ञा पुं० रामचंद्र।
कौशल्या–संज्ञा स्त्री० रामचंद्र की माता।

गंध। २. मूत्र की सी दुर्गंध।
खरारि-संज्ञा पुं० रामचंद्र।
खरिया-संज्ञा स्त्री० १. घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी से बनी हुई जाली। पाँसी। २. झोली।
संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।
खरियाना-क्रि० स० १. झोली में डालना। २. हस्तगत करना।
खरिहान-संज्ञा पुं० दे० "खलियान"।
खरी†-संज्ञा स्त्री० १. दे० "खड़िया"। २. "खली"।
खरीता-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खरीती] थैली।
खरीद-संज्ञा स्त्री० १. मोल लेने की क्रिया। २. खरीदी हुई चीज़।
खरीदना-क्रि० स० मोल लेना।
खरीदार-संज्ञा पुं० मोल लेनेवाला।
खरीफ़-संज्ञा स्त्री० वह फसल जो आषाढ़ से अगहन तक में काटी जाय।
खरोंच-संज्ञा स्त्री० १. छिलने का चिह्न। खराश। २. एक पकवान।
खरोंचना-क्रि० स० छीलना।
खरोष्ठी, खरोष्ट्री-संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन लिपि जो फ़ारसी की तरह दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी।
खरौंटा-संज्ञा स्त्री० दे० "खरोंच"।
खरौंहा-वि० कुछ नमकीन।
खर्च-संज्ञा पुं० व्यय।
खर्चा-संज्ञा पुं० दे० "खर्च"।
खर्चीला-वि० बहुत खर्च करनेवाला।
खर्जूर-संज्ञा पुं० खजूर।
खर्पर-संज्ञा पुं० १. तसले के आकार का मिट्टी का बरतन। २. खोपड़ा।
खर्व-वि० १. जिसका अंग भग्न या अपूर्ण हो। २. छोटा।
संज्ञा पुं० सौ अरब की संख्या।
खर्राच†-वि० दे० "खर्चीला"।
खर्रा-संज्ञा पुं० वह लंबा काग़ज़ जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो।
खर्राटा-संज्ञा पुं० वह शब्द जो सोते समय नाक से निकलता है।
खल-वि० १. क्रूर। २. दुष्ट।
खलक-संज्ञा पुं० दुनिया।
खलड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खाल"।
खलता-संज्ञा स्त्री० दुष्टता।
खलना-क्रि० अ० बुरा लगना।
खलबल-संज्ञा स्त्री० हलचल।
खलबलाना-क्रि० अ० १. खौलना। २. विचलित होना।
खलबली-संज्ञा स्त्री० १. हलचल। २. घबराहट।
खलल-संज्ञा पुं० रोक।
खलास-वि० १. छूटा हुआ। २. समाप्त।
खलासी-संज्ञा स्त्री० मुक्ति।
संज्ञा पुं० जहाज़ पर का नौकर।
खलाल-संज्ञा पुं० दाँत खोदने का तरका।
खलित॰-वि० १. चंचल। २. गिरा हुआ।
खलियान-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी और बरसाई जाती है। २. ढेर।
†क्रि० स० खाली करना।
खली-संज्ञा स्त्री० तेल निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी।
खलीता-संज्ञा पुं० दे० "खरीता"।
खलीफ़ा-संज्ञा पुं० १. अध्यक्ष। २. कोई बुड्ढा व्यक्ति।

कौशांबी–संज्ञा स्त्री० एक बहुत प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशांब ने बसाया था। वत्सपट्टन।
कौशिक–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. विश्वामित्र। ३. कोषाध्यक्ष।
कौशिकी–संज्ञा स्त्री० चंडिका।
कौशेय–वि० रेशमी।
कौषीतकी–संज्ञा स्त्री० ऋग्वेद की एक शाखा।
कौस्तुभ–संज्ञा पुं० पुराणानुसार समुद्र से निकला हुआ एक रत्न जिसे विष्णु अपने वक्षःस्थल पर पहने रहते हैं।
क्या–सर्व० एक प्रश्नवाचक शब्द जो प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा करता है।
वि० कितना ?
क्रि० वि० किस लिये ?
अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द।
क्यारी–संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी"।
क्यों–क्रि० वि० किस कारण ?
क्रंदन–संज्ञा पुं० १. रोना। २. युद्ध के समय वीरों का आह्वान।
क्रम–संज्ञा पुं० १. शैली। २. सिलसिला।
क्रमनासा☼–संज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा"।
क्रमशः–क्रि० वि० १. सिलसिलेवार। २. धीरे धीरे।
क्रमिक–क्रि० वि० क्रम-युक्त।
क्रय–संज्ञा पुं० खरीदने का काम।
क्रयी–संज्ञा पुं० मोल लेनेवाला।
क्रय्य–वि० जो बिक्री के लिये रखा जाय।
क्रव्य–संज्ञा पुं० मांस।
क्रव्याद–संज्ञा पुं० १. मांस खानेवाला जीव। २. राक्षस।
क्रांत–वि० १. दबा या ढका हुआ। २. जिस पर आक्रमण हुआ हो।
क्रांति–संज्ञा स्त्री० उलट-फेर।
क्रांतिमंडल–संज्ञा पुं० वह वृत्त जिस पर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।
क्रांतिवृत्त–संज्ञा पुं० सूर्य्य का मार्ग।
क्रिचयन†☼–संज्ञा पुं० चांद्रायण व्रत।
क्रिमि–संज्ञा पुं० दे० "कृमि"।
क्रिमिजा–संज्ञा स्त्री० लाह।
क्रियमाण–संज्ञा पुं० वह जो किया जा रहा हो।
क्रिया–संज्ञा स्त्री० १. कर्म। २. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय। ३. नित्यकर्म।
क्रियाचतुर–संज्ञा पुं० क्रिया या घात में चतुर नायक।
क्रियानिष्ठ–वि० संध्या, तर्पण आदि नित्य कर्म करनेवाला।
क्रियार्थ–संज्ञा पुं० वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि-वाक्य।
क्रियावान्–वि० कर्मनिष्ठ।
क्रिया-विशेषण–संज्ञा पुं० आधुनिक व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो।
क्रिस्तान–संज्ञा पुं० ईसाई।
क्रिस्तानी–वि० ईसाइयों का।
क्रीट☼†–संज्ञा पुं० दे० "किरीट"।
क्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० खेल-कूद।
क्रीत–वि० खरीदा हुआ।
क्रुद्ध–वि० क्रोध में भरा हुआ।
क्रूर–वि० [स्त्री० क्रूरा] १. निर्दय। ज़ालिम। २. तीक्ष्ण।

खखड़–संज्ञा पुं० १. श्रोपधि कूटने का खल। २. चमड़ा।
खल्व–संज्ञा पुं० वह रोग जिसके कारण सिर के बाल झड़ जाते हैं।
खल्वाट–संज्ञा पुं० गंज रोग जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं।
वि० गंजा।
खवाना॰†–क्रि० स० दे० "खिलाना"।
खवास–संज्ञा पुं० [स्त्री० खवासिन] राजाओं और रईसों का खास खिदमतगार।
खवासी–संज्ञा स्त्री० १. खिदमतगारी। २. नौकरी।
खवैया–संज्ञा पुं० खानेवाला।
खस–संज्ञा स्त्री० गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।
खसकंत†–संज्ञा स्त्री० खसकने का काम।
खसकना–क्रि० अ० सरकना।
खसकाना–क्रि० स० हटाना।
खसखस–संज्ञा स्त्री० पोस्ते का दाना।
खसखसा–वि० भुरभुरा।
खसखाना–संज्ञा पुं० खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।
खसखास–संज्ञा स्त्री० दे० "खसखस"।
खसना॰–क्रि० अ० खसकना।
खसम–संज्ञा पुं० १. पति। २. स्वामी।
खसरा–संज्ञा पुं० हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा।
संज्ञा पुं० एक प्रकार की खुजली।
खसाना–क्रि० स० गिराना।
खसिया–वि० १. बधिया। २. नपुंसक। ३. बकरा।
खसी–संज्ञा पुं० बकरा।
खसोट–संज्ञा स्त्री० बुरी तरह उखाड़ने या नोचने की क्रिया।
खसोटना–क्रि० स० १. नोचना। २. छीनना।
खसोटी–संज्ञा स्त्री० दे० "खसोट"।
खस्ता–वि० भुरभुरा।
खस्सी–संज्ञा पुं० बकरा।
वि० बधिया।
खाँ–संज्ञा पुं० दे० "खान"।
खाँखर†–वि० सूराखदार।
खाँग†–संज्ञा पुं० काँटा।
॰संज्ञा स्त्री० त्रुटि। कमी।
खाँगना†–क्रि० अ० कम होना।
खाँगड़, खाँगड़ा–वि० १. जिसके खाँग हो। २. अक्खड़।
खाँगी†–संज्ञा स्त्री० कमी।
खाँच†–संज्ञा स्त्री० १. संधि। २. खींचकर बनाया हुआ निशान।
खाँचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खाँची] झाबा।
खाँड़–संज्ञा स्त्री० कच्ची शक्कर।
खाँड़ना–क्रि० स० १. तोड़ना। २. चबाना।
खाँड़ा–संज्ञा पुं० खड्ग (शस्त्र)।
संज्ञा पुं० भाग।
खाँभ॰†–संज्ञा पुं० खंभा।
खाँवाँ–संज्ञा पुं० चौड़ी खाईं।
खाँसना–क्रि० अ० कफ या और कोई अटकी हुई चीज़ निकालने के लिये वायु को शब्द के साथ कंठ से बाहर निकालना।
खाँसी–संज्ञा स्त्री० १. कफ अथवा अन्य पदार्थ को बाहर फेंकने के लिये शब्द के साथ हवा निकालने की क्रिया। २. अधिक खाँसने का रोग।
खाई–संज्ञा स्त्री० वह नहर जो किसी

क्रूरता–संज्ञा स्त्री० १. निर्दयता। २. दुष्टता।
क्रेता–संज्ञा पुं० खरीदनेवाला।
क्रोड़–संज्ञा पुं० १ आलिंगन में दोनों बाँहों के बीच का भाग। २. गोद।
क्रोड़पत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जो किसी पुस्तक या समाचारपत्र में उसकी पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया जाय। परिशिष्ट।
क्रोध–संज्ञा पुं० कोप। गुस्सा।
क्रोधित॰–वि० कुपित।
क्रोधी–वि० [स्त्री० क्रोधिनी] क्रोध करनेवाला।
क्रोश–संज्ञा पुं० कोस।
क्रौंच–संज्ञा पुं० करांकुल नामकपक्षी।
क्लांत–वि० थका हुआ।
क्लांति–संज्ञा स्त्री० १. परिश्रम। २. थकावट।
क्लिष्ट–वि० १. दुखी। २. कठिन।
क्लिष्टता–संज्ञा स्त्री० क्लिष्ट का भाव।
क्लिष्टत्व–संज्ञा पुं० क्लिष्ट का भाव।
क्लीव–वि० पुं० १. नपुंसक। २. डरपोक।
क्लीवता–संज्ञा स्त्री० क्लीव का भाव।
क्लीवत्व–संज्ञा पुं० नपुंसकता।
क्लेद–संज्ञा पुं० १. गीलापन। २. पसीना।
क्लेदक–संज्ञा पुं० पसीना लानेवाला।
क्लेश–संज्ञा पुं० दुःख। व्यथा। वेदना।
क्लेशित–वि० दुःखित।
क्वचित्–क्रि० वि० कोई ही।
क्वणित–वि० शब्द करता हुआ।
क्वाथ–संज्ञा पुं० काढ़ा।
क्वारपन–संज्ञा पुं० कुमारपन।
क्वारा–संज्ञा पुं० वि० [स्त्री० क्वारी] जिसका विवाह न हुआ हो।
क्वारापन–संज्ञा पुं० दे० "क्वारपन"।
क्षंतव्य–वि० क्षम्य।
क्षण–संज्ञा पुं० [वि० क्षणिक] १. काल या समय का सबसे छोटा भाग। २. अवसर। ३. समय।
क्षणप्रभा–संज्ञा स्त्री० बिजली।
क्षणभंगुर–वि० शीघ्र या क्षण भर में नष्ट होनेवाला। अनित्य।
क्षणिक–वि० क्षणभंगुर।
क्षत–वि० घाव लगा हुआ।
संज्ञा पुं० १ घाव। २. मारना।
क्षत-विक्षत–वि० घायल।
क्षतव्रण–संज्ञा पुं० कटने या चोट लगने के बाद पका हुआ स्थान।
क्षति–संज्ञा स्त्री० १. हानि। २. नाश।
क्षत्र–संज्ञा पुं० १. बल। २. क्षत्रिय।
क्षत्रकर्म–संज्ञा पुं० क्षत्रियोचित कर्म।
क्षत्रधर्म–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का धर्म।
क्षत्रपति–संज्ञा पुं० राजा।
क्षत्रयोग–संज्ञा पुं० ज्योतिष में राजयोग।
क्षत्रवेद–संज्ञा पुं० धनुर्वेद।
क्षत्रिय–संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी] हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण।
क्षत्री–संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय"।
क्षपणक–वि० निर्लज्ज।
संज्ञा पुं० १. दिगंबर यती। २. बौद्ध संन्यासी।
क्षपा–संज्ञा स्त्री० रात।
क्षपाकर–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. कपूर।
क्षपाचर–संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षपाचरी] निशाचर।

गाँव या महल आदि के चारों ओर रक्षा के लिये खोदी गई हो।
खाऊ–वि० पेटू।
खाक–संज्ञा स्त्री० १. धूल। २. कुछ नहीं।
खाका–संज्ञा पुं० १. ढाँचा। २. मसौदा।
खाकी–वि० भूरा।
खागना–क्रि० अ० चुभना।
खाज–संज्ञा स्त्री० खुजली।
खाजा–संज्ञा पुं० १. भक्ष्य वस्तु। २. एक प्रकार की मिठाई।
खाजी०–संज्ञा स्त्री० भोजन की वस्तु।
खाट–संज्ञा स्त्री० चारपाई।
खाड़०–संज्ञा पुं० गड्ढा।
खाड़ी–संज्ञा स्त्री० समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो।
खात–संज्ञा पुं० १. खोदना। २. तालाब। ३. गड्ढा।
खातमा–संज्ञा पुं० १. अंत। २. मृत्यु।
खाता–संज्ञा पुं० बखार।
संज्ञा पुं० १. वह बही या किताब जिसमें मितिवार और ब्योरेवार हिसाब लिखा हो। २. विभाग।
खातिर–संज्ञा स्त्री० आदर।
† अव्य० वास्ते।
खातिरख्वाह–अव्य०, क्रि० वि० इच्छानुसार।
खातिरजमा–संज्ञा स्त्री० संतोष।
खातिरदारी–संज्ञा स्त्री० सम्मान।
खातिरी–संज्ञा स्त्री० १. सम्मान। २. तसल्ली।
खाद–संज्ञा स्त्री० पाँस।
खादक–वि० खानेवाला।
खादन–संज्ञा पुं० [वि० खादित, खाद्य, खादनीय] भोजन।
खादर–संज्ञा पुं० नीची ज़मीन।
खादित–वि० खाया हुआ।
खादी–वि० खानेवाला।
संज्ञा स्त्री० खद्दर।
खादुक–वि० हिंसालु।
खाद्य–वि० खाने योग्य।
संज्ञा पुं० भोजन।
खाधु०†–संज्ञा पुं० भोज्य पदार्थ।
खान–संज्ञा पुं० भोजन।
संज्ञा स्त्री० १ खानि। २. खज़ाना।
संज्ञा पुं० १. सरदार। २. पठानों की उपाधि।
खानक–संज्ञा पुं० खान खोदनेवाला।
खानगी–वि० घरेलू।
संज्ञा स्त्री० केवल कसब करानेवाली। तुच्छ वेश्या।
खानदान–संज्ञा पुं० वंश।
खानदानी–वि० १. ऊँचे वंश का। २. पुश्तैनी।
खान-पान–संज्ञा पुं० १. अन्न-पानी। २. खाना-पीना।
खानसामाँ–संज्ञा पुं० अँगरेज़ों, मुसलमानों आदि का भँडारी या रसोइया।
खाना–क्रि० स० भोजन करना।
खाना–संज्ञा पुं० १. घर। २. केस।
खानातलाशी–संज्ञा स्त्री० किसी खोई या चुराई हुई चीज़ के लिये मकान के अंदर छान-बीन करना।
खानाबदोश–वि० जिसका घर-बार न हो।
खानि–संज्ञा स्त्री० १. दे० "खान"। २. ओर। ३. प्रकार।
खानिक०†–संज्ञा स्त्री० दे० "खानि"।
खाब०†–संज्ञा पुं० दे० "ख्वाब"।
खाम–संज्ञा पुं० १. चिट्ठी का लिफ़ाफ़ा। २. संधि।
०† वि० घटा हुआ।

क्षपानाथ–संज्ञा पुं० चंद्रमा ।
क्षम–वि० योग्य ।
संज्ञा पुं० बल ।
क्षमणीय–वि० क्षमा करने योग्य ।
क्षमता–संज्ञा स्त्री० योग्यता ।
क्षमा–संज्ञा स्त्री० मुआफ़ी ।
क्षमालु–वि० क्षमाशील ।
क्षमावान्–वि० पुं० [स्त्री० क्षमावती] क्षमा करनेवाला ।
क्षमाशील–वि० माफ़ करनेवाला ।
क्षमितव्य–वि० क्षमा करने योग्य ।
क्षमी–वि० माफ़ करनेवाला ।
वि० समर्थ ।
क्षम्य– वि० माफ़ करने योग्य ।
क्षय–संज्ञा पुं० [भाव० क्षयित्व] १. ह्रास । २. प्रलय । ३. यक्ष्मा नामक रोग ।
क्षयिष्णु–वि० क्षय या नष्ट होनेवाला ।
क्षयी–वि० १ क्षय होनेवाला । २. जिसे क्षय या यक्ष्मा रोग हो ।
संज्ञा पुं० चंद्रमा ।
संज्ञा स्त्री० यक्ष्मा ।
क्षय्य–वि० क्षय होने के योग्य ।
क्षर–वि० नाशवान् ।
संज्ञा पुं० १. जल । २. मेघ ।
क्षरण–संज्ञा पुं० रस रसकर चूना ।
क्षांत–वि० [स्त्री० क्षांता] क्षमा करनेवाला ।
क्षांति–संज्ञा स्त्री० १. सहिष्णुता । २. क्षमा ।
क्षात्र–वि० क्षत्रियों का ।
संज्ञा पुं० क्षत्रियपन ।
क्षाम–वि० [स्त्री० क्षामा] क्षीण ।
क्षार–संज्ञा पुं० १. खार । २. नमक । ३. राख ।
वि० १. क्षरणशील । २. खारा ।
क्षारलवण–संज्ञा पुं० खारी नमक ।
क्षिति–संज्ञा स्त्री० पृथिवी ।
क्षितिज–संज्ञा पुं० दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं ।
क्षिप्त–वि० १. फेंका हुआ । २. पतित । ३. चंचल ।
क्षिप्र–क्रि० वि० शीघ्र ।
वि० तेज़ ।
क्षिप्रहस्त–वि० शीघ्र या तेज़ काम करनेवाला ।
क्षीण–वि० दुबला-पतला ।
क्षीण चंद्र–संज्ञा पुं० कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का चंद्रमा ।
क्षीणता–संज्ञा स्त्री० १. निर्बलता । २. दुबलापन ।
क्षीर–संज्ञा पुं० १. दूध । २. पानी । ३. खीर ।
क्षीरज–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा । २. शंख । ३. कमल । ४. दही ।
क्षीरजा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।
क्षीरधि–संज्ञा पुं० समुद्र ।
क्षीरनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र ।
क्षीरसागर–संज्ञा पुं० पुराणानुसार सात समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना जाता है ।
क्षीरोद–संज्ञा पुं० क्षीर समुद्र ।
क्षुण्ण–वि० १. अभ्यस्त । २. खंडित ।
क्षुत–संज्ञा स्त्री० भूख ।
क्षुद्र–वि० १. कृपण । २. नीच । ३. अल्प ।
क्षुद्रघंटिका–संज्ञा स्त्री० १. घुँघरूदार करधनी । २. घुँघरू ।

ख़ामख़ाह, ख़ामख़ाही–क्रि० वि० दे० "ख़्वाहमख़्वाह"।
खामना–क्रि० स० किसी पात्र का मुँह बंद करना।
ख़ामोश–वि० चुप।
ख़ामोशी–संज्ञा स्त्री० मौन।
खार–संज्ञा पुं० १. दे० "क्षार"। २. सज्जी। ३. सोना। ४. धूल।
ख़ार–संज्ञा पुं० १. काँटा। २. डाह।
खारा–वि० पुं० [स्त्री० खारी] क्षार या नमक के स्वाद का।
संज्ञा पुं० १. जालीदार थैला। २. झाबा।
खारिक०†–संज्ञा पुं० छोहारा।
ख़ारिज–वि० १. निकाला हुआ। २. भिन्न। ३. जिस (अभियोग) की सुनाई न हो।
ख़ारिश–संज्ञा स्त्री० खुजली।
खारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का क्षार लवण।
वि० जिसमें खार हो।
खारुआँ, खारुवा–संज्ञा पुं० १. आल से बना हुआ एक प्रकार का रंग। २. इस रंग से रँगा हुआ मोटा कपड़ा।
खाल–संज्ञा स्त्री० चमड़ा।
संज्ञा स्त्री० नीची भूमि।
ख़ालसा–वि० १. जिस पर केवल एक का अधिकार हो। २. राज्य का।
संज्ञा पुं० सिक्खों की एक विशेष मंडली।
खाला–वि० [स्त्री० खाली] नीचा।
ख़ाला–संज्ञा स्त्री० मौसी।
ख़ालिस–वि० शुद्ध।
ख़ाली–वि० १. जो भरा न हो। २. विहीन। ३. व्यर्थ।
क्रि० वि० सिर्फ़।
ख़ाविंद–संज्ञा पुं० १. पति। २. मालिक।
ख़ास–वि० १. मुख्य। २. आत्मीय। ३. स्वयं।
ख़ासगी–वि० निज का।
ख़ासा–वि० पुं० [स्त्री० ख़ासी] १. अच्छा। २. स्वस्थ। ३. सुंदर। ४. भरपूर।
ख़ासियत–संज्ञा स्त्री० १. स्वभाव। २. सिफ़त।
खिँचना–क्रि० अ० १. घसीटा जाना। २. तनना। ३. प्रवृत्त होना। ४. चित्रित होना।
खिँचवाना–क्रि० स० खींचने का काम दूसरे से कराना।
खिँचाई–संज्ञा स्त्री० १. खींचने की क्रिया। २. खींचने की मज़दूरी।
खिँचाना–क्रि० स० दे० "खिँचवाना"।
खिँचाव–संज्ञा पुं० "खिँचना" का भाव।
खिँडाना†–क्रि० स० छितराना।
खिचड़वार–संज्ञा पुं० मकर-संक्रांति।
खिचड़ी–संज्ञा स्त्री० १. एक में मिलाया या पकाया हुआ दाल और चावल। २. एक ही में मिले हुए दो या अधिक प्रकार के पदार्थ। ३. मकर संक्रांति।
वि० मिला-जुला।
खिजलाना–क्रि० अ० चिढ़ना।
क्रि० स० चिढ़ाना।
ख़िज़ाब–संज्ञा पुं० सफ़ेद बालों को

क्षुद्रता–संज्ञा स्त्री० नीचता।
क्षुद्रप्रकृति–वि० ओछे या खोटे स्वभाववाला।
क्षुद्रबुद्धि–वि० दुष्ट या नीच बुद्धि-वाला।
क्षुद्राशय–वि० नीच-प्रकृति।
क्षुधा–संज्ञा स्त्री० [वि० क्षुधित, क्षुधालु] भूख।
क्षुधातुर–वि० भूखा।
क्षुधावंत–वि० दे० "क्षुधावान्"।
क्षुधावान्–वि० [स्त्री० क्षुधावती] भूखा।
क्षुधित–वि० भूखा।
क्षुप–संज्ञा पुं० पौधा।
क्षुब्ध–वि० १. चंचल। २. व्याकुल।
क्षुभित–वि० क्षुब्ध।
क्षुर–संज्ञा पुं० १. छुरा। २. पशुओं के पाँव का खुर।
क्षुरप्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बाण। २. खुरपा।
क्षुरिका–संज्ञा स्त्री० १. छुरी। २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद्।
क्षुरी–संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षुरिनी] १. नाई। २. वह पशु जिसके पाँव में खुर हों। संज्ञा स्त्री० छुरी।
क्षेत्र–संज्ञा पुं० वह स्थान जो रेखाओं से घिरा हुआ हो।
क्षेत्रगणित–संज्ञा पुं० क्षेत्रों के नापने और उनका क्षेत्रफल निकालने की विधि बतानेवाला गणित।
क्षेत्रज्ञ–संज्ञा पुं० १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. किसान। वि० जानकार।
क्षेत्रपति–संज्ञा पुं० १. खेतिहर। २. जीवात्मा। ३. परमात्मा।
क्षेत्रपाल–संज्ञा पुं० १. खेत का रख-वाला। २. द्वारपाल।
क्षेत्रफल–संज्ञा पुं० रकबा।
क्षेत्रविद्–संज्ञा पुं० जीवात्मा।
क्षेत्री–संज्ञा पुं० खेत का मालिक।
क्षेप–संज्ञा पुं० फेंकना।
क्षेपक–वि० १. फेंकनेवाला। २. मिश्रित। संज्ञा पुं० ऊपर से या पीछे से मिलाया हुआ अंश।
क्षेपण–संज्ञा पुं० फेंकना।
क्षेमकरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की चील जिसका गला सफेद होता है। २. एक देवी।
क्षेम–संज्ञा पुं० १. सुरक्षा। २. कुशल।
क्षोणि–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
क्षोणिप–संज्ञा पुं० राजा।
क्षोणी–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणि"।
क्षोभ–संज्ञा पुं० [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १. विचलता। २. व्याकुलता। ३. रंज।
क्षोभण–वि० क्षोभित करनेवाला। संज्ञा पुं० काम के पाँच बाणों में से एक।
क्षोभित–वि० १. व्याकुल। २. भय-भीत। ३. क्रुद्ध।
क्षोभी–वि० व्याकुल।
क्षोम–संज्ञा पुं० दे० "क्षौम"।
क्षौणि, क्षौणी–संज्ञा स्त्री० पृथिवी।
क्षौम–संज्ञा पुं० वस्त्र।
क्षौर–संज्ञा पुं० हजामत।
क्षौरिक–संज्ञा पुं० नाई।
क्ष्मा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

काला करने की औषधि।
खिझ०-संज्ञा स्त्री० दे० "खीझ", "खीज"।
खिझना-क्रि० अ० दे० "खीजना"।
खिझाना-क्रि० स० चिढ़ाना।
खिड़की-संज्ञा स्त्री० झरोखा।
ख़िताब-संज्ञा पुं० पदवी।
ख़िदमत-संज्ञा स्त्री० सेवा।
खिन्न-वि० उदासीन।
खिपना०-क्रि० अ० १. खपना। २. निमग्न होना।
खियाना†-क्रि० अ० रगड़ से घिस जाना।
†क्रि० वि० दे० "खिलाना"।
खिरनी-संज्ञा स्त्री० एक ऊँचा पेड़ और उसके फल जो खाए जाते हैं।
ख़िराज-संज्ञा पुं० कर।
ख़िलअत-संज्ञा स्त्री० राजा की ओर से दी गई उपाधि या उपहार।
खिलकौरी†-संज्ञा स्त्री० खिलवाड़।
खिलखिलाना-क्रि० अ० खिल खिल शब्द करके हँसना। ज़ोर से हँसना।
खिलना-क्रि० अ० १. विकसित होना। २. प्रसन्न होना।
ख़िलवत-संज्ञा स्त्री० एकांत।
खिलवाड़-संज्ञा पुं० दे० "खेलवाड़"।
खिलवाना-क्रि० स० दूसरे से भोजन कराना।
क्रि० स० प्रफुलित कराना।
क्रि० स० दे० "खेलवाना"।
खिलाई-संज्ञा स्त्री० खाने या खिलाने का काम।
संज्ञा स्त्री० वह दाई या मज़दूरनी जो बच्चों को खेलाती हो।
खिलाड़ी-संज्ञा पुं० [स्त्री० खिलाड़िन] खेलनेवाला।
खिलाना-क्रि० स० खेल कराना।
क्रि० स० भोजन कराना।
क्रि० स० विकसित करना।
ख़िलाफ़-वि० विरुद्ध।
खिलौना-संज्ञा पुं० कोई मूर्ति जिससे बालक खेलते हैं।
खिल्ली-संज्ञा स्त्री० हँसी।
† संज्ञा स्त्री० १. पान का बीड़ा। २. कील।
खिसकना-क्रि० अ० दे० "खसकना"।
खिसाना०†-क्रि० अ० दे० "खिसियाना"।
ख़िसारा-संज्ञा पुं० घाटा।
खिसियाना-क्रि० अ० १. शरमाना। २. खफ़ा होना।
खिसी०†-संज्ञा स्त्री० लज्जा।
खिसौहाँ०-वि० १. लज्जित सा। २. कुढ़ा या रिसाया सा।
खींच-संज्ञा स्त्री० खींचने का भाव।
खींच-तान-संज्ञा स्त्री० खींचाखींची।
खींचना-क्रि० स० [प्रे० खिंचवाना] १. घसीटना। २. ऐंचना। ३. आकर्षित करना। ४. चित्रित करना।
खींचाखींची, खींचातानी-संज्ञा स्त्री० दे० "खींचतान"।
खीज-संज्ञा स्त्री० झुँझलाहट।
खीजना-क्रि० अ० झुँझलाना।
खीझ०†-संज्ञा स्त्री० दे० "खीज"।
खीझना०†-क्रि० अ० दे० "खीजना"।
खीन०†-वि० क्षीण।
खीर-संज्ञा स्त्री० दूध में पकाया हुआ चावल।
खीरा-संज्ञा पुं० ककड़ी की जाति का एक लंबा फल।
खील-संज्ञा स्त्री० लावा।
† संज्ञा स्त्री० दे० "कील"।

ख

ख–हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर।
खंख– वि० १. छूछा। २. उजाड़।
खँखरा†–संज्ञा पुं० ताँबे का बड़ा देग जिसमें चावल आदि पकाया जाता है। वि० जिसमें बहुत से छेद हों।
खखार–संज्ञा पुं० दे० "खखार"।
खंग–संज्ञा पुं० १. तलवार। २. गैंडा।
खँगहा–वि० जिसे खाँग या निकले हुए दाँत हों।
संज्ञा पुं० गैंडा।
खगालना–क्रि० स० १. थोड़ा धोना। २. खाली कर देना।
खँगी–संज्ञा स्त्री० कमी।
खँघारना–क्रि० स० दे० "खँगालना"।
खँचना†–क्रि० अ० चिह्नित होना।
खँचाना†–क्रि० स० १. चिह्न बनाना। २. जल्दी जल्दी लिखना।
खँजड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "खँजरी"।
खंजन–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् से लेकर शीत काल तक दिखाई देता है।
खंजर–संज्ञा पुं० कटार।
खँजरी–संज्ञा स्त्री० डफली की तरह का एक छोटा बाजा।
खंजरीट–संज्ञा पुं० खंजन।
खंड–संज्ञा पुं० १. भाग। २. देश। ३. चीनी।
वि० १. अपूर्ण। २. छोटा।
खंडन–संज्ञा पुं० [वि० खंडनीय, खंडित] १. भंजन। २. किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करना।
खंडनीय–वि० १. तोड़ने फोड़ने लायक। २. खंडन करने योग्य।
खंडपरशु–संज्ञा पुं० १. महादेव। २. विष्णु। ३. परशुराम।
खंडपूरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी।
खंडवानी–संज्ञा स्त्री० खाँड का रस। शरबत।
खँड़साल–संज्ञा स्त्री० खाँड या शक्कर बनाने का कारखाना।
खँडहर–संज्ञा पुं० किसी टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ भाग।
खंडित–वि० १. टूटा हुआ। २. अपूर्ण।
खँड़िया–संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा।
खँडौरा†–संज्ञा पुं० मिसरी का लड्डू। ओला।
खंता†–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खंती] १. कुदाल। २. फावड़ा।
खंदक–संज्ञा स्त्री० १. शहर या किले के चारों ओर की खाई। २. बड़ा गड्ढा।
खंदा*†–संज्ञा पुं० खोदनेवाला।
खँधवाना–क्रि० स० खाली कराना।
खंभ–संज्ञा पुं० दे० "खंभा"।
खंभा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खँभिया] १. स्तंभ। २. बड़ी लाट। पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा।
खँभार*†–संज्ञा पुं० १. अंदेशा। २. डर।
खँभिया–संज्ञा स्त्री० छोटा पतला खंभा।
ख–संज्ञा पुं० आसमान।
खक्खा–संज्ञा पुं० कहकहा।

खीला‡—संज्ञा पुं० काँटा।
खीली—संज्ञा स्त्री० पान का बीड़ा।
खीस॰†—वि० नष्ट।
संज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता। २. क्रोध।
संज्ञा स्त्री० लज्जा।
खीसा—संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खीसी] थैला।
खुक्ख—वि० खाली।
खुखड़ी—संज्ञा स्त्री० १. तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन। २. नैपाली छुरी।
खुगीर—संज्ञा पुं० चारजामा।
खुचर, खुचुर—संज्ञा स्त्री० झूठ मूठ अवगुण दिखलाने का कार्य्य।
खुजलाना—क्रि० स० खुजली मिटाने के लिये नख आदि को अंग पर फेरना। सहलाना।
क्रि० अ० किसी अंग में सुरसुरी या खुजली मालूम होना।
खुजलाहट—संज्ञा स्त्री० सुरसुरी। खुजली।
खुजली—संज्ञा स्त्री० १. खुजलाहट। २. एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है।
खुजाना—क्रि० स०, क्रि० अ० दे० "खुजलाना"।
खुटक॰†—संज्ञा स्त्री० खटका।
खुटकना—क्रि० स० किसी वस्तु को ऊपर से तोड़ या नोच लेना।
खुटका—संज्ञा पुं० दे० "खटका"।
खुटचाल॰—संज्ञा स्त्री० १. दुष्टता। २. खराब चाल-चलन।
खुटचाली॰—वि० १. दुष्ट। २. बदचलन।
खुटना॰†—क्रि० अ० खुलना।
क्रि० अ० समाप्त होना।
खुटपन, खुटपना—संज्ञा पुं० खोटापन।
खुटाई—संज्ञा स्त्री० खोटापन।
खुड्डी, खुड्ढी—संज्ञा स्त्री० १. पाखाने में पैर रखने के पायदान। २. पाखाना फिरने का गड्ढा।
खुत्थी, खुथी॰†—संज्ञा स्त्री० १. खूँथी। २. थाती।
.खुद—अव्य० स्वयं।
.खुदग़रज़—वि० स्वार्थी।
.खुदग़रज़ी—संज्ञा स्त्री० स्वार्थपरता।
खुदना—क्रि० अ० खोदा जाना।
खुदरा—संज्ञा पुं० फुटकर चीज़।
खुदवाई—संज्ञा स्त्री० खुदवाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
खुदवाना—क्रि० स० खोदने का काम कराना।
.खुदा—संज्ञा पुं० ईश्वर।
.खुदाई—संज्ञा स्त्री० १. ईश्वरता। २. सृष्टि।
खुदाई—संज्ञा स्त्री० खोदने का भाव, काम या मज़दूरी।
.खुदी—संज्ञा पुं० अहंकार।
खुद्दी—संज्ञा स्त्री० चावल, दाल आदि के बहुत छोटे छोटे टुकड़े।
खुनखुना—संज्ञा पुं० घुनघुना। झुनझुना।
खुनस—संज्ञा स्त्री० [वि० खुनसी] क्रोध।
खुनसाना†—क्रि० अ० क्रोध करना।
खुनसी—वि० क्रोधी।
.खुफ़िया—वि० गुप्त।
खुभना—क्रि० स० चुभना।
खुभी—संज्ञा स्त्री० कान में पहनने की लौंग।
खुमान—वि० दीर्घजीवी।

खखार–संज्ञा पुं० कफ।
खखारना–क्रि० अ० थूक या कफ बाहर करने के लिये गले से शब्द सहित वायु निकालना।
खखेटना*–क्रि० स० भगाना।
खग–संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. बाण।
खगना†*–क्रि० अ० चुभना।
खगपति–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. गरुड़।
खगेश–संज्ञा पुं० गरुड़।
खगोल–संज्ञा पुं० १. आकाश-मंडल। २. खगोल विद्या।
खगोल विद्या–संज्ञा स्त्री० ज्योतिष।
खग्ग*–संज्ञा पुं० तलवार।
खग्रास–संज्ञा पुं० ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य या चंद्र का सारा मंडल ढँक जाय।
खचन–संज्ञा पुं० [वि० खचित] १. बाँधने या जड़ने की क्रिया। २. अंकित करने या होने की क्रिया।
खचना*–क्रि० अ० १. जड़ा जाना। २. अंकित होना।
क्रि० स० १. जड़ना। २. अंकित करना।
खचर–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. मेघ। ३. पक्षी। ४. बाण।
वि० आकाश में चलनेवाला।
खचरा–वि० १. दोगला। २. दुष्ट।
खचाखच–क्रि० वि० ठसाठस।
खचित–वि० खींचा हुआ।
खच्चर–संज्ञा पुं० गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।
खज*–वि० खाने योग्य।
खजहजा*–संज्ञा पुं० खाने योग्य उत्तम फल या मेवा।
खज़ानची–संज्ञा पुं० कोशाध्यक्ष।
खज़ाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ धन या और कोई चीज़ संग्रह करके रखी जाय।
खजुली†–संज्ञा स्त्री० दे० "खुजली"।
खजूर–संज्ञा पुं० स्त्री० १. ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके फल खाए जाते हैं। २. एक प्रकार की मिठाई।
खजूरी–वि० खजूर का।
खट–संज्ञा पुं० ठोंकने-पीटने की आवाज़।
खटक–संज्ञा स्त्री० खटका।
खटकना–क्रि० अ० १. 'खटखट' शब्द होना। २. रह रहकर पीड़ा होना। ३. खलना। ४. परस्पर झगड़ा होना।
खटका–संज्ञा पुं० १. 'खटखट' शब्द। २. डर। ३. चिंता।
खटकीड़ा–संज्ञा पुं० दे० "खटमल"।
खटखट–संज्ञा स्त्री० १. ठोंकने-पीटने का शब्द। २. झंझट। झमेला। ३. लड़ाई।
खटखटाना–क्रि० स० खड़खड़ाना।
खटना–क्रि० स० धन कमाना।
क्रि० अ० काम-धंधे में लगना।
खटपट–संज्ञा स्त्री० १. अनबन। २. ठोंकने-पीटने या टकराने का शब्द।
खटपाटी–संज्ञा स्त्री० खाट की पाटी।
खटबुना–संज्ञा पुं० चारपाई आदि बुननेवाला।
खटमल–संज्ञा पुं० उन्नावी रंग का एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में उत्पन्न होता है। खटकीड़ा।
खटमिट्ठा–वि० कुछ खट्टा और कुछ मीठा।
खटराग–संज्ञा पुं० झंझट।

ख़ुमार–संज्ञा पुं० दे० "ख़ुमारी"।
ख़ुमारी–संज्ञा स्त्री० १. मद। २. नशा उतरने के समय की हल्की थकावट। ३. वह शिथिलता जो रात भर जागने से होती है।
खुमी–संज्ञा स्त्री० १. सोने की कील जिसे लोग दाँतों में जड़वाते हैं। २. धातु का पोला छल्ला जो हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाता है।
खुरंड–संज्ञा स्त्री० सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी।
खुर–संज्ञा पुं० सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो बीच से फटी होती है।
खुरका–संज्ञा स्त्री० सोच।
खुरखुर–संज्ञा स्त्री० वह शब्द जो गले में कफ आदि रहने के कारण साँस लेते समय होता है।
खुरखुरा–वि० खरदरा।
खुरखुराना–क्रि० अ० गले में कफ के कारण घरघराहट होना। क्रि० अ० खुरखुरा मालूम होना।
खुरचन–संज्ञा स्त्री० वह वस्तु जो खुरचकर निकाली जाय।
खुरचना–क्रि० अ० करोना।
खुरचाल–संज्ञा स्त्री० दे० "खुटचाल"।
खुरजी–संज्ञा स्त्री० बड़ा थैला।
खुरपका–संज्ञा पुं० चौपायों का एक रोग जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाने निकल आते हैं।
खुरपा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का औज़ार।
खुरमा–संज्ञा पुं० १. छोहारा। २. एक प्रकार का पकवान या मिठाई।
ख़ुराक–संज्ञा स्त्री० भोजन।
ख़ुराकी–संज्ञा स्त्री० वह धन जो ख़ुराक के लिये दिया जाय।
ख़ुराफ़ात–संज्ञा स्त्री० १. बेहूदा और रद्दी बात। २. गाली-गलौज।
खुरी–संज्ञा स्त्री० टाप का चिह्न।
ख़ुर्द–वि० छोटा।
ख़ुर्दबीन–संज्ञा स्त्री० वह यंत्र जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी देख पड़ती है।
ख़ुर्द बुर्द–क्रि० वि० नष्ट-भ्रष्ट।
खुर्दा–संज्ञा पुं० छोटी मोटी चीज़।
ख़ुर्राट–वि० १. बूढ़ा। २. चालाक।
खुलना–क्रि० अ० १. आवरण का दूर होना। २. छेद होना। ३. आरंभ होना। रवाना हो जाना। ४. प्रकट हो जाना। ५. भेद बताना।
खुलवाना–क्रि० स० खोलने का काम दूसरे से कराना।
खुला–वि० पुं० १. बंधन-रहित। २. स्पष्ट।
ख़ुलासा–संज्ञा पुं० सारांश। वि० १. खुला हुआ। २. साफ़ साफ़।
खुल्लमखुल्ला–क्रि० वि० खुले आम।
ख़ुश–वि० प्रसन्न।
ख़ुशख़बरी–संज्ञा स्त्री० अच्छी ख़बर।
ख़ुशदिल–वि० १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। २. मसख़रा।
ख़ुशबू–संज्ञा स्त्री० सुगंधि।
ख़ुशामद–संज्ञा स्त्री० चापलूसी।
ख़ुशामदी–वि० चापलूस।
ख़ुशामदी टट्टू–संज्ञा पुं० वह जिसका काम ख़ुशामद करना हो।
ख़ुशी–संज्ञा स्त्री० आनंद।
ख़ुश्क–वि० १. सूखा। २. केवल।
ख़ुश्की–संज्ञा स्त्री० १. रूखापन। २. स्थल या भूमि।

खटाई—संज्ञा स्त्री० १. खट्टापन। २. खट्टी चीज़।
खटाखट—संज्ञा पुं० ठोंकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द। क्रि० वि० जल्दी जल्दी।
खटाना—क्रि० अ० खट्टा होना। क्रि० अ० निर्वाह होना। गुज़ारा होना।
खटापटी—संज्ञा स्त्री० दे० "खटपट"।
खटाव—संज्ञा पुं० निर्वाह।
खटास—संज्ञा स्त्री० खट्टापन।
खटिक—संज्ञा पुं० [स्त्री० खटकिन] एक छोटी जाति जिसका काम फल, तरकारी आदि बेचना है।
खटिया—संज्ञा स्त्री० खटोली।
खटेटी—वि० जिस पर बिछौना न हो।
खटोलना—संज्ञा पुं० दे० "खटोला"।
खटोला—संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट।
खट्टा—वि० तुर्श। अम्ल।
खट्टी-संज्ञा स्त्री० खट्टा नीबू।
खट्टू—संज्ञा पुं० कमानेवाला।
खट्वांग—संज्ञा पुं० १. चारपाई का पाया या पाटी। २. शिव का एक अस्त्र।
खट्वा—संज्ञा स्त्री० खटिया।
खड़क—संज्ञा स्त्री० दे० "खटक"।
खड़कना—क्रि० अ० दे० "खटकना"।
खड़खड़ाना—क्रि० अ० कड़ी वस्तुओं का परस्पर शब्द के साथ टकराना। क्रि० स० कई वस्तुओं का परस्पर टकराना।
खड़खड़िया—संज्ञा स्त्री० पालकी।
खड़ग०—संज्ञा पुं० दे० "खड्ग"।
खड़गी—संज्ञा पुं० दे० "खड्गी"।
खड़बड़—संज्ञा स्त्री० १. खट खट शब्द। २. उलट-फेर।
खड़बड़ाना—क्रि० अ० घबराना। क्रि० स० किसी वस्तु को उलट पुलटकर "खड़बड़" शब्द उत्पन्न करना।
खड़बड़ाहट—संज्ञा स्त्री० "खड़बड़ाना" का भाव।
खड़बड़ी—संज्ञा स्त्री० व्यतिक्रम।
खड़मंडल—संज्ञा पुं० गड़बड़।
खड़ा—वि० [स्त्री० खड़ी] १. ऊपर को उठा हुआ। २. स्थिर। ३. प्रस्तुत। ४. आरंभ। ५. जो उखाड़ा या काटा न गया हो।
खड़ाऊँ—संज्ञा स्त्री० काठ के तले का खुला जूता।
खड़िया—संज्ञा स्त्री० खरिया।
खड़ीबोली—संज्ञा स्त्री० वर्तमान हिंदी गद्य की भाषा।
खड्ग—संज्ञा पुं० एक प्रकार की तलवार।
खड्गी—संज्ञा पुं० वह जिसके पास खड्ग हो।
खड्ड, खड्डा—संज्ञा पुं० गड्ढा।
खत—संज्ञा पुं० घाव।
ख़त—संज्ञा पुं० १. पत्र। २. हजामत।
ख़तना—संज्ञा पुं० सुन्नत।
ख़तम—वि० पूर्ण।
ख़तर, ख़तरा—संज्ञा पुं० डर।
ख़ता—संज्ञा स्त्री० क़सूर।
ख़तावार—वि० दोषी।
खति॰—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षति"।
खतियाना—क्रि० स० आय-व्यय और क्रय-विक्रय आदि को खाते में अलग अलग मद में लिखना।

खुसाल, खुस्याल॰–वि॰ आनंदित।
खूँखार–वि॰ १. भयंकर। २. निर्दय।
खूँट–संज्ञा पुं॰ छोर।
संज्ञा स्त्री॰ कान की मैल।
खूँटना–क्रि॰ स॰ टोकना।
खूँटा–संज्ञा पुं॰ पशु बाँधने के लिये ज़मीन में गड़ी लकड़ी या मेख।
खूँटी–संज्ञा स्त्री॰ छोटी गड़ी लकड़ी।
खूँद–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ खूँदना] थोड़ी जगह में घोड़े का इधर-उधर चलते या पैर पटकते रहना।
खूँदना–क्रि॰ अ॰ १. उछल-कूद करना। †२. कुचलना।
खूँटना॰†–क्रि॰ अ॰ बंद हो जाना।
क्रि॰ स॰ रोक-टोक करना।
खूद, खूदड़, खूदर†–संज्ञा पुं॰ किसी वस्तु को छान लेने या साफ़ कर लेने पर निकम्मा बचा हुआ भाग।
ख़ून–संज्ञा पुं॰ १. रक्त। २. वध।
ख़ून-ख़राबा–संज्ञा पुं॰ मार-काट।
ख़ूनी–वि॰ १. हत्यारा। २. अत्याचारी।
ख़ूब–वि॰ [संज्ञा ख़ूबी] अच्छा।
क्रि॰ वि॰ अच्छी तरह से।
ख़ूबसूरत–वि॰ सुंदर।
ख़ूबसूरती–संज्ञा स्त्री॰ सुंदरता।
ख़ूबी–संज्ञा स्त्री॰ १. भलाई। २. गुण।
खूसट–संज्ञा पुं॰ उल्लू।
वि॰ मनहूस।
खृष्टीय–वि॰ ईसाई।
खेकसा, खेखसा–संज्ञा पुं॰ परवल के आकार का एक रोएँदार फल या तरकारी।
॰ संज्ञा पुं॰ शिकार।
खेटकी–संज्ञा पुं॰ अहेरी। संज्ञा पुं॰ शिकारी।
खेड़ा†–संज्ञा पुं॰ छोटा गाँव।
खेड़ी–संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार का देशी लोहा।
खेत–संज्ञा पुं॰ १. अनाज आदि की फ़सल उत्पन्न करने के योग्य जोतने-बोने की ज़मीन। २. समर-भूमि।
खेतिहर–संज्ञा पुं॰ किसान।
खेती–संज्ञा स्त्री॰ १. किसानी। २. खेत में बोई हुई फ़सल।
खेती-बारी–संज्ञा स्त्री॰ किसानी।
खेद–संज्ञा पुं॰ [वि॰ खेदित, खिन्न] दुःख।
खेदना†–क्रि॰ स॰ खदेरना।
खेदा–संज्ञा पुं॰ १. किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। २. शिकार।
खेना–क्रि॰ स॰ १. नाव के डाँड़ों को चलाना जिसमें नाव चले। २. काटना।
खेप–संज्ञा स्त्री॰ १. लदान। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।
खेपना–क्रि॰ स॰ बिताना।
खेम॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "क्षेम"।
खेमटा–संज्ञा पुं॰ १. बारह मात्राओं का एक ताल। २. इस ताल पर होनेवाला गाना या नाच।
ख़ेमा–संज्ञा पुं॰ तंबू। डेरा।
खेल–संज्ञा पुं॰ १. मन बहलाने या व्यायाम करने के लिये इधर-उधर उछल-कूद। २. मामला।
खेलक॰–संज्ञा पुं॰ खेलाड़ी।
खेलना–क्रि॰ अ॰ [प्रे॰ खेलाना] क्रीड़ा करना।
क्रि॰ स॰ मन बहलाव का काम करना।
खेलवाड़–संज्ञा पुं॰ तमाशा।

खेलाड़ी–वि० १. खेलनेवाला। २. विनोदी।
संज्ञा पुं० वह जो खेले।
खेलार†–संज्ञा पुं० दे० "खेलाड़ी"।
खेवक*–संज्ञा पुं० मल्लाह।
खेवट–संज्ञा पुं० पटवारी का एक कागज़ जिसमें हर एक पट्टीदार का हिस्सा लिखा रहता है।
संज्ञा पुं० मल्लाह।
खेवा–संज्ञा पुं० १. नाव का किराया। २. नाव द्वारा नदी पार करने का काम। ३. बार।
खेवाई–संज्ञा स्त्री० १. नाव खेने का काम। २. नाव खेने की मज़दूरी।
खेस–संज्ञा पुं० बहुत मोटे सूत की लंबी चादर।
खेसारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मटर।
खेह–संज्ञा स्त्री० धूल।
खैंचना–क्रि० स० दे० "खींचना"।
खैर–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बबूल। २. कत्था।
संज्ञा स्त्री० कुशल।
अव्य० १. कुछ चिंता नहीं। २. अच्छा।
ख़ैरख़्वाह–वि० [संज्ञा ख़ैरख़्वाही] भलाई चाहनेवाला।
खैरा–वि० खैर के रंग का।
ख़ैरात–संज्ञा स्त्री० [वि० ख़ैराती] दान।
ख़ैरियत–संज्ञा स्त्री० कुशल-क्षेम।
खोंच–संज्ञा स्त्री० १. खरोंट। २. काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।
खोंचा–संज्ञा पुं० बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस।
खोंट–संज्ञा स्त्री० खोंटने या नोचने की क्रिया।
खोंटना–क्रि० स० किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना।
खोंड़ा–वि० जिसका कोई अंग भंग हो।
खोंता–संज्ञा पुं० चिड़ियों का घोंसला।
खोंसना–क्रि० स० अटकाना।
खोआ†–संज्ञा पुं० दे० "खोया"।
खोई–संज्ञा स्त्री० रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े।
खोखला–वि० पोला।
खोगीर–संज्ञा पुं० दे० "खुगीर"।
खोज–संज्ञा स्त्री० अनुसंधान।
खोजना–क्रि० स० तलाश करना।
खोट–संज्ञा स्त्री० दोष।
खोटा–वि० [स्त्री० खोटी] जिसमें कोई ऐब हो।
खोटाई–संज्ञा स्त्री० १. बुराई। २. छल।
खोटापन–संज्ञा पुं० क्षुद्रता।
खोड़रा–संज्ञा पुं० पुराने पेड़ में खोखला भाग या गड्ढा।
खोद–संज्ञा पुं० युद्ध में पहनने का लोहे का टोप।
खोदना–क्रि० स० १. खनना। २. नक्काशी करना। ३. गड़ाना। ४. उसकाना।
खोद विनोद†–संज्ञा स्त्री० छान-बीन।
खोदवाना–क्रि० स० खोदने का काम दूसरे से करवाना।
खोदाई–संज्ञा स्त्री० १. खोदने का काम। २. खोदने की मज़दूरी।
खोना–क्रि० स० गँवाना।
क्रि० अ० किसी वस्तु का कहीं भूल से छूट जाना।

गर्भाधान–संज्ञा पुं० १. मनुष्य के सोलह संस्कारों में से पहला संस्कार जो गर्भ में आने के समय ही होता है। २. गर्भ की स्थिति।
गर्भाशय–संज्ञा पुं० स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है।
गर्भिणी–वि० स्त्री० जिसे गर्भ हो।
गर्भित–वि० १. गर्भयुक्त। २. पूर्ण।
गर्व–संज्ञा पुं० अहंकार।
गर्वाना॰–क्रि० अ० गर्व करना।
गर्विता–संज्ञा स्त्री० वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमंड हो।
गर्वी–वि० घमंडी।
गर्वीला–वि० [स्त्री० गर्वीली] घमंड से भरा हुआ।
गर्हण–संज्ञा पुं० निंदा।
गर्हित–वि० जिसकी निंदा की जाय।
गर्ह्य–वि० गर्हणीय।
गल–संज्ञा पुं० गला।
गलगंज–संज्ञा पुं० शोरगुल।
गलगंजना–क्रि० अ० शोर करना।
गलगंड–संज्ञा पुं० घेघा।
गलगाजना–क्रि० अ० गाल बजाना।
गलगुथना–वि० मोटा।
गलग्रह–संज्ञा पुं० १. मछली का काँटा। २. वह आपत्ति जो कठिनता से टले।
गलत–वि० [संज्ञा स्त्री० गलती] १. अशुद्ध। २. असत्य।
गलतफहमी–संज्ञा स्त्री० भ्रम।
गलती–संज्ञा स्त्री० भूल।
गलन–संज्ञा पुं० १. गिरना। २. गलना।
गलना–क्रि० अ० किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना।
गलफाँसी–संज्ञा स्त्री० १. गले की फाँसी। २. जंजाल।
गलबाँही–संज्ञा स्त्री० गले में बाँह डालना।
गलमदरी–संज्ञा स्त्री० गाल बजाना।
गलमुच्छा–संज्ञा पुं० गालों पर के बढ़ाए हुए बाल।
गलवाना–क्रि० स० गलाने का काम दूसरे से कराना।
गला–संज्ञा पुं० १. गरदन। २. गले का स्वर। ३. अँगरखे, कुरते आदि की काट में गले पर का भाग। गरेबान।
गलाना–क्रि० स० १. किसी वस्तु के संयोजक अणुओं को पृथक् पृथक् करके उसे नरम, गीला या द्रव करना। २. धीरे धीरे लुप्त करना।
गलानि†॰–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।
गलित–वि० १. गिरा हुआ। २. गला हुआ।
गलित कुष्ठ–संज्ञा पुं० वह कोढ़ जिसमें अंग गल गलकर गिरने लगते हैं।
गली–संज्ञा स्त्री० कूचा।
गलीचा–संज्ञा पुं० कालीन।
गलीज़–वि० मैला।
संज्ञा पुं० १. कूड़ा-करकट। २. पाखाना।
गलेबाज़–वि० जिसका गला अच्छा हो।
गल्प–संज्ञा स्त्री० १. डींग। २. छोटी कहानी।
गल्ला–संज्ञा पुं० शोर।
संज्ञा पुं० झुंड।
गल्ला–संज्ञा पुं० [वि० गल्लई] १. पैदावार। २. अन्न।
गवँ–संज्ञा स्त्री० १. घात। २. मतलब।
गवन॰†–संज्ञा पुं० १. प्रस्थान। २. गौना।

खोनचा–संज्ञा पुं० बड़ी परात या थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।
खोपड़ा–संज्ञा पुं० १. कपाल। २. सिर।
खोपड़ी–संज्ञा स्त्री० सिर।
खोया–संज्ञा पुं० खोवा।
खोर–संज्ञा स्त्री० १. सँकरी गली। २. चौपायों को चारा देने की नाँद। संज्ञा स्त्री० स्नान।
खोरना†–क्रि० अ० नहाना।
खोरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० खोरिया] कटोरा। †ः वि० लँगड़ा।
खोराक–संज्ञा स्त्री० दे० "खुराक"।
खोरिः–संज्ञा स्त्री० तंग गली। संज्ञा स्त्री० ऐब।
खोल–संज्ञा पुं० गिलाफ़।
खोलना–क्रि० स० १. छिपाने या रोकनेवाली वस्तु को हटाना। २. छेद करना। ३. किसी क्रम को चलाना या जारी करना।
खोली–संज्ञा स्त्री० आवरण।
खोह–संज्ञा स्त्री० गुहा।
खौंचा–संज्ञा पुं० साढ़े छः का पहाड़ा।
खौफ़–संज्ञा पुं० [वि० खौफ़नाक] डर।
खौर–संज्ञा स्त्री० १. टीका। २. स्त्रियों का सिर का एक गहना।
खौरना–क्रि० स० चंदन का टीका लगाना।
खौरहा†–वि० [स्त्री० खौरही] १. जिसके सिर के बाल झड़ गए हों। २. जिसके शरीर में खौरा या खुजली का रोग हो। (पशु)
खौरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बुरी खुजली। वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।
खौलना–क्रि० अ० उबलना।
खौलाना–क्रि० स० गरम करना।
ख्यात–वि० प्रसिद्ध।
ख्याति–संज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध।
ख़्याल–संज्ञा पुं० [वि० ख़्याली] १. ध्यान। २. स्मरण। ३. विचार।
ख़्याली–वि० कल्पित। वि० खेल या कौतुक करनेवाला।
ख़िष्टान–संज्ञा पुं० ईसाई।
ख़िष्टीय–वि० १. ईसाई। २. ईसाई धर्म-संबंधी।
ख़ीष्ट–संज्ञा पुं० [वि० ख़िष्टीय] हज़रत ईसा मसीह।
ख़्वाजा–संज्ञा पुं० १. मालिक। २. ऊँचे दर्जे का मुसलमान फ़कीर। ३. रनिवास का नपुंसक भृत्य।
ख़्वाब–संज्ञा पुं० १. नींद। २. स्वप्न।
ख़्वाह–अव्य० अथवा।
ख़्वाहिश–संज्ञा स्त्री० [वि० ख़्वाहिशमंद] इच्छा।

गवनचार–संज्ञा पुं० वर के घर वधू के जाने की रस्म।
गवनना०–क्रि० अ० जाना।
गवना–संज्ञा पुं० दे० "गौना"।
गवय–संज्ञा पुं० [स्त्री० गवयी] १. नील गाय। २. एक छंद।
गवाक्ष–संज्ञा पुं० छोटी खिड़की।
गवारा–वि० १. पसंद। २. सह्य।
गवाह–संज्ञा पुं० [संज्ञा गवाही] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। २. साक्षी।
गवाही–संज्ञा स्त्री० साक्षी का प्रमाण।
गवेषणा–संज्ञा स्त्री० खोज।
गवेषी–वि० [स्त्री० गवेषिणी] खोजनेवाला।
गवैया–वि० गानेवाला।
गवँहा–वि० ग्रामीण।
गव्य–वि० गो से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० १. गायों का झुंड। २. पंचगव्य।
गश–संज्ञा पुं० मूर्च्छा।
गश्त–संज्ञा पुं० [वि० गश्ती] टहलना।
गश्ती–वि० घूमनेवाला।
संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी।
गसीला–वि० [स्त्री० गसीली] १. गठा हुआ। २. गफ।
गस्सा–संज्ञा पुं० ग्रास।
गह–संज्ञा स्त्री० १. पकड़। २. मूठ।
गहगह०–वि० प्रफुल्लित।
क्रि० वि० घमाघम।
गहगहा–वि० १. प्रफुल्लित। २. घमाघम।
गहगहाना–क्रि० अ० आनंद से फूलना।
गहगहे–क्रि० वि० बड़ी प्रफुल्लता के साथ।
गहन–वि० १. गंभीर। २. दुर्गम।
संज्ञा पुं० गहराई।
† संज्ञा पुं० १. ग्रहण। २. बंधक।
संज्ञा स्त्री० पकड़ने का भाव।
गहना–संज्ञा पुं० १. आभूषण। २. रेहन।
क्रि० स० पकड़ना।
गहनि०–संज्ञा स्त्री० हठ।
गहबर०†–वि० १. दुर्गम। २. व्याकुल।
गहबरना–क्रि० अ० आवेग से भरना।
गहर–संज्ञा स्त्री० देर।
संज्ञा पुं० दुर्गम।
गहरना–क्रि० अ० देर लगाना।
क्रि० अ० झगड़ना।
गहरवार–संज्ञा पुं० एक क्षत्रिय वंश।
गहरा–वि० [स्त्री० गहरी] १. गंभीर। २. जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो। ३. बहुत अधिक। ४. गाढ़ा।
गहराई–संज्ञा स्त्री० गहरापन।
गहराना†–क्रि० अ० गहरा होना।
क्रि० स० गहरा करना।
क्रि० अ० दे० "गहरना"।
गहराव†–संज्ञा पुं० गहराई।
गहलौत–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश।
गहाई०†–संज्ञा स्त्री० गहने का भाव।
गहाना–क्रि० स० धराना।
गहीला–वि० [स्त्री० गहीली] घमंडी।
गहेजुआ†–संज्ञा पुं० छछूँदर।
गहेला–वि० [स्त्री० गहेली] १. हठी। २. अहंकारी।
गहैया–वि० पकड़नेवाला।
गह्वर–संज्ञा पुं० १. अंधकारमय और गूढ़ स्थान। २. बिल।

ग

ग–व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है।
गंग–संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।
गंगा–संज्ञा स्त्री० भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी।
गंगा-जमनी–वि० मिला-जुला।
गंगाजल–संज्ञा पुं० गंगा का पानी।
गंगाजली–संज्ञा स्त्री० १. वह सुराही या शीशी जिसमें यात्री गंगाजल भर-कर ले जाते हैं। २. धातु की सुराही।
गंगाधर–संज्ञा पुं० शिव।
गंगापुत्र–संज्ञा पुं० १. भीष्म। २. एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं।
गंगालाभ–संज्ञा पुं० मृत्यु।
गंगासागर–संज्ञा पुं० १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है जहाँ गंगा समुद्र में गिरती है। २. एक प्रकार की बड़ी टोंटीदार झारी।
गंगोदक–संज्ञा पुं० गंगाजल।
गंज–संज्ञा पुं० १. सिर के बाल उड़ने का रोग। २. सिर में छोटी छोटी फुनसियों का रोग।
संज्ञा स्त्री० १. ख़ज़ाना। २. ढेर। ३. बाज़ार।
गंजन–संज्ञा पुं० १. अवज्ञा। २. पीड़ा।
गंजना–क्रि० स० अवज्ञा करना।
गंजा–संज्ञा पुं० गंज रोग।
वि० जिसको गंज रोग हो।
गंजी–संज्ञा स्त्री० ढेर।
संज्ञा स्त्री० बनियायन।
संज्ञा पुं० दे० "गँजेड़ी"।
गंजीफ़ा–संज्ञा पुं० एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।
गँजेड़ी–वि० गाँजा पीनेवाला।
गँठजोड़ा, गँठबंधन–संज्ञा पुं० विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।
गंड–संज्ञा पुं० १. गाल। २. गाँठ।
गंडक–संज्ञा पुं० १. गले में पहनने का जंतर या गंडा। २. गंडकी नदी का तटस्थ देश, तथा वहाँ के निवासी।
संज्ञा स्त्री० दे० "गंडकी"।
गंडकी–संज्ञा स्त्री० गंगा में गिरनेवाली उत्तर-भारत की एक नदी।
गंडमाला–संज्ञा स्त्री० कंठमाला।
गंडस्थल–संज्ञा पुं० कनपटी।
गंडा–संज्ञा पुं० गाँठ।
संज्ञा पुं० पैसे, कौड़ी के गिनने में चार चार की संख्या का समूह।
संज्ञा पुं० आड़ी लकीरों की पंक्ति।
गँड़ासा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० गँड़ासी] चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार।
गँडेरी–संज्ञा स्त्री० ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।
गंदगी–संज्ञा स्त्री० १. मैलापन। २. २. अपवित्रता।
गंदना–संज्ञा पुं० लहसुन या प्याज़ की तरह का एक मसाला।
गँदला–वि० मैला-कुचैला।
गंदा–वि० [स्त्री० गंदी] १. मैला। २. अशुद्ध।
गंदुम–संज्ञा पुं० गेहूँ।
गंदुमी–वि० गेहूँ के रंग का।
गंध–संज्ञा स्त्री० १. महक। २. लेश।
गंधक–संज्ञा स्त्री० [वि० गंधकी] एक पीला जलनेवाला खनिज पदार्थ।

वि० दुर्गम।

गांग-वि० गंगा-संबंधी।

गांगेय-संज्ञा पुं० १. भीष्म। २. कार्तिकेय। ३. कसेरू।

गांज-संज्ञा पुं० राशि।

गांजना-क्रि० स० राशि लगाना।

गांजा-संज्ञा पुं० भांग की जाति का एक पौधा जिसकी कली का धुआँ पीते हैं।

गांठ-संज्ञा स्त्री० [वि० गँठीला] १. गिरह। २. गठरी। ३. जोड़।

गांठगोभी-संज्ञा स्त्री० गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूज़े की सी गोल गाँठ होती है।

गांठना-क्रि० स० १. गाँठ लगाना। २. मिलाना।

गांडर-संज्ञा स्त्री० मूँज की तरह की एक घास।

गांडा-संज्ञा पुं० [स्त्री० गँडी] १. किसी पेड़, पौधे या डंठल का छोटा कटा खंड। २. ईख का छोटा कटा टुकड़ा।

गांडीव-संज्ञा पुं० अर्जुन का धनुष।

गांथना०-क्रि० स० गूँथना।

गांधर्व-वि० गंधर्व-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. गान-विद्या। २. आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और कन्या परस्पर अपनी इच्छा से प्रेमपूर्वक मिलकर पति-पत्निवत् रहते हैं।

गांधर्व वेद-संज्ञा पुं० १. सामवेद का उपवेद। २. संगीत-शास्त्र।

गांधी-संज्ञा स्त्री० गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांभीर्य-संज्ञा पुं० गंभीरता।

गाँवँ, गाँव-संज्ञा पुं० खेड़ा।

गांस-संज्ञा स्त्री० १. वैर। २. गाँठ। ३. निगरानी।

गांसना-क्रि० स० १. गूँथना। २. पकड़ में करना।

गांसी-संज्ञा स्त्री० तीर या बरछी का फल।

गागर, गागरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "गगरी"।

गाछ-संज्ञा पुं० पौधा।

गाज-संज्ञा स्त्री० १. शोर। २. बिजली।
संज्ञा पुं० फेन।

गाजना-क्रि० अ० १. गरजना। २. हर्षित होना।

गाजर-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसका कंद मीठा होता है।

ग़ाज़ी-संज्ञा पुं० १. मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध करे। २. बहादुर।

गाड़-संज्ञा स्त्री० गड्ढा।

गाड़ना-क्रि० स० १. तोपना। २. जमाना। ३. धँसाना।

गाडर†-संज्ञा स्त्री० भेड़।

गाड़ा०†-संज्ञा पुं० बैलगाड़ी।

गाड़ी-संज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल असबाब या आदमियों को पहुँचाने के लिये एक यंत्र।

गाड़ीवान-संज्ञा पुं० गाड़ी हाँकनेवाला।

गाढ़-वि० १. अधिक। २. घना। ३. विकट।
संज्ञा पुं० कठिनाई।

गाढ़ा-वि० [स्त्री० गाढ़ी] १. ठस। मोटा। २. घनिष्ठ। ३. कठिन।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा।

गात-संज्ञा पुं० शरीर।

गात्र-संज्ञा पुं० अंग।

गंधबिलाव–संज्ञा पुं० नेवले की तरह का एक जंतु जिसकी गिलटी से सुगंधित चेप निकलता है।

गंधमार्जार–संज्ञा पुं० गंधबिलाव।

गंधमादन–संज्ञा पुं० १. एक पुराण-प्रसिद्ध पर्वत। २. भौंरा।

गंधर्व–संज्ञा पुं० १. देवताओं का एक भेद। ये गाने में निपुण कहे गए हैं। २. मृग। ३. घोड़ा। ४. प्रेत। ५. एक जाति जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति करती हैं।

गंधर्वविद्या–संज्ञा स्त्री० संगीत।

गंधर्वविवाह–संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक। वह संबंध जो वर और वधू अपने मन से कर लेते हैं।

गंधर्ववेद–संज्ञा पुं० संगीत शास्त्र जो चार उपवेदों में से एक है।

गंधाना–क्रि० स० गंध देना।

गंधाबिरोजा–संज्ञा पुं० चीर नामक वृक्ष का गोंद।

गंधार–संज्ञा पुं० दे० "गांधार"।

गंधी–संज्ञा पुं० [स्त्री० गंधिनी, गंधिन] १. सुगंधित तेल और इत्र आदि बेचनेवाला। २. गँधिया घास।

गंभीर–वि० १. गहरा। २. घना। ३. गूढ़।

गँव†–संज्ञा स्त्री० १. घात। २. मतलब।

गँवई–संज्ञा स्त्री० [वि० गँवइयाँ] गाँव की बस्ती।

गँवरमसला–संज्ञा पुं० गँवारों की कहावत या उक्ति।

गँवाना–क्रि० स० १. काटना। २. खोना।

गँवार–वि० [स्त्री० गँवारी, गँवारिन। वि० गँवारू, गँवारी] १. गाँव का रहनेवाला। २. मूर्ख।

गँवारी–संज्ञा स्त्री० १. देहातीपन। २. मूर्खता। ३. गँवार स्त्री।
वि० १. गँवार का सा। २. भद्दा।

गँवारू–वि० दे० "गँवारी"।

गँस*–संज्ञा पुं० १. द्वेष। २. ताना। तीर की नोक।
संज्ञा स्त्री० तीर की नोक।

गई करना०–क्रि० अ० छोड़ देना।

गईबहोर–वि० खोई हुई वस्तु को पुनः देने अथवा बिगड़े हुए काम को बनानेवाला।

गऊ–संज्ञा स्त्री० गाय।

गगन–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. शून्य स्थान। ३. छप्पय छंद का एक भेद।

गगनचर–संज्ञा पुं० पक्षी।

गगनभेदी, गगनस्पर्शी–वि० बहुत ऊँचा।

गगरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० गगरी] कलसा।

गच–संज्ञा पुं० १. किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २. चूने, सुरखी का मसाला, जिससे ज़मीन पक्की की जाती है। ३. पक्का फ़र्श।

गचकारी–संज्ञा स्त्री० गच का काम।

गछना*†–क्रि० अ० चलना।
क्रि० स० १. चलाना। २. अपने ज़िम्मे लेना।

गज–संज्ञा पुं० [स्त्री० गजी] हाथी।

गज़–संज्ञा पुं० लंबाई मापने की एक माप जो सोलह गिरह या तीन फ़ुट की होती है।

गाथ–संज्ञा पुं० यश।
गाथा–संज्ञा स्त्री० १. स्तुति। २. कथा।
गाद†–संज्ञा स्त्री० गाढ़ी चीज़।
गादा–संज्ञा पुं० अधपका अन्न।
गाध–संज्ञा पुं० स्थान।
वि० [स्त्री० गाधा] १. जो बहुत गहरा न हो। २. थोड़ा।
गाधि–संज्ञा पुं० विश्वामित्र के पिता का नाम।
गान–संज्ञा पुं० [वि० गेय, गेतव्य] संगीत।
गाना–क्रि० स० १. ताल, स्वर के नियम के अनुसार शब्द का उच्चारण करना। २. वर्णन करना।
संज्ञा पुं० १. गाने की क्रिया। २. गीत।
ग़ाफ़िल–वि० [संज्ञा ग़फ़लत] बेसुध।
गाभा–संज्ञा पुं० कोंपल। नया कल्ला।
गाभिन, गाभिनी–वि० स्त्री० गर्भिणी।
गाम–संज्ञा पुं० गाँव।
गामी–वि० [स्त्री० गामिनी] १. चलनेवाला। २. संभोग करनेवाला।
गाय–संज्ञा स्त्री० १. सींगवाला एक मादा चौपाया जो दूध के लिये प्रसिद्ध है। २. बहुत सीधा मनुष्य।
गायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० गायकी] गानेवाला।
गायत्री–संज्ञा स्त्री० १. एक वैदिक छंद। २. एक वैदिक मंत्र जो हिंदू धर्म में सबसे अधिक महत्त्व का माना जाता है।
गायन–संज्ञा पुं० [स्त्री० गायिनी] १. गवैया। २. गान। ३. कार्तिकेय।
ग़ायब–वि० लुप्त।
गायिनी–संज्ञा स्त्री० १. गानेवाली स्त्री। २. एक मात्रिक छंद। ३. गुफा।
संज्ञा स्त्री० दे० "गाली"।
ग़ारत–वि० नष्ट।
गारद–संज्ञा स्त्री० सिपाहियों का झुंड जो रक्षा के लिये नियत हो। पहरा।
गारना–क्रि० स० निचोड़ना।
⊙† क्रि० स० १. गलाना। २. नष्ट करना।
गारा–संज्ञा पुं० मिट्टी अथवा चूने, सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है।
गारी⊙†–संज्ञा स्त्री० दे० "गाली"।
गारुड़–संज्ञा पुं० १. साँप का विष उतारने का मंत्र। २. सुवर्ण।
वि० गरुड़-संबंधी।
गारुड़ी–*संज्ञा पुं० मंत्र से साँप का* विष उतारनेवाला।
गार्गी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
गार्हस्थ्य–संज्ञा पुं० गृहस्थाश्रम।
गाल–संज्ञा पुं० १. कपोल। २. बकवाद करने की लत।
गालगूल⊙†–संज्ञा पुं० व्यर्थ बात।
गालमसूरी–संज्ञा स्त्री० एक पकवान या मिठाई।
गाला–संज्ञा पुं० पूनी।
†संज्ञा पुं० बंड बंड बकने का स्वभाव।
ग़ालिब–वि० जीतनेवाला।
ग़ालिम⊙–वि० दे० "ग़ालिब"।
गाली–संज्ञा स्त्री० दुर्वचन।
गाली-गलौज–संज्ञा स्त्री० तू तू मैं मैं।
गाली-गुफ़्ता–संज्ञा पुं० दे० "गाली-गलौज"।
गालना, गालहना⊙†–क्रि० अ० बात करना।
गालू–वि० १. व्यर्थ डींग मारनेवाला। २. बकवादी।
गाव–संज्ञा पुं० गाय।
गावकुशी–संज्ञा स्त्री० गोवध।

गज़क–संज्ञा पुं० १. चाट । २. जलपान ।
गजगति–संज्ञा स्त्री० हाथी की सी मंद चाल ।
गजगमन–संज्ञा पुं० हाथी की सी मंद चाल ।
गजगामिनी–वि० स्त्री० हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली ।
गजग्राह–संज्ञा पुं० हाथी की झूल ।
गजगौन⊙–संज्ञा पुं० दे० "गजगमन"।
गजदंत–संज्ञा पुं० १. हाथी का दाँत। २. वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों। ३. दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत।
गजदान–संज्ञा पुं० हाथी का मद ।
गजनाल–संज्ञा स्त्री० बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे ।
गजपिप्पली–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी मंजरी औषध के काम आती है ।
गजपीपल–संज्ञा स्त्री० दे० "गज-पिप्पली" ।
ग़ज़ब–संज्ञा पुं० १. कोप । २. आपत्ति। ३. अंधेर। ४. विलक्षण बात ।
गजबाँक, गजबाग–संज्ञा पुं० हाथी का अंकुश ।
गजमुक्ता–संज्ञा स्त्री० प्राचीनों के अनुसार एक मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है ।
गजमोती–संज्ञा पुं० दे० "गजमुक्ता"।
गजरा–संज्ञा पुं० १. फूलों की घनी गुथी हुई माला । २. एक गहना जो कलाई में पहना जाता है ।
गजराज–संज्ञा पुं० बड़ा हाथी ।
ग़ज़ल–संज्ञा स्त्री० फ़ारसी और उर्दू में एक प्रकार की कविता ।
गजवदन–संज्ञा पुं० गणेश ।
गजवान–संज्ञा पुं० महावत ।
गजशाला–संज्ञा स्त्री० फ़ीलख़ाना ।
गजाधर–संज्ञा पुं० दे० "गदाधर" ।
गजानन–संज्ञा पुं० गणेश ।
गजी–संज्ञा स्त्री० गाढ़ा ।
संज्ञा स्त्री० हथिनी ।
गजेंद्र–संज्ञा पुं० १. ऐरावत । २. गजराज ।
गटकना–क्रि० स० १. निगलना । २. हड़पना ।
गटगट–संज्ञा पुं० निगलने या घूँट घूँट पीने में गले से उत्पन्न शब्द ।
गटपट–संज्ञा स्त्री० १. घनिष्ठता । २. सहवास ।
गट्ट–संज्ञा पुं० किसी वस्तु के निगलने में गले से होनेवाला शब्द ।
गट्टा–संज्ञा पुं० कलाई ।
गट्ठर–संज्ञा पुं० बड़ी गठरी ।
गट्ठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] गट्ठर ।
गठन–संज्ञा स्त्री० बनावट ।
गठना–क्रि० अ० १. सटना । २. अनुकूल होना । ३. अधिक मेल-मिलाप होना ।
गठरी–संज्ञा स्त्री० कपड़े में गाँठ देकर बाँधा हुआ सामान ।
गठवाना–क्रि० स० १. गठाना । २. गुँधवाना ।
गठाव–संज्ञा पुं० दे० "गठन" ।
गठित–वि० गठा हुआ ।
गठिया–संज्ञा स्त्री० १. बोझ लादने का बोरा या दोहरा थैला । २. बड़ी गठरी । ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है ।

गावतकिया–संज्ञा पुं० मसनद।
गावदी–वि० बेवकूफ।
गावदुम–वि० जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो।
गाह–संज्ञा पुं० १. ग्राहक। २. पकड़। ३. ग्राह।
गाहक०–संज्ञा पुं० १. खरीददार। २. कद्र करनेवाला।
गाहकी–संज्ञा स्त्री० १. बिक्री। २. गाहक।
गाहन–संज्ञा पुं० [वि० गाहित] स्नान।
गाहना–क्रि० स० डूबकर थाह लेना।
गाहा–संज्ञा स्त्री० कथा।
गाही–संज्ञा स्त्री० फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान।
गिंजना–क्रि० अ० किसी चीज़ का उलटे पुलटे जाने के कारण खराब हो जाना।
गिंजाई–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का घरसाठी कीड़ा।
संज्ञा स्त्री० गींजने का भाव।
गिउ०–संज्ञा पुं० गला।
गिचपिच–वि० [अनु०] अस्पष्ट।
गिचिर पिचिर–वि० दे० "गिचपिच"।
गिजगिजा–वि० ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न मालूम हो।
गिज़ा–संज्ञा स्त्री० भोजन।
गिटकिरी–संज्ञा स्त्री० तान लेने में विशेष प्रकार से स्वर का काँपना।
गिटपिट–संज्ञा स्त्री० निरर्थक शब्द।
गिट्टी–संज्ञा स्त्री० ठीकरी।
गिड़गिड़ाना–क्रि० अ० अत्यंत नम्र होकर कोई बात या प्रार्थना करना।
गिड़गिड़ाहट–संज्ञा स्त्री० १. विनती। २. गिड़गिड़ाने का भाव।
गिद्ध–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा मांसाहारी पक्षी।
गिद्धराज–संज्ञा पुं० जटायु।
गिनती–संज्ञा स्त्री० १. गणना। २. संख्या।
गिनना–क्रि० स० १. गणना करना। २. गणित करना।
गिनवाना–क्रि० स० दे० "गिनाना"।
गिनाना–क्रि० स० गिनने का काम दूसरे से कराना।
गिनी–संज्ञा स्त्री० सोने का एक सिक्का।
गिन्नी†–संज्ञा स्त्री० दे० "गिनी"।
गिर–संज्ञा पुं० पहाड़।
गिरगिट–संज्ञा पुं० छिपकली की जाति का एक जंतु।
गिरगिरी–संज्ञा स्त्री० लड़कों का एक खिलौना।
गिरजा–संज्ञा पुं० ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर।
गिरदा†–संज्ञा पुं० १. घेरा। २. तकिया।
गिरदान†–संज्ञा पुं० गिरगिट।
गिरना–क्रि० अ० १. अपने स्थान से नीचे आ रहना। २. शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना। ३. टूटना।
गिरफ़्त–संज्ञा स्त्री० पकड़ने का भाव।
गिरफ़्तार–वि० जो पकड़ा, कैद किया या बाँधा गया हो।
गिरफ़्तारी–संज्ञा स्त्री० १. गिरफ़्तार होने का भाव। २. गिरफ़्तार होने की क्रिया।
गिरमिट–संज्ञा पुं० बड़ा बरमा।
† संज्ञा पुं० इकरारनामा

गठियाना–क्रि० स० गाँठ देना।
गठीला–वि० [स्त्री० गठीली] जिसमें बहुत सी गाँठें हों।
वि० १. चुस्त। २. मज़बूत।
गठौत, गठौती–संज्ञा स्त्री० १. मित्रता। २. अभिसंधि।
गड–संज्ञा पुं० १. ओट। २. चहारदीवारी।
गड़गड़–संज्ञा स्त्री० १. बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द। २. पेट में भरी वायु के हिलने का शब्द।
गड़गड़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हुक्का।
गड़गड़ाना–क्रि० अ० गरजना।
क्रि० स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना।
गड़गड़ाहट–संज्ञा स्त्री० गड़गड़ाने का शब्द।
गड़दार–संज्ञा पुं० वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ साथ भाला लिए हुए चलता है।
गड़ना–क्रि० अ० १. धँसना। २. शरीर में चुभने की सी पीड़ा पहुँचाना। ३. दर्द करना। ४. दफ़न होना।
गड़प–संज्ञा स्त्री० पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द।
गड़पना–क्रि० स० १. निगलना। २. हज़म करना।
गड़प्पा–संज्ञा पुं० १. गड्ढा। २. धोखा खाने का स्थान।
गड़बड़–वि० [वि० गड़बड़िया] १. ऊँचा नीचा। २. अंडबंड।
संज्ञा पुं० १. कुप्रबंध। २. उपद्रव।
गड़बड़ाना–क्रि० अ० गड़बड़ी में पड़ना।
क्रि० स० गड़बड़ी में डालना।
गड़बड़िया–वि० गड़बड़ करनेवाला।
गड़बड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "गड़बड़"।
गड़रिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० गड़ेरिन] एक जाति जो भेड़ें पालती और उनके ऊन से कंबल बुनती है।
गड़हा–संज्ञा पुं० दे० "गड्ढा"।
गड़ा–संज्ञा पुं० ढेर।
गड़ाना–क्रि० स० चुभाना।
क्रि० स० गाड़ने का काम कराना।
गड़ारी–संज्ञा स्त्री० घेरा।
संज्ञा स्त्री० गंडा।
संज्ञा स्त्री० घिरनी।
गड़ारीदार–वि० १. जिस पर गंडे या धारियाँ पड़ी हों। २. घेरदार।
गड़ुई–संज्ञा स्त्री० पानी पीने का टोंटीदार छोटा बरतन।
गड़ुवा–संज्ञा पुं० टोंटीदार लोटा।
गड़ेरिया–संज्ञा पुं० दे० "गड़रिया"।
गड्ड–संज्ञा पुं० [स्त्री० गड्डी] एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रखी हों।
†⊛ संज्ञा पुं० गड्ढा।
गड्डबड्ड, गड्डमड्ड–संज्ञा पुं० घपला।
वि० अंडबंड।
गड्ढा–संज्ञा पुं० गड़हा।
गढ़ंत–वि० कल्पित।
गढ़–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० गढ़ी] १. खाँई। २. किला।
गढ़न–संज्ञा स्त्री० बनावट।
गढ़ना–क्रि० स० १. रचना। २. दुरुस्त करना। ३. बात बनाना।
गढ़पति–संज्ञा पुं० १. किलेदार। २. राजा।
गढ़वाल–संज्ञा पुं० १. गढ़वाला। २.

गिरवाना–क्रि० स० गिराने का काम दूसरे से कराना।
गिरवी–वि० बंधक।
गिरवीदार–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बंधक रखी हो।
गिरह–संज्ञा स्त्री० १. गाँठ २. एक गज़ का सोलहवाँ भाग।
गिरहकट–वि० जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला। चाईं।
गिरा–संज्ञा स्त्री० १. बोलने की ताक़त। २. वाणी। ३. सरस्वती देवी।
गिराना–क्रि० स० १. अपने स्थान से नीचे डाल देना। २. लड़ाई में मार डालना।
गिरापति–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
गिरावट–संज्ञा स्त्री० गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।
गिरि–संज्ञा पुं० पर्वत।
गिरिजा–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
गिरिधर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
गिरिधारन॰–दे० "गिरिधर"।
गिरिधारी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
गिरिनंदिनी–संज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. गंगा। ३. नदी।
गिरिनाथ–संज्ञा पुं० महादेव।
गिरिराज–संज्ञा पुं० १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय।
गिरिसुत–संज्ञा पुं० मैनाक पर्वत।
गिरिसुता–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
गिरींद्र–संज्ञा पुं० १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. शिव।
गिरीश–संज्ञा पुं० १. महादेव। २. हिमालय पर्वत। ३. कोई बड़ा पहाड़।
गिरैयाँ|–संज्ञा स्त्री० छोटा या पतला गेराँव।
गिरो–वि० रेहन।
गिर्द–अव्य० आसपास।
गिर्दागर–संज्ञा पुं० घूमनेवाला।
गिलट–संज्ञा पुं० चाँदी सी सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।
गिलटी–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें संधि-स्थान की गाँठें सूज जाती हैं।
गिलना–क्रि० स० १. निगलना। २. मन ही मन में रखना।
गिलबिलाना–क्रि० अ० अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना।
गिलहरी–संज्ञा स्त्री० चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँछ का जंतु जो पेड़ों पर रहता है।
गिला–संज्ञा पुं० उलाहना।
गिलाफ़–संज्ञा पुं० खोल।
गिलावा|–संज्ञा पुं० गीली मिट्टी जिससे ईंट-पत्थर जोड़ते हैं। गारा।
गिलास–संज्ञा पुं० पानी पीने का गोल लंबोतरा बरतन।
गिलौरी–संज्ञा स्त्री० पानों का बीड़ा।
गिलौरीदान–संज्ञा पुं० पानदान।
गिल्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "गिलटी"।
गींजना–क्रि० स० किसी कोमल पदार्थ, विशेषतः कपड़े आदि, को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय।
गीत–संज्ञा पुं० १. गाना। २. बड़ाई।
गीता–संज्ञा स्त्री० १. भगवद्गीता। २. वृत्तांत।
गीति–संज्ञा स्त्री० गान।
गीतिका–संज्ञा स्त्री० १. एक मात्रिक छंद। २. गीत।
गीदड़–संज्ञा पुं० सियार। वि० डरपोक।
गीदी–वि० डरपोक।

उत्तराखंड का एक प्रदेश।
गढ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २. गढ़ने की मज़दूरी।
गढ़ाना–क्रि० स० गढ़वाना। क्रि० अ० मुश्किल गुज़रना।
गढ़िया–संज्ञा पुं० गढ़नेवाला।
गढ़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा किला।
गढ़ोई॰†–संज्ञा पुं० दे० "गढ़पति"।
गण–संज्ञा पुं० १. समूह। २. श्रेणी। ३. दूत।
गणक–संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
गणन–संज्ञा पुं० [वि० गणनीय, गणित, गण्य] १. गिनना। २. गिनती।
गणना–संज्ञा स्त्री० गिनती।
गणनायक–संज्ञा पुं० गणेश।
गणपति–संज्ञा पुं० १. गणेश। २. शिव।
गणराज्य–संज्ञा पुं० वह राज्य जो चुने हुए मुखियों या सरदारों के द्वारा चलाया जाता हो।
गणाधिप–संज्ञा पुं० १. गणेश। २. साधुओं का अधिपति या महंत।
गणिका–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
गणित–संज्ञा पुं० हिसाब।
गणितज्ञ–वि० १. हिसाबी। २. ज्योतिषी।
गणेश–संज्ञा पुं० हिंदुओं के एक प्रधान देवता।
गण्य–वि० १. गिनने के योग्य। २. प्रतिष्ठित।
गत–वि० १. बीता हुआ। २. रहित। संज्ञा स्त्री० अवस्था।
गतका–संज्ञा पुं० १. लकड़ी खेलने का डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है। २. वह खेल जो फरी और गतके से खेला जाता है।
गतांक–वि० गया बीता।
संज्ञा पुं० समाचार-पत्र का पिछला अंक।
गति–संज्ञा स्त्री० १. चाल। २. अवस्था। ३. ढंग। ४ मुक्ति। ५. पैतरा।
गत्ता–संज्ञा पुं० कागज़ के कई परतों को साटकर बनाई हुई दफ़्ती।
गत्तालखाता–संज्ञा पुं० बट्टाखाता।
गथना॰–क्रि० स० १. एक में एक जोड़ना। २. बात बनाना।
गद–संज्ञा पुं० १. विष। २. श्रीकृष्णचंद्र का छोटा भाई।
संज्ञा पुं० वह शब्द जो किसी गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु का आघात लगने से होता है।
गदका†–संज्ञा पुं० दे० "गतका"।
गदकारा–वि० पुं० [स्त्री० गदकारी] गुलगुला।
गदगद॰–वि० दे० "गद्गद"।
गदना॰–क्रि० स० कहना।
गदर–संज्ञा पुं० १. हलचल। २. बलवा।
गदराना–क्रि० अ० १. (फल आदि का) पकने पर होना। २. जवानी में अंगों का भरना।
क्रि० अ० गँदला होना।
वि० गदराया हुआ।
गदहपन–संज्ञा पुं० मूर्खता।
गदहा–संज्ञा पुं० चिकित्सक।
संज्ञा पुं० [स्त्री० गदही] १. एक प्रसिद्ध चौपाया। २. मूर्ख।
गदा–संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक छोटे डंडे के छोर पर भारी लट्टू रहता था।
संज्ञा पुं० फ़क़ीर।
गदाई–वि० १. तुच्छ। २. वाहियात।
गदाधर–संज्ञा पुं० विष्णु।
गदेला–संज्ञा पुं० गद्दा।
गदोरी†–संज्ञा स्त्री० हथेली।

गीध–संज्ञा पुं० दे० "गिद्ध"।
गीधना०†–क्रि० अ० एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसका इच्छुक रहना। परचना।
गीर–संज्ञा स्त्री० वाणी।
गीर्वाण–संज्ञा पुं० देवता।
गीला–वि० [स्त्री० गीली] भीगा हुआ।
गीलापन–संज्ञा पुं० तरी।
गुंगी–संज्ञा स्त्री० दोमुहाँ साँप। चुकरैंड़।
गुंचा–संज्ञा पुं० कली।
गुंज–संज्ञा स्त्री० भौंरों के भनभनाने का शब्द। गुंजार।
गुंजन–संज्ञा स्त्री० भौंरों के गूँजने की क्रिया। भनभनाहट।
गुंजना–क्रि० अ० भौंरों का भनभनाना। मधुर ध्वनि निकालना।
गुंजनिकेतन–संज्ञा पुं० भौंरा।
गुंजरना–क्रि० अ० १. भौंरों का गूँजना। २. गरजना।
गुंजा–संज्ञा स्त्री० घुँघची नामकी लता।
गुंजाइश–संज्ञा स्त्री० १. अवकाश। २. समाई।
गुंजान–वि० घना।
गुंजायमान–वि० गूँजता हुआ।
गुंजार–संज्ञा पुं० भौंरों की गूँज। भनभनाहट।
गुंडई†–संज्ञा स्त्री० गुंडापन।
गुंडली–संज्ञा स्त्री० १. कुंडली। २. ढुरी।
गुंडा–वि० [स्त्री० गुंडी] बदमाश।
गुंडापन–संज्ञा पुं० बदमाशी।
गुंथना–क्रि० अ० १. तागों, बाल की लटों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में बँधना। २. एक में उलझकर मिलना।
गुँधना–क्रि० अ० माँड़ा जाना। † क्रि० अ० दे० "गुँथना"।
गुंधवाना–क्रि० स० गूँधने का काम दूसरे से कराना।
गुँधाई–संज्ञा स्त्री० १. गूँधने या माड़ने की क्रिया या भाव। २. गूँधने या माड़ने की मज़दूरी।
गुँधावट–संज्ञा स्त्री० गूँधने या गूँथने की क्रिया या ढंग।
गुंफ–संज्ञा पुं० [वि० गुंफित] १. उलझन। २. गुच्छा। ३. दाढ़ी।
गुंफन–संज्ञा पुं० [वि० गुंफित] उलझाव।
गुंबज–संज्ञा पुं० गोल और ऊँची छत।
गुंबज़दार–वि० जिस पर गुंबज़ हो।
गुंबा–संज्ञा पुं० वह कड़ी गोल सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है। गुलमा।
गुंभी०–संज्ञा स्त्री० अंकुर।
गुँआ–संज्ञा पुं० १. चिकनी सुपारी। २. सुपारी।
गुइयाँ–संज्ञा पुं० साथी। संज्ञा स्त्री० सखी।
गुग्गुल–संज्ञा पुं० एक कँटीदार पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिये जलाते और दवा के काम में लाते हैं।
गुच्ची–संज्ञा स्त्री० वह छोटा गड्ढा जो लड़के गोली या गुल्ली-डंडा खेलते समय बनाते हैं। वि० स्त्री० बहुत छोटी।
गुच्छ, गुच्छक–संज्ञा पुं० १. गुच्छा। २. झाड़।

गदगद–वि० १. अत्यधिक हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण। २. प्रसन्न।
गद्द–संज्ञा पुं० १. मुलायम जगह पर किसी चीज़ के गिरने का शब्द। २. किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचनेवाली चीज़ के कारण पेट का भारीपन।
गद्दर–वि० १. अधपका। २. मोटा गद्दा।
गद्दा–संज्ञा पुं० भारी तोशक।
गद्दी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा गद्दा। २. व्यवसायी आदि के बैठने का स्थान। ३. किसी बड़े अधिकारी का पद।
गद्दीनशीन–वि० १. सिंहासनारूढ़। २. वस्ताधिकारी।
गद्य–संज्ञा पुं० वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो।
गधा–संज्ञा पुं० दे० "गदहा"।
गन–संज्ञा पुं० दे० "गण"।
गनगन–संज्ञा स्त्री० काँपने या रोमांच होने की मुद्रा।
गनगनाना–क्रि० अ० शीत आदि से रोमांच या कंप होना।
क्रि० अ० गिना जाना।
ग़नीमत–संज्ञा स्त्री० संतोष की बात।
गंदा–संज्ञा पुं० ईख।
गप–संज्ञा स्त्री० [वि० गप्पी] १. इधर उधर की बात, जिसकी सत्यता का निश्चय न हो। २. अफ़वाह।
संज्ञा पुं० १. वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम अथवा गीली वस्तु में घुसने आदि से होता है। २. निगलने या खाने की क्रिया।
गपकना–क्रि० स० चटपट निगलना।
गपड़ चौथ–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात।
वि० अंड-बंड।
गपना–क्रि० स० गप मारना।
गपोड़ा–संज्ञा पुं० मिथ्या बात।
गप्प–संज्ञा स्त्री० दे० "गप"।
गप्पा–संज्ञा पुं० धोखा।
गप्पी–वि० गप मारनेवाला।
गप्फा–संज्ञा पुं० १. बड़ा कौर। २. लाभ।
गफ–वि० घना।
ग़फ़लत–संज्ञा स्त्री० १. असावधानी। २. भूल।
ग़बन–संज्ञा पुं० किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को खा लेना।
गबरू–वि० १. पट्ठा। २. सीधा।
† संज्ञा पुं० दूल्हा।
गबरून–वि० चारखाने की तरह का एक मोटा कपड़ा।
गब्बर–वि० १. घमंडी। २. मंद।
गभस्ति–संज्ञा पुं० १. किरण। २. सूर्य।
संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री, स्वाहा।
गभस्तिमान्–संज्ञा पुं० सूर्य।
गभीर–वि० दे० "गंभीर"।
गभुआर–वि० १. गर्भ का (बाल)। २. जिसका मुंडन न हुआ हो। ३. नादान।
गम–संज्ञा स्त्री० पहुँच।
ग़म–संज्ञा पुं० १. दुःख। २. चिंता।
गमक–संज्ञा पुं० बतलानेवाला।
संज्ञा स्त्री० सुगंध।
गमकना–क्रि० अ० महकना।
ग़मख़ोर–वि० [संज्ञा ग़मख़ोरी] सहनशील।
गमन–संज्ञा पुं० [वि० गम्य] १. जाना। २. संभोग। ३. राह।
* क्रि० अ० सोच करना।

गुच्छा–संज्ञा पुं० एक में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह ।

गुच्छेदार–वि० जिसमें गुच्छा हो ।

गुज़र–संज्ञा पुं० १. निकास । २. पैठ । ३. निर्वाह ।

गुज़रना–क्रि० अ० १. बीतना । २. किसी स्थान से होकर आना या जाना । ३. निर्वाह होना ।

गुज़र बसर–संज्ञा पुं० निर्वाह ।

गुजरात–संज्ञा पुं० [वि० गुजराती] भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रांत का एक देश ।

गुजराती–वि० १. गुजरात का निवासी । २. गुजरात का बना हुआ । संज्ञा स्त्री० १. गुजरात देश की भाषा । २. छोटी इलायची ।

गुज़ारना–क्रि० स० बिताना ।

गुज़ारा–संज्ञा पुं० १. निर्वाह । २. वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिये दी जाय ।

गुज़ारिश–संज्ञा स्त्री० निवेदन ।

गुझिया–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पकवान । कुसली ।

गुटकना–क्रि० अ० कबूतर की तरह गुटरगूँ करना ।

† क्रि० स० निगलना ।

गुटका–संज्ञा पुं० छोटे आकार की पुस्तक ।

गुटरगूँ–संज्ञा स्त्री० कबूतरों की बोली ।

गुट्ट–संज्ञा पुं० समूह ।

गुठुल–वि० १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो । २. जड़ । ३. गुठली के आकार का ।

गुठली–संज्ञा स्त्री० ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो ।

गुड़–संज्ञा पुं० पकाकर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस जो बट्टी या भेली के रूप में होता है ।

गुड़गुड़–संज्ञा पुं० वह शब्द जो जल में नली आदि के द्वारा हवा फूँकने से होता है ।

गुड़गुड़ाना–क्रि० अ० गुड़गुड़ शब्द होना ।

क्रि० स० हुक्का पीना ।

गुड़गुड़ाहट–संज्ञा स्त्री० गुड़गुड़ शब्द होने का भाव ।

गुड़गुड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का हुक्का ।

गुड़धानी–संज्ञा स्त्री० वह लड्डू जो भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधे जाते हैं ।

गुड़रू–संज्ञा पुं० एक चिड़िया ।

गुड़हर–संज्ञा पुं० अड़हुल का पेड़ या फूल ।

गुड़हल–संज्ञा पुं० दे० "गुड़हर" ।

गुडाकेश–संज्ञा पुं० १. शिव । २. अर्जुन ।

गुड़िया–संज्ञा स्त्री० कपड़ों की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं ।

गुड्डी–संज्ञा स्त्री० पतंग ।

गुडूची–संज्ञा स्त्री० गुरुच । गिलोय ।

गुड्डा–संज्ञा पुं० गुड्डा ।

संज्ञा पुं० † बड़ी पतंग ।

गुड्डी–संज्ञा स्त्री० पतंग ।

संज्ञा स्त्री० घुटने की हड्डी ।

गुण–संज्ञा पुं० [वि० गुणी] १. सिफ़त । २. हुनर । ३. असर । ४. विशेषता । प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है ।

गमला—संज्ञा पुं० फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बरतन।
गमाना०—क्रि० स० दे० "गँवाना"।
ग़मी—संज्ञा स्त्री० १. शोक की अवस्था या काल। २. वह शोक जो किसी मनुष्य के मरने पर उसके संबंधी करते हैं। ३. मृत्यु।
गम्य—वि० १. जाने योग्य। २. साध्य।
गयंद०—संज्ञा पुं० बड़ा हाथी।
गय—संज्ञा पुं० १. घर। २. आकाश। ०संज्ञा पुं० हाथी।
गया—संज्ञा पुं० बिहार या मगध का एक तीर्थ जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं।
क्रि० अ० 'जाना' क्रिया का भूतकालिक रूप। प्रस्थानित हुआ।
गयावाल—संज्ञा पुं० गया तीर्थ का पंडा।
गर—संज्ञा पुं० १. रोग। २. विष। ०† संज्ञा पुं० गला।
प्रत्य० (किसी काम को) बनाने या करनेवाला।
ग़रक़—वि० १. निमग्न। २. बरबाद।
गरगज—संज्ञा पुं० किले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज जिस पर तोपें रहती हैं।
†वि० विशाल।
गरगरा—संज्ञा पुं० गराड़ी।
गरज—संज्ञा स्त्री० १. बहुत गंभीर शब्द। २. बादल या सिंह का शब्द।
ग़रज़—संज्ञा स्त्री० १. मतलब। २. आवश्यकता। ३. चाह।
अव्य० १. निदान। २. मतलब यह कि।
गरजना—क्रि० अ० बहुत गंभीर और तुमुल शब्द करना।
वि० गरजनेवाला।
ग़रज़मंद—वि० [संज्ञा गरज़मंदी] १. ज़रूरतवाला। २. इच्छुक।
ग़रज़ी—वि० दे० "ग़रज़मंद"।
गरजू†—वि० दे० "ग़रज़मंद"।
गरदन—संज्ञा स्त्री० १. धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। गला। २. बरतन आदि का ऊपरी भाग।
गरदनियाँ—संज्ञा स्त्री० (किसी को किसी स्थान से) गरदन पकड़कर निकालने की क्रिया।
गरदा—संज्ञा पुं० धूल।
गरना०†—क्रि० अ० १. दे० "गलना"। २. दे० "गड़ना"।
क्रि० अ० निचुड़ना।
गरब०†—संज्ञा पुं० १. दे० "गर्व"। २. हाथी का मद।
गरब-गहेला—वि० गर्वीला।
गरबना, गरबाना०†—क्रि० अ० घमंड में आना।
गरबीला—वि० जिसे गर्व हो।
गरम—वि० १. उष्ण। २. तीक्ष्ण। ३. तेज़। ४. उत्साह-पूर्ण।
गरमागरमी—संज्ञा स्त्री० १. मुस्तैदी। २. कहा-सुनी।
गरमाना—क्रि० अ० १. गरम पड़ना। २. मस्ताना। ३. क्रोध करना।
† क्रि० स० गरम करना।
गरमाहट—संज्ञा स्त्री० गरमी।
गरमी—संज्ञा स्त्री० १. उष्णता। २. तेज़ी। ३. क्रोध। ४. ग्रीष्म ऋतु। ५. आतशक।
गरराना०—क्रि० अ० गंभीर गरजना।
गरल—संज्ञा पुं० विष।

गुणक–संज्ञा पुं० वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करें।
गुणकारक (कारी)–वि० लाभदायक।
गुणग्राहक–संज्ञा पुं० गुणियों का आदर करनेवाला मनुष्य।
गुणग्राही–वि० दे० "गुणग्राहक"।
गुणज्ञ–वि० १. गुण को पहचाननेवाला। २. गुणी।
गुणन–संज्ञा पुं० [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित] १. गुणा करना। २. गिनना। ३. मनन करना।
गुणनफल–संज्ञा पुं० वह अंक या संख्या जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे।
गुणना–क्रि० स० गुणन करना।
गुणवंत–वि० दे० "गुणवान्"।
गुणवाचक–वि० जो गुण को प्रकट करे।
गुणवान्–वि० [स्त्री० गुणवती] गुणवाला।
गुणांक–संज्ञा पुं० वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुणा–संज्ञा पुं० [वि० गुण्य, गुणित] गणित की एक क्रिया। ज़रब।
गुणाढ्य–वि० गुणपूर्ण।
गुणानुवाद–संज्ञा पुं० गुण-कथन। प्रशंसा।
गुणित–वि० गुणा किया हुआ।
गुणी–वि० गुणवाला।
संज्ञा पुं० हुनरमंद।
गुण्य–संज्ञा पुं० वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुत्थमगुत्था–संज्ञा पुं० १. उलझाव। २. भिड़ंत।
गुत्थी–संज्ञा स्त्री० गिरह।
गुथना–क्रि० अ० १. एक लड़ी या गुच्छे में नाथा जाना। २. भद्दी सिलाई होना।
गुथवाना–क्रि० स० गूँथने का काम दूसरे से कराना।
गुदकार, गुदाकारा–वि० १. गूदेदार। २. गुदगुदा।
गुदगुदा–वि० १. गूदेदार। मांस से भरा हुआ। २. मुलायम।
गुदगुदाना–क्रि० अ० हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना।
गुदगुदी–संज्ञा स्त्री० १. वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। २. उत्कंठा।
गुदड़ी–संज्ञा स्त्री० फटे-पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ कपड़ा।
गुदना–संज्ञा पुं० दे० "गोदना"।
क्रि० अ० चुभना।
गुदरना०†–क्रि० अ० गुज़रना।
क्रि० स० निवेदन करना।
गुदाना–क्रि० स० गोदने की क्रिया कराना।
गुदी†–संज्ञा पुं० १. फल के बीज के भीतर का गूदा। २. सिर का पिछला भाग। ३. हथेली का मांस।
गुनर्ना†–संज्ञा पुं० दे० "गुण"।
गुनगुना–वि० दे० "कुनकुना"।
गुनगुनाना–क्रि० अ० १. गुनगुन शब्द करना। २. अस्पष्ट स्वर में गाना।
गुनना–क्रि० स० गिनना।

गरहन॰†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "ग्रहण"।
गराँव-संज्ञा पुं॰ दोहरी रस्सी जो चौपायों के गले में बाँधी जाती है।
गरा†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "गला"।
गराज॰-संज्ञा स्त्री॰ गरज।
गराड़ी-संज्ञा स्त्री॰ घरनी।
गराना॰-क्रि॰ स॰ दे॰ "गलाना"। क्रि॰ स॰ १. गारने का काम कराना। २. गारना।
गरिमा-संज्ञा स्त्री॰ १. गुरुत्व। २. महिमा। ३. अहंकार।
गरियाना†-क्रि॰ अ॰ गाली देना।
गरियार-वि॰सुस्त।
गरिष्ठ-वि॰ १. अत्यंत भारी। २. जो जल्दी न पचे।
गरी-संज्ञा स्त्री॰ नारियल के फल के भीतर का मुलायम खाने योग्य गोला।
गरीब-वि॰ १. नम्र। २. दरिद्र।
गरीबी-संज्ञा स्त्री॰ १. दीनता। २. दरिद्रता।
गरीयस-वि॰ [स्त्री॰ गरीयसी] १. बड़ा भारी। २. महान्।
गरु, गरुआ॰†-वि॰ [स्त्री॰ गरुई] १. भारी। २. गौरवशाली।
गरुआई-संज्ञा स्त्री॰ गुरुता।
गरुड़-संज्ञा पुं॰ १. विष्णु के वाहन जो पक्षियों के राजा माने जाते हैं। २. बहुतों के मत से उकाब पक्षी।
गरुड़गामी-संज्ञा पुं॰ १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।
गरुड़ध्वज-संज्ञा पुं॰ विष्णु।
गरुड़ पुराण-संज्ञा पुं॰ अठारह पुराणों में से एक।
गरुवाई॰†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "गरुआई"।
गरू-वि॰ भारी।
गरूर-संज्ञा पुं॰ घमंड।
गरूरी†-वि॰ घमंडी। संज्ञा स्त्री॰ घमंड।
गरेबान-संज्ञा पुं॰ अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।
गरेरना-क्रि॰ स॰ घेरना।
गरोह-संज्ञा पुं॰ झुंड।
गर्ज-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "गरज"।
गर्जन-संज्ञा पुं॰ भीषण ध्वनि।
गर्जना-क्रि॰ अ॰ दे॰ "गरजना"।
गर्त्त-संज्ञा पुं॰ गड्ढा।
गर्द-संज्ञा स्त्री॰ धूल।
गर्दखोर, गर्दखोरा-वि॰ जो गर्द या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मैला या खराब न हो। संज्ञा पुं॰ पाँव पोंछने का टाट या कपड़ा।
गर्दभ-संज्ञा पुं॰ गधा।
गर्दिश-संज्ञा स्त्री॰ १. घुमाव। २. विपत्ति।
गर्भ-संज्ञा पुं॰ १. हमल। २. गर्भाशय।
गर्भकेसर-संज्ञा पुं॰ फूलों में वे पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं।
गर्भगृह-संज्ञा पुं॰ घर का मध्य भाग।
गर्भनाल-संज्ञा स्त्री॰ फूलों के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भकेसर होता है।
गर्भपात-संज्ञा पुं॰ पेट में से बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले निकल जाना।
गर्भवती-वि॰ स्त्री॰ गर्भिणी।
गर्भांक-संज्ञा पुं॰ नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य।

गुनहगार–वि० १. पापी। २. दोषी।
गुनही†–संज्ञा पुं० गुनहगार।
गुना–संज्ञा पुं० १. एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लगकर किसी वस्तु का उतनी ही बार और होना सूचित करता है। २. गुणा।
गुनाह–संज्ञा पुं० १. पाप। २. दोष।
गुनाही–संज्ञा पुं० "गुनहगार"।
गुनिया†–संज्ञा पुं० गुणवान्।
गुनी–वि०, संज्ञा पुं० दे० "गुणी"।
गुपचुप–क्रि० वि० बहुत गुप्त रीति से। संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई।
गुपुत॰–वि० दे० "गुप्त"।
गुप्त–वि० १. छिपा हुआ। २. गूढ़। संज्ञा पुं० वैश्यों का अल्ल।
गुप्तचर–संज्ञा पुं० जासूस।
गुप्ती–संज्ञा स्त्री० वह छड़ी जिसके अंदर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार हो।
गुफा–संज्ञा स्त्री० कंदरा। गुहा।
गुबरैला–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
गुब्बारा–संज्ञा पुं० वह थैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाते हैं।
गुम–संज्ञा पुं० १. गुप्त। २. खोया हुआ।
गुमटा–संज्ञा पुं० वह गोल सूजन जो मत्थे या सिर पर चोट लगने से होती है।
गुमटी–संज्ञा स्त्री० मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की छत जो सबसे ऊपर उठी हुई होती है।
गुमना†–क्रि० अ० खो जाना।
गुमनाम–वि० १. अप्रसिद्ध। २. जिसमें नाम न दिया हो।
गुमर–संज्ञा पुं० १. अभिमान। [२.] कानाफूसी।
गुमराह–वि० १. बुरे मार्ग में चलने वाला। २. भूला भटका हुआ।
गुमान–संज्ञा पुं० घमंड।
गुमाना†–क्रि० स० दे० "गँवाना"।
गुमानी–वि० घमंडी।
गुमाश्ता–संज्ञा पुं० बड़े व्यापारी की ओर से खरीदने और बेचने पर नि[युक्त] मनुष्य। एजंट।
गुम्मट–संज्ञा पुं० गुंबद। संज्ञा पुं० दे० "गुमटा"।
गुम्मा–वि० चुप्पा।
गुर–संज्ञा पुं० युक्ति। †संज्ञा पुं० दे० "गुरु"।
गुरगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गुरगी] १. चेला। २. टहलुआ। ३. गुप्तचर।
गुरमुख–वि० जिसने गुरु से मंत्र लि[या] हो। दीक्षित।
गुराई†–संज्ञा स्त्री० दे० "गोराई"।
गुरिद॰–संज्ञा पुं० गदा।
गुरिया–संज्ञा स्त्री० वह दाना या मनका जो माला का एक अंश हो।
गुरु–वि० भारी। संज्ञा पुं० [स्त्री० गुरुआनी] आचार्य।
गुरुआनी–संज्ञा स्त्री० गुरु की स्त्री।
गुरुआई–संज्ञा स्त्री० १. गुरु का धर्म। २. गुरु का काम। ३. चालाकी।
गुरुकुल–संज्ञा पुं० गुरु, आचार्य या शिक्षक के रहने का स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो।
गुरुच–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ी मिलती है और दवा के काम में आती है।

गुरुजन–संज्ञा पुं० बड़े लोग।
गुरुता–संज्ञा स्त्री० १. गुरुत्व। २. महत्त्व।
गुरुत्व–संज्ञा पुं० १. भारीपन। २. महत्त्व।
गुरुत्वाकर्षण–संज्ञा पुं० वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती हैं।
गुरुदक्षिणा–संज्ञा स्त्री० वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ने पर गुरु को दी जाय।
गुरुद्वारा–संज्ञा पुं० १. आचार्य्य या गुरु के रहने की जगह। २. सिक्खों का मंदिर।
गुरुभाई–संज्ञा पुं० एक ही गुरु के शिष्य।
गुरुमुख–वि० दीक्षित।
गुरुमुखी–संज्ञा स्त्री० गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि।
गुरुवार–संज्ञा पुं० बृहस्पति का दिन।
गुरू–संज्ञा पुं० अध्यापक।
गुरेरना–क्रि० स० घूरना।
गुर्ज–संज्ञा पुं० गदा।
संज्ञा पुं० दे० "बुर्ज"।
गुर्जर–संज्ञा पुं० गुजरात देश का निवासी।
गुर्जरी–संज्ञा स्त्री० गुजरात देश की स्त्री।
गुर्राना–क्रि० अ० १. डराने के लिये घुर घुर की तरह गंभीर शब्द करना। २. क्रोध या अभिमान में कर्कश स्वर से बोलना।
गुल–संज्ञा पुं० १. गुलाब का फूल। २. फूल। ३. छाप। ४. दीपक में बत्ती का वह अंश जो जलकर उभर आता है।
संज्ञा पुं० कनपटी।
गुल–संज्ञा पुं० शोर।
गुलकंद–संज्ञा पुं० मिस्री या चीनी में मिलाकर धूप में सिफाई हुई गुलाब के फूलों की पँखरियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त साफ लाने के लिये होता है।
गुलकारी–संज्ञा स्त्री० बेलबूटे का काम।
गुलखैरू–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें नीले रंग के फूल लगते हैं।
गुलगपाड़ा–संज्ञा पुं० शोर।
गुलगुल–वि० नरम।
गुलगुला–वि० दे० "गुलगुल"।
संज्ञा पुं० एक मीठा पकवान।
गुलगुलाना–क्रि० स० गूदेदार चीज़ को दबा या मलकर मुलायम करना।
गुलछर्रा–संज्ञा पुं० वह भोग-विलास या चैन जो बहुत स्वच्छंदतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जाय।
गुलज़ार–संज्ञा पुं० बाग़।
वि० हरा-भरा।
गुलझटी–संज्ञा स्त्री० १. उलझन की गाँठ। २. सिकुड़न।
गुलथी–संज्ञा स्त्री० १. पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोली। २. मांस की गाँठ।
गुलदस्ता–संज्ञा पुं० सुंदर फूलों और पत्तियों का एक में बँधा समूह।
गुलदाऊदी–संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जो सुंदर गुच्छेदार फूलों के लिये लगाया जाता है।
गुलदान–संज्ञा पुं० गुलदस्ता रखने का पात्र।
गुलनार–संज्ञा पुं० १. अनार का फूल। २. अनार के फूल का सा गहरा लाल रंग।
गुलबकावली–संज्ञा स्त्री० हल्दी की

२. बाकी निकालना।
घटाव-संज्ञा पुं० कमी।
घटिका-संज्ञा स्त्री० छोटा घड़ा।
घटित-वि० बना हुआ।
घटिया-वि० सस्ता।
घटिहा-वि० १. घात पाकर अपना स्वार्थ साधनेवाला। २. चालाक। ३. दुष्ट।
घटी-संज्ञा स्त्री० १. कमी। २. हानि।
घट्ठा-संज्ञा पुं० शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है।
घड़घड़ाना-क्रि० अ० गड़गड़ाना।
घड़घड़ाहट-संज्ञा स्त्री० घड़घड़ शब्द होने का भाव।
घड़नई, घड़नैल-संज्ञा स्त्री० बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिससे छोटी छोटी नदियाँ पार करते हैं।
घड़ा-संज्ञा पुं० मिट्टी का पानी भरने का बरतन।
घड़िया-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का छोटा बर्तन।
घड़ियाल-संज्ञा पुं० वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना के लिये बजाया जाता है।
संज्ञा पुं० ग्राह।
घड़ियाली-संज्ञा पुं० घंटा बजानेवाला।
घड़ी-संज्ञा स्त्री० १. समय। २. समय-सूचक यंत्र।
घड़ीदिया-संज्ञा पुं० वह घड़ा और दिया जो घर के किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।
घड़ीसाज़-संज्ञा पुं० घड़ी की मरम्मत करनेवाला।
घड़ौंची-संज्ञा स्त्री० पानी से भरा घड़ा रखने की तिपाई।
घतिया-संज्ञा पुं० घात करनेवाला।
घतियाना-क्रि० स० १. मतलब पर चढ़ाना। २. चुराना।
घन-संज्ञा पुं० १. मेघ। २. लोहारों का बड़ा हथौड़ा जिससे वे गरम लोहा पीटते हैं। ३. समूह। ४. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) तीनों का विस्तार।
वि० १. घना। २. दृढ़।
घनगरज-संज्ञा स्त्री० बादल के गरजने की ध्वनि।
घनघनाना-क्रि० अ० घंटे की सी ध्वनि निकलना।
क्रि० स० घन घन शब्द करना।
घनघनाहट-संज्ञा स्त्री० घन घन शब्द निकलने का भाव या ध्वनि।
घनघोर-संज्ञा पुं० भीषण ध्वनि।
वि० गहरा।
घनचक्कर-संज्ञा पुं० १. मूर्ख। २. आवारागर्द।
घनत्व-संज्ञा पुं० १. घनापन। २. लंबाई, चौड़ाई और मोटाई तीनों का भाव।
घननाद-संज्ञा पुं० मेघनाद।
घनफल-संज्ञा पुं० लंबाई चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणनफल।
घनमूल-संज्ञा पुं० गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक।
घनश्याम-संज्ञा पुं० १. काला बादल। २. श्रीकृष्ण।
घनसार-संज्ञा पुं० कपूर।
घना-वि० [स्त्री० घनी] १. सघन। २. निकट का।
घनात्मक-वि० जिसकी लंबाई, चौड़ाई

जाति का एक पौधा जिसमें सुंदर सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।
गुलबदन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।
गुलमेंहदी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार के फूल का पौधा।
गुललाला-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पौधा। २. इस पौधे का फूल।
गुलशन-संज्ञा पुं० वाटिका।
गुलशब्बो-संज्ञा स्त्री० रजनीगंधा फूल।
गुलाब-संज्ञा पुं० एक झाड़ या कँटीला पौधा जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं।
गुलाबजामुन-संज्ञा पुं० एक मिठाई।
गुलाबपाश-संज्ञा पुं० झारी के आकार का एक लंबा पात्र जिसमें गुलाबजल भरकर छिड़कते हैं।
गुलाबी-वि० १. गुलाब के रंग का। २. गुलाब-संबंधी। ३. हलका। संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका लाल रंग।
गुलाम-संज्ञा पुं० १. मोल लिया हुआ दास। २. नौकर।
गुलामी-संज्ञा स्त्री० १. दासत्व। २. नौकरी। ३. पराधीनता।
गुलाल-संज्ञा पुं० एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिंदू होली के दिनों में एक दूसरे के चेहरों पर मलते हैं।
गुलाला-संज्ञा पुं० दे० "गुललाला"।
गुलिस्ताँ-संज्ञा पुं० बाग़।
गुलूबंद-संज्ञा पुं० १. लंबी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटते हैं। २. गले का एक गहना।
गुलेल-संज्ञा स्त्री० वह कमान या धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।
गुलेला-संज्ञा पुं० १. मिट्टी की गोली जिसको गुलेल से फेंककर चिड़ियों का शिकार किया जाता है। २. गुलेल।
गुल्फ-संज्ञा पुं० एँड़ी के ऊपर की गाँठ।
गुल्म-संज्ञा पुं० १. ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो। २. सेना का एक समुदाय।
गुल्ला-संज्ञा पुं० मिट्टी की बनी हुई गोली जो गुलेल से फेंकते हैं। संज्ञा पुं० शोर। संज्ञा पुं० दे० "गुलेल"।
गुल्लाला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे के समान होता है।
गुल्ली-संज्ञा स्त्री० फल की गुठली।
गुसाँई-संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।
गुस्ताख़-वि० बड़ों का संकोच न रखनेवाला। धृष्ट।
गुस्ताख़ी-संज्ञा स्त्री० धृष्टता।
गुस्ल-संज्ञा पुं० स्नान।
गुस्लख़ाना-संज्ञा पुं० स्नानागार।
गुस्सा-संज्ञा पुं० [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] क्रोध।
गुस्सैल-वि० जिसे जल्दी क्रोध आवे।
गुह-संज्ञा पुं० १. कार्त्तिकेय। २. अश्व। ३. विष्णु का एक नाम। ४. निषाद जाति का एक नायक जो राम का मित्र था। ५. गुफा। †संज्ञा पुं० मैला।
गुहना†-क्रि० स० दे० "गूँथना"।
गुहराना†-क्रि० स० पुकारना।
गुहवाना-क्रि० स० गुहने का काम

घाल†–संज्ञा पुं० दे० "घलुआ"।
घालक–संज्ञा पुं० [स्त्री० घालिका] मारने या नाश करनेवाला।
घालना†–क्रि० स० १. डालना। २. चलाना। ३. बिगाड़ना।
घालमेल–संज्ञा पुं० गड्ड-बड्ड।
घाव–संज्ञा पुं० शरीर। ज़ख्म।
घावरिया†*–संज्ञा पुं० घावों की चिकित्सा करनेवाला।
घास–संज्ञा स्त्री० तृण।
घिग्घी–संज्ञा स्त्री० १. हिचकी। २. बोलने में वह रुकावट जो भय के मारे पड़ती है।
घिघियाना–क्रि० अ० गिड़गिड़ाना।
घिचपिच–संज्ञा स्त्री० सँकरापन। वि० गिचपिच।
घिन–संज्ञा स्त्री० १. अरुचि। २. गंदी चीज़ देखकर जी मचलाने की सी अवस्था।
घिनाना–क्रि० अ० घृणा करना।
घिनावना–वि० दे० "घिनौना"।
घिनौना†–वि० [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने से घिन लगे।
घिन्नी–संज्ञा स्त्री० दे० "घिरनी"।
घिया–संज्ञा स्त्री० कद्दू।
घियातोरी–संज्ञा स्त्री० नेनुवा।
घिरना–क्रि० अ० १. घेरे में आना। २. चारों ओर इकट्ठा होना।
घिरनी–संज्ञा स्त्री० १. गराड़ी। २. चक्कर।
घिराई–संज्ञा स्त्री० १. घेरने की क्रिया या भाव। २. पशुओं को चराने का काम या मज़दूरी।
घिराव–संज्ञा पुं० १. घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २. घेरा।
घिर्राना†–क्रि० स० १. घसीटना। २. गिड़गिड़ाना।
घिसघिस–संज्ञा स्त्री० १. कार्य में शिथिलता। २. अनिश्चय।
घिसना–क्रि० स० रगड़ना। क्रि० अ० रगड़ खाकर कम होना।
घिसपिस†–संज्ञा स्त्री० घिसघिस।
घिसवाना–क्रि० स० रगड़वाना।
घिसाई–संज्ञा स्त्री० घिसने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
घिस्सा–संज्ञा पुं० १. धक्का। २. रद्दा।
घी–संज्ञा पुं० घृत।
घुँइयाँ–संज्ञा स्त्री० अरवी कंद।
घुँघनी–संज्ञा स्त्री० भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।
घुघरारे†*–वि० दे० "घुँघराले"।
घुँघराले–वि० [स्त्री० घुँघराली] घूमे हुए (बाल)।
घुँघरू–संज्ञा पुं० १. किसी धातु की बनी हुई गोल पोली गुरिया जिसके भीतर 'घन घन' बजने के लिये कंकड़ भर देते हैं। २. गुरियों का बना हुआ पैर का गहना।
घुँघुवारे–वि० दे० "घुँघराले"।
घुंडी–संज्ञा स्त्री० १. कपड़े का गोल बटन। २. कोई गोल गाँठ।
घुग्घू–संज्ञा पुं० उल्लू पक्षी।
घुघुआना–क्रि० अ० १. उल्लू पक्षी का बोलना। २. बिल्ली का गुर्राना।
घुटकना–क्रि० स० १. घूँट घूँट करके पीना। २. निगल जाना।
घुटना–संज्ञा पुं० टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ।
क्रि० अ० साँस का भीतर ही दब जाना, बाहर न निकलना।

करानां। गुँधवाना।

गुहा–संज्ञा स्त्री० गुफा।

गुहाई–संज्ञा स्त्री० १. गुहने की क्रिया, ढंग या भाव। २. गुहने की मज़दूरी।

गुहार–संज्ञा स्त्री० रक्षा के लिये पुकार। दोहाई।

गुह्य–वि० १. गुप्त। २. गोपनीय। ३. गूढ़।

गुह्यपति–संज्ञा पुं० कुबेर।

गूँगा–वि० [स्त्री० गूँगी] जो बोल न सके।

गूंज–संज्ञा स्त्री० १. गुंजार। २. प्रतिध्वनि। ३. लट्टू की कील। ४. कान की बालियों में लपेटा हुआ पतला तार।

गूँजना–क्रि० अ० १. गुंजारना। २. प्रतिध्वनित होना।

गूँथना–क्रि० स० दे० "गूँधना"।

गूँधना–क्रि० स० माड़ना। क्रि० स० पिरोना।

गूजर–संज्ञा पुं० [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] ग्वाला।

गूजरी–संज्ञा स्त्री० १. गूजर जाति की स्त्री। २. पैर में पहनने का एक जेवर।

गूढ़–वि० १. गुप्त। २. कठिन।

गूढ़ता–संज्ञा स्त्री० १. गुप्तता। २. कठिनता।

गूथना–क्रि० स० पिरोना।

गूदड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा।

गूदा–संज्ञा पुं० [स्त्री० गूदी] फल के भीतर का वह अंश जिसमें रस आदि रहता है।

गून–संज्ञा स्त्री० वह रस्सी जिससे नाव खींचते हैं।

गूमा–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा।

गूलर–संज्ञा पुं० वट वर्ग का एक बड़ा पेड़ जिसमें लड्डू के से गोल फल लगते हैं।

गृध्र–संज्ञा पुं० गिद्ध।

गृह–संज्ञा पुं० [वि० गृही] १. घर। २. कुटुंब।

गृहप, गृहपति–संज्ञा पुं० [स्त्री० गृहपत्नी] १. घर का मालिक। २. अग्नि।

गृहयुद्ध–संज्ञा पुं० १. घर के भीतर का झगड़ा। २. किसी देश के भीतर ही आपस में होनेवाली लड़ाई।

गृहस्थ–संज्ञा पुं० १. घर-बारवाला। २ वह जिसके यहाँ खेती होती हो।

गृहस्थाश्रम–संज्ञा पुं० चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके रहते और घर का काम-काज देखते हैं।

गृहस्थी–संज्ञा स्त्री० १. गृह-व्यवस्था। २. खेती-बारी।

गृहिणी–संज्ञा स्त्री० १. घर की मालिकिन। २. स्त्री।

गृही–संज्ञा पुं० [स्त्री० गृहिणी] गृहस्थ।

गृह्य–वि० गृह-संबंधी।

गेंड़ा–संज्ञा पुं० ईख के ऊपर का पत्ता। संज्ञा पुं० घेरा।

गेंड़ना–क्रि० स० १. खेतों को मेंड़ से घेरकर हद बाँधना। २. घेरना।

गेंड़ा–संज्ञा पुं० १. ईख के ऊपर के पत्ते। २. ईख।

क्रि० अ० घोटा जाना।
घुटन्ना–संज्ञा पुं० पायजामा।
घुटवाना–क्रि० स० १. घोटने का काम कराना। २. बाल मुँड़ाना।
घुटाई–संज्ञा स्त्री० घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया।
घुटाना–क्रि० स० घोटने का काम दूसरे से कराना।
घुट्टी–संज्ञा स्त्री० वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है।
घुड़कना–क्रि० स० डाँटना।
घुड़की–संज्ञा स्त्री० फटकार।
घुड़चढ़ा–संज्ञा पुं० सवार।
घुड़नाल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चलती है।
घुड़बहल–संज्ञा स्त्री० वह रथ जिसमें घोड़े जुतते हों।
घुड़साल–संज्ञा स्त्री० अस्तबल।
घुन–संज्ञा पुं० एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है।
घुनघुना–संज्ञा पुं० दे० "झुनझुना"।
घुनना–क्रि० अ० घुन के द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना।
घुन्ना–वि० [स्त्री० घुन्नी] चुप्पा।
घुमक्कड़–वि० बहुत घूमनेवाला।
घुमटा–संज्ञा पुं० जी घूमना।
घुमड़–संज्ञा स्त्री० बरसनेवाले बादलों की घेरघार।
घुमड़ना–क्रि० अ० इकट्ठा होना।
घुमरना–क्रि० अ० १. घोर शब्द करना। २. घूमना।
घुमाना–क्रि० स० १. चारों ओर फिराना। २. प्रवृत्त करना।
घुमाव–संज्ञा पुं० १. घूमने या घुमाने का भाव। २. फेर। ३. रास्ते का मोड़।
घुमावदार–वि० चक्करदार।
घुरघुरा–संज्ञा पुं० झींगुर।
घुरघुराना–क्रि० अ० गले से घुरघुर शब्द निकलना।
घुरना–क्रि० अ० दे० "घुलना"। क्रि० अ० शब्द करना।
घुर्मित–क्रि० वि० घूमता हुआ।
घुलना–क्रि० अ० १. गलना। २. दुर्बल होना।
घुलवाना–क्रि० स० गलवाना। क्रि० स० किसी द्रव पदार्थ में मिश्रित कराना।
घुलाना–क्रि० स० १. गलाना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. व्यतीत करना।
घुलावट–संज्ञा स्त्री० घुलने का भाव या क्रिया।
घुसना–क्रि० अ० १. भीतर जाना। २. अनधिकार चर्चा या कार्य्य करना।
घुसपैठ–संज्ञा स्त्री० पहुँच।
घुसाना–क्रि० स० १. पैठाना। २. चुभाना।
घुसेड़ना–क्रि० स० दे० "घुसाना"।
घूँघट–संज्ञा पुं० १. वस्त्र का वह भाग जिससे कुलवधू का मुँह ढँका रहता है। २. ओट।
घूँघर–संज्ञा पुं० बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।
घूँघरवाले–वि० छल्लेदार।
घूँट–संज्ञा पुं० द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार में गले के नीचे उतारा जाय।

गेंड़ुआ†–संज्ञा पुं० १. तकिया। २. बड़ा गेंद।
गेंडुरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी का बना हुआ मेंडरा जिस पर घड़ा रखते हैं। ईंडुरी।
गेंद–संज्ञा पुं० कपड़े, रबर या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक।
गेंदा–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।
गेंदुक*–संज्ञा पुं० गेंद।
गेंदुवा–संज्ञा पुं० तकिया।
गेड़ना–क्रि० स० १. लकीर से घेरना। २. परिक्रमा करना।
गेय–वि० गाने के लायक।
गेरना†–क्रि० स० १. गिराना। २. डालना।
गेरुआ–वि० गेरू के रंग का।
गेरू–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है।
गेह–संज्ञा पुं० घर।
गेहनी*–संज्ञा स्त्री० घरवाली।
गेही*–संज्ञा पुं० गृहस्थ।
गेहुँअन–संज्ञा पुं० मटमैले रंग का एक अत्यंत विषधर फनदार साँप।
गेहुँआ–वि० गेहूँ के रंग का।
गेहूँ–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।
गैंडा–संज्ञा पुं० भैंसे के आकार का एक पशु जो ऐसे दलदलों और कछारों में रहता है जहाँ जंगल होता है।
गैन*–संज्ञा पुं० मार्ग।
*संज्ञा पुं० दे० "गगन"।
गैब–संज्ञा पुं० परोक्ष।
गैबी–वि० १. गुप्त। २. अजनबी।
गैयर*–संज्ञा पुं० हाथी।
गैया–संज्ञा स्त्री० गाय।
गैर–वि० अन्य।
गैरत–संज्ञा स्त्री० लज्जा।
गैरमामूली–वि० असाधारण।
गैरमुनासिब–वि० अनुचित।
गैरमुमकिन–वि० असंभव।
गैरवाजिब–वि० अयोग्य।
गैरहाज़िर–वि० अनुपस्थित।
गैरहाज़िरी–संज्ञा स्त्री० अनुपस्थिति।
गैरिक–संज्ञा पुं० १. गेरू। २. सोना।
गैल–संज्ञा स्त्री० मार्ग।
गोंठ–संज्ञा स्त्री० धोती की लपेट जो कमर पर रहती है। मुर्री।
गोंठना–क्रि० स० १. किसी वस्तु की नोक या कोर गुठली कर देना। २. गोझे या पुवे की कोर को मोड़ मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना।
क्रि० स० चारों ओर से घेरना।
गोंड़–संज्ञा पुं० एक असभ्य जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है।
गोंड़ा–संज्ञा पुं० १. बाड़ा। २. पुरा।
गोंद–संज्ञा पुं० पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव। लासा।
गो–संज्ञा स्त्री० गाय।
अव्य० यद्यपि।
प्रत्य० कहनेवाला।
गोइँठा†–संज्ञा पुं० ईंधन के लिये सुखाया हुआ गोबर। उपला।
गोइंदा–संज्ञा पुं० जासूस।
गोइयाँ–संज्ञा पुं० स्त्री० साथ में रहने-

घूँटना–क्रि० स० द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना।
घूँटी–संज्ञा स्त्री० एक औषध जो छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है।
घूँसा–संज्ञा पुं० मुक्का।
घूम–संज्ञा स्त्री० घूमने का भाव।
घूमना–क्रि० अ० १. चारों ओर फिरना। २. सफ़र करना। ३. मँड़राना। ४. मुड़ना।
घूरना–क्रि० अ० बार बार आँख गड़ाकर बुरे भाव से देखना।
घूरा–संज्ञा पुं० कूड़े-करकट का ढेर।
घूस–संज्ञा स्त्री० चूहे के वर्ग का एक बड़ा जंतु।
संज्ञा स्त्री० रिशवत।
घृणा–संज्ञा स्त्री० नफ़रत।
घृणित–वि० घृणा करने योग्य।
घृत–संज्ञा पुं० घी।
घेघा–संज्ञा पुं० १. गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है। २. गले का एक रोग जिसमें गले में सूजन होकर बतौड़ा सा निकल आता है।
घेर–संज्ञा पुं० घेरा।
घेरघार–संज्ञा स्त्री० चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया।
घेरना–क्रि० स० १. चारों ओर से छेंकना। २. ख़ुशामद करना।
घेरा–संज्ञा पुं० १. चारों ओर की सीमा। २. परिधि का मान। ३. हाता। ४. सेना का किसी दुर्ग या गढ़ को चारों ओर से छेंकने का काम।
घेवर–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई।
घोंघा–संज्ञा पुं० [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा।
वि० मूर्ख।
घोंटना–क्रि० स० घूँट घूँट करके पीना। हज़म करना।
क्रि० स० दे० "घोटना"।
घोंपना–क्रि० स० धँसाना। चुभाना।
घोंसला–संज्ञा पुं० घास, फूस आदि से बना हुआ वह स्थान जिसमें पक्षी रहते हैं।
घोंसुआ†*–संज्ञा पुं० दे० "घोंसला"।
घोखना–क्रि० स० रटना।
घोट, घोटक–संज्ञा पुं० घोड़ा।
घोटना–क्रि० स० १. चिकना या चमकीला करने के लिये बार बार रगड़ना। २. बारीक पीसने के लिये बार बार रगड़ना। ३. मश्क़ करना। ४. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय।
संज्ञा पुं० घोटने का औज़ार।
घोटवाना–क्रि० स० घोटने का काम दूसरे से कराना।
घोटा–संज्ञा पुं० वह वस्तु जिससे घोटा जाय।
घोटाई–संज्ञा स्त्री० घोटने का काम या मज़दूरी।
घोटाला–संज्ञा पुं० गड़बड़।
घोड़साल†–संज्ञा स्त्री० दे० "घुड़साल"।
घोड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० घोड़ी] १. अश्व। २. वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बंदूक में गोली चलती है। ३. शतरंज का एक मोहरा।
घोड़िया–संज्ञा स्त्री० छोटी घोड़ी।
घोड़ी–संज्ञा स्त्री० घोड़े की मादा।
घोर–वि० १. भयानक। २. घना।
संज्ञा स्त्री० गर्जन।
घोरना*–क्रि० अ० गरजना।

वाला। साथी।
गोई–संज्ञा स्त्री० दे० "गोइयाँ"।
गोऊना–वि० चुरानेवाला।
गोकर्ण–संज्ञा पुं० १. हिंदुओं का एक शैव क्षेत्र जो मलाबार में है। २. इस स्थान में स्थापित शिवमूर्त्ति। वि० गऊ के से लंबे कानवाला।
गोकुल–संज्ञा पुं० १. गौओं का झुंड। २. गोशाला।
गोखरू–संज्ञा पुं० दे० "गोखरू"।
गोखा–संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।
गोग्रास–संज्ञा पुं० पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा भाग जो भोजन या श्राद्धादिक के आरंभ में गौ के लिये निकाला जाता है।
गोचर–संज्ञा पुं० १. वह विषय जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके। २. चरागाह।
गोजर–संज्ञा पुं० कनखजूरा।
गोजी–संज्ञा स्त्री० १. गौ हाँकने की लकड़ी। २. लट्ठ।
गोझनवट–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों की साड़ी का अंचल। पल्ला।
गोझा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया] १. गुझिया नामक पक्वान। २. खलीता।
गोट–संज्ञा स्त्री० वह पट्टी या फीता जिसे किसी कपड़े के किनारे लगाते हैं। मगजी।
संज्ञा स्त्री० मंडली।
संज्ञा स्त्री० चौपड़ का मोहरा। गोटी।
गोटा–संज्ञा पुं० पतला फीता जो कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।
गोटी–संज्ञा स्त्री० १. कंकड़, गेरू, पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के अनेक प्रकार के खेल खेलते हैं। २. चौपड़ खेलने का मोहरा। नरद। ३. एक खेल जो गोटियों से खेला जाता है।
गोठ–संज्ञा स्त्री० १. गोशाला। २. श्राद्ध।
गोड़–संज्ञा पुं० पैर।
गोड़इत–संज्ञा पुं० गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार।
गोड़ना–क्रि० स० मिट्टी खोदना और उलट पुलट देना जिसमें वह पोली और भुरभुरी हो जाय।
गोड़ा–संज्ञा पुं० पलँग आदि का पाया।
गोड़ाई–संज्ञा पुं० गोड़ने की क्रिया या मज़दूरी।
गोड़ारी–संज्ञा स्त्री० १. पैताना। २. जूता।
गोड़िया–संज्ञा स्त्री० छोटा पैर।
गोत–संज्ञा पुं० १. कुल। २. समूह।
गोता–संज्ञा पुं० डुब्बी।
गोताखोर–संज्ञा पुं० डुबकी लगानेवाला।
गोतिया–वि० दे० "गोती"।
गोती–वि० अपने गोत्र का।
गोत्र–संज्ञा पुं० १. संतति। २. नाम। ३. क्षेत्र। ४. समूह। ५. वंश।
गोद–संज्ञा स्त्री० १. कोरा। २. अंचल।
गोदनहारी–संज्ञा स्त्री० कंजड़ या नट जाति की स्त्री जो गोदना गोदने का काम करती है।
गोदना–क्रि० स० चुभाना।
संज्ञा पुं० तिल के आकार का काला चिह्न जो शरीर में नील या कोयले के पानी में डूबा हुई सुइयों से पाछकर बनता है।
गोदा–संज्ञा पुं० बड़, पीपल या पाकर

घोलना–क्रि॰ स॰ पानी या और किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिलाकर मिलाना।

घोष–संज्ञा पुं॰ १.अहीर। २. आवाज़।

घोषणा–संज्ञा स्त्री॰ १. उच्च स्वर से किसी बात की सूचना। २. डुग्गी। ३. गर्जन।

घोसी–संज्ञा पुं॰ अहीर।

घौद–संज्ञा पुं॰ फलों का गुच्छा।

घ्राण–संज्ञा स्त्री॰ [वि॰ घ्रेय] १. नाक। २. सुगंध।

ङ

ङ–व्यंजन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम अक्षर। यह स्पर्श वर्ण है और इसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है।

च

च–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का २२ वाँ अक्षर और छठा व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंकमण–संज्ञा पुं॰ टहलना।

चंग–संज्ञा स्त्री॰ डफ के आकार का एक छोटा बाजा।
संज्ञा स्त्री॰ पतंग।

चंगा–वि॰ [स्त्री॰ चंगी] १. स्वस्थ। २. अच्छा।

चंगु॰–संज्ञा पुं॰ १. चंगुल। २.पकड़।

चंगुल–संज्ञापुं॰ १. चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा। २. हाथ के पंजों की वह स्थिति जो उँगलियों से किसी वस्तु को उठाने या लेने के समय होती है।

चँगेर, चँगेरी–संज्ञा स्त्री॰ बाँस की छिछली डलिया।

चंचरी–संज्ञा स्त्री॰ १. भ्रमरी। २. छब्बीस मात्राओं का एक छंद।

चंचरीक–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ चंचरीकी] भ्रमर।

चंचल–वि॰ [स्त्री॰ चंचला] १. अस्थिर। २. अधीर। ३. नटखट।

चंचलता–संज्ञा स्त्री॰ १. अस्थिरता। २. शरारत।

चंचलताई॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चंचलता"।

चंचला–संज्ञा स्त्री॰ १. लक्ष्मी। २. बिजली।

चंचलाई॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चंचलता"।

चंचु–संज्ञा पुं॰ १. एक प्रकार का शाक। २. मृग।
संज्ञा स्त्री॰ चिड़ियों की चोंच।

चंट–वि॰ चालाक।

के पक्के फल।

गोदान–संज्ञा पुं० गौ को विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को दान करने की क्रिया।

गोदाम–संज्ञा पुं० वह बड़ा स्थान जहाँ बहुत सा बिक्री का माल रखा जाता है।

गोदावरी–संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।

गोदी–संज्ञा स्त्री० दे० "गोद"।

गोधन–संज्ञा पुं० १. गौओं का समूह। २. गौ रूपी संपत्ति।
†० संज्ञा पुं० गोवर्द्धन पर्वत।

गोधूम–संज्ञा पुं० गेहूँ।

गोधूलि, गोधूली–संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि जंगल से चरकर लौटती हुई गौओं के खुरों से धूल उड़ने के कारण धुँधली छा जाय।

गोन–संज्ञा स्त्री० टाट, कंबल, चमड़े आदि का बना दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है।
संज्ञा स्त्री० रस्सी जिसे नाव खींचने के लिये मस्तूल में बाँधते हैं।

गोना०–क्रि० स० छिपाना।

गोनिया–संज्ञा स्त्री० दीवार या कोने आदि की सीध जाँचने का औज़ार।
संज्ञा पुं० स्वयं अपनी पीठ पर या बैलों पर लादकर बोरे ढोनेवाला।

गोनी–संज्ञा स्त्री० टाट का थैला।

गोप–संज्ञा पुं० १. गौ की रक्षा करनेवाला। २. ग्वाला।
संज्ञा पुं० गले में पहनने का एक आभूषण।

गोपन–संज्ञा पुं० १. छिपाव। २. रक्षा।

गोपना०†–क्रि० स० छिपाना।

गोपनीय–वि० छिपाने के लायक।

गोपांगना–संज्ञा स्त्री० गोप जाति की स्त्री।

गोपा–संज्ञा स्त्री० गाय पालनेवाली; अहीरिन।

गोपाल–संज्ञा पुं० १. गौ का पालन-पोषण करनेवाला। २. अहीर। ३. श्रीकृष्ण।

गोपाष्टमी–संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ला अष्टमी।

गोपिका–संज्ञा स्त्री० १. गोप की स्त्री। गोपी। २. अहीरिन।

गोपी–संज्ञा स्त्री० १. ग्वालिनी। २. श्रीकृष्ण की प्रेमिका व्रज की गोप-जातीय स्त्रियाँ।

गोपीचंदन–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पीली मिट्टी।

गोपीनाथ–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

गोपुर–संज्ञा पुं० १. नगर का द्वार। २. क़िले का फाटक। ३. फाटक। ४. स्वर।

गोफन, गोफना–संज्ञा पुं० ढेलवाँस।

गोफा–संज्ञा पुं० नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता।

गोबर–संज्ञा पुं० गौ का मल।

गोबरगणेश–वि० १. भद्दा। २. मूर्ख।

गोबरी–संज्ञा स्त्री० कंडा।

गोबरैला–संज्ञा पुं० दे० "गुबरैला"।

गोभी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शाक।

गोमती–संज्ञा स्त्री० एक नदी।

गोमय–संज्ञा पुं० गोबर।

गोमुख–संज्ञा पुं० १. गौ का मुँह। २. वह शंख जिसका आकार गौ के मुँह के समान होता है।

गोमुखी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। २. गौ के मुँह के आकार

चंड–वि० [स्त्री० चंडा] १. तेज़। २. बलवान्।
संज्ञा पुं० १. गरमी। २. कार्त्तिकेय।
चंडकर–संज्ञा पुं० सूर्य।
चंडता–संज्ञा स्त्री० १. उग्रता। २. बल।
चंडांशु–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
चँड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. शीघ्रता। २. अत्याचार।
चंडाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० चंडालिन, चंडालिनी] चांडाल।
चंडालिका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
चंडालिनी–संज्ञा स्त्री० १. चंडाल वर्ण की स्त्री। २. दुष्टा स्त्री।
चंडावल–संज्ञा पुं० १. सेना के पीछे का भाग। २. संतरी।
चंडिका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
चंडू–संज्ञा पुं० अफ़ीम का किवाम जिसका धुआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पीते हैं।
चंडूखाना–संज्ञा पुं० वह घर जहाँ लोग चंडू पीते हैं।
चंडूबाज़–संज्ञा पुं० चंडू पीनेवाला।
चंडूल–संज्ञा पुं० खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया।
चंडोल–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।
चंद–संज्ञा पुं० दे० "चंद्र"।
वि० थोड़े से।
चंदक–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. माथे पर पहनने का एक अर्द्धचंद्राकार गहना।
चंदन–संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके हीर की सुगंधित लकड़ी का व्यवहार देव-पूजन आदि में होता है। २. चंदन की लकड़ी या टुकड़ा। ३. घिसे हुए चंदन का लेप।
चंदनगिरि–संज्ञा पुं० मलयाचल।
चंदनहार–संज्ञा पुं० दे० "चंद्रहार"।
चँदराना†–क्रि० स० १. बहकाना। २. जान बूझकर अनजान बनना।
चदला–वि० गंजा।
चँदवा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा मंडप।
संज्ञा पुं० गोल आकार की चकती।
चंदा–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
संज्ञा पुं० वह थोड़ा थोड़ा धन जो कई आदमियों से किसी कार्य्य के लिये लिया जाय।
चंदिका–संज्ञा स्त्री० दे० "चंद्रिका"।
चंदिनि, चंदिनी–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
चँदिया–संज्ञा स्त्री० खोपड़ी। सिर का मध्य भाग।
चंदिर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
चंदेल–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक शाखा जो किसी समय कालिंजर और महोबे में राज्य करती थी।
चंद्र–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
वि० सुंदर।
चंद्रक–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. चाँदनी। ३. नाखून।
चंद्रकला–संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश। २. चंद्रमा की किरण या ज्योति। ३. माथे पर पहनने का एक गहना।
चंद्रकांत–संज्ञा पुं० एक मणि या रत्न जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह चंद्रमा के सामने करने से पसीजता है।
चंद्रकांता–संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की स्त्री। २. रात्रि।

का गंगोत्तरी का वह स्थान जहाँ से गंगा निकलती है।
गोमेध—संज्ञा पुं० एक यज्ञ जिसमें गौ से हवन किया जाता था।
गोय—संज्ञा पुं० गेंद।
गोया—क्रि० वि० मानो।
गोर—संज्ञा स्त्री० कब्र।
† वि० गोरा।
गोरखधंधा—संज्ञा पुं० कोई ऐसी चीज़ या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो।
गोरखनाथ—संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध अवधूत या हठयोगी।
गोरखपंथी—वि० गोरखनाथ के चलाए हुए संप्रदायवाला।
गोरखा—संज्ञा पुं० इस देश का निवासी।
गोरज—संज्ञा पुं० गौ के खुरों से उड़ी हुई धूल।
गोरस—संज्ञा पुं० १. दूध। २. दधि। ३. मठा।
गोरा—वि० सफ़ेद और स्वच्छ वर्णवाला।
संज्ञा पुं० फ़िरंगी।
गोराई†—संज्ञा स्त्री० १. गोरापन। २. सुंदरता।
गोरिल्ला—संज्ञा पुं० बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बनमानुस।
गोरी—संज्ञा स्त्री० सुंदर और गौर वर्ण की स्त्री। रूपवती स्त्री।
गोरू—संज्ञा पुं० चौपाया।
गोरोचन—संज्ञा पुं० पीले रंग का एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।
गोलंदाज़—संज्ञा पुं० तोप में गोला रखकर चलानेवाला।
गोलंबर—संज्ञा पुं० १. गुंबद। २. गोलाई।
गोल—वि० जिसका घेरा या परिधि वृत्ताकार हो।
संज्ञा पुं० वृत्त।
संज्ञा पुं० मंडली।
गोलक—संज्ञा पुं० १. गोलोक। २. गोल पिंड। ३. विधवा का जारज पुत्र। ४. मिट्टी का घड़ा कुंडा। ५. फंड।
गोलगप्पा—संज्ञा पुं० एक प्रकार की महीन और करारी घी में तली फुलकी।
गोलमाल—संज्ञा पुं० गड़बड़।
गोल मिर्च—संज्ञा स्त्री० काली मिर्च।
गोला—संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। २. लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। ३. वह मंडी जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों।
गोलाई—संज्ञा स्त्री० गोलापन।
गोलाकार, गोलाकृति—वि० जिसका आकार गोल हो।
गोलार्द्ध—संज्ञा पुं० पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है।
गोली—संज्ञा स्त्री० छोटा गोलाकार पिंड।
गोलोक—संज्ञा पुं० कृष्ण का निवासस्थान जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है।
गोवर्द्धन—संज्ञा पुं० वृंदावन का एक पवित्र पर्वत।
गोविंद—संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
गोश—संज्ञा पुं० कान।
गोशमाली—संज्ञा स्त्री० १. कान उमे-

चंद्रग्रहण–संज्ञा पुं० चंद्रमा का ग्रहण।
चंद्रचूड़–संज्ञा पुं० शिव।
चंद्रजोत–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
चंद्रधर–संज्ञा पुं० शिव।
चंद्रप्रभा–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
चंद्रबिंदु–संज्ञा पुं० अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी।
चंद्रबिंब–संज्ञा पुं० चंद्रमा का मंडल।
चंद्रभाल–संज्ञा पुं० शिव।
चंद्रमणि–संज्ञा पुं० १. चंद्रकांत मणि। २. उल्लाला छंद।
चंद्रमा–संज्ञा पुं० चाँद। शशि।
चंद्रमाललाम–संज्ञा पुं० महादेव।
चंद्रमाला–संज्ञा स्त्री० २८ मात्राओं का एक छंद।
चंद्रमौलि–संज्ञा पुं० शिव।
चंद्रलोक–संज्ञा पुं० चंद्रमा का लोक।
चंद्रवंश–संज्ञा पुं० क्षत्रियों के दो आदि-कुलों में से एक जो पुरूरवा से आरंभ हुआ था।
चंद्रवार–संज्ञा पुं० सोमवार।
चंद्रशेखर–संज्ञा पुं० शिव।
चंद्रहार–संज्ञा पुं० गले में पहनने की एक प्रकार की माला। नौलखा हार।
चंद्रहास–संज्ञा पुं० खड्ग।
चंद्रिका–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
चंद्रोदय–संज्ञा पुं० चंद्रमा का उदय।
चंपई–वि० चंपा के फूल के रंग का।
चंपक–संज्ञा पुं० चंपा।
चंपत–वि० गायब।
चंपना–क्रि० अ० १. बोझ से दबना। २. उपकार आदि से दबना।
चंपा–संज्ञा पुं० मझोले कद का एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के, कड़ी महक के, फूल लगते हैं।
चंपाकली–संज्ञा स्त्री० गले में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।
चंपल–संज्ञा स्त्री० नदी।
संज्ञा पुं० पानी की बाढ़।
चँवर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. डाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो राजाओं या देवमूर्तियों के सिर पर डुलाया जाता है। २. घोड़ों और हाथियों के सिर पर लगाने की कलगी।
चवरढार–संज्ञा पुं० चँवर डुलानेवाला सेवक।
चउहट्ट॰–संज्ञा पुं० दे० "चौहट्ट"।
चक–संज्ञा पुं० १. चक्रवाक पक्षी। २. चक्का। ३. पट्टी। ४. अधिकार। वि० अधिक। वि० चकपकाया हुआ।
चकई–संज्ञा स्त्री० मादा चकवा।
चकचकाना–क्रि० अ० १. किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकलना। २. भींग जाना।
चकचाना॰†–क्रि० अ० चकाचौंध लगना।
चकचाल॰–संज्ञा पुं० चक्कर।
चकचाव॰†–संज्ञा पुं० चकाचौंध।
चकचून–वि० चकनाचूर।
चकचौंध–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चकचौंधना–क्रि० अ० चकाचौंध होना।
क्रि० स० चकाचौंध उत्पन्न करना।
चकचौंह॰–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

ठना। २. कड़ी चेतावनी।

गोशा–संज्ञा पुं० १. कोना। २. एकांत स्थान।

गोशाला–संज्ञा स्त्री० गौओं के रहने का स्थान।

गोश्त–संज्ञा पुं० मांस।

गोष्ठ–संज्ञा पुं० १. गोशाला। २. परामर्श। ३. दल।

गोष्ठी–संज्ञा स्त्री० १. सभा। २. बातचीत। ३. परामर्श।

गोसाईं–संज्ञा पुं० १. गौओं का स्वामी या अधिकारी। २. ईश्वर। ३. संन्यासियों का एक संप्रदाय। ४. साधु। ५. मालिक।

गोसैयाँ†–संज्ञा पुं० दे० "गोसाईं"।

गोस्वामी–संज्ञा पुं० जितेंद्रिय।

गोह–संज्ञा स्त्री० छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु।

गोहन⊙–संज्ञा पुं० १. साथी। २. संग।

गोहरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर।

गोहराना†–क्रि० अ० पुकारना।

गोहार–संज्ञा स्त्री० १. पुकार। २. शोर।

गोहारी†–संज्ञा स्त्री० दे० "गोहार"।

गौं–संज्ञा स्त्री० १. घात। २. प्रयोजन। ३. ढंग।

गौ–संज्ञा स्त्री० गाय।

गौख–संज्ञा स्त्री० झरोखा।

गौगा–संज्ञा पुं० १. शोर। २. अफवाह।

गौचरी–संज्ञा स्त्री० गाय चराने का कर।

गौड़–संज्ञा पुं० १. वंग देश का एक प्राचीन विभाग। २. ब्राह्मणों की एक जाति। ३. गौड़ देश का निवासी।

गौड़िया†–वि० गौड़ देश का।

गौण–वि० १. जो प्रधान या मुख्य न हो। २. सहायक।

गौणी–वि० स्त्री० साधारण।

गौतम–संज्ञा पुं० १. एक ऋषि। २. बुद्धदेव।

गौतमी–संज्ञा स्त्री० अहल्या।

गौदुमा–वि० दे० "गावदुम"।

गौनहाई†–वि० स्त्री० जिसका गौना हाल में हुआ हो।

गौनहार–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो दुल-हिन के साथ उसकी ससुराल जाय।

गौनहारिन, गौनहारी–संज्ञा स्त्री० गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।

गौना–संज्ञा पुं० विवाह के बाद की एक रसम जिसमें वर वधू को अपने साथ घर ले आता है। द्विरागमन।

गौर–वि० १. गोरे चमड़ेवाला। २. श्वेत।

संज्ञा पुं० दे० "गौड़"।

ग़ौर–संज्ञा पुं० १. सोच-विचार। २. खयाल।

गौरता–संज्ञा स्त्री० गोराई।

गौरव–संज्ञा पुं० १. बड़प्पन। २. सम्मान।

गौरांग–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. चैतन्य महाप्रभु।

गौरा–संज्ञा स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। ३. हल्दी।

गौरिया–संज्ञा स्त्री० काले रंग का एक जलपक्षी।

गौरी–संज्ञा स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। ३. हल्दी।

गौरीशंकर–संज्ञा पुं० १. महादेव। शिव। २. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी का नाम।

चकती–संज्ञा स्त्री० १. पट्टी। २. फटे-टूटे स्थान को बंद करने के लिये लगी हुई पट्टी या धज्जी।

चकत्ता–संज्ञा पुं० १. रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग। २. ददोरा।
संज्ञा पुं० मोगल अमीर चगताई खाँ जिसके वंश में बाबर आदि बादशाह थे।

चकना॰–क्रि० अ० १. चकित होना। २. चौंकना।

चकनाचूर–वि० चूर चूर।

चकपकाना–क्रि० अ० १. आश्चर्य से इधर उधर ताकना। २. चौंकना।

चकफेरी–संज्ञा स्त्री० परिक्रमा।

चकबंदी–संज्ञा स्त्री० भूमि को कई भागों में विभक्त करना।

चकमक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।

चकमा–संज्ञा पुं० धोखा।

चकर†॰–संज्ञा पुं० चक्रवाक पक्षी।

चकरबा–संज्ञा पुं० असमंजस।

चकराना–क्रि० अ० १. चक्कर खाना। २. घबराना।
क्रि० स० आश्चर्य में डालना।

चकला–संज्ञा पुं० पत्थर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेली जाती है।
वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा।

चकली–संज्ञा स्त्री० १. घिरनी। २. होरसा।

चकवा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चकई] एक जल-पक्षी। सुरखाब।

चकहा†॰–संज्ञा पुं० पहिया।

चका†॰–संज्ञा पुं० पहिया।

चकाचक–वि० लथ-पथ।
क्रि० वि० खूब।

चकाचौंध–संज्ञा स्त्री० तिलमिलाहट।

चकाना॰–क्रि० अ० दे० "चकपकाना"।

चकित–वि० १. विस्मित। २. चौकन्ना।

चकोटना–क्रि० स० चुटकी काटना।

चकोर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चकोरी] एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खाने-वाला प्रसिद्ध है।

चकौंध॰–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।

चक्क–संज्ञा पुं० १. चक्रवाक। २. कुम्हार का चाक।

चक्कर–संज्ञा पुं० १. मंडल। २. पहिए के ऐसा भ्रमण। ३. फेर। ४. हैरानी। ५. सिर घूमना।

चक्का–संज्ञा पुं० १. पहिया। २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु।

चक्की–संज्ञा स्त्री० आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र। जाँता।

चक्र–संज्ञा पुं० पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु।

चक्रधर–वि० जो चक्र धारण करे।
संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान्। २. श्रीकृष्ण।

चक्रधारी–संज्ञा पुं० दे० "चक्रधर"।

चक्रपाणि–संज्ञा पुं० विष्णु।

चक्रपूजा–संज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा-विधि।

चक्रवर्ती–वि० [स्त्री० चक्रवर्तिनी] सार्व-भौम।

चक्रवाक–संज्ञा पुं० चकवा पक्षी।

चक्रवात–संज्ञा पुं० बवंडर।

गौरैया|–संज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया"।
गौहर–संज्ञा पुं० मोती।
ग्यान|–संज्ञा पुं० दे० "ज्ञान"।
ग्यारस–संज्ञा स्त्री० एकादशी तिथि।
ग्यारह–वि० दस और एक।
ग्रंथ–संज्ञा पुं० पुस्तक।
ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार–संज्ञा पुं० ग्रंथ की रचना करनेवाला।
ग्रंथचुंबक–संज्ञा पुं० अल्पज्ञ।
ग्रंथचुंबन–संज्ञा पुं० किताब को सरसरी तौर पर पढ़ना।
ग्रंथन–संज्ञा पुं० १. जोड़ना। २. गूँथना।
ग्रंथ साहब–संज्ञा पुं० सिक्खों की धर्म-पुस्तक।
ग्रंथि–संज्ञा स्त्री० १. गाँठ। २. माया-जाल।
ग्रंथित–वि० गूँथा हुआ।
ग्रंथिबंधन–संज्ञा पुं० विवाह के समय वर और कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गाँठ देकर बाँधने की क्रिया।
ग्रंथिल–वि० गाँठदार।
ग्रसन–संज्ञा पुं० १. भक्षण। २. पकड़। ३. ग्रहण।
ग्रसना–क्रि० स० १. बुरी तरह पकड़-ना। २. सताना।
ग्रसित–वि० दे० "ग्रस्त"।
ग्रस्त–वि० १. पकड़ा हुआ। २. पीड़ित।
ग्रस्तास्त–संज्ञा पुं० ग्रहण लगने पर चंद्रमा या सूर्य्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।
ग्रस्तोदय–संज्ञा पुं० चंद्रमा या सूर्य्य का उस अवस्था में उदय होना जब कि उन पर ग्रहण लगा हो।
ग्रह–संज्ञा पुं० १. वह तारा जो अपने सौर जगत् में सूर्य्य की परिक्रमा करे। २. चंद्रमा या सूर्य्य का ग्रहण।
ग्रहण–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उसके मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने या छाया पड़ने से होता है। २. पकड़ने या लेने की क्रिया। ३. स्वीकार।
ग्रहणीय–वि० ग्रहण करने के योग्य।
ग्रहदशा–संज्ञा स्त्री० १. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था। २. अभाग्य।
ग्रहपति–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. शनि।
ग्रहवेध–संज्ञा पुं० ग्रह की स्थिति आदि का जानना।
ग्रांडील–वि० ऊँचे कद का।
ग्राम–संज्ञा पुं० गाँव।
ग्रामणी–संज्ञा पुं० १. गाँव का मालिक। २. प्रधान।
ग्रामदेवता–संज्ञा पुं० १. किसी एक गाँव में पूजा जानेवाला देवता। २. डीहराज।
ग्रामीण–वि० देहाती।
ग्राम्य–वि० १. ग्रामीण। २. बेवकूफ।
ग्रास–संज्ञा पुं० १. कौर। २. पकड़। ३. ग्रहण लगना।
ग्रासना–क्रि० स० दे० "ग्रसना"।
ग्राह–संज्ञा पुं० १. मगर। २. ग्रहण। ३. पकड़ना।
ग्राहक–संज्ञा पुं० १. मोल लेनेवाला। २. चाहनेवाला।
ग्राही–संज्ञा पुं० [स्त्री० ग्राहिणी] वह जो ग्रहण करे।
ग्राह्य–वि० लेने योग्य।

चक्रवृद्धि–संज्ञा स्त्री० सूद दर सूद ।
चक्रव्यूह–संज्ञा पुं० प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई घेरों में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।
चक्रायुध–संज्ञा पुं० विष्णु ।
चक्रित*–वि० दे० "चकित" ।
चक्री–संज्ञा पुं० वह जो चक्र धारण करे।
चक्षु–संज्ञा पुं० आँख ।
चक्षुरिंद्रिय–संज्ञा स्त्री० आँख ।
चक्षुष्य–वि० १. जो नेत्रों को हितकारी हो । २. सुंदर ।
चख*–संज्ञा पुं० आँख।।
संज्ञा पुं० झगड़ा ।
चखना–क्रि० स० स्वाद लेना ।
चखाचखी–संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।
चखाना–क्रि० स० स्वाद दिखाना ।
चगड़–वि० चतुर ।
चग़ताई–संज्ञा पुं० तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चग़ताई ख़ाँ से चला था ।
चचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चची] बाप का भाई ।
चचिया–वि० चाचा के बराबर का संबंध रखनेवाला ।
चचेरा–वि० चाचा से उत्पन्न ।
चचोड़ना–क्रि० स० दाँत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना ।
चट–क्रि० वि० जल्दी से ।
†–संज्ञा पुं० दाग़ ।
संज्ञा स्त्री० १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है । २. वह शब्द जो उँगलियों को मोड़कर दबाने से होता है ।
† वि० चाट पोंछकर खाया हुआ ।
चटक–संज्ञा पुं० [स्त्री० चटका] गौरैया ।
संज्ञा स्त्री० चटकीलापन ।
†वि० चमकीला ।
संज्ञा स्त्री० तेज़ी ।
क्रि० वि० तेज़ी से ।
वि० चटपटा ।
चटकदार–वि० दे० "चटकीला" ।
चटकना–क्रि० अ० १. 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना । २. स्थान स्थान पर फटना ।
संज्ञा पुं० तमाचा ।
चटकनी–संज्ञा स्त्री० सिटकिनी ।
चटक-मटक–संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार । नाज़-नखरा ।
चटका†–संज्ञा पुं० फुरती ।
चटकाना–क्रि० स० १. ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय । २. उँगलियों को खींचकर या मोड़ते हुए दबाकर चट चट शब्द निकालना ।
चटकारा–वि० १. चमकीला । २. चंचल ।
वि० स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द ।
चटकीला–वि० [स्त्री० चटकीली] १. भड़कीला । २. मज़ेदार ।
चटखना–क्रि० स०, संज्ञा पुं० दे० "चटकना" ।
चट चट–संज्ञा स्त्री० चटकने का शब्द ।
चटचटाना–क्रि० अ० चट चट करते हुए टूटना या फूटना ।
चटनी–संज्ञा स्त्री० १. चाटने की चीज़ । २. वह गीली चरपरी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय ।
चटपट–क्रि० वि० शीघ्र ।

ग्रीखम०†–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।
ग्रीवा–संज्ञा स्त्री० गर्दन।
ग्रीषम०†–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्रीष्म"।
ग्रीष्म–संज्ञा स्त्री० १. गरमी की ऋतु। २. गरम।
ग्लानि–संज्ञा स्त्री० खेद। खिन्नता।
ग्वार–संज्ञा स्त्री० एक पौधा और उसकी फली। खुरथी।
ग्वाल–संज्ञा पुं० अहीर।
ग्वाला–संज्ञा पुं० दे० "ग्वाल"।
ग्वालिन–संज्ञा स्त्री० १. ग्वाले की स्त्री। २. ग्वार।
ग्वैंठना†०–क्रि० स० मरोड़ना।

घ

घ–हिंदी वर्णमाला के व्यंजनों में से कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है।
घँघोलना–क्रि० स० १. हिलाकर घोलना। २. पानी को हिलाकर मैला करना।
घंट–संज्ञा पुं० १. घड़ा। २. मृतक की क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है।
संज्ञा पुं० दे० "घंटा"।
घंटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० घंटी] १. धातु का एक बाजा। २. दिन रात का चौबीसवाँ भाग।
घंटिका–संज्ञा स्त्री० १. एक बहुत छोटा घंटा। २. घुँघुरू।
घंटी–संज्ञा स्त्री० पीतल या फूल की छोटी लोटिया।
संज्ञा स्त्री० १. बहुत छोटा घंटा। २. घंटी बजने का शब्द।
घई०–संज्ञा स्त्री० गंभीर भँवर।
वि० जिसकी थाह न लग सके।
घघरा–संज्ञा पुं० दे० "घाघरा"।
घट–संज्ञा पुं० घड़ा।
वि० कम।
घटक–संज्ञा पुं० मध्यस्थ।
घटती–संज्ञा स्त्री० १. कमी। न्यूनता। २ हीनता।
घटना–क्रि० अ० कम होना।
संज्ञा स्त्री० वारदात।
घटबढ़–संज्ञा स्त्री० कमी-बेशी।
घटयोनि–संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि।
घटवाना–क्रि० स० कम कराना।
घटवाई–संज्ञा पुं० घाट का कर लेनेवाला।
संज्ञा स्त्री० कम करवाई।
घटवार–संज्ञा पुं० १. घाट का महसूल लेनेवाला। २. मल्लाह। केवट।
घटसंभव–संज्ञा पुं० अगस्त्य मुनि।
घट-स्थापन–संज्ञा पुं० किसी मंगल-कार्य्य या पूजन आदि के पूर्व जल भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना।
घटा–संज्ञा स्त्री० उमड़े हुए बादल।
घटाई०–संज्ञा स्त्री० हीनता। बेइज्जती।
घटाकाश–संज्ञा पुं० घड़ों के अंदर की खाली जगह।
घटाटोप–संज्ञा पुं० बादलों की घटा जो चारों ओर से घेरे हो।
घटाना–क्रि० स० १. कम करना।

चकती–संज्ञा स्त्री० १. पट्टी। २. फटे-टूटे स्थान को बंद करने के लिये लगी हुई पट्टी या धज्जी।
चकत्ता–संज्ञा पुं० १. रक्त-विकार आदि के कारण शरीर के ऊपर का गोल दाग। २. ददोरा।
संज्ञा पुं० मोगल अमीर चग़ताई खाँ जिसके वंश में बाबर आदि बादशाह थे।
चकना॰–क्रि० अ० १. चकित होना। २. चौंकना।
चकनाचूर–वि० चूर चूर।
चकपकाना–क्रि० अ० १. आश्चर्य से इधर उधर ताकना। २. चौंकना।
चकफेरी–संज्ञा स्त्री० परिक्रमा।
चकबंदी–संज्ञा स्त्री० भूमि को कई भागों में विभक्त करना।
चकमक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्दी आग निकलती है।
चकमा–संज्ञा पुं० धोखा।
चकर†॰–संज्ञा पुं० चक्रवाक पक्षी।
चकरबा–संज्ञा पुं० असमंजस।
चकराना–क्रि० अ० १. चक्कर खाना। २. घबराना।
क्रि० स० आश्चर्य में डालना।
चकला–संज्ञा पुं० पत्थर या काठ का गोल पाटा जिस पर रोटी बेली जाती है।
वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा।
चकली–संज्ञा स्त्री० १. घिरनी। २. होरसा।
चकवा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चकई] एक जल-पक्षी। सुरखाब।
चकडा†॰–संज्ञा पुं० पहिया।
चका†॰–संज्ञा पुं० पहिया।
चकाचक–वि० लथ-पथ।
क्रि० वि० खूब।
चकाचौंध–संज्ञा स्त्री० तिलमिलाहट।
चकाना॰–क्रि० अ० दे० "चकपकाना"।
चकित–वि० १. विस्मित। २. चौकन्ना।
चकोटना–क्रि० स० चुटकी काटना।
चकोर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चकोरी] एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला प्रसिद्ध है।
चकौंध॰–संज्ञा स्त्री० दे० "चकाचौंध"।
चक्क–संज्ञा पुं० १. चक्रवाक। २. कुम्हार का चाक।
चक्कर–संज्ञा पुं० १. मंडल। २. पहिए के ऐसा भ्रमण। ३. फेर। ४. हैरानी। ५. सिर घूमना।
चक्का–संज्ञा पुं० १. पहिया। २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु।
चक्की–संज्ञा स्त्री० आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र। जाँता।
चक्र–संज्ञा पुं० पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु।
चक्रधर–वि० जो चक्र धारण करे।
संज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान्। २. श्रीकृष्ण।
चक्रधारी–संज्ञा पुं० दे० "चक्रधर"।
चक्रपाणि–संज्ञा पुं० विष्णु।
चक्रपूजा–संज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा-विधि।
चक्रवर्ती–वि० [स्त्री० चक्रवर्तिनी] सार्वभौम।
चक्रवाक–संज्ञा पुं० चकवा पक्षी।
चक्रवात–संज्ञा पुं० बवंडर।

चक्रवृद्धि–संज्ञा स्त्री० सूद दर सूद।
चक्रव्यूह–संज्ञा पुं० प्राचीन काल के युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई घेरों में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।
चक्रायुध–संज्ञा पुं० विष्णु।
चकित०–वि० दे० "चकित"।
चक्री–संज्ञा पुं० वह जो चक्र धारण करे।
चक्षु–संज्ञा पुं० आँख।
चक्षुरिंद्रिय–संज्ञा स्त्री० आँख।
चक्षुष्य–वि० १. जो नेत्रों को हितकारी हो। २. सुंदर।
चख०–संज्ञा पुं० आँख।
संज्ञा पुं० झगड़ा।
चखना–क्रि० स० स्वाद लेना।
चखाचखी–संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।
चखाना–क्रि० स० स्वाद दिलाना।
चगड़–वि० चतुर।
चगताई–संज्ञा पुं० तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश जो चगताई खाँ से चला था।
चचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चची] बाप का भाई।
चचिया–वि० चाचा के बराबर का संबंध रखनेवाला।
चचेरा–वि० चाचा से उत्पन्न।
चचोड़ना–क्रि० स० दाँत से खींच खींच या दबा दबाकर चूसना।
चट–क्रि० वि० जल्दी से।
०†–संज्ञा पुं० दाग।
संज्ञा स्त्री० १. वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है। २. वह शब्द जो उँगलियों को मोड़कर दबाने से होता है।
वि० चाट पोंछकर खाया हुआ।
चटक–संज्ञा पुं० [स्त्री० चटका] गौरैया।
संज्ञा स्त्री० चटकीलापन।
†वि० चमकीला।
संज्ञा स्त्री० तेज़ी।
क्रि० वि० तेज़ी से।
वि० चटपटा।
चटकदार–वि० दे० "चटकीला"।
चटकना–क्रि० अ० १. 'चट' शब्द करके टूटना या फूटना। २. स्थान स्थान पर फटना।
संज्ञा पुं० तमाचा।
चटकनी–संज्ञा स्त्री० सिटकिनी।
चटक-मटक–संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार। नाज़-नखरा।
चटका†–संज्ञा पुं० फुरती।
चटकाना–क्रि० स० १. ऐसा करना जिसमें कोई वस्तु चटक जाय। २. उँगलियों को खींचकर या मोड़ते हुए दबाकर चट चट शब्द निकालना।
चटकारा–वि० १. चमकीला। २. चंचल।
वि० स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।
चटकीला–वि० [स्त्री० चटकीली] १. भड़कीला। २. मज़ेदार।
चटखना–क्रि० स०, संज्ञा पुं० दे० "चटकना"।
चट चट–संज्ञा स्त्री० चटकने का शब्द।
चटचटाना–क्रि० अ० चट चट करते हुए टूटना या फूटना।
चटनी–संज्ञा स्त्री० १. चाटने की चीज़। २. वह गीली चटपटी वस्तु जो भोजन के साथ स्वाद बढ़ाने को खाई जाय।
चटपट–क्रि० वि० शीघ्र।

चर्चा–संज्ञा स्त्री० १. ज़िक्र। २. बात-चीत।
चर्चिका–संज्ञा स्त्री० चर्चा।
चर्चित–वि० १. पोता हुआ। २. जिसकी चर्चा हो।
चर्पट–संज्ञा पुं० १. थप्पड़। २. हाथ की खुली हुई हथेली।
चर्म–संज्ञा पुं० चमड़ा।
चर्मकार–संज्ञा पुं० [स्त्री० चर्मकारी] चमार।
चर्मवसन–संज्ञा पुं० शिव।
चर्य–वि० जो करने योग्य हो।
चर्या–संज्ञा स्त्री० १. वह जो किया जाय। २. आचार।
चर्राना–क्रि० अ० १. चर चर शब्द करना। २. घाव पर खुजली या सुरसुरी मिली हुई हलकी पीड़ा होना। ३. खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव होना।
चर्री–संज्ञा स्त्री० लगती हुई व्यंग्यपूर्ण बात।
चर्वण–संज्ञा पुं० [वि० चर्व्य] १. चबाना। २. वह वस्तु जो चबाई जाय। ३. चबेना।
चर्वित–वि० चबाया हुआ।
चल–वि० चंचल।
संज्ञा पुं० १. पारा। २. दोहा छंद का एक भेद।
चलकना–क्रि० अ० दे० "चमकना"।
चलचलाव–संज्ञा पुं० चलाचली।
चलचाल–वि० चंचल।
चलचूक–संज्ञा स्त्री० धोखा।
चलता–वि० [स्त्री० चलती] १. चलता हुआ। २. प्रचलित। ३. चालाक।
चलती–संज्ञा स्त्री० अधिकार।
चलदल–संज्ञा पुं० पीपल का वृक्ष।
चलन–संज्ञा पुं० १. चाल। २. रिवाज।
संज्ञा पुं० गति।
चलनसार–वि० १. जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २. टिकाऊ।
चलना–क्रि० अ० १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना। २. निभना। ३. टिकना। ४. जारी होना। ५. बाँधा जाना। ६. वश चलना।
संज्ञा पुं० बड़ी चलनी।
चलनि⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "चलन"।
चलनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "छलनी"।
चलपत्र–संज्ञा पुं० पीपल का वृक्ष।
चलवाना–क्रि० स० १. चलाने का कार्य दूसरे से कराना। २. चलाने का काम कराना।
चलविचल–वि० उखड़ा-पुखड़ा।
संज्ञा स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन।
चला–संज्ञा स्त्री० १. बिजली। २. पृथ्वी। ३. लक्ष्मी।
चलाऊ–वि० जो बहुत दिनों तक चले।
चलाका†⊙–संज्ञा स्त्री० बिजली।
चलाचली–संज्ञा स्त्री० १. तैयारी। २. चलने की तैयारी या समय।
चलान–संज्ञा स्त्री० १. भेजे जाने या चलने की क्रिया। २. भेजने या चलाने की क्रिया। ३. वह कागज़ जिसमें किसी की सूचना के लिये भेजी हुई चीज़ों की सूची आदि हो।
चलाना–क्रि० स० १. किसी को चलने में लगाना। २. गति देना। ३. आरंभ करना।
चलायमान–वि० १. चलनेवाला। २. चंचल।

चटपटा–वि० [स्त्री० चटपटी] मजेदार।

चटपटी–संज्ञा स्त्री० [वि० चटपटिया] १. शीघ्रता। २. घबराहट।

चटवाना–क्रि० स० दे० "चटाना"।

चटसारꟹ†–संज्ञा स्त्री० पाठशाला।

चटाई–संज्ञा स्त्री० तृण का ग्रासन। संज्ञा स्त्री० चाटने की क्रिया।

चटाका–संज्ञा पुं० लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के ज़ोर से टूटने का शब्द।

चटाना–क्रि० स० चाटने का काम कराना।

चटापटी–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता।

चटावन–संज्ञा पुं० अन्नप्राशन।

चटोरा–वि० १. जिसे अच्छी अच्छी चीज़ें खाने की लत हो। २. लोभी।

चटोरापन–संज्ञा पुं० अच्छी अच्छी चीज़ें खाने का व्यसन।

चट्टा–वि० १. चाट पोंछकर खाया हुआ। २. समाप्त।

चट्टा–संज्ञा पुं० चटियल मैदान। संज्ञा पुं० शरीर पर कुष्ठ आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता।

चट्टान–संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा।

चट्टी–संज्ञा स्त्री० पड़ाव। संज्ञा स्त्री० स्लिपर।

चट्टू–वि० चटोरा। संज्ञा पुं० पत्थर का बड़ा खरल।

चढ़त–संज्ञा स्त्री० देवता की भेंट।

चढ़ना–क्रि० अ० १. नीचे से ऊपर को जाना। २. चढ़ाई करना। ३. तनना। ४. सवार होना। ५. कर्ज़ होना। ६. दर्ज होना। ७. उद्वेग-जनक प्रभाव होना।

चढ़वाना–क्रि० स० चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३. धावा।

चढ़ा-उतरी–संज्ञा स्त्री० बार बार चढ़ने उतरने की क्रिया।

चढ़ा-ऊपरी–संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।

चढ़ाचढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"।

चढ़ाना–क्रि० स० १. चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. ऐसा काम करना जिससे चढ़े। ३. पी जाना।

चढ़ाव–संज्ञा पुं० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. वृद्धि।

चढ़ावा–संज्ञा पुं० १. वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। ३. दम।

चणक–संज्ञा पुं० चना।

चतुरंग–संज्ञा पुं० १. चतुरंगिणी सेना। २. शतरंज।

चतुरंगिणी–वि० स्त्री० चार अंगों-वाली।

चतुर–वि० पुं० [स्त्री० चतुरा] १. होशियार। २. धूर्त्त।

चतुरई–संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"।

चतुरता–संज्ञा स्त्री० होशियारी।

चतुरपन†–संज्ञा पुं० दे० "चतुराई"।

चतुरस्र–वि० चौकोर।

चतुराई–संज्ञा स्त्री० १. होशियारी। २. धूर्त्तता।

चतुरानन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

चतुर्गुण–वि० १. चौगुना। २. चार

चलाव†–संज्ञा पुं० १. चलने का भाव। २. यात्रा।
चलावा–संज्ञा पुं० १. रीति। २. आचरण।
चलित–वि० १. अस्थिर। २. चलता हुआ।
चलैया†–संज्ञा पुं० चलनेवाला।
चवन्नी–संज्ञा स्त्री० चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का।
चवर्ग–संज्ञा पुं० [वि० चवर्गीय] च से ञ तक के अक्षरों का समूह।
चश्म–संज्ञा स्त्री० नेत्र।
चश्मदीद–वि० जो आँखों से देखा हुआ हो।
चश्मा–संज्ञा पुं० कमानी में जड़ा हुआ शीशे या पारदर्शी पत्थर के तालों का जोड़ा, जो आँखों पर दृष्टि बढ़ाने या ठंढक रखने के लिये पहना जाता है।
चष०–संज्ञा पुं० आँख।
चषक–संज्ञा पुं० १. मद्य पीने का पात्र। २. मधु।
चसक–संज्ञा स्त्री० हलका दर्द।
चसकना–क्रि० अ० टीसना।
चसका–संज्ञा पुं० १. शौक। २. आदत।
चसना–क्रि० अ० चिपकना।
चस्पाँ–वि० चिपकाया हुआ।
चह–संज्ञा पुं० नदी के किनारे नाव पर चढ़ने के लिये चबूतरा।
०† संज्ञा स्त्री० गड्ढा।
चहक–संज्ञा स्त्री० चिड़ियों का चह चह।
चहकना–क्रि० अ० १. चहचहाना। २. उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना।
चहकारना†–क्रि० अ० दे० "चहकना"।
चहचहा–संज्ञा पुं० १. 'चहचहाना' का भाव। चहक। २. हँसी-दिल्लगी। वि० १. जिसमें चह चह शब्द हो। २. आनंद और उमंग उत्पन्न करनेवाला।
चहचहाना–क्रि० अ० चहकना।
चहना०†–क्रि० स० दे० "चाहना"।
चहनि†०–संज्ञा स्त्री० दे० "चाह"।
चहबच्चा–संज्ञा पुं० १. पानी भर रखने का छोटा गड्ढा या हौज़। २. धन गाड़ने या छिपा रखने का छोटा तहखाना।
चहल–संज्ञा स्त्री० कीचड़।
संज्ञा स्त्री० आनंदोत्सव।
चहलक़दमी–संज्ञा स्त्री० धीरे धीरे टहलना या घूमना।
चहल पहल–संज्ञा स्त्री० १. अबादानी। २. रौनक़।
चहला†–संज्ञा पुं० कीचड़।
चहारदीवारी–संज्ञा स्त्री० किसी स्थान के चारों ओर की दीवार।
चहारुम–वि० चतुर्थांश।
चहुँ०–वि० चार। चारों।
चहुवान–संज्ञा पुं० दे० "चौहान"।
चहूँटना†–क्रि० अ० सटना।
चहेता–वि० [स्त्री० चहेती] प्यारा।
चाँई–वि० १. ठग। २. चालाक।
चाँक–संज्ञा पुं० काठ की वह थापी जिससे खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाते हैं।
चाँकना–क्रि० स० १. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना। २. सीमा घेरना।
चाँगला†–वि० १. स्वस्थ। २. चतुर।
चाँचर, चाँचरि–संज्ञा स्त्री० वसंत ऋतु

गुणोंवाला।

चतुर्थ–वि० चौथा।

चतुर्थाश्रम–संज्ञा पुं० संन्यास।

चतुर्थी–संज्ञा स्त्री० १. चौथ। २. वह गंगापूजन आदि कर्म्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।

चतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० चौदस।

चतुर्दिक्–संज्ञा पुं० चारों दिशाएँ।
क्रि० वि० चारों ओर।

चतुर्भुज–वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] जिसकी चार भुजाएँ हों।
संज्ञा पुं० विष्णु।

चतुर्भुजा–संज्ञा स्त्री० १. एक देवी। २. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।

चतुर्भुजी–संज्ञा पुं० एक वैष्णव संप्रदाय।
वि० चार भुजाओंवाला।

चतुर्मुख–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
वि० चार मुखवाला।
क्रि० वि० चारों ओर।

चतुर्युगी–संज्ञा स्त्री० चारों युगों का समय।

चतुर्वेद–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. चारों वेद।

चतुर्वेदी–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुर्व्यूह–संज्ञा पुं० १. चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २. विष्णु।

चतुष्कोण–वि० चौकोना।

चतुष्टय–संज्ञा पुं० चार की संख्या।

चतुष्पथ–संज्ञा पुं० चौराहा।

चतुष्पद–संज्ञा पुं० चौपाया।
वि० चार पदोंवाला।

चतुष्पदा–संज्ञा स्त्री० चौपैया छंद।

चतुष्पदी–संज्ञा स्त्री० १. १५ मात्राओं का चौपई छंद। २. चार पद का गीत।

चत्वर–संज्ञा पुं० १. चौमुहानी। २. चबूतरा।

चद्दर–संज्ञा स्त्री० १. चादर। २. किसी धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर पत्तर।

चनकना†–क्रि० अ० दे० "चटकना"।

चनखना–क्रि० अ० खफ़ा होना।

चना–संज्ञा पुं० चूट।

चपकन–संज्ञा स्त्री० १. अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का वह साज़ जिसमें ताला लगाया जाता है।

चपकना–क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपटना†–क्रि० अ० दे० "चिपकना"।

चपटा†–वि० दे० "चिपटा"।

चपड़ा–संज्ञा पुं० १. साफ़ की हुई लाख का पत्तर। २. लाल रंग का एक कीड़ा या फतिंगा।

चपत–संज्ञा पुं० १. थप्पड़। २. धक्का।

चपना–क्रि० अ० दबना।

चपनी–संज्ञा स्त्री० कटोरी।

चपरगट्ट–वि० १. चौपटा। २. गुत्थमगुत्थ।

चपरना†०–क्रि० स० दे० "चुपड़ना"।

चपरा–अव्य० झटपट।

चपरास–संज्ञा स्त्री० दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी।

चपरासी–संज्ञा पुं० प्यादा।

चपल–वि० १. चंचल। २. चालाक।

चपलता–संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. धृष्टता।

चपला–वि० स्त्री० चंचला।
संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. बिजली। ३. जीभ।

में गाया जानेवाला एक राग।
चाँचु०–संज्ञा पुं० दे० "चोंच"।
चाँटा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० चाँटी] चिउँटा।
संज्ञा पुं० थप्पड़।
चाँड़–वि० १. प्रबल। २. उग्र।
संज्ञा स्त्री० १. भार सँभालने का खंभा। २. अधिकता।
चाँडाल–संज्ञा पुं० [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] १. एक अत्यंत नीच जाति। २. पतित मनुष्य।
चाँद–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. द्वितीया के चंद्रमा के आकार का एक आभूषण।
संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।
चाँदना–संज्ञा पुं० १. प्रकाश। २. चाँदनी।
चाँदनी–संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा का प्रकाश। २. सफेद फर्श। ३. ऊपर तानने का सफेद कपड़ा।
चाँदबाला–संज्ञा पुं० कान में पहनने का एक गहना।
चाँदमारी–संज्ञा स्त्री० दीवार या कपड़े पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।
चाँदी–संज्ञा स्त्री० एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन इत्यादि बनते हैं।
चांद्र–वि० चंद्रमा-संबंधी।
संज्ञा पुं० अदरख।
चांद्र मास–संज्ञा पुं० उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है।
चांद्रायण–संज्ञा पुं० एक कठिन व्रत।
चाँप–संज्ञा स्त्री० दबाव।
चाँपना–क्रि० स० दबाना।
चाँयँ चाँयँ–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बकवाद।
चाइ, चाउ*–संज्ञा पुं० दे० "चाव"।
चाक–संज्ञा पुं० १. कील पर घूमता हुआ वह मंडलाकार पत्थर जिस पर मिट्टी का लोंदा रखकर कुम्हार बरतन बनाते हैं। २. पहिया।
संज्ञा पुं० दरार।
वि० दृढ़।
चाकचक–वि० चारों ओर से सुरक्षित।
चाकचक्य–संज्ञा स्त्री० १. चमचमाहट। २. शोभा।
चाकना–क्रि० स० १. हद खींचना। २. पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिह्न डालना।
चाकर–संज्ञा पुं० [स्त्री० चाकरानी] नौकर।
चाकरी–संज्ञा स्त्री० नौकरी।
चाकी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चक्की"।
संज्ञा स्त्री० बिजली।
चाकू–संज्ञा पुं० छुरी।
चाक्षुष–वि० चक्षु-संबंधी।
संज्ञा पुं० न्याय में ऐसा प्रत्यक्ष प्रमाण जिसका बोध नेत्रों द्वारा हो।
चाखना†–क्रि० स० दे० "चखना"।
चाचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चाची] काका। बाप का भाई।
चाट–संज्ञा स्त्री० १. चटपटी। २. चसका।
चाटना–क्रि० स० १. जीभ लगाकर खाना। २. चट कर जाना।
चाटु–संज्ञा पुं० खुशामद।
चाटुकार–संज्ञा पुं० चापलूस।
चाटुकारी–संज्ञा स्त्री० खुशामद।
चाढ़ा*†–संज्ञा पुं० [स्त्री० चाढ़ी] प्यारा।
चाणक्य–संज्ञा पुं० राजनीति के आचार्य एक मुनि जो पाटलीपुत्र के सम्राट् चंद्रगुप्त के मंत्री थे और कौटिल्य नाम से भी प्रसिद्ध हैं।

चटपटा–वि० [स्त्री० चटपटी] मजेदार।
चटपटी–संज्ञा स्त्री० [वि० चटपटिया] १. शीघ्रता। २. घबराहट।
चटवाना–क्रि० स० दे० "चटाना"।
चटसार†–संज्ञा स्त्री० पाठशाला।
चटाई–संज्ञा स्त्री० तृण का डासन। संज्ञा स्त्री० चाटने की क्रिया।
चटाका–संज्ञा पुं० लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के ज़ोर से टूटने का शब्द।
चटाना–क्रि० स० चाटने का काम कराना।
चटापटी–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता।
चटावन–संज्ञा पुं० अन्नप्राशन।
चटोरा–वि० १. जिसे अच्छी अच्छी चीज़ें खाने की लत हो। २. लोभी।
चटोरापन–संज्ञा पुं० अच्छी अच्छी चीज़ें खाने का व्यसन।
चट्ट†–वि० १. चाट पोंछकर खाया हुआ। २. समाप्त।
चट्टा–संज्ञा पुं० चटियल मैदान। संज्ञा पुं० शरीर पर कुष्ठ आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता।
चट्टान–संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा।
चट्टी–संज्ञा स्त्री० पड़ाव। संज्ञा स्त्री० स्लिपर।
चट्टू–वि० चटोरा। संज्ञा पुं० पत्थर का बड़ा खरल।
चढ़त–संज्ञा स्त्री० देवता की भेंट।
चढ़ना–क्रि० अ० १. नीचे से ऊपर को जाना। २. चढ़ाई करना। ३. तनना। ४. सवार होना। ५. कर्ज़ होना। ६. दर्ज होना। ७. उद्वेग-जनक प्रभाव होना।
चढ़वाना–क्रि० स० चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।
चढ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३. धावा।
चढ़ा-उतरी–संज्ञा स्त्री० बार बार चढ़ने उतरने की क्रिया।
चढ़ा-ऊपरी–संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।
चढ़ाचढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"।
चढ़ाना–क्रि० स० १. चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. ऐसा काम करना जिससे चढ़े। ३. पी जाना।
चढ़ाव–संज्ञा पुं० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. वृद्धि।
चढ़ावा–संज्ञा पुं० १. वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। ३. दम।
चणक–संज्ञा पुं० चना।
चतुरंग–संज्ञा पुं० १. चतुरंगिणी सेना। २. शतरंज।
चतुरंगिणी–वि० स्त्री० चार अंगों-वाली।
चतुर–वि० पुं० [स्त्री० चतुरा] १. होशियार। २. धूर्त।
चतुरई–संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"।
चतुरता–संज्ञा स्त्री० होशियारी।
चतुरपन†–संज्ञा पुं० दे० "चतुराई"।
चतुरस्र–वि० चौकोर।
चतुराई–संज्ञा स्त्री० १. होशियारी। २. धूर्तता।
चतुरानन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
चतुर्गुण–वि० १. चौगुना। २. चार

चातक–संज्ञा पुं० [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।
चातर†–वि० दे० "चातुर"।
चातुर–वि० १. नेत्रगोचर। २. चतुर।
चातुरी–संज्ञा स्त्री० चतुरता।
चातुर्य–संज्ञा पुं० चतुराई।
चात्रिक॰†–संज्ञा पुं० दे० "चातक"।
चादर–संज्ञा स्त्री० १. कपड़े का लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने या ओढ़ने के काम में आता है। २. चद्दर।
चाप–संज्ञा पुं० १. धनुष। २. वृत्त की परिधि का कोई भाग।
संज्ञा स्त्री० १. दबाव। २. पैर की आहट।
चापना–क्रि० स० दबाना।
चापलता॰–संज्ञा स्त्री० दे० "चपलता"।
चापलूस–वि० ख़ुशामदी।
चापलूसी–संज्ञा स्त्री० ख़ुशामद।
चाब–संज्ञा स्त्री० १. गजपिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषध के काम में आती है। चाव्य। २. इस पौधे का फल।
संज्ञा स्त्री० डाढ़।
चाबना–क्रि० स० १. चबाना। २. खाना।
चाबी–संज्ञा स्त्री० कुंजी।
चाबुक–संज्ञा पुं० कोड़ा।
चाबुकसवार–संज्ञा पुं० [संज्ञा चाबुकसवारी] घोड़े को चलना सिखानेवाला।
चाभना–क्रि० स० खाना।
चाभी–संज्ञा स्त्री० दे० "चाबी"।
चाम–संज्ञा पुं० चमड़ा।
चामर–संज्ञा पुं० चँवर।
चामीकर–संज्ञा पुं० १. सोना २. धतूरा।
वि० सुनहरा।
चाय–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा चीनी के साथ पीने की चाल अब प्रायः सर्वत्र है।
॰ संज्ञा पुं० दे० "चाव"।
चायक॰–संज्ञा पुं० चाहनेवाला।
चार–वि० जो गिनती में दो और दो हो।
संज्ञा पुं० [वि० चारित, चार्य] १. गति। २. जासूस।
चारजामा–संज्ञा पुं० ज़ीन।
चारण–संज्ञा पुं० १. भाट। २. राज-पूताने की एक जाति।
चारदीवारी–संज्ञा स्त्री० घेरा।
चारना॰†–क्रि० स० चराना।
चारपाई–संज्ञा स्त्री० खाट।
चारबाग़–संज्ञा पुं० चौखूँटा बग़ीचा।
चारयारी–संज्ञा स्त्री० १. चार मित्रों की मंडली। २. चाँदी का एक चौकोर सिक्का जिस पर ख़लीफ़ाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है।
चारा–संज्ञा पुं० पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डंठल आदि।
संज्ञा पुं० उपाय।
चारिणी–वि० स्त्री० आचरण करने-वाली।
चारित–वि० चलाया हुआ।
चारित्र–संज्ञा पुं० १. आचार। २. संन्यास।
चारित्र्य–संज्ञा पुं० चरित्र।
चारी–वि० [स्त्री० चारिणी] १. चलने-वाला। २. आचरण करनेवाला।
संज्ञा पुं० पैदल सिपाही।
चारु–वि० सुंदर।
चारुता–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।

गुर्णोवाला।
चतुर्थ–वि० चौथा।
चतुर्थाश्रम–संज्ञा पुं० सन्यास।
चतुर्थी–संज्ञा स्त्री० १. चौथ। २. वह गंगापूजन आदि कर्म्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।
चतुर्दशी–संज्ञा स्त्री० चौदस।
चतुर्दिक्–संज्ञा पुं० चारों दिशाएँ।
क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्भुज–वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] जिसकी चार भुजाएँ हों।
संज्ञा पुं० विष्णु।
चतुर्भुजा–संज्ञा स्त्री० १. एक देवी। २. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।
चतुर्भुजी–संज्ञा पुं० एक वैष्णव संप्रदाय।
वि० चार भुजाओंवाला।
चतुर्मुख–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
वि० चार मुखवाला।
क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्युगी–संज्ञा स्त्री० चारों युगों का समय।
चतुर्वेद–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. चारों वेद।
चतुर्वेदी–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।
चतुर्व्यूह–संज्ञा पुं० १. चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २. विष्णु।
चतुष्कोण–वि० चौकोना।
चतुष्टय–संज्ञा पुं० चार की संख्या।
चतुष्पथ–संज्ञा पुं० चौराहा।
चतुष्पद–संज्ञा पुं० चौपाया।
वि० चार पदोंवाला।
चतुष्पदा–संज्ञा स्त्री० चौपैया छंद।
चतुष्पदी–संज्ञा स्त्री० १. १५ मात्राओं का चौपई छंद। २. चार पद का गीत।
चत्वर–संज्ञा पुं० १. चौमुहानी। २. चबूतरा।
चद्दर–संज्ञा स्त्री० १. चादर। २. किसी धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर पत्तर।
चनकना†–क्रि० अ० दे० "चटकना"।
चनखना–क्रि० अ० खफा होना।
चना–संज्ञा पुं० बूट।
चपकन–संज्ञा स्त्री० १. अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का वह साज़ जिसमें ताला लगाया जाता है।
चपकना–क्रि० अ० दे० "चिपकना"।
चपटना†–क्रि० अ० दे० "चिपकना"।
चपटा†–वि० दे० "चिपटा"।
चपड़ा–संज्ञा पुं० १. साफ की हुई लाख का पत्तर। २. लाल रंग का एक कीड़ा या फतिंगा।
चपत–संज्ञा पुं० १. थप्पड़। २. धक्का।
चपना–क्रि० अ० दबना।
चपनी–संज्ञा स्त्री० कटोरी।
चपरगट्टू–वि० १. चौपट। २. गुत्थमगुत्थ।
चपरना†ø–क्रि० स० दे० "चुपड़ना"।
चपरा–अव्य० झटपट।
चपरास–संज्ञा स्त्री० दफ्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी।
चपरासी–संज्ञा पुं० प्यादा।
चपल–वि० १. चंचल। २. चालाक।
चपलता–संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. धृष्टता।
चपला–वि० स्त्री० चंचला।
संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. बिजली। ३. जीभ।

चारुहासिनी–वि० स्त्री० सुंदर हँसनेवाली।
संज्ञा स्त्री० वैताली छंद का एक भेद।
चाल–संज्ञा स्त्री० १. गति। २. चलने का ढंग। ३. आचरण। ४. परिपाटी। ५. छल।
चालक–वि० चलानेवाला।
संज्ञा पुं० धूर्त।
चालचलन–संज्ञा पुं० आचरण।
चाल-ढाल–संज्ञा स्त्री० आचरण।
चालन–संज्ञा पुं० १. चलाने की क्रिया। २. गति।
संज्ञा पुं० भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है।
चालना०†–क्रि० स० १. चलाना। २. छलनी में रखकर छानना।
क्रि० अ० चलना।
चालबाज़–वि० धूर्त।
चाला–संज्ञा पुं० प्रस्थान।
चालाक–वि० १. चतुर। २. धूर्त।
चालाकी–संज्ञा स्त्री० १. चतुराई। २. धूर्तता।
चालान–संज्ञा पुं० दे० "चलान"।
चालिया–वि० दे० "चालबाज़"।
चाली–वि० चालिया।
चालीस–वि० जो गिनती में बीस और बीस हो।
चावँ चावँ–संज्ञा स्त्री० दे० "चाँयँ चाँयँ"।
चाव–संज्ञा पुं० १. प्रबल इच्छा। २. शौक।
चावल–संज्ञा पुं० १. धान के दाने की गुठली। २. भात। ३. एक रत्ती का आठवाँ भाग या उसके बराबर की तौल।
चाशनी–संज्ञा स्त्री० १. चीनी, मिस्री या गुड़ को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और मधु के समान लसीला किया हुआ रस। २. चसका।
चाष–संज्ञा पुं० १. नीलकंठ पक्षी। २. चाहा पक्षी।
चासा–संज्ञा पुं० किसान।
चाह–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. प्रेम। ३. माँग।
चाहक०–संज्ञा पुं० चाहनेवाला।
चाहत–संज्ञा स्त्री० चाह।
चाहना–क्रि० स० १. प्रेम करना। २. कोशिश करना। ३. इच्छा करना।
संज्ञा स्त्री० चाह।
चाहि०–अव्य० अपेक्षाकृत।
चाहिए–अव्य० उचित है।
चाही–वि० स्त्री० प्यारी।
चाहे–अव्य० इच्छा हो।
चिआँ–संज्ञा पुं० इमली का बीज।
चिउँटा–संज्ञा पुं० एक कीड़ा जो मीठे के पास बहुत जाता है।
चिउँटी–संज्ञा स्त्री० चींटी।
चिगना†–संज्ञा पुं० १. किसी पक्षी का विशेषतः मुरगी का छोटा बच्चा। २. छोटा बालक।
चिंघाड़–संज्ञा स्त्री० १. चिल्लाहट। २. हाथी की बोली।
चिंघाड़ना–क्रि० अ० १. चीखना। २. हाथी का बोलना।
चिंचिनी०–संज्ञा स्त्री० १. इमली का पेड़। २. इमली का फल।
चिंजा०†–संज्ञा पुं० [स्त्री० चिंजी] लड़का।
चिंत–संज्ञा स्त्री० दे० "चिंता"।
चिंतक–वि० १. चिंतन करनेवाला। २. सोचनेवाला।

चटपटा–वि० [स्त्री० चटपटी] मजेदार।
चटपटी–संज्ञा स्त्री० [वि० चटपटिया] १. शीघ्रता। २. घबराहट।
चटवाना–क्रि० स० दे० "चटाना"।
चटसार(ल)–संज्ञा स्त्री० पाठशाला।
चटाई–संज्ञा स्त्री० तृण का डासन। संज्ञा स्त्री० चाटने की क्रिया।
चटाका–संज्ञा पुं० लकड़ी या और किसी कड़ी वस्तु के ज़ोर से टूटने का शब्द।
चटाना–क्रि० स० चाटने का काम कराना।
चटापटी–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता।
चटावन–संज्ञा पुं० अन्नप्राशन।
चटोरा–वि० १. जिसे अच्छी अच्छी चीज़ें खाने की लत हो। २. लोभी।
चटोरापन–संज्ञा पुं० अच्छी अच्छी चीज़ें खाने का व्यसन।
चट्टा–वि० १. चाट पोंछकर खाया हुआ। २. समाप्त।
चट्टा–संज्ञा पुं० चटियल मैदान। संज्ञा पुं० शरीर पर कुष्ठ आदि के कारण निकला हुआ चकत्ता।
चट्टान–संज्ञा स्त्री० पहाड़ी भूमि के अंतर्गत पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा।
चट्टी–संज्ञा स्त्री० पड़ाव। संज्ञा स्त्री० स्लिपर।
चट्टू–वि० चटोरा। संज्ञा पुं० पत्थर का बड़ा खरल।
चढ़त–संज्ञा स्त्री० देवता की भेंट।
चढ़ना–क्रि० अ० १. नीचे से ऊपर को जाना। २. चढ़ाई करना। ३. तनना। ४. सवार होना। ५. क़र्ज़ होना। ६. दर्ज होना। ७. उद्वेग-जनक प्रभाव होना।
चढ़वाना–क्रि० स० चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।
चढ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर ले जानेवाली भूमि। ३. धावा।
चढ़ा-उतरी–संज्ञा स्त्री० बार बार चढ़ने उतरने की क्रिया।
चढ़ा-ऊपरी–संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।
चढ़ाचढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चढ़ा-ऊपरी"।
चढ़ाना–क्रि० स० १. चढ़ने में प्रवृत्त करना। २. ऐसा काम करना जिससे चढ़े। ३. पी जाना।
चढ़ाव–संज्ञा पुं० १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. वृद्धि।
चढ़ावा–संज्ञा पुं० १. वह गहना जो दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहनाया जाता है। २. वह सामग्री जो किसी देवता को चढ़ाई जाय। ३. दम।
चणक–संज्ञा पुं० चना।
चतुरंग–संज्ञा पुं० १. चतुरंगिणी सेना। २. शतरंज।
चतुरंगिणी–वि० स्त्री० चार अंगोंवाली।
चतुर–वि० पुं० [स्त्री० चतुरा] १. होशियार। २. धूर्त।
चतुरई–संज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई"।
चतुरता–संज्ञा स्त्री० होशियारी।
चतुरपन–संज्ञा पुं० दे० "चतुराई"।
चतुरस्र–वि० चौकोर।
चतुराई–संज्ञा स्त्री० १. होशियारी। २. धूर्तता।
चतुरानन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
चतुर्गुण–वि० १. चौगुना। २. चार

चिंतन–संज्ञा पुं० ध्यान।
चिंतना%–क्रि० स० १. ध्यान करना। २. सोचना।
संज्ञा स्त्री० १. ध्यान। २. चिंता।
चिंतनीय–वि० चिंतन या ध्यान करने योग्य।
चिंता–संज्ञा स्त्री० १. ध्यान। २. सोच।
चिंतामणि–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
चिंतित–वि० जिसे चिंता हो।
चिंत्य–वि० विचार करने योग्य।
चिंदी–संज्ञा स्त्री० टुकड़ा।
चिक–संज्ञा स्त्री० घास या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा।
संज्ञा पुं० बूचर।
संज्ञा स्त्री० झटका।
चिकट–वि० मैला कुचैला।
चिकटना–क्रि० अ० जमी हुई मैल के कारण चिपचिपा होना।
चिकन–संज्ञा पुं० महीन सूती कपड़ा जिस पर उभड़े हुए बूटे बने रहते हैं।
चिकना–वि० [स्त्री० चिकनी] जो साफ़ और बराबर हो।
चिकनाई–संज्ञा स्त्री० चिकनापन।
चिकनाना–क्रि० स० चिकना करना।
क्रि० अ० १. चिकना होना। २. मोटाना।
चिकनापन–संज्ञा पुं० चिकनाहट।
चिकनाहट–संज्ञा स्त्री० दे० "चिकनापन"।
चिकनिया–वि० छैला।
चिकरना–क्रि० अ० चीत्कार करना।
चिकारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० चिकारी] सारंगी की तरह का एक बाजा।
चिकित्सक–संज्ञा पुं० वैद्य।
चिकित्सा–संज्ञा स्त्री० [वि० चिकित्सित, चिकित्स्य] इलाज।
चिकित्सालय–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ रोगियों की दवा हो। शफ़ाख़ाना।
चिकुटी%–संज्ञा स्त्री० दे० "चिकोटी"।
चिक्कार–संज्ञा पुं० दे० "चिंघाड़"।
चिखुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "गिलहरी"।
चिचान%–संज्ञा पुं० बाज़ पक्षी।
चिचियाना†–क्रि० अ० दे० "चिल्लाना"।
चिचुकना–क्रि० अ० दे० "चुचुकना"।
चिचोड़ना†–क्रि० स० दे० "चचोड़ना"।
चिजारा–संज्ञा पुं० कारीगर।
चिट–संज्ञा स्त्री० १. काग़ज़, कपड़े आदि का टुकड़ा। २. पुरज़ा।
चिटकना–क्रि० अ० चिट चिट शब्द करना।
चिटकाना–क्रि० स० किसी सूखी हुई चीज़ को तोड़ना या तड़काना।
चिटनवीस–संज्ञा पुं० लेखक।
चिट्टा–वि० सफ़ेद।
संज्ञा पुं० झूठा बढ़ावा।
चिट्ठा–संज्ञा पुं० खाता।
चिट्ठी–संज्ञा स्त्री० १. पत्र। २. कोई काग़ज़ जिस पर कुछ लिखा हो। ३. किसी बात का आज्ञापत्र।
चिट्ठी पत्री–संज्ञा स्त्री० १. पत्र। २. पत्र-व्यवहार।
चिट्ठीरसाँ–संज्ञा पुं० डाकिया।
चिड़चिड़ा–संज्ञा पुं० दे० "चिचड़ा"।
वि० शीघ्र चिढ़नेवाला।
चिड़चिड़ाना–क्रि० अ० १. जलने

गुणोंवाला।
चतुर्थ-वि० चौथा।
चतुर्थाश्रम-संज्ञा पुं० संन्यास।
चतुर्थी-संज्ञा स्त्री० १. चौथ। २. वह गंगापूजन आदि कर्म जो विवाह के चौथे दिन होता है।
चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० चौदस।
चतुर्दिक्-संज्ञा पुं० चारों दिशाएँ। क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्भुज-वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] जिसकी चार भुजाएँ हों।
संज्ञा पुं० विष्णु।
चतुर्भुजा-संज्ञा स्त्री० १. एक देवी। २. गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति।
चतुर्भुजी-संज्ञा पुं० एक वैष्णव संप्रदाय।
वि० चार भुजाओंवाला।
चतुर्मुख-संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
वि० चार मुखवाला।
क्रि० वि० चारों ओर।
चतुर्युगी-संज्ञा स्त्री० चारों युगों का समय।
चतुर्वेद-संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. चारों वेद।
चतुर्वेदी-संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।
चतुर्व्यूह-संज्ञा पुं० १. चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह। २. विष्णु।
चतुष्कोण-वि० चौकोना।
चतुष्टय-संज्ञा पुं० चार की संख्या।
चतुष्पथ-संज्ञा पुं० चौराहा।
चतुष्पद-संज्ञा पुं० चौपाया।
वि० चार पदोंवाला।
चतुष्पदा-संज्ञा स्त्री० चौपैया छंद।
चतुष्पदी-संज्ञा स्त्री० १. १५ मात्राओं का चौपई छंद। २. चार पद का गीत।
चत्वर-संज्ञा पुं० १. चौमुहानी। २. चबूतरा।
चद्दर-संज्ञा स्त्री० १. चादर। २. किसी धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर पत्तर।
चनकना†-क्रि० अ० दे० "चटकना"।
चनखना-क्रि० अ० खफ़ा होना।
चना-संज्ञा पुं० चूट।
चपकन-संज्ञा स्त्री० १. अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का वह साज़ जिसमें ताला लगाया जाता है।
चपकना-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।
चपटना†-क्रि० अ० दे० "चिपकना"।
चपटा†-वि० दे० "चिपटा"।
चपड़ा-संज्ञा पुं० १. साफ़ की हुई लाख का पत्तर। २. लाल रंग का एक कीड़ा या फतिंगा।
चपत-संज्ञा पुं० १. थप्पड़। २. धक्का।
चपना-क्रि० अ० दबना।
चपनी-संज्ञा स्त्री० कटोरी।
चपरगट्टू-वि० १. चौपट। २. गुत्थमगुत्थ।
चपरना†ः-क्रि० स० दे० "चुपड़ना"।
चपरा-अव्य० झटपट।
चपरास-संज्ञा स्त्री० दफ़्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी।
चपरासी-संज्ञा पुं० प्यादा।
चपल-वि० १. चंचल। २. चालाक।
चपलता-संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. धृष्टता।
चपला-वि० स्त्री० चंचला।
संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. बिजली। ३. जीभ।

में चिड़चिड़ शब्द होना। २. चिढ़ना।

चिड़िया–संज्ञा स्त्री० १. पक्षी। २. ताश का एक रंग।

चिड़ियाखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान या घर जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी और पशु देखने के लिये रखे जाते हैं।

चिड़िहार†०–संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।

चिड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।

चिड़ीमार–संज्ञा पुं० बहेलिया।

चिढ़–संज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता। २. नफ़रत।

चिढ़ना–क्रि० अ० अप्रसन्न होना।

चिढ़ाना–क्रि० स० १. अप्रसन्न करना। २. किसी को कुढ़ाने के लिये मुँह बनाना, या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना।

चित्–संज्ञा स्त्री० चेतना।

चित–संज्ञा पुं० मन।

० संज्ञा पुं० चितवन।

वि० पीठ के बल पड़ा हुआ।

चितकबरा–वि० [स्त्री० चितकबरी] रंग-बिरंगा।

चितचोर–संज्ञा पुं० चित्त को चुरानेवाला। प्यारा।

चितभंग–संज्ञा पुं० ध्यान न लगना।

चितरना०–क्रि० स० चित्र बनाना।

चितला–वि० रंग-बिरंगा।

संज्ञा पुं० लखनऊ का एक प्रकार का खरबूज़ा।

चितवन–संज्ञा स्त्री० ताकने का भाव या ढंग।

चिता–संज्ञा स्त्री० चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदा जलाया जाता है।

चिताना–क्रि० स० १. सावधान करना। २. स्मरण कराना।

चितावनी–संज्ञा स्त्री० १. चिताने की क्रिया। २. वह बात जो सावधान करने के लिये कही जाय।

चितेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चितेरिन] चित्रकार।

चितौन–संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन"।

चित्त–संज्ञा पुं० मन।

चित्तविक्षेप–संज्ञा पुं० चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्तविभ्रम–संज्ञा पुं० भ्रांति।

चित्तवृत्ति–संज्ञा स्त्री० चित्त की गति।

चित्ती–संज्ञा स्त्री० छोटा धब्बा।

संज्ञा स्त्री० वह कौड़ी जिसकी पीठ चिपटी और खुरदरी होती है और जिससे जूए के दाँव फेंकते हैं।

चित्र–संज्ञा पुं० [वि० चित्रित] तसवीर।

वि० अद्भुत।

चित्रकला–संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकार–संज्ञा पुं० चित्र बनानेवाला।

चित्रकारी–संज्ञा स्त्री० चित्रविद्या।

चित्रगुप्त–संज्ञा पुं० एक यमराज जो पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्रना०–क्रि० स० चित्रित करना।

चित्रमृग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चित्तीदार हिरन। चीतल।

चित्ररथ–संज्ञा पुं० सूर्य।

चित्रलेखा–संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की क़लम या कूँची।

चित्रविचित्र–वि० रंग-बिरंगा।

चित्रविद्या–संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या।

चित्रशाला–संज्ञा स्त्री० १. वह घर जहाँ चित्र बनते हों। २. वह घर

चपलाई॰–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चंपलता"।
चपलाना॰–क्रि॰ अ॰ चलना। क्रि॰ स॰ चलाना।
चपली†–संज्ञा स्त्री॰ जूती।
चपाती–संज्ञा स्त्री॰ वह पतली रोटी जो हाथ से बेलकर बढ़ाई जाती है।
चपाना–क्रि॰ स॰ दबाने का काम कराना।
चपेट–संज्ञा स्त्री॰ १. झोंका। २. थप्पड़। ३. दबाव।
चपेटना–क्रि॰ स॰ १. दबाना। २. डाँटना।
चपेटा–संज्ञा पुं॰ दे॰ "चपेट"।
चपेरना॰–संज्ञा पुं॰ दबाना।
चप्पल–संज्ञा पुं॰ वह जूता जिसकी एड़ी पर दीवार न हो।
चप्पा–संज्ञा पुं॰ चौथा भाग।
चप्पी–संज्ञा स्त्री॰ धीरे धीरे हाथ-पैर दबाने की क्रिया।
चप्पू–संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है।
चबाना–क्रि॰ स॰ दाँतों से कुचलना।
चबूतरा–संज्ञा पुं॰ चौतरा।
चबेना–संज्ञा पुं॰ भूँजा।
चबेनी–संज्ञा स्त्री॰ जलपान का सामान।
चभोरना–क्रि॰ स॰ तर करना।
चमक–संज्ञा स्त्री॰ १. प्रकाश। २. लचक। चिक।
चमक-दमक–संज्ञा स्त्री॰ तड़क-भड़क।
चमकदार–वि॰ चमकीला।
चमकना–क्रि॰ अ॰ १. जगमगाना। २. दमकना। ३. लचक आना।
चमकाना–क्रि॰ स॰ चमकीला करना।
चमकी–संज्ञा स्त्री॰ कारचोबी में रुपहले या सुनहले तारों के छोटे छोटे गोल चिपटे टुकड़े।
चमकीला–वि॰ [स्त्री॰ चमकीली] १. चमकनेवाला। २. शानदार।
चमकाघल–संज्ञा स्त्री॰ १. चमकाने की क्रिया। २. मटकाने की क्रिया।
चमक्को–संज्ञा स्त्री॰ १. चमकने मटकने-वाली स्त्री। २. झगड़ालू स्त्री।
चमगादड़–संज्ञा पुं॰ एक उड़नेवाला बड़ा जंतु जिसके चारों पैर परदार होते हैं।
चमचम–संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की बँगला मिठाई।
चमचमाना–क्रि॰ अ॰ चमकना। क्रि॰ स॰ चमकाना।
चमचा–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ चमची] १. चम्मच। २. चिमटा।
चमड़ा–संज्ञा पुं॰ १. चर्म। त्वचा। २. खाल। ३. छाल।
चमड़ी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "चमड़ा"।
चमत्कार–संज्ञा पुं॰ [वि॰ चमत्कारी, चमत्कृत] १. आश्चर्य। २. करामात। ३. विचित्रता।
चमत्कारी–वि॰ [स्त्री॰ चमत्कारिणी] १. अद्भुत। २. चमत्कार या करा-मात दिखानेवाला।
चमत्कृत–वि॰ आश्चर्यित।
चमत्कृति–संज्ञा स्त्री॰ आश्चर्य।
चमन–संज्ञा पुं॰ १. हरी क्यारी। २. फुलवारी।
चमर–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ चमरी] चँवर। चामर।
चमरख–संज्ञा स्त्री॰ मूँज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है।
चमस–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ चमसी] चम्मच।
चमाचम–वि॰ झलक के साथ।

जहाँ चित्र रखे हों या रंग-बिरंग की सजावट हो।
चित्रसारी–संज्ञा स्त्री० वह घर जहाँ चित्र टँगे हों या दीवार पर बने हों।
चित्रांग–वि० [स्त्री० चित्रांगी] जिसके अंग पर चित्तियाँ, धारियाँ आदि हों। संज्ञा पुं० चीता।
चित्रा–संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।
चित्रिणी–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के चार भेदों में से एक।
चित्रित–वि० १. चित्र में खींचा हुआ। २. जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों।
चिथड़ा–संज्ञा पुं० लत्ता।
चिथाड़ना–क्रि० स० १. चीरना। फाड़ना। २. अपमानित करना।
चिदात्मा–संज्ञा पुं० ब्रह्म।
चिदानंद–संज्ञा पुं० ब्रह्म।
चिनक–संज्ञा स्त्री० जलन।
चिनगारी–संज्ञा स्त्री० अग्निकण।
चिनगी–संज्ञा स्त्री० १. अग्निकण। २. चालाक लड़का।
चिनिया–वि० चीन देश का।
चिनिया केला–संज्ञा पुं० छोटी जाति का एक केला।
चिनिया बदाम–संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।
चिन्मय–वि० ज्ञानमय। संज्ञा पुं० परमेश्वर।
चिन्ह०†–संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।
चिन्हाना†–क्रि० स० पहचनवाना।
चिन्हानी–संज्ञा स्त्री० १. चीन्हने की वस्तु। २. स्मारक।
चिन्हारी†–संज्ञा स्त्री० जान-पहचान।
चिपकना–क्रि० अ० सटना।
चिपकाना–क्रि० स० लिपटाना।
चिपचिपा–वि० लसदार।
चिपचिपाना–क्रि० अ० लसदार मालूम होना।
चिपटना–क्रि० अ० दे० "चिपकना"।
चिपटा–वि० जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो।
चिपड़ी, चिपरी†–संज्ञा स्त्री० गोबर के पाथे हुए चिपटे टुकड़े। उपली।
चिबुक–संज्ञा पुं० ठोढ़ी।
चिमटना–क्रि० अ० १. चिपकना। २. आलिंगन करना।
चिमटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० चिमटी] एक औज़ार जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़कर उठाते हैं, जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते।
चिमटाना–क्रि० स० १. चिपकाना। २. लिपटाना।
चिमटी–संज्ञा स्त्री० बहुत छोटा चिमटा।
चिरंजीव–वि० चिरंजीवी।
चिरंतन–वि० पुराना।
चिर–वि० बहुत दिनों तक रहनेवाला। क्रि० वि० बहुत दिनों तक।
चिरई†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।
चिरकना–क्रि० अ० थोड़ा थोड़ा मल निकालना या हगना।
चिरकाल–संज्ञा पुं० दीर्घ काल।
चिरकीन–वि० गंदा।
चिरकुट–संज्ञा पुं० चिथड़ा।
चिरचिटा–संज्ञा पुं० चिचड़ा।
चिरजीवी–वि० १. बहुत दिनों तक जीनेवाला। २. अमर।
चिरना–क्रि० अ० १. फटना। २. लकीर के रूप में घाव होना।
चिरमिटी–संज्ञा स्त्री० गुंजा।
चिरवाई–संज्ञा स्त्री० चिरवाने का भाव

चमार–संज्ञा पुं० [स्त्री० चमारिन, चमारी] एक नीच जाति जो चमड़े का काम बनाती और झाड़ू देती है।

चमारी–संज्ञा स्त्री० १. चमार की स्त्री। २. चमार का काम।

चमू–संज्ञा स्त्री० १. सेना। २. नियत संख्या की सेना जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल होते थे।

चमेली–संज्ञा स्त्री० १. एक झाड़ी या लता जो अपने सुगंधित फूलों के लिये प्रसिद्ध है। २. इस झाड़ी का फूल।

चमोटा–संज्ञा पुं० मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर रगड़कर नाई छुरे की धार तेज़ करते हैं।

चमोटी–संज्ञा स्त्री० १. चाबुक। २. चमड़े का वह टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार घिसते हैं।

चमौधा–संज्ञा पुं० चमरौधा जूता।

चम्मच–संज्ञा पुं० एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी।

चय–संज्ञा पुं० समूह।

चयन–संज्ञा पुं० संचय।

०† संज्ञा पुं० दे० "चैन"।

चर–संज्ञा पुं० १. जासूस। २. दूत। ३. वह जो चले।

वि० १. आप से आप चलनेवाला। २. अस्थिर।

चरक–संज्ञा पुं० १. दूत। २. जासूस। ३. पथिक।

चरकटा–संज्ञा पुं० चारा काटकर लानेवाला आदमी।

चरका–संज्ञा पुं० १. ज़ख्म। २. धोखा।

चरख–संज्ञा पुं० १. चाक। २. सूत कातने का चरखा।

चरखा–संज्ञा पुं० १. घूमनेवाला गोल चक्कर। २. रहट। ३. झगड़े-बखेड़े या झंझट का काम।

चरखी–संज्ञा स्त्री० १. पहिए की तरह घूमनेवाली कोई वस्तु। २. छोटा चरखा। ३. घिरनी।

चरचना–क्रि० स० १. लेपना। २. भाँपना।

चरचराना–क्रि० अ० १. चर चर शब्द के साथ टूटना या जलना। २. चर्राना।

क्रि० स० चर चर शब्द के साथ तोड़ना।

चरचा–संज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा"।

चरचारी०–संज्ञा पुं० १. चर्चा चलानेवाला। २. निंदक।

चरजना०–क्रि० अ० १. बहकाना। २. अनुमान करना।

चरण–संज्ञा पुं० १. पैर। २. किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद।

चरणदासी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. जूता।

चरणपादुका–संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ।

चरणपीठ–संज्ञा पुं० चरणपादुका।

चरणामृत–संज्ञा पुं० १. वह पानी जिसमें किसी महात्मा या बड़े के चरण धोए गए हों। पादोदक। २. एक में मिला हुआ दूध, दही, घी, शक्कर और शहद जिसमें किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो।

चरणोदक–संज्ञा पुं० चरणामृत।

चरता–संज्ञा स्त्री० १. चर होने या चलने का भाव। २. पृथ्वी।

चरन–संज्ञा पुं० दे० "चरण"।

चरना–क्रि० स० पशुओं का घूम घूमकर घास चारा आदि खाना।

क्रि० अ० घूमना फिरना।

कार्य या मज़दूरी।
चिरधाना–क्रि० स० चीरने का काम कराना।
चिरहटा†–संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।
चिराई–संज्ञा स्त्री० चीरने का भाव, क्रिया या मज़दूरी।
चिराग़–संज्ञा पुं० दीपक।
चिराना–क्रि० स० फड़वाना।
वि० पुराना।
चिरायता–संज्ञा पुं० एक पौधा जो बहुत कड़वा होता है और दवा के काम में आता है।
चिरायु–वि० बड़ी उम्रवाला।
चिरिया†०–संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया"।
चिरिहार–संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार"।
चिरौंजी–संज्ञा स्त्री० पियाल वृक्ष के फलों के बीज की गिरी।
चिलक–संज्ञा स्त्री० १. आभा। २. टीस।
चिलकना–क्रि० अ० १ चमचमाना। २. रह रहकर दर्द उठना।
चिलकाना†–क्रि० स० चमकाना।
चिलगोज़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मेवा।
चिलबिला, चिलबिल्ला–वि० [स्त्री० चिलबिल्ली] चंचल।
चिलम–संज्ञा स्त्री० कटोरी के आकार का नलीदार मिट्टी का एक बरतन जिस पर तंबाकू जलाकर धुआँ पीते हैं।
चिलमची–संज्ञा स्त्री० देग के आकार का एक बरतन जिसमें हाथ धोते और कुल्ली आदि करते हैं।
चिल्लड़–संज्ञा पुं० जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफ़ेद कीड़ा।
चिल्ल-पों–संज्ञा स्त्री० शोर-गुल।
चिल्ला–संज्ञा पुं० चालीस दिन का समय।
संज्ञा पुं० १. एक जंगली पेड़। २. उड़द या मूँग आदि की घी चुपड़कर सेंकी हुई रोटी।
चिल्लाना–क्रि० अ० ज़ोर से बोलना।
चिल्लाहट–संज्ञा स्त्री० १. चिल्लाने का भाव। २. हल्ला।
चिहुँकना०†–क्रि० अ० दे० "चौंकना"।
चिहुँटना०–क्रि० स० १. चुटकी काटना। २. चिपटना।
चिहुँटी–संज्ञा स्त्री० चुटकी।
चिह्न–संज्ञा पुं० निशान।
चिह्नित–वि० चिह्न किया हुआ।
चीं, चींचीं–संज्ञा स्त्री० पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द।
चीं चपड़–संज्ञा स्त्री० विरोध में कुछ बोलना।
चींटा–संज्ञा पुं० दे० "चिउँटा"।
चीक–संज्ञा स्त्री० बहुत ज़ोर से चिल्लाने का शब्द।
चीकट–संज्ञा पुं० तलछट।
वि० बहुत मैला।
चीख़–संज्ञा स्त्री० दे० "चीक"।
चीखना–क्रि० स० स्वाद जानने के लिये, थोड़ी मात्रा में खाना।
चीज़–संज्ञा स्त्री० १. वस्तु। २. महत्त्व की वस्तु।
चीठी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चिट्ठी"।
चीढ़–संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा पेड़।
चीतना–क्रि० स० [वि० चीता] १. सोचना। २. स्मरण करना।
क्रि० स० चित्रित करना।

चरनी–संज्ञा स्त्री० चरागाह।
चरपरा–वि० [स्त्री० चरपरी] झालदार।
चरपराहट–संज्ञा स्त्री० १. स्वाद की तीक्ष्णता। २. घाव आदि की जलन।
चरफराना‡–क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
चरबाँक, चरबाक–वि० १. चतुर। २. निडर।
चरबी–संज्ञा स्त्री० सफेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ जो प्राणियों के शरीर में और बहुत से पौधों और वृक्षों में भी पाया जाता है।
चरम–वि० अंतिम।
चरमर–संज्ञा पुं० तनी या चीमड़ वस्तु के दबने या मुड़ने का शब्द।
चरमराना–क्रि० अ० चरमर शब्द होना।
क्रि० स० चरमर शब्द उत्पन्न करना।
चरवाई–संज्ञा स्त्री० १. चराने का काम। २. चराने की मज़दूरी।
चरवाना–क्रि० स० चराने का काम दूसरे से कराना।
चरवाहा–संज्ञा पुं० चरानेवाला।
चरवाही–संज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई"।
चरवैया‡–संज्ञा पुं० १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।
चरस–संज्ञा पुं० १. पुर। मोट। २. गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद या चेप, जिसका धुआँ नशे के लिये चिलम पर पीते हैं।
संज्ञा पुं० वन-मोर।
चरसा–संज्ञा पुं० १. चमड़े का बना हुआ बड़ा थैला। २. मोट।
चरसी–संज्ञा पुं० १. चरस द्वारा खेत सींचनेवाला। २. वह जो चरस पीता हो।
चराई–संज्ञा स्त्री० १. चरने का काम। २. चराने का काम या मज़दूरी।
चरागाह–संज्ञा पुं० वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हों।
चराचर–वि० १. जड़ और चेतन। २. जगत्।
चराना–क्रि० स० १. पशुओं को चारा खिलाने के लिये खेतों या मैदानों में ले जाना। २. बातों में बहलाना।
चरिंदा–संज्ञा पुं० पशु।
चरित–संज्ञा पुं० १. आचरण। २. कृत्य। ३. जीवनी।
चरितनायक–संज्ञा पुं० वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक लिखी जाय।
चरितार्थ–वि० १. कृतार्थ। २. जो ठीक ठीक घटे।
चरित्तर–संज्ञा पुं० १. धूर्तता की चाल। २. नखरेबाज़ी।
चरित्र–संज्ञा पुं० १. स्वभाव। २. करनी।
चरित्रवान्–वि० [स्त्री० चरित्रवती] अच्छे चरित्रवाला।
चरी–संज्ञा स्त्री० पशुओं के चरने की ज़मीन।
चरु–संज्ञा पुं० [वि० चरव्य] हवन या यज्ञ की आहुति के लिये पकाया हुआ अन्न।
चरखला‡–संज्ञा पुं० सूत कातने का चरखा।
चरेरा–वि० [स्त्री० चरेरी] कर्कश।
चरैया‡–संज्ञा पुं० १. चरानेवाला। २. चरनेवाला।
चर्चक–संज्ञा पुं० चर्चा करनेवाला।
चर्चन–संज्ञा पुं० १. चर्चा। २. लेपन।

चीतल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हिरन जिसके शरीर पर सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं।
चीता–संज्ञा पुं० बाघ की जाति का एक प्रसिद्ध हिंसक पशु।
† संज्ञा पुं० चित्त।
वि० सोचा या विचारा हुआ।
चीत्कार–संज्ञा पुं० चिल्लाहट।
चीथड़ा–संज्ञा पुं० दे० "चिथड़ा"।
चीथना–क्रि० स० टुकड़े टुकड़े करना।
चीन–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध देश।
चीनना†–क्रि० स० दे० "चीन्हना"।
चीना–संज्ञा पुं० चीन देशवासी।
वि० चीन देश का।
चीना बदाम–संज्ञा पुं० दे० "मूँगफली"।
चीनिया–वि० चीन देश का।
चीनी–संज्ञा स्त्री० शक्कर।
वि० चीन देश का।
चीन्हा–संज्ञा पुं० दे० "चिह्न"।
चीन्हना–क्रि० स० पहचानना।
चीमड़–वि० जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।
चीर्यां–संज्ञा पुं० दे० "चिर्यां"।
चीर–संज्ञा पुं० १. वस्त्र। २. चिथड़ा।
संज्ञा स्त्री० चीरने का भाव या क्रिया।
चीरना–क्रि० स० विदीर्ण करना।
चीरफाड़–संज्ञा स्त्री० १. चीरने-फाड़ने का काम या भाव। २. शस्त्र-चिकित्सा।
चील–संज्ञा स्त्री० गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया।
चीलर–संज्ञा पुं० दे० "चिल्लड़"।
चील्ह–संज्ञा स्त्री० दे० "चील"।
चीस–संज्ञा स्त्री० दे० "टीस"।
चुंगल–संज्ञा पुं० चंगुल।
चुंगी–संज्ञा स्त्री० १. चुटकी भर चीज़। २. वह महसूल जो शहर के भीतर आनेवाले बाहरी माल पर लगता है।
चुंडित०–वि० चुटियावाला।
चुंदी–संज्ञा स्त्री० चुटैया।
चुँधलाना–क्रि० अ० चकाचौंध होना।
चुंधा–वि० [स्त्री० चुंधी] १. जिसे सुझाई न पड़े। २. छोटी छोटी आँखोंवाला।
चुँधियाना–क्रि० अ० दे० "चुँधलाना"।
चुंबक–संज्ञा पुं० १. वह जो चुंबन करे। २. कामुक। ३. एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति होती है।
चुंबन–संज्ञा पुं० [वि० चुंबनीय, चुंबित] प्रेम से होठों से (किसी के) गाल आदि अंगों का स्पर्श।
चुंबना–क्रि० स० दे० "चूमना"।
चुंबित–वि० चूमा हुआ।
चुआई–संज्ञा स्त्री० चुआने या टपकाने की क्रिया या भाव।
चुआन–संज्ञा स्त्री० खाई।
चुआना–क्रि० स० टपकाना।
चुकंदर–संज्ञा पुं० गाजर की तरह की एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।
चुक–संज्ञा पुं० दे० "चूक"।
चुकता–वि० अदा।
चुकती–वि० दे० "चुकता"।
चुकना–क्रि० अ० १. समाप्त होना। २. निबटना। ॐ३. भूल करना।
चुकाई–संज्ञा स्त्री० चुकने या चुकता होने का भाव।

चुकाना–क्रि० स० अदा करना।
चुक्कड़–संज्ञा पुं० पुरवा।
चुग़द–संज्ञा पुं० १. उल्लू पक्षी। २. मूर्ख।
चुगना–क्रि० स० चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना।
चुग़लख़ोर–संज्ञा पुं० पीठ पीछे शिकायत करनेवाला।
चुग़ली–संज्ञा स्त्री० दूसरे की निंदा जो उसकी अनुपस्थिति में की जाय।
चुगाई–संज्ञा स्त्री० चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।
चुगाना–क्रि० स० चिड़ियों को दाना या चारा डालना।
चुचकारना–क्रि० स० चुमकारना।
चुचकारी–संज्ञा स्त्री० चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव।
चुचाना–क्रि० अ० निचुड़ना।
चुटका†–संज्ञा पुं० कोड़ा।
संज्ञा स्त्री० चुटकी।
चुटकना–क्रि० स० कोड़ा या चाबुक मारना।
क्रि० स० चुटकी से तोड़ना।
चुटकी–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या छेने आदि के लिये अँगूठे और पास की उँगली का मेल।
चुटकुला–संज्ञा पुं० १. मज़ेदार बात। २. लटका।
चुटफुट†–संज्ञा स्त्री० फुटकर वस्तु।
चुटिया–संज्ञा स्त्री० शिखा। चुंदी।
चुटीला–वि० जिसे चोट या घाव लगा हो।
संज्ञा पुं० बगल बाल की पतली चोटी।
वि० सिरे का।
चुटैल–वि० घायल।
चुड़िहारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ी बेचनेवाला।
चुड़ैल–संज्ञा स्त्री० १. भुतनी। डायन। २. दुष्टा।
चुनचुनाना–क्रि० अ० कुछ जलन लिए हुए चुभने की सी पीड़ा होना।
चुनन–संज्ञा स्त्री० शिकन।
चुनना–क्रि० स० १. छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना। २. छाँट छाँटकर अलग करना। ३. सजाना। ४. दीवार उठाना। ५. कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना।
चुनरी–संज्ञा स्त्री० वह रंगीन कपड़ा जिसके बीच बीच में बुँदकियाँ होती हैं।
चुनवाना–क्रि० स० दे० "चुनाना"।
चुनाई–संज्ञा स्त्री० १. चुनने की क्रिया या भाव। २. दीवार की जोड़ाई या उसका ढंग। ३. चुनने की मज़दूरी।
चुनाना–क्रि० स० चुनने का काम दूसरे से कराना।
चुनाव–संज्ञा पुं० १. चुनने का काम। २. बहुतों में से कुछ को किसी कार्य्य के लिये पसंद या नियुक्त करना।
चुनिंदा–वि० १. चुना हुआ। २. बढ़िया।
चुनी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुन्नी"।
चुनौटी–संज्ञा स्त्री० चूना रखने की डिबिया।
चुनौती–संज्ञा स्त्री० १. उत्तेजना। २. ललकार।
चुन्नी–संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा।
चुप–वि० मौन।
संज्ञा स्त्री० न बोलना।
चुपका–वि० [स्त्री० चुपकी] मौन।

छाँह–संज्ञा स्त्री० १. छाया। २. शरण।
छाक–संज्ञा स्त्री० तृप्ति।
छाकना‡–क्रि० अ० अघाना।
क्रि० अ० हैरान होना।
छाग–संज्ञा पुं० बकरा।
छागल–संज्ञा पुं० १. बकरा। २. बकरे की खाल की बनी हुई चीज़।
संज्ञा स्त्री० झाँझन।
छाछ–संज्ञा स्त्री० मट्ठा।
छाज–संज्ञा पुं० सूप।
छाजन–संज्ञा पुं० वस्त्र।
संज्ञा स्त्री० १. छप्पर। २. छवाई।
छाजना–क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा देना।
छात–संज्ञा पुं० दे० "छाता"।
छाता–संज्ञा पुं० बड़ी छतरी।
छाती–संज्ञा स्त्री० १. सीना। वक्षःस्थल। २. कलेजा। ३. स्तन। ४. हिम्मत।
छात्र–संज्ञा पुं० शिष्य।
छात्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास की दशा में सहायतार्थ मिला करे।
छात्रालय–संज्ञा पुं० विद्यार्थियों के रहने का स्थान। बोर्डिंगहाउस।
छादन–संज्ञा पुं० [वि० छादित] १. छाने या ढकने का काम। २. आवरण।
छान–संज्ञा स्त्री० छप्पर।
छानना–क्रि० स० १. चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिसमें उसका कूड़ा-करकट निकल जाय। २. बिलगाना। ३. ढूँढ़ना।
छानबीन–संज्ञा स्त्री० जाँच-पड़ताल।
छाना–क्रि० स० १. आच्छादित करना। २. बिछाना।
क्रि० अ० फैलना।
छाप–संज्ञा स्त्री० वह चिह्न जो छापने में पड़ता है।
छापना–क्रि० स० १. स्याही आदि पुती वस्तु को दूसरी वस्तु पर रखकर उसकी आकृति चिह्नित करना। २. मुद्रित करना।
छापा–संज्ञा पुं० १. साँचा जिस पर गीली स्याही आदि पोतकर उस पर खुदे चिह्नों की आकृति किसी वस्तु पर उतारते हैं। २. आक्रमण।
छापाखाना–संज्ञा पुं० मुद्रालय। प्रेस।
छाया–संज्ञा स्त्री० १. साया। २. परछाईं।
छायापथ–संज्ञा पुं० आकाश-गंगा।
छार–संज्ञा पुं० १. खारी नमक। २. राख।
छाल–संज्ञा स्त्री० वल्कल।
छालना–क्रि० अ० छानना।
छाला–संज्ञा पुं० १. छाल या चमड़ा। २. फफोला।
छालिया, छाली–संज्ञा स्त्री० सुपारी।
छावनी–संज्ञा स्त्री० १. छप्पर। २. डेरा। ३. सेना के ठहरने का स्थान।
छावा–संज्ञा पुं० बच्चा।
छिंडाना–क्रि० स० छीनना।
छि–अव्य० घृणा, तिरस्कार या अरुचि-सूचक शब्द।
छिकनी–संज्ञा स्त्री० नकछिकनी घास जिसके फूल सूँघने से छींक आती है।
छिगुनी–संज्ञा स्त्री० सबसे छोटी उँगली।
छिछकारना‡–क्रि० स० दे० "छिड़कना"।

चुपड़ना–क्रि॰ स॰ पोतना।
चुपाना|☆–क्रि॰ अ॰ चुप हो रहना।
चुप्पा–वि॰ [स्त्री॰ चुप्पी] जो बहुत कम बोले।
चुप्पी–संज्ञा स्त्री॰ मौन।
चुबलाना–क्रि॰ स॰ स्वाद लेने के लिये मुँह में रखकर इधर-उधर डुलाना।
चुभकना–क्रि॰ अ॰ गोता खाना।
चुभकी–संज्ञा स्त्री॰ डुब्बी।
चुभना–क्रि॰ अ॰ गड़ना।
चुभलाना–क्रि॰ स॰ दे॰ "चुभलाना"।
चुभाना, चुभोना–क्रि॰ स॰ धँसाना।
चुमकार–संज्ञा स्त्री॰ पुचकार।
चुमकारना–क्रि॰ स॰ पुचकारना।
चुम्मा|–संज्ञा पुं॰ दे॰ "चूमा"।
चुर–संज्ञा पुं॰ माँद।
☆ वि॰ बहुत।
चुरकी|–संज्ञा स्त्री॰ चुटिया।
चुरकुट, चुरकुस–वि॰ चकनाचूर।
चुरना|–क्रि॰ अ॰ सीझना।
चुरमुर–संज्ञा पुं॰ खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द।
चुरमुरा–वि॰ करारा।
चुरमुराना–क्रि॰ अ॰ चुरमुर शब्द करके टूटना।
क्रि॰ स॰ चुरमुर शब्द करके तोड़ना।
चुरवाना–क्रि॰ स॰ पकाने का काम कराना।
चुराना–क्रि॰ स॰ १. चोरी करना। २. छिपाना।
क्रि॰ स॰ सिझाना।
चुरुट–संज्ञा पुं॰ सिगार।
चुल–संज्ञा स्त्री॰ खुजलाहट।
चुलचुलाना–क्रि॰ अ॰ खुजलाहट होना।
चुलचुली–संज्ञा स्त्री॰ खुजलाहट।
चुलबुला–वि॰ [स्त्री॰ चुलबुली] चंचल।
चुलबुलाना–क्रि॰ अ॰ १. चुलबुल करना। २. चंचल होना।
चुलबुलापन–संज्ञा पुं॰ चंचलता।
चुलबुलाहट–संज्ञा स्त्री॰ चंचलता।
चुल्लू–संज्ञा पुं॰ गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें।
चुवाना☆–क्रि॰ स॰ टपकाना।
चुसकी–संज्ञा स्त्री॰ घूँट।
चुसना–क्रि॰ अ॰ चूसा जाना।
चुसनी–संज्ञा स्त्री॰ १. बच्चों का एक खिलौना जिसे वे मुँह में डालकर चूसते हैं। २. दूध पिलाने की शीशी।
चुसाना–क्रि॰ स॰ चूसने का काम दूसरे से कराना।
चुस्त–वि॰ १. कसा हुआ। २. फुरतीला।
चुस्ती–संज्ञा स्त्री॰ १. फुरती। २. मज़बूती।
चुहटी–संज्ञा स्त्री॰ चुटकी।
चुहचुहा–वि॰ [स्त्री॰ चुहचुही] १. चुहचुहाता हुआ। २. रसीला।
चुहचुहाता–वि॰ रँगीला।
चुहचुहाना–क्रि॰ अ॰ चहचहाना।
चुहटना–क्रि॰ स॰ रौंदना।
चुहल–संज्ञा स्त्री॰ हँसी।
चुहलबाज़–वि॰ दिल्लगीबाज़।
चुहिया–संज्ञा स्त्री॰ चूहा का स्त्री॰ और अल्पा॰ रूप।
चुहुँटना|☆–क्रि॰ स॰ दे॰ "चिमटना"।
चूँ–संज्ञा पुं॰ चूँ शब्द।
चूँकि–क्रि॰ वि॰ क्योंकि।

छिछला–वि० [स्त्री० छिछली] उथला।
छिछोरपन, छिछोरापन–संज्ञा पुं० नीचता।
छिछोरा–वि० [स्त्री० छिछोरी] ओछा।
छिटकना–क्रि० अ० चारों ओर बिखरना।
छिटकाना–क्रि० स० चारों ओर फैलाना।
छिड़कना–क्रि० स० द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे फैलकर इधर उधर पड़ें।
छिड़कवाना–क्रि० स० छिड़कने का काम दूसरे से कराना।
छिड़काई–संज्ञा स्त्री० १. छिड़काव। २. छिड़कने की मज़दूरी।
छिड़काव–संज्ञा पुं० पानी आदि छिड़कने की क्रिया।
छिड़ना–क्रि० अ० आरंभ होना।
छितराना–क्रि० अ० बिखरना।
क्रि० स० बिखराना।
छिदना–क्रि० अ० १. सूराखदार होना। २. चुभना।
छिदाना–क्रि० स० १. छेद कराना। २. चुभवाना।
छिद्र–संज्ञा पुं० [वि० छिद्रित] १. छेद। २. दोष।
छिद्रान्वेषण–संज्ञा पुं० [वि० छिद्रान्वेषी] दोष ढूँढ़ना।
छिद्रान्वेषी–वि० [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] पराया दोष ढूँढ़नेवाला।
छिन☆–संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।
छिनक☆–क्रि० वि० एक क्षण।
छिनकना–क्रि० स० नाक का मल ज़ोर से साँस बाहर करके निकालना।
छिनछवि☆–संज्ञा स्त्री० बिजली
छिनना–क्रि० अ० छीन लिया जाना।
क्रि० स० हरण करना।
छिनाल–वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।
छिनाला–संज्ञा पुं० व्यभिचार।
छिन्न–वि० खंडित।
छिन्न भिन्न–वि० १. फटा कुटा। २. तितर बितर।
छिपकली–संज्ञा स्त्री० बिस्तुइया।
छिपना–क्रि० अ० ओट में होना।
छिपाना–क्रि० स० [संज्ञा छिपाव] १. आवरण या ओट में करना। २. गुप्त रखना।
छिपाव–संज्ञा पुं० छिपाने का भाव।
छिमा☆†–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।
छिया–संज्ञा स्त्री० १. घृणित वस्तु। २. मल।
वि० मैला।
संज्ञा स्त्री० छोकरी।
छिरकना☆–क्रि० स० दे० "छिड़कना"।
छिलका–संज्ञा पुं० एक परत की खोल जो फलों आदि पर होती है।
छिलना–क्रि० अ० १. छिलके का अलग होना। २. ऊपरी चमड़े का कुछ भाग कटकर अलग हो जाना।
छींक–संज्ञा स्त्री० नाक से शब्द के साथ सहसा निकलनेवाला वायु का झोंका या स्फोट।
छींकना–क्रि० अ० नाक से वेग के साथ वायु निकालना।
छींट–संज्ञा स्त्री० १. जलकण। २. वह कपड़ा जिस पर रंग बिरंग के बेल-बूटे छपे हों।
छींटना–क्रि० स० दे० "छितराना"।
छींटा–संज्ञा पुं० १. द्रव पदार्थ की

चूँदरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।
चूक–संज्ञा स्त्री० भूल।
संज्ञा पुं० खटाई।
चूकना–क्रि० अ० १. भूल करना। २. सुअवसर खो देना।
चूची–संज्ञा स्त्री० स्तन।
चूड़ांत–वि० चरम सीमा।
क्रि० वि० अत्यंत।
चूड़ा–संज्ञा स्त्री० १. चोटी। २. बाँह में पहनने का एक अलंकार।
संज्ञा पुं० कड़ा।
चूड़ाकरण–संज्ञा पुं० मुंडन।
चूड़ाकर्म–संज्ञा पुं० चूड़ाकरण।
चूड़ामणि–संज्ञा पुं० १. सिर में पहनने का शीशफूल नाम का गहना। २. सबमें श्रेष्ठ।
चूड़ी–संज्ञा स्त्री० १. कोई मंडलाकार पदार्थ। २. हाथ में पहनने का एक वृत्ताकार गहना।
चूड़ीदार–वि० जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों।
चून–संज्ञा पुं० आटा।
चूनर, चूनरी–संज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।
चूना–संज्ञा पुं० एक प्रकार का तीक्ष्ण और सफ़ेद क्षारभस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूँककर बनाया जाता है।
क्रि० अ० टपकना।
चूनादानी–संज्ञा स्त्री० चुनौटी।
चूनी†–संज्ञा स्त्री० अन्नकण।
चूमना–क्रि० स० चुम्मा लेना। बोसा लेना।
चूमा–संज्ञा पुं० चुम्मा।
चूर–संज्ञा पुं० बुकनी।
वि० १. तन्मय। २. नशे में बहुत बदमस्त।
चूरन–संज्ञा पुं० दे० "चूर्ण"।
चूरना†ः–क्रि० स० १. टुकड़े टुकड़े करना। २. तोड़ना।
चूरमा–संज्ञा पुं० रोटी या पूरी को चूर चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।
चूरा–संज्ञा पुं० चूर्ण।
चूर्ण–संज्ञा पुं० १. बुकनी। २. चूरन।
वि० नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।
चूर्णा–संज्ञा स्त्री० आर्या छंद का दसवाँ भेद।
चूर्णित–वि० चूर्ण किया हुआ।
चूल–संज्ञा पुं० १. शिखा। २. बाल।
चूल्हा–संज्ञा पुं० मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिस पर, नीचे आग जलाकर, भोजन पकाया जाता है।
चूषण–संज्ञा पुं० चूसने की क्रिया।
चूष्य–वि० चूसने के योग्य।
चूसना–क्रि० स० १. जीभ और होंठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना। २. किसी चीज़ का सार भाग ले लेना।
चूहड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चूहड़ी] चांडाल।
चूहर–संज्ञा पुं० दे० "चूहड़ा"।
चूहा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० चुहिया, चूही आदि] मूसा।
चें–संज्ञा स्त्री० चिड़ियों के बोलने का शब्द।
चें चें–संज्ञा स्त्री० १. चिड़ियों या बच्चों के बोलने का शब्द। २. व्यर्थ की बकवाद।

महीन बूँद जो ज़ोर से पड़ने से इधर उधर गिरे। २. छोटा दाग़। ३. चंद्र की एक मात्रा।
छी–अव्य० घृणा-सूचक शब्द।
छीका–संज्ञा पुं० सिकहर।
छीछालेदर–संज्ञा स्त्री० दुर्दशा।
छीज–संज्ञा स्त्री० घाटा।
छीजना–क्रि० अ० घटना।
छीति०–संज्ञा स्त्री० हानि।
छीती छान–वि० तितर बितर।
छीन–वि० दे० "क्षीण"।
छीनना–क्रि० स० दूसरे की वस्तु ज़बरदस्ती ले लेना।
छीना-झपटी–संज्ञा स्त्री० छीनकर किसी वस्तु को ले लेना।
छीप–वि० तेज़।
संज्ञा स्त्री० छाप।
छीमी†–संज्ञा स्त्री० फली।
छीर–संज्ञा पुं० दे० "क्षीर"।
संज्ञा स्त्री० छोर।
छीलना–क्रि० अ० १. छिलका या छाल उतारना। २. जमी हुई वस्तु को खुरचकर अलग करना।
छीलर–संज्ञा पुं० तलैया।
छुआना†–क्रि० स० दे० "छुलाना"।
छुआछूत–संज्ञा स्त्री० १. अस्पृश्य स्पर्श। २. छूत-छात का विचार।
छुईमुई–संज्ञा स्त्री० लज्जावंती।
छुच्छी–संज्ञा स्त्री० पतली पोली नली।
छुट०–अव्य० छोड़कर।
छुटकाना०–क्रि० स० १. छोड़ना। २. साथ न लेना। ३. छुटकारा देना।
छुटकारा–संज्ञा पुं० रिहाई।
छुटना०–क्रि० अ० दे० "छूटना"।
छुटपन†–संज्ञा पुं० १. छोटाई। २. बचपन।
छुटाना†–क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।
छुट्टा–वि० [स्त्री० छुट्टी] जो बँधा न हो।
छुट्टी–संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। २. अवकाश।
छुड़वाना–क्रि० स० छोड़ने का काम दूसरे से कराना।
छुड़ाना–क्रि० स० १. बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक् करना। २. हटाना। ३. छोड़ने का काम कराना।
छुत्०–संज्ञा स्त्री० भूख।
छुतिहा†–वि० १. छूतवाला। २. कलंकित।
छुद्र–संज्ञा पुं० दे० "क्षुद्र"।
छुधा–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।
छुपना–क्रि० अ० दे० "छिपना"।
छुभित०–वि० विचलित।
छुभिताना०–क्रि० अ० चंचल होना।
छुरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० छुरी] १. एक हथियार। २. उस्तरा।
छुरी–संज्ञा स्त्री० चाकू।
छुलाना–क्रि० स० स्पर्श कराना।
छुवाना†–क्रि० स० दे० "छुलाना"।
छुहना०–क्रि० अ० छू जाना।
क्रि० स० दे० "छूना"।
छुहारा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खजूर।
छूँछा–वि० [स्त्री० छूँछी] खाली।
छू–संज्ञा पुं० मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।
छूट–संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। २. वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय।
छूटना–क्रि० अ० १. बँधी, फँसी या पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना।

चेंटुआ†–संज्ञा पुं० चिड़िया का बच्चा।
चें पें–संज्ञा स्त्री० चिल्लाहट।
चेकितान–संज्ञा पुं० महादेव।
चेचक–संज्ञा स्त्री० शीतला रोग।
चेट–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेटी या चेटिका] १. दास। २. भाँड़।
चेटक–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेटकी] सेवक।
चेटकनी☆–संज्ञा स्त्री० दे० "चेटक"।
चेटकी–संज्ञा पुं० जादूगर।
चेटी–संज्ञा स्त्री० दासी।
चेत्–अव्य० यदि।
चेत–संज्ञा पुं० १. होश। २. सुध।
चेतन–वि० जिसमें चेतना हो।
चेतनता–संज्ञा स्त्री० चैतन्य।
चेतना–संज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। २. होश।
क्रि० अ० होश में आना।
क्रि० स० विचारना।
चेतावनी–संज्ञा स्त्री० सतर्क होने की सूचना।
चेर, चेरा†☆–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेरी] १. नौकर। २. चेला।
चेराई†☆–संज्ञा स्त्री० दासत्व।
चेरी†☆–संज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री०।
चेल–संज्ञा पुं० कपड़ा।
चेला–संज्ञा पुं० [स्त्री० चेलिन, चेली] १. शिष्य। २. विद्यार्थी।
चेलिन, चेली–संज्ञा स्त्री० "चेला" का स्त्री० रूप।
चेष्टा–संज्ञा स्त्री० कोशिश।
चेहरा–संज्ञा पुं० १. मुखड़ा। २. किसी चीज़ का अगला भाग।
चैत–संज्ञा पुं० फागुन के बाद और बैसाख से पहले का महीना।
चैतन्य–संज्ञा पुं० १. चेतन आत्मा। २. ज्ञान।
चैती–संज्ञा स्त्री० [हिं० चैत+ई (प्रत्य०)] १. रब्बी। २. एक चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।
वि० चैत का।
चैत्य–संज्ञा पुं० १. मकान। २. मंदिर।
चैत्र–संज्ञा पुं० चैत।
चैत्ररथ–संज्ञा पुं० कुबेर के बाग़ का नाम।
चैन–संज्ञा पुं० आराम।
चैल–संज्ञा पुं० कपड़ा।
चैला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० चैली] कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा जो जलाने के काम में आता है।
चोंगा–संज्ञा पुं० काग़ज़, टीन आदि की बनी हुई नली।
चोंच–संज्ञा स्त्री० टोंट।
चोंडा–संज्ञा पुं० सिंचाई के लिये खोदा हुआ छोटा कुआँ।
चोंथ–संज्ञा पुं० उतने गोबर का ढेर जितना एक बार गिरे।
चोंथना†–क्रि० स० किसी चीज़ में से उसका कुछ अंश बुरी तरह नोचना।
चोंधर–वि० १. जिसकी आँखें बहुत छोटी हों। २. मूर्ख।
चोकर–संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बच जाता है।
चोख†☆–संज्ञा स्त्री० तेज़ी।
चोखा–वि० १. खरा। २. धारदार।
संज्ञा पुं० भरता।
चोगा–संज्ञा पुं० पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा।

२. बिछुड़ना। ३. शेष रहना। ४. बरखास्त होना।
छूत–संज्ञा स्त्री० १. संसर्ग। २. अस्पृश्य का संसर्ग। ३. अशुचि वस्तु के छूने का दोष या दूषण।
छूना–क्रि० अ० स्पर्श होना।
क्रि० स० स्पर्श करना।
छेंकना–क्रि० स० १. जगह लेना। २. रोकना।
छेक–संज्ञा पुं० १. छेद। २. कटाव।
छेकानुप्रास–संज्ञा पुं० वह अनुप्रास जिसमें वर्णों का सादृश्य एक ही बार हो।
छेटा†–संज्ञा स्त्री० बाधा।
छेड़–संज्ञा स्त्री० १. तंग करने की क्रिया। २. हँसी ठठोली।
छेड़ना–क्रि० स० १. कोंचना। २. उठाना।
छेत्र*†–संज्ञा पुं० दे० "क्षेत्र"।
छेद–संज्ञा पुं० छेदन।
संज्ञा पुं० सूराख।
छेदक–वि० छेदने या काटनेवाला।
छेदन–संज्ञा पुं० चीर-फाड़।
छेदना–क्रि० स० बेधना।
छेना–संज्ञा पुं० फटे दूध का खोया।
छेनी–संज्ञा स्त्री० टाँकी।
छेम*†–संज्ञा पुं० दे० "क्षेम"।
छेरी–संज्ञा स्त्री० बकरी।
छेव–संज्ञा पुं० १. ज़ख्म। † २. होनहार दुःख।
संज्ञा स्त्री० दे० "टेव"।
छेवना*–संज्ञा स्त्री० ताड़ी।
क्रि० स० काटना।
*क्रि० स० फेंकना।
छै–वि० दे० "छः"।
*संज्ञा स्त्री० दे० "क्षय"।

छैया†*–संज्ञा पुं० बच्चा।
छैल*–संज्ञा पुं० दे० "छैला"।
छैल चिकनियाँ–संज्ञा पुं० शौकीन।
छैल छबीला–संज्ञा पुं० बाँका।
छैला–संज्ञा पुं० बाँका।
छोड़ा*–संज्ञा पुं० दही मथने की मथानी।
छोकड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० छोकड़ी] लड़का।
छोकड़ापन–संज्ञा पुं० लड़कपन।
छोकरा†–संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा"।
छोटा–वि० [स्त्री० छोटी] १. जो बड़ाई या विस्तार में कम हो। २. जो अवस्था में कम हो। ३. तुच्छ।
छोटाई–संज्ञा स्त्री० १. छोटापन। २. नीचता।
छोटापन–संज्ञा पुं० १. लघुता। २. बचपन।
छोटी इलायची–संज्ञा स्त्री० सफ़ेद या गुजराती इलायची।
छोड़ना–क्रि० स० १. पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना। २. मुआफ़ करना। ३. पड़ा रहने देना। ४. प्रस्थान कराना। ५. शेष रखना। ६. किसी कार्य को या उसके किसी अंग को भूल से न करना।
छोड़वाना–क्रि० स० छोड़ने का काम दूसरे से कराना।
छोड़ाना–क्रि० स० दे० "छुड़ाना"।
छोनिप*–संज्ञा पुं० दे० "क्षोणिप"।
छोनी*–संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी"।
छोप–संज्ञा पुं० १. प्रहार। २. छिपाव।
छोपना–क्रि० स० ढकना।
छोभ–संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ"।
छोभना*–क्रि० अ० क्षुब्ध होना।

चोचला–संज्ञा पुं० १. हाव-भाव। २. नखरा।
चोट–संज्ञा स्त्री० १. आघात। २. घाव। ३. दफा।
चोटा–संज्ञा पुं० राब का पसेव जो छानने से निकलता है।
चोटार†–वि० चोट खाया हुआ।
चोटारना†–क्रि० अ० चोट करना।
चोटी–संज्ञा स्त्री० १. शिखा। २. एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल। ३. सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं। ४. जूड़े में पहनने का एक आभूषण। ५. शिखर।
चोट्टा–संज्ञा पुं० [स्त्री० चोट्टी] चोर।
चोप*–संज्ञा पुं० १. रुचि। २. उत्साह।
चोपना†*–क्रि० अ० मुग्ध होना।
चोपी*–वि० इच्छा रखनेवाला।
चोब–संज्ञा स्त्री० १. शामियाना खड़ा करने का बड़ा खंभा। २. नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। ३. सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा।
चोबदार–संज्ञा पुं० १. वह नौकर जिसके पास चोब या आसा रहता है। २. द्वारपाल।
चोर–संज्ञा पुं० १. चोरी करनेवाला। २. खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं।
वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने से पता न चले।
चोरकट–संज्ञा पुं० चोर।
चोरटा–संज्ञा पुं० दे० "चोट्टा"।
चोर दरवाज़ा–संज्ञा पुं० गुप्त द्वार।
चोर महल–संज्ञा पुं० वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं।
चोरमिहीचनी†*–संज्ञा स्त्री० आँख-मिचौली का खेल।
चोरी–संज्ञा स्त्री० १. चुराने की क्रिया। २. चुराने का भाव।
चोला–संज्ञा पुं० शरीर।
चोली–संज्ञा स्त्री० अँगिया की तरह का स्त्रियों का एक पहनावा।
चोषण–संज्ञा पुं० चूसना।
चोष्य–वि० जो चूसने के योग्य हो।
चौंक–संज्ञा स्त्री० चौंकने की क्रिया या भाव।
चौंकना–क्रि० अ० १. खबरदार होना। २. चकित होना।
चौंकाना–क्रि० स० भड़काना।
चौंधियाना–क्रि० अ० चकाचौंध होना।
चौंराना*–क्रि० स० १. चँवर डुलाना। २. झाड़ू देना।
चौ–वि० चार।
संज्ञा पुं० मोती तौलने का एक मान।
चौआना†*–क्रि० अ० चकपकाना।
चौक–संज्ञा पुं० १. चौकोर भूमि। २. आँगन। ३. मंगल अवसरों पर पूजन के लिये आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। ४. शहर के बीच का बड़ा बाज़ार। ५. चौराहा।
चौकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. मंडली। २. चार घोड़ों की गाड़ी।
चौकन्ना–वि० सावधान।
चौकस–वि० १. सावधान। २. ठीक।
चौकसी–संज्ञा स्त्री० सावधानी।
चौका–संज्ञा पुं० १. पत्थर का चौकोर टुकड़ा। २. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
चौकी–संज्ञा स्त्री० १. चौकोर आसन

छोभित०–वि० दे० "क्षोभित"।
छोर–संज्ञा पुं० १. हद। २. नोक।
छोराना|–क्रि० स० १. खोलना। २. छीनना।
छोरा|–संज्ञा पुं० [स्त्री० छोरी] छोकड़ा।
छोरा छोरी|–संज्ञा स्त्री० छीना छीनी।
छोलना|–क्रि० स० छीलना।
छोह–संज्ञा पुं० ममता।
छोहना०–क्रि० अ० क्षुब्ध होना।
छोहाना०–क्रि० अ० प्रेम दिखाना।
छोही०|–वि० प्रेमी।
छौंक–संज्ञा स्त्री० बघार।
छौंकना|–क्रि० स० १. बघारना। २. मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी में कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिये डालना।
छौकना|–क्रि० अ० जानवर का कूदना या झपटना।
छौना–संज्ञा पुं० [स्त्री० छौनी] बच्चा।

ज

ज–हिंदी वर्णमाला का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है।
जंग–संज्ञा स्त्री० [वि० जंगी] लड़ाई।
जंग–संज्ञा पुं० लोहे का मुरचा।
जंगम–वि० चर।
जंगल–संज्ञा पुं० [वि० जंगली] वन।
जंगला–संज्ञा पुं० १. कटहरा। २. चौखट या खिड़की जिसमें छड़ लगी हो।
जंगली–वि० १. जंगल-संबंधी। २. बनैला।
जंगी–वि० १. सेना-संबंधी। २. बड़ा।
जंघा–संज्ञा स्त्री० जाँघ। रान।
जँचना–क्रि० अ० १. जाँचा जाना। २. उचित या अच्छा ठहरना। ३. जान पड़ना।
जँचा–वि० जाँचा हुआ।
जंजल०|–वि० बेकाम।
जंजाल–संज्ञा पुं० झंझट।
जंजाली–वि० झगड़ालू।
जंजीर–संज्ञा स्त्री० [वि० जंजीरी] सिकड़ी।
जंतर–संज्ञा पुं० १. यंत्र। २. चौकोर या लंबी तावीज़ जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती है।
जंतर-मंतर–संज्ञा पुं० जादू-टोना।
जंतरी–संज्ञा स्त्री० पत्रा। तिथि-पत्र।
जँतसार–संज्ञा स्त्री० जाँता गाड़ने का स्थान।
जंता–संज्ञा पुं० [स्त्री० जंती, जंतरी] यंत्र।
वि० दंड देनेवाला।
जंती–संज्ञा स्त्री० जंतरी।
जंतु–संज्ञा पुं० प्राणी।
जंतुघ्न–वि० जंतुनाशक।
जंत्र–संज्ञा पुं० कल।
जंत्रना०–क्रि० स० जकड़बंद करना। संज्ञा स्त्री० दे० "यंत्रणा"।

जंत्र मंत्र–संज्ञा पुं० दे० "अंतर-मंतर"।
जंत्रित–वि० १. दे० "यंत्रित"। २. बंद।
जंत्री–संज्ञा पुं० बाजा।
जंद–संज्ञा पुं० १. पारसियों का अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ। २. वह भाषा जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है।
जंदरा–संज्ञा पुं० १. यंत्र। २. जाँता।
जंपना॥–क्रि० स० बोलना।
जंबु–संज्ञा पुं० जामुन।
जंबुक–संज्ञा पुं० १. बड़ा जामुन। २. श्रृगाल।
जंबुद्वीप–संज्ञा पुं० हिंदुस्तान।
जंबू–संज्ञा पुं० १. जामुन। २. काश्मीर राज्य का एक प्रसिद्ध नगर।
जंभ–संज्ञा पुं० १. दाढ़। २. जँभाई।
जँभाई–संज्ञा स्त्री० उबासी।
जँभाना–क्रि० अ० जँभाई लेना।
जंभारि–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. अग्नि। ३. वज्र।
जई–संज्ञा स्त्री० एक अन्न।
ज़ईफ़–वि० वृद्ध।
जक–संज्ञा पुं० १. प्रेत। २. कंजूस आदमी।
संज्ञा स्त्री० [वि० झकी] ज़िद।
ज़क–संज्ञा स्त्री० १. हार। २. हानि।
जकड़–संज्ञा स्त्री० कसकर बाँधना।
जकड़ना–क्रि० स० कसकर बाँधना।
†क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगों का हिलने डुलने के योग्य न रह जाना।
जकना†॥–क्रि० अ० १. चकपकाना। २. झक में बोलना।
ज़क़ात–संज्ञा स्त्री० १. दान। २. कर।
जकित†॥–वि० चकित।
ज़ख़म–संज्ञा पुं० घाव।
ज़ख़मी–वि० घायल।
ज़ख़ीरा–संज्ञा पुं० १. कोष। २. संग्रह।
ज़ख़्म–संज्ञा पुं० दे० "ज़ख़म"।
जग–संज्ञा पुं० संसार।
जगजगा†–वि० चमकीला।
जगजगाना†–क्रि० अ० जगमगाना।
जगड्वाल–संज्ञा पुं० आडंबर।
जगत–संज्ञा पुं० संसार।
जगत–संज्ञा स्त्री० कूएँ के चारों ओर बना हुआ चबूतरा।
संज्ञा पुं० दे० "जगत्"।
जगतसेठ–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा धनी।
जगती–संज्ञा स्त्री० १. संसार। २. पृथ्वी।
जगदंबा, जगदंबिका–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
जगदाधार–संज्ञा पुं० ईश्वर।
जगदीश–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
जगदीश्वर–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
जगदीश्वरी–संज्ञा स्त्री० भगवती।
जगद्गुरु–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
जगद्धात्री–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा की एक मूर्त्ति। २. सरस्वती।
जगद्योनि–संज्ञा पुं० १. परमेश्वर। २. पृथ्वी।
जगद्वंद्य–वि० संसार में पूज्य या श्रेष्ठ।
जगना–क्रि० अ० १. नींद से उठना। २. सचेत होना।
जगन्नाथ–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्त्ति जो उड़ीसा के पुरी नामक स्थान में है।
जगन्नियंता–संज्ञा पुं० ईश्वर।
जगन्माता–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

चौपथ-संज्ञा पुं० चौराहा।
चौपद०-संज्ञा पुं० "चौपाया"।
चौपहल-वि० जिसके चार पहल या पार्श्व हों।
चौपाई-संज्ञा स्त्री० १६ मात्राओं का एक छंद।
चौपाया-संज्ञा पुं० चार पैरोंवाला पशु।
चौपाल-संज्ञा पुं० बैठक।
चौबे-संज्ञा पुं० [स्त्री० चौबाइन] ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा।
चौमंज़िला-वि० चार मरातिब या खंडोंवाला।
चौमसिया-वि० वर्षा के चार महीनों में होनेवाला।
संज्ञा पुं० चार माशे की बाट।
चौमुख-क्रि० वि० चारों ओर।
चौमुहानी-संज्ञा स्त्री० चौराहा।
चौरंगा-वि० [स्त्री० चौरंगी] चार रंगों का।
चौर-संज्ञा पुं० चोर।
चौरस-वि० समतल।
चौरस्ता-संज्ञा पुं० दे० "चौराहा"।
चौरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० चौरी] चबूतरा।
चौरासी-वि० अस्सी से चार अधिक।
चौराहा-संज्ञा पुं० चौमुहानी।
चौरी-संज्ञा स्त्री० छोटा चबूतरा।
चौरेठा-संज्ञा पुं० पानी के साथ पीसा हुआ चावल।
चौर्य-संज्ञा पुं० चोरी।
चौलाई-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसका साग खाया जाता है।
चौवा-संज्ञा पुं० १. हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. चार अंगुल की माप। ३. ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।
चौसर-संज्ञा पुं० चौपड़।
चौहट्टा-संज्ञा पुं० चौक।
चौहद्दी-संज्ञा स्त्री० चारों ओर की सीमा।
चौहरा-वि० चार परतवाला।
चौहान-संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।
चौहैं-क्रि० वि० चारों ओर।
च्युत-वि० गिरा हुआ।
च्युति-संज्ञा स्त्री० १. झड़ना। २. चूक।

छ

छ-हिंदी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।
छँटना-क्रि० अ० कटकर अलग होना।
छँटवाना-क्रि० स० १. कटवाना। २. चुनवाना।
छँटाई-संज्ञा स्त्री० छाँटने का काम, भाव या मज़दूरी।
छँड़ना०-क्रि० स० १. छोड़ना। २. छाँटना।
छँड़ाना०†-क्रि० स० छीनना।
छंद-संज्ञा पुं० १. पद्य। २. यह विध

जगन्मोहिनी–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. महामाया।
जगमग, जगमगा–वि० १. प्रकाशित। २. चमकदार।
जगमगाना–क्रि० अ० दमकना।
जगमगाहट–संज्ञा स्त्री० चमक।
जगवाना–क्रि० स० जगाने का काम दूसरे से कराना।
जगह–संज्ञा स्त्री० १. स्थान। २. पद।
जगात†–संज्ञा पुं० १. दान। २. कर।
जगाती†–संज्ञा पुं० वह जो कर वसूल करे।
जगाना–क्रि० स० १. नींद त्यागने के लिये प्रेरणा करना। २. चेत में लाना।
जघन–संज्ञा पुं० चूतड़।
जघन्य–वि० १. अंतिम। २. निकृष्ट। संज्ञा पुं० शूद्र।
जचना–क्रि० अ० दे० "जँचना"।
जच्चा–संज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्री।
जजमान–संज्ञा पुं० दे० "यजमान"।
जज़िया–संज्ञा पुं० १. दंड। २. एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्मवालों पर लगता था।
जज़ीरा–संज्ञा पुं० टापू।
जटना–क्रि० स० ठगना।
⊛ क्रि० स० जड़ना।
जटल–संज्ञा स्त्री० गप्प।
जटा–संज्ञा स्त्री० एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल।
जटाजूट–संज्ञा पुं० १. बहुत से लंबे बालों का समूह। २. शिव की जटा।
जटाधर–संज्ञा पुं० शिव।
जटाधारी–वि० जो जटा रखे हो। संज्ञा पुं० शिव।
जटाना–क्रि० स० जटने का काम दूसरे से कराना।
क्रि० अ० ठगा जाना।
जटायु–संज्ञा पुं० रामायण का एक प्रसिद्ध गीध।
जटित–वि० जड़ा हुआ।
जटिल–वि० १. जटावाला। २. दुर्बोध।
जठर–संज्ञा पुं० पेट।
वि० वृद्ध।
जठराग्नि–संज्ञा स्त्री० पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।
जड़–वि० १. जिसमें चेतनता न हो। २. मूर्ख।
संज्ञा स्त्री० १. मूल। २. हेतु।
जड़ता–संज्ञा स्त्री० १. अचेतनता। २. मूर्खता।
जड़त्व–संज्ञा पुं० १. अचेतन। २. मूर्खता।
जड़ना–क्रि० स० १. एक चीज़ को दूसरी चीज़ में बैठाना। २. प्रहार करना। ३. चुगली खाना।
जड़वाना–क्रि० स० जड़ने का काम दूसरे से कराना।
जड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. जड़ने का काम या भाव। २. जड़ने की मज़दूरी।
जड़ाऊ–वि० जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों।
जड़ाना–क्रि० स० दे० "जड़वाना"।
‡ क्रि० अ० शीत लगना।
जड़ाव–संज्ञा पुं० १. जड़ने का काम या भाव। २. जड़ाऊ काम।
जड़ावर–संज्ञा पुं० गरम कपड़े।
जड़ित⊛–वि० जड़ा हुआ।
जड़िया–संज्ञा पुं० कुंदनसाज़।
जड़ी–संज्ञा स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़ औषध के काम में लाई जाय।
जड़ुआ–वि० दे० "जड़ाऊ"।

जिसमें छंदों के लक्षण आदि का विचार हो। ३. बंधन।

छंदोबद्ध–वि० जो पद्य के रूप में हो।

छंदोभंग–संज्ञा पुं० छंद-रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्ण आदि के नियम का पालन न होने के कारण होता है।

छः–वि० गिनती में पाँच से एक अधिक।

छकड़ा–संज्ञा पुं० सगड़।

छकड़ी–संज्ञा स्त्री० छः का समूह।

छकना–क्रि० अ० [संज्ञा छाक] तृप्त होना।

छकाना–क्रि० स० खिला-पिलाकर तृप्त करना।
क्रि० स० दिक करना।

छक्का–संज्ञा पुं० १. छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवयवों से बनी हो। २. ताश का वह पत्ता जिसमें छः बूटियाँ हों। ३. सुध।

छगड़ा–संज्ञा पुं० बकरा।

छगन–संज्ञा पुं० छोटा बच्चा।
वि० बच्चों के लिये एक प्यार का शब्द।

छगुनी–संज्ञा स्त्री० कानी उँगली।

छछूँदर–संज्ञा पुं० चूहे की जाति का एक जंतु।

छजना–क्रि० अ० १. अच्छा लगना। २. ठीक जँचना।

छज्जा–संज्ञा पुं० छाजन या छत का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है।

छटकना–क्रि० अ० १. किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना। २. अलग अलग फिरना।

छटकाना–क्रि० अ० दाब या पकड़ से बलपूर्वक निकल जाने देना।

छटपटाना–क्रि० अ० १. तड़फड़ाना। २. बेचैन होना।

छटपटी–संज्ञा स्त्री० घबराहट।

छटाँक–संज्ञा स्त्री० एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग होती है।

छटा–संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति। २. शोभा।

छठ–संज्ञा स्त्री० पक्ष की छठी तिथि।

छठा–वि० [स्त्री० छठी] जो क्रम में पाँच और वस्तुओं के उपरांत हो।

छठी–संज्ञा स्त्री० जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार।

छड़–संज्ञा स्त्री० धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

छड़ा–संज्ञा पुं० पैर में पहनने का एक गहना।
वि० अकेला।

छड़िया–संज्ञा पुं० दरबान।

छड़ी–संज्ञा स्त्री० पतली लाठी।

छत–संज्ञा स्त्री० ऊपर का खुला हुआ कोठा।
॰संज्ञा पुं० घाव।
॰क्रि० वि० रहते हुए।

छतगीर, छतगीरी–संज्ञा स्त्री० ऊपर तानी हुई चाँदनी।

छतनार–वि० [स्त्री० छतनारी] विस्तृत।

छतरी–संज्ञा स्त्री० छाता।

छतिया॰–संज्ञा स्त्री० दे० "छाती"।

छतियाना–क्रि० स० छाती के पास ले जाना।

छतीसा–वि० [स्त्री० छतीसी] चतुर।

छत्ता–संज्ञा पुं० १. छाता। २. मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर।

छत्र–संज्ञा पुं० १. छाता। २. राजाओं का रुपहला या सुनहरा छाता जो राजचिह्नों में से एक है।

छत्रक–संज्ञा पुं० छाता।

जत†*–वि० जितना।
जतन*†–संज्ञा पुं० दे० "यत्न"।
जतनी–संज्ञा पुं० १. यत्न करनेवाला। २. चतुर।
जतलाना–क्रि० स० दे० "जताना"।
जताना–क्रि० स० १. बतलाना। २. आगाह करना।
जती–संज्ञा पुं० दे० "यती"।
जतेक†*–क्रि० वि० जितना।
जत्था–संज्ञा पुं० १. झुंड। २. फिरका।
जथा*–क्रि० वि० दे० "यथा"।
संज्ञा पुं० दे० "जत्था"।
संज्ञा स्त्री० पूँजी।
जद†–क्रि० वि० जब।
अव्य० यदि।
जदपि–क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।
जद्यपि*–क्रि० वि० दे० "यद्यपि"।
जन–संज्ञा पुं० १. लोक। २. दास।
जनक–संज्ञा पुं० १. जन्मदाता। २. पिता।
जनकपुर–संज्ञा पुं० मिथिला की प्राचीन राजधानी।
जनकौर–संज्ञा पुं० १. जनकपुर। २. जनक राजा के भाई-बंधु।
ज़नखा–वि० १. जिसके हाव-भाव आदि औरतों के से हों। २. हिजड़ा।
जनता–संज्ञा स्त्री० १. जनन का भाव। २. जन-समूह।
जनन–संज्ञा पुं० १.उत्पत्ति। २.जन्म।
जनना–क्रि० स० जन्म देना।
जननि*–संज्ञा स्त्री० दे० "जननी"।
जननी–संज्ञा स्त्री० १. उत्पन्न करनेवाली। २. माता।
जननेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० भग।
जनपद–संज्ञा पुं० आबाद देश।
जनम–संज्ञा पुं० दे० "जन्म"।
जनमना–क्रि० अ० जन्म लेना।
जनमसँघाती†*–संज्ञा पुं० १. वह जिसका साथ जन्म से ही हो। २. वह जिसका साथ जन्म भर रहे।
जनमाना–क्रि० स० प्रसव कराना।
जनमेजय–संज्ञा पुं० विष्णु।
जनयिता–संज्ञा पुं० पिता।
जनयित्री–संज्ञा स्त्री० माता।
जनरव–संज्ञा पुं० १. अफ़वाह। २. लोकनिंदा। ३. शोर।
जनवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जनाई"।
जनवाना–क्रि० स० लड़का पैदा कराना।
† क्रि० स० सूचित कराना।
जनवास–संज्ञा पुं० १. सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान। २. बरातियों के ठहरने का स्थान।
जनवासा–संज्ञा पुं० दे० "जनवास"।
जनश्रुति–संज्ञा स्त्री० अफ़वाह।
जनसंख्या–संज्ञा स्त्री० आबादी।
जनाई–संज्ञा स्त्री० १. जनानेवाली। २. जनाने की मज़दूरी।
जनाज़ा–संज्ञा पुं० १. शव। २. अरथी या वह संदूक जिसमें लाश को रखकर गाड़ने, जलाने आदि ले जाते हैं।
ज़नानखाना–संज्ञा पुं० स्त्रियों के रहने का स्थान।
जनाना–क्रि० स० १. दे० "जताना"। २. उत्पन्न कराना।
ज़नाना–वि० [स्त्री० ज़नानी] १. स्त्री-संबंधी। २. हीजड़ा। ३. निर्बल।
संज्ञा पुं० १. ज़नखा। २. अंतःपुर। ३. पत्नी।
ज़नानापन–संज्ञा पुं० मेहरापन।
जनाब–संज्ञा पुं० महाशय।

छत्रधारी-वि० जो छत्र धारण करे।
छत्रपति-संज्ञा पुं० राजा।
छत्रभंग-संज्ञा पुं० १. राजा का नाश। २. अराजकता।
छत्री-संज्ञा पुं० † दे० "क्षत्रिय"।
छद्-संज्ञा पुं० आवरण।
छदाम-संज्ञा पुं० पैसे का चौथाई भाग।
छद्म-संज्ञा पुं० १. छिपाव। २. छल।
छद्मवेश-संज्ञा पुं० [वि० छद्मवेशी] बदला हुआ वेश।
छद्मी-वि० [स्त्री० छद्मिनी] १. बनावटी वेश धारण करनेवाला। २. छली।
छन-संज्ञा पुं० दे० "क्षण"।
छनक-संज्ञा पुं० झनकार।
संज्ञा स्त्री० भड़क।
☆ संज्ञा पुं० एक क्षण।
छनकना-क्रि० अ० १. किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूँद का छन छन शब्द करके उड़ जाना। २. चौकन्ना होकर भागना।
छनकाना-क्रि० स० १. छन छन शब्द करना। २. चौंकाना।
छनछनाना-क्रि० अ० १. किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि पड़ने के कारण छन छन शब्द होना। २. झनझनाना।
क्रि० स० छन छन का शब्द उत्पन्न करना।
छनछवि☆-संज्ञा स्त्री० बिजली।
छनदा☆-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षणदा"।
छनना-क्रि० अ० १. किसी पदार्थ का महीन छेदों में से इस प्रकार नीचे गिरना कि मैल, सीठी आदि ऊपर रह जाय। २. किसी नशे का पिया जाना।
छनाना-क्रि० स० किसी दूसरे से छानने का काम कराना।
छनिक☆-वि० दे० "क्षणिक"।
☆संज्ञा पुं० क्षण भर।
छन्न-संज्ञा पुं० किसी तपी हुई चीज़ पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द।
छप-संज्ञा स्त्री० १. पानी में किसी वस्तु के एकबारगी ज़ोर से गिरने का शब्द। २. पानी के छींटों के ज़ोर से पड़ने का शब्द।
छपछपाना-क्रि० अ० पानी पर कोई वस्तु पटककर छप छप शब्द करना।
छपना-क्रि० अ० १. छापा जाना। २. यंत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना। ३. शीतला का टीका लगना।
छपरखट, छपरखाट-संज्ञा स्त्री० मसहरीदार पलंग।
छपरी☆†-संज्ञा स्त्री० झोपड़ी।
छपवाना-क्रि० स० दे० "छपाना"।
छपाई-संज्ञा स्त्री० १. छापने का काम। २. छापने की मज़दूरी।
छपाका-संज्ञा पुं० पानी पर किसी वस्तु के ज़ोर से पड़ने का शब्द।
छपाना-क्रि० स० छापने का काम दूसरे से कराना।
छप्पय-संज्ञा पुं० एक मात्रिक छंद जिसमें छः चरण होते हैं।
छप्पर-संज्ञा पुं० छान।
छबि-संज्ञा स्त्री० दे० "छवि"।
छबीला-वि० [स्त्री० छबीली] शोभायुक्त।
छमछम-क्रि० वि० छम छम शब्द के साथ।
छमछमाना-क्रि० अ० छम छम शब्द करना।

जनार्दन–संज्ञा पुं० विष्णु।
जनावा†–संज्ञा पुं० हल्ला।
जनि–संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति। २. पत्नी।
⊙† अव्य० मत।
जनित–वि० उत्पन्न।
जनिता–संज्ञा पुं० [स्त्री० जनित्री] १. उत्पन्न करनेवाला। २. पिता।
जनियाँ⊙–संज्ञा स्त्री० प्रियतमा।
जनी–संज्ञा स्त्री० १. दासी। २. स्त्री। वि० स्त्री० उत्पन्न या पदा की हुई।
जनु–क्रि० वि० मानो।
जनेऊ†–संज्ञा पुं० यज्ञोपवीत।
जनेत–संज्ञा स्त्री० बरात।
जनेव–संज्ञा पुं० दे० "जनेऊ"।
जनैया–वि० जाननेवाला।
जन्म–संज्ञा पुं० १. पैदाइश। २. जीवन।
जन्मकुंडली–संज्ञा स्त्री० वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले।
जन्मना–क्रि० अ० जन्म लेना।
जन्मपत्र–संज्ञा पुं० जन्मपत्री।
जन्मपत्री–संज्ञा स्त्री० वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति आदि का ब्योरा रहता है।
जन्मभूमि–संज्ञा स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।
जन्मस्थान–संज्ञा पुं० जन्मभूमि।
जन्मांतर–संज्ञा पुं० दूसरा जन्म।
जन्माना–क्रि० स० उत्पन्न करना।
जन्माष्टमी–संज्ञा स्त्री० भादों की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था।
जन्मोत्सव–संज्ञा पुं० किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव तथा पूजन।
जन्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० जन्या] १. जनसाधारण। २. अफ़वाह। वि० जन-संबंधी।
जप–संज्ञा पुं० किसी मंत्र या वाक्य का बार बार धीरे धीरे पाठ करना।
जप तप–संज्ञा पुं० पूजा-पाठ।
जपना–क्रि० स० किसी वाक्य या शब्द को धीरे धीरे देर तक कहना या दोहराना।
जपनी–संज्ञा स्त्री० माला।
जपनीय–वि० जप करने योग्य।
जपमाला–संज्ञा स्त्री० वह माला जिसे लेकर लोग जप करते हैं।
जफ़ा–संज्ञा स्त्री० सख्ती।
जब–क्रि० वि० जिस समय।
जबड़ा–संज्ञा पुं० कल्ला।
जबर–वि० बलवान्।
जबरई–संज्ञा स्त्री० ज्यादती।
ज़बरदस्त–वि० [संज्ञा ज़बरदस्ती] बलवान्।
ज़बरदस्ती–संज्ञा स्त्री० अत्याचार। क्रि० वि० बलपूर्वक।
ज़बरन्–क्रि० वि० बलात्।
जबरा–वि० बलवान्।
ज़बह–संज्ञा पुं० हिंसा।
जबहा–संज्ञा पुं० जीवट।
ज़बान–संज्ञा स्त्री० १. जीभ। २. बात। ३. प्रतिज्ञा। ४. भाषा।
ज़बानी–वि० मौखिक।
ज़बून–वि० बुरा।
ज़ब्त–संज्ञा पुं० किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ।
ज़ब्ती–संज्ञा स्त्री० ज़ब्त होने की क्रिया।

छमा‡-संज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा"।
छमाछम-क्रि० वि० लगातार छम छम शब्द के साथ।
छमुख-संज्ञा पुं० षडानन।
छय॰†-संज्ञा पुं० दे० "क्षय"।
छयना-॰क्रि० अ० क्षय को प्राप्त होना।
छरकना॰-क्रि० अ० दे० "छलकना"।
छरछर-संज्ञा पुं० १. कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द। २. सटसट।
छरछराना-क्रि० अ० [संज्ञा छरछराहट] नमक आदि लगने से शरीर के घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना।
छरना-क्रि० अ० चूना।
छरा-संज्ञा पुं० छड़ा।
छर्दन-संज्ञा पुं० कै करना।
छर्दि-संज्ञा स्त्री० वमन। कै। उलटी।
छर्रा-संज्ञा पुं० लोहे या सीसे के छोटे-छोटे टुकड़े जो बंदूक में चलाए जाते हैं।
छल-संज्ञा पुं० १. वह व्यवहार जो दूसरे को धोखा देने के लिये किया जाता है। २. धूर्त्तता।
छलकना-क्रि० अ० उमड़ना।
छलकाना-क्रि० स० किसी पात्र में भरे हुए जल आदि को हिला-डुलाकर बाहर उछालना।
छलछंद-संज्ञा पुं० [वि० छलछंदी] चालबाज़ी।
छलछिद्र-संज्ञा पुं० कपट व्यवहार।
छलना-क्रि० स० धोखा देना। संज्ञा स्त्री० धोखा।
छलनी-संज्ञा स्त्री० चलनी।
छलहाई॰†-वि० स्त्री० छली।
छलाँग-संज्ञा स्त्री० कुदान।
छलाई॰-संज्ञा स्त्री० कपट।
छलाना-क्रि० स० धोखा दिलाना।
छलिया, छली-वि० कपटी।
छल्ला-संज्ञा पुं० मुँदरी।
छल्लेदार-वि० जिसमें मंडलाकार चिह्न या घेरे बने हों।
छवना-संज्ञा पुं० [स्त्री० छवनी] बच्चा।
छवा॰†-संज्ञा पुं० बछड़ा।
छवाई-संज्ञा स्त्री० १. छाने का काम या भाव। २. छाने की मज़दूरी।
छवाना-क्रि० स० छाने का काम दूसरे से कराना।
छवि-संज्ञा स्त्री० [वि० छबीला] शोभा।
छहरना॰-क्रि० अ० छितराना।
छहराना॰-क्रि० अ० छितराना।
छहरीला†-वि० [स्त्री० छहरीली] छितरानेवाला।
छहियाँ‡-संज्ञा स्त्री० दे० "छाँह"।
छाँगुर-संज्ञा पुं० वह मनुष्य जिसके पंजे में छः उँगलियाँ हों।
छाँट-संज्ञा स्त्री० १. कतरन। २. अलग की हुई निकम्मी वस्तु।
†संज्ञा स्त्री० कै।
छाँटना-क्रि० स० १. काटकर अलग करना। २. अलग या दूर रखना।
छाँड़ना॰†-क्रि० स० दे० "छोड़ना"।
छाँद-संज्ञा स्त्री० चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी। नोई।
छाँदना-क्रि० स० रस्सी आदि से बाँधना।
छाँवड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० छाँवड़ी, छौंड़ी] छोटा बच्चा।

जब्र–संज्ञा पुं० ज्यादती।
जमघट–संज्ञा पुं० मनुष्यों की भीड़।
जमन०–संज्ञा पुं० दे० "यवन"।
जमना–क्रि० अ० १. तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। २. स्थिर होना। ३. एकत्र होना।
क्रि० अ० उगना।
संज्ञा स्त्री० दे० "यमुना"।
जमा–वि० १. एकत्र। २. जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो।
संज्ञा स्त्री० पूँजी।
जमाई–संज्ञा पुं० दामाद।
संज्ञा स्त्री० जमने या जमाने की क्रिया या भाव।
जमा खर्च–संज्ञा पुं० आय और व्यय।
जमात–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यों का समूह। २. कक्षा।
जमादार–संज्ञा पुं० [संज्ञा जमादारी] सिपाहियों या पहरेदारों आदि का प्रधान।
ज़मानत–संज्ञा स्त्री० ज़ामिनी।
जमाना–क्रि० स० जमने में सहायक होना।
ज़माना–संज्ञा पुं० १. समय। २. मुद्दत। ३. दुनिया।
ज़मानासाज़–वि० जो लोगों का रंग-ढंग देखकर व्यवहार करता हो।
जमाबंदी–संज्ञा स्त्री० पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी जाती हैं।
जमामार–वि० दूसरों का धन दबा रखने या खा लेनेवाला।
जमालगोटा–संज्ञा पुं० एक पौधे का बीज जो अत्यंत रेचक होता है। जयपाल।
जमाव–संज्ञा पुं० जमने का भाव।
जमावट–संज्ञा स्त्री० जमने का भाव।
जमावड़ा–संज्ञा पुं० भीड़।
ज़मींकंद–संज्ञा पुं० सूरन।
ज़मींदार–संज्ञा पुं० ज़मीन का मालिक।
ज़मींदारी–संज्ञा स्त्री० ज़मींदार की वह ज़मीन जिसका वह मालिक हो।
ज़मीन–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. भूमि।
जमुहाना†–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जम्हाना–क्रि० अ० दे० "जँभाना"।
जयंत–वि० [स्त्री० जयंती] विजयी।
संज्ञा पुं० १. रुद्र। २. इंद्र के पुत्र का नाम।
जयंती–संज्ञा स्त्री० १. विजय करनेवाली। २. ध्वजा। ३. वर्षगाँठ का उत्सव। ४. जई।
जय–संज्ञा स्त्री० जीत।
जयना०†–क्रि० अ० जीतना।
जयमाल–संज्ञा स्त्री० १. वह माला जो विजयी को विजय पाने पर पहनाई जाय। २. वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती थी।
जयस्तंभ–संज्ञा पुं० विजय का स्मारक स्तंभ।
जया–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. पार्वती ३. पताका।
वि० जयकारिणी।
जयी–वि० विजयी।
जर०–संज्ञा पुं० वृद्धावस्था।
ज़र–संज्ञा पुं० १. सोना। २. धन।
जरकस, जरकसी०–वि० जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।
ज़रखेज़–वि० उपजाऊ।

जरठ–वि० १. कर्कश। २. वृद्ध। ३. जीर्ण।
ज़रद–वि० पीला।
ज़रदा–संज्ञा पुं० १. चावलों का एक व्यंजन। २. पान में खाने की सुगंधित सुरती।
ज़रदालू–संज्ञा पुं० खूबानी।
जरनि†⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।
जरना†⊙–क्रि० अ० दे० "जलना"। क्रि० स० दे० "जड़ना"।
जरनि⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "जलन"।
ज़रब–संज्ञा स्त्री० १. आघात। २. गुणा।
जरबीला⊙†–वि० भड़कीला और सुंदर।
ज़रर–संज्ञा पुं० १. हानि। २. आघात।
जरा–संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा।
ज़रा–वि० थोड़ा। क्रि० वि० थोड़ा।
जराग्रस्त–वि० बुड्ढा।
जराना⊙–क्रि० स० दे० "जलाना"।
जरायु–संज्ञा पुं० १. आँवल। २. गर्भाशय।
जरायुज–संज्ञा पुं० वह प्राणी जो आँवल या खेड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो।
जरिया⊙†–संज्ञा पुं० दे० "जड़िया"।
ज़रिया–संज्ञा पुं० १. संबंध। २. हेतु।
ज़री–संज्ञा स्त्री० १. ताश नामक कपड़ा जो बादले से बुना जाता है। २. सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।
जरीब–संज्ञा स्त्री० वह ज़ंजीर जिससे भूमि नापी जाती है।
ज़रूर–क्रि० वि० अवश्य।
ज़रूरत–संज्ञा स्त्री० आवश्यकता।
ज़रूरी–वि० प्रयोजनीय।
जरीट†⊙–वि० जड़ाऊ।
ज़र्क़ बर्क़–वि० तड़क-भड़कवाला।
जर्जर–वि० जीर्ण।
ज़र्रा–संज्ञा पुं० टुकड़ा।
जर्राह–संज्ञा पुं० [संज्ञा जर्राही] शस्त्र-चिकित्सक।
जल–संज्ञा पुं० पानी।
जलकर–संज्ञा पुं० जलाशयों की उपज।
जलक्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० जल-विहार।
जलखावा†–संज्ञा पुं० दे० "जलपान"।
जलघड़ी–संज्ञा स्त्री० समय जानने की एक प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी।
जलचर–संज्ञा पुं० [स्त्री० जलचरी] पानी में रहनेवाले जंतु।
जलज–वि० जो जल में उत्पन्न हो। संज्ञा पुं० कमल।
ज़लज़ला–संज्ञा पुं० भूकंप।
जलजात–वि० दे० "जलज"। संज्ञा पुं० कमल।
जल-डमरूमध्य–संज्ञा पुं० दो बड़े समुद्रों के बीच का उन्हें जोड़नेवाला पतला समुद्र।
जलतरंग–संज्ञा पुं० एक बाजा जो जल से भरी कटोरियों को एक क्रम से रखकर बजाया जाता है।
जलद–वि० जल देनेवाला। संज्ञा पुं० मेघ।
जलधर–संज्ञा पुं० बादल।
जलधरी–संज्ञा स्त्री० वह अर्घा जिसमें शिवलिंग रहता है।
जलधारा–संज्ञा स्त्री० पानी की धार।

जृंभा–संज्ञा स्त्री० जँभाई।
जेंवना–क्रि० स० खाना।
जे०†–सर्व० 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ*†–सर्व० दे० "जो"।
जेठ–संज्ञा पुं० १. ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है। २. [स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई।
वि० बड़ा।
जेठरा†–वि० दे० "जेठ"।
जेठा–वि० [स्त्री० जेठी] बड़ा।
जेठाई–संज्ञा स्त्री० बड़ाई।
जेठानी–संज्ञा स्त्री० जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री।
जेठी–वि० जेठ का।
जेठौत, जेठौता†–संज्ञा पुं० [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र।
जेता–संज्ञा पुं० १. जीतनेवाला। २. विष्णु।
वि० दे० "जितना"।
जेतिक०†–क्रि० वि० जितना।
जेते०†–वि० जितने।
जेतो*†–क्रि० वि० जितना।
जेब–संज्ञा पुं० खरीता। पाकेट।
संज्ञा स्त्री० शोभा।
जेबी–वि० १. जो जेब में रखा जा सके। २. बहुत छोटा।
जेय–वि० जीतने योग्य।
जेल–संज्ञा पुं० कारागार। बंदीगृह।
जेलखाना–संज्ञा पुं० कारागार।
जेवना–क्रि० स० दे० "जीमना"।
जेवनार–संज्ञा स्त्री० १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज। २. रसोई।
जेवर–संज्ञा पुं० गहना।
जेवरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी।
जेहन–संज्ञा पुं० [वि० जहीन] बुद्धि।
जेहल–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहलखाना†–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहि*–सर्व० १. जिसको। २. जिससे।
जै–संज्ञा स्त्री० दे० "जय"।
†वि० जितने।
जैन–संज्ञा पुं० १. भारत का एक धर्म-सम्प्रदाय। २. जैनी।
जैनी–संज्ञा पुं० जैन मतावलंबी।
जैनु*–संज्ञा पुं० भोजन।
जैबो†–क्रि० अ० दे० "जाना"।
जैसा–वि० [स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार का। २. जितना। ३. समान।
क्रि० वि० जितना।
जैसे–क्रि० वि० जिस प्रकार से।
जैसो†–वि०, क्रि० वि० दे० "जैसा"।
जों†०–क्रि० वि० दे० "ज्यों"।
जोंक–संज्ञा स्त्री० पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है।
जोंधैया–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
जो–सर्व० एक संबंधवाचक सर्वनाम।
अव्य० यदि।
जोअना*†–क्रि० स० दे० "जोवना"।
जोइ*†–संज्ञा स्त्री० पत्नी।
†सर्व० दे० "जो"।
जोउ–सर्व० दे० "जो"।
जोखना–क्रि० स० तौलना।
जोखा–संज्ञा पुं० हिसाब।
जोखिम–संज्ञा स्त्री० जोखी।
जोखों–संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम"।
जोग–संज्ञा पुं० दे० "योग"।

संज्ञा पुं० बादल ।
जलधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।
जलन-संज्ञा स्त्री० १. दाह । २. डाह।
जलना-क्रि० अ० १. दग्ध होना । २. झुलसना । ३. ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना ।
जलनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र ।
जलपाटल-संज्ञा पुं० काजल ।
जलपान-संज्ञा पुं० नाश्ता ।
जलप्रपात-संज्ञा पुं० किसी नदी आदि का ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना।
जलप्रवाह-संज्ञा पुं० पानी का बहाव।
जलप्लावन-संज्ञा पुं० पानी की बाढ़ जिससे आस-पास की भूमि जल में डूब जाय ।
जलयान-संज्ञा पुं० वह सवारी जो जल में काम आती हो ।
जलराशि-संज्ञा पुं० समुद्र ।
जलवाना-क्रि० स० जलाने का काम दूसरे से कराना।
जलशायी-संज्ञा पुं० विष्णु ।
जलसा-संज्ञा पुं० आनंद या उत्सव का समारोह ।
जलहरी-संज्ञा स्त्री० १. अर्घा जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है । २. मिट्टी का जल भरा घड़ा जो छेद करके शिवलिंग के ऊपर टाँगा जाता है ।
जलाजल-संज्ञा पुं० गोटे आदि की झालर । झलाझल ।
जलातन-वि० १. क्रोधी। २. डाही।
जलाधिप-संज्ञा पुं० वरुण ।
जलाना-क्रि० स० १. भस्म करना । २. झुलसाना । ३. किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना । .
जलापा-संज्ञा पुं० डाह या ईर्ष्या की जलन ।
जलाल-संज्ञा पुं० १. तेज। २. प्रभाव।
जलावन-संज्ञा पुं० ईंधन ।
जलाशय-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पानी जमा हो ।
जलाहल-वि० जलमय ।
ज़लील-वि० १. तुच्छ। २. अपमानित ।
जलूस-संज्ञा पुं० उत्सवयात्रा ।
जलेबी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई जो कुंडलाकार होती है ।
जलेश-संज्ञा पुं० १. वरुण। २. समुद्र।
जलौका-संज्ञा स्त्री० जोंक ।
जल्द-क्रि० वि० [संज्ञा जल्दी] शीघ्र ।
जल्दबाज़-वि० [संज्ञा जल्दबाजी] जो किसी काम में बहुत जल्दी करता हो।
जल्दी-संज्ञा स्त्री० शीघ्रता । † क्रि० वि० दे० "जल्द" ।
जल्प-संज्ञा पुं० कथन ।
जल्पक-वि० बकवादी ।
जल्पन-संज्ञा पुं० बकवाद ।
जल्पना-क्रि० अ० व्यर्थ बकवाद करना।
जल्लाद-संज्ञा पुं० १. घातक । २. क्रूर व्यक्ति ।
जवनिका-संज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका"।
जवाँमर्द-वि० [संज्ञा जवाँमर्दी] शूरवीर।
जवा†-संज्ञा पुं० लहसुन का दाना ।
जवाई†-संज्ञा स्त्री० गमन ।
जवान-वि० युवा ।
जवानी-संज्ञा स्त्री० अजवायन । संज्ञा स्त्री० यौवन ।
जवाब-संज्ञा पुं० १.उत्तर। २. बदला। ३. नौकरी छूटने की आज्ञा।
जवाबदावा-संज्ञा पुं० वह उत्तर जो

भव्य० के निकट।
जोगड़ा-संज्ञा पुं० पाखंडी।
जोगवना-क्रि० स० यत्न से रखना।
जोगिन-संज्ञा स्त्री० १. जोगी की स्त्री। २. साधुनी। ३. पिशाचिनी।
जोगिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "योगिनी"।
जोगिया-वि० १. जोगी-संबंधी। २. गेरू के रंग में रँगा हुआ।
जोगींद्र*†-संज्ञा पुं० १. बड़ा योगी। २. शिव।
जोगी-संज्ञा पुं० वह जो योग करता हो।
जोगेश्वर-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. सिद्ध योगी।
जोजन*-संज्ञा पुं० दे० "योजन"।
जोटा*†-संज्ञा पुं० जोड़ा।
जोटी*†-संज्ञा स्त्री० जोड़ी।
जोड़-संज्ञा पुं० १. जोड़ने की क्रिया। २. टोटल। ३. गाँठ। ४. जोड़ा। ५. समानता।
जोड़न-संज्ञा स्त्री० वह पदार्थ जो दही जमाने के लिये दूध में डाला जाता है।
जोड़ना-क्रि० स० १. दो चीज़ों को मज़बूती से एक करना। २. इकट्ठा करना।
जोड़वाँ-वि० वे दो बच्चे जो एक ही गर्भ से साथ उत्पन्न हुए हों।
जोड़वाना-क्रि० स० जोड़ने का काम दूसरे से कराना।
जोड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० जोड़ी] १. दो समान पदार्थ। २. जूते। ३. स्त्री और पुरुष।
जोड़ाई-संज्ञा स्त्री० १. वस्तुओं को जोड़ने की क्रिया या भाव। २. जोड़ने की मज़दूरी।
जोड़ी-संज्ञा स्त्री० १. जोड़ा। २. दो घोड़ों या दो बैलों की गाड़ी। ३. दोनों मुगदर जिनसे कसरत करते हैं।
जोतना-क्रि० स० १. किसी को ज़बरदस्ती किसी काम में लगाना। २. खेती के लिये हल चलाना।
जोताई-संज्ञा स्त्री० १. जोतने का काम या भाव। २. जोतने की मज़दूरी।
जोति, जोती-संज्ञा स्त्री० दे० "ज्योति"। *† संज्ञा स्त्री० जोतने बोने योग्य भूमि।
जोधा*†-संज्ञा पुं० दे० "योद्धा"।
जोनि*-संज्ञा स्त्री० दे० "योनि"।
जोपै*-प्रत्य० यदि।
जोबन-संज्ञा पुं० १. यौवन। २. सुंदरता।
जोम-संज्ञा पुं० उमंग।
जोय*†-संज्ञा स्त्री० स्त्री।
सर्व० पुं० जो।
क्रि० स० दे० "जोवना"।
ज़ोर-संज्ञा पुं० १. बल। २. वश। ३. व्यायाम।
ज़ोरदार-वि० जिसमें बहुत ज़ोर हो।
जोरना†-क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
ज़ोर-शोर-संज्ञा पुं० बहुत अधिक ज़ोर।
जोराजोरी†*-संज्ञा स्त्री० ज़बरदस्ती।
क्रि० वि० ज़बरदस्ती से।
ज़ोरावर-वि० [संज्ञा ज़ोरावरी] बलवान्।
जोरी†*-संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी"।
संज्ञा स्त्री० ज़बरदस्ती।
जोरू-संज्ञा स्त्री० स्त्री।
जोलाहल†*-संज्ञा स्त्री० ज्वाला।
जोली†*-संज्ञा स्त्री० बराबरी।

वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है।
जवाबदेह-वि० [संज्ञा जवाबदेही] उत्तरदाता।
जवाबी-वि० जिसका जवाब देना हो।
जवारा-संज्ञा पुं० जौ के हरे अंकुर।
ज़वाल-संज्ञा पुं० १. अवनति। २. जंजाल।
जवास, जवासा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कँटीला पौधा।
जवाहर-संज्ञा पुं० रत्न।
जवाहरात-संज्ञा पुं० रत्न-समूह।
जवैया†-वि० जानेवाला।
जशन-संज्ञा पुं० उत्सव।
जस*†-क्रि० वि० जैसा।
† संज्ञा पुं० दे० "यश"।
जस्ता-संज्ञा पुं० खाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु।
जह-क्रि० वि० दे० "जहाँ"।
जहन्नुम-संज्ञा पुं० नरक।
ज़हमत-संज्ञा स्त्री० १. आफत। २. झंझट।
ज़हर-संज्ञा स्त्री० विष।
ज़हरमोहरा-संज्ञा पुं० १. एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है। २. हरे रंग का एक विषघ्न पत्थर।
ज़हरीला-वि० विषैला।
जहाँ-क्रि० वि० जिस स्थान पर।
जहाँगीरी-संज्ञा स्त्री० १. हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार की चूड़ी।
जहाँपनाह-संज्ञा पुं० संसार का रक्षक।
जहाज़-संज्ञा पुं० समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।
जहाज़ी-वि० जहाज़ से संबंध रखनेवाला।
जहान-संज्ञा पुं० संसार।
जहालत-संज्ञा स्त्री० अज्ञान।
जहीं*†-अव्य० जहाँ ही।
अव्य० दे० "ज्यों ही"।
ज़हीन-वि० बुद्धिमान।
जहेज़-संज्ञा पुं० वह धन-संपत्ति जो विवाह में कन्या पक्ष की ओर से वर को दी जाती है।
जाँगड़ा-संज्ञा पुं० भाट।
जाँगलू-वि० गँवार।
जाँघ-संज्ञा स्त्री० घुटने और कमर के बीच का अंग।
जाँघिया-संज्ञा पुं० काछा।
जाँच-संज्ञा स्त्री० १. परीक्षा। २. तहक़ीक़ात।
जाँचक*†-संज्ञा पुं० दे० "याचक"।
जाँचना-क्रि० स० १. परीक्षा करना। २. माँगना।
जात, जाँता-संज्ञा पुं० आटा पीसने की बड़ी चक्की।
जाँब*†-संज्ञा पुं० दे० "जामुन"।
जांबवान्-संज्ञा पुं० सुग्रीव का मंत्री, एक भालू, जो राम की सेना में लड़ा था।
जाँवर*†-संज्ञा पुं० गमन।
जा*†-सर्व० जिस।
वि० मुनासिब।
जाई-संज्ञा स्त्री० बेटी।
जाकड़-संज्ञा पुं० माल इस शर्त पर ले आना कि यदि वह पसंद न होगा, तो फेर दिया जायगा।
जाग-संज्ञा स्त्री० जागने की क्रिया या भाव।

जोवना॰–क्रि॰ स॰ १. जोहना । २. ढूँढ़ना ।
जोश–संज्ञा पुं॰ १. उबाल । २. मनोवेग ।
जोशीला–वि॰ [स्त्री॰ जोशीली] जिसमें खूब जोश हो ।
जोष–संज्ञा स्त्री॰ स्त्री ।
जोषिता–संज्ञा स्त्री॰ स्त्री ।
जोषी–संज्ञा पुं॰ १. गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति । २. ज्योतिषी ।
जोह॥–संज्ञा स्त्री॰ १. खोज । २. इंतज़ार ।
जोहन॥–संज्ञा स्त्री॰ १. देखने या जोहने की क्रिया । २. तलाश ।
जोहना–क्रि॰ स॰ १. देखना । २. ढूँढ़ना ।
जोहार–संज्ञा स्त्री॰ प्रणाम ।
जौं†–अव्य॰ यदि ।
क्रि॰ वि॰ दे॰ "ज्यों" ।
जौ–संज्ञा पुं॰ १. गेहूँ की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीज या दाने की गिनती अनाजों में है । २. छः राई (सरदल) के बराबर एक तौल ।
†अव्य॰ यदि ।
॰† क्रि॰ वि॰ जब ।
जौज़ा–संज्ञा स्त्री॰ जोरू ।
जौन†॰–सर्व॰ जो ।
वि॰ जो ।
संज्ञा पुं॰ दे॰ "यवन" ।
जौपै॰†–अव्य॰ अगर ।
जौहर–संज्ञा पुं॰ १.रत्न । २.विशेषता । संज्ञा पुं॰ राजपूतों में युद्ध समय की एक प्रथा जिसके अनुसार नगर या गढ़ में शत्रु-प्रवेश का निश्चय होने पर उनकी स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल जाते थे ।
जौहरी–संज्ञा पुं॰ १. रत्न परखने या बेचनेवाला । २. पारखी ।
ज्ञप्त–वि॰ जाना हुआ ।
ज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री॰ जानकारी ।
ज्ञात–वि॰ जाना हुआ ।
ज्ञातव्य–वि॰ जो जाना जा सके ।
ज्ञाता–वि॰ [स्त्री॰ ज्ञात्री] जानकार ।
ज्ञाति–संज्ञा पुं॰ १. एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य । २. भाई-बंधु ।
संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "जाति" ।
ज्ञान–संज्ञा पुं॰ जानकारी ।
ज्ञानगम्य–संज्ञा पुं॰ जो जाना जा सके ।
ज्ञानगोचर–वि॰ दे॰ "ज्ञानगम्य" ।
ज्ञानवान्–वि॰ ज्ञानी ।
ज्ञानवृद्ध–वि॰ जिसकी जानकारी अधिक हो ।
ज्ञानी–वि॰ जानकार ।
ज्ञानेंद्रिय–संज्ञा स्त्री॰ आँख, कान, नाक, रसना, त्वचा आदि पाँच इंद्रियाँ जो विषयों का बोध कराती हैं ।
ज्ञापन–संज्ञा पुं॰ [वि॰ ज्ञापित, ज्ञाप्य] जताने या बताने का कार्य्य ।
ज्ञेय–वि॰ १. जानने योग्य । २. जो जाना जा सके ।
ज्या–संज्ञा स्त्री॰ धनुष की डोरी ।
ज्यादती–संज्ञा स्त्री॰ १. अधिकता । २. अत्याचार ।
ज़्यादा–वि॰ अधिक ।
ज्यामिति–संज्ञा स्त्री॰ रेखागणित ।
ज्येष्ठ–वि॰ बड़ा ।
संज्ञा पुं॰ जेठ का महीना ।
ज्येष्ठता–संज्ञा स्त्री॰ १. बड़ाई । २. श्रेष्ठता ।

जारन†–संज्ञा पुं० १. ईंधन। २. जलाने की क्रिया या भाव।
जारना†–क्रि० स० दे० "जलाना"।
जारिणी–संज्ञा स्त्री० बदचलन औरत।
जारी–वि० १. बहता हुआ। २. चलता हुआ।
संज्ञा स्त्री० छिनाला।
जालंधरी विद्या–संज्ञा स्त्री० माया।
जालंध्र–संज्ञा पुं० झरोखे की जाली।
जाल–संज्ञा पुं० १. तार या सूत आदि का पट जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों आदि को पकड़ने में होता है। २. किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति।
संज्ञा पुं० धोखा।
जालदार–वि० जिसमें जाल की तरह पास पास बहुत से छेद हों।
जालसाज़–संज्ञा पुं० वह जो दूसरों को धोखा देने के लिये किसी प्रकार की झूठी कारवाई करे।
जालसाज़ी–संज्ञा स्त्री० दगाबाज़ी।
जाला–संज्ञा पुं० १. मकड़ी का बुना हुआ पतले तारों का जाल। २. आँख का एक रोग।
जालिका–संज्ञा स्त्री० १. जाली। २. समूह।
ज़ालिम–वि० ज़ुल्म करनेवाला।
जालिया–वि० जालसाज़।
जाली–संज्ञा स्त्री० १. छोटे छोटे छेदों का समूह। २. कच्चे आम के अंदर गुठली के ऊपर का तंतु-समूह।
वि० नकली।
जावक*†–संज्ञा पुं० महावर।
जावित्री–संज्ञा स्त्री० जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका जो औषध के काम में आता है।
जासु†*–वि० जिसका।
जासूस–संज्ञा पुं० भेदिया।
जासूसी–संज्ञा स्त्री० गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना।
ज़ाहिर–वि० प्रकट।
ज़ाहिरदारी–संज्ञा स्त्री० वह बात या काम जो केवल दिखावे के लिये हो।
ज़ाहिरा–क्रि० वि० देखने में।
जाहिल–वि० मूर्ख।
जाही–संज्ञा स्त्री० चमेली की जाति का एक प्रकार का सुगंधित फूल।
जिंद–संज्ञा पुं० भूत।
ज़िंदगी–संज्ञा स्त्री० जीवन।
ज़िंदा–वि० जीवित।
ज़िंदादिल–वि० [संज्ञा ज़िंदादिली] खुश-मिज़ाज।
जिंवाना†–क्रि० स० दे० "जिमाना"।
जिंस–संज्ञा स्त्री० १. प्रकार। २. सामग्री। ३. अनाज।
जिंसवार–संज्ञा पुं० पटवारियों का वह काग़ज़ जिसमें वे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं।
जिआना†*–क्रि० स० दे० "जिलाना"।
जिउ†–संज्ञा पुं० दे० "जीव"।
जिउका†–संज्ञा स्त्री० दे० "जीविका"।
जिउकिया–संज्ञा पुं० रोज़गारी।
ज़िक्र–संज्ञा पुं० चर्चा।
जिगर–संज्ञा पुं० [वि० जिगरी] कलेजा।
जिगरा–संज्ञा पुं० साहस।
जिगरी–वि० १. दिली। २. अत्यंत घनिष्ठ।
जिज्ञासा–संज्ञा स्त्री० जानने की इच्छा।
जिज्ञासु–वि० खोजी।
जित्–वि० जीतनेवाला।

ज्यों॰-क्रि॰ वि॰ १. जिस प्रकार। २. जैसे ही।
ज्योति-संज्ञा स्त्री॰ १. प्रकाश। २. दृष्टि।
ज्योतिर्मय-वि॰ प्रकाशमय।
ज्योतिर्लिंग-संज्ञा पुं॰ महादेव।
ज्योतिर्लोक-संज्ञा पुं॰ ध्रुवलोक।
ज्योतिर्विद्-संज्ञा पुं॰ ज्योतिषी।
ज्योतिर्विद्या-संज्ञा स्त्री॰ ज्योतिष।
ज्योतिश्चक्र-संज्ञा पुं॰ नक्षत्रों और राशियों का मंडल।
ज्योतिष-संज्ञा पुं॰ वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है।
ज्योतिषी-संज्ञा पुं॰ गणक।
ज्योतिष्क-संज्ञा पुं॰ ग्रह, तारा, नक्षत्र आदि का समूह।
ज्योतिष्पथ-संज्ञा पुं॰ आकाश।
ज्योतिष्पुंज-संज्ञा पुं॰ नक्षत्र-समूह।
ज्योतिष्मती-संज्ञा स्त्री॰ १. मालकँगनी। २. रात्रि।
ज्योतिष्मान्-वि॰ प्रकाशयुक्त। संज्ञा पुं॰ सूर्य।
ज्योत्स्ना-संज्ञा स्त्री॰ १. चाँदनी। २. चाँदनी रात।
ज्योनार-संज्ञा स्त्री॰ १. रसोई। २. भोज।
ज्योरी†-संज्ञा स्त्री॰ रस्सी।
ज्योहत, ज्योहर॰†-संज्ञा पुं॰ आत्म-हत्या।
ज्यौ-अव्य॰ जो।
ज्यौतिष-वि॰ ज्योतिष-संबंधी।
ज्वर-संज्ञा पुं॰ बुखार।
ज्वलंत-वि॰ प्रकाशमान्।
ज्वलन-संज्ञा पुं॰ १. जलन। २. अग्नि। ३. लपट।
ज्वलित-वि॰ जला हुआ।
ज्वान†-वि॰ दे॰ "जवान"।
ज्वार-संज्ञा स्त्री॰ १. जोन्हरी। जुंडी। २. समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव।
ज्वार-भाटा-संज्ञा पुं॰ समुद्र के जल का चढ़ाव-उतार या लहर का बढ़ना और घटना जो चंद्रमा और सूर्य्य के आकर्षण से होता है।
ज्वाल-संज्ञा पुं॰ लपट।
ज्वाला-संज्ञा स्त्री॰ १. लपट। २. गरमी।
ज्वालामुखी पर्वत-संज्ञा पुं॰ वह पर्वत जिसकी चोटी में से धूआँ, राख तथा पिघले या जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय समय पर निकला करते हैं।

जित–वि० जीता हुआ।
संज्ञा पुं० जीत।
⊛†क्रि० वि० जिधर।
जितना–वि० [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा का।
क्रि० वि० जिस मात्रा में।
जितवैया†–वि० जीतनेवाला।
जिताना–क्रि० स० जीतने में सहायता करना।
जितेंद्रिय–वि० जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो।
जितो⊛†–वि० जितना।
क्रि० वि० जिस मात्रा में।
जित्वर–वि० जेता।
ज़िद–संज्ञा स्त्री० [वि० ज़िद्दी] हठ।
ज़िद्दी–वि० हठी।
जिधर–क्रि० वि० जिस ओर।
जिन–संज्ञा पुं० जैनों के तीर्थंकर।
वि० सर्व० "जिस" का बहुवचन।
संज्ञा पुं० मुसलमान भूत।
ज़िना–संज्ञा पुं० व्यभिचार।
ज़िनाकार–वि० [संज्ञा ज़िनाकारी] व्यभिचारी।
जिनि†–अव्य० मत।
जिन्हा†⊛–सर्व० दे० "जिन"।
जिब्भा, जिभ्या⊛–संज्ञा स्त्री० दे० "जिह्वा"।
जिमाना–क्रि० स० भोजन कराना।
जिमि⊛–क्रि० वि० जैसे।
ज़िम्मा–संज्ञा पुं० जवाबदिही।
ज़िम्मादार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िम्मावार"।
ज़िम्मावार–संज्ञा पुं० उत्तरदाता।
ज़िम्मावारी–संज्ञा स्त्री० जवाबदिही।
ज़िम्मेवार–संज्ञा पुं० दे० "ज़िम्मावार"।
जिय†–संज्ञा पुं० मन।
जियन–संज्ञा पुं० जीवन।
जियरा⊛†–संज्ञा पुं० जीव।
ज़ियान–संज्ञा पुं० घाटा।
जियाना†⊛–क्रि० स० जिलाना।
ज़िरगा–संज्ञा पुं० १. झुंड। २. मंडली।
जिरह–संज्ञा स्त्री० १. हुज्जत। २. अदालत के प्रश्न।
ज़िरह–संज्ञा स्त्री० बकतर।
ज़िरही–वि० कवचधारी।
ज़िला–संज्ञा पुं० प्रांत।
जिलाना–क्रि० स० १. जीवन देना। † २. पालना।
जिलासाज़–संज्ञा पुं० हथियारों आदि पर ओप चढ़ानेवाला।
जिलाह⊛–संज्ञा पुं० अत्याचारी।
जिल्द–संज्ञा स्त्री० [वि० जिल्दी] १. खाल। २. वह पट्ठा या दफ़्ती जो किसी किताब के ऊपर उसकी रक्षा के लिये लगाई जाती है। ३. पुस्तक की एक प्रति।
जिल्दबंद–संज्ञा पुं० जिल्द बाँधनेवाला।
जिल्दसाज़–संज्ञा पुं० दे० "जिल्दबंद"।
ज़िल्लत–संज्ञा स्त्री० १. अनादर। २. दुर्गति।
जिव†–संज्ञा पुं० दे० "जीव"।
जिवाना–क्रि० स० दे० "जिलाना"।
जिस–वि० 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्तियुक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है।
सर्व० 'जो' का वह रूप जो उसे

झ

झ–हिंदी व्यंजन वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।
झंकना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।
झंकार–संज्ञा स्त्री० झंझनाहट का शब्द।
झंकारना–क्रि० स० "झनझन" शब्द उत्पन्न करना।
क्रि० अ० "झनझन" शब्द होना।
झंखना–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झंखाड़–संज्ञा पुं० १. घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा। २. व्यर्थ की और रद्दी चीज़ों का समूह।
झंझट–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ का झगड़ा।
झंझनाना–क्रि० अ० झंकारना।
क्रि० स० झनझन शब्द करना।
झंझरा–वि० [स्त्री० झंझरी] जिसमें बहुत से छोटे छोटे छेद हों।
झंझरी–संज्ञा स्त्री० १. किसी चीज़ में बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह। २. दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जालीदार खिड़की।
झंझा–संज्ञा पुं० वह तेज़ आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो।
झंझावात–संज्ञा पुं० दे० "झंझा"।
झंझी–संज्ञा स्त्री० फूटी कौड़ी।
झँझोड़ना–क्रि० स० झकझोरना।
झंडा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० झंडी] पताका। ध्वजा।
झँडूला–वि० १. जिसका मुंडनसंस्कार न हुआ हो। २. सघन।
झंप–संज्ञा पुं० उछाल।
झँपना–क्रि० अ० १. ढँकना। २. लज्जित होना।
झँपरी–संज्ञा स्त्री० ओहार।
झँपान–संज्ञा पुं० पहाड़ी सवारी के लिये एक प्रकार की खटोली।
झँपोला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० झँपोली या झँपोलिया] छाबड़ा।
झँवकार†–वि० झाँवले रंग का।
झँवराना–क्रि० अ० १. कुछ काला पड़ना। २. कुम्हलाना।
झँवा–संज्ञा पुं० दे० "झाँवा"।
झँवाना–क्रि० अ० १. झाँवे के रंग का हो जाना। २. अग्नि का मंद हो जाना।
क्रि० स० १. झाँवे के रंग का कर देना। २. आग ठंढी करना।
झँसना–क्रि० स० किसी को बहकाकर उसका धन आदि ले लेना।
झई†–संज्ञा स्त्री० दे० "झाँई"।
झउआ†–संज्ञा पुं० दे० "झावा"।
झक–संज्ञा स्त्री० सनक।
संज्ञा स्त्री० दे० "झख"।
वि० चमकीला।
झकझक–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की हुज्जत।
झकझका–वि० चमकीला।
झकझकाहट–संज्ञा स्त्री० चमक।
झकझेलना–क्रि० स० दे० "झकझोरना"।
झकझोर–संज्ञा पुं० झटका।
वि० झोंकेदार।
झकझोरना–क्रि० स० किसी चीज़ को पकड़कर खूब हिलाना।
झकझोरा–संज्ञा पुं० झटका।
झकना†–क्रि० अ० १. बकवाद करना। २. क्रोध में आकर अनुचित

विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।
जिस्ता–संज्ञा पुं० १. दे० "जस्ता"। ‡ २. दे० "दस्ता"।
जिस्म–संज्ञा पुं० शरीर।
ज़िहन–संज्ञा पुं० समझ।
जिहाद–संज्ञा पुं० मज़हबी लड़ाई।
जिह्वा–संज्ञा स्त्री० जीभ।
जींगन†–संज्ञा पुं० जुगनू।
जी–संज्ञा पुं० मन।
अव्य० एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है अथवा किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रति-संबोधन के रूप में प्रयुक्त होता है।
जीश्र, जीउ⁎–संज्ञा पुं० दे० "जी", "जीव"।
जीगन–संज्ञा पुं० दे० "जुगनू"।
जीजा–संज्ञा पुं० बड़ी बहिन का पति।
जीजी–संज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन।
जीत–संज्ञा स्त्री० विजय।
जीतना–क्रि० स० विजय प्राप्त करना।
जीता–वि० १. जीवित। २. तौल या नाप में ठीक से कुछ बढ़ा हुआ।
जीन⁎–वि० जर्जर।
ज़ीन–संज्ञा पुं० १. चारजामा। २. एक प्रकार का बहुत मोटा सूती कपड़ा।
ज़ीनपोश–संज्ञा पुं० ज़ीन के ऊपर ढकने का कपड़ा।
ज़ीनसवारी–संज्ञा स्त्री० घोड़े पर ज़ीन रखकर चढ़ने का कार्य।
जीना–क्रि० अ० जीवित रहना।
ज़ीना–संज्ञा पुं० सीढ़ी।
जीमना–क्रि० स० भोजन करना।
जीय†⁎–संज्ञा पुं० दे० "जी"।
जीयट–संज्ञा पुं० दे० "जीवट"।
जीयति†⁎–संज्ञा स्त्री० जीवन।
जीर–संज्ञा पुं० १. ज़ीरा। २. केसर। ३. खड्ग।
⁎संज्ञा पुं० जिरह।
⁎वि० जीर्ण।
जीरण⁎–वि० दे० "जीर्ण"।
ज़ीरा–संज्ञा पुं० १. दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं। २. फूलों का केसर।
जीरी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अगहनी धान जो कई बरसों तक रह सकता है।
जीर्ण–वि० बहुत दिनों का।
जीर्ण ज्वर–संज्ञा पुं० पुराना बुखार।
जीर्णता–संज्ञा स्त्री० १. बुढ़ापा। २. पुरानापन।
जीर्णोद्धार–संज्ञा पुं० मरम्मत।
जीवंत–वि० जीता जागता।
जीव–संज्ञा पुं० १. प्राणियों का चेतन तत्त्व। २. प्राण।
जीवक–संज्ञा पुं० १. प्राण धारण करनेवाला। २. सेवक।
जीवट–संज्ञा पुं० साहस।
जीवदान–संज्ञा पुं० प्राणदान।
जीवधारी–संज्ञा पुं० प्राणी।
जीवन–संज्ञा पुं० [वि० जीवित] ज़िंदगी।
जीवनधन–संज्ञा पुं० प्राणप्रिय।
जीवनबूटी–संज्ञा स्त्री० संजीवनी।
जीवनमूरि–संज्ञा स्त्री० १. जीवनबूटी। २. अत्यंत प्रिय वस्तु।
जीवनी–संज्ञा स्त्री० जीवन भर का वृत्तांत।
जीवनोपाय–संज्ञा पुं० जीविका।
जीवयोनि–संज्ञा स्त्री० जीव जंतु।
जीवरा⁎‡–संज्ञा पुं० जीव।
जीवरि‡–संज्ञा पुं० जीवन।

वचन कहना।
झकाझक–वि० उज्ज्वल।
झकुराना†–क्रि० अ० झूमना।
क्रि० स० झूमने में प्रवृत्त करना।
झकोर*†–संज्ञा पुं० १. हवा का झोंका। २. झटका।
झकोरना–क्रि० अ० हवा का झोंका मारना।
झकोरा–संज्ञा पुं० हवा का झोंका।
झकोल*†–संज्ञा पुं० दे० "झकोर"।
झक्कड़–संज्ञा पुं० तेज़ आँधी।
वि० दे० "झक्की"।
झक्की–वि० १. बहुत बकबक करनेवाला। २. सनकी।
झक्खना*†–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झख–संज्ञा स्त्री० झीखने का भाव या क्रिया।
झखना*–क्रि० अ० दे० "झीखना"।
झखी*–संज्ञा स्त्री० मछली।
झगड़ना–क्रि० अ० झगड़ा करना।
झगड़ा–संज्ञा पुं० तकरार।
झगड़ालू–वि० कलहप्रिय।
झगड़ी*–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।
झगराऊ*†–वि० दे० "झगड़ालू"।
झगरी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झगड़ालू"।
झज्झर–संज्ञा स्त्री० कुछ चौड़े मुँह का पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन।
झझक–संज्ञा स्त्री० १. भड़क। २. झुँझलाहट।
झझकन*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झझक"।
झझकना–क्रि० अ० १. भड़कना। २. झुँझलाना।
झझकाना–क्रि० स० भड़काना।
झझकारना–क्रि० स० [झनकार] १. डपटना। २. तुच्छ समझना।
झट–क्रि० वि० तुरंत।
झटकना–क्रि० स० १. झटका देना। २. ऐंठना।
झटका–संज्ञा पुं० झोंका।
झटकारना–क्रि० स० दे० "झटकना"।
झटपट–अव्य० तुरंत।
झटिति†*–क्रि० वि० १. झट। २. बिना समझे बूझे।
झड़–संज्ञा स्त्री० दे० "झड़ी"।
झड़न–संज्ञा स्त्री० १. झड़ी हुई चीज़। २. झड़ने की क्रिया या भाव।
झड़ना–क्रि० अ० किसी चीज़ से उसके छोटे छोटे अंगों का टूटकर गिरना।
झड़प–संज्ञा स्त्री० १. मुठभेड़। २. आवेश।
झड़पना–क्रि० अ० १. आक्रमण करना। २. झटकना।
झड़वाना–क्रि० स० झाड़ने का काम दूसरे से कराना।
झड़ाझड़–क्रि० वि० लगातार।
झड़ी–संज्ञा स्त्री० १. लगातार झड़ने की क्रिया। २. छोटी बूँदों की लगातार वर्षा।
झन–संज्ञा स्त्री० धातु से टुकड़े के बजने की ध्वनि।
झनक–संज्ञा स्त्री० झनझन शब्द।
झनकना–क्रि० अ० झनकार का शब्द करना।
झनकार–संज्ञा स्त्री० दे० "झंकार"।
झनझनाना–क्रि० अ० झनझन शब्द होना।
क्रि० स० झनझन शब्द उत्पन्न करना।
झनाझन–संज्ञा स्त्री० झंकार।
क्रि० वि० झनझन शब्द सहित।

जीवलोक–संज्ञा पुं० पृथ्वी।
जीवहत्या, जीवहिंसा–संज्ञा स्त्री० प्राणियों का वध।
जीवात्मा–संज्ञा पुं० आत्मा।
जीविका–संज्ञा स्त्री० रोज़ी।
जीवित–वि० जीता हुआ।
जीवी–वि० १.जीनेवाला। २.जीविका करनेवाला।
जीवेश–संज्ञा पुं० परमात्मा।
जीह०–संज्ञा स्त्री० दे० "जीभ"।
जुंबिश–संज्ञा स्त्री० चाल। हरकत।
जु०–वि०, क्रि० वि० दे० "जो"।
जुआ–संज्ञा पुं० रुपए पैसे की बाज़ी लगाकर खेला जानेवाला खेल।
जुआचोर–संज्ञा पुं० धोखेबाज़।
जुआरी–संज्ञा पुं० जुआ खेलनेवाला।
जुई–संज्ञा स्त्री० छोटी जूँ।
ज़ुकाम–संज्ञा पुं० सरदी।
जुग–संज्ञा पुं० १. युग। २. जोड़ा। ३. पुश्त।
जुगजुगाना–क्रि० अ० १. टिमटिमाना। २. उभरना।
जुगत–संज्ञा स्त्री० उपाय।
जुगनी–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू"।
जुगनू–संज्ञा पुं० १. एक बरसाती कीड़ा जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है। खद्योत। २. पान के आकार का गले का एक गहना।
जुगल–वि० दे० "युगल"।
जुगवना–क्रि० स० १.संचित रखना। २. हिफ़ाज़त से रखना।
जुगालना–क्रि० अ० चौपायों का पागुर करना।
जुगाली–संज्ञा स्त्री० पागुर।
जुगुत–संज्ञा स्त्री० दे० "जुगत"।
जुगुप्सा–संज्ञा स्त्री० [वि० जुगुप्सित] १. निंदा। २. घृणा।
जुज्झ०†–संज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध"।
जुझवाना०†–क्रि० स० लड़ा देना।
जुझाऊ–वि० युद्ध-संबंधी।
जुझार†०–वि० १.लड़ाका। २.युद्ध।
जुट–संज्ञा स्त्री० १. जोड़ी। २. दल।
जुटना–क्रि० अ० १. जुड़ना। २. एकत्र होना। ३.कार्य्य में सम्मिलित होना।
जुटाना–क्रि० स० जुटना का सकर्मक रूप।
जुट्टी–संज्ञा स्त्री० गड्डी।
वि० जुटी या मिली हुई।
जुठारना–क्रि० स० जूठा करना।
जुठिहारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० जुठिहारी] जूठा खानेवाला।
जुड़ना–क्रि० अ० १. संयुक्त होना। २. एकत्र होना।
जुड़पित्ती–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़े बड़े चकत्ते पड़ जाते हैं।
जुड़वाँ–वि० जुड़े हुए।
संज्ञा पुं० एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे।
जुड़वाना†–क्रि० स० ठंढा करना।
क्रि० स० दे० "जोड़वाना"।
जुड़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ाई"।
जुड़ाना†–क्रि० अ० १. ठंढा होना २. शांत होना।
क्रि० स० ठंढा करना।
जुड़ावना†–क्रि० स० दे० "जुड़ाना"।
जुत०–वि० दे० "युक्त"।
जुतना–क्रि० अ० १. नधना। २. किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना।
जुतवाना–क्रि० स० दूसरे से जोतने का काम कराना।

झपाहट–संज्ञा स्त्री० झनझनाहट।
झप–क्रि० वि० तुरंत।
झपक–संज्ञा स्त्री० १. बहुत थोड़ा समय। २. पलक का गिरना। ३. हलकी नींद।
झपकना–क्रि० अ० १. पलक का गिरना। २. ऊँघना। (क्रि०) ३. झपटना।
झपकाना–क्रि० स० पलकों को बार बार बंद करना।
झपकी–संज्ञा स्त्री० १. हलकी नींद। २. आँख झपकने की क्रिया। ३. धोखा।
झपट–संज्ञा स्त्री० झपटने की क्रिया या भाव।
झपटना–क्रि० अ० टूटना।
झपटाना–क्रि० स० किसी को झपटने में प्रवृत्त करना।
झपट्टा–संज्ञा पुं० दे० "झपट"।
झपताल–संज्ञा पुं० संगीत में एक ताल।
झपना–क्रि० अ० १.पलकों का गिरना। २. झेंपना।
झपाना–क्रि० स० १. मूँदना। २. झुकाना।
झपित–वि० १. झपा हुआ। २. जिसमें नींद भरी हो। ३. लज्जित।
झपेट–संज्ञा स्त्री० दे० "झपट"।
झपेटना–क्रि० स० दबोचना।
झपेटा–संज्ञा पुं० चपेट।
झप्पान–संज्ञा पुं० दे० "झंपान"।
झबरा–वि० [स्त्री० झबरी] जिसके बहुत लंबे लंबे बिखरे हुए बाल हों।
झबरीला–वि० कुछ बड़ा, चारों तरफ बिखरा और घूमा हुआ (बाल)।
झबरैरा†–वि० दे० "झबरीला"।
झबा–संज्ञा पुं० दे० "झब्बा"।
झबिया†–संज्ञा स्त्री० छोटा झब्बा।
झबूकना†–क्रि० अ० चमकना।
झब्बा–संज्ञा पुं० गुच्छा।
झमक–संज्ञा स्त्री० १. चमक का अनुकरण। २. प्रकाश। ३. नखरे की चाल।
झमकना–क्रि० अ० १. दमकना। २. झमझम शब्द करना।
झमकाना–क्रि० स० १. चमकाना। २. आभूषण या हथियार आदि बजाना और चमकाना।
झमझम–संज्ञा स्त्री० १. छमछम। २. पानी बरसने का शब्द।
वि० जो खूब चमके।
क्रि० वि० झमझम शब्द के साथ।
झमना–क्रि० अ० झुकना।
झमाका–संज्ञा पुं० १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २. ठसक।
झमाझम–क्रि० वि० १. दमक के साथ। २. झमझम शब्द सहित।
झमाना–क्रि० अ० छाना।
झमेला–संज्ञा पुं० १. बखेड़ा। २. भीड़भाड़।
झमेलिया–संज्ञा पुं० झगड़ालू।
झर–संज्ञा स्त्री० १. पानी गिरने का स्थान। २. झरना। ३. झड़ी।
झरझर–संज्ञा स्त्री० जल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।
झरन–संज्ञा स्त्री० झरने की क्रिया।
झरना†–क्रि० अ० १. दे० "झड़ना"। २. ऊँची जगह से सोते का गिरना।
संज्ञा पुं० सोता।

जुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।
जुतियाना–क्रि० स० जूता मारना।
जुदा–वि० पृथक्।
जुदाई–संज्ञा स्त्री० बिछोह।
जुद्ध*–संज्ञा पुं० दे० "युद्ध"।
जुन्हाई–संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी। २. चंद्रमा।
जुमला–वि० सब।
संज्ञा पुं० पूरा वाक्य।
जुमा–संज्ञा पुं० शुक्रवार।
जुरअत–संज्ञा स्त्री० साहस।
जुरझुरी–संज्ञा स्त्री० हरारत।
जुरना*–क्रि० स० दे० "जुड़ना"।
जुरमाना–संज्ञा पुं० अर्थ-दंड।
जुर्म–संज्ञा पुं० अपराध।
जुर्राब–संज्ञा स्त्री० मोज़ा।
जुलाब–संज्ञा पुं० दस्त लानेवाली दवा।
जुलाहा–संज्ञा पुं० कपड़ा बुननेवाला।
ज़ुल्फ़–संज्ञा स्त्री० सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं।
ज़ुल्म–संज्ञा पुं० अत्याचार।
जुलूस–संज्ञा पुं० १. किसी उत्सव का समारोह। २. उत्सव और समारोह की यात्रा।
जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० तलाश।
जुहाना†–क्रि० स० संचित करना।
जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।
जूँ–संज्ञा स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है।
जू–अव्य० जी।
जूआ–संज्ञा पुं० १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है। २. हार-जीत का खेल।
जूझ*–संज्ञा स्त्री० युद्ध।
जूझना†*–क्रि० अ० लड़ना।
जूट–संज्ञा पुं० जटा की गाँठ।
जूठन–संज्ञा स्त्री० वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो।
जूठा–वि० [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट।
संज्ञा पुं० दे० "जूठन"।
जूड़ा–संज्ञा पुं० १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं। २. चोटी। ३. घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी।
जूड़ी–संज्ञा स्त्री० वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है।
जूता–संज्ञा पुं० पादत्राण।
जूताखोर–वि० निर्लज्ज।
जूती–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का जूता।
जून†–संज्ञा पुं० समय।
संज्ञा पुं० तृण।
जूप–संज्ञा पुं० जूआ।
संज्ञा पुं० दे० "यूप"।
जूमना*†–क्रि० अ० इकट्ठा होना।
जूर*–संज्ञा पुं० जोड़।
जूरना*–क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
जूरा–संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा"।
जूस–संज्ञा पुं० रसा।
जूही–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध झाड़ या पौधा।
जृंभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० जृंभा। वि० जृंभक] जँभाई।
जृंभक–वि० जँभाई लेनेवाला।
जृंभण–संज्ञा पुं० जँभाई लेना।

संज्ञा पुं० एक प्रकार की छलनी जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है।
वि० झरनेवाला।
झरप†*–संज्ञा स्त्री० १. झोंका। २. वेग।
झरपना*†–क्रि० अ० १. झोंका देना। २. दे० "झड़पना"।
झराझर–क्रि० वि० १. झरझर शब्द सहित। २. लगातार।
झरोखा–संज्ञा पुं० हवा या रोशनी के लिये दीवारों में बनी हुई झँझरीदार छोटी खिड़की।
झल–संज्ञा पुं० जलन।
झलक–संज्ञा स्त्री० चमक।
झलकदार–वि० चमकीला।
झलकना–क्रि० अ० १. चमकना। २. आभास होना।
झलकनि*–संज्ञा स्त्री० दे० "झलक"।
झलका–संज्ञा पुं० फफोला।
झलकाना–क्रि० स० १. चमकाना। २. कुछ आभास देना।
झलझल–संज्ञा स्त्री० चमक।
क्रि० वि० रह रहकर निकलनेवाली आभा के साथ।
झलझलाना–क्रि० अ० चमकना।
क्रि० स० चमकाना।
झलझलाहट–संज्ञा स्त्री० चमक।
झलना–क्रि० स० हवा करने के लिये कोई चीज़ हिलाना।
क्रि० अ० इधर-उधर हिलना।
झलमल–संज्ञा पुं० १. अँधेरे के बीच थोड़ा थोड़ा उजाला। २. चमक-दमक।
क्रि० वि० दे० "झलझल"।
झलमला–वि० चमकीला।
झलमलाना–क्रि० अ० चमचमाना।
क्रि० स० किसी स्थिर ज्योति या लौ को हिलाना-डुलाना।
झलाझल–वि० खूब चमचमाता हुआ।
झलाझली–वि० चमकदार।
संज्ञा स्त्री० झलाझल का भाव।
झलामल†–संज्ञा स्त्री० चमक।
वि० चमकीला।
झल्ल–संज्ञा स्त्री० पागलपन।
झल्ला–संज्ञा पुं० बड़ा टोकरा।
† पागल।
झल्लाना–क्रि० अ० चिढ़ना।
क्रि० स० चिढ़ाना।
झष–संज्ञा पुं० मछली।
झषकेतु–संज्ञा पुं० कामदेव।
झसना–क्रि० स० दे० "झँसना"।
झहरना*–क्रि० अ० १. झड़ने का सा या झरझर शब्द करना। २. शिथिल पड़ना। ढीला होना।
क्रि० स० झिड़कना।
झहराना–क्रि० अ० १. शिथिल हो-कर या झरझर शब्द के साथ गिरना। २ झल्लाना।
झाँईं–संज्ञा स्त्री० १. परछाईं। २. धोखा। ३. हलके काले धब्बे जो रक्त-विकार से मनुष्यों के शरीर पर पड़ जाते हैं।
झाँक–संज्ञा स्त्री० झाँकने की क्रिया या भाव।
झाँकना–क्रि० अ० १. ओट की बगल में से देखना। २. इधर-उधर झुक-कर देखना।
झाँकनी†*–संज्ञा स्त्री० दे० "झाँकी"।
झाँका–संज्ञा पुं० दे० "झरोखा"।
झाँकी–संज्ञा स्त्री० १. दर्शन। २. झरोखा।

जृंभा–संज्ञा स्त्री० जँभाई।
जेंवना–क्रि० स० खाना।
जेऊ†–सर्व० 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ*†–सर्व० दे० "जो"।
जेठ–संज्ञा पुं० १. ग्रीष्म ऋतु का वह मास जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है। २. [स्त्री० जेठानी] पति का बड़ा भाई।
वि० बड़ा।
जेठरा†–वि० दे० "जेठ"।
जेठा–वि० [स्त्री० जेठी] बड़ा।
जेठाई–संज्ञा स्त्री० बड़ाई।
जेठानी–संज्ञा स्त्री० जेठ या पति के बड़े भाई की स्त्री।
जेठी–वि० जेठ का।
जेठौत, जेठौता†–संज्ञा पुं० [स्त्री० जेठौती] जेठ या पति के बड़े भाई का पुत्र।
जेता–संज्ञा पुं० १. जीतनेवाला। २. विष्णु।
वि० दे० "जितना"।
जेतिक*†–क्रि० वि० जितना।
जेते*†–वि० जितने।
जेतो*†–क्रि० वि० जितना।
जेब–संज्ञा पुं० खरीता। पाकेट।
संज्ञा स्त्री० शोभा।
जेबी–वि० १. जो जेब में रखा जा सके। २. बहुत छोटा।
जेय–वि० जीतने योग्य।
जेल–संज्ञा पुं० कारागार। बंदीगृह।
जेलखाना–संज्ञा पुं० कारागार।
जेंवना–क्रि० स० दे० "जीमना"।
जेवनार–संज्ञा स्त्री० १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना। भोज। २. रसोई।
जेवर–संज्ञा पुं० गहना।
जेवरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी।
जेहन–संज्ञा पुं० [वि० जहीन] बुद्धि।
जेहल–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहलखाना†–संज्ञा पुं० दे० "जेल"।
जेहि*–सर्व० १. जिसको। २. जिससे।
जै–संज्ञा स्त्री० दे० "जय"।
†वि० जितने।
जैन–संज्ञा पुं० १. भारत का एक धर्म-संप्रदाय। २. जैनी।
जैनी–संज्ञा पुं० जैन मतावलंबी।
जैनु*–संज्ञा पुं० भोजन।
जैबो†–क्रि० अ० दे० "जाना"।
जैसा–वि० [स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार का। २. जितना। ३. समान।
क्रि० वि० जितना।
जैसे–क्रि० वि० जिस प्रकार से।
जैसो†–वि०, क्रि० वि० दे० "जैसा"।
जों*–क्रि० वि० दे० "ज्यों"।
जोंक–संज्ञा स्त्री० पानी में रहनेवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका रक्त चूसता है।
जोंधैया–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
जो–सर्व० एक संबंधवाचक सर्वनाम।
*अव्य० यदि।
जोअना*†–क्रि० स० दे० "जोवना"।
जोइ*†–संज्ञा स्त्री० पत्नी।
†सर्व० दे० "जो"।
जोउ–सर्व० दे० "जो"।
जोखना–क्रि० स० तौलना।
जोखा–संज्ञा पुं० हिसाब।
जोखिम–संज्ञा स्त्री० झोंकी।
जोखों–संज्ञा स्त्री० दे० "जोखिम"।
जोग–संज्ञा पुं० दे० "योग"।

झाँखना०†–क्रि०अ०दे०"झीखना"।
झाँगला–वि० ढीला ढाला।
झाँझ–संज्ञा स्त्री० १.झाल। २.झाँझन।
झाँझड़ी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "झाँझन"।
झाँझन–संज्ञा स्त्री० पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना। पैजनी।
झाँझर०†–संज्ञा स्त्री० १. झाँझन। २. छलनी।
वि० १. पुराना। २. छेदवाला।
झाँझरी–संज्ञा स्त्री० १. झाँझ बाजा। २. झाँझन नामक गहना।
झाँप–संज्ञा स्त्री० १. वह जिससे कोई चीज़ ढाँकी जाय। २.नींद। ३.पर्दा।
संज्ञा पुं० उछल-कूद।
झाँपना–क्रि०स० पकड़कर दबा लेना।
झाँपना–क्रि० स० १. ढाँकना। २. झेंपना। लजाना। शरमाना।
झाँपी†–संज्ञा स्त्री० १. ढाँकने की टोकरी। २. मूँज की पिटारी।
झाँयली–संज्ञा स्त्री० १. झलक। २. आँख की कनखी।
झाँवाँ–संज्ञा पुं० जली हुई ईंट जिससे रगड़कर मैल छुड़ाते हैं।
झाँसना–क्रि० स० ठगना।
झाँसा–संज्ञा पुं० धोखा-धड़ी।
झा–संज्ञा पुं० मैथिल और गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।
झाग–संज्ञा पुं० पानी आदि का फेन।
झागड़ा०†–संज्ञा पुं० दे० "झगड़ा"।
झाड़–संज्ञा पुं० वह छोटा पेड़ या पौधा जिसकी डालियाँ जड़ या ज़मीन के बहुत पास से निकलकर चारों ओर खूब छितराई हुई हों।
संज्ञा स्त्री० १. झाड़ने की क्रिया। २. फटकार।
झाड़खंड–संज्ञा पुं० जंगल।
झाड़ झंखाड़–संज्ञा पुं० १. काँटेदार झाड़ियों का समूह। २. निकम्मी चीज़ें।
झाड़दार–वि० १.सघन। २.कँटीला।
झाड़न–संज्ञा स्त्री० १. वह जो झाड़ने पर निकले। २. वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ झाड़ी जाय।
झाड़ना–क्रि० स० १. छुड़ाना। २. अपनी योग्यता दिखलाने के लिये गढ़ गढ़कर बातें करना।
क्रि० स० १. किसी चीज़ पर पड़ी हुई गर्द आदि साफ़ करने के लिये उसको उठाकर झटका देना। २. झटकना। ३. डाँटना।
झाड़ बुहार–संज्ञा स्त्री० सफ़ाई।
झाड़ा–संज्ञा पुं० १. झाड़ फूँक। २. तलाशी। ३. मल। ४. पाखाना।
झाड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पौधा। २. छोटे पेड़ों का समूह।
झाड़ू–संज्ञा पुं० १. बुहारी। २. पुच्छल तारा।
झापड़–संज्ञा पुं० थप्पड़।
झाबर–संज्ञा पुं० दे० "झाबा"।
झाबा–संज्ञा पुं० टोकरा।
झायँ झायँ–संज्ञा स्त्री० १. झनकार। २. वह शब्द जो किसी सुनसान स्थान में हो।
झावँ झावँ–संज्ञा स्त्री० बकवाद।
झार†–वि० १. केवल। २. समस्त।
संज्ञा पुं० समूह।
संज्ञा स्त्री० १. दाह। २. ईर्ष्या। ३. आँच।
झारना–क्रि० स० १. बाल साफ़ करने के लिये कंघी करना। २.

जुताई–संज्ञा स्त्री० दे० "जोताई"।
जुतियाना–क्रि० स० जूता मारना।
जुदा–वि० पृथक्।
जुदाई–संज्ञा स्त्री० बिछोह।
जुद्ध॰–संज्ञा पुं० दे० "युद्ध"।
जुन्हाई–संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी। २. चंद्रमा।
जुमला–वि० सब।
संज्ञा पुं० पूरा वाक्य।
जुमा–संज्ञा पुं० शुक्रवार।
जुरअत–संज्ञा स्त्री० साहस।
जुरझुरी–संज्ञा स्त्री० हरारत।
जुरना॰–क्रि० स० दे० "जुड़ना"।
जुरमाना–संज्ञा पुं० अर्थ-दंड।
जुर्म–संज्ञा पुं० अपराध।
जुर्राब–संज्ञा स्त्री० मोज़ा।
जुलाब–संज्ञा पुं० दस्त लानेवाली दवा।
जुलाहा–संज्ञा पुं० कपड़ा बुननेवाला।
ज़ुल्फ़–संज्ञा स्त्री० सिर के लंबे बाल जो पीछे की ओर लटकते हैं।
ज़ुल्म–संज्ञा पुं० अत्याचार।
जुलूस–संज्ञा पुं० १. किसी उत्सव का समारोह। २. उत्सव और समारोह की यात्रा।
जुस्तजू–संज्ञा स्त्री० तलाश।
जुहाना†–क्रि० स० संचित करना।
जुही–संज्ञा स्त्री० दे० "जूही"।
जूँ–संज्ञा स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है।
जू–अव्य० जी।
जूआ–संज्ञा पुं० १. गाड़ी के आगे जड़ी हुई वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है। २. हार-जीत का खेल।
जूझ॰–संज्ञा स्त्री० युद्ध।
जूझना†॰–क्रि० अ० लड़ना।
जूट–संज्ञा पुं० जटा की गाँठ।
जूठन–संज्ञा स्त्री० वह खाने-पीने की वस्तु जिसे किसी ने खाकर छोड़ दिया हो।
जूठा–वि० [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट।
संज्ञा पुं० दे० "जूठन"।
जूड़ा–संज्ञा पुं० १. सिर के बालों की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ बालों को एक साथ लपेटकर ऊपर बाँधती हैं। २. चोटी। ३. घड़े के नीचे रखने की गेंडुरी।
जूड़ी–संज्ञा स्त्री० वह ज्वर जिसमें ज्वर आने के पहले रोगी को जाड़ा मालूम होता है।
जूता–संज्ञा पुं० पादत्राण।
जूताखोर–वि० निर्लज्ज।
जूती–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का जूता।
जून†–संज्ञा पुं० समय।
संज्ञा पुं० तृण।
जूप–संज्ञा पुं० जूआ।
संज्ञा पुं० दे० "यूप"।
जूमना॰†–क्रि० अ० इकट्ठा होना।
जूर॰–संज्ञा पुं० जोड़।
जूरना॰–क्रि० स० दे० "जोड़ना"।
जूरा–संज्ञा पुं० दे० "जूड़ा"।
जूस–संज्ञा पुं० रसा।
जूही–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध झाड़ या पौधा।
जृंभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० जृंभा। वि० जृंभक] जँभाई।
जृंभक–वि० जँभाई लेनेवाला।
जृंभण–संज्ञा पुं० जँभाई लेना।

अलग करना।

झाल–संज्ञा पुं० झाँझ नामक बाजा।
संज्ञा पुं० झालने की क्रिया या भाव।
संज्ञा स्त्री० चरपराहट।
संज्ञा स्त्री० पानी की झड़ी।

झालना–क्रि० स० १. धातु की बनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना। २. पीने की चीज़ों को ठंढा करने के लिये बरफ़ या शोरे में रखना।

झालर–संज्ञा स्त्री० झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज़।

झिंगवा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।

झिंझोटी–संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

झिझकना–क्रि० अ० दे० "झझकना"।

झिझकारना–क्रि० स० १. दे० "झझकारना"। २. दे० "झटकना"।

झिड़कना–क्रि० स० १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना। २. अलग फेंक देना।

झिड़की–संज्ञा स्त्री० फटकार।

झिनवा–संज्ञा पुं० महीन चावल का धान।

झिपना–क्रि० अ० दे० "झेंपना"।

झिपाना–क्रि० स० लज्जित करना।

झिरझिरा–वि० झँझरा। पतला।

झिरना–क्रि० अ० दे० "झरना"।

झिराना–क्रि० अ० दे० "झुराना"।

झिलँगा–संज्ञा पुं० ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।

झिलना–क्रि० अ० १. बलपूर्वक प्रवेश करना। २. सहा जाना।

झिलमिल–संज्ञा स्त्री० हिलता हुआ प्रकाश।
वि० रह रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला–वि० १. जो गफ़ या गाढ़ा न हो। २. चमकता हुआ।

झिलमिलाना–क्रि० अ० रह रहकर चमकना।
क्रि० स० हिलाना।

झिल्लड़–वि० पतला और झँझरा।

झिल्ली–संज्ञा पुं० झींगुर।
संज्ञा स्त्री० ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज़ दिखाई पड़े।

झींकना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झींखना–क्रि० अ० खीजना।
संज्ञा पुं० झींखने की क्रिया या भाव।

झींगा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मछली। २. एक प्रकार का धान।

झींगुर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है।

झींसी–संज्ञा स्त्री० फुहार।

झीखना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।

झीना–वि० १. पतला। २. दुबला।

झील–संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा तालाब।

झीलर–संज्ञा पुं० छोटी झील।

झीवर–संज्ञा पुं० मल्लाह।

झुँझलाना–क्रि० अ० खिजलाना।

झुंड–संज्ञा पुं० गरोह।

झुकना–क्रि० अ० १. निहुरना। २. नम्र होना।

झुकवाना–क्रि० स० झुकाने का काम दूसरे से कराना।

झुकाना–क्रि० स० १. निहुराना। २. विनीत बनाना।

झुकाव–संज्ञा पुं० १. ढाल। २. प्रवृत्ति।

झुठलाना–क्रि० स० १. झूठा बनाना। २. झूठ कहकर धोखा देना।
झुठाई०†–संज्ञा स्त्री० असत्यता।
झुठाना–क्रि० स० झूठा ठहराना।
झुनक–संज्ञा पुं० नूपुर का शब्द।
झुनकना–क्रि० अ० झुनझुन शब्द करना।
झुनकारा†–वि० [स्त्री० झुनकारी] पतला।
झुनझुन–संज्ञा पुं० नूपुर आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना–संज्ञा पुं० घुनघुना।
झुनझुनाना–क्रि० अ० झुनझुन शब्द होना।
क्रि० स० झुनझुन शब्द उत्पन्न करना।
झुनझुनी–संज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट।
झुपरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंपड़ी"।
झुमका–संज्ञा पुं० छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना।
झुमाना–क्रि० स० किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।
झुरझुरी–संज्ञा स्त्री० कँपकँपी।
झुरना–क्रि० अ० १. सूखना। २. घुलना।
झुरवाना–क्रि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना।
झुरसना०†–क्रि० अ० दे० "झुलसना"।
झुराना†–क्रि० स० सुखाना।
क्रि० अ० सूखना।
झुर्री–संज्ञा स्त्री० सिकुड़न।
झुलना†–संज्ञा पुं० दे० "झूला"।
वि० झूलनेवाला।
झुलनी–संज्ञा स्त्री० तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ में लटकाती हैं।
झुलसना–क्रि० अ० झौंसना।
क्रि० स० झौंसना।
झुलसवाना–क्रि० स० झुलसने का काम दूसरे से कराना।
झुलाना–क्रि० स० किसी को झूलने में प्रवृत्त करना।
झुलावना०†–क्रि० स० दे० "झुलाना"।
झूँझल–संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझलाहट"।
झूँसना†–क्रि० अ०; क्रि० स० दे० "झुलसना"।
झूँकटी–संज्ञा स्त्री० छोटी झाड़ी।
झूका०†–संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।
झूठ–संज्ञा पुं० वह बात जो यथार्थ न हो।
झूठमूठ–क्रि० वि० व्यर्थ।
झूठा–वि० १. असत्य। २. झूठ बोलनेवाला। ३. नकली।
झूठों–क्रि० वि० [हिं० झूठा] झूठ-मूठ।
झूम–संज्ञा स्त्री० १. झूमने की क्रिया या भाव। २. ऊँघ।
झूमक–संज्ञा पुं० १. गीत के साथ होनेवाला नृत्य। २. झूमर नामक पूरबी गीत।
झूमका–संज्ञा पुं० १. दे० "झुमका"। २. दे० "झूमक"।
झूमड़–संज्ञा पुं० दे० "झूमर"।
झूमड़ झामड़–संज्ञा पुं० ढकोसला।
झूमना–क्रि० अ० १. झोंके खाना। २. सिर और धड़ को बार बार आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना।
झूमर–संज्ञा पुं० १. झूमक नाम का गीत। २. इस गीत के साथ होनेवाला नाच।

टिप टिप–संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द।
टिपवाना–क्रि० स० टीपने का काम दूसरे से कराना।
टिप्पणी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।
टिप्पन–संज्ञा पुं० १. टीका। २. जन्मकुंडली।
टिप्पनी–संज्ञा स्त्री० टीका।
टिमटिमाना–क्रि० अ० क्षीण प्रकाश देना।
टिरफिस–संज्ञा स्त्री० विरोध।
टिर्राना–क्रि० अ० दे० "टर्राना"।
टिसुआ–संज्ञा पुं० आँसू।
टिहुनी–संज्ञा स्त्री० १. घुटना। २. कोहनी।
टिहुका–संज्ञा स्त्री० चीक।
टीक–संज्ञा स्त्री० १. गले में पहनने का एक गहना। २. माथे में पहनने का एक गहना।
टीकना–क्रि० स० टीका या तिलक लगाना।
टीका–संज्ञा पुं० १. तिलक। २. श्रेष्ठ पुरुष। ३. राजतिलक। ४. चिह्न। संज्ञा स्त्री० व्याख्या।
टीकाकार–संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।
टीन–संज्ञा पुं० १. राँगा। २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर।
टीप–संज्ञा स्त्री० १. दबाव। २. स्मरण के लिये किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया।
टीपन–संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री।
टीपना–क्रि० स० दबाना।
क्रि० स० लिखना।
टीम टाम–संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार।
टीला–संज्ञा पुं० पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग।
टीस–संज्ञा स्त्री० कसक।
टीसना–क्रि० अ० रह रहकर दर्द उठना।
टुंटा, टुंडा–वि० [स्त्री० टुंडी] १. ठूँठा। २. लूला।
टुइयाँ–वि० नाटा।
टुक–वि० थोड़ा।
टुकड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १. खंड। २. भाग।
टुकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। २. समुदाय।
टुचा–वि० तुच्छ।
टुटपुँजिया–वि० जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।
टुटरूँ टूँ–संज्ञा स्त्री० पंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द।
वि० १. अकेला। २. दुबला-पतला।
टुनगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।
टुरी–संज्ञा पुं० डली।
टूगना–क्रि० स० थोड़ा सा काटकर खाना।
टूका–संज्ञा पुं० टुकड़ा।
टूकरा–संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा"।
टूका–संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। २. भिक्षा।
टूट–संज्ञा स्त्री० १. खंड। २. टूटने का भाव।
संज्ञा पुं० घाटा।
टूटना–क्रि० अ० १. टुकड़े टुकड़े होना। २. एकबारगी धावा करना।
टूटा–वि० खंडित।
संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

अलग करना।
झाल–संज्ञा पुं० झाँझ नामक बाजा। संज्ञा पुं० झालने की क्रिया या भाव। संज्ञा स्त्री० चरपराहट। संज्ञा स्त्री० पानी की झड़ी।
झालना–क्रि० स० १. धातु की बनी हुई वस्तुओं में टाँका देकर जोड़ लगाना। २. पीने की चीज़ों को ठंढा करने के लिये बरफ़ या शोरे में रखना।
झालर–संज्ञा स्त्री० झालर या किनारे के आकार की लटकती हुई कोई चीज़।
झिगवा–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी मछली।
झिंझोटी–संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।
झिझकना–क्रि० अ० दे० "झझकना"।
झिझकारना–क्रि० स० १. दे० "झझकारना"। २. दे० "झटकना"।
झिड़कना–क्रि० स० १. अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना। २. अलग फेंक देना।
झिड़की–संज्ञा स्त्री० फटकार।
झिनवा–संज्ञा पुं० महीन चावल का धान।
झिपना–क्रि० अ० दे० "झेंपना"।
झिपाना–क्रि० स० लज्जित करना।
झिरझिरा–वि० झँझरा। पतला।
झिरना–क्रि० अ० दे० "झरना"।
झिराना–क्रि० अ० दे० "झुराना"।
झिलँगा–संज्ञा पुं० ऐसी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो।
झिलना–क्रि० अ० १. बलपूर्वक प्रवेश करना। २. सहा जाना।
झिलमिल–संज्ञा स्त्री० हिलता हुआ प्रकाश। वि० रह रहकर चमकता हुआ।
झिलमिला–वि० १. जो गफ़ या गाढ़ा न हो। २. चमकता हुआ।
झिलमिलाना–क्रि० अ० रह रहकर चमकना। क्रि० स० हिलाना।
झिल्लड़–वि० पतला और झँझरा।
झिल्ली–संज्ञा पुं० झींगुर। संज्ञा स्त्री० ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज़ दिखाई पड़े।
झींकना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।
झींखना–क्रि० अ० खीजना। संज्ञा पुं० झींखने की क्रिया या भाव।
झींगा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मछली। २. एक प्रकार का धान।
झींगुर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधेरे घरों, खेतों और मैदानों में होता है।
झींसी–संज्ञा स्त्री० फुहार।
झीखना–क्रि० अ० दे० "झींखना"।
झीना–वि० १. पतला। २. दुबला।
झील–संज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा तालाब।
झीलर–संज्ञा पुं० छोटी झील।
झीवर–संज्ञा पुं० मल्लाह।
झुँझलाना–क्रि० अ० खिझलाना।
झुंड–संज्ञा पुं० गरोह।
झुकना–क्रि० अ० १. निहुरना। २. नम्र होना।
झुकवाना–क्रि० स० झुकाने का काम दूसरे से कराना।
झुकाना–क्रि० स० १. निहुराना। २. विनीत बनाना।
झुकाव–संज्ञा पुं० १. ढाल। २. प्रवृत्ति।

से लदे हुए पशुओं का झुंड। बनजारों का झुंड।
टाँय टाँय–संज्ञा स्त्री० १. टें टें। २. बकवाद।
टाट–संज्ञा पुं० १. सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा। २. बिरादरी या उसका अंग।
टाटर–संज्ञा पुं० टट्टर।
टान–संज्ञा स्त्री० तनाव।
टानना–क्रि० स० दे० "तानना"।
टाप–संज्ञा स्त्री० घोड़े के पैरों के ज़मीन पर पड़ने का शब्द।
टापना–क्रि० अ० किसी वस्तु के लिये इधर-उधर हैरान फिरना।
क्रि० स० कूदना।
क्रि० अ० दे० "टपना"।
टापा–संज्ञा पुं० झाबा।
टापू–संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो। द्वीप।
टारना†–क्रि० स० दे० "टालना"।
टाल–संज्ञा स्त्री० ऊँचा। ढेर।
संज्ञा स्त्री० टालने का भाव।
टालटूल–संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।
टालना–क्रि० स० १. हटाना। २. मुलतवी करना।
टालमटूल–संज्ञा स्त्री० बहाना।
टिकट–संज्ञा पुं० वह कागज़ का टुकड़ा जो किसी प्रकार का महसूल या फ़ीस चुकानेवाले को प्रमाण-पत्र के रूप में दिया जाय।
टिकठी–संज्ञा स्त्री० १. शव ले जाने की रत्थी। २. दंड या फाँसी आदि देने का पुराना यंत्र-विशेष।
टिकना–क्रि० अ० १. ठहरना। २. कुछ दिनों तक काम देना।
टिकली–संज्ञा स्त्री० १. छोटी टिकिया। २. पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिंदी।
टिकस–संज्ञा पुं० महसूल।
टिकाई†–संज्ञा पुं० युवराज।
संज्ञा स्त्री० टिकने का भाव।
टिकाऊ–वि० मज़बूत।
टिकान–संज्ञा स्त्री० १. टिकने या ठहरने का भाव। २. पड़ाव।
टिकाना–क्रि० स० ठहराना।
टिकाव–संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. पड़ाव।
टिकिया–संज्ञा स्त्री० गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा।
टिकुली–संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।
टिकैत–संज्ञा पुं० १. युवराज। २. सरदार।
टिकोरा†–संज्ञा पुं० आम का छोटा और कच्चा फल।
टिक्का–संज्ञा पुं० दे० "टीका"।
टिक्की–संज्ञा स्त्री० टिकिया।
संज्ञा स्त्री० माथे पर की बिंदी।
टिघलना–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।
टिचन–वि० तैयार।
टिटकारना–क्रि० स० [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' कहकर हाँकना।
टिटिहरी–संज्ञा स्त्री० पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया। कुररी।
टिट्टिभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० टिट्टिभी] टिटिहरी।
टिड्डा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा परदार कीड़ा।
टिड्डी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो बड़ा भारी दल बाँधकर चलता और पेड़ पौधों को बड़ी हानि पहुँचाता है।

झुठलाना–क्रि० स० १. झूठा बनाना। २. झूठ कहकर धोखा देना।
झुठाई*†–संज्ञा स्त्री० असत्यता।
झुठाना–क्रि० स० झूठा ठहराना।
झुनक–संज्ञा पुं० नूपुर का शब्द।
झुनकना–क्रि० अ० झुनझुन शब्द करना।
झुनकारा†–वि० [स्त्री० झुनकारी] पतला।
झुनझुन–संज्ञा पुं० नूपुर आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना–संज्ञा पुं० घुनघुना।
झुनझुनाना–क्रि० अ० झुनझुन शब्द होना।
क्रि० स० झुनझुन शब्द बराबर करना।
झुनझुनी–संज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट।
झुपरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंपड़ी"।
झुमका–संज्ञा पुं० छोटी गोल कटोरी के आकार का कान का एक गहना।
झुमाना–क्रि० स० किसी को झूमने में प्रवृत्त करना।
झुरझुरी–संज्ञा स्त्री० कँपकँपी।
झुरना–क्रि० अ० १. सूखना। २. घुलना।
झुरवाना–क्रि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना।
झुरसना*†–क्रि० अ० दे० "झुलसना"।
झुराना†–क्रि० स० सुखाना।
क्रि० अ० सूखना।
झुर्री–संज्ञा स्त्री० सिकुड़न।
झुलना†–संज्ञा पुं० दे० "झूला"।
वि० झूलनेवाला।
झुलनी–संज्ञा स्त्री० तार में गुथा हुआ छोटे मोतियों का गुच्छा जिसे स्त्रियाँ नाक की नथ में लटकाती हैं।
झुलसना–क्रि० अ० झौंसना।
क्रि० स० झौंसना।
झुलसवाना–क्रि० स० झुलसने का काम दूसरे से कराना।
झुलाना–क्रि० स० किसी को झूलने में प्रवृत्त करना।
झुलावना*†–क्रि० स० दे० "झुलाना"।
झूँझल–संज्ञा स्त्री० दे० "झुँझलाहट"।
झूँसना†–क्रि० अ०, क्रि० स० दे० "झुलसना"।
झूँकटी–संज्ञा स्त्री० छोटी झाड़ी।
झूका*†–संज्ञा पुं० दे० "झोंका"।
झूठ–संज्ञा पुं० वह बात जो यथार्थ न हो।
झूठमूठ–क्रि० वि० व्यर्थ।
झूठा–वि० १. असत्य। २. झूठ बोलनेवाला। ३. नकली।
झूठों–क्रि० वि० [हिं० झूठा] झूठ-मूठ।
झूम–संज्ञा स्त्री० १. झूमने की क्रिया या भाव। २. ऊँघ।
झूमक–संज्ञा पुं० १. गीत के साथ होनेवाला नृत्य। २. झूमर नामक पूरबी गीत।
झूमका–संज्ञा पुं० १. दे० "झुमका"। २. दे० "झुमक"।
झूमड़–संज्ञा पुं० दे० "झूमर"।
झूमड़ झामड़–संज्ञा पुं० ढकोसला।
झूमना–क्रि० अ० १. झोंके खाना। २. सिर और धड़ को बार बार आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना।
झूमर–संज्ञा पुं० १. झूमक नाम का गीत। २. इस गीत के साथ होनेवाला नाच।

टिप टिप–संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द।
टिपवाना–क्रि० स० टीपने का काम दूसरे से कराना।
टिप्पणी–संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।
टिप्पन–संज्ञा पुं० १. टीका। २. जन्मकुंडली।
टिप्पनी–संज्ञा स्त्री० टीका।
टिमटिमाना–क्रि० अ० क्षीण प्रकाश देना।
टिरफिस–संज्ञा स्त्री० विरोध।
टिर्राना–क्रि० अ० दे० "टर्राना"।
टिसुआ†–संज्ञा पुं० आँसू।
टिहुनी†–संज्ञा स्त्री० १. घुटना। २. कोहनी।
टिहूका†–संज्ञा स्त्री० चौंक।
टीक–संज्ञा स्त्री० १. गले में पहनने का एक गहना। २. माथे में पहनने का एक गहना।
टीकना–क्रि० स० टीका या तिलक लगाना।
टीका–संज्ञा पुं० १. तिलक। २. श्रेष्ठ पुरुष। ३. राज्यतिलक। ४. चिह्न। संज्ञा स्त्री० व्याख्या।
टीकाकार–संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।
टीन–संज्ञा पुं० १. राँगा। २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर।
टीप–संज्ञा स्त्री० १. दबाव। २. स्मरण के लिये किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया।
टीपन–संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री।
टीपना–क्रि० स० दबाना।
क्रि० स० लिखना।
टीम टाम–संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार।
टीला–संज्ञा पुं० पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग।
टीस–संज्ञा स्त्री० कसक।
टीसना–क्रि० अ० रह रहकर दर्द उठना।
टुंटा, टुंडा–वि० [स्त्री० टुंडी] १. ठूँठा। २. लूला।
टुइयाँ–वि० नाटा।
टुक–वि० थोड़ा।
टुकड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १. खंड। २. भाग।
टुकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। २. समुदाय।
टुच्चा–वि० तुच्छ।
टुटपुँजिया–वि० जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।
टुटरूँ टूँ–संज्ञा स्त्री० पंडुकी या फ़ाख़्ता के बोलने का शब्द।
वि० १. अकेला। २. दुबला-पतला।
टुनगा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।
टुर्रा–संज्ञा पुं० डली।
टूगना–क्रि० स० थोड़ा सा काटकर खाना।
टूका†–संज्ञा पुं० टुकड़ा।
टूकर†–संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा"।
टूका†–संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। २. भिक्षा।
टूट†–संज्ञा स्त्री० १. खंड। २. टूटने का भाव।
†संज्ञा पुं० घाटा।
टूटना–क्रि० अ० १. टुकड़े टुकड़े होना। २. एकबारगी धावा करना।
टूटा–वि० खंडित।
संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

भूर†–वि० सूखा।
वि० खाली।
संज्ञा स्त्री० जलन।
भूरा†–वि० १. सूखा। २. खाली।
संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव।
२. न्यूनता।
भूरे†–क्रि० वि० व्यर्थ।
वि० दे० "भूर"।
भूल–संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो शोभा के लिये चौपायों पर डाला जाता है।
भूलन–संज्ञा पुं० हिंडोला।
भूलना–क्रि० अ० लटककर बार बार इधर-उधर हिलना।
वि० भूलनेवाला।
संज्ञा पुं० हिंडोला।
भूलरि–संज्ञा स्त्री० भूलता हुआ छोटा गुच्छा या भुमका।
भूला–संज्ञा पुं० १. हिंडोला। २. देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता।
भेंपना, भेपना–क्रि० अ० शरमाना।
भेर*†–संज्ञा स्त्री० १. विलंब। २. बखेड़ा।
भेरना*†–क्रि० स० १. भेलना। २. शुरू करना।
भेरा–संज्ञा पुं० भंझट।
भेल–संज्ञा स्त्री० १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया। २. हलका धक्का या हिलोरा।
संज्ञा स्त्री० विलंब।
भेलना–क्रि० स० १. सहना। २. ठेलना।
भोंक–संज्ञा स्त्री० १ प्रवृत्ति। २. वेग। ३. दे० "भोंका"।
भोंकना–क्रि० स० १. किसी वस्तु को आग में फेंकना। २. ढकेलना।
भोंकवाना–क्रि० स० भोंकने का काम दूसरे से कराना।
भोंका–संज्ञा पुं० १. झटका। २. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया।
भोंकाई–संज्ञा स्त्री० भोंकने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
भोंकी–संज्ञा स्त्री० १. उत्तरदायित्व। २. जोखिम।
भोंटा–संज्ञा पुं० बड़े बड़े बालों का समूह।
संज्ञा पुं० भोंका।
भोंटी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भोंटा"।
भोंपड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० भोंपड़ी] कुटी।
भोंपड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा भोंपड़ा।
भोंपा–संज्ञा पुं० झब्बा।
भोटिंग–वि० भोंटेवाला।
भोरई†–वि० रसेदार।
भोरना†–क्रि० स० झटका देकर हिलाना या कँपाना।
भोरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "भोली"।
भोरी*†–संज्ञा स्त्री० भोली।
भोल–संज्ञा पुं० शोरबा।
संज्ञा पुं० पहने या ताने हुए कपड़ों आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण भूल या लटक जाता है।
वि० १. ढीला। २. निकम्मा।
संज्ञा पुं० गलती।
संज्ञा पुं० राख।
भोलदार–वि० १. जिसमें रसा हो। २. ढीला-ढाला।
भोला†–संज्ञा पुं० भोंका।
संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० भोली] १. कपड़े की बड़ी भोली या थैली। २. ढीला-ढाला।

टूठना◌–क्रि० अ० संतुष्ट होना।
टूठनि◌–संज्ञा स्त्री० संतोष।
टूम–संज्ञा स्त्री० १. गहना। २. ताना।
टें–संज्ञा स्त्री० तोते की बोली।
टेंस–संज्ञा स्त्री० सुर्री।
टेंटर–संज्ञा पुं० रोग या चोट के कारण आँख के ढेले पर का उभरा हुआ मांस।
टेंटी–संज्ञा स्त्री० करील।
संज्ञा पुं० हुज्जती।
टेंटुआ–संज्ञा पुं० १. गला। २. अँगूठा।
टेंटें–संज्ञा स्त्री० १. तोते की बोली। २. व्यर्थ की बकवाद।
टेउकी–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिये उसके नीचे लगाई हुई वस्तु।
टेक–संज्ञा स्त्री० १. वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिये नीचे से लगाई जाती है। २. आश्रय। ३. हठ। ४. आदत।
टेकना–क्रि० स० सहारा लेना।
टेकरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० टेकरी] टीला।
टेकान–संज्ञा स्त्री० टेक।
टेकाना–क्रि० स० १. उठाकर ले जाने में सहारा देने के लिये थामना। २. उठने बैठने में सहायता के लिये पकड़ना।
टेकी–संज्ञा पुं० १. प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २. हठी।
टेकुआ†–संज्ञा पुं० चरखे का तकला।
टेघरना†–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।
टेढ़बिड़ंगा–वि० टढ़ा-मेढ़ा।
टेढ़ा–वि० [स्त्री० टेढ़ी] १. वक्र। २. पेचीला।
टेढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन"।
टेढ़ापन–संज्ञा पुं० टेढ़ा होने का भाव।
टेढ़े–क्रि० वि० घुमाव फिराव के साथ।
टेना–क्रि० स० १. हथियार को तेज़ करने के लिये पत्थर आदि पर रग‑ड़ना। २. मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।
टेम–संज्ञा स्त्री० दिए की लौ।
टेर–संज्ञा स्त्री० तान।
टेरना–क्रि० स० ऊँचे स्वर से गाना।
टेव–संज्ञा स्त्री० आदत।
टेसू–संज्ञा पुं० पलाश।
टेयाँ–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिपटी छोटी कौड़ी।
टोंटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० टोंटी] पानी आदि ढालने के लिये बरतन में लगी हुई नली।
टोक†–संज्ञा स्त्री० टोकने की क्रिया या भाव।
टोकना–क्रि० स० किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोकना या पूछ ताछ करना।
संज्ञा पुं० [स्त्री० टोकनी] टोकरा।
टोकरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० टोकरी] झाबा।
टोकरी–संज्ञा स्त्री० छोटा टोकरा।
टोटका–संज्ञा पुं० टोना।
टोटा–संज्ञा पुं० कारतूस।
संज्ञा पुं० घाटा।
टोनहा–वि० [स्त्री० टोनही] जादू करनेवाला।
टोनहाया–संज्ञा पुं० [स्त्री० टोनहाई] जादू करनेवाला मनुष्य।
टोना–संज्ञा पुं० जादू।
† क्रि० स० छूना।

झोली–संज्ञा स्त्री० १. कपड़े को मोड़कर बनाई हुई थैली। २. घास बाँधने का जाल।
संज्ञा स्त्री० राख।
झोलना–क्रि० स० जलाना।
झौंर–संज्ञा पुं० कुंड।
झौंरना–क्रि० अ० गूँजना।
झौंराना–क्रि० अ० झूमना।
क्रि० अ० १. साँवले रंग का हो जाना। २. मुरझाना।
झौंसना–क्रि० स० दे० "झुलसना"।
झौर–संज्ञा पुं० १. हुज्जत। २. डाँट-फटकार।
झौरना–क्रि० स० छोप लेना।
झौरे–क्रि० वि० १. समीप। २. साथ।
झौवा–संज्ञा पुं० खचिया।
झौहाना–क्रि० अ० गुर्राना।

ञ

ञ–हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है।

ट

ट–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
टंक–संज्ञा पुं० १. चार माशे की एक तौल। २. सिक्का। ३. छेनी।
टंकण–संज्ञा पुं० १. सुहागा। २. धातु की चीज़ में टाँके से जोड़ लगाने का कार्य्य।
टँकना–क्रि० अ० १. टाँका जाना। २. सिलना।
टँकवाना–क्रि० स० दे० "टँकाना"।
टँकाई–संज्ञा स्त्री० टाँकने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
टँकाना–क्रि० स० १. टाँकों से जोड़वाना या सिलवाना। २. सिलाकर लगवाना।
टंकार–संज्ञा स्त्री० झनकार।
टंकारना–क्रि० स० धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना।
टंकी–संज्ञा स्त्री० पानी भरने का बनाया हुआ छोटा सा कुंड या बड़ा बरतन। टाँका।
टंकोर–संज्ञा पुं० दे० "टंकार"।
टंकोरना–क्रि० स० दे० "टंकारना"।
टँगड़ा–संज्ञा स्त्री० दे० "टाँग"।
टँगना–क्रि० अ० लटकना।
संज्ञा पुं० अलगनी।

टोप-संज्ञा पुं० बड़ी टोपी।
†संज्ञा पुं० बूँद।
टोपा-संज्ञा पुं० बड़ी टोपी।
†संज्ञा पुं० १. टोकरा। २. टाँका।
टोपी-संज्ञा स्त्री० सिर पर का पहनावा।
टोभ-संज्ञा पुं० टाँका।
टोरना†-क्रि० स० तोड़ना।
टोर्रा-संज्ञा पुं० रवा।
टोल-संज्ञा स्त्री० मंडली।
टोला-संज्ञा पुं० [स्त्री० टोलिका] महल्ला।
टोली-संज्ञा स्त्री० १. छोटा महल्ला। २. समूह।
टोवना†-क्रि० स० दे० "टोना"।
टोह-संज्ञा स्त्री० १. खोज। २. खबर।
टोही-संज्ञा स्त्री० पता लगानेवाला।
टौरना-क्रि० स० परखना।

ठ

ठ-व्यंजनों में बारहवाँ व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।
ठंठार-वि० खाली।
ठंढ-संज्ञा स्त्री० शीत।
ठंढई-संज्ञा स्त्री० दे० "ठंढाई"।
ठंढक-संज्ञा स्त्री० शीत।
ठंढा-वि० [स्त्री० ठंढी] १. सर्द। २. बुझा हुआ। ३. शांत।
ठंढाई-संज्ञा स्त्री० १. वह दवा या मसाला जिससे शरीर की गरमी शांत होती और ठंढक आती है। २. पिसी हुई भाँग।
ठक-संज्ञा स्त्री० ठोंकने का शब्द।
ठक ठक-संज्ञा स्त्री० बखेड़ा।
ठकठकाना-क्रि० स० खटखटाना।
ठकुरसुहाती-संज्ञा स्त्री० लल्लोचप्पो।
ठकुराइन-संज्ञा स्त्री० १. मालकिन। २. क्षत्राणी। ३. नाइन।
ठकुराई-संज्ञा स्त्री० १. सरदारी। २. बड़प्पन।
ठकुरानी-संज्ञा स्त्री० १. ठाकुर या सरदार की स्त्री। २. स्वामिनी।
ठकुरायत-संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व।
ठग-संज्ञा पुं० [स्त्री० ठगनी, ठगिन] १. वह लुटेरा जो छल और धूर्तता से माल लूटता हो। २. छली।
ठगई†-संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।
ठगण-संज्ञा पुं० ५ मात्राओं का एक गण।
ठगना-क्रि० स० १. धोखा देकर माल लूटना। २. धोखा देना।
† क्रि० अ० धोखा खाना।
ठगनी-संज्ञा स्त्री० ठग की स्त्री या ठगनेवाली स्त्री।
ठगपना-संज्ञा पुं० १. ठगने का भाव या काम। २. धूर्तता।
ठगवाना-क्रि० स० दूसरे से धोखा दिलवाना।
ठगविद्या-संज्ञा स्त्री० धोखेबाजी।
ठगाना†-क्रि० अ० ठगा जाना।
ठगाही†-संज्ञा स्त्री० दे० "ठगपना"।
ठगिन, ठगिनी-संज्ञा स्त्री० १. लुटेरिन। २. ठग की स्त्री।

झूर†–वि० सूखा।
वि० खाली।
संज्ञा स्त्री० जलन।
झूरा†–वि० १. सूखा। २. खाली।
संज्ञा पुं० १. जलवृष्टि का अभाव। २. न्यूनता।
झूरे†–क्रि० वि० व्यर्थ।
वि० दे० "झूर"।
झूल–संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो शोभा के लिये चौपायों पर डाला जाता है।
झूलन–संज्ञा पुं० हिंडोला।
झूलना–क्रि० अ० लटककर बार बार इधर-उधर हिलना।
वि० झूलनेवाला।
संज्ञा पुं० हिंडोला।
झूलरि–संज्ञा स्त्री० झूलता हुआ छोटा गुच्छा या झुमका।
झूला–संज्ञा पुं० १. हिंडोला। २. देहाती स्त्रियों का ढीला-ढाला कुरता।
झेंपना, झेपना–क्रि० अ० शरमाना।
झेर*†–संज्ञा स्त्री० १. विलंब। २. बखेड़ा।
झेरना*†–क्रि० स० १. झेलना। २. शुरू करना।
झेरा–संज्ञा पुं० झंझट।
झेल–संज्ञा स्त्री० १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया। २. हलका धक्का या हिलोरा।
संज्ञा स्त्री० विलंब।
झेलना–क्रि० स० १. सहना। २. हेलना।
झोंक–संज्ञा स्त्री० १ प्रवृत्ति। २. वेग। ३. दे० "झोंका"।
झोंकना–क्रि० स० १. किसी वस्तु को आग में फेंकना। २. ढकेलना।
झोंकवाना–क्रि० स० झोंकने का काम दूसरे से कराना।
झोंका–संज्ञा पुं० १. झटका। २. इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया।
झोंकाई–संज्ञा स्त्री० झोंकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
झोंकी–संज्ञा स्त्री० १. उत्तरदायित्व। २. जोखिम।
झोंटा–संज्ञा पुं० बड़े बड़े बालों का समूह।
संज्ञा पुं० झोंका।
झोंटी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोंटा"।
झोंपड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी] कुटी।
झोंपड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा झोंपड़ा।
झोंपा–संज्ञा पुं० झब्बा।
झोंटिंग–वि० झोंटेवाला।
झोरई†–वि० रसेदार।
झोरना†–क्रि० स० झटका देकर हिलाना या कँपाना।
झोरि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "झोली"।
झोरी*†–संज्ञा स्त्री० झोली।
झोल–संज्ञा पुं० शोरबा।
संज्ञा पुं० पहने या ताने हुए कपड़ों आदि में वह अंश जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाता है।
वि० १. ढीला। २. निकम्मा।
संज्ञा पुं० गलती।
संज्ञा पुं० राख।
झोलदार–वि० १. जिसमें रसा हो। २. ढीला-ढाला।
झोला†–संज्ञा पुं० झोंका।
संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० झोली] १. कपड़े की बड़ी झोली या थैली। २. ढीला-ढाला।

ठगी–संज्ञा स्त्री० धोखा देकर माल लूटने का काम या भाव।
ठगोरी–संज्ञा स्त्री० टोना।
ठट–संज्ञा पुं० १. सजावट। २. भीड़।
ठटना–क्रि० स० १. ठहराना। २. सजाना।
क्रि० अ० १. अड़ना। २. सजना।
ठटनि–संज्ञा स्त्री० बनाव।
ठटरी–संज्ञा स्त्री० १. अस्थिपंजर। २. खरिया। ३. किसी वस्तु का ढाँचा। ४. अरथी।
ठट्ठ†–संज्ञा पुं० बनाव।
ठट्टी–संज्ञा स्त्री० ठटरी।
ठट्ठा–संज्ञा पुं० हँसी।
ठठकना†✡–क्रि० अ० १. ठिठकना। २. स्तंभित हो जाना।
ठठना†–क्रि० अ० दे० "ठटना"।
ठठरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "ठटरी"।
ठठाना–क्रि० स० मारना।
क्रि० अ० ज़ोर से हँसना।
ठठेरिन†–संज्ञा स्त्री० ठठेरे की स्त्री।
ठठेर-मंजारिका–संज्ञा स्त्री० ठठेरे की बिल्ली जो ठक ठक शब्द से न डरे।
ठठेरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० ठठेरिन, ठठेरी] बरतन बनानेवाला। कसेरा।
ठठेरी–संज्ञा स्त्री० १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम।
ठठोल–संज्ञा पुं० दिल्लगी।
ठठोली–संज्ञा स्त्री० हँसी।
ठड़ा†–वि० खड़ा।
ठढ़ा†–वि० खड़ा।
ठन–संज्ञा स्त्री० धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।
ठनक–संज्ञा स्त्री० चमड़े से मढ़े बाजे पर आघात पड़ने का शब्द।
ठनकना–क्रि० अ० ठनठन शब्द करना।
ठनकाना–क्रि० स० बजाना।
ठनकार–संज्ञा स्त्री० ठनठन शब्द।
ठनगन–संज्ञा पुं० मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिये हठ।
ठनठन गोपाल–संज्ञा पुं० १. छूँछी और निःसार वस्तु। २. निर्धन मनुष्य।
ठनठनाना–क्रि० स० बजाना।
क्रि० अ० ठनठन शब्द होना या बजना।
ठनना–क्रि० अ० १. छिड़ना। २. ठहरना।
ठनाका–संज्ञा पुं० ठनकार।
ठपका†–संज्ञा पुं० धक्का।
ठप्पा–संज्ञा पुं० १. साँचा। २. साँचे के द्वारा बनाया हुआ बेलबूटा आदि।
ठमक–संज्ञा स्त्री० १. रुकावट। २. लचक।
ठमकना–क्रि० अ० १. रुकना। २. ठसक के साथ रुक रुककर या हाव भाव दिखाते हुए चलना।
ठमकाना, ठमकारना–क्रि० स० ठहराना।
ठयना–क्रि० स० ठानना।
क्रि० स० ठहराना।
क्रि० अ० १. स्थित होना। २. लगना।
ठर्रा–संज्ञा पुं० १. बहुत मोटा सूत। २. बड़ी अधपकी ईंट। ३. महुए की निकृष्ट शराब।
ठस–वि० १. ठोस। २. गफ़। ३. मज़बूत।
ठसक–संज्ञा स्त्री० १. नखरा। २. शान।
ठसकदार–वि० १. घमंडी। २. शानदार।
ठसका–संज्ञा पुं० १. सूखी खाँसी जिसमें कफ़ न निकले। २. ठोकर।
ठसाठस–क्रि० वि० खचाखच।
ठस्सा–संज्ञा पुं० ठसक।

टपाटप–क्रि० वि० एक एक करके शीघ्रता से।
टपाना–क्रि० स० फँदाना।
टब–संज्ञा पुं० पानी रखने के लिये नाँद के आकार का एक खुला बड़ा बरतन।
टमटम–संज्ञा स्त्री० दे। ऊँचे ऊँचे पहियों की एक खुली हलकी गाड़ी।
टमाटर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खट्टा विलायती बैंगन।
टर–संज्ञा स्त्री० १. कडुई बोली। २. मेढ़क की बोली। ३. हठ।
टरकना–क्रि० अ० खिसकना।
टरकाना–क्रि० स० हटाना।
टरटराना–क्रि० अ० १. बक बक करना। २. ढिठाई से बोलना।
टर्रा–वि० कटुवादी।
टर्राना–क्रि० अ० अविनीत और कठोर स्वर से उत्तर देना।
टलना–क्रि० अ० १. हटना। २. बीतना।
टवाई–संज्ञा स्त्री० आवारगी।
टस–संज्ञा स्त्री० किसी भारी चीज़ के खिसकने या टसकने का शब्द।
टसक–संज्ञा स्त्री० कसक। टीस।
टसकना–क्रि० अ० १. खिसकना। २. टीस मारना।
टसकाना–क्रि० स० हटाना।
टसर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का घटिया, कड़ा और मोटा रेशम।
टसुआ–संज्ञा पुं० आँसू।
टहना–संज्ञा पुं० वृक्ष की डाल।
टहनी–संज्ञा स्त्री० डाली।
टहल–संज्ञा स्त्री० सेवा।
टहलना–क्रि० अ० १. धीरे धीरे चलना। २. सैर करना।
टहलनी–संज्ञा स्त्री० दासी।

टहलाना–क्रि० स० १. धीरे धीरे चलाना। २. सैर कराना।
टहलुआ–संज्ञा पुं० [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक।
टहलू–संज्ञा पुं० दे० "टहलुआ"।
टाँक–संज्ञा स्त्री० लिखावट।
टाँकना–क्रि० स० १. एक वस्तु के साथ दूसरी वस्तु को कील आदि जड़कर जोड़ना। २. सीना। ३. चक्की आदि को टाँकी से गड्ढे करके खुरदरा करना। रेहना। ४. दर्ज करना। ५. मार लेना।
टाँका–संज्ञा पुं० १. जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा। २. सिलाई।
संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० टाँकी] पत्थर काटने की चौड़ी छेनी।
संज्ञा पुं० हौज़।
टाँकी–संज्ञा स्त्री० छेनी।
संज्ञा स्त्री० छोटा टाँका।
टाँग–संज्ञा स्त्री० जीवों के चलने का अवयव।
टाँगना–क्रि० स० लटकाना।
टाँगा–संज्ञा पुं० बड़ी कुल्हाड़ी।
टाँगी–संज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी।
टाँच–संज्ञा स्त्री० १. भाँजी। २. टाँका।
टाँचना–क्रि० स० टाँकना।
टाँट–संज्ञा पुं० खोपड़ी।
टाँठ, टाँठा–वि० कड़ा।
टाँड़–संज्ञा स्त्री० लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिस पर चीज़ असबाब रखते हैं।
संज्ञा पुं० बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।
टाँड़ा–संज्ञा पुं० व्यापार की वस्तुओं

ठहरना–क्रि० अ० १. थमना। २. चलना। ३. थिराना। ४. आसरा देखना। ५. पक्का होना।

ठहराई–संज्ञा स्त्री० ठहराने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

ठहराना–क्रि० स० १. चलने से रोकना। २. त करना।

ठहराव–संज्ञा पुं० १. स्थिरता। २. निश्चय।

ठहरौनी–संज्ञा स्त्री० विवाह में टीके, दहेज़ आदि के लेन देन का क़रार।

ठहाका†–संज्ञा पुं० ज़ोर की हँसी।

ठाँई†–संज्ञा स्त्री० १. स्थान। २. निकट।

ठाँउ–संज्ञा पुं० स्त्री० दे० "ठाँयँ"।

ठाँठ–वि० जो सूखकर बिना रस का हो गया हो।

ठाँयँ–संज्ञा पुं० १. स्थान। २. समीप। संज्ञा पुं० बंदूक़ छूटने का शब्द।

ठाँव–संज्ञा पुं० स्थान।

ठाँसना–क्रि० स० ज़ोर से घुसाना या भरना।
क्रि० अ० ठन ठन शब्द के साथ खाँसना।

ठाकुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १. पूज्य व्यक्ति। २. ज़मींदार। ३. क्षत्रियों की उपाधि। ४. स्वामी। ५. नाइयों की उपाधि।

ठाकुरद्वारा–संज्ञा पुं० मंदिर।

ठाकुरबाड़ी–संज्ञा स्त्री० मंदिर।

ठाकुरी–संज्ञा स्त्री० स्वामित्व।

ठाट–संज्ञा पुं० १. लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। २. ढाँचा। ३. सजावट। ४. आडंबर।

ठाटना॰†–क्रि० स० १. रचना। २. सजाना।

ठाट बाट–संज्ञा पुं० सजावट।

ठाटर–संज्ञा पुं० १. टट्टर। २. ठठरी। ३. सजावट।

ठाठ†–संज्ञा पुं० दे० "ठाट"।

ठाढ़ा†॰–वि० खड़ा।

ठान–संज्ञा स्त्री० १. काम का छिड़ना। २. पक्का इरादा।

ठानना†–क्रि० स० १. छेड़ना। २. ठहराना।

ठाना॰†–क्रि० स० ठानना।

ठाम†॰–संज्ञा पुं० स्त्री० स्थान।

ठाला–संज्ञा पुं० बेकारी।
वि० निठल्ला।

ठाली–वि० बेकाम।

ठाहर†–संज्ञा पुं० १. स्थान। २. डेरा।

ठिंगना–वि० [स्त्री० ठिंगनी] नाटा।

ठिकाना–संज्ञा पुं० १. स्थान। २. निर्वाह या आश्रय का स्थान। ३. हद।
† क्रि० स० ठहराना।

ठिठकना–क्रि० अ० चलते चलते एकबारगी रुक जाना।

ठिठरना–क्रि० अ० सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिठुरना†–क्रि० अ० दे० "ठिठरना"।

ठिनकना–क्रि० अ० बच्चों का बीच में रुक रुककर रोना।

ठिलना–क्रि० अ० १. ढकेला जाना। २. घुसना।

ठिलुआ–वि० निठल्ला।

ठीक–वि० १. यथार्थ। २. उचित। ३. अच्छा। ४. पक्का।
क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे।
संज्ञा पुं० निश्चय।

ठीकरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० ठीकरी] सिटकी।

टँगारी†–संज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी।

टंच†–वि० १. सूम। २. कठोर-हृदय। वि० तैयार।

टंट घंट–संज्ञा पुं० १. मिथ्या प्रपंच। २. काठ-कबाड़।

टंटा–संज्ञा पुं० १. आडंबर। २. झगड़ा।

टक–संज्ञा स्त्री० स्थिर दृष्टि।

टकटका☆†–संज्ञा पुं० [स्त्री० टकटकी] टकटकी।

टकटकाना†–क्रि० स० १. एक टक ताकना। २. टकटक शब्द उत्पन्न करना।

टकटकी–संज्ञा स्त्री० गड़ी हुई नज़र।

टकटोना, टकटोरना†–क्रि० स० टटोलना।

टकटोहन–संज्ञा पुं० टटोलकर देखने की क्रिया।

टकटोहना☆–क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टकराना–क्रि० अ० १. धक्का या ठोकर लेना। २. मारा मारा फिरना। क्रि० स० पटकना।

टकसाल–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं।

टकसाली–वि० टकसाल का। संज्ञा पुं० टकसाल का अधिकारी।

टका–संज्ञा पुं० १. रुपया। २. अधन्ना। ३. धन।

टकासी–संज्ञा स्त्री० टके या दो पैसे फ़ी रुपए का सूद।

टकुआ–संज्ञा पुं० चरखे में का तकला जिस पर सूत काता जाता है।

टकैत–वि० धनी।

टक्कर–संज्ञा स्त्री० १. ठोकर। २. मुक़ाबिला।

टखना–संज्ञा पुं० एड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी की गाँठ।

टघरना†–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टटका–वि० १. ताज़ा। २. नया।

टटोरना†–क्रि० स० दे० "टटोलना"।

टटोल–संज्ञा स्त्री० टटोलने का भाव या क्रिया।

टटोलना–क्रि० स० १. ढूँढ़ने या पता लगाने के लिये इधर-उधर हाथ रखना। २. परखना।

टट्टर–संज्ञा पुं० बाँस की फट्टियों, सरकंडों आदि को जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा।

टट्टी–संज्ञा स्त्री० १. बाँस की फट्टियों आदि को जोड़कर आड़ या रक्षा के लिये बनाया हुआ ढाँचा। २. चिक। ३. पाखाना।

टट्टू–संज्ञा पुं० छोटे क़द का घोड़ा।

टन–संज्ञा स्त्री० किसी धातुखंड पर आघात पड़ने से उत्पन्न शब्द।

टनकना–क्रि० अ० टन टन बजना।

टनटन–संज्ञा स्त्री० घंटे का शब्द।

टनाका†–संज्ञा पुं० घंटा बजने का शब्द।

टनाटन–संज्ञा स्त्री० लगातार होनेवाला टनटन शब्द।

टप–संज्ञा पुं० खुली गाड़ियों में लगा हुआ ओहार। संज्ञा पुं० नाँद के आकार का पानी रखने का खुला बरतन। संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद टपकने का शब्द।

टपक–संज्ञा स्त्री० १. टपकने का भाव। २. बूँद बूँद गिरने का शब्द।

टपकना–क्रि० अ० १. बूँद बूँद गिरना। २. ऊपर से सहसा आना। ३. झलकना।

टपकाना–क्रि० स० चुआना।

ठीकरी–संज्ञा स्त्री० मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा।
ठीका–संज्ञा पुं० कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का ज़िम्मा।
ठीकेदार–संज्ञा पुं० ठीका लेनेवाला।
ठीहा–संज्ञा पुं० १. ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा। ३. सीमा।
ठुंठ–संज्ञा पुं० सूखा हुआ पेड़।
ठुकना–क्रि० अ० पिटना।
ठुड्डी–संज्ञा स्त्री० ठोढ़ी।
ठुमक–वि० जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं।
ठुमकना–क्रि० अ० १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाचने में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघुरू बजें।
ठुमरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।
ठुर्री–संज्ञा स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।
ठुसना–क्रि० अ० कसकर भरा जाना।
ठुसाना–क्रि० स० कसकर भरवाना।
ठूंठ–संज्ञा पुं० सूखा पेड़।
ठूँसना–क्रि० स० दे० "ठूसना"।
ठूसना–क्रि० स० १. खूब कसकर भरना। २. घुसेड़ना।
ठेंगना–वि० [स्त्री० ठेंगनी] छोटे डील का।
ठेंगा–संज्ञा पुं० १. अँगूठा। २. सोंटा।
ठेंठी–संज्ञा स्त्री० १. कान की मैल। २. डाट।
ठेंपी–संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"।
ठेका–संज्ञा पुं० तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय।
संज्ञा पुं० दे० "ठीका"।
ठेकी–संज्ञा स्त्री० टेक।
ठेठ–वि० १. निपट। २. शुद्ध।
संज्ञा स्त्री० सीधी सादी बोली।
ठेलना–क्रि० स० ढकेलना।
ठेला–संज्ञा पुं० १. धक्का। २. एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं। ३. भीड़भाड़।
ठेलाठेल–संज्ञा स्त्री० धक्कमधक्का।
ठेस–संज्ञा स्त्री० आघात।
ठैन॰†–संज्ञा स्त्री० जगह।
ठोंक–संज्ञा स्त्री० प्रहार।
ठोंकना–क्रि० स० १. पीटना। २. गाड़ना। ३. दायर करना। ४. थपथपाना।
ठोकर–संज्ञा स्त्री० ठेस।
ठोठरा†–वि० खाली।
ठोड़ी–संज्ञा स्त्री० ठुड्डी।
ठोर†–संज्ञा पुं० चोंच।
ठोस–वि० १. जो खोखला न हो। २. दृढ़।
ठोहना॰†–क्रि० स० खोजना।
ठौर–संज्ञा पुं० १. जगह। २. मौका।

टिप टिप-संज्ञा स्त्री० बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द।
टिपवाना-क्रि० स० टीपने का काम दूसरे से कराना।
टिप्पणी-संज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।
टिप्पन-संज्ञा पुं० १. टीका। २. जन्मकुंडली।
टिप्पनी-संज्ञा स्त्री० टीका।
टिमटिमाना-क्रि० अ० क्षीण प्रकाश देना।
टिरफिस-संज्ञा स्त्री० विरोध।
टिर्राना-क्रि० अ० दे० "टर्राना"।
टिसुआ-संज्ञा पुं० आँसू।
टिहुनी-संज्ञा स्त्री० १. घुटना। २. कोहनी।
टिहूका-संज्ञा स्त्री० चौंक।
टीक-संज्ञा स्त्री० १. गले में पहनने का एक गहना। २. माथे में पहनने का एक गहना।
टीकना-क्रि० स० टीका या तिलक लगाना।
टीका-संज्ञा पुं० १. तिलक। २. श्रेष्ठ पुरुष। ३. राज्यतिलक। ४. चिह्न। संज्ञा स्त्री० व्याख्या।
टीकाकार-संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ का अर्थ या टीका लिखनेवाला।
टीन-संज्ञा पुं० १. राँगा। २. राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर।
टीप-संज्ञा स्त्री० १. दबाव। २. स्मरण के लिये किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया।
टीपन-संज्ञा स्त्री० जन्मपत्री।
टीपना-क्रि० स० दबाना। क्रि० स० लिखना।
टीम टाम-संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार।
टीला-संज्ञा पुं० पृथ्वी का कुछ उभरा हुआ भाग।
टीस-संज्ञा स्त्री० कसक।
टीसना-क्रि० अ० रह रहकर दर्द उठना।
टुंटा, टुंडा-वि० [स्त्री० टुंडी] १. ठूँठा। २. लूला।
टुइयाँ-वि० नाटा।
टुक-वि० थोड़ा।
टुकड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १. खंड। २. भाग।
टुकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकड़ा। २. समुदाय।
टुच्चा-वि० तुच्छ।
टुटपुँजिया-वि० जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।
टुटरूँ टूँ-संज्ञा स्त्री० पंडुकी या फ़ाख़्ता के बोलने का शब्द। वि० १. अकेला। २. दुबला-पतला।
टुनगा-संज्ञा पुं० [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग।
टुर्री-संज्ञा पुं० डली।
टूगना-क्रि० स० थोड़ा सा काटकर खाना।
टूका-संज्ञा पुं० टुकड़ा।
टूकरा-संज्ञा पुं० दे० "टुकड़ा"।
टूका-संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। २. भिक्षा।
टूट-संज्ञा स्त्री० १. खंड। २. टूटने का भाव। संज्ञा पुं० घाटा।
टूटना-क्रि० अ० १. टुकड़े टुकड़े होना। २. एकबारगी धावा करना।
टूटा-वि० खंडित। संज्ञा पुं० दे० "टोटा"।

ड

ड–व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण।
डंक–संज्ञा पुं० कीड़ों के पीछे का ज़हरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाते हैं।
डंकना†–क्रि० अ० गरजना।
डंका–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नगाड़ा।
डंगर–संज्ञा पुं० चौपाया।
डंठल–संज्ञा पुं० छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।
डंठी†–संज्ञा स्त्री० डंठल।
डंड–संज्ञा पुं० १. डंडा। २. हाथ-पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की कसरत। ३. दंड।
डंडपेल–संज्ञा पुं० कसरती।
डंडा–संज्ञा पुं० मोटी छड़ी। सोंटा।
डँड़िया–संज्ञा पुं० कर उगाहनेवाला।
डंडी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २. डाँड़ी।
डँड़ोरना–क्रि० स० ढूँढ़ना।
डंबर–संज्ञा पुं० ढकोसला।
डँवाडोल–वि० दे० "डाँवाडोल"।
डंस–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो।
डकार–संज्ञा पुं० १. पेट की वायु का कंठ से शब्द के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरा होना सूचित होता है। २. दहाड़।
डकारना–क्रि० अ० १. डकार लेना। २. पचा जाना। ३. दहाड़ना।
डकैत–संज्ञा पुं० डाकू।
डकैती–संज्ञा स्त्री० छापा।
डग–संज्ञा पुं० १. कदम। २. उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े।
डगडगाना–क्रि० अ० १. इधर से उधर हिलना। २. लड़खड़ाना।
डगना†०–क्रि० अ० १. हिलना। २. लड़खड़ाना।
डगर–संज्ञा स्त्री० मार्ग।
डगरना०†–क्रि० अ० चलना।
डटना–क्रि० अ० अड़ना।
डटाना–क्रि० स० भिड़ाना।
डढ़ियल–वि० डाढ़ीवाला।
डपट–संज्ञा स्त्री० डाँट।
डपटना–क्रि० स० डाँटना।
डपोरसंख–संज्ञा पुं० १. डींग मारनेवाला। २. मूर्ख।
डफ–संज्ञा पुं० डफला।
डफला–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।
डफली–संज्ञा स्त्री० छोटा डफ।
डबकौंहाँ–वि० [स्त्री० डबकौंहीं] डबडबाया हुआ।
डबडबाना–क्रि० अ० अश्रुपूर्ण होना।
डबरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० डबरी] कुंड
डबल–वि० दोहरा।
संज्ञा पुं० अँगरेज़ी राज्य का पैसा।
डबोना–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
डब्बा–संज्ञा पुं० १. संपुट। २. रेलगाड़ी में की एक गाड़ी।
डभकना†–क्रि० अ० पानी में डूबना उतराना।
डमकौरी–संज्ञा स्त्री० उरद की पीठी की बरी।

से लदे हुए पशुओं का झुंड। घन-जारों का झुंड।

टाँय टाँय–संज्ञा स्त्री० १. टें टें। २. बकवाद।

टाट–संज्ञा पुं० १. सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ मोटा कपड़ा। २. बिरादरी या उसका अंग।

टाटर–संज्ञा पुं० टट्टर।

टान–संज्ञा स्त्री० तनाव।

टानना–क्रि० स० दे० "तानना"।

टाप–संज्ञा स्त्री० घोड़े के पैरों के ज़मीन पर पड़ने का शब्द।

टापना–क्रि० अ० किसी वस्तु के लिये इधर-उधर हैरान फिरना।
क्रि० स० कूदना।
क्रि० अ० दे० "टपना"।

टापा–संज्ञा पुं० झाबा।

टापू–संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो। द्वीप।

टारना†–क्रि० स० दे० "टालना"।

टाल–संज्ञा स्त्री० ऊँचा। ढेर।
संज्ञा स्त्री० टालने का भाव।

टालटूल–संज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।

टालना–क्रि० स० १. हटाना। २. मुलतवी करना।

टालमटूल–संज्ञा स्त्री० बहाना।

टिकट–संज्ञा पुं० वह काग़ज़ का टुकड़ा जो किसी प्रकार का महसूल या फ़ीस चुकानेवाले को प्रमाण-पत्र के रूप में दिया जाय।

टिकठी–संज्ञा स्त्री० १. शव ले जाने की रथी। २. दंड या फाँसी आदि देने का पुराना यंत्र-विशेष।

टिकना–क्रि० अ० १. ठहरना। २. कुछ दिनों तक काम देना।

टिकली–संज्ञा स्त्री० १. छोटी टिकिया। २. पन्नी या काँच की बहुत छोटी बिंदी।

टिकस–संज्ञा पुं० महसूल।

टिकाई†–संज्ञा पुं० युवराज।
संज्ञा स्त्री० टिकने का भाव।

टिकाऊ–वि० मज़बूत।

टिकान–संज्ञा स्त्री० १. टिकने या ठहरने का भाव। २. पड़ाव।

टिकाना–क्रि० स० ठहराना।

टिकाव–संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. पड़ाव।

टिकिया–संज्ञा स्त्री० गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा।

टिकुली–संज्ञा स्त्री० दे० "टिकली"।

टिकैत–संज्ञा पुं० १. युवराज। २. सरदार।

टिकोरा†–संज्ञा पुं० आम का छोटा और कच्चा फल।

टिक्का–संज्ञा पुं० दे० "टीका"।

टिक्की–संज्ञा स्त्री० टिकिया।
संज्ञा स्त्री० माथे पर की बिंदी।

टिघलना–क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टिचन–वि० तैयार।

टिटकारना–क्रि० स० [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' कहकर हाँकना।

टिटिहरी–संज्ञा स्त्री० पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया। कुररी।

टिट्टिभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० टिट्टिभी] टिटिहरी।

टिड्डा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का छोटा परदार कीड़ा।

टिड्डी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो बड़ा भारी दल बाँधकर चलता और पेड़ पौधों को बड़ी हानि पहुँचाता है।

ठीकरी–संज्ञा स्त्री० मिट्टी के बरतन का फूटा टुकड़ा।
ठीका–संज्ञा पुं० कुछ धन आदि के बदले में किसी के किसी काम को पूरा करने का ज़िम्मा।
ठीकेदार–संज्ञा पुं० ठीका लेनेवाला।
ठीहा–संज्ञा पुं० १. ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिस पर वस्तुओं को रखकर लोहार, बढ़ई आदि उन्हें पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. लकड़ी गढ़ने या चीरने का कुंदा। ३. सीमा।
ठुंठ–संज्ञा पुं० सूखा हुआ पेड़।
ठुकना–क्रि० अ० पिटना।
ठुड्डी–संज्ञा स्त्री० ठोढ़ी।
ठुमक–वि० जिसमें उमंग के कारण थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलते हैं।
ठुमकना–क्रि० अ० १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाचने में पैर पटक-कर चलना जिसमें घुँघुरू बजें।
ठुमरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जो केवल एक स्थायी और एक ही अंतरे में समाप्त होता है।
ठुर्री–संज्ञा स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर न खिले।
ठुसना–क्रि० अ० कसकर भरा जाना।
ठुसाना–क्रि० स० कसकर भरवाना।
ठूंठ–संज्ञा पुं० सूखा पेड़।
ठूंसना–क्रि० स० दे० "ठूसना"
ठूसना–क्रि० स० १. [illegible] भरना। २. घुसेड़ना।
ठेंगना–वि० [स्त्री० ठेंगनी] छोटे डील का।
ठेंगा–संज्ञा पुं० १. अँगूठा। २. सोंटा।
ठेंठी–संज्ञा स्त्री० १. कान की मैल। २. डाट।
ठेंपी–संज्ञा स्त्री० दे० "ठेंठी"।
ठेका–संज्ञा पुं० तबला या ढोल बजाने की वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय।
संज्ञा पुं० दे० "ठीका"।
ठेकी–संज्ञा स्त्री० टेक।
ठेठ–वि० १. निपट। २. शुद्ध।
संज्ञा स्त्री० सीधी सादी बोली।
ठेलना–क्रि० स० ढकेलना।
ठेला–संज्ञा पुं० १. धक्का। २. एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं। ३. भीड़भाड़।
ठेलाठेल–संज्ञा स्त्री० धक्कमधक्का।
ठेस–संज्ञा स्त्री० आघात।
ठैन*–संज्ञा स्त्री० जगह।
ठोंक–संज्ञा स्त्री० प्रहार।
ठोंकना–क्रि० स० १. पीटना। २. गाड़ना। ३. दायर करना। ४. थप-थपाना।
ठोकर–संज्ञा स्त्री० ठेस।
ठोठरा–वि० खाली।
ठोढ़ी–संज्ञा स्त्री० ठुड्डी।
ठोर–संज्ञा पुं० चोंच।
ठोस–वि० १. जो खोखला न हो। २. दृढ़।
ठोहना* [illegible]
ठौर–संज्ञा [illegible] । २. मौका।

ड

ड—व्यंजनों में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण।

डंक—संज्ञा पुं० कीड़ों के पीछे का ज़हरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाते हैं।

डंकना†—क्रि० अ० गरजना।

डंका—संज्ञा पुं० एक प्रकार का नगाड़ा।

डंगर—संज्ञा पुं० चौपाया।

डंठल—संज्ञा पुं० छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंठी†—संज्ञा स्त्री० डंठल।

डंड—संज्ञा पुं० १. डंडा। २. हाथ-पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की कसरत। ३. दंड।

डंडपेल—संज्ञा पुं० कसरती।

डंडा—संज्ञा पुं० मोटी छड़ी। सोंटा।

डँड़िया—संज्ञा पुं० कर उगाहनेवाला।

डंडी—संज्ञा स्त्री० १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २. डाँड़ी।

डँड़ोरना—क्रि० स० ढूँढ़ना।

डंवर—संज्ञा पुं० ढकोसला।

डँवाँडोल—वि० दे० "डाँवाँडोल"।

डंस—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ विषैले कीड़ों का दाँत या डंक चुभा हो।

डकार—संज्ञा पुं० १. पेट की वायु का कंठ से शब्द के साथ निकल पड़ने का शारीरिक व्यापार जिससे पेट का भरा होना सूचित होता है। २. दहाड़।

डकारना—क्रि० अ० १. डकार लेना। २. पचा जाना। ३. दहाड़ना।

डकैत—संज्ञा पुं० डाकू।

डकैती—संज्ञा स्त्री० छापा।

डग—संज्ञा पुं० १. कदम। २. उतनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़े।

डगडगाना—क्रि० अ० १. इधर से उधर हिलना। २. लड़खड़ाना।

डगना†◎—क्रि० अ० १. हिलना। २. लड़खड़ाना।

डगर—संज्ञा स्त्री० मार्ग।

डगरना◎†—क्रि० अ० चलना।

डटना—क्रि० अ० अड़ना।

डटाना—क्रि० स० भिड़ाना।

डढ़ियल—वि० डाढ़ीवाला।

डपट—संज्ञा स्त्री० डाँट।

डपटना—क्रि० स० डाँटना।

डपोरसंख—संज्ञा पुं० १. डींग मारनेवाला। २. मूर्ख।

डफ—संज्ञा पुं० डफला।

डफला—संज्ञा पुं० दे० "डफ"।

डफली—संज्ञा स्त्री० छोटा डफ।

डबकौंहाँ—वि० [स्त्री० डबकौंही] डबडबाया हुआ।

डबडबाना—क्रि० अ० अश्रुपूर्ण होना।

डबरा—संज्ञा पुं० [स्त्री० डबरी] कुंड

डबल—वि० दोहरा।

संज्ञा पुं० अँगरेजी राज्य का पैसा।

डबोना—क्रि० स० दे० "डुबाना"।

डब्बा—संज्ञा पुं० १. संपुट। २. रेलगाड़ी में की एक गाड़ी।

डभकना†—क्रि० अ० पानी में डूबना उतराना।

डभकौरी—संज्ञा स्त्री० उरद की पीठी की बरी।

तन्मय–वि० लवलीन।
तन्मयता–संज्ञा स्त्री० लीनता।
तप–संज्ञा पुं० १. तपस्या। २. नियम।
संज्ञा पुं० १. ताप। २. ज्वर।
तपकना◊–क्रि० अ० १. धड़कना। २. दे० "टपकना"।
तपन–संज्ञा पुं० १. आँच। २. सूर्य। ३. ग्रीष्म।
संज्ञा स्त्री० गरमी।
तपना–क्रि० अ० १. तप्त होना। २. तप करना।
तपनि◊†–संज्ञा स्त्री० दे० "तपन"।
तपनी†–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ बैठकर आग तापते हों।
तपश्चर्या–संज्ञा स्त्री० तपस्या।
तपसी–संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपस्या–संज्ञा स्त्री० तप।
तपस्विता–संज्ञा स्त्री० तपस्वी होने की अवस्था या भाव।
तपस्विनी–संज्ञा स्त्री० १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री। ३. पतिव्रता या सती स्त्री।
तपस्वी–संज्ञा पुं० [स्त्री० तपस्विनी] वह जो तप करता हो।
तपा–संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपाक–संज्ञा पुं० १. आवेश। २. वेग।
तपाना–क्रि० स० १. गरम करना। २. दुःख देना।
तपावंत–संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपित◊†–वि० तपा हुआ।
तपिश–संज्ञा स्त्री० गरमी।
तपी–संज्ञा पुं० तपस्वी।
तपेदिक–संज्ञा पुं० राजयक्ष्मा।
तपोधन–संज्ञा पुं० बड़ा तपस्वी।
तपोबल–संज्ञा पुं० तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि–संज्ञा स्त्री० तपोवन।
तपोवन–संज्ञा पुं० तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य वन।
तप्त–वि० १. गरम। २. दुःखित।
तफ़रीह–संज्ञा स्त्री० १. खुशी। २. दिल्लगी। ३. हवाख़ोरी।
तफ़सील–संज्ञा स्त्री० १. वर्णन। २. टीका। ३. कैफ़ियत।
तफ़ावत–संज्ञा पुं० १. अंतर। २. दूरी।
तब–अव्य० १. उस समय। २. इस कारण।
तबक़–संज्ञा पुं० १. लोक। २. चाँदी, सोने के पत्तरों को पीटकर काग़ज़ की तरह बनाया हुआ पतला वरक़।
तबक़गर–संज्ञा पुं० तबकिया।
तबदील–वि० [संज्ञा तबदीली] जो बदला गया हो।
तबल–संज्ञा पुं० बड़ा ढोल।
तबलची–संज्ञा पुं० वह जो तबला बजाता हो।
तबला–संज्ञा पुं० ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा।
तबलिया–संज्ञा पुं० दे० "तबलची"।
तबाशीर–संज्ञा पुं० बंसलोचन।
तबाह–वि० [संज्ञा तबाही] बरबाद।
तबाही–संज्ञा स्त्री० नाश।
तबीअत–संज्ञा स्त्री० १. चित्त। २. बुद्धि।
तबीब–संज्ञा पुं० वैद्य।
तभी–अव्य० १. उसी समय। २. इसी वजह से।
तमंचा–संज्ञा पुं० पिस्तौल।
तम–संज्ञा पुं० अंधकार।

डमरू-संज्ञा पुं० १. चमड़ा मढ़ा एक बाजा जो बीच में पतला रहता और दोनों सिरों की ओर बराबर चौड़ा होता जाता है। २. इस आकार की कोई वस्तु।

डमरूमध्य-संज्ञा पुं० धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमि-खंडों को मिलाता हो।

डर-संज्ञा पुं० भय।

डरना-क्रि० अ० भयभीत होना।

डरपाना†-क्रि० स० दे० "डराना"।

डरपोक-वि० भीरु।

डरवाना-क्रि० स० दे० "डराना"।

डराडरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "डर"।

डराना-क्रि० स० डर दिखाना।

डरावना-वि० जिससे डर लगे।

डरावा-संज्ञा पुं० १. डराने के लिये कही हुई बात। २. खटखटा।

डरिया†-संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डरीला†-वि० डरवाला।

डरैला†-वि० डरावना।

डल-संज्ञा पुं० टुकड़ा।

डलना-क्रि० अ० डाला जाना।

डलवाना-क्रि० स० डालने का काम दूसरे से कराना।

डला-संज्ञा पुं० [स्त्री० डली] टुकड़ा।
संज्ञा पुं० [स्त्री० डलिया] टोकरा।

डलिया-संज्ञा स्त्री० दौरी।

डली-संज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री० दे० "डलिया"।

डसन-संज्ञा स्त्री० डसने की क्रिया, भाव या ढंग।

डसना-क्रि० स० डंक मारना।

डसाना†-क्रि० स० दाँत से कटवाना।

डहकना-क्रि० स० ठगना।
क्रि० अ० बिलखना।

डहकाना-क्रि० स० खोना।
क्रि० अ० ठगा जाना।
क्रि० स० ठगना।

डहडहा-वि० [स्त्री० डहडही] हरा-भरा।

डहन-संज्ञा पुं० पंख।

डहना-क्रि० अ० १. जलना। २. द्वेष करना।
क्रि० स० जलाना।

डहर†-संज्ञा स्त्री० रास्ता।

डहरना-क्रि० अ० चलना।

डहराना†-क्रि० स० चलाना।

डाँकना†-क्रि० स० फाँदना।

डाँगर-वि० चौपाया।
वि० १. बहुत दुबला-पतला। २. मूर्ख।

डाँट-संज्ञा स्त्री० १. शासन। २. डपट।

डाँटना-क्रि० स० घुड़कना।

डाँठ†-संज्ञा पुं० डंठल।

डाँड़-संज्ञा पुं० १. डंडा। २. नाव खेने का बल्ला। ३. हद। ४. जुर-माना। ५. हरजाना।

डाँड़ना-क्रि० अ० जुरमाना करना।

डाँड़ा-संज्ञा पुं० १. डंडा। २. नाव खेने का डाँड़। ३. हद।

डाँड़ी-संज्ञा स्त्री० १. लंबी पतली लकड़ी। २. तराजू की डंडी। ३. पतली शाखा। ४. रेखा।

डाँवरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० डाँवरी] लड़का।

डाँवाँडोल-वि० चंचल।

डाइन-संज्ञा स्त्री० १. भूतनी। २. टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाक-संज्ञा पुं० १. राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने जाने की व्यवस्था।

तमक–संज्ञा पुं० १. जोश। २. तेज़ी।
तमकना–क्रि० अ० १. क्रोध का आवेश दिखलाना। २. दे० "तमतमाना"।
तमगा–संज्ञा पुं० पदक।
तमचर–संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. उल्लू।
तमचुर०†–संज्ञा पुं० मुरगा।
तमचोर०†–संज्ञा पुं० दे० "तमचुर"।
तमतमाना–क्रि० अ० धूप या क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।
तमता–संज्ञा स्त्री० १. तम का भाव। २. अँधेरा।
तमस–संज्ञा पुं० १. अंधकार। २. तमसा नदी।
तमसा–संज्ञा स्त्री० टौंस नदी।
तमस्सुक–संज्ञा पुं० दस्तावेज़।
तमहीद–संज्ञा स्त्री० भूमिका।
तमा–संज्ञा पुं० राहु।
संज्ञा स्त्री० रात।
० संज्ञा स्त्री० लोभ।
तमाकू–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में काम में लाए जाते हैं। २. सुरती। ३. इन पत्तों से तैयार की हुई एक प्रकार की गीली पिंडी जिसे चिलम पर जलाकर मुँह से धुआँ खींचते हैं।
तमाखू†–संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।
तमाचा–संज्ञा पुं० थप्पड़।
तमादी–संज्ञा स्त्री० किसी बात की मुद्दत या मियाद गुज़र जाना।
तमाम–वि० १. पूरा। २. समाप्त।
तमारि–संज्ञा पुं० सूर्य।
तमाल–संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा सुंदर सदाबहार वृक्ष।
तमाशबीन–संज्ञा पुं० तमाशा देखनेवाला।
तमाशा–संज्ञा पुं० वह दृश्य जिसके देखने से मनोरंजन हो।
तमी–संज्ञा स्त्री० रात।
तमीचर–संज्ञा पुं० राक्षस।
तमीज़–संज्ञा स्त्री० १. विवेक। २. बुद्धि। ३. अदब।
तमीश–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
तमोगुण–संज्ञा पुं० प्रकृति के तीन भावों में से एक जो भारी और रुकनेवाला तथा निकृष्ट माना गया है।
तमोगुणी–वि० जिसकी वृत्ति में तमोगुण हो।
तमोमय–वि० १. तमोगुण-युक्त। २. अज्ञानी।
तमोर०†–संज्ञा पुं० पान।
तमोरी०†–संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।
तमोल०†–संज्ञा पुं० १. पान का बीड़ा। २. दे० "तंबोल"।
तमोली–संज्ञा पुं० दे० "तँबोली"।
तय–वि० १. समाप्त। २. मुकर्रर। ३. फ़ैसला।
तरंग–संज्ञा स्त्री० १. पानी की लहर। २. संगीत में स्वरों का चढ़ाव उतार। ३. चित्त की उमंग।
तरंगवती–संज्ञा स्त्री० नदी।
तरंगिणी–संज्ञा स्त्री० नदी।
वि० स्त्री० तरंगवाली।
तरंगित–वि० नीचे ऊपर उठता हुआ।
तरंगी–वि० [स्त्री० तरंगिणी] १. जिसमें लहरें हों। २. मनमौजी।
तर–वि० १. भीगा हुआ। २. हरा। ३. मालदार।
†क्रि० वि० तले।

२. काग़ज़ पत्र आदि जो डाक से आवे।
संज्ञा पुं० नौबाम की बोली।
डाकख़ाना–संज्ञा पुं० वह सरकारी दफ़्तर जहाँ लोग चिट्ठी-पत्री आदि छोड़ते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं।
डाकगाड़ी–संज्ञा स्त्री० डाक ले जानेवाली रेलगाड़ी जो और गाड़ियों से तेज़ चलती है।
डाकघर–संज्ञा पुं० दे० "डाकख़ाना"।
डाकना–क्रि० स० फाँदना।
डाक बँगला–वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों के ठहरने के लिये बना हो।
डाका–संज्ञा पुं० बटमारी।
डाकाज़नी–संज्ञा स्त्री० बटमारी।
डाकिन–संज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनी"।
डाकिनी–संज्ञा स्त्री० डाइन।
डाकू–संज्ञा पुं० लुटेरा।
डाट–संज्ञा स्त्री० १. टेक। २. काग। संज्ञा पुं० दे० "डाँट"।
डाटना–क्रि० स० १. भिड़ाकर ठेलना। २. छेद या मुँह बंद करना।
डाढ़–संज्ञा स्त्री० चबाने के चौड़े दाँत।
डाढ़ना|○–क्रि० स० जलाना।
डाढ़ा–संज्ञा स्त्री० १. आग। २. ताप।
डाढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. ओठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भाग। चिबुक। २. दाढ़ी।
डाबर–संज्ञा पुं० १. गड़ही। २. मैला पानी।
डाबा–संज्ञा पुं० दे० "डब्बा"।
डामर–संज्ञा पुं० हलचल।
डामल–संज्ञा स्त्री० उम्र भर के लिये क़ैद।
डायन–संज्ञा स्त्री० १. डाकिनी। २. कुरूपा स्त्री।
डार○|–संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"। संज्ञा स्त्री० डलिया।
डारना|○–क्रि० स० दे० "डालना"।
डाल–संज्ञा स्त्री० शाखा। संज्ञा स्त्री० १. डलिया। २. कपड़ा और गहना जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिया जाता है।
डालना–क्रि० स० १. फेंकना। २. छोड़ना। ३. घुसाना। ४. पहनना।
डाली–संज्ञा स्त्री० डलिया। संज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।
डासन|–संज्ञा पुं० बिछौना।
डासना|–क्रि० स० बिछाना। ○|क्रि० स० डसना।
डाह–संज्ञा स्त्री० जलन।
डाहना–क्रि० स० जलाना।
डिंगल–वि० नीच। संज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली लिखते हैं।
डिंब–संज्ञा पुं० १. अंडा। २. कीड़े का छोटा बच्चा।
डिंभ–संज्ञा पुं० १. छोटा बच्चा। २. मूर्ख। † संज्ञा पुं० आडंबर।
डिगना–क्रि० अ० १. टलना। २. विचलित होना।
डिगलाना–क्रि० अ० दे० "डग-मगाना"।
डिगाना–क्रि० स० १. सरकाना। २. बात पर स्थिर न रखना।
डिग्गी–संज्ञा स्त्री० तालाब। † संज्ञा स्त्री० हिम्मत।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य गुण में सूचित करता है।
तरई†–संज्ञा स्त्री० नक्षत्र।
तरकश–संज्ञा पुं० भाथा। तूणीर।
तरकसी–संज्ञा स्त्री० छोटा तरकस।
तरकारी–संज्ञा स्त्री० भाजी।
तरकी–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का फूल के आकार का एक गहना।
तरकीब–संज्ञा स्त्री० उपाय।
तरक्की–संज्ञा स्त्री० वृद्धि।
तरखान–संज्ञा पुं० बढ़ई।
तरछाना∅†–क्रि० अ० तिरछी आँख से इशारा करना।
तरजना–क्रि० अ० डाँटना।
तरजनी–संज्ञा स्त्री० दे० "तर्जनी"। संज्ञा स्त्री० भय।
तरजुमा–संज्ञा पुं० अनुवाद।
तरणि–संज्ञा पुं० १. नदी आदि पार करना। २. निस्तार। संज्ञा स्त्री० दे० "तरणी"।
तरणिजा–संज्ञा स्त्री० सूर्य की कन्या, यमुना।
तरणितनूजा–संज्ञा स्त्री० सूर्य की पुत्री, यमुना।
तरणी–संज्ञा स्त्री० नौका।
तरतीब–संज्ञा स्त्री० सिलसिला।
तरद्दुद–संज्ञा पुं० सोच।
तरनतार–संज्ञा पुं० निस्तार।
तरनतारन–संज्ञा पुं० १. उद्धार। २. भवसागर से पार करनेवाला।
तरना–क्रि० स० पार करना। क्रि० अ० मुक्त होना।
तरनि–संज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।
तरनी–संज्ञा स्त्री० नाव।
तरपना–क्रि० अ० दे० "तड़पना"।
तरपर–क्रि० वि० १. नीचे ऊपर। २. एक के पीछे दूसरा।
तरफ़–संज्ञा स्त्री० १. ओर। २. किनारा।
तरफ़दार–वि० [संज्ञा तरफ़दारी] पक्ष में रहनेवाला।
तरफराना–क्रि० अ० दे० "तड़फड़ाना"।
तर-बतर–वि० भींगा हुआ।
तरबूज़–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बेल। २. इस बेल के बड़े गोल फल जो खाने के काम में आते हैं।
तरमीम–संज्ञा स्त्री० संशोधन।
तरल–वि० १. चंचल। २. बहनेवाला।
तरलता–संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. द्रवत्व।
तरलाई∅–संज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. द्रवत्व।
तरवन–संज्ञा पुं० १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।
तरवर–संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।
तरवा–संज्ञा पुं० दे० "तलवा"।
तरवार–संज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"। संज्ञा पुं० दे० "तरवर"।
तरस–संज्ञा पुं० दया।
तरसना–क्रि० अ० किसी वस्तु को न पाकर बेचैन रहना।
तरसाना–क्रि० स० कोई वस्तु न देकर उसके लिये बेचैन करना।
तरह–संज्ञा स्त्री० प्रकार।
तरहटी–संज्ञा स्त्री० १. नीची भूमि। २. पहाड़ की तराई।
तराई–संज्ञा स्त्री० पहाड़ के नीचे का सीड़वाला मैदान।

डिठार, डिठियार–वि० जिसे सुझाई देता हो।
डिठौना–संज्ञा पुं० काजल का टीका जो लड़कों को नज़र से बचाने के लिये लगाते हैं।
डिबिया–संज्ञा स्त्री० छोटा ढकनदार बरतन।
डिब्बा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन। २. रेलगाड़ी की एक गाड़ी।
डिमडिमी–संज्ञा स्त्री० डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा।
डींग–संज्ञा स्त्री० शेखी।
डीठ–संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. देखने की शक्ति। ३. ज्ञान।
डीठना◎†–क्रि० अ० दिखाई देना। क्रि० स० १. दिखाना। २. जादूगर।
डीम डाम–संज्ञा स्त्री० ठाट।
डील–संज्ञा पुं० १. क़द। २. शरीर।
डीह–संज्ञा पुं० १. आबादी। २. उजड़े हुए गाँव का टीला।
डुगडुगी–संज्ञा स्त्री० डुग्गी।
डुग्गी–संज्ञा स्त्री० दे० "डुगडुगी"।
डुपटना†–क्रि० स० चुनियाना।
डुबकी–संज्ञा स्त्री० गोता।
डुबाना–क्रि० स० गोता देना।
डुबोना†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
डुलाना–क्रि० स० १. हिलाना। २. टहलाना।
डूँगर–संज्ञा पुं० टीला।
डूबना–क्रि० अ० १. गोता खाना। २. अस्त होना। ३. चौपट होना।
डेंड़सी–संज्ञा स्त्री० ककड़ी की तरह की एक तरकारी।
डेड़हा†–संज्ञा पुं० पानी का साँप।
डेढ़–वि० एक पूरा और उसका आधा।
डेढ़ा–वि० दे० "डेवढ़ा"। संज्ञा पुं० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।
डेरा–संज्ञा पुं० १. पड़ाव। २. मकान।
डेराना†–क्रि० अ० दे० "डरना"।
डेल–संज्ञा पुं० १. उल्लू पक्षी। २. रोड़ा। ३. पक्षियों को बंद करने का डला।
डेली†–संज्ञा स्त्री० डलिया।
डेवढ़ा–वि०, संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ा"।
डेवढ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "ड्योढ़ी"।
डेहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दहलीज़"।
डैना–संज्ञा पुं० पंख।
डोंगर–संज्ञा पुं० पहाड़ी।
डोंगा–संज्ञा पुं० १. बिना पाल की नाव। २. बड़ी नाव।
डोंगी–संज्ञा स्त्री० छोटी नाव।
डोब, डोबा–संज्ञा पुं० डुबकी।
डोम–संज्ञा पुं० [स्त्री० डोमिनी, डोमनी] एक अस्पृश्य नीच जाति। श्मशान पर शव को आग देना, सूप-डले आदि बेचना इनका काम है।
डोम कौआ–संज्ञा पुं० बड़ा और बहुत काला कौआ।
डोमड़ा–संज्ञा पुं० दे० "डोम"।
डोमनी–संज्ञा स्त्री० डोम जाति की स्त्री।
डोमिन–संज्ञा स्त्री० डोम जाति की स्त्री।
डोर–संज्ञा स्त्री० डोरा।
डोरा–संज्ञा पुं० धागा।
डोरिया–संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूत की लंबी धारियाँ बनी हों।

तराज़ू–संज्ञा पुं० सीधी डाँड़ी के छोरों से बँधे हुए दो पलड़े जिनसे वस्तुओं की तौल मालूम करते हैं।

तराबोर–वि० खूब भींगा हुआ।

तरारा–संज्ञा पुं० १. उछाल। २. पानी की धार जो बराबर किसी वस्तु पर गिरे।

तरावट–संज्ञा स्त्री० १. गीलापन। २. ठंढक। ३. शरीर की गरमी शांत करनेवाला आहार आदि।

तराश–संज्ञा स्त्री० काटने का ढंग या भाव।

तराशना–क्रि० स० काटना।

तरिका†*–संज्ञा स्त्री० बिजली।

तरिवन–संज्ञा पुं० १. कान में पहनने की तरकी। २. कर्णफूल।

तरिवर*–संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

तरिहँत†–क्रि० वि० नीचे।

तरी–संज्ञा स्त्री० नाव।

संज्ञा स्त्री० १. गीलापन। २. ठंढक। ३. तराई।

* संज्ञा स्त्री० कान का एक गहना।

तरीका–संज्ञा पुं० १. ढंग। २. व्यवहार। ३. उपाय।

तरु–संज्ञा पुं० वृक्ष।

तरुण–वि० [स्त्री० तरुणी] युवा।

तरुणाई*–संज्ञा स्त्री० युवावस्था।

तरुणाना*–क्रि० अ० जवानी पर आना।

तरुणी–संज्ञा स्त्री० युवती।

तरुन*†–संज्ञा पुं० दे० "तरुण"।

तरुनई, तरुनाई*–संज्ञा स्त्री० जवानी।

तरुनापा*–संज्ञा पुं० दे० "तरुनाई"।

तरुबाँही*–संज्ञा स्त्री० शाखा।

तरे†–क्रि० वि० नीचे।

तरेटी–संज्ञा स्त्री० दे० "तराई"।

तरेरना–क्रि० स० क्रोधपूर्वक देखना।

तरोवर*–संज्ञा पुं० दे० "तरुवर"।

तरौंस*–संज्ञा पुं० तट।

तरौना–संज्ञा पुं० कान में पहनने का एक गहना।

तर्क–संज्ञा पुं० १. दलील। २. ताना।

तर्कना*†–क्रि० अ० तर्क करना।

तर्कवितर्क–संज्ञा पुं० १. सोचविचार। २. बहस।

तर्कश–संज्ञा पुं० तीर रखने का चोंगा।

तर्कशास्त्र–संज्ञा पुं० १. विवेचना करने के नियम और सिद्धांतों के खंडन-मंडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २. न्यायशास्त्र।

तर्काभास–संज्ञा पुं० कुतर्क।

तर्की–संज्ञा पुं० [स्त्री० तर्किनी] तर्क करनेवाला।

तर्ज़–संज्ञा पुं० १. प्रकार। २. रीति।

तर्जन–संज्ञा पुं० [वि० तर्जित] भय-प्रदर्शन।

तर्जना–क्रि० अ० डाँटना।

तर्जनी–संज्ञा स्त्री० अँगूठे और मध्यमा के बीच की उँगली।

तर्जुमा–संज्ञा पुं० भाषांतर।

तर्पण–संज्ञा पुं० [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी] १. तृप्त या संतुष्ट करने की क्रिया। २. ऋषियों और पितरों को तुष्ट करने के लिये हाथ या अरघे से पानी देना।

तल–संज्ञा पुं० १. नीचे का भाग। २. पेंदा।

तलछट–संज्ञा स्त्री० तलौंछ।

तलना–क्रि० स० कड़कड़ाते हुए घी या तेल में डालकर पकाना।

डोरियाना†–क्रि० स० पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना।
डोरिहार☆–संज्ञा पुं० [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा।
डोरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी।
डोल–संज्ञा पुं० लोहे का एक गोल बरतन।
वि० चंचल।
डोलची–संज्ञा स्त्री० छोटा डोल।
डोलडाल–संज्ञा पुं० चलना फिरना।
डोलना–क्रि० स० चलायमान होना।
डोला–संज्ञा पुं० [स्त्री० डोली] स्त्रियों के बैठने की एक बंद सवारी जिसे कहार ढोते हैं। मियाना।
डोलाना–क्रि० स० हिलाना।
डोली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं।
डौंड़ी–संज्ञा स्त्री० १. ढिंढोरा। २. घोषणा।
डौआ–संज्ञा पुं० काठ का चमचा।
डौल–संज्ञा पुं० १. ढाँचा। २. युक्ति। ३. रंग ढंग।
डौलियाना†–क्रि० स० ढंग पर लाना।
ड्योढ़ा–वि० डेढ़गुना।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें अंकों की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है।
ड्योढ़ी–संज्ञा स्त्री० चौखट।
ड्योढ़ीदार–संज्ञा पुं० दे० "ड्योढ़ीवान"।
ड्योढ़ीवान–संज्ञा पुं० द्वारपाल।

ढ

ढ–हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
ढंग–संज्ञा पुं० १. शैली। २. तदबीर। ३. आचरण। ४. दशा।
ढँगलाना†–क्रि० स० लुढ़काना।
ढंगी–वि० चालबाज़।
ढँढोर–संज्ञा पुं० ज्वाला।
ढँढोरची–संज्ञा पुं० ढँढोरा फेरनेवाला।
ढँढोरना†–क्रि० स० दे० "ढूँढ़ना"।
ढँढोरा–संज्ञा पुं० १. डुगडुगी। २. वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय।
ढकना–क्रि० अ० दे० "ढकना"।
ढकना–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० ढकनी] ढक्कन।
क्रि० अ० छिपना।
क्रि० स० दे० "ढाँकना"।
ढकनी–संज्ञा स्त्री० ढक्कन।
ढका☆†–संज्ञा पुं० बड़ा ढोल।
☆ संज्ञा पुं० धक्का।
ढकिल☆†–संज्ञा स्त्री० वेग के साथ धावा।
ढकेलना–क्रि० स० धक्के से हटाना।
ढकोसना–क्रि० स० एकबारगी बहुत सा पीना
ढकोसला–संज्ञा पुं० पाखंड।
ढक्कन–संज्ञा पुं० ढाँकने की वस्तु।

तलपट–वि० बरबाद ।
तलफ–वि० नष्ट ।
तलफना–क्रि० अ० दे० "तड़पना" ।
तलब–संज्ञा स्त्री० १. खोज । २. माँग । ३. तनखाह ।
तलबगार–वि० चाहनेवाला ।
तलबाना–संज्ञा पुं० वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिये अदालत में दाखिल किया जाता है ।
तलबी–संज्ञा स्त्री० १. बुलाहट । २. माँग ।
तलबेली–संज्ञा स्त्री० आतुरता ।
तलमलाना†–क्रि० अ० दे० "तिलमलाना" ।
तलवा–संज्ञा पुं० पादतल ।
तलवार–संज्ञा स्त्री० लोहे का एक लंबा धारदार हथियार । खड्ग ।
तलहटी–संज्ञा स्त्री० तराई ।
तला–संज्ञा पुं० १. पदा । २. जूते के नीचे का चमड़ा ।
तलाक़–संज्ञा पुं० पति पत्नी का विधानपूर्वक संबंध-त्याग ।
तलाव†–संज्ञा पुं० ताल ।
तलाश–संज्ञा स्त्री० खोज ।
तलाशना‡–क्रि० स० ढूँढ़ना ।
तलाशी–संज्ञा स्त्री० गुम हुई या छिपाई हुई वस्तु को पाने के लिये देख-भाल ।
तली–संज्ञा स्त्री० १. पेंदी । २. हाथ या पर की हथेली या तलवा ।
तले–क्रि० वि० नीचे ।
तलेटी–संज्ञा स्त्री० १. पेंदी । २. तलहटी ।
तलैया–संज्ञा स्त्री० छोटा ताल ।
तलौंछ–संज्ञा स्त्री० तलछट ।
तल्ख़–वि० [संज्ञा तल्ख़ी] कड़ुवा ।
तल्प–संज्ञा पुं० १. सेज । २. अट्टालिका ।
तल्ला–संज्ञा पुं० अस्तर ।
तव–सर्व० तुम्हारा ।
तवज्जह–संज्ञा स्त्री० ध्यान ।
तवना–क्रि० अ० तपना ।
तवा–संज्ञा पुं० १. लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सेकते हैं । २. मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाखू पीते हैं ।
तवायफ़–संज्ञा स्त्री० वेश्या ।
तवारीख़–संज्ञा स्त्री० इतिहास ।
तवालत–संज्ञा स्त्री० झंझट ।
तशरीफ़–संज्ञा स्त्री० बड़प्पन ।
तश्तरी–संज्ञा स्त्री० थाली के आकार का छिछला हलका बरतन ।
तस–वि० तैसा ।
क्रि० वि० तैसा ।
तसकीन–संज्ञा स्त्री० तसल्ली ।
तसदीक़–संज्ञा स्त्री० १. सचाई । २. समर्थन । ३. गवाही ।
तसला–संज्ञा पुं० [स्त्री० तसली] कटोरे के आकार का पर उससे बड़ा और गहरा बरतन ।
तसलीम–संज्ञा स्त्री० १. सलाम । २. किसी बात की स्वीकृति ।
तसल्ली–संज्ञा स्त्री० १. सांत्वना । २. धैर्य ।
तसवीर–संज्ञा स्त्री० चित्र ।
तस्कर–संज्ञा पुं० १. चोर । २. श्रवण ।
तस्करता–संज्ञा स्त्री० चोरी ।
तस्करी–संज्ञा स्त्री० १. चोरी । २. चोर की स्त्री । ३. चोर स्त्री ।
तस्मात्–अव्य० इसलिये ।
तस्य–सर्व० उसका ।
तहँ, तहँवाँ‡–क्रि० वि० दे० "वहाँ" ।
तह–संज्ञा स्त्री० १. परत । २. तल ।

ढक्का–संज्ञा स्त्री० बड़ा ढोल।
ढचर–संज्ञा पुं० आडंबर।
ढनमनाना†–क्रि० अ० लुढ़कना।
ढपना–संज्ञा पुं० ढाकने की वस्तु। क्रि० अ० ढका होना।
ढफ†–संज्ञा पुं० दे० "डफ"।
ढब–संज्ञा पुं० १. ढंग। २. आदत।
ढयना–क्रि० अ० ध्वस्त होना।
ढरकना†–क्रि० अ० ढलना।
ढरकाना†–क्रि० स० पानी गिराकर बहाना।
ढरकी–संज्ञा स्त्री० जुलाहों का एक औज़ार जिससे वे लोग बाने का सूत फेंकते हैं।
ढरनि–संज्ञा स्त्री० १. पतन। २. गति। ३. झुकाव।
ढर्रा–संज्ञा पुं० १. मार्ग। २. शैली। ३. युक्ति। ४. चाल-चलन।
ढलकना–क्रि० अ० १. ढलना। २. लुढ़कना।
ढलकाना–क्रि० स० १. द्रव पदार्थ को आधार से नीचे गिराना। २. लुढ़काना।
ढलना–क्रि० अ० १. ढरकना। २. प्रवृत्त होना। ३. ढाला जाना।
ढलवाँ–वि० जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो।
ढलवाना–क्रि० स० ढालने का काम दूसरे से कराना।
ढलाई–संज्ञा स्त्री० १. ढालने का भाव या काम। २. ढालने की मज़दूरी।
ढहना–क्रि० अ० ध्वस्त होना।
ढहरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "देहरी"। संज्ञा स्त्री० मिट्टी का मटका।
ढहवाना–क्रि० स० गिरवाना।
ढहाना–क्रि० स० ध्वस्त कराना।

ढाँकना–क्रि० स० इस प्रकार ऊपर फैलाना कि नीचेकी वस्तु छिप जाय।
ढाँचा–संज्ञा पुं० १. डौल। २. इस प्रकार जोड़े हुए लकड़ी आदि के बल्ले कि उनके बीच में कोई वस्तु जमाई या जड़ी जा सके। ३. ठठरी। ४. प्रकार।
ढाँपना–क्रि० स० दे० "ढाँकना"।
ढाँसना–क्रि० अ० सूखी खाँसी खाँसना।
ढाई–वि० दो और आधा।
ढाक–संज्ञा पुं० पलाश का पेड़। संज्ञा पुं० लड़ाई का ढोल।
ढाड़–संज्ञा स्त्री० १. चिंघाड़। २. चिल्लाहट।
ढाड़ना†–क्रि० स० दे० "दाड़ना"।
ढाढ़स–संज्ञा पुं० धैर्य।
ढाढ़ी–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढाढ़िन] एक प्रकार के मुसलमान गवैए।
ढाना–क्रि० स० ध्वस्त करना।
ढाबर†–वि० मटमैला।
ढामक–संज्ञा पुं० ढोल आदि का शब्द।
ढारना†–क्रि० स० दे० "ढालना"।
ढारस–संज्ञा पुं० दे० "ढाढ़स"।
ढाल–संज्ञा स्त्री० तलवार आदि का वार रोकने का गोल अस्त्र या धातु की फरी। संज्ञा स्त्री० १. उतार। २. ढंग।
ढालना–क्रि० स० १. उँडेलना। २. साँचे में ढालकर कोई चीज़ बनाना।
ढालवाँ–वि० [स्त्री० ढालवाँ] ढालू।
ढालू–वि० दे० "ढालवाँ"।
ढिंढोरना–क्रि० स० मथना।
ढिंढोरा–संज्ञा पुं० १. डुगडुगिया। २. घोषणा।
ढिग–क्रि० वि० पास।

तहक़ीक़–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तहक़ीक़ात"।
तहक़ीक़ात–संज्ञा स्त्री॰ जाँच।
तहख़ाना–संज्ञा पुं॰ वह कोठरी या घर जो ज़मीन के नीचे बना हो।
तहज़ीब–संज्ञा स्त्री॰ सभ्यता।
तहमत–संज्ञा स्त्री॰ लुंगी।
तहरीर–संज्ञा स्त्री॰ १. लिखावट। २. लेख-शैली। ३. लिखी हुई बात। ४. लिखाई।
तहरीरी–वि॰ लिखा हुआ।
तहलका–संज्ञा पुं॰ १. मौत। २. बरबादी। ३. खलबली।
तहवीलदार–संज्ञा पुं॰ कोषाध्यक्ष।
तहस-नहस–वि॰ बरबाद।
तहसील–संज्ञा स्त्री॰ १. वसूली। २. वह आमदनी जो लगान वसूल करने से इकट्ठी हो।
तहसीलदार–संज्ञा पुं॰ १. कर वसूल करनेवाला। २. वह अफ़सर जो ज़मींदारों से सरकारी मालगुज़ारी वसूल करता और माल के छोटे मुक़दमों का फ़ैसला करता है।
तहसीलदारी–संज्ञा स्त्री॰ १. तहसीलदार या पद। २. तहसीलदार की कचहरी।
तहसीलना–क्रि॰ स॰ उगाहना।
तहाँ–क्रि॰ वि॰ उस स्थान पर।
तहाना–क्रि॰ स॰ तह करना।
तहियाँ।–क्रि॰ वि॰ तब।
तहियाना।–क्रि॰ स॰ दे॰ "तहाना"।
तहीं।–क्रि॰ वि॰ उसी जगह।
ताँई–क्रि॰ वि॰ दे॰ "ताई"।
ताँगा–संज्ञा पुं॰ ढीले ढाँचे की एक गाड़ी जिसे घोड़ा खींचता है और जिस पर लोग प्रायः पीछे की ओर मुँह करके बैठते हैं।
तांडव–संज्ञा पुं॰ १. शिव का नृत्य। २. पुरुष का नृत्य।
तात–संज्ञा स्त्री॰ भेड़, बकरी की अँतड़ी, या चौपायों के पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ सूत।
ताँता–संज्ञा पुं॰ श्रेणी।
ताँति।–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "ताँत"।
ताँती–संज्ञा स्त्री॰ पंक्ति।
संज्ञा पुं॰ जुलाहा।
तांत्रिक–वि॰ [स्त्री॰ तांत्रिकी] तंत्र-संबंधी।
संज्ञा पुं॰ तंत्रशास्त्र का जाननेवाला।
ताँबा–संज्ञा पुं॰ लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु।
तांबूल–संज्ञा पुं॰ पान।
ताईं–अव्य॰ १. तक। २. पास। ३. लक्ष्य करके। ४. लिये।
ताई–संज्ञा स्त्री॰ जेठी चाची।
ताईद–संज्ञा स्त्री॰ १. पक्षपात। २. समर्थन।
ताऊ–संज्ञा पुं॰ बाप का बड़ा भाई।
ताऊन–संज्ञा पुं॰ प्लेग का रोग।
ताऊस–संज्ञा पुं॰ १. मोर। २. सारंगी से मिलता-जुलता एक बाजा।
ताक–संज्ञा स्त्री॰ १. अवलोकन। २. टकटकी। ३. घात। ४. खोज।
ताक़–संज्ञा पुं॰ ताखा।
ताक़त–संज्ञा स्त्री॰ ज़ोर।
ताक़तवर–वि॰ बलवान्।
ताकना–क्रि॰ स॰ देखना।
ता कि।–अव्य॰ इसलिये कि जिससे।
ताकीद–संज्ञा स्त्री॰ खूब चेताकर कही हुई बात।
तागड़ी–संज्ञा स्त्री॰ १. करधनी। २. कमर में पहनने का रंगीन डोरा। करगता।

संज्ञा स्त्री० १. पास। २. तट। ३. कपड़े का किनारा।
ढिठाई–संज्ञा स्त्री० १. धृष्टता। २. अनुचित साहस।
ढिबरी–संज्ञा स्त्री० वह डिबिया जिसके मुँह पर बत्ती लगाकर मिट्टी का तेल जलाते हैं।
संज्ञा स्त्री० कसे जानेवाले पेच के सिरे पर का लोहे का छल्ला।
ढिलाई–संज्ञा स्त्री० ढीला।
संज्ञा स्त्री० ढीलने की क्रिया या भाव।
ढिलाना–क्रि० स० १. ढीलने का काम कराना। २. ढीला कराना।
†क्रि० स० ढीला करना।
ढीट–संज्ञा स्त्री० रेखा।
ढीठ–वि० १. धृष्ट। २. अनुचित साहस करनेवाला।
ढीठ्यौ–संज्ञा पुं० दे० "ढीठ"।
ढील–संज्ञा स्त्री० १. शिथिलता। २. बंधन को ढीला करने का भाव।
† संज्ञा पुं० बालों का कीड़ा।
ढीलना–क्रि० स० ढीला करना।
ढीला–वि० १. जो कसा या तना हुआ न हो। २. शिथिल।
ढीलापन–संज्ञा पुं० ढीला होने का भाव।
ढुँढ़वाना–क्रि० स० तलाश करना।
ढुंढिराज–संज्ञा पुं० गणेश।
ढुंढी–संज्ञा स्त्री० बाँह। मुश्क।
ढुकना–क्रि० अ० घुसना।
ढुनमुनिया†–संज्ञा स्त्री० लुढ़कने की क्रिया या भाव।
ढुरना–क्रि० अ० १. ढरकना। २. फिसल पड़ना। ३. अनुकूल होना।
ढुराना–क्रि० स० गिराकर बहाना।
ढुर्री–संज्ञा स्त्री० पगडंडी।
ढुलकना–क्रि० अ० लुढ़कना।
ढुलकाना–क्रि० स० दे० "लुढ़काना"।
ढुलना–क्रि० अ० १. लुढ़कना। २. झुकना।
ढुलवाई–संज्ञा स्त्री० ढोने का काम, भाव या मज़दूरी।
संज्ञा स्त्री० ढुलाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
ढुलाना–क्रि० स० १. ढरकाना। २. लुढ़काना।
क्रि० स० ढोने का काम कराना।
ढूँढ़–संज्ञा स्त्री० खोज।
ढूँढ़ना–क्रि० स० खोजना।
ढूसर–संज्ञा पुं० बनियों की एक जाति।
ढूह, ढूहा†–संज्ञा पुं० ढेर।
ढेक–संज्ञा स्त्री० पानी के किनारे रहनेवाली एक चिड़िया।
ढेकली–संज्ञा स्त्री० १. सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। २. धान कूटने का लकड़ी का एक यंत्र। ढेंकी। ३. कलाबाज़ी।
ढेंकी–संज्ञा स्त्री० अनाज कूटने की ढेंकली।
ढेंढर–संज्ञा पुं० टेंटर।
ढेबुआ†–संज्ञा पुं० पैसा।
ढेर–संज्ञा पुं० राशि।
† वि० अधिक।
ढेरी–संज्ञा स्त्री० ढेर।
ढेलवाँस–संज्ञा स्त्री० रस्सी का वह फंदा जिससे ढेला फेंकते हैं।
ढेला–संज्ञा पुं० १. चक्का। २. टुकड़ा।
ढैया–संज्ञा स्त्री० १. ढाई सेर तौलने का बटखरा। २. ढाई गुने का पहाड़ा।
ढोंग–संज्ञा पुं० ढकोसला।
ढोंगबाज़ी–संज्ञा स्त्री० पाखंड।

तागना—क्रि० स० दूर दूर पर मोटी सिलाई करना।

तागा—संज्ञा पुं० डोरा। धागा।

ताज—संज्ञा पुं० १. राजमुकुट। २. आगरे का ताजमहल।

ताज़गी—संज्ञा स्त्री० १. ताज़ापन। २. प्रफुल्लता।

ताजदार—संज्ञा पुं० बादशाह।

ताजन—संज्ञा पुं० कोड़ा।

ताजमहल—संज्ञा पुं० आगरे का प्रसिद्ध मकबरा।

ताज़ा—वि० [स्त्री० ताज़ी] १. हरा भरा। २. (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३. तुरंत का बना।

ताज़िया—संज्ञा पुं० बाँस की कमचियों आदि का मकबरे के आकार का मंडप जिसमें इमाम हुसेन की कब्र होती है।

ताज़ी—वि० अरब का।
संज्ञा पुं० १. अरब का घोड़ा। २. शिकारी कुत्ता।

ताज़ीम—संज्ञा स्त्री० सम्मान-प्रदर्शन।

ताड़—संज्ञा पुं० १. शाखा-रहित एक बड़ा और प्रसिद्ध पेड़ जो खंभे के रूप में ऊपर की ओर बढ़ता चला जाता है और केवल सिरे पर पत्ते धारण करता है। २. ताड़न।

ताड़न—संज्ञा पुं० १. मार। २. डाँट-डपट।

ताड़ना—संज्ञा स्त्री० १. प्रहार। २. डाँट-डपट।
क्रि० स० १. मारना। २. डाँटना-डपटना।
क्रि० स० भाँपना।

ताड़ित—वि० जिस पर प्रहार पड़ा हो।

ताड़ी—संज्ञा स्त्री० ताड़ के डंठलों से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मद्य के रूप में होता है।

तात—संज्ञा पुं० १. पिता। २. पूज्य व्यक्ति। ३. प्यार का एक शब्द या संबोधन जो भाई या मित्र और विशेषतः छोटे के लिये व्यवहृत होता है।
† वि० गरम।

ताता†—वि० [स्त्री० ताती] तपा हुआ।

तातार्थेई—संज्ञा स्त्री० नाचने में पैर के गिरने आदि का अनुकरण शब्द।

तातील—संज्ञा स्त्री० छुट्टी का दिन।

तात्कालिक—वि० तत्काल या तुरंत का।

तात्पर्य—संज्ञा पुं० अर्थ।

तात्त्विक—वि० तत्त्व-संबंधी।

ताथेई—संज्ञा स्त्री० दे० "तातार्थेई"।

तादाद—संज्ञा स्त्री० संख्या।

तान—संज्ञा स्त्री० १. खींच। २. आलाप।

तानना—क्रि० स० १. फैलाने के लिये ज़ोर से खींचना। २. मारने के लिये हाथ या कोई हथियार उठाना।

तानपूरा—संज्ञा पुं० सितार के आकार का एक बाजा। तंबूरा।

तानबाना—संज्ञा पुं० दे० "ताना-बाना"।

ताना—संज्ञा पुं० १. कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत। २. दरी या कालीन बुनने का करघा।
† क्रि० स० मूँदना।
संज्ञा पुं० व्यंग्य।

ताना-बाना—संज्ञा पुं० कपड़ा बुनने में लंबाई और चौड़ाई के बल

ढोंगी–वि० पाखंडी।
ढोढ़ी–संज्ञा स्त्री० नाभि।
ढोटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढोटी] १. पुत्र। २. लड़का।
ढोटौना†–संज्ञा पुं० दे० "ढोटा"।
ढोना–क्रि० स० १. भार ले चलना। २. उठा ले जाना।
ढोर–संज्ञा पुं० चौपाया।
ढोरना*†–क्रि० स० ढरकाना।
ढोरी–संज्ञा स्त्री० १. ढालने या ढरकाने की क्रिया या भाव। २. रट।
ढोल–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बाजा जिसके दोनों ओर चमड़ा मढ़ा होता है। २. कान का परदा।
ढोलक–संज्ञा स्त्री० छोटा ढोल।
ढोलनी–संज्ञा स्त्री० बच्चों का झूला।
ढोलिनी–संज्ञा स्त्री० ढोल बजानेवाली स्त्री।
ढोलिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।
ढोली–संज्ञा स्त्री० २०० पानों की गड्डी। संज्ञा स्त्री० हँसी।
ढौंच–संज्ञा पुं० डाली। नज़र।
ढौंचा–संज्ञा पुं० साढ़े चार का पहाड़ा।

ण

ण–हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।
णगण–संज्ञा पुं० दो मात्राओं का एक गण।

त

त–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन, वर्ण का १६ वाँ और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।
तंग–संज्ञा पुं० कसन। वि० १. कसा। २. हैरान। ३. सुस्त।
तंगदस्त–वि० [संज्ञा तंगदस्ती] १. कंजूस। २. ग़रीब।
तंगी–संज्ञा स्त्री० १. संकीर्णता। २. निर्धनता। ३. कमी।
तंज़ेब–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।
तंड–संज्ञा पुं० नृत्य।
तंडव–संज्ञा पुं० दे० "तांडव"।
तंडुल–संज्ञा पुं० चावल।
तंतमंत–संज्ञा पुं० दे० "तंत्रमंत्र"।
तंतरी*†–संज्ञा पुं० वह जो तारवाले बाजे बजाता हो।
तंतुवादक–संज्ञा पुं० तंत्री।
तंतुवाय–संज्ञा पुं० कपड़े बुननेवाला।

फैलाए हुए सूत।
ताना रीरी–संज्ञा स्त्री० साधारण गाना।
तानी–संज्ञा स्त्री० कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत।
ताप–संज्ञा पुं० १. गरमी। २. आँच। ३. ज्वर।
तापतिल्ली–संज्ञा स्त्री० प्लीहा रोग।
तापन–संज्ञा पुं० १. ताप देनेवाला। २. सूर्य्य।
तापना–क्रि० अ० आग की आँच से अपने को गरम करना।
क्रि० स० १. गरम करने के लिये जलाना। २. नष्ट करना।
क्रि० स० तपाना।
तापमान यंत्र–संज्ञा पुं० थरमामीटर।
तापस–संज्ञा पुं० [स्त्री० तापसी] १. तपस्वी। २. तेजपत्ता।
तापसतरु, तापसद्रुम–संज्ञा पुं० इंगुदी वृक्ष।
तापसी–संज्ञा स्त्री० १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री।
ताप्पा–संज्ञा पुं० मुरगी का दरबा।
तापित–वि० १. जो तपाया गया हो। २. दुःखित।
तापी–वि० १. ताप देनेवाला। २. जिसमें ताप हो।
संज्ञा पुं० बुद्धदेव।
संज्ञा स्त्री० तापती नदी।
तापेंद्र–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
ताब–संज्ञा स्त्री० १. ताप। २. चमक ३. शक्ति।
ताबड़तोड़–क्रि० वि० लगातार।
ताबे–वि० वशीभूत।
ताबेदार–वि० [संज्ञा ताबेदारी] आज्ञाकारी।

तामड़ा–वि० ताँबे के रंग का।
तामरस–संज्ञा पुं० १. कमल। २. सोना।
तामस–वि० [स्त्री० तामसी] तमोगुण से युक्त।
तामसी–वि० स्त्री० तमोगुणवाली।
संज्ञा स्त्री० अँधेरी रात।
तामिल–संज्ञा स्त्री० [देश०] १. भारत के दक्षिण प्रांत की एक जाति जो आधुनिक मदरास प्रांत के अधिकांश भाग में निवास करती है। २. द्राविड़ भाषा।
तामील–संज्ञा स्त्री० पालन।
ताम्र–संज्ञा पुं० ताँबा।
ताम्रचूड़–संज्ञा पुं० मुरगा।
ताम्रपत्र–संज्ञा पुं० ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिस पर प्राचीन काल में अक्षर खुदवाकर दानपत्र आदि लिखते थे।
ताम्रपर्णी–संज्ञा स्त्री० १. तालाब। २ मदरास की एक छोटी नदी।
तायदाद–संज्ञा स्त्री० दे० "तादाद"।
तायफा–संज्ञा पुं० स्त्री० १. वेश्याओं और समाजियों की मंडली। २. वेश्या।
तायना–क्रि० स० तपाना।
ताया–संज्ञा पुं० [स्त्री० ताई] बड़ा चाचा।
तार–संज्ञा पुं० १. चाँदी। २. तपी हुई धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तागा। ३. टेलिग्राफ। ४. तार से आई हुई खबर। ५. बराबर चलता हुआ क्रम।
तारक–संज्ञा पुं० १. तारा। २. वह जो पार उतारे।
तारकश–संज्ञा पुं० धातु का तार

तंत्र-संज्ञा पुं० १. सूत। २. झाड़ने फूकने का मंत्र।
तंत्री-संज्ञा स्त्री० १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. बाजा जिसमें बजाने के लिये तार लगे हों। संज्ञा पुं० वह जो बाजा बजाता हो।
तंदुरुस्त-वि० नीरोग।
तंदुरुस्ती-संज्ञा स्त्री० स्वास्थ्य।
तंदुल७†-संज्ञा पुं० दे० "तंडुल"।
तंदेही-संज्ञा स्त्री० १. परिश्रम। २. प्रयत्न।
तंद्रा-संज्ञा स्त्री० १. ऊँघाई। २. हलकी बेहोशी।
तंद्रालु-वि० जिसे तंद्रा आती हो।
तंबाकू-संज्ञा पुं० दे० "तमाकू"।
तँबिया-संज्ञा पुं० ताँबे या और किसी चीज़ का बना हुआ छोटा तसला।
तँबियाना-क्रि० अ० १. ताँबे के रंग का होना। २. ताँबे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँबे का स्वाद या गंध आ जाना।
तंबीह-संज्ञा स्त्री० १. नसीहत। २. ताकीद।
तंबू-संज्ञा पुं० शामियाना।
तंबूरची-संज्ञा पुं० तंबूरा बजानेवाला।
तंबूरा-संज्ञा पुं० बीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।
तंबूल७†-संज्ञा पुं० दे० "तांबूल"।
तँबोली-संज्ञा पुं० वह जो पान बेचता हो। बरई।
तअज्जुब-संज्ञा पुं० आश्चर्य।
तअल्लुक़ा-संज्ञा पुं० बड़ा इलाक़ा।
तअल्लुक़ेदार-संज्ञा पुं० इलाक़ेदार।
तअल्लुक़ेदारी-संज्ञा स्त्री० तअल्लुक़ेदार का पद या भाव।
तअल्लुक़-संज्ञा पुं० संबंध।
तअल्लुक़ात-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक़"।
तअस्सुब-संज्ञा पुं० धर्म या जाति-संबंधी पक्षपात।
तइसा†-वि० दे० "वैसा"।
तईं७-प्रत्य० से।
प्रत्य० प्रति।
अव्य० लिये।
तई-संज्ञा स्त्री० थाली के आकार की छिछली कड़ाही।
तउ७†-अव्य० १. दे० "तब"। २. दे० "त्यों"।
तऊ७†-अव्य० तो भी।
तक-अव्य० पर्यंत।
संज्ञा स्त्री० दे० "टक"।
तक़दीर-संज्ञा स्त्री० भाग्य।
तक़दीरवर-वि० भाग्यवान्।
तकन-संज्ञा स्त्री० देखना।
तकना७†-क्रि० अ० देखना।
तकमा†-संज्ञा पुं० दे० "तमग़ा"।
तकरार-संज्ञा स्त्री० हुज्जत।
तक़रीर-संज्ञा स्त्री० १. बातचीत। २. वक्तृता।
तकला-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई जिस पर सूत लिपटता जाता है। टेकुआ। २. रस्सी बनाने की टिकुरी।
तकलीफ़-संज्ञा स्त्री० १. कष्ट। २. विपत्ति।
तकल्लुफ़-संज्ञा पुं० शिष्टाचार।
तक़सीम-संज्ञा स्त्री० १. बँटाई। २. भाग।
तकाई-संज्ञा स्त्री० ताकने की क्रिया या भाव।

खींचनेवाला।
तारका-संज्ञा स्त्री० १. तारा। २. आँख की पुतली।
तारकेश्वर-संज्ञा पुं० शिव।
तारघर-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से तार की खबर भेजी जाय।
तारण-संज्ञा पुं० १. पार उतारने का काम। २. उद्धार। ३. उद्धार करनेवाला।
तारन-संज्ञा पुं० दे० "तारण"।
तारना-क्रि० स० पार लगाना।
तारपीन-संज्ञा पुं० चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल जो प्रायः औषध के काम में आता है।
तारबर्क़ी-संज्ञा पुं० बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचानेवाला तार।
तारा-संज्ञा पुं० १. सितारा। २. आँख की पुतली।
ताराज-संज्ञा पुं० लूट-पाट।
तारापथ-संज्ञा पुं० आकाश।
तारामंडल-संज्ञा पुं० नक्षत्रों का समूह या घेरा।
तारिणी-वि० स्त्री० तारनेवाली।
तारी॰।-संज्ञा स्त्री० दे० "ताली"। ०† संज्ञा स्त्री० दे० "ताड़ी"।
तारीख़-संज्ञा स्त्री० १. तिथि। २. वह तिथि जिसमें पूर्व-काल के किसी वर्ष में कोई विशेष घटना हुई हो।
तारीफ़-संज्ञा स्त्री० १. लक्षण। २. वर्णन। ३. प्रशंसा। ४. विशेषता।
तारुण्य-संज्ञा पुं० जवानी।
तार्किक-संज्ञा पुं० १. तर्कशास्त्र का जाननेवाला। २. तत्ववेत्ता।
ताल-संज्ञा पुं० १. करतल। २. ताली। ३. नाचने गाने में उसके मध्यवर्ती काल और क्रिया का परिमाण। ४. जंघे या बाहु पर ज़ोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया हुआ शब्द। संज्ञा पुं० तालाव।
तालकेतु-संज्ञा पुं० १. भीष्म। २. बलराम।
तालपर्णी-संज्ञा स्त्री० १. सौंफ। २. कपूरकचरी।
तालमेल-संज्ञा पुं० ताल-सुर का मिलान।
तालरस-संज्ञा पुं० ताड़ी।
तालवन-संज्ञा पुं० १. ताड़ के पेड़ों का जंगल। २. ब्रज का एक वन।
तालव्य-वि० १. तालु-संबंधी। २. तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण।
ताला-संज्ञा पुं० लोहे, पीतल आदि की वह कल जिसे बंद किवाड़, संदूक आदि की कुंडी में फँसा देने से वह बिना कुंजी के नहीं खुल सकता।
तालाब-संज्ञा पुं० जलाशय।
तालिका-संज्ञा स्त्री० १. ताली। २. नत्थी या तागा जिससे तालपत्र या काग़ज़ बँधे हों। ३. सूची।
तालिब-संज्ञा पुं० ढूँढ़नेवाला।
तालिबइल्म-संज्ञा पुं० विद्यार्थी।
ताली-संज्ञा स्त्री० १. कुंजी। २. चाबी। ३. थपोड़ी। ४. करतल-ध्वनि। संज्ञा स्त्री० छोटा ताल।
तालीम-संज्ञा स्त्री० शिक्षा।
तालु-संज्ञा पुं० तालू।
तालुका-संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुका"।
तालू-संज्ञा पुं० मुँह के भीतर की ऊपरी छत।
तालेवर-वि० धनी।

तदबीर–संज्ञा स्त्री० उपाय।
तदा–क्रि० वि० उस समय।
तदारुक–संज्ञा पुं० भागे हुए अपराधी आदि की खोज या किसी दुर्घटना के संबंध में जाँच।
तदीय–सर्व० उसका।
तदुपरांत–क्रि० वि० उसके पीछे।
तद्–वि० वह।
†क्रि० वि० उस समय। तब।
तद्गत–वि० १. उससे संबंध रखनेवाला। २. उसके अंतर्गत।
तद्धित–संज्ञा पुं० व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर शब्द बनाते हैं।
तद्भव–संज्ञा पुं० संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्तित हो गया हो।
तद्यपि–अव्य० तथापि।
तद्रूप–वि० समान।
तद्रूपता–संज्ञा स्त्री० सादृश्य।
तद्वत्–वि० उसी के जैसा।
तन–संज्ञा पुं० शरीर।
क्रि० वि० तरफ़।
⊛ वि० दे० "तनिक"।
तनक़ीह–संज्ञा स्त्री० जाँच।
तनख़ाह–संज्ञा स्त्री० वेतन।
तनगना†⊛–क्रि० अ० दे० "तिनकना"।
तनज़ेब–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बहुत महीन और बढ़िया मलमल।
तनतनाना–क्रि० अ० १. शान दिखाना। २. क्रोध करना।
तनना–क्रि० अ० १. खिंचाव या ख़ुश्की आदि के कारण किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ना। २. ऐंठना।
तनमय–वि० दे० "तन्मय"।
तनय–संज्ञा पुं० बेटा।
तनया–संज्ञा स्त्री० बेटी।
तनवाना–क्रि० स० तनाना।
तनसुख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया फूलदार कपड़ा।
तनहा–वि० अकेला।
क्रि० वि० अकेले।
तनहाई–संज्ञा स्त्री० १. अकेलापन। २. एकांत।
तनाज़ा–संज्ञा पुं० १. बखेड़ा। २. शत्रुता।
तनाना–क्रि० स० दे० "तनवाना"।
तनाव–संज्ञा पुं० तनने का भाव या क्रिया।
तनि, तनिक–वि० थोड़ा।
क्रि० वि० ज़रा।
तनी†–क्रि० वि० दे० "तनिक"।
तनु–वि० १. थोड़ा। २. कोमल।
संज्ञा स्त्री० शरीर।
तनुक⊛†–क्रि० वि० दे० "तनिक"।
तनुज–संज्ञा पुं० बेटा।
तनुजा–संज्ञा स्त्री० लड़की।
तनुता–संज्ञा स्त्री० लघुता।
तनुत्राण–संज्ञा पुं० कवच।
तनुधारी–वि० देहधारी।
तनूज⊛–संज्ञा पुं० दे० "तनुज"।
तनेना–वि० [स्त्री० तनेनी] १. टेढ़ा। २. क्रुद्ध।
तनै⊛–संज्ञा पुं० दे० "तनय"।
तनैया⊛†–संज्ञा स्त्री० बेटी।
तनोज⊛–संज्ञा पुं० १. रोआँ। २. लड़का।
तनोरुह⊛–संज्ञा पुं० दे० "तनूरुह"।
तपाना–क्रि० अ० अकड़ना।

तालुक़–संज्ञा पुं० दे० "तअल्लुक़"।
ताव–संज्ञा पुं० १. वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय। २. शेखी की झोंक।
संज्ञा पुं० काग़ज़ का तख़्ता।
तावत्–क्रि० वि० १. तब तक। २. उतनी दूर तक।
तावना॰†–क्रि० स० १. तपाना। २. जलाना।
ताव भाव–संज्ञा पुं० मौका।
तावरी–संज्ञा स्त्री० १. ताप। २. धूप। ३. बुख़ार।
तावान–संज्ञा पुं० दंड।
तावीज़–संज्ञा पुं० जंतर।
ताश–संज्ञा पुं० खेलने के लिये मोटे काग़ज़ के चौखूँटे टुकड़े जिन पर रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं।
ताशा–संज्ञा पुं० चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।
तासीर–संज्ञा स्त्री० असर।
ताहम–अव्य० तो भी।
ताहि॰†–सर्व० उसको।
तितिड़ी–संज्ञा स्त्री० इमली।
तिआ–संज्ञा स्त्री० दे० "तिया"।
तिकड़ी–संज्ञा स्त्री० तीन कड़ियोंवाला।
तिकोन॰–वि० दे० "तिकोना"।
तिकोना–वि० जिसमें तीन कोने हों।
संज्ञा पुं० समोसा नाम का पकवान।
तिकोनिया–वि० दे० "तिकोना"।
तिक्खे॰–वि० तीखा।
तिक्त–वि० तीता।
तिक्तता–संज्ञा स्त्री० तिताई।
तिक्ष॰†–वि० तीक्ष्ण।
तिक्षता॰–संज्ञा स्त्री० तेज़ी।
तिखाई–संज्ञा स्त्री० तीखापन।
तिखूँटा–वि० तिकोना।
तिगुना–वि० तीन बार अधिक।
तिग्म–वि० तीक्ष्ण।
संज्ञा पुं० १. वज्र। २. पिप्पली।
तिच्छ॰–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिच्छन॰–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिजारत–संज्ञा स्त्री० व्यापार।
तिजारी–संज्ञा स्त्री० हर तीसरे दिन जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
तिड़ी बिड़ी†–वि० तितर-बितर।
तित॰–क्रि० वि० १. तहाँ। २. उधर।
तितना†–क्रि० वि० दे० "उतना"।
तितर बितर–वि० १. बिखरा हुआ। २. अस्त-व्यस्त।
तितारा–संज्ञा पुं० सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं।
वि० जिसमें तीन तार हों।
तितिम्मा–संज्ञा पुं० १. ढकोसला। २. उपसंहार।
तितिक्ष–वि० सहनशील।
तितिक्षा–संज्ञा स्त्री० सहिष्णुता।
तितिक्षु–वि० क्षमाशील।
तितिम्मा–संज्ञा पुं० बचा हुआ भाग।
तिते॰†–वि० उतने।
तितेक॰†–वि० उतना।
तितो॰†–वि०, क्रि० वि० उतना।
तित्तिर–संज्ञा पुं० तीतर पक्षी।
तिथि–संज्ञा स्त्री० मिति। तारीख़।
तिथिपत्र–संज्ञा पुं० पंचांग।
तिदरी–संज्ञा स्त्री० वह कोठरी जिसमें तीन दरवाज़े या खिड़कियाँ हों।
तिधर॰–क्रि० वि० दे० "उधर"।
तिन–सर्व० "तिस" का बहु०।
संज्ञा पुं० तिनका।

तिनकना–क्रि० अ० चिढ़ना।
तिनका–संज्ञा पुं० तृण।
तिनगना–क्रि० अ० दे० "तिनकना"।
तिनगरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पकवान।
तिनपहला–वि० जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।
तिनिश–संज्ञा पुं० सीसम की जाति का एक पेड़।
तिनूका*†–संज्ञा पुं० दे० "तिनका"।
तिन्हें†–सर्व० दे० "तिन"।
तिपल्ला–वि० जिसमें तीन पल्ले हों।
तिपाई–संज्ञा स्त्री० तीन पायों की बैठने या घड़ा आदि रखने की छोटी ऊँची चौकी।
तिपाड़–संज्ञा पुं० १. जो तीन पाट जोड़कर बना हो। २. जिसमें तीन पल्ले हों।
तिबारा–वि० तीसरी बार।
संज्ञा पुं० वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों।
तिब्बत–संज्ञा पुं० एक देश जो हिमालय के उत्तर में है।
तिब्बती–वि० तिब्बत का।
संज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा।
संज्ञा पुं० तिब्बत का रहनेवाला।
तिमंजिला–वि० [स्त्री० तिमंजिली] तीन खंडों का।
तिमि*–अव्य० उस प्रकार।
तिमिर–संज्ञा पुं० अंधकार।
तिमिरहर–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
तिमिरारि–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
तिमिरारी*–संज्ञा स्त्री० अँधेरा।
तिमिरावलि–संज्ञा स्त्री० अंधकार का समूह।

तिमुहानी–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ तीन ओर जाने को तीन मार्ग हों।
तिय*–संज्ञा स्त्री० स्त्री।
तिया–संज्ञा पुं० तिक्की।
* संज्ञा स्त्री० दे० "तिय"।
तिरखूँटा–वि० तिरकोना।
तिरछई†–संज्ञा स्त्री० तिरछापन।
तिरछा–वि० जो ठीक सामने की ओर न जाकर इधर उधर हटकर गया हो।
तिरछाई†–संज्ञा स्त्री० तिरछापन।
तिरछाना–क्रि० अ० तिरछा होना।
तिरछापन–संज्ञा पुं० तिरछा होने का भाव।
तिरछौहाँ–वि० जो कुछ तिरछापन लिए हो।
तिरछौहें–क्रि० वि० तिरछेपन के साथ।
तिरना–क्रि० अ० १. उतराना। २. तैरना।
तिरप–संज्ञा नृत्य में एक प्रकार की गति।
तिरपट†–वि० १. तिरछा। २. मुश्किल।
तिरपाई–संज्ञा स्त्री० तीन पायों की ऊँची चौकी।
तिरपाल–संज्ञा पुं० फूस या सरकंडों के लंबे पूले जो छाजन में खपड़ों के नीचे दिए जाते हैं।
संज्ञा पुं० रोगन चढ़ा हुआ कनवास या टाट।
तिरबेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "त्रिवेणी"।
तिरमिरा–संज्ञा पुं० चकाचौंध।
तिरमिराना–क्रि० अ० चौंधियाना।
तिरलोक†–संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।

भाव या मज़दूरी।
तौलाना–क्रि० स० तौलने का काम दूसरे से कराना।
तौलिया–संज्ञा स्त्री०, पुं० एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।
तौसना†–क्रि० अ० गरमी से बहुत व्याकुल होना।
क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।
तौहीन–संज्ञा स्त्री० अपमान।
तौहीनी†०–संज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।
त्यक्त–वि० [वि० त्यक्तम्] त्यागा हुआ।
त्यजन–संज्ञा पुं० [वि० त्यजनाय] त्याग।
त्याग–संज्ञा पुं० १. उत्सर्ग। २. किसी बात को छोड़ने की क्रिया।
त्यागना–क्रि० स० छोड़ना।
त्यागपत्र–संज्ञा पुं० इस्तीफ़ा।
त्यागी–वि० विरक्त।
त्याज्य–वि० त्यागने योग्य।
त्यार†–वि० दे० "तैयार"।
त्यूँ†–क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यों–क्रि० वि० १. उस प्रकार। २. उसी समय।
त्योरुस†–संज्ञा पुं० पिछला तीसरा वर्ष।
त्योरी–संज्ञा स्त्री० दृष्टि।
त्योहार–संज्ञा पुं० पर्व-दिन।
त्योहारी–संज्ञा स्त्री० वह धन जो किसी त्योहार के उत्सव में छोटों लड़कों, आश्रितों या नौकरों आदि को दिया जाता है।
त्यौं–क्रि० वि० दे० "त्यों"।
त्यौर–संज्ञा पुं० दे० "त्यौरी"।
त्रपा–संज्ञा स्त्री० [वि० त्रपमान्] १. लज्जा। २. छिनाल स्त्री।
वि० लज्जित।
त्रय–वि० १. तीन। २. तीसरा
त्रयी–संज्ञा स्त्री० तीन वस्तुओं का समूह।
त्रयोदशी–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।
त्रसन–संज्ञा पुं० भय।
त्रसना०†–क्रि० अ० डरना।
त्रसाना०†–क्रि० स० डराना।
त्रसित०–वि० १. भयभीत। २. पीड़ित।
त्रस्त–वि० १. भयभीत। २. पीड़ित।
त्राण–संज्ञा पुं० [वि० त्रातक] रक्षा।
त्राता, त्रातार–संज्ञा पुं० रक्षक।
त्रास–संज्ञा पुं० १. डर। २. कष्ट।
त्रासक–संज्ञा पुं० डरानेवाला।
त्रासना०†–क्रि० स० डराना।
त्रासित–वि० दे० "त्रस्त"।
त्राहि–अव्य० बचाओ।
त्रि–वि० तीन।
त्रिकंटक–वि० जिसमें तीन काँटे हों।
त्रिक–संज्ञा पुं० तीन का समूह।
त्रिकांड–वि० जिसमें तीन कांड हों।
त्रिकाल–संज्ञा पुं० तीनों समय।
त्रिकालज्ञ–संज्ञा पुं० सर्वज्ञ।
त्रिकालदर्शक–वि० दे० "त्रिकालज्ञ"।
त्रिकालदर्शी–संज्ञा पुं० तीनों कालों की बातों को जाननेवाला व्यक्ति।
त्रिकुटी–संज्ञा स्त्री० दोनों भौंहों के बीच के कुछ ऊपर का स्थान।
त्रिकूट–संज्ञा पुं० १. वह पर्वत जिसकी तीन चोटियाँ हों। २. वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई मानी जाती है।

तिरशूल‡–संज्ञा पुं० दे० "त्रिशूल"।
तिरस्कार–संज्ञा पुं० [वि० तिरस्कृत] अनादर।
तिरस्कृत–वि० जिसका तिरस्कार किया गया हो।
तिरहुत–संज्ञा पुं० मिथिला प्रदेश जिसके अंतर्गत आजकल मुज़फ्फ़रपुर और दरभंगा है।
तिराना–क्रि० स० १. तैराना। २. उबारना।
तिराहा–संज्ञा पुं० तिरमुहानी।
तिरिन‡०–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
तिरिया–संज्ञा स्त्री० स्त्री।
तिरीछा०†–वि० दे० "तिरछा"।
तिरोधान–संज्ञा पुं० अंतर्द्धान।
तिरोभाव–संज्ञा पुं० १. अंतर्द्धान। २. गोपन।
तिरोहित, तिरोभूत–वि० छिपा हुआ।
तिर्यंछा–वि० दे० "तिरछा"।
तिर्यक्–वि० तिरछा।
तिर्यक्ता–संज्ञा स्त्री० तिरछापन।
तिर्यग्गति–संज्ञा स्त्री० तिरछी या टेढ़ी चाल।
तिलंगा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कनकौवा।
तिलंगाना–संज्ञा पुं० तैलंग देश।
तिलंगी–वि० तिलंगाने का निवासी। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पतंग।
तिल–संज्ञा पुं० १. एक पौधा जिसकी खेती तेलवाले बीजों के लिये होती है। २. काले रंग का बहुत छोटा दाग जो शरीर पर होता है। ३. आँख की पुतली के बीचो बीच की गोल बिंदी।
तिलक–संज्ञा पुं० १. टीका। २. राज्याभिषेक। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।
तिलकुट–संज्ञा पुं० कूटे हुए तिल जो खाँड़ की चाशनी में पगे हों।
तिलचट्टा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का झींगुर।
तिलछना०–क्रि० अ० विकल रहना।
तिलड़ा–वि० जिसमें तीन लड़ हों।
तिलड़ी–संज्ञा स्त्री० तीन लड़ों की माला जिसके बीच में जुगनी होती है।
तिलदानी–संज्ञा स्त्री० वह थैली जिसमें दरज़ी सूई, तागा आदि रखते हैं।
तिलपट्टी–संज्ञा स्त्री० खाँड़ में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ कतरा।
तिलपपड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "तिलपट्टी"।
तिलपुष्प–संज्ञा पुं० १. तिल का फूल। २. बघनखी।
तिलभुग्गा–संज्ञा पुं० दे० "तिलकुट"।
तिलमिल–संज्ञा स्त्री० चकाचौंध।
तिलमिलाना–क्रि० अ० दे० "तिरमिराना"।
तिलवा–संज्ञा पुं० तिलों का लड्डू।
तिलस्म–संज्ञा पुं० १. जादू। २. चमत्कार।
तिलस्मी–वि० तिलस्म-संबंधी।
तिलहन–संज्ञा पुं० वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।
तिलांजलि–संज्ञा स्त्री० मृतक-संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृतक के नाम छोड़ते हैं।
तिलाक–संज्ञा पुं० पति-पत्नी के नाते का टूटना।

थू–अव्य० १. थूकने का शब्द। २. छिः।
थूक–संज्ञा पुं० खखार।
थूकना–क्रि० अ० मुँह से थूक निकालना या फेंकना।
क्रि० स० १. उगलना। २. बुरा कहना।
थूथन–संज्ञा पुं० लंबा निकला हुआ मुँह।
थून–संज्ञा स्त्री० थूनी।
थूनी–संज्ञा स्त्री० १. थम। २. वह खंभा जो किसी बोझ को रोकने के लिये नीचे से लगाया जाय।
थूरना†–क्रि० स० १. कूटना। २. मारना। ३. ठूँसना।
थूल☆–वि० १. मोटा। २. भद्दा।
थूला–वि० [स्त्री० थूली] मोटा।
थेई थेई–वि० थिरक-थिरककर नाचने की मुद्रा और ताल।
थैला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० थैली] कपड़े आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर बंद कर सकें।
थैली–संज्ञा स्त्री० छोटा थैला।
थोक–संज्ञा पुं० १. ढेर। २. समूह। ३. इकट्ठी वस्तु।
थोड़ा–वि० [स्त्री० थोड़ी] अल्प।
क्रि० वि० तनिक।
थोथरा–वि० दे० "थोथा"।
थोथा–वि० [स्त्री० थोथी] १. पोला। २. कुंठित। ३. निकम्मा।
थोपड़ी–संज्ञा स्त्री० चपत।
थोपना–क्रि० स० छोपना।
थोबड़ा–संज्ञा पुं० जानवरों का थूथन।
थोर, थोरा☆†–वि० दे० "थोड़ा"।
थोरिक☆†–वि० थोड़ा सा।

द

द–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन जो त-वर्ग का तीसरा वर्ण है। दंतमूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से इसका उच्चारण होता है।
दंग–वि० विस्मित।
संज्ञा पुं० घबराहट।
दंगई–वि० १. दंगा करनेवाला। २. प्रचंड।
दंगल–संज्ञा पुं० १. मल्लयुद्ध का स्थान। २. दल।
दंगा–संज्ञा पुं० झगड़ा।
दंड–संज्ञा पुं० १. डंडा। २. कसरत जो हाथ-पैर के पंजों के बल औंधे होकर की जाती है। ३. सज़ा। ४. लंबाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। ५. घड़ी।
दंडक–संज्ञा पुं० १. डंडा। २. शासक। ३. वह छंद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो।
दंडकला–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मात्रिक छंद।
दंडकारण्य–संज्ञा पुं० वह प्राचीन वन जो विंध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के किनारे तक फैला था।
दंडदास–संज्ञा पुं० वह जो दंड का

तिलेगू–संज्ञा स्त्री० दे० "तेलगू"।
तिलोक–संज्ञा पुं० दे० "त्रिलोक"।
तिलोकपति–संज्ञा पुं० विष्णु।
तिलौरी–संज्ञा स्त्री० वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो।
तिल्ली–संज्ञा स्त्री० पिलही।
संज्ञा स्त्री० तिल नाम का अन्न।
तिवाड़ी, तिवारी–संज्ञा पुं० दे० "त्रिपाठी"।
तिशना–संज्ञा पुं० ताना।
०संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।
तिष्ठना०–क्रि० अ० ठहरना।
तिष्पन०–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तिस–सर्व० 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।
तिसना०–संज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।
तिसरायत–संज्ञा स्त्री० तीसरा या गैर होने का भाव।
तिसरैत–संज्ञा पुं० १. तटस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।
तिसाना०–क्रि० अ० प्यासा होना।
तिहराना–क्रि० स० दो बार करके एक बार फिर और करना।
तिहवार–संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।
तिहाई–संज्ञा स्त्री० तीसरा भाग या हिस्सा।
तिहारा, तिहारो०–सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तिहि–सर्व० दे० "तेहि"।
तिहूँ–वि० तीनों।
तिहैया–संज्ञा पुं० तीसरा भाग।
तीक्ष्ण–वि० १. तेज़ नोक या धार वाला। २. तेज़। ३. उग्र।
तीक्ष्णता–संज्ञा स्त्री० तीव्रता।

तीक्ष्णधार–संज्ञा पुं० खड्ग।
वि० जिसकी धार बहुत तेज़ हो।
तीख०–वि० दे० "तीखा"।
तीखन०–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीखा–वि० तीक्ष्ण।
तीखुर–संज्ञा पुं० हलदी की जाति का एक प्रकार का पौधा।
तीछन०–वि० दे० "तीक्ष्ण"।
तीज–संज्ञा स्त्री० पक्ष की तीसरी तिथि।
तीजा–वि० [स्त्री० तीजी] तीसरा।
तीत०–वि० दे० "तीता"।
तीतर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध चंचल और तेज़ दौड़नेवाला पक्षी जो लड़ाने के लिये पाला जाता है।
तीता–वि० १. जिसका स्वाद तीखा और चरपरा हो। २. कड़वा।
तीन–वि० जो दो और एक हो।
तीमारदारी–संज्ञा स्त्री० रोगियों की सेवा-शुश्रूषा का काम।
तीय–संज्ञा स्त्री० स्त्री।
तीया०–संज्ञा स्त्री० दे० "तीय"।
संज्ञा पुं० दे० "तिक्की" या "तिड़ी"।
तीरंदाज़–संज्ञा पुं० तीर चलानेवाला।
तीरंदाज़ी–संज्ञा स्त्री० तीर चलाने की विद्या या क्रिया।
तीर–संज्ञा पुं० १. तट। २. पास।
संज्ञा पुं० बाण।
तीरथ–संज्ञा पुं० दे० "तीर्थ"।
तीरवर्ती–वि० १. तट या किनारे पर रहनेवाला। २. पड़ोसी।
तीरा०–संज्ञा पुं० दे० "तीर"।
तीर्थंकर–संज्ञा पुं० जैनियों के उपास्य देव जो सब देवताओं से भी श्रेष्ठ और सब प्रकार के दोषों से रहित और मुक्तिदाता माने जाते हैं।

रुपया न दे सकने के कारण दास हुआ हो।

दंडधर–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. शासनकर्त्ता। ३. संन्यासी।

दंडधार–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. राजा।

दंडन–संज्ञा पुं० [वि० दंडनीय, दंडित, दंड्य] शासन।

दंडना–क्रि० स० दंड देना।

दंडनायक–संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. दंड-विधान करनेवाला राजा या हाकिम।

दंडनीति–संज्ञा स्त्री० दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की राजाओं की नीति।

दंडनीय–वि० दंड देने योग्य।

दंडपाणि–संज्ञा पुं० १. यमराज। २. भैरव की एक मूर्त्ति।

दंडप्रणाम–संज्ञा पुं० दंडवत्।

दंडवत्–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ नमस्कार।

दंडविधि–संज्ञा स्त्री० अपराधों के दंड से संबंध रखनेवाला नियम या व्यवस्था।

दंडायमान–वि० डंडे की तरह सीधा खड़ा।

दंडालय–संज्ञा पुं० न्यायालय।

दंडिका–संज्ञा स्त्री० बीस अक्षरों की वर्णवृत्ति।

दंडित–वि० पुं० जिसे दंड मिला हो।

दंडी–संज्ञा पुं० १. दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २. यमराज। ३. राजा। ४. द्वारपाल। ५. वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे।

दंड्य–वि० दंड पाने योग्य।

दंतकथा–संज्ञा स्त्री० ऐसी बात जिसे बहुत दिनों से लोग एक दूसरे से सुनते चले आए हों और जिसका कोई पुष्ट प्रमाण न हो।

दंतच्छद–संज्ञा पुं० ओष्ठ।

दंतधावन–संज्ञा पुं० १. दातुन करने की क्रिया। २. दतौन।

दँतिया–संज्ञा स्त्री० छोटे छोटे दाँत।

दंतोष्ठ्य–वि० (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत और ओठ से हो।

दंत्य–वि० दंत-संबंधी।

दंद–संज्ञा स्त्री० किसी स्थान से निकलती हुई गरमी।

संज्ञा पुं० लड़ाई-झगड़ा।

दंदाना–संज्ञा पुं० [वि० दंदानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई वस्तुओं की पंक्ति।

दंदी–वि० झगड़ालू।

दंपति, दंपती–संज्ञा पुं० पति-पत्नी का जोड़ा।

दंपा*–संज्ञा स्त्री० बिजली।

दंभ–संज्ञा पुं० [वि० दंभी] १. महत्त्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिये झूठा आडंबर। २. झूठी ठसक।

दंभी–वि० १. पाखंडी। २. अभिमानी।

दंभोलि–संज्ञा पुं० वज्र।

दँवरी–संज्ञा स्त्री० अनाज के सूखे डंठलों में से दाने झाड़ने के लिये उसे बैलों से रौंदवाने का काम।

दंश–संज्ञा पुं० १. वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। २. दाँत काटने की क्रिया।

दंशक–संज्ञा पुं० दाँत से काटनेवाला।

दंशन–संज्ञा पुं० [वि० दंशित, दंशी] दाँत से काटना।

तीर्थ-संज्ञा पुं० कोई पवित्र स्थान।
तीर्थपति-संज्ञा पुं० दे० "तीर्थराज"।
तीर्थयात्रा-संज्ञा स्त्री० पवित्र स्थानों में दर्शन, स्नानादि के लिये जाना।
तीर्थराज-संज्ञा पुं० प्रयाग।
तीर्थराजी-संज्ञा स्त्री० काशी।
तीर्थाटन-संज्ञा पुं० तीर्थयात्रा।
तीर्थिक-संज्ञा पुं० तीर्थ का ब्राह्मण, पंडा।
तीली-संज्ञा स्त्री० १. बड़ा तिनका। २. धातु आदि का पतला, पर कड़ा तार।
तीवर-संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. व्याधा। ३. मछुआ।
तीव्र-वि० १. अतिशय। २. तीक्ष्ण।
तीव्रता-संज्ञा स्त्री० तीक्ष्णता।
तीस-वि० दस का तिगुना। बीस और दस।
तीसरा-वि० १. क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। २. ग़ैर।
तीसी-संज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"।
संज्ञा स्त्री० फल आदि गिनने का, तीस गाहियों अर्थात् एक सौ पचास का, एक मान।
संज्ञा पुं० दे० "तिहाई"।
तुंग-वि० १. उन्नत। २. उग्र। ३. प्रधान।
तुंगता-संज्ञा स्त्री० ऊँचाई।
तुंगनाथ-संज्ञा पुं० हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।
तुंगभद्रा-संज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।
तुंड-संज्ञा पुं० १. मुख। २. चोंच। ३. थूथन।
तुंद-संज्ञा पुं० पेट।
वि० तेज़।
तुंदिल-वि० तोंदवाला।
तुँदैला-वि० तोंद या बड़े पेटवाला।
तुँबड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "तूँबड़ी"।
तुंबुरु-संज्ञा पुं० १. धनिया। २. एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आकार का होता है।
तुक-संज्ञा स्त्री० कड़ी।
तुकबंदी-संज्ञा स्त्री० १. केवल तुक जोड़ने या भद्दी कविता करने की क्रिया। २. भद्दी कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।
तुकांत-संज्ञा पुं० पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल।
तुकार-संज्ञा स्त्री० 'तू' का प्रयोग जो अपमान-जनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन।
तुकारना-क्रि० स० तू तू करके या अशिष्ट संबोधन करना।
तुक्कल-संज्ञा स्त्री० बड़ी पतंग।
तुख-संज्ञा पुं० भूसी।
तुख़्म-संज्ञा पुं० बीज।
तुच्छ-वि० १. हीन। २. नीच।
तुच्छता-संज्ञा स्त्री० १. हीनता। २. ओछापन।
तुच्छत्व-संज्ञा पुं० दे० "तुच्छता"।
तुच्छातितुच्छ-वि० छोटे से छोटा।
तुझ-सर्व० 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है।
तुझे-सर्व० तुझको।
तुट०-वि० लेश मात्र।
तुट्टना०-क्रि० स० तुष्ट करना।

दंष्ट्र–संज्ञा पुं० दाँत।
दंस०–संज्ञा पुं० दे० "दंश"।
दइत–संज्ञा पुं० दे० "दैत्य"।
दई–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. दैव-संयोग।
दईमारा–वि० [स्त्री० दईमारी] अभागा।
दकीका–संज्ञा पुं० १. कोई बारीक बात। २. युक्ति।
दक्खिन–संज्ञा पुं० [वि० दक्खिनी] वह दिशा जो सूर्य्य की ओर मुँह करके खड़े होने से दाहिने हाथ की ओर पड़ती है।
दक्खिनी–वि० दक्खिन का।
संज्ञा पुं० दक्षिण देश का निवासी।
दक्ष–वि० निपुण।
दक्षकन्या–संज्ञा स्त्री० सती, जो शिव की पत्नी थीं।
दक्षता–संज्ञा स्त्री० निपुणता।
दक्षिण–वि० दाहिना।
संज्ञा पुं० उत्तर के सामने की दिशा।
दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० १. दक्षिण दिशा। २. वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय। ३. पुरस्कार।
दक्षिणायन–वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर।
संज्ञा पुं० सूर्य्य की कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर गति।
दक्षिणीय–वि० १. दक्षिण का। २. जो दक्षिणा का पात्र हो।
दखल–संज्ञा पुं० १. अधिकार। २. हस्तक्षेप। ३. पहुँच।
दखिन–संज्ञा पुं० दे० "दक्षिण"।
दखिनहा†–वि० दक्षिण का।
दखील–वि० जिसका दखल या कब्ज़ा हो।
दखीलकार–संज्ञा पुं० वह आसामी जिसने किसी ज़मींदार के खेत या ज़मीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दखल रखा हो।
दगड़–संज्ञा पुं० लड़ाई में बजाया जानेवाला बड़ा ढोल।
दगदगा–संज्ञा पुं० १. डर। २. संदेह।
दगदगाना–क्रि० अ० दमदमाना।
क्रि० स० चमकाना।
दगदगी–संज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।
दगधना०–क्रि० अ० जलना।
क्रि० स० जलाना।
दगना–क्रि० अ० १. छूटना। २. जलना।
क्रि० स० दे० "दागना"।
दगवाना–क्रि० स० दागने का काम दूसरे से कराना।
दगहा–वि० १. जिसमें दाग़ हो। २. दाह-कर्म करनेवाला। ३. जो दागा हुआ हो।
दग़ा–संज्ञा स्त्री० छल-कपट।
दग़ादार–वि० दे० "दग़ाबाज़"।
दग़ाबाज़–वि० धोखा देनेवाला।
दग़ाबाज़ी–संज्ञा स्त्री० छल।
दग़ैल–वि० दाग़दार।
संज्ञा पुं० दग़ाबाज़।
दग्ध–वि० १. जला हुआ। २. दुःखित।
दचकना–क्रि० अ० [संज्ञा दचका] १. ठोकर या धक्का खाना। २. दब जाना।
क्रि० स० १. ठोकर या धक्का लगाना। २. दबाना।
दचना–क्रि० अ० गिरना।

क्रि॰ अ॰ तुष्ट होना।
तुड़वाना–क्रि॰ स॰ दे॰ "तुड़ाना"।
तुड़ाई–संज्ञा स्त्री॰ १. तुड़ाने की क्रिया या भाव। २. तोड़ने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
तुड़ाना–क्रि॰ स॰ १. तुड़वाना। २. भुनाना।
तुतराना*†–क्रि॰ अ॰ दे॰ "तुतलाना"।
तुतलाना–क्रि॰ अ॰ रुक रुककर टूटे-फूटे शब्द बोलना।
तुन–संज्ञा पुं॰ एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फूलों से एक प्रकार का पीला बसंती रंग निकलता है।
तुनीर–संज्ञा पुं॰ दे॰ "तूणीर"।
तुमना–क्रि॰ अ॰ चकित रह जाना।
तुम–सर्व॰ 'तू' शब्द का बहुवचन रूप।
तुमड़ी–संज्ञा स्त्री॰ १. छोटा तूँबा। २. सूखे कद्दू का बना हुआ एक बाजा।
तुमरा–सर्व॰ दे॰ "तुम्हारा"।
तुमल*–संज्ञा पुं॰, वि॰ दे॰ "तुमुल"।
तुमुर*–संज्ञा पुं॰ दे॰ "तुमुल"।
तुमुल–संज्ञा पुं॰ लड़ाई की हलचल।
तुम्ह†–सर्व॰ दे॰ "तुम"।
तुम्हारा–सर्व॰ 'तुम' का संबंध-कारक का रूप।
तुम्है–सर्व॰ तुमको।
तुरंग–संज्ञा पुं॰ घोड़ा।
तुरंगक–संज्ञा पुं॰ बड़ी तोरई।
तुरंगम–संज्ञा पुं॰ १. घोड़ा। २. चित्त।
तुरंत–क्रि॰ वि॰ जल्दी से।
तुरई–संज्ञा स्त्री॰ एक बेल जिसके लंबे फलों की तरकारी बनाई जाती है।
तुरक–संज्ञा पुं॰ दे॰ "तुर्क"।
तुरकटा–संज्ञा पुं॰ मुसलमान।
तुरकाना–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ तुरकानी] १. तुर्कों का सा। २. तुर्कों का देश या बस्ती।
तुरकिन–संज्ञा स्त्री॰ १. तुर्क जाति की स्त्री। †२. मुसलमान की स्त्री।
तुरकी–वि॰ तुर्क देश का।
संज्ञा स्त्री॰ तुर्किस्तान की भाषा।
तुरग–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ तुरगी] घोड़ा।
तुरत–अव्य॰ शीघ्र।
तुरपन–संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की सिलाई।
तुरपना–क्रि॰ स॰ तुरपन की सिलाई करना।
तुरय*–संज्ञा पुं॰ घोड़ा।
तुरही–संज्ञा स्त्री॰ फूँककर बजाने का एक बाजा जो मुँह की ओर पतला और पीछे की ओर चौड़ा होता है।
तुरा*–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "त्वरा"।
संज्ञा पुं॰ घोड़ा।
तुराई†*–संज्ञा स्त्री॰ गद्दा।
तुराना*–क्रि॰ अ॰ घबराना।
क्रि॰ स॰ दे॰ "तुड़ाना"।
तुरावती–वि॰ स्त्री॰ वेगवाली।
तुरुष्क–संज्ञा पुं॰ तुर्क जाति। तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य।
तुरुही–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तुरही"।
तुर्क–संज्ञा पुं॰ तुर्किस्तान का निवासी।
तुर्की–वि॰ तुर्किस्तान का।
संज्ञा स्त्री॰ तुर्किस्तान की भाषा।
तुर्रा–संज्ञा पुं॰ १. घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो। २. कलगी। ३. चोटी।
वि॰ अनोखा।

दच्छ–संज्ञा पुं० दे० "दच्छ"।
दच्छकुमारी०–संज्ञा स्त्री० दक्ष प्रजापति की कन्या, सती।
दच्छना–संज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।
दच्छसुता–संज्ञा स्त्री० दक्ष की कन्या, सती।
दच्छिन–वि० दे० "दक्षिण"।
दढ़ियल–वि० दाढ़ीवाला।
दँतवन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुअन"।
दतिया–संज्ञा स्त्री० छोटा दाँत।
दतुअन, दतुवन–संज्ञा स्त्री० १. दातुन। २. दाँत साफ़ करने और मुँह धोने की क्रिया।
दतौन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।
दत्त–संज्ञा पुं० दत्तक।
वि० दिया हुआ।
दत्तक–संज्ञा पुं० गोद लिया हुआ लड़का।
दत्तचित्त–वि० जिसने किसी काम में खूब जी लगाया हो।
दत्तात्मा–संज्ञा पुं० वह जो स्वयं किसी के पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।
दत्तोपनिषद्–संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।
ददा–संज्ञा पुं० दे० "दादा"।
ददिया ससुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० ददिया सास] पत्नी या पति का दादा।
ददिहाल–संज्ञा पुं० १. दादा का कुल। २. दादा का घर।
ददोरा–संज्ञा पुं० चकत्ता।
दद्रु–संज्ञा पुं० दाद रोग।
दधि–संज्ञा पुं० दही।
० संज्ञा पुं० समुद्र।
दधिजात–संज्ञा पुं० मक्खन।
संज्ञा पुं० चंद्रमा।
दधिसुत–संज्ञा पुं० १. कमल। २. मोती। ३. चंद्रमा। ४. जालंधर दैत्य। ५. विष।
संज्ञा पुं० मक्खन।
दधिसुता–संज्ञा स्त्री० सीप।
दधीचि–संज्ञा पुं० एक वैदिक ऋषि जो यास्क के मत से अथर्व के पुत्र थे और इसी लिये दधीचि कहलाते थे। एक बार वृत्रासुर के उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के लिये दधीचि से उनकी हड्डियाँ माँगीं। दधीचि ने इसके लिये अपने प्राण त्याग दिए। तभी से ये बड़े भारी दानी प्रसिद्ध हैं।
दनदनाना–क्रि० अ० दनदन शब्द करना।
दनादन–क्रि० वि० दनदन शब्द के साथ।
दनु–संज्ञा स्त्री० दक्ष की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।
दनुज–संज्ञा पुं० असुर।
दनुजदलनी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
दनुजराय–संज्ञा पुं० दानवों का राजा हिरण्यकशिपु।
दनुजेंद्र–संज्ञा पुं० रावण।
दन्न–संज्ञा पुं० "दन्न" शब्द जो तोप आदि के छूटने से होता है।
दपटना–क्रि० अ० [संज्ञा दपट] डाँटना।
दपु–संज्ञा पुं० दर्प।
दपेट–संज्ञा स्त्री० दे० "दपट"।
दफ़तर–संज्ञा पुं० दे० "दफ़्तर"।
दफ़्ती–संज्ञा स्त्री० गत्ता।
दफ़न–संज्ञा पुं० किसी चीज़ को, विशेषतः मुरदे को, ज़मीन में गाड़ने की क्रिया।

तुलः॰–वि॰ दे॰ "तुल्य"।
तुलना–क्रि॰ अ॰ १. तौला जाना। २. तौल या मान में बराबर उतरना। ३. सधना। ४. उद्यत होना।
संज्ञा स्त्री॰ १. मिलान। २. उपमा।
तुलवाई–संज्ञा स्त्री॰ तौलने की मज़दूरी।
तुलवाना–क्रि॰ स॰ [संज्ञा तुलवाई] तौल कराना।
तुलसी–संज्ञा स्त्री॰ एक छोटा झाड़ या पौधा जिसकी पत्तियों से एक प्रकार की तीक्ष्ण गंध निकलती है।
तुलसीदल–संज्ञा पुं॰ तुलसी के पौधे का पत्ता जिसे अत्यंत पवित्र मानते हैं।
तुलसीदास–संज्ञा पुं॰ उत्तरीय भारत के सर्वप्रधान भक्त कवि।
तुलसीपत्र–संज्ञा पुं॰ तुलसी की पत्ती।
तुला–संज्ञा स्त्री॰ १. सादृश्य। २. तराज़ू।
तुलाई–संज्ञा स्त्री॰ दुलाई।
संज्ञा स्त्री॰ १. तौलने का काम या भाव। २. तौलने की मज़दूरी।
तलाधार–संज्ञा पुं॰ १. तुला राशि। २. बनियाँ।
तलाना॰–क्रि॰ अ॰ पूरा उतरना।
तुलायंत्र–संज्ञा पुं॰ तराज़ू।
तुल्य–वि॰ समान।
तुल्यता–संज्ञा स्त्री॰ १. बराबरी। २. सादृश्य।
तुवर–संज्ञा पुं॰ १. कसैला रस। २. अरहर।
तुष–संज्ञा पुं॰ भूसी।
तुषानल–संज्ञा पुं॰ १. भूसी या घास-फूस की आग। २. ऐसी आग में भस्म होने की क्रिया जो प्रायश्चित्त के लिये की जाती है।
तुषार–संज्ञा पुं॰ १. पाला। २. हिम।
वि॰ छूने में बरफ़ की तरह ठंढा।
तुष्ट–वि॰ १. तृप्त। २. राज़ी।
तुष्टता–संज्ञा स्त्री॰ संतोष।
तुष्टना॰–क्रि॰ अ॰ प्रसन्न होना।
तुष्टि–संज्ञा स्त्री॰ संतोष।
तुसी–संज्ञा स्त्री॰ भूसी।
तुहारा–सर्व॰ दे॰ "तुम्हारा"।
तुहिं–सर्व॰ तुझको।
तुहिन–संज्ञा पुं॰ १. पाला। २. हिम।
तूँ–सर्व॰ दे॰ "तू"।
तूँबा–संज्ञा पुं॰ १. कडुवा गोल कद्दू। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु अपने साथ रखते हैं।
तूँबी–संज्ञा स्त्री॰ १. कडुवा गोल कद्दू। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ बरतन।
तू–सर्व॰ मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम। जैसे, तू यहाँ से चला जा। यह शब्द अशिष्ट समझा जाता है।
तूण–संज्ञा पुं॰ तीर रखने का चोंगा।
तूणीर–संज्ञा पुं॰ तूण।
तूत–संज्ञा पुं॰ शहतूत।
तूती–संज्ञा स्त्री॰ १. छोटी जाति का तोता। २. एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुंदर बोलती है। ३. मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।
तूदा–संज्ञा पुं॰ ढेर।
तून–संज्ञा पुं॰ १. तुन का पेड़। २. तून नाम का लाल कपड़ा।
॰ संज्ञा पुं॰ दे॰ "तूण"।
तूनीर–संज्ञा पुं॰ दे॰ "तूणीर"।
तूफ़ान–संज्ञा पुं॰ १. डुबानेवाली बाढ़। २. आँधी।
तूफ़ानी–वि॰ उपद्रवी।

दफनाना–क्रि० स० गाड़ना।

दफा–संज्ञा स्त्री० १. बार। २. किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के संबंध में व्यवस्था हो।
वि० दूर किया हुआ।

दफीना–संज्ञा पुं० गड़ा हुआ धन।

दफ़्तर–संज्ञा पुं० आफ़िस।

दफ़्तरी–संज्ञा पुं० जिल्दसाज़।

दबंग–वि० प्रभावशाली।

दबक–संज्ञा स्त्री० सिकुड़न।

दबकना–क्रि० अ० १. भय के कारण छिपना। २. लुकना।
क्रि० स० धातु को हथौड़ी से पीटकर बढ़ाना।

दबका–संज्ञा पुं० कामदानी का सुनहला तार।

दबकाना–क्रि० स० छिपाना।

दबकैया–संज्ञा पुं० दे० "दबकगर"।

दबगर–संज्ञा पुं० १. ढाल बनानेवाला। २. चमड़े के कुप्पे बनानेवाला।

दबदबा–संज्ञा पुं० रोब-दाब।

दबना–क्रि० अ० १. बोझ के नीचे पड़ना। २. पीछे हटना। ३. संकोच करना।

दबवाना–क्रि० स० दबाने का काम दूसरे से कराना।

दबाना–क्रि० स० [संज्ञा दाब, दबाव] १. किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत ज़ोर पहुँचाना। २. ज़ोर डालकर विवश करना। ३. किसी दूसरे की चीज़ पर अनुचित अधिकार करना।

दबाव–संज्ञा पुं० १. चाँप। २. रोब।

दबैल–वि० १. जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २. जो बहुत दबता या डरता हो।

दबोचना–क्रि० स० १. धर दबाना। २. छिपाना।

दबोरना†–क्रि० स० दबाना।

दम–संज्ञा पुं० १. साँस। २. नशे आदि के लिये साँस के साथ धूआँ खींचने की क्रिया। ३. साँस खींचकर ज़ोर से बाहर फेंकने या फूँकने की क्रिया। ४. उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। ५. प्राण।

दमक–संज्ञा स्त्री० चमक।

दमकना–क्रि० अ० चमकना।

दमकल–संज्ञा स्त्री० १. वह यंत्र जिसकी सहायता से मकानों में लगी हुई आग बुझाई जाती है। २. वह यंत्र जिसकी सहायता से कूएँ से पानी निकालते हैं।

दमकला–संज्ञा पुं० वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी के द्वारा महफ़िलों में गुलाब-जल अथवा रंग आदि छिड़का जाता है।

दमखम–संज्ञा पुं० दृढ़ता।

दम-चूल्हा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमड़ी–संज्ञा स्त्री० पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा–संज्ञा पुं० मोरचा।

दमदार–वि० १. जिसमें जीवनी-शक्ति यथेष्ट हो। २. दृढ़।

दमन–संज्ञा पुं० १. दबाने या रोकने की क्रिया। २. दंड।
संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।

दमनशील–वि० दमन करनेवाला।

तूमड़ी–संज्ञा स्त्री० १. तूँबी। २. तूँबी का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे बजाया करते हैं।
तूम तड़ाक–संज्ञा स्त्री० १. तड़क-भड़क। २. ठसक।
तूमार–संज्ञा पुं० बात का बतंगड़।
तूर–संज्ञा पुं० १. नगाड़ा। २. तुरही।
तूरना–क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
०† संज्ञा पुं० तुरही।
तूर्ण–क्रि० वि० शीघ्र।
तूल–संज्ञा पुं० आकाश।
○ वि० तुल्य।
तूलना–क्रि० स० पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना।
तूला–संज्ञा स्त्री० कपास।
तूलिका–संज्ञा स्त्री० तसवीर बनाने-वालों की कलम या कूँची।
तूष्णी–वि० मौन।
संज्ञा स्त्री० मौन।
तूस–संज्ञा पुं० भूसी।
तृखा–संज्ञा स्त्री० दे० "तृषा"।
तृणमय–वि० घास का बना हुआ।
तृणशय्या–संज्ञा स्त्री० चटाई।
तृणावर्त्त–संज्ञा पुं० बवंडर।
तृतीय–वि० तीसरा।
तृतीयांश–संज्ञा पुं० तीसरा भाग।
तृतीया–संज्ञा स्त्री० १. प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन। २. व्याकरण में करण कारक।
तृन०–संज्ञा पुं० दे० "तृण"।
तृपित†०–वि० दे० "तृप्त"।
तृप्त–वि० १. जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो। २. प्रसन्न।
तृप्ति–संज्ञा स्त्री० १. संतोष। २. प्रसन्नता।
तृषा–संज्ञा स्त्री० १. प्यास। २. इच्छा। ३. लोभ।
तृषावंत–वि० प्यासा।
तृषित–वि० १. प्यासा। २. अभिलाषी।
तृष्णा–संज्ञा स्त्री० १. लालच। २. प्यास।
तें०†–प्रत्य० से।
तेंदुआ–संज्ञा पुं० बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु।
तेंदू–संज्ञा पुं० १. मझोले आकार का एक वृक्ष। इसकी लकड़ी आबनूस के नाम से बिकती है। २. इस पेड़ का फल जो खाया जाता है।
ते–अव्य० दे० "तें"।
†सर्व० वे।
तेखना†०†–क्रि० अ० बिगड़ना।
तेग़–संज्ञा स्त्री० तलवार।
तेगा–संज्ञा पुं० खड्ग।
तेज–संज्ञा पुं० १. दीप्ति। २. प्रचंडता।
तेज़–वि० १. तीक्ष्ण धार का। २. फुरतीला। ३. तीक्ष्ण।
तेजपत्ता–संज्ञा पुं० दारचीनी की जाति का एक पेड़। इसकी पत्तियाँ सुगंधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।
तेजपत्र–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।
तेजपात–संज्ञा पुं० दे० "तेजपत्ता"।
तेजवंत–वि० दे० "तेजवान्"।
तेजवान्–वि० तेजस्वी।
तेजस्–संज्ञा पुं० दे० "तेज"।
तेजसी०–वि० तेज-युक्त।

दमनीय–वि० जिसका दमन किया जा सके।
दमबाज़–वि० दम देनेवाला।
दमयंती–संज्ञा स्त्री० राजा नल की स्त्री जो विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी।
दमा–संज्ञा पुं० साँस।
दमाद–संज्ञा पुं० कन्या का पति। जवाई।
दमामा–संज्ञा पुं० नगाड़ा।
दमारि०†–संज्ञा पुं० जंगल की आग।
दमावति–संज्ञा स्त्री० दे० "दमयंती"।
दया–संज्ञा स्त्री० करुणा। रहम।
दयादृष्टि–संज्ञा स्त्री० मेहरबानी की नज़र।
दयानत–संज्ञा स्त्री० ईमान।
दयानतदार–वि० ईमानदार।
दयाना०–क्रि० अ० दयालु होना।
दयानिधान–संज्ञा पुं० बहुत दयालु।
दयानिधि–संज्ञा पुं० बहुत दयालु पुरुष।
दयापात्र–संज्ञा पुं० वह जो दया के योग्य हो।
दयामय–संज्ञा पुं० १. दया से पूर्ण। २. ईश्वर।
दयार–संज्ञा पुं० प्रदेश।
दयार्द्र–वि० दयालु।
दयाल–वि० दे० "दयालु"।
दयालु–वि० बहुत दया करनेवाला।
दयालुता–संज्ञा स्त्री० दयालु होने का भाव।
दयावंत–वि० दे० "दयालु"।
दयावना०–वि० पुं० [स्त्री० दयावनी] दया के योग्य।
दयावान्–वि० [स्त्री० दयावती] दयालु।
दयाशील–वि० दयालु।
दयासागर–संज्ञा पुं० जिसके चित्त में बहुत दया हो।
दर–संज्ञा स्त्री० भाव।
दरकना–क्रि० अ० चिरना।
दरका–संज्ञा पुं० १. दरार। २. वह चोट जिससे कोई वस्तु दरक या फट जाय।
दरकाना–क्रि० स० फाड़ना। क्रि० अ० फटना।
दरकार–वि० आवश्यक।
दर-किनार–क्रि० वि० एक ओर।
दरकूच–क्रि० वि० बराबर यात्रा करता हुआ।
दरखत०†–संज्ञा पुं० दे० "दरख़्त"।
दरख़ास्त–संज्ञा स्त्री० १. किसी बात के लिये प्रार्थना। २. प्रार्थनापत्र।
दरख़्त–संज्ञा पुं० पेड़।
दरगाह–संज्ञा स्त्री० १. चौखट। २. मकबरा।
दरज–संज्ञा स्त्री० दराज़।
दरजन–संज्ञा पुं० दे० "दर्जन"।
दरजा–संज्ञा पुं० दे० "दर्जा"।
दरज़ी–संज्ञा पुं० दे० "दर्ज़ी"।
दरण–संज्ञा पुं० १. दलने या पीसने की क्रिया। २. ध्वंस।
दरद–संज्ञा पुं० १. पीड़ा। २. दया।
दर दर–क्रि० वि० स्थान स्थान पर।
दरदरा–वि० [स्त्री० दरदरी] जिसके कण स्थूल हों।
दरदराना–क्रि० स० थोड़ा पीसना।
दरदवंत, दरदवंद–वि० कृपालु।
दरद्द–संज्ञा पुं० दे० "दरद" या "दर्द"।
दरना†–क्रि० स० दरदरा दलना।
दरप०†–संज्ञा पुं० दे० "दर्प"।
दरपन०–संज्ञा पुं० दे० "दर्पण"।
दरपना०–क्रि० अ० ताव में आना।

तेजस्विता–संज्ञा स्त्री॰ तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्वी–वि॰ १. कांतिमान्। २. प्रतापी।

तेज़ाब–संज्ञा पुं॰ [वि॰ तेज़ाबी] औषध के काम के लिये किसी क्षार पदार्थ का तरल या रवे के रूप में तैयार किया हुआ अम्ल-सार जो द्रावक होता है।

तेज़ी–संज्ञा स्त्री॰ १. तेज़ होने का भाव। २. तीव्रता। ३. महँगी।

तेतना†–वि॰ दे॰ "तितना"।

तेता†–वि॰ पुं॰ [स्त्री॰ तेती] उतना।

तेतिक*†–वि॰ उतना।

तेतो*†–वि॰ दे॰ "तेता"।

तेरस–संज्ञा स्त्री॰ किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।

तेरहीं–संज्ञा स्त्री॰ किसी के मरने के दिन से तेरहवीं तिथि, जिसमें पिंड-दान और ब्राह्मण-भोजन करके दाह करनेवाला और मृतक के घर के लोग शुद्ध होते हैं।

तेरा–सर्व॰ [स्त्री॰ तेरी] तू का संबंध-कारक रूप।

तेरुस*†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "त्यौरुस"। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "तेरस"।

तेरे†–अव्य॰ से।

तेरो*–सर्व॰ दे॰ "तेरा"।

तेल–संज्ञा पुं॰ वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से निकाला जाता है अथवा आप से आप निकलता है।

तेलगू–संज्ञा पुं॰ तैलंग देश की भाषा।

तेलहन–संज्ञा पुं॰ वे बीज जिनसे तेल निकलता है।

तेलहा†–वि॰ पुं॰ तेल-युक्त।

तेलिन–संज्ञा स्त्री॰ तेली जाति की स्त्री।

तेलिया–वि॰ १. तेल की तरह चिकना और चमकीला। २. तेल के से रंगवाला।
संज्ञा पुं॰ काला, चिकना और चमकीला रंग।

तेलिया कंद–संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का कंद। यह जहाँ होता है, वहाँ भूमि तेल से सींची हुई जान पड़ती है।

तेली–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ तेलिन] हिंदुओं की एक जाति जिसकी गणना शूद्रों में होती है। इस जाति के लोग सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का व्यवसाय करते हैं।

तेवर–संज्ञा पुं॰ १. कुपित दृष्टि। २. भौंह।

तेवाना*†–क्रि॰ अ॰ सोचना।

तेह*†–संज्ञा पुं॰ १. क्रोध। २. अहंकार। ३. तेज़ी।

तेहरा–वि॰ पुं॰ तीन परत किया हुआ।

तेहराना–क्रि॰ स॰ किसी काम को बिलकुल ठीक करने के लिये तीसरी बार करना।

तेहवार–संज्ञा पुं॰ दे॰ "त्योहार"।

तेहा–संज्ञा पुं॰ १. क्रोध। २. अहंकार।

तेहि*†–सर्व॰ उसको।

तेही–संज्ञा पुं॰ १. गुस्सा करनेवाला। २. अभिमानी।

तैं†*–क्रि॰ वि॰ से। वि॰ दे॰ "तें"। सर्व॰ तू।

तै†–क्रि॰ वि॰ उतना।
संज्ञा पुं॰ १. निबटेरा। २. पूर्ति।
वि॰ १. जिसका निबटेरा या फ़ैसला हो चुका हो। २. जो पूरा हो चुका हो।

दरपनी–संज्ञा स्त्री० मुँह देखने का छोटा शीशा।
दर-पेश–क्रि० वि० आगे।
दरब–संज्ञा पुं० धन।
दरबा–संज्ञा पुं० कबूतरों, मुरगियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक।
दरबान–संज्ञा पुं० द्वारपाल।
दरबार–संज्ञा पुं० [वि० दरबारी] वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबों के साथ बैठते हैं।
दरबारी–संज्ञा पुं० दरबार में बैठनेवाला आदमी।
वि० दरबार का।
दरभ–संज्ञा पुं० दे० "दर्भ"।
संज्ञा पुं० बंदर।
दरमाहा–संज्ञा पुं० मासिक वेतन।
दरमियान–संज्ञा पुं० मध्य।
क्रि० वि० बीच में।
दरमियानी–वि० बीच का।
संज्ञा पुं० दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।
दरवाज़ा–संज्ञा पुं० द्वार।
दरवी–संज्ञा स्त्री० १. साँप का फन। २. करछुल।
दरवेश–संज्ञा पुं० फ़कीर।
दरशन–संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।
दरशाना–क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।
दरस–संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. भेंट।
दरसन–संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।
दरसना०–क्रि० अ० दिखाई पड़ना।
क्रि० स० देखना।
दरशनी–संज्ञा स्त्री० दर्शन।
दरशनी हुंडी–संज्ञा स्त्री० वह हुंडी जिसके भुगतान की मिति को दस दिन या उससे कम बाक़ी हो।
दरसाना–क्रि० स० १. दिखलाना। २. प्रकट करना।
०† क्रि० अ० दिखाई पड़ना।
दरसावना–क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दराज़–वि० बड़ा भारी।
क्रि० वि० बहुत।
संज्ञा स्त्री० दरार।
संज्ञा स्त्री० मेज़ में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।
दरार–संज्ञा स्त्री० वह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है।
दरारना–क्रि० अ० फटना।
दरारा–संज्ञा पुं० धक्का।
दरिद्र–वि० [स्त्री० दरिद्रा] निर्धन।
दरिद्रता–संज्ञा स्त्री० कंगाली।
दरिद्री–वि० दे० "दरिद्र"।
दरिया–संज्ञा पुं० नदी।
दरियाई–वि० नदी-संबंधी।
दरियाई घोड़ा–संज्ञा पुं० गैंड़े की तरह का एक जानवर जो अफ़्रिका में नदियों के किनारे रहता है।
दरियाई नारियल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र बनता है जिसे सैन्यासी या फ़क़ीर अपने पास रखते हैं।
दरियादासी–संज्ञा पुं० निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।
दरियादिल–वि० [स्त्री० दरियादिली] उदार।
दरियाफ़्त–वि० मालूम।

तैजस–संज्ञा पुं० १. कोई चमकीला पदार्थ। २. पराक्रमी। वि० तेज से उत्पन्न।
तैनात–वि० [संज्ञा तैनाती] नियत।
तैयार–वि० १. ठीक। २. उद्यत। तत्पर। ३. प्रस्तुत। ४. हृष्ट-पुष्ट।
तैयारी–संज्ञा स्त्री० १. दुरुस्ती। २. तत्परता। ३. शरीर की पुष्टता।
तैरना–क्रि० अ० १. उतराना। २. पैरना।
तैराई–संज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव।
तैराक–वि० जो अच्छी तरह तैरना जानता हो।
तैराना–क्रि० स० दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना।
तैलंग–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश। इस देश की भाषा तेलगू कहलाती है।
तैलंगी–संज्ञा पुं० तैलंग देशवासी। संज्ञा स्त्री० तैलंग देश की भाषा।
तैल–संज्ञा पुं० चिकना।
तैलत्व–संज्ञा पुं० तेल का भाव या गुण।
तैलाक्त–वि० जिसमें तेल लगा हो।
तैश–संज्ञा पुं० आवेश।
तैसा–वि० उस प्रकार का।
तैसे–क्रि० वि० दे० "वैसे"।
तोंं†–क्रि० वि० दे० "त्यों"।
तोंद–संज्ञा स्त्री० पेट का फुलाव।
तोंदल–वि० तोंदवाला।
तो–सर्व० तेरा। अव्य० उस दशा में। अव्य० एक अव्यय जिसका व्यवहार किसी शब्द पर ज़ोर देने के लिये अथवा कभी कभी यों ही किया जाता है। ‡† सर्व० तुझ।
तोइ‡†–संज्ञा पुं० पानी।
तोख‡†–संज्ञा पुं० दे० "तोष"।
तोटका–संज्ञा पुं० दे० "टोटका"।
तोड़–संज्ञा पुं० १. तोड़ने की क्रिया या भाव। २. कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिये किया हुआ दाँव या पेंच। ३. वार।
तोड़ना–क्रि० स० टुकड़े करना।
तोड़वाना–क्रि० स० दे० "तुड़वाना"।
तोड़ा–संज्ञा पुं० १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी ज़ंजीर या सिकड़ी जो हाथों या गले में पहनी जाती है। २. घाटा।
तोण‡†–संज्ञा पुं० तरकश।
तोत†–संज्ञा पुं० ढेर।
तोतई–वि० तोते के रंग का सा।
तोतराना‡–क्रि० अ० दे० "तुतलाना"।
तोतला–वि० वह जो तुतलाकर बोलता हो।
तोता–संज्ञा पुं० सुआ।
तोताचश्म–संज्ञा पुं० बेमुरौवत।
तोदन–संज्ञा पुं० १. चाबुक। २. व्यथा।
तोप–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत बड़ा अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियों की गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाए जाते हैं।
तोपखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ तोपें और उनका कुल सामान रहता हो।
तोपची–संज्ञा पुं० गोलंदाज़।

दरिया-बरार–संज्ञा पुं० वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले।
दरियाबुर्द–संज्ञा पुं० वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।
दरियाव–संज्ञा पुं० दे० "दरिया"।
दरी–संज्ञा स्त्री० गुफा।
संज्ञा स्त्री० मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना।
दरीख़ाना–संज्ञा पुं० वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।
दरीचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० दरीची] १. खिड़की। २. खिड़की के पास बैठने की जगह।
दरीबा–संज्ञा पुं० पान का बाज़ार।
दरेग़–संज्ञा पुं० कमी।
दरेरना–क्रि० स० रगड़ना।
दरैया–संज्ञा पुं० दलनेवाला।
दरोग़–संज्ञा पुं० झूठ।
दरोग़हलफ़ी–संज्ञा स्त्री० सच बोलने की क़सम खाकर भी झूठ बोलना।
दर्ज–संज्ञा स्त्री० दे० "दराज"।
वि० काग़ज़ पर लिखा हुआ।
दर्जन–संज्ञा पुं० बारह का समूह।
दर्जा–संज्ञा पुं० १. श्रेणी। २. पद।
क्रि० वि० गुणित।
दर्ज़ी–संज्ञा पुं० [स्त्री० दर्ज़िन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २. कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष।
दर्द–संज्ञा पुं० १. पीड़ा। २. दुःख। ३. करुणा।
दर्दमंद–वि० १. पीड़ित। २. दयावान्।
दर्दी–वि० दे० "दर्दमंद"।
दर्दुर–संज्ञा पुं० १. मेंढक। २. बादल। ३. अबरक।
दद्रु–संज्ञा पुं० दाद नामक रोग।
दर्प–संज्ञा पुं० घमंड।
दर्पण–संज्ञा पुं० आइना।
दर्भ–संज्ञा पुं० कुश।
दर्भासन–संज्ञा पुं० कुशासन।
दर्रा–संज्ञा पुं० घाटी।
दर्राना–क्रि० अ० धड़धड़ाना।
दर्श–संज्ञा पुं० दर्शन।
दर्शक–संज्ञा पुं० १. दर्शन करनेवाला। २. दिखानेवाला।
दर्शन–संज्ञा पुं० भेंट।
दर्शनी हुंडी–संज्ञा स्त्री० दे० "दरशनी हुंडी"।
दर्शनीय–वि० १. देखने योग्य। २. सुंदर।
दर्शाना–क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दर्शी–वि० देखनेवाला।
दल–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के उन दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों, पर ज़रा सा दबाव पड़ने से अलग हो जायँ। २. गरोह।
दलक–संज्ञा स्त्री० गुदड़ी।
संज्ञा स्त्री० १. आघात से उत्पन्न कंप। २. चमक।
दलकन–संज्ञा स्त्री० १. दलकने की क्रिया या भाव। २. आघात।
दलकना–क्रि० अ० फट जाना।
क्रि० स० डराना।
दलगंजन–वि० भारी वीर।
दलदल–संज्ञा स्त्री० कीचड़।
दलदला–वि० [स्त्री० दलदली] जिसमें दलदल हो।
दलदार–वि० जिसका दल, तह या

तोपना†-क्रि० स० ढाँकना।
तोफा†-वि०,संज्ञा पुं० दे० "तोहफ़ा"।
तोबड़ा-संज्ञा पुं० चमड़े या टाट आदि की वह थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाते हैं।
तोबा-संज्ञा स्त्री० किसी अनुचित कार्य्य को भविष्य में न करने की शपथ-पूर्वक दृढ़ प्रतिज्ञा।
तोमर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। २. एक प्रकार का छंद।
तोय-संज्ञा पुं० जल।
तोयधर, तोयधार-संज्ञा पुं० मेघ।
तोयधि-संज्ञा पुं० समुद्र।
तोयनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र।
तोर०†-संज्ञा पुं० दे० "तोड़"।
०†वि० दे० "तेरा"।
तोरई-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तोरण-संज्ञा पुं० १. घर या नगर का बाहरी फाटक। २. बंदनवार।
तोरन†०-संज्ञा पुं० दे० "तोरण"।
तोरना-क्रि० स० दे० "तोड़ना"।
तोरा०†-सर्व० दे० "तेरा"।
तोराना०†-क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।
तोरी-संज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।
तोल†-संज्ञा स्त्री० दे० "तौल"।
तोलन-संज्ञा पुं० तौलने की क्रिया।
तोलना-क्रि० स० दे० "तौलना"।
तोला-संज्ञा पुं० १. बारह माशे की तौल। २. इस तौल का बाट।
तोशक-संज्ञा स्त्री० हलका गद्दा।
तोशाखाना-संज्ञा पुं० वह बड़ा कमरा या स्थान जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हैं।
तोष-संज्ञा पुं० १. तृप्ति। २. प्रसन्नता।
वि० अल्प।
तोषक-वि० संतुष्ट करनेवाला।
तोषण-संज्ञा पुं० तृप्ति।
तोषना०-क्रि० स० तृप्त करना।
क्रि० अ० संतुष्ट होना।
तोषित-वि० तुष्ट।
तोस०-संज्ञा पुं० दे० "तोष"।
तोहफ़गी-संज्ञा स्त्री० उत्तमता।
तोहफ़ा-संज्ञा पुं० सौगात।
वि० उत्तम।
तोहमत-संज्ञा स्त्री० झूठा कलंक।
तोहरा†-सर्व० दे० "तुम्हारा"।
तोहि-सर्व० तुझको।
तौंसना-क्रि० अ० गरमी से झुलस जाना।
तौंसा-संज्ञा पुं० अधिक ताप।
तौ०-क्रि० वि० दे० "तो"।
क्रि० अ० था।
तौन†-सर्व० वह।
तौबा-संज्ञा स्त्री० दे० "तोबा"।
तौर-संज्ञा पुं० १. चाल-ढाल। २. ढंग। ३. प्रकार।
तौरि०†-संज्ञा स्त्री० चक्कर।
तौल-संज्ञा पुं० १. तराज़ू। २. तुला राशि।
संज्ञा स्त्री० १. वज़न। २. तौलने की क्रिया या भाव।
तौलना-क्रि० स० १. जोखना। २. साधना। ३. मिलाना। ४. आँकना।
तौलवाना†-क्रि० स० तौलाना।
तौला-संज्ञा पुं० तौलनेवाला मनुष्य।
तौलाई-संज्ञा स्त्री० तौलने की क्रिया,

दरपनी–संज्ञा स्त्री० मुँह देखने का छोटा शीशा।

दर-पेश–क्रि० वि० आगे।

दरब–संज्ञा पुं० धन।

दरबा–संज्ञा पुं० कबूतरों, मुरगियों आदि के रहने के लिये काठ का खानेदार संदूक।

दरबान–संज्ञा पुं० द्वारपाल।

दरबार–संज्ञा पुं० [वि० दरबारी] वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबों के साथ बैठते हैं।

दरबारी–संज्ञा पुं० दरबार में बैठनेवाला आदमी।
वि० दरबार का।

दरभ–संज्ञा पुं० दे० "दर्भ"।
संज्ञा पुं० बंदर।

दरमाहा–संज्ञा पुं० मासिक वेतन।

दरमियान–संज्ञा पुं० मध्य।
क्रि० वि० बीच में।

दरमियानी–वि० बीच का।
संज्ञा पुं० दो आदमियों के बीच के झगड़े का निबटेरा करनेवाला मनुष्य।

दरवाज़ा–संज्ञा पुं० द्वार।

दरवी–संज्ञा स्त्री० १. साँप का फन। २. करछुल।

दरवेश–संज्ञा पुं० फ़कीर।

दरशन–संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।

दरशाना–क्रि० अ०, स० दे० "दरसाना"।

दरस–संज्ञा पुं० १. दर्शन। २. भेंट।

दरसन–संज्ञा पुं० दे० "दर्शन"।

दरसना–क्रि० अ० दिखाई पड़ना।
क्रि० स० देखना।

दरशनी–संज्ञा स्त्री० दर्शन।

दरशनी हुंडी–संज्ञा स्त्री० वह हुंडी जिसके भुगतान की मिति को दस दिन या उससे कम बाकी हों।

दरसाना–क्रि० स० १. दिखलाना। २. प्रकट करना।
क्रि० अ० दिखाई पड़ना।

दरसावना–क्रि० स० दे० "दरसाना"।

दराज़–वि० बड़ा भारी।
क्रि० वि० बहुत।
संज्ञा स्त्री० दरार।
संज्ञा स्त्री० मेज़ में लगा हुआ संदूकनुमा खाना।

दरार–संज्ञा स्त्री० वह खाली जगह जो किसी चीज़ के फटने पर पड़ जाती है।

दरारना–क्रि० अ० फटना।

दरारा–संज्ञा पुं० धक्का।

दरिद्र–वि० [स्त्री० दरिद्रा] निर्धन।

दरिद्रता–संज्ञा स्त्री० कंगाली।

दरिद्री–वि० दे० "दरिद्र"।

दरिया–संज्ञा पुं० नदी।

दरियाई–वि० नदी-संबंधी।

दरियाई घोड़ा–संज्ञा पुं० गैंडे की तरह का एक जानवर जो अफ्रिका में नदियों के किनारे रहता है।

दरियाई नारियल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र बनता है जिसे संन्यासी या फ़कीर अपने पास रखते हैं।

दरियादासी–संज्ञा पुं० निर्गुण उपासक साधुओं का एक संप्रदाय जिसे दरिया साहब नामक एक व्यक्ति ने चलाया था।

दरियादिल–वि० [स्त्री० दरियादिली] उदार।

दरियाफ़्त–वि० मालूम।

दरिया-बरार-संज्ञा पुं० वह भूमि जो किसी नदी की धारा हट जाने से निकले।
दरियाबुर्द-संज्ञा पुं० वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर बहा दे।
दरियाव-संज्ञा पुं० दे० "दरिया"।
दरी-संज्ञा स्त्री० गुफा।
संज्ञा स्त्री० मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना।
दरीखाना-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें बहुत से द्वार हों। बारहदरी।
दरीचा-संज्ञा पुं० [स्त्री० दरीची] १. खिड़की। २. खिड़की के पास बैठने की जगह।
दरीबा-संज्ञा पुं० पान का बाज़ार।
दरेग-संज्ञा पुं० कमी।
दरेरना-क्रि० स० रगड़ना।
दरैया-संज्ञा पुं० दलनेवाला।
दरोग-संज्ञा पुं० झूठ।
दरोगहलफी-संज्ञा स्त्री० सच बोलने की कसम खाकर भी झूठ बोलना।
दर्ज-संज्ञा स्त्री० दे० "दरज"।
वि० कागज़ पर लिखा हुआ।
दर्जन-संज्ञा पुं० बारह का समूह।
दर्जा-संज्ञा पुं० १. श्रेणी। २. पद।
क्रि० वि० गुणित।
दर्ज़ी-संज्ञा पुं० [स्त्री० दर्जिन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करे। २. कपड़ा सीनेवाली जाति का पुरुष।
दर्द-संज्ञा पुं० १. पीड़ा। २. दुःख। ३. करुणा।
दर्दमंद-वि० १. पीड़ित। २. दयावान्।
दर्दी-वि० दे० "दर्दमंद"।
दर्दुर-संज्ञा पुं० १. मेढक। २. बादल। ३. अबरक।
दद्रु-संज्ञा पुं० दाद नामक रोग।
दर्प-संज्ञा पुं० घमंड।
दर्पण-संज्ञा पुं० आइना।
दर्भ-संज्ञा पुं० कुश।
दर्भासन-संज्ञा पुं० कुशासन।
दर्रा-संज्ञा पुं० घाटी।
दर्राना-क्रि० अ० धड़धड़ाना।
दर्श-संज्ञा पुं० दर्शन।
दर्शक-संज्ञा पुं० १. दर्शन करनेवाला। २. दिखानेवाला।
दर्शन-संज्ञा पुं० भेंट।
दर्शनी हुंडी-संज्ञा स्त्री० दे० "दरशनी हुंडी"।
दर्शनीय-वि० १. देखने योग्य। २. सुंदर।
दर्शाना-क्रि० स० दे० "दरसाना"।
दर्शी-वि० देखनेवाला।
दल-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु के उन दो सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः जुड़े हुए हों, पर ज़रा सा दबाव पड़ने से अलग हो जायँ। २. गरोह।
दलक-संज्ञा स्त्री० गुदड़ी।
संज्ञा स्त्री० १. आघात से उत्पन्न कंप। २. चमक।
दलकन-संज्ञा स्त्री० १. दलकने की क्रिया या भाव। २. आघात।
दलकना-क्रि० अ० फट जाना।
क्रि० स० डराना।
दलगंजन-वि० भारी वीर।
दलदल-संज्ञा स्त्री० कीचड़।
दलदला-वि० [स्त्री० दलदली] जिसमें दलदल हो।
दलदार-वि० जिसका दल, तह या

दीवार–संज्ञा स्त्री० भीत।

दीवारगीर–संज्ञा पुं० दीया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाल–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

दीवाली–संज्ञा स्त्री० कार्त्तिक की अमावास्या को होनेवाला एक उत्सव।

दीसना–क्रि० अ० दिखाई पड़ना।

दीह॰–वि० लंबा।

दुंद–संज्ञा पुं० १. दो मनुष्यों के बीच में होनेवाला युद्ध या झगड़ा। २. उत्पात। ३. जोड़ा।
संज्ञा पुं० नगाड़ा।

दुंदुभि–संज्ञा पुं० १. वरुण। २. विष। ३. एक राक्षस जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर फेंका था।
संज्ञा स्त्री० नगाड़ा।

दुंदुभी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुंदुभि"।

दुंदुह॰–संज्ञा पुं० पानी का साँप।

दुःकंत॰–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।

दुःख–संज्ञा पुं० १. कष्ट। २. विपत्ति।

दुःखद, दुःखदाता–वि० दुःख पहुँचानेवाला।

दुःखांत–वि० १. जिसके अंत में दुःख हो। २. जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो।
संज्ञा पुं० १. दुःख का अंत। समाप्ति। २. दुःख की पराकाष्ठा।

दुःखित–वि० पीड़ित।

दुःखिनी–वि० स्त्री० जिस पर दुःख पड़ा हो।

दुःखी–वि० [स्त्री० दुःखिनी] जिसे दुःख हो।

दुःशला–संज्ञा स्त्री० गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की कन्या, जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी।

दुःशासन–वि० जिस पर शासन करना कठिन हो।
संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के १०० लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यंत प्रेमपात्र और मंत्री था।

दुःशील–वि० बुरे स्वभाव का।

दुःशीलता–संज्ञा स्त्री० दुष्टता।

दुःसह–वि० जिसका सहन करना कठिन हो।

दुःसाध्य–वि० १. जिसका करना कठिन हो। २. जिसका उपाय कठिन हो।

दुःसाहस–संज्ञा पुं० १. ऐसा साहस जिसका परिणाम कुछ न हो, या बुरा हो। २. धृष्टता।

दुःसाहसी–वि० दुःसाहस करनेवाला।

दुःस्वप्न–संज्ञा पुं० ऐसा सपना जिसका फल बुरा माना जाता हो।

दुःस्वभाव–संज्ञा पुं० बुरा स्वभाव।
वि० दुःशील।

दुआ–संज्ञा स्त्री० १. प्रार्थना। २. आशीर्वाद।

दुआदस॰†–संज्ञा पुं० दे० "द्वादश"।

दुआबा–संज्ञा पुं० दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दुआर†–संज्ञा पुं० द्वार।

दुआरी–संज्ञा स्त्री० छोटा दरवाजा।

दुइ†–वि० दे० "दो"।

दुइज†॰–संज्ञा स्त्री० द्वितीया।
संज्ञा पुं० दूज का चाँद।

दुऊ॰–वि० दे० "दोनों"।

दुकड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० दुकड़ी] १. जोड़ा। २. छदाम।

परत मोटी हो।
दलन–संज्ञा पुं० [वि० दलित] १. पीस-कर टुकड़े टुकड़े करना। २. संहार।
दलना–क्रि० स० १. रगड़ या पीस-कर टुकड़े टुकड़े करना। २. रौंदना।
दलनि†–संज्ञा स्त्री० दलने की क्रिया या ढंग।
दलपति–संज्ञा पुं० १. मुखिया। २. सेनापति।
दल-बल–संज्ञा पुं० फ़ौज।
दल बादल–संज्ञा पुं० १. बादलों का समूह। २. भारी सेना।
दलमलना–क्रि० स० १. मसल डालना। २. रौंदना।
दलवाना–क्रि० स० दलने का काम दूसरे से करवाना।
दलवाल*†–संज्ञा पुं० सेनापति।
दलहन–संज्ञा पुं० वह अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है।
दलाना†–संज्ञा पुं० दे० "दालान"।
दलाल–संज्ञा पुं० [संज्ञा दलाली] मध्यस्थ।
दलाली–संज्ञा स्त्री० १. दलाल का काम। २. वह द्रव्य जो दलाल को मिलता है।
दलित–वि० मसला हुआ।
दलिया–संज्ञा पुं० दलकर कई टुकड़े किया हुआ अनाज।
दलील–संज्ञा स्त्री० १. तर्क। २. बहस।
दलेल–संज्ञा स्त्री० सिपाहियों की वह क़वायद जो सज़ा की तरह पर हो।
दवँगरा–संज्ञा पुं० वर्षा के आरंभ में होनेवाली झड़ी।
दव–संज्ञा पुं० १. दवाग्नि। २. अग्नि।
दवना*–संज्ञा पुं० दे० "दौना"। क्रि० स० जलना।
दवनी–संज्ञा स्त्री० फ़सल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम।
दवरिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "दवारि"।
दवा–संज्ञा स्त्री० औषध।
*†संज्ञा स्त्री० १. वनाग्नि। २. अग्नि।
दवाखाना–संज्ञा पुं० औषधालय।
दवागिन*–संज्ञा स्त्री० दे० "दवाग्नि"।
दवाग्नि–संज्ञा स्त्री० वन में लगनेवाली आग।
दवात–संज्ञा स्त्री० लिखने की स्याही रखने का बरतन।
दवानल–संज्ञा पुं० दवाग्नि।
दवामी–वि० स्थायी।
दवारी–संज्ञा स्त्री० दवाग्नि।
दशकंठ–संज्ञा पुं० रावण।
दशकंधर–संज्ञा पुं० रावण।
दशगात्र–संज्ञा पुं० मृतक-संबंधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है।
दशन–संज्ञा पुं० दाँत।
दशमलव–संज्ञा पुं० वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो।
दशमी–संज्ञा स्त्री० चांद्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि।
दशमुख–संज्ञा पुं० रावण।
दशरथ–संज्ञा पुं० अयोध्या के इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्राचीन राजा जिनके पुत्र श्रीरामचंद्र थे।
दशशीश*–संज्ञा पुं० रावण।
दशहरा–संज्ञा पुं० १. ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। २. विजया दशमी।
दशांग–संज्ञा पुं० पूजन में सुगंध के निमित्त जलाने का एक धूप जो दस

दुकड़ी–वि० स्त्री० जिसमें कोई वस्तु दो दो हो।
दुकान–संज्ञा स्त्री० सौदा बिकने का स्थान।
दुकानदार–संज्ञा पुं० दुकान पर बैठकर सौदा बेचनेवाला।
दुकानदारी–संज्ञा स्त्री० दुकान पर माल बेचने का काम।
दुकाल–संज्ञा पुं० अकाल।
दुकूल–संज्ञा पुं० १. सन या तीसी के रेशे का बना कपड़ा। २. वस्त्र।
दुकेला–[स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो।
दुकेले–क्रि० वि० किसी के साथ।
दुक्कड़–संज्ञा पुं० १. तबले की तरह का एक बाजा जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २. एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई दो नावों का जोड़ा।
दुक्का–वि० [स्त्री० दुक्की] जो एक साथ दो हों।
संज्ञा पुं० दे० "दुक्की"।
दुक्की–संज्ञा स्त्री० ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ बनी हों।
दुखंडा–वि० जिसमें दो खंड हों।
दुखंत*–संज्ञा पुं० दे० "दुष्यंत"।
दुख–संज्ञा पुं० दे० "दुःख"।
दुखड़ा–संज्ञा पुं० १. तकलीफ़ का हाल। २. कष्ट।
दुखदाई, दुखदानि*–वि० दे० "दुखदायी"।
दुखदुंद*–संज्ञा पुं० दुःख का उपद्रव।
दुखना–क्रि० अ० दर्द करना।
दुखरा*–संज्ञा पुं० दे० "दुखड़ा"।
दुखहाया–वि० दे० "दुःखित"।
दुखाना–क्रि० स० १. कष्ट पहुँचाना। २. किसी के मर्मस्थान या पके घाव इत्यादि को छू देना, जिससे उसमें पीड़ा हो।
दुखारा, दुखारी–वि० दुखी।
दुखारो–वि० दे० "दुखारा"।
दुखित*–वि० दे० "दुःखित"।
दुखिया–वि० दुखी।
दुखी–वि० जिसे दुःख हो।
दुखीला†–वि० दुःख अनुभव करनेवाला।
दुखौहाँ*–वि० [स्त्री० दुखौहीं] दुःखदायी।
दुगई–संज्ञा स्त्री० बरामदा।
दुगदुगी–संज्ञा स्त्री० १. धुकधुकी। २. गले में पहनने का एक गहना।
दुगना–वि० [स्त्री० दुगनी] दूना।
दुगुण*–वि० दे० "द्विगुण"।
दुगुन*†–वि० दे० "दुगना"।
दुग्ग*–संज्ञा पुं० दे० "दुर्ग"।
दुग्ध–वि० दुहा हुआ।
संज्ञा पुं० दूध।
दुग्धी–संज्ञा स्त्री० दुधिया नाम की घास।
वि० दूधवाला।
दुघड़िया–वि० दो घड़ी का।
दुघड़िया मुहूर्त्त–संज्ञा पुं० दो दो घड़ियों के अनुसार निकाला हुआ मुहूर्त।
दुघरी†–संज्ञा स्त्री० दुघड़िया मुहूर्त।
दुचंद–वि० दूना।
दुचित*–वि० १. जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। २. चिंतित।
दुचितई†*–संज्ञा स्त्री० १. चित्त की

सुगंध द्रव्यों के मेल से बनता है।
दशा–संज्ञा स्त्री० अवस्था।
दशानन–संज्ञा पुं० रावण।
दशाश्वमेध–संज्ञा पुं० १. काशी के अंतर्गत एक तीर्थ। २. प्रयाग के अंतर्गत त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट, जहाँ से यात्री जल भरते हैं।
दशाह–संज्ञा पुं० १. दस दिन। २. मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन।
दस–वि० जो गिनती में नौ से एक अधिक हो।
दसखत†–संज्ञा पुं० दे० "दस्तखत"।
दसन०–संज्ञा पुं० दे० "दशन"।
दसना–क्रि० अ० फैलना।
क्रि० स० बिछाना।
संज्ञा पुं० बिछौना।
दसमाथ०–संज्ञा पुं० रावण।
दसमी–संज्ञा स्त्री० दे० "दशमी"।
दसा–संज्ञा स्त्री० दे० "दशा"।
दसारन–संज्ञा पुं० दे० "दशार्ण"।
दसौंधी–संज्ञा पुं० भाट।
दस्तंदाज़ी–संज्ञा स्त्री० हस्तक्षेप।
दस्त–संज्ञा पुं० पतला पायखाना।
दस्तकार–संज्ञा पुं० हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आदमी।
दस्तकारी–संज्ञा स्त्री० हाथ की कारीगरी।
दस्तखत–संज्ञा पुं० हस्ताक्षर।
दस्ता–संज्ञा पुं० १. वह जो हाथ में आवे या रहे। २. मूठ। ३. फूलों का गुच्छा। ४. गारद। ५. कागज़ के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।
दस्ताना–संज्ञा पुं० हाथ का मोज़ा।
दस्तावर–वि० जिससे दस्त आवें।
दस्तावेज़–संज्ञा स्त्री० वह कागज़ जिसमें कुछ आदमियों के बीच के व्यवहार की बात लिखी हो और जिस पर व्यवहार करनेवालों के दस्तखत हों।
दस्ती–वि० हाथ का।
संज्ञा स्त्री० १. मशाल। २. छोटा बेंट।
दस्तूर–संज्ञा पुं० १. रीति। २. नियम। ३. पारसियों का पुरोहित जो कर्मकांड कराता है।
दस्तूरी–संज्ञा स्त्री० वह द्रव्य जो नौकर अपने मालिक का सौदा लेने में दूकानदारों से हक के तौर पर पाते हैं।
दस्यु–संज्ञा पुं० डाकू।
दह–संज्ञा पुं० १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी बहुत गहरा हो। कुंड।
संज्ञा स्त्री० ज्वाला।
दहक–संज्ञा स्त्री० १. धधक। २. ज्वाला।
दहकना–क्रि० अ० १. धधकना। २. तपना।
दहकाना–क्रि० स० १. धधकाना। २. भड़काना।
दहन–संज्ञा पुं० [वि० दहनीय, दहमान] १. दाह। २. अग्नि।
दहना–क्रि० अ० १. जलना। २. कुढ़ना।
क्रि० स० जलाना।
क्रि० अ० धँसना।
वि० दे० "दहिना"।
दहनि†–संज्ञा स्त्री० जलन।
दहपट–वि० १. ढाया हुआ। २. रौंदा हुआ।
दहपटना–क्रि० स० १. ध्वस्त करना। २. रौंदना।
दहर–संज्ञा पुं० १. नदी में गहरा

अस्थिरता। २. खटका।

दुचिताई॥-संज्ञा स्त्री० १. चित्त की अस्थिरता। २. खटका।

दुचित्ता-वि० [स्त्री० दुचित्ती] १. जो दुबधे में हो। २. चिंतित।

दुज॥-संज्ञा पुं० दे० "द्विज"।

दुजन्मा॥-संज्ञा पुं० दे० "द्विजन्मा"।

दुजपति॥-संज्ञा पुं० दे० "द्विजपति"।

दुजीह॥-संज्ञा पुं० दे० "द्विजिह्व"।

दुजेश-संज्ञा पुं० दे० "द्विजेश"।

दुटूक-वि० दो टुकड़ों में किया हुआ।

दुत्-अव्य० १. एक शब्द जो तिरस्कारपूर्वक हटाने के समय बोला जाता है। २. घृणा या तिरस्कार-सूचक शब्द।

दुतकार-संज्ञा स्त्री० फटकार।

दुतकारना-क्रि० स० १. दुत दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से हटाना। २. तिरस्कृत करना।

दुतर्फा-वि० [स्त्री० दुतर्फी] दोनों ओर का।

दुतारा-संज्ञा पुं० एक बाजा जिसमें दो तार होते हैं।

दुति-संज्ञा स्त्री० दे० "द्युति"।

दुतिमान॥-वि० दे० "द्युतिमान्"।

दुतिय॥-वि० दे० "द्वितीय"।

दुतिया-संज्ञा स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि।

दुतिवंत॥-वि० १. आभायुक्त। २. सुंदर।

दुतीय॥-वि० दे० "द्वितीय"।

दुतीया॥†-संज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया"।

दुदल-संज्ञा पुं० १. दाल। २. एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

दुदलाना†-क्रि० स० दे० "दुतकारना"।

दुदामी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था।
संज्ञा स्त्री० खड़िया मिट्टी।

दुधमुख॥†-वि० दूधमुहाँ।

दुधमुँहाँ-वि० दे० "दूधमुहाँ"।

दुधहाँड़ी-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।

दुधाँड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "दुधहाँड़ी"।

दुधार-वि० १. दूध देनेवाली। २. जिसमें दूध हो।
वि० संज्ञा पुं० दे० "दुधारा"।

दुधारा-वि० (तलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का खाँड़ा।

दुधारी-वि० स्त्री० दूध देनेवाली।
वि० स्त्री० जिसमें दोनों ओर धार हो।

दुधारु†-वि० दे० "दुधार"।

दुधिया-वि० १. दूध मिला हुआ। २. जिसमें दूध होता हो। ३. दूध की तरह सफेद।
संज्ञा स्त्री० १. दुद्धी नाम की घास। २. एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३. खड़िया मिट्टी।

दुधिया पत्थर-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २. एक प्रकार का नग या रत्न।

दुधिया विष-संज्ञा पुं० कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुंदर पौधे काश्मीर और हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विष होता है।

स्थान। २. कुंड।

दहरना*–क्रि० अ० दे० "दहलना"। क्रि० स० दे० "दहलाना"।

दहल–संज्ञा स्त्री० डर से एकबारगी काँप उठने की क्रिया।

दहलना–क्रि० अ० डर से एकबारगी काँप उठना।

दहला–संज्ञा पुं० ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों। † संज्ञा पुं० थाला।

दहलाना–क्रि० स० डर से कँपाना।

दहलीज़–संज्ञा स्त्री० देहली।

दहशत–संज्ञा स्त्री० डर।

दहा–संज्ञा पुं० १. मुहर्रम का महीना। २. मुहर्रम की १ से १० तारीख़ तक का समय। ३. ताज़िया।

दहाई–संज्ञा स्त्री० १. दस का मान या भाव। २. अंकों के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान जिस पर जो अंक लिखा होता है, उससे उतने ही गुने दस का बोध होता है।

दहाड़–संज्ञा स्त्री० १. गरज। २. चिल्लाकर रोने की ध्वनि।

दहाड़ना–क्रि० अ० १. गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

दहाना–संज्ञा पुं० मुहाना।

दहिना–वि० [स्त्री० दहिनी] शरीर के दो पार्श्वों में से उस पार्श्व का नाम जिधर के अंगों या पेशियों में अधिक बल होता है। बायाँ का उलटा।

दहिने–क्रि० वि० दहिनी ओर को।

दही–संज्ञा पुं० खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

दहु*–अव्य० १. अथवा। २. कदाचित्।

दहेंड़ी–संज्ञा स्त्री० दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज–संज्ञा पुं० वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर पक्ष को दिया जाता है।

दहेला–वि० [स्त्री० दहेली] १. दग्ध। २. दुःखी।
वि०[स्त्री० दहेली] भीगा हुआ।

दाँ–संज्ञा पुं० दफ़ा।
संज्ञा पुं० जाननेवाला।

दाँक–संज्ञा स्त्री० दहाड़।

दाँकना–क्रि० अ० गरजना।

दाँग–संज्ञा स्त्री० १. छः रत्ती की तौल। २. दिशा।
संज्ञा पुं० नगाड़ा।
संज्ञा पुं० टीला।

दाँज†–संज्ञा स्त्री० बराबरी।

दाँत–संज्ञा पुं० १. दंत। दशन। २. दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु।

दांत–वि० १. दबाया हुआ। २. संयमी। ३. दाँत का।

दाँता–संज्ञा पुं० दाँत के आकार का कँगूरा।

दाँताकिटकिट–संज्ञा स्त्री० १. कहा-सुनी। २. गाली-गलौज।

दांति–संज्ञा स्त्री० १. इंद्रिय-निग्रह। २. विनय।

दाँती–संज्ञा स्त्री० हँसिया जिससे घास या फ़सल काटते हैं।
संज्ञा स्त्री० दाँतों की पंक्ति।

दाँना–क्रि० स० पकी फ़सल के डंठलों को बैलों से इसलिये रौंदवाना जिसमें डंठल से दाना अलग हो जाय।

दांपत्य–वि० पति-पत्नी-संबंधी।

दुधैल–वि० बहुत दूध देनेवाली।
दुनघना†०–क्रि० अ० लचकर प्रायः दोहरा हो जाना।
क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।
दुनाली–वि० स्त्री० दो नलोंवाली।
संज्ञा स्त्री० दुनाली बंदूक।
दुनियाँ–संज्ञा स्त्री० १. संसार। २. संसार के लोग। ३. संसार का जंजाल।
दुनियाई–वि० सांसारिक।
संज्ञा स्त्री० संसार।
दुनियादार–संज्ञा पुं० गृहस्थ।
वि० व्यवहार-कुशल।
दुनियादारी–संज्ञा स्त्री० १. दुनिया का कारबार। २. स्वार्थसाधन। ३. बनावटी व्यवहार।
दुनी०–संज्ञा स्त्री० संसार।
दुपटा†०–संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।
दुपट्टा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० दुपट्टी] कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।
दुपट्टी†०–संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"।
दुपहर–संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।
दुपहरिया–संज्ञा स्त्री० १. दोपहर। २. एक छोटा पौधा और फूल।
दुपहरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।
दुफसली–वि० वह चीज़ जो रबी और खरीफ दोनों में हो।
वि० स्त्री० दुबधा की।
दुबधा–संज्ञा स्त्री० १. चित्त की अस्थिरता। २. संशय। ३. असमंजस।
दुबला–वि० [स्त्री० दुबली] क्षीण शरीर का।
दुबलापन–संज्ञा पुं० क्षीणता।
दुबारा–क्रि० वि० दे० "दोबारा"।
दुबिध, दुबिधा०–संज्ञा स्त्री० दे० "दुबधा"।
दुबे–संज्ञा पुं० [स्त्री० दुबाइन] ब्राह्मणों का एक भेद।
दुभाखी–संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।
दुभाषिया–संज्ञा पुं० दो भाषाओं का जाननेवाला ऐसा मनुष्य जो दन भाषाओं के बोलनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे का अभिप्राय समझावे।
दुमंज़िला–वि० [स्त्री० दुमंज़िली] दोखंडा।
दुम–संज्ञा स्त्री० पूँछ।
दुमची–संज्ञा स्त्री० घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है।
दुमदार–वि० पूँछवाला।
दुमाता–वि० १. बुरी माता। २. सौतेली माँ।
दुमुहाँ–वि० दे० "दोमुहाँ"।
दुरंगा–वि० [स्त्री० दुरंगी] दो रंगों का।
दुरंगी–वि० स्त्री० दे० "दुरंगा"।
संज्ञा स्त्री० द्विविधा।
दुरंत–वि० १. अपार। २. दुर्गम। ३. घोर।
दुर्–अव्य० या उप० एक अव्यय जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—१. दूषण। २. निषेध। ३. दुःख।
दुर–अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग तिरस्कारपूर्वक हटाने के लिये होता है और जिसका अर्थ है "दूर हो"।
दुरजन०–संज्ञा पुं० दे० "दुर्जन"।
दुरजोधन०–संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।
दुरदुराना–क्रि० स० तिरस्कार-पूर्वक

संज्ञा पुं० स्त्री-पुरुष के बीच का प्रेम या व्यवहार।

दांभिक–वि० १. पाखंडी। २. अहंकारी।

दाँवरी–संज्ञा स्त्री० रस्सी।

दाइ॰–संज्ञा पुं० दे० "दाय" और "दाँव"।

दाईं–वि० स्त्री० दाहिनी।
संज्ञा स्त्री० बारी।

दाई–संज्ञा स्त्री० धाय।
॰वि० दे० "दायी"।

दाउ†–संज्ञा पुं० दे० "दाँव"।

दाऊ–संज्ञा पुं० बड़ा भाई।

दाक्षिणात्य–वि० दक्खिनी।
संज्ञा पुं० भारतवर्ष का वह भाग जो विंध्याचल के दक्षिण पड़ता है।

दाक्षिण्य–संज्ञा पुं० अनुकूलता।
वि० दक्षिण का।

दाख–संज्ञा स्त्री० १. अंगूर। २. मुनक्का। ३. किशमिश।

दाखिल–वि० १. प्रविष्ट। २. शरीक।

दाखिल-खारिज–संज्ञा पुं० किसी सरकारी कागज़ पर से किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम काटकर उस पर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।

दाखिल-दफ़्तर–वि० दफ़्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ (कागज़) जिस पर कुछ विचार न किया जाय।

दाखिला–संज्ञा पुं० १. प्रवेश। २. संस्था आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य्य।

दाग–संज्ञा पुं० १. दाह। २. मुर्दा जलाने की क्रिया। ३. जलन का चिह्न।

दाग़–संज्ञा पुं० [वि० दागी] १. धब्बा। २. फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। ३. कलंक।

दाग़दार–वि० जिस पर दाग़ या धब्बा लगा हो।

दागना–क्रि० स० १. जलाना। २. तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय। ३. तोप, बंदूक आदि छोड़ना।
क्रि० स० अंकित करना।

दाग़ी–वि० १. जिस पर दाग़ या धब्बा हो। २. जिस पर सड़ने का चिह्न हो। ३. कलंकित।

दाघ–संज्ञा पुं० १. गरमी। २. दाह।
क्रि० स० जलाना।

दाझन॰–संज्ञा स्त्री० जलन।

दाझना॰–क्रि० अ० जलना।
क्रि० स० जलाना।

दाड़िम–संज्ञा पुं० अनार।

दाढ़–संज्ञा स्त्री० जबड़े के भीतर के मोटे चौड़े दाँत।
संज्ञा स्त्री० १. दहाड़। २. चिल्लाहट।

दाढ़ना॰–क्रि० स० १. जलाना। २. दुखी करना।

दाढ़ा†–संज्ञा पुं० दे० "दाढ़"।
संज्ञा पुं० १. वन की आग। २. आग।

दाढ़ी–संज्ञा स्त्री० १. चिबुक। २. ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल।

दातव्य–वि० देने योग्य।
संज्ञा पुं० १. दान। २. दानशीलता।

दाता–संज्ञा पुं० १. दानशील। २. देनेवाला।

दातार–संज्ञा पुं० दाता।

दाती॰–संज्ञा स्त्री० देनेवाली।

दातुन–संज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।

दातृत्व–संज्ञा पुं० दानशीलता।

दूर करना।
दुरना†ः–क्रि० अ० १. आँखों के आगे से दूर होना। २. छिपना।
दुरपदी†ः–संज्ञा स्त्री० दे० "द्रौपदी"।
दुरभिसंधि–संज्ञा स्त्री० बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।
दुरभेव†–संज्ञा पुं० बुरा भाव।
दुरमुस–संज्ञा पुं० गदा के आकार का डंडा, जिससे कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाई जाती है।
दुरवस्था–संज्ञा स्त्री० बुरी दशा।
दुराउ†ः–संज्ञा पुं० दे० "दुराव"।
दुराग्रह–संज्ञा पुं० [वि० दुराग्रही] हठ।
दुराचरण–संज्ञा पुं० बुरा चाल-चलन।
दुराचार–संज्ञा पुं० [वि० दुराचारी] दुष्ट आचरण।
दुराज–संज्ञा पुं० बुरा राज्य।
संज्ञा पुं० एक ही स्थान पर दो राजाओं का राज्य या शासन।
दुराजी–वि० दो राजाओं का।
दुरात्मा–वि० दुष्टात्मा।
दुरादुरी–संज्ञा स्त्री० छिपाव।
दुराधर्ष–वि० प्रबल।
दुराना–क्रि० अ० दूर होना।
क्रि० स० दूर करना।
दुरालभा–संज्ञा स्त्री० १. जवासा। २. कपास।
दुराव–संज्ञा पुं० १. भेदभाव। २. कपट।
दुराशय–संज्ञा पुं० दुष्ट आशय।
वि० खोटा।
दुराशा–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की आशा।
दुरित–संज्ञा पुं० पाप।
वि० पापी।
दुरुखा–वि० १. जिसके दोनों ओर मुँह हों। २. जिसके दोनों ओर दो रंग हों।
दुरुपयोग–संज्ञा पुं० बुरा उपयोग।
दुरुस्त–वि० १. ठीक। २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३. उचित।
दुरुस्ती–संज्ञा स्त्री० सुधार।
दुरुह–वि० गूढ़।
दुर्गंध–संज्ञा स्त्री० बदबू।
दुर्ग–वि० जिसमें पहुँचना कठिन हो।
संज्ञा पुं० किला।
दुर्गत–वि० जिसकी बुरी गति हुई हो।
संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति"।
दुर्गति–संज्ञा स्त्री० दुर्दशा।
दुर्गपाल–संज्ञा पुं० किलेदार।
दुर्गम–वि० १. जहाँ जाना कठिन हो। २. कठिन।
संज्ञा पुं० १. गढ़। २. वन।
दुर्गरक्षक–संज्ञा पुं० किलेदार।
दुर्गा–संज्ञा स्त्री० देवी। इनका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है।
दुर्गुण–संज्ञा पुं० बुरा गुण।
दुर्घट–वि० जिसका होना कठिन हो।
दुर्घटना–संज्ञा स्त्री० वारदात।
दुर्जन–संज्ञा पुं० दुष्ट जन।
दुर्जय–वि० जिसे जीतना बहुत कठिन हो।
दुर्ज्ञेय–वि० जो जल्दी समझ में न आ सके।
दुर्दमनीय–वि० १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २. प्रचंड।
दुर्दम्य–वि० दे० "दुर्दमनीय"।
दुर्दशा–संज्ञा स्त्री० बुरी दशा।

दिग्–संज्ञा स्त्री० दे० "दिक्"।
दिग्दंति†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।
दिग्पाल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्गज–संज्ञा पुं० पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिये स्थापित हैं।
वि० बहुत बड़ा।
दिग्दर्शन–संज्ञा पुं० नमूना।
दिग्देवता–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्पट–संज्ञा पुं० १. दिशारूपी वस्त्र। २. नंगा।
दिग्पति–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्भ्रम–संज्ञा पुं० दिशाओं का भ्रम होना।
दिग्मंडल–संज्ञा पुं० संपूर्ण दिशाएँ।
दिग्राज–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।
दिग्वस्त्र–संज्ञा पुं० १. महादेव। २. नंगा रहनेवाला जैन यती।
दिग्वास–संज्ञा पुं० दे० "दिग्वस्त्र"।
दिग्विजय–संज्ञा स्त्री० राजाओं का अपनी वीरता दिखलाने और महत्त्व स्थापित करने के लिये देश-देशांतरों में अपनी सेना के साथ जाकर युद्ध करना और विजय प्राप्त करना।
दिग्विजयी–वि० पुं० [स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने दिग्विजय किया हो।
दिग्विभाग–संज्ञा पुं० दिशा।
दिग्व्यापी–वि० [स्त्री० दिग्व्यापिनी] जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।
दिग्शूल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।
दिङ्नाग–संज्ञा पुं० दिग्गज।
दिङ्मंडल–संज्ञा पुं० दिशाओं का समूह।
दिजराज*†–संज्ञा पुं० दे० "द्विजराज"।
दिठादिठी–संज्ञा स्त्री० दे० "देखादेखी"।
दिठाना–क्रि० अ० बुरी दृष्टि लगना। क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना।
दिठौना†–संज्ञा पुं० काजल की वह बिंदी जो बालकों को नज़र से बचाने के लिये लगाते हैं।
दिढ़*†–वि० दे० "दृढ़"।
दिढ़ाना*†–क्रि० स० पक्का करना।
दितिसुत–संज्ञा पुं० दैत्य।
दिन–संज्ञा पुं० १. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २. चौबीस घंटे का समय। ३. समय।
क्रि० वि० सदा।
दिनअर*–संज्ञा पुं० दे० "दिनकर"।
दिनकंत*†–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनकर–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनचर्या–संज्ञा स्त्री० दिन भर का कर्तव्य कर्म।
दिनदानी*†–संज्ञा पुं० प्रति दिन दान करनेवाला।
दिननाथ–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनपति–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनमणि–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनराइ*–संज्ञा पुं० दे० "दिनराज"।
दिनराज–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनांध–संज्ञा पुं० वह जिसे दिन को न सूझे।
दिनाइ†–संज्ञा पुं० दाद नामक रोग।
दिनियर*†–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनी–वि० बहुत दिनों का।
दिनेर–संज्ञा पुं० सूर्य।
दिनेश–संज्ञा पुं० सूर्य।

दुर्दिन–संज्ञा पुं० १. बुरा दिन। २. ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो।

दुर्दैव–संज्ञा पुं० १. दुर्भाग्य। बुरी किस्मत। २. दिनों का बुरा फेर।

दुर्द्धर–वि० १. जिसे कठिनता से पकड़ सकें। २. प्रबल।

दुर्द्धर्ष–वि० १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. प्रबल।

दुर्नाम–संज्ञा पुं० १. बदनामी। २. गाली।

दुर्नीति–संज्ञा स्त्री० कुनीति।

दुर्बल–वि० १. कमज़ोर। २. दुबला-पतला।

दुर्बलता–संज्ञा स्त्री० १. कमज़ोरी। २. दुबलापन।

दुर्बोध–वि० गूढ़।

दुर्भाग्य–संज्ञा पुं० मंद भाग्य।

दुर्भिक्ष–संज्ञा पुं० अकाल।

दुर्भिच्छ॰–संज्ञा पुं० दे० "दुर्भिच्छ"।

दुर्मति–संज्ञा स्त्री० बुरी बुद्धि।
वि० १. जिसकी समझ ठीक न हो। २. खल।

दुर्मुख–संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. रामचंद्रजी का एक गुप्तचर जिसके द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लोकापवाद सुना था।
वि० १. जिसका मुख बुरा हो। २. कटुभाषी।

दुर्योधन–संज्ञा पुं० कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र जो अपने चचेरे भाई पांडवों से बहुत बुरा मानता था। कौरवों में श्रेष्ठ।

दुर्रानी–संज्ञा पुं० अफ़ग़ानों की एक जाति।

दुर्लंघ्य–वि० जिसे जल्दी लाँघ न सकें।

दुर्लक्ष्य–वि० जो कठिनता से दिखाई पड़े।

दुर्लभ–वि० १. जिसे पाना सहज न हो। २. अनोखा।

दुर्वचन–संज्ञा पुं० गाली।

दुर्वह–वि० जिसका वहन करना कठिन हो।

दुर्वाद–संज्ञा पुं० निंदा।

दुर्वासा–संज्ञा पुं० एक मुनि। ये अत्यंत क्रोधी थे।

दुर्वृत्त–वि० दुराचारी।

दुर्व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० कुप्रबंध।

दुर्व्यवहार–संज्ञा पुं० बुरा व्यवहार।

दुर्व्यसन–संज्ञा पुं० बुरी लत।

दुलकी–संज्ञा स्त्री० घोड़े की एक चाल जिसमें वह चारों पैर अलग अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ चलता है।

दुलखना–क्रि० स० बार बार कहना या बतलाना।

दुलड़ी–संज्ञा स्त्री० दो लड़ों की माला।

दुलत्ती–संज्ञा स्त्री० घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलराना॰†–क्रि० स० बच्चों को बहलाकर प्यार करना।
क्रि० अ० दुलारे बच्चों की सी चेष्टा करना।

दुलरी–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलड़ी"।

दिनौंधी–संज्ञा स्त्री॰ एक रोग जिसमें दिन के समय सूर्य की तेज़ किरणों के कारण बहुत कम दिखाई देता है।
दिपति॰†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "दीप्ति"।
दिपना॰–क्रि॰ अ॰ चमकना।
दिपाना–क्रि॰ अ॰ दे॰ "दिपना"।
दिव्य॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दिव्य"।
दिमाक–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दिमाग़"।
दिमाग़–संज्ञा पुं॰ १. मस्तिष्क। २. बुद्धि। ३. अभिमान।
दिमाग़दार–वि॰ १. जिसकी मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो। २. अभिमानी।
दिमाग़ी–वि॰ दे॰ "दिमाग़दार"। वि॰ दिमाग़-संबंधी।
दिमाना॰†–वि॰ दे॰ "दीवाना"।
दियना†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दीआ"। क्रि॰ अ॰ चमकना।
दियरा–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दीया"।
दिया–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दीया"।
दियारा–संज्ञा पुं॰ कछार।
दियासलाई–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "दीयासलाई"।
दिरम–संज्ञा पुं॰ १. मिस्र देश का चाँदी का एक सिक्का। २. साढ़े तीन माशे की एक तौल।
दिरमान†–संज्ञा पुं॰ चिकित्सा।
दिरमानी–संज्ञा पुं॰ चिकित्सक।
दिरिस॰†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दृश्य"।
दिल–संज्ञा पुं॰ १. कलेजा। २. मन। ३. साहस।
दिलगीर–वि॰ [संज्ञा दिलगीरी] उदास।
दिलचला–वि॰ १. साहसी। २. वीर।
दिलचस्प–वि॰ [संज्ञा दिलचस्पी] चित्ताकर्षक।
दिलजमई–संज्ञा स्त्री॰ तसल्ली।
दिलजला–वि॰ जिसके चित्त को बहुत कष्ट पहुँचा हो।
दिलदार–वि॰ [संज्ञा दिलदारी] उदार।
दिलबर–वि॰ प्यारा।
दिलरुबा–संज्ञा पुं॰ प्यारा।
दिलवाना–क्रि॰ स॰ दे॰ "दिलाना"।
दिलह्ला–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दिल्ली"।
दिलाना–क्रि॰ स॰ दिलवाना।
दिलावर–वि॰ [संज्ञा दिलावरी] १. बहादुर। २. साहसी।
दिलासा–संज्ञा पुं॰ धैर्य।
दिली–वि॰ १. हार्दिक। २. अत्यंत घनिष्ठ।
दिलीप–संज्ञा पुं॰ इक्ष्वाकुवंशी एक राजा।
दिलेर–वि॰ [संज्ञा दिलेरी] १. बहादुर। २. साहसी।
दिल्लगी–संज्ञा स्त्री॰ १. दिल लगाने की क्रिया या भाव। २. ठठोली।
दिल्लगीबाज़–संज्ञा पुं॰ मसख़रा।
दिवराज–संज्ञा पुं॰ इंद्र।
दिवस–संज्ञा पुं॰ दिन।
दिवस्पति–संज्ञा पुं॰ सूर्य।
दिवांध–वि॰ जिसे दिन में न सूझे। संज्ञा पुं॰ १. दिनौंधी का रोग। २. उल्लू।
दिवा–संज्ञा पुं॰ १. दिन। २. बाईस अक्षरों का एक वर्णवृत्त।
दिवाकर–संज्ञा पुं॰ सूर्य।
दिवाना†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "दीवाना"। ॰† क्रि॰ स॰ दे॰ "दिलाना"।
दिवाल–वि॰ जो देता हो। †संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "दीवार"।
दिवाला–संज्ञा पुं॰ १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य के पास अपना ऋण

दुलहन–संज्ञा स्त्री० नवविवाहिता वधू।
दुलहा–संज्ञा पुं० दे० "दूल्हा"।
दुलहिया, दुलही†–संज्ञा स्त्री० दे० "दुलहन"।
दुलहेटा–संज्ञा पुं० दुलारा लड़का।
दुलाई–संज्ञा स्त्री० ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसके भीतर रूई भरी हो।
दुलाना०–क्रि० स० दे० "डुलाना"।
दुलार–संज्ञा पुं० लाड़-प्यार।
दुलारना–क्रि० स० लाड़ करना।
दुलारा–वि० [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार या लाड़-प्यार हो।
दुव–वि० दो।
दुवन–संज्ञा पुं० १. खल। २. शत्रु। ३. राक्षस।
दुवाज–संज्ञा पुं० एक प्रकार का घोड़ा।
दुवादस०†–वि० दे० "द्वादश"।
दुवादस बानी०–वि० खरा।
दुवार†–संज्ञा पुं० दे० "द्वार"।
दुवाल–संज्ञा स्त्री० रिकाब में लगा हुआ चमड़े का चौड़ा फीता।
दुविधा†–संज्ञा स्त्री० दे० "दुवधा"।
दुवो०†–वि० दोनों।
दुशवार–वि० [संज्ञा दुशवारी] कठिन।
दुशाला–संज्ञा पुं० पशमीने की चादरों का जोड़ा जिनके किनारे पर पशमीने की बेलें बनी रहती हैं।
दुशासन०–संज्ञा पुं० दे० "दुःशासन"।
दुश्चारत–वि० बुरे आचरण का। संज्ञा पुं० बुरा आचरण।
दुश्चरित्र–वि० [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। संज्ञा पुं० बुरी चाल।
दुश्चेष्टा–संज्ञा स्त्री० [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम।
दुश्मन–संज्ञा पुं० शत्रु।
दुश्मनी–संज्ञा स्त्री० वैर।
दुष्कर–वि० दुःसाध्य।
दुष्कर्म–संज्ञा पुं० [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम।
दुष्कर्मा–वि० पापी।
दुष्कर्मी–वि० बुरा काम करनेवाला।
दुष्काल–संज्ञा पुं० १. बुरा वक्त। २. दुर्भिक्ष।
दुष्ट–वि० [स्त्री० दुष्टा] १. जिसमें दोष या ऐब हो। २. दुर्जन।
दुष्टता–संज्ञा स्त्री० १. दोष। २. बदमाशी।
दुष्टपना–संज्ञा पुं० दे० "दुष्टता"।
दुष्टाचार–संज्ञा पुं० कुचाल।
दुष्टात्मा–वि० खोटी प्रकृति का।
दुष्प्राप्य–वि० जो सहज में न मिल सके।
दुष्यंत–संज्ञा पुं० पुरुवंशी एक राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। इन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुंतला के साथ गांधर्व विवाह किया था।
दुसराना०–क्रि० स० दे० "दोहराना"।
दुसारहा०†–वि० साथी।
दुसह०–वि० जो सहा न जाय।
दुसही†–वि० जो कठिनता से सह सके।

चुकाने के लिये कुछ न रह जाय। २. किसी पदार्थ का बिलकुल न रह जाना।

दिवालिया–वि० जिसके पास ऋण चुकाने के लिये कुछ न बच गया हो।

दिवाली–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।

दिवैया–वि० देनेवाला।

दिव्य–वि० १. स्वर्गीय। २. अलौकिक। ३. प्रकाशमान।

दिव्यचक्षु–संज्ञा पुं० ज्ञानचक्षु।

दिव्यता–संज्ञा स्त्री० १ दिव्य का भाव। २. सुंदरता।

दिव्यदृष्टि–संज्ञा स्त्री० ज्ञानदृष्टि।

दिव्यरथ–संज्ञा पुं० देवताओं का विमान।

दिव्यांगना–संज्ञा स्त्री० १. देववधू। २. अप्सरा।

दिव्या–संज्ञा स्त्री० तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक।

दिव्यादिव्य–संज्ञा पुं० तीन प्रकार के नायकों में से एक।

दिव्यादिव्या–संज्ञा स्त्री० तीन प्रकार की नायिकाओं में से एक।

दिव्यास्त्र–संज्ञा पुं० १. देवताओं का दिया हुआ हथियार। २. मंत्रों द्वारा चलानेवाला हथियार।

दिव्योदक–संज्ञा पुं० वर्षा का जल।

दिश्–संज्ञा स्त्री० दिशा।

दिशा–संज्ञा स्त्री० तरफ।

दिशाभ्रम–संज्ञा पुं० दिशाओं के संबंध में भ्रम होना।

दिशाशूल–संज्ञा पुं० दे० "दिक्शूल"।

दिशि–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिष्ट–संज्ञा पुं० भाग्य।

दिष्टबंधक–संज्ञा पुं० वह रेहन जिसमें चीज़ पर रुपए देनेवाले का कोई कब्ज़ा न हो, उसे सिर्फ सूद मिलता रहे।

दिष्टि*–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिसंतर*†–संज्ञा पुं० देशांतर। क्रि० वि० बहुत दूर तक।

दिस*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिसना*†–क्रि० अ० दे० "दिखना"।

दिसा–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"। †संज्ञा स्त्री० पैखाना।

दिसावर–संज्ञा पुं० परदेस।

दिसावरी–वि० बाहरी।

दिसि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।

दिसिटि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिसिदुरद*†–संज्ञा पुं० दे० "दिग्गज"।

दिसिनायक*†–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसिप*–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसिराज*–संज्ञा पुं० दे० "दिक्पाल"।

दिसैया*†–वि० १. देखनेवाला। २. दिखानेवाला।

दिस्टी*–संज्ञा स्त्री० दे० "दृष्टि"।

दिस्टीबंध–संज्ञा पुं० नज़रबंद। जादू।

दिस्ता–संज्ञा पुं० दे० "दस्ता"।

दिहंदा–वि० दाता।

दिहाड़ा–संज्ञा पुं० १. दुर्गत। २. दिन।

दिहात–संज्ञा स्त्री० दे० "देहात"।

दीआ–संज्ञा पुं० दे० "दीया"।

दीक्षक–संज्ञा पुं० दीक्षा देनेवाला गुरु।

दीक्षा–संज्ञा स्त्री० १. गुरु या आचार्य्य का नियमपूर्वक मंत्रोपदेश। २. उपनयन-संस्कार जिसमें आचार्य्य गायत्री मंत्र का उपदेश देता है। ३. गुरुमंत्र।

दुसाध–संज्ञा पुं० हिंदुओं में एक नीच जाति जो सूअर पालती है।
दुसार–संज्ञा पुं० आर पार किया हुआ छेद।
क्रि० वि० एक पार से दूसरे पार तक।
दुसाल–संज्ञा पुं० आर-पार छेद।
दुसूती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटी चादर।
दुसेजा–संज्ञा पुं० पलंग।
दुस्तर–वि० १. जिसे पार करना कठिन हो। २. विकट।
दुस्सह–वि० दे० "दुःसह"।
दुहत्था–वि० [स्त्री० दुहत्थी] दोनों हाथों से किया हुआ।
दुहना–क्रि० स० १. स्तन से दूध निचोड़कर निकालना। २. निचोड़ना।
दुहनी–संज्ञा स्त्री० वह बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है।
दुहाई–संज्ञा स्त्री० १. घोषणा। २. शपथ।
संज्ञा स्त्री० १. गाय, भैंस आदि को दुहने का काम। २. दुहने की मज़दूरी।
दुहावनी–संज्ञा स्त्री० दुहाई।
दुहिता–संज्ञा स्त्री० कन्या।
दुहिन॰–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
दुहेला–वि० स्त्री० [दुहेली] कठिन।
संज्ञा पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।
दूइज†–संज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।
दूकान–संज्ञा पुं० दे० "दुकान"।
दूखना॰†–क्रि० स० ऐब लगाना।
दूज–संज्ञा स्त्री० द्वितीया।
दूजा॰†–वि० दूसरा।
दूत–संज्ञा पुं० [स्त्री० दूती] चर।
दूतकर्म–संज्ञा पुं० दूत का काम।
दूतिका, दूती–संज्ञा स्त्री० कुटनी।
दूध–संज्ञा पुं० पय। दुग्ध।
दूधपिलाई–संज्ञा स्त्री० १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रसम जिसमें बरात के समय माता, वर को दूध पिलाने की सी मुद्रा करती है।
दूध-पूत–संज्ञा पुं० धन और संतति।
दूधमुँहा–वि० छोटा बच्चा।
दूधमुख–वि० छोटा बच्चा।
दूधिया–वि० १. जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो। २. सफ़ेद।
संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सफ़ेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २. एक प्रकार का सफ़ेद खड़िया मुलायम पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं।
दून–संज्ञा स्त्री० दूने का भाव।
दूतावास–संज्ञा पुं० दूसरे राज्य के दूत के रहने का स्थान।
दूना–वि० दुगुना।
दूनों॰†–वि० दे० "दोनों"।
दूब–संज्ञा स्त्री० एक बहुत प्रसिद्ध घास।
दूबे–संज्ञा पुं० द्विवेदी ब्राह्मण।
दूभर–वि० कठिन।
दूमना†॰–क्रि० अ० हिलना।
दूरंदेश–वि० [संज्ञा दूरंदेशी] दूरदर्शी।
दूर–क्रि० वि० बहुत फ़ासले पर।
वि० जो दूर या फ़ासले पर हो।
दूरत्व–संज्ञा पुं० दूरी।

दीक्षागुरु–संज्ञा पुं० मंत्रोपदेष्टा गुरु।
दीक्षित–वि० १. जिसने सोमयागादि का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान किया हो। २. जिसने आचार्य से दीक्षा या गुरु से मंत्र लिया हो।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद।
दीखना–क्रि० अ० दिखाई देना।
दीघी–संज्ञा स्त्री० बावली।
दीच्छा⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा"।
दीठ–संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. नज़र। ३. निगरानी। ४. मिहरबानी की नज़र।
दीठबंदी–संज्ञा स्त्री० जादू।
दीठवंत–वि० जिसे दिखाई दे।
दीठा–संज्ञा पुं० १. दृष्टि। २. आँख। ३. ढिठाई।
दीदार–संज्ञा पुं० दर्शन।
दीदी–संज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।
दीधिति–संज्ञा स्त्री० १. सूर्य्य, चंद्रमा आदि की किरण। २. उँगली।
दीन–वि० १. दरिद्र। २. दुःखित। ३. नम्र।
संज्ञा पुं० मत।
दीनता–संज्ञा स्त्री० १. दरिद्रता। २. नम्रता।
दीनताई⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "दीनता"।
दीनत्व–संज्ञा पुं० दीनता।
दीनदयालु–वि० दीनों पर दया करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर का एक नाम।
दीनदार–वि० [संज्ञा दीनदारी] धार्मिक।
दीन-दुनिया–संज्ञा स्त्री० यह लोक और परलोक।
दीनबंधु–संज्ञा पुं० १. दुखियों का सहायक। २. ईश्वर का एक नाम।
दीनानाथ–संज्ञा पुं० १. दीनों का स्वामी या रक्षक। २. ईश्वर।
दीनार–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण-भूषण। २. निष्क की तौल। ३. स्वर्णमुद्रा।
दीप–संज्ञा पुं० १. दीया। २. दस मात्राओं का एक छंद।
संज्ञा पुं० दे० "द्वीप"।
दीपक–संज्ञा पुं० १ दीया। २. संगीत में छः रागों में से दूसरा राग।
वि० [स्त्री० दीपिका] १. प्रकाश करनेवाला। २. पाचन की अग्नि को तेज़ करनेवाला। ३. उत्तेजक।
दीपत⊙–संज्ञा स्त्री० १. कांति। २. शोभा।
दीपदान–संज्ञा पुं० किसी देवता के सामने दीपक जलाने का काम, जो पूजन का एक अंग समझा जाता है।
दीपध्वज–संज्ञा पुं० काजल।
दीपन–संज्ञा पुं० [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्त, दीप्य] १. प्रकाशन। २. भूख को उभारना। ३. उत्तेजन।
वि० दीपन करनेवाला।
संज्ञा पुं० मंत्र के उन दस संस्कारों में से एक जिनके बिना मंत्र सिद्ध नहीं होता।
दीपना⊙–क्रि० अ० प्रकाशित होना।
क्रि० स० प्रकाशित करना।
दीपमाला–संज्ञा स्त्री० १. जलते हुए दीयों की पंक्ति। २. दीपदान या आरती के लिये जलाई हुई बत्तियों का समूह।
दीपमालिका–संज्ञा स्त्री० १. दीपदान, आरती या शोभा के लिये दीयों की पंक्ति। २. दीवाली।
दीपमाली–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
दीपशिखा–संज्ञा स्त्री० चिराग़ की लौ।

दूरदर्शक–वि० दूर तक देखनेवाला।
दूरदर्शिता–संज्ञा स्त्री० दूर की बात सोचने का गुण।
दूरदर्शी–वि० बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला।
दूरबीन–संज्ञा स्त्री० गोल नल के आकार का एक यंत्र जिससे दूर की चीज़ें बहुत पास, स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं।
दूरवर्ती–वि० दूर का।
दूरवीक्षण–संज्ञा पुं० दूरबीन।
दूरी–संज्ञा स्त्री० दूरत्व।
दूर्वा–संज्ञा स्त्री० दूब नाम की घास।
दूल्ह–संज्ञा पुं० १. दुलहा। २. पति।
दूल्हा–संज्ञा पुं० दे० "दूल्ह"।
दूषक–संज्ञा पुं० वह जो किसी पर दोषारोपण करे।
दूषण–संज्ञा पुं० १. दोष। २. ऐब लगाना।
दूषणीय–वि० दोष लगाने योग्य।
दूषना॰†–क्रि० स० दोष लगाना।
दूषित–वि० जिसमें दोष हो।
दूष्य–वि० १. दोष लगाने योग्य। २. निंदनीय।
दूसना–क्रि० स० दे० "दूषना"।
दूसरा–वि० १. पहले के बाद का। द्वितीय। २. अन्य।
दृक्–संज्ञा पुं० छिद्र।
दृक्क्षेप–संज्ञा पुं० दृष्टिपात।
दृक्पथ–संज्ञा पुं० दृष्टि का मार्ग।
दृक्पात–संज्ञा पुं० दृष्टिपात।
दृक्शक्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश-रूप। चैतन्य। २. आत्मा।
दृगंचल–संज्ञा पुं० पलक।
दृग॰–संज्ञा पुं० १. आँख। २. दृष्टि।
दृगमिचाव–संज्ञा पुं० आँख-मिचौली का खेल।
दृगोचर–वि० जो आँख से दिखाई दे।
दृढ़–वि० १. प्रगाढ़। २. बलवान्। ३. कड़े दिल का।
दृढ़ता–संज्ञा स्त्री० १. दृढ़ होने का भाव। २. मज़बूती।
दृढ़त्व–संज्ञा पुं० दृढ़ता।
दृढ़ांग–वि० हृष्ट-पुष्ट।
दृढ़ाई†॰–संज्ञा स्त्री० दे० "दृढ़ता"।
दृढ़ाना–क्रि० स० दृढ़ करना। क्रि० अ० स्थिर या पक्का होना।
दृश्–संज्ञा पुं० [वि० दृश्य] १. दर्शन। २. प्रदर्शक। ३. देखनेवाला। संज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख।
दृश्य–वि० १. जो देखने में आ सके। २. दर्शनीय। संज्ञा पुं० १. वह पदार्थ जो आँखों के सामने हो। २. तमाशा।
दृश्यमान–वि० जो दिखाई पड़ रहा हो।
दृष्ट–वि० १. देखा हुआ। २. जाना हुआ। ३. प्रत्यक्ष। संज्ञा पुं० दर्शन।
दृष्टकूट–संज्ञा पुं० पहेली।
दृष्टमान॰–वि० प्रकट।
दृष्टवाद–संज्ञा पुं० वह दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।
दृष्टांत–संज्ञा पुं० उदाहरण।
दृष्टार्थ–संज्ञा पुं० वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो।
दृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. आँख की ज्योति। २. नज़र। ३. परख। ४. आस।
दृष्टिगत–वि० जो दिखाई पड़ता हो।

दीपावलि-संज्ञा स्त्री० दे० "दीपमालिका"।
दीपिका-संज्ञा स्त्री० छोटा दीया। वि० स्त्री० उजाला फैलानेवाली।
दीपित-वि० १. प्रकाशित। २. चमकता या जगमगाता हुआ। ३. उत्तेजित।
दीपोत्सव-संज्ञा पुं० दीवाली।
दीप्त-वि० १.प्रज्वलित। २.चमकीला।
दीप्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। २. प्रभा। ३. कांति।
दीप्तिमान्-वि० [स्त्री० दीप्तिमती] १. चमकता हुआ। २. कांतियुक्त।
दीप्य-वि० १. जो जलाया जाने को हो। २. जो जलाने योग्य हो।
दीप्यमान-वि० चमकता हुआ।
दीबो†-संज्ञा पुं० दे० "देना"।
दीमक-संज्ञा स्त्री० चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा।
दीयट-संज्ञा पुं० दे० "दीवट"।
दीया-संज्ञा पुं० १. दीपक। २. बत्ती जलाने का छोटा कसोरा।
दीयासलाई-संज्ञा स्त्री० लकड़ी की छोटी सलाई या सींक जिसका एक सिरा गंधक आदि लगी रहने के कारण रगड़ने से जल उठता है।
दीरघ*-वि० दे० "दीर्घ"।
दीर्घ-वि० १. लंबा। २. बड़ा। संज्ञा पुं० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण।
दीर्घकाय-वि० बड़े डील-डौल का।
दीर्घजीवी-वि० जो बहुत दिनों तक जीए।
दीर्घदर्शिता-संज्ञा स्त्री० दूरदर्शिता।
दीर्घदर्शी-वि० दूरदर्शी।
दीर्घदृष्टि-वि० दे० "दीर्घदर्शी"।
दीर्घनिद्रा-संज्ञा स्त्री० मृत्यु।
दीर्घ निःश्वास-संज्ञा पुं० लंबी साँस जो दुःख के आवेग के कारण ली जाती है।
दीर्घबाहु-वि० जिसकी भुजाएँ लंबी हों।
दीर्घलोचन-वि० बड़ी आँखोंवाला।
दीर्घश्रुत-वि० १. जो दूर तक सुनाई पड़े। २. जिसका नाम दूर तक विख्यात हो।
दीर्घसूत्र-वि० दे० "दीर्घसूत्री"।
दीर्घसूत्रता-संज्ञा स्त्री० प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव।
दीर्घसूत्री-वि० हर एक काम में ज़रूरत से ज्यादा देर लगानेवाला।
दीर्घस्वर-संज्ञा पुं० द्विमात्रिक स्वर।
दीर्घायु-वि० चिरंजीवी।
दीर्घिका-संज्ञा स्त्री० छोटा तालाब।
दीवट-संज्ञा स्त्री० पीतल, लकड़ी आदि का आधार जिस पर दीया रखा जाता है।
दीवा-संज्ञा पुं० दीया।
दीवान-संज्ञा पुं० १. राजसभा। २. मंत्री।
दीवानआम-संज्ञा पुं० १. ऐसा दरबार जिसमें राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते हों। २. वह स्थान जहाँ आम दरबार लगता हो।
दीवानखाना-संज्ञा पुं० बैठक।
दीवानखास-संज्ञा पुं० खास दरबार।
दीवाना-वि० [स्त्री० दीवानी] पागल।
दीवानापन-संज्ञा पुं० पागलपन।
दीवानी-संज्ञा स्त्री० १. दीवान का पद। २. वह न्यायालय जो संपत्ति आदि संबंधी स्वत्वों का निर्णय करे।

दृष्टिगोचर–वि० जो देखने में आ सके।
दृष्टिपथ–संज्ञा पुं० दृष्टि का फैलाव।
दृष्टिपात–संज्ञा पुं० ताकना।
दृष्टिबंध–संज्ञा पुं० १. जादू। २. हाथ की सफ़ाई या चालाकी।
दृष्टिवंत–वि० १. दृष्टिवाला। २. ज्ञानी।
दृष्टिवाद–संज्ञा पुं० वह सिद्धांत जिसमें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।
दे–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।
देई–संज्ञा स्त्री० १. देवी। २. स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द।
देख–संज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया या भाव।
देखन०†–संज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया, भाव या ढंग।
देखनहारा†०–संज्ञा पुं० [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।
देखना–क्रि० स० १. किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप, रंग आदि का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना। २. जाँच करना। ३. परीक्षा करना ४. *निगरानी रखना।*
देख-भाल–संज्ञा स्त्री० १. जाँच-पड़ताल। २. देखा-देखी।
देखरावना०†–क्रि० स० दे० "दिखलाना"।
देख-रेख–संज्ञा स्त्री० *निगरानी।*
देखाऊ–वि० १. जो केवल देखने में सुंदर हो, काम का न हो। २. बनावटी।
देखा देखी–संज्ञा स्त्री० साक्षात्कार। *क्रि० वि० दूसरों को करते देखकर।*
देखाना०†–क्रि० स० दे० "दिखाना"।
देखाव–संज्ञा पुं० १. दृष्टि की सीमा। २. ठाट-बाट।
देखावट–संज्ञा स्त्री० १. बनाव। २. ठाट-बाट।
देग–संज्ञा पुं० खाना पकाने का चौड़े मुँह और चौड़े पेट का बड़ा बरतन।
देगचा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।
देदीप्यमान–वि० चमकता हुआ।
देन–संज्ञा स्त्री० १. देने की क्रिया या भाव। २. दी हुई चीज़।
देनदार–संज्ञा पुं० ऋणी।
देनहारा०†–वि० देनेवाला।
देना–क्रि० स० अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना।
संज्ञा पुं० क़र्ज़।
देय–वि० देने योग्य।
देर–संज्ञा स्त्री० १. विलंब। २. समय।
देरी‡–संज्ञा स्त्री० दे० "देर"।
देव–संज्ञा पुं० [स्त्री० देवी] १. देवता। २. ब्राह्मणों तथा बड़ों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।
संज्ञा पुं० दैत्य।
देवऋण–संज्ञा पुं० देवताओं के लिये कर्त्तव्य, यज्ञादि।
देवऋषि–संज्ञा पुं० देवताओं के लोक में रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य आदि ऋषि।
देवकन्या–संज्ञा स्त्री० देवता की पुत्री।
देवकी–संज्ञा स्त्री० वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता का नाम।
देवकीनंदन–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
देवगण–संज्ञा पुं० देवताओं का वर्ग।
देवगति–संज्ञा स्त्री० स्वर्गलाभ।
देवगिरि–संज्ञा पुं० १. रैवतक पर्वत

जो गुजरात में है। २. दक्षिण का एक प्राचीन नगर, जो आजकल दौलताबाद कहलाता है।
देवगुरु-संज्ञा पुं० बृहस्पति।
देवठान-संज्ञा पुं० कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। इस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं।
देवता-संज्ञा पुं० स्वर्ग में रहनेवाला अमर प्राणी।
देवत्व-संज्ञा पुं० देवता होने का भाव या धर्म।
देवदत्त-वि० १. देवता का दिया हुआ। २. देवता के निमित्त दिया हुआ।
संज्ञा पुं० १. देवता के निमित्त दान की हुई संपत्ति। २. अर्जुन के शंख का नाम।
देवदारु-संज्ञा पुं० एक बहुत ऊँचा और सीधा पेड़।
देवदाली-संज्ञा स्त्री० एक लता जो देखने में तुरई की बेल से मिलती-जुलती होती है।
देवदासी-संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। २. मंदिरों में रहनेवाली दासी या नर्त्तकी।
देवदेव-संज्ञा पुं० इंद्र।
देवधुनि-संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।
देवनदी-संज्ञा स्त्री० १. गंगा। २. सरस्वती और दृषद्वती नदियाँ।
देवनागरी-संज्ञा स्त्री० भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिंदी, मराठी आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं।
देवपथ-संज्ञा पुं० आकाश।
देवभाषा-संज्ञा स्त्री० संस्कृत भाषा।
देवभूमि-संज्ञा स्त्री० स्वर्ग।
देवमंदिर-संज्ञा पुं० देवालय।
देवमाया-संज्ञा स्त्री० परमेश्वर की माया जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में डालती है।
देवमुनि-संज्ञा पुं० नारद ऋषि।
देवयज्ञ-संज्ञा पुं० होमादि कर्म जो पंचयज्ञों में से एक है।
देवयानी-संज्ञा स्त्री० शुक्राचार्य की कन्या, जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर आसक्त हुई थी। पीछे राजा ययाति के साथ इसका विवाह हुआ था।
देवर-संज्ञा पुं० [स्त्री० देवरानी] पति का छोटा भाई।
देवरानी-संज्ञा स्त्री० देवर की स्त्री।
संज्ञा स्त्री० इंद्राणी।
देवर्षि-संज्ञा पुं० नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं।
देवल-संज्ञा पुं० १. पुजारी। पंडा। २. एक प्रकार का चावल।
संज्ञा पुं० देवालय।
देववधू-संज्ञा स्त्री० देवता की स्त्री।
देववाणी-संज्ञा स्त्री० १. संस्कृत भाषा। २. आकाशवाणी।
देवव्रत-संज्ञा पुं० भीष्म पितामह।
देवसभा-संज्ञा स्त्री० देवताओं का समाज।
देवसेना-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की सेना। २. प्रजापति की कन्या, जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।
देवस्थान-संज्ञा पुं० १. देवताओं के रहने की जगह। २. देवालय।
देवांगना-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की स्त्री। २. अप्सरा।
देवा-वि० देनेवाला।

आवश्यक ठहराया गया हो।

धर्मक्षेत्र-संज्ञा पुं० १. कुरुक्षेत्र। २. भारतवर्ष जो धर्म के संचय के लिये कर्म-भूमि माना गया है।

धर्मचक्र-संज्ञा पुं० बुद्ध की धर्मशिक्षा जिसका आरंभ काशी से हुआ था।

धर्मचर्या-संज्ञा स्त्री० धर्म का आचरण।

धर्मधक्का-संज्ञा पुं० १. वह हानि या कठिनाई जो धर्म या परोपकार आदि के लिये सहनी पड़े। २. व्यर्थ का कष्ट।

धर्मध्वज-संज्ञा पुं० पाखंडी।

धर्मध्वजी-संज्ञा पुं० पाखंडी।

धर्मनिष्ठ-वि० धार्मिक।

धर्मपत्नी-संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री।

धर्मयुग-संज्ञा पुं० सत्ययुग।

धर्मयुद्ध-संज्ञा पुं० वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का नियम भंग न हो।

धर्मराज-संज्ञा पुं० १. धर्म का पालन करनेवाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४. न्यायाधीश।

धर्मशाला-संज्ञा स्त्री० वह मकान जो पथिकों या यात्रियों के टिकने के लिये धर्मार्थ बना हो।

धर्मशास्त्र-संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार-संबंधी नियम हो।

धर्मशास्त्री-संज्ञा पुं० धर्मशास्त्र जानने-वाला पंडित।

धर्मशील-वि० [संज्ञा धर्मशीलता] धार्मिक।

धर्मसभा-संज्ञा स्त्री० न्यायालय।

धर्मांशु-संज्ञा पुं० सूर्य्य।

धर्मात्मा-वि० धर्मशील।

धर्माधिकरण-संज्ञा पुं० न्यायालय।

धर्माधिकारी-संज्ञा पुं० १. न्यायाधीश। २. दानाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष-संज्ञा पुं० दे० "धर्माधिकारी"।

धर्मार्थ-क्रि० वि० परोपकार के लिये।

धर्मासन-संज्ञा पुं० वह आसन या चौकी जिस पर न्यायाधीश बैठता है।

धर्मिणी-संज्ञा स्त्री० पत्नी। वि० धर्म करनेवाली।

धर्मिष्ठ-वि० धार्मिक।

धर्मी-वि० [स्त्री० धर्मिणी] १. जिसमें धर्म या गुण हो। २. धार्मिक। ३. मत या धर्म को माननेवाला। संज्ञा पुं० १. धर्म का आधार। २. धर्मात्मा मनुष्य।

धर्मोपदेशक-संज्ञा पुं० धर्म का उपदेश देनेवाला।

धर्षक-संज्ञा पुं० वह जो धर्षण करे।

धर्षण-संज्ञा पुं० [वि० धर्षणीय, धर्षित] १. अनादर। २. दुर्वाचना।

धर्षणा-संज्ञा स्त्री० १. अवज्ञा। २. दबाने या हराने का कार्य्य। ३. सतीत्वहरण।

धर्षी-वि० [स्त्री० धर्षिणी] धर्षण करनेवाला।

धव-संज्ञा पुं० १ एक जंगली पेड़ जिसके कई अंगों का ओषधि के रूप में व्यवहार होता है। २. पति। ३. पुरुष।

धवनी-संज्ञा स्त्री० दे० "धौंकनी"।
†© वि० सफेद।

धवरा†-वि० [स्त्री धवरी] उजला।

धवरी-वि० स्त्री० सफेद।

धवल-वि० १. श्वेत। २. निर्मल।

देवान|–संज्ञा पुं० १. दरबार। २. मंत्री।
देवारी–संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।
देवार्पण–संज्ञा पुं० देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान।
देवालय–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. मंदिर।
देवी–संज्ञा स्त्री० १. देवता की स्त्री। २. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री।
देवीपुराण–संज्ञा पुं० एक उपपुराण जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है।
देवीभागवत–संज्ञा पुं० एक पुराण जिसकी गणना बहुत से लोग उप-पुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं।
देवेंद्र–संज्ञा पुं० इंद्र।
देवैया|–वि० देनेवाला।
देवोत्तर–संज्ञा पुं० देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति।
देवोत्थान–संज्ञा पुं० विष्णु का शेष की शय्या पर से उठना, जो कार्त्तिक शुक्ला एकादशी को होता है।
देवोद्यान–संज्ञा पुं० देवताओं के बगीचे, जो चार हैं।
देश–संज्ञा पुं० १. राष्ट्र। २. स्थान।
देशज–वि० देश में उत्पन्न। संज्ञा पुं० वह शब्द जो न संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से योंही उत्पन्न हो गया हो।
देशनिकाला–संज्ञा पुं० देश से निकाल दिए जाने का दंड।
देशांतर–संज्ञा पुं० १. विदेश। २. भूगोल में ध्रुवों से होकर उत्तर दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी।
देशाटन–संज्ञा पुं० भिन्न भिन्न देशों की यात्रा।
देशी–वि० देश का।
देशीय–वि० दे० "देशी"।
देस–संज्ञा पुं० दे० "देश"।
देसावर–संज्ञा पुं० विदेश।
देसी–वि० स्वदेश का।
देह–संज्ञा स्त्री० [वि० देही] १. शरीर। २. जीवन।
संज्ञा पुं० गाँव।
देहत्याग–संज्ञा पुं० मृत्यु।
देहधारण–संज्ञा पुं० जन्म।
देहधारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० देहधारिणी] शरीर धारण करनेवाला।
देहपात–संज्ञा पुं० मृत्यु।
देहरा–संज्ञा पुं० देवालय।
संज्ञा पुं० मनुष्य का शरीर।
देहरी|*–संज्ञा स्त्री० दे० "देहली"।
देहली–संज्ञा स्त्री० द्वार की चौखट की वह लकड़ी जो नीचे होती है। दहलीज़।
देहवंत–वि० जो तनुधारी हो।
संज्ञा पुं० प्राणी।
देहवान्–वि० शरीरधारी।
देहांत–संज्ञा पुं० मृत्यु।
देहात–संज्ञा पुं० [वि० देहाती] गाँव।
देहाती–वि० १. गाँव का। २. गँवार।
देही–संज्ञा पुं० आत्मा।
दैत्य–संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. लंबे डील या असाधारण बल का मनुष्य।
दैत्यगुरु–संज्ञा पुं० शुक्राचार्य्य।
दैनंदिन–वि० नित्य का। क्रि० वि० १. प्रति दिन। २. दिनों दिन।

धवलगिरि–संज्ञा पुं० दे० "धवलागिरि"।
धवलता–संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी।
धवलाई०*–संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी।
धवलागिरि–संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़ की एक प्रख्यात चोटी।
धवाना–क्रि० स० दौड़ाना।
धस–संज्ञा पुं० डुबकी।
धसक–संज्ञा स्त्री० १. ठन ठन शब्द जो सूखी खाँसी में गले से निकलता है। २. सूखी खाँसी।
संज्ञा स्त्री० १. डाह। २. धसकने की क्रिया या भाव।
धसकना–क्रि० अ० १. नीचे को धँसना या दब जाना। २. डाह करना।
धसना*–क्रि० अ० नष्ट होना।
† क्रि० अ० दे० "धँसना"।
धसनि–संज्ञा स्त्री० दे० "धँसनि"।
धसान–संज्ञा स्त्री० दे० "धँसान"।
संज्ञा स्त्री० पूर्वी मालवा और बुंदेलखंड की एक छोटी नदी।
धांगड़–संज्ञा पुं० एक अनार्य जंगली जाति।
धांधना–क्रि० स० १. बंद करना। २. बहुत अधिक खा लेना।
धांधल–संज्ञा स्त्री० १. ऊधम। २. फ़रेब।
धाधलपन–संज्ञा पुं० १. पाजीपन। २. धोखेबाज़ी।
धांधली–संज्ञा स्त्री० १. उपद्रवी। २. धोखेबाज़।
धांसना–क्रि० अ० पशुओं का खाँसना।
धाऊ†–संज्ञा पुं० हरकारा।
धाक–संज्ञा स्त्री० १. रोब। २. प्रसिद्धि।
धागा†–संज्ञा पुं० डोरा।
धाड़†–संज्ञा स्त्री० १. दे० "ढाढ़"। २. दे० "दहाड़"। ३. दे० "डाढ़"।
संज्ञा स्त्री० १. डाकुओं का आक्रमण। २. जत्था।
धाता–संज्ञा पुं० विधि।
वि० पालनेवाला।
धातु–संज्ञा स्त्री० १. वह खनिज मूल द्रव्य जो अपारदर्शक हो, जिसमें एक विशेष प्रकार की चमक और गुरुत्व हो, जिसमें से होकर ताप और विद्युत् का संचार हो सके तथा जो पीटने अथवा तार के रूप में खींचने से खंडित न हो। २. शरीर को बनाये रखनेवाले पदार्थ। ३. वीर्य।
संज्ञा पुं० १. तत्त्व। २. शब्द का वह मूल जिससे क्रियाएँ बनी या बनती हैं।
धातुवाद–संज्ञा पुं० १. रसायन बनाने का काम। २. ताँबे से सोना बनाना।
धात्री–संज्ञा स्त्री० १. माता। २. धाय।
धात्रीविद्या–संज्ञा स्त्री० लड़का जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।
धान–संज्ञा पुं० तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों की गिनती अच्छे अन्नों में है। इसे कूटने से चावल बनते हैं।
धानक–संज्ञा पुं० १. धनुष चलानेवाला। २. धुनिया।
धानपान–वि० नाज़ुक।
धाना०†–क्रि० अ० तेज़ी से चलना। दौड़ना।
धानी–संज्ञा स्त्री० धान की पत्ती के

दैन–वि० देनेवाला।
दैनिक–वि० प्रति दिन का।
दैन्य–संज्ञा पुं० दीनता।
दैयत†–संज्ञा पुं० दैत्य।
दैया०†–संज्ञा पुं० दई।
अव्य० आश्चर्य, भय या दुःखसूचक शब्द जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं।
दैव–वि० [वि० दैवी] देवता-संबंधी। संज्ञा पुं० १. प्रारब्ध। २. ईश्वर।
दैवगति–संज्ञा स्त्री० १. दैवी घटना। २. भाग्य।
दैवज्ञ–संज्ञा पुं० ज्योतिषी।
दैवत–वि० देवता-संबंधी। संज्ञा पुं० १. देवता की प्रतिमा आदि। २. देवता।
दैवयोग–संज्ञा पुं० संयोग।
दैववाणी–संज्ञा स्त्री० १. आकाश-वाणी। २. संस्कृत।
दैववादी–संज्ञा पुं० १. भाग्य के भरोसे रहनेवाला। २. आलसी।
दैवविवाह–संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक।
दैवागत–वि० दैवी।
दैवात्–क्रि० वि० अकस्मात्।
दैविक–वि० १. देवता-संबंधी। २. देवताओं का किया हुआ।
दैवी–वि० १. देवताओं की की हुई। २. आकस्मिक।
दैवी गति–संज्ञा स्त्री० १. ईश्वर की की हुई बात। २. होनहार।
दैहिक–वि० १. देह-संबंधी। २. देह से उत्पन्न।
दोंचना–क्रि० स० दबाव में डालना।
दो–वि० एक और एक।
दोआब–संज्ञा पुं० किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में हो।
दोइ†–संज्ञा पुं० वि० दे० "दो"।
दोउ, दोऊ०†–वि० दोनों।
दोख०†–संज्ञा पुं० दे० "दोष"।
दोखना०†–क्रि० स० दोष लगाना।
दोखी०†–संज्ञा पुं० दे० "दोषी"।
दोगला–संज्ञा पुं० [स्त्री० दोगली] १. जारज। २. वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न भिन्न जातियों के हों।
दोच–संज्ञा स्त्री० १. दुबधा। २. दबाव।
दोचित्ता–वि० [स्त्री० दोचित्ती] जिसका चित्त दो कामों या बातों में बँटा हो।
दोचित्ती–संज्ञा स्त्री० चित्त की उद्विग्नता।
दोज़ख–संज्ञा पुं० मुसलमानों के अनुसार नरक जिसके सात विभाग हैं।
दोज़खी–वि० १. दोज़ख-संबंधी। २ नारकी।
दोतरफ़ा–वि० दोनों तरफ़ का। क्रि० वि० दोनों तरफ़।
दोतला, दोतल्ला–वि० दो खंड का।
दोतारा–संज्ञा पुं० एकतारे की तरह का एक प्रकार का बाजा।
दोदना†–क्रि० स० प्रत्यक्ष कही हुई बात से इनकार करना।
दोधारा–वि० [स्त्री० दोधारी] जिसके दोनों ओर धार या बाढ़ हो।
दोन–संज्ञा पुं० दो पहाड़ों के बीच की नीची ज़मीन। संज्ञा पुं० दोआबा।
दोनला–वि० जिसमें दो नाले हों।
दोना–संज्ञा पुं० [स्त्री० दोनी] पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का छोटा गहरा पात्र।

रंग का सा हलका हरा रंग।
वि० हलके हरे रंग का।
संज्ञा स्त्री० भूना हुआ जौ या गेहूँ।
धान्य-संज्ञा पुं० १. चार तिल का एक तौल। २. धनिया। ३. धान। ४. अन्न मात्र।
धाम-संज्ञा पुं० १. लंबा-चौड़ा मैदान। २. खेत की नाप।
संज्ञा स्त्री० तृप्ति।
धाया-संज्ञा पुं० अटारी।
धाम-संज्ञा पुं० घर।
धायँ-संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ के ज़ोर से गिरने का शब्द।
धाय-संज्ञा स्त्री० दाई।
संज्ञा पुं० धव का पेड़।
धार-संज्ञा पुं० १. ज़ोर से पानी बरसना। २. ऋण।
संज्ञा स्त्री० १. पानी आदि के गिरने या बहने का तार। २. किनारा।
धारक-वि० १. धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला।
धारण-संज्ञा पुं० १. थामना, लेना या अपने ऊपर ठहराना। २. ग्रहण करना।
धारणा-संज्ञा स्त्री० १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. बुद्धि। ३. दृढ़ निश्चय। ४. स्मृति।
धारना-क्रि० स० धारण करना।
क्रि० स० दे० "ढारना"।
धारा-संज्ञा स्त्री० १. धार। २. पानी का झरना।
धाराधर-संज्ञा पुं० बादल।
धाराबाही-वि० धारा के रूप में बिना रोक-टोक बढ़ने या चलनेवाला।
धारि-संज्ञा स्त्री० १. दे० "धार"। २. समूह।
धारिणी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
वि० स्त्री० धारण करनेवाली।
धारी-संज्ञा स्त्री० रेखा। लकीर।
धारीदार-वि० जिसमें लंबी लंबी धारियाँ या लकीरें हों।
धारोष्ण-संज्ञा पुं० थन से निकला हुआ ताज़ा दूध जो प्रायः कुछ गरम होता है और बहुत गुणकारक माना जाता है।
धार्मिक-वि० १. धर्मशील। २. धर्म-संबंधी।
धार्य-वि० धारण करने के योग्य।
धावक-संज्ञा पुं० हरकारा।
धावन-संज्ञा पुं० १. बहुत जल्दी या दौड़कर जाना। २. दूत। ३. धोने या साफ़ करने का काम।
धावनि-संज्ञा स्त्री० १. जल्दी जल्दी चलने की क्रिया या भाव। २. धावा।
धावा-संज्ञा पुं० आक्रमण।
धाह-संज्ञा स्त्री० ज़ोर से चिल्लाकर रोना।
धिंग-संज्ञा स्त्री० ऊधम।
धिंगा-संज्ञा पुं० १. बदमाश। २. बेशर्म।
धिंगाई-संज्ञा स्त्री० १. शरारत। २. बेशर्मी।
धिंगाना-क्रि० स० धींगा-धींगी करना।
धिक-अव्य० १. लानत। २. निंदा।
धिक-अव्य० धिक्।
धिकना-क्रि० अ० गरम होना।
धिकाना-क्रि० स० तपाना।
धिक्कार-संज्ञा स्त्री० लानत।
धिक्कारना-क्रि० स० लानत-मलामत करना। फटकारना।

दोनिया, दोनी|—संज्ञा स्त्री० छोटा दोना।
दोनो—वि० एक और दूसरा। उभय।
दोपलिया|—वि० संज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"।
दोपल्ली—वि० जिसमें दो पल्ले हों।
दोपहर—संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि सूर्य मध्य आकाश में रहता है।
दोपहरिया|—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।
दोफसली—वि० १. दोनों फसलों के संबंध का। २. जो दोनों ओर लग सके।
दोबारा—क्रि० वि० दूसरी बार।
दोमापिया—संज्ञा पुं० दे० "दुमापिया"।
दोमंज़िला—वि० जिसमें दो खंड या मंज़िलें हों।
दोमहला—वि० दे० "दोमंज़िला"।
दोमुँहा—वि० १. जिसे दो मुँह हों। २. कपटी।
दोमुँहा साँप—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का साँप जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पड़ती है। २. कुटिल।
दोरंगा—वि० १. दो रंग का। २. जो दोनों ओर लग या चल सके।
दोरंगी—संज्ञा स्त्री० १. दोरंगे या दो-मुँहे होने का भाव। २. कपट।
दोरदंड०|—वि० दे० "दुर्दंड"।
दोरसा—वि० दो प्रकार के स्वाद या रसवाला।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीने का तमाकू।
दोराहा—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हों।
दोरुखा—वि० १. जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २. जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।
दोल—संज्ञा पुं० १. झूला। २. डोली।
दोला—संज्ञा स्त्री० १. हिंडोला। २. डोली या चंडोल।
दोलायंत्र—संज्ञा पुं० वैद्यों का एक यंत्र जिसकी सहायता से वे ओषधियों के अर्क उतारते हैं।
दोलायमान—वि० हिलता हुआ।
दोशाखा—संज्ञा पुं० शमादान या दीवारगीर जिसमें दो बत्तियाँ हों।
दोष—संज्ञा पुं० १. बुरापन। २. कलंक। ३. अपराध।
संज्ञा पुं० शत्रुता।
दोषन०|—संज्ञा पुं० दोष।
दोषना०|—क्रि० स० दोष लगाना।
दोषिन|—संज्ञा स्त्री० १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री।
दोषी—संज्ञा पुं० १. अपराधी। २. पापी।
दोस०|—संज्ञा पुं० दे० "दोष"।
दोसदारी०|—संज्ञा स्त्री० मित्रता।
दोसाला|—वि० दो वर्ष का।
दोसूती—संज्ञा स्त्री० दोतही या दुसूती नाम की बिछाने की मोटी चादर।
दोस्त—संज्ञा पुं० मित्र।
दोस्ताना—संज्ञा पुं० १. दोस्ती। २. मित्रता का व्यवहार।
वि० दोस्तों का।
दोस्ती—संज्ञा स्त्री० मित्रता।
दोह०|—संज्ञा पुं० दे० "द्रोह"।
दोहगा|—संज्ञा स्त्री० रखनी।
दोहता—संज्ञा पुं० [स्त्री० दोहती] नाती।

धिग॰—अव्य॰ दे॰ "धिक्"।
धिय॰—संज्ञा स्त्री॰ १. कन्या। २. लड़की।
धिरवना॰†—क्रि॰ स॰ धमकाना।
धिराना॰†—क्रि॰ स॰ डराना।
क्रि॰ अ॰ धीमा होना।
धींग—संज्ञा पुं॰ हट्टा-कट्टा।
वि॰ १. मज़बूत। २. बदमाश।
धींगरा—संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ धींगरी] १. मुसंड। २. शठ।
धींगा—संज्ञा पुं॰ बदमाश।
धींगाधींगी—संज्ञा स्त्री॰ शरारत। ज़बरदस्ती।
धींगड़,धींगड़ा†—वि॰ [स्त्री॰ धींगड़ी] पाजी।
धींवर—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धीमर"।
धी—संज्ञा स्त्री॰ बुद्धि।
धीजना—क्रि॰ स॰ ग्रहण करना।
धीम॰†—वि॰ दे॰ "धीमा"।
धीमर—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धीवर"।
धीमा—वि॰ [स्त्री॰ धीमी] १. जो आहिस्तः चले। २. जिसकी तेज़ी कम हो गई हो।
धीमान्—संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ धीमती] १. बृहस्पति। २. बुद्धिमान्।
धीया—संज्ञा स्त्री॰ लड़की।
धीर—वि॰ जिसमें धैर्य हो।
॰†संज्ञा पुं॰ १. धैर्य। २. संतोष।
धीरज†॰—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धैर्य"।
धीरता—संज्ञा स्त्री॰ १. धैर्य। २. स्थिरता।
धीरा—संज्ञा स्त्री॰ एक नायिका विशेष।
वि॰ मंद।
संज्ञा पुं॰ धीरज। धैर्य।
धीरे—क्रि॰ वि॰ १. आहिस्ते से। २. चुपके से।
धीवर—संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ धीवरी] मल्लाह।
धुँकार—संज्ञा स्त्री॰ गरज।
धुँगार—संज्ञा स्त्री॰ छौंक।
धुँजा†—वि॰ धुँधली।
धुंध—संज्ञा स्त्री॰ १. वह अँधेरा जो हवा में मिली धूल के कारण हो। २. हवा में उड़ती हुई धूल। ३. आँख का एक रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दिखाई देती।
धुंधकार—संज्ञा पुं॰ १. गड़गड़ाहट। २. अंधकार।
धुंधमार—संज्ञा पुं॰ दे॰ "धुंधुमार"।
धुंधर†—संज्ञा स्त्री॰ १. हवा में उड़ती हुई धूल। २. अँधेरा।
धुँधला—वि॰ १. धूएँ के रंग का। २. जो अस्पष्ट हो।
धुँधलापन—संज्ञा पुं॰ १. धुँधले या अस्पष्ट होने का भाव। २. कम दिखाई देने का भाव।
धुंधुकार†—संज्ञा पुं॰ १. अंधकार। २. धुँधलापन।
धुँधवाना॰†—क्रि॰ अ॰ धूआँ देना।
धुआँ—संज्ञा पुं॰ जलती हुई चीज़ों से निकलनेवाली भाप जो कुछ कालापन लिए होती है।
धुआँकश—संज्ञा पुं॰ स्टीमर।
धुआँधार—वि॰ १. धुएँ से भरा। धूममय। २. प्रचंड।
क्रि॰ वि॰ बहुत अधिक या बहुत ज़ोर से।
धुआँना—क्रि॰ अ॰ अधिक धुएँ में रहने के कारण स्वाद और गंध में बिगड़ जाना।

दोहत्थड़-संज्ञा पुं० दोनों हाथों से मारा हुआ थप्पड़।
दोहत्था-क्रि० वि० दोनों हाथों से। वि० जो दोनों हाथों से हो।
दोहद-संज्ञा स्त्री० १. गर्भावस्था। २. गर्भ का चिह्न।
दोहदवती-संज्ञा स्त्री० गर्भवती स्त्री।
दोहन-संज्ञा पुं० दुहना।
दोहना॰-क्रि० स० दोष लगाना।
दोहनी-संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं। २. दूध दुहने का काम।
दोहर-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चादर जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।
दोहरना-क्रि० अ० १. दो बार होना। २. दोहरा होना। क्रि० स० दोहरा करना।
दोहरा-वि० पुं० [स्त्री० दोहरी] दो परत या तह का।
दोहराना-क्रि० स० १. किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। २. दोहरा करना।
दोहा-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध हिंदी छंद।
दोहाक, दोहाग॰†-संज्ञा पुं० दुर्भाग्य।
दोहागा†-संज्ञा पुं० [स्त्री० दोहागिन] अभागा।
दोही-ग्वाला।
दोह्य-वि० दूहने योग्य।
दौं॰-अव्य० या।
दौंकना॰-क्रि० अ० दे० "दमकना"।
दौंचना॰†-क्रि० स० दबाव डालकर लेना।
दौंरी†-संज्ञा स्त्री० १. बैलों का झुंड जो कटी हुई फसल के डंठलों पर दाना झाड़ने के लिये फिराया जाता है। २. वह रस्सी जिससे बैल बँधे होते हैं। ३. फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया।
दौ॰-संज्ञा स्त्री० १. जंगल की आग। २. जलन।
दौड़-संज्ञा स्त्री० १. धावा। २. प्रयत्न। ३. द्रुत गति।
दौड़-धूप-संज्ञा स्त्री० परिश्रम।
दौड़ना-क्रि० अ० मामूली चलने से ज्यादा तेज़ चलना।
दौड़ादौड़-क्रि० वि० [संज्ञा दौड़ादौड़ी] बिना कहीं रुके हुए।
दौड़ादौड़ी-संज्ञा स्त्री० १. दौड़धूप। २. बहुत से लोगों के साथ इधर-उधर दौड़ने की क्रिया।
दौड़ान-संज्ञा स्त्री० दौड़ने की क्रिया या भाव।
दौड़ाना-क्रि० स० जल्द-जल्द चलाना।
दौत्य॰-संज्ञा पुं० दूत का काम।
दौन॰-संज्ञा पुं० दे० "दमन"।
दौनागिरि-संज्ञा पुं० दे० "द्रोण-गिरि"।
दौर-संज्ञा पुं० १. चक्कर। २. प्रताप। ३. बारी।
दौरना॰†-क्रि० अ० दे० "दौड़ना"।
दौरा-संज्ञा पुं० १. चक्कर। २. गश्त। ३. आवर्त्तन।
†संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० दौरी] घाँस की फट्टियों या मूँज आदि का टोकरा।
दौरात्म्य-संज्ञा पुं० दुर्जनता।
दौरान-संज्ञा पुं० दौरा।
दौरी†-संज्ञा स्त्री० डलिया।
दौर्जन्य-संज्ञा पुं० दुर्जनता।

धुआँयँध-वि० धुएँ की तरह महकनेवाला।
संज्ञा स्त्री० अन्न न पचने के कारण आनेवाली डकार।
धुकधुकी-संज्ञा स्त्री० १. पेट और छाती के बीच का वह भाग जो कुछ गहरा सा होता है। २. कलेजा। ३. कलेजे की धड़कन। ४. डर।
धुकना☆†-क्रि० अ० १. झुकना। २. गिर पड़ना। ३. झपटना।
धुकाना†☆-क्रि० स० १. झुकाना। २. गिराना। ३. पछाड़ना।
क्रि० स० धूनी देना।
धुकार, धुकारी-संज्ञा स्त्री० नगाड़े का शब्द।
धुज, धुजा☆†-संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।
धुड़ंगा☆†-वि० जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो।
धुधुकार-संज्ञा स्त्री० १. धू धू शब्द का शोर। २. गरज।
धुधुकारी-संज्ञा स्त्री० दे० "धुधुकार"।
धुन-संज्ञा स्त्री० १. लगन। २. मौज। ३. सोच।
संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग। २. दे० "ध्वनि"।
धुनकना-क्रि० स० दे० "धुनना"।
धुनकी-संज्ञा स्त्री० १. फटका। २. छोटा धनुष।
धुनना-क्रि० स० १. धुनकी से रूई साफ करना। २. घुमाना, चक्कर देना।
धुनि☆-संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वनि"।
धुनियाँ-संज्ञा पुं० वह जो रूई धुनने का काम करता हो।
धुरंधर-वि० श्रेष्ठ।
धुर-संज्ञा पुं० १. गाड़ी या रथ आदि का धुरा। २. बिस्वांसी।
अव्य० १. बिलकुल ठीक। २. एकदम दूर।
वि० पक्का।
धुरजटी☆-संज्ञा पुं० दे० "धूर्जटी"।
धुरना☆†-क्रि० स० पीटना।
धुरपद-संज्ञा पुं० दे० "ध्रुपद"।
धुरा-संज्ञा पुं० [संज्ञा स्त्री० अल्पा० धुरी] वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिस पर वह घूमता है।
धुरीण-वि० १. बोझ सँभालनेवाला। २. मुख्य। ३. धुरंधर।
धुरेटना☆†-क्रि० स० धूल से लपेटना।
धुर्रा-संज्ञा पुं० कण।
धुलना-क्रि० अ० पानी की सहायता से साफ या स्वच्छ किया जाना।
धुलाई-संज्ञा स्त्री० १. धोने का काम या भाव। २. धोने की मज़दूरी।
धुलाना-क्रि० स० धुलवाना।
धुवाँस-संज्ञा स्त्री० उरद का आटा जिससे पापड़ या कचौड़ी बनती है।
धुस्सा-संज्ञा पुं० मोटे ऊन की लोई जो ओढ़ने के काम में आती है।
धूआँ-संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।
धूजट☆-संज्ञा पुं० शिव।
धूत-वि० १. थरथराता हुआ। २. जो धमकाया गया हो। ३. त्यक्त।
†☆वि० धूर्त।
धूतना☆-क्रि० स० धूर्तता करना।
धूधू-संज्ञा पुं० आग के दहकने या ज़ोर से जलने का शब्द।
धूनना☆-क्रि० स० धूनी देना।
क्रि० स० दे० "धुनना"।

द्विजाति–संज्ञा पुं० १. द्विज। २. ब्राह्मण।

द्विजिह्व–वि० १. जिसे दो जीभ हों। २. चुग़लख़ोर।
संज्ञा पुं० साँप।

द्विजेंद्र, द्विजेश–संज्ञा पुं० दे० "द्विज-पति"।

द्वितीय–वि० [स्त्री० द्वितीया] दूसरा।

द्वितीया–संज्ञा स्त्री० दूज।

द्वित्व–संज्ञा पुं० दो का भाव।

द्विदल–वि० १. जिसमें दो दल या पिंड हों। २. जिसमें दो पटल हों।
संज्ञा पुं० वह अन्न जिसमें दो दल हों।

द्विपदी–संज्ञा स्त्री० १. वह छंद या वृत्ति जिसमें दो पद हों। २. दो पदों का गीत।

द्विपाद–वि० १. दो पैरोंवाला (पशु)। २. जिसमें दो पद या चरण हों।

द्विमुखी–वि० स्त्री० दो मुँहवाली।

द्विरद–संज्ञा पुं० हाथी।
वि० दो दाँतोंवाला।

द्विरागमन–संज्ञा पुं० वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना।

द्विरेफ–संज्ञा पुं० भ्रमर।

द्विविध–वि० दो प्रकार का।
क्रि० वि० दो प्रकार से।

द्विवेदी–संज्ञा पुं० दूबे।

द्वीप–संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो। टापू।

द्वेष–संज्ञा पुं० चिढ़। शत्रुता।

द्वेषी–वि० [स्त्री० द्वेषिणी] विरोधी। वैरी।

द्वेष्टा–वि० दे० "द्वेषी"।

द्वै॰†–वि० दो।

द्वैत–संज्ञा पुं० १. दो का भाव। २. भेद।

द्वैतवाद–संज्ञा पुं० वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है।

द्वैतवादी–वि० [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैध–संज्ञा पुं० १. विरोध। २. आधुनिक राजनीति में वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों।

द्वैपायन–संज्ञा पुं० व्यासजी का एक नाम।

द्वैमातुर–वि० जिसकी दो माँ हों।
संज्ञा पुं० १. गणेश। २. जरासंध।

द्वौ॰–वि० दोनों।
वि० दे० "द्व"।

धूना–संज्ञा पुं० वह सुगंधित वस्तु जो आग में जलाई जाय।

धूनी–संज्ञा स्त्री० १. धूप। २. साधुओं के तापने की आग।

धूप–संज्ञा पुं० देवपूजन में या सुगंध के लिये गंधद्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ।
संज्ञा स्त्री० १. गंधद्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठता है। २. घाम।

धूपघड़ी–संज्ञा स्त्री० एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है।

धूपदान–संज्ञा पुं० अगियारी।

धूपदानी–संज्ञा स्त्री० दे० "धूपदान"।

धूपना⊙†–क्रि० अ० गंध-द्रव्य जलाना।
क्रि० स० गंधद्रव्य जलाकर सुगंधित धुआँ पहुँचाना।
क्रि० स० दौड़ना।

धूपबत्ती–संज्ञा स्त्री० मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूम–संज्ञा पुं० धुआँ।
संज्ञा स्त्री० १. आंदोलन। २. उपद्रव।

धूमकेतु–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. पुच्छल तारा।

धूम धड़क्का–संज्ञा पुं० दे० "धूमधाम"।

धूमधाम–संज्ञा स्त्री० ठाट-बाट।

धूमपान–संज्ञा पुं० तमाकू, चुरुट आदि पीने का कार्य्य।

धूमपोत–संज्ञा पुं० धुआँकश।

धूमर⊙†–वि० दे० "धूमल"।

धूमल, धूमला–वि० [स्त्री० धूमली] १. धुएँ के रंग का। २. धुँधला।

धूमावती–संज्ञा स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक देवी।

धूमिला⊙–वि० १. धुएँ के रंग का। २. धुँधला।

धूम्र–वि० धुएँ के रंग का।

धूम्रवर्ण–वि० धुएँ के रंग का।

धूर⊙†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।

धूरा–संज्ञा पुं० १. धूल। २. चूर्ण।

धूरि⊙†–संज्ञा स्त्री० दे० "धूल"।

धूर्जटि–संज्ञा पुं० शिव।

धूर्त्त–वि० छली।
संज्ञा पुं० साहित्य में शठ नायक का एक भेद।

धूर्त्तता–संज्ञा स्त्री० चालबाज़ी।

धूल–संज्ञा स्त्री० गर्द।

धूला–संज्ञा पुं० टुकड़ा।

धूलि–संज्ञा स्त्री० धूल।

धूवाँ–संज्ञा पुं० दे० "धुआँ"।

धूसर–वि० १. खाकी। २. धूल लगा हुआ।

धूसरा–वि० दे० "धूसर"।

धूसरित–वि० १. जो धूल से मटमैला हुआ हो। २. धूल से भरा हुआ।

धूसला–वि० दे० "धूसर"।

धृक, धृग⊙–अव्य० दे० "धिक्"।

धृत–वि० १. पकड़ा हुआ। २. धारण किया हुआ।

धृतराष्ट्र–संज्ञा पुं० १. वह देश जो अच्छे राजा के शासन में हो। २. एक कौरव राजा जो दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य्य के पुत्र थे।

धृति–संज्ञा स्त्री० १. धारण। २. धीरता।

धृष्ट–वि० [स्त्री० धृष्टा] १. निर्लज्ज। २. ढीठ।

धृष्टता–संज्ञा स्त्री० १. ढिठाई। २. बेहयाई।

ध

ध—हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंतमूल है।

धंधक—संज्ञा पुं० बखेड़ा।

धंधकधोरी—संज्ञा पुं० हर घड़ी काम में जुता रहनेवाला।

धंधरक—संज्ञा पुं० दे० "धंधक"।

धँधला—संज्ञा पुं० १. छल-छंद। २. बहाना।

धँधलाना—क्रि० अ० छलछंद करना।

धंधा—संज्ञा पुं० काम-काज।

धँधार—संज्ञा स्त्री० ज्वाला।

धँधारी—संज्ञा स्त्री० गोरखधंधा।

धँधोर—संज्ञा पुं० १. होलिका। २. आग की लपट।

धँसन—संज्ञा स्त्री० १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. घुसने या पैठने का ढंग। ३. गति।

धँसना—क्रि० अ० १. गड़ना। २. अपने लिये जगह करते हुए घुसना। ✪† ३. नीचे खसकना।
✪क्रि० अ० नष्ट होना।

धसान—संज्ञा स्त्री० १. धँसने की क्रिया या ढंग। २. दलदल।

धसाना—क्रि० स० १. नरम चीज़ में घुसाना। २. पैठाना।

धक—संज्ञा स्त्री० १. हृदय के जल्दी जल्दी चलने का भाव या शब्द। २. उमंग।
क्रि० वि० अचानक।
संज्ञा स्त्री० छोटी जूँ।

धकधकाना—क्रि० अ० १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का ज़ोर ज़ोर से या जल्दी जल्दी चलना। † २. भभकना।

धकधकी—संज्ञा स्त्री० १. जी की धड़कन। २. धुकधुकी।

धकपक—संज्ञा स्त्री० धकधकी।
क्रि० वि० डरते हुए।

धकपकाना—क्रि० अ० डरना।

धकपेल✪—संज्ञा स्त्री० धक्कमधक्का।

धकियाना†—क्रि० स० धक्का देना।

धकेलना—क्रि० स० दे० "ढकेलना"।

धक्कमधक्का—संज्ञा पुं० १. बार बार, बहुत अधिक या बहुत से आदमियों का परस्पर धक्का देने का काम। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।

धक्का—संज्ञा पुं० १. झोंका। २. ढकेलने की क्रिया। ३. हानि।

धक्कामुक्की—संज्ञा स्त्री० मार-पीट।

धज—संज्ञा स्त्री० १. सजावट। २. शोभा।

धजा—संज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

धजीला—वि० [स्त्री० धजीली] सजीला।

धज्जी—संज्ञा स्त्री० १. कपड़े, कागज़ आदि की कटी हुई लंबी पतली पट्टी। २. लोहे की चद्दर या लकड़ी के पतले तख्ते की अलग की हुई लंबी पट्टी।

धड़ंग—वि० नंगा।

धड़—संज्ञा पुं० १. शरीर का स्थूल मध्यभाग जिसके अंतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं। २. पेड़ी।
संज्ञा स्त्री० वह शब्द जो किसी वस्तु के एकबारगी गिरने आदि से होता है।

धृष्टद्युम्न–संज्ञा पुं० राजा द्रुपद का पुत्र और द्रौपदी का भाई।

धेनु–संज्ञा स्त्री० १. वह गाय जिसे बच्चा जने बहुत दिन न हुए हों। २. गाय।

धेय–वि० १. धारण करने योग्य। २. पोषण करने योग्य।

धेलचा†, धेला–संज्ञा पुं० दे० "अधेला"।

धेली†–संज्ञा स्त्री० अठन्नी।

धैंताल†–वि० १. चपल। २. उजड्ड।

धैना–संज्ञा स्त्री० १. आदत। २. काम-धंधा।

धैर्य–संज्ञा पुं० धीरता।

धैवत–संज्ञा पुं० संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जो मध्यम के बाद का है।

धोंधा–संज्ञा पुं० १. लोंदा। २. भद्दा।

धोई–संज्ञा स्त्री० छिलका निकाली हुई उरद या मूँग की दाल।
 ॅसंज्ञा पुं० राजगीर।

धोकड़–वि० हट्टा-कट्टा।

धोका–संज्ञा पुं० दे० "धोखा"।

धोखा–संज्ञा पुं० १. छल। २. भुलावा। ३. भ्रम में डालनेवाली वस्तु। ४. वह पुतला जिसे किसान चिड़ियों को डराने के लिये खेत में खड़ा करते हैं।

धोखेबाज़–वि० धूर्त्त।

धोखेबाज़ी–संज्ञा स्त्री० छल।

धोती–संज्ञा स्त्री० वह कपड़ा जो कमर से लेकर घुटनों के नीचे तक का शरीर और स्त्रियों का प्रायः सर्वांग ढकने के लिये पहना जाता है।

धोना–क्रि० स० पानी से साफ़ करना।

धोब–संज्ञा पुं० धुलावट।

धोबिन–संज्ञा स्त्री० धोबी जाति की स्त्री।

धोबी–संज्ञा पुं० [स्त्री० धोबिन] धोनेवाला।

धोर–संज्ञा पुं० १. पास। २. किनारा।

धोरी–संज्ञा पुं० १. धुरे को उठानेवाला बैल। २. प्रधान।

धोरे†ॅ–क्रि० वि० पास।

धोवती–संज्ञा स्त्री० धोती।

धोवन–संज्ञा स्त्री० १. धोने का भाव। २. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।

धोवानाॅ†–क्रि० स० धुलाना। क्रि० अ० धुलना।

धौंॅ†–अव्य० १. न जाने। २. अथवा।

धौंक–संज्ञा स्त्री० १. आग दहकाने के लिये भाथी को दबाकर निकाला हुआ हवा का झोंका। २. ताप।

धौंकना–क्रि० स० १. आग पर, उसे दहकाने के लिये, भाथी दबाकर हवा का झोंका पहुँचाना।

धौंकनी–संज्ञा स्त्री० १. घास या धातु की एक नली जिससे लोहार, सोनार आदि आग फूँकते हैं। २. भाथी।

धौंका†–संज्ञा स्त्री० लू।

धौंकिया–संज्ञा पुं० आग फूँकनेवाला।

धौंताल–वि० १. जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २. चालाक।

धौंस–संज्ञा स्त्री० १. धमकी। २. धाक। ३. भुलावा।

धौंसना–क्रि० स० १. दबाना। २. धमकी या घुड़की देना। ३. मारना-पीटना।

धौंस-पट्टी–संज्ञा स्त्री० भुलावा।

धड़क-संज्ञा स्त्री० १. दिल के चलने या उछलने की क्रिया। २. खटका।
धड़कन-संज्ञा स्त्री० दिल का धक धक करना।
धड़कना-क्रि० अ० १. दिल का धक धक करना। २. किसी भारी वस्तु के गिरने का सा धड़धड़ शब्द होना।
धड़का-संज्ञा पुं० १. दिल की धड़कन। २. खटका।
धड़काना-क्रि० स० १. दिल में धड़क पैदा करना। २. डराना। ३. धड़ धड़ शब्द उत्पन्न करना।
धड़क्का-संज्ञा पुं० धड़ाका।
धड़ा-संज्ञा पुं० १. बटखरा। २. चार सेर की एक तौल। ३. तराजू।
धड़ाका-संज्ञा पुं० 'धड़' 'धड़' शब्द।
धड़ाधड़-क्रि० वि० १. लगातार 'धड़' 'धड़' शब्द के साथ। २. लगातार।
धड़ाम-संज्ञा पुं० ऊपर से एकबारगी कूदने या गिरने का शब्द।
धड़ी-संज्ञा स्त्री० चार या पाँच सेर की एक तौल।
धत्-अव्य० दुतकारने का शब्द।
धत-संज्ञा स्त्री० खराब आदत।
धता-वि० हटा हुआ।
धतूर-संज्ञा पुं० तुरही।
धतूरा-संज्ञा पुं० दो-तीन हाथ ऊँचा एक पौधा। इसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।
धधक-संज्ञा स्त्री० १. आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। २. आँच।
धधकना-क्रि० अ० भड़कना।
धधकाना-क्रि० स० आग दहकाना।
धनंजय-संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. अर्जुन का एक नाम। ३. विष्णु। ४. शरीरस्थ पाँच वायुओं में से एक।
धन-संज्ञा पुं० १. दौलत। २. गणित में जोड़ी जानेवाली संख्या या जोड़ का चिह्न। ३. मूल। ४. पूँजी।
✲ संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री।
‡ वि० दे० "धन्य"।
धनकुबेर-संज्ञा पुं० अत्यंत धनी।
धनतेरस-संज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन रात को लक्ष्मी की पूजा होती है।
धनद-वि० दाता।
संज्ञा पुं० १. कुबेर। २. धनपति वायु।
धनधान्य-संज्ञा पुं० धन और अन्न आदि।
धनधाम-संज्ञा पुं० घर-बार और रुपया-पैसा।
धनवंत-वि० दे० "धनवान्"।
धनवान्-वि० [स्त्री० धनवती] जिसके पास धन हो।
धनहीन-वि० निर्धन।
धना✲-संज्ञा स्त्री० युवती।
धनाढ्य-वि० धनवान्।
धनाश्री-संज्ञा स्त्री० एक रागिनी।
धनि✲-संज्ञा स्त्री० युवती।
वि० दे० "धन्य"।
धनिक-वि० धनी।
संज्ञा पुं० १. धनी मनुष्य। २. पति।
धनिया-संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा जिसके सुगंधित फल मसाले के काम में आते हैं।
✲संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री।
धनिष्ठा-संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।
धनी-वि० जिसके पास धन हो।

धौंसा–संज्ञा पुं० १. बड़ा नगारा। २. सामर्थ्य।
धौंसिया–संज्ञा पुं० १. धौंस से काम चलानेवाला। २. झाँसा-पट्टी देनेवाला। ३. नगारा बजानेवाला।
धौत–वि० १. धोया हुआ। २. उजला।
संज्ञा पुं० चाँदी।
धौति–संज्ञा स्त्री० शुद्ध।
धौरहर॰–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।
धौरा–वि० [स्त्री० धौरी] सफ़ेद।
धौराहर–संज्ञा पुं० धरहरा। मीनार। बुर्ज।
धौल–संज्ञा स्त्री० १. थप्पड़। २. नुकसान।
॰ वि० सफ़ेद।
संज्ञा पुं० धरहरा।
धौल-धक्का–संज्ञा पुं० आघात।
धौल-धप्पड़–संज्ञा पुं० मारपीट।
धौलहर॰–संज्ञा पुं० दे० "धौराहर"।
धौला–वि० [स्त्री० धौली] सफ़ेद।
धौलाई॰–संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी।
धौलागिरि–संज्ञा पुं० दे० "धवलगिरि"।
ध्यात–वि० विचारा हुआ।
ध्याता–वि० [स्त्री० ध्यात्री] ध्यान करनेवाला।
ध्यान–संज्ञा पुं० १. सोच-विचार। २. भावना। ३. मन। ४. ख़याल। ५. बुद्धि। ६. चित्त को एकाग्र करके किसी ओर लगाने की क्रिया।
ध्यानयोग–संज्ञा पुं० वह योग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो।
ध्याना॰–क्रि० स० १. ध्यान करना। २. स्मरण करना।
ध्यानी–वि० १. ध्यानयुक्त। २. ध्यान करनेवाला।
ध्येय–वि० १. ध्यान करने योग्य। २. जिसका ध्यान किया जाय।
ध्रुपद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का गीत जिसके द्वारा देवताओं की लीला या राजाओं के यशादि का वर्णन गाया जाता है।
ध्रुव–वि० स्थिर।
संज्ञा पुं० ध्रुव तारा।
ध्रुवता–संज्ञा स्त्री० स्थिरता।
ध्रुवतारा–संज्ञा पुं० वह तारा जो सदा ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है, कभी इधर-उधर नहीं होता।
ध्रुवदर्शक–संज्ञा पुं० १. सप्तर्षि मंडल। २. क़ुतुबनुमा।
ध्रुवलोक–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक लोक जो सत्यलोक के अंतर्गत है और जिसमें ध्रुव स्थित हैं।
ध्वंस–संज्ञा पुं० विनाश।
ध्वंसक–वि० नाश करनेवाला।
ध्वंसन–संज्ञा पुं० [वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त] १. नाश करने की क्रिया। २. विनाश।
ध्वंसी–वि० [स्त्री० ध्वंसिनी] विनाशक।
ध्वज–संज्ञा पुं० १. चिह्न। २. झंडा।
ध्वजभंग–संज्ञा पुं० नपुंसकता।
ध्वजा–संज्ञा स्त्री० पताका।
ध्वजिनी–संज्ञा स्त्री० सेना का एक भेद।
ध्वजी–वि० [स्त्री० ध्वजिनी] जो ध्वजा-पताका लिए हो।
ध्वनि–संज्ञा स्त्री० १. आवाज़। २. लय। ३. अर्थ।
ध्वनित–वि० १. शब्दित। २. बजाया हुआ।

संज्ञा पुं० १. धनवान् पुरुष। २. पति।
संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री। वधू।
धनु-संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।
धनुआ-संज्ञा पुं० १. कमान। २. रूई धुनने की धुनकी।
धनुई-संज्ञा स्त्री० छोटा धनुस्।
धनुक-संज्ञा पुं० १. दे० "धनुस्"। २. दे० "इंद्रधनुष"।
धनुर्द्धर-संज्ञा पुं० तीरंदाज़।
धनुर्द्धारी-संज्ञा पुं० दे० "धनुर्द्धर"।
धनुर्विद्या-संज्ञा स्त्री० धनुस् चलाने की विद्या।
धनुर्वेद-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें धनुस् चलाने की विद्या का निरूपण है। यह यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है।
धनुष-संज्ञा पुं० दे० "धनुस्"।
धनुस्-संज्ञा पुं० १. कमान। २. ज्योतिष में धनु राशि। ३. एक लग्न। ४. चार हाथ की एक माप।
धनुहाई॰-संज्ञा स्त्री० धनुस् की लड़ाई।
धनुही-संज्ञा स्त्री० लड़कों के खेलने की कमान।
धनेस-संज्ञा पुं० बगले के आकार की एक चिड़िया।
धन्न॰-वि० दे० "धन्य"।
धन्नासेठ-संज्ञा पुं० बहुत धनी आदमी।
धन्य-वि० प्रशंसा या बड़ाई के योग्य।
धन्यवाद-संज्ञा पुं० १. प्रशंसा। २. कृतज्ञता-सूचक शब्द।
धन्वंतरि-संज्ञा पुं० देवताओं के वैद्य जो पुराणानुसार समुद्र-मंथन के समय और सब वस्तुओं के साथ समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सबसे प्रधान आचार्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।
धन्वा-संज्ञा पुं० १. कमान। २. मरुभूमि।
धन्वाकार-वि० टेढ़ा।
धन्वी-वि० १. धनुर्धर। २. निपुण।
धब्बा-संज्ञा पुं० १. दाग़। २. कलंक।
धम-संज्ञा स्त्री० भारी चीज़ के गिरने का शब्द।
धमक-संज्ञा स्त्री० १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. पैर रखने की आवाज़ या आहट। ३. आघात।
धमकना-क्रि० अ० १. धमाका करना। २. दर्द करना।
धमकाना-क्रि० स० १. डराना। २. डाँटना।
धमकी-संज्ञा स्त्री० डाँट-डपट।
धमनी-संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर की वह छोटी या बड़ी नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता है। इनकी संख्या सुश्रुत के अनुसार २४ हैं। २. नाड़ी।
धमाका-संज्ञा पुं० १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. आघात।
धमाचौकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. ऊधम। २. मार-पीट।
धमाधम-क्रि० वि० लगातार कई बार 'धम', 'धम' शब्द के साथ।
संज्ञा स्त्री० १. कई बार गिरने से उत्पन्न लगातार धमधम शब्द। २. मार-पीट।
धमार-संज्ञा स्त्री० उछल-कूद।
संज्ञा पुं० होली में गाने का एक गीत।
धर-वि० धारण करनेवाला।
संज्ञा पुं० पर्वत।

ध्वन्य–संज्ञा पुं० व्यंग्यार्थ।
ध्वन्यात्मक–वि० १. ध्वनि-स्वरूप या ध्वनिमय। २. (काव्य) जिसमें व्यंग्य प्रधान हो।
ध्वन्यार्थ–संज्ञा पुं० वह अर्थ जिसका बोध वाच्यार्थ से न होकर केवल ध्वनि या व्यंजना से हो।
ध्वस्त–वि० १. गिरा-पड़ा। २. टूटा-फूटा।
ध्वांत–संज्ञा पुं० अंधकार।
ध्वांतचर–संज्ञा पुं० राक्षस।

न

न–एक व्यंजन जो हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण-स्थान दंत है।
नंग–संज्ञा पुं० नंगापन।
नंग-धड़ंग–वि० बिलकुल नंगा।
नंग-मुनंगा–वि० दे० "नंग धड़ंग"।
नंगा–वि० १. जो कोई कपड़ा न पहने हो। २. निर्लज्ज। ३. खुला हुआ।
नंगा-झोली–संज्ञा स्त्री० कपड़ों की तलाशी।
नंगाबुच्चा, नंगाबूचा–वि० जिसके पास कुछ भी न हो।
नंगालुच्चा–वि० बदमाश।
नँगियाना–क्रि० स० १. नंगा करना। २. सब कुछ छीन लेना।
नंद–संज्ञा पु० १. आनंद। २. लड़का। ३. गोकुल के गोपों के मुखिया जिनके यहाँ श्रीकृष्ण को, उनके जन्म के समय, वसुदेव जाकर रख आए थे।
नंदक–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २. राजा नंद जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहते थे।
वि० १. आनंददायक। २. कुल-पालक।
नंदकिशोर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
नंदकी–संज्ञा स्त्री० विष्णु।
नंदकुमार–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
नंदगाँव–संज्ञा पुं० वृंदावन का एक गाँव जहाँ नंद गोप रहते थे।
नंदग्राम–संज्ञा पुं० १. नंदीग्राम। २. नंदिग्राम, जहाँ भरत ने राम के वनवास काल में तपस्या की थी।
नंदनंदन–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
नंदनंदिनी–संज्ञा स्त्री० योगमाया।
नंदन–संज्ञा पुं० १. इंद्र के उपवन का नाम जो स्वर्ग में माना जाता है। २. लड़का।
वि० आनंददायक।
नंदन वन–संज्ञा पुं० इंद्र की वाटिका।
नंदना॰–क्रि० अ० आनंदित होना।
संज्ञा स्त्री० लड़की।
नंदनी–संज्ञा स्त्री० दे० "नंदिनी"।
नंदरानी–संज्ञा स्त्री० नंद की स्त्री, यशोदा।
नंदलाल–संज्ञा पुं० नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।
नंदा–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. ननद।

संज्ञा स्त्री० धरने या पकड़ने की क्रिया।
धरका०-संज्ञा स्त्री० दे० "धड़क"।
धरकना-क्रि० अ० दे० "धड़कना"।
धरण-संज्ञा पुं० दे० "धारण"।
धरणि-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
धरणिधर-संज्ञा पुं० १. पृथ्वी को धारण करनेवाला। २. कच्छप। ३. पर्वत। ४. शेषनाग।
धरणी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
धरणीसुता-संज्ञा स्त्री० सीता।
धरता-संज्ञा पुं० क़र्ज़दार।
धरती-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
धरधर०-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"। संज्ञा स्त्री० दे० "धड़धड़"।
धरधरा०†-संज्ञा पुं० धड़कन।
धरन-संज्ञा स्त्री० १. धरने की क्रिया, भाव या ढंग। २. वह लंबा लट्ठा जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिये आड़ा रखा जाता है जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके।
संज्ञा पुं० दे० "धरना"।
† संज्ञा स्त्री० धरती।
धरना-क्रि० स० १. पकड़ना। २. रखना। ३. बंधक रखना।
संज्ञा पुं० कोई काम कराने के लिये किसी के पास अड़कर बैठना और जब तक काम न हो, तब तक अन्न न ग्रहण करना।
धरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "धरणी"।
संज्ञा स्त्री० हठ।
धरम०†-संज्ञा पुं० दे० "धर्म"।
धरहरा†-संज्ञा स्त्री० १. गिरफ्तारी। २. बीच-बिचाव।
धरहरना०-क्रि० अ० धड़धड़ाना।
धरहरा-संज्ञा पुं० खंभे की तरह बहुत ऊँचा मकान का भाग जिस पर चढ़ने के लिये भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनी हों।
धरहरिया†-संज्ञा पुं० रक्षक।
धरा-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. संसार।
धराऊ-वि० जो साधारण से अधिक अच्छा होने के कारण कभी कभी केवल विशेष अवसरों पर निकाला जाय।
धराक०†-संज्ञा पुं० दे० "धड़ाक"।
धरातल-संज्ञा पुं० १. पृथ्वी। २. केवल लंबाई-चौड़ाई का गुणन-फल जिसमें मोटाई, गहराई या ऊँचाई का कुछ विचार न किया जाय। ३. रकबा।
धराधर-संज्ञा पुं० १. शेषनाग। २. पर्वत। ३. विष्णु।
धराधरन०-संज्ञा पुं० दे० "धराधर"।
धराधार-संज्ञा पुं० शेषनाग।
धराधीश-संज्ञा पुं० राजा।
धराना-क्रि० स० पकड़ाना।
धरापुत्र-संज्ञा पुं० मंगल ग्रह।
धराहर-संज्ञा पुं० दे० "धरहरा"।
धरित्री-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
धरैया†-संज्ञा पुं० धरनेवाला।
धरोहर-संज्ञा स्त्री० थाती।
धर्ता-संज्ञा पुं० १. धारण करनेवाला २. कोई काम ऊपर लेनेवाला।
धर्म-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे, उससे कभी अलग न हो। २. कर्त्तव्य। ३. सत्कर्म। ४. मत। मज़हब। ५. नीति।
धर्म-कर्म-संज्ञा पुं० वह कर्म या विधान जिसका करना किसी धर्म-ग्रंथ में

वि० आनंद देनेवाली।
नंदि–संज्ञा पुं० आनंद।
नंदिकेश्वर–संज्ञा पुं० शिव के द्वारपाल बैल का नाम।
नंदिघोष–संज्ञा पुं० १. अर्जुन का रथ। २. बंदीजनों की घोषणा।
नंदित–वि० आनंदित।
॰वि० बजता हुआ।
नंदिन॰–संज्ञा स्त्री० लड़की।
नंदिनी–संज्ञा स्त्री० १. पुत्री। २. उमा। ३ गंगा। ४. पति की बहन।
नंदी–संज्ञा पुं० शिव का द्वारपाल बैल।
वि० आनंदयुक्त।
नंदीश्वर–संज्ञा पुं० शिव।
नंदेऊ॰†–संज्ञा पु० दे० "नंदोई"।
नंदोई–संज्ञा पु० पति का बहनोई।
नंबर–वि० संख्या।
संज्ञा पुं० १. गिनती। २. कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज़।
नंबरदार–संज्ञा पुं० गाँव का वह ज़मींदार जो अपनी पट्टी के और हिस्सेदारों से मालगुज़ारी आदि वसूल करने में सहायता दे।
नंबरवार–क्रि० वि० सिलसिलेवार।
नंबरी–वि० १. जिस पर नंबर लगा हो। २. प्रसिद्ध।
नंबरी गज़–संज्ञा पुं० दे० "नंबर (२)"।
नंबरी सेर–संज्ञा पुं० तौलने का सेर जो अँगरेज़ी रुपयों से ८० भर का होता है।
नंस॰–वि० नष्ट।
न–अव्य० १. नहीं। २. या नहीं।
नइ॰–वि० स्त्री० 'नया' का स्त्री० रूप।
नउआ†–संज्ञा पुं० दे० "नाऊ"।
नउका॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "नौका"।
नउत॰†–वि० नीचे की ओर झुका हुआ।
नककटा–वि० [स्त्री० नककटी] १. जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज।
नकघिसनी–संज्ञा स्त्री० १. ज़मीन पर नाक रगड़ने की क्रिया। २. बहुत अधिक दीनता।
नकचढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० नकचढ़ी] बद-मिज़ाज।
नकछिकनी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं।
नकटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० नकटी] १. वह जिसकी नाक कट गई हो। २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं।
वि० १. जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज।
नक़द–संज्ञा पुं० रुपया-पैसा।
वि० रुपया जो तैयार हो।
नक़दी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़द"।
नकना॰†–क्रि० स० लाँघना।
क्रि० अ० हैरान होना।
क्रि० स० नाक में दम करना।
नकफूल–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का लौंग या कील।
नक़ब–संज्ञा स्त्री० सेंध।
नकवानी॰†–संज्ञा स्त्री० हैरानी।
नकबेसर–संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने की छोटी नथ।
नकमोती–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का मोती।
नक़ल–संज्ञा स्त्री० १. अनुकृति। कापी। २. अनुकरण। ३. स्वाँग।

नक़लनवीस–संज्ञा पुं० वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नक़ल करना होता है।

नक़ली–वि० १. बनावटी। २. जाली।

नक़श–संज्ञा पुं० १. दे० "नक़्श"। २. ताश से खेला जानेवाला एक जूआ।

नक़शा–संज्ञा पुं० दे० "नक़्शा"।

नकसीर–संज्ञा स्त्री० आप से आप नाक से रक्त बहना।

नक़ाब–संज्ञा स्त्री० पुं० १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। २. घूँघट।

नकार–संज्ञा पुं० १. नहीं। २. इनकार।

नकारा†–वि० निकम्मा। खराब।

नक़ाशी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़्क़ाशी"।

नक़ीब–संज्ञा पुं० भाट।

नकुल–संज्ञा पुं० १. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम। २. बेटा।

नकेल–संज्ञा स्त्री० ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है।

नक्का–संज्ञा पुं० सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है।

नक़्क़ारखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पर नक़्क़ारा बजता है।

नक़्क़ारची–संज्ञा पुं० नगाड़ा बजानेवाला।

नक़्क़ारा–संज्ञा पुं० नगाड़ा।

नक़्क़ाल–संज्ञा पुं० १. नक़ल करनेवाला। २. भाँड़।

नक़्क़ाश–संज्ञा पुं० वह जो नक़्क़ाशी करता हो।

नक़्क़ाशी–संज्ञा स्त्री० [वि० नक्क़ाशीदार] १. धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २. वे बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।

नक्कू–वि० १. जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला।

नक्त–संज्ञा पुं० रात।

नक़्ल–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़ल"।

नक़्श–वि० बनाया या लिखा हुआ। संज्ञा पुं० १. तसवीर। २. खोदकर या क़लम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३. मोहर। ४. तावीज़।

नक़्शा–संज्ञा पुं० १. तसवीर। २. आकृति। ३. किसी धरातल पर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथिवी या खगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो।

नक्षत्र–संज्ञा पुं० चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का समूह।

नक्षत्रनाथ–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रपथ–संज्ञा पुं० नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्रराज–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रलोक–संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि–संज्ञा स्त्री० तारा टूटना।

नक्षत्री–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
वि० भाग्यवान्।

नख–संज्ञा पुं० हाथ या पैर का नाख़ून। संज्ञा स्त्री० गुड्डी उड़ाने के लिये पतला रेशमी या सूती तागा।

नात†–संज्ञा पुं० १. नातेदार। २. नाता।
नातरु०–अव्य० अन्यथा।
नाता–संज्ञा पुं० रिश्ता।
नाताक़त–वि० निर्बल।
नाती–संज्ञा पुं० [स्त्री० नतिनी, नातिन] बेटी या बेटे का बेटा।
नाते–क्रि० वि० १. संबंध से। २. हेतु।
नातेदार–वि० [संज्ञा नातेदारी] रिश्तेदार।
नाथ–संज्ञा पुं० १. प्रभु। मालिक। २. पति। ३. वह रस्सी जिसे बैल, भैंसे आदि की नाक छेदकर उन्हें वश करने के लिये डाल देते हैं।
संज्ञा स्त्री० १. नाथने की क्रिया या भाव। २. जानवरों की नकेल।
नाथना–क्रि० स० १. नकेल डालना। २. नत्थी करना।
नाथद्वारा–संज्ञा पुं० उदयपुर राज्य के अंतर्गत वल्लभ संप्रदाय के वैष्णवों का एक प्रसिद्ध स्थान जहाँ श्रीनाथजी की मूर्त्ति स्थापित है।
नाद–संज्ञा पुं० १. शब्द। २. संगीत।
नादना०–क्रि० स० बजाना।
क्रि० अ० १. बजना। २. लहलहाना।
नादान–वि० मूर्ख, अनजान।
नादिर–वि० अनोखा।
नादिरशाही–संज्ञा स्त्री० भारी अंधेर या अत्याचार।
वि० बहुत कठोर और उग्र।
नादिहंद–वि० जिससे रकम वसूल न हो।
नादी–वि० [स्त्री० नादिनी] १. शब्द करनेवाला। २. बजनेवाला।
नाधना–क्रि० स० १. जोतना। २. जोड़ना। ३. गूँथना। ४. आरंभ करना।
नानक–संज्ञा पुं० पंजाब के एक प्रसिद्ध महात्मा जो सिख संप्रदाय के आदि-गुरु थे।
नानकपंथी–संज्ञा पुं० गुरु नानक का अनुयायी। सिख।
नानकशाही–वि० १. गुरु नानक से संबंध रखनेवाला। २. नानकशाह का शिष्य या अनुयायी। सिख।
नानख़ताई–संज्ञा स्त्री० टिकिया के आकार की एक सोंधी खस्ता मिठाई।
नानबाई–संज्ञा पुं० रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला।
नाना–वि० १. बहुत तरह के। २. बहुत।
संज्ञा पुं० [स्त्री० नानी] माँ का बाप।
नानिहाल–संज्ञा पुं० नाना-नानी का स्थान या घर।
नानी–संज्ञा स्त्री० माँ की माँ।
ना-नुकर–संज्ञा पुं० इनकार।
नान्हा†–वि० छोटा।
नाप–संज्ञा स्त्री० १. परिमाण। माप। २. नापने का काम। ३. नापने की वस्तु।
नाप-जोख, नाप-तौल–संज्ञा स्त्री० १. नापने जोखने या तौलने की क्रिया। २. परिमाण या मात्रा जो नाप या तौलकर स्थिर की जाय।
नापना–क्रि० स० १. मापना। २. कोई वस्तु कितनी है, इसका पता लगाना।
नापसंद–वि० १. जो पसंद न हो। २. अप्रिय।
नापाक–वि० [संज्ञा नापाकी] १. अशुद्ध। २. मैला-कुचैला।

वि० आनंद देनेवाली।
नंदि–संज्ञा पुं० आनंद।
नंदिकेश्वर–संज्ञा पुं० शिव के द्वारपाल बैल का नाम।
नंदिघोष–संज्ञा पुं० १. अर्जुन का रथ। २. बंदीजनों की घोषणा।
नंदित–वि० आनंदित।
*वि० बजता हुआ।
नंदिन*–संज्ञा स्त्री० लड़की।
नंदिनी–संज्ञा स्त्री० १. पुत्री। २. उमा। ३ गंगा। ४. पति की बहन।
नंदी–संज्ञा पुं० शिव का द्वारपाल बैल।
वि० आनंदयुक्त।
नंदीश्वर–संज्ञा पुं० शिव।
नंदेऊ*†–संज्ञा पुं० दे० "नंदोई"।
नंदोई–संज्ञा पुं० पति का बहनोई।
नंबर–वि० संख्या।
संज्ञा पुं० १. गिनती। २. कपड़ा नापने का ३६ इंच का एक गज़।
नंबरदार–संज्ञा पुं० गाँव का वह ज़मींदार जो अपनी पट्टी के और हिस्सेदारों से मालगुज़ारी आदि वसूल करने में सहायता दे।
नंबरवार–क्रि० वि० सिलसिलेवार।
नंबरी–वि० १. जिस पर नंबर लगा हो। २. प्रसिद्ध।
नंबरी गज़–संज्ञा पुं० दे० "नंबर (२)"।
नंबरी सेर–संज्ञा पुं० तौलने का सेर जो अँगरेज़ी रुपयों से ८० भर का होता है।
नंस*–वि० नष्ट।
न–अव्य० १. नहीं। २. या नहीं।
नइ*–वि० स्त्री० 'नया' का स्त्री० रूप।
नउआ†–संज्ञा पुं० दे० "नाऊ"।
नउका*†–संज्ञा स्त्री० दे० "नौका"।
नउत*†–वि० नीचे की ओर झुका हुआ।
नककटा–वि० [स्त्री० नककटी] १. जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज।
नकघिसनी–संज्ञा स्त्री० १. ज़मीन पर नाक रगड़ने की क्रिया। २. बहुत अधिक दीनता।
नकचढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० नकचढ़ी] बद-मिज़ाज।
नकछिकनी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घास जिसके फूल सूँघने से छींकें आने लगती हैं।
नकटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० नकटी] १. वह जिसकी नाक कट गई हो। २. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह के समय गाती हैं।
वि० १. जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज।
नक़द–संज्ञा पु० रुपया-पैसा।
वि० रुपया जो तैयार हो।
नक़दी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़द"।
नकना*†–क्रि० स० लाँघना।
क्रि० अ० हैरान होना।
क्रि० स० नाक में दम करना।
नकफूल–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का लौंग या कील।
नक़ब–संज्ञा स्त्री० सेंध।
नकबानी*†–संज्ञा स्त्री० हैरानी।
नकबेसर–संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने की छोटी नथ।
नकमोती–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का मोती।
नक़ल–संज्ञा स्त्री० १. अनुकृति। कापी २. अनुकरण। ३. स्वाँग।

नापित–संज्ञा पुं० नाई।
नाफ़ा–संज्ञा पुं० कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।
नाबदान–संज्ञा पुं० पनाला।
नाबालिग़–वि० [संज्ञा नाबालिगी] जो पूरा जवान न हुआ हो।
नाभा–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध भक्त जिनका नाम नारायणदास था। इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था।
नाभि–संज्ञा स्त्री० १. चक्रमध्य। २. तुंदी। ३. कस्तूरी।
संज्ञा पुं० प्रधान व्यक्ति या वस्तु।
नामंज़ूर–वि० [संज्ञा नामंज़ूरी] जो माना न गया हो।
नाम–संज्ञा पुं० [वि० नामी] १. वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति या समूह का बोध हो। २. प्रसिद्ध।
नामक–वि० नाम धारण करनेवाला।
नामकरण–संज्ञा पुं० १. नाम रखने का काम। २. हिंदुओं के सोलह संस्कारों में से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।
नामज़द–वि० १. जिसका नाम किसी बात के लिये निश्चित कर लिया गया हो। २. प्रसिद्ध।
नामदेव–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जिनकी कथा भक्तमाल में है। २. महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।
नामधराई–संज्ञा स्त्री० बदनामी।
नाम-धाम–संज्ञा पुं० नाम और पता।
नामधेय–संज्ञा पुं० १. नाम। २. नामकरण।
वि० नाम का।
नामनिशान–संज्ञा पुं० पता।
नामबोला–संज्ञा पुं० भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।
नामर्द–वि० [संज्ञा नामर्दी] १. नपुंसक। २. डरपोक।
नामलेवा–संज्ञा पुं० १. नाम लेने-वाला। २. उत्तराधिकारी।
नामवर–वि० [संज्ञा नामवरी] प्रसिद्ध।
नामशेष–वि० १. नष्ट। २. मृत।
नामांकित–वि० जिस पर नाम लिखा या खुदा हो।
नामाकूल–वि० १. अयोग्य। २. अयुक्त।
नामी–वि० १. नामधारी। २. प्रसिद्ध।
नामुनासिब–वि० अनुचित।
नामुमकिन–वि० असंभव।
नामूसी–संज्ञा स्त्री० बेइज़्ज़ती।
नाम्ना–वि० [स्त्री० नाम्नी] नामवाला।
नायँ†*–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।
नायक–संज्ञा पुं० [स्त्री० नायिका] १. नेता। २. मालिक। ३. साहित्य में शृंगार का आलंबन या साधक रूप-यौवन-संपन्न पुरुष अथवा वह पुरुष जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक आदि का मुख्य विषय हो।
नायका*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "नायिका"। २. वेश्या की माँ। ३. दूती।
नायन–संज्ञा स्त्री० नाई की स्त्री।
नायब–संज्ञा पुं० १. मुख्तार। २. सहायक।
नायिका–संज्ञा स्त्री० १. रूप-गुण-संपन्न स्त्री। २. वह स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो अथवा किसी काव्य, नाटक आदि में जिसके चरित्र का वर्णन हो।

नक़लनवीस–संज्ञा पुं० वह आदमी, विशेषतः अदालत का मुहर्रिर, जिसका काम केवल दूसरों के लेखों की नक़ल करना होता है।

नक़ली–वि० १. बनावटी। २. जाली।

नक़श–संज्ञा पुं० १. दे० "नक़्श"। २. ताश से खेला जानेवाला एक जूआ।

नक़शा–संज्ञा पुं० दे० "नक़्शा"।

नकसीर–संज्ञा स्त्री० आप से आप नाक से रक्त बहना।

नक़ाब–संज्ञा स्त्री० पुं० १. वह कपड़ा जो मुँह छिपाने के लिये सिर पर से गले तक डाल लिया जाता है। २. घूँघट।

नकार–संज्ञा पुं० १. नहीं। २. इनकार।

नकारा‡–वि० निकम्मा। खराब।

नक़ाशी–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़्क़ाशी"।

नक़ीब–संज्ञा पुं० भाट।

नकुल–संज्ञा पुं० १. पांडु राजा के चौथे पुत्र का नाम। २. बेटा।

नकेल–संज्ञा स्त्री० ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है।

नक्का–संज्ञा पुं० सूई का वह छेद जिसमें डोरा पहनाया जाता है।

नक़्क़ारखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पर नक़्क़ारा बजता है।

नक़्क़ारची–संज्ञा पुं० नगाड़ा बजानेवाला।

नक़्क़ारा–संज्ञा पुं० नगाड़ा।

नक़्क़ाल–संज्ञा पुं० १. नक़ल करनेवाला। २. भाँड़।

नक़्क़ाश–संज्ञा पुं० वह जो नक़्क़ाशी करता हो।

नक़्क़ाशी–संज्ञा स्त्री० [वि० नक़्क़ाशीदार] १. धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २. वे बेल-बूटे जो इस प्रकार बनाए गए हों।

नक्कू–वि० १. जिसकी नाक बड़ी हो। २. अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला।

नक्त–संज्ञा पुं० रात।

नक़्ल–संज्ञा स्त्री० दे० "नक़ल"।

नक़्श–वि० बनाया या लिखा हुआ। संज्ञा पुं० १. तसवीर। २. खोदकर या क़लम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३. मोहर। ४. तावीज़।

नक़्शा–संज्ञा पुं० १. तसवीर। २. आकृति। ३. किसी धरातल पर बना हुआ वह चित्र जिसमें पृथिवी या खगोल का कोई भाग अपनी स्थिति के अनुसार अथवा और किसी विचार से चित्रित हो।

नक्षत्र–संज्ञा पुं० चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का समूह।

नक्षत्रनाथ–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रपथ–संज्ञा पुं० नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्रराज–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

नक्षत्रलोक–संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह लोक जिसमें नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि–संज्ञा स्त्री० तारा टूटना।

नक्षत्री–संज्ञा पुं० चंद्रमा। वि० भाग्यवान्।

नख–संज्ञा पुं० हाथ या पैर का नाखून। संज्ञा स्त्री० गुड्डी उड़ाने के लिये पतला रेशमी या सूती तागा।

नारंग-संज्ञा पुं० नारंगी।
नारंगी-संज्ञा स्त्री० १. नींबू की जाति का एक मझोला पेड़ जिसमें मीठे, सुगंधित और रसीले फल लगते हैं। २. नारंगी के छिलके का सा रंग। वि० पीलापन लिए हुए लाल रंग का।
नार-संज्ञा स्त्री० १. गरदन। २. जुलाहों की ढरकी।
†संज्ञा पुं० १. नाला। २. बहुत मोटा रस्सा। ३. नारा।
‡संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।
नारकी-वि० पापी।
नारद-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र कहे जाते हैं। २. झगड़ा करानेवाला आदमी।
नारदीय-वि० नारद संबंधी।
नारना-क्रि० स० थाह लगाना।
नारसिंह-संज्ञा पुं० नरसिंह रूपधारी विष्णु।
नारा-संज्ञा पुं० इज़ारबंद।
नाराच-संज्ञा पुं० १. लोहे का बाण। २. दुर्दिन।
नाराज़-वि० [संज्ञा नाराजगी, नाराज़ी] अप्रसन्न।
नारायण-संज्ञा पुं० विष्णु।
नारायणीय-वि० नारायण-संबंधी।
नाराशंस-वि० जिसमें मनुष्यों की प्रशंसा हो।
संज्ञा पुं० वेदों के वे मंत्र जिनमें राजाओं आदि की प्रशंसा होती है।
नारि-संज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।
नारिकेल-संज्ञा पुं० नारियल।
नारियल-संज्ञा पुं० १. खजूर की जाति का एक पेड़। इसके बड़े गोल फलों के ऊपर एक बहुत कड़ा रेशेदार छिलका होता है जिसके नीचे कड़ी गुठली और सफ़ेद गिरी होती है जो खाने में मीठी होती है। २. नारियल का हुक्का।
नारियली-संज्ञा स्त्री० १. नारियल का खोपड़ा। २. नारियल का हुक्का।
नारी-संज्ञा स्त्री० औरत।
ः संज्ञा स्त्री० दे० "नाड़ी"।
नारू-संज्ञा पुं० ढोल।
नालंद-संज्ञा पुं० बौद्धों का एक प्राचीन क्षेत्र और विद्यापीठ जो मगध में पटने से तीस कोस दक्खिन था।
नाल-संज्ञा स्त्री० १. डाँड़ी। २. नली। ३. सुनारों की फुकनी। ४. जुलाहों की नली। ५. नारा जो पैदा होनेवाले बच्चों को लगा रहता है। ६. जल बहने का स्थान। ७. कुंडलाकार गढ़ा हुआ पत्थर का भारी टुकड़ा जिसके बीचोबीच पकड़कर उठाने के लिये एक दस्ता रहता है। इसे अभ्यास के लिये कसरत करनेवाले उठाते हैं।
नालकटाई-संज्ञा स्त्री० तुरंत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम।
नालकी-संज्ञा स्त्री० इधर-उधर से खुली पालकी जिस पर एक मिहराबदार छाजन होती है।
नाला-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० नाली] लकीर के रूप में दूर तक गया हुआ वह गड्ढा जिसमें होकर बरसाती पानी किसी नदी आदि में जाता है।
नालायक़-वि० [संज्ञा नालायक़ी] अयोग्य।
नालिका-संज्ञा स्त्री० १. छोटी नाल

नखक्षत–संज्ञा पुं० वह दाग या चिह्न जो नाखून के गड़ने के कारण बना हो।
नखछोलिया✱†–संज्ञा पुं० दे० "नखक्षत"।
नखत, नखतर✱†–संज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।
नखना–क्रि० अ० डाँका जाना।
क्रि० स० पार करना।
क्रि० स० नष्ट करना।
नखरा–संज्ञा पुं० चोचला।
नखरा-तिल्ला–संज्ञा पुं० नखरा।
नखरीला†–वि० नखरा करनेवाला।
नखरेखा–संज्ञा स्त्री० नखक्षत।
नखरेबाज़–वि० [संज्ञा नखरेबाज़ी] जो बहुत नखरा करे।
नखराट–संज्ञा स्त्री० दे० "नखक्षत"।
नखशिख–संज्ञा पुं० १. नख से लेकर शिख तक के सब अंग। २. शरीर के सब अंगों का वर्णन।
नखियाना✱†–क्रि० स० नाखून गड़ाना।
नखी–संज्ञा पुं० वह जानवर जो नाखून से किसी पदार्थ को चीर या फाड़ सकता हो।
संज्ञा स्त्री० नख नामक गंधद्रव्य।
नखोटना✱†–क्रि० स० नाखून से खरोंचना या नोचना।
नग–संज्ञा पुं० १. पर्वत। २. साँप।
संज्ञा पुं० नगीना।
नगज–संज्ञा पुं० हाथी।
वि० जो पहाड़ से उत्पन्न हो।
नगण्य–वि० तुच्छ।
नगदंती–संज्ञा स्त्री० विभीषण की स्त्री।
नगद–संज्ञा पुं० दे० "नकद"।
नगधर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचंद्र।
नगनंदिनी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
नगनी–संज्ञा स्त्री० १. कन्या। २. नंगी स्त्री।
नगपति–संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत।
नगर–संज्ञा पुं० शहर।
नगरकीर्त्तन–संज्ञा पुं० वह गाना बजाना या कीर्त्तन, जो नगर की गलियों और सड़कों में घूम घूमकर हो।
नगरनारि–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
नगरपाल–संज्ञा पुं० वह जिसका काम नगर की रक्षा करना हो।
नगरवासी–संज्ञा पुं० नागरिक।
नगरी–संज्ञा स्त्री० नगर।
संज्ञा पुं० शहर में रहनेवाला।
नगाड़ा–संज्ञा पुं० दे० "नगारा"।
नगाधिप–संज्ञा पुं० हिमालय पर्वत।
नगारा–संज्ञा पुं० नगाड़ा।
नगारि–संज्ञा पुं० इंद्र।
नगी–संज्ञा स्त्री० रत्न।
नगीच†–क्रि० वि० दे० "नज़दीक"।
नगीना–संज्ञा पुं० रत्न।
नगेंद्र, नगेश–संज्ञा पुं० हिमालय।
नगेसरि†–संज्ञा पुं० दे० "नागकेशर"
नग्न–वि० जिसके ऊपर किसी प्रकार का आवरण न हो।
नग्नता–संज्ञा स्त्री० नंगे होने का भाव।
नचना✱†–क्रि० अ० नाचना।
वि० १. नाचनेवाला। २. बराबर इधर-उधर घूमनेवाला।
नचनि✱†–संज्ञा स्त्री० नाच।
नचनिया†–संज्ञा पुं० नाचनेवाला।
नचनी–वि० स्त्री० १. नाचनेवाली। २. इधर-उधर घूमती रहनेवाली।
नचाना–क्रि० स० १. नृत्य कराना। २. हैरान करना।

या डंठल। २. नाली।
नालिश-संज्ञा स्त्री० फरियाद।
नाली-संज्ञा स्त्री० जल बहने का पतला मार्ग।
संज्ञा स्त्री० नाड़ी।
नावँ०-संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाव-संज्ञा स्त्री० नौका।
नावक-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का छोटा बाण। २. मधुमक्खी का डंक। संज्ञा पुं० केवट।
नावर०-संज्ञा स्त्री० १. नाव। २. नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।
नाविक-संज्ञा पुं० मल्लाह।
नाश-संज्ञा पुं० १. ध्वंस। २. गायब होना।
नाशकारी-वि० नाशक।
नाशपाती-संज्ञा स्त्री० मझोले डील-डौल का एक पेड़ जिसके फल प्रसिद्ध मेवों में गिने जाते हैं।
नाशवान्-वि० अनित्य।
नाश्ता-संज्ञा पुं० जलपान।
नास-संज्ञा स्त्री० सुँघनी।
नासमझ-वि० [संज्ञा नासमझी] बेवकूफ।
नासा-संज्ञा स्त्री० [वि० नास्य] १. नाक। २. नाक का छेद।
नासापुट-संज्ञा पुं० नथना।
नासिक-संज्ञा पुं० महाराष्ट्र देश में एक तीर्थ जो उस स्थान के निकट है जहाँ से गोदावरी निकलती है।
नासिका-संज्ञा स्त्री० नाक।
नासूर-संज्ञा पुं० घाव, फोड़े आदि के भीतर दूर तक गया हुआ छेद, जिससे बराबर मवाद निकला करता है और जिसके कारण घाव जल्दी अच्छा नहीं होता।
नास्तिक-संज्ञा पुं० वह जो ईश्वर या परलोक आदि को न माने।
नास्तिकता-संज्ञा स्त्री० नास्तिक होने का भाव।
नाह०-संज्ञा पुं० दे० "नाथ"।
नाहक-क्रि० वि० वृथा।
नाह-नूह०-संज्ञा स्त्री० इनकार।
नाहर-संज्ञा पुं० सिंह।
संज्ञा पुं० टेसू का फूल।
नाहरू-संज्ञा पुं० नारू नाम का रोग।
संज्ञा पु० दे० "नाहर"।
नाहिनै०-वाक्य नहीं है।
नाहीं-अव्य० दे० "नहीं"।
निंत०-क्रि० वि० दे० "नित्य"।
निंद०-वि० दे० "निंद्य"।
निंदक-संज्ञा पुं० निंदा करनेवाला।
निंदन-संज्ञा पुं० [वि० निंदनीय, निंदित, निंद्य] निंदा करने का काम।
निंदना†०-क्रि० स० निंदा करना।
निंदनीय-वि० १. निंदा करने योग्य। २. बुरा।
निंदा-संज्ञा स्त्री० १. अपवाद। २. बदनामी।
निँदासा-वि० जिसे नींद आ रही हो।
निंदित-वि० बुरा।
निंदिया†-संज्ञा स्त्री० नींद।
निंद्य-वि० १. निंदा करने योग्य। २. बुरा।
निंब-संज्ञा स्त्री० नीम का पेड़।
निंबार्क-संज्ञा पुं० १. अरुणि या निंबादित्य नामक आचार्य। २. इनका चलाया हुआ वैष्णव-संप्रदाय।
निंबू-संज्ञा पुं० नीबू।
निः-अव्य० एक उपसर्ग। दे० "नि"।

नचौहाँ॰†–वि॰ जो सदा नाचता या इधर-उधर घूमता रहे।
नज़दीक–वि॰ [संज्ञा, वि॰ नज़दकी] निकट।
नज़म–संज्ञा स्त्री॰ कविता।
नज़र–संज्ञा स्त्री॰ १ दृष्टि। २. कृपा-दृष्टि। ३. निगरानी। ४. दृष्टि का वह कल्पित प्रभाव जो किसी सुंदर मनुष्य या अच्छे पदार्थ आदि पर पड़कर उसे खराब कर देनेवाला माना जाता है।
संज्ञा स्त्री॰ १. भेंट। २. अधीनता सूचित करने की एक रस्म जिसमें लोग नकद रुपया आदि हथेली में रखकर सामने जाते हैं।
नज़रना॰–क्रि॰ अ॰ १. देखना। २. नज़र लगाना।
नज़रबंद–वि॰ जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय जहाँ से कहीं आ-जा न सके।
नज़रबाग़–संज्ञा पुं॰ महलों या बड़े बड़े मकानों आदि के सामने या चारों ओर का बाग़।
नज़राना–क्रि॰ अ॰ नज़र लग जाना।
क्रि॰ स॰ नज़र लगाना।
संज्ञा पुं॰ भेंट।
नज़ला–संज्ञा पुं॰ जुकाम।
नज़ाकत–संज्ञा स्त्री॰ नाज़ुक होने का भाव।
नजात–संज्ञा स्त्री॰ मुक्ति।
नज़ारा–संज्ञा पुं॰ दृश्य।
नजिकाना॰†–क्रि॰ स॰ निकट पहुँचना।
नजीक॰–क्रि॰ वि॰ निकट।
नजूम–संज्ञा पुं॰ ज्योतिष विद्या।
नजूमी–संज्ञा पुं॰ ज्योतिषी।
नट–संज्ञा पुं॰ १. नाटक खेलनेवाले पात्र। २. एक नीच जाति जो प्रायः गा-बजाकर और खेल-तमाशे करके निर्वाह करती है।
नटई†–संज्ञा स्त्री॰ १. गला। २. गले की घंटी।
नटखट–वि॰ १. ऊधमी। २. चालाक।
नटना–क्रि॰ अ॰ १. नाचना। २. मुकरना।
नटनि॰†–संज्ञा स्त्री॰ नृत्य।
संज्ञा स्त्री॰ इनकार।
नटनी–संज्ञा स्त्री॰ १. नट की स्त्री। २. नट जाति की स्त्री।
नटवर–संज्ञा पुं॰ १. नाट्यकला में प्रवीण मनुष्य। २. श्रीकृष्ण।
वि॰ चालाक।
नटसार॰†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "नाट्यशाला"।
नटसाल–संज्ञा स्त्री॰ १. काँटे का वह भाग जो निकाल लिए जाने पर भी टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २. कसक।
नटिन–संज्ञा स्त्री॰ नट की स्त्री।
नटी–संज्ञा स्त्री॰ १. नट जाति की स्त्री। २. नर्तकी।
नटुआ, नटुवा†–संज्ञा पुं॰ १. दे॰ "नट"। २. "नटई"।
नतरु, नतरु॰†–क्रि॰ वि॰ नहीं तो।
नति–संज्ञा स्त्री॰ १. झुकाव। २. नमस्कार। ३. नम्रता।
नतिनी†–संज्ञा स्त्री॰ लड़की की लड़की।
नतीजा–संज्ञा पुं॰ परिणाम।
नतु–क्रि॰ वि॰ नहीं तो।
नतैत†–संज्ञा पुं॰ संबंधी।

निःशंक-वि० निडर।
निःशब्द-वि० जहाँ शब्द न हो या जो शब्द न करे।
निःशेष-वि० १. समूचा। २. समाप्त।
निःश्रेणी-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।
निःश्रेयस-वि० १. मोक्ष। २ कल्याण।
निःश्वास-संज्ञा पुं० साँस।
निःसंकोच-क्रि० वि० बेधड़क।
निःसंग-वि० १. बिना मेल या लगाव का। २. निर्लिप्त।
निःसंतान-वि० लावल्द।
निःसंदेह-वि० संदेह-रहित। अव्य० १. बिना किसी संदेह के। २. बेशक।
निःसंशय-वि० संदेह-रहित।
निःसत्त्व-वि० जिसमें कुछ असलियत, तत्त्व या सार न हो।
निःसरण-संज्ञा पुं० १. निकलना। २. निकलने का रास्ता। ३. निर्वाण।
निःसीम-वि० १. बेहद। २. बहुत बड़ा या अधिक।
निःसृत-वि० निकला हुआ।
निःस्पृह-वि० १. इच्छारहित। २ निर्लोभ।
निःस्वार्थ-वि० जो अपने लाभ, सुख या सुभीते का ध्यान न रखता हो।
नि-अव्य० एक उपसर्ग जिसके लगने से शब्दों में इन अर्थों की विशेषता होती है—संघ या समूह, अधोभाव, अत्यंत, आदेश, नित्य, कौशल, बंधन, अंतर्भाव, समीप, दर्शन आदि। संज्ञा पुं० निषाद स्वर का संकेत।
निअर†ॐ-अव्य० निकट। वि० समान।

निअराना†ॐ-क्रि० स० निकट जाना। क्रि० अ० निकट आना।
निकंटकॐ-वि० दे० "निष्कंटक"।
निकंदन-संज्ञा पुं० नाश।
निकट-वि० पास का। क्रि० वि० पास। समीप।
निकटवर्ती-वि० [स्त्री० निकटवर्त्तिनी] पासवाला।
निकटस्थ-वि० पास का।
निकम्मा-वि० [स्त्री० निकम्मी] जो कोई काम-धंधा न करे।
निकर-संज्ञा पुं० समूह।
निकरना†ॐ-क्रि० अ० दे० "निकलना"।
निकलंक-वि० दोषरहित।
निकलंकी-संज्ञा पुं० कल्कि अवतार।
निकल-संज्ञा स्त्री० एक धातु जो कोयले, गंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। साफ़ होने पर यह चाँदी की तरह चमकती है।
निकलना-क्रि० अ० १. भीतर से बाहर आना। २. उत्तीर्ण होना। ३. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। ४. प्रचलित होना। ५. मुक्त होना। ६. बिकना। ७. प्रकाशित होना। ८. हिसाब-किताब होने पर कोई रक़म ज़िम्मे ठहरना। ९. बीतना। १०. घोड़े, बैल आदि का सवारी लेकर चलना आदि सीखना।
निकलवाना-क्रि० स० निकालने का काम दूसरे से कराना।
निकसना†-क्रि० अ० दे० "निकलना"।

नत्थी–संज्ञा स्त्री० कागज़ या कपड़े आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर सबको एक ही में बाँधना या फँसाना।
नथ–संज्ञा स्त्री० बाली की तरह का नाक का एक गहना।
नथना–संज्ञा पुं० १. नाक का अगला भाग। २. नाक का छेद।
क्रि० अ० १. किसी के साथ नत्थी होना। २. छिदना।
नथनी–संज्ञा स्त्री० नाक में पहनने की छोटी नथ।
नथिया, नथुनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "नथ"।
नद–संज्ञा पुं० बड़ी नदी अथवा ऐसी नदी जिसका नाम पुंलिंग-वाची हो।
नदराज–संज्ञा पुं० समुद्र।
नदारद–वि० ग़ायब।
नदिया⊕†–संज्ञा स्त्री० दे० "नदी"।
नदी–संज्ञा स्त्री० दरिया।
नदीश–संज्ञा पुं० समुद्र।
नद्ध–वि० बँधा हुआ।
नधना–क्रि० अ० १. जुतना। २. जुड़ना। ३. काम का ठनना।
ननँद, ननद–संज्ञा स्त्री० पति की बहिन।
ननदोई–संज्ञा पुं० ननद का पति।
ननसार–संज्ञा स्त्री० दे० "ननिहाल"।
ननिहाल–संज्ञा पुं० नाना का घर।
नन्हा–वि० [स्त्री नन्हीं] छोटा।
नन्हाई⊕–संज्ञा स्त्री० छोटापन।
नपाई–संज्ञा स्त्री० नापने का काम, भाव या मज़दूरी।
नपाक⊕†–वि० अपवित्र।
नपुंसक–संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसमें कामेच्छा बहुत ही कम हो और किसी विशेष उपाय से जाग्रत हो। २. हिजड़ा।
नपुंसकता–संज्ञा स्त्री० १. नपुंसक होने का भाव। २. नामर्दी।
नपुंसकत्व–संज्ञा पुं० नामर्दी।
नफ़रत–संज्ञा स्त्री० घिन।
नफ़री–संज्ञा स्त्री० १. एक मज़दूर की एक दिन की मज़दूरी या काम। २. मज़दूरी का दिन।
नफ़ा–संज्ञा पुं० लाभ।
नफ़ासत–संज्ञा स्त्री० उम्दापन।
नफ़ीस–वि० १. उमदा। २. सुंदर।
नबी–संज्ञा पुं० रसूल।
नबेड़ना–क्रि० स० तै करना।
नबेड़ा–संज्ञा पुं० फ़ैसला।
नब्ज़–संज्ञा स्त्री० नाड़ी।
नभ–संज्ञा पुं० आकाश।
नभचर–संज्ञा पुं० दे० "नभश्चर"।
नभश्चर–वि० आकाश में चलनेवाला।
नभस्थल–संज्ञा पुं० आकाश।
नम–वि० [संज्ञा नमी] गीला।
नमक–संज्ञा पुं० लवण। नोन।
नमकख्वार–वि० नमक खानेवाला।
नमकसार–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ नमक निकलता या बनता हो।
नमकहराम–संज्ञा पुं० [संज्ञा नमकहरामी] कृतघ्न।
नमकहलाल–संज्ञा पुं० [संज्ञा नमकहलाली] स्वामिभक्त।
नमकीन–वि० जिसमें नमक का सा स्वाद हो।
नमन–संज्ञा पुं० [वि० नमनीय, नमित] प्रणाम।
नमनीय–वि० १. आदरणीय। २.

निकाई॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "निकाय"। संज्ञा स्त्री॰ १. भलाई। २. खूबसूरती।
निकाज–वि॰ बेकाम।
निकाम–वि॰ १. निकम्मा। २. बुरा। क्रि॰ वि॰ व्यर्थ।
निकाय–संज्ञा पुं॰ १. समूह। २. घर।
निकारना॰†–क्रि॰ स॰ दे॰ "निकालना"।
निकालना–क्रि॰ स॰ १. भीतर से बाहर लाना। २. ले जाना। ३. चलाना। ४. अलग करना। ५. कम करना। ६. छुड़ाना। ७. खपाना। ८. चलाना। ९. हल करना। १०. ईजाद करना। ११. उद्धार करना। १२. रकम ज़िम्मे ठहराना। १३. बरामद करना।
निकाला–संज्ञा पुं॰ १. निकालने का काम। २. किसी स्थान से निकाले जाने का दंड।
निकास–संज्ञा पुं॰ १. निकलने की क्रिया या भाव। २. निकालने की क्रिया या भाव। ३. दरवाज़ा। ४. मैदान। ५. आमदनी।
निकासी–संज्ञा स्त्री॰ १. प्रस्थान। २. मुनाफ़ा। ३. आय। ४. बिक्री।
निकासना†–क्रि॰ स॰ दे॰ "निकालना"।
निकाह–संज्ञा पुं॰ मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।
निकुंज–संज्ञा पुं॰ लता-गृह।
निकृष्ट–वि॰ बुरा।
निकृष्टता–संज्ञा स्त्री॰ बुराई।
निकेत–संज्ञा पुं॰ १. घर। २. स्थान।
निक्षिप्त–वि॰ १. फेंका हुआ। २. छोड़ा हुआ।
निक्षेप–संज्ञा पुं॰ १. फेंकने या डालने की क्रिया या भाव। २. चलाने की क्रिया या भाव। ३. त्याग। ४. धरोहर।
निक्षेपण–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निक्षिप्त, निक्षेप्य] १. फेंकना। २. छोड़ना।
निखंड–वि॰ ठीक।
निखट्टू–वि॰ १. जो कुछ कमाई न करे। २. निकम्मा।
निखरना–क्रि॰ अ॰ १. निर्मल होना। २. रंगत का खुलता होना।
निखवख॰–वि॰ बिलकुल। बहुत से।
निखार–संज्ञा पुं॰ १. निर्मलता। २. शृंगार।
निखारना–क्रि॰ स॰ साफ़ करना।
निखालिस†–वि॰ विशुद्ध।
निखिल–वि॰ संपूर्ण।
निखोट–वि॰ १. निर्दोष। २. साफ़। क्रि॰ वि॰ बेधड़क।
निगंध॰–वि॰ गंधहीन।
निगड़–संज्ञा स्त्री॰ बेड़ी।
निगम–संज्ञा पुं॰ मार्ग।
निगमागम–संज्ञा पुं॰ वेदशास्त्र।
निगरानी–संज्ञा स्त्री॰ देख-रेख।
निगलना–क्रि॰ स॰ १. लील जाना। २. दूसरे का धन आदि मार बैठना।
निगहबान–संज्ञा पुं॰ रक्षक।
निगहबानी–संज्ञा स्त्री॰ रक्षा।
निगाली–संज्ञा स्त्री॰ हुक्के की नली जिसे मुँह में रखकर धुआँ खींचते हैं।
निगाह–संज्ञा स्त्री॰ १. दृष्टि। २. तकाई। ३. कृपादृष्टि। ४. परख।
निगुरा–वि॰ अदीक्षित।
निगूढ़–वि॰ अत्यंत गुप्त।

जो झुक सके।
नमस्कार-संज्ञा पुं० प्रणाम।
नमस्ते-एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार है।
नमाज़-संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना जो नित्य पाँच बार होती है।
नमाज़ी-संज्ञा पुं० १. नमाज़ पढ़नेवाला। २. वह वस्त्र जिस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जाती है।
नमानां†-क्रि० स० झुकाना।
नमित-वि० झुका हुआ।
नमी-संज्ञा स्त्री० गीलापन।
नमूना-संज्ञा पुं० १. बानगी। २. ढाँचा।
नम्र-वि० विनीत।
नय-संज्ञा पुं० १. नीति। २. नम्रता। ●संज्ञा स्त्री० नदी।
नयकारी●-संज्ञा पुं० १. नाचनेवालों का मुखिया। २. नाचनेवाला।
नयन-संज्ञा पुं० नेत्र।
नयनगोचर-वि० समक्ष।
नयनपट-संज्ञा पुं० आँख की पलक।
नयना●†-क्रि० अ० १. नम्र होना। २. झुकना।
† संज्ञा पुं० आँख।
नयनी-संज्ञा स्त्री० आँख की पुतली। वि० स्त्री० आँखवाली।
नयनू-संज्ञा पु० मक्खन।
नयर●-संज्ञा पुं० नगर।
नयशील-वि० १. नीतिज्ञ। २. विनीत।
नया-वि० नवीन। हाल का।
नयापन-संज्ञा पुं० नवीनता।
नर-संज्ञा पुं० पुरुष।
वि० जो (प्राणी) पुरुष जाति का हो।
नरकंत●-संज्ञा पुं० राजा।
नरक-संज्ञा पुं० १. दोज़ख़। जहन्नुम। २. बहुत ही गंदा स्थान।
नरकगामी-वि० नरक में जानेवाला।
नरक चतुर्दशी-संज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी जिस दिन घर का कूड़ा-कतवार निकालकर फेंका जाता है।
नरकट-संज्ञा पुं० बेंत की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा। इसके डंठल कलमें, निगालियाँ, दौरियाँ तथा चटाइयाँ आदि बनाने के काम में आते हैं।
नरकेसरी-संज्ञा पुं० नृसिंह।
नरकेहरि-संज्ञा पुं० दे० "नरकेसरी"।
नरगिस-संज्ञा स्त्री० प्याज़ की तरह का एक पौधा जिसमें कटोरी के आकार का सफ़ेद रंग का फूल लगता है।
नरत्व-संज्ञा पुं० नर होने का भाव।
नरदेव-संज्ञा पुं० १. राजा। २. ब्राह्मण।
नरनाथ-संज्ञा पुं० राजा।
नरनाह●-संज्ञा पुं० राजा।
नरपिशाच-संज्ञा पुं० जो मनुष्य होकर भी पिशाचों का सा काम करे।
नरभक्षी-संज्ञा पुं० राक्षस।
नरमा-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कपास।
नरमाई●†-संज्ञा स्त्री० दे० "नरमी"।
नरमाना-क्रि० स० नरम करना। क्रि० अ० नरम होना।
नरमी-संज्ञा स्त्री० कोमलता।
नरमेध-संज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञ जिसमें प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी।
नरलोक-संज्ञा पुं० संसार।

निगृहीत–वि० १. पकड़ा हुआ। २. आक्रमित। आक्रांत। ३. पीड़ित।

निगोड़ा–वि० [स्त्री० निगोड़ी] १. अभागा। २. दुष्ट।

निग्रह–संज्ञा पुं० १. रोक। २. दमन। ३. चिकित्सा। ४. डाँट। ५. सीमा।

निग्रही–वि० १. रोकनेवाला। २. दंड देनेवाला।

निघंटु–संज्ञा पुं० १. वैदिक शब्दों का कोश। २. शब्द-संग्रह मात्र।

निघटनाः–क्रि० अ० दे० "घटना"।

निघर-घट–वि० १. जिसका कहीं घर-घाट न हो। २. निर्लज्ज।

निघरा–वि० निगोड़ा।

निचय–संज्ञा पुं० निश्चय।

निचला–वि० [स्त्री० निचली] नीचे का। वि० स्थिर।

निचाई–संज्ञा स्त्री० १. नीचापन। २. कमीनापन।

निचान–संज्ञा स्त्री० १. नीचापन। २. ढाल।

निचिंत–वि० चिंतारहित।

निचुड़ना–क्रि० अ० गारना।

निचोड़–संज्ञा पुं० १. निचोड़ने से निकला हुआ रस आदि। २. सार। ३. सारांश।

निचोड़ना–क्रि० स० १. गारना। २. किसी वस्तु का सार भाग निकाल लेना।

निचोनाः†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोरनाः†–क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।

निचोल–संज्ञा पुं० स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।

निचौहाँ–वि० [स्त्री० निचौहीं] नमित।

निचौहें–क्रि० वि० नीचे की ओर।

निछक्का–संज्ञा पुं० निराला।

निछत्र–वि० छत्रहीन। वि० क्षत्रियों से हीन।

निछनियाँ†–क्रि० वि० दे० "निछान"

निछान†–वि० खालिस। क्रि० वि० एकदम।

निछावर–संज्ञा स्त्री० १. उतारा। २. वह द्रव्य या वस्तु जो ऊपर घुमाकर दान की जाय या छोड़ दी जाय।

निछोह, निछोही–वि० १. जिसे छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय।

निज–वि० १. अपना। २. खास। ३. ठीक। अव्य० १. निश्चय। २. खासकर।

निजकाना†–क्रि० अ० समीप आना।

निज़ाम–संज्ञा पुं० १. बंदोबस्त। २. हैदराबाद के नव्वाबों का पदवी-सूचक नाम।

निजु†–वि० निज का।

निजोरःः–वि० निर्बल।

निठल्ला–वि० बेकार।

निठल्लू–वि० दे० "निठल्ला"।

निठाला–संज्ञा पुं० ऐसा समय जब कोई काम-धंधा न हो।

निठुर–वि० निर्दय।

निठुरईः–संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठुरताः–संज्ञा स्त्री० निर्दयता।

निठुराई–संज्ञा स्त्री० दे० "निठुरता"।

निठौर–संज्ञा पुं० १. बुरी जगह। २. बुरा दाँव।

निडर–वि० १. जिसे डर न हो। २. साहसी। ३. ढीठ।

शराब, अफ़ीम या गाँजा आदि मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है। २. मादक द्रव्य। ३. अभिमान।
नशाख़ोर–संज्ञा पुं० नशेबाज़।
नशीन–वि० बैठनेवाला।
नशीनी–संज्ञा स्त्री० बैठने की क्रिया या भाव।
नशीला–वि० नशा उत्पन्न करनेवाला।
नश्तर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत तेज़ छोटा चाकू। इसका व्यवहार फोड़े आदि चीरने में होता है।
नश्वर–वि० जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।
नष्ट–वि० १. जिसका नाश हो गया हो। २. निष्फल।
नष्टबुद्धि–वि० मूर्ख।
नष्ट-भ्रष्ट–वि० जो बिलकुल टूट-फूट या नष्ट हो गया हो।
नष्टा–संज्ञा स्त्री० १. वेश्या। २. व्यभिचारिणी।
नसंक‡–वि० निर्भय।
नस–संज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर तंतुओं का वह बंध या लच्छा जो पेशियों के छोर पर उन्हें दूसरी पेशियों या अस्थि आदि कड़े स्थानों से जोड़ने के लिये होता है। २. वे पतले रेशे या तंतु जो पत्तों में बीच बीच में होते हैं।
नसना‡–क्रि० अ० १. नष्ट होना। २. बिगड़ जाना।
क्रि० अ० भागना।
नसल–संज्ञा स्त्री० वंश।
नसवार–संज्ञा स्त्री० नास।
नसाना‡–क्रि० अ० १. नष्ट हो जाना। २. बिगड़ जाना।
नसीनी†–संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।
नसीब–संज्ञा पुं० भाग्य।
नसीबा†–संज्ञा पुं० दे० "नसीब"।
नसीहत–संज्ञा स्त्री० उपदेश।
नसेनी–संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।
नस्य–संज्ञा पुं० सुँघनी।
नहँ†–संज्ञा पुं० दे० "नाख़ून"।
नहना‡–क्रि० स० नाधना।
नहर–संज्ञा स्त्री० वह कृत्रिम जल-मार्ग जो खेतों की सिंचाई या यात्रा आदि के लिये तैयार किया जाता है।
नहरनी–संज्ञा स्त्री० हज्जामों का एक औज़ार जिससे नाख़ून काटे जाते हैं।
नहलाई–संज्ञा स्त्री० नहलाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
नहलाना–क्रि० स० नहवाना।
नहसुत–क्रि० स० नख की रेखा।
नहान–संज्ञा पुं० नहाने की क्रिया।
नहाना–क्रि० अ० १. शरीर को स्वच्छ करने या उसकी शिथिलता दूर करने के लिये उसे जल से धोना। २. बिलकुल तर हो जाना।
नहीं–अव्य० एक अव्यय जिसका व्यवहार निषेध या अस्वीकृति प्रकट करने के लिये होता है।
नहुष–संज्ञा पुं० अयोध्या का एक प्राचीन इक्ष्वाकुवंशी राजा।
नहूसत–संज्ञा स्त्री० मनहूसी।
नाँउँ–संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाँगा–वि० दे० "नंगा"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार के साधु जो नंगे ही रहते हैं।
नाँघना‡†–क्रि० स० लाँघना।
नाँद–संज्ञा स्त्री० हौदी।
नाँदना‡–क्रि० अ० शब्द करना।

निडरपन, निडरपना–संज्ञा पुं० निर्भयता।
निढाल–वि० शिथिल।
नितंत–क्रि० वि० दे० "नितांत"।
नितंब–संज्ञा पुं० चूतड़।
नितंबिनी–संज्ञा स्त्री० सुंदर नितंब-वाली स्त्री। सुंदरी।
नित–अव्य० १. रोज़। २. सदा।
नितल–संज्ञा पुं० सात पातालों में से एक।
नितांत–वि० सर्वथा।
निति‡–अव्य० दे० "नित"।
नित्य–वि० १. जो सब दिन रहे। २. प्रति दिन का।
अव्य० १. प्रति दिन। २. सदा।
नित्यकर्म–संज्ञा पुं० १. प्रति दिन का काम। २. वह धर्म-संबंधी कर्म जिसका प्रति दिन करना आवश्यक ठहराया गया हो।
नित्यक्रिया–संज्ञा स्त्री० नित्यकर्म।
नित्यता–संज्ञा स्त्री० नित्य होने का भाव।
नित्यत्व–संज्ञा पुं० नित्यता।
नित्यनियम–संज्ञा पुं० रोज़ का क़ायदा।
नित्यप्रति–अव्य० हर रोज़।
नित्यशः–अव्य० १. प्रति दिन। २. सदा।
निथंभ–संज्ञा पुं० खंभा।
निथरना–क्रि० अ० पानी या और किसी पतली चीज़ का स्थिर होना जिससे उसमें घुली हुई मैल आदि नीचे बैठ जाय।
निथार–संज्ञा पुं० घुली हुई चीज़ के बैठ जाने से अलग हुआ साफ़ पानी।
निदरना–क्रि० स० निरादर करना।
निदर्शन–संज्ञा पुं० १. दिखाने या प्रदर्शित करने का कार्य। २. उदाहरण।
निदहना–क्रि० स० जलाना।
निदाघ–संज्ञा पुं० १. गरमी। २. ग्रीष्म काल।
निदान–संज्ञा पुं० १. कारण। २. रोगनिर्णय। ३. अंत।
अव्य० अंत में।
वि० निकृष्ट।
निदारुण–वि० १. कठिन। २. दुःसह।
निदिध्यासन–संज्ञा पुं० फिर फिर स्मरण।
निदेश–संज्ञा पुं० १. शासन। २. आज्ञा।
निद्रा–संज्ञा स्त्री० नींद।
निद्रालु–वि० सोनेवाला।
निद्रित–वि० सोया हुआ।
निधड़क–क्रि० वि० १. बे रोक। २. बे खटके।
निधन–संज्ञा पुं० १. नाश। २. मरण।
वि० धनहीन।
निधनी–वि० निर्धन।
निधान–संज्ञा पुं० १. आधार। २. निधि।
निधि–संज्ञा स्त्री० ख़ज़ाना।
निधिनाथ, निधिपति–संज्ञा पुं० निधियों के स्वामी, कुबेर।
निनरा–वि० अलग।
निनाद–संज्ञा पुं० शब्द।
निनादी–वि० [स्त्री० निनादिनी] शब्द करनेवाला।
निनावाँ–संज्ञा पुं० मुँह के भीतरी भागों में निकलनेवाले महीन महीन लाल दाने जिनमें छरछराहट होती है।

क्रि० अ० १. आनंदित होना। २. मंगलाचरण।
नाँयँ‡-संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
अव्य० दे० "नहीं"।
नाँवँ-संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाँह*-संज्ञा पुं० स्वामी।
ना-अव्य० नहीं।
नाइक*-संज्ञा पुं० दे० "नायक"।
नाइन-संज्ञा स्त्री० १. नाई जाति की स्त्री। २. नाई की स्त्री।
नाईँ-संज्ञा स्त्री० समान दशा।
वि० स्त्री० समान।
नाई-संज्ञा पुं० नाऊ।
नाउँ‡*-संज्ञा पुं० दे० "नाम"।
नाउम्मेद-वि० निराश।
नाउम्मेदी-संज्ञा स्त्री० निराशा।
नाऊ‡-संज्ञा पुं० दे० "नाई"।
नाकंद-वि० अशिक्षित।
नाक-संज्ञा स्त्री० १. ओठों और आँखों के बीच की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय। २. कपाल के छेदों आदि का मल जो नाक से निकलता है। ३. मान।
नाकड़ा-संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें नाक पक जाती है।
नाकद्र-वि० [संज्ञा नाकद्री] जिसकी कद्र या प्रतिष्ठा न हो।
नाकना‡*-क्रि० स० लाँघना।
नाका-संज्ञा पुं० १. मुहाना। २. गली या रास्ते का आरंभ स्थान। ३. फाटक। ४. सूई का छेद।
नाकाबंदी-संज्ञा स्त्री० किसी रास्ते से कहीं जाने या घुसने की रुकावट।
नाकिस-वि० बुरा।
नाकेदार-संज्ञा पुं० नाके या फाटक पर रहनेवाले सिपाही।
वि० जिसमें नाका या छेद हो।
नाकेबंदी-संज्ञा स्त्री० दे० "नाकाबंदी"।
नाखुश-वि० [संज्ञा नाखुशी] नाराज़।
नाखून-संज्ञा पुं० नख।
नाग-संज्ञा पुं० [स्त्री० नागिन] १. साँप। २. हाथी।
नागकेसर-संज्ञा पुं० एक सीधा सदा-बहार पेड़।
नागभाग*-संज्ञा पुं० अफ़ीम।
नागपंचमी-संज्ञा स्त्री० सावन सुदी पंचमी।
नागपति-संज्ञा पुं० १. सर्पों का राजा वासुकि। २. हाथियों का राजा ऐरावत।
नागपाश-संज्ञा पुं० एक अस्त्र जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे।
नागफाँस-संज्ञा पुं० दे० "नागपाश"।
नागबला-संज्ञा स्त्री० गँगेरन।
नागबेल-संज्ञा स्त्री० पान।
नागर-वि० [स्त्री० नागरी] १. नगर-संबंधी। २. नगर में रहनेवाला।
संज्ञा पुं० १. नगर में रहनेवाला मनुष्य। २. चतुर आदमी। ३. गुजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति।
नागरता-संज्ञा स्त्री० नागरिकता।
नागरबेल-संज्ञा स्त्री० पान।
नागरमोथा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का तृण या घास जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है।
नागराज-संज्ञा पुं० १. शेषनाग। २. ऐरावत।
नागरिक-वि० १. नगर-संबंधी। २. नगर में रहनेवाला। ३. चतुर

निनौना॰–क्रि॰ स॰ झुकाना।
† क्रि॰ स॰ नीचे करना।
निनानबे–वि॰ नब्बे और नौ।
निपंग॰–वि॰ निकम्मा।
निपजना॰†–क्रि॰ अ॰ १. उपजना। २. बढ़ना।
निपजी॰–संज्ञा स्त्री॰ लाभ।
निपत्र–वि॰ ठूँठा।
निपट–अव्य॰ १. निरा। २. बिल्कुल।
निपटना–क्रि॰ अ॰ दे॰ "निबटना"।
निपतन–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निपतित] अधःपतन।
निपात–संज्ञा पुं॰ १. पतन। २. मृत्यु।
वि॰ बिना पत्तों का।
निपातन–संज्ञा पुं॰ १. गिराने का कार्य्य। २. नाश।
निपातना॰–क्रि॰ स॰ १. नीचे गिराना। २. नष्ट करना। ३. वध करना।
निपाती–वि॰ १. गिरानेवाला। २. मारनेवाला।
संज्ञा पुं॰ शिव।
॰वि॰ बिना पत्ते का।
निपीड़न–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निपीड़ित] पीड़ित करना।
निपुण–वि॰ दक्ष।
निपुनाई–वि॰ निपुणता।
निपूत, निपूता॰†–वि॰ [स्त्री॰ निपूती] पुत्रहीन।
निफरना–क्रि॰ अ॰ चुभकर या धँसकर आर-पार होना।
क्रि॰ अ॰ साफ़ होना।
निफल॰–वि॰ निरर्थक।
निफाक़–संज्ञा पुं॰ १. विरोध। २. फूट।

निबंध–संज्ञा पुं॰ १. बंधन। २. लेख।
निबंधन–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निबद्ध] १. बंधन। २. व्यवस्था।
निबकौरी†–संज्ञा स्त्री॰ १. नीम का फल। २. नीम का बीज।
निबटना–क्रि॰ अ॰ [संज्ञा निबटेरा, निबटाव] १. निवृत्त होना। २. समाप्त होना। ३. खतम होना। ४. शौच आदि से निवृत्त होना।
निबटाना–क्रि॰ स॰ १. समाप्त करना। २. चुकाना।
निबटेरा–संज्ञा पुं॰ १. छुट्टी। २. समाप्ति। ३. फ़ैसला।
निबड़ना॰–क्रि॰ अ॰ दे॰ "निबटना"।
निबद्ध–वि॰ १. बँधा हुआ। २. गुथा हुआ। ३. बैठाया या जड़ा हुआ।
निबर†–वि॰ दे॰ "निर्बल"।
निबरना–क्रि॰ अ॰ १. छूटना। २. समाप्त होना। ३. सुलझना।
निबल॰–वि॰ दुर्बल।
निबह–संज्ञा पुं॰ समूह।
निबहना–क्रि॰ अ॰ १. छुट्टी पाना। २. निर्वाह होना।
निबाह–संज्ञा पुं॰ १. गुज़ारा। २. पालन। ३. बचाव का रास्ता।
निबाहना–क्रि॰ स॰ १. जारी रखना। २. पालन करना। ३. सपराना।
निबिड़–वि॰ दे॰ "निविड़"।
निबुआ॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "नीबू"।
निबुकना॰–क्रि॰ अ॰ छुटकारा पाना।
निबेड़ना–क्रि॰ स॰ १. सुलझाना। २. निर्णय करना।
निबेड़ा–संज्ञा पुं॰ छुटकारा।

नागरिकता-संज्ञा स्त्री० नागरिक के अधिकारों से संयुक्त होने की अवस्था।

नागरी-संज्ञा स्त्री० १. नगर की रहनेवाली स्त्री। २. चतुर स्त्री। ३. भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि जिसमें संस्कृत और हिंदी लिखी जाती है। देवनागरी।

नागलोक-संज्ञा पुं० पाताल।

नागवल्ली-संज्ञा स्त्री० पान।

नागवार-वि० १. असह्य। २. अप्रिय।

नागा-संज्ञा पुं० शैव संप्रदाय का शैव साधु जिसमें लोग नंगे रहते हैं। संज्ञा पुं० १. आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जंगली जाति। २. आसाम में वह पहाड़ जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है।
संज्ञा पुं० बीच।

नागिन-संज्ञा स्त्री० नाग की स्त्री।

नागेंद्र-संज्ञा पुं० १. बड़ा सर्प। २. ऐरावत।

नागेसर*-संज्ञा पुं० दे० "नागकेसर"।

नागौर-संज्ञा पुं० मारवाड़ के अंतर्गत एक नगर।

नाच-संज्ञा पुं० अंगों की वह गति जो हृदयोल्लास के कारण मनमानी अथवा संगीत के मेल में ताल-स्वर के अनुसार और हाव-भाव-युक्त हो।

नाच-कूद-संज्ञा स्त्री० नाच-तमाशा।

नाचघर-संज्ञा पुं० नृत्यशाला।

नाचना-क्रि० अ० १. चित्त की उमंग से उछलना, कूदना तथा इसी प्रकार की और चेष्टा करना। २. नृत्य करना। ३. वियोग में इधर से उधर फिरना।

नाच-महल-संज्ञा पुं० दे० "नाचघर"

नाच-रंग-संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद।

नाचीज़-वि० तुच्छ।

नाज-संज्ञा पुं० अन्न।

नाज़-संज्ञा पुं० १. नखरा। २. घमंड।

नाज़िर-संज्ञा पुं० निरीक्षक।

नाज़ुक-वि० कोमल।

नाटक-संज्ञा पुं० १. नट। २. अभिनय। ३. अभिनय-ग्रंथ।

नाटकशाला-संज्ञा स्त्री० वह घर या स्थान जहाँ नाटक होता है।

नाटकिया, नाटकी-वि० नाटक का अभिनय करनेवाला।

नाटकीय-वि० नाटक-संबंधी।

नाटना-क्रि० अ० निकल जाना।
क्रि० स० अस्वीकार करना।

नाटा-वि० [स्त्री० नाटी] छोटे कद का।

नाट्य-संज्ञा पुं० १. नटों का काम। २. अभिनय।

नाट्यमंदिर-संज्ञा पुं० नाट्यशाला।

नाट्यशाला-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ पर अभिनय किया जाय।

नाट्यशास्त्र-संज्ञा पुं० नृत्य, गीत और अभिनय की विद्या।

नाठ*-संज्ञा पुं० १. नाश। २. अभाव।

नाठना*-क्रि० स० नष्ट करना।
क्रि० अ० १. नष्ट होना। २. भागना।

नाठा-संज्ञा पुं० वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न हो।

नाड़ा-संज्ञा पुं० सूत की वह मोटी डोरी जिससे स्त्रियाँ घाँघरा या धोती बाँधती हैं।

नाड़ी-संज्ञा स्त्री० नली।

निवेरना-क्रि० स० दे० "निबेड़ना"।
निवेरा-संज्ञा पुं० दे० "निबेड़ा"।
निवौरी, निवौली-संज्ञा स्त्री० नीम का फल।
निभ-संज्ञा पुं० प्रकाश। वि० तुल्य।
निभना-क्रि० अ० १. जारी रहना। २. गुज़ारा होना।
निभागा-वि० अभागा।
निभाना-क्रि० स० १. जारी रखना। २. पालन करना।
निभृत-वि० १. रखा हुआ। २. अटल। ३. गुप्त। ४. धीर। ५. निर्जन।
निमंत्रण-संज्ञा पुं० [वि० निमंत्रित] न्योता।
निमंत्रना*-क्रि० स० न्योता देना।
निमंत्रित-वि० जिसे न्योता दिया गया हो।
निमग्न-वि० [स्त्री० निमग्ना] मग्न।
निमज्जन-संज्ञा पुं० डूबकर किया जानेवाला स्नान।
निमज्जना*-क्रि० अ० डूबना।
निमज्जित-वि० १. डूबा हुआ। २. स्नात।
निमता*-वि० जो उन्मत्त न हो।
निमि-संज्ञा पुं० १. महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। २. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं से मिथिला का विदेह वंश चला। ३. आँखों का मिचना।
निमिख-संज्ञा पुं० दे० "निमिष"।
निमित्त-संज्ञा पुं० हेतु।
निमिराज*-संज्ञा पुं० राजा जनक।
निमिष-संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।
निमेख-संज्ञा पुं० दे० "निमेष"।
निमेष-संज्ञा पुं० १. पलक का गिरना। २. क्षण।
निमोना-संज्ञा पुं० चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों का बनाया हुआ रसेदार व्यंजन।
निम्न-वि० नीचा।
निम्नगा-संज्ञा स्त्री० नदी।
नियंता-संज्ञा पुं० [स्त्री० नियंत्री] १. व्यवस्था करनेवाला। २. शासक।
नियंत्रण-संज्ञा पुं० नियम आदि में बाँधना या उसके अनुसार चलाना।
नियंत्रित-वि० नियम से बँधा हुआ।
नियत-वि० १. नियम द्वारा स्थिर। २. निश्चित। ३. तैनात। संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।
नियति-संज्ञा स्त्री० १. बँधेज। २. स्थिरता। ३. भाग्य।
नियम-संज्ञा पुं० १ पाबंदी। २. दबाव। ३. दस्तूर। ४. कानून। ५. प्रतिज्ञा।
नियमन-संज्ञा पुं० [वि० नियमित, नियम्य] १. नियमबद्ध करने का कार्य्य। २. शासन।
नियमित-वि० बँधा हुआ। नियमबद्ध।
नियर†-अव्य० समीप।
नियराई†-संज्ञा स्त्री० निकटता।
नियराना†-क्रि० अ० निकट पहुँचना।
नियामक-संज्ञा पुं० [स्त्री० नियामिका] १ नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला।
नियामत-संज्ञा स्त्री० १. दुर्लभ पदार्थ। २ धन-दौलत।
नियारे*†-अव्य० दे० "न्यारे"।
नियाव†-संज्ञा पुं० दे० "न्याय"।

नियुक्त–वि० १. तैनात। २. स्थिर किया हुआ।
नियुक्ति–संज्ञा स्त्री० तैनाती।
नियुद्ध–संज्ञा पुं० कुश्ती।
नियोक्ता–संज्ञा पुं० १. नियोजित करने वाला। २. नियोग करनेवाला।
नियोग–संज्ञा पुं० १. तैनाती। २ आज्ञा।
नियोजक–संज्ञा पुं० काम में लगाने-वाला।
नियोजन–संज्ञा पुं० [वि० नियोजित, नियोज्य, नियुक्त] किसी काम में लगाना।
निरंकार*–संज्ञा पुं० दे० "निराकार"।
निरंकुश–वि० बिना डर का।
निरंग–वि० १. अंग-रहित। २. खाली।
संज्ञा पुं० रूपक अलंकार का एक भेद।
वि० १. बेरंग। २. उदास।
निरंजन–वि० अंजन-रहित।
संज्ञा पुं० परमात्मा।
निरंतर–वि० १. अविच्छिन्न। २. स्थायी।
क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।
निरंध–वि० १. भारी अंधा। २. महामूर्ख।
निरंभ–वि० निर्जल।
निरंश–वि० जिसे उसका भाग न मिला हो।
निरक्षर–वि० १. अक्षर-शून्य। २. अनपढ़।
निरखना*–क्रि० स० देखना।
निरगुन*–वि० दे० "निर्गुण"।
निरजर–वि० जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।
निरझर*–संज्ञा पुं० दे० "निर्झर"।
निरत–वि० तत्पर।
*[–संज्ञा पुं० दे० "नृत्य"।
निरधातु–वि० शक्तिहीन।
निरधार*–संज्ञा पुं० दे० "निर्धार"।
निरधारना–क्रि० स० निश्चय करना।
निरनुनासिक–वि० (वर्ण) जिसका उच्चारण नाक के संबंध से न हो।
निरन्न–वि० १. अन्नरहित। २. निराहार।
निरन्ना–वि० निराहार।
निरपना*–वि० जो अपना न हो।
निरपराध–वि० बेकसूर।
क्रि० वि० बिना कोई कसूर किए।
निरपेक्ष–वि० [संज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी] १. बेपरवा। २. तटस्थ।
निरबंसी–वि० जिसे वंश या संतान न हो।
निरबेद*–संज्ञा पुं० १. वैराग्य। २. ताप।
निरभ्र–वि० बिना बादल का।
निरमर, निरमल*–वि० दे० "निर्मल"।
निरमाना*–क्रि० स० बनाना।
निरमूलना*–क्रि० स० निर्मूल करना।
निरमोल–वि० अनमोल।
निरमोही*–वि० दे० "निर्मोही"।
निरर्थक–वि० अर्थशून्य।
निरवयव–वि० निराकार।
निरवलंब–वि० बिना सहारे।
निरवार–संज्ञा पुं० छुटकारा।
निरवाह†*–संज्ञा पुं० दे० "निर्वाह"।
निरशन†–संज्ञा पुं० उपवास।

नोकदार–वि० १. जिसमें नोक हो। २. चुभनेवाला।
नोकाझोंकी–संज्ञा स्त्री० दे० "नोक-झोंक"।
नोखा†–वि० दे० "अनोखा"।
नोच–संज्ञा स्त्री० १. नोचने की क्रिया या भाव। २. छीनना।
नोच-खसोट–संज्ञा स्त्री० लूट।
नोचना–क्रि० स० उखाड़ना।
नोट–संज्ञा पुं० १. टाँकने या लिखने का काम। २. टिप्पणी। ३. सरकार की ओर से जारी किया हुआ वह काग़ज़ जिस पर कुछ रुपयों की संख्या रहती है और यह लिखा रहता है कि सरकार से इतना रुपया मिल जायगा।
नोदन–संज्ञा पुं० १. चलाने या हाँकने का काम। २. चौगी।
नोन†–संज्ञा पुं० दे० "नमक"।
नोना–संज्ञा पुं० [स्त्री० नोनी] १. नमक का वह अंश जो पुरानी दीवारों तथा सीड़ की ज़मीन में लगा मिलता है। २. लोनी मिट्टी। † वि० १. खारा। २. सुंदर।
नोना चमारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी जिसकी दोहाई मंत्रों में दी जाती है।
नोनिया–संज्ञा पुं० लोनी मिट्टी से नमक निकालनेवाली एक जाति। † संज्ञा स्त्री० लोनिया।
नोनी†–संज्ञा स्त्री० लोनी मिट्टी।
नोनो†ः–वि० दे० "नोना"।
नोवना†–क्रि० स० दुहते समय रस्सी से गाय के पैर बाँधना।
नौ–वि० एक कम दस।
नौकर–संज्ञा पुं० [स्त्री० नौकरानी] १. चाकर। २. वैतनिक कर्मचारी।
नौकरशाही–संज्ञा स्त्री० वह शासन-प्रणाली जिसमें सारी राजसत्ता केवल बड़े बड़े राजकर्मचारियों के हाथ में रहती है।
नौकरानी–संज्ञा स्त्री० मज़दूरनी।
नौकरी–संज्ञा स्त्री० १. सेवा। २. कोई काम जिसके लिये तनख़्वाह मिलती हो।
नौका–संज्ञा स्त्री० नाव।
नौजवान–वि० नवयुवक।
नौजा–संज्ञा पुं० बादाम।
नौबढ़–वि० हाल में बढ़ा हुआ।
नौबत–संज्ञा स्त्री० १. हालत। २. शहनाई और नगाड़ा जो देवमंदिरों या बड़े आदमियों के द्वार पर बजता है।
नौबतख़ाना–संज्ञा पुं० फाटक के ऊपर बना हुआ वह स्थान जहाँ बैठकर नौबत बजाई जाती है।
नौबती–संज्ञा पुं० १. नौबत बजाने-वाला। २. पहरेदार।
नौमी–संज्ञा स्त्री० पक्ष की नवीं तिथि।
नौरोज़–संज्ञा पुं० १. पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। इस दिन बहुत आनंद-उत्सव मनाया जाता था। २. त्यौहार।
नौलखा–वि० जिसका मूल्य नौ लाख हो।
नौशा–संज्ञा पुं० दूल्हा।
नौसत–संज्ञा पुं० सिंगार।
नौसादर–संज्ञा पुं० एक तीक्ष्ण झाल-दार खार या नमक।
नौसिखिया, नौसिखुआ–वि० जिसने कोई काम हाल में सीखा हो।
नौसेना–संज्ञा स्त्री० जलसेना।

निरसंक॰†–वि॰ दे॰ "निःशंक"।
निरस–वि॰ १. जिसमें रस न हो। २. फीका। ३. रूखा-सूखा।
निरसन–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निरसनीय, निरस्य] १. हटाना। २. खारिज करना।
निरस्त्र–वि॰ अस्त्रहीन।
निरहंकार–वि॰ अभिमान-रहित।
निरहेतु॰–वि॰ दे॰ "निर्हेतु"।
निरा–वि॰ [स्त्री॰ निरी] १. विशुद्ध। २. केवल। ३ निपट।
निराई–संज्ञा स्त्री॰ १. फसल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि दूर करना। २. निराने की मज़दूरी।
निराकरण–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निराकरणीय, निराकृत] १. छाँटना। २. रद करना। ३. खंडन।
निराकार–वि॰ जिसका कोई आकार न हो।
संज्ञा पुं॰ १. ईश्वर। २. आकाश।
निराखर॰†–वि॰ १. जिसमें अक्षर न हों। २. मौन। ३. अपढ़।
निराट–वि॰ निपट।
निरादर–संज्ञा पुं॰ अपमान।
निराना–क्रि॰ स॰ फसल के पौधों के आस-पास की घास खोदकर दूर करना जिसमें पौधों की बाढ़ न रुके।
निरापद–वि॰ सुरक्षित।
निरापन॰–वि॰ पराया।
निरामय–वि॰ नीरोग।
निरामिष–वि॰ जो मांस न खाय।
निरालंब–वि॰ १. निराधार। २. निराश्रय।
निराला–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ निराली] एकांत स्थान।
वि॰ १. एकांत। २. विलक्षण। ३. अनूठा।
निराश–वि॰ आशाहीन।
निराशा–संज्ञा स्त्री॰ नाउम्मेदी।
निराश्रय–वि॰ आश्रय-रहित।
निरास॰–वि॰ दे॰ "निराश"।
निराहार–वि॰ आहार-रहित।
निरिंद्रिय–वि॰ इंद्रिय-शून्य।
निरिच्छना॰–क्रि॰ स॰ देखना।
निरीक्षक–संज्ञा पुं॰ देखनेवाला।
निरीक्षण–संज्ञा पुं॰ [वि॰ निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण] १. देखना। २. देख-रेख।
निरीक्षा–संज्ञा स्त्री॰ देखना।
निरीह–वि॰ १. जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे। २. उदासीन।
निरुक्त–वि॰ निश्चय रूप से कहा हुआ।
संज्ञा पुं॰ वेद का चौथा अंग।
निरुत्तर–वि॰ १. लाजवाब। २. जो उत्तर न दे सके।
निरुद्ध–वि॰ रुका या बँधा हुआ।
निरुपद्रव–वि॰ जिसमें कोई उपद्रव न हो।
निरुपद्रवी–संज्ञा पुं॰ शांत।
निरुपम–वि॰ बेजोड़।
निरुपयोगी–वि॰ व्यर्थ।
निरुपाधि–वि॰ १. बाधा-रहित। माया-रहित।
संज्ञा पुं॰ ब्रह्म।
निरुपाय–वि॰ १. जो कुछ उपाय न कर सके। २. जिसका कोई उपाय न हो।
निरुवार†–संज्ञा पुं॰ १. छुटकारा। २. फैसला।

नेवता–संज्ञा पुं० दे० "न्योता"।
नेवरना–क्रि० अ० समाप्त होना।
नेवला–संज्ञा पुं० एक मांसाहारी पिंडज छोटा जंतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है। यह साँप को खा जाता है।
नेवाज–वि० दे० "निवाज"।
नेवारना०–क्रि० स० दे० "निवारना"।
नेवारी–संज्ञा स्त्री० जूही की जाति का एक पौधा।
नेसुक०†–वि० तनिक।
क्रि० वि० थोड़ा सा।
नेस्त–वि० जो न हो।
नेस्ती–संज्ञा स्त्री० १. न होना। २. आलस्य।
नेह–संज्ञा पुं० स्नेह।
नेही०–वि० प्रेमी।
नै–संज्ञा स्त्री० दे० "नय"।
संज्ञा स्त्री० नदी।
नैक, नैकु–वि० दे० "नेक", "नेकु"।
नैकट्य–संज्ञा पुं० निकटता।
नैचा–संज्ञा पुं० हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धूआँ खींचते हैं।
नैतिक–वि० नीति-संबंधी।
नैन०–संज्ञा पुं० दे० "नयन"।
नैनसुख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैनू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का उभरे हुए बेलबूटे का कपड़ा।
संज्ञा पुं० मक्खन।
नैपाल–वि० १. नेपाल-संबंधी। २. नेपाल में होनेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "नेपाल"।
नैपाली–वि० १. नैपाल देश का। २. नैपाल में रहने या होनेवाला।
संज्ञा पुं० नैपाल का रहनेवाला आदमी।
नैपुण्य–संज्ञा पुं० होशियारी।
नैमित्तिक–वि० जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो।
नैया०†–संज्ञा स्त्री० नाव।
नैयायिक–वि० न्यायशास्त्र का जाननेवाला।
नैर०–संज्ञा पुं० शहर।
नैराश्य–संज्ञा पुं० निराशा का भाव।
नैऋत–वि० निऋति-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।
नैऋति–संज्ञा स्त्री० दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
नैवेद्य–संज्ञा पुं० भोग।
नैषध–वि० निषध-देश संबंधी। निषध देश का।
संज्ञा पुं० नल जो निषध-देश के राजा थे।
नैष्ठिक–वि० [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान्।
नैसर्गिक–वि० स्वाभाविक।
नैसा०–वि० बुरा।
नैहर–संज्ञा पु० स्त्री के पिता का घर।
नोक–संज्ञा स्त्री० [वि० नुकीला] १. उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। २. निकला हुआ कोना।
नोक-झोंक–संज्ञा स्त्री० १. ठाठ-बाट। २. तपाक। ३. चुभनेवाली बात। ४. छेड़छाड़।

निरूढ़-वि० १. उत्पन्न। २. प्रसिद्ध। ३. अविवाहित।
निरूप-वि० रूप-रहित।
निरूपक-वि० किसी विषय का निरूपण करनेवाला।
निरूपण-संज्ञा पुं० १. प्रकाश। २. निदर्शन।
निरूपित-वि० जिसका निरूपण या निर्णय हो चुका हो।
निरेखना॰-क्रि० स० दे० "निरखना"।
निरोग, निरोगी‡-संज्ञा पुं० स्वस्थ।
निरोध-संज्ञा पुं० १. रोक। २. घेरा।
निरोधक-वि० रोकनेवाला।
निर्ख-संज्ञा पुं० भाव।
निर्गंध-वि० [संज्ञा निर्गंधता] गंधहीन।
निर्गत-वि० [स्त्री० निर्गता] निकला हुआ।
निर्गम-संज्ञा पुं० निकास।
निर्गुण-संज्ञा पुं० परमेश्वर।
वि० [संज्ञा निर्गुणता] १. जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हो। २. बुरा।
निर्गुणिया-वि० वह जो निर्गुण ब्रह्म की उपासना करता हो।
निर्घंट-संज्ञा पुं० शब्द या ग्रंथ-सूची।
निर्घृण-वि० १. जिसे गंदी वस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। २. अति नीच।
निर्घोष-संज्ञा पुं० [वि० निर्घोषित] शब्द।
वि० शब्द-रहित।
निर्जन-वि० एकांत।
निर्जल-वि० १. बिना जल का। २. जिसमें जल पीने का विधान न हो।
निर्जीव-वि० १. जीव-रहित। २. अशक्त।
निर्झर-संज्ञा पुं० सोता।
निर्णय-संज्ञा पुं० १. निश्चय। २. फैसला।
निर्णीत-वि० निर्णय किया हुआ।
निर्दई॰†-वि० दे० "निर्दय"
निर्दय-वि० निष्ठुर।
निर्दयता-संज्ञा स्त्री० निष्ठुरता।
निर्दयी॰†-वि० दे० "निर्दय"।
निर्दिष्ट-वि० १. जिसका निर्देश हो चुका हो। २. ठहराया हुआ।
निर्देश-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ को बतलाना। २. ठहराना या निश्चित करना। ३. आज्ञा। ४. वर्णन।
निर्दोष-वि० बे-कसूर।
निर्दोषी-वि० दे० "निर्दोष"।
निर्द्वंद, निर्द्वंद्व-वि० १. जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। २. स्वच्छंद।
निर्धन-वि० धनहीन।
निर्धनता-संज्ञा स्त्री० ग़रीबी।
निर्धार, निर्धारण-संज्ञा पुं० १. ठहराना या निश्चित करना। २. निश्चय।
निर्धारना-क्रि० स० निश्चित करना।
निर्धारित-वि० निश्चित किया हुआ।
निर्निमेष-क्रि० वि० एकटक।
वि० जो पलक न गिरावे।

पच्छिम–संज्ञा पुं० दे० "पश्चिम"।
पच्छी–संज्ञा पुं० दे० "पक्षी"।
पछड़ना–क्रि० अ० १. लड़ने में पटका जाना। २. दे० "पिछड़ना"।
पछताना*–क्रि० अ० पश्चात्ताप करना।
पछतानि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पछतावा"।
पछतावना–क्रि० अ० दे० "पछताना"।
पछतावा–संज्ञा पुं० पश्चात्ताप।
पछलना–संज्ञा पुं० दे० "पिछलना"।
पछवाँ–वि० पच्छिम का।
पछाँह–संज्ञा पुं० पच्छिम की ओर का देश।
पछाँहिया–वि० पश्चिमी प्रदेश का।
पछाड़–संज्ञा स्त्री० अचेत होकर गिरना।
पछाड़ना–क्रि० स० गिराना।
क्रि० स० धोने के लिये कपड़े को ज़ोर ज़ोर से पटकना।
पछारना*–क्रि० स० दे० "पछाड़ना"।
पछाहीं–वि० पछाँह का।
पछिआना†–क्रि० स० पीछे पीछे चलना।
पछिताव–संज्ञा पुं० दे० "पछतावा"।
पछुवाँ–वि० पच्छिम की (हवा)।
पछेली†–संज्ञा स्त्री० हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा।
पछोड़ना†–क्रि० स० फटकना।
पछ्यावर†–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सिखरन या शरबत।
पजरना*–क्रि० अ० जलना।
पजारना*–क्रि० स० जलाना।
पजावा–संज्ञा पुं० आवाँ।
पज्ज–संज्ञा पुं० शूद्र।

पटंबर*†–संज्ञा पुं० रेशमी कपड़ा।
पट–संज्ञा पुं० वस्त्र।
संज्ञा पुं० १. साधारण दरवाज़ों के किवाड़। २. पालकी के दरवाज़े के किवाड़ जो सरकाने से खुलते और बंद होते हैं।
वि० ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि की ओर हो।
पटकन*–संज्ञा स्त्री० १. पटकने की क्रिया या भाव। २. छड़ी।
पटकना–क्रि० स० १. झोंके के साथ नीचे की ओर गिराना। २. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना।
†क्रि० अ० १. सूजन बैठना या पचकना। २. पट शब्द के साथ किसी चीज़ का दरक या फट जाना।
पटका–संज्ञा पुं० कमरबंद।
पटकान–संज्ञा स्त्री० दे० "पटकनी"।
पटतर*–संज्ञा पुं० १. समता। २. उपमा।
† वि० चौरस।
पटतरना–क्रि० अ० उपमा देना।
पटना–क्रि० अ० १. किसी गड्ढे या नीचे स्थान का भरकर आस-पास की सतह के बराबर हो जाना। २. मकान, कूएँ आदि के ऊपर कच्ची या पक्की छत बनना। ३. सींचा जाना। ४. मन मिलना। ५. तै हो जाना।
संज्ञा पुं० दे० "पाटलिपुत्र"।
पटपट–संज्ञा स्त्री० हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द की आवृत्ति।
क्रि० वि० बराबर पट ध्वनि करता हुआ।
पटपटाना–क्रि० अ० १. भूख-प्यास या सरदी-गरमी के मारे बहुत कष्ट

निर्बंध–संज्ञा पुं० १. रुकावट। २. ज़िद।
निर्बल–वि० बलहीन।
निर्बलता–संज्ञा स्त्री० कमज़ोरी।
निर्बुद्धि–वि० मूर्ख।
निर्बोध–वि० अज्ञान।
निर्भय–वि० निडर।
निर्भयता–संज्ञा स्त्री० निडरपन।
निर्भर–वि० १. पूर्ण। २. युक्त। ३. आश्रित।
निर्भीक–वि० बेडर।
निर्भ्रम–वि० भ्रम-रहित।
क्रि० वि० निधड़क।
निर्भ्रांत–वि० भ्रम-रहित।
निर्मम–वि० जिसे ममता न हो।
निर्मल–वि० १. मल-रहित। २. शुद्ध। ३. निर्दोष।
निर्मलता–संज्ञा स्त्री० १. सफ़ाई। २. निष्कलंकता। ३. शुद्धता।
निर्मला–संज्ञा पुं० नानकपंथी एक साधु-संप्रदाय।
निर्मली–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का सदाबहार वृक्ष। २. रीठे का वृक्ष या फल।
निर्माण–संज्ञा पुं० १. रचना। २. बनाने का काम।
निर्माता–संज्ञा पुं० बनानेवाला।
निर्मात्रिक–वि० बिना मात्रा का।
निर्माल्य–संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो किसी देवता पर चढ़ चुका हो।
निर्मित–वि० बनाया हुआ।
निर्मूल–वि० जिसमें जड़ न हो।
निर्मूलन–संज्ञा पुं० विनाश।
निर्मोह–वि० जिसके मन में मोह या ममता न हो।
निर्मोहिनी–वि० स्त्री० निर्दय।
निर्मोही–वि० निर्दय।
निर्यातन–संज्ञा पुं० प्रतीकार।
निर्यास–संज्ञा पुं० १. वृक्षों या पौधों में से आप से आप अथवा उनका तना आदि चीरने से निकलनेवाला रस। २. गोंद। ३. बहना या झरना।
निर्लज्ज–वि० बेशर्म।
निर्लज्जता–संज्ञा स्त्री० बेशर्मी।
निर्लिप्त–वि० १. जो किसी विषय में आसक्त न हो। २. जो लिप्त न हो।
निर्लोभ–वि० जिसे लोभ न हो।
निर्वंश–वि० [संज्ञा निर्वंशता] जिसका वंश नष्ट हो गया हो।
निर्वहण–संज्ञा पुं० निर्वाह।
निर्वहना॰†–क्रि० अ० निभना।
निर्वाचक–संज्ञा पुं० चुननेवाला।
निर्वाचन–संज्ञा पुं० किसी काम के लिये बहुतों में से एक या अधिक को चुनना।
निर्वाचित–वि० चुना हुआ।
निर्वाण–वि० १. बुझा हुआ। २. अस्त।
संज्ञा पुं० १. बुझना। २. समाप्ति। ३. मुक्ति।
निर्वासन–संज्ञा पुं० १. मार डालना। २. देशनिकाला। ३. निकालना।
निर्वाह–संज्ञा पुं० १. निबाह। २. पालन।
निर्विकार–वि० जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्त्तन न हो।
निर्विघ्न–वि० विघ्न-बाधा-रहित।

पख–संज्ञा स्त्री० १. ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बात। २. झगड़ा।
पखराना–क्रि० स० धुलवाना।
पखवाड़ा†–संज्ञा पुं० दे० "पखवारा"।
पखवारा–संज्ञा पुं० १. महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक। २. पंद्रह दिन का काल।
पखाना–संज्ञा पुं० मसल।
†संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।
पखारना–क्रि० स० धोना।
पखावज–संज्ञा स्त्री० एक बाजा जो मृदंग से कुछ छोटा होता है।
पखावजी–संज्ञा पुं० पखावज बजानेवाला।
पखुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पखड़ी"।
पखेरू–संज्ञा पुं० पक्षी।
पखौटा–संज्ञा पुं० डैना।
पग–संज्ञा पुं० १. पैर। २. डग।
पगडंडी–संज्ञा स्त्री० जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता जो लोगों के चलते चलते बन गया हो।
पगड़ी–संज्ञा स्त्री० साफ़ा।
पगतरी†–संज्ञा स्त्री० जूता।
पगनियाँ†–संज्ञा स्त्री० जूती।
पगरा*†–संज्ञा पुं० क़दम।
संज्ञा पुं० सबेरा।
पगला–वि० पुं० दे० "पागल"।
पगहा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० पगही] गिराँव।
पगा†–संज्ञा पुं० दुपट्टा।
संज्ञा पुं० दे० "पघा"।
पगाना–क्रि० स० १. पागने का काम कराना। २. मग्न करना।
पगाह–संज्ञा स्त्री० प्रभात।
पगिया*†–संज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी"।
पगुराना†–क्रि० अ० १. पागुर या जुगाली करना। २. हज़म करना।
पचखा‡–संज्ञा पुं० दे० "पंचक"।
पचगुना–वि० पाँच गुना।
पचड़ा–संज्ञा पुं० झंझट।
पचन–संज्ञा पुं० १. पचाने की क्रिया या भाव। २. पकने की क्रिया या भाव। ३. अग्नि।
पचना–क्रि० अ० १. हज़म होना। २. बहुत हैरान होना।
पचमेल–वि० दे० "पँचमेल"।
पचरंगा–वि० [स्त्री० पँचरंगी] १. जिसमें भिन्न भिन्न पाँच रंग हों। २. कई रंगों से रंजित।
संज्ञा पुं० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चौक।
पचलड़ी–संज्ञा स्त्री० माला की तरह का एक आभूषण।
पचहरा–वि० पाँच परतों या तहोंवाला।
पचाना–क्रि० स० १. पचना का सकर्मक रूप। २. हज़म करना।
पचास–वि० चालीस और दस।
पचीस–वि० पाँच और बीस।
पचौर, पचौली†–संज्ञा पुं० सरदार।
पचौवर–वि० पचहरा।
पच्चड़, पच्चर–संज्ञा पुं० काठ का पैवंद।
पच्ची–संज्ञा स्त्री० १. ऐसा जड़ाव जिसमें जड़ी या जमाई जानेवाली वस्तु उस वस्तु के बिलकुल समतल हो जाय जिसमें वह जड़ी या जमाई जाय। २. किसी धातु-निर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।
पच्चीकारी–संज्ञा स्त्री० पच्ची करने की क्रिया या भाव।
पच्छ*†–संज्ञा पुं० दे० "पक्ष"।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के विघ्न के।

निर्विवाद–वि० बिना झगड़े का।

निर्विशेष–संज्ञा पुं० परमात्मा।

निर्विषी–संज्ञा स्त्री० एक घास जिसकी जड़ का व्यवहार अनेक प्रकार के विषों का नाश करने के लिये होता है।

निर्बीज–वि० १. बीजरहित। २. जो कारण से रहित हो।

निर्वीर्य–वि० वीर्यहीन। कमज़ोर।

निर्व्यलीक–वि० निष्कपट।

निर्व्याज–वि० निष्कपट।

निर्हेतु–वि० जिसमें कोई हेतु न हो।

निलज्ज†–वि० दे० "निर्लज्ज"।

निलज्जता☆–संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता। बेहयाई।

निलज्जी☆†–वि० स्त्री० निर्लज्जा।

निलय–संज्ञा पुं० १. मकान। २. स्थान।

निलहा–वि० नीलवाला।

निवसन–संज्ञा पुं० १. गाँव। २. घर। ३. वस्त्र।

निवसना–क्रि० अ० रहना।

निवह–संज्ञा पुं० समूह।

निवाई–वि० १. नवीन। २. अनोखा।

निवाज–वि० कृपा करनेवाला।

निवाजना☆†–क्रि० स० अनुग्रह करना।

निवाड़ा–संज्ञा पुं० १. छोटी नाव। २. नाव की एक क्रीड़ा जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।

निवार–संज्ञा स्त्री० बहुत मोटे सूत की बुनी हुई चौड़ी पट्टी जिससे पलँग आदि बुने जाते हैं।

निवारक–वि० रोकनेवाला।

निवारण–संज्ञा पुं० १. रोकने की क्रिया। २. छुटकारा।

निवारना☆–क्रि० स० १. रोकना। २. बचाना।

निवाला–संज्ञा पुं० कौर।

निवास–संज्ञा पुं० १. रहने की क्रिया या भाव। २. रहने का स्थान। ३. घर।

निवासस्थान–संज्ञा पुं० १. रहने का स्थान। २. घर।

निवासी–संज्ञा पुं० [स्त्री० निवासिनी] वासी।

निविड़–वि० घना।

निविष्ट–वि० एकाग्र।

निवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. मुक्ति। २. मोक्ष।

निवेद☆†–संज्ञा पुं० दे० "नैवेद्य"।

निवेदक–संज्ञा पुं० प्रार्थी।

निवेदन–संज्ञा पुं० प्रार्थना।

निवेदित–वि० १. अर्पित किया हुआ। २. निवेदन किया हुआ।

निवेरना☆†–क्रि० स० दे० "निबटाना"।

निवेरा☆–वि० १. चुना हुआ। २. नवीन।

निवेश–संज्ञा पुं० १. विवाह। २. डेरा। ३. प्रवेश।

निशंक–वि० निर्भय।

निशांत–संज्ञा पुं० १. रात्रि का अंत। २. प्रभात।

निशांध–वि० जिसे रात को न सूझे।

निशा–संज्ञा स्त्री० १. रात्रि। २. हलदी।

उलटी-सीधी बातें समझा बुझाकर अपने अनुकूल करना। २. ठगना।

पटु–वि० १. प्रवीण। २. चतुर।

पटुआ–संज्ञा पुं० दे० "पटुवा"।

पटुका–संज्ञा पुं० १. दे० "पटका"। २. चादर।

पटुता–संज्ञा स्त्री० होशियारी।

पटुत्व–संज्ञा पुं० पटुता।

पटुली–संज्ञा स्त्री० १. काठ की पटरी जो झूले के रस्सों पर रखी जाती है। २. चौकी।

पटेबाज़–संज्ञा पुं० १. पटा खेलनेवाला। २. व्यभिचारी और धूर्त्त।

पटेल–संज्ञा पुं० १. गाँव का मुखिया। २. एक प्रकार की उपाधि।

पटेला–संज्ञा पुं० किवाड़ बंद करने का डंडा। ब्योंड़ा।

पट्ट–संज्ञा पुं० १. पीढ़ा। २. ताँबे आदि धातुओं की वह चिपटी पट्टी जिस पर राजकीय आज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ३. पट्टा। वि० मुख्य। वि० अनु० दे० "पट"।

पट्टदेवी–संज्ञा स्त्री० पटरानी।

पट्टन–संज्ञा पुं० नगर।

पट्टमहिषी–संज्ञा स्त्री० पटरानी।

पट्टा–संज्ञा पुं० १. किसी स्थावर संपत्ति विशेषतः भूमि के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को दिया जाय। २. सनद। ३. चमड़े या बनात आदि की पट्टी जो कुत्तों, बिल्लियों के गले में पहनाई जाती है। ४. पीढ़ा। ५. चपरास।

पट्टी–संज्ञा स्त्री० १. पाटी। २. पहाड़ा। ३. लकड़ी की वह पट्टी जो खाट के ढाँचे की लंबाई में लगाई जाती है। ४. कपड़े की कोर या किनारी। ५. हिस्सा।

पट्टीदार–संज्ञा पुं० हिस्सेदार।

पट्टीदारी–संज्ञा स्त्री० १ पट्टीदार होने का भाव। २ भाई-चारा।

पट्टू–संज्ञा पुं० एक खूब गरम ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में होता है।

पठमान*–वि० पढ़ने योग्य।

पट्ठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० पठिया] १. जवान। २ कुश्तीबाज़।

पठन–संज्ञा पुं० पढ़ना।

पठनीय–वि० पढ़ने योग्य।

पठनेटा–संज्ञा पुं० पठान का लड़का।

पठवना*–क्रि० स० भेजना।

पठवाना*–क्रि० स० भेजवाना।

पठान–संज्ञा पुं० एक मुसलमान जाति जो अफ़ग़ानिस्तान के अधिकांश और भारत के सीमांत प्रदेश आदि में बसती है।

पठाना*–क्रि० स० भेजना।

पठानी–संज्ञा स्त्री० १. पठान जाति की स्त्री। २. पठान होने का भाव। ३. पठानपन। वि० पठानों का।

पठानी लोध–संज्ञा स्त्री० एक जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी और फूल औषध के काम में आते हैं।

पठायन†–संज्ञा पुं० दूत।

पठावनि, पठावनी–संज्ञा स्त्री० १. किसी को कहीं कोई वस्तु या संदेश पहुँचाने के लिये भेजना। २. इस प्रकार भेजने की मज़दूरी।

पठित–वि० १. जिसे पढ़ चुके हों। २. पढ़ा-लिखा।

निस्तब्ध–वि० १. जो हिलता-डोलता न हो। २. जड़वत्।
निस्तब्धता–संज्ञा स्त्री० १. खामोशी। २. सन्नाटा।
निस्तरण–संज्ञा पुं० दे० "निस्तार"।
निस्तरना☆†–क्रि० अ० निस्तार पाना।
निस्तार–संज्ञा पुं० १. पार होने का भाव। २. छुटकारा।
निस्तारण–संज्ञा पुं० १. निस्तार करना। २. पार करना।
निस्तारना†☆–क्रि० स० छुड़ाना।
निस्तीर्ण–वि० १. जो तैर या पार कर चुका हो। २. मुक्त।
निस्तेज–वि० तेजरहित।
निस्पृह–वि० [संज्ञा निस्पृहता] कामना आदि से रहित।
निस्फ–वि० आधा।
निस्संदेह–क्रि० वि० अवश्य।
वि० जिसमें संदेह न हो।
निस्सरण–संज्ञा पुं० निकलने का मार्ग।
निस्सार–वि० सार-रहित।
निस्सीम–वि० असीम।
निस्स्वार्थ–वि० जिसमें स्वयं अपने लाभ या हित का कोई विचार न हो।
निहंग–वि० १. अकेला। २. बेशरम।
निहंग-लाडला–वि० जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही बदंड और लापरवा हो गया हो।
निहंता–वि० [स्त्री० निहंत्री] १. नाश करनेवाला। २. प्राण लेनेवाला।
निहत–वि० १. फेंका हुआ। २. नष्ट। ३. जो मार डाला गया हो।
निहत्था–वि० १. शस्त्रहीन। २. ग़रीब।
निहनना☆†–क्रि० स० मारना।
निहाई–संज्ञा स्त्री० सोनारों और लोहारों का लोहे का एक चौकोर औज़ार जिस पर वे धातु को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।
निहायत–वि० अत्यंत।
निहार–संज्ञा पुं० १. कुहरा। २. ओस। ३. बरफ़।
निहारना–क्रि० स० ध्यानपूर्वक देखना।
निहाल–वि० पूर्णकाम।
निहित–वि० स्थापित।
निहुरना†–क्रि० अ० झुकना।
निहोरना–क्रि० स० प्रार्थना करना।
निहोरा†–संज्ञा पुं० १. उपकार। २. प्रार्थना। ३. भरोसा।
क्रि० वि० १. बदौलत। २. वास्ते।
नींद–संज्ञा स्त्री० सोने की अवस्था।
नींदड़ी†–संज्ञा स्त्री० दे० "नींद"।
नीक, नीका†☆–वि० [स्त्री० नीकी] अच्छा।
संज्ञा पुं० अच्छाई।
नीके–क्रि० वि० अच्छी तरह।
नीच–वि० १. क्षुद्र। २. अधम।
नीचगामी–वि० [स्त्री० नीचगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. ओछा।
नीचता–संज्ञा स्त्री० १. नीच होने का भाव। २ क्षुद्रता।
नीचा–वि० [स्त्री० नीची] १. गहरा। २. अधिक लटका हुआ। ३. झुका हुआ। ४. धीमा। ५. क्षुद्र।
नीचाशय–वि० क्षुद्र।
नीचू†–क्रि० वि० दे० "नीचे"।
नीचे–क्रि० वि० १. नीचे की ओर। २. कम। ३. अधीनता में।

पाना। २. किसी चीज़ से पटपट ध्वनि निकलना।
क्रि० स० १. 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना। २. शोक करना।

पटपर–वि० चौरस।
संज्ञा पुं० १. नदी के आस-पास की वह भूमि जो बरसात के दिनों में प्रायः सदा डूबी रहती है। २. अत्यंत उजाड़ स्थान।

पटमंडप–संज्ञा पुं० तंबू।

पटरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पटरी] तख्ता।

पटरानी–संज्ञा स्त्री० वह रानी जो राजा के साथ सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो।

पटरी–संज्ञा स्त्री० १. काठ का पतला और लंबोतरा तख्ता। २. लिखने की तख्ती। ३. सड़क के दोनों किनारों का वह भाग जो पैदल चलनेवालों के लिये होता है।

पटल–संज्ञा पुं० १. छान। २. पर्दा। ३. परत। ४. पटरा। ५. टीका। ६. समूह।

पटवा–संज्ञा पुं० [स्त्री० पटइन] १. रेशम या सूत में गहने गूथनेवाला। २. पाट।

पटवाना–क्रि० स० पटन या पाटने का काम दूसरे से कराना।

पटवारगरी–संज्ञा स्त्री० पटवारी का काम या पद।

पटवारी–संज्ञा पुं० गाँव की ज़मीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखनेवाला एक छोटा सरकारी कर्मचारी।
संज्ञा स्त्री० कपड़े पहनानेवाली दासी।

पटवास–संज्ञा पुं० शिविर।

पटहा–संज्ञा पुं० दुंदुभी।

पटा–संज्ञा पुं० लोहे की वह फट्टी जिससे तलवार की काट और बचाव सीखे जाते हैं।
⊙ संज्ञा पुं० १. पीढ़ा। २. सनद। ३. लेन-देन। ४. चौड़ी लकीर।

पटाई†–संज्ञा स्त्री० पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

पटाक–अनु० किसी छोटी चीज़ के गिरने का शब्द।

पटाका–संज्ञा पुं० १. पट या पटाक शब्द। २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतशबाज़ी। ३. थप्पड़।

पटाना–क्रि० स० १. पाटने का काम कराना। २. छत को पीटकर बराबर कराना। ३. ऋण चुका देना।
† क्रि० अ० शांत होकर बैठना।

पटापट–क्रि० वि० लगातार बार बार 'पट' ध्वनि के साथ।
संज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति।

पटाव–संज्ञा पुं० १ पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर चौरस किया हुआ स्थान। ३. छत की पाटन।

पटिया†–संज्ञा स्त्री० १. पत्थर का प्रायः चौकोर और चौरस कटा हुआ टुकड़ा। २. खाट या पलंग की पट्टी। ३. माँग। ४. लिखने की पट्टी।

पटी⊙–संज्ञा स्त्री० कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा।

पटीलना–क्रि० अ० १. किसी को

नीजन॰-संज्ञा पुं॰ निर्जन स्थान।
नीझर॰-संज्ञा पुं॰ सोता।
नीठि-संज्ञा स्त्री॰ अरुचि।
क्रि॰ वि॰ १. ज्यों त्यों करके। २. कठिनता से।
नीठो॰-वि॰ अनिष्ट।
नीड़-संज्ञा पुं॰ चिड़ियों का घोंसला।
नीति-संज्ञा स्त्री॰ १. आचार-पद्धति। २. सदाचार। ३. राजविद्या। ४. उपाय।
नीतिज्ञ-वि॰ नीति का जाननेवाला।
नीतिमान्-वि॰ [स्त्री॰ नीतिमती] सदाचारी।
नीतिशास्त्र-संज्ञा पुं॰ वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों।
नींदना॰-क्रि॰ स॰ निंदा करना।
नीधना॰-वि॰ दरिद्र।
नीवी॰-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "नीवी"।
नीबू-संज्ञा पुं॰ मध्यम आकार का एक पेड़ या झाड़ जिसका फल गोल, छोटा और खट्टा होता है और खाया जाता है।
नीम-संज्ञा पुं॰ पत्ती झाड़नेवाला एक पेड़ जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है।
वि॰ आधा।
नीमन॰-वि॰ १. नीरोग। २. दुरुस्त। ३. बढ़िया।
नीमरज़ा-वि॰ १. थोड़ीव-हुत रज़ामंदी। २. कुछ तोष या प्रसन्नता।
नीमा-संज्ञा पुं॰ एक पहनावा जो जामे के नीचे पहना जाता है।
नीमावत-संज्ञा पुं॰ निंबार्काचार्य्य का अनुयायी वैष्णव।
नीयत-संज्ञा स्त्री॰ उद्देश्य।
नीर-संज्ञा पुं॰ पानी।
नीरज-संज्ञा पुं॰ १. जल में उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. मोती।
नीरद-संज्ञा पुं॰ बादल।
वि॰ बे-दाँत का।
नीरधि-संज्ञा पुं॰ समुद्र।
नीरस-वि॰ १. सूखा। २. फीका।
नीरांजन-संज्ञा पुं॰ आरती।
नीरोग-वि॰ चंगा।
नील-वि॰ नीले रंग का।
संज्ञा पुं॰ १. नीला रंग। २. कलंक। ३. राम की सेना का एक बंदर।
नीलकंठ-वि॰ जिसका कंठ नीला हो।
संज्ञा पुं॰ १. मोर। २. एक प्रकार की चिड़िया जिसका कंठ और डैने नीले होते हैं। ३. महादेव।
नीलकांत-संज्ञा पुं॰ १. एक पहाड़ी चिड़िया। २. विष्णु। ३. नीलम मणि।
नीलगाय-संज्ञा स्त्री॰ नीलापन लिए भूरे रंग का एक बड़ा हिरन जो गाय के बराबर होता है।
नीलचक्र-संज्ञा पुं॰ जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर माना जानेवाला चक्र।
नीलम-संज्ञा पुं॰ नीलमणि।
नीलमणि-संज्ञा पुं॰ नीलम।
नीललोहित-वि॰ बैंगनी।
संज्ञा पुं॰ शिव का एक नाम।
वि॰ नीले कपड़े धारण करनेवाला।
नीलांबुज-संज्ञा पुं॰ नील कमल।
नीला-वि॰ आकाश के रंग का।
नीलाम-संज्ञा पुं॰ बोली बोलकर बेचना।
नीलिमा-संज्ञा स्त्री॰ १. नीलापन। २. श्यामता।

जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। २. अवनति काल।
पतभार†-संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।
पतन-संज्ञा पुं० १. गिरना। २. अवनति। ३. नाश।
पतनशील-वि० गिरनेवाला।
पतनीय-वि० गिरनेवाला।
पतनोन्मुख-वि० जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो।
पत-पानी-संज्ञा पुं० १. प्रतिष्ठा। २. लाज।
पतर⊙†-वि० १. पतला। २. पत्ता। ३. पत्तल।
पतरा†-वि० दे० "पतला"।
पतरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।
पतला-वि० [स्त्री० पतली] १. जो मोटा न हो। २. कृश। ३. अधिक तरल।
पतलापन-संज्ञा पुं० पतला होने का भाव।
पतलून-संज्ञा पुं० अँगरेज़ी पाजामा।
पतवार, पतवारी-संज्ञा स्त्री० नाव का वह त्रिकोणाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है। इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है।
पता-संज्ञा पुं० १. किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सके। २. खोज। ३. खबर।
पताई-संज्ञा स्त्री० झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।
पताका-संज्ञा स्त्री० १. झंडा। २. ध्वज।
पताकिनी-संज्ञा स्त्री० सेना।
पतार⊙†-संज्ञा पुं० १. दे० "पाताल"। २. जंगल।
पताल-संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।
पतिंग-संज्ञा पुं० फतिंगा।
पतिंबरा-वि० स्त्री० जो अपना पति स्वयं चुने।
पति-संज्ञा पुं० [स्त्री० पत्नी] १. मालिक। २. दूल्हा। ३. मर्यादा।
पतिआना†-क्रि० स० विश्वास या एतबार करना।
पतिआर⊙†-संज्ञा पुं० १. विश्वास। २. विश्वसनीय।
पतित-वि० १. गिरा हुआ। २. महापापी। ३. अधम।
पतित-उधारन⊙-वि० जो पतित का उद्धार करे।
संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार।
पतितता-संज्ञा स्त्री० १. पतित होने का भाव। २. नीचता।
पतितपावन-वि० [स्त्री० पतितपावनी] पतित को पवित्र करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।
पतित्व-संज्ञा पुं० १. स्वामित्व। २. पति होने का भाव।
पतिदेवा-संज्ञा स्त्री० पतिव्रता।
पतिनी⊙-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।
पतियाना†-क्रि० स० विश्वास करना।
पतियारा⊙-संज्ञा पुं० विश्वास।
पतिलोक-संज्ञा पुं० पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।
पतिवती-वि० स्त्री० सधवा।
पतिव्रत-संज्ञा पुं० पातिव्रत्य।
पतिव्रता-वि० सती।
पतीजन, पतीजना⊙-क्रि० अ० एतबार करना।
पतील‡-वि० दे० "पतला"।
पतीली-संज्ञा स्त्री० ताँबे या पीतल

नीलोत्पल-संज्ञा पुं० नील कमल।

नीलोफ़र-संज्ञा पुं० १. नील कमल २. कुईं।

नीवँ-संज्ञा स्त्री० १. घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरंभ होती है। २. जड़।

नीव-संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।

नीवि-संज्ञा स्त्री० १. कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे सूत की डोरी से या योंही बाँधती हैं। २. सूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। ३. साड़ी।

नीहँ-संज्ञा स्त्री० दे० "नीवँ"।

नीहार-संज्ञा पुं० १. कुहरा। २. पाला।

नीहारिका-संज्ञा स्त्री० आकाश में धुएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाश-पुंज जो अँधेरी रात में सफ़ेद धब्बे की तरह कहीं कहीं दिखाई पड़ता है।

नुकता-संज्ञा पुं० बिंदु।
संज्ञा पुं० १. चुटकुला। २. ऐब।

नुक़ताचीनी-संज्ञा स्त्री० दोष निकालने का काम।

नुक़सान-संज्ञा पुं० १. कमी। २. हानि।

नुकीला-वि० [स्त्री० नुकीली] नोकदार।

नुक्कड़-संज्ञा पुं० १. नोक। २. सिरा।

नुक़्स-संज्ञा पुं० १. दोष। २. त्रुटि।

नुचना-क्रि० अ० नोचा जाना।

नुचवाना-क्रि० स० नोचने का काम दूसरे से कराना।

नुनखरा, नुनखारा-वि० नमकीन।

नुनेरा-संज्ञा पुं० १. नोनी मिट्टी आदि से नमक निकालनेवाला। २. लोनिया।

नुमाइश-संज्ञा स्त्री० १. प्रदर्शन। २. प्रदर्शिनी।

नुमाइशी-वि० दिखाऊ।

नुसखा-संज्ञा पुं० १. लिखा हुआ कागज़। २. कागज़ का वह चिट जिस पर हकीम या वैद्य रोगी के लिये औषध और सेवन-विधि लिखते हैं।

नूत-वि० १. नया। २. अनोखा।

नूतन-वि० १. नया। २. अनोखा।

नून-संज्ञा पुं० नमक।
*वि० दे० "न्यून"।

नूपुर-संज्ञा पुं० घुँघरू।

नूर-संज्ञा पुं० १. ज्योति। २. कांति।

नूरा-वि० तेजस्वी।

नृ-संज्ञा पुं० नर।

नृकेशरी-संज्ञा पुं० १. नृसिंह अवतार। २. श्रेष्ठ पुरुष।

नृत्तना*-क्रि० अ० नाचना।

नृत्य-संज्ञा पुं० नाच।

नृत्यशाला-संज्ञा स्त्री० नाचघर।

नृदेव, नृदेवता-संज्ञा पुं० १. राजा। २. ब्राह्मण।

नृप-संज्ञा पुं० नरपति।

नृपति, नृपाल-संज्ञा पुं० राजा।

नृमेध-संज्ञा पुं० नरमेध यज्ञ।

नृयज्ञ-संज्ञा पुं० अतिथि-पूजा।

नृशंस-वि० १. क्रूर। २. ज़ालिम।

नृसिंह-संज्ञा पुं० १. सिंहरूपी भगवान् जो विष्णु के चौथे अवतार थे। इन्होंने हिरण्यकशिपु को मारकर

पठिया–संज्ञा स्त्री० जवान और तगड़ी स्त्री।
पठौनी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पठावनी"।
पठ्यमान–वि० पढ़ा जाने के योग्य।
पड़छती, पड़छत्ती–संज्ञा स्त्री० १. भीत की रक्षा के लिये लगाया जाने-वाला छप्पर या टट्टी। २. कमरे आदि के बीच की पाटन जिस पर चीज़-असबाब रखते हैं।
पड़त॰–संज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता"।
पड़ता–संज्ञा पुं० १. लागत। २. दर।
पड़ताल–संज्ञा स्त्री० अनुसंधान।
पड़तालना–क्रि० स० जाँचना।
पड़ती–संज्ञा स्त्री० वह भूमि जिस पर कुछ काल से खेती न की गई हो।
पड़ना–क्रि० अ० १. गिरना। २. बिछाया जाना। ३. दाख़िल होना। ४. टिकना। ५. आराम करना। ६. बीमार होना। ७. मार्ग में मिलना। ८. उत्पन्न होना।
पड़पड़ाना–क्रि० अ० १. पड़पड़ शब्द होना। २. चरपराना।
पड़पोता–संज्ञा पुं० [स्त्री० पड़पोती] पुत्र का पोता।
पड़ाव–संज्ञा पुं० १. यात्री-समूह का यात्रा के बीच में अवस्थान। २. वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हैं।
पड़िया–संज्ञा स्त्री० भैंस का मादा बच्चा।
पड़ोस–संज्ञा पुं० १. किसी के घर के आस-पास के घर। २. किसी स्थान के आस-पास के स्थान।
पड़ोसी–संज्ञा पुं० [स्त्री० पड़ोसिन] वह मनुष्य जिसका घर पड़ोस में हो।
पढ़ना–क्रि० स० १. किसी पुस्तक, लेख आदि को इस प्रकार देखना कि उसमें लिखी बात मालूम हो जाय। २. बाँचना।
पढ़वाना–क्रि० स० १. किसी को पढ़ने में प्रवृत्त करना। २. किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना।
पढ़ाई–संज्ञा स्त्री० १. पढ़ने का काम। विद्याभ्यास। २. पढ़ने का भाव। संज्ञा स्त्री० १. पढ़ाने का काम। २. अध्यापन शैली।
पढ़ाना–क्रि० स० शिक्षा देना।
पण–संज्ञा पुं० १. जूआ। २. प्रतिज्ञा
पणव–संज्ञा पुं० छोटा नगाड़ा या ढोल।
पण्य–वि० १. ख़रीदने या बेचने योग्य। २. प्रशंसा करने योग्य।
पण्यशाला–संज्ञा स्त्री० दूकान।
पतंग–संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. गुड्डी।
पतंगबाज़–संज्ञा पुं० वह जिसको पतंग उड़ाने का व्यसन हो।
पतंगसुत–संज्ञा पुं० अश्विनीकुमार।
पतंगा–संज्ञा पुं० १. पतंग। कोई उड़ने-वाला कीड़ा-मकोड़ा। २. फतिंगा।
पतंचिका–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी।
पतंजलि–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्होंने योग-शास्त्र की रचना की। २. एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों और कात्यायन-कृत उनके वार्तिक पर 'महाभाष्य' की रचना की थी।
पत॰†–संज्ञा पुं० १. पति। २. मालिक। संज्ञा स्त्री० १. आबरू। २. प्रतिष्ठा।
पतझड़–संज्ञा स्त्री० १. वह ऋतु

प्रह्लाद की रक्षा की थी। २. श्रेष्ठ पुरुष।
नृहरि–संज्ञा पुं० नृसिंह।
नेे|–प्रत्य० सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता की विभक्ति।
नेक–वि० भला।
‡वि० थोड़ा।
क्रि० वि० थोड़ा।
नेकचलन–वि० [संज्ञा नेकचलनी] सदाचारी।
नेकनाम–वि० [संज्ञा नेकनामी] यशस्वी।
नेकनीयत–वि० [संज्ञा नेकनीयती] अच्छे संकल्प का।
नेकी–संज्ञा स्त्री० १. भलाई। २. सज्जनता। ३. उपकार।
नेकु‡|–वि०, क्रि० वि० दे० "नेक"।
नेग–संज्ञा पुं० १. विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों, आश्रितों तथा कृत्य में योग देनेवाले लोगों को कुछ दिए जाने का नियम। २. वह वस्तु या धन जो इस प्रकार दिया जाता है।
नेगचार–संज्ञा पुं० दे० "नेगजोग"।
नेगजोग–संज्ञा पुं० विवाह आदि मंगल अवसरों पर संबंधियों तथा काम करनेवालों को उनके प्रसन्नतार्थ कुछ दिए जाने का दस्तूर।
नेगी–संज्ञा पुं० नेग पानेवाला।
नेगीजोगी–संज्ञा पुं० नेग पानेवाले।
नेजा–संज्ञा पुं० १. भाला। २. निशान।
नेड़े|–क्रि० वि० निकट।
नेत–संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. निश्चय।
संज्ञा पुं० मथानी की रस्सी।
संज्ञा स्त्री० दे० "नीयत"।

नेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० नेत्री] १. नायक। २. स्वामी। ३. काम को चलानेवाला।
संज्ञा पुं० मथानी की रस्सी।
नेति–एक संस्कृत वाक्य (न इति) जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् "अंत नहीं है"।
नेती–संज्ञा स्त्री० वह रस्सी जो मथानी में लपेटी जाती है और जिसके खींचने से मथानी फिरती है।
नेत्र–संज्ञा पुं० १. आँख। २. मथानी की रस्सी।
नेत्रजल–संज्ञा पुं० आँसू।
नेत्रमंडल–संज्ञा पुं० आँख का घेरा।
नेत्रस्राव–संज्ञा पुं० आँखों से पानी बहना।
नेपच्यून–संज्ञा पुं० सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह।
नेपथ्य–संज्ञा पुं० १. सजावट। २. नृत्य, अभिनय आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट वेश सजते हैं।
नेपाल–संज्ञा पुं० हिंदुस्तान के उत्तर में एक प्रसिद्ध पहाड़ी देश।
नेपाली–वि० १. नेपाल में रहने या होनेवाला। २. नेपाल-संबंधी।
नेब◊–संज्ञा पुं० १. सहायक। २. मंत्री।
नेम–संज्ञा पुं० नियम।
नेमी–वि० १. नियम का पालन करनेवाला। २. धर्म की दृष्टि से पूजा-पाठ, व्रत आदि करनेवाला।
नेरे|–क्रि० वि० निकट।
नेवग◊–संज्ञा पुं० दे० "नेग"।
नेवज–संज्ञा पुं० भोग।
नेवतना|–क्रि० स० निमंत्रित करना।

जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। २. अवनति काल।
पतझार†-संज्ञा स्त्री० दे० "पतझड़"।
पतन-संज्ञा पुं० १. गिरना। २. अवनति। ३. नाश।
पतनशील-वि० गिरनेवाला।
पतनीय-वि० गिरनेवाला।
पतनोन्मुख-वि० जो गिरने की ओर प्रवृत्त हो।
पत-पानी-संज्ञा पुं० १. प्रतिष्ठा। २. लाज।
पतर०†-वि० १. पतला। २. पत्ता। ३. पत्तल।
पतरा†-वि० दे० "पतला"।
पतरी†-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्तल"।
पतला-वि० [स्त्री० पतली] १. जो मोटा न हो। २. कृश। ३. अधिक तरल।
पतलापन-संज्ञा पुं० पतला होने का भाव।
पतलून-संज्ञा पुं० अँगरेज़ी पाजामा।
पतवार, पतवारी-संज्ञा स्त्री० नाव का वह तिकोनाकार मुख्य अंग जो पीछे की ओर आधा जल में और आधा बाहर होता है। इसी के द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है।
पता-संज्ञा पुं० १. किसी का स्थान सूचित करनेवाली बात जिससे उसको पा सके। २. खोज। ३. खबर।
पताई-संज्ञा स्त्री० झड़ी हुई पत्तियों का ढेर।
पताका-संज्ञा स्त्री० १. झंडा। २. ध्वज।
पताकिनी-संज्ञा स्त्री० सेना।
पतार०†-संज्ञा पुं० १. दे० "पाताल"। २. जंगल।
पताल-संज्ञा पुं० दे० "पाताल"।
पतिंग-संज्ञा पुं० फतिंगा।
पतिंवरा-वि० स्त्री० जो अपना पति स्वयं चुने।
पति-संज्ञा पुं० [स्त्री० पत्नी] १. मालिक। २. दूल्हा। ३. मर्यादा।
पतिश्राना†-क्रि० स० विश्वास या एतबार करना।
पतिश्रार०†-संज्ञा पुं० १. विश्वास। २. विश्वसनीय।
पतित-वि० १. गिरा हुआ। २. महापापी। ३. अधम।
पतित-उधारन०-वि० जो पतित का उद्धार करे।
संज्ञा पुं० ईश्वर या उनका अवतार।
पतितता-संज्ञा स्त्री० १. पतित होने का भाव। २. नीचता।
पतितपावन-वि० [स्त्री० पतितपावनी] पतित को पवित्र करनेवाला।
संज्ञा पुं० ईश्वर।
पतित्व-संज्ञा पुं० १. स्वामित्व। २. पति होने का भाव।
पतिदेवा-संज्ञा स्त्री० पतिव्रता।
पतिनी०-संज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी"।
पतियाना†-क्रि० स० विश्वास करना।
पतियारा०-संज्ञा पुं० विश्वास।
पतिलोक-संज्ञा पुं० पतिव्रता स्त्री को मिलनेवाला वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।
पतिवती-वि० स्त्री० सधवा।
पतिव्रत-संज्ञा पुं० पातिव्रत्य।
पतिव्रता-वि० सती।
पतीजन, पतीजना०-क्रि० अ० एतबार करना।
पतील†-वि० दे० "पतला"।
पतीली-संज्ञा स्त्री० ताँबे या पीतल

नेवता–संज्ञा पुं० दे० "न्योता"।
नेवरना–क्रि० अ० समाप्त होना।
नेवला–संज्ञा पुं० एक मांसाहारी पिंडज छोटा जंतु जो देखने में गिलहरी के आकार का पर उससे बड़ा और भूरा होता है। यह साँप को खा जाता है।
नेवाज–वि० दे० "निवाज"।
नेवारना॰–क्रि० स० दे० "निवारना"।
नेवारी–संज्ञा स्त्री० जूही की जाति का एक पौधा।
नेसुक॰†–वि० तनिक।
क्रि० वि० थोड़ा सा।
नेस्त–वि० जो न हो।
नेस्ती–संज्ञा स्त्री० १. न होना। २. आलस्य।
नेह–संज्ञा पुं० स्नेह।
नेही॰–वि० प्रेमी।
नै–संज्ञा स्त्री० दे० "नय"।
संज्ञा स्त्री० नदी।
नैक, नैकु–वि० दे० "नेक", "नेकु"।
नैकट्य–संज्ञा पुं० निकटता।
नैचा–संज्ञा पुं० हुक्के की दोहरी नली जिसके एक सिरे पर चिलम रखी जाती है और दूसरे का छोर मुँह में रखकर धूआँ खींचते हैं।
नैतिक–वि० नीति-संबंधी।
नैन॰–संज्ञा पुं० दे० "नयन"।
नैनसुख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।
नैनू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का उभरे हुए बेलबूटे का कपड़ा।
†संज्ञा पुं० मक्खन।
नैपाल–वि० १. नेपाल-संबंधी। २. नेपाल में होनेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "नेपाल"।
नैपाली–वि० १. नैपाल देश का। २. नैपाल में रहने या होनेवाला।
संज्ञा पुं० नैपाल का रहनेवाला आदमी।
नैपुण्य–संज्ञा पुं० होशियारी।
नैमित्तिक–वि० जो निमित्त उपस्थित होने पर या किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिये हो।
नैया॰†–संज्ञा स्त्री० नाव।
नैयायिक–वि० न्यायशास्त्र का जाननेवाला।
नैर॰–संज्ञा पुं० शहर।
नैराश्य–संज्ञा पु० निराशा का भाव।
नैर्ऋत–वि० निर्ऋति-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. राक्षस। २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।
नैर्ऋति–संज्ञा स्त्री० दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
नैवेद्य–संज्ञा पुं० भोग।
नैषध–वि० निषध-देश संबंधी। निषध देश का।
संज्ञा पुं० नल जो निषध-देश के राजा थे।
नैष्ठिक–वि० [स्त्री० नैष्ठिकी] निष्ठावान्।
नैसर्गिक–वि० स्वाभाविक।
नैसा॰–वि० बुरा।
नैहर–संज्ञा पु० स्त्री के पिता का घर।
नोक–संज्ञा स्त्री० [वि० नुकीला] १. उस ओर का सिरा जिस ओर कोई वस्तु बराबर पतली पड़ती गई हो। २. निकला हुआ कोना।
नोक-झोंक–संज्ञा स्त्री० १. ठाठ-बाट। २. तपाक। ३. चुभनेवाली बात। ४. छेड़छाड़।

की एक प्रकार की बटलोई।
पतुरिया–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
पतोह, पतोहू†–संज्ञा स्त्री० बेटे की स्त्री।
पतौआ०†–संज्ञा पुं० पत्ता।
पत्तन–संज्ञा पुं० नगर।
पत्तर–संज्ञा पुं० धातु की चादर।
पत्तल–संज्ञा स्त्री० १. पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ एक पात्र जिससे थाली का काम लिया जाता है। २. पत्तल में परसी हुई भोजन-सामग्री।
पत्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० पत्ती] १. पर्ण। २. कान में पहनने का एक गहना।
पत्ती–संज्ञा स्त्री० १. छोटा पत्ता। २. भाग।
पत्तीदार–संज्ञा पुं० साझीदार।
पत्थ०–संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।
पत्थर–संज्ञा पुं० [वि० पथरीला, क्रि० पथराना] १. पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या खंड। २. ओला। ३. रत्न। ४. बिलकुल नहीं।
पत्थरचटा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की घास। २. कंजूस।
पत्थरफोड़–संज्ञा पुं० पत्थरों की संधि में होनेवाली एक वनस्पति।
पत्नी–संज्ञा स्त्री० विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री। सहधर्मिणी।
पत्नीव्रत–संज्ञा पुं० अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम।
पत्य–संज्ञा पुं० पति होने का भाव।
पत्याना०†–क्रि० स० दे० "पतिआना"।
पत्यारी०–संज्ञा स्त्री० पंक्ति।
पत्र–संज्ञा पुं० १. पत्ता। २. चिट्ठी। ३. समाचारपत्र।
पत्रकार–संज्ञा पुं० समाचारपत्र का संपादक।
पत्र-पुष्प–संज्ञा पुं० १. सत्कार या पूजा की बहुत मामूली सामग्री। २. लघु उपहार।
पत्रवाहक–संज्ञा पुं० चिट्ठीरसाँ।
पत्र-व्यवहार–संज्ञा पुं० खत-किताबत।
पत्रा–संज्ञा पुं० १. तिथिपत्र। २. पत्ता।
पत्रिका–संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी। २. समाचारपत्र।
पत्री–संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी। २. कोई छोटा लेख या लिपिपत्रिका।
वि० जिसमें पत्ते हों।
पथ–संज्ञा पुं० १. मार्ग। २. व्यवहार आदि की रीति।
संज्ञा पुं० दे० "पथ्य"।
पथगामी–संज्ञा पुं० पथिक।
पथदर्शक, पथप्रदर्शक–संज्ञा पुं० रास्ता दिखानेवाला।
पथराना–क्रि० अ० १. सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना। २. ताज़गी न रहना।
पथरी–संज्ञा स्त्री० १. कटोरे या कटोरी के आकार का पत्थर का बना हुआ कोई पात्र। २. एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-बड़े कई टुकड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ३. सिल्ली।
पथरीला–वि० [स्त्री० पथरीली] पत्थरों से युक्त।
पथिक–संज्ञा पुं० राहगीर।
पथी–संज्ञा पुं० यात्री।
पथु०†–संज्ञा पुं० पथ।
पथ्य–संज्ञा पुं० १. वह हलका और

जल्दी पचनेवाला खाना जो रोगी के लिये लाभदायक हो। २. हित।

पद–संज्ञा पुं० १. व्यवसाय। २. दर्जा। ३. पैर। ४. पैर का निशान। ५. श्लोकपाद। ६. उपाधि। ७. निर्वाण।

पदक–संज्ञा पुं० १. पूजन आदि के लिये किसी देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न। २. तमगा।

पदचर–संज्ञा पुं० पैदल।

पदच्छेद–संज्ञा पुं० संधि और समास-युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग करने की क्रिया।

पदच्युत–वि० [संज्ञा पदच्युति] जो अपने पद या स्थान से हट गया हो।

पदतल–संज्ञा पुं० पैर का तलवा।

पदत्राण–संज्ञा पुं० जूता।

पददलित–वि० १. पैरों से रौंदा हुआ। २. जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पदन्यास–संज्ञा पुं० १. चलना। २. पैर रखने की एक मुद्रा। ३. चलन।

पद्म–संज्ञा पुं० दे० "पद्म"। संज्ञा पुं० बादाम की जाति का एक जंगली पेड़।

पदरिपु–संज्ञा पुं० काँटा।

पदवी–संज्ञा स्त्री० १. पंथ। २. पद्धति। ३. खिताब। ४. ओहदा।

पदाति, पदातिक–संज्ञा पुं० १. वह जो पैदल चलता हो। २. पैदल सिपाही। ३. नौकर।

पदाधिकारी–संज्ञा पुं० ओहदेदार।

पदाना–क्रि० स० बहुत अधिक दिक करना।

पदार्थ–संज्ञा पुं० चीज़। वस्तु।

पदार्पण–संज्ञा पुं० किसी स्थान में पैर रखने या आने की क्रिया।

पदावली–संज्ञा स्त्री० १. वाक्यों की श्रेणी। २. भजनों का संग्रह।

पदिक–संज्ञा पुं० पैदल सेना।
०† संज्ञा पुं० १ गले में पहनने का जुगनूँ नाम का गहना। २. हीरा।

पदी–संज्ञा पुं० पैदल।

पद्धति–संज्ञा स्त्री० १. राह। २. पंक्ति। ३. रीति। ४. विधान।

पद्म–संज्ञा पुं० १. कमल का फूल या पौधा। २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में का एक विशेष आकार का चिह्न जो भाग्यसूचक माना जाता है। ३. विष्णु का एक आयुध। ४. शरीर पर के सफ़ेद दाग़।

पद्मकंद–संज्ञा पुं० कमल की जड़।

पद्मनाभ–संज्ञा पुं० विष्णु।

पद्मपाणि–संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा। २. बुद्ध की एक विशेष मूर्ति। ३. सूर्य्य।

पद्मयोनि–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

पद्मराग–संज्ञा पुं० मानिक।

पद्मा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

पद्माकर–संज्ञा पुं० बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

पद्माख–संज्ञा पुं० दे० "पद्म"।

पद्मालय–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।

पद्मालया–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

पद्मासन–संज्ञा पुं० १. योगसाधन का एक आसन जिसमें पालथी मारकर सीधे बैठते हैं। २. ब्रह्मा। ३. शिव।

पद्मिनी–संज्ञा स्त्री० १. कमलिनी। छोटा कमल। २. वह तालाब या जलाशय जिसमें कमल हों। ३.

उजला होना। २. ताप।
पली–संज्ञा स्त्री० तेल, घी आदि द्रव-पदार्थों को घड़े बरतन से निकालने का लोहे का एक उपकरण।
पलीता–संज्ञा पुं०[स्त्री० अल्पा० पलीती] १. बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज़ जिस पर कोई यंत्र लिखा हो। २. वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है। ३. कपड़े की वह बत्ती जिसे पनशाखे पर रखकर जलाते हैं।
वि० बहुत क्रुद्ध। बहुत कड़ुआ।
पलीद–वि० १. अपवित्र। २. घृणास्पद। ३. नीच।
संज्ञा पुं० भूत।
पलुआ†–संज्ञा पुं० पालतू।
पलुहना०†–क्रि० अ० हरा-भरा होना।
पलुहाना०†–क्रि० स० हरा-भरा करना।
पलेथन–संज्ञा पुं० परथन।
पलोटना–क्रि० स० १. पैर दबाना। २. दे० "पलटना"।
क्रि० अ० तड़फड़ाना।
पलोथन–संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।
पल्लव–संज्ञा पुं० १. कोंपल। २. हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण। ३. विस्तार। ४. दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश जिसका राज्य उड़ीसा से तुंगभद्रा नदी तक था।
पल्लवना०–क्रि० अ० पल्लवित होना।
पल्लवित–वि० १. जिसमें नए नए पत्ते हों। २. हरा-भरा।
पल्ला–क्रि० वि० दूर।
संज्ञा पुं० दूरी।
संज्ञा पुं० १. कपड़े का छोर। २. दूरी। ३. तरफ़।
संज्ञा पुं० १. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। २. किवाड़। ३. पहल। ४. तीन मन का बोझ।
संज्ञा पुं० तराज़ू में एक ओर का टोकरा या डलिया।
संज्ञा पुं० कैंची के दो भागों में से एक भाग।
वि० दे० "परला"।
पल्ली–संज्ञा स्त्री० १. छोटा गाँव। २. कुटी।
पल्लै†०–वि० दे० १. "परलय"। २. दे० "पल्ला"।
पल्लेदार–संज्ञा पुं० १. अनाज ढोनेवाला मज़दूर। २. गल्ला तौलनेवाला आदमी।
पल्लेदारी–संज्ञा स्त्री० पल्लेदार का काम।
पल्लौ†–संज्ञा पुं० पल्लव।
संज्ञा पुं० पल्ला।
पवन–संज्ञा पुं० १. वायु। २. जल। ३. साँस।
० संज्ञा पुं० दे० "पावन"।
पवन-कुमार–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. भीमसेन।
पवन-चक्की–संज्ञा स्त्री० वह चक्की या कल जो हवा के ज़ोर से चलती हो।
पवन-चक्र–संज्ञा पुं० बवंडर।
पवन-तनय–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. भीमसेन।
पवनपति–संज्ञा पुं० वायु के अधिष्ठाता देवता।
पवन-पुत्र–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. भीमसेन।
पवन-सुत–संज्ञा पुं० १. हनुमान्।

कोकशास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जातियों में से सर्वोत्तम जाति। ४. लक्ष्मी।

पद्य-वि० १. जिसका संबंध पैरों से हो। २. जिसमें कविता के पद हों। संज्ञा पुं० कविता।

पद्यात्मक-वि० जो छंदोबद्ध हो।

पधरना-क्रि० अ० किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन।

पधराना-क्रि० स० १. आदरपूर्वक ले जाना। २. प्रतिष्ठित करना।

पधरावनी-संज्ञा स्त्री० १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदरपूर्वक ले जाकर बैठाने की क्रिया।

पधारना-क्रि० अ० १. जाना। २. आना।
क्रि० स० आदरपूर्वक बैठाना।

पन-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा।
प्रत्य० एक प्रत्यय जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं।

पनघट-संज्ञा पुं० वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हों।

पनच-संज्ञा स्त्री० धनुष का रोदा या डोरी।

पनचक्की-संज्ञा स्त्री० पानी के ज़ोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पनडुब्बा-संज्ञा पुं० १. पानी में गोता लगानेवाला। २. वह पक्षी जो पानी में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो।

पनडुब्बी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नाव जो प्रायः पानी के अंदर डूबकर चलती है। सब-मेरीन।

पनपना-क्रि० अ० १. पानी पाने के कारण फिर से हरा हो जाना। २. फिर से तंदुरुस्त होना।

पनडब्बा-संज्ञा पुं० पान रखने का छोटा डिब्बा।

पनभरा-संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

पनव-संज्ञा पुं० दे० "प्रणव"।

पनवाड़ी-संज्ञा पुं० पान बेचनेवाला।

पनवारा-संज्ञा पुं० १. पत्तों की बनी हुई पत्तल। २. एक पत्तल भर भोजन जो एक मनुष्य के खाने भर को हो।

पनस-संज्ञा पुं० कटहल।

पनसारी-संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।

पनसाल-संज्ञा स्त्री० पौसरा।

पनसेरी-संज्ञा स्त्री० दे० "पंसेरी"।

पनहरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी] वह जो पानी भरने का काम करता हो।

पनहा-संज्ञा पुं० १. कपड़े या दीवार आदि की चौड़ाई। २. भेद।
संज्ञा पुं० चोरी का पता लगानेवाला।

पनहारा-संज्ञा पुं० दे० "पनहरा"।

पनहियाभद्र-संज्ञा पुं० सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ।

पनही†-संज्ञा स्त्री० जूता।

पना-संज्ञा पुं० आम, इमली आदि के रस से बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबत।

पनाती-संज्ञा पुं० [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनाला-संज्ञा पुं० दे० "परनाला"।

पनासना†-क्रि० स० परवरिश करना।

पनाह-संज्ञा स्त्री० १. बचाव। २. शरण।

पनियाँ†-वि० दे० "पनिहा"।

पनिया सोत†-वि० अत्यंत गहरा।

२. भीमसेन।
पवनाशन–संज्ञा पुं० साँप।
पवनाशी–संज्ञा पुं० १. वह जो हवा खाकर रहता हो। २. साँप।
पवनी†–संज्ञा स्त्री० गाँवों में रहनेवाली वह छोटी प्रजा जो अपने निर्वाह के लिये गाँववालों से कुछ पाती है।
पवर, पवरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पँवरि"।
पवर्ग–संज्ञा पुं० वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग जिसमें प, फ, ब, भ, म, ये पाँच अक्षर हैं।
पवाँर–संज्ञा पुं० दे० "परमार"।
पवाँरना†–क्रि० स० फेंकना।
पवाई–संज्ञा स्त्री० १. एक पैर का जूता। २. चक्की का एक पाट।
पवाना†–क्रि० स० खिलाना।
पवि–संज्ञा पुं० १. वज्र। २. बिजली।
पवित्र–वि० साफ़।
पवित्रता–संज्ञा स्त्री० सफ़ाई।
पवित्रात्मा–वि० जिसकी आत्मा पवित्र हो।
पवित्रित–वि० शुद्ध या निर्मल किया हुआ।
पवित्री–संज्ञा स्त्री० कुश का बना छल्ला जो कर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है।
पशम–संज्ञा स्त्री० बढ़िया मुलायम ऊन जिससे दुशाले और पशमीने आदि बनते हैं।
पशमीना–संज्ञा पुं० १. पशम। २. पशम का बना हुआ कपड़ा।
पशु–संज्ञा पुं० १. चार पैरों से चलनेवाला कोई जंतु जिसके शरीर का भार खड़े होने पर पैरों पर रहता हो। २. जीवमात्र।
पशुता–संज्ञा स्त्री० १. जानवरपन। २. मूर्खता और औद्धत्य।
पशुत्व–संज्ञा पुं० दे० "पशुता"।
पशुधर्म–संज्ञा पुं० पशुओं का सा आचरण।
पशुपतास्त्र–संज्ञा पुं० महादेव का शूलास्त्र।
पशुपति–संज्ञा पुं० १. शिव। २. अग्नि ३. ओषधि।
पशुपाल–संज्ञा पुं० पशुओं को पालनेवाला।
पशुराज–संज्ञा पुं० सिंह।
पश्चात्–अव्य० पीछे।
पश्चात्ताप–संज्ञा पुं० अफ़सोस।
पश्चिम–संज्ञा पुं० वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है।
पश्चिमा–संज्ञा स्त्री० पच्छिम दिशा।
पश्चिमाचल–संज्ञा पुं० अस्ताचल।
पश्चिमी–वि० १. पश्चिम की ओर का। २ पश्चिम-संबंधी।
पश्चिमोत्तर–संज्ञा पुं० पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना।
पश्तो–संज्ञा स्त्री० पश्चिमोत्तर भारत की एक आर्य्य भाषा जिसमें फ़ारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं।
पश्म–संज्ञा स्त्री० दे० "पशम"।
पश्मीना–संज्ञा पुं० दे० "पशमीना"।
पश्यतोहर–संज्ञा पुं० वह जो आँखों के सामने से चीज़ चुरा ले।
पष†–संज्ञा पुं० १. पंख। २. तरफ़। ३. पक्ष।
पपा–संज्ञा पुं० दाढ़ी।

पनिहा–वि० १. पानी में रहनेवाला। २. जिसमें पानी मिला हो। ३. पानी-संबंधी।
संज्ञा पुं० भेदिया।

पनी†✡–संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा करनेवाला।

पनीर–संज्ञा पुं० १. छेना। २. वह दही जिसका पानी निचोड़ लिया गया हो।

पनीला–वि० जलयुक्त।

पनुआँ†–वि० फीका।

पन्न–वि० १. गिरा हुआ। २. नष्ट।

पन्नग–संज्ञा पुं० [स्त्री० पन्नगी] १. सर्प। २. पद्मा।

पन्नगपति–संज्ञा पुं० शेषनाग।

पन्नगारि–संज्ञा पुं० गरुड़।

पन्ना–संज्ञा पुं० मरकत।

पन्नीसाज़–संज्ञा पुं० पन्नी बनाने का काम करनेवाला।

पन्हाना†–क्रि० अ० दे० "पिन्हाना"।
क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना"। २. दे० "पहनाना"।

पपड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पपड़ी] १. लकड़ी का रूखा करकरा और पतला छिलका। २. रोटी का छिलका।

पपड़ी–संज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु की ऊपरी परत जो तरी या चिकनाई के अभाव के कारण कड़ी और सिकुड़कर जगह जगह से चिटक गई हो। २. घाव के ऊपर मवाद के सूख जाने से बना हुआ आवरण या परत।

पपीहा–संज्ञा पुं० चातक।

पपीता–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसके पके फल खाए जाते हैं।

पपोटा–संज्ञा पुं० पलक।

पय–संज्ञा पुं० १. दूध। २. जल।

पयद✡–संज्ञा पुं० दे० "पयोद"।

पयनिधि✡–संज्ञा पुं० दे० "पयोनिधि"।

पयस्विनी–संज्ञा स्त्री० १. दूध देनेवाली गाय। २. बकरी। ३. नदी।

पयस्वी–वि० [स्त्री० पयस्विनी] पानी वाला।

पयहारी–संज्ञा पुं० दूध पीकर रह जानेवाला तपस्वी या साधु।

पयान–संज्ञा पुं० गमन।

पयार, पयाल–संज्ञा पुं० पुआल।

पयोज–संज्ञा पुं० कमल।

पयोद–संज्ञा पुं० बादल।

पयोधर–संज्ञा पुं० १. स्तन। २. बादल। ३. तालाब। ४. पर्वत।

पयोधि–संज्ञा पुं० समुद्र।

पयोनिधि–संज्ञा पुं० समुद्र।

परंच–अव्य० १. और भी। २. तो भी।

परंतप–वि० १. वैरियों को दुःख देनेवाला। २. जितेंद्रिय।

परंतु–अव्य० पर।

परंपरा–संज्ञा स्त्री० १. अनुक्रम। २. वंशपरंपरा।

परंपरागत–वि० परंपरा से चला आता हुआ।

पर–वि० १. गैर। २. पराया। ३. जुदा। ४. दूर।
प्रत्य० सप्तमी या अधिकरण का चिह्न।
अव्य० १. पश्चात्। २. परंतु।
संज्ञा पुं० पंख।

परई†–संज्ञा स्त्री० दीए के आकार का पर उससे बड़ा मिट्टी का एक बरतन।

पपान–संज्ञा पुं० दे० "पाषाण"।
पपारना✡†–क्रि० स० धोना।
पसंगा†–संज्ञा पुं० पासंग।
वि० बहुत ही थोड़ा या कम।
पसंती✡–संज्ञा स्त्री० दे० "पश्यंती"।
पसंद–वि० जो अच्छा लगे।
संज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति।
पसनी†–संज्ञा स्त्री० अन्नप्राशन नामक संस्कार।
पसर–संज्ञा पुं० गहरी की हुई हथेली।
† संज्ञा पुं० विस्तार।
पसरना–क्रि० अ० १. फैलना। २. विस्तृत होना। ३. पैर फैलाकर लेटना।
पसरहट्टा–संज्ञा पुं० वह बाजार जिसमें पंसारियों आदि की दूकानें हों।
पसराना–क्रि० स० दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना।
पसली–संज्ञा स्त्री० मनुष्यों और पशुओं आदि के शरीर में छाती पर के पंजर की आड़ी और गोलाकार हड्डियों में से कोई हड्डी।
पसाउ†✡–संज्ञा पुं० प्रसाद।
पसाना–क्रि० स० भात में से माँड़ निकालना।
†✡ क्रि० अ० प्रसन्न होना।
पसार–संज्ञा पुं० १. फैलाव। २. विस्तार।
पसारना–क्रि० स० फैलाना।
पसारी–संज्ञा पुं० दे० "पंसारी"।
पसाव–संज्ञा पुं० माँड़।
पसावन–संज्ञा पुं० दे० "पसाव"।
पसीजना–क्रि० अ० १. रसना। २. दयार्द्र होना।
पसीना–संज्ञा पुं० वह जल जो परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर शरीर से निकलने लगता है।
पसुरी✡†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।
पसूजना–क्रि० स० सीना।
पसेउ†–संज्ञा पुं० दे० "पसेव"।
पसेरी–संज्ञा स्त्री० पाँच सेर का बाट।
पसेव–संज्ञा पुं० १. किसी चीज़ में से रसकर निकला हुआ जल। २. पसीना।
पसोपेश–संज्ञा पुं० १. आगा-पीछा। २. हानि-लाभ।
पस्त–वि० १. हारा हुआ। २. थका हुआ। ३. दबा हुआ।
पस्तहिम्मत–वि० भीरु।
पस्सी बबूल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पहाड़ी बबूल।
पहँ✡–अव्य० १. निकट। २. से।
पहँसुल–संज्ञा स्त्री० हँसिया के आकार का तरकारी काटने का एक औज़ार।
पह✡†–संज्ञा स्त्री० दे० "पौ"।
पहचान–संज्ञा स्त्री० १. पहचानने की क्रिया या भाव। २. निशानी। ३. परिचय।
पहचानना–क्रि० स० चीन्हना।
पहटना†–क्रि० स० पीछा करना।
पहनना–क्रि० स० शरीर पर धारण करना।
पहनवाना–क्रि० स० किसी और के द्वारा किसी को कुछ पहनाना।
पहनाई–संज्ञा स्त्री० १. पहनने की क्रिया या भाव। २. पहनाने की मज़दूरी या उजरत।
पहनाना–क्रि० स० दूसरे को कपड़े, आभूषण आदि धारण कराना।
पहनावा–संज्ञा पुं० १. पोशाक। २.

परकटा॰–वि॰ जिसके पर या पंख कटे हों।
परकना॰†–क्रि॰ अ॰ १. हिलना। २. चसका लगना।
परकसना॰–क्रि॰ अ॰ प्रकाशित होना।
परकाजी–वि॰ परोपकारी।
परकाना†–क्रि॰ स॰ १. परचाना। २. चसका लगाना।
परकार–संज्ञा पुं॰ वृत्त या गोलाई खींचने का एक औज़ार।
परकारना–क्रि॰ स॰ १. परकार से वृत्त बनाना। २. चारों ओर फेरना।
परकाल–संज्ञा पुं॰ दे॰ "परकार"।
परकाला–संज्ञा पुं॰ १. सीढ़ी। २. चौखट।
संज्ञा पुं॰ टुकड़ा।
परकास–संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रकाश"।
परकासना॰–क्रि॰ स॰ प्रकाशित करना।
परकिति॰†–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "प्रकृति"।
परकीय–वि॰ पराया।
परकीया–संज्ञा स्त्री॰ पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रीति-संबंध रखनेवाली स्त्री।
परकोटा–संज्ञा पुं॰ १. किसी गढ़ या स्थान की रक्षा के लिये चारों ओर उठाई हुई दीवार। २. बाँध।
परख–संज्ञा स्त्री॰ १. जाँच। २. पहचान।
परखना–क्रि॰ स॰ १. जाँच करना। २. भला और बुरा पहचानना।
क्रि॰ स॰ प्रतीक्षा करना।
परखाना–क्रि॰ स॰ १. जँचवाना। २. सँभलवाना।
परग–संज्ञा पुं॰ पग।
परगटना॰–क्रि॰ अ॰ प्रकट होना। क्रि॰ स॰ प्रकट या ज़ाहिर करना।
परगना–संज्ञा पुं॰ वह भूभाग जिसके अंतर्गत बहुत से ग्राम हों।
परचंड॰–वि॰ दे॰ "प्रचंड"।
परचत॰†–संज्ञा स्त्री॰ जानकारी।
परचना–क्रि॰ अ॰ १. हिलना-मिलना। २. चसका लगना।
परचा–संज्ञा पुं॰ १. काग़ज़ का टुकड़ा। २. चिट्ठी। ३. परीक्षा में आनेवाला प्रश्नपत्र।
संज्ञा पुं॰ १. परिचय। २. परख। ३. प्रमाण।
परचाना–क्रि॰ स॰ १. हिलाना। २. टेव डालना।
क्रि॰ स॰ जलाना।
परचार॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "प्रचार"।
परचारना॰–क्रि॰ स॰ दे॰ "प्रचारना"।
परचून–संज्ञा पुं॰ आटा, दाल, मसाला आदि भोजन का सामान।
परचूनी–संज्ञा पुं॰ मोदी।
परछत्ती–संज्ञा स्त्री॰ १. पाटा। २. फूस आदि की छाजन।
परछन–संज्ञा स्त्री॰ विवाह की एक रीति जिसमें बारात द्वार पर आने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ वर की आरती करतीं तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।
परछना–क्रि॰ स॰ परछन की क्रिया करना।
परछाईं–संज्ञा स्त्री॰ १. छायाकृति। २. प्रतिबिंब।
परजन॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "परिजन"।
परजरना॰–क्रि॰ अ॰ १. जलना।

विशेष अवस्था, स्थान अथवा समाज में ऊपर पहने जानेवाले कपड़े। ३. कपड़े पहनने का ढंग या चाल।

पहपट–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ गाया करती हैं। २. शोर-गुल। ३. धोखा।

पहपटबाज़–संज्ञा पुं० [संज्ञा पहपटबाज़ी] १. शरारती। २. ठग।

पहपटहाई–संज्ञा स्त्री० झगड़ा कराने या लगानेवाली।

पहर–संज्ञा पुं० १. तीन घंटे का समय। २. युग।

पहरना†–क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहरा–संज्ञा पुं० १. रक्षक-नियुक्ति। चौकी। २. हिफ़ाज़त। ३. तैनाती।

पहराना†–क्रि० स० दे० "पहनाना"।

पहरावनी–संज्ञा स्त्री० वह पोशाक जो कोई बड़ा छोटे को दे।

पहरी–संज्ञा पुं० पहरेदार।

पहरुआ†–संज्ञा पुं० दे० "पहरू"।

पहरू–संज्ञा पुं० पहरा देनेवाला।

पहल–संज्ञा पुं० १. तरफ़। २. तह। संज्ञा पुं० किसी कार्य्य का आरंभ।

पहलदार–वि० पहलूदार।

पहलवान–संज्ञा पुं० [संज्ञा पहलवानी] १. कुश्ती लड़नेवाला बली पुरुष। २. बलवान् तथा डीलडौलवाला।

पहलवानी–संज्ञा स्त्री० पहलवान होने का भाव, काम या पेशा।

पहला–वि० [स्त्री० पहली] प्रथम।

पहलू–संज्ञा पुं० १. पाँजर। २. बगल। ३. तरफ़। ४. [वि० पहलूदार] पहल। ५. पक्ष।

पहले–अव्य० १. आरंभ में। २. पेश्तर।

पहले-पहल–अव्य० पहली बार।

पहलौठा–वि० [स्त्री० पहलौठी] पहली बार के गर्भ से उत्पन्न (लड़का)।

पहलौठी–संज्ञा स्त्री० पहले पहल बच्चा जनना।

पहाड़–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १. पर्वत। गिरि। २. बहुत भारी ढेर। ३. बहुत भारी चीज़। ४. अति कठिन कार्य्य।

पहाड़ा–संज्ञा पुं० गुणन-सूची।

पहाड़ी–वि० १. जो पहाड़ पर रहता या होता हो। २. जिसका संबंध पहाड़ से हो।
संज्ञा स्त्री० १. छोटा पहाड़। २. पहाड़ के लोगों की—गाने की—एक धुन।

पहिचान–संज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।

पहित, पहिती–संज्ञा स्त्री० पकी हुई दाल।

पहियाँ᠅†–अव्य० दे० "पहँ"।

पहिया–संज्ञा पुं० चक्का।

पहिरावनी–संज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा"।

पहिला–वि० [स्त्री० पहिली] १. दे० "पहला"। २. पहले पहल ब्याई हुई।

पहिले–अव्य० दे० "पहले"।

पहुँच–संज्ञा स्त्री० १. किसी स्थान तक अपने को ले जाने की क्रिया या शक्ति। २. प्रवेश। ३. रसीद। ४. परिचय।

पहुँचना–क्रि० अ० १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत या प्राप्त होना। २. किसी स्थान तक लगातार फैलना। ३. घुसना। ४. मिलना।

२. क्रुद्ध होना।
परजा–संज्ञा स्त्री० १. प्रजा। २. आश्रित जन। ३. आसामी।
परजाता–संज्ञा पुं० परिजात।
परजौट–संज्ञा पुं० घर बनाने के लिये सालाना किराए पर ज़मीन लेने-देने का नियम।
परतंत्र–वि० पराधीन।
परतंत्रता–संज्ञा स्त्री० पराधीनता।
परतः–पश्चात्।
परत–संज्ञा स्त्री० तह।
परतल–संज्ञा पुं० लादनेवाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा या गून।
परता–संज्ञा पुं० दे० "पड़ता"।
परताप०–संज्ञा पुं० दे० "प्रताप"।
परती–संज्ञा स्त्री० वह खेत या ज़मीन जो बिना जोती हुई छोड़ दी गई हो।
परतीत०–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति"।
परतेजना०–क्रि० स० परित्याग करना।
परत्व–संज्ञा पुं० पर होने का भाव।
परथन–संज्ञा पुं० दे० "पलेथन"।
परदच्छिना०†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिणा"।
परदा–संज्ञा पुं० १. आड़ करने के काम में आनेवाला कपड़ा, चिक आदि। २. आड़। ३. स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल।
परदादा–संज्ञा पुं० [स्त्री० परदादी] दादा का बाप।
परदानशीन–वि० परदे में रहनेवाली।
परदेश–संज्ञा पुं० विदेश।
परदेशी–वि० विदेशी।
परधाम–संज्ञा पुं० वैकुंठ धाम।
परन–संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा। संज्ञा स्त्री० आदत। ०संज्ञा पुं० दे० "पर्ण"।
परना–०†–क्रि० अ० दे० "पड़ना"।
परनाना–संज्ञा पुं० [स्त्री० परनानी] नाना का बाप।
परनाला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० परनाली] पनाला।
परनि०–संज्ञा स्त्री० बान।
परनौत०–संज्ञा स्त्री० प्रणाम।
परपंच०†–संज्ञा पुं० दे० "प्रपंच"।
परपंची०†–वि० १. बखेड़िया। २. धूर्त।
परपट–संज्ञा पुं० समतल भूमि।
परपराना–क्रि० अ० चुनचुनाना।
परपीड़क–संज्ञा पुं० १. दूसरे को पीड़ा या दुःख पहुँचानेवाला। २. पराई पीड़ा को समझनेवाला।
परपोता–संज्ञा पुं० पोते का बेटा।
परब–संज्ञा पुं० दे० "पर्व"।
परबत–संज्ञा पुं० दे० "पर्वत"।
परब्रह्म–संज्ञा पुं० ब्रह्म जो जगत् से परे है। निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।
परम–वि० १. सबसे बढ़ा-चढ़ा। २. उत्कृष्ट।
परम गति–संज्ञा स्त्री० मोक्ष।
परम तत्त्व–संज्ञा पुं० मूल तत्त्व जिससे संपूर्ण विश्व का विकाश है।
परम धाम–संज्ञा पुं० वैकुंठ।
परम पद–संज्ञा पुं० मोक्ष।
परम भट्टारक–संज्ञा पुं० [स्त्री० परम भट्टारिका] एकछत्र राजाओं की एक प्राचीन उपाधि।
परमहंस–संज्ञा पुं० वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो।

पहुँचा–संज्ञा पुं० कलाई।

पहुँचाना–क्रि० स० १. घुसाना। २. किसी के साथ इसलिये जाना जिसमें वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष अवस्था तक ले जाना।

पहुँची–संज्ञा स्त्री० कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

पहुना†–संज्ञा पुं० दे० "पाहुना"।

पहुनाई–संज्ञा स्त्री० १. अतिथि-रूप में कहीं जाना या आना। २. अतिथि-सत्कार।

पहुप७†–संज्ञा पुं० दे० "पुष्प"।

पहुमी–संज्ञा स्त्री० दे० "पुहमी"।

पहुला–संज्ञा पुं० कुमुदिनी।

पहेली–संज्ञा स्त्री० १. बुझौवल। २. समस्या।

पह्लव–संज्ञा पुं० एक प्राचीन जाति। प्राचीन पारसी या ईरानी।

पह्लवी–संज्ञा स्त्री० आधुनिक फ़ारस के मध्यवर्ती काल की फ़ारस की भाषा।

पाँ, पाँइ७–संज्ञा पुं० पाँव।

पाँइबाग़–संज्ञा पुं० महलों के चारों ओर का छोटा बाग़ जिसमें राज-महल की स्त्रियाँ सैर करने जाती हैं।

पाँउँ७†–संज्ञा पुं० पैर।

पाँक–संज्ञा पुं० कीचड़।

पाँख†–संज्ञा पुं० पंख।

पाँखी७†–संज्ञा स्त्री० पतिंगा।

पाँखुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पँखड़ी"।

पाँच–वि० १. जो गिनती में चार और एक हो। २. पंच।

पांचजन्य–संज्ञा पुं० कृष्ण के बजाने का शंख।

पांचभौतिक–संज्ञा पुं० पाँचों भूतों या तत्त्वों से बना हुआ शरीर।

पांचाल–संज्ञा पुं० दे० "पंचाल"। वि० पांचाल देश का रहनेवाला।

पांचाली–संज्ञा स्त्री० पांडवों की स्त्री द्रौपदी।

पाँचैं†–संज्ञा स्त्री० पंचमी।

पाँजना–क्रि० स० टाँका लगाना।

पाँजर–संज्ञा पुं० १. बग़ल और कमर के बीच का वह भाग जिसमें पस-लियाँ होती हैं। २. पसली।

पांडव–संज्ञा पुं० कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के पाँचों पुत्र।

पांडवनगर–संज्ञा पुं० दिल्ली।

पांडित्य–संज्ञा पुं० विद्वत्ता।

पांडु–संज्ञा पुं० १. कुछ लाली लिए पीला रंग। २. एक रोग का नाम, जिसमें शरीर का चमड़ा पीले रंग का हो जाता है। ३. प्राचीन काल के एक राजा का नाम जो पांडव वंश के आदिपुरुष थे।

पांडुता–संज्ञा स्त्री० पीलापन।

पांडुर–वि० १. पीला। २. सफ़ेद। ३. कामला रोग। ४. सफ़ेद कोढ़।

पांडुलिपि–संज्ञा स्त्री० मसौदा। लेख आदि का पहला रूप।

पांडुलेख–संज्ञा पुं० दे० "पांडुलिपि"।

पाँड़े–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों की एक शाखा। २. पंडित।

पांडेय–संज्ञा पुं० दे० "पाँड़े"।

पाँति–संज्ञा स्त्री० क़तार।

पांथ–वि० पथिक।

पांथनिवास–संज्ञा पुं० सराय। चट्टी।

पाँयँ७†–संज्ञा पुं० चरण। पैर।

पाँयँता–संज्ञा पुं० पलँग, खाट या बिस्तर का वह भाग जिसकी ओर

परिमंडल–संज्ञा पुं० चक्कर।
परिमल–संज्ञा पुं० [वि० परिमलित] १. सुवास। २. उबटना। ३. मैथुन।
परिमाण–संज्ञा पुं० [वि० परिमित, परिमेय] १. वह मान जो नाप या तौल के द्वारा जाना जाय। २. घेरा।
परिमार्जक–संज्ञा पुं० धोने या माँजनेवाला।
परिमार्जन–संज्ञा पुं० [वि० परिमार्जित, परिमृज्य, परिमृष्ट] १. धोने या माँजने का कार्य। २. परिशोधन।
परिमार्जित–वि० धोया या माँजा हुआ।
परिमित–वि० १. सीमा, संख्या आदि से बद्ध। २. न अधिक न कम। ३. कम।
परिमिति–संज्ञा स्त्री० १. नाप, तौल, सीमा आदि। २. मर्यादा।
परिमेय–वि० १. जो नापा या तौला जा सके। २. ससीम।
परिमोक्ष–संज्ञा पुं० १. निर्वाण। २. परित्याग।
परिमोक्षण–संज्ञा पुं० १. मुक्त करना। २. परित्याग करना।
परियंक७–संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।
परिया–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति।
परिरंभ, परिरंभण–संज्ञा पुं० [वि० परिरंभ्य, परिरंभी] आलिंगन।
परिरंभना–क्रि० स० आलिंगन करना।
परिलेख–संज्ञा पुं० १. ढाँचा। २. चित्र। ३. कूँची या कलम जिससे रेखा या चित्र खींचा जाय। ४. उल्लेख।
परिलेखन–संज्ञा पुं० किसी वस्तु के चारों ओर रेखाएँ बनाना।
परिलेखना–क्रि० स० समझना।
परिवर्त–संज्ञा पुं० १. फेरा। २. बदला।
परिवर्तक–संज्ञा पुं० १. घूमने, फिरने या चक्कर खानेवाला। २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला। ३. बदलनेवाला।
परिवर्तन–संज्ञा पुं० [वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १. घुमाव। २. तबादला। ३. रूपांतर।
परिवर्तित–वि० १. बदला हुआ। २. जो बदले में मिला हुआ हो।
परिवर्ती–वि० १. परिवर्तनशील। २. बदला करनेवाला। ३. जो बराबर घूमे।
परिवर्द्धन–संज्ञा पुं० [वि० परिवर्धित] परिवृद्धि।
परिवर्द्धित–वि० बढ़ाया हुआ।
परिवा–संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पहली तिथि।
परिवाद–संज्ञा पुं० निंदा।
परिवादी–वि० निंदा करनेवाला।
परिवार–संज्ञा पुं० १. आवरण। २. कुटुंब। ३. कुल।
परिवास–संज्ञा पुं० १. ठहरना। २. घर।
परिवृत–वि० आवृत।
परिवृति–संज्ञा स्त्री० ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु।
परिवृत्त–वि० १. उलटा पलटा हुआ। २. घेरा हुआ।
परिवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. घुमाव। २. घेरा।
संज्ञा पुं० एक अर्थालंकार जिसमें एक

पैर किए जाते हैं। पैताना।
पाँवर०†–वि० दे० "पामर"।
पाँवरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "पाँवड़ी"। २. सोपान। सीढ़ी। ३. पैर रखने का स्थान।
पांशु–संज्ञा स्त्री० १. धूलि। रज। २. बालू। ३. गोबर की खाद।
पांशुल–वि० लंपट। व्यभिचारी।
पाँस–संज्ञा स्त्री० सड़ी-गली चीज़ें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिये उनमें डाली जाती हैं। खाद।
पाँसना†–क्रि० स० खेत में खाद देना।
पाँसा–संज्ञा पुं० चार-पाँच अंगुल लंबे बत्ती के आकार के चौपहल टुकड़े जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।
पाँसुरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।
पाँहीं०†–क्रि० वि० निकट। पास। समीप।
पाइ०–संज्ञा पुं० दे० "पाद"।
पाइक०–संज्ञा पुं० दे० "पायक"।
पाइल०–संज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।
पाई–संज्ञा स्त्री० १. एक छोटा सिक्का जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। २. वह छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लगाने से एकाई का चतुर्थांश प्रकट करती है; जैसे, ४।, अर्थात् सवा चार। पूर्ण विराम सूचित करनेवाली खड़ी रेखा। *संज्ञा स्त्री० एक छोटा लंबा कीड़ा जो* धान को खराब कर देता है।
पाउँ०†–संज्ञा पुं० दे० "पाँव"।
पाक–संज्ञा पुं० १. पकाने की क्रिया। रींधना। २. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। ३. रसोई। ४. वह औषध जो चाशनी में मिलाकर बनाई जाय। ५. खाए हुए पदार्थ के पचने की क्रिया। पाचन। ६. वह खीर जो श्राद्ध में पिंडदान के लिये पकाई जाती है।
वि० पवित्र। शुद्ध। निर्मल। निर्दोष।
पाकड़–संज्ञा पुं० दे० "पाकर"।
पाकना–क्रि० अ० दे० "पकना"।
पाकर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वृक्ष जो पंचवटों में माना जाता है। पाखर। पलखन।
पाकशाला–संज्ञा स्त्री० रसोई बनाने का घर। बावरचीखाना।
पाकशासन–संज्ञा पुं० इंद्र।
पाकागार–संज्ञा पुं० रसोई-घर।
पाक्षिक–वि० १ पक्ष या पखवाड़े से संबंध रखनेवाला। २. पक्षपाती। तरफ़दार।
पाखंड–संज्ञा पुं० १. वेद-विरुद्ध आचार। २. ढोंग। आडंबर। ढकोसला।
पाखंडी–वि० १. वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला। २. बनावटी धार्मिकता दिखानेवाला। कपटाचारी। बगला भगत। ३. धोखेबाज़। धूर्त।
पाख–संज्ञा पुं० पंद्रह दिन। पखवाड़ा।
पाखर–संज्ञा स्त्री० लोहे की वह झूल जो लड़ाई में हाथी या घोड़े पर डाली जाती है।
पाखा–संज्ञा पुं० १. कोना। छोर। २. दे० "पाख" (२)।
पाखाना–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। २. मल। गू। ग़लीज़। पुरीष।
पाग–संज्ञा स्त्री० १. पगड़ी। २. वह शीरा या चाशनी जिसमें मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती हैं। ३.

वस्तु को देकर दूसरी के लेने अर्थात् लेन-देन या अदल-बदल का कथन होता है।
परिवेश-संज्ञा पुं० घेरा।
परिवेष, परिवेषण-संज्ञा पुं० [वि० परिवेष्टव्य, परिवेष्य] १. परोसना। २ घेरा। ३. मंडल। ४. बेठ।
परिवेष्टन-संज्ञा पुं० [वि० परिवेष्टित] १. चारों ओर से घेरना या वेष्टन करना। २. आच्छादन। ३. परिधि।
परिव्रज्या-संज्ञा स्त्री० १. इधर-उधर भ्रमण। २. तपस्या।
परिव्राज, परिव्राजक-संज्ञा पुं० १. वह संन्यासी जो सदा भ्रमण करता रहे। २ संन्यासी।
परिव्राट-संज्ञा पुं० दे० "परिव्राज"।
परिशिष्ट-वि० बचा हुआ।
संज्ञा पुं० १ किसी पुस्तक या लेख का वह भाग जिसमें वे बातें दी गई हों जो किसी कारण यथास्थान न आ सकी हों और जिनके पुस्तक में न आने से वह अपूर्ण रह जाती हो। २. किसी पुस्तक का वह अतिरिक्त अंश जिसमें कुछ ऐसी बातें दी गई हों जिनसे उसकी उपयोगिता या महत्त्व बढ़ता हो।
परिशीलन-संज्ञा पुं० [वि० परिशीलित] १. मननपूर्वक अध्ययन। २. स्पर्श।
परिशेष-वि० बचा हुआ।
संज्ञा पुं० १. जो कुछ बचा रहा हो। २. परिशिष्ट। ३. समाप्ति।
परिशोध-संज्ञा पुं० १. पूर्ण शुद्धि। २. चुकता।
परिशोधन-संज्ञा पुं० [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह साफ़ या शुद्ध करना। २. चुकता।
परिश्रम-संज्ञा पुं० १. मेहनत। २. थकावट।
परिश्रमी-वि० जो बहुत श्रम करे।
परिश्रांत-वि० थका हुआ।
परिश्रुत-वि० प्रसिद्ध।
परिषत्-संज्ञा स्त्री० दे० "परिषद्"।
परिषद्-संज्ञा स्त्री० १. सभा। २. समूह।
परिषद्-संज्ञा पुं० १. दे० परिषद्। २. सदस्य। ३. मुसाहब।
परिष्कार-संज्ञा पुं० १. संस्कार। २. स्वच्छता। ३. गहना।
परिष्क्रिया-संज्ञा स्त्री० १. शुद्ध करना। २ माँजना धोना। ३. सँवारना।
परिष्कृत-वि० १. साफ़ या शुद्ध किया हुआ। २. माँजा या धोया हुआ। ३ सँवारा या सजाया हुआ।
परिसंख्या-संज्ञा स्त्री० गिनती।
परिसर्प-संज्ञा पुं० १. परिक्रमण। २. घूमना-फिरना। ३. किसी की खोज में जाना।
परिस्तान-संज्ञा पुं० १. वह कल्पित लोक या स्थान जहाँ परियाँ रहती हैं। २. वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों, विशेषतः स्त्रियों, का जमघट हो।
परिस्फुट-वि० १. बिलकुल प्रकट या खुला हुआ। २. प्रकाशित। ३. खूब खिला हुआ।
परिस्यंद-संज्ञा पुं० झरना।
परिहँस*-संज्ञा पुं० दे० "परिहस"।
परिहत-वि० मृत।
परिहरण-संज्ञा पुं० [वि० परिहरणीय, परिहर्त्तव्य, परिहृत] १. ज़बरदस्ती ले लेना। २. तजना। ३. निवारण।
परिहास*-संज्ञा पुं० १. हँसी। २. ईर्ष्या। संज्ञा पुं० रंज।

चीनी के शीरे में पकाया हुआ फल आदि। ४. वह दवा या पुष्टई जो शीरे में पकाकर बनाई जाय।

पागना-क्रि० स० मीठी चाशनी में सानना या लपेटना।

पागल-वि० १. जिसका दिमाग़ ठीक न हो। बावला। सिड़ी। विक्षिप्त। २. जिसके होश-हवास दुरुस्त न हों। आपे से बाहर।

पागलखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पागलों का इलाज किया जाता है।

पागलपन-संज्ञा पुं० उन्माद। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम।

पागुर†-संज्ञा पुं० दे० "जुगाली"।

पाचक-वि० १ वह औषध जो पाचन-शक्ति को बढ़ाने के लिये खाई जाती है। २. रसोइया। बावर्ची। ३. पाँच प्रकार के पित्तों में से एक पित्त। ४. पाचक पित्त में रहनेवाली अग्नि।

पाचन-संज्ञा पुं० वह औषधि जो अपक्व दोष को दूर करे। हाज़िम।

पाचन-शक्ति-संज्ञा स्त्री० वह शक्ति जो भोजन को पचावे। हाज़मा।

पाचिका-संज्ञा स्त्री० रसोईदारिन। रसोई करनेवाली।

पाच्छाह†-संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।

पाछ-संज्ञा स्त्री० १. पोस्ते के डोंडे पर नहरनी से लगाया हुआ चीरा जिससे अफीम निकलती है। २. किसी वृक्ष पर उसका रस निकालने के लिये लगाया हुआ चीरा।

† संज्ञा पुं० पीछा। पिछला भाग।

क्रि० वि० पीछे।

पाछिल⁕-वि० दे० "पिछला"।

पाछी, पाछे⁕-क्रि० वि० दे० "पीछे"।

पाजामा-संज्ञा पुं० पैर में पहनने का एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जिससे टखने से कमर तक का भाग ढँका रहता है। इसके कई भेद हैं—सुथना, तमान, इज़ार, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, पेशावरी, नैपाली आदि।

पाजी⁕-संज्ञा पुं० १. पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। २. रक्षक। चौकीदार।

वि० दुष्ट। लुच्चा।

पाजीपन-संज्ञा पुं० दुष्टता। कमीनापन। नीचता।

पाजेब-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का एक गहना जो पैरों में पहना जाता है।

पाटंबर-संज्ञा पुं० रेशमी वस्त्र।

पाट-संज्ञा पुं० १. रेशम। २. राज्यासन। सिंहासन। गद्दी। ३. चौड़ाई। फैलाव। पीढ़ा। ४. वस्त्र। कपड़ा।

पाटन-संज्ञा स्त्री० १. पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २. मकान की पहली मंज़िल से ऊपर की मंज़िलें।

पाटना-क्रि० स० १. किसी गहराई को मिट्टी, कूड़े आदि से भर देना। २. दो दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर-पार बल्ले आदि बिछाकर आधार बनाना। छत बनाना।

पाटल-संज्ञा पुं० पाडर या पादर का पेड़।

पाटला-संज्ञा स्त्री० १. पाडर का वृक्ष। २. लाल लोध। ३. दुर्गा। संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया सोना।

परिहार-संज्ञा पुं० [वि० परिहारक] १. दोष, अनिष्ट, खराबी आदि का निवारण या निराकरण। २. इलाज। ३. परित्याग। ४. तिरस्कार।
संज्ञा पुं० राजपूतों का एक वंश जो अग्निकुल के अंतर्गत माना जाता है।
परिहार्य-वि० १. जिसका परिहार किया जा सके। २. जिसका निवारण, त्याग या उपचार करना उचित हो।
परिहित-वि० १. चारों ओर से छिपा या ढँका हुआ। २. पहना हुआ।
परी-संज्ञा स्त्री० १. फ़ारस की प्राचीन कथाओं के अनुसार काफ़ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परवाली स्त्रियाँ। २. परम सुंदरी।
परीक्षक-संज्ञा पुं० [स्त्री० परीक्षिका] इम्तहान करने या लेनेवाला।
परीक्षण-संज्ञा पुं० दे० "परीक्षा"।
परीक्षा-संज्ञा स्त्री० १. समीक्षा। २. इम्तहान। ३. आज़माइश। ४. निरीक्षण।
परीक्षित-वि० जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।
संज्ञा पुं० अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा।
परीक्ष्य-वि० परीक्षा करने योग्य।
परीखना*-क्रि० स० दे० "परखना"।
परीछत*-संज्ञा पुं० दे० "परीक्षित"।
परीछा-संज्ञा स्त्री० दे० "परीक्षा"।
परीछित*-क्रि० वि० अवश्य ही।
परीज़ाद-वि० अत्यंत सुंदर।
परीत*-संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।
परुख*-वि० दे० "परुष"।
परुखाई*-संज्ञा स्त्री० कठोरता।
परुष-वि० [स्त्री० परुषा] १. कठोर। २. बुरा लगनेवाला। ३. निष्ठुर।
परुषता-संज्ञा स्त्री० १. कठोरता। २. कर्कशता। ३. निर्दयता।
परुषत्व-संज्ञा पुं० परुषता।
परे-अव्य० १. उस ओर। २. बाहर। ३. ऊपर। ४. बाद।
परेई-संज्ञा स्त्री० १. पंडुकी। २. मादा कबूतर।
परेखना-क्रि० स० १. परखना। २. आसरा देखना।
परेखा*-संज्ञा पुं० १. परीक्षा। २. खेद।
परेग-संज्ञा स्त्री० छोटा काँटा।
परेत-संज्ञा पुं० दे० "प्रेत"।
परेता-संज्ञा पुं० १. जुलाहों का एक औज़ार जिस पर वे सूत लपेटते हैं। २. पतंग की डोर लपेटने का बेलन।
परेट†-संज्ञा पुं० आकाश।
परेवा-संज्ञा पुं० [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। २. कबूतर। ३. हरकारा।
परेश-संज्ञा पुं० ईश्वर।
परेशान-वि० व्यग्र।
परेशानी-संज्ञा स्त्री० व्याकुलता।
परों*†-क्रि० वि० दे० "परसों"।
परोक्ष-संज्ञा पुं० १. अनुपस्थिति। २ परम ज्ञानी।
वि० १. जो देख न पड़े। २. गुप्त।
परोपकार-संज्ञा पुं० वह काम जिससे दूसरों का भला हो।
परोपकारी-संज्ञा पुं० [स्त्री० परोपकारिणी] दूसरों की भलाई करनेवाला।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र–संज्ञा पुं० मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर जो इस समय भी बिहार का मुख्य नगर है। पटना।

पाटव–संज्ञा पुं० १. पटुता। कुशलता। २. दृढ़ता। मज़बूती। ३. आरोग्य।

पाटा–संज्ञा पुं० लकड़ी का पीढ़ा।

पाटी–संज्ञा स्त्री० परिपाटी। अनुक्रम। रीति।

संज्ञा पुं० १. लकड़ी की वह पट्टी जिस पर छात्र लिखने का अभ्यास करते हैं। तख्ती। पटिया। २. माँग के दोनों ओर कंघी द्वारा बैठाए हुए बाल। पट्टी। पटिया। ३. चारपाई के ढाँचे में लंबाई की ओर की पट्टी। ४. चटाई।

पाठ–संज्ञा पुं० १. पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. वह जो कुछ पढ़ा या पढ़ाया जाय। सबक। ३. परिच्छेद। अध्याय।

पाठक–संज्ञा पुं० १. पढ़नेवाला। वाचक। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक।

पाठदोष–संज्ञा पुं० पढ़ने का वह ढंग जो निंद्य और वर्जित है। जैसे कठोर स्वर से पढ़ना, या ठहर ठहरकर उच्चारण करना।

पाठन–संज्ञा पुं० पढ़ाने की क्रिया या भाव। पढ़ाना। अध्यापन।

पाठशाला–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ पढ़ाया जाय। मदरसा। विद्यालय। चटसाल।

पाठा–संज्ञा पुं० जवान और परिपुष्ट। हृष्ट-पुष्ट। मोटा-तगड़ा।

पाठी–संज्ञा पुं० १. पाठ करनेवाला। पाठक। पढ़नेवाला। २. चीता। चित्रक वृक्ष।

पाठ्य–वि० १. पढ़ने योग्य। पठनीय। २. जो पढ़ाया जाय।

पाड़–संज्ञा पुं० १. धोती आदि का किनारा। २. मचान। ३. वह जाली जो कूएँ के मुँह पर रखी रहती है। ४. बाँध। पुश्ता। ५. वह तख्ता जिस पर खड़ा करके फाँसी दी जाती है। टिकठी।

पाड़ा–संज्ञा पुं० महल्ला।

पाढ़–संज्ञा पुं० १. पाटा। २. वह मचान जिस पर फ़सल की रखवाली के लिये खेतवाला बैठता है।

पाढर, पाढल–संज्ञा पुं० पाडर का पेड़।

पाणि–संज्ञा पुं० हाथ। कर।

पाणिग्रहण–संज्ञा पुं० विवाह की एक रीति जिसमें कन्या का पिता उसका हाथ वर के हाथ में देता है।

पाणिज–संज्ञा पुं० १. उँगली। २. नख। नाखून।

पाणिनि–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से प्रायः तीन-चार सौ वर्ष पूर्व हुए थे और जिन्होंने अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ की रचना की थी।

पाणी–संज्ञा पुं० दे० "पाणि"।

पातंजल–वि० पतंजलि का बनाया हुआ (योगसूत्र या व्याकरण महाभाष्य)।

संज्ञा पुं० १. पतंजलि-कृत योगसूत्र। २. पतंजलि-प्रणीत महाभाष्य।

पात–संज्ञा पुं० १. गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। पतन। २. नाश। ध्वंस। मृत्यु। ३. खगोल में वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की कक्षाएँ

परोरना†-क्रि० स० मंत्र पढ़कर फूँकना।

परोल-संज्ञा पुं० सैनिकों का संकेत का शब्द जिसके बोलने से पहरे पर के सिपाही बोलनेवाले को आने या जाने से नहीं रोकते।

परोसना†-क्रि० स० दे० "परसना"।

परोसा†-संज्ञा पुं० एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो कहीं भेजा जाता है।

परोहन-संज्ञा पुं० वह जिस पर कोई सवार हो, या कोई चीज़ लादी जाय।

पर्जक†-संज्ञा पुं० दे० "पर्यंक"।

पर्जन्य-संज्ञा पुं० बादल।

पर्ण-संज्ञा पुं० बड़ का पत्ता।

पर्णकुटी-संज्ञा स्त्री० झोंपड़ी।

पर्णशाला-संज्ञा स्त्री० दे० "पर्णकुटी"।

पर्णी-संज्ञा पुं० वृक्ष।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की अप्सराएँ।

पर्त-संज्ञा स्त्री० दे० "परत"।

पर्दा-संज्ञा पुं० दे० "परदा"।

पर्पट-संज्ञा पुं० १. पित्तपापड़ा। २. पापड़।

पर्पटी-संज्ञा स्त्री० सौराष्ट्र देश की मिट्टी।

पर्पटी रस-संज्ञा पुं० वैद्यक में एक प्रकार का रस।

पर्यंक-संज्ञा पुं० पलँग।

पर्यंत-अव्य० तक।

पर्यटन-संज्ञा पुं० भ्रमण।

पर्यवसान-संज्ञा पुं० [वि० पर्यवसित] १. अंत। २. शामिल हो जाना। ३. ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्याप्त-वि० १. पूरा। २. प्राप्त। ३. समर्थ।

पर्याय-संज्ञा पुं० १. समानार्थवाची शब्द। २. क्रम।

पर्यालोचना-संज्ञा स्त्री० पूरी जाँच-पड़ताल।

पर्युपासक-संज्ञा पुं० सेवक।

पर्युपासन-संज्ञा पुं० सेवा।

पर्व-संज्ञा पुं० १. पुण्यकाल। २. पग। ३. अवसर। ४. उत्सव। ५. हिस्सा।

पर्वकाल-संज्ञा पुं० वह समय जब कि कोई पर्व हो।

पर्वणी-संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा।

पर्वत-संज्ञा पुं० १. पहाड़। २. किसी चीज़ का बहुत ऊँचा ढेर।

पर्वतनंदिनी-संज्ञा स्त्री० पार्वती।

पर्वतराज-संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा पहाड़। २. हिमालय पर्वत।

पर्वतारि-संज्ञा पुं० इंद्र।

पर्वती-वि० दे० "पर्वतीय"।

पर्वतीय-वि० १. पहाड़ी। २. पहाड़ पर रहने, होने या बसनेवाला।

पर्वतेश्वर-संज्ञा पुं० हिमालय।

पर्वर-संज्ञा पुं० दे० "परवल"।
वि० दे० "परवर"।

पर्वरिश-संज्ञा स्त्री० पालन-पोषण।

पर्वसंधि-संज्ञा स्त्री० १. पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय। २. सूर्य अथवा चंद्रमा को ग्रहण लगने का समय।

पर्विणी-संज्ञा स्त्री० दे० "पर्व"।

पर्हेज़-संज्ञा पुं० १. रोग आदि के समय अपथ्य वस्तु का त्याग। २. अलग रहना।

पलंका†-संज्ञा स्त्री० बहुत दूर का स्थान।

कतिपूस को काटकर ऊपर चढ़ती या नीचे आती हैं।
* संज्ञा पुं० पत्ता। पत्र।
पातक–संज्ञा पुं० वह कर्म जिसके करने से नरक जाना पड़े। पाप। गुनाह।
पातकी–वि० पातक करनेवाला। पापी। कुकर्मी।
पातर*†–संज्ञा स्त्री० पत्तल।
संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी।
पातशाह–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।
पातावा–संज्ञा पुं० पैरों में पहनने का मोज़ा।
पाताल–संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सातवाँ। २. पृथ्वी से नीचे के लोक।
पातिव्रत, पातिव्रत्य–संज्ञा स्त्री० पतिव्रता होने का भाव।
पाती*–संज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी। पत्र। २. वृक्ष के पत्ते।
पातुर†–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
पात्र–संज्ञा पुं० १. जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। बरतन। भाजन। २. वह जो किसी विषय का अधिकारी हो; जैसे, दानपात्र। ३. नाटक के नायक, नायिका आदि। ४. अभिनेता।
पात्रता–संज्ञा स्त्री० पात्र होने का भाव। योग्यता।
पाथ–संज्ञा पुं० १. जल। २. सूर्य। ३. अग्नि। ४. अन्न। ५. आकाश। ६. वायु।
पाथना–क्रि० स० १. सुडौल करना। २. थोप, पीट या दबाकर बड़ी बड़ी टिकिया या पटरी बनाना।
पाथर*†–संज्ञा पुं० दे० "पत्थर"।
पाथोज–संज्ञा पुं० कमल।
पाथोधि–संज्ञा पुं० समुद्र।
पाद–संज्ञा पुं० १. चरण। पैर। पाँव। २. श्लोक या पद्य का चतुर्थांश। पद। चरण। ३. चौथा भाग। चौथाई।
संज्ञा पुं० वह वायु जो गुदा के मार्ग से निकले। अपानवायु। अधोवायु। गोज़।
पादतल–संज्ञा पुं० पैर का तलवा।
पादत्र, पादत्राण–संज्ञा पुं० १. खड़ाऊँ। २. जूता।
पादप–संज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।
पादपीठ–संज्ञा पुं० पीढ़ा।
पादपूरण–संज्ञा पुं० श्लोक या कविता के किसी चरण को पूरा करना।
पादरी–संज्ञा पुं० ईसाई-धर्म का पुरोहित जो अन्य ईसाइयों का जातकर्म आदि संस्कार और उपासना कराता है।
पादशाह–संज्ञा पुं० दे० "बादशाह"।
पादाक्रांत–वि० पददलित। पैर से कुचला हुआ। पामाल।
पादाति, पादातिक–संज्ञा पुं० पैदल सिपाही।
पादुका–संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ।
पादोदक–संज्ञा पुं० १. वह जल जिसमें पैर धोया गया हो। २. चरणामृत।
पाद्य–संज्ञा पुं० वह जल जिससे पूजनीय व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायँ।
पाद्यार्घ–संज्ञा पुं० १. पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २. पूजा की सामग्री।

पलंग–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पलँगड़ी] अच्छी और बड़ी चारपाई। पर्यंक।

पलंगपोश–संज्ञा पुं० पलँग पर बिछाने की चादर।

पलँगिया।–संज्ञा स्त्री० छोटा पलँग।

पल–संज्ञा पुं० १. घड़ी या दंड का ६०वाँ भाग। २. पलक। ३. क्षण।

पलक–संज्ञा स्त्री० १. क्षण। २. आँख के ऊपर का चमड़े का परदा।

पलक-दरिया।–वि० बहुत बड़ा दानी।

पलकनेवाज।–वि० दे० "पलक-दरिया"।

पलका॰–संज्ञा पुं० [स्त्री० पलकी] पलँग।

पलटन–संज्ञा स्त्री० १. अँगरेजी पैदल सेना का एक विभाग। २. दल।

पलटना– क्रि० अ० १. उलट जाना। (क्व०) २. परिवर्त्तन होना। ३. घूमना।

क्रि० स० १. उलटना। २. वापस करना।

पलटनिया–संज्ञा पुं० सिपाही।

पलटा–संज्ञा पुं० १. परिवर्त्तन। २. बदला।

पलटाना–क्रि० स० १. लौटाना। २. बदलना।

पलड़ा।–संज्ञा पुं० तराजू का पल्ला।

पलथी।–संज्ञा स्त्री० वह आसन जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठते हैं।

पलना–क्रि० अ० १. पाला-पोसा जाना। २. खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट होना।

॰।संज्ञा पुं० दे० "पालना"।

पलनाना।॰–क्रि० स० घोड़े पर जीन कसकर उसे चलने के लिये तैयार करना।

पलवा॰।–संज्ञा पुं० चुल्लू।

पलवाना–क्रि० स० किसी से पालन कराना।

पलवैया–संज्ञा पुं० पालक।

पलस्तर–संज्ञा पुं० लेट।

पलहना॰–क्रि० अ० लहलहाना।

पलहा॰–संज्ञा पुं० कोंपल।

पलांडु–संज्ञा पुं० प्याज़।

पला–संज्ञा पुं० पल।

॰संज्ञा पुं० १. तराजू का पलड़ा। २. किनारा।

पलान–संज्ञा पुं० वह गद्दी या चार-जामा जो जानवरों की पीठ पर लादने या चढ़ने के लिये कसा जाता है।

पलानना॰–क्रि० स० १. घोड़े आदि पर पलान कसना। २. चढ़ाई की तैयारी करना।

पलाना॰।–क्रि० अ० भागना।

क्रि० स० भगाना।

पलायन–संज्ञा पुं० भागना।

पलायित–वि० भागा हुआ।

पलाश–संज्ञा पुं० १. पलास। २. पत्ता। ३. राक्षस।

वि० मांसाहारी।

पलाशी–वि० मांसाहारी।

संज्ञा पुं० राक्षस।

पलास–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वृक्ष जो क्षुप, लता और वृक्ष—इन तीन रूपों में पाया जाता है। २. ढाक।

पलित–वि० [स्त्री० पलिता] १. वृद्ध। २ पका हुआ या सफेद (बाल)।

संज्ञा पुं० १. सिर के बालों का

हिँडोला। पिँगूरा। गहवारा।

पाला–संज्ञा पुं० हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो पृथ्वी के बहुत ठंढे हो जाने पर उस पर सफेद सफेद जम जाती है। हिम।

पालागन–संज्ञा स्त्री० प्रणाम। दंड-वत्। नमस्कार।

पालित–वि० पाला हुआ। रक्षित।

पाली–संज्ञा स्त्री० एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं और जिसका पठन-पाठन स्याम, बरमा, सिंहल आदि देशों में उसी प्रकार होता है जिस प्रकार भारत-वर्ष में संस्कृत का।

पालू–वि० पालतू।

पावँ–संज्ञा पुं० वह अंग जिससे चलते हैं। पैर।

पावँड़ा–संज्ञा पुं० वह कपड़ा या बिछौना जो आदर के लिये किसी के मार्ग में बिछाया जाता है। पायं-दाज़।

पाव–संज्ञा पुं० १. चौथाई। चतुर्थ भाग। २. एक सेर का चौथाई भाग। चार छटाँक का मान।

पावक–संज्ञा पुं० अग्नि। आग।

पावदान–संज्ञा पुं० पैर रखने के लिये बना हुआ स्थान या वस्तु।

पावन–वि० १. पवित्र करनेवाला। २. पवित्र। शुद्ध। पाक।
संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित्त। शुद्धि। ३. जल। ४. गोबर। ५. रुद्राक्ष। ६. व्यास का एक नाम। ७. विष्णु।

पावनता–संज्ञा स्त्री० पवित्रता।

पावना–संज्ञा पुं० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का हक़। लहना। २. वह रुपया जो दूसरे से पाना हो।

पावस–संज्ञा स्त्री० वर्षा-काल। बर-सात।

पावा–संज्ञा पुं० दे० "पाया"।
संज्ञा पुं० गोरखपुर ज़िले का एक प्राचीन गाँव जो वैशाली से पश्चिम है।

पाश–संज्ञा पुं० १. रस्सी, तार आदि से सरकनेवाली गाँठों आदि के द्वारा बनाया हुआ घेरा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और कभी कभी बंधन के अधिक कसकर बैठ जाने से मर भी जाता है। फंदा। फाँस। २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. बंधन। फँसानेवाली वस्तु।

पाशक–संज्ञा पुं० पासा। चौपड़।

पाशा–संज्ञा पुं० तुर्की सरदारों की उपाधि।

पाशुपत–संज्ञा पुं० १. पशुपति या शिव का उपासक। २. शिव का कहा हुआ तंत्रशास्त्र। ३. अथर्व वेद का एक उपनिषद्।

पाशुपत दर्शन–संज्ञा पुं० एक सांप्र-दायिक दर्शन जिसका उल्लेख सर्व-दर्शन-संग्रह में है। नकुलीश पाशु-पत दर्शन।

पाशुपतास्त्र–संज्ञा पुं० शिव का शूलास्त्र जो बड़ा प्रचंड था।

पाश्चात्य–वि० १. पीछे का पिछला। २. पश्चिम दिशा का।

पाषंड–संज्ञा पुं० १. वेदविरुद्ध आ-चरण करनेवाला। झूठा मत माननेवाला। २. लोगों को ठगने के लिये साधुओं का सा रूप-रंग बनाने-

वाला। धर्मध्वजी। ढोंगी।

पाषंडी-वि॰ १. वेदविरुद्ध मत और आचरण ग्रहण करनेवाला। २. धर्म आदि का झूठा आडंबर खड़ा करनेवाला। ढोंगी। धूर्त।

पाषाण-संज्ञा पुं॰ पत्थर। प्रस्तर।

पासंग-संज्ञा पुं॰ तराजू की डंडी को बराबर करने के लिये उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंघा।

पास-संज्ञा पुं॰ १. बगल। ओर। तरफ़। २. सामीप्य। निकटता। समीपता। ३. अधिकार। कब्ज़ा। रक्षा। पल्ला। (केवल 'के', 'में' और 'से' विभक्तियों के साथ।) अव्य॰ निकट। समीप। नज़दीक।

पासनी†-संज्ञा स्त्री॰ बच्चे को पहले पहल अनाज चटाने की रीति। अन्नप्राशन।

पासवर्त्ती०-वि॰ दे॰ "पार्श्ववर्त्ती"।

पासा-संज्ञा पुं॰ हाथीदाँत या हड्डी के छः पहले टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर खेलते हैं।

पासी-संज्ञा पुं॰ १. जाल या फंदा डालकर चिड़िया पकड़नेवाला। २. एक नीच और अस्पृश्य जाति। संज्ञा स्त्री॰ १. फंदा। फाँस। पाश। फाँसी। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी।

पासुरी०-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "पसली"।

पाहँ०-अव्य॰ निकट। समीप। पास।

पाहन०-संज्ञा पुं॰ पत्थर।

पाहरू०†-संज्ञा पुं॰ पहरा देनेवाला। पहरेदार।

पाहिँ०-अव्य॰ १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।

पाहि-एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है "रक्षा करो" या "बचाओ"।

पाहुना-संज्ञा पुं॰ १. अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २. दामाद। जामाता।

पाहुनी-संज्ञा स्त्री॰ १. स्त्री-अतिथि। अभ्यागत स्त्री। मेहमान औरत। २. आतिथ्य। मेहमानदारी।

पाहुर†-संज्ञा पुं॰ १. भेंट। नज़र। २. सौगात।

पिंग-वि॰ १. पीला। पीलापन लिए भूरा। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. सुँघनी रंग का।

पिंगल-वि॰ १. पीला। पीत। २. भूरापन लिए लाल। तामड़ा। ३. भूरापन लिए पीला। सुँघनी रंग का। संज्ञा पुं॰ १. एक प्राचीन मुनि जो छंदःशास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं। २. छंदःशास्त्र। ३. बंदर। कपि।

पिंगला-संज्ञा स्त्री॰ १. हठयोग और तंत्र में जो तीन प्रधान नाड़ियाँ मानी गई हैं, उनमें से एक। २. लक्ष्मी का नाम।

पिंजड़ा-संज्ञा पुं॰ दे॰ "पिंजरा"।

पिंजर-वि॰ १. पीला। पीतवर्ण का। २. भूरापन लिए लाल रंग का। संज्ञा पुं॰ १. पिंजड़ा। २. शरीर के भीतर का हड्डियों का ठट्टर। पंजर। ३. सोना। ४. भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

पिंजरापोल-संज्ञा पुं॰ वह स्थान जहाँ पालने के लिये गाय, बैल आदि

पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे।
पूआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पूरी जो आटे को गुड़ या चीनी के रस में घोलकर घी में छानी जाती है।
पूग–संज्ञा पुं० सुपारी का पेड़ या फल।
पूगी–संज्ञा स्त्री० सुपारी।
पूगीफल–संज्ञा पुं० सुपारी।
पूछ–संज्ञा स्त्री० १ पूछने का भाव। २. खोज। ३. आदर।
पूछ-ताछ–संज्ञा स्त्री० किसी बात का पता लगाने के लिये बार बार पूछना।
पूछना–क्रि० स० १. जिज्ञासा करना। २. खोज-खबर लेना। ३. आदर करना।
पूछ-पाछ–संज्ञा स्त्री० दे० "पूछ-ताछ"।
पूछाताछी, पूछापाछी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूछताछ"।
पूजन–संज्ञा पुं० [वि० पूजक, पूजनीय, पूजितव्य, पूज्य] १. पूजा की क्रिया। आराधना। २. आदर।
पूजना–क्रि० स० १. आराधन करना। २. आदर-सत्कार करना। ३. रिश्वत देना।
क्रि० अ० १. पूरा होना। २. समाप्त होना।
पूजनीय–वि० १. पूजने योग्य। २. आदरणीय।
पूजा–संज्ञा स्त्री० १. आराधन। २. आदर-सत्कार।
पूजित–वि० [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो।
पूज्य–वि० [स्त्री० पूज्या] १. पूजा के योग्य। २. आदर के योग्य।
पूज्यपाद–वि० अत्यंत मान्य।
पूड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूरी"।
पूत–वि० पवित्र।
संज्ञा पुं० बेटा।
पूतना–संज्ञा स्त्री० एक दानवी जो कंस के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिये गोकुल आई थी। इसे कृष्ण ने मार डाला था।
पूतरा–संज्ञा पुं० दे० "पुतला"।
संज्ञा पुं० पुत्र।
पूनी–संज्ञा स्त्री० धुनी हुई रूई की वह बत्ती जो चरखे पर सूत कातने के लिये तैयार की जाती है।
पूर–वि० १. दे० "पूर्ण"। २. वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के भीतर भरे जाते हैं।
पूरक–वि० पूरा करनेवाला।
पूरण–संज्ञा पुं० [वि० पूरणीय] १. भरने की क्रिया। २. समाप्त या तमाम करना। ३. अंकों का गुणा करना।
वि० पूरा करनेवाला।
पूरनपूरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मीठी कचौरी।
पूरनमासी–संज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी"।
पूरना–क्रि० स० १. पूर्ति करना। २. सिद्ध करना। ३. चौक बनाना।
क्रि० अ० भर जाना।
पूरब–संज्ञा पुं० वह दिशा जिसमें सूर्य का उदय होता है।
पूरबल–संज्ञा पुं० १. पुराना ज़माना। २. पूर्वजन्म।
पूरबला–वि० पुं० [स्त्री० पूरबली] १. पुराना। २. पहले जन्म का।
पूरबी–वि० दे० "पूर्वी"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का दादरा। (बिहार)
पूरा–वि० पुं० [स्त्री० पूरी] १. भरा।

चौपाये रखे जाते हों। पशुशाला। गोशाला।

पिंड–संज्ञा पुं० १. गोल-मटोल टुकड़ा। गोला। २. ठोस टुकड़ा। लुगदा। ३. ढेर। राशि। ४. पके हुए चावल आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों को अर्पित किया जाता है। ५. शरीर। देह।

पिंडज–संज्ञा पुं० गर्भ से सजीव निकलने वाला जंतु।

पिंडदान–संज्ञा पुं० पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

पिंडरी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "पिंडली"।

पिंडरोग–संज्ञा पुं० १. वह रोग जो शरीर में घर किए हो। २. कोढ़।

पिंडली–संज्ञा स्त्री० टाँग का ऊपरी पिछला भाग जो मांसल होता है।

पिंडवाही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा।

पिंडारी–संज्ञा पुं० दक्षिण की एक जाति जो पहले खेती करती थी, पीछे अवसर पाकर लूट-मार करने लगी।

पिंड़िया–संज्ञा स्त्री० गीली भुरभुरी वस्तु का मुट्ठी से बाँधा हुआ लंबोतरा टुकड़ा।

पिंडी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा ढेला या लोंदा। २. वेदी, जिस पर बलिदान किया जाता है। ३. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा।

पिअ–वि० संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।

पिअराई०†–संज्ञा स्त्री० पीलापन।

पिअरी–संज्ञा स्त्री० पीले रंग की धोती जो विवाह आदि में पहनी जाती है।

पिउ–संज्ञा पुं० पति।

पिक–संज्ञा पुं० कोयल।

पिघलना–क्रि० अ० १. द्रवीभूत होना। २. पसीजना।

पिघलाना–क्रि० स० १. किसी चीज़ को गरमी पहुँचाकर पानी के रूप में लाना। २. किसी के मन में दया उत्पन्न करना।

पिचकना–क्रि० अ० किसी फूले या उभरे हुए तल का दब जाना।

पिचकाना–क्रि० स० फूले या उभरे हुए तल को दबाना।

पिचकारी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का नलदार यंत्र जिसका व्यवहार जल या किसी दूसरे तरल पदार्थ को ज़ोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

पिचकी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "पिचकारी"।

पिच्छल–वि० चिकना। रपटनेवाला।

पिच्छिल–वि० [स्त्री० पिच्छिला] १. गीला और चिकना। २. फिसलनेवाला।

पिछड़ना–क्रि० अ० पीछे रह जाना।

पिछलगा–संज्ञा पुं० १. वह मनुष्य जो किसी के पीछे चले। २. नौकर।

पिछला–वि० [स्त्री० पिछली] १. पीछे की ओर का। २. बीता हुआ।

पिछवाड़ा–संज्ञा पुं० १. किसी मकान का पीछे का भाग। २. घर के पीछे का स्थान या ज़मीन।

पिछाड़ी–संज्ञा स्त्री० पिछला भाग।

पिछौंहें०†–क्रि० वि० पीछे की ओर।

पिछौरा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० पिछौरी] ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिटंत–संज्ञा स्त्री० पीटने की क्रिया

२. बहुत। ३. तुष्ट।

पूरित–वि० १. भरा हुआ। २. तृप्त। ३. गुणित।

पूरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध पकवान जिसे रोटी की तरह बेलकर खौलते घी में छान लेते हैं। २. मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा।

पूर्ण–वि० १. पूरा। २. परितृप्त। ३. समूचा। ४. सारा। ५. समाप्त।

पूर्णता–संज्ञा स्त्री० पूर्ण होना।

पूर्णमासी–संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा।

पूर्ण विराम–संज्ञा पुं० लिपि-प्रणाली में वह चिह्न जो वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगाया जाता है।
वि० सौ वर्ष तक जीनेवाला।

पूर्णावतार–संज्ञा पुं० ईश्वर या किसी देवता का संपूर्ण कलाओं से युक्त अवतार।

पूर्णाहुति–संज्ञा स्त्री० १. वह आहुति जिसे देकर होम समाप्त करते हैं। २. किसी कर्म की समाप्ति की क्रिया।

पूर्णिमा–संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी।

पूर्ति–संज्ञा स्त्री० १. किसी आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति। २. पूर्णता।

पूर्व–संज्ञा पुं० वह दिशा जिस ओर सूर्य निकलता हुआ दिखलाई देता है।
वि० १. पहले का। २. आगे का। ३. पुराना।
क्रि० वि० पहले।

पूर्वक–क्रि० वि० साथ।

पूर्वकालिक–वि० १. जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्व काल में हुआ हो। २. पूर्व काल-संबंधी।

पूर्वकालिक क्रिया–संज्ञा स्त्री० वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।

पूर्वज–संज्ञा पुं० १. बड़ा भाई। २. पुरखा।

पूर्वजन्म–संज्ञा पुं० वर्तमान से पहले का जन्म।

पूर्व पक्ष–संज्ञा पुं० १. शास्त्रीय विषय के संबंध में उठाई हुई बात, प्रश्न या शंका। २. कृष्ण पक्ष। ३. मुद्दई का दावा।

पूर्वपक्षी–संज्ञा पुं० १. वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। २. वह जो दावा दायर करे।

पूर्वफाल्गुनी–संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में ग्यारहवाँ नक्षत्र।

पूर्वभाद्रपद–संज्ञा पुं० २७ नक्षत्रों में पचीसवाँ नक्षत्र।

पूर्वमीमांसा–संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का जैमिनि-कृत एक दर्शन जिसमें कर्मकांड-संबंधी बातों का निर्णय किया गया है।

पूर्वराग–संज्ञा पुं० साहित्य में नायक अथवा नायिका की एक अवस्था जो दोनों का संयोग होने से पहले प्रेम के कारण होती है।

पूर्वरूप–संज्ञा पुं० १. वह आकार जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २. आगमसूचक लक्षण।

पूर्ववत्–क्रि० वि० पहले की तरह।
संज्ञा पुं० किसी कार्य्य का वह अनुमान जो उसके कारण को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाय।

या भाव।

पिटना–क्रि० अ० मार खाना। †संज्ञा पुं० थापी।

पिटाई–संज्ञा स्त्री० १. पीटने का काम या भाव। २. प्रहार। ३. पीटने की मज़दूरी।

पिटारा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का बड़ा ढकनेदार पात्र।

पिट्ठू–संज्ञा पुं० १. पीछे चलनेवाला। २. सहायक।

पिठौरी–संज्ञा स्त्री० पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

पितंबर–संज्ञा पुं० दे० "पीतांबर"।

पितर–संज्ञा पुं० मृत पूर्वपुरुष। मरे हुए पुरखे जिनका श्राद्ध किया जाता है।

पिता–संज्ञा पुं० बाप। जनक।

पितामह–संज्ञा पुं० [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता। २. भीष्म।

पितृ–संज्ञा पुं० १. दे० "पिता"। २. किसी व्यक्ति के मृत बाप, दादा, परदादा आदि। ३. किसी व्यक्ति का ऐसा मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो।

पितृतर्पण–संज्ञा पुं० पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला जलदान।

पितृपक्ष–संज्ञा पुं० १. कुँआर की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय। २. पिता के संबंधी।

पितृपद–संज्ञा पुं० पितरों का लोक।

पितृव्य–संज्ञा पुं० चाचा।

पित्त–संज्ञा पुं० एक तरल पदार्थ जो शरीर के अंतर्गत यकृत् में बनता है।

पित्तज्वर–संज्ञा पुं० वह ज्वर जो पित्त के प्रकोप से उत्पन्न हो।

पित्ताशय–संज्ञा पुं० पित्त की थैली जो जिगर में पीछे और नीचे की ओर होती है।

पित्ती–संज्ञा स्त्री० १. एक रोग जिसमें शरीर भर में छोटे छोटे ददोरे पड़ जाते हैं। २. लाल महीन दाने जो गरमी के दिनों में शरीर पर निकल आते हैं।

पित्र्य–वि० पितृ संबंधी।

पिद्दी–संज्ञा पुं० १. एक छोटी चिड़िया। २. बहुत ही तुच्छ और अगण्य जीव।

पिधान–संज्ञा पुं० १. पर्दा। २. ढकना।

पिनकना–क्रि० अ० १. पीनक लेना। २. ऊँघना।

पिनपिन†–संज्ञा स्त्री० धीमी और अनुनासिक आवाज़ में रोना।

पिनपिनाना†–क्रि० अ० १. रोते समय नाक से स्वर निकालना। २. रोगी अथवा कमज़ोर बच्चे का रोना।

पिनाक–संज्ञा पुं० धनुष।

पिनाकी–संज्ञा पुं० शिव।

पिन्नी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई, जो आटे में चीनी मिलाकर बनाई जाती है।

पिपासा–संज्ञा स्त्री० १. प्यास। २. लालच।

पिपीलिका–संज्ञा स्त्री० च्यूँटी।

पिप्पल–संज्ञा पुं० पीपल।

पिप्पली–संज्ञा स्त्री० पीपल।

पिय–संज्ञा पुं० पति।

पियराई†–संज्ञा स्त्री० पीलापन।

पियराना†–क्रि० अ० पीला पड़ना।

पूर्ववर्ती–वि० पहले का।
पूर्ववृत्त–संज्ञा पुं० इतिहास।
पूर्वानुराग–संज्ञा पुं० वह प्रेम जो किसी के गुण सुनकर अथवा उसका चित्र या रूप देखकर उत्पन्न होता है।
पूर्वापर–क्रि० वि० आगे-पीछे। वि० अगला और पिछला।
पूर्वाफाल्गुनी–दे० "पूर्वफाल्गुनी"।
पूर्वाभाद्रपद–दे० "पूर्वभाद्रपद"।
पूर्वार्द्ध–संज्ञा पुं० पहला आधा भाग।
पूर्वाषाढ़ा–संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में बीसवाँ नक्षत्र जिसमें चार तारे हैं।
पूर्वाह्न–संज्ञा पुं० सवेरे से दुपहर तक का समय।
पूर्वी–वि० पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला।
पूला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पूली] मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।
पूषण–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
पूषा–संज्ञा पुं० दे० "पूषण"।
पूस–संज्ञा पुं० वह चांद्र मास जो अगहन के बाद पड़ता है। पौष।
पृच्छक–वि० पूछनेवाला।
पृथक्–वि० [संज्ञा पृथक्ता] भिन्न।
पृथक्करण–संज्ञा पुं० अलग करने का काम।
पृथिवी–संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।
पृथु–वि० १. चौड़ा। २. बड़ा। संज्ञा पुं० राजा वेणु के पुत्र का नाम।
पृथुता–संज्ञा स्त्री० १. पृथु होने का भाव। २. विस्तार।
पृथ्वी–संज्ञा स्त्री० १. भूमि। ज़मीन। २. मिट्टी।
पृथ्वीतल–संज्ञा पुं० १. ज़मीन की सतह। २. संसार।
पृष्ट–वि० पूछा हुआ।
पृष्ठ–संज्ञा पुं० १. पीठ। २. पीछे का भाग। ३. पुस्तक के पन्ने का एक ओर का तल। ४. पन्ना।
पृष्ठपोषक–संज्ञा पुं० १. पीठ ठोंकनेवाला। २. सहायक।
पेंग–संज्ञा स्त्री० झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना।
पेंडुकी–संज्ञा स्त्री० १. पंडुक पक्षी। २. सुनारों की फुँकनी।
पेंदा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पेंदी] तला।
पेखना:‡–क्रि० स० देखना।
पेच–संज्ञा पुं० १. घुमाव। २. झंझट। ३. चालाकी। ४. यंत्र। ५. मशीन का पुरज़ा। ६. कुश्ती का दाँव। ७. युक्ति।
पेचक–संज्ञा स्त्री० बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।
पेचकश–संज्ञा पुं० बढ़इयों और लोहारों आदि का वह औज़ार जिससे वे लोग पेच जड़ते अथवा निकालते हैं।
पेचदार–वि० १. जिसमें कोई पेच या कल हो। २. दे० "पेचीला"।
पेचवान–संज्ञा पुं० १. बड़ी सटक जो फर्शी या गुड़गुड़ी में लगाई जाती है। २. बड़ा हुक्का।
पेचा‡–संज्ञा पुं० [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।
पेचिश–संज्ञा स्त्री० पेट की वह पीड़ा जो आँव होने के कारण होती है।
पेचीदा–वि० [संज्ञा पेचीदगी] १. जिसमें पेच हो। २. जो टेढ़ा-मेढ़ा और कठिन हो।

पियरी†-वि० स्त्री० दे० "पीली"।
पिया॰-संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
पियार-संज्ञा पुं० महुए की तरह का मझोले आकार का एक पेड़ जिसके बीजों की गिरी चिरौंजी कहलाती है। †वि० दे० "प्यारा"।
† संज्ञा पुं० दे० "प्यार"।
पियूख॰-संज्ञा पुं० दे० "पीयूष"।
पिरकी†-संज्ञा स्त्री० फुंसी।
पिरथी†॰-संज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी"।
पिराक-संज्ञा पुं० गोझिया। एक प्रकार का पकवान।
पिराना†॰-क्रि० अ० १. दुखना। २. दुःख समझना।
पिरीता॰-वि० प्यारा।
पिरोना-क्रि० स० १. गूथना। २. तागे आदि को छेद में डालना।
पिलना-क्रि० अ० किसी ओर को एकबारगी टूट पड़ना।
पिलपिला-वि० भीतर से गिला और नरम।
पिलपिलाना-क्रि० स० रसदार या गूदेदार वस्तु को दबाना जिससे रस या गूदा ढीला होकर बाहर निकले।
पिलाना-क्रि० स० १. पीने का काम दूसरे से कराना। २. पीने को देना।
पिल्ला-संज्ञा पुं० कुत्ते का बच्चा।
पिल्लू-संज्ञा पुं० एक सफ़ेद लंबा कीड़ा जो सड़े हुए फल या घाव आदि में देखा जाता है।
पिव॰-संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
पिशाच-संज्ञा पुं० [स्त्री० पिशाची] भूत।
पिशुन-संज्ञा पुं० चुग़लख़ोर।
पिष्ट-वि० पिसा हुआ।
पिष्टपेषण-संज्ञा पुं० १. पिसे हुए को पीसना। २. कही हुई बात को फिर फिर कहना।
पिसनहारी-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसकी जीविका आटा पीसने से चलती हो।
पिसना-क्रि० अ० १. चूर्ण होना। २. पिसकर तैयार होना। ३. दब जाना।
पिसाई-संज्ञा स्त्री० १. पीसने की क्रिया या भाव। २. पीसने की मज़दूरी।
पिसान†-संज्ञा पुं० आटा।
पिसौनी†-संज्ञा स्त्री० पीसने का काम।
पिस्तई-वि० पिस्ते के रंग का।
पिस्ता-संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसके फल की गिरी अच्छे मेवों में है।
पिस्तौल-संज्ञा स्त्री० तमंचा।
पिहकना-क्रि० अ० कोयल, पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।
पिहित-वि० छिपा हुआ।
पींजना-क्रि० स० रूई धुनना।
पी॰-संज्ञा पुं० दे० "पिय"।
संज्ञा पुं० पपीहे की बोली।
पीक-संज्ञा स्त्री० थूक से मिला हुआ पान का रस।
पीकदान-संज्ञा पुं० उगालदान।
पीकना†-क्रि० अ० पिहकना।
पीका†-संज्ञा पुं० नया कोमल पत्ता।
पीछा-संज्ञा पुं० १. किसी व्यक्ति या वस्तु के पीछे की ओर का भाग। २. पीछे पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहना।
पीछू॰†-क्रि० वि० दे० "पीछे"।
पीछे-अव्य० १. पीठ की ओर। पश्चात्।

पेचीला-वि० दे० "पेचीदा"।
पेट-संज्ञा पुं० १. शरीर में थैले के आकार का वह भाग जिसमें पहुँचकर भोजन पचता है। २. गर्भ। ३. अंतःकरण।
पेटक-संज्ञा पुं० १. पिटारा। २. समूह।
पेटकैया‡-क्रि० वि० पेट के बल।
पेटा-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ का मध्य भाग। २. ब्योरा। ३. वृत्त।
पेटागि*-संज्ञा स्त्री० भूख।
पेटारा-संज्ञा पुं० दे० "पिटारा"।
पेटिका-संज्ञा स्त्री० १. संदूक। २. छोटी पिटारी।
पेटी-संज्ञा स्त्री० १. संदूकची। २. कमरबंद। ३. हज्जामों की किसबत जिसमें वे कैंची, छूरा आदि रखते हैं।
पेटू-वि० जो बहुत अधिक खाता हो।
पेठा-संज्ञा पुं० सफ़ेद कुम्हड़ा।
पेड़-संज्ञा पुं० वृक्ष।
पेड़ा-संज्ञा पुं० खोवे की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई।
पेड़ी-संज्ञा स्त्री० पेड़ का तना।
पेडू-संज्ञा पुं० १. नाभि और मूत्रेंद्रिय के बीच का स्थान। २. गर्भाशय।
पेन्हाना†-क्रि० स० दे० "पहनाना"।
क्रि० अ० दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।
पेय-वि० पीने योग्य।
संज्ञा पुं० पीने की वस्तु।
पेरना-क्रि० स० १. किसी वस्तु को इस प्रकार दबाना कि उसका रस निकल आवे। २. कष्ट देना। ३. किसी काम में बहुत देर लगाना।
क्रि० स० १. प्रेरणा करना। २. भेजना।
पेलना-क्रि० स० १. दबाकर भीतर घुसाना। २. ढकेलना। ३. ज़बरदस्ती करना।
क्रि० स० आगे बढ़ाना।
पेला-संज्ञा पुं० १. तकरार। २. अपराध। ३. आक्रमण। ४. पेलने की क्रिया या भाव।
पेश-क्रि० वि० सामने।
पेशकार-संज्ञा पुं० हाकिम के सामने काग़ज़ पत्र पेश करनेवाला कर्मचारी।
पेशगी-संज्ञा स्त्री० वह धन जो किसी को कोई काम करने के लिये पहले ही दे दिया जाय।
पेशतर-क्रि० वि० पहले।
पेशबंदी-संज्ञा स्त्री० पहले से किया हुआ प्रबंध या बचाव की युक्ति।
पेशराज-संज्ञा पुं० पत्थर ढोनेवाला मज़दूर।
पेशवा-संज्ञा पुं० १. नेता। २. महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि।
पेशवाई-संज्ञा स्त्री० अगवानी।
संज्ञा स्त्री० १. पेशवाओं की शासनकला। २. पेशवा का पद या कार्य्य।
पेशवाज़-संज्ञा स्त्री० वेश्याओं या नर्तकियों का वह घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं।
पेशा-संज्ञा पुं० उद्यम। व्यवसाय।
पेशानी-संज्ञा स्त्री० १. ललाट। २. क़िस्मत।
पेशाब-संज्ञा पुं० मूत्र।
पेशावर-संज्ञा पुं० किसी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी।
पेशी-संज्ञा स्त्री० १. हाकिम के सामने किसी मुक़द्दमे के पेश होने की क्रिया। २. सामने होने की क्रिया या भाव।

२. पीछे की ओर कुछ दूर पर। ३. अनंतर। ४. अंत में। ५. पीठ पीछे। ६. बदौलत।
पीटना-क्रि० स० मारना।
पीठ-संज्ञा पुं० १. पीढ़ा। २. तख्त।
संज्ञा स्त्री० १. पीठ की दूसरी ओर का भाग। पिछाड़ी। पृष्ठ। २. किसी वस्तु की बनावट का ऊपरी भाग।
पीठा-संज्ञा पुं० दे० "पीढ़ा"।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का पकवान।
पीठी-संज्ञा स्त्री० पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।
पीड़क-संज्ञा पुं० पीड़ा देनेवाला।
पीड़न-संज्ञा पुं० [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दबाना। २. पेरना। ३. दुःख देना।
पीड़ा-संज्ञा स्त्री० वेदना।
पीड़ित-वि० १. दुःखित। २. रोगी।
पीढ़ा†-संज्ञा पुं० पाटा।
पीढ़ी-संज्ञा स्त्री० १. पुश्त। २. संतान।
†संज्ञा स्त्री० छोटा पीढ़ा।
पीत-वि० पीला।
संज्ञा पुं० पीला रंग।
पीतता-संज्ञा स्त्री० पीलापन।
पीतम०-वि० दे० "प्रियतम"।
पीतल-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पीली उपधातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है।
पीतवास-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
पीतांबर-संज्ञा पुं० १. पीला कपड़ा। २. श्रीकृष्ण।
पीनक-संज्ञा स्त्री० १. नशे की हालत में आगे की ओर झुक झुक पड़ना। २. ऊँघना।
पीनता-संज्ञा स्त्री० मोटाई।
पीनस-संज्ञा स्त्री० १. नाक का एक रोग। २. पालकी।
पीना-क्रि० स० १. पान करना। २. किसी बात को दबा देना। ३. धूम्रपान करना। ४. सोखना।
पीप-संज्ञा स्त्री० मवाद।
पीपर-संज्ञा पुं० दे० "पीपल"।
पीपल-संज्ञा पुं० बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो हिंदुओं में बहुत पवित्र माना जाता है।
पीपलामूल-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल लता की जड़ है।
पीपा-संज्ञा पुं० घड़े ढोल के आकार का काठ या लोहे का पात्र जिसमें मद्य, तेल आदि तरल पदार्थ रखे जाते हैं।
पीय०-संज्ञा पुं० दे० "प्रिय"।
पीयूष-संज्ञा पुं० १. अमृत। २. दूध।
पीर-संज्ञा स्त्री० १. पीड़ा। २. सहानुभूति।
वि० [संज्ञा पीरी] १. वृद्ध। २. सिद्ध।
पीरा†-संज्ञा स्त्री० दे० "पीड़ा"।
वि० दे० "पीला"।
पीरी-संज्ञा स्त्री० १. बुढ़ापा। २. गुरुवाई।
पील-संज्ञा पुं० १. हाथी। २. शतरंज का एक मोहरा। फ़ील।
पीलपाँव-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध रोग।
पीलवान-संज्ञा पुं० दे० "फ़ीलवान"।
पीलसोज़-संज्ञा पुं० दीया जलाने की दीवट।
पीला-वि० [स्त्री० पीली] १. हल्दी, सोने या केसर के रंग का (पदार्थ)। २. कांतिहीन।

संज्ञा स्त्री० शरीर के भीतर मांस की गुत्थी या गाँठ।
पेश्तर–क्रि० वि० पहले।
पेषण–संज्ञा पुं० पीसना।
पैंजनी–संज्ञा स्त्री० भन भन बजनेवाला एक गहना जो पैर में पहना जाता है।
पैंठ–संज्ञा स्त्री० हाट।
पैंठोर†–संज्ञा पुं० दुकान।
पैंड़–संज्ञा पुं० १. कदम। २. पथ।
पैंड़ा–संज्ञा पुं० १. रास्ता। २. घुड़साल।
पैंत*†–संज्ञा स्त्री० बाज़ी।
पैंती–संज्ञा स्त्री० कुश का छल्ला। पवित्री।
पै*†–अव्य० १ पर। २. निश्चय। ३. पीछे। ४. पास। ५. प्रति।
प्रत्य० अधिकरण-सूचक एक विभक्ति। पर।
संज्ञा स्त्री० दोष।
संज्ञा पुं० दे० "पय"।
पैकरमा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "परिक्रमा"।
पैकार–संज्ञा पुं० छोटा व्यापारी।
पैखाना–संज्ञा पुं० दे० "पाखाना"।
पैग़ंबर–संज्ञा पुं० मनुष्यों के पास ईश्वर का सँदेसा लेकर आनेवाला।
पैज*–संज्ञा स्त्री० प्रतिज्ञा।
पैजामा–संज्ञा पुं० दे० "पायजामा"।
पज़ार–संज्ञा स्त्री० जूता।
पैठ–संज्ञा स्त्री० १. प्रवेश। २. पहुँच।
पैठना–क्रि० अ० घुसना।
पैठार†०–संज्ञा पुं० १. पैठ। २. फाटक।
पैठारी†–संज्ञा स्त्री० १. पैठ। २. पहुँच।
पैड़ी–संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।
पैंतरा–संज्ञा पुं० वार करने का ठाट।
पैतृक–वि० पुरखों का।
पैदल–वि० जो पाँवों से चले।
क्रि० वि० पैरों से।
संज्ञा पुं० १. पाँव पाँव चलना। २. पैदल सिपाही।
पैदा–वि० १. उत्पन्न। २. प्रकट। ३. प्राप्त।
†संज्ञा स्त्री० आय।
पैदाइश–संज्ञा स्त्री० उत्पत्ति।
पैदाइशी–वि० १. जन्म का। २. स्वाभाविक।
पैदावार–संज्ञा स्त्री० उपज।
पैना–वि० [स्त्री० पैनी] धारदार।
संज्ञा पुं० १. हलवाहों की बैल हाँकने की छोटी छड़ी। २. लोहे का नुकीला छड़।
पैमाइश–संज्ञा स्त्री० मापने की क्रिया या भाव। माप।
पैमाना–संज्ञा पुं० मापने का औज़ार या साधन।
पैयाँ†–संज्ञा स्त्री० पाँव।
पैर–संज्ञा पुं० १. वह अंग जिससे प्राणी चलते-फिरते हैं। २. धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न।
पैर-गाड़ी–संज्ञा स्त्री० वह हलकी गाड़ी जो बैठे बैठे पैर दबाने से चलती है।
पैरना–क्रि० अ० तैरना।
पैरवी–संज्ञा स्त्री० १. अनुगमन। २. कोशिश।
पैरवीकार–संज्ञा पुं० पैरवी करनेवाला।
पैरा–संज्ञा पुं० १. पड़े हुए चरण।

पीलापन-संज्ञा पुं० पीले होने का भाव।
पीलिया-संज्ञा पुं० कमल रोग।
पीलू-संज्ञा पुं० एक प्रकार का काँटेदार वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग।
पीव-संज्ञा पुं० पिय।
पीवर-वि० [स्त्री० पीवरा] [संज्ञा पीवरता] १. मोटा। २. भारी।
पीवरी-संज्ञा स्त्री० १. युवती स्त्री। २. गाय।
पीसना-क्रि० स० १. किसी वस्तु को आटे, बुकनी या धूल के रूप में करना। २. कुचल देना।
संज्ञा पुं० पीसी जानेवाली वस्तु।
पीहर-संज्ञा पुं० स्त्रियों का मायका।
पुंगव-संज्ञा पुं० बैल।
वि० श्रेष्ठ।
पुंगीफल-संज्ञा पुं० दे० "पूँगीफल"।
पुंछार*†-संज्ञा पुं० मयूर।
पुँछाला-संज्ञा पुं० दे० "पुछल्ला"।
पुंज-संज्ञा पुं० समूह।
पुंडरीक-संज्ञा पुं० श्वेतकमल।
पुंडरीकाक्ष-संज्ञा पुं० विष्णु।
वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों।
पुंलिंग-संज्ञा पुं० १. पुरुष का चिह्न। २. पुरुषवाचक शब्द।
पुंश्चली-वि० स्त्री० व्यभिचारिणी।
पुंस*†-संज्ञा पुं० पुरुष।
पुंस्त्व-संज्ञा पुं० १. पुरुषत्व। २. वीर्य्य।
पुआ-संज्ञा पुं० मीठे के रस में सने हुए आटे की मोटी पूरी या टिकिया।
पुआल-संज्ञा पुं० दे० "पयाल"।
पुकार-संज्ञा स्त्री० १. हाँक। २. रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट। ३. नालिश।
पुकारना-क्रि० स० १. नाम लेकर बुलाना। २. चिल्लाकर कहना।
पुखर*-संज्ञा पुं० तालाब।
पुखराज-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पीला रत्न।
पुचकार-संज्ञा स्त्री० दे० "पुचकारी"।
पुचकारना-क्रि० स० चुमकारना।
पुचकारी-संज्ञा स्त्री० चुमकार। प्यार जताने के लिए चूमने का सा शब्द।
पुचारा-संज्ञा पुं० १. भींगे कपड़े से पोंछने का काम। २. लेप करने या पोतने के लिये पानी में घोली हुई कोई वस्तु। ३. चापलूसी। ४. बढ़ावा।
पुच्छ-संज्ञा स्त्री० १. दुम। पूँछ। २. किसी वस्तु का पिछला भाग।
पुच्छल-वि० दुमदार।
पुछल्ला-संज्ञा पुं० १. बड़ी पूँछ। २. साथ न छोड़नेवाला। ३. चापलूस।
पुछार†*-संज्ञा पुं० आदर करनेवाला।
पुजना-क्रि० अ० १. पूजा जाना। २. सम्मानित होना।
पुजाना-क्रि० स० १. पूजा में प्रवृत्त या नियुक्त करना। २. अपनी पूजा-प्रतिष्ठा कराना।
क्रि० स० पूर्त्ति करना।
पुजापा-संज्ञा पुं० पूजा का सामान।
पुजारी-संज्ञा पुं० देवमूर्ति की पूजा करनेवाला।
पुजेरी-संज्ञा पुं० दे० "पुजारी"।
पुजैया†-संज्ञा पुं० पूजा करनेवाला।

२. किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिये लकड़ियों के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता।
पैराई–संज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव।
पैराक–संज्ञा पुं० तैरनेवाला।
पैराव–संज्ञा पुं० डुबाव।
पैरोकार–संज्ञा पुं० दे० "पैरवीकार"।
पैला†–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पैली] मिट्टी का वह बरतन जिससे दूध, दही ढाँकते हैं। बड़ी पैली।
पैवंद–संज्ञा पुं० १. कपड़े आदि का छेद बंद करने का छोटा टुकड़ा। २. किसी पेड़ की टहनी काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़कर बाँधना जिससे फल बढ़ जायँ या उनमें नया स्वाद आ जाय।
पैवंदी–वि० पैवंद लगाकर पैदा किया हुआ। (फल आदि)
पैवस्त–वि० समाया हुआ।
पैशाच–वि० १. पिशाच-संबंधी। २. पिशाच देश का।
पैशाच विवाह–संज्ञा पुं० आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो।
पैशाचिक–वि० पिशाचों का।
पैशाची–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्राकृत भाषा।
पैशुन्य–संज्ञा पुं० चुगलखोरी।
पैसना†*–क्रि० अ० घुसना।
पैसरा–संज्ञा पुं० १. झंझट। २. प्रयत्न।
पैसा–संज्ञा पुं० १. ताँबे का सबसे अधिक चलता सिक्का जो आने का चौथा भाग होता है। २. धन।
पैसार†–संज्ञा पुं० पैठ।
पैहारी–वि० केवल दूध पीकर रहनेवाला।
पोंका–संज्ञा पुं० वह फतिंगा जो पौधों पर उड़ता फिरता है। बोका।
पोंगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पोंगी] चोंगा।
वि० १. पोला। २. मूर्ख।
पोंछन–संज्ञा स्त्री० लगी हुई वस्तु का वह बचा अंश जो पोंछने से निकले।
पोंछना–क्रि० स० १. काछना। २. रगड़कर साफ़ करना।
संज्ञा पुं० पोंछने का कपड़ा।
पोई–संज्ञा स्त्री० एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।
पोखरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० पोखरी] तालाब।
पोगंड–संज्ञा पुं० १. पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. वह जिसका कोई अंग छोटा, बड़ा या अधिक हो।
पोच–वि० तुच्छ।
पोची*–संज्ञा स्त्री० निचाई।
पोट–संज्ञा स्त्री० १. गठरी। २. ढेर।
पोटना*–क्रि० स० १. समेटना। २. फुसलाना।
पोटली–संज्ञा स्त्री० छोटी गठरी।
पोढ़ा–वि० [स्त्री० पोढ़ी] १. पुष्ट। २. कड़ा।
पोढ़ाना†–क्रि० अ० १. मज़बूत होना। २. पक्का पड़ना।
क्रि० स० दृढ़ करना।
पोत–संज्ञा पुं० १. पशु, पक्षी आदि

पुट–संज्ञा पुं० १. हलका छिद्रकाय। २. घोर।
संज्ञा पुं० १. आच्छादन। २. औषध पकाने का मुँहबंद बरतन।
पुटकी–संज्ञा स्त्री० पोटली।
संज्ञा स्त्री० १. आकस्मिक मृत्यु। २. दैवी आपत्ति।
संज्ञा स्त्री० बेसन या आटा जो तरकारी के रसे में उसे गाढ़ा करने के लिये मिलाते हैं।
पुटपाक–संज्ञा पुं० पत्ते के दोने या मुँहबंद बरतन में दवा रखकर उसे पकाने का विधान।
पुटीन–संज्ञा पुं० किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के जोड़ आदि भरने में काम आनेवाला एक मसाला।
पुट्ठा–संज्ञा पुं० १. चूतड़ का ऊपरी कुछ कड़ा भाग। २. चौपायों का विशेषतः घोड़ों का चूतड़।
पुड़िया–संज्ञा स्त्री० १. मोड़ या लपेटकर संपुट के आकार का किया हुआ कागज़ जिसके भीतर कोई वस्तु रखी जाय। २. पुड़िया में लपेटी हुई दवा की एक खुराक या मात्रा।
पुण्य–वि० पवित्र।
संज्ञा पुं० १. वह कर्म जिसका फल शुभ हो। २. शुभ कर्म का संचय।
पुण्यकाल–संज्ञा पुं० दान-पुण्य करने का समय।
पुण्यक्षेत्र–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो। तीर्थ।
पुण्यवान्–वि० [स्त्री० पुण्यवती] धर्मात्मा।
पुण्यात्मा–वि० धर्मात्मा।
पुतरी–संज्ञा स्त्री० दे० "पुतली"।
पुतला–संज्ञा पुं० [स्त्री० पुतली] लकड़ी, मिट्टी, कपड़े आदि का बना हुआ पुरुष का आकार या मूर्ति।
पुतली–संज्ञा स्त्री० १. गुड़िया। २. आँख के बीच का काला भाग। ३. कपड़ा बुनने की कल या मशीन।
पुताई–संज्ञा स्त्री० पोतने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
पुत्तलिका–संज्ञा स्त्री० १. पुतली। २. गुड़िया।
पुत्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० पुत्री] लड़का।
पुत्रवती–संज्ञा स्त्री० जिसके पुत्र हो। (स्त्री)
पुत्रवधू–संज्ञा स्त्री० पुत्र की स्त्री।
पुत्रिका–संज्ञा स्त्री० १. लड़की। २. पुतली। ३. आँख की पुतली।
पुत्री–संज्ञा स्त्री० कन्या।
पुत्रेष्टि–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की इच्छा से किया जाता है।
पुदीना–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों में बहुत अच्छी गंध होती है। इससे लोग चटनी आदि बनाते हैं।
पुनः–अव्य० १. फिर। २. उपरांत।
पुन्न–संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।
पुनरावृत्ति–संज्ञा स्त्री० [वि० पुनरावृत्त] १. फिर से घूमना। २. दोहराना।
पुनरुक्ति–संज्ञा स्त्री० [वि० पुनरुक्त] एक बार कही हुई बात को फिर कहना।
पुनर्जन्म–संज्ञा पुं० मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में उत्पत्ति।
पुनर्वसु–संज्ञा पुं० सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र।
पुनि–क्रि० वि० फिर।
पुनीत–वि० पवित्र।
पुन्न–संज्ञा पुं० दे० "पुण्य"।

का छोटा बच्चा। २. छोटा पौधा। ३. नाव।
संज्ञा स्त्री० १. माला या गुरिया का छोटा दाना। २. काँच की गुरिया।
संज्ञा पुं० १. ढंग। २. दाँव।
संज्ञा पुं० ज़मीन का लगान।

पोतदार–संज्ञा पुं० १. खज़ानची। २. पारखी।

पोतना–क्रि० स० गीली तह चढ़ाना।
संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिससे कोई चीज़ पोती जाय।

पोता–संज्ञा पुं० बेटे का बेटा।
संज्ञा पुं० १. लगान। २. अंडकोष।

पोती–संज्ञा स्त्री० पुत्र की पुत्री।
संज्ञा स्त्री० पुतारा देने की क्रिया।

पोथा–संज्ञा पुं० १. कागज़ों की गड्डी। २. बड़ी पोथी।

पोथी–संज्ञा स्त्री० पुस्तक।

पोद्दार–संज्ञा पुं० दे० "पोतदार"।

पोना–क्रि० स० १. गीले आटे की लोई को हाथ से दबाकर घुमाते हुए रोटी के आकार में बढ़ाना। २. (रोटी) पकाना।
क्रि० स० गूथना।

पोपला–वि० १. पचका और सिकुड़ा हुआ। २. जिसमें दाँत न हों।

पोपलाना–क्रि० अ० पोपला होना।

पोया–संज्ञा पुं० १. वृक्ष का नरम पौधा। २. बच्चा।

पोर–संज्ञा स्त्री० १. उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुक सकती है। २. ईख, बाँस आदि का वह भाग जो दो गाँठों के बीच में हो।

पोल–संज्ञा पुं० शून्य स्थान।
संज्ञा पुं० फाटक।

पोला–वि० [स्त्री० पोली] १. जिसके भीतर खाली जगह हो। २. पुलपुला।

पोशाक–संज्ञा स्त्री० पहनने के कपड़े। पहनावा।

पोशीदा–वि० गुप्त। छिपा हुआ।

पोषक–वि० १. पालक। पालनेवाला। २. वर्द्धक। बढ़ानेवाला। ३. सहायक।

पोषण–संज्ञा पुं० [वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य] १. पालन। २. वर्द्धन। बढ़ती। ३. पुष्टि। ४. सहायता।

पोष्य–वि० पालने योग्य। पालनीय।

पोष्यपुत्र–संज्ञा पुं० १. पुत्र के समान पाला हुआ लड़का। पालक। २. दत्तक।

पोस–संज्ञा पुं० पालनेवाले के साथ प्रेम या हेल-मेल।

पोसना–क्रि० स० पालना या रक्षा करना।

पोस्त–संज्ञा पुं० १. छिलका। बकला। २. अफ़ीम का पौधा। पोस्ता।

पोस्ता–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसमें से अफ़ीम निकलती है।

पोस्ती–संज्ञा पुं० १. वह जो नशे के लिये पोस्ते के डोंडे पीसकर पीता हो। २. आलसी आदमी।

पोहना–क्रि० स० १. पिरोना। २. छेदना। ३. जड़ना। घुसाना। धँसाना।
वि० [स्त्री० पोहनी] घुसनेवाला। भेदनेवाला।

पौंडा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी और मोटी जाति की ईख या गन्ना।

पौंरना–क्रि० अ० तैरना।

पौंरि–संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी"।

पुरंदर–संज्ञा पुं० इंद्र।

पुरः–अव्य० १. आगे। २. पहले।

पुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० पुरी] १. नगर। २. घर। ३. भुवन।
संज्ञा पुं० कुएँ से पानी निकालने का चमड़े का डोल।

पुरइन०–संज्ञा स्त्री० १. कमल का पत्ता। २. कमल।

पुरखा–संज्ञा पुं० [स्त्री० पुरखिन] १. पूर्वज। २. घर का बड़ा-बूढ़ा।

पुरज़ा–संज्ञा पुं० १. टुकड़ा। २. कागज़ का टुकड़ा जिसमें धनियों का हिसाब लिखा जाता है। ३. कटा टुकड़ा। ४. अंश।

पुरबला, पुरबुला†–वि० [स्त्री० पुरबली, पुरबुली] पहले का।

पुरबिया–वि० [स्त्री० पुरबिनी]पूरब का।

पुरबट†–संज्ञा पुं० चरसा। मोट। पुर।

पुरवना०†–क्रि० स० १. भरना। २. पूरा करना।
क्रि० अ० पूरा होना।

पुरवा–संज्ञा पुं० छोटा गाँव।
संज्ञा पुं० पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु।
संज्ञा पुं० मिट्टी का कुल्हड़।

पुरवाई, पुरवैया–संज्ञा स्त्री० वह वायु जो पूर्व से चलती है।

पुरश्चरण–संज्ञा पुं० किसी कार्य की सिद्धि के लिये पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना।

पुरसा–संज्ञा पुं० साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।

पुरस्कार–संज्ञा पुं० [वि० पुरस्कृत] १. आदर। २. उपहार।

पुरस्कृत–वि० १. पूजित। २. जिसे इनाम या पुरस्कार मिला हो।

पुरा–अव्य० पुराने समय में।
वि० प्राचीन।

पुराकल्प–संज्ञा पुं० १. पूर्वकल्प। २. प्राचीन काल।

पुराकृत–वि० पूर्व काल में किया हुआ।

पुराण–वि० प्राचीन।
संज्ञा पुं० हिंदुओं के धर्म-संबंधी आख्यान-ग्रंथ जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तांत रहते हैं। ये अठारह हैं।

पुरातत्त्व–संज्ञा पुं० प्राचीन काल-संबंधी विद्या।

पुरातन–वि० प्राचीन।
संज्ञा पुं० विष्णु।

पुराना–वि० [स्त्री० पुरानी] १. बहुत दिनों का। २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो।
क्रि० स० १. पूरा कराना। २. पालन कराना।

पुरारि–संज्ञा पुं० शिव।

पुरावृत्त–संज्ञा पुं० पुराना वृत्तांत। इतिहास।

पुरी–संज्ञा स्त्री० १. नगरी। २. जगन्नाथपुरी।

पुरीष–संज्ञा पुं० मल। गू।

पुरु–संज्ञा पुं० १. देवलोक। २. पराग। ३. एक प्राचीन राजा जो नहुष के पुत्र ययाति के पुत्र थे।

पुरुष–संज्ञा पुं० १. मनुष्य। २. आत्मा। ३. पति। ४. व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम या क्रियापद वाचक

पौ–संज्ञा स्त्री० पौसाला। पौसला। प्याऊ।
संज्ञा स्त्री० किरण-प्रकाश की रेखा। ज्योति।
संज्ञा स्त्री० पाँसे की एक चाल या दाँव।

पौआ–संज्ञा पुं० दे० "पौवा"।

पौढ़ना–क्रि० अ० झूलना। आगे-पीछे हिलना।
क्रि० अ० लेटना। सोना।

पौढ़ाना–क्रि० स० १. झुलाना। झुलाना। २. लेटाना। ३. सुलाना।

पौत्र–संज्ञा पुं० [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का। पोता।

पौद्–संज्ञा स्त्री० छोटा पौधा।

पौदर–संज्ञा स्त्री० १. पैर का चिह्न। २. पगडंडी।

पौधा–संज्ञा पुं० १. नया निकलता हुआ पेड़। २. छोटा पेड़। क्षुप।

पौन–संज्ञा पुं० स्त्री० हवा।
वि० एक में से चौथाई कम। तीन चौथाई।

पौना–संज्ञा पुं० पौन का पहाड़ा।
संज्ञा पुं० काठ या लोहे की एक प्रकार की बड़ी करछी।

पौनार–संज्ञा स्त्री० कमल के फूल की नाल या डंठल।

पौनी–संज्ञा स्त्री० नाई, बारी, धोबी आदि जो विवाह आदि उत्सवों पर इनाम पाते हैं।
संज्ञा स्त्री० छोटा पौना।

पौर–वि० पुर-संबंधी। नगर का।
संज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", पौरी"।

पौराणिक–वि० [स्त्री० पौराणिकी] १. पुराणवेत्ता। २. पुराण-संबंधी। ३. प्राचीन काल का।

पौरिया–संज्ञा पुं० द्वारपाल। दरबान।

पौरी–संज्ञा स्त्री० ड्योढ़ी।
संज्ञा स्त्री० सीढ़ी। पैड़ी।
संज्ञा स्त्री० खड़ाऊँ।

पौरुष–संज्ञा पुं० १. पुरुष का भाव। पुरुषत्व। २. पराक्रम। ३. उद्योग। उद्यम।

पौरुषेय–वि० १. पुरुष-संबंधी। २. आदमी का किया हुआ। ३. आध्यात्मिक।

पौर्णमासी–संज्ञा स्त्री० पूर्णमासी।

पौलस्त्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० पौलस्त्यी] १. पुलस्त्य के वंश का पुरुष। २. कुबेर। ३. रावण, कुंभकर्ण और विभीषण। ४. चंद्र।

पौला†–संज्ञा पुं० एक प्रकार की खड़ाऊँ।

पौली–संज्ञा स्त्री० पौरी। ड्योढ़ी।

पौवा†–संज्ञा पुं० १. सेर का चौथाई भाग। २. वह बरतन जिसमें पाव भर पानी, दूध आदि आ जाय।

पौष–संज्ञा पुं० वह महीना जिसमें पूर्णमासी पुष्य नक्षत्र में हो। पूस।

पौष्टिक–वि० पुष्टिकारक। बल-वीर्य-दायक।

पौसरा, पौसला–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पर लोगों को पानी पिलाया जाता है।

पौहारी–संज्ञा पुं० वह जो केवल दूध ही पीकर रहे (अन्न आदि न खाय)।

प्याऊ–संज्ञा पुं० पौसला। सबील।

प्याज़–संज्ञा पुं० गोल गाँठ के आकार का एक प्रसिद्ध कंद। इसकी गंध बहुत उग्र और अप्रिय होती है।

प्यादा–संज्ञा पुं० १ दूत। २. हरकारा।

प्यार–संज्ञा पुं० मुहब्बत। प्रेम।

(कहनेवाले) के लिये प्रयुक्त हुआ है अथवा संबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिये अथवा अन्य के लिये।
पुरुषत्व-संज्ञा पुं० पुरुष होने का भाव। मरदानगी।
पुरुषपुर-संज्ञा पुं० गांधार की प्राचीन राजधानी। आजकल का पेशावर।
पुरुषमेध-संज्ञा पुं० एक वैदिक यज्ञ जिसमें नर-बलि की जाती थी।
पुरुषसूक्त-संज्ञा पुं० ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त।
पुरुषानुक्रम-संज्ञा पुं० पुरखों की चली आती हुई परंपरा।
पुरुषारथ॰-संज्ञा पुं० दे० "पुरुषार्थ"।
पुरुषार्थ-संज्ञा पुं० १. पुरुष के उद्योग का विषय। २. पौरुष। ३. शक्ति।
पुरुषार्थी-वि० १. पुरुषार्थ करनेवाला। २. उद्योगी।
पुरुषोत्तम-संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ पुरुष। २. जगन्नाथ जिनका मंदिर उड़ीसा में है। ३. कृष्णचंद्र। ४. ईश्वर।
पुरुहूत-संज्ञा पुं० इंद्र।
पुरूरवा-संज्ञा पुं० एक प्राचीन राजा जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है। इसकी पत्नी उर्वशी थी।
पुरोडाश-संज्ञा पुं० १. यव आदि के आटे की बनी हुई टिकिया जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिये कपाल में पकाई जाती थी। २. वह वस्तु जिसका यज्ञ में होम किया जाय।
पुरोधा-संज्ञा पुं० पुरोहित।
पुरोहित-संज्ञा पुं० [स्त्री० पुरोहितानी] वह प्रधान याजक जो यजमान के यहाँ यज्ञादि गृहकर्म और संस्कार करे कराए।
पुरोहिताई-संज्ञा स्त्री० पुरोहित का काम।
पुर्त्तगाल-संज्ञा पुं० योरप के दक्षिण-पश्चिम कोने का एक छोटा प्रदेश।
पुल-संज्ञा पुं० नदी, जलाशय आदि के आर-पार जाने का रास्ता जो नाव पाटकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय। सेतु।
पुलक-संज्ञा पुं० रोमांच।
पुलकालि, पुलकावलि-संज्ञा स्त्री० हर्ष से प्रफुल्ल रोमावली।
पुलकित-वि० प्रेम या हर्ष के वेग से जिसके रोएँ उभर आए हों।
पुलटिस-संज्ञा स्त्री० फोड़े, घाव आदि को पकाने के लिये उस पर चढ़ाया हुआ दवाओं का मोटा लेप।
पुलपुला-वि० जो भीतर इतना ढीला और मुलायम हो कि दबाने से धँसे।
पुलपुलाना-क्रि० स० किसी मुलायम चीज़ को दबाना।
पुलस्त्य-संज्ञा पुं० एक ऋषि जिनकी गिनती सप्तर्षियों और प्रजापतियों में है।
पुलाक-संज्ञा पुं० १. भात। २. भात का माँड़। ३. पुलाव।
पुलाव-संज्ञा पुं० एक व्यंजन जो मांस और चावल को एक साथ पकाने से बनता है।
पुलिंदा-संज्ञा पुं० बंडल।
पुलिन-संज्ञा पुं० १. पानी के भीतर से हाल की निकली हुई ज़मीन। २. तट।
पुलिस-संज्ञा स्त्री० प्रजा की जान और माल की हिफ़ाज़त के लिये मुकर्रर सिपाही या अफ़सर।
पुलोमजा-संज्ञा स्त्री० इंद्राणी।

चाह। स्नेह।

प्यारा–वि० [स्त्री० प्यारी] १. जिसे प्यार करें। २. जो भला मालूम हो।

प्याला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० प्याली] एक प्रकार का छोटा कटोरा। जाम।

प्यास–संज्ञा स्त्री० १. जल पीने की इच्छा। तृषा। तृष्णा। पिपासा। २. प्रबल कामना।

प्यासा–वि० जिसे प्यास लगी हो। तृषित।

प्योसर–संज्ञा पुं० हाल की ब्याई हुई गौ का दूध।

प्योसार–संज्ञा पुं० स्त्री के लिये पिता का गृह। पीहर। मायका।

प्रकंप–संज्ञा पुं० कँपकँपी।

प्रकट–वि० १. जो प्रत्यक्ष हुआ हो। ज़ाहिर। २. स्पष्ट। व्यक्त।

प्रकरण–संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ के छोटे छोटे भागों में से कोई भाग। अध्याय।

प्रकर्ष–संज्ञा पुं० १. उत्कर्ष। उत्तमता। २. अधिकता। बहुतायत।

प्रकांड–वि० बहुत बड़ा। २. बहुत विस्तृत।

प्रकार–संज्ञा पुं० १. भेद। क़िस्म। २. तरह। भाँति।

* संज्ञा स्त्री० परकोटा। घेरा।

प्रकाश–संज्ञा पुं० १. आलोक। ज्योति। २. विकाश। ३. प्रकट होना। गोचर होना। ४. धूप। घाम।

प्रकाशक–संज्ञा पुं० १. वह जो प्रकाश करे। २. वह जो प्रकट करे।

प्रकाशमान–वि० चमकता हुआ। चमकीला।

प्रकाशित–वि० १. जिसपर या जिसमें प्रकाश हो। २. प्रकट।

प्रकाश्य–वि० प्रकट करने योग्य।

क्रि० वि० प्रकट रूप से। स्पष्टतया।

प्रकीर्णक–संज्ञा पुं० १. अध्याय। प्रकरण। २. फुटकर।

प्रकुपित–वि० जिसका प्रकोप बहुत बढ़ गया हो।

प्रकृत–वि० [संज्ञा प्रकृतता, प्रकृतत्व] १. यथार्थ। असली। सच्चा। २. जिसमें किसी प्रकार का विकार न हुआ हो।

प्रकृति–संज्ञा स्त्री० १. मूल या प्रधान गुण। तासीर। स्वभाव। २. प्राणी की प्रधान प्रवृत्ति। स्वभाव। ३. वह मूल शक्ति, अनेक रूपात्मक जगत् जिसका विकाश है। कुदरत।

प्रकृतिशास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विचार किया जाय।

प्रकृतिसिद्ध–वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक। नैसर्गिक।

प्रकृतिस्थ–वि० १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २. स्वाभाविक।

प्रकोप–संज्ञा पुं० १. बहुत अधिक कोप। २. बीमारी का अधिक और तेज़ होना।

प्रकोष्ठ–संज्ञा पुं० १. सदर फाटक के पास की कोठरी। २. बड़ा आँगन।

प्रक्रम–संज्ञा पुं० १. क्रम। सिलसिला। २. उपक्रम।

प्रक्रिया–संज्ञा स्त्री० १. प्रकरण। २. क्रिया। युक्ति। तरीक़ा।

प्रक्षालन–संज्ञा पुं० [वि० प्रक्षालित] जल से साफ़ करने की क्रिया। धोना।

पुलोमा–संज्ञा स्त्री० भृगु की पत्नी का नाम।
पुवा–संज्ञा पुं० दे० "मालपूवा"।
पुश्त–संज्ञा स्त्री० १. पीठ। २. पीढ़ी।
पुश्तनामा–संज्ञा पुं० वंशावली।
पुश्ता–संज्ञा पुं० पानी की रोक या मज़बूती के लिये किसी दीवार से लगातार कुछ ऊपर तक जमाया हुआ मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का ढालुवाँ टीला।
पुश्ती–संज्ञा स्त्री० १. टेक। २. पक्ष। ३. गाव तकिया।
पुश्तैनी–वि० १. जो कई पुश्तों से चला आता हो। २. आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।
पुष्कर–संज्ञा पुं० १. जल। २. जलाशय। ३. कमल।
पुष्करमूल–संज्ञा पुं० एक ओषधि का मूल या जड़ जो आजकल नहीं मिलती।
पुष्कल–संज्ञा पुं० १. चार ग्रास की भिक्षा। २. अनाज नापने का एक प्राचीन मान। ३. राम के भाई भरत के दो पुत्रों में से एक।
वि० १. बहुत। २. भरा-पूरा।
पुष्ट–वि० १. पाला हुआ। २. तैयार। ३. दृढ़।
पुष्टई–संज्ञा स्त्री० ताकत की दवा।
पुष्टता–संज्ञा स्त्री० मज़बूती।
पुष्टि–संज्ञा स्त्री० १. पोषण। २. बलिष्ठता। ३. मज़बूती। ४. बात का समर्थन।
पुष्टिकर, पुष्टिकारक–वि० पुष्टि करनेवाला।
पुष्टिमार्ग–संज्ञा पुं० वल्लभ संप्रदाय।
पुष्प–संज्ञा पुं० १. पौधों का फूल। २. आँख का एक रोग।
पुष्पक–संज्ञा पुं० १. फूल। २. कुबेर का विमान जिसे उनसे रावण ने छीना था और राम ने रावण से छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था। ३. आँख का एक रोग।
पुष्पदंत–संज्ञा पुं० १. वायुकोण का दिग्गज। २. शिव का अनुचर एक गंधर्व।
पुष्पधन्वा–संज्ञा पुं० कामदेव।
पुष्परज–संज्ञा पुं० पराग।
पुष्पराग–संज्ञा पुं० पुखराज।
पुष्परेणु–संज्ञा पुं० पराग।
पुष्पवती–वि० स्त्री० फूलवाली।
पुष्पवाटिका–संज्ञा स्त्री० फुलवारी।
पुष्पशर–संज्ञा पुं० कामदेव।
पुष्पित–वि० फूला हुआ।
पुष्पोद्यान–संज्ञा पुं० फुलवारी।
पुष्य–संज्ञा पुं० १. पुष्टि। २. पूस का महीना। ३. सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवाँ।
पुष्यमित्र–संज्ञा पुं० मौर्यों के पीछे मगध में शुंग-वंश का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा।
पुस्तक–संज्ञा स्त्री० पोथी।
पुस्तकाकार–वि० पोथी के रूप का।
पुस्तकालय–संज्ञा पुं० वह भवन या घर जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो।
पुहप, पुहुप–संज्ञा पुं० फूल।
पुहुमी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
पूँछ–संज्ञा स्त्री० १. दुम। २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग।
पूँजी–संज्ञा स्त्री० १. संचित धन। संपत्ति। २. ढेर।
पूँजीपति–संज्ञा पुं० वह जिसके पास

प्रक्षिप्त–संज्ञा पुं० १. फेंका हुआ। २. ऊपर से बढ़ाया हुआ।

प्रक्षेप, प्रक्षेपण–संज्ञा पुं० १. फेंकना। २. छितराना। ३. मिलाना। बढ़ाना।

प्रखर–वि० [संज्ञा प्रखरता] १. तीक्ष्ण। २. धारदार। पैना।

प्रख्यात–वि० प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रगट–वि० दे० "प्रकट"।

प्रगटना†–क्रि० अ० प्रकट होना। सामने आना। ज़ाहिर होना।

प्रगटाना†–क्रि० स० प्रकट करना। ज़ाहिर करना।

प्रगल्भ–वि० १. चतुर। २. प्रतिभाशाली। ३. निर्भय। निडर। ४. बढ़ुत। उद्दंड।

प्रगाढ़–वि० बहुत गाढ़ा या गहरा।

प्रचंड–वि० [संज्ञा प्रचंडता] बहुत अधिक तीव्र। बहुत तेज़। उग्र। प्रखर।

प्रचंडा–संज्ञा स्त्री० दुर्गा। चंडी।

प्रचलन–संज्ञा पुं० प्रचार।

प्रचलित–वि० जारी। चलता हुआ। जिसका चलन हो।

प्रचार–संज्ञा पुं० किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार या उपयोग। रवाज।

प्रचारक–वि० [स्त्री० प्रचारिणी] फैलानेवाला।

प्रचारित–वि० फैलाया हुआ। प्रचार किया हुआ।

प्रचुर–वि० बहुत। अधिक।

प्रचुरता–संज्ञा स्त्री० प्रचुर होने का भाव। ज़्यादती। अधिकता।

प्रच्छन्न–वि० ढका हुआ। लपेटा हुआ। छिपा हुआ।

प्रच्छादन–संज्ञा पुं० [वि० प्रच्छादित] १. ढाँकना। २. छिपाना। ३. ओढ़नी या दुपट्टा। ४. घर की छाजन।

प्रजनन–संज्ञा पुं० १. संतान उत्पन्न करने का काम। २. दाई का काम। धात्री-कर्म। (सुश्रुत)

प्रजरना☆–क्रि० अ० अच्छी तरह जलना।

प्रजा–संज्ञा स्त्री० वह जनसमूह जो किसी एक राज्य में रहता हो। रिआया। रैयत।

प्रजातंत्र–संज्ञा पुं० वह शासन-प्रणाली जिसमें कोई राजा नहीं होता, प्रजा ही समय समय पर अपना प्रधान शासक चुन लेती है।

प्रजापति–संज्ञा पुं० १. सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला। २. ब्रह्मा।

प्रज्ञ–संज्ञा पुं० विद्वान्। जानकार।

प्रज्ञप्ति–संज्ञा स्त्री० १. जताने का भाव। २. सूचना। ३. संकेत। इशारा।

प्रज्ञा–संज्ञा स्त्री० बुद्धि। ज्ञान।

प्रज्ञाचक्षु–संज्ञा पुं० १. धृतराष्ट्र। २. ज्ञानी। ३. अंधा। (व्यंग्य)

प्रज्वलन–संज्ञा पुं० [वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित] जलने की क्रिया। जलना।

प्रज्वलित–वि० १. जलता हुआ। धधकता हुआ। २. बहुत स्पष्ट।

प्रण–संज्ञा पुं० अटल निश्चय। प्रतिज्ञा।

प्रणत–वि० १. प्रणाम करता हुआ। २. नम्र। दीन।

प्रणतपाल–संज्ञा पुं० दीनों, दासों या भक्तजनों का पालन करनेवाला।

प्रणति–संज्ञा स्त्री० १. प्रणाम। दंडवत। २. नम्रता।

प्रणमन–संज्ञा पुं० १. झुकना। २. प्रणाम करना।

प्रणय–संज्ञा पुं० १. प्रीतियुक्त प्रार्थना। २. प्रेम।

प्रणयन–संज्ञा पुं० रचना। बनाना।

प्रणयिनी–संज्ञा स्त्री० १. प्रियतमा। प्रेमिका। २. स्त्री। पत्नी।

प्रणयी–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रणयिनी] १. प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. स्वामी। पति।

प्रणव–संज्ञा पुं० १. ॐकार। ओंकार मंत्र। २. परमेश्वर।

प्रणाली–संज्ञा स्त्री० १. नाली। २. रीति। चाल।

प्रणिधान–संज्ञा पुं० १. अत्यंत भक्ति। २. ध्यान। चित्त की एकाग्रता।

प्रणीत–संज्ञा पुं० रचित। बनाया हुआ।

प्रणेता–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रणेत्री] रचयिता। बनानेवाला।

प्रतप्त–वि० तपा हुआ।

प्रतल–संज्ञा पुं० पाताल के सातवें भाग का नाम।

प्रताप–संज्ञा पुं० १. पौरुष। २. बल, पराक्रम आदि का ऐसा प्रभाव जिसके कारण विरोधी शांत रहें। इक़बाल।

प्रतापी–वि० इक़बालमंद। जिसका प्रताप हो।

प्रतारक–संज्ञा पुं० १. वंचक। ठग। २. धूर्त।

प्रतारणा–संज्ञा स्त्री० वंचना। ठगी।

प्रतिंचा–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी। ज्या।

प्रति–अव्य० एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत; जैसे, प्रतिकूल। सामने; जैसे, प्रत्यक्ष। बदले में; जैसे, प्रत्युपकार। हर एक; जैसे, प्रत्येक। समान; जैसे, प्रतिनिधि। मुक़ाबले का; जैसे, प्रतिवादी।
अव्य० १. सामने। मुक़ाबिले में। २. ओर। तरफ़।
संज्ञा स्त्री० नकल। कापी।

प्रतिकार–संज्ञा पुं० बदला। जवाब।

प्रतिकूल–वि० [संज्ञा प्रतिकूलता] जो अनुकूल न हो। विरुद्ध। विपरीत।

प्रतिकृति–संज्ञा स्त्री० १. प्रतिमा। २. तसवीर। ३. बदला। प्रतिकार।

प्रतिक्रिया–संज्ञा स्त्री० बदला।

प्रतिगृहीता–संज्ञा स्त्री० धर्मपत्नी।

प्रतिग्रह–संज्ञा पुं० १. स्वीकार। ग्रहण। २. पकड़ना। अधिकार में लाना। ३. पाणिग्रहण। विवाह।

प्रतिघात–संज्ञा पुं० टक्कर।

प्रतिघाती–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रतिघातिनी] १. वैरी। दुश्मन। २. मुक़ाबला करनेवाला।

प्रतिच्छाया–संज्ञा स्त्री० १. चित्र। तसवीर। २. परछाईं।

प्रतिज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. कोई काम करने या न करने आदि के संबंध में दृढ़ निश्चय। प्रण। क़सम। २. उस बात का कथन जिसे सिद्ध करना हो।

प्रतिज्ञापत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा या शर्तें लिखी हों।

प्रतिदान–संज्ञा पुं० १. लौटाना। वापस करना। २. परिवर्तन। बदला।

प्रतिद्वंद्वी–संज्ञा पुं० [भाव० प्रतिद्वंद्विता] मुक़ाबले का लड़नेवाला। शत्रु।

प्रतिध्वनि–संज्ञा स्त्री० टकराकर सुनाई पड़नेवाला शब्द। गूँज।

प्रतिनायक–संज्ञा पुं० नाटकों और

प्रसन्न-वि० १. संतुष्ट। तुष्ट। २. प्रफुल्ल। ३. अनुकूल।
प्रसन्नता-संज्ञा स्त्री० तुष्टि। हर्ष। आनंद।
प्रसरण-संज्ञा पुं० १. आगे बढ़ना। खिसकना। २. फैलना। ३. व्याप्ति। ४. विस्तार।
प्रसव-संज्ञा पुं० बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति।
प्रसविनी-वि० स्त्री० प्रसव करनेवाली। जननेवाली।
प्रसाद-संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। २. वह पदार्थ जिसे देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें।
प्रसादी-संज्ञा स्त्री० १. देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ। २. नैवेद्य।
प्रसार-संज्ञा पुं० १. विस्तार। फैलाव। पसार। २. संचार। ३. गमन।
प्रसारण-संज्ञा पुं० १. फैलाना। २ बढ़ाना।
प्रसारिणी-संज्ञा स्त्री० १. गंधप्रसारिणी लता। २. लजालू। लाजवंती।
प्रसारित-वि० फैलाया हुआ।
प्रसिद्ध-वि० १. भूषित। अलंकृत। २. मशहूर।
प्रसिद्धि-संज्ञा स्त्री० १. ख्याति। २. बनाव-सिंगार।
प्रसुप्त-वि० सोया हुआ।
प्रसुप्ति-संज्ञा स्त्री० नींद।
प्रसू-संज्ञा स्त्री० जननेवाली। उत्पन्न करनेवाली।
प्रसूत-वि० १. उत्पन्न। २. उत्पादक। संज्ञा पुं० एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को प्रसव के पीछे होता है।
प्रसूता-संज्ञा स्त्री० बच्चा जननेवाली स्त्री। जच्चा।
प्रसूति-संज्ञा स्त्री० प्रसव। जनन।
प्रसूतिका-संज्ञा स्त्री० दे० "प्रसूता"।
प्रसून-संज्ञा पुं० फूल।
प्रसृति-संज्ञा स्त्री० १. फैलाव। २. संतति। संतान।
प्रसेक-संज्ञा पुं० सेचन, सींचना।
प्रसेद-संज्ञा पुं० पसीना।
प्रस्तर-संज्ञा पुं० पत्थर।
प्रस्तार-संज्ञा पुं० १. फैलाव। विस्तार। २. आधिक्य। वृद्धि।
प्रस्ताव-संज्ञा पुं० १. प्रसंग। छिड़ी हुई बात। २. सभा के सामने उपस्थित मंतव्य। (आधुनिक)
प्रस्तावना-संज्ञा स्त्री० १. आरंभ। २. प्राक्कथन।
प्रस्तावित-वि० जिसके लिये प्रस्ताव किया गया हो।
प्रस्तुत-वि० १. जो कहा गया हो। उक्त। कथित। २. उपस्थित। सामने आया हुआ। ३. उद्यत। तैयार।
प्रस्थान-संज्ञा पुं० गमन। यात्रा। रवानगी।
प्रस्थानी-वि० जानेवाला।
प्रस्थित-वि० १. ठहराया हुआ। टिका हुआ। २. गत।
प्रस्फुरण-संज्ञा पुं० निकलना।
प्रस्फोटन-संज्ञा पुं० एकबारगी ज़ोर से खुलना या फूटना।
प्रस्वेद-संज्ञा पुं० पसीना।
प्रहर-संज्ञा पुं० दिन-रात के आठ सम भागों में से एक भाग। पहर।
प्रहरी-वि० १. पहर पहर पर घंटा बजानेवाला। घड़ियाली। २. पहरा देनेवाला।

काव्यों आदि में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र।

प्रतिनिधि-संज्ञा पुं० [प्रतिनिधित्व] वह व्यक्ति जो किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त हो।

प्रतिपक्षी-संज्ञा पुं० विपक्षी। विरोधी। शत्रु।

प्रतिपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। २. प्रतिपादन। निरूपण। ३. जी में बैठाना।

प्रतिपदा-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपद्। परिवा।

प्रतिपन्न-वि० १. जाना हुआ। २. अंगीकृत। स्वीकृत। ३. साबित। निश्चित। ४. भरा-पूरा।

प्रतिपादन-संज्ञा पुं० [वि० प्रतिपादित] १. अच्छी तरह समझाना। २. किसी बात का प्रमाणपूर्वक कथन।

प्रतिपाल, प्रतिपालक-संज्ञा पुं० पालन-पोषण करनेवाला।

प्रतिपालन-संज्ञा पुं० [वि० प्रतिपालित] १. पालन करने की क्रिया या भाव। २. रक्षण। निर्वाह। तामील।

प्रतिफल-संज्ञा पुं० १. प्रतिबिंब। छाया। २. परिणाम। नतीजा।

प्रतिबंध-संज्ञा पुं० १. रोक। रुकावट। अटकाव। २. विघ्न। बाधा।

प्रतिबंधक-संज्ञा पुं० १. रोकनेवाला। २. बाधा डालनेवाला।

प्रतिबिंब-संज्ञा पुं० [वि० प्रतिबिंबित] १. परछाईं। छाया। २. चित्र। तसवीर।

प्रतिबिंबवाद-संज्ञा पुं० वेदांत का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिंब है।

प्रतिभा-संज्ञा स्त्री० १. वह असाधारण मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता प्राप्त कर लेता है। असाधारण बुद्धि-बल। २. दीप्ति। चमक। (क०)

प्रतिभावान्, प्रतिभाशाली-वि० जिसमें प्रतिभा हो।

प्रतिम-अव्य० समान। सदृश।

प्रतिमा-संज्ञा स्त्री० १. किसी की आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र आदि। २. मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति।

प्रतिमान-संज्ञा पुं० प्रतिबिंब। परछाँही।

प्रतियोगिता-संज्ञा स्त्री० प्रतिद्वंद्विता। चढ़ा-ऊपरी। मुकाबला। विरोध।

प्रतियोगी-संज्ञा पुं० १. हिस्सेदार। शरीक। २. शत्रु। विरोधी। वैरी। ३. सहायक। मददगार।

प्रतिरूप-संज्ञा पुं० १. प्रतिमा। मूर्ति। २. तसवीर। चित्र।

प्रतिरोध-संज्ञा पुं० [वि० प्रतिरोधक] १. विरोध। २. रुकावट। रोक। बाधा।

प्रतिलिपि-संज्ञा स्त्री० लेख की नकल। किसी लिखी हुई चीज़ की नकल।

प्रतिलोम-वि० प्रतिकूल। विपरीत।

प्रतिलोम विवाह-संज्ञा पुं० वह विवाह जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।

प्रतिवाद-संज्ञा पुं० १. वह कथन जो किसी मत को मिथ्या ठहराने के लिये हो। विरोध। खंडन। २. विवाद। बहस।

प्रतिवादी-संज्ञा पुं० १. प्रतिवाद या खंडन करनेवाला। २. प्रतिपक्षी।

प्रहर्ष–संज्ञा पुं० हर्ष। आनंद।

प्रहर्षण–संज्ञा पुं० १. आनंद। २. एक अलंकार जिसमें बिना उद्योग के अनायास किसी के वांछित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है।

प्रहर्षणी–संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्ति।

प्रहसन–संज्ञा पुं० १. हँसी। दिल्लगी। परिहास। २. हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का काव्य-मिश्र नाट्य जो रूपक के दस भेदों में से है।

प्रहार–संज्ञा पुं० आघात। चोट। मार।

प्रहारी–वि० मारनेवाला। प्रहार करनेवाला।

प्रहेलिका–संज्ञा स्त्री० पहेली।

प्रह्लाद–संज्ञा पुं० एक भक्त दैत्य जो राजा हिरण्यकशिपु का पुत्र था।

प्रांगण–संज्ञा पुं० आँगन। सहन।

प्रांजल–वि० १. सरल। सीधा। २. सच्चा। ३. बराबर। समान।

प्रांत–संज्ञा पुं० १. अंत। शेष। सीमा। २. खंड। प्रदेश।

प्रांतीय, प्रांतिक–वि० किसी एक प्रांत से संबंध रखनेवाला।

प्राकार–संज्ञा पुं० प्राचीर।

प्राकृत–वि० १. प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति-संबंधी। २. सहज। स्वाभाविक।

संज्ञा स्त्री० १. बोलचाल की भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रांत में हो अथवा रहा हो। २. एक प्राचीन भारतीय भाषा।

प्राकृतिक–वि० १. जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। २. प्रकृति-संबंधी। प्रकृति का। ३. स्वाभाविक। सहज।

प्राङ्मुख–वि० जिसका मुँह पूर्व दिशा की ओर हो। पूर्वाभिमुख।

प्राची–संज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा। पूरब।

प्राचीन–वि० १. पूरब का। २. पिछले ज़माने का। पुराना।

संज्ञा पुं० दे० "प्राचीर"।

प्राचीनता–संज्ञा स्त्री० प्राचीन होने का भाव। पुरानापन।

प्राचीर–संज्ञा पुं० चहारदीवारी। शहरपनाह। परकोटा।

प्राच्य–वि० १. पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न। २. पूर्वीय। पूर्व-संबंधी। ३. पुराना। प्राचीन।

प्राज्ञ–वि० १. बुद्धिमान्। समझदार। चतुर। २. पंडित। विद्वान्।

प्राड्विवाक–संज्ञा पुं० १. न्याय करनेवाला। न्यायाधीश। २. वकील।

प्राण–संज्ञा पुं० १. शरीर की वह वायु जिससे मनुष्य जीवित रहता है। २. श्वास। साँस। ३. काल का वह विभाग जिसमें दस दीर्घ मात्राओं का उच्चारण हो सके। ४. जीवन। जान।

प्राणअधार(ा)–संज्ञा पुं० १. बहुत प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राणघात–संज्ञा पुं० हत्या। वध।

प्राणजीवन–संज्ञा पुं० १. प्राणाधार। २. परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणत्याग–संज्ञा पुं० मर जाना।

प्राणदंड–संज्ञा पुं० हत्या आदि अपराध के बदले में मार डालना।

प्राणद–वि० १. जो प्राण दे। २. प्राणों की रक्षा करनेवाला।

प्राणदान–संज्ञा पुं० किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।

प्राणधन–वि० अत्यंत प्रिय।

प्राणधारी–वि० १. जीवित प्राण-

प्रतिवेश–संज्ञा पुं० पड़ोस।
प्रतिवेशी–संज्ञा पुं० पड़ोस में रहने-वाला। पड़ोसी।
प्रतिशब्द–संज्ञा पुं० प्रतिध्वनि।
प्रतिशोध–संज्ञा पुं० वह काम जो किसी बात का बदला चुकाने के लिये किया जाय। बदला।
प्रतिषेध–संज्ञा पुं० [वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक] १. निषेध। मनाही। २. खंडन।
प्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० १. देवता की प्रतिमा की स्थापना। २. मान-मर्यादा। गौरव। ३. आदर। सत्कार। इज्जत।
प्रतिष्ठान–संज्ञा पुं० स्थापित या प्रतिष्ठित करना।
प्रतिष्ठानपुर–संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुना के संगम पर वर्तमान झूसी नामक स्थान के पास था। २. गोदावरी के तट का एक प्राचीन नगर।
प्रतिष्ठित–वि० १. आदर-प्राप्त। इज्जतदार। २. जो स्थापित किया गया हो।
प्रतिस्पर्द्धा–संज्ञा स्त्री० किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का उद्योग। [illegible] डाँट। चढ़ा-ऊपरी।
प्रतिस्पर्द्धी–संज्ञा पुं० मुकाबला या बराबरी करनेवाला।
प्रतिहार–संज्ञा पुं० १. द्वारपाल। दरबान। ड्योढ़ीदार। २. द्वार। दरवाजा।
प्रतिहारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रतिहारिणी] द्वारपाल। ड्योढ़ीदार।
प्रतीक–संज्ञा पुं० पता। चिह्न। निशान।
प्रतीकार–संज्ञा पुं० प्रतिकार।
प्रतीक्षा–संज्ञा स्त्री० किसी कार्य्य के होने या किसी के आने की आशा में रहना। आसरा। इंतज़ार। प्रत्याशा।
प्रतीची–संज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा।
प्रतीच्य–वि० पश्चिमी।
प्रतीत–वि० ज्ञात। विदित। जाना हुआ।
प्रतीति–संज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। जानकारी। २. विश्वास।
प्रतीप–संज्ञा पुं० प्रतिकूल घटना। आशा के विरुद्ध फल।
प्रतीयमान–वि० जान पड़ता हुआ।
प्रतुद–संज्ञा पुं० वे पक्षी जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं।
प्रतोली–संज्ञा स्त्री० १. चौड़ी सड़क। शाहराह। २. गली। कूचा। ३. दुर्ग का द्वार।
प्रत्यंचा–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी जिसमें लगाकर बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।
प्रत्यक्ष–वि० [संज्ञा प्रत्यक्षता] १. जो देखा जा सके। जो आँखों के सामने हो। २. जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके।
संज्ञा पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक।
क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।
प्रत्यक्षदर्शी–संज्ञा पुं० १. वह जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना देखी हो। २. साक्षी। गवाह।
प्रत्यक्षवादी–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रत्यक्ष-वादिनी] वह व्यक्ति जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाण माने, और कोई प्रमाण न माने।

युक्त । २. जो साँस लेता हो । चेतन ।

संज्ञा पुं० प्राणी । जंतु । जीव ।

प्राणनाथ–संज्ञा पुं० १. प्रिय व्यक्ति । २. पति । स्वामी ।

प्राणपति–संज्ञा पुं० १. पति । स्वामी । २. प्रिय व्यक्ति ।

प्राणप्यारा–संज्ञा पुं० १. प्रियतम । अत्यंत प्रिय व्यक्ति । २. पति । स्वामी ।

प्राणप्रतिष्ठा–संज्ञा स्त्री० किसी नई मूर्ति को मंदिर आदि में स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राण का आरोप ।

प्राणप्रद–वि० १. प्राणदाता । २. स्वास्थ्य-वर्धक ।

प्राणप्रिय–वि० प्रियतम ।

प्राणमय–वि० जिसमें प्राण हों ।

प्राणमय कोश–संज्ञा पुं० वेदांत के अनुसार पाँच कोशों में से दूसरा । यह पाँच प्राणों से बना हुआ माना जाता है ।

प्राणवल्लभ–संज्ञा पुं० १. अत्यंत प्रिय । २. स्वामी । पति ।

प्राणवायु–संज्ञा स्त्री० प्राण ।

प्राणशरीर–संज्ञा पुं० एक सूक्ष्म शरीर जो मनोमय माना गया है ।

प्राणांत–संज्ञा पुं० मरण । मृत्यु ।

प्राणांतक–वि० प्राण लेनेवाला ।

प्राणाधार, प्राणाधिक–वि० अत्यंत प्रिय ।

संज्ञा पुं० पति । स्वामी ।

प्राणायाम–संज्ञा पुं० योगशास्त्रानुसार योग के आठ अंगों में चौथा ।

प्राणी–वि० प्राणधारी ।

संज्ञा पुं० जीव । जंतु ।

प्रात–अव्य० प्रातःकाल ।

प्रातः–संज्ञा पुं० सवेरा ।

प्रातःकर्म–स्नानादि प्रातःकाल के कार्य ।

प्रातःकाल–संज्ञा पुं० रात के अंत में सूर्योदय के पूर्व का काल । यह तीन मुहूर्त का माना गया है ।

प्रातःस्मरण–संज्ञा पुं० सवेरे के समय ईश्वर का भजन करना ।

प्रातिपदिक–संज्ञा पुं० अग्नि ।

प्राथमिक–वि० पहले का ।

प्रादुर्भाव–संज्ञा पुं० आविर्भाव । प्रकट होना ।

प्रादेशिक–वि० प्रदेश-संबंधी । किसी एक प्रदेश का । प्रांतिक ।

प्रापति†–संज्ञा स्त्री० दे० "प्राप्ति" ।

प्राप्त–वि० पाया हुआ । जो मिला हो ।

प्राप्तकाल–संज्ञा पुं० उपयुक्त काल । उचित समय ।

प्राप्तव्य–वि० दे० "प्राप्य" ।

प्राप्ति–संज्ञा स्त्री० १. उपलब्धि । मिलना । २. अणिमादि आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं । ३. आय ।

प्राप्य–वि० १. पाने योग्य । प्राप्त करने योग्य । २. जो मिल सके ।

प्रामाणिक–वि० १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो । २. माननीय । मानने योग्य ।

प्राय–संज्ञा पुं० १. समान । तुल्य । जैसे, मृतप्राय । २. लगभग । जैसे, प्रायद्वीप ।

प्रायः–वि० १. विशेषकर । २. लगभग ।

प्रत्यय–संज्ञा पुं० १. विश्वास। एतबार। २. व्याकरण में वह अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से, लगाया जाय। जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है।

प्रत्याख्यान–संज्ञा पुं० १. खंडन। २. निराकरण।

प्रत्यागत–वि० जो लौट आया हो।

प्रत्यावर्त्तन–संज्ञा पुं० लौट आना।

प्रत्याशा–संज्ञा स्त्री० आशा। उम्मेद।

प्रत्याहार–संज्ञा पुं० इंद्रियनिग्रह। योग के आठ अंगों में से एक अंग।

प्रत्युत्–अव्य० बल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्पन्न–वि० जो ठीक समय पर उत्पन्न हो।

प्रत्यूष–संज्ञा पुं० प्रभात। तड़का।

प्रत्येक–वि० समूह अथवा बहुतों में से हर एक, अलग अलग।

प्रथम–वि० १. जो गिनती में सबसे पहले आवे। पहला। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे अच्छा।
क्रि० वि० पहले। पेश्तर। आगे।

प्रथम पुरुष–संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष"।

प्रथमा–संज्ञा स्त्री० १. मदिरा। शराब। (तांत्रिक) २. व्याकरण का कर्त्ता-कारक।

प्रथा–संज्ञा स्त्री० रीति। रिवाज। नियम।

प्रद–वि० देनेवाला। जो दे। दाता। (यौगिक में) जैसे, आनंदप्रद।

प्रदक्षिण–संज्ञा पुं० देवमूर्त्ति आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा।

प्रदत्त–वि० दिया हुआ।

प्रदर–संज्ञा पुं० स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफ़ेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहता है।

प्रदर्शक–संज्ञा पुं० दिखलानेवाला।

प्रदर्शन–संज्ञा पुं० दिखलाने का काम।

प्रदर्शिनी–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीज़ें लोगों को दिखलाने के लिये रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदान–संज्ञा पुं० १. देने की क्रिया। २. दान।

प्रदाह–संज्ञा पुं० ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदीप–संज्ञा पुं० १. दीपक। दीया। २. रोशनी। प्रकाश।

प्रदीपक–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।

प्रदीपन–संज्ञा पुं० १. उजाला करना। २. उज्ज्वल करना। चमकाना।

प्रदीप्त–वि० जगमगाता हुआ। प्रकाशवान्।

प्रदीप्ति–संज्ञा स्त्री० रोशनी। प्रकाश।

प्रदेश–संज्ञा पुं० १. किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसकी भाषा, रीति-व्यवहार, शासन-पद्धति आदि उसी देश के अन्य विभागों की इन सब बातों से भिन्न हों। प्रांत। सूबा। २. स्थान। जगह। मुक़ाम।

प्रायद्वीप–संज्ञा पुं० स्थल का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो।

प्रायशः–क्रि० वि० प्रायः। बहुधा।

प्रायश्चित्त–संज्ञा पुं० शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रारंभ–संज्ञा पुं० १. शुरू। २. आदि।

प्रारंभिक–वि० प्रारंभ का।

प्रारब्ध–वि० १. आरंभ किया हुआ। २. भाग्य। किस्मत।

प्रारब्धी–वि० भाग्यवान्।

प्रार्थना–संज्ञा स्त्री० किसी से कुछ माँगना। याचना। निवेदन। ◌ क्रि० स० प्रार्थना या विनती करना।

प्रार्थनापत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदन पत्र। अर्ज़ी।

प्रार्थना-समाज–संज्ञा पुं० ब्राह्म समाज की तरह का एक नवीन समाज या संप्रदाय।

प्रार्थनीय–वि० प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी–वि० प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।

प्रालेय–संज्ञा पुं० १. हिम। तुषार। २. बर्फ।

प्रावृट्–संज्ञा पुं० वर्षा ऋतु।

प्राशन–संज्ञा पुं० खाना। भोजन। जैसे, अन्नप्राशन।

प्रासंगिक–वि० १. प्रसंग-संबंधी। प्रसंग का। २. प्रसंग द्वारा प्राप्त।

प्रासाद–संज्ञा पुं० लंबा, चौड़ा, ऊँचा और पक्का या पत्थर का घर। विशाल भवन।

प्रियंगु–संज्ञा स्त्री० कँगनी नामक अन्न।

प्रियंवद–वि० प्रिय वचन कहनेवाला। प्रियभाषी।

प्रिय–संज्ञा पुं० स्वामी। पति। वि० १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुंदर।

प्रियतम–वि० प्राणों से भी बढ़कर प्रिय। संज्ञा पुं० स्वामी। पति।

प्रियदर्शन–वि० जो देखने में प्रिय लगे। सुंदर।

प्रियदर्शी–वि० सबको प्रिय समझने या सबसे स्नेह करनेवाला।

प्रियभाषी–वि० मधुर वचन बोलनेवाला।

प्रियवर–वि० अति प्रिय। सबसे प्यारा। (पत्रों आदि में संबोधन)

प्रियवादी–संज्ञा पुं० दे० "प्रियभाषी"।

प्रिया–संज्ञा स्त्री० १. नारी। स्त्री। २. पत्नी। ३. प्रेमिका स्त्री।

प्रीत–वि० प्रीतियुक्त। * संज्ञा पुं० दे० "प्रीति"।

प्रीतम–संज्ञा पु० १. पति। भर्ता। स्वामी। २. प्यारा।

प्रीति–संज्ञा स्त्री० प्रेम। प्यार।

प्रीतिकर, प्रीतिकारक–वि० प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। प्रेमजनक।

प्रीतिपात्र–संज्ञा पुं० प्रेमभाजन।

प्रीतिभोज–संज्ञा पुं० वह खान-पान जिसमें मित्र, बंधु आदि प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों।

प्रीत्यर्थ–अव्य० प्रीति के कारण। प्रसन्न करने के वास्ते।

प्रेंखण–संज्ञा पुं० अच्छी तरह हिलना या झूलना।

प्रेक्षक–संज्ञा पुं० देखनेवाला। दर्शक।

प्रदोप–संज्ञा पुं० संध्याकाल। सूर्य्य के अस्त होने का समय।

प्रद्युम्न–संज्ञा पुं० १. कामदेव। कंदर्प। २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत–संज्ञा पुं० १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। आभा। चमक।

प्रधान–वि० मुख्य। खास। संज्ञा पुं० मुखिया। सरदार।

प्रधानता–संज्ञा स्त्री० प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य्य या पद।

प्रध्वंस–संज्ञा पुं० नाश। विनाश।

प्रपंच–संज्ञा पुं० १. संसार। सृष्टि। २. दुनिया का जंजाल। ३. झगड़ा। झमेला। ४. आडंबर। ढोंग।

प्रपंची–वि० १. प्रपंच रचनेवाला। २. छली। कपटी। ढोंगी।

प्रपत्ति–संज्ञा स्त्री० अनन्य शरणागत होने की भावना। अनन्य भक्ति।

प्रपन्न–वि० शरणागत। आश्रित।

प्रपात–संज्ञा पुं० १. पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो। २. एक-बारगी नीचे गिरना। ३. ऊँचे से गिरती हुई जलधारा। झरना। दरी।

प्रपितामह–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म।

प्रपीड़न–संज्ञा पुं० [वि० प्रपीड़ित] बहुत अधिक कष्ट देना।

प्रफुल्ल–वि० १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसमें फूल लगे हों। ३. खुला हुआ। ४. प्रसन्न। आनंदित।

प्रबंध–संज्ञा पुं० १. बाँधने की डोरी आदि। २. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। निबंध। ३. आयोजन। उपाय। ४. व्यवस्था। बंदोबस्त। इंतज़ाम।

प्रबल–वि० [स्त्री० प्रबला] बलवान्। प्रचंड।

प्रबला–संज्ञा स्त्री० बहुत बलवती।

प्रबुद्ध–वि० १. जागा हुआ। २. होश में आया हुआ। ३. पंडित। ज्ञानी।

प्रबोध–संज्ञा पुं० [वि० प्रबोधक] १. जागना। नींद का टूटना। २. यथार्थ ज्ञान। ३. ढारस। तसल्ली। ४. चेतावनी।

प्रबोधन–संज्ञा पुं० १. जागरण। जागना। २. जगाना। नींद से उठाना। ३. यथार्थ ज्ञान। बोध। चेत। ४. बताना। ज्ञान देना। ५. सांत्वना।

प्रबोधना॰–क्रि० स० १. जगाना। नींद से उठाना। २. सचेत करना। होशियार करना। ३. समझाना-बुझाना। ४. पट्टी पढ़ाना। ५. ढारस देना।

प्रबोधिनी–संज्ञा स्त्री० देवोत्थान या कार्त्तिक शुक्ला एकादशी।

प्रभंजन–संज्ञा पुं० प्रचंड वायु। आँधी।

प्रभव–संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति-कारण। २. जन्म। उत्पत्ति। ३. सृष्टि। संसार।

प्रभा–संज्ञा स्त्री० प्रकाश। चमक

प्रभाकर–संज्ञा पुं० सूर्य।

प्रेक्षण–संज्ञा पुं० १. आँख। २. देखने की क्रिया।
प्रेक्षा–संज्ञा स्त्री० १. देखना। २. दृष्टि। निगाह।
प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह–संज्ञा पुं० १. राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान। मंत्रणागृह। २ नाट्यशाला।
प्रेत–संज्ञा पुं० १. मरा हुआ मनुष्य। मृतक प्राणी। २. नरक में रहनेवाला प्राणी। ३. पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोनि।
प्रेतकर्म–संज्ञा पुं० हिंदुओं में मृतदाह आदि से लेकर सपिंडी तक का कर्म। प्रेतकार्य्य।
प्रेतगृह–संज्ञा पुं० १. श्मशान। २. कब्रिस्तान।
प्रेतत्व–संज्ञा पुं० प्रेत का भाव या धर्म्म।
प्रेतदाह–संज्ञा पुं० मृतक को जलाने आदि का कार्य्य।
प्रेतदेह–संज्ञा पुं० मृतक का वह कल्पित शरीर जो उसके मरने के समय से सपिंडी तक उसकी आत्मा को प्राप्त रहता है।
प्रेतनी–संज्ञा स्त्री० भूतनी। चुड़ैल।
प्रेतलोक–संज्ञा पुं० यमपुर।
प्रेतविधि–संज्ञा स्त्री० मृतक का दाह आदि करना।
प्रेताशौच–संज्ञा पुं० वह अशौच जो हिंदुओं में किसी के मरने पर उसके संबंधियों आदि को होता है।
प्रेती–संज्ञा पुं० प्रेत की उपासना करनेवाला। प्रेतपूजक।
प्रेम–संज्ञा पुं० स्नेह। मुहब्बत। अनुराग। प्रीति।
प्रेमपात्र–संज्ञा पुं० वह जिससे प्रेम किया जाय। माशूक।
प्रेमालाप–संज्ञा पुं० वह बातचीत जो प्रेमपूर्वक हो।
प्रेमालिंगन–संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक गले लगाना।
प्रेमाश्रु–संज्ञा पुं० वे आँसू जो प्रेम के कारण आँखों से निकलते हैं।
प्रेमी–संज्ञा पुं० १. प्रेम करनेवाला। २. आशिक। आसक्त।
प्रेयसी–संज्ञा स्त्री० प्रेमिका।
प्रेरक–संज्ञा पुं० किसी काम में प्रवृत्त या प्रेरणा करनेवाला।
प्रेरणा–संज्ञा स्त्री० कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना।
प्रेरणार्थक क्रिया–संज्ञा स्त्री० क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि यह किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुआ है। जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिखवाना।
प्रेरित–वि० भेजा हुआ। प्रेषित।
प्रेषक–संज्ञा पुं० भेजनेवाला।
प्रेषण–संज्ञा पुं० १. प्रेरणा करना। २. भेजना।
प्रोक्षण–संज्ञा पुं० पानी छिड़कना।
प्रोत–वि० १. किसी में अच्छी तरह मिला हुआ। २. छिपा हुआ।
प्रोत्साह–संज्ञा पुं० बहुत अधिक उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहन–संज्ञा पुं० [वि० प्रोत्साहित] खूब उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।
प्रोषित–वि० जो विदेश में गया हो। प्रवासी।
प्रोषित नायक या पति–संज्ञा पुं०

प्रत्यय–संज्ञा पुं० १. विश्वास। एतबार। २. व्याकरण में वह अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के उद्देश्य से, लगाया जाय। जैसे, मूर्खता में "ता" प्रत्यय है।

प्रत्याख्यान–संज्ञा पुं० १. खंडन। २. निराकरण।

प्रत्यागत–वि० जो लौट आया हो।

प्रत्यावर्त्तन–संज्ञा पुं० लौट आना।

प्रत्याशा–संज्ञा स्त्री० आशा। उम्मेद।

प्रत्याहार–संज्ञा पुं० इंद्रियनिग्रह। योग के आठ अंगों में से एक अंग।

प्रत्युत–अव्य० बल्कि। वरन्। इसके विरुद्ध।

प्रत्युत्पन्न–वि० जो ठीक समय पर उत्पन्न हो।

प्रत्यूष–संज्ञा पुं० प्रभात। तड़का।

प्रत्येक–वि० समूह अथवा बहुतों में से हर एक, अलग अलग।

प्रथम–वि० १. जो गिनती में सबसे पहले आवे। पहला। २. सर्वश्रेष्ठ। सबसे अच्छा।
क्रि० वि० पहले। पेश्तर। आगे।

प्रथम पुरुष–संज्ञा पुं० दे० "उत्तम पुरुष"।

प्रथमा–संज्ञा स्त्री० १. मदिरा। शराब। (तांत्रिक) २. व्याकरण का कर्त्ता-कारक।

प्रथा–संज्ञा स्त्री० रीति। रिवाज। नियम।

प्रद–वि० देनेवाला। जो दे। दाता। (यौगिक में) जैसे, आनंदप्रद।

प्रदक्षिण–संज्ञा पुं० देवमूर्ति आदि के चारों ओर घूमना। परिक्रमा।

प्रदत्त–वि० दिया हुआ।

प्रदर–संज्ञा पुं० स्त्रियों का एक रोग जिसमें उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रंग का लसीदार पानी सा बहता है।

प्रदर्शक–संज्ञा पुं० दिखलानेवाला।

प्रदर्शन–संज्ञा पुं० दिखलाने का काम।

प्रदर्शिनी–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीज़ें लोगों को दिखलाने के लिये रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदान–संज्ञा पुं० १. देने की क्रिया। २. दान।

प्रदाह–संज्ञा पुं० ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदीप–संज्ञा पुं० १. दीपक। दीआ। २. रोशनी। प्रकाश।

प्रदीपक–संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश में लानेवाला। प्रकाशक।

प्रदीपन–संज्ञा पुं० १. उजाला करना। २. उज्ज्वल करना। चमकाना।

प्रदीप्त–वि० जगमगाता हुआ। प्रकाशमान्।

प्रदीप्ति–संज्ञा स्त्री० रोशनी। प्रकाश।

प्रदेश–संज्ञा पुं० १. किसी देश का वह बड़ा विभाग जिसकी भाषा, रीति-व्यवहार, शासन-पद्धति आदि, उसी देश के अन्य विभागों की इन सब बातों से भिन्न हों। प्रांत। सूबा। २. स्थान। जगह। मुकाम।

वह नायक जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विकल हो। विरही नायक।

प्रोषितपतिका (नायिका)–संज्ञा स्त्री० (वह नायिका) जो अपने पति के परदेस में होने के कारण दुखी हो।

प्रौढ़–वि० १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २. जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। ३. दृढ़।

प्रौढ़ता–संज्ञा स्त्री० प्रौढ़ होने का भाव। प्रौढ़त्व।

प्रौढ़ा–संज्ञा स्त्री० अधिक वयसवाली स्त्री।

प्लक्ष–संज्ञा पुं० पाकर वृक्ष। पिलखा।

प्लवंग–संज्ञा पुं० १. वानर। बंदर। २. मृग। हिरन।

प्लवन–संज्ञा पुं० १. उछलना। २. तैरना।

प्लावन–संज्ञा पुं० बाढ़।

प्लावित–वि० जो जल में डूब गया हो।

प्लीहा–संज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली"।

प्लुत–संज्ञा पुं० १ टेढ़ी चाल। उछाल। २. स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है।

फ

फ–हिंदी वर्णमाला में बाईसवाँ व्यंजन। इसके उच्चारण का स्थान ओष्ठ है।

फंका◌–संज्ञा पुं० उतनी मात्रा जितनी एक बार फाँकी जा सके।

फंकी–संज्ञा स्त्री० १. फाँकने की दवा। २. उतनी दवा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

फंग–संज्ञा पुं० बंधन। फंदा।

फंद–संज्ञा पुं० १. बंधन। २. फंदा। जाल। ३. छल। धोखा।

फँदना◌–क्रि० अ० फंदे में पड़ना। फँसना।

फदधार–वि० फंदा लगानेवाला।

फंदा–संज्ञा पुं० रस्सी, तागे आदि का वह घेरा जो किसी को फँसाने के लिये बनाया गया हो। फनी। फाँद।

फँसना–क्रि० स० १. बंधन या फंदे में पड़ना। २. अटकना। उलझना।

फँसाना–१. फंदे में डालना। २. वशीभूत करना।

फक–वि० बदरंग।

फ़कीर–संज्ञा पुं० १. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २. साधु। संसारत्यागी। ३. निर्धन मनुष्य।

फ़कीरी–संज्ञा स्त्री० १. भिखमंगापन। २. साधुता। ३. निर्धनता।

फगुआ–संज्ञा पुं० १. होली। होलिकोत्सव का दिन। २. फागुन के महीने में लोगों का आमोद-प्रमोद। फाग।

फगुहारा–संज्ञा पुं० वह जो फाग खेलने के लिये होली में किसी के यहाँ जाय।

प्रदीप-संज्ञा पुं० संध्याकाल। सूर्य्य के अस्त होने का समय।
प्रद्युम्न-संज्ञा पुं० १. कामदेव। कंदर्प। २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।
प्रद्योत-संज्ञा पुं० १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। आभा। चमक।
प्रधान-वि० मुख्य। खास।
संज्ञा पुं० मुखिया। सरदार।
प्रधानता-संज्ञा स्त्री० प्रधान होने का भाव, धर्म, कार्य्य या पद।
प्रध्वंस-संज्ञा पुं० नाश। विनाश।
प्रपंच-संज्ञा पु० १. संसार। सृष्टि। २. दुनिया का जंजाल। ३. झगड़ा। झमेला। ४. आडंबर। ढोंग।
प्रपंची-वि० १. प्रपंच रचनेवाला। २. छली। कपटी। ढोंगी।
प्रपत्ति-संज्ञा स्त्री० अनन्य शरणागत होने की भावना। अनन्य भक्ति।
प्रपन्न-वि० शरणागत। आश्रित।
प्रपात-संज्ञा पुं० १. पहाड़ या चट्टान का ऐसा किनारा जिसके नीचे कोई रोक न हो। २. एकबारगी नीचे गिरना। ३. ऊँचे से गिरती हुई जलधारा। झरना। दरी।
प्रपितामह-संज्ञा पुं० [स्त्री० प्रपितामही] १. परदादा। दादा का बाप। २. परब्रह्म।
प्रपीड़न-संज्ञा पुं० [वि० प्रपीड़ित] बहुत अधिक कष्ट देना।
प्रफुल्ल-वि० १. खिला हुआ। विकसित। २. जिसमें फूल लगे हों। ३. खुला हुआ। ४. प्रसन्न। आनंदित।
प्रबंध-संज्ञा पुं० १. बाँधने की डोरी आदि। २. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य। निबंध। ३. आयोजन। उपाय। ४. व्यवस्था। बंदोबस्त। इंतजाम।
प्रबल-वि० [स्त्री० प्रबला] बलवान्। प्रचंड।
प्रबला-संज्ञा स्त्री० बहुत बलवती।
प्रबुद्ध-वि० १. जागा हुआ। २. होश में आया हुआ। ३. पंडित। ज्ञानी।
प्रबोध-संज्ञा पुं० [वि० प्रबोधक] १. जागना। नींद का टूटना। २. यथार्थ ज्ञान। ३. ढारस। तसल्ली। ४. चेतावनी।
प्रबोधन-संज्ञा पुं० १. जागरण। जागना। २. जगाना। नींद से उठाना। ३. यथार्थ ज्ञान। बोध। चेत। ४. जताना। ज्ञान देना। ५. सांत्वना।
प्रबोधना◌-क्रि० स० १. जगाना। नींद से उठाना। २. सचेत करना। होशियार करना। ३. समझाना-बुझाना। ४. पट्टी पढ़ाना। ५. ढारस देना।
प्रबोधिनी-संज्ञा स्त्री० देवोत्थान या कार्त्तिक शुक्ला एकादशी।
प्रभंजन-संज्ञा पुं० प्रचंड वायु। आँधी।
प्रभव-संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति-कारण। २. जन्म। उत्पत्ति। ३. सृष्टि। संसार।
प्रभा-संज्ञा स्त्री० प्रकाश। चमक
प्रभाकर-संज्ञा पुं० सूर्य।

फजर–संज्ञा स्त्री० सबेरा।
फज़ल–संज्ञा पुं० अनुग्रह। कृपा।
फ़ज़ीहत–संज्ञा स्त्री० दुर्दशा। दुर्गति।
फ़ज़ूल–वि० जो किसी काम का न हो। व्यर्थ। निरर्थक।
फटक–संज्ञा पुं० बिल्लौर।
फटका–संज्ञा पुं० रुई धुनने की धुनकी।
संज्ञा पुं० दे० "फाटक"।
फटकाना–क्रि० स० १. अलग करना। फकना। २. फटकने का काम दूसरे से कराना।
फटकार–संज्ञा स्त्री० फटकारने की क्रिया या भाव। झिड़की। दुतकार।
फटकारना–क्रि० स० १. बहुत सी चीज़ों को एक साथ झटका मारना जिसमें वे छितरा जायँ। २. लेना। लाभ उठाना। ३. अच्छी तरह पटक पटककर धोना। ४. झटका देकर दूर फेंकना। ५. खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना।
फटना–क्रि० अ० किसी पोली चीज़ में इस प्रकार दरार पड़ जाना जिसमें भीतर की चीजें बाहर निकल पड़ें अथवा दिखाई देने लगें।
फटफटाना–क्रि० स० १. व्यर्थ बकवाद करना। २. फटफट शब्द करना। ३. हाथ-पैर मारना। ४. इधर-उधर टक्कर मारना।
क्रि० अ० फट फट शब्द होना।
फटा–संज्ञा पुं० छिद्र। छेद।
फटिक–संज्ञा पुं० १. बिल्लौर। स्फटिक। २. मरमर पत्थर। संगमरमर।
फड़–संज्ञा पुं० १. जिस पर जुआरी बाज़ी लगाते हैं। २. जूआखाना। जूए का अड्डा। ३. वह स्थान जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरीदता या बेचता हो।
संज्ञा पुं० वह गाड़ी जिस पर तोप चढ़ाई जाती है। चरख।
फड़क, फड़कन–संज्ञा स्त्री० फड़कने की क्रिया या भाव।
फड़कना–क्रि० अ० बार बार नीचे ऊपर या इधर-उधर हिलना। फड़फड़ाना। उछलना।
फड़काना–क्रि० स० १. पंख हिलाना। २. फड़कने में प्रवृत्त करना।
फड़नवीस–संज्ञा पुं० मराठों के राजत्व-काल का एक राज-पद।
फड़फड़ाना–क्रि स०, अ० दे० "फटफटाना"।
फड़बाज़–संज्ञा पुं० वह जो लोगों को अपने यहाँ जूआ खेलाता हो।
फण–संज्ञा पुं० साँप का फन।
फणधर–संज्ञा पुं० साँप।
फणिक–संज्ञा पुं० साँप। नाग।
फणिपति–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।
फणिमुक्ता–संज्ञा स्त्री० साँप की मणि।
फणींद्र–संज्ञा पुं० १. शेष। २. वासुकि। ३. बड़ा साँप।
फणी–संज्ञा पुं० साँप।
फणीश–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।
फतवा–संज्ञा पुं० मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी आदि किसी कर्म के अनुकूल या प्रतिकूल होने के विषय में देते हैं।
फतह–संज्ञा स्त्री० १. विजय। जीत। २. सफलता। कृतकार्यता।
फतिंगा–संज्ञा पुं० १. किसी प्रकार

प्रभात–संज्ञा पुं० सबेरा। तड़का।
प्रभाती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है।
प्रभाव–संज्ञा पुं० १. उद्भव। प्रादुर्भाव। २. असर। साख या दबाव।
प्रभावती–संज्ञा स्त्री० सूर्य्य की पत्नी। वि० स्त्री० प्रभाववाली।
प्रभास–संज्ञा पुं० १. दीप्ति। ज्योति। २. एक प्राचीन तीर्थ। सोमतीर्थ।
प्रभु–संज्ञा पुं० १. अधिपति। २. स्वामी। ३. ईश्वर। भगवान्।
प्रभुता–संज्ञा स्त्री० १. बड़ाई। महत्त्व। २. वैभव। ३. साहिबी। मालिकपन।
प्रभू–संज्ञा पुं० दे० "प्रभु"।
प्रभूत–वि० १. निकला हुआ। २. प्रचुर। बहुत।
संज्ञा पुं० पंचभूत। तत्त्व।
प्रभृति–अव्य० इत्यादि। वग़ैरह।
प्रभेद–संज्ञा पुं० भेद। विभिन्नता।
प्रमत्त–वि० १. मस्त। नशे में चूर। २. पागल।
प्रमथ–संज्ञा पुं० १. मथन या पीड़ित करनेवाला। २. शिव के एक प्रकार के गण या पारिषद।
प्रमथन–संज्ञा पुं० १. मथना। २. दुःख पहुँचाना। ३. वध या नाश करना।
प्रमद–संज्ञा पुं० मतवालापन।
वि० मत्त।
प्रमदा–संज्ञा स्त्री० युवती स्त्री।
प्रमाण–संज्ञा पुं० १. वह बात जिससे कोई दूसरी बात सिद्ध हो। सबूत। २. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का कथन होता है। ३. मानने की बात। ४. इयत्ता। हद।
प्रमाणकोटि–संज्ञा स्त्री० प्रमाण मानी जानेवाली बातों या वस्तुओं का घेरा।
प्रमाणपत्र–संज्ञा पुं० वह काग़ज़ जिस पर का लेख किसी बात का प्रमाण हो। सर्टिफ़िकेट।
प्रमाणित–वि० प्रमाण द्वारा सिद्ध। साबित।
प्रमाद–संज्ञा पुं० १. भ्रम। भ्रांति। २. अंतःकरण की दुर्बलता।
प्रमादी–वि० प्रमादयुक्त। भूल-चूक करनेवाला।
प्रमित–वि० १.परिमित। २.निश्चित। ३. अल्प। थोड़ा।
प्रमीला–संज्ञा स्त्री० १. तंद्रा। २. थकावट। शैथिल्य।
प्रमुख–वि० १. प्रथम। पहला। २. प्रधान। श्रेष्ठ।
प्रमुदित–वि० हर्षित। प्रसन्न।
प्रमेय–वि० १. जो प्रमाण का विषय हो सके। २. जिसका मान बताया जा सके। ३. जिसका निर्धारण कर सकें।
संज्ञा पुं० वह जिसका बोध प्रमाण द्वारा करा सकें।
प्रमेह–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें मूत्र-मार्ग से शुक्र तथा शरीर की और धातुएँ निकला करती हैं।
प्रमोद–संज्ञा पुं० हर्ष। आनंद।
प्रमोदा–संज्ञा स्त्री० सांख्य में आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक।
प्रयत्न–संज्ञा पु० किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये की जानेवाली क्रिया। प्रयास। चेष्टा। कोशिश।

का उड़नेवाला कीड़ा। २. पतिंगा। पतंग।
फतूही–संज्ञा स्त्री० बिना आस्तीन की एक प्रकार की पहनने की कुरती। सदरी।
फतेः†–संज्ञा स्त्री० दे० "फ़तह"।
फतेह–संज्ञा स्त्री० विजय। जीत।
फदकना–क्रि० अ० १. फद फद शब्द करना। २. दे० "फुदकना"।
फन–संज्ञा पुं० साँप का सिर उस समय जब वह उसे फैलाकर छत्र के आकार का बना लेता है। फण।
फ़न–संज्ञा पुं० १. गुण। खूबी। २. विद्या। ३. दस्तकारी। ४. छलने का ढंग।
फनकार–संज्ञा स्त्री० साँप के फूँकने या बैल आदि के साँस लेने से उत्पन्न फन फन शब्द।
फनगा†–संज्ञा पुं० दे० "फतिंगा"।
फ़ना–संज्ञा स्त्री० नाश। बरबादी।
फनिंदः†–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।
फनिः–संज्ञा पुं० दे० १. "फणी"। २. दे० "फण"।
फनिराज–संज्ञा पुं० दे० "फणींद्र"।
फनीः–संज्ञा पुं० दे० "फणी"।
फनूसः–संज्ञा पुं० दे० "फ़ानूस"।
फन्नी–संज्ञा स्त्री० लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली चीज़ की जड़ में उसे कसने के लिये ठोंका जाता है। पच्चर।
फफूँदीः–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों की साड़ी का बंधन। नीवी।
फफोला–संज्ञा पुं० चमड़े पर का पोला उभार जिसके भीतर पानी भरा रहता है। छाला। झलका।
फबती–संज्ञा स्त्री० हँसी की बात जो किसी पर घटती हो। व्यंग्य। चुटकी।
फबन–संज्ञा स्त्री० फबने का भाव। शोभा। छवि। सुंदरता।
फबना–क्रि० अ० सुंदर या भला जान पड़ना। खिलना। सोहना।
फबीला–वि० जो फबता हो। शोभा देनेवाला। सुंदर।
फ़रक़–संज्ञा पुं० १. पार्थक्य। अलगाव। २. बीच का अंतर। दूरी।
फरकन–संज्ञा स्त्री० दे० "फड़क"।
फरकाना–क्रि० स० फरकने का सकर्मक रूप। हिलाना। संचालित करना।
फरचा†–वि० १. जो जूठा न हो। शुद्ध। पवित्र। २. साफ़-सुथरा।
फ़रज़ी–संज्ञा पुं० शतरंज का एक मोहरा जिसे रानी या वज़ीर भी कहते हैं।
वि० नकली। बनावटी। कल्पित।
फ़रद–संज्ञा स्त्री० १. लेखा या वस्तुओं की सूची आदि जो स्मरणार्थ किसी कागज़ पर अलग लिखी गई हो। २. पल्ला। ३. रज़ाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला।
वि० अनुपम। बेजोड़।
फरफंद–संज्ञा पुं० १. दाँव-पेच। छल कपट। माया। २. नख़रा। चोचला।
फरफर–संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के उड़ने या फड़कने से उत्पन्न शब्द।
फरफराना–क्रि० स०,अ० दे० "फड़फड़ाना"।
फ़रमा–संज्ञा पुं० १. लकड़ी आदि का ढाँचा या साँचा जिस पर रखकर चमार जूता बनाते हैं। काग़-

प्रयाग–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-यमुना के संगम पर है। इलाहाबाद।
प्रयागवाल–संज्ञा पुं० प्रयाग तीर्थ का पंडा।
प्रयाण–संज्ञा पुं० गमन। प्रस्थान। यात्रा।
प्रयास–संज्ञा पुं० १. प्रयत्न। उद्योग। २. श्रम। मेहनत।
प्रयुक्त–वि० अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित।
प्रयुत–संज्ञा पुं० दस लाख की संख्या।
प्रयोग–संज्ञा पुं० १. इस्तेमाल। बरता जाना। २. क्रिया का साधन। विधान। ३. मारण, मोहन आदि तांत्रिक उपचार या साधन जो बारह कहे जाते हैं। ४. अभिनय। नाटक का खेल। ५. यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। ६. दृष्टांत। निदर्शन।
प्रयोगी, प्रयोजक–संज्ञा पुं० १. प्रयोगकर्ता। अनुष्ठान करनेवाला। प्रेरक। २. प्रदर्शक।
प्रयोजन–संज्ञा पुं० १. कार्य्य। काम। अर्थ। २. उद्देश्य। अभिप्राय। मतलब। आशय। ३. उपयोग। व्यवहार।
प्रयोजनीय–वि० काम का। मतलब का।
प्ररोचना–संज्ञा स्त्री० चाह या रुचि उत्पन्न करना।
प्ररोहण–संज्ञा पुं० आरोह। चढ़ाव।
प्रलंब–वि० लंबा।
प्रलंबन–संज्ञा पुं० अवलंबन। सहारा।
प्रलंबी–वि० १. दूर तक लटकनेवाला। २. सहारा लेनेवाला।
प्रलयंकर–वि० प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।
प्रलय–संज्ञा पुं० लय को प्राप्त होना। न रह जाना।
प्रलाप–संज्ञा पुं० व्यर्थ की बकवाद। पागलों की सी बड़बड़।
प्रलेप–संज्ञा पुं० अंग पर कोई गीली दवा छोपना या रखना। लेप।
प्रलेपन–संज्ञा पुं० लेप करने की क्रिया।
प्रलोभ, प्रलोभन–संज्ञा पुं० लोभ दिखाना। लालच दिखाना।
प्रवंचना–संज्ञा स्त्री० छल। ठगपना। धूर्तता।
प्रवचन–संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह समझाकर कहना। २. व्याख्या।
प्रवण–संज्ञा पुं० क्रमशः नीची होती हुई भूमि। ढाल।
वि० ढालुवाँ। जो क्रमशः नीचा होता गया हो।
प्रवर–वि० श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य।
संज्ञा पुं० १. किसी गोत्र के अंतर्गत विशेष विशेष प्रवर्त्तक मुनि। २. संतति।
प्रवर्त–संज्ञा पुं० कार्य्यारंभ।
प्रवर्त्तक–संज्ञा पुं० १. किसी काम को चलानेवाला। संचालक। २. ईजाद करनेवाला। ३. नाटक में प्रस्तावना का वह भेद जिसमें सूत्रधार वर्त्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी का संबंध लिए पात्र का प्रवेश हो।
प्रवर्त्तन–संज्ञा पुं० १. कार्य्य आरंभ

सूत। २. वह साँचा जिसमें कोई चीज़ ढाली जाय।
संज्ञा पुं० कागज़ का पूरा तख्ता जो एक बार प्रेस में छापा जाता है।

फ़रमान-संज्ञा पुं० राजकीय आज्ञा-पत्र। अनुशासनपत्र।

फ़रमाना-क्रि० स० आज्ञा देना। कहना। (आदर-सूचक)

फरवी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का भूना हुआ चावल। मुरमुरा। लाई।

फ़रश-संज्ञा पुं० १. बिछावन। २. पक्की बनी हुई ज़मीन। गच।

फ़रशी-संज्ञा स्त्री० १. गुड़गुड़ी। २. हुक़ा।

फरसा-संज्ञा पुं० १. पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी। २. फावड़ा।

फरहद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग निकलता है।

फरहरा-संज्ञा पुं० पताका। झंडा।

फराक-संज्ञा पुं० मैदान।
वि० लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

फराकत-वि० लंबा-चौड़ा और समतल। विस्तृत।
वि० संज्ञा पुं० दे० "फ़राग़त"।

फ़राग़त-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। छुट्टी। मुक्ति। २. निश्चिंतता। बेफ़िक्री। ३. मल-त्याग। पाखाना फिरना।

फ़रामोश-वि० भूला हुआ। विस्मृत।

फ़रार-वि० भागा हुआ।

फरासीस-संज्ञा पुं० १. फ्रांस देश। २. फ्रांस का रहनेवाला। ३. एक प्रकार की लाल छींट।

फरासीसी-वि० १. फ्रांस का रहनेवाला। २. फ्रांस का।

फरिया-संज्ञा स्त्री० वह लहँगा जो सामने की ओर सिला नहीं रहता।

फ़रियाद-संज्ञा स्त्री० १. दुःख से बचाए जाने के लिये पुकार। शिकायत। नालिश। २. विनती। प्रार्थना।

फरियाना-क्रि० स० १. छाँटकर अलग करना। २. साफ़ करना। ३. निपटाना। तै करना।

फ़रिश्ता-संज्ञा पुं० १. ईश्वर का वह दूत जो उसकी आज्ञा के अनुसार कोई काम करता है। (मुसल०) २. देवता।

फरी-संज्ञा स्त्री० चमड़े की गोल छोटी ढाल जिससे गतके की मार रोकते हैं।

फरुही-संज्ञा स्त्री० छोटा फावड़ा।
संज्ञा स्त्री० दे० "फरवी"।

फरेंदा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की बढ़िया जामुन।

फ़रेब-संज्ञा पुं० छल। कपट।

फ़रेबी-संज्ञा पुं० कपटी।

फरेरी-संज्ञा स्त्री० जंगल के फल। जंगली मेवा।

फ़र्क़-संज्ञा पुं० दे० "फ़रक़"।

फ़र्ज़-संज्ञा पुं० १. कर्तव्य कर्म। २. कल्पना। मान लेना।

फ़र्ज़ी-वि० १. कल्पित। माना हुआ। २. नाम मात्र का। सत्ता-हीन।
संज्ञा पुं० दे० "फ़रज़ी"।

फ़र्द-संज्ञा स्त्री० १. कागज़ या कपड़े आदि का अलग टुकड़ा। २. रज़ाई,

करना। २. काम को चलाना। ३. प्रचार करना। जारी करना।
प्रवर्षण–संज्ञा पुं० १. वर्षा। बारिश। २. किष्किंधा के समीप का एक पर्वत।
प्रवाद–संज्ञा पुं० १. बातचीत। २. अफ़वाह। ३. झूठी बदनामी। अपवाद।
प्रवाल–संज्ञा पुं० मूँगा। विद्रुम।
प्रवास–संज्ञा पुं० १. अपना देश छोड़कर दूसरे देश में रहना। २. विदेश।
प्रवासी–वि० परदेश में रहनेवाला। परदेशी।
प्रवाह–संज्ञा पुं० १. जल का स्रोत। बहाव। २. बहता हुआ पानी। धारा। ३. काम का जारी रहना। ४. चलता हुआ क्रम।
प्रवाहित–वि० बहता हुआ।
प्रवाही–वि० १. बहानेवाला। २. बहनेवाला। ३. तरल। द्रव।
प्रविष्ट–वि० घुसा हुआ।
प्रविसना–क्रि० अ० घुसना।
प्रवीण–वि० निपुण। कुशल। दक्ष। चतुर। होशियार।
प्रवीर–वि० भारी योद्धा। बहादुर।
प्रवृत्त–वि० १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २. तत्पर। उद्यत। तैयार।
प्रवृत्ति–संज्ञा स्त्री० १. मन का लगाव। लगन। २. न्याय में एक यत्न विशेष। ३. निवृत्ति का उलटा।
प्रवेश–संज्ञा पुं० १. भीतर जाना। घुसना। पैठना। २. गति। पहुँच।
प्रवेशिका–संज्ञा स्त्री० वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने पाएँ।
प्रव्रज्या–संज्ञा स्त्री० संन्यास।
प्रशंसक–वि० १. प्रशंसा करनेवाला। २. खुशामदी।
प्रशंसन–संज्ञा पुं० गुण-कीर्त्तन। स्तुति करना। तारीफ़ करना।
प्रशंसनीय–वि० प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।
प्रशंसा–संज्ञा स्त्री० गुण-वर्णन। स्तुति। बड़ाई। तारीफ़।
प्रशमन–संज्ञा पुं० १. शमन। शांति। २. ध्वंस करना। ३. वध।
प्रशस्त–वि० १. प्रशंसनीय। सुंदर। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. भव्य।
प्रशस्ति–संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा। स्तुति। २. राजा की ओर से एक प्रकार के आज्ञापत्र।
प्रशांत–वि० चंचलता-रहित। स्थिर।
संज्ञा पुं० एक महासागर जो एशिया और अमरीका के बीच में है।
प्रशाखा–संज्ञा स्त्री० शाखा की शाखा। टहनी। पतली शाखा।
प्रश्न–संज्ञा पुं० १. पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल। २. पूछने की बात।
प्रश्नोत्तर–संज्ञा पुं० सवाल-जवाब।
प्रश्रय–संज्ञा पुं० १. आश्रयस्थान। २. टेक। सहारा। आधार।
प्रश्वास–संज्ञा पुं० वह वायु जो नथने से बाहर निकलती है।
प्रष्टव्य–वि० पूछने योग्य।
प्रसंग–संज्ञा पुं० १. संबंध। लगाव। २. विषय का लगाव। ३. स्त्री-पुरुष का संयोग। ४. अवसर। मौक़ा।

शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता है। चद्दर। पल्ला।

फर्राटा–संज्ञा पुं० १. वेग। तेज़ी। त्वरता।

फ़र्श–संज्ञा पुं० १. बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फ़रश"।

फल–संज्ञा पुं० १. वनस्पति में होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूलों के आने के बाद उत्पन्न होता है। २. प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ३. बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज़ अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ४. हल की फाल।

फ़लक–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. स्वर्ग।

फलका–संज्ञा पुं० फफोला। छाला। झलका।

फलतः–अव्य० फल-स्वरूप। परिणामतः। इसलिये।

फलदान–संज्ञा पुं० हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति।

फलदार–वि० १. जिसमें फल लगे हों। २. जिसमें फल लगें।

फलना–क्रि० अ० १. फल से युक्त होना। २. लाभदायक होना।

फलहरी–संज्ञा स्त्री० १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २. फल।

फलहार–संज्ञा पुं० दे० "फलाहार"।

फलहारी–वि० जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, बल्कि फलों से बना हो।

फ़लाँ–वि० अमुक। फलाना।

फ़लाँग–संज्ञा स्त्री० १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

फलाँगना–क्रि० अ० एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना।

फलागम–संज्ञा पुं० १. फल लगने की ऋतु या मौसिम। २. शरद् ऋतु।

फ़लाना–संज्ञा पुं० अमुक। कोई अनिश्चित।

फ़लालीन, फ़लालेन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

फलाहार–संज्ञा पुं० केवल फल खाना। फल-भोजन।

फलाहारी–संज्ञा पुं० जो फल खाकर निर्वाह करता हो।

फलित–वि० १. फला हुआ। २. संपन्न। पूर्ण।

फली–संज्ञा स्त्री० छोटे पौधों में लगनेवाले लंबे और चिपटे फल जिनमें छोटे छोटे बीज होते हैं।

फलीभूत–वि० फलदायक। जिसका फल या परिणाम निकले।

फ़सल–संज्ञा स्त्री० १. ऋतु। मौसम। २. समय। काल। ३. सस्य। खेत की उपज। अन्न।

फ़सली–वि० ऋतु का।
संज्ञा पुं० १. अकबर का चलाया हुआ एक संवत्। इसका प्रचार उत्तर भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है। २. हैज़ा।

फहरान–संज्ञा स्त्री० फहराने का भाव या क्रिया।

फहराना–क्रि० स० कोई चीज़ इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवा में हिले और उड़े। उड़ाना।

क्रि० अ० हवा में रह रहकर हिलना या उड़ना। फहरना।

फाँक-संज्ञा स्त्री० १. किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। २. खंड। टुकड़ा।

फाँकना-क्रि० स० दाने या बुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना।

फाँड़ा-संज्ञा पुं० दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

फाँद-संज्ञा स्त्री० उछलने या फाँदने का भाव। उछाल।

संज्ञा पुं० फंदा। पाश।

फाँदना-क्रि० अ० एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना। उछलना।

क्रि० स० कूदकर लाँघना।

फाँस-संज्ञा स्त्री० १. पाश। बंधन। फंदा। २ वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशु-पक्षी फँसाते हैं।

संज्ञा स्त्री० बाँस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में चुभ जाता है।

फाँसना-क्रि० स० १. पाश में बाँधना। जाल में फँसाना। २. धोखा देकर अपने अधिकार में करना।

फाँसी-संज्ञा स्त्री० वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है।

फ़ाक़ा- संज्ञा पुं० उपवास।

फ़ाक़ामस्त, फ़ाक़ेमस्त-वि० जो खाने-पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो।

फ़ाख़्ता-संज्ञा स्त्री० पंडुक।

फाग-संज्ञा पुं० १. फागुन में होने-वाला उत्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं। २. वह गीत जो फाग के उत्सव में गाया जाता है।

फागुन-संज्ञा पुं० माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

फ़ाज़िल-वि० १. आवश्यकता से अधिक। २. विद्वान्।

फाटक-संज्ञा पुं० बड़ा द्वार। बड़ा दरवाज़ा।

फाड़न-संज्ञा स्त्री० कागज़,कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले।

फाड़ना-क्रि० स० १. चीरना। विदीर्ण करना। २. टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। ३. संधि या जोड़ फैलाकर खोलना। ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायँ।

फ़ातिहा-संज्ञा पुं० १. प्रार्थना। २. वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय। (मुसल०)

फ़ानूस-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बड़ी कंदील। २. एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

फ़ायदा-संज्ञा पुं० लाभ। नफ़ा।

फ़ायदेमंद-वि० लाभदायक।

फ़ारख़ती-संज्ञा स्त्री० वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के ज़िम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया। चुकती। बेबाक़ी।

फ़ारस- संज्ञा पुं० दे० "पारस"।

फ़ारसी-संज्ञा स्त्री० फ़ारस देश की भाषा।

फ़ौलाद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कड़ा और अच्छा लोहा।

फ्रांसीसी–वि० १. फ्रांस देश का। २. फ्रांस देशवासी।

ब

ब–हिंदी का तेईसवाँ व्यंजन। यह ओष्ठ्य वर्ण है।

बंक–वि० १. टेढ़ा। २. पुरुषार्थी। ३. दुर्गम। जिस तक पहुँच न हो सके।
संज्ञा पुं० वह संस्था जो लोगों का रुपया अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

बंका†–वि० १. टेढ़ा। २. बाँका। ३. पराक्रमी।

बँगला–वि० बंगाल देश का। बंगाल-संबंधी।
संज्ञा पुं० १. वह चारों ओर से खुला हुआ एक मंज़िल का मकान जिसके चारों ओर बरामदे हों। २. बंगाल-देश का पान।
संज्ञा स्त्री० बंगाल देश की भाषा।

बंगाली–संज्ञा पुं० बंगाल देश का निवासी।

बंचक–संज्ञा पुं० धूर्त। ठग।

बंचकता, बंचकताई*†–संज्ञा स्त्री० छल। धूर्तता। चालबाज़ी।

बंचना–संज्ञा स्त्री० ठगी।
*क्रि० स० ठगना। छलना।

बँचवाना–क्रि० स० पढ़वाना।

बंछना*†–क्रि० स० अभिलाषा करना। इच्छा करना। चाहना।

बंछित*†–वि० दे० "वांछित"।

बंजर–संज्ञा पुं० ऊसर।

बंजारा–संज्ञा पुं० दे० "बनजारा"।

बंझा–वि०, संज्ञा स्त्री० दे० "बाँझ"।

बँटना–क्रि० अ० १ विभाग होना। २. अलग अलग हिस्सा होना।

बँटवाना–क्रि० स० बाँटने का काम दूसरे से कराना।

बँटवारा–संज्ञा पुं० बाँटने की क्रिया। विभाग। तक़सीम।

बँटाई–संज्ञा स्त्री० १. बाँटने का काम या भाव। २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फ़सल का कुछ अंश मिलता है।

बँटाना–क्रि० स० १. बँटवाना। २. दूसरे का बोझ हलका करने के लिये शामिल होना।

बंडा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कच्चू या अरुई।

बंडी–संज्ञा स्त्री० १. फतुही। कुरती। २. बगलबंदी।

बंद–संज्ञा पुं० १. वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय। २. पुश्ता। ३. शरीर के अंगों का कोई जोड़। ४. तनी। ५. बंधन। कैद।
वि० १. जो खुला न हो। २. जिसका कार्य रुका हुआ या स्थगित हो। ३. जो किसी तरह की कैद में हो।

बंदगी–संज्ञा स्त्री० १. भक्तिपूर्वक ईश्वर

शाल आदि का ऊपरी पल्ला जो अलग बनता है। चद्दर। पल्ला।

फर्राटा–संज्ञा पुं० १. वेग। तेज़ी। क्षिप्रता।

फर्श–संज्ञा पुं० १. बिछावन। बिछाने का कपड़ा। २. दे० "फ़रश"।

फल–संज्ञा पुं० १. वनस्पति में होनेवाला वह बीज या गूदे से परिपूर्ण बीज-कोश जो किसी विशिष्ट ऋतु में फूलों के आने के बाद उत्पन्न होता है। २. प्रयत्न या क्रिया का परिणाम। नतीजा। ३. बाण, भाले, छुरी आदि का वह तेज़ अगला भाग जिससे आघात किया जाता है। ४. हल की फाल।

फलक–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. स्वर्ग।

फलका–संज्ञा पुं० फफोला। छाला। फलका।

फलतः–अव्य० फल-स्वरूप। परिणामतः। इसलिये।

फलदान–संज्ञा पुं० हिंदुओं में विवाह पक्का करने की एक रीति।

फलदार–वि० १. जिसमें फल लगे हों। २. जिसमें फल लगें।

फलना–क्रि० अ० १. फल से युक्त होना। २. लाभदायक होना।

फलहरी–संज्ञा स्त्री० १. वन के वृक्षों के फल। मेवा। वनफल। २. फल।

फलहार–संज्ञा पुं० दे० "फलाहार"।

फलहारी–वि० जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो, बल्कि फलों से बना हो।

फलाँ–वि० अमुक। फलाना।

फलाँग–संज्ञा स्त्री० १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कुदान। चौकड़ी। २. वह दूरी जो फलाँग से तै की जाय।

फलाँगना–क्रि० अ० एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। कूदना। फाँदना।

फलागम–संज्ञा पुं० १. फल लगने की ऋतु या मौसिम। २. शरद् ऋतु।

फलाना–संज्ञा पु० अमुक। कोई अनिश्चित।

फलालीन, फलालेन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

फलाहार–संज्ञा पुं० केवल फल खाना। फल-भोजन।

फलाहारी–संज्ञा पुं० जो फल खाकर निर्वाह करता हो।

फलित–वि० १. फला हुआ। २. संपन्न। पूर्ण।

फली–संज्ञा स्त्री० छोटे पौधों में लगनेवाले लंबे और चिपटे फल जिनमें छोटे छोटे बीज होते हैं।

फलीभूत–वि० फलदायक। जिसका फल या परिणाम निकले।

फसल–संज्ञा स्त्री० १. ऋतु। मौसम। २. समय। काल। ३. सस्य। खेत की उपज। अन्न।

फसली–वि० ऋतु का।
संज्ञा पुं० १. अकबर का चलाया हुआ एक संवत्। इसका प्रचार उत्तर भारत में खेती-बारी आदि के कामों में होता है। २. हैज़ा।

फहरान–संज्ञा स्त्री० फहराने का भाव या क्रिया।

फहराना–क्रि० स० कोई चीज़ इस प्रकार खुली छोड़ देना जिसमें वह हवा में हिले और उड़े। उड़ाना।

की वंदना। २. सेवा। ३. प्रणाम। सलाम।
बंदगोभी–संज्ञा स्त्री० करमकला। पातगोभी।
बंदन–संज्ञा पुं० दे० "वंदन"।
संज्ञा पुं० १. रोचन। रोली। २. ईंगुर। सेंदुर।
बंदनता–संज्ञा स्त्री० वंदनीयता। आदर या वंदना किए जाने की योग्यता।
बंदनवार–संज्ञा पुं० फूलों या पत्तों की झालर जो मंगल सूचनार्थ दीवारों आदि में बाँधी जाती है। तोरण।
बंदना–संज्ञा स्त्री० दे० "वंदना"।
क्रि० स० प्रणाम करना।
बंदर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया। कपि। मर्कट।
बंदरगाह–संज्ञा पुं० समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज़ ठहरते हैं।
बंदसाल†–संज्ञा पुं० कैदखाना। जेल।
बंदा–संज्ञा पुं० सेवक। दास।
संज्ञा पुं० बंदी। कैदी।
बंदाप–वि० १. वंदनीय। २. पूजनीय। आदरणीय।
बंदिश–संज्ञा स्त्री० १. बाँधने की क्रिया या भाव। २. प्रबंध। रचना। योजना।
बंदी–संज्ञा पुं० एक जाति जो राजाओं का कीर्तिगान करती थी। भाट। चारण।
संज्ञा पुं० कैदी।
बंदीखाना–संज्ञा पुं० कैदखाना।
बंदीछोर०†–संज्ञा पुं० कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।
बंदीवान०–संज्ञा पुं० कैदी।
बंदूक–संज्ञा स्त्री० नली के रूप का एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोली रखकर बारूद की सहायता से चलाई जाती है।
बंदूकची–संज्ञा पुं० बंदूक चलानेवाला सिपाही।
बँदेरा०–संज्ञा पुं० १. बंदी। कैदी। २. सेवक। दास।
बंदोबस्त–संज्ञा पुं० १. प्रबंध। इंतज़ाम। २. सपुर्द खेतों आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम।
बंध–संज्ञा पुं० १. बंधन। २. गाँठ। गिरह। ३. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ४. कोकशास्त्र के अनुसार रति का आसन। ५. योगशास्त्र के अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा। ६. निबंध-रचना। गद्य या पद्य लेख तैयार करना। ७. चित्रकाव्य में छंद की ऐसी रचना जिससे किसी विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय।
बंधक–संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जो लिए हुए ऋण के बदले में धनी के यहाँ रख दी जाय। रेहन। २. बाँधनेवाला।
संज्ञा पुं० स्त्री-संभोग का कोई आसन। बंध।
बंधन–संज्ञा पुं० १. बाँधने की क्रिया। २. वह जिससे कोई चीज़ बाँधी जाय। ३. वह जो किसी की स्वतंत्रता आदि में बाधक हो। प्रतिबंध। ४. रस्सी।
बँधना–क्रि० अ० १ बंधन में आना। बद्ध होना। २. कैद होना। ३. प्रतिबंध में रहना। ४. प्रतिज्ञा या

क्रि० अ० हवा में रह-रहकर हिलना या उड़ना। फहरना।

फांक-संज्ञा स्त्री० १. किसी गोल या पिंडाकार वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा। २. खंड। टुकड़ा।

फांकना-क्रि० स० दाने या बुकनी के रूप की वस्तु को दूर से मुँह में डालना।

फांड़ा-संज्ञा पुं० दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।

फांद-संज्ञा स्त्री० उछलने या फांदने का भाव। उछाल।
संज्ञा पुं० फंदा। पाश।

फांदना-क्रि० अ० एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूदना। उछलना।
क्रि० स० कूदकर लांघना।

फांस-संज्ञा स्त्री० १. पाश। बंधन। फंदा। २ वह फंदा जिसमें शिकारी लोग पशु-पक्षी फांसते हैं।
संज्ञा स्त्री० बांस, सूखी लकड़ी आदि का कड़ा तंतु जो शरीर में चुभ जाता है।

फांसना-क्रि० स० १. पाश में बांधना। जाल में फँसाना। २. धोखा देकर अपने अधिकार में करना।

फांसी-संज्ञा स्त्री० वह रस्सी का फंदा जिसमें गला फँसने से घुट जाता है और फँसनेवाला मर जाता है।

फ़ाक़ा- संज्ञा पुं० उपवास।

फ़ाक़ामस्त, फ़ाक़ेमस्त-वि० जो खाने-पीने का कष्ट उठाकर भी कुछ चिंता न करता हो।

फ़ाख़्ता-संज्ञा स्त्री० पंडुक।

फाग-संज्ञा पुं० १. फागुन में होनेवाला उत्सव जिसमें एक दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं। २. वह गीत जो फाग के उत्सव में गाया जाता है।

फागुन-संज्ञा पुं० माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

फ़ाज़िल-वि० १. आवश्यकता से अधिक। २. विद्वान्।

फाटक-संज्ञा पुं० बड़ा द्वार। बड़ा दरवाज़ा।

फाड़न-संज्ञा स्त्री० कागज़,कपड़े आदि का टुकड़ा जो फाड़ने से निकले।

फाड़ना-क्रि० स० १. चीरना। विदीर्ण करना। २. टुकड़े करना। धज्जियाँ उड़ाना। ३. संधि या जोड़ फैलाकर खोलना। ४. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार करना कि पानी और सार पदार्थ अलग अलग हो जायँ।

फ़ातिहा-संज्ञा पुं० १. प्रार्थना। २. वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय। (मुसल०)

फ़ानूस-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बड़ी कंदील। २. एक दंड में लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें बत्तियाँ जलाई जाती हैं।

फ़ायदा-संज्ञा पुं० लाभ। नफ़ा।

फ़ायदेमंद-वि० लाभदायक।

फ़ारख़ती-संज्ञा स्त्री० वह लेख जो इस बात का सबूत हो कि किसी के ज़िम्मे जो कुछ था, वह अदा हो गया। चुकती। बेबाक़ी।

फ़ारस- संज्ञा पुं० दे० "पारस"।

फ़ारसी-संज्ञा स्त्री० फ़ारस देश की भाषा।

बचन आदि से बद्ध होना। ४. प्रेम-पाश में बद्ध या मुग्ध होना।
संज्ञा पुं० वह वस्तु जिससे किसी चीज़ को बाँधें।

बँधनि†-संज्ञा स्त्री० १. बंधन। जिसमें कोई चीज़ बँधी हुई हो। २. उल-झाने या फँसानेवाली चीज़।

बँधवाना-क्रि० स० बाँधने का काम दूसरे से कराना।

बंधान-संज्ञा पुं० १. लेन-देन या व्यवहार आदि की नियत परिपाटी। २. पानी रोकने का धुस्स। बाँध। ३. ताल का सम। (संगीत)

बँधाना-क्रि० स० १. धारण कराना। २. दे० "बँधवाना"।

बंधु-संज्ञा पुं० १. भाई। २. सहायक। ३. मित्र। ४. एक वर्णवृत्त। ५. बँधूक पुष्प।

बँधुआ-संज्ञा पुं० कैदी। बंदी।

बंधुक-संज्ञा पुं० दुपहरिया का फूल।

बंधुता-संज्ञा स्त्री० दे० "बंधुत्व"।

बंधुत्व-संज्ञा पुं० १. बंधु होने का भाव। बंधुता। २. भाई-चारा। ३. मित्रता।

बंधूक-संज्ञा पुं० दे० "बंधुक"।

बंधेज-संज्ञा पुं० १. नियत समय पर दिया जानेवाला पदार्थ या द्रव्य। २. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। ३. रुकावट। प्रतिबंध।

बंध्या-वि० स्त्री० (वह स्त्री) जो संतान न पैदा कर सके। बाँझ।

बंध्यापन-संज्ञा पुं० दे० "बाँझपन"।

बंध्यापुत्र-संज्ञा पुं० ठीक वैसा ही असंभव भाव या पदार्थ जैसे बंध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज़।

बंपुलिस-संज्ञा स्त्री० मलत्याग के लिये म्यूनिसिपैलिटी आदि का बनवाया हुआ सार्वजनिक स्थान।

बंब-संज्ञा स्त्री० युद्धारंभ में वीरों का उत्साहवर्द्धक नाद। रणनाद। हल्ला।

बंबा-संज्ञा पुं० १. पानी की कल। पंप। २. सोता।

बँबाना-क्रि० अ० गौ आदि पशुओं का बाँ बाँ शब्द करना। रँभाना।

बंबू-संज्ञा पुं० चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

बंस-संज्ञा पुं० दे० "वंश"।

बंसलोचन-संज्ञा पुं० बाँस का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। बंसकपूर।

बंसी-संज्ञा स्त्री० १. बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। २. मछली फँसाने का एक औज़ार।

बंसीधर-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

बँहगी-संज्ञा स्त्री० भार ढोने का वह उपकरण जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरों पर रस्सियों के बड़े बड़े छींके लटका दिए जाते हैं।

बउर†॰-संज्ञा पुं० दे० "बौर" या "मौर"।

बउरा†॰-वि० दे० "बावला"।

बक-संज्ञा पुं० १. बगला। २. अग-स्त्य नामक पुष्प का वृक्ष।
संज्ञा स्त्री० प्रलाप। बकवाद।

बकतर-संज्ञा पुं० एक प्रकार की जिरह या कवच जिसे योद्धा लड़ाई में पहनते हैं। सन्नाह।

बकता॰-वि० दे० "वक्ता"।

फाल-संज्ञा स्त्री० लोहे का चौकोर लंबा छड़ जो हल के नीचे लगा रहता है। ज़मीन इसी से खुदती है। कुस। कुसी।
फ़ालतू-वि० १. आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २. व्यर्थ। निकम्मा।
फ़ालसई-वि० फ़ालसे के रंग का। ललाई लिए हुए हलका ऊदा।
फ़ालसा-संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसमें मोती के दाने के बराबर छोटे छोटे खटमीठे फल लगते हैं।
फालगुन-संज्ञा पुं० एक चांद्रमास। दे० "फागुन"।
फाल्गुनी-संज्ञा स्त्री० पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र।
फावड़ा-संज्ञा पुं० मिट्टी खोदने और टालने का एक औज़ार। फरसा।
फ़ाश-वि० खुला। प्रकट।
फ़ासला-संज्ञा पुं० दूरी। अंतर।
फाहा-संज्ञा पुं० तेल, घी या मरहम आदि में तर की हुई कपड़े की पट्टी या रूई। फाया।
फ़ाहिशा-वि० स्त्री० छिनाल। पुंश्चली।
फ़िक्र-संज्ञा स्त्री० १. चिंता। सोच। २. ध्यान। ३. तदबीर।
फिचकुर-संज्ञा पुं० फेन जो मूर्च्छा या बेहोशी आने पर मुँह से निकलता है।
फिटकार-संज्ञा स्त्री० धिक्कार। लानत।
फिटकरी-संज्ञा स्त्री० एक मिश्र खनिज पदार्थ जो स्फटिक के समान श्वेत होता है।
फिटन-संज्ञा स्त्री० चार पहिये की एक प्रकार की खुली गाड़ी।
फ़ितूर-संज्ञा पुं० १. विकार। ख़राबी। २. झगड़ा। बखेड़ा।
फ़िदवी-वि० स्वामिभक्त। आज्ञाकारी। संज्ञा पुं० दास।
फ़िरंग-संज्ञा पुं० युरोप का एक देश। गोरों का मुल्क। फ़िरंगिस्तान।
फ़िरंगी-वि० १. फ़िरंग देश में रहनेवाला। गोरा। २. फ़िरंग देश का।
संज्ञा स्त्री० विलायती तलवार।
फिरंट-वि० १. फिरा हुआ। विरुद्ध। ख़िलाफ़। २. विरोध या लड़ाई पर उद्यत।
फिर-क्रि० वि० एक बार और। दोबारा। पुनः।
फ़िरक़ा-संज्ञा पुं० १. जाति। २. जत्था। ३. पंथ। संप्रदाय।
फिरकी-संज्ञा स्त्री० १. वह गोल या चक्राकार पदार्थ जो बीच की कीली के एक स्थान पर टिकाकर घूमता हो। २. फिरहरी।
फिरता-संज्ञा पुं० १. वापसी। २. अस्वीकार।
वि० वापस लौटाया हुआ।
फिरना-क्रि० अ० १. इधर उधर चलना। २. टहलना। विचरना। ३. लौटना। वापस होना। ४. सामना दूसरी तरफ़ हो जाना। ५. मुड़ना।
फ़िराक़-संज्ञा पुं० खोज।
फिराना-क्रि० स० १. कभी इस ओर, कभी उस ओर ले जाना। २. टहलाना। ३. लौटाना। पलटाना।
फ़िरार-संज्ञा पुं० भाग जाना।
फिरि‡-क्रि० वि० दे० "फिर"।

बकध्यान–संज्ञा पुं० ऐसी चेष्टा या ढंग जो देखने में तो बहुत साधु जान पड़े, पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो। बनावटी साधु भाव।
बकना–क्रि० स० अटपटांग बात कहना। व्यर्थ बहुत बोलना।
बकबक–संज्ञा स्त्री० बकने की क्रिया या भाव।
बकमौन–संज्ञा पुं० दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।
वि० चुपचाप काम साधनेवाला।
बकरा–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध चतुष्पाद पशु जिसके सींग पीछे झुके हुए, पूँछ छोटी और खुर फटे होते हैं।
बकला–संज्ञा पुं० १. पेड़ की छाल। २. फल का छिलका।
बकवाद–संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात। बकबक।
बकवादी–वि० बहुत बकबक करनेवाला। बक्की।
बकवास–संज्ञा स्त्री० दे० "बकवाद"।
बकस–संज्ञा पुं० कपड़े आदि रखने का चौकोर संदूक।
बकसना॰–क्रि० स० १. कृपापूर्वक देना। २. क्षमा करना।
बकसाना॰†–क्रि० स० क्षमा कराना। माफ़ कराना।
बकसी॰–संज्ञा पुं० दे० "बख़्शी"।
बकसीस॰–संज्ञा स्त्री० १. दान। २. इनाम। पारितोषिक।
बकायन–संज्ञा स्त्री० नीम की जाति का एक पेड़।
बकाया–संज्ञा पुं० बचा हुआ। बाक़ी।
बकारी–संज्ञा स्त्री० मुँह से निकलनेवाला शब्द।
बकावली–संज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।
बकासुर–संज्ञा पुं० एक दैत्य का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
बकुचना॰–क्रि० अ० सिमटना। सिकुड़ना। संकुचित होना।
बकुचा–संज्ञा पुं० छोटी गठरी। बकचा।
बकुची–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जो औषध के काम में आता है।
संज्ञा स्त्री० छोटी गठरी।
बकुल–संज्ञा पुं० मौलसिरी।
बकुला–संज्ञा पुं० दे० "बगला"।
बकेन, बकेना†–संज्ञा स्त्री० वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो।
बकैयाँ–संज्ञा पुं० बच्चों का घुटनों के बल चलना।
बकोट–संज्ञा स्त्री० बकोटने की मुद्रा, क्रिया या भाव।
बकोटना–क्रि० स० नाखूनों से नोचना। पंजा मारना।
बक्कम–संज्ञा पुं० एक छोटा कँटीला वृक्ष। इसकी लकड़ी, छिलके और फलों से लाल रंग निकलता है।
बक्कल–संज्ञा पुं० १. छिलका। २. छाल।
बक्काल–संज्ञा पुं० वणिक्। बनिया।
बक्की–वि० बहुत बोलने या बकबक करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का धान।
बक्स–संज्ञा पुं० दे० "बकस"।
बखरा–संज्ञा पुं० दे० "बाखर"।

फिरियाद‡—संज्ञा स्त्री० दे० "फ़रियाद"।
फिल्ली—संज्ञा स्त्री० पिंडली। (अंग)
फिस—वि० कुछ नहीं। (हास्य)
फिसड्डी—वि० १. जिससे कुछ करते-धरते न बने। २. जो काम में सबसे पीछे रहे।
फिसलन—संज्ञा स्त्री० १. फिसलने की क्रिया या भाव। रपटन। २. चिकनी जगह जहाँ पैर फिसले।
फिसलना—क्रि० अ० चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। रपटना।
फीका—वि० १. स्वादहीन। २. जो चटकीला न हो। धुमला। ३. कांतिहीन। बे-रौनक।
फ़ीता—संज्ञा पुं० पतली धज्जी, सूत आदि जो किसी वस्तु को लपेटने या बाँधने के काम में आता है।
फ़ीरोज़ा—संज्ञा पुं० हरापन लिए नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।
फ़ीरोज़ी—वि० हरापन लिए नीला।
फ़ील—संज्ञा पुं० हाथी।
फ़ीलपा—संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें पैर या और कोई अंग फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है।
फ़ीलवान—संज्ञा पुं० हाथीवान।
फीली—संज्ञा स्त्री० पिंडली।
फुँकना—क्रि० अ० १. फूँकने का अकर्मक रूप। २. जलना। भस्म होना।
संज्ञा पुं० दे० "फुँकनी"।
फुँकनी—संज्ञा स्त्री० १. वह नली जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं। २. भाथी।
फुँकरना—क्रि० अ० फूत्कार छोड़ना। फूँ फूँ शब्द करना।
फुँकवाना, फुँकाना—क्रि० स० फूँकने का काम दूसरे से कराना।
फुँकार—संज्ञा पुं० दे० "फूत्कार"।
फुँदना—संज्ञा पुं० फूल के आकार की गाँठ जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर शोभा के लिये बनाते हैं। फुलरा। झब्बा।
फुँदिया—संज्ञा स्त्री० दे० "फुँदना"।
फुँदी—संज्ञा स्त्री० फंदा। गाँठ।
फुंसी—संज्ञा स्त्री० छोटी फोड़िया।
फुकना—क्रि० अ० दे० "फुँकना"।
फुचड़ा—संज्ञा पुं० कपड़े आदि की बुनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।
फुट—वि० १. अकेला। २. अलग।
संज्ञा पुं० १२ इंच की एक माप।
फुटकर, फुटकल—वि० १. अकेला। २. अलग। पृथक्। ३. कई प्रकार का। कई मेल का। ४. थोक का उलटा।
फुटका—संज्ञा पुं० फफोला।
फुदकना—क्रि० अ० १. उछल उछलकर कूदना। २. उमंग में आना।
फुदकी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी चिड़िया।
फुनगी—संज्ञा स्त्री० वृक्ष या पौधे की शाखाओं का अग्रभाग। अंकुर।
फुप्फुस—संज्ञा पुं० फेफड़ा।
फुफकार—संज्ञा पुं० साँप के मुँह से निकली हुई हवा का शब्द। फुंकार।
फुफकारना—क्रि० अ० साँप का मुँह से फूँक निकालना। फूत्कार करना।
फुफू‡—संज्ञा स्त्री० दे० "फूफी"।

बखरी‡–संज्ञा स्त्री० मिट्टी, ईंटें आदि का बना हुआ मकान। (गाँव)
बखसीस☆†–संज्ञा स्त्री० दे० "बकसीस"।
बखान–संज्ञा पुं० १. वर्णन। कथन। २. प्रशंसा। स्तुति। बड़ाई।
बखानना–क्रि० स० १. वर्णन करना। कहना। २. प्रशंसा करना। सराहना।
बखार†–संज्ञा पुं० दीवार आदि से घिरा हुआ गोल घेरा जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता है।
बखिया–संज्ञा पुं० एक प्रकार की महीन और मज़बूत सिलाई।
बखीर†–संज्ञा स्त्री० मीठे रस में उबाला हुआ चावल।
बखेड़ा–संज्ञा पुं० १. झंझट। उलझन। २. झगड़ा। टंटा।
बखेड़िया–वि० बखेड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
बखेरना–क्रि० स० चीज़ों को इधर-उधर या दूर दूर फैलाना। छितराना।
बख़्तर–संज्ञा पुं० दे० "बकतर"।
बख़्शना–क्रि० स० १. देना। प्रदान करना। २. माफ़ करना।
बख़्शिश–संज्ञा स्त्री० १. दान। २. क्षमा।
बग†–संज्ञा पुं० बगुला।
बगई‡–संज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मक्खी जो कुत्तों पर बहुत बैठती है। कुकुरमाछी। २. एक प्रकार की घास।
बगछुट, बगटुट–क्रि० वि० सरपट। बेतहाशा। बड़े वेग से।
बगदना‡–क्रि० अ० लुढ़कना।
बगमेल–संज्ञा पुं० दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। बराबर बराबर चलना।
क्रि० वि० बाग मिलाए हुए। साथ साथ।
बगर☆†–संज्ञा पुं० १.महल। प्रासाद। २. बड़ा मकान। घर। ३. सहन। आँगन। ४. वह स्थान जहाँ गौएँ बाँधी जाती हैं। बगार। बाटी।
संज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।
बगरना☆†–क्रि० अ० फैलना।
बगराना†–क्रि० स० फैलाना। छितराना। छिटकाना।
क्रि० अ० बगरना। फैलना। बिखरना।
बगरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बखरी"।
बग़ल–संज्ञा स्त्री० १. बाहु-मूल के नीचे की ओर का गड्ढा। काँख। २. पार्श्व। ३. समीप का स्थान। पास की जगह।
बगलबंदी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिरजई या कुरती।
बगला–संज्ञा पुं० सफ़ेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी टाँगें, चोंच और गला लंबा होता है।
बगलियाना–क्रि० अ० बगल से होकर जाना। अलग हटकर चलना या निकलना।
क्रि० स० १. अलग करना। २. बग़ल में लाना या करना।
बगलौहाँ†–वि० बग़ल की ओर झुका हुआ। तिरछा।
बगार–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ गाएँ बाँधी जाती हैं। बाटी।
बगारना–क्रि० स० फैलाना। छिटकाना। बिखेरना।

फुफेरा–वि० फूफा से उत्पन्न। जैसे, फुफेरा भाई।

फुर्रा–वि० सत्य। सच्चा।
संज्ञा स्त्री० उड़ने में परों का शब्द।

फुरती–संज्ञा स्त्री० शीघ्रता। तेज़ी।

फुरतीला–वि० जिसमें फुरती हो। तेज़।

फुरफुराना–क्रि० स० १."फुर फुर" करना। उड़कर परों का शब्द करना। २. हवा में लहराना।
क्रि० अ० किसी हल्की वस्तु का हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो।

फुरसत–संज्ञा स्त्री० १. अवसर। २. अवकाश। छुट्टी।

फुरहरी–संज्ञा स्त्री० १. पर को फुलाकर फड़फड़ाना। २. फड़फड़ाहट। ३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। ४. कँपकँपी। ५. दे० "फुरेरी"।

फुराना–क्रि० स० १. सच्चा ठहराना। ठीक उतारना। २. प्रमाणित करना।
क्रि० अ० दे० "फुरना"।

फुरेरी–संज्ञा स्त्री० १. वह सींक जिसके सिरे पर हलकी रुई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि में डुबाकर काम में लाई जाय। २. रोमांचयुक्त कंप।

फुलका–संज्ञा पुं० १.फफोला। छाला। २. हलकी और पतली रोटी। चपाती।

फुलचुही–संज्ञा स्त्री० काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।

फुलझड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतशबाज़ी।

फुलवर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी बूटी का कपड़ा।

फुलवाई–संज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।

फुलवारी–संज्ञा स्त्री० पुष्पवाटिका।

फुलहारा–संज्ञा पुं० माली।

फुलाना–क्रि० स० किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना।

फुलाव–संज्ञा पुं० फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।

फुलंग–संज्ञा पुं० चिनगारी।

फुलिया–संज्ञा स्त्री० १. किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। २. एक प्रकार का लौंग। (गहना)

फुलेल–संज्ञा पु० फूलों की महक से बासा हुआ सिर में लगाने का तेल। सुगंधयुक्त तेल।

फुलेहरा†–संज्ञा पुं० सूत, रेशम आदि के बंदनवार जो उत्सवों में द्वार पर लगाये जाते हैं।

फुलौरी–संज्ञा स्त्री० चने या मटर आदि के बेसन की पकौड़ी।

फुस–संज्ञा स्त्री० धीमी आवाज़।

फुसफुसा–वि० १.जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। २. कमज़ोर।

फुसफुसाना–क्रि० स० बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना।

फुसलाना–क्रि० स० अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना। चकमा देना। बहकाना।

फुहार–संज्ञा स्त्री० १. पानी का महीन छींटा। २. झींसी।

फुहारा–संज्ञा पुं० १. जल का महीन छींटा। २. जल की वह टोंटी

बगावत–संज्ञा स्त्री० १. बागी होने का भाव। २. बलवा।
बगिया०†–संज्ञा स्त्री० बगीचा। उपवन। छोटा बाग।
बगीचा–संज्ञा पुं० वाटिका। छोटा बाग।
बगुला–संज्ञा पुं० दे० "बगला"।
बगूला–संज्ञा पुं० वह वायु जो एक ही स्थान पर भँवर सी घूमती हुई दिखाई देती है।
बगेरी–संज्ञा स्त्री० खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। बघेरी। भरुही।
बगैर–अव्य० बिना।
बग्गी, बग्घी–संज्ञा स्त्री० चार पहियों की पाटनदार घोड़ा-गाड़ी।
बघंबर–संज्ञा पुं० बाघ की खाल जिस पर साधू लोग बैठते हैं।
बघनहाँ†–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० बघनहीं] १. एक प्रकार का हथियार जिसमें बाघ के नहँ के समान चिपटे टेढ़े काँटे निकले रहते हैं। २ एक आभूषण जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में मढ़े होते हैं।
बघार–संज्ञा पुं० छौंक।
बघारना–क्रि० स० १. छौंकना। २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना।
बचकाना‡–वि० [स्त्री० बचकानी] १. बच्चों के योग्य। २. बच्चों का सा।
बचत–संज्ञा स्त्री० १. बचने का भाव। २. शेष। ३. लाभ।
बचन०†–संज्ञा पुं० १. वाणी। २. वचन।
बचना–क्रि० अ० १. रक्षित रहना। २. किसी बुरी बात से अलग रहना। ३. बाकी रहना। क्रि० स० कहना।
बचपन–संज्ञा पुं० १. लड़कपन। २. बच्चा होने का भाव।
बचाना–क्रि० स० १. रक्षा करना। २. खर्च न होने देना। ३. छिपाना। ४. दूर रखना।
बचाव–संज्ञा पुं० रक्षा।
बच्चा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बच्ची] १. किसी प्राणी का नवजात शिशु। २. लड़का।
बच्चादान–संज्ञा पुं० गर्भाशय।
बच्छ–संज्ञा पुं० १. बच्चा। २. गाय का बच्चा।
बच्छा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बछिया] बछड़ा।
बछ*†–संज्ञा पुं० दे० "बछड़ा"।
बछड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।
बछनाग–संज्ञा पुं० एक स्थावर विष। सींगिया।
बछवा‡–संज्ञा पुं० दे० "बछेड़ा"।
बछेड़ा–संज्ञा पुं० घोड़े का बच्चा।
बजंत्री–संज्ञा पुं० बजनियाँ।
बजड़ा–संज्ञा पुं० दे० "बजरा"।
बजना–क्रि० अ० १. बोलना। २. शस्त्रों का चलना।
बजनियाँ†–संज्ञा पुं० स्त्री० बाजा बजानेवाला।
बजनी–वि० जो बजाता हो।
बजमारा०†–वि० [स्त्री० बजमारी] बज्र से मारा हुआ।
बजरंगबली–संज्ञा पुं० हनुमान्।
बजरबट्टू–संज्ञा पुं० एक वृक्ष के फल का दाना या बीज जिसकी माला बच्चों को नज़र से बचाने के लिये पहनाते हैं।

जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं। जलयंत्र।

फूँक-संज्ञा स्त्री० १. मुँह को बटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। मुँह की हवा।

फूँकना-क्रि० स० मुँह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।

फूँका-संज्ञा पुं० बाँस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हें स्तन में लगाकर फूँकना जिससे गायों का सारा दूध बाहर निकल आवे।

फूँदना-संज्ञा पुं० दे० "फुँदना"।

फूट-संज्ञा स्त्री० १. फूटने की क्रिया या भाव। २. वैर। विरोध। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना-क्रि० अ० १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. कली का खिलना। ३. बिखरना। ४. फूटकर दूसरे पक्ष में जाना।

फूत्कार-संज्ञा पुं० मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

फूफा-संज्ञा पुं० फूफी का पति। बाप का बहनोई।

फूफी-संज्ञा स्त्री० बाप की बहिन। बूआ।

फूल-संज्ञा पुं० १. पुष्प। कुसुम। सुमन। २. एक मिश्र धातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है। ३. स्त्रियों का मासिक। ४. श्वेत कुष्ठ।

फूलगोभी-संज्ञा स्त्री० गोभी की एक जाति जिसमें फूल का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है।

फूलदान-संज्ञा पुं० गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिलास के आकार का बरतन।

फूलदार-वि० जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे बने हों।

फूलना-क्रि० अ० फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना।

फूलमती-संज्ञा स्त्री० एक देवी का नाम।

फूली-संज्ञा स्त्री० वह सफेद दाग़ जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

फूस-संज्ञा पुं० १. वह सूखी लंबी घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। तिनका।

फूहड़-वि० १. जिसे कुछ करने का ढंग न हो। बेशऊर। २. बेढंगा।

फेंकना-क्रि० स० १. झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. छोड़ना। ३. फ़जूल खर्च करना।

फेंट-संज्ञा स्त्री० १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमरबंद।

फेंटना-क्रि० स० १. गाढ़े द्रव पदार्थ को उँगली घुमा घुमाकर हिलाना। २. गड्डी के ताशों को उलट पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना।

फेंटा-संज्ञा पुं० १. दे० "फेंट"। २. छोटी पगड़ी।

फेन-संज्ञा पुं० महीन बुदबुदों का समूह। झाग।

फेनी-संज्ञा स्त्री० सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई।

फेफड़ा-संज्ञा पुं० वक्षःस्थल के भीतर

बजरा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की बड़ी और पटी हुई नाव। २. दे० "बाजरा"।

बजरी†–संज्ञा स्त्री० १. कंकड़ी। २. ओला। ३. किले आदि की दीवारों के ऊपर छोटा नुमायशी कँगूरा।

बजवैया†–वि० बजानेवाला।

बजा–वि० उचित।

बजाज़–संज्ञा पुं० [स्त्री० बजाजिन] कपड़े का व्यापारी।

बज़ाज़ा–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बज़ाज़ों की दूकानें हों।

बज़ाज़ी–संज्ञा स्त्री० कपड़ा बेचने का व्यापार।

बजाना–क्रि० स० किसी बाजे आदि पर आघात पहुँचाकर अथवा हवा का ज़ोर पहुँचाकर उससे शब्द उत्पन्न करना।
क्रि० स० पूरा करना।

बजाय–अव्य० स्थान पर।

बजार०†–संज्ञा पुं० दे० "बाज़ार"।

बज्जर०†–संज्ञा पुं० दे० "बज्र"।

बझना०†–क्रि० अ० १. बंधन में पड़ना। २. उलझना। ३. हठ करना।

बझाना०†–क्रि० स० फँसाना।

बझाव–संज्ञा पुं० फँसने की क्रिया या भाव। उलझाव। अटकाव।

बट–संज्ञा पुं० १. दे० "वट"। २. बड़ा नाम का पकवान। ३. बाट।
संज्ञा पुं० रास्ता।

बटखरा–संज्ञा पुं० पत्थर, लोहे आदि का वह टुकड़ा जो वस्तुओं को तौलने के काम में आता है।

बटन–संज्ञा स्त्री० ऐंठन।
संज्ञा पुं० पहनने के कपड़ों में चिपटे आकार की कड़ी गोल घुंडी।

बटना–क्रि० स० कई तागों या तारों को एक साथ मिलाकर घुमाना जिसमें वे मिलकर एक हो जायँ।
क्रि० अ० पिसना।
संज्ञा पुं० उबटन।

बटपरा†०–संज्ञा पुं० दे० "बटमार"।

बटपार–संज्ञा पुं० दे० "बटमार"।

बटमार–संज्ञा पुं० ठग। डाकू।

बटला–संज्ञा पुं० बड़ी बटलोई।

बटली, बटलोई–संज्ञा स्त्री० देगची। पतीली।

बटवार–संज्ञा पुं० १. पहरेदार। २. रास्ते का कर उगाहनेवाला।

बटाऊ–संज्ञा पुं० पथिक।

बटिया–संज्ञा स्त्री० १. छोटा गोला। २. छोटा बट्टा।

बटी–संज्ञा स्त्री० १. गोली। २. बड़ी नाम का पकवान।
० संज्ञा स्त्री० वाटिका।

बटुआ–संज्ञा पुं० दे० "बटुवा"।
संज्ञा पुं० सिल आदि पर पीसा हुआ।

बटुरना†–क्रि० अ० १. सिमटना। २. एकत्र होना।

बटुवा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की गोल थैली जिसके भीतर कई खाने होते हैं। २. बड़ी बटलोई या देग।

बटेर–संज्ञा स्त्री० तीतर या लवा की तरह की एक छोटी चिड़िया।

बटेरबाज़–संज्ञा पुं० बटेर पालने या लड़ानेवाला।

बटोर–संज्ञा पुं० १. जमावड़ा। २. वस्तुओं का ढेर।

फुफेरा–वि॰ फूफा से उत्पन्न। जैसे, फुफेरा भाई।

फुर–वि॰ सत्य। सच्चा।
संज्ञा स्त्री॰ उड़ने में परों का शब्द।

फुरती–संज्ञा स्त्री॰ शीघ्रता। तेज़ी।

फुरतीला–वि॰ जिसमें फुरती हो। तेज़।

फुरफुराना–क्रि॰ स॰ १."फुर फुर" करना। उड़कर परों का शब्द करना। २. हवा में लहराना।
क्रि॰ अ॰ किसी हलकी वस्तु का हिलना जिससे फुरफुर शब्द हो।

फुरसत–संज्ञा स्त्री॰ १. अवसर। २. अवकाश। छुट्टी।

फुरहरी–संज्ञा स्त्री॰ १. पर को फुलाकर फड़फड़ाना। २. फड़फड़ाहट। ३. कपड़े आदि के हवा में हिलने की क्रिया या शब्द। ४. कँपकँपी। ५. दे॰ "फुरेरी"।

फुराना*–क्रि॰ स॰ १. सच्चा ठहराना। ठीक उतारना। २. प्रमाणित करना।
क्रि॰ अ॰ दे॰ "फुरना"।

फुरेरी–संज्ञा स्त्री॰ १. वह सींक जिसके सिरे पर हलकी रुई लपेटी हो, और जो इत्र, दवा आदि में डुबाकर काम में लाई जाय। २. रोमांच-युक्त कंप।

फुलका–संज्ञा पुं॰ १.फफोला। छाला। २. हलकी और पतली रोटी। चपाती।

फुलचुही–संज्ञा स्त्री॰ काले रंग की एक चमकती हुई चिड़िया।

फुलझड़ी–संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की आतशबाज़ी।

फुलघर–संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का रेशमी बूटी का कपड़ा।

फुलवाई*–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "फुलवारी"।

फुलवारी–संज्ञा स्त्री॰ पुष्पवाटिका।

फुलहारा–संज्ञा पुं॰ माली।

फुलाना–क्रि॰ स॰ किसी वस्तु के विस्तार को उसके भीतर वायु आदि का दबाव पहुँचाकर बढ़ाना।

फुलाव–संज्ञा पुं॰ फूलने की क्रिया या भाव। उभार या सूजन।

फुलिंग*–संज्ञा पुं॰ चिनगारी।

फुलिया–संज्ञा स्त्री॰ १. किसी कील या छड़ के आकार की वस्तु का फूल की तरह का गोल सिरा। २. एक प्रकार का लौंग। (गहना)

फुलेल–संज्ञा पुं॰ फूलों की महक से बासा हुआ सिर में लगाने का तेल। सुगंधयुक्त तेल।

फुलेहरा†–संज्ञा पुं॰ सूत, रेशम आदि के बंदनवार जो उत्सवों में द्वार पर लगाये जाते हैं।

फुलौरी–संज्ञा स्त्री॰ चने या मटर आदि के बेसन की पकौड़ी।

फुस–संज्ञा स्त्री॰ धीमी आवाज़।

फुसफुसा–वि॰ १.जो दबाने से बहुत जल्दी चूर चूर हो जाय। २. कमज़ोर।

फुसफुसाना–क्रि॰ स॰ बहुत ही दबे हुए स्वर से बोलना।

फुसलाना–क्रि॰ स॰ अनुकूल या संतुष्ट करने के लिये मीठी मीठी बातें कहना। चकमा देना। बहकाना।

फुहार–संज्ञा स्त्री॰ १. पानी का महीन छींटा। २. झींसी।

फुहारा–संज्ञा पुं॰ १. जल का महीन छींटा। २. जल की वह टोंटी

बटोरना–क्रि॰ स॰ १. समेटना। २. जुटाना।
बटोही–संज्ञा पुं॰ पथिक।
बट्टा–संज्ञा पुं॰ १. दलाली। दस्तूरी। २. खोटे सिक्के, धातु आदि के बेचने में वह कमी जो उसके पूरे मूल्य में हो जाती है। ३. टोटा।
संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ बट्टी, बटिया] लोढ़ा।
बट्टाखाता–संज्ञा पुं॰ डूबी हुई रकम का लेखा या बही।
बट्टी–संज्ञा स्त्री॰ १. छोटा बट्टा। २. कूटने पीसने का पत्थर।
बड़–संज्ञा पुं॰ बरगद का पेड़।
बड़प्पन–संज्ञा पुं॰ श्रेष्ठ या बड़ा होने का भाव।
बड़बड़–संज्ञा स्त्री॰ बकवाद।
बड़बड़ाना–क्रि॰ अ॰ १. बकवाद करना। २. कोई बात बुरी लगने पर मुँह में ही कुछ बोलना।
बड़बोल, बड़बोला–वि॰ बढ़ बढ़कर बातें करनेवाला।
बड़भाग, बड़भागी–वि॰ बड़े भाग्यवाला।
बड़रा*–वि॰ बड़ा।
बड़वाग्नि–संज्ञा पुं॰ समुद्राग्नि। समुद्र के भीतर की आग या ताप।
बड़वानल–संज्ञा पुं॰ दे॰ "बड़वाग्नि"।
बड़हन†–संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का धान।
बड़हल–संज्ञा पुं॰ एक बड़ा पेड़ जिसके फल छोटे शरीफे के बराबर, पर बड़े बेडौल होते हैं।
बड़हार–संज्ञा पुं॰ विवाह के पीछे बरातियों की ज्योनार।
बड़ा–वि॰ १. विशाल। २. जिसकी उम्र ज्यादा हो। ३. अधिक परिमाण। ४. गुरुजन।
संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ बड़ी] एक पकवान जो मसाला मिली हुई उर्द की पीठी की गोल टिकियों को तलकर बनाया जाता है।
बड़ाई–संज्ञा स्त्री॰ १. बड़े होने का भाव। २. बड़प्पन। ३. महिमा।
बड़ा दिन–संज्ञा पुं॰ २५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों का त्योहार है।
बड़ी–वि॰ स्त्री॰ दे॰ "बड़ा"।
संज्ञा स्त्री॰ कुम्हड़ौरी।
बड़ी माता–संज्ञा स्त्री॰ चेचक।
बड़ेरा†*–वि॰ [स्त्री॰ बड़ेरी] १. बड़ा। २. प्रधान।
संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ अल्पा॰ बड़ेरी] छाजन में बीच की लकड़ी।
बढ़ई–संज्ञा पुं॰ काठ को गढ़कर अनेक प्रकार के सामान बनानेवाला।
बढ़ती–संज्ञा स्त्री॰ [हिं॰ बढ़ना+ती (प्रत्य॰)] १. तौल या गिनती में अधिकता। २. उन्नति।
बढ़ना–क्रि॰ अ॰ १. विस्तार या परिमाण में अधिक होना। २. तरक्की करना। ३. किसी स्थान से आगे जाना। ४ बंद होना।
बढ़नी†–संज्ञा स्त्री॰ झाड़ू।
बढ़ाना–क्रि॰ स॰ १. विस्तृत करना। २. फैलाना। ३. उन्नत करना। ४. आगे गमन कराना। ५. दूकान आदि बंद करना। ६. चिराग बुझाना।
क्रि॰ अ॰ चुकना।
बढ़ाव–संज्ञा पुं॰ बढ़ने की क्रिया या भाव।
बढ़ावा–संज्ञा पुं॰ १. प्रोत्साहन।

जिसमें से दबाव के कारण जल की महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठकर गिरा करते हैं। जलयंत्र।

फूँक-संज्ञा स्त्री० १. मुँह को बटोरकर वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। मुँह की हवा।

फूँकना-क्रि० स० मुँह को बटोरकर वेग के साथ हवा छोड़ना।

फूँका-संज्ञा पुं० बाँस की नली में जलन पैदा करनेवाली ओषधियाँ भरकर और उन्हें स्तन में लगाकर फूँकना जिससे गायें का सारा दूध बाहर निकल आवे।

फूँदना†-संज्ञा पुं० दे० "फुँदना"।

फूट-संज्ञा स्त्री० १. फूटने की क्रिया या भाव। २. बैर। विरोध। ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटना-क्रि० अ० १. खरी या करारी वस्तुओं का आघात पाकर टूटना। करकना। दरकना। २. कली का खिलना। ३. बिखरना। ४. फूटकर दूसरे पक्ष में जाना।

फूत्कार-संज्ञा पुं० मुँह से हवा छोड़ने का शब्द। फूँक। फुफकार।

फूफा-संज्ञा पुं० फूफी का पति। बाप का बहनोई।

फूफी-संज्ञा स्त्री० बाप की बहिन। बूआ।

फूल-संज्ञा पुं० १. पुष्प। कुसुम। सुमन। २. एक मिश्र धातु जो ताँबे और राँगे के मेल से बनती है। ३. स्त्रियों का मासिक। ४. श्वेत कुष्ठ।

फूलगोभी-संज्ञा स्त्री० गोभी की एक जाति जिसमें फूल का बँधा हुआ ठोस पिंड होता है।

फूलदान-संज्ञा पुं० गुलदस्ता रखने का काँच, पीतल आदि का गिलास के आकार का बरतन।

फूलदार-वि० जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे बने हों।

फूलना-क्रि० अ० फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना।

फूलमती-संज्ञा स्त्री० एक देवी का नाम।

फूली-संज्ञा स्त्री० वह सफ़ेद दाग़ जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

फूस-संज्ञा पुं० १. वह सूखी लंबी घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है। २. सूखा तृण। तिनका।

फूहड़-वि० १. जिसे कुछ करने का ढंग न हो। बेशऊर। २. बेढंगा।

फेंकना-क्रि० स० १. झोंक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। २. छोड़ना। ३. फ़ज़ूल ख़र्च करना।

फेंट-संज्ञा स्त्री० १. कमर का घेरा। कटि का मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर में लपेटकर बाँधा गया हो। ३. कमरबंद।

फेंटना-क्रि० स० १. गाढ़े द्रव पदार्थ को उँगली घुमा घुमाकर हिलाना। २. गड्डी के ताशों को उलट पुलटकर अच्छी तरह से मिलाना।

फेंटा-संज्ञा पुं० १. दे० "फेंट"। २. छोटी पगड़ी।

फेन-संज्ञा पुं० महीन बुदबुदों का समूह। झाग।

फेनी-संज्ञा स्त्री० सूत के लच्छे के आकार की एक मिठाई।

फेफड़ा-संज्ञा पुं० वक्षःस्थल के भीतर

उत्तेजना। २. साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात।
बढ़िया–वि० अच्छा।
बढ़ोतरी–संज्ञा स्त्री० १. बढ़ती। २. उन्नति।
बणिक्–संज्ञा पुं० १. बनिया। सौदागर। २. बेचनेवाला।
बणिज्–संज्ञा पुं० दे० "बणिक्"।
बतकही–संज्ञा स्त्री० १. बातचीत। २. वाद-विवाद।
बतख–संज्ञा स्त्री० हंस की जाति की पानी की एक सफ़ेद प्रसिद्ध चिड़िया।
बतचल–वि० बकवादी।
बतबढ़ाव–संज्ञा पुं० व्यर्थ बात बढ़ाना।
बतरस–संज्ञा पुं० बातचीत का आनंद।
बतराना†–क्रि० अ० बातचीत करना।
बतलाना–क्रि० स० दे० "बताना"।
बताना–क्रि० स० १. कहना। २. दिखाना।
बताशा–संज्ञा पुं० दे० "बतासा"।
बतास‡–संज्ञा स्त्री० १. गठिया। २. वायु।
बतासा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की मिठाई जो चीनी की चाशनी को टपकाकर बनाई जाती है। २. एक प्रकार की आतशबाज़ी।
बतिया–संज्ञा स्त्री० छोटा, कोमल और कच्चा फल।
बतियाना†–क्रि० अ० बातचीत करना।
बतियार–संज्ञा स्त्री० बातचीत।
बतौर–क्रि० वि० १. रीति से। २. समान।
बत्तिस–वि० दे० "बत्तीस"।
बत्ती–संज्ञा स्त्री० १. चिराग़ जलाने के लिये रूई या सूत का बटा हुआ लच्छा। २. दीपक।
बत्तीस–वि० जो गिनती में तीस से दो ज़्यादा हो।
बत्तीसी–संज्ञा स्त्री० १. बत्तीस का समूह। २. मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति।
बथुआ–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा जिसके पत्तों का साग खाते हैं।
बद्–संज्ञा स्त्री० बाघी। रोग। वि० १. बुरा। २. दुष्ट। संज्ञा स्त्री० बदला।
बदकार–वि० १. कुकर्मी। २. व्यभिचारी।
बदचलन–वि० कुमार्गी।
बदज़ात–वि० नीच।
बदतर–वि० और भी बुरा।
बदन–संज्ञा पुं० शरीर।
बदना*–क्रि० स० १. कहना। २. निश्चित करना। ३. बाज़ी लगाना। ४. कुछ समझना।
बदनाम–वि० कलंकित।
बदनामी–संज्ञा स्त्री० लोकनिंदा।
बदबू–संज्ञा स्त्री० बुरी गंध।
बदमाश–वि० १. बुरे कर्म से जीविका करनेवाला। २. दुष्ट।
बदमाशी–संज्ञा स्त्री० १. दुष्कर्म। २. व्यभिचार।
बदरंग–वि० भद्दे रंग का।
बदर–संज्ञा पुं० बेर का पेड़ या फल। क्रि० वि० बाहर।
बदरा‡–संज्ञा पुं० बादल।
बदराह–वि० १. कुमार्गी। २. दुष्ट।
बदरि–संज्ञा पुं० बेर का पौधा या फल।

का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।

फेर–संज्ञा पुं० १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव। २. रद्द-बदल। ३. उलझन। दुबधा। ४. झंझट। ५. उपाय। ढंग। ⊛ अव्य० एक बार और।

फेरना–क्रि० स० १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। घुमाना। २. लौटाना। वापस करना। ३. वापस लेना। लौटा लेना। ४. घुमाना।

फेरफार–संज्ञा पुं० १. परिवर्तन। उलट-फेर। २. घुमाव-फिराव। पेंच। चक्कर।

फेरा–संज्ञा पुं० १. कीली के चारों ओर गमन। परिक्रमण। चक्कर। २. मोड़। ३. बार बार आना जाना।

फेरि⊛–अव्य० फिर। पुनः।

फेरी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा। ४. योगी या फेरीवाले फ़क़ीर का किसी बस्ती में बराबर आना।

फेरीवाला–संज्ञा पुं० घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेल⊛‡–संज्ञा पुं० १. काम। कार्य्य। २. क्रीड़ा। खेल। ३. नखरा।

फैलना–क्रि० अ० १. कुछ दूर तक स्थान घेरना। २. विस्तृत होना। ३. स्थूल होना। ४. छितराना। बिखरना।

फैलसूफ़–वि० फ़ज़ूलखर्च।

फैलसूफ़ी–संज्ञा स्त्री० फ़ज़ूलखर्ची। अपव्यय।

फैलाना–क्रि० स० १. लगातार कुछ दूर तक स्थान घिरवाना। २. विस्तृत करना। ३. छा देना। ४. बिखेरना। ५. प्रचलित करना। ६. इधर-उधर दूर तक पहुँचाना।

फैलाव–संज्ञा पुं० १. विस्तार। प्रसार। २. प्रचार।

फैसला–संज्ञा पुं० दो पक्षों में से किसकी बात ठीक है, इसका निर्देश।

फोकट–वि० जिसका कुछ मूल्य न हो। निःसार। व्यर्थ।

फोकला‡–संज्ञा पुं० छिलका।

फोड़ना–क्रि० स० १. खरी वस्तुओं को खंड खंड करना। २. भेदभाव उत्पन्न करना। ३. फूट डालकर अलग करना।

फोड़ा–संज्ञा पुं० वह शोथ जो शरीर में कहीं पर कोई दोष संचित होने से उत्पन्न होता है। व्रण।

फोड़िया–संज्ञा स्त्री० छोटा फोड़ा।

फोता–संज्ञा पुं० १. भूमिकर। पोत। २. थैली। कोष। थैला। ३. अंडकोष।

फोरना⊛‡–क्रि० स० दे० "फोड़ना"।

फ़ौज–संज्ञा स्त्री० १. झुंड। जत्था। २. सेना। लश्कर।

फ़ौजदार–संज्ञा पुं० सेनापति।

फ़ौजदारी–संज्ञा स्त्री० १. लड़ाई-झगड़ा। मार-पीट। २. वह अदालत जहाँ ऐसे मुकदमों का निर्णय होता हो जिनमें अपराधी को दंड मिलता है।

फ़ौजी–वि० फ़ौज-संबंधी। सैनिक।

फ़ौरन–क्रि० वि० तुरंत। चटपट।

बदरिकाश्रम—संज्ञा पुं० तीर्थ-विशेष जो हिमालय पर है।
बदरीनारायण—संज्ञा पुं० बदरिकाश्रम के प्रधान देवता।
बदरौंहाँ—वि० कुमार्गी।
† संज्ञा पुं० बदली का आभास।
बदल—संज्ञा पुं० १. एक के स्थान पर दूसरा होना। २. पलटा।
बदलना—क्रि० अ० १. परिवर्त्तित होना। २. एक जगह से दूसरी जगह तैनात होना।
क्रि० स० परिवर्तित करना।
बदला—संज्ञा पुं० १. परस्पर लेने और देने का व्यवहार। २. एवज़।
बदली—संज्ञा स्त्री० फैलकर छाया हुआ बादल।
संज्ञा स्त्री० १. एक के स्थान पर दूसरी वस्तु की उपस्थिति। २. तबादला।
बदा—वि० भाग्य में लिखा हुआ।
बदान—संज्ञा स्त्री० बदे जाने की क्रिया या भाव।
बदाबदी—संज्ञा स्त्री० लाग-डाँट।
बदाम—संज्ञा पुं० दे० "बादाम"।
बदी—संज्ञा स्त्री० कृष्ण पक्ष।
संज्ञा स्त्री० बुराई।
बदौलत—क्रि० वि० १. द्वारा। २. कारण से।
बद्दर, बद्दला—संज्ञा पुं० दे० "बादल"।
बद्ध—वि० १. बँधा हुआ। २. ठह-राया हुआ।
बद्धकोष्ठ—संज्ञा पुं० कब्ज़ियत।
बद्धपरिकर—वि० कमर बाँधे हुए। तयार।
बद्धी—संज्ञा स्त्री० १. डोरी। २. चार लड़ों का एक गहना।
बध—संज्ञा पुं० हत्या।
बधना—क्रि० स० मार डालना।
संज्ञा पुं० मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।
बधाई—संज्ञा स्त्री० १. वृद्धि। २. मंगल अवसर का गाना। बजाना। ३. मुबारकबाद।
बधाया—संज्ञा पुं० दे० "बधाई"।
बधावा—संज्ञा पु० १. बधाई। २. वह उपहार जो संबंधियों या इष्ट-मित्रों के यहाँ से मंगल अवसरों पर आता है।
बधिक—संज्ञा पुं० १. बध करनेवाला। २. जल्लाद। ३. व्याध। बहेलिया।
बधिया—संज्ञा पुं० वह बैल या पशु जो अंडकोष निकालकर बंद कर दिया गया हो।
बधिर—संज्ञा पुं० बहरा।
बधूटी—संज्ञा स्त्री० १. पुत्र की स्त्री। २. सुहागिन स्त्री। नई आई हुई बहू।
बध्य—वि० मार डालने के योग्य।
बन—संज्ञा पुं० जंगल।
बनठन—संज्ञा स्त्री० सजधज।
बनकर—संज्ञा पुं० जंगल में होनेवाले पदार्थ अर्थात् लकड़ी या घास आदि की आमदनी।
बनखंड—संज्ञा पुं० जंगली प्रदेश।
बनखंडी—संज्ञा स्त्री० १. बन का कोई भाग। २. छोटा सा बन।
संज्ञा पुं० बन में रहनेवाला।
बनचर—संज्ञा पुं० १. जंगल में रहने-वाला पशु। २. जंगली आदमी।
बनचारी—वि० १. बन में घूमनेवाला। २. बन में रहनेवाला।
बनज—संज्ञा पुं० १. कमल। २. जल में होनेवाले पदार्थ।

संज्ञा पुं० वाणिज्य।
बनजारा-संज्ञा पुं० व्यापारी।
बनज्योत्स्ना-संज्ञा स्त्री० माधवी लता।
बनत-संज्ञा स्त्री० १. रचना। २. अनुकूलता।
बनताई०†-संज्ञा स्त्री० वन की सघनता या भयंकरता।
बनतुलसी-संज्ञा स्त्री० बबई नाम का पौधा।
बनदेवी-संज्ञा स्त्री० किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।
बनधातु-संज्ञा स्त्री० गेरू या और कोई रंगीन मिट्टी।
बनना-क्रि० अ० १. तैयार होना। २. काम में आने के योग्य होना। ३. अधिकार प्राप्त करना। ४. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ५. पटना। ६. स्वादिष्ट होना। ७. मूर्ख ठहरना। ८ अपने आपको अधिक योग्य या गंभीर प्रमाणित करना। ९. सजना।
बननि०†-संज्ञा स्त्री० १. बनावट। २. बनाव-सिंगार।
बनपट०-संज्ञा पुं० वृक्षों की छाल आदि से बनाया हुआ कपड़ा।
बनपाती०†-संज्ञा स्त्री० दे० "वनस्पति"।
बनप्सा-संज्ञा पुं० एक प्रकार की वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।
बनवास-संज्ञा पुं० १. वन में बसने की क्रिया या अवस्था। २. प्राचीन काल का देशनिकाले का दंड।
बनवासी-संज्ञा पुं० १. वह जो वन में बसे। २. जंगली।
बनबिलाव-संज्ञा पुं० बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जंगली जंतु।
बनमानुस-संज्ञा पुं० मनुष्य से मिलता-जुलता कोई जंगली जंतु।
बनमाला-संज्ञा स्त्री० तुलसी, कुंद, मंदार, परजाता और कमल इन पाँच चीज़ों की बनी हुई माला।
बनमाली-संज्ञा पुं० १. वनमाला धारण करनेवाला। २ कृष्ण। ३. मेघ।
बनरखा-संज्ञा पुं० १. वन-रक्षक। २. बहेलियों की एक जाति।
बनरा०†-संज्ञा पुं० दे० "बंदर"। संज्ञा पुं० १. वर। २. विवाह समय का एक प्रकार का गीत।
बनराज, बनराय०†-संज्ञा पुं० १. सिंह। २. बहुत बड़ा पेड़।
बनरी-संज्ञा स्त्री० नववधू।
बनरुह-संज्ञा पुं० १. जंगली पेड़। २. कमल।
बनवसन०-संज्ञा पुं० वृक्षों की छाल का बना हुआ कपड़ा।
बनवाना-क्रि० स० दूसरे को बनाने में प्रवृत्त करना।
बनवारी-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
बनस्थली-संज्ञा स्त्री० जंगल का कोई भाग।
बना-संज्ञा पुं० [स्त्री० बनी] दूल्हा। संज्ञा पुं० 'दंडकला' नामक छंद।
बनाइ (य)-क्रि० वि० १. अत्यंत। २. भली भाँति।
बनाग्नि-संज्ञा स्त्री० दावानल।
बनात-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।
बनाना-क्रि० स० १. देना। रचना।

बहाना–क्रि० स० १. प्रवाहित करना। २. ढालना। ३. चलाना। ४. गँवाना। ५. फेंकना।
संज्ञा पुं० १. मिस। हीला। २. निमित्त।

बहार–संज्ञा स्त्री० १. वसंत ऋतु। २. मौज। ३. विकास। ४. सुहावनापन। रौनक। ५. प्रफुल्लता। ६. मजा। तमाशा।

बहाल–वि० १. ज्यों का त्यों। २. भला-चंगा। ३ प्रसन्न। खुश।

बहाली–संज्ञा स्त्री० पुनर्नियुक्ति। फिर उसी जगह पर मुकर्रंरी।

बहाव–संज्ञा पुं० बहने का भाव या क्रिया।

बहिः–अव्य० बाहर।

बहित्र–संज्ञा पुं० नाव।

बहिन–संज्ञा स्त्री० माता की कन्या। भगिनी।

बहिरंग–वि० बाहरी। बाहरवाला।

बहिर्गत–वि० बाहर आया या निकला हुआ।

बहिष्कार–संज्ञा पुं० [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २. हटाना।

बहिष्कृत–वि० बाहर किया हुआ।

बही–संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब लिखने की पुस्तक।

बहु–वि० बहुत। अनेक।

बहुगुना–संज्ञा पुं० चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन।

बहुज्ञ–वि० बहुत बातें जाननेवाला। अच्छा जानकार।

बहुत–वि० १. एक दो से अधिक। अनेक। २. यथेष्ट। काफी।

बहुतात, बहुतायत–संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादती।

बहुतेरा–वि० [स्त्री० बहुतेरी] बहुत सा। क्रि० वि० बहुत प्रकार से।

बहुतेरे–वि० [हिं० बहुतेरा] संख्या में अधिक। बहुत से।

बहुधा–क्रि० वि० १. अनेक प्रकार से। २. बहुत करके। अकसर।

बहुनाद–संज्ञा पुं० रावण।

बहुमत–संज्ञा पुं० १. बहुत से लोगों की अलग अलग राय। २. बहुत से लोगों की मिलकर एक राय।

बहुमूत्र–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें रोगी का मूत्र बहुत उतरता है।

बहुमूल्य–वि० कीमती। दामी।

बहुरंगा–वि० कई रंगों का। चित्र-विचित्र।

बहुरंगी–वि० १. बहुरूपिया। २. अनेक प्रकार के करतब या चाल दिखानेवाला।

बहुरना†–क्रि० अ० लौटना। वापस आना।

बहुरि†–क्रि० वि० १. पुनः। फिर २. इसके उपरांत। पीछे।

बहुरिया†–संज्ञा स्त्री० नई बहू।

बहुरी†–संज्ञा स्त्री० भुना हुआ खड़ा अन्न। चबैना। चबेना।

बहुरूपिया–संज्ञा पुं० वह जो तरह तरह के रूप बनाकर अपनी जीविका चलाता हो।

बहुल–वि० अधिक। ज्यादा।

बहुलता–संज्ञा स्त्री० अधिकता।

बहुवचन–संज्ञा पुं० व्याकरण में वह शब्द जिससे एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है। जमा।

२. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३. कोई विशेप पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ४. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ५. मरम्मत करना। ६. मूर्ख ठहराना।

बनाफर–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक जाति।

बनावंत, बनायनतॐ†–संज्ञा पुं० विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

बनाय†–क्रि० वि० १. बिलकुल। २. अच्छी तरह से।

बनाव–संज्ञा पुं० १. बनावट। २. शृंगार। ३. तरकीब।

बनावट–संज्ञा स्त्री० १. रचना। २. आडंबर।

बनावटी–वि० बनाया हुआ।

बनासपती–संज्ञा स्त्री० १. जड़ी, बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। २. घास, साग-पात इत्यादि।

बनिज–संज्ञा पुं० १. व्यापार। २. व्यापार की वस्तु।

बनिजारिन, बनिजारीॐ†–संज्ञा स्त्री० बनजारा जाति की स्त्री।

बनितॐ†–संज्ञा स्त्री० बानक। वेप।

बनिता–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. पत्नी।

बनिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० बनियाइन] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। २. आटा, दाल आदि बेचनेवाला।

बनियाइन–संज्ञा स्त्री० गंजी।

बनिस्वत–अव्य० अपेक्षा।

बनी–संज्ञा स्त्री० १. वनस्थली। २. वाटिका।

संज्ञा स्त्री० [हिं० बना] दुलहिन।

संज्ञा पुं० बनिया।

बनीनी–संज्ञा स्त्री० बनिये की स्त्री।

बनीरॐ–संज्ञा पुं० बेंत।

बनेठी–संज्ञा स्त्री० पटेबाज़ों की वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला–वि० जंगली।

बनौटी–वि० कपासी।

बपॐ†–संज्ञा पुं० बाप।

बपमार–वि० १. वह जो अपने पिता की हत्या करे। २. सबके साथ धोखा करनेवाला।

बपतिस्मा–संज्ञा पुं० ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है।

बपुॐ–संज्ञा पुं० १. शरीर। २. अवतार।

बपुखॐ–संज्ञा पुं० शरीर। देह।

बपुरा†–वि० बेचारा।

बपौती–संज्ञा स्त्री० बाप से पाई हुई जायदाद।

बप्पा†–संज्ञा पुं० पिता।

बफारा–संज्ञा पुं० औषध-मिश्रित जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना।

बबर–संज्ञा पुं० सिंह।

बबा–संज्ञा पुं० दे० "बाबा"।

बबुआ–संज्ञा पुं० [स्त्री० बबुई] १. बेटे या दामाद के लिये प्यार का संबोधन शब्द। २. रईस, जमींदार आदि।

बहुव्रीहि–संज्ञा पुं० व्याकरण में छः प्रकार के समासों में से एक जिसमें दो या अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह एक अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुश्रुत–वि० जिसने बहुत सी बातें सुनी हों।

बहुसंख्यक–वि० गिनती में बहुत। अधिक।

बहू–संज्ञा स्त्री० १. पुत्रवधू। पतोहू। २. पत्नी।

बहेड़ा–संज्ञा पुं० एक बड़ा और ऊँचा जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं

बहेतू–वि० इधर उधर मारा मारा फिरनेवाला।

बहेलिया–संज्ञा पुं० व्याध। चिड़ीमार।

बहोरि॰–अव्य० पुनः। फिर।

बाँ–संज्ञा पुं० गाय के बोलने का शब्द।

बाँक–संज्ञा स्त्री० १. भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण। २. एक प्रकार का चाँदी का गहना जो पैरों में पहना जाता है। ३. हाथ में पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी चूड़ी।
संज्ञा पुं० टेढ़ापन। वक्रता।
वि० १. टेढ़ा। घुमावदार। २. बाँका। तिरछा।

बाँकपन–संज्ञा पुं० १. टेढ़ापन। तिरछापन। २. छैलापन।

बाँका–वि० १. टेढ़ा। तिरछा। २. बहादुर। ३. सुंदर और बना-ठना।

बाँग–संज्ञा स्त्री० १. पुकार। चिल्लाहट। २. वह ऊँचा शब्द या मंत्रोच्चारण जो नमाज़ का समय बताने के लिये मुल्ला मसजिद में करता है। अज़ान।

बाँगड़–संज्ञा पुं० हिसार, रोहतक और करनाल का प्रांत। हरियाना।

बाँगड़ू–संज्ञा स्त्री० बाँगड़ प्रांत के जाटों की भाषा। हरियानी।

बाँगुर–संज्ञा पुं० पशुओं या पक्षियों को फँसाने का जाल। फंदा।

बाँचना†–क्रि० स० पढ़ना।

बांछा॰–संज्ञा स्त्री० इच्छा।

बांछित॰–वि० इच्छित। जिसकी इच्छा की जाय।

बांछी॰–संज्ञा पुं० अभिलाषा करनेवाला। चाहनेवाला।

बाँझ–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री या मादा जिसे संतान होती ही न हो। वंध्या।

बाँझपन, बाँझपना–संज्ञा पुं० बाँझ होने का भाव।

बाँट–संज्ञा स्त्री० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २. भाग।

बाँटना–क्रि० स० किसी चीज़ के कई भाग करके अलग अलग रखना। वितरण करना।

बाँटा–संज्ञा पुं० १. बाँटने की क्रिया या भाव। २ भाग। हिस्सा।

बाँदर–संज्ञा पुं० बंदर।

बाँदा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की वनस्पति जो अन्य वृक्षों की शाखाओं पर उगकर पुष्ट होती है।

बाँदी–संज्ञा स्त्री० लौंडी। दासी।

बाँध–संज्ञा पुं० नदी या जलाशय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स। बंद।

बाँधना–क्रि० स० १. कसने या जकड़ने के लिये किसी चीज़ के घेरे में

बबूल–संज्ञा पुं० ममोले कद का एक प्रसिद्ध कटिदार पेड़।
बबूला–संज्ञा पुं० १. दे० "बगूला"। २. दे० "बुलबुला"।
बभूत–संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूत"।
बम–संज्ञा पुं० विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना वह गोला जो शत्रुओं पर फेंकने के लिये बनाया जाता है।
संज्ञा पुं० शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द।
संज्ञा पुं० बग्घी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।
बमकना–क्रि० अ० बहुत शेखी हाँकना।
बमपुलिस–संज्ञा पुं० दे० "बंपुलिस"।
बयस–संज्ञा स्त्री० दे० "वय"।
बयस-सिरोमनि*†–संज्ञा पुं० युवावस्था।
बया–संज्ञा पुं० गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।
संज्ञा पुं० वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।
बयान–संज्ञा पुं० १. बखान। २. हाल।
बयाना–संज्ञा पुं० पेशगी।
क्रि० अ० बकना। ऊटपटाँग बातें करना।
बयार, बयारि*†–संज्ञा स्त्री० हवा।
बर–संज्ञा पुं० १. दूल्हा। दे० "वर"। २. आशीर्वाद-सूचक वचन।
वि० श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० बल।
संज्ञा पुं० बट वृक्ष।
संज्ञा पुं० रेखा।
अव्य० ऊपर।
वि० श्रेष्ठ।
* अव्य० बल्कि।
बरई†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरइन] पान पैदा करने या बेचनेवाला तमोली।
बरकत–संज्ञा स्त्री० १. बढ़ती। २. लाभ। ३ धन-दौलत। ४. प्रसाद।
बरकना†–क्रि० अ० १. निवारण होना। २. हटना।
बरकरार–वि० १. कायम। २. उपस्थित।
बरकाज–संज्ञा पुं० विवाह।
बरकाना†–क्रि० अ० १. कोई बुरी बात न होने देना। २. बहलाना।
बरखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।
बरखास*†–वि० दे० "बरखास्त"।
बरखास्त–वि० १. जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २. मौकूफ़।
बरगद–संज्ञा पुं० बड़ का पेड़।
बरछा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरछी] भाला नामक हथियार।
बरछैत–संज्ञा पुं० बरछा चलानेवाला।
बरजन*†–क्रि० अ० मना करना।
बरजनि*†–संज्ञा स्त्री० १. मनाही। २. रुकावट।
बरज़बान–वि० कंठस्थ।
बरज़ोर–वि० १. बलवान्। २. अत्याचारी।
क्रि० वि० ज़बरदस्ती।
बरज़ोरी*†–संज्ञा स्त्री० ज़बरदस्ती।
क्रि० वि० ज़बरदस्ती से।
बरत–संज्ञा पुं० दे० "व्रत"।
संज्ञा स्त्री० रस्सी।
बरतन–संज्ञा पुं० पात्र। भाँड़ा।
बरतना–क्रि० अ० व्यवहार करना।

जाकर गाँठ देना। २. कैद करना। पकड़कर बंद करना। ३. पानी का बहाव रोकने के लिये बाँध आदि बनाना।

बाँधनूँ–संज्ञा पुं० मंसूबा।

बांधव–संज्ञा पुं० १. भाई। बंधु। २. नातेदार। रिश्तेदार। ३. मित्र। दोस्त।

बाँबी–संज्ञा स्त्री० १. दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का भीटा। २ साँप का बिल।

बाँस–संज्ञा पुं० १. तृण जाति की एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठें होती हैं और गाँठों के बीच का स्थान प्रायः कुछ पोला होता है। २. एक नाप जो सवा तीन गज की होती है। लाठा।

बाँसली–संज्ञा स्त्री० १. बाँसुरी। मुरली। २. जालीदार लंबी पतली थैली जिसमें रुपया पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं।

बाँसुरी–संज्ञा स्त्री० बाँस का बना हुआ प्रसिद्ध बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है।

बाँह–संज्ञा स्त्री० १. भुजा। हाथ। बाहु। २. कुरते, कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा जिसमें बाँह डाली जाती है। आस्तीन।

बाई–संज्ञा स्त्री० त्रिदोषों में से वात दोष। दे० "वात"।

संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों के लिये एक आदरसूचक शब्द। २. एक शब्द जो दक्षिणी प्रांतों में प्रायः वेश्याओं के नाम के साथ लगाया जाता है।

बाईस–संज्ञा पुं० बीस और दो की संख्या या अंक।

बाउ‡–संज्ञा पुं० हवा। पवन।

बाउर†–वि० [स्त्री० बाउरी] १. बावला। पागल। २. मूर्ख। अज्ञान।

बाएँ–क्रि० वि० बाई ओर। बाई तरफ़।

बाकचाल†–वि० बहुत अधिक बोलने-वाला। बक्की। बातूनी।

बाकनाॱ‡–क्रि० अ० बकना।

बाकल†–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।

बाकला–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी मटर।

बाकी–वि० जो बच रहा हो। अव-शिष्ट। शेष।

बाग–संज्ञा पुं० उद्यान। उपवन। वाटिका।

संज्ञा स्त्री० लगाम।

बागडोर–संज्ञा स्त्री० लगाम।

बागवान–संज्ञा पुं० माली।

बागवानी–संज्ञा स्त्री० माली का काम।

बागर–संज्ञा पुं० नदी किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं।

बागी–संज्ञा पु० वह जो राज्य के विरुद्ध विद्रोह करे। राजद्रोही।

बागेसरी‡–संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. एक प्रकार की रागिनी।

बाघंबर–संज्ञा पुं० बाघ की खाल जिसे लोग बिछाने आदि के काम में लाते हैं।

बाघ–संज्ञा पुं० शेर नाम का प्रसिद्ध हिंसक जंतु।

बाघी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की गिलटी जो अधिकतर गरमी के रो-गियों के पेड़ू और जाँघ की संधि में होती है।

बाचा–संज्ञा स्त्री० १. बोलने की शक्ति,

२. रूप परिवर्तित करके काम में आने लायक करना। ३. कोई विशेष पद, मर्यादा या शक्ति आदि प्रदान करना। ४. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ५. मरम्मत करना। ६. मूर्ख ठहराना।
बनाफर–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक जाति।
बनावंत, बनायनत*†–संज्ञा पुं० विवाह करने के विचार से किसी लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।
बनाय†–क्रि० वि० १. बिलकुल। २. अच्छी तरह से।
बनाव–संज्ञा पुं० १. बनावट। २. शृंगार। ३. तरकीब।
बनावट–संज्ञा स्त्री० १. रचना। २. आडंबर।
बनावटी–वि० बनाया हुआ।
बनासपती–संज्ञा स्त्री० १. जड़ी, बूटी, पत्र, पुष्प इत्यादि। २. घास, साग-पात इत्यादि।
बनिज–संज्ञा पुं० १. व्यापार। २. व्यापार की वस्तु।
बनिजारिन, बनिजारी*†–संज्ञा स्त्री० बनजारा जाति की स्त्री।
बनित*†–संज्ञा स्त्री० बानक। वेष।
बनिता–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. पत्नी।
बनिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० बनियाइन] १. व्यापार करनेवाला व्यक्ति। २. आटा, दाल आदि बेचनेवाला।
बनियाइन–संज्ञा स्त्री० गंजी।
बनिस्वत–अव्य० अपेक्षा।
बनी–संज्ञा स्त्री० १. वनस्थली। २. वाटिका।
संज्ञा स्त्री० [हिं० बना] दुलहिन।
संज्ञा पुं० बनिया।
बनीनी–संज्ञा स्त्री० बनिये की स्त्री।
बनीर*–संज्ञा पुं० बेंत।
बनेठी–संज्ञा स्त्री० पटेबाज़ों की वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर गोल लट्टू लगे रहते हैं।
बनैला–वि० जंगली।
बनौटी–वि० कपासी।
बप*†–संज्ञा पुं० बाप।
बपमार–वि० १. वह जो अपने पिता की हत्या करे। २. सबके साथ धोखा करनेवाला।
बपतिस्मा–संज्ञा पुं० ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार जो किसी व्यक्ति को ईसाई बनाने के समय किया जाता है।
बपु*–संज्ञा पुं० १. शरीर। २. अवतार।
बपुख*–संज्ञा पुं० शरीर। देह।
बपुरा†–वि० बेचारा।
बपौती–संज्ञा स्त्री० बाप से पाई हुई जायदाद।
बप्पा†–संज्ञा पुं० पिता।
बफारा–संज्ञा पुं० औषध-मिश्रित जल की भाप से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना।
बबर–संज्ञा पुं० सिंह।
बबा–संज्ञा पुं० दे० "बाबा"।
बबुआ–संज्ञा पुं० [स्त्री० बबुई] १. बेटे या दामाद के लिये प्यार का संबोधन शब्द। २. रईस, जमींदार आदि।

बानिक–संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार।
बानिन–संज्ञा स्त्री० बनिये की स्त्री।
बानिया–संज्ञा पुं० दे० "बनिया"।
बानी–संज्ञा स्त्री० १. वचन। मुँह से निकला हुआ शब्द। २. मनौती। प्रतिज्ञा। ३. सरस्वती।
बानैत–संज्ञा पुं० १. बाना फेरनेवाला। २. बाण चलानेवाला। ३. योद्धा।
बाप–संज्ञा पुं० पिता। जनक।
बापिका०–संज्ञा स्त्री० दे० "वापिका"।
बापुरा–वि० १. जिसकी कोई गिनती न हो। तुच्छ। २. दीन।
बापू–संज्ञा पुं० १. दे० "बाप"। २. दे० "बाबू"।
बाफ़–संज्ञा स्त्री० दे० "भाप"।
बाफ़ता–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।
बाब–संज्ञा पुं० परिच्छेद। अध्याय।
बाबत–संज्ञा स्त्री० १. संबंध। २. विषय।
बाबा–संज्ञा पुं० १. पिता। २. पितामह। दादा। ३. साधु-संन्यासियों के लिये आदर-सूचक शब्द। ४. बूढ़ा पुरुष।
बाबू–संज्ञा पुं० १. राजा के नीचे उसके बंधु-बांधवों या और क्षत्रिय ज़मींदारों के लिये प्रयुक्त शब्द। २. एक आदर-सूचक शब्द। भलामानुस। † ३. पिता का संबोधन।
बाबूना–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा जिसके फूलों का तेल बनता है।
बाभन–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्मण"।
बायक०–संज्ञा पुं० १. कहनेवाला। बतलानेवाला। २. पढ़नेवाला। बाँचनेवाला। ३. दूत।
बायन०–संज्ञा पुं० १. वह मिठाई आदि जो उत्सवादि के उपलक्ष में इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजते हैं। २. भेंट।
संज्ञा पुं० बयाना। अगाऊ।
बायबिडंग–संज्ञा पुं० एक लता जिसमें मटर के बराबर गोल फल लगते हैं जो औषध के काम आते हैं।
बायवी–वि० बाहरी। अपरिचित।
बायाँ–वि० किसी प्राणी के शरीर के उस पार्श्व में पड़नेवाला जो उसके पूर्वाभिमुख खड़े होने पर उत्तर की ओर हो। 'दहिना' का उलटा।
बायें–क्रि० वि० १ बाईं ओर। २. विपरीत। विरुद्ध।
बारंबार–क्रि० वि० बारबार। पुनः पुनः। लगातार।
बारगह–संज्ञा स्त्री० १. डेवढ़ी। २. डेरा। खेमा। तंबू।
बारजा–संज्ञा पुं० मकान के सामने दरवाज़ों के ऊपर पाटकर बढ़ाया हुआ बरामदा।
बारतिय०–संज्ञा स्त्री० दे० "वार-स्त्री"।
बारदाना–संज्ञा पुं० १. व्यापार की चीज़ों के रखने का बरतन या वेठन। २. फ़ौज के खाने-पीने का सामान। रसद।
बारन०–संज्ञा पुं० दे० "वारण"।
बारना–क्रि० अ० निवारण करना। मना करना। रोकना।
क्रि० स० बालना। जलाना।
क्रि० स० दे० "वारना"।
बारवधू०–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
बारबरदार–संज्ञा पुं० वह जो सामान ढोता हो। बोझ ढोनेवाला।
बारबरदारी–संज्ञा स्त्री० सामान ढोने

बबूल–संज्ञा पुं० मझोले कद का एक प्रसिद्ध काँटेदार पेड़।
बबूला–संज्ञा पुं० १. दे० "बगूला"। २. दे० "बुलबुला"।
बभूत–संज्ञा स्त्री० दे० "भभूत" या "विभूत"।
बम–संज्ञा पुं० विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना वह गोला जो शत्रुओं पर फेंकने के लिये बनाया जाता है।
संज्ञा पुं० शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द।
संज्ञा पुं० बग्गी, फिटन आदि में आगे की ओर लगा हुआ वह लंबा बाँस जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।
बमकना–क्रि०अ० बहुत शेखी हाँकना।
बमपुलिस–संज्ञा पुं० दे० "बंपुलिस"।
बयस–संज्ञा स्त्री० दे० "वय"।
बयस-सिरोमनि⊙†–संज्ञा पुं० युवावस्था।
बया–संज्ञा पुं० गौरैया के आकार और रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।
संज्ञा पुं० वह जो अनाज तौलने का काम करता हो।
बयान–संज्ञा पुं० १. बखान। २. हाल।
बयाना–संज्ञा पुं० पेशगी।
क्रि० अ० बकना। ऊटपटाँग बातें करना।
बयार, बयारि⊙†–संज्ञा स्त्री० हवा।
बर–संज्ञा पुं० १. दूल्हा। दे० "वर"। २. आशीर्वाद-सूचक वचन।
वि० श्रेष्ठ।
संज्ञा पुं० बल।
संज्ञा पुं० वट वृक्ष।
संज्ञा पुं० रेखा।
अव्य० ऊपर।
वि० श्रेष्ठ।
⊙ अव्य० बल्कि।
बरई†–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरइन] पान पैदा करने या बेचनेवाला तमोली।
बरकत–संज्ञा स्त्री० १. बढ़ती। २. लाभ। ३ धन-दौलत। ४. प्रसाद।
बरकना†–क्रि० अ० १. निवारण होना। २. हटना।
बरक़रार–वि० १. क़ायम। २. उपस्थित।
बरकाज–संज्ञा पुं० विवाह।
बरकाना†–क्रि० अ० १. कोई बुरी बात न होने देना। २. बहलाना।
बरखा⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।
बरखास⊙†–वि० दे० "बरख़ास्त"।
बरख़ास्त–वि० १. जिसका विसर्जन कर दिया गया हो। २. मौक़ूफ़।
बरगद–संज्ञा पुं० बड़ का पेड़।
बरछा–संज्ञा पुं० [स्त्री० बरछी] भाला नामक हथियार।
बरछैत–संज्ञा पुं० बरछा चलानेवाला।
बरजन⊙†–क्रि० अ० मना करना।
बरजनि⊙†–संज्ञा स्त्री० १. मनाही। २. रुकावट।
बरज़बान–वि० कंठस्थ।
बरज़ोर–वि० १. बलवान्। २. अत्याचारी।
क्रि० वि० ज़बरदस्ती।
बरज़ोरी⊙†–संज्ञा स्त्री० ज़बरदस्ती।
क्रि० वि० ज़बरदस्ती से।
बरत–संज्ञा पुं० दे० "व्रत"।
संज्ञा स्त्री० रस्सी।
बरतन–संज्ञा पुं० पात्र। भाँड़ा।
बरतना–क्रि० अ० व्यवहार करना।

का काम या मज़दूरी।
बारमुखी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
बारह–वि० जो संख्या में दस और दो हो। बारह की संख्या या अंक। १२।
बारहखड़ी–संज्ञा स्त्री० वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अः इन बारह स्वरों को, मात्रा के रूप में लगाकर, बोलते या लिखते हैं।
बारहदरी–संज्ञा स्त्री० चारों ओर से खुली वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हों।
बारहबान–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत अच्छा सोना।
बारहमासा–संज्ञा पुं० वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेषताओं का वर्णन विरही के मुँह से कराया गया हो।
बारहमासी–वि० सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला।
बारहसिंगा–संज्ञा पुं० हिरन की जाति का एक प्रसिद्ध पशु।
बारहीं–संज्ञा स्त्री० बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही।
बारा–वि० बालक।
संज्ञा पुं० बालक। लड़का।
बारात–संज्ञा स्त्री० किसी के विवाह में उसके घर के लोगों और इष्ट-मित्रों का मिलकर वधू के घर जाना। बरयात्रा।
बारानी–वि० बरसाती।
संज्ञा स्त्री० १. वह भूमि जिसमें केवल बरसात के पानी से फ़सल उत्पन्न होती हो। २. वह कपड़ा जो पानी से बचने के लिये बरसात में पहना या ओढ़ा जाता हो।
बारिगर–संज्ञा पुं० हथियारों पर बाढ़ रखनेवाला। सिकलीगर।
बारिधर–संज्ञा पुं० १. बादल। बारिद। मेघ। २. एक वर्णवृत्त।
बारिश–संज्ञा स्त्री० १. वर्षा। वृष्टि। २. वर्षा ऋतु।
बारी–संज्ञा स्त्री० १ किनारा। तट। २. छोर पर का भाग। हाशिया। ३. बगीचे, खेत आदि के चारों ओर रोकने के लिये बनाया हुआ घेरा। बाढ़। ४. बरतन के मुँह का घेरा। औंठ। ५. पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाढ़।
संज्ञा स्त्री० १. वह स्थान जहाँ पेड़ लगाए गए हों। बगीचा। २. मेड़ आदि से घिरा स्थान। क्यारी। ३. घर। मकान। ४. खिड़की। झरोखा। ५. जहाज़ों के ठहरने का स्थान। बंदरगाह।
संज्ञा पुं० एक जाति जो अब पत्तल, दोने बनाती और सेवा करती है।
संज्ञा स्त्री० आगे पीछे के सिलसिले के मुताबिक़ आनेवाला मौक़ा। अवसर। पारी।
बारीक–वि० १. महीन। पतला। २. सूक्ष्म। ३. जो बिना अच्छी तरह ध्यान से सोच-समझ में न आवे।
बारीकी–संज्ञा स्त्री० १. महीनपन। पतलापन। २. गुण। विशेषता। खूबी।
बारू–संज्ञा पुं० दे० "बालू"।
बारुद–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का

क्रि० स० काम में लाना।

बरतरफ़-वि० १. किनारे। २. बरखास्त।

बरताना-क्रि० स० बाँटना।

बरताव-संज्ञा पुं० बरतने का ढंग।

बरती-वि० जिसने उपवास किया या व्रत रखा हो।

बरतोर†-संज्ञा पुं० वह फुंसी या फोड़ा जो बाल उखाड़ने से हो।

बरदाना†-क्रि० स० जोड़ा खिलाना।

बरदाश्त-संज्ञा स्त्री० सहन।

बरधा-संज्ञा पुं० बैल।

बरन*-संज्ञा पुं० दे० "वर्ण"।

बरनन*-संज्ञा पुं० दे० "वर्णन"।

बरना-क्रि० स० १. ब्याहना। २. कोई काम करने के लिये किसी को चुनना या नियुक्त करना। ३. दान देना।
† क्रि० अ० दे० "जलना"।

बरफ़-संज्ञा स्त्री० दे० "बर्फ़"।

बरफ़ी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।

बरबंड*†-वि० १. बलवान्। २. प्रतापशाली।

बरबट*-क्रि० वि० दे० "बरबस"।

बरबर†-संज्ञा स्त्री० बकबक।
संज्ञा पुं० दे० "बर्बर"।

बरबस-क्रि० वि० १. बलपूर्वक। २. व्यर्थ।

बरबाद-वि० नष्ट।

बरबादी-संज्ञा स्त्री० नाश।

बरम*-संज्ञा पुं० कवच।

बरमा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का, लोहे का, एक प्रसिद्ध औज़ार।

बरमी-संज्ञा पुं० बरमा देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० बरमा देश की भाषा।
वि० बरमा-संबंधी।

बरम्हा-संज्ञा पुं० १. दे० "ब्रह्मा"। २. दे० "बरमा"।

बरवै-संज्ञा पुं० १९ मात्राओं का एक छंद।

बरषा*-संज्ञा स्त्री० १. वृष्टि। २. वर्षा काल।

बरषासन*†-संज्ञा पुं० एक वर्ष की भोजन-सामग्री।

बरस-संज्ञा पुं० वर्ष। साल।

बरसगाँठ-संज्ञा स्त्री० वह दिन जिसमें किसी का जन्म हुआ हो। जन्मदिन।

बरसना-क्रि० स० वर्षा का जल गिरना।

बरसाइत†-संज्ञा स्त्री० जेठ बदी अमावस, जिस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री का पूजन करती हैं।

बरसात-संज्ञा स्त्री० वर्षा ऋतु।

बरसाती-वि० बरसात का।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का ढीला कपड़ा जिसे वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भीगता।

बरसाना-क्रि० स० वर्षा करना।

बरसी-संज्ञा स्त्री० मृतक के उद्देश से किया जानेवाला वार्षिक श्राद्ध।

बरसौहाँ-वि० बरसनेवाला।

बरहा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० बरही] खेतों में सिंचाई के लिये बनी हुई छोटी नाली।
संज्ञा पुं० मोटा रस्सा।
संज्ञा पुं० मोर।

बरही-संज्ञा पुं० १. मयूर। २. मुरगा।

चूर्ण या बुकनी जिसमें आग लगने से तोप-बंदूक चलती हैं। दारू। २. एक प्रकार का धान।
बारे में-अव्य० प्रसंग में। विषय में।
बाल-संज्ञा पुं० बालक।
* संज्ञा स्त्री० दे० "बाला"।
वि० जो सयाना न हो।
संज्ञा पुं० सूत की सी वह वस्तु जो जंतुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है और जो अधिकतर जंतुओं में इतनी अधिक होती है कि उनका चमड़ा ढका रहता है। लोम और केश।
संज्ञा स्त्री० कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुछे रहते हैं।
बालक-संज्ञा पुं० १. लड़का। पुत्र। २. थोड़ी उम्र का बच्चा। शिशु।
बालकता-संज्ञा स्त्री० लड़कपन।
बालकताई-संज्ञा स्त्री० १. बाल्यावस्था। २. नासमझी।
बालकपन-संज्ञा पुं० १. बालक होने का भाव। २. लड़कपन।
बालखिल्य-संज्ञा पुं० पुराणानुसार ऋषियों का एक समूह जिसका प्रत्येक ऋषि अँगूठे के बराबर माना गया है।
बालगोविंद-संज्ञा पुं० दे० "बालकृष्ण"।
बालग्रह-संज्ञा पुं० बालकों के प्राणघातक नौ ग्रह।
बालछड़-संज्ञा स्त्री० जटामासी।
बालटी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की डोलची जिसमें उठाने के लिये एक दस्ता लगा रहता है।
बालतंत्र-संज्ञा पुं० बालकों के लालन-पालन आदि की विद्या। कौमार-भृत्य। दायागिरी।
बालतोड़-संज्ञा पुं० बाल टूटने के कारण होनेवाला फोड़ा।
बालना-क्रि० स० जलाना।
बालपन-संज्ञा पुं० बालक होने का भाव।
बाल बच्चे-संज्ञा पुं० लड़के-बाले। संतान। औलाद।
बालबोध-संज्ञा स्त्री० देवनागरी लिपि।
बालभोग-संज्ञा पुं० वह नैवेद्य जो देवताओं, विशेषतः बालकृष्ण आदि की मूर्त्तियों के सामने प्रातःकाल रखा जाता है।
बालम-संज्ञा पुं० १. पति। स्वामी। २. प्रणयी। प्रेमी। जार।
बालम खीरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा खीरा।
बाललीला-संज्ञा स्त्री० बालकों के खेल। बालकों की क्रीड़ा।
बालविधु-संज्ञा पुं० शुक्लपक्ष की द्वितीया का चंद्रमा।
बालसूर्य-संज्ञा पुं० प्रातःकाल के उगते हुए सूर्य।
बाला-संज्ञा स्त्री० १. जवान स्त्री। बारह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। २. दो वर्ष तक की अवस्था की लड़की। ३. कन्या। ४. दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या का नाम। ५. एक वर्णवृत्त।
संज्ञा पुं० जो बालकों के समान हो। अज्ञान। सरल। निश्छल।
बालाई-संज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।
बालाखाना-संज्ञा पुं० कोठे के ऊपर की बैठक। मकान के ऊपर का कमरा।

संज्ञा स्त्री० प्रसूता का वह स्नान तथा अन्यान्य क्रियाएँ जो संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होती हैं।
संज्ञा स्त्री० पत्थर आदि भारी बोझ उठाने का मोटा रस्सा।
बरहीमुखग्र|-संज्ञा पुं० देवता।
संज्ञा पुं० भुजदंड पर पहनने का एक आभूषण।
बराक-संज्ञा पुं० १. शिव। २. युद्ध।
वि० १. शोचनीय। २. नीच।
बराट-संज्ञा स्त्री० कौड़ी।
बरात-संज्ञा स्त्री० वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर के साथ कन्यावालों के यहाँ जाते हैं।
बराती-संज्ञा पुं० बरात में वर के साथ कन्या के घर तक जानेवाला।
बराना-क्रि० अ० १. बचाना। २. रक्षा करना।
क्रि० स० छाँटना।
† क्रि० स० दे० "बालना"। (जलाना)।
बराबर-वि० १. तुल्य। एक सा। २. समतल।
क्रि० वि० १. लगातार। २. एक साथ। ३. हमेशा।
बराबरी-संज्ञा स्त्री० १. समानता। २. सादृश्य। ३. मुकाबला।
बरामद-वि० खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।
बरामदा-संज्ञा पुं० १. छज्जा। २. दालान।
बरायन-संज्ञा पुं० लोहे का वह छल्ला जो ब्याह के समय दूल्हे के हाथ में पहनाया जाता है।
बराव-संज्ञा पुं० बचाव।
बरास-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कपूर।
बरियाई|-क्रि० वि० बल-पूर्वक।
संज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव।
बरियारा-संज्ञा पुं० एक छोटा झाड़-दार छतनार पौधा।
बरिवंडग्र-वि० दे० "बरबंड"।
बरी-संज्ञा स्त्री० १. गोल टिकिया। २. उर्द या मूँग की पीठी के सुखाए हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े।
वि० मुक्त।
बरु|ग्र-अव्य० भले ही।
संज्ञा पुं० दे० "बर"।
बरुआ|-संज्ञा पुं० १. बटु। ब्रह्म-चारी। २. ब्राह्मणकुमार।
बरुनी-संज्ञा स्त्री० पलक के किनारे पर के बाल।
बरेखी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों का भुजा पर पहनने का एक गहना।
संज्ञा स्त्री० विवाह-संबंध के लिये वर या कन्या देखना। विवाह की ठहरौनी।
बरेक-संज्ञा पुं० वह द्रव्य जो कन्या-पक्ष से वरपक्ष को संबंध पक्का करने के लिये दिया जाता है।
ग्रसंज्ञा पुं० सेना।
बरोठा-संज्ञा पुं० १. ड्योढ़ी। २. बैठक।
बरोह-संज्ञा स्त्री० बरगद के पेड़ के ऊपर की डालियों में टँगी हुई वह शाखा जो जमीन पर जाकर जम जाती है।
बरौठा|-संज्ञा पुं० दे० "बरोठा"।
बरौनी|-संज्ञा स्त्री० दे० "बरुनी"।
बर्क-संज्ञा स्त्री० बिजली।
वि० तेज़।
बर्जना-क्रि० स० दे० "बरजना"।

बालापन–संज्ञा पुं० दे० "बालपन"।
बालार्क–संज्ञा पुं० १. प्रातःकाल का सूर्य। २. कन्या राशि में स्थित सूर्य।
बालि–संज्ञा पुं० पंपा, किष्किंधा का वानर राजा जो अंगद का पिता और सुग्रीव का बड़ा भाई था।
बालिका–संज्ञा स्त्री० १. छोटी लड़की। कन्या। २. पुत्री।
बालिग–संज्ञा पुं० वह जो बाल्यावस्था को पार कर चुका हो। जवान। प्राप्त-वयस्क।
बालिश–संज्ञा स्त्री० तकिया।
बालिश्त–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
बाली–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक प्रसिद्ध आभूषण।
संज्ञा स्त्री० जौ, गेहूँ आदि के पौधों की बाल।
संज्ञा पुं० दे० "बालि"।
बालुका–संज्ञा स्त्री० रेत। बालू।
बालू–संज्ञा पुं० चट्टानों आदि का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों पर से बह आता है और नदियों के किनारों पर, अथवा ऊसर ज़मीन या रेगिस्तानों में बहुत पाया जाता है। रेणुका। रेत।
बालूदानी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की झँझरीदार डिबिया जिसमें लोग बालू रखते हैं। इस बालू से स्याही सुखाने का काम लेते हैं।
बालूसाही–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
बाल्य–संज्ञा पुं० १. लड़कपन। २. बालक होने की अवस्था।
बाल्यावस्था–संज्ञा स्त्री० प्रायः सोलह सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।
बाव–संज्ञा पुं० १. वायु। हवा। २. बाई। ३. अपान वायु।
बावड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "बावली"।
बावन–संज्ञा पुं० दे० "वामन"।
संज्ञा पुं० पचास और दो की संख्या। ५२।
बावरची–संज्ञा पुं० भोजन पकानेवाला। रसोइया। (मुसल०)
बावरचीखाना–संज्ञा पुं० भोजन पकाने का स्थान। रसोईघर। (मुसल०)
बावरा–वि० दे० "बावला"।
बावला–वि० १. पागल। विक्षिप्त। सनकी। २. मूर्ख।
बावलापन–संज्ञा पुं० पागलपन। सिड़ीपन। झक।
बावली–संज्ञा स्त्री० १. चौड़े मुँह का कुआँ जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों। २. छोटा गहरा तालाब।
बाशिंदा–संज्ञा पुं० निवासी।
बाष्प–संज्ञा पुं० १. भाप। २. लोहा। ३. अश्रु। आँसू।
बासंतिक–वि० बसंत ऋतु संबंधी।
बास–संज्ञा पुं० १. रहने की क्रिया या भाव। निवास। २. बू। गंध। महक। ३. एक छंद का नाम।
संज्ञा स्त्री० वासना। इच्छा।
संज्ञा पुं० छोटा कपड़ा।
संज्ञा स्त्री० १. अग्नि। आग। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३. तेज़ धारवाली छुरी, चाकू, कैंची इत्यादि

बर्त्तना–क्रि० स० दे० "बरतना"।
बर्फ़–संज्ञा स्त्री० १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणुओं की तह जो वातावरण की ठंढक के कारण ज़मीन पर गिरती है। २. बहुत अधिक ठंढक के कारण जमा हुआ पानी जो ठोस और पारदर्शी होता है। ३. मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने का जल आदि ठंढा करते हैं।
बर्फ़िस्तान–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बर्फ़ ही बर्फ़ हो।
बर्फ़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "बरफ़ी"।
बर्बर–संज्ञा पुं० जंगली आदमी। वि० जंगली।
बर्बरी–संज्ञा स्त्री० बनतुलसी।
बर्राक़–वि० १. चमकीला। २. तेज़। ३. चालाक। ४. सफ़ेद।
बर्राना–क्रि० अ० १. व्यर्थ बोलना। २. नींद या बेहोशी में बकना।
बर्रै–संज्ञा पुं० तितैया। हड्डा।
बलंद–वि० ऊँचा।
बल–संज्ञा पुं० १. शक्ति। २. सहारा। ३. सेना। ४. पहलू। संज्ञा पुं० १. ऐंठन। २. फेरा। ३. सिकुड़न। ४. लचक।
बलकना–क्रि० अ० १. उबलना। २. उमगना।
बलकारक–वि० बलजनक।
बलकल※‡–संज्ञा पुं० दे० "वल्कल"।
बलगम–संज्ञा पुं० कफ।
बलदाऊ, बलदेव–संज्ञा पुं० दे० "बलराम"।
बलना–क्रि० अ० जलना।
बलबलाना–क्रि० अ० १. ऊँट का बोलना। २. व्यर्थ बकना।
बलबलाहट–संज्ञा स्त्री० १. ऊँट की बोली। २. व्यर्थ अहंकार।
बलबीर※–संज्ञा पुं० बलराम के भाई श्रीकृष्ण।
बलभद्र–संज्ञा पुं० बलदेवजी।
बलभी–संज्ञा स्त्री० मकान में सबसे ऊपरवाली कोठरी।
बलम※–संज्ञा पुं० पति।
बलय※–संज्ञा पुं० दे० "वलय"।
बलराम–संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी से उत्पन्न हुए थे।
बलबंड※–वि० बली।
बलवंत–वि० बलवान्।
बलवा–संज्ञा पुं० दंगा।
बलवाई–संज्ञा पुं० विद्रोही।
बलवान्–वि० [स्त्री० बलवती] मज़बूत।
बलशाली–वि० दे० "बलवान्"।
बलशील–वि० बली।
बला–संज्ञा स्त्री० १. आपत्ति। २ दुःख। ३. व्याधि।
बलाइ※–संज्ञा स्त्री० दे० "बलाय"।
बलाक–संज्ञा पुं० बक।
बलाका–संज्ञा स्त्री० बगली।
बलाग्र–संज्ञा पुं० १. सेनापति। २. सेना का अगला भाग। वि० बलशाली।
बलाढ्य–वि० बलवान्।
बलात्–क्रि० वि० १. बलपूर्वक। २. हठात्।
बलात्कार–संज्ञा पुं० १. ज़बरदस्ती कोई काम करना। २. किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।
बलाध्यक्ष–संज्ञा पुं० सेनापति।
बलाय–संज्ञा स्त्री० दे० "बला"।

छोटे शस्त्र जो तोपों में भरकर फेंके जाते हैं।

बासकसज्जा–संज्ञा स्त्री० वह नायिका जो अपने पति या प्रियतम के आने के समय केलि-सामग्री सज्जित करे।

बासन–संज्ञा पुं० बरतन।

बासना–संज्ञा स्त्री० १. दे० "वासना"। २. गंध। महक। बू। क्रि० स० सुगंधित करना।

बासमती–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान। इसका चावल पकने पर सुगंध देता है।

बासर–संज्ञा पुं० १. दिन। २. प्रातः-काल। सुबह। ३. वह राग जो सबेरे गाया जाता है।

बासव–संज्ञा पुं० इंद्र।

बासा–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी हुई रसोई मिलती है। संज्ञा पुं० दे० "बास"।

बासी–वि० देर का बना हुआ। जो ताज़ा न हो। (खाद्य पदार्थ)

बाहकी०–संज्ञा स्त्री० पालकी ले चलने-वाली स्त्री। कहारिन।

बाहनी०–संज्ञा स्त्री० सेना।

बाहम–क्रि० वि० आपस में।

बाहर–क्रि० वि० किसी निश्चित अथवा कल्पित सीमा या मर्य्यादा से हट-कर, अलग या निकला हुआ।

बाहरी–वि० १. बाहरवाला। २. पराया। गैर। ३. ऊपरी।

बाहिज०–संज्ञा पुं० ऊपर से। देखने में।

बाहिनी०–संज्ञा स्त्री० दे० "वाहिनी"।

बाहु–संज्ञा स्त्री० भुजा। बाँह।

बाहुक–संज्ञा पुं० १. राजा नल का उस समय का नाम जब वे अयोध्या के राजा के सारथी बने थे। २. नकुल।

बाहुत्राण०–संज्ञा पुं० वह दस्ताना जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।

बाहुबल–संज्ञा पुं० पराक्रम। बहादुरी।

बाहुमूल–संज्ञा पुं० कंधे और बाँह का जोड़।

बाहुयुद्ध–संज्ञा पुं० कुश्ती।

बाहुल्य–संज्ञा पुं० बहुतायत। अधि-कता।

बाहुहज़ार–संज्ञा पुं० दे० "सहस्रबाहु"।

बाह्य–वि० बाहरी। बाहर का। संज्ञा पुं० १. भार ढोनेवाला पशु। २. सवारी। यान।

बाह्लीक–संज्ञा पुं० कांबोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख़।

बिंग०†–संज्ञा पुं० दे० "व्यंग्य"।

बिंजन०†–संज्ञा पुं० दे० "व्यंजन"।

बिंद०†–संज्ञा पुं० १. पानी की बूँद। २. बिंदी। माथे का गोल तिलक।

बिंदा–संज्ञा स्त्री० एक गोपी का नाम। संज्ञा पुं० माथे पर का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। बुंदा।

बिंदी–संज्ञा स्त्री० सुन्ना। शून्य। सिफ़र। बिंदु।

बिंध†–संज्ञा पुं० दे० "विंध्याचल"।

बिंधना–क्रि० अ० बींधा जाना। छेदा जाना।

बिंब–संज्ञा पुं० १. प्रतिबिंब। छाया। अकस। २. कमंडलु। ३. प्रति-मूर्त्ति। ४. कुँदरू नामक फल। ५. सूर्य्य या चंद्रमा का मंडल। ६. कोई मंडल। ७. आभास। ८. एक प्रकार का छंद।

बलाहक–संज्ञा पुं० मेघ।
बलि–संज्ञा पुं० १. कर। २. उपहार। ३. चढ़ावा। ४. वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय। ५. प्रह्लाद का पौत्र जो दैत्यों का राजा था।
संज्ञा स्त्री० सखी।
बलित–वि० १. बलिदान चढ़ाया हुआ। २. मारा हुआ।
बलिदान–संज्ञा पुं० १ देवता के उद्देश्य से नैवेद्यादि पूजा की सामग्री चढ़ाना। २. बकरे आदि पशु देवता के उद्देश्य से मारना।
बलिपशु–संज्ञा पुं० वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जाय।
बलिप्रदान–संज्ञा पु० बलिदान।
बलिवर्द–संज्ञा पुं० १. साँड़। २ बैल।
बलिष्ठ–वि० अधिक बलवान्।
बलिहारी–संज्ञा स्त्री० निछावर।
बली–वि० बलवान्।
बलीमुख–संज्ञा पुं० बंदर।
बलुआ–वि० [स्त्री० बलुई] जिसमें बालू मिला हो।
बलूची–संज्ञा पुं० बलूचिस्तान का निवासी।
बलूत–संज्ञा पुं० माजूफल की जाति का एक पेड़।
बलैया–संज्ञा स्त्री० बला।
बल्कि–अव्य० १. अन्यथा। २. बेहतर।
बल्लम–संज्ञा पुं० बरछा।
बल्लमटेर–संज्ञा पुं० स्वयंसेवक।
बल्लमबर्दार–संज्ञा पुं० वह जो सवारी या बरात के साथ बल्लम लेकर चलता है।
बल्ला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० बल्ली] १. डंडे के आकार का लंबा मोटा टुकड़ा। २. मोटा डंडा। ३. डाँड़ा।
बल्ली–संज्ञा स्त्री० छोटा बल्ला।
संज्ञा स्त्री० दे० "बल्ली"।
बवँड़ना–क्रि० अ० इधर-उधर घूमना।
बवंडर–संज्ञा पुं० १. बगूला। २. आँधी।
बवना–क्रि० स० १. दे० "बोना"। २. छितराना।
क्रि० अ० छितराना।
संज्ञा पुं० दे० "वामन"।
बवासीर–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से उत्पन्न हो जाते हैं।
बसंती–वि० १. वसंत का। ऋतु-संबंधी। २. खुलते हुए पीले रंग का।
बसंदर–संज्ञा पुं० आग।
बस–वि० भरपूर। काफ़ी।
अव्य० १. पर्याप्त। २. सिर्फ़।
संज्ञा पुं० दे० "वश"।
बसना–क्रि० अ० १. निवास करना। २. निवासियों से भरा पूरा होना। ३. टिकना।
क्रि० अ० महक से भर जाना।
संज्ञा पुं० १. वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। २. थैली।
बसवार–संज्ञा पुं० छौंक।
बसर–संज्ञा पुं० गुज़र।
बसह–संज्ञा पुं० बैल।
बसाना–क्रि० स० १. बसने के लिये जगह देना। २. आबाद करना।
क्रि० अ० १. बसना। २. दुर्गंध देना।
क्रि० स० १. बैठाना। २. रखना।

संज्ञा पुं० दे० "बाँबी"।
बिंबा-संज्ञा पुं० कुँदरू।
बिंबिसार-संज्ञा पुं० एक प्राचीन राजा जो अजातशत्रु के पिता और गौतम बुद्ध के समकालीन थे।
बिआधि-संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।
बिआधु†-संज्ञा पुं० दे० "व्याध"।
बिआना-क्रि० स० बच्चा देना। जनना। (पशुओं के संबंध में)
बिकना-क्रि० अ० मूल्य लेकर दिया जाना। बेचा जाना। बिक्री होना।
बिकरम†-संज्ञा पुं० दे० "विक्रमादित्य"।
बिकरार‡-वि० व्याकुल।
वि० भयानक। डरावना।
बिकल†-वि० १. व्याकुल। घबराया हुआ। २. बेचैन।
बिकलाई†-संज्ञा स्त्री० व्याकुलता। बेचैनी।
बिकवाना-क्रि० स० बेचने का काम दूसरे से कराना।
बिकसना-क्रि० अ० १. खिलना। फूलना। २. बहुत प्रसन्न होना।
बिकसाना-क्रि० अ० दे० "बिकसना"।
क्रि० स० १. विकसित करना। खिलाना। २. प्रसन्न करना।
बिकाऊ-वि० जो बिकने के लिये हो। बिकनेवाला।
बिकाना†-क्रि० अ० दे० "बिकना"।
बिकार⊙†-संज्ञा पुं० दे० "विकार"।
बिकारी‡-वि० १. जिसका रूप बिगड़कर और का और हो गया हो। २. बुरा। हानिकारक।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टेढ़ी पाई जो अंकों आदि के आगे संख्या या मान सूचित करने के लिये लगाते हैं।
बिक्री-संज्ञा स्त्री० १. किसी पदार्थ के बेचे जाने की क्रिया या भाव। विक्रय। २. बेचने से मिलनेवाला धन।
बिख†-संज्ञा पुं० दे० "विष"।
बिखम-वि० दे० "विषम"।
बिखरना-क्रि० अ० छितराना। तितर-बितर हो जाना।
बिखराना-क्रि० स० दे० "बिखेरना"।
बिखेरना-क्रि० स० इधर-उधर फैलाना। छितराना।
बिगड़ना-क्रि० अ० १. किसी पदार्थ के गुण या रूप आदि में विकार होना। खराब हो जाना। २. खराब दशा में आना। ३. नीति-पथ से भ्रष्ट होना। बदचलन होना। ४. क्रुद्ध होना। ५. विरोधी होना।
बिगड़ैल-वि० १. हर बात में बिगड़ने या क्रोध करनेवाला। २. हठी। ज़िद्दी।
बिगर†-क्रि० वि० दे० "बगैर"।
बिगरना-क्रि० अ० दे० "बिगड़ना"।
बिगराइल†-वि० दे० "बिगड़ैल"।
बिगसना⊙-क्रि० अ० दे० "बिकसना"।
बिगहा-संज्ञा पुं० दे० "बीघा"।
बिगाड़-संज्ञा पुं० १. बिगड़ने की क्रिया या भाव। २. खराबी। दोष। ३. वैमनस्य। झगड़ा। लड़ाई।
बिगाड़ना-क्रि० स० १. किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। २. किसी पदार्थ को बनाते समय उसमें ऐसा विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३. नीति या कुमार्ग में

*क्रि० अ० वश या ज़ोर चलना।
क्रि० अ० बास देना।

बसिऔरा–संज्ञा पुं० १. वर्ष की कुछ तिथियाँ जिनमें स्त्रियाँ बासी भोजन खाती हैं। २. बासी भोजन।

बसीकत, बसीगत–संज्ञा स्त्री० १. बस्ती। २. रहन।

बसीकर–वि० वश में करनेवाला।

बसीकरन*–संज्ञा पुं० दे० "वशीकरण"।

बसीठ–संज्ञा पुं० सँदेसा ले जानेवाला दूत।

बसीठी–संज्ञा स्त्री० दूताव।

बसीना†*–संज्ञा पु० रहन।

बसूला–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० बसूली] एक औज़ार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते और गढ़ते हैं।

बसेरा–वि० बसनेवाला।
संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ रहकर यात्री रात बिताते हैं। २. वह स्थान जहाँ चिड़ियाँ ठहरकर रात बिताती हैं। ३. टिकने या बसने का भाव।

बसेरो*–वि० निवासी।

बसौंधी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सुगंधित और लच्छेदार रबड़ी।

बस्ता–संज्ञा पुं० कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें काग़ज़, बही या पुस्तकादि बाँधकर रखते हैं।

बस्ती–संज्ञा स्त्री० आबादी।

बहँगी–संज्ञा स्त्री० काँवर। बोझ ले चलने का एक ढाँचा।

बहकना–क्रि० अ० १. भटकना। २. चूकना। ३. किसी की बात या बुलावे में आ जाना। ४. आपे में न रहना।

बहकाना–क्रि० स० १. भटकाना। २. लक्ष्यभ्रष्ट करना। ३. भुलावा देना। ४. बहलाना।

बहकावट–संज्ञा स्त्री० बहकाने की क्रिया या भाव।

बहन–संज्ञा स्त्री० दे० "बहिन"।

बहना–क्रि० अ० १. प्रवाहित होना। २. हवा का चलना।

बहनापा–संज्ञा पु० बहिन का संबंध।

बहनी*–संज्ञा स्त्री० अग्नि।

बहनेली–संज्ञा स्त्री० वह जिसके साथ बहन का संबंध स्थापित हो। बहनापा।

बहनोई–संज्ञा पुं० बहिन का पति।

बहरा–वि० [स्त्री० बहरी] जो कान से सुन न सके या कम सुने।

बहराना–क्रि० स० फुसलाना।

बहरियाना†–क्रि० स० १. निकालना। २. अलग करना।
क्रि० अ० १. बाहर की ओर होना। २. अलग होना।

बहरी–संज्ञा स्त्री० बाज़ की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

बहल–संज्ञा स्त्री० दे० "बहली"।

बहलना–क्रि० अ० मनोरंजन होना।

बहलाना–क्रि० स० १. मनोरंजन करना। २. भुलावा देना।

बहलाव–संज्ञा पुं० मनोरंजन।

बहली–संज्ञा स्त्री० रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहस–संज्ञा स्त्री० दलील।

बहसना*–क्रि० अ० १. बहस करना। २. शर्त लगाना।

बहादुर–वि० [संज्ञा बहादुरी] १. साहसी। २ शूरवीर।

लगाना। ४. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ५. व्यर्थ व्यय करना।
बिगार†–संज्ञा पुं० दे० "बिगाड़"।
बिगारि*†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगार"।
बिगारी–संज्ञा स्त्री० दे० "बेगारी"।
बिगासना–क्रि०स० विकसित करना।
बिगुन*†–वि० जिसमें कोई गुण न हो। गुण-रहित।
बिगुर–वि० जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।
बिगुरदा*†–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का हथियार।
बिगुल*†–संज्ञा पुं० अँगरेज़ी ढंग की एक प्रकार की तुरही जो प्रायः सैनिकों को एकत्र करने के लिये बजाई जाती है।
बिगुलर*†–संज्ञा पुं० फ़ौज में बिगुल बजानेवाला।
बिगोना–क्रि० स० १. नष्ट करना। बिगाड़ना। २. छिपाना। दुराना।
बिग्गाहा–संज्ञा पुं० आर्य्या छंद का एक भेद। उद्गीति।
बिग्रह–संज्ञा पुं० दे० "विग्रह"।
बिघटना–क्रि० स० विनाश करना। बिगाड़ना। तोड़ना फोड़ना।
बिघन–संज्ञा पुं० दे० "विघ्न"।
बिघनहरन*†–वि० विघ्न या बाधा को हटानेवाला।
संज्ञा पुं० गणेश। गजानन।
बिच*†–क्रि० वि० दे० "बीच"।
बिचकाना–क्रि० अ० १. बिराना। चिढ़ाना। (मुँह) २. बनाना। (मुँह)
बिचच्छन*†–वि० दे० "विचक्षण"।
बिचरना–क्रि० अ० १. इधर-उधर घूमना। चलना-फिरना। २. यात्रा करना। सफ़र करना।
बिचलना–क्रि० अ० १. विचलित होना। इधर-उधर हटना। २. हिम्मत हारना। ३. कहकर मुकरना।
बिचला–वि० जो बीच में हो। बीच का।
बिचलाना*†–क्रि० स० १. विचलित करना। डिगाना। २. हिला देना। ३. तितर-बितर करना।
बिचवान, बिचवानी–संज्ञा पुं० बीच-बचाव करनेवाला। मध्यस्थ।
बिचारना*†–क्रि० अ० १. विचार करना। सोचना। गौर करना। २. पूछना। प्रश्न करना।
बिचारमान–वि० १. विचार करने-वाला। २. विचारने के योग्य।
बिचारा–वि० दे० "बेचारा"।
बिचारी†–संज्ञा पुं० विचार करनेवाला।
बिचाल*–संज्ञा पुं० १. अलग करना। २. अंतर। फ़र्क़।
बिचेत*†–वि० मूर्च्छित। बेहोश।
बिच्छू–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा ज़हरीला जानवर।
बिछना–क्रि० अ० बिछाना का अक-र्मक रूप। बिछाया जाना।
बिछवाना–क्रि० स० बिछाने का काम दूसरे से कराना।
बिछाना–क्रि० स० १. (बिस्तर या कपड़े आदि को) ज़मीन पर उतनी दूर तक फैलाना, जितनी दूर तक फैल सके। २. किसी चीज़ को ज़मीन पर कुछ दूर तक फैला देना। बिखेरना। बितराना।
बिछावन†–संज्ञा पुं० दे० "बिछौना"।
बिछिया†–संज्ञा स्त्री० पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।
बिछित*†–वि० दे० "विक्षिप्त"।

बिछुआ–संज्ञा पुं० १. पैर में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार की छुरी। ३. एक प्रकार की करधनी।

बिछुड़न†–संज्ञा स्त्री० बिछुड़ने या अलग होने का भाव।

बिछुड़ना–क्रि० अ० १. अलग होना। जुदा होना। २. प्रेमियों का एक दूसरे से अलग होना। वियोग होना।

बिछुरना॰–क्रि० अ० दे० "बिछुड़ना"।

बिछूना॰†–संज्ञा पुं० बिछुड़ा हुआ। जो बिछुड़ गया हो।

बिछोड़ा–संज्ञा पुं० १. बिछुड़ने की क्रिया या भाव। २. विरह।

बिछोय, बिछोह–संज्ञा पुं० बिछोड़ा। जुदाई। विरह। वियोग।

बिछौना–संज्ञा पुं० वह कपड़ा जो बिछाया जाता हो। बिछावन। बिस्तर।

बिजन॰†–संज्ञा पुं० छोटा पंखा। बेना।
वि० एकांत स्थान।
वि० जिसके साथ कोई न हो।

बिजयसार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा जंगली पेड़।

बिजली–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है। विद्युत्। २. आकाश में सहसा उत्पन्न होनेवाला वह प्रकाश जो एक बादल से दूसरे बादल में जानेवाली वातावरण की बिजली के कारण उत्पन्न होता है। चपला। ३. आम की गुठली के अंदर की गिरी।
वि० बहुत अधिक चंचल या तेज़।

बिजाती–वि० दूसरी जाति का।

बिजायठ–संज्ञा पुं० बाँह पर पहनने का बाजूबंद। बाजू।

बिजूका, बिजूखा†–संज्ञा पुं० खेतों में पक्षियों आदि को डराकर दूर रखने के उद्देश्य से लकड़ी के ऊपर उलटी रखी हुई काली हाँड़ी।

बिजोग॰†–संज्ञा पुं० दे० "वियोग"।

बिजौरा–संज्ञा पुं० नीबू की जाति का एक वृक्ष। इसके फल बड़ी नारंगी के बराबर होते हैं।

बिज्जु॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।

बिज्जुपात॰†–संज्ञा पुं० बिजली गिरना। वज्रपात।

बिज्जुल॰†–संज्ञा पुं० त्वचा। छिलका।
संज्ञा स्त्री० बिजली। दामिनी।

बिज्जू–संज्ञा पुं० बिल्ली के आकार-प्रकार का एक जंगली जानवर।

बिज्जूहा–संज्ञा पुं० एक वर्णिक वृत्त। विमोहा।

बिझुकना॰–क्रि० अ० १. भड़कना। २. डरना।

बिझुकाना॰–क्रि० स० भड़काना।

बिट–संज्ञा पुं० १. साहित्य में नायक का वह सखा जो सब कलाओं में निपुण हो। २. वैश्य। ३. नीच। खल।

बिटारना–क्रि० स० १. घँघोलना। २. गंदा करना।

बिटिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "बेटी"।

बिट्ठल–संज्ञा पुं० १. विष्णु का एक नाम। २. बंबई प्रांत में शोलापुर के अंतर्गत पंढरपुर की एक देवमूर्ति।

बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था।

बुद्धि–संज्ञा स्त्री० विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अक्ल। समझ।

बुद्धिमत्ता–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्–वि० वह जो बहुत समझदार हो।

बुद्धिमानी–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।

बुध–संज्ञा पुं० १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

बुधवार–संज्ञा पुं० सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।

बुधि–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि"।

बुनना–क्रि० स० जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। बिनना।

बुनाई–संज्ञा स्त्री० १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मज़दूरी।

बुनावट–संज्ञा स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

बुनियाद–संज्ञा स्त्री० १. जड़। मूल। २. असलियत। वास्तविकता।

बुबुकारी–संज्ञा स्त्री० पुक्का फाड़कर रोना। ज़ोर ज़ोर से रोना।

बुभुक्षा–संज्ञा स्त्री० क्षुधा। भूख।

बुभुक्षित–वि० भूखा। क्षुधित।

बुरका–संज्ञा पुं० मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिसमें सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

बुरा–वि० जो अच्छा या उत्तम न हो। खराब।

बुराई–संज्ञा स्त्री० १. बुरे होने का भाव। खराबी। २. अवगुण। दोष। दुर्गुण।

बुरादा–संज्ञा पुं० वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।

बुर्ज–संज्ञा पुं० किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है।

बुलंद–वि० १. उत्तुंग। २. बहुत ऊँचा।

बुलबुल–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध गानेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला–संज्ञा पुं० पानी का बुल्ला। बुदबुदा।

बुलवाना–क्रि० स० बुलाने का काम दूसरे से कराना।

बुलाक–संज्ञा पुं०, स्त्री० सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।

बुलाकी–संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

बुलाना–क्रि० स० आवाज़ देना। पुकारना।

बुलावा–संज्ञा पुं० बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह–संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हों।

बुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला"।

बिठाना–क्रि० स० दे० "बैठाना"।
बिडंब–संज्ञा पुं० आडंबर।
बिडंबना॰–क्रि० अ० १. नकल। स्वरूप बनाना। २. उपहास। हँसी। निंदा।
बिड–संज्ञा पुं० दे० "विट्"।
बिडरना–क्रि० अ० इधर-उधर होना।
बिडराना–क्रि० स० १. इधर-उधर या तितर-बितर करना। २. भगाना।
बिडारना–क्रि० स० १. भयभीत करके भगाना। २. नष्ट करना।
बिड़ाल–संज्ञा पुं० १. बिल्ली। बिलाव। २. बिडालाक्ष नामक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था। ३. दोहे का बीसवाँ भेद।
बिड़ौजा–संज्ञा पुं० इंद्र।
बिढ़वना॰†–क्रि० स० १. कमाना। २. संचय करना। इकट्ठा करना।
बितना‡–संज्ञा पुं० दे० "बित्ता"।
बितरना॰†–क्रि० स० बाँटना।
बिताना–क्रि० स० (समय) व्यतीत करना।
बित्त–संज्ञा पुं० धन। दौलत।
बित्ता–संज्ञा पुं० हाथ की सब उँगलियाँ फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी। बालिश्त।
बिथरना, बिथुरना†–क्रि० अ० १. छितराना। बिखरना। २. अलग अलग होना। खिल जाना।
बिथा॰–संज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।
बिथारना–क्रि० स० छितराना। छिटकाना। बिखेरना।
बिथित॰–वि० दे० "व्यथित"।
बिदकाना–क्रि० स० १. फाड़ना। विदीर्ण करना। २. घायल करना।
बिदर–संज्ञा पुं० १. विदर्भ देश। बरार। २. एक प्रकार की उपधातु जो ताँबे और जस्ते के मेल से बनती है।
बिदरन॰†–संज्ञा स्त्री० दरार। दरज। शिगाफ़।
बिदा–संज्ञा स्त्री० १. प्रस्थान। गमन। २. रुख़सत।
बिदाई–संज्ञा स्त्री० १. बिदा होने की क्रिया या भाव। २. बिदा होने की आज्ञा। ३. वह धन जो किसी को बिदा होने के समय दिया जाय।
बिदारना†–क्रि० स० १. चीरना। फाड़ना। २. नष्ट करना।
बिदारीकंद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल कंद। बिलाई कंद।
बिदूषना॰†–क्रि० अ० दोष लगाना। कलंक लगाना।
बिदेश–संज्ञा पुं० परदेश।
बिध–संज्ञा स्त्री० प्रकार। तरह। भाँति।
बिधना–संज्ञा पुं० ब्रह्मा। विधि। विधाता।
क्रि० अ० दे० "बिंधना"।
बिधाना–क्रि० अ० दे० "बिंधाना"।
बिधानी॰†–संज्ञा पुं० विधान करनेवाला। बनानेवाला। रचनेवाला।
बिन॰†–अव्य० दे० "बिना"।
बिनई॰†–संज्ञा पुं० दे० "विनयी"।
बिनति, बिनती–संज्ञा स्त्री० प्रार्थना। निवेदन। अर्ज़।
बिनन–संज्ञा स्त्री० १. बिनने या चुनने की क्रिया या भाव। २. वह कूड़ा कर्कट आदि जो किसी चीज़ में से चुनकर निकाला जाय। चुनन।
बिनना–क्रि० स० छोटी छोटी वस्तुओं को एक एक करके उठाना।

चीहड़–वि० १. ऊँचा-नीचा। २. विषम। ऊबड़-खाबड़।
बुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।
बुँदकी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग़ या धब्बा।
बुंदा–संज्ञा पुं० १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।
बुँदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।
बुंदीदार–वि० जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।
बुँदेलखंड–संज्ञा पुं० संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के ज़िले पड़ते हैं।
बुंदेलखंडी–वि० बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेल-खंड का।
संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।
बुँदेला–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है।
बुँदौरी॥†–संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।
बुआ–संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।
बुक–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कलफ़ किया हुआ महीन कपड़ा।
बुकनी–संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।
बुक्का–संज्ञा पुं० कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुखा –संज्ञा पुं० ज्वर। ताप।
बुज़दिल–वि० कायर। डरपोक।
बुज़ुर्ग–वि० वृद्ध।
संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।
बुझना–क्रि० अ० १. अग्नि या अग्नि-शिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंढा होना।
बुझाना–क्रि० स० १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंढा करना। ३. समझाना।
बुटना॥†–क्रि० अ० भागना।
बुड़बुड़ाना–क्रि० अ० मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।
बुड़ाना॥†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
बुड्ढा†–वि० ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।
बुढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुढ़ाना–क्रि० अ० वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना।
बुढ़ापा–संज्ञा पुं० वृद्धावस्था।
बुढ़ौती†–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुत–संज्ञा पुं० १. मूर्त्ति। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय।
बुतना†–क्रि० अ० दे० "बुझना"।
बुतपरस्त–संज्ञा पुं० मूर्त्तिपूजक।
बुताना†–क्रि० स० दे० "बुझाना"।
बुत्ता–संज्ञा पुं० धोखा। पट्टी।
बुदबुद–संज्ञा पुं० बुलबुला। बुल्ला।
बुद्ध–वि० १. जो जागा हुआ हो। जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी।
संज्ञा पुं० बौद्ध-धर्म के प्रवर्त्तक एक

क्रि० स० दे० "बुनना"।
बिनघना०†–क्रि० अ० विनय करना। मिन्नत करना।
बिनसना०†–क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।
बिनसाना०–क्रि० स० विनाश करना। बिगाड़ डालना।
बिना–अव्य० छोड़कर। बग़ैर।
बिनाई–संज्ञा स्त्री० बीनने या बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट।
बिनावट–संज्ञा स्त्री० दे० "बुनावट"।
बिनासना–क्रि० स० विनष्ट करना। संहार करना। बरबाद करना।
बिनि, बिनु०–अव्य० दे० "बिना"।
बिनूठा०†–वि० अनोखा।
बिनै०†–संज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।
बिनौला–संज्ञा पुं० कपास का बीज। बनौर कुकटी।
बिपच्छ०†–संज्ञा पुं० १. प्रतिकूल। २. विमुख। विरुद्ध।
बिपच्छी०†–संज्ञा पुं० १. विरोधी। २. शत्रु। दुश्मन।
बिपत, बिपद०†–संज्ञा स्त्री० दे० "विपत्ति"।
बिफर०†–वि० दे० "विफल"।
बिबरन०–वि० जिसका रंग खराब हो गया हो। बदरंग।
संज्ञा पुं० दे० "विवरण"।
बिबस०†–वि० १. मजबूर। २. परतंत्र। पराधीन।
बिवाई–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है।
बिबाक०–वि० दे० "बेबाक"।
बिमन०†–वि० उदास। सुस्त।
बिमानी०–वि० मान-रहित। निरभिमान।
बिमोहना–क्रि० स० मोहित करना। लुभाना।
क्रि० अ० मोहित होना। लुभाना।
बिय०†–वि० दो। युग्म।
बिया†–संज्ञा पुं० दे० "बीज"।
बियाधा०†–संज्ञा पुं० दे० "व्याधा"।
बियाधि०†–संज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि"।
बियापना०†–क्रि० स० दे० "व्यापना"।
बियाबान–संज्ञा पुं० बहुत उजाड़ स्थान या जंगल।
बियारी, बियालू०†–संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
बियाह०†–संज्ञा पुं० दे० "विवाह"।
बियाहता‡–वि० स्त्री० जिसके साथ विवाह हुआ हो।
बिरंग–वि० १. कई रंगों का। २. बिना रंग का।
बिरछ†०–संज्ञा पुं० दे० "वृक्ष"।
बिरझना†–क्रि० अ० झगड़ना।
बिरतंत०†–संज्ञा पुं० दे० "वृत्तांत"।
बिरथा†–वि० दे० "व्यर्थ"।
बिरद†–संज्ञा पुं० दे० "विरद"।
बिरदैत–संज्ञा पुं० बहुत अधिक प्रसिद्ध वीर या योद्धा।
वि० नामी। प्रसिद्ध।
बिरध–वि० दे० "वृद्ध"।
बिरमना†–क्रि० अ० १. ठहरना। रुकना। २. मोहित होकर फँस रहना।
बिरमाना†–क्रि० स० १. ठहराना। रोक रखना। २. मोहित करके फँसा रखना।
बिरला–वि० बहुतों में से कोई एकाध। इक्का-दुक्का।

बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था।

बुद्धि–संज्ञा स्त्री० विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अक़्ल। समझ।

बुद्धिमत्ता–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अ.क़्लमंदी।

बुद्धिमान्–वि० वह जो बहुत समझदार हो।

बुद्धिमानी–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।

बुध–संज्ञा पुं० १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

बुधवार–संज्ञा पुं० सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।

बुधि–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि"।

बुनना–क्रि० स० जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। बिनना।

बुनाई–संज्ञा स्त्री० १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मज़दूरी।

बुनावट–संज्ञा स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

बुनियाद–संज्ञा स्त्री० १. जड़। मूल। २. असलियत। वास्तविकता।

बुबुकारी–संज्ञा स्त्री० बुक्का फाड़कर रोना। ज़ोर ज़ोर से रोना।

बुभुक्षा–संज्ञा स्त्री० क्षुधा। भूख।

बुभुक्षित–वि० भूखा। क्षुधित।

बुरक़ा–संज्ञा पुं० मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

बुरा–वि० जो अच्छा या उत्तम न हो। ख़राब।

बुराई–संज्ञा स्त्री० १. बुरे होने का भाव। ख़राबी। २. अवगुण। दोष। दुर्गुण।

बुरादा–संज्ञा पुं० वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।

बुर्ज–संज्ञा पुं० किले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है।

बुलंद–वि० १. उत्तुंग। २. बहुत ऊँचा।

बुलबुल–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध गानेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला–संज्ञा पुं० पानी का बुल्ला। बुदबुदा।

बुलवाना–क्रि० स० बुलाने का काम दूसरे से कराना।

बुलाक–संज्ञा पुं०, स्त्री० सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।

बुलाकी–संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

बुलाना–क्रि० स० आवाज़ देना। पुकारना।

बुलावा–संज्ञा पुं० बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह–संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हों।

बुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला"।

बिरही–संज्ञा पुं० वह पुरुष जो अपनी प्रेमिका के विरह से दुखित हो। विरही।

बिराजना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. बैठना।

बिरादर–संज्ञा पुं० भाई। भ्राता।

बिरादरी–संज्ञा स्त्री० भाईचारा।

बिरान, बिराना०–वि० दे० "बेगाना"।

बिराना, बिरावना०†–क्रि० स० किसी को चिढ़ाने के हेतु मुँह की कोई विलक्षण मुद्रा बनाना।

बिरियाँ–संज्ञा स्त्री० समय।
संज्ञा स्त्री० बार। दफ़ा।

बिरुझना†–क्रि० अ० झगड़ना।

बिलंद–वि० ऊँचा। बड़ा।

बिलंबना०†–क्रि० अ० विलंब करना।

बिल–संज्ञा पुं० छेद। दरज। विवर।

बिलकुल–क्रि० वि० पूरा पूरा। सब।

बिलखना–क्रि० अ० विलाप करना। रोना।

बिलखाना–क्रि० स० बिलखना का सकर्मक रूप।
क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

बिलग–वि० अलग। पृथक्। जुदा।
संज्ञा पुं० १. पार्थक्य। अलग होने का भाव। २. द्वेष या और कोई बुरा भाव। रंज।

बिलगाना–क्रि० अ० अलग होना। पृथक् होना। दूर होना।
क्रि० स० १. अलग करना। २. पृथक् करना।

बिलटी–संज्ञा स्त्री० रेल के द्वारा भेजे जानेवाले माल की रसीद।

बिलनी–संज्ञा स्त्री० काली भौंरी जो दीवारों पर मिट्टी की बाँबी बनाती है। भ्रमरी।
संज्ञा स्त्री० आँख की पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसी।

बिलपना०†–क्रि० अ० रोना।

बिल.फेल–क्रि० वि० इस समय।

बिलबिलाना–क्रि० अ० १. छोटे छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना। २. व्याकुल होकर इधर-उधर चिल्लाना।

बिलमना०†–क्रि० अ० १. विलंब करना। २. ठहर जाना। रुकना।

बिलमाना–क्रि० स० प्रेम के कारण रोक या ठहरा रखना।

बिललाना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"।

बिलवाना†–क्रि० स० खो देना। बरबाद करना।

बिलसना०†–क्रि० अ० शोभा देना। भला जान पड़ना।
क्रि० स० भोग करना। भोगना।

बिलसाना०†–क्रि० स० भोग करना। बरतना।

बिला–अव्य० विना। बग़ैर।

बिलाई–संज्ञा स्त्री० बिल्ली। बिलारी।

बिलाना–क्रि० अ० नष्ट होना।

बिलारी†–संज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली"।

बिलावल–संज्ञा पुं० एक राग।

बिलासना–क्रि० स० भोगना।

बिलैया†–संज्ञा स्त्री० १. बिल्ली। २. कद्दूकश।

बिलोकना०–क्रि० स० देखना।

बिलोकनि०–संज्ञा स्त्री० १. देखने की क्रिया। २. दृष्टिपात। कटाक्ष।

बिलोड़ना०–क्रि० स० १. दूध आदि मथना। २. अस्त-व्यस्त करना।

बिलोना–क्रि० स० दूध आदि मथना।

बुहारना–क्रि० स० झाड़ू से जगह साफ़ करना। झाड़ना।

बुहारी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू। बढ़नी। सोहनी।

बूँद-संज्ञा स्त्री० जल आदि का वह बहुत ही थोड़ा अंश जो गिरने आदि के समय प्रायः छोटी सी गोली का रूप धारण कर लेता है। कतरा।

बूँदाबादी–संज्ञा स्त्री० हलकी या थोड़ी वर्षा।

बूँदी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई। बुँदिया। २. वर्षा के जल की बूँद।

बू–संज्ञा स्त्री० १. वास। महक। २. दुर्गंध। बदबू।

बूआ–संज्ञा स्त्री० पिता की बहन। फूफी।

बूकना–क्रि० स० १. महीन पीसना। २. गढ़कर बातें करना। जैसे, अँगरेज़ी बूकना।

बूचड़–संज्ञा पुं० कसाई।

बूचड़खाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ पशुओं की हत्या होती है। कसाई-बाड़ा।

बूचा–वि० जिसके कान कटे हुए हों। कनकटा।

बूझ–संज्ञा स्त्री० समझ। बुद्धि।

बूझनः†–संज्ञा स्त्री० दे० "बूझ"।

बूझना–क्रि० स० १. समझना। जानना। २. पूछना।

बूट–संज्ञा पुं० १. चने का हरा पौधा। २. चने का हरा दाना।

बूटनिः†–संज्ञा स्त्री० बीर-बहूटी नाम का कीड़ा।

बूटा–संज्ञा पुं० १. छोटा वृक्ष। पौधा। २. बड़ी बूटी।

बूटी–संज्ञा स्त्री० १. वनस्पति। २. भाँग। ३. फूलों के छोटे चिह्न जो कपड़ों आदि पर बनाए जाते हैं। छोटा बूटा।

बूड़ना†–क्रि० स० १. डूबना। निमज्जित होना। २. लीन होना। निमग्न होना।

बूड़ा†–संज्ञा पुं० वर्षा आदि के कारण जल की बाढ़।

बूढ़†–वि० दे० "बुड्ढा"। संज्ञा पुं० बीरबहूटी।

बूढ़ा–संज्ञा पुं० दे० "बुड्ढा"।

बूता–संज्ञा पुं० बल। शक्ति।

बूरा–संज्ञा पुं० १. कच्ची चीनी जो भूरे रंग की होती है। शक्कर। २. साफ़ की हुई चीनी।

बृहत्–वि० १. बहुत बड़ा। विशाल। २. उच्च। ऊँचा।

बृहद्रथ–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. शतधन्वा के पुत्र का नाम।

बृहन्नल–संज्ञा पुं० अर्जुन का एक नाम।

बृहन्नला–संज्ञा स्त्री० अर्जुन का उस समय का नाम जिस समय वे अज्ञातवास में स्त्री के वेश में रहकर राजा विराट की कन्या को नाच-गाना सिखाते थे।

बृहस्पति–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस् के पुत्र और देवताओं के गुरु माने जाते हैं। २. सौर जगत् का पाँचवाँ ग्रह।

बेंग–संज्ञा पुं० मेंढक।

बेंट, बेंठ–संज्ञा स्त्री० औज़ारों में लगा हुआ काठ का दस्ता। मूठ।

किसी वस्तु विशेषतः पानी की सी वस्तु को खूब हिलाना।
विलोलना-क्रि० स० हिलाना।
विल्ला-संज्ञा पुं० मार्जार। बिल्ली का नर।
संज्ञा पुं० चपरास की तरह की पीतल की पतली पट्टी।
विल्ली-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध मांसाहारी पशु जो सिंह, व्याघ्र, चीते आदि की जाति का, पर इन सबसे छोटा होता है। २. एक प्रकार की किवाड़ की सिटकिनी। विलैया।
विल्लौर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पारदर्शक पत्थर। स्फटिक।
विल्लौरी-वि० बिल्लौर का।
विवरना-क्रि० अ० दे० "व्योरना"।
विवराना-क्रि० स० बालों को खुलवाकर सुलझवाना।
विसंच॰-संज्ञा पुं० संचय का अभाव। वस्तुओं की सँभाल न रखना। बेपरवाई।
विसंभर॰‡-संज्ञा पुं० दे० "विश्वंभर"।
विस-संज्ञा पुं० दे० "विष"।
विसखपरा-संज्ञा पुं० १. गोह की जाति का एक विषैला सरीसृप जंतु। २. एक प्रकार की जंगली बूटी।
विसद॰-वि० दे० "विशद"।
विसन॰-संज्ञा पुं० दे० "व्यसन"।
विसनी-वि० १. जिसे किसी बात का व्यसन या शौक़ हो। २. छैला।
विसमउ†-संज्ञा पुं० दे० "विस्मय"।
विसमिल-वि० घायल।
विसयक॰†-संज्ञा पुं० देश। प्रदेश।
विसरना-क्रि० स० भूलना।
विसराना-क्रि० स० भुलाना। ध्यान में न रखना।
विसराम॰-संज्ञा पुं० दे० "विश्राम"।
विसवासी-वि० १. जो विश्वास करे। २. जिस पर विश्वास हो। वि० जिस पर विश्वास न किया जा सके। बेएतबार।
विसहना॰†-क्रि० स० मोल लेना। ख़रीदना।
विसहर॰-संज्ञा पुं० सर्प।
विसाख॰-संज्ञा स्त्री० दे० "विशाखा"।
विसात-संज्ञा स्त्री० १. हैसियत। औक़ात। २. शतरंज या चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा जिस पर खाने बने होते हैं।
विसाती-संज्ञा पुं० सुई, तागा, चूड़ी, खिलौने इत्यादि वस्तुओं का बेचनेवाला।
विसारद॰-संज्ञा पुं० दे० "विशारद"।
विसारना-क्रि० स० भुलाना। स्मरण न रखना। ध्यान में न रखना।
विसारा॰-वि० विष भरा। विषाक्त। विषैला।
विसासिन-संज्ञा स्त्री० (स्त्री०) जिस पर विश्वास न किया जा सके।
विसाहना-क्रि० स० ख़रीदना। मोल लेना।
संज्ञा पुं० १. काम की चीज़ जिसे ख़रीदें। सौदा। २. मोल लेने की क्रिया। ख़रीद।
विसिख॰-संज्ञा पुं० दे० "विशिख"।
विसूरना-क्रि० अ० खेद करना।

बेंड़ा†-वि० आड़ा। तिरछा।

बेंत-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठल से छड़ियाँ और टोकरियाँ आदि बनती हैं।

बेंदा-संज्ञा पुं० १. माथे पर लगाने का गोल तिलक। टीका। २. एक आभूषण।

बेंदी-संज्ञा स्त्री० १. टिकली। २. शून्य। सुन्ना। ३. दावनी या बेंदी नाम का गहना।

बेअंत†-क्रि० वि० जिसका कोई अंत न हो। अनंत। बेहद।

बेअकल-वि० मूर्ख।

बेअदब-वि० जो बड़ों का आदर-सम्मान न करे।

बेआब-वि० जिसमें आब (चमक) न हो।

बेआबरू- वि० बेइज़्ज़त।

बेइज़्ज़त-वि० १. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।

बेईमान-वि० १. जिसे धर्म का विचार न हो। अधर्मी। २. जो अन्याय, कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करता हो।

बेउज्र-वि० जो आज्ञा-पालन करने में कोई आपत्ति न करे।

बेक़द्र-वि० बेइज़्ज़त। अप्रतिष्ठित।

बेक़रार-वि० जिसे शांति या चैन न हो। व्याकुल।

बेकल†-वि० व्याकुल।

बेकली-संज्ञा स्त्री० घबराहट। बेचैनी।

बेकसूर-वि० जिसका कोई दोष या क़सूर न हो। निरपराध।

बेकाम-वि० १. जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। २. जो किसी काम में न आ सके।

बेक़ायदा-वि० क़ायदे के ख़िलाफ़। नियमविरुद्ध।

बेकार-वि० १. निकम्मा। निठल्ला। २. निरर्थक।

बेक़ुसूर-वि० जिसका कोई क़ुसूर न हो।

बेखटके-क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की रुकावट या असमंजस के। निस्संकोच।

बेखबर-वि० बेहोश। बेसुध।

बेग-संज्ञा पुं० दे० "वेग"।

बेगम-संज्ञा स्त्री० रानी। राजपत्नी।

बेगरज़-वि० जिसे कोई ग़रज़ या परवा न हो।

बेगाना-वि० १. ग़ैर। दूसरा। २. नावाक़िफ़। अनजान।

बेगार-संज्ञा स्त्री० १. बिना मज़दूरी का ज़बरदस्ती लिया हुआ काम। २. वह काम जो चित्त लगाकर न किया जाय।

बेगारी-संज्ञा स्त्री० बेगार में काम करनेवाला आदमी।

बेगि†-क्रि० वि० १. जल्दी से। शीघ्रतापूर्वक। २. चटपट। तुरंत।

बेगुनाह-वि० जिसने कोई गुनाह या अपराध न किया हो। बेकसूर। निर्दोष।

बेचना-क्रि० स० मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना। विक्रय करना।

बेचारा-वि० दीन और निस्सहाय। ग़रीब।

बेचैन-वि० जिसे चैन न पड़ता हो। व्याकुल।

बेजड़-वि० जिसकी कोई जड़ या

मन में दुःख मानना।
संज्ञा स्त्री० चिंता। फ़िक्र।

बिसेस॰–वि० दे० "विशेष"।

बिसेखना॰–क्रि० अ० विशेष प्रकार से या ब्यौरेवार वर्णन करना।

बिसेन–संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक शाखा।

बिसेसर॰†–संज्ञा पुं० दे० "विश्वेश्वर"।

बिस्तर–संज्ञा पुं० १. बिछौना। २. विस्तार।

बिस्तारना–क्रि० स० विस्तार करना। फैलाना।

बिस्तुइया†–संज्ञा स्त्री० छिपकली। गृहगोधा।

बिस्वा–संज्ञा पुं० एक बीघे का बीसवाँ भाग।

बिस्वास–संज्ञा पुं० दे० "विश्वास"।

बिहंग–संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

बिहसना–क्रि० अ० मुस्कराना।

बिहग॰–संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।

बिहरना–क्रि० अ० घूमना-फिरना। सैर करना।

बिहाग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का राग।

बिहान–संज्ञा पुं० १. सबेरा। २. आनेवाला दूसरा दिन।

बिहाना॰–क्रि० स० छोड़ना। त्यागना।

बिहारना–क्रि० अ० विहार करना। केलि या क्रीड़ा करना।

बिहाल–वि० व्याकुल। बेचैन।

बिहिश्त–संज्ञा पुं० स्वर्ग। बैकुंठ।

बिही–संज्ञा स्त्री० एक पेड़ जिसके फल अमरूद से मिलते-जुलते होते हैं।

बिहीदाना–संज्ञा पुं० बिही नामक फल का बीज जो दवा के काम में आता है।

बिहीन–वि० रहित।

बींड़ा–संज्ञा पुं० १. टहनियों से बनाया हुआ लंबा लाठ जो कच्चे कुएँ में इसलिये दिया जाता है कि उसका भगाड़ न गिरे। २. घास आदि को लपेटकर बनाई हुई गेंडुरी।

बींधना॰–क्रि० अ० फँसना।
क्रि० स० विद्ध करना। छेदना। बेधना।

बीघा†–संज्ञा पुं० खेत नापने का बीस बिस्वे का एक वर्गमान।

बीच†–संज्ञा पुं० किसी पदार्थ का मध्य भाग। मध्य।

बीचु॰†–संज्ञा पुं० अवसर। मौका।

बीचोबीच–क्रि० वि० बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछी॰†–संज्ञा स्त्री० बिच्छू।

बीज–संज्ञा पुं० १. फूलवाले वृक्षों का गर्भांड जिससे वृक्ष अंकुरित होकर उत्पन्न होता है। बीया। तुख़्म। दाना। २. शुक्र। वीर्य्य।

बीजक–संज्ञा पुं० १. सूची। फ़ेहरिस्त। २. वह सूची जिसमें माल का ब्योरा, दर और मूल्य आदि लिखा हो। ३. कबीरदास के पदों के तीन संग्रहों में से एक।

बीजगणित–संज्ञा पुं० गणित का वह भेद जिसके अक्षरों को संख्याओं का द्योतक मानकर निश्चित युक्तियों के द्वारा अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।

बीजदर्शक–संज्ञा पुं० वह जो नाटक के अभिनय की व्यवस्था करता हो।

बीजन॰–संज्ञा पुं० बेना। पंखा।

बीजपूर, बीजपूरक–संज्ञा पुं० १. बिजौरा नीबू। २. चकोतरा।

बुनियाद न हो।

बेज़बान–वि० जिसमें बातचीत करने की शक्ति न हो। गूँगा।

बेजा–वि० अनुचित। नामुनासिब।

बेजान–वि० १. मुरदा। मृतक। २. जिसमें कुछ भी दम न हो।

बेज़ाब्ता–वि० क़ानून या नियम आदि के विरुद्ध।

बेजोड़–वि० १. जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २. जिसकी समता न हो सके।

बेटा–संज्ञा पुं० पुत्र। सुत। लड़का।

बेठन–संज्ञा पुं० वह कपड़ा जो किसी चीज़ को लपेटने के काम में आवे। बँधना।

बेठिकाने–वि० जो अपने उचित स्थान पर न हो। स्थान-च्युत।

बेड़–संज्ञा पुं० वृक्ष के चारों ओर लगाई हुई बाड़। मेंड़।

बेड़ना–क्रि० स० दे० "बेढ़ना"।

बेड़ा–संज्ञा पुं० बड़े बड़े लट्ठों या तख़्तों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी आदि पार करते हैं।

बेड़िन, बेड़िनी–संज्ञा स्त्री० नट जाति की वह स्त्री जो नाचती-गाती हो।

बेड़ी–संज्ञा स्त्री० लोहे के कड़ों की जोड़ी या जंजीर जो क़ैदियों को इसलिये पहनाई जाती है, जिसमें वे भाग न सकें।

बेडौल–वि० १. जिसका डौल या रूप अच्छा न हो। भद्दा। २. दे० "बेढंगा"।

बेढंगा–वि० जिसका ढंग ठीक न हो।

बेढ़ई–संज्ञा स्त्री० कचौड़ी।

बेढ़ना–क्रि० स० वृक्षों या खेतों आदि को, उनकी रक्षा के लिये, चारों ओर से किसी प्रकार घेरना।

बेढब–वि० १. जिसका ढब अच्छा न हो। २. बेढंगा। भद्दा।

क्रि० वि० बुरी तरह से। बेतरह।

बेढ़ा–संज्ञा पुं० घर के आसपास वह छोटा सा घेरा हुआ स्थान जिसमें तरकारियाँ आदि बोई जाती हों।

बेणीफूल–संज्ञा पुं० फूल के आकार का सिर पर पहनने का एक गहना। सीसफूल।

बेतकल्लुफ़–वि० जिसे तकल्लुफ़ की कोई परवा न हो।

क्रि० वि० १. बेधड़क। २. निस्संकोच।

बेतमीज़–वि० जिसे शऊर या तमीज़ न हो। बेहूदा।

बेतरह–क्रि० वि० बुरी तरह से। अनुचित रूप से।

वि० बहुत अधिक। बहुत ज़्यादा।

बेतरीक़ा–वि०, क्रि० वि० तरीक़े या नियम के विरुद्ध। अनुचित।

बेतहाशा–क्रि० वि० १. बहुत अधिक तेज़ी से। २. बहुत घबराकर।

बेताब–वि० १. दुर्बल। कमज़ोर। २. विकल।

बेतार–वि० बिना तार का। जिसमें तार न हो।

बेताल–संज्ञा पुं० दे० "बैताल"।

संज्ञा पुं० भाट। बंदी।

बेतुका–वि० १. जिसमें सामंजस्य न हो। बेमेल। २. बेढंगा।

बेदख़ल–वि० जिसका दख़ल, कब्ज़ा या अधिकार न हो। अधिकार-च्युत।

बेदख़ली–संज्ञा स्त्री० संपत्ति पर से

बीजबंद्–संज्ञा पुं० खिरैंटी या बरियारे के बीज।
बीजमंत्र–संज्ञा पुं० १. किसी देवता के उद्देश्य से निश्चित मूल-मंत्र। २. गुर।
बीजा–वि० दूसरा।
बीजाक्षर–संज्ञा पुं० किसी बीज-मंत्र का पहला अक्षर।
बीजी–संज्ञा स्त्री० गिरी। मींगी।
बीजु, बीजुरी–संज्ञा स्त्री० दे० "बिजली"।
बीजू–वि० जो बीज बोने से उत्पन्न हो। कलमी का उलटा।
संज्ञा पुं० दे० "बिज्जु"।
बीट–संज्ञा स्त्री० पक्षियों की विष्ठा।
बीड़ा–संज्ञा पुं० पान की सादी गिलौरी। खीली।
बीड़ी–संज्ञा स्त्री० १. दे० "बीड़ा"। २. गड्डी। दे० "बीड़"। ३. मिस्सी जिसे स्त्रियाँ दाँत रँगने के लिये मुँह में मलती हैं। ४. पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग सिगरेट या चुरुट आदि की तरह सुलगाकर पीते हैं।
बीतना–क्रि० अ० समय का विगत होना। वक्त कटना।
बीधना‡–क्रि० अ० फँसना।
क्रि० स० दे० "बींधना"।
बीन–संज्ञा स्त्री० सितार की तरह का पर उससे बड़ा एक प्रसिद्ध बाजा। वीणा।
बीनना‡–क्रि० सं० १. छोटी छोटी चीज़ों को उठाना। चुनना। २. छाँटकर अलग करना। छाँटना।
क्रि० स० दे० "बींधना"।
क्रि० स० दे० "बुनना"।

बीफै–संज्ञा पुं० बृहस्पतिवार।
बीबी–संज्ञा स्त्री० १. कुलवधू। कुलीन स्त्री। २. पत्नी। स्त्री।
बीभत्स–वि० जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित।
संज्ञा पुं० काव्य के नौ रसों के अंतर्गत सातवाँ रस। इसमें रक्त-मांस आदि ऐसी बातों का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।
बीमा–संज्ञा पुं० किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक हानि पूरी करने की ज़िम्मेदारी जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है।
बीमार–वि० वह जिसे कोई बीमारी हुई हो। रोगग्रस्त। रोगी।
बीमारी–संज्ञा स्त्री० रोग। व्याधि।
बीर–वि० दे० "वीर"।
बीरज*–संज्ञा पुं० दे० "वीर्य"।
बीरन–संज्ञा पु० भाई।
बीरबहूटी–संज्ञा स्त्री० गहरे लाल रंग का एक छोटा रेंगनेवाला बरसाती कीड़ा। इंद्रवधू।
बीरा*–संज्ञा पुं० १. पान का बीड़ा। २. वह फूल, फल आदि जो देवता के प्रसाद-स्वरूप भक्तों आदि को मिलता है।
बीरी†–संज्ञा स्त्री० १. पान का बीड़ा। २. कान में पहनने का एक गहना। तरना।
बीस–वि० जो संख्या में उन्नीस से एक अधिक हो।
संज्ञा स्त्री० बीस की संख्या या अंक—२०।
बीसी–संज्ञा स्त्री० बीस चीज़ों का समूह। कोड़ी।

दुखड़ा या कब्ज़े का हटाया जाना अथवा न होना।

बेदम-वि० १. मृतक। मुरदा। २. मृतप्राय। ३. जर्जर।

बेदमुश्क-संज्ञा पुं० एक वृक्ष जिसमें कोमल और सुगंधित फूल लगते हैं।

बेदर्द-वि० जो किसी की व्यथा को न समझे। कठोरहृदय।

बेदाग़-वि० १. जिसमें कोई दाग़ या धब्बा न हो। साफ़। २. निर्दोष।

बेदाना-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बढ़िया काबुली अनार। २. बिही-दाना नामक फल का बीज। ३. हिंदाना। चिंया।

बेधड़क-क्रि० वि० १. बिना किसी प्रकार के संकोच के। निःसंकोच। २. बे-खौफ़। ३. बिना आगा-पीछा किए।

वि० १. निर्द्वंद्व। २. निर्भय।

बेधना-क्रि० स० नुकीली चीज़ की सहायता से छेद करना।

बेधर्म-वि० जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो।

बेधीर-वि० अधीर।

बेन†-संज्ञा पुं० १. बंसी। मुरली। २. महुवर।

बेनसीब-वि० अभागा। बदकिस्मत।

बेना†-संज्ञा पुं० बाँस का बना हुआ छोटा पंखा।

बेनी-संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों की चोटी। २. गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम।

बेनु-संज्ञा पुं० दे० "वेणु"।

बेपरद-वि० नंगा। नग्न।

बेपरवा, बेपरवाह-वि० [संज्ञा बेपर-वाही] १. बेफ़िक्र। २. मन-मौजी।

बेपाइ०†-वि० जिसे कोई उपाय न सूझे। भौचक।

बेपीर-वि० दूसरों के कष्ट को कुछ न समझनेवाला।

बेपेंदी-वि० जिसमें पेंदा न हो।

बेफ़िक्र-वि० निश्चिंत। बेपरवा।

बेबस-वि० [संज्ञा बेबसी] जिसका कुछ वश न चले। लाचार।

बेबाक़-वि० चुकता किया हुआ। चुकाया हुआ। (ऋण)

बेमाप-क्रि० वि० जिसकी कोई गिनती न हो। बेहद।

बेमालूम-क्रि० वि० बिना किसी को पता लगे।

वि० जो मालूम न पड़ता हो।

बेर-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके कई भेद होते हैं। २. इस वृक्ष का फल।

संज्ञा स्त्री० १. बार। दफ़ा। २. विलंब।

बेरहम-वि० [संज्ञा बेरहमी] निर्दय। निठुर।

बेरा†-संज्ञा पुं० समय। वक़्त।

बेरियाँ†-संज्ञा स्त्री० समय। वक़्त।

बेरी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "बेर"। २. दे० "बेड़ी"।

बेरुख़-वि० [संज्ञा बेरुख़ी] जो समय पड़ने पर रुख़ (मुँह) फेर ले। बेमुरव्वत।

बेल-संज्ञा पुं० मँझोले आकार का एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष। इसमें गोल फल लगते हैं। श्रीफल।

संज्ञा स्त्री० १. वल्ली। लता। लतर। २. कपड़े या दीवार आदि पर बनी

बीहड़–वि० १. ऊँचा-नीचा। २. विषम। ऊबड़-खाबड़।
बुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।
बुँदकी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।
बुंदा–संज्ञा पुं० १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।
बुँदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।
बुंदीदार–वि० जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।
बुँदेलखंड–संज्ञा पुं० संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के ज़िले पड़ते हैं।
बुँदेलखंडी–वि० बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेल-खंड का।
संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।
बुँदेला–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है।
बुँदौरी०†–संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।
बुआ–संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।
बुक–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कलफ़ किया हुआ महीन कपड़ा।
बुकनी–संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।
बुका–संज्ञा पुं० कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुख़ा–संज्ञा पुं० ज्वर। ताप।
बुज़दिल–वि० कायर। डरपोक।
बुज़ुर्ग–वि० वृद्ध।
संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।
बुझना–क्रि० अ० १. अग्नि या अग्नि-शिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंढा होना।
बुझाना–क्रि० स० १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंढा करना। ३. समझाना।
बुटना०†–क्रि० अ० भागना।
बुड़बुड़ाना–क्रि० अ० मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।
बुड़ाना०†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
बुड्ढा†–वि० ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।
बुढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुढ़ाना–क्रि० अ० वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना।
बुढ़ापा–संज्ञा पुं० वृद्धावस्था।
बुढ़ौती†–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुत–संज्ञा पुं० १. मूर्त्ति। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय।
बुतना†–क्रि० अ० दे० "बुझना"।
बुतपरस्त–संज्ञा पुं० मूर्त्तिपूजक।
बुताना†–क्रि० स० दे० "बुझाना"।
बुत्ता–संज्ञा पुं० धोखा। पट्टी।
बुदबुद–संज्ञा पुं० बुलबुला। बुल्ला।
बुद्ध–वि० १. जो जागा हुआ हो। जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी।
संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक

हुई फूल-पत्तियाँ आदि।

बेलचा–संज्ञा पुं० कुदाल। कुदारी।

बेलदार–संज्ञा पुं० वह मज़दूर जो फावड़ा चलाने का काम करता हो।

बेलन–संज्ञा पुं० १. रोलर। २. किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरज़ा। ३. कोल्हू का जाठ। ४. रूई धुनकने की मुठिया या हत्था। ५. दे० "बेलना"।

बेलना–संज्ञा पुं० काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।
क्रि० स० चकले पर रखकर रोटी, पूरी आदि बढ़ाकर पतला करना।

बेलपत्र–संज्ञा पुं० बेल के वृक्ष की पत्तियाँ जो शिवजी पर चढ़ाई जाती हैं।

बेला–संज्ञा पुं० चमेली आदि की जाति का एक छोटा पौधा जिसमें सुगंधित सफ़ेद फूल लगते हैं।
संज्ञा पुं० १. लहर। २. समय।

बेलाग–वि० बिलकुल अलग।

बेवक़ूफ़–वि० मूर्ख।

बेवक्त–क्रि० वि० कुसमय में।

बेवपार॰†–संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।

बेवफ़ा–वि० [संज्ञा बेवफ़ाई] जो मित्रता आदि का निर्वाह न करे।

बेवरा॰†–संज्ञा पुं० विवरण।

बेवरेवार–वि० तफ़सीलवार।

बेवसाय†–संज्ञा पुं० दे० "व्यवसाय"।

बेवहरना॰†–क्रि० अ० व्यवहार करना। बरताव करना।

बेवहरिया॰†–संज्ञा पुं० लेन-देन करनेवाला।

बेवा–संज्ञा स्त्री० विधवा। राँड़।

बेशक–क्रि० वि० अवश्य। निःसंदेह।

बेशरम–वि० निर्लज्ज। बेहया।

बेशी–संज्ञा स्त्री० अधिकता।

बेशुमार–वि० अगणित।

बेसंदर॰†–संज्ञा पुं० अग्नि।

बेसन–संज्ञा पुं० चने की दाल का आटा।

बेसनी–संज्ञा स्त्री० बेसन की बनी या भरी हुई पूरी।

बेसबरा–वि० जिसे सब्र या संतोष न हो।

बेसर–संज्ञा पुं० नाक में पहनने की नथ।

बेसवा–संज्ञा स्त्री० रंडी।

बेसाहना†–क्रि० अ० मोल लेना।

बेसाहा†–संज्ञा पुं० खरीदी हुई चीज़।

बेसुध–वि० अचेत।

बेसुर, बेसुरा–वि० जो अपने नियत स्वर से हटा हुआ हो।

बेहंगम–वि० १. भद्दा। २. बेढब।

बेहँसना॰†–क्रि० अ० ठठा कर हँसना।

बेह॰†–संज्ञा पुं० छेद।

बेहड़–वि०, संज्ञा पुं० दे० "बीहड़"।

बेहतर–वि० किसी से बढ़कर।
अव्य० अच्छा।

बेहतरी–संज्ञा स्त्री० भलाई।

बेहद–वि० असीम।

बेहना†–संज्ञा पुं० १. जुलाहों की एक जाति। २. धुनिया।

बेहया–वि० [संज्ञा बेहयाई] निर्लज्ज।

बेहला–संज्ञा पुं० सारंगी के आकार का एक प्रकार का अँगरेज़ी बाजा।

बेहाल–वि० [संज्ञा बेहाली] व्याकुल।

बेहिसाब–क्रि० वि० बहुत अधिक।

बेहुनरा–वि० मूर्ख।

बड़े महात्मा जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व शाक्यवंशी राजा शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ से नेपाल की तराई के लुंबिनी नामक स्थान में हुआ था।

बुद्धि–संज्ञा स्त्री० विवेक या निश्चय करने की शक्ति। अक़्ल। समझ।

बुद्धिमत्ता–संज्ञा स्त्री० बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक़्लमंदी।

बुद्धिमान्–वि० वह जो बहुत समझदार हो।

बुद्धिमानी–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धिमत्ता"।

बुध–संज्ञा पुं० १. सौर जगत् का एक ग्रह जो सूर्य्य के सबसे अधिक समीप रहता है। २. बुद्धिमान् अथवा विद्वान्।

बुधवार–संज्ञा पुं० सात वारों में से एक जो मंगलवार के बाद और बृहस्पतिवार से पहले पड़ता है।

बुधि†–संज्ञा स्त्री० दे० "बुद्धि"।

बुनना–क्रि० स० जुलाहों की वह क्रिया जिससे वे सूतों या तारों की सहायता से कपड़ा तैयार करते हैं। बिनना।

बुनाई–संज्ञा स्त्री० १. बुनने की क्रिया या भाव। बुनावट। २. बुनने की मज़दूरी।

बुनावट–संज्ञा स्त्री० बुनने में सूतों की मिलावट का ढंग।

बुनियाद–संज्ञा स्त्री० १. जड़। मूल। २. असलियत। वास्तविकता।

बुबुकारी–संज्ञा स्त्री० मुँह फाड़कर रोना। ज़ोर ज़ोर से रोना।

बुभुक्षा–संज्ञा स्त्री० क्षुधा। भूख।

बुभुक्षित–वि० भूखा। क्षुधित।

बुरक़ा–संज्ञा पुं० मुसलमान स्त्रियों का एक प्रकार का पहनावा जिससे सिर से पैर तक सब अंग ढके रहते हैं।

बुरा–वि० जो अच्छा या उत्तम न हो। ख़राब।

बुराई–संज्ञा स्त्री० १. बुरे होने का भाव। ख़राबी। २. अवगुण। दोष। दुर्गुण।

बुरादा–संज्ञा पुं० वह चूर्ण जो लकड़ी चीरने से निकलता है। कुनाई।

बुर्ज†–संज्ञा पुं० क़िले आदि की दीवारों में उठा हुआ गोल या पहलदार भाग जिसके बीच में बैठने आदि के लिये थोड़ा सा स्थान होता है।

बुलंद–वि० १. उत्तुंग। २. बहुत ऊँचा।

बुलबुल–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध गानेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला–संज्ञा पुं० पानी का बुल्ला। बुदबुदा।

बुलवाना–क्रि० स० बुलाने का काम दूसरे से कराना।

बुलाक–संज्ञा पुं०, स्त्री० सुराहीदार मोती जिसे स्त्रियाँ प्रायः नथ में पहनती हैं।

बुलाकी–संज्ञा पुं० घोड़े की एक जाति।

बुलाना–क्रि० स० आवाज़ देना। पुकारना।

बुलावा–संज्ञा पुं० बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह–संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसकी गरदन और पूँछ के बाल पीले हों।

बुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "बुलबुला"।

बेहूदा–वि० [संज्ञा बेहूदगी] १. जो शिष्टता या सभ्यता न जानता हो। २. अशिष्टतापूर्ण।
बेहूदापन–संज्ञा पुं० असभ्यता।
बेहोश–वि० मूर्च्छित।
बेहोशी–संज्ञा स्त्री० मूर्च्छा। अचेतनता।
बैंगन–संज्ञा पुं० एक वार्षिक पौधा जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है। भंटा।
बैंगनी, बैंजनी–वि० जो ललाई लिए नीले रंग का हो।
बैकुंठ–संज्ञा पुं० दे० "वैकुंठ"।
बैजनाथ–संज्ञा पुं० दे० "वैद्यनाथ"।
बैठक–संज्ञा स्त्री० १. बैठने का स्थान। २. चौपाल। ३. बैठने का आसन। ४. अधिवेशन। ५. संग।
बैठका–संज्ञा पुं० वह कमरा जहाँ लोग बैठते हों।
बैठकी–संज्ञा स्त्री० बार बार बैठने और उठने की कसरत।
बैठन–संज्ञा स्त्री० बैठक।
बैठना–क्रि० अ० १. स्थित होना। २. पचक जाना। ३. बिगड़ना। ४. लगना। ५. बेरोज़गार रहना।
बैठवाना–क्रि० स० बैठाने का काम दूसरे से कराना।
बैठाना–क्रि० स० १. स्थित करना। २. नियत करना। ३. बिगाड़ना।
बैठारना†०–क्रि० स० दे० "बैठाना"।
बैढ़ना†–क्रि० स० बंद करना।
बैत–संज्ञा स्त्री० पद्य।
बैतरनी–संज्ञा स्त्री० दे० "वैतरणी"।
बैताल–संज्ञा पुं० दे० "वेताल"।
बैद–संज्ञा पुं० [स्त्री० बैदिन] वैद्य।
बैदगी†–संज्ञा स्त्री० वैद्य का काम।
बैदेही–संज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।
बैन०–संज्ञा पुं० वचन।
बैना–संज्ञा पुं० वह मिठाई आदि जो विवाहादि में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।
०क्रि० स० बोना।
बैपार–संज्ञा पुं० व्यवसाय।
बैपारी–संज्ञा पुं० रोज़गारी।
बैयर०†–संज्ञा स्त्री० औरत।
बैया०†–संज्ञा पुं० बै।
बैर–संज्ञा पुं० शत्रुता।
† संज्ञा पुं० बेर का फल।
बैरख–संज्ञा पुं० सेना का झंडा। ध्वजा।
बैराग–संज्ञा पुं० दे० "वैराग्य"।
बैरागी–संज्ञा पुं० [स्त्री० बैरागिन] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।
बैराना†–क्रि० अ० वायु के प्रकोप से बिगड़ना।
बैरी–वि० [स्त्री० बैरिन] शत्रु।
बैल–संज्ञा पुं० [स्त्री० गाय] १. एक चौपाया जिसकी मादा को गाय कहते हैं। २. मूर्ख।
बैसंदर०–संज्ञा पुं० अग्नि।
बैस–संज्ञा स्त्री० १. आयु। २. यौवन। संज्ञा पुं० क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।
बैसना०†–क्रि० स० बैठना।
बैसर–संज्ञा स्त्री० जुलाहों का एक औज़ार जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने को बैठाते हैं।
बैसवारा–संज्ञा पुं० [वि० बैसवारी] अवध का पश्चिमी प्रांत।

बीहड़–वि० १. ऊँचा-नीचा। २. विषम। ऊबड़-खाबड़।
बुंद–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँद"।
बुँदकी–संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोल बिंदी। २. छोटा गोल दाग या धब्बा।
बुंदा–संज्ञा पुं० १. बुलाक के आकार का कान में पहनने का एक गहना। लोलक। २. माथे पर लगाने की टिकली।
बुँदिया–संज्ञा स्त्री० दे० "बूँदी"।
बुंदीदार–वि० जिसमें छोटी छोटी बिंदियाँ हों।
बुँदेलखंड–संज्ञा पुं० संयुक्त प्रांत का वह अंश जिसमें जालौन, झाँसी, हमीरपुर और बाँदा के ज़िले पड़ते हैं।
बुंदेलखंडी–वि० बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेल-खंड का।
संज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।
बुँदेला–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश जो गहरवार वंश की एक शाखा माना जाता है।
बुँदौरी॰†–संज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।
बुआ–संज्ञा स्त्री० दे० "बूआ"।
बुक–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कलफ़ किया हुआ महीन कपड़ा।
बुकनी–संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ का महीन पीसा हुआ चूर्ण।
बुका–संज्ञा पुं० कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुखा –संज्ञा पुं० ज्वर। ताप।
बुज़दिल–वि० कायर। डरपोक।
बुजुर्ग–वि० वृद्ध।
संज्ञा पुं० बाप-दादा। पूर्वज। पुरखा।
बुझना–क्रि० अ० १. अग्नि या अग्नि-शिखा का शांत होना। २. तपी हुई या गरम चीज़ का पानी में पड़कर ठंढा होना।
बुझाना–क्रि० स० १. जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना या अधिक जलने से रोक देना। अग्नि शांत करना। २. तपी हुई चीज़ को पानी में डालकर ठंढा करना। ३. समझाना।
बुटना॰†–क्रि० अ० भागना।
बुड़बुड़ाना–क्रि० अ० मन ही मन कुढ़कर अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। बड़बड़ करना।
बुड़ाना॰†–क्रि० स० दे० "डुबाना"।
बुड्ढा–वि० ५०-६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध।
बुढ़ाई–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुढ़ाना–क्रि० अ० वृद्धावस्था को प्राप्त होना। बुड्ढा होना।
बुढ़ापा–संज्ञा पुं० वृद्धावस्था।
बुढ़ौती†–संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।
बुत–संज्ञा पुं० १. मूर्त्ति। २. वह जिसके साथ प्रेम किया जाय।
बुतना†– क्रि० अ० दे० "बुझना"।
बुतपरस्त–संज्ञा पुं० मूर्त्तिपूजक।
बुताना†–क्रि० स० दे० "बुझाना"।
बुत्ता–संज्ञा पुं० धोखा। पट्टी।
बुद्बुद–संज्ञा पुं० बुलबुला। बुल्ला।
बुद्ध–वि० १. जो जागा हुआ हो। जागरित। २. ज्ञानवान्। ज्ञानी।
संज्ञा पुं० बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक

बैसाख–संज्ञा पुं० दे० "बैशाख"।
बैसाखी–संज्ञा स्त्री० वह लाठी जिसके सिरे को कंधे के नीचे बगल में रखकर लँगड़े लोग टेकते हुए चलते हैं।
बैसाना⊙–क्रि० स० बैठाना।
बैसिक⊙†–संज्ञा पुं० वेश्या से प्रीति करनेवाला। नायक।
बैहर⊙†–वि० भयानक।
†⊙ संज्ञा स्त्री० वायु।
बोआई–संज्ञा स्त्री० १. बोने का काम। २. बोने की मजदूरी।
बोझ–संज्ञा पुं० ऐसी राशि, गट्ठर या वस्तु जो उठाने या ले चलने में भारी जान पड़े।
बोझना–क्रि० स० बोझ लादना।
बोझल, बोझिल–वि० वज़नी। भारी।
बोझा–संज्ञा पुं० दे० "बोझ"।
बोटी–संज्ञा स्त्री० मांस का छोटा टुकड़ा।
बोड़ा–संज्ञा पुं० अजगर।
संज्ञा पुं० एक प्रकार की पतली लंबी फली जिसकी तरकारी होती है। लोबिया।
बोतल–संज्ञा स्त्री० काँच का लंबी गरदन का एक गहरा बरतन।
बोदा–वि० १. मूर्ख। २. सुस्त।
बोध–संज्ञा पुं० १. ज्ञान। जानकारी। २. तसल्ली।
बोधक–संज्ञा पुं० ज्ञान करानेवाला। जतानेवाला।
बोधगम्य–वि० समझ में आने योग्य।
बोधितरु, बोधिद्रुम–संज्ञा पुं० गया में स्थित पीपल का वह पेड़ जिसके नीचे बुद्ध भगवान् ने संबोधि (बुद्धत्व) प्राप्त की थी।
बोधिसत्त्व–संज्ञा पुं० वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो गया हो।
बोना–क्रि० स० बीज को जमने के लिये जुते हुए खेत या भुरभुरी की हुई ज़मीन में छितराना।
बोय†–संज्ञा स्त्री० गंध। बास।
बोर–संज्ञा पुं० डुबाने की क्रिया। डुबाव।
बोरना†–क्रि० स० जल या किसी और द्रव पदार्थ में निमग्न कर देना।
बोरसी†–संज्ञा स्त्री० अँगीठी।
बोरा–संज्ञा पुं० टाट का बना हुआ थैला जिसमें अनाज आदि रखते हैं।
बोरिया–संज्ञा पुं० चटाई। बिस्तर।
बोरी–संज्ञा स्त्री० टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।
बोरो–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा धान।
बोल–संज्ञा पुं० १. वचन। वाणी। २. ताना। ३. अंतरा। (संगीत)
बोल-चाल–संज्ञा स्त्री० १. बात-चीत। २. चलती भाषा। नित्य के व्यवहार की बोली।
बोलता–संज्ञा पुं० १. ज्ञान करानेवाला और बोलनेवाला तत्त्व। २. जीवन तत्त्व।
बोलना–क्रि० अ० मुख से शब्द उच्चारण करना।
क्रि० स० कुछ कहना। कथन करना।
बोलवाना–क्रि० स० दे० "बुलवाना"।
बोलाचाली–संज्ञा स्त्री० दे० "बोल-चाल"।
बोली–संज्ञा स्त्री० १. मुँह से निकली हुई आवाज़। वाणी। २. नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का ओर से दाम कहना। ३. भाषा। ४. व्यंग्य।
बोवाना–क्रि० स० बोने का काम

दूसरे से कराना।
बोह-संज्ञा स्त्री० डुबकी। गोता।
बोहनी-संज्ञा स्त्री० किसी सौदे या दिन की पहली बिक्री।
बोहितः-संज्ञा पुं० बड़ी नाव।
बौंड़-संज्ञा स्त्री० लता।
बौंड़ना†-क्रि० अ० लता की तरह बढ़ना। टहनी फेंकना।
बौंड़ी-संज्ञा स्त्री० १ पौधों या लताओं के कच्चे फल। २. फली। छीमी।
बौखल-वि० पागल।
बौखलाना-क्रि० अ० कुछ कुछ सनक जाना।
बौछाड़-संज्ञा स्त्री० १ बूँदों की झड़ी जो हवा के झोंके के साथ कहीं जा पड़े। २. झड़ी।
बौछार†-संज्ञा स्त्री० दे० "बौछाड़"।
बौद्ध-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध का अनुयायी।
बौद्ध धर्म-संज्ञा पुं० बुद्ध द्वारा प्रवर्तित धर्म।
बौना-संज्ञा पुं० [स्त्री० बौनी] अत्यंत ठिंगना या नाटा मनुष्य।
बौर†-संज्ञा पुं० आम की मंजरी।
बौरना-क्रि० अ० आम के पेड़ में मंजरी निकलना।
बौरहा†-वि० दे० "बावला"।
बौरा-वि० [स्त्री० बौरी] १. पागल। २. नादान।
बौराना†-क्रि० अ० १. पागल हो जाना। २. विवेक या बुद्धि से रहित हो जाना।
बौरी-संज्ञा स्त्री० बावली स्त्री।
ब्यवहर†-संज्ञा पुं० उधार।
ब्यवहरिया-संज्ञा पुं० रुपए का लेन-देन करनेवाला। महाजन।
ब्यवहार-संज्ञा पुं० १. दे० "व्यवहार"। २. रुपए का लेन-देन। ३. सुख-दुःख में परस्पर सम्मिलित होने का संबंध।
ब्यवहारी-संज्ञा पुं० १. कार्यकर्ता। २. लेन-देन करनेवाला। व्यापारी।
ब्याज-संज्ञा पुं० १. दे० "व्याज"। २. सूद।
ब्याना-क्रि० स० जनना। उत्पन्न करना।
ब्यापनाः†-क्रि० अ० १. ओतप्रोत होना। २. फैलना। ३. घेरना।
ब्यारी-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।
ब्याल-संज्ञा पुं० दे० "व्याल"।
ब्याली-संज्ञा स्त्री० सर्पिणी।
वि० सर्प धारण करनेवाला।
ब्यालू-संज्ञा पुं० रात का भोजन।
ब्याह-संज्ञा पुं० वह रीति या रस्म जिससे स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित होता है। विवाह।
ब्याहता-वि० जिसके साथ विवाह हुआ हो।
ब्याहना-क्रि० स० [वि० ब्याहता] किसी का किसी के साथ विवाह-संबंध कर देना।
ब्याहुला†-वि० विवाह का।
ब्योंत-संज्ञा स्त्री० १. व्यवस्था। मामला। २. ढब। तरीका। ३. युक्ति। ४. तैयारी। ५. संयोग। ६. प्रबंध। इंतज़ाम। ७. पहनावा बनाने के लिये कपड़े की काट-छाँट।
ब्योंतना-क्रि० स० कोई पहनावा बनाने के लिये कपड़े को नापकर काटना-छाँटना।
ब्योंताना-क्रि० स० शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटाना।

अंक से भाग दिया जाता है।

भाट–संज्ञा पुं० [स्त्री० भाटिन] १. राजाओं का यश वर्णन करनेवाला। २. खुशामदी।

भाटा–संज्ञा पुं० १. पानी का उतार की ओर जाना। २. समुद्र के चढ़ाव का उतरना।

भाठी॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "भट्ठी"।

भाड़–संज्ञा पुं० भड़भूँजों की भट्ठी जिसमें वे अनाज भूनते हैं।

भाड़ा-संज्ञा पुं० किराया।

भात–संज्ञा पुं० १. पानी में उबाला हुआ चावल। २. विवाह की एक रसम। इसमें कन्यावाला समधी को भात खिलाता है।

भाथा–संज्ञा पुं० तरकश।

भाथी–संज्ञा स्त्री० वह धौंकनी जिससे भट्ठी की आग सुलगाते हैं।

भादों–संज्ञा पुं० सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना।

भाद्र, भाद्रपद–संज्ञा पुं० दे० "भादों"।

भाद्रपदा–संज्ञा स्त्री० एक नक्षत्र-पुंज जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।

भान–संज्ञा पुं० १. प्रकाश। २. चमक। ३. ज्ञान। ४. प्रतीति।

भानजा–संज्ञा पुं० [स्त्री० भानजी] बहिन का लड़का। भागिनेय।

भानमती–संज्ञा स्त्री० जादूगरनी।

भानवी॰–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भाना॰†–क्रि० स० १. अच्छा लगना। पसंद आना। २ शोभा देना।

भानु–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

भानुजा–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भानुतनया–संज्ञा स्त्री० यमुना।

भाप–संज्ञा स्त्री० पानी के बहुत छोटे-छोटे कण जो उसके खौलने की दशा में ऊपर को उठते दिखाई पड़ते हैं।

भाभी–संज्ञा स्त्री० भौजाई।

भामा–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

भामिनी–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

भायप†–संज्ञा पुं० भाई।

भायप–संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।

भाया–वि० प्रिय। प्यारा।

भार–संज्ञा पुं० १. बोझ। २. वह बोझ जिसे बहँगी पर रखकर ले जाते हैं। ३. किसी कर्त्तव्य के पालन का उत्तरदायित्व।

भारत–संज्ञा पुं० १. महाभारत का पूर्व रूप या मूल जो २४००० श्लोकों का था। २. दे० "भारतवर्ष"। ३. लंबी कथा। ४. घोर युद्ध।

भारतखंड–संज्ञा पुं० दे० "भारतवर्ष"।

भारतवर्ष–संज्ञा पुं० वह देश जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। आर्यावर्त्त। हिंदुस्तान।

भारती–संज्ञा स्त्री० १. वाणी। २. सरस्वती।

भारतीय–वि० भारत-संबंधी। संज्ञा पुं० भारत का निवासी।

भारद्वाज–संज्ञा पुं० १. भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २. द्रोणाचार्य्य। ३. एक ऋषि।

भारवाहक–वि० बोझ ढोनेवाला।

भारवि–संज्ञा पुं० एक प्राचीन कवि जो किरातार्जुनीय महाकाव्य के रचयिता थे।

ब्योपार–संज्ञा पुं० दे० "व्यापार"।
ब्योरन–संज्ञा स्त्री० बालों के सँवारने की क्रिया या ढंग।
ब्योरना–क्रि० स० गुथे या उलझे हुए बालों आदि को सुलझाना।
ब्योरा–संज्ञा पुं० १. विवरण। तफ़सील। २. समाचार।
ब्योहर–संज्ञा पुं० लेन-देन का व्यापार। रुपया ऋण देना।
ब्योहरिया–संज्ञा पुं० सूद पर रुपए के लेन-देन का व्यापार करनेवाला।
ब्योहार–संज्ञा पुं० दे० "व्यवहार"।
ब्रज–संज्ञा पुं० दे० "व्रज"।
ब्रह्मंड–संज्ञा पुं० दे० "ब्रह्मांड"।
ब्रह्म–संज्ञा पुं० १. एक मात्र नित्य चेतन सत्ता जो जगत् का कारण और सत्, चित्, आनंद-स्वरूप है। २. ब्राह्मण जो मरकर प्रेत हुआ हो। ब्रह्मराक्षस।
ब्रह्मचर्य्य–संज्ञा पुं० १. वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। २. चार आश्रमों में पहला आश्रम।
ब्रह्मचारिणी–संज्ञा स्त्री० ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री।
ब्रह्मचारी–संज्ञा पुं० [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाला।
ब्रह्मज्ञान–संज्ञा पुं० ब्रह्म, पारमार्थिक सत्ता या अद्वैत सिद्धांत का बोध।
ब्रह्मज्ञानी–वि० परमार्थ तत्त्व का बोध रखनेवाला।
ब्रह्मद्रोही–वि० ब्राह्मणों से वैर रखनेवाला।
ब्रह्मद्वार–संज्ञा पुं० ब्रह्मरंध्र।
ब्रह्मपुत्र–संज्ञा पुं० एक नद जो मानसरोवर से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है।
ब्रह्मभोज–संज्ञा पुं० ब्राह्मण-भोजन।
ब्रह्ममुहूर्त्त–संज्ञा पुं० प्रभात। तड़का।
ब्रह्मरंध्र–संज्ञा पुं० मस्तक के मध्य में माना हुआ गुप्त छेद जिससे होकर प्राण निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।
ब्रह्मराक्षस–संज्ञा पुं० वह ब्राह्मण जो मरकर भूत हुआ हो।
ब्रह्मलेख–संज्ञा पुं० भाग्य का लेख जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही उसके मस्तक पर लिख देते हैं।
ब्रह्मर्षि–संज्ञा पुं० ब्राह्मण ऋषि।
ब्रह्मवाद–संज्ञा पुं० १. वेद का पढ़ना-पढ़ाना। २. अद्वैतवाद।
ब्रह्मविद्या–संज्ञा स्त्री० ब्रह्म को जानने की विद्या। उपनिषद् विद्या।
ब्रह्मसमाज–संज्ञा पुं० दे० "ब्राह्म-समाज"।
ब्रह्महत्या–संज्ञा स्त्री० ब्राह्मण-वध। ब्राह्मण को मार डालना। (महापाप)
ब्रह्मांड–संज्ञा पुं० १. चौदहों भुवनों का समूह। २. खोपड़ी। कपाल।
ब्रह्मा–संज्ञा पुं० ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना करनेवाला रूप। विधाता।
ब्रह्माणी–संज्ञा स्त्री० ब्रह्मा की स्त्री या शक्ति।
ब्रह्मानंद–संज्ञा पुं० ब्रह्म के स्वरूप के अनुभव से होनेवाला आनंद।
ब्रह्मावर्त्त–संज्ञा पुं० सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।
ब्रह्मास्त्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्र से चलाया जाता था।
ब्राह्मण–संज्ञा पुं० [स्त्री० ब्राह्मणी]

भारी-वि० १. जिसमें बोझ हो। २. कठिन। ३. विशाल। बड़ा।

भारीपन-संज्ञा पुं० भारी होने का भाव। गुरुत्व।

भार्गव-संज्ञा पुं० १. भृगु के वंश में उत्पन्न पुरुष। २. एक जाति जो संयुक्त-प्रदेश के पश्चिम में पाई जाती है।
वि० भृगु-संबंधी। भृगु का।

भार्गवेश-संज्ञा पुं० परशुराम।

भार्य्या-संज्ञा स्त्री० पत्नी। स्त्री।

भाल-संज्ञा पुं० कपाल। ललाट।

भालचंद्र-संज्ञा पुं० १. महादेव। २. गणेश।

भालना-क्रि० स० अच्छी तरह देखना।

भाललोचन-संज्ञा पुं० शिव।

भाला-संज्ञा पुं० बरछा। नेज़ा।

भालाबरदार-संज्ञा पुं० बरछा चलाने-वाला।

भाली-संज्ञा स्त्री० भाले की गाँसी या नोक।

भालुक-संज्ञा पुं० भालू। रीछ।

भालू-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध स्तनपायी भीषण चौपाया जो कई प्रकार का होता है। मदारी इसे पकड़कर नाचना और खेल करना सिखाते हैं। रीछ।

भाव-संज्ञा पुं० १. सत्ता। अस्तित्व। २. मन में उत्पन्न होनेवाली प्रवृत्ति। विचार। ३. अभिप्राय। ४. मुख की आकृति या चेष्टा। ५. ईश्वर, देवता आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति।

भावइ०†-अव्य० जी चाहे। इच्छा हो तो।

भावक॰-क्रि० वि० किंचित्। थोड़ा सा। ज़रा सा।
संज्ञा पुं० १. भावना करनेवाला। २. भक्त। प्रेमी।

भावगति-संज्ञा स्त्री० इरादा। इच्छा।

भावगम्य-वि० भक्ति-भाव से जानने योग्य।

भावग्राह्य-वि० भक्ति से ग्रहण करने योग्य।

भावज-संज्ञा स्त्री० भाई की स्त्री। भाभी।

भावता-वि० [स्त्री० भावती] जो भला लगे। प्रिय।
संज्ञा पुं० प्रियतम।

भाव-ताव-संज्ञा पुं० किसी चीज़ का मूल्य या भाव आदि।

भावन०†-वि० अच्छा या प्रिय लगनेवाला।

भावना-संज्ञा स्त्री० १. ध्यान। २. इच्छा। चाह। ३. पुट (वैद्यक)।

भावनि०†-संज्ञा स्त्री० जो कुछ जी में आवे।

भावनीय-वि० भावना करने योग्य।

भावभक्ति-संज्ञा स्त्री० १. भक्ति-भाव। २. सत्कार।

भाववाचक-संज्ञा पुं० व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित हो।

भाववाच्य-संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह जाना जाय कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है। इसमें तृतीया विभक्ति (करण कारक) रहती है।

१. चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके प्रधान कर्म पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं। २. वेद का वह भाग जो मंत्र नहीं कहलाता।

ब्राह्ममुहूर्त-संज्ञा पुं० सूर्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मसमाज-संज्ञा पुं० एक नया संप्रदाय जिसमें एक मात्र ब्रह्म की ही उपासना की जाती है।

ब्राह्मी-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। ३. एक प्रसिद्ध बूटी जो स्मरण-शक्ति और बुद्धि बढ़ानेवाली है।

भ

भ-हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण।

भंग-संज्ञा पुं० १. तरंग। लहर। २. पराजय। ३. टुकड़ा।
संज्ञा स्त्री० दे० "भाँग"।

भंगड़-वि० बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगी-संज्ञा पुं० [स्त्री० भंगिन] एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मलमूत्र आदि उठाना है।

भंगुर-वि० १. भंग होनेवाला। २. नाशवान्।

भँगेड़ी-वि० दे० "भंगड़"।

भंजन-संज्ञा पुं० १. तोड़ना। २. भंग करना।

भँजना-क्रि० अ० १. टुकड़े-टुकड़े होना। २. किसी बड़े सिक्के का छोटे-छोटे सिक्कों से बदला जाना।
क्रि० अ० १. बटा जाना। २. भाँजा जाना।

भँजानाꝏ-क्रि० स० तोड़ना।

भँजाना†-क्रि० स० १. बड़ा सिक्का आदि देकर उतने ही मूल्य के छोटे सिक्के लेना। २. भुनाना।
क्रि० स० दूसरे को भाँजने के लिये प्रेरणा करना या नियुक्त करना।

भंटा†-संज्ञा पुं० बैंगन।

भंड-संज्ञा पुं० दे० "भाँड़"।
वि० १. अश्लील या गंदी बातें बकनेवाला। २. पाखंडी।

भँड़फोड़†-संज्ञा पुं० १. मिट्टी के बरतनों को गिराना या तोड़ना-फोड़ना। २. रहस्योद्घाटन। ३. भंडाफोड़।

भँडरिया-संज्ञा पुं० एक जाति का नाम। इस जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता से लोगों को भविष्य बताकर निर्वाह करते हैं। भड्डर।
वि० पाखंडी।
संज्ञा स्त्री० दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख।

भँड़सार, भँड़साल†-संज्ञा स्त्री० वह गोदाम जहाँ अन्न इकट्ठा

भावार्थ-संज्ञा पुं० वह अर्थ जिसमें मूल का केवल भाव आ जाय।
भाविक-वि० जाननेवाला। मर्मज्ञ।
भावी-संज्ञा स्त्री० १. भविष्यत् काल। आनेवाला समय। २. भाग्य।
भावुक-वि० १. भावना करनेवाला। २. जिस पर भावों का जल्दी प्रभाव पड़े।
भाषण-संज्ञा पुं० १. कथन। बातचीत। २. व्याख्यान।
भाषांतर-संज्ञा पुं० अनुवाद। उल्था।
भाषा-संज्ञा स्त्री० १. बोली। ज़बान। वाणी। २. किसी विशेष जन-समुदाय में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग। आधुनिक हिंदी।
भाषाबद्ध-वि० साधारण देशभाषा में बना हुआ।
भाषित-वि० कहा हुआ।
भाषी-संज्ञा पुं० बोलनेवाला।
भाष्य-संज्ञा पुं० सूत्रों की की हुई व्याख्या या टीका।
भाष्यकार-संज्ञा पुं० सूत्रों की व्याख्या करनेवाला।
भास-संज्ञा पुं० १. दीप्ति। प्रकाश। २. किरण।
भासना-क्रि० अ० १. प्रकाशित होना। २. मालूम होना। ३. देख पड़ना।
भासमान-वि० ज्ञात पड़ता हुआ। भासता हुआ।
भासित-वि० चमकीला। प्रकाशित।
भास्कर-संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे आदि बनाना।
भास्वर-संज्ञा पुं० १. दिन। २. सूर्य।
वि० चमकदार।
भिंगाना-क्रि० स० दे० "भिगोना"।
भिजाना-क्रि० स० दे० "भिगोना"।
भिंडी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है।
भिक्षा-संज्ञा स्त्री० १. याचना। २. भीख। ३. इस प्रकार माँगने से मिली हुई वस्तु।
भिक्षु-संज्ञा पुं० १. भीख माँगनेवाला। भिखारी। २. संन्यासी।
भिक्षुक-संज्ञा पुं० भिखमंगा।
भिखमंगा-संज्ञा पुं० जो भीख माँगे।
भिखारिणी-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो भिक्षा माँगे।
भिखारिन-संज्ञा स्त्री० दे० "भिखारिणी"।
भिखारी-संज्ञा पुं० [स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी] भिक्षुक। भिखमंगा।
भिगोना-क्रि० स० किसी चीज़ को पानी से तर करना।
भिजवाना-क्रि० स० किसी को भेजने में प्रवृत्त करना।
भिजाना-क्रि० स० भिगोना।
भिज्ञ-वि० जानकार। वाक़िफ़।
भिड़-संज्ञा स्त्री० बर्रे। ततैया।
भिड़ना-क्रि० अ० १. टक्कर खाना। २. लड़ाई करना।
भितल्ला-संज्ञा पुं० दोहरे कपड़े में भीतरी ओर का पल्ला।
भिताना†-क्रि० स० डरना।
भित्ति-संज्ञा स्त्री० १. दीवार। २. वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाय।
भिदना-क्रि० अ० १. पैवस्त होना। घुस जाना। २. छेदा जाना।
भिनकना-क्रि० अ० भिन भिन शब्द करना। (मक्खियों का)

किया जाता है। खत्ती।
भंडा–संज्ञा पुं० बर्तन। पात्र।
भंडार–संज्ञा पुं० १. खज़ाना। २. अन्न आदि रखने का स्थान। ३. पाकशाला।
भंडारा–संज्ञा पुं० १. दे० "भंडार"। २. साधुओं का भोज।
भंडारी–संज्ञा स्त्री० छोटी कोठरी। संज्ञा पुं० १. खज़ानची। कोषाध्यक्ष। २. रसोइया। रसोईदार।
भँड़ौआ–संज्ञा पुं० १. भाँड़ों के गाने का गीत। २. हास्यआदि रसों की साधारण अथवा निम्न कोटि की कविता।
भँवर–संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केंद्र पर चक्राकार घूमती है।
भँवरकली–संज्ञा स्त्री० लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि वह जिधर चाहे, उधर सहज में घूम सकती है।
भँवरजाल–संज्ञा पुं० सांसारिक झगड़े बखेड़े। भ्रमजाल।
भँवरी–संज्ञा स्त्री० पानी का चक्कर। संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।
भइया–संज्ञा पुं० १.भाई। २. बराबर-वालों के लिये आदर-सूचक शब्द।
भक–संज्ञा स्त्री० सहसा अथवा रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।
भकुआ†–वि० मूर्ख। मूढ़।
भकुआना–क्रि० अ० चकपका जाना। घबरा जाना।
क्रि० स० १. चकपका देना। २. मूर्ख बनाना।
भकोसना–क्रि० स० जल्दी या भद्दे-पन से खाना।
भक्त–वि० सेवा करनेवाला। भक्ति करनेवाला।
भक्तवत्सल–वि० जो भक्तों पर कृपा करता हो।
भक्ति–संज्ञा स्त्री० १. पूजा। अर्चन। २. ईश्वर में अत्यंत अनुराग। इसके नौ प्रकार ये हैं—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन।
भक्तिसूत्र–संज्ञा पुं० शांडिल्य मुनि-कृत वैष्णवसंप्रदाय का एकसूत्र-ग्रंथ।
भक्षक–वि० [स्त्री० भक्षिका] खाने-वाला।
भक्षण–संज्ञा पुं० [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] भोजन करना। किसी वस्तु को दाँतों से काटकर खाना।
भक्षना*–क्रि० स० खाना।
भक्षी–वि० [स्त्री० भक्षिणी] खाने-वाला। भक्षक।
भक्ष्य–वि० खाने के योग्य। संज्ञा पुं० खाद्य। अन्न। आहार।
भख*–संज्ञा पुं० आहार। भोजन।
भखना*–क्रि० स० खाना।
भगंदर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का फोड़ा जो गुदावर्त के किनारे होता है।
भग–संज्ञा पुं० १. योनि। २. ऐश्वर्य। ३. सौभाग्य।
भगत–वि० [स्त्री० भगतिन] सेवक। उपासक। संज्ञा पुं० वैष्णव या वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो।
भगतिया–संज्ञा पुं० [स्त्री० भगतिन] राजपूताने की एक जाति जो गाने-

भिनभिनाना-क्रि० अ० भिन भिन शब्द करना।
भिनसार†-संज्ञा पुं० सबेरा।
भिन्न-वि० १. अलग। पृथक्। २. दूसर।
संज्ञा पुं० वह संख्या जो एकाई से कम हो। (गणित)
भिन्नता-संज्ञा स्त्री० भिन्न होने का भाव।
भिलनी-संज्ञा स्त्री० भील जाति की स्त्री।
भिलावाँ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध जंगली वृक्ष। इसका फल औषध के काम में आता है।
भिश्ती-संज्ञा पुं० मशक द्वारा पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का।
भिषक्-संज्ञा पुं० वैद्य।
भींगना-क्रि० अ० दे० "भीगना"।
भींजना※†-क्रि० अ० गीला होना। पानी पड़ना।
भी-अव्य० तक। किसी अन्य वस्तु के साथ।
भीख-संज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।
भीगना-क्रि० अ० पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग के कारण तर होना।
भीटा-संज्ञा पुं० ऊँची या टीलेदार ज़मीन।
भीड़-संज्ञा स्त्री० आदमियों का जमाव।
भीड़भड़क्का-संज्ञा पुं० दे० "भीड़-भाड़"।
भीड़भाड़-संज्ञा स्त्री० मनुष्यों का जमाव।
भीत-संज्ञा स्त्री० दीवार।
वि० [स्त्री० भीता] डरा हुआ।
भीतर-क्रि० वि० अंदर।
संज्ञा पुं० रनिवास। ज़नानख़ाना।
भीतरी-वि० १. अंदर का। २. गुप्त।
भीति-संज्ञा स्त्री० डर। भय।
संज्ञा स्त्री० दीवार।
भीती※†-संज्ञा स्त्री० दीवार।
संज्ञा स्त्री० डर। भय।
भीनना-क्रि० अ० भर जाना। समा जाना।
भीम-संज्ञा पुं० १. भयानक रस। २. पाँचों पांडवों में से एक। ये बहुत बड़े वीर और बलवान् थे।
वि० १. भयानक। २. बहुत बड़ा।
भीमता-संज्ञा स्त्री० भयंकरता।
भीमसेन-संज्ञा पुं० युधिष्ठिर के छोटे भाई। भीम।
भीमसेनी कपूर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया कपूर।
भीर※-संज्ञा स्त्री० १. दे० "भीड़"। २. कष्ट। दुःख। तकलीफ़।
※ वि० डरा हुआ। भयभीत।
भीरु-वि० डरपोक। कायर।
भीरुता-संज्ञा स्त्री० डरपोकपन।
भीरुताई※-संज्ञा स्त्री० दे० "भीरुता"।
भीरे※†-क्रि० वि० समीप। नज़दीक।
भील-संज्ञा पुं० [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति।
भीष※-संज्ञा स्त्री० भीख।
भीषण-वि० देखने में बहुत भयानक। डरावना।
भीषणता-संज्ञा स्त्री० भीषण होने का भाव। भयंकरता।

बजाने का काम करती है।

भगदड़–संज्ञा स्त्री० भागने की क्रिया या भाव।

भगना–क्रि० अ० दे० भागना।
संज्ञा पुं० दे० भानजा।

भगवंत*–संज्ञा पुं० दे० "भगवत्"।

भगवती–संज्ञा स्त्री० १. देवी। २. गौरी। ३. सरस्वती। दुर्गा।

भगवत्–संज्ञा पुं० ईश्वर।

भगवद्गीता–संज्ञा स्त्री० महाभारत के भीष्मपर्व के अंतर्गत एक प्रसिद्ध सर्वश्रेष्ठ प्रकरण जिसमें भगवान् कृष्ण और अर्जुन का संवाद है।

भगवान्, भगवान–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. कोई पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगाना–क्रि० स० १. किसी को भागने में प्रवृत्त करना। २. हरण करना। ३. स्त्री-हरण।

भगिनी–संज्ञा स्त्री० बहन।

भगीरथ–संज्ञा पुं० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो गंगा को पृथ्वी पर लाए थे।
वि० भगीरथ की तपस्या के समान भारी। बहुत बड़ा।

भगोड़ा–वि० १. भागा हुआ। २. कायर।

भगौती*–संज्ञा स्त्री० दे० "भगवती"।

भगौहाँ–वि० १. भागने को उद्यत। २. कायर। ३. भगवा। गेरुआ।

भग्गू–वि० जो विपत्ति देखकर भागता हो। कायर।

भग्न–वि० टूटा हुआ।

भग्नावशेष–संज्ञा पुं० १. खँडहर। २. किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े।

भचक–संज्ञा स्त्री० भचककर चलने का भाव। लँगड़ापन।

भचकना–क्रि० अ० आश्चर्य में निमग्न होकर रह जाना।
क्रि० अ० चलने के समय पैर का इस प्रकार टेढ़ा पड़ना कि देखने में लँगड़ापन मालूम हो।

भजन–संज्ञा पुं० १. बार-बार किसी पूज्य या देवता आदि का नाम लेना। स्मरण। जप। २. वह गीत जिसमें देवता आदि के गुणों का कीर्त्तन हो।

भजना–क्रि० स० देवता आदि का नाम रटना। जपना।
क्रि० अ० भागना। भाग जाना।

भजनानंद–संज्ञा पुं० भजन से मिलनेवाला आनंद।

भजनानंदी–संज्ञा पुं० भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला।

भजनी–संज्ञा पुं० भजन गानेवाला।

भट–संज्ञा पुं० १. युद्ध करनेवाला। योद्धा। २. सिपाही।

भटकटाई, भटकटैया–संज्ञा स्त्री० एक छोटा और कटिदार क्षुप।

भटकना–क्रि० अ० १. व्यर्थ इधर-उधर घूमते फिरना। २. भ्रम में पड़ना।

भटकाना–क्रि० स० १. गलत रास्ता बताना। २. भ्रम में डालना।

भटमेरा*–संज्ञा पुं० दो वीरों का मुकाबला। भिड़ंत।

भट्टा–संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के संबोधन

भीष्म–संज्ञा पुं० १. भयानक रस। (साहित्य) २. राजा शांतनु के पुत्र जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। देवव्रत। गांगेय।

भीष्मक–संज्ञा पुं० विदर्भ देश के एक राजा जो रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्मपितामह–संज्ञा पुं० दे० "भीष्म"।

भुँइ*–संज्ञा स्त्री० पृथिवी। भूमि।

भुँइफोर–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बरसाती खुमी।

भुँइहरा–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जो भूमि के नीचे खोदकर बनाया गया हो। २. तहखाना।

भुँजना†–क्रि० अ० दे० "भुनना"।

भुअंग*†–संज्ञा पुं० साँप।

भुअंगम*–संज्ञा पुं० साँप।

भुअन*–संज्ञा पुं० दे० "भुवन"।

भुआल*–संज्ञा पुं० राजा।

भुइँ*–संज्ञा स्त्री० भूमि। पृथ्वी।

भुइँडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भुइँहार–संज्ञा पुं० दे० "भूमिहार"।

भुक*–संज्ञा पुं० १. भोजन। २. अग्नि।

भुक्खड़–वि० १. जिसे भूख लगी हो। भूखा। २. वह जो बहुत खाता हो।

भुक्त–वि० १. जो खाया गया हो। २. भोगा हुआ।

भुक्ति–संज्ञा स्त्री० १. भोजन। २. लौकिक सुख।

भुखमरा–वि० १. जो भूखों मरता हो। २. पेटू।

भुखाना†–क्रि० अ० भूख से पीड़ित होना।

भुगतना–क्रि० स० सहना। झेलना। भोगना।

भुगतान–संज्ञा पुं० १. निपटारा। २. मूल्य या देन चुकाना।

भुगताना–क्रि० स० भुगतने का सकर्मक रूप। पूरा करना।

भुजंग–संज्ञा पुं० साँप।

भुजंगा–संज्ञा पुं० काले रंग का एक पक्षी। भुजैटा।

भुजंगिनी–संज्ञा स्त्री० साँपिन।

भुजंगी–संज्ञा स्त्री० १. साँपिन। २. नागिन।

भुज–संज्ञा पुं० १. बाहु। बाँह। २. ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। ३. त्रिभुज का आधार।

भुजग–संज्ञा पुं० साँप।

भुजदंड–संज्ञा पुं० बाहुदंड।

भुजपाश–संज्ञा पुं० गलबाँही। गले में हाथ डालना।

भुजबंद–संज्ञा पुं० बाजूबंद।

भुजमूल–संज्ञा पुं० १. मोढ़ा। २. काँख।

भुजा–संज्ञा स्त्री० बाँह। हाथ।

भुजाली–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की बड़ी टेढ़ी छुरी। २. छोटी बरछी।

भुजिया†–संज्ञा पुं० १. उबाले हुए धान का चावल। २. सूखी भूनी हुई तरकारी।

भुजैल–संज्ञा पुं० भुजंगा पक्षी।

भुजौना†–संज्ञा पुं० भुना हुआ खाद्य।

भुट्टा–संज्ञा पुं० मक्के या जुवार बाजरे की हरी बाल।

भुन–संज्ञा पुं० मक्खी आदि का शब्द। अव्यक्त गुंजार का शब्द।

के लिये एक आदरसूचक शब्द।

भट्ट-संज्ञा पुं० १. ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. भाट।

भट्ठा-संज्ञा पुं० १. बड़ी भट्ठी। २. ईंटें या खपड़े इत्यादि पकाने का पजावा।

भट्ठी-संज्ञा स्त्री० १. ईंटों आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा जिस पर हलवाई, लोहार और वैद्य आदि अनेक प्रकार के काम करते हैं। २. वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती है।

भठियारपन-संज्ञा पुं० १. भठियारे का काम। २. भठियारों की तरह लड़ना और गालियाँ बकना।

भठियारा-संज्ञा पुं० [स्त्री० भठियारी या भठियारिन] सराय का प्रबंध करनेवाला या रक्षक।

भड़क-संज्ञा स्त्री० १. दिखाऊ चमक-दमक। चमकीलापन। भड़कीले होने का भाव। २. उत्तेजित होने का भाव।

भड़कदार-वि० १. चमकीला। भड़कीला। २. रोबदार।

भड़कना-क्रि० अ० १. तेज़ी से जल उठना। २. झिझकना। चौंकना। डरकर पीछे हटना। (पशुओं के लिये) ३. क्रुद्ध होना।

भड़काना-क्रि० स० १. प्रज्वलित करना। जलाना। २. उभारना।

भड़कीला-वि० दे० "भड़कदार"।

भड़भड़-संज्ञा स्त्री० १. भड़भड़ शब्द जो प्रायः आघातों से होता है। २. भीड़। भभ्भड़। ३. व्यर्थ की और बहुत अधिक बातचीत।

भड़भड़िया-वि० बहुत अधिक और व्यर्थ की बातें करनेवाला।

भड़भूँजा-संज्ञा पुं० एक जाति जो भाड़ में अन्न भूनती है।

भेड़हाई[*]†-क्रि० वि० चोरों की तरह। लुक छिप या दबकर।

भड़ी-संज्ञा स्त्री० झूठा बढ़ावा।

भडुआ-संज्ञा पुं० वह जो वेश्याओं की दलाली करता हो।

भणना[*]†-क्रि० स० कहना।

भणित-वि० कहा हुआ।

भतार†-संज्ञा पुं० पति। खसम।

भतीजा-संज्ञा पुं० [स्त्री० भतीजी] भाई का पुत्र। भाई का लड़का।

भत्ता-संज्ञा पुं० दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय मिलता है।

भदई-संज्ञा स्त्री० वह फ़सल जो भादों में तैयार होती है।

भदावर-संज्ञा पुं० एक प्रांत जो आजकल ग्वालियर राज्य में है।

भदेसिल†-वि० भद्दा। भोंडा।

भदैंहा†-वि० भादों मास में होनेवाला।

भदौरिया-वि० भदावर प्रांत का। भदावर-संबंधी।

भद्दा-वि०, पुं० [स्त्री० भद्दी] जो देखने में मनोहर न हो। कुरूप।

भद्दापन-संज्ञा पुं० भद्दे होने का भाव।

भद्र-वि० सभ्य। सुशिक्षित।

भुनगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० भुनगी] एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।
भुनना–क्रि० अ० भूनने का अकर्मक रूप। भूना जाना।
भुनभुनाना–क्रि० अ० भुन भुन शब्द करना।
भुनाना–क्रि० स० बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना।
भुरकना–क्रि० अ० सूखकर भुरभुरा हो जाना।
क्रि० स० भुरभुराना। बुरकना।
भुरकुस–संज्ञा पुं० चूर्ण।
भुरता–संज्ञा पुं० १. दबकर विकृतावस्था को प्राप्त पदार्थ। २. चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुरा–वि० [स्त्री० भुरभुरी] जिसके कण थोड़ा आघात लगने पर भी अलग हो जायँ। बलुआ।
भुलक्कड़–वि० जो बराबर भूल जाता हो। जिसका स्वभाव भूलने का हो।
भुलवाना–क्रि० स० १ भूलना का प्रेरणार्थक रूप। २. भ्रम में डालना।
भुलाना–क्रि० स० १. भूलने का प्रेरणार्थक रूप। २. भूलना।
*। क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। २. भटकना।
भुलावा–संज्ञा पुं० धोखा।
भुवंग–संज्ञा पुं० साँप।
भुवंगम–संज्ञा पुं० साँप।
भुवः–संज्ञा पुं० वह आकाश या लोक जो भूमि और सूर्य्य के अंतर्गत है।
भुव–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
* संज्ञा स्त्री० भौंह। भ्रू।
भुवन–संज्ञा पुं० १. जगत्। २. लोक। पुराणानुसार लोक चौदह हैं।
भुवनपति–संज्ञा पुं० भूपति। राजा।
भुवा–संज्ञा पुं० घूआ। रूई।
भुवाल*–संज्ञा पुं० राजा।
भुवि–संज्ञा स्त्री० भूमि। पृथिवी।
भुशुंडी–संज्ञा पुं० दे० "काकभुशुंडी"।
भुस–संज्ञा पुं० भूसा।
भुसी*–संज्ञा स्त्री० भूसी।
भूँकना–क्रि० अ० भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना (कुत्तों का)। (कुत्तों की बोली)
भूँचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भूँजना†–क्रि० स० १. दे० "भूनना"। २. दुःख देना।
भूँजा†–संज्ञा पुं० भूना हुआ। चबेना।
भूँडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।
भू–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. स्थान।
भूकंप–संज्ञा पुं० पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा कुछ प्राकृतिक कारणों से हिल उठना।
भूख–संज्ञा स्त्री० १. खाने की इच्छा। २. क्षुधा।
भूखना*†–क्रि० स० सजाना।
भूखा–वि० पुं० [स्त्री० भूखी] १. जिसे भूख लगी हो। २. गरीब, दरिद्र।
भूगर्भ–संज्ञा पुं० पृथ्वी का भीतरी भाग।
भूगर्भशास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसके द्वारा इस बात का ज्ञान होता है कि पृथ्वी का ऊपरी और भीतरी भाग किन-किन तत्त्वों का बना है और उसका वर्त्तमान रूप किन कारणों से हुआ है।
भूगोल–संज्ञा पुं० १. पृथ्वी। २. वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों आदि का ज्ञान होता है।

भद्रक–संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश। २. एक वर्णवृत्त का नाम।
भद्रकाली–संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी की एक मूर्ति।
भद्रता–संज्ञा स्त्री० शिष्टता। सभ्यता। भलमनसी।
भद्रा–संज्ञा स्त्री० १. फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग। २. बाधा। (बोलचाल)
भनक–संज्ञा स्त्री० १. धीमा शब्द। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।
भनकनाॐ†–क्रि० स० कहना।
भननाॐ–क्रि० स० कहना।
भनभनाना–क्रि० अ० भनभन शब्द करना। गुंजारना।
भनभनाहट–संज्ञा स्त्री० भनभनाने का शब्द।
भपका–संज्ञा पुं० अर्क आदि उतारने का एक प्रकार का बंद बड़ा घड़ा।
भभकना–क्रि० अ० १. उबलना। २. ज़ोर से जलना। भड़कना।
भभकी–संज्ञा स्त्री० घुड़की।
भभ्भड़, भभ्भड़–संज्ञा स्त्री० भीड़-भाड़। अव्यवस्थित जन-समुदाय।
भभरनाॐ†–क्रि० अ० भयभीत होना। डरना।
भभूका–संज्ञा पुं० ज्वाला।
भभूत–संज्ञा स्त्री० भस्म जिसे शैव लोग भुजाओं आदि पर लगाते हैं।
भयंकर–वि० जिसे देखने से भय लगता हो।
भयंकरता–संज्ञा स्त्री० भयंकर होने का भाव। डरावनापन। भीषणता।
भय–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मनोविकार जो किसी आनेवाली भीषण आपत्ति की आशंका से उत्पन्न होता है। डर। खौफ़।
भयप्रद–वि० दे० "भयानक"।
भयभीत–वि० डरा हुआ।
भयहारी–वि० डर छुड़ानेवाला। डर दूर करनेवाला।
भयानॐ†–वि० डरावना।
भयानक–वि० जिसे देखने से भय लगता हो।
भयानाॐ†–क्रि० अ० डरना। क्रि० स० भयभीत करना। डराना।
भयावन†–वि० डरावना।
भयावह–वि० भयंकर। डरावना।
भर–वि० पूरा। सब।
भरकनाॐ†–क्रि० अ० दे० "भड़कना"।
भरण–संज्ञा पुं० पालन। पोषण।
भरणी–संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र।
भरत–संज्ञा पुं० १. कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई जिनका विवाह माण्डवी के साथ हुआ था। २. शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र जिनका जन्म कश्यप ऋषि के आश्रम में हुआ था। इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है। ३. एक प्रसिद्ध मुनि जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य माने जाते हैं। ४. संगीत शास्त्र के एक आचार्य का नाम।
भरतखंड–संज्ञा पुं० राजा भरत के किए हुए पृथ्वी के नौ खंडों में से एक खंड। भारतवर्ष। हिंदुस्तान।
भरता–संज्ञा पुं० एक प्रकार का नम-

भूचर–संज्ञा पुं० भूमि पर रहनेवाला प्राणी।

भूचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भूटान–संज्ञा पुं० हिमालय का एक प्रदेश जो नेपाल के पूर्व में है।

भूटानी–वि० भूटान देश का। भूटान संबंधी।

संज्ञा पुं० १. भूटान देश का निवासी। २. भूटान देश का घोड़ा।

संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

भूडोल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भूत–संज्ञा पुं० १. वे मूल द्रव्य जिनकी सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है। २. सृष्टि का कोई जड़ या चेतन, अचर या चर पदार्थ या प्राणी। ३. प्राणी। ४. बीता हुआ समय। ५. व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका। ६. प्रेत। जिन। शैतान।

वि० गत। बीता हुआ।

भूतत्त्वविद्या–संज्ञा स्त्री० दे० "भूगर्भ-शास्त्र"।

भूतनाथ–संज्ञा पुं० शिव।

भूतपूर्व–वि० वर्तमान से पहले का। इससे पहले का।

भूतभावन–संज्ञा पुं० महादेव।

भूत भाषा–संज्ञा स्त्री० पैशाची भाषा।

भूतल–संज्ञा पुं० १. पृथ्वी का ऊपरी तल। २. संसार। दुनिया।

भूतात्मा–संज्ञा पुं० १. शरीर। २. जीवात्मा।

भूति–संज्ञा स्त्री० १. वैभव। धन-संपत्ति। २. भस्म।

भूतिनी–संज्ञा स्त्री० भूत योनि में प्राप्त स्त्री।

भूतृण–संज्ञा पुं० रूसा घास।

भूतेश्वर–संज्ञा पुं० महादेव।

भूतोन्माद–संज्ञा पुं० वह उन्माद जो पिशाचों के आक्रमण के कारण हो।

भूदेव–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।

भूधर–संज्ञा पुं० पहाड़।

भूनना–क्रि० स० १. आग पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। २. तलना।

भूप, भूपति–संज्ञा पुं० राजा।

भूपाल–संज्ञा पुं० राजा।

भूभल–संज्ञा स्त्री० गर्म रेत।

भूभुरि*–संज्ञा स्त्री० दे० "भूभल"।

भूमंडल–संज्ञा पुं० पृथ्वी।

भूमि–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। ज़मीन।

भूमिका–संज्ञा स्त्री० १. रचना। २. किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले।

भूमिज–वि० भूमि से उत्पन्न।

भूमिजा–संज्ञा स्त्री० सीताजी।

भूमिपुत्र–संज्ञा पुं० मंगल ग्रह।

भूमिहार–संज्ञा पुं० एक जाति जो बिहार और संयुक्त प्रांत में पाई जाती है।

भूरपूर*†–वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर"।

भूरसी दक्षिणा–संज्ञा स्त्री० वह दक्षिणा जो किसी धर्मकृत्य के अंत में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।

भूरा–संज्ञा पुं० मिट्टी का सा रंग। ख़ाकी रंग।

कीन सालन जो बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जाता है। चोखा।
भरतार–संज्ञा पुं० पति। खसम।
भरती–संज्ञा स्त्री० १. किसी चीज़ में भरे जाने का भाव। भरा जाना। २. दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव।
भरथरी–संज्ञा पुं० दे० "भर्तृहरि"।
भरद्वाज–संज्ञा पुं० १. एक वैदिक ऋषि जो गोत्र-प्रवर्तक और मंत्र-कार थे। २. इन ऋषि के वंशज।
भरना–क्रि० स० खाली जगह को पूरा करने के लिये कोई चीज़ डालना।
संज्ञा पुं० भरने की क्रिया या भाव।
भरनी–संज्ञा स्त्री० करघे में की ढरकी। नार।
भरपाई–क्रि० वि० पूर्ण रूप से। भली भाँति।
संज्ञा स्त्री० जो कुछ बाकी हो, वह पूरा पूरा पा जाना।
भरपूर–वि० १. पूरी तरह से भरा हुआ। २. परिपूर्ण।
क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।
भरम०†–संज्ञा पुं० १. संशय। संदेह। २ रहस्य।
भरमाना–क्रि० स० भ्रम में डालना। बहकाना।
भरमार–संज्ञा स्त्री० बहुत ज्यादती। अत्यंत अधिकता।
भरराना–क्रि० अ० १. भरर शब्द के साथ गिरना। २. टूट पड़ना।
भरवाना–क्रि० स० भरने का काम दूसरे से कराना।
भरसक– क्रि० वि० यथाशक्ति। जहाँ तक हो सके।
भरसाई–संज्ञा पुं० दे० "भाड़"।
भराई–संज्ञा स्त्री० भरने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
भराव–संज्ञा पुं० भरने का काम या भाव।
भरित–वि० भरा हुआ।
भरी–संज्ञा स्त्री० दस माशे या एक रुपए के बराबर एक तौल।
भरुहाना†–क्रि० अ० घमंड करना। अभिमान करना।
भरैया†–वि० पालन करनेवाला। रक्षक।
भरोसा–संज्ञा पुं० १. आसरा। २. सहारा।
भर्ग–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
भर्त्ता–संज्ञा पुं० १. अधिपति। स्वामी। २. मालिक। खाविंद।
भर्त्तार–संज्ञा पुं० पति। स्वामी।
भर्त्तृहरि–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैया-करण और कवि जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के छोटे भाई थे।
भर्त्सना–संज्ञा स्त्री० १. निंदा। शिकायत। २. फटकार।
भलमनसत, भलमनसी–संज्ञा स्त्री० भलेमानस होने का भाव। शराफ़त।
भला–वि० १. अच्छा। उत्तम। २. बढ़िया।
संज्ञा पुं० कल्याण।
भलाई–संज्ञा स्त्री० १. भले होने का भाव। भलापन। २. उपकार। नेकी।
भले–क्रि० वि० भली भाँति। अच्छी तरह। पूर्ण रूप से।
भव–संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति। जन्म। २. शिव। ३. संसार। जगत्।
भवदीय–सर्व० आपका। तुम्हारा।

वि० मटमैले रंग का। खाकी।
भूरि–वि० अधिक। बहुत।
भूर्जपत्र–संज्ञा पुं० भोजपत्र।
भूल–संज्ञा स्त्री० १. भूलने का भाव। २. गलती। चूक।
भूलना–क्रि० स० १. विस्मरण करना। याद न रखना। २. गलती करना।
भूलभुलैयाँ–संज्ञा स्त्री० १. वह घुमावदार और चक्कर में डालनेवाली इमारत जिसमें जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २. चकाबू।
भूलोक–संज्ञा पुं० संसार। जगत्।
भूवा–संज्ञा पुं० रूई।
भूशायी–वि० १. पृथ्वी पर सोनेवाला। २. पृथ्वी पर गिरा हुआ।
भूषण–संज्ञा पुं० १. अलंकार। गहना। जेवर। २. वह जिससे किसी चीज़ की शोभा बढ़ती हो।
भूषन*–संज्ञा पुं० दे० "भूषण"।
भूषा–संज्ञा स्त्री० १. गहना। जेवर। २. सजाने की क्रिया।
भूषित–वि० १. गहना पहने हुआ। अलंकृत। २. सजाया हुआ। सँवारा हुआ।
भूसा–संज्ञा पुं० गेहूँ, जौ आदि की बालों का महीन और टुकड़े टुकड़े किया हुआ छिलका।
भूसी–संज्ञा स्त्री० १. भूसा। २. किसी अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।
भूसुता–संज्ञा स्त्री० सीता।
भूसुर–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
भृंग–संज्ञा पुं० १. भौंरा। २. एक प्रकार का कीड़ा।
भृंगराज–संज्ञा पुं० १. भँगरा नामक वनस्पति। भँगरैया। २. काले रंग का एक पक्षी।
भृंगी–संज्ञा पुं० शिवजी का एक पारिषद् या गण।
संज्ञा स्त्री० भौंरी।
भृकुटी–संज्ञा स्त्री० भौंह।
भृगु–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध मुनि। २. शुक्राचार्य। ३. शुक्रवार। ४. शिव।
भृगुकच्छ–संज्ञा पुं० आधुनिक भड़ौच जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था।
भृगुनाथ–संज्ञा पुं० परशुराम।
भृगुरेखा–संज्ञा स्त्री० विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।
भृत्य–संज्ञा पुं० नौकर।
भेंट–संज्ञा स्त्री० १. मिलना। मुलाकात। २. उपहार। नज़राना।
भेंटना*–क्रि० स० १. मुलाकात करना। २. गले लगाना।
भेउ*–संज्ञा पुं० भेद। रहस्य।
भेक–संज्ञा पुं० दे० "मेंढ़क"।
भेख–संज्ञा पुं० दे० "वेष"।
भेजना–क्रि० स० किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिये रवाना करना।
भेजवाना–क्रि० स० भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा–संज्ञा पुं० खोपड़ी के भीतर का गूदा। मग़ज़।
भेड़–संज्ञा स्त्री० बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर।
भेड़ा–संज्ञा पुं० भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।
भेड़िया–संज्ञा पुं० कुत्ते की तरह का

भवन–संज्ञा पुं० मकान।
भवबंधन–संज्ञा पुं० संसार की झंझट। सांसारिक दुःख और कष्ट।
भवभंजन–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
भवभय–संज्ञा पुं० संसार में बार बार जन्म लेने और मरने का भय।
भवमोचन–वि० संसार के बंधनों से छुड़ानेवाले, भगवान्।
भवाँ†–संज्ञा स्त्री० फेरी। चक्कर।
भवाँना†–क्रि० स० घुमाना। फिराना।
भवानी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
भवितव्य–संज्ञा पुं० होनहार।
भवितव्यता–संज्ञा स्त्री० १. होनी। २. किस्मत।
भविष्य–वि० वर्तमान काल के उपरांत आनेवाला काल।
भविष्यत्–संज्ञा पुं० भविष्य।
भविष्यद्वक्ता–संज्ञा पुं० भविष्यद्वाणी करनेवाला।
भविष्यद्वाणी–संज्ञा स्त्री० भविष्य में होनेवाली वह बात जो पहले से ही कह दी गई हो।
भवेश–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।
भव्य–वि० देखने में भारी और सुंदर। शानदार।
भव्यता–संज्ञा स्त्री० भव्य होने का भाव।
भसना†–क्रि० अ० १. पानी के ऊपर तैरना। २. पानी में डूबना।
भसम–संज्ञा पुं० दे० "भस्म"।
भसमा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खिज़ाब।
भसान†–संज्ञा पुं० काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना।
भसाना†–क्रि० स० १. किसी चीज़ को पानी में तरने के लिये छोड़ना। २. पानी में डालना।
भसुंड–संज्ञा पुं० हाथी। गज।
भसुर–संज्ञा पुं० पति का बड़ा भाई। जेठ।
भस्म–संज्ञा पुं० लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख। वि० जो जलकर राख हो गया हो।
भस्मक–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें भोजन तुरंत पच जाता है।
भस्मासुर–संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य।
भस्मीभूत–वि० जो जलकर राख हो गया हो।
भहराना–क्रि० अ० १. टूट पड़ना। २. एकाएक गिरना।
भाँग–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ मादक होती हैं। भंग। विजया। बूटी।
भाँज–संज्ञा स्त्री० १. भाँजने या घुमाने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय।
भाँजना–क्रि० स० १. तह करना। २. मुगदर आदि घुमाना। (व्यायाम)
भाँजी†–संज्ञा स्त्री० वह बात जो किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिये कही जाय। चुगली।
भाँटा†–संज्ञा पुं० दे० "बैंगन"।
भाँड़–संज्ञा पुं० १. विदूषक। मसखरा। २. एक प्रकार के पेशेवर जो महफ़िलों आदि में जाकर नाचते गाते और हास्यपूर्ण नकलें उतारते हैं।
भाँड़ा–संज्ञा पुं० बरतन। पात्र।

एक प्रसिद्ध जंगली मांसाहारी जंतु। सियार। शृगाल।

भेड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "भेड़"।

भेद–संज्ञा पुं० १. भेदने या छेदने की क्रिया। २. शत्रु-पक्ष के लोगों को बहकाकर अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष उत्पन्न करना। ३. भीतरी छिपा हुआ हाल।

भेदक–वि० १. छेदनेवाला। २. रेचक। दस्तावर। (वैद्यक)

भेदन–संज्ञा पुं० भेदने की क्रिया। छेदना। बेधना।

भेदभाव–संज्ञा पुं० अंतर। फ़रक़।

भेदिया–संज्ञा पुं० जासूस। गुप्तचर।

भेद्य–वि० जो भेदा या छेदा जा सके।

भेन†–संज्ञा स्त्री० बहिन।

भेरी–संज्ञा स्त्री० बड़ा ढोल या नगाड़ा।

भेरीकार–संज्ञा पुं० भेरी बजानेवाला।

भेली†–संज्ञा स्त्री० गुड़ या और किसी चीज़ की गोल बट्टी या पिंडी।

भेव†–संज्ञा पुं० मर्म की बात। भेद। रहस्य।

भेष–संज्ञा पुं० दे० "वेष"।

भेषज–संज्ञा पुं० औषध। दवा।

भेस–संज्ञा पुं० १. बाहरी रूपरंग और पहनावा आदि। वेष। २. कृत्रिम रूप और वस्त्र आदि।

भैंस–संज्ञा स्त्री० १. गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उससे बड़ा, चौपाया (मादा) जिसे लोग दूध के लिये पालते हैं। २. एक प्रकार की मछली।

भैंसा–संज्ञा पुं० भैंस का नर।

भैंसासुर–संज्ञा पुं० दे० "महिषासुर"।

भै–संज्ञा पुं० दे० "भय"।

भैना–संज्ञा स्त्री० बहिन।

भैयंस†–संज्ञा पुं० संपत्ति में भाइयों का हिस्सा या अंश।

भैया–संज्ञा पुं० भाई। भ्राता।

भैयाचारी–संज्ञा स्त्री० दे० "भाई-चारा"।

भैया दूज–संज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ल द्वितीया। इस दिन बहनें भाइयों को टीका लगाती हैं।

भैरव–वि० १. देखने में भयंकर। भयानक। २. भीषण शब्दवाला। संज्ञा पुं० १. शिव के एक प्रकार के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं। २. एक राग जो छः रागों में से मुख्य है।

भैरवी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की देवी जो महाविद्या की एक मूर्ति मानी जाती हैं। चामुंडा। (तंत्र) २. एक रागिनी जो सबेरे गाई जाती है।

भैरवी चक्र–संज्ञा पुं० तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट समयों में देवी का पूजन करने के लिये एकत्र होता है।

भोंकना–क्रि० स० बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज़ ज़ोर से धँसाना। घुसेड़ना।

भोंडा–वि० भद्दा। बदसूरत।

भोंडापन–संज्ञा पुं० १. भद्दापन। २. बेहूदगी।

भोंदू–वि० बेवकूफ़। मूर्ख।

भोंपू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा जो फूँककर बजाते हैं।

भोंसले–संज्ञा पुं० महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपाधि।

भोक्ता–वि० १. भोग करनेवाला। २. ऐयाश।

भांडागार–संज्ञा पुं० भंडार। कोश।
भांडागारिक–संज्ञा पुं० भंडारी।
भांडार–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ काम में आनेवाली बहुत सी चीज़ें रखी जाती हों। २. ख़ज़ाना। कोश।
भाँत, भाँति–संज्ञा स्त्री० तरह। क़िस्म। प्रकार। रीति।
भाँवना†–क्रि० स० ताड़ना।
भाँयँ भाँयँ–संज्ञा पुं० नितांत एकांत स्थान या सन्नाटे में होनेवाला शब्द।
भाँवर–संज्ञा स्त्री० १. चारों ओर घूमना। परिक्रमा करना। २. अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय वर और वधू करते हैं।
भा–संज्ञा स्त्री० १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। ३. किरण। ४. बिजली। ०† अव्य० चाहे। यदि इच्छा हो। वा।
भाइ*†–संज्ञा पुं० प्रेम। प्रीति। संज्ञा स्त्री० चाल-ढाल। रंग-ढंग।
भाइप*†–संज्ञा पुं० दे० "भाईचारा"।
भाई–संज्ञा पुं० १. बंधु। सहोदर। २. बराबरवालों के लिये एक प्रकार का संबोधन।
भाईचारा–संज्ञा पुं० भाई के समान परम मित्र होने का भाव।
भाई दूज–संज्ञा स्त्री० यमद्वितीया। भैया दूज।
भाईबंद–संज्ञा पुं० भाई और मित्र-बंधु आदि।
भाई बिरादरी–संज्ञा स्त्री० जाति या समाज के लोग।
भाउ*†–संज्ञा पुं० १. चित्तवृत्ति। २. प्रेम।
भाखना*†–क्रि० स० कहना।
भाखा†–संज्ञा स्त्री० दे० "भाषा"।
भाग–संज्ञा पुं० १. हिस्सा। अंश। २. नसीब। भाग्य। ३. सौभाग्य। ४. गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।
भागड़–संज्ञा स्त्री० बहुत से लोगों का एक साथ घबराकर भागना।
भागना–क्रि० अ० दौड़कर निकल जाना।
भागनेय–संज्ञा पुं० भानजा।
भागफल–संज्ञा पुं० वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो। लब्धि।
भागवत–संज्ञा पुं० १. अठारह पुराणों में से एक जिसमें १२ स्कंध, ३१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं। यह वेदांत का तिलक-स्वरूप माना जाता है। श्रीमद्भागवत। २. देवी भागवत। ३. ईश्वर का भक्त। वि० भगवत्-संबंधी।
भागिनेय–संज्ञा पुं० [स्त्री० भागिनेयी] बहन का लड़का। भानजा।
भागी–संज्ञा पुं० १. हिस्सेदार। २. हक़दार।
भागीरथ–संज्ञा पुं० दे० "भगीरथ"।
भागीरथी–संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।
भाग्य–संज्ञा पुं० तक़दीर। क़िस्मत। नसीब।
भाजक–वि० विभाग करनेवाला। संज्ञा पुं० वह अंक जिससे किसी राशि को भाग दिया जाय।
भाजन–संज्ञा पुं० १. बरतन। २. योग्य। पात्र।
भाजी–संज्ञा स्त्री० १. माँड। पीच। २. तरकारी, साग आदि।
भाज्य–संज्ञा पुं० वह अंक जिसे भाजक

भोग–संज्ञा पुं० १. सुख या दुःख आदि का अनुभव करना। २. विलास। ३. प्रारब्ध। ४. नैवेद्य।

भोगना–क्रि० अ० सुख-दुःख या शुभाशुभ कर्मफलों का अनुभव करना।

भोगबंधक–संज्ञा पुं० बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई भूमि या मकान आदि भोगने का अधिकार होता है।

भोग-विलास–संज्ञा पुं० आमोद-प्रमोद। सुख-चैन।

भोगी–संज्ञा पुं० भोगनेवाला।
वि० १. सुखी। २. इंद्रियों का सुख चाहनेवाला। ३. विषयासक्त।

भोग्य–वि० भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोग्यमान–वि० जो भोगा जाने को हो, अभी भोगा न गया हो।

भोज–संज्ञा पुं० बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना-पीना। जेवनार।
संज्ञा पुं० १. कान्यकुब्ज के एक प्रसिद्ध राजा जो महाराज रामभद्र देव के पुत्र थे। २. मालवे के परमार वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान् कवि थे।

भोजदेव–संज्ञा पुं० १. कान्यकुब्ज के महाराज भोज। २. दे० "भोज" (२)।

भोजन–संज्ञा पुं० १. खाना। २. खाने की सामग्री।

भोजनालय–संज्ञा पुं० रसोईघर।

भोजपत्र–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मँझोले आकार का वृक्ष। इसकी छाल प्राचीन काल में ग्रंथ और लेख आदि लिखने में बहुत काम आती थी।

भोजपुरी–संज्ञा स्त्री० भोजपुर की भाषा।
संज्ञा पुं० भोजपुर का निवासी।

भोजराज–संज्ञा पुं० दे० "भोज" (२)।

भोजविद्या–संज्ञा स्त्री० इंद्रजाल। बाजीगरी।

भोज्य–संज्ञा पुं० खाद्य पदार्थ।
वि० खाने योग्य। जो खाया जा सके।

भोटिया–संज्ञा पुं० भोट या भूटान देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।
वि० भूटान देश-संबंधी। भूटान का।

भोपा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की तुरही। भोंपू।

भोर–संज्ञा पुं० तड़का।

भोला–वि० सीधा-सादा। सरल।

भोलानाथ–संज्ञा पुं० महादेव। शिव।

भोलापन–संज्ञा पुं० १. सिधाई। २. सरलता। मूर्खता।

भोला-भाला–वि० सीधा-सादा। सरल चित्त का।

भौं–संज्ञा स्त्री० दे० "भौंह"।

भौंकना–क्रि० अ० कुत्तों का बोलना। भूँकना।

भौंचाल–संज्ञा पुं० दे० "भूकंप"।

भौंतुवा–संज्ञा पुं० १. काले रंग का एक कीड़ा जो प्रायः वर्षा ऋतु में जलाशयों आदि में जल-तल के ऊपर चक्कर काटता हुआ चलता है। २. एक प्रकार का रोग जिसमें

बाहुदंड के नीचे एक गिलटी निकल आती है। ३. तेली का बैल जो सबेरे से ही कोल्हू में जोता जाता है और दिन भर घूमा करता है।

भौंर–संज्ञा पुं० तेज़ बहते हुए पानी में पड़नेवाला चक्कर। आवर्त्त।

भौंरा–संज्ञा पुं० १. काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा जो देखने में बहुत ढ़ांग प्रतीत होता है। २. बड़ी मधुमक्खी। सारंग। ३. एक प्रकार का खिलौना।

भौंराना०–क्रि० स० १. घुमाना। परिक्रमा कराना। २. विवाह की भाँवर दिलाना।

क्रि० अ० घूमना। चक्कर काटना।

भौंरी–संज्ञा स्त्री० १. पशुओं के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ वह चक्र जिसके स्थान आदि के विचार से उनके गुण-दोष का निर्णय होता है। २. विवाह के समय वर-वधू का अग्नि की परिक्रमा करना। ३. तेज़ बहते हुए जल में पड़नेवाला चक्कर।

भौंह–संज्ञा स्त्री० आँख के ऊपर की हड्डी पर के रोएँ या बाल। भृकुटी। भौं।

भौगोलिक–वि० भूगोल का।

भौचक–वि० हक्काबक्का। चकपकाया हुआ। स्तंभित।

भौजाई–संज्ञा स्त्री० भावज। भाभी।

भौतिक–वि० १. पंच-भूत संबंधी। २. पाँचों भूतों से बना हुआ। पार्थिव।

भौतिक विद्या–संज्ञा स्त्री० भूतों-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौतिक सृष्टि–संज्ञा स्त्री० आठ प्रकार की देव-योनि, पाँच प्रकार की तिर्यग् योनि और मनुष्य योनि, इन सबकी समष्टि।

भौन०–संज्ञा पुं० घर। मकान।

भौम–वि० १. भूमि-संबंधी। भूमि का। २. भूमि से उत्पन्न। पृथ्वी से उत्पन्न।

संज्ञा पुं० मंगल ग्रह।

भौमवार–संज्ञा पुं० मंगलवार।

भौमिक–संज्ञा पुं० ज़मींदार।

वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।

भौर०–संज्ञा पुं० १. दे० "भौंरा"। २. घोड़ों का एक भेद। ३. दे० "भँवर"।

भ्रंश–संज्ञा पुं० अधःपतन। नीचे गिरना।

वि० भ्रष्ट। खराब।

भ्रकुटि–संज्ञा स्त्री० भृकुटी। भौंह।

भ्रम–संज्ञा पुं० किसी चीज़ या बात को कुछ का कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति।

भ्रमण–संज्ञा पुं० १. घूमना-फिरना। विचरण। २. चक्कर। फेरी।

भ्रमना–क्रि० अ० १. घूमना। २. भटकना।

भ्रममूलक–वि० जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो।

भ्रमर–संज्ञा पुं० भौंरा।

भ्रमरावली–संज्ञा स्त्री० १. भँवरों की श्रेणी। २. मनहरण वृत्त। नलिनी।

भ्रमात्मक–वि० जिससे अथवा जिसके संबंध में भ्रम होता हो। संदिग्ध।

भ्रमाना०।–क्रि० स० १. घुमाना। २. बहकाना।

भ्रमी– वि० १. जिसे भ्रम हुआ हो।

वह प्रदेश जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य पर्वत के उत्तर, कुरुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।

मध्यम–वि० बीच का।
संज्ञा पुं० संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर।

मध्यम पुरुष–संज्ञा पुं० वह पुरुष जिससे बात की जाय। (व्या०)

मध्यमा–संज्ञा स्त्री० १. बीच की उँगली। २. वह नायिका जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर-मान या अपमान करे।

मध्यवर्ती–वि० बीच का।

मध्यस्थ–संज्ञा पुं० १. बीच में पड़कर विवाद मिटानेवाला। २. तटस्थ।

मध्यस्थता–संज्ञा स्त्री० मध्यस्थ होने का भाव या धर्म।

मध्यान्ह–संज्ञा पुं० दे० "मध्याह्न"।

मध्याह्न–संज्ञा पुं० ठीक दोपहर।

मध्वाचार्य्य–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य और माध्व या मध्वाचारि नामक संप्रदाय के प्रवर्तक जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।

मन–संज्ञा पुं० १. चित्त। २. इच्छा।
*संज्ञा पुं० चालिस सेर की एक तौल।

मनका–संज्ञा पुं० पत्थर, लकड़ी आदि का छेदा हुआ दाना जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है।

मनकामना–संज्ञा स्त्री० इच्छा।

मन फूला–वि० स्त्री० स्थिर या स्थावर का उलटा।

मनगढ़ंत–वि० कपोल-कल्पित।
संज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना।

मनचला–वि० रसिक।

मनचाहा–वि० इच्छित।

मनचीता–वि० [स्त्री० मनचीती] मन-चाहा।

मनजात–संज्ञा पुं० कामदेव।

मनन–संज्ञा पुं० चिंतन।

मननशील–वि० विचारशील।

मनवांछित–वि० दे० "मनोवांछित"।

मनभाया–वि० [स्त्री० मनभाई] जो मन को भावे।

मनभावन–वि० मन को अच्छा लगनेवाला।

मनमति–वि० स्वेच्छाचारी।

मनमथ–संज्ञा पुं० दे० "मन्मथ"।

मनमाना–वि० [स्त्री० मनमानी] जो मन को अच्छा लगे।

मनमुटाव–संज्ञा पुं० वैमनस्य होना।

मनमोदक–संज्ञा पुं० मन का लड्डू।

मनमोहन–वि० [स्त्री० मनमोहनी] मन को मोहनेवाला।

मनमौजी–वि० मन की मौज के अनुसार काम करनेवाला।

मनयाना–क्रि० स० मनाना।
क्रि० स० दूसरे को मनाने में प्रवृत्त करना।

मनशा–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. मतलब।

मनसब–संज्ञा पुं० ओहदा।

मनसबदार–संज्ञा पुं० ओहदेदार।

मनसा–संज्ञा स्त्री० १. कामना। २. अभिलाषा। ३. तात्पर्य।
वि० मन से उत्पन्न।
क्रि० वि० मन से।

मनसाना–क्रि० अ० उमंग में आना।

मनसिज–संज्ञा पुं० कामदेव।

मनसूबा–संज्ञा पुं० इरादा।

मनस्ताप–संज्ञा पुं० मनःपीड़ा।

मनस्वी–वि० [स्त्री० मनस्विनी] बुद्धिमान्।

२. भौंचक।
भ्रष्ट–वि० १. गिरा हुआ। पतित। २. जो खराब हो गया हो।
भ्रष्टा–संज्ञा स्त्री० कुलटा।
भ्रांत–संज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।
भ्रांति–संज्ञा स्त्री० १. भ्रम। धोखा। २. संदेह। शक। ३. मोह। प्रमाद।
भ्राजना☆–क्रि० अ० १. शोभा पाना। २. शोभायमान होना।
भ्राजमान☆–वि० शोभायमान।
भ्रात☆–संज्ञा पुं० दे० "भ्राता"।
भ्राता–संज्ञा पुं० सगा भाई।
भ्रातृत्व–संज्ञा पुं० भाई होने का भाव या धर्म्म। भाईपन।
भ्रातृद्वितीया–संज्ञा स्त्री० कार्त्तिक शुक्ल द्वितीया। यमद्वितीया।
भ्रामक–वि० भ्रम में डालनेवाला। बहकानेवाला।
भ्रामर–संज्ञा पुं० १. मधु। शहद। २. दोहे का दूसरा भेद।
भ्रू–संज्ञा स्त्री० भौं। भौंह।
भ्रूण–संज्ञा पुं० स्त्री का गर्भ।
भ्रूणहत्या–संज्ञा स्त्री० गर्भ के बालक की हत्या।
भ्रूभंग– संज्ञा पुं० त्योरी चढ़ाना।

म

म–हिंदी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण।
मंगता–संज्ञा पुं० भिखमंगा। भिक्षुक।
मंगन–संज्ञा पुं० भिक्षुक।
मँगनी–संज्ञा स्त्री० १. वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत लौटा दिया जायगा। २. इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव।
मंगल–संज्ञा पुं० १. अभीष्ट की सिद्धि। मनोकामना का पूर्ण होना। २. कल्याण। कुशल। ३. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पृथ्वी के उपरांत पहले-पहल पड़ता है। भौम। कुज। ४. मंगलवार।
मंगलकलश (घट)–संज्ञा पुं० जल से भरा हुआ वह घड़ा जो मंगल-अवसरों पर पूजा के लिये रखा जाता है।
मंगलवार–संज्ञा पुं० वह वार जो सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़ता है। भौमवार।
मंगलसूत्र–संज्ञा पुं० वह तागा जो किसी देवता के प्रसाद रूप में कलाई में बाँधा जाता है।
मंगलस्नान–संज्ञा पुं० वह स्नान जो मंगल की कामना से किया जाता है।
मंगला–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
मंगलाचरण–संज्ञा पुं० वह श्लोक या पद आदि जो किसी शुभ कार्य्य के आरंभ में मंगल की कामना से पढ़ा, लिखा या कहा जाय।
मंगलामुखी–संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी।

मनहर–वि० दे० "मनोहर"।
संज्ञा पुं० घनाक्षरी छंद का एक नाम।
मनहरण–संज्ञा पुं० मन हरने की क्रिया या भाव।
वि० मनोहर।
मनहुँ*–अव्य० जैसे।
मनहूस–वि० १. अशुभ। २. देखने में बेरौनक।
मना–वि० १. वर्जित। २. नामुनासिब।
मनाना–क्रि० स० १. स्वीकार करना। २. प्रार्थना करना।
मनाही–संज्ञा स्त्री० निषेध।
मनिहार–संज्ञा पु० [स्त्री० मनिहारिन] चूड़ी बनानेवाला।
मनी*–संज्ञा स्त्री० अहंकार।
* संज्ञा स्त्री० १. दे० "मणि"। २. वीर्य्य।
मनीषा–संज्ञा स्त्री० बुद्धि।
मनीषि–वि० पंडित।
मनु–संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं।
* अव्य० मानो।
मनुज–संज्ञा पुं० मनुष्य।
मनुष्य–संज्ञा पुं० आदमी।
मनुष्यता–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्य का भाव। २. शिष्टता।
मनुष्यत्व–संज्ञा पुं० मनुष्यता।
मनुष्यलोक–संज्ञा पुं० मर्त्यलोक।
मनुसाई*†–संज्ञा स्त्री० पुरुषार्थ।
मनुस्मृति–संज्ञा स्त्री० धर्मशास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ।
मनुहार–संज्ञा स्त्री० १. खुशामद। २. विनय। ३. सत्कार।
मनो–अव्य० मानो।
मनोकामना–संज्ञा स्त्री० इच्छा।
मनोगत–वि० जो मन में हो।
संज्ञा पुं० कामदेव।
मनोगति–संज्ञा स्त्री० मन की गति।
मनोज–संज्ञा पुं० कामदेव।
मनोज्ञ–वि० मनोहर।
मनोनिग्रह–संज्ञा पुं० मन को वश में रखना।
मनोनीत–वि० १. पसंद। २. चुना हुआ।
मनोभूत–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
मनोमय कोश–संज्ञा पुं० पाँच कोशों में से तीसरा। (वेदांत)
मनोयोग–संज्ञा पुं० मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना।
मनोरंजक–वि० चित्त को प्रसन्न करनेवाला।
मनोरंजन–संज्ञा पुं० [वि० मनोरंजक] मनोविनोद।
मनोरथ–संज्ञा पुं० अभिलाषा।
मनोरम–वि० [स्त्री० मनोरमा] सुंदर।
मनोराज–संज्ञा पुं० मानसिक कल्पना।
मनोवांछित–वि० इच्छित।
मनोविकार–संज्ञा पुं० मन की वह अवस्था जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न होता है।
मनोविज्ञान–संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों का विवेचन होता है।
मनोवृत्ति–संज्ञा स्त्री० मनोविकार।
मनोवेग–संज्ञा पुं० मनोविकार।
मनोव्यापार–संज्ञा पुं० विचार।
मनोहर–वि० [संज्ञा मनोहरता] सुंदर।
मनोहारी–वि० [स्त्री० मनोहारिणी] दे० "मनोहर"।
मनौती*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।
मन्नत–संज्ञा स्त्री० मनौती।

मंगली-वि० जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो। (अशुभ)

मँगवाना-क्रि० स० १. माँगने का काम दूसरे से कराना। २. किसी को कोई चीज़ मोल खरीदकर या किसी से माँगकर लाने में प्रवृत्त करना।

मँगाना-क्रि० स० १. दे० "मँगवाना"। २. मँगनी का संबंध कराना।

मंगोल-संज्ञा पुं० मध्य एशिया और उसके पूरब की ओर (तातार, चीन, जापान में) बसनेवाली एक जाति।

मंच, मंचक-संज्ञा पुं० ऊँचा बना हुआ मंडप जिस पर बैठकर सर्वसाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य किया जाय।

मंजन-संज्ञा पुं० दाँत साफ करने का चूर्ण।

मँजना-क्रि० अ० १. माँजा जाना। २. अभ्यास होना।

मंजरी-संज्ञा स्त्री० १. नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २. कुछ विशिष्ट पौधों में फूलों या फलों के स्थान पर एक सींके में लगे हुए बहुत से दानों का समूह।

मँजाना-क्रि० स० १. माँजने का काम दूसरे से कराना। २. दे० "माँजना"।

मँजार-संज्ञा स्त्री० बिल्ली।

मंजिष्ठा-संज्ञा स्त्री० मजीठ।

मंज़िल-संज्ञा स्त्री० १. यात्रा में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. मकान का खंड।

मंजीर-संज्ञा पुं० नूपुर। घुँघरू।

मंजु-वि० सुंदर। मनोहर।

मंजुघोष-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य। मंजुश्री।

मंजुल-वि० सुंदर। मनोहर।

मंजुश्री-संज्ञा पुं० दे० "मंजुघोष"।

मंज़ूर-वि० स्वीकृत।

मंज़ूरी-संज्ञा स्त्री० मंजूर होने का भाव। स्वीकृति।

मंजूषा-संज्ञा स्त्री० छोटा पिटारा या डिब्बा।

मँझार-क्रि० वि० बीच में।

मंडन-संज्ञा पुं० १. शृंगार करना। २. प्रमाण आदि द्वारा कोई बात सिद्ध करना।

क्रि० स० दलित करना।

मंडप-संज्ञा पुं० १. किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस, फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। २. देवमंदिर के ऊपर का गोल या गावदुम हिस्सा।

मँडराना-क्रि० अ० १. किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उड़ना। २. किसी के चारों ओर घूमना।

मंडल-संज्ञा पुं० १. परिधि। चक्कर। गोलाई। २. चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़नेवाला घेरा। ३. समुदाय।

मंडलाकार-वि० गोल।

मंडली-संज्ञा स्त्री० समूह। समाज।

मंडलीक-संज्ञा पुं० एक मंडल या १२ राजाओं का अधिपति।

मंडलेश्वर-संज्ञा पुं० दे० "मंडलीक"।

मँड़वा-संज्ञा पुं० मंडप।

मंडित-वि० १. सजाया हुआ। २. छाया हुआ। ३. भरा हुआ।

मन्वंतर–संज्ञा पुं० ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग।
मम–सर्व० मेरा या मेरी।
ममता–संज्ञा स्त्री० १. अपनापन। २. स्नेह। ३. मोह।
ममत्व–संज्ञा पुं० दे० "ममता"।
ममीरा–संज्ञा पुं० एक पौधे की जड़ जिसमें आँखों का सुरमा बनता है।
मयंक–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
मयंद–संज्ञा पुं० सिंह।
मय–प्रत्य० [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्राचुर्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है।
संज्ञा स्त्री०, अव्य० दे० "मै"।
मयगल–संज्ञा पुं० मत्त हाथी।
मयन–संज्ञा पुं० कामदेव।
मयमंत, मयमत्त–वि० मस्त।
मयसुता–संज्ञा स्त्री० दे० "मंदोदरी"।
मयस्सर–वि० सुलभ।
मया०–संज्ञा स्त्री० दे० "माया"।
मयार–वि० [स्त्री० मयारी] दयालु।
मयूख–संज्ञा पुं० १. किरण। २. दीप्ति।
मयूर–संज्ञा पुं० [स्त्री० मयूरी] मोर।
मरंद०–संज्ञा पुं० मकरंद।
मरकट–संज्ञा पुं० दे० "मर्कट"।
मरकत–संज्ञा पुं० पन्ना। (रत्न)
मरघट–संज्ञा पुं० श्मशान।
मरज़–संज्ञा पुं० १. रोग। २. बुरी लत।
मरजाद, मरजादा०–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। २. प्रतिष्ठा। ३. नियम।
मरज़ी–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. प्रसन्नता।
मरण–संज्ञा पुं० मृत्यु।
मरतबा–संज्ञा पुं० १. पद। २. बार।
मरद०–संज्ञा पुं० दे० "मर्द"।
मरदई†–संज्ञा स्त्री० १. मनुष्यत्व। २. साहस।
मरदन०–संज्ञा पुं० दे० "मर्दन"।
मरदना०–क्रि० स० मसलना।
मरदनिया†–संज्ञा पुं० शरीर में तेल मलनेवाला सेवक।
मरदानगी–संज्ञा स्त्री० १. वीरता। २. साहस।
मरदाना–वि० १. पुरुष-संबंधी। २. वीरोचित।
मरदूद–वि० नीच।
मरना–क्रि० अ० १. मृत्यु को प्राप्त होना। २. सूखना। ३. दबना।
मरनी–संज्ञा स्त्री० १. मृत्यु। २. हैरानी।
मरभुक्खा–वि० १. भुक्खड़। २. कंगाल।
मरम–संज्ञा पुं० दे० "मर्म"।
मरमर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर।
मरमराना–क्रि० अ० मरमर शब्द करना।
मरम्मत–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के टूटे-फूटे अंगों को ठीक करना। जीर्णोद्धार।
मरवाना–क्रि० स० किसी को मारने के लिये प्रेरणा करना।
मरसा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग।
मरसिया–संज्ञा पुं० उर्दू भाषा में शोकसूचक कविता जो किसी की मृत्यु के संबंध में बनाई जाती है।
मरहट०†–संज्ञा पुं० मसान।
मरहटा–संज्ञा पुं० मरहठा।

मंडी–संज्ञा स्त्री० बहुत भारी बाज़ार जहाँ व्यापार की चीज़ें बहुत आती हों।

मँडुआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कदन्न।

मंडूक–संज्ञा पुं० १. मेंढक। २. एक ऋषि।

मंत†–संज्ञा पुं० सलाह।

मंतव्य–संज्ञा पुं० विचार। मत।

मंत्र–संज्ञा पुं० १. गोप्य या रहस्य-पूर्ण बात। २. देवाधिसाधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो।

मंत्रकार–संज्ञा पुं० मंत्र रचनेवाला ऋषि।

मंत्रणा–संज्ञा स्त्री० १. परामर्श। मशविरा। २. कई आदमियों की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।

मंत्रविद्या–संज्ञा स्त्री० तंत्रविद्या। भोजविद्या। मंत्रशास्त्र। तंत्र।

मंत्रित–वि० मंत्र द्वारा संस्कृत। अभिमंत्रित।

मंत्रित्व–संज्ञा पुं० मंत्री का कार्य्य या पद। मंत्री-पन।

मंत्री–संज्ञा पुं० १. परामर्श देनेवाला। २. सचिव। अमात्य।

मंथन–संज्ञा पुं० १. मथना। बिलोना। २. खूब डूब डूबकर तत्त्वों का पता लगाना।

मंथर–संज्ञा पुं० मट्ठर। मंद। सुस्त।

मंथरा–संज्ञा स्त्री० कैकेयी की एक दासी।

मंद–वि० १. धीमा। २. मूर्ख। कुबुद्धि। ३. खल। दुष्ट।

मंदभाग्य–वि० दुर्भाग्य। अभाग्य।

मंदर–संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र को मथा था। २. मंदार।

मंदरगिरि–संज्ञा पुं० मंदराचल।

मंदरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।

मंदा–वि० धीमा।

मंदाकिनी–संज्ञा स्त्री० १. पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में है। २. चित्रकूट के पास की पयस्विनी नामक नदी।

मंदाग्नि–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें अन्न नहीं पचता।

मंदार–संज्ञा पुं० १. स्वर्ग का एक देववृक्ष। २. आक। मदार।

मंदिर–संज्ञा पुं० १. वासस्थान। २. घर। ३. देवालय।

मंदी–संज्ञा स्त्री० भाव का उतरना। सस्ती।

मंदोदरी–संज्ञा स्त्री० रावण की पटरानी का नाम।

मंद्र–संज्ञा पुं० गंभीर ध्वनि। वि० १. मनोहर। सुंदर। २. गंभीर। (शब्द आदि)

मंशा–संज्ञा स्त्री० १. इच्छा। २. आशय। अभिप्राय। मतलब।

मंसा–संज्ञा स्त्री० दे० "मंशा"।

मंसूख–वि० खारिज किया हुआ। रद्द।

मकई–संज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार"। (अन्न)

मकड़ा–संज्ञा पुं० बड़ी मकड़ी।

मकड़ी–संज्ञा स्त्री० आठ पैरों और आठ आँखोंवाला एक प्रसिद्ध कीड़ा

मरहठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मरहठिन] महाराष्ट्र देश का रहनेवाला।

मरहठी–वि० मरहठों का।
संज्ञा स्त्री० मरहठों की बोली।

मरहम–संज्ञा पुं० ओषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव या पीड़ित स्थानों पर लगाया जाता है।

मरहूम–वि० मृत।

मरातिब–संज्ञा पुं० १. दरजा। २. तल्ला।

मराना–क्रि० स० मरवाना।

मराल–संज्ञा पुं० [स्त्री० मराली] हंस।

मरिच–संज्ञा पुं० मिर्च।

मरियम–संज्ञा स्त्री० १. कुमारी। २. ईसा मसीह की माता का नाम।

मरियल–वि० बहुत दुर्बल।

मरी–संज्ञा स्त्री० महामारी।

मरीचि–संज्ञा पुं० एक ऋषि जो भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता थे।
संज्ञा स्त्री० किरण।

मरीची–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. चंद्रमा।

मरीज़–वि० रोगी।

मरीना–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मुलायम ऊनी पतला कपड़ा।

मरु–संज्ञा पुं० मरुस्थल।

मरुत्–संज्ञा पुं० १. वायु। २. प्राण।

मरुत्वान्–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. हनुमान्।

मरुथल–संज्ञा पुं० दे० "मरुस्थल"।

मरुभूमि–संज्ञा स्त्री० रेगिस्तान।

मरुरना*–क्रि० अ० ऐंठना।

मरुस्थल–संज्ञा पुं० दे० "मरुभूमि"।

मरोड़–संज्ञा पुं० १. मरोड़ने का भाव या क्रिया। २. घुमाव।

मरोड़ना–क्रि० स० १. ऐंठना। २. मसलना।

मरोड़ा–संज्ञा पुं० १. ऐंठन। २. पेट की वह पीड़ा जिसमें कुछ ऐंठन सी जान पड़ती हो।

मर्कट–संज्ञा पुं० बंदर।

मर्कटी–संज्ञा स्त्री० बानरी।

मर्कत*–संज्ञा पुं० दे० "मरकत"।

मर्तबान–संज्ञा पुं० रोगनी बर्तन। अमृतबान।

मर्त्य–संज्ञा पुं० १. मनुष्य। २. भूलोक।

मर्त्यलोक–संज्ञा पुं० पृथ्वी।

मर्द–संज्ञा पुं० १ मनुष्य। २. साहसी पुरुष। ३ भर्ता।

मर्दना*–क्रि० स० १. मालिश करना। २. रौंदना।

मर्दुम–संज्ञा पुं० मनुष्य।

मर्दुमशुमारी–संज्ञा स्त्री० १. किसी देश में रहनेवाले मनुष्यों की गणना। २. जनसंख्या।

मर्दुमी–संज्ञा स्त्री० मरदानगी।

मर्दन–संज्ञा पुं० [वि० मर्दित] १. कुचलना। २. रगड़ना।
वि० नाशक।

मर्दल–संज्ञा पुं० मृदंग की तरह का एक बाजा। इसका प्रचार बंगाल में है।

मर्दित–वि० जो मर्दन किया गया हो।

मर्म–संज्ञा पुं० १. स्वरूप। २. प्राणियों के शरीर में वह स्थान जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है।

मर्मज्ञ–वि० तत्त्वज्ञ।

जिसकी सैकड़ों हज़ारों जातियाँ होती हैं।

मकतब–संज्ञा पुं० पाठशाला। मदरसा।

मक़बरा–संज्ञा पुं० वह इमारत जिसमें किसी की लाश गाड़ी गई हो। रौज़ा। मज़ार।

मकरंद–संज्ञा पुं० १. फूलों का रस जिसे मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं। २. फूल का केसर।

मकर–संज्ञा पुं० १. बारह राशियों में से दसवीं राशि। २. माघ मास। संज्ञा पुं० नख़रा।

मकरध्वज–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. चंद्रोदय रस।

मकरसंक्रांति–संज्ञा स्त्री० वह समय जब कि सूर्य्य मकर राशि में प्रवेश करता है।

मकरा–संज्ञा पुं० मड़ुवा नामक अन्न। संज्ञा पुं० एक प्रकार का कीड़ा।

मकराकृत–वि० मकर या मछली के आकारवाला।

मकान–संज्ञा पुं० १. गृह। घर। २. रहने की जगह।

मकु–अव्य० चाहे। शायद।

मकुना–संज्ञा पुं० वह नर हाथी जिसके दाँत न हों।

मकुनी, मकूनी–संज्ञा स्त्री० आटे के भीतर बेसन भरकर बनाई हुई कचौरी। बेसनी रोटी।

मकोई–संज्ञा स्त्री० जंगली मकोय।

मकोड़ा–संज्ञा पुं० कोई छोटा कीड़ा।

मकोय–संज्ञा स्त्री० १. एक क्षुप। २. रसभरी।

मक्का–संज्ञा पुं० अरब का एक प्रसिद्ध नगर जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है। संज्ञा पुं० मकई।

मक्कार–वि० फ़रेबी। कपटी।

मक्खन–संज्ञा पुं० दूध में का वह सार भाग जो दही या मठे को मथने पर निकलता है और जिसको तपाने से घी बनता है। नवनीत। नैनूँ।

मक्खी–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा। मक्षिका।

मक्खीचूस–संज्ञा पुं० बहुत अधिक कृपण। भारी कंजूस।

मक्षिका–संज्ञा स्त्री० मक्खी।

मख–संज्ञा पुं० यज्ञ।

मख़तूल–संज्ञा पु० काला रेशम।

मख़तूली–वि० काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मखन–संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।

मखनिया–संज्ञा पुं० मक्खन बनाने या बेचनेवाला। वि० जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो।

मखमल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत बढ़िया रेशमी मुलायम कपड़ा।

मखशाला–संज्ञा स्त्री० यज्ञशाला।

मखाना–संज्ञा पुं० दे० "तालमखाना"।

मखौल–संज्ञा पुं० हँसी-ठट्ठा।

मग–संज्ञा पुं० रास्ता। राह। संज्ञा पुं० मगध देश। मगह।

मगज़–संज्ञा पुं० दिमाग़। मस्तिष्क।

मगज़ी–संज्ञा स्त्री० कपड़े के किनारे पर लगी हुई पतली गोट।

मगदल–संज्ञा पुं० मूँग या उड़द का एक प्रकार का लड्डू।

मगध–संज्ञा पुं० १. दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। कीकट। २. बंदीजन।

मगन–वि० १. प्रसन्न। २. लीन

मर्मभेदक–वि० दे० "मर्मभेदी"।
मर्मभेदी–वि० हृदय पर आघात पहुँचानेवाला।
मर्मर–संज्ञा पुं० दे० "मरमर"।
मर्मवचन–संज्ञा पुं० वह बात जिससे सुननेवाले को आंतरिक कष्ट हो।
मर्मवाक्य–संज्ञा पुं० रहस्य की बात। भेद की या गूढ़ बात।
मर्मविद्–वि० मर्मज्ञ।
मर्मी–वि० मर्मज्ञ।
मर्य्याद–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मर्य्यादा"। २. रीति।
मर्य्यादा–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। २. सदाचार। ३. मान।
मलंग–संज्ञा पुं० एक प्रकार के मुसलमान साधु।
मल–संज्ञा पुं० १. मैल। २. विकार।
मलका–संज्ञा स्त्री० महारानी।
मलखम–संज्ञा पुं० लकड़ी का एक प्रकार का खंभा जिस पर फुर्ती से चढ़ और उतरकर कसरत करते हैं।
मलखाना◎†–संज्ञा पुं० पश्चिमी संयुक्त प्रांत में बसनेवाले एक प्रकार के राजपूत जो अब मुसलमान से हिंदू बन गए हैं।
मलद्वार–संज्ञा पुं० १. शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं। २. गुदा।
मलना–क्रि० स० १. मसलना। २. मालिश करना।
मलमल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला कपड़ा।
मलमलाना–क्रि० स० बार बार स्पर्श कराना।
मलमास–संज्ञा पुं० वह अमांत मास जिसमें संक्रांति न पड़ती हो।
मलय–संज्ञा पुं० १. पश्चिमी घाट का वह भाग जो मैसूर राज्य के दक्षिण और ट्रावंकोर के पूर्व में है। २. सफ़ेद चंदन।
मलयगिरि–संज्ञा पुं० १. मलय नामक पर्वत जो दक्षिण में है। २. मलयगिरि में उत्पन्न चंदन।
मलयज–संज्ञा पुं० चंदन।
मलयागिरि–संज्ञा पुं० दे० "मलयगिरि"।
मलयाचल–संज्ञा पुं० मलय पर्वत।
मलयानिल–संज्ञा पुं० १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु। २. सुगंधित वायु।
मलवाना–क्रि० स० मलने का काम दूसरे से कराना।
मलहम–संज्ञा पुं० दे० "मरहम"।
मलाई–संज्ञा स्त्री० १. बहुत गरम किए हुए दूध का ऊपरी सार भाग। २. सार।
संज्ञा स्त्री० मलने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
मलान◎–वि० दे० "म्लान"।
मलानि◎–संज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।
मलामत–संज्ञा स्त्री० लानत।
मलार–संज्ञा पुं० एक राग जो वर्षा ऋतु में गाया जाता है।
मलाल–संज्ञा पुं० १. दुःख। २. उदासीनता।
मलाह◎–संज्ञा पुं० दे० "मल्लाह"।
मलिंद–संज्ञा पुं० भौंरा।
मलिक–संज्ञा पुं० [स्त्री० मलिका] राजा।
मलिछ, मलिच्छ◎–संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

मगर–संज्ञा पुं० घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जलजंतु।
संज्ञा पुं० अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति बसती है।
अव्य० लेकिन। परंतु। पर।
मगरमच्छ–संज्ञा पुं० १. मगर या घड़ियाल नामक जल-जंतु। २. बड़ी मछली।
मग़रूर–वि० घमंडी। अभिमानी।
मग़रूरी–संज्ञा स्त्री० घमंड। अभिमान।
मगह†–संज्ञा पुं० मगध देश।
मगहर*†–संज्ञा पुं० मगध देश।
मगही–वि० मगध-संबंधी। मगध देश का।
मगु, मग*†–संज्ञा पुं० रास्ता।
मग़ज़–संज्ञा पुं० १. मस्तिष्क। दिमाग़। २. गिरी।
मग्न–वि० १. डूबा हुआ। २. तन्मय। लीन। लिप्त। ३. प्रसन्न। हर्षित। ख़ुश।
मघवा–संज्ञा पुं० इंद्र।
मघा–संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।
मचक–संज्ञा स्त्री० दबाव।
मचकना–क्रि० स० किसी पदार्थ को इस प्रकार ज़ोर से दबाना कि मच मच शब्द निकले।
मचना–क्रि० अ० किसी ऐसे कार्य का आरंभ होना जिसमें शोर-गुल हो।
मचलना–क्रि० अ० किसी चीज़ के लिये ज़िद बाँधना। हठ करना।
मचला–वि० १. जो बोलने के अवसर पर जान-बूझकर चुप रहे। २. मचलनेवाला।
मचलाना–क्रि० अ० कै मालूम होना। जी मतलाना।
क्रि० स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना।
*क्रि० अ० दे० "मचलना"।
मचान–संज्ञा स्त्री० १. बाँस का टट्टर बाँधकर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठकर शिकार खेलते या खेत की रखवाली करते हैं। २. मंच। कोई ऊँची बैठक।
मचाना–क्रि० स० कोई ऐसा कार्य्य आरंभ करना जिसमें हुल्लड़ हो।
मचिया†–संज्ञा स्त्री० छोटी चारपाई।
मचिलई*–संज्ञा स्त्री० १. मचलने का भाव। २. मचलापन।
मच्छ–संज्ञा पुं० बड़ी मछली।
मच्छड़, मच्छर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती पतिंगा। इसकी मादा काटती और डंक से रस चूसती है।
मच्छी–संज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।
मच्छोदरी*–संज्ञा स्त्री० व्यास जी की माता और शांतनु की भार्या सत्यवती।
मछरंगा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जलपक्षी। रामचिड़िया।
मछली–संज्ञा स्त्री० जल में रहनेवाला एक प्रसिद्ध जीव जिसकी छोटी बड़ी असंख्य जातियाँ होती हैं। मीन।
मछुआ, मछुवा–संज्ञा पुं० मछली मारनेवाला। मल्लाह।
मज़दूर–संज्ञा पुं० १. कुली। २. कल-कारख़ानों में छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी।
मज़दूरी–संज्ञा स्त्री० १. मज़दूर का काम। २. उसकी उजरत।
मजनूँ–संज्ञा पुं० १. पागल। २. अरब

मलिन–वि० [स्त्री० मलिना, मलिनी] १. मैला। २. पापी। ३. धीमा।

मलिनता–संज्ञा स्त्री० मैलापन।

मलीदा–संज्ञा पुं० १. चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र।

मलीन–वि० १. मैला। २. उदास।

मलीनता–संज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

मलूक–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पक्षी।

मलेच्छ–संज्ञा पुं० दे० "म्लेच्छ"।

मलोला–संज्ञा पुं० १. दुःख। २. अरमान।

मल्ल–संज्ञा पुं० पहलवान।

मल्लभूमि–संज्ञा स्त्री० अखाड़ा।

मल्लयुद्ध–संज्ञा पुं० कुश्ती।

मल्लविद्या–संज्ञा स्त्री० कुश्ती की विद्या।

मल्लशाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।

मल्लाह–संज्ञा पुं० [स्त्री० मल्लाहिन] केवट। माँझी।

मल्लिका–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बेला।

मल्लिनाथ–संज्ञा पुं० जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम।

मल्लू–संज्ञा पुं० बंदर।

मल्हाना, मल्हारना†–क्रि० स० चुमकारना।

मवक्किल–संज्ञा पुं० मुकदमे में अपनी ओर से कचहरी में काम करने के लिये वकील नियत करनेवाला पुरुष।

मवाद–संज्ञा पुं० पीब।

मवास–संज्ञा पुं० १. रक्षा का स्थान। २. किला।

मवासी–संज्ञा स्त्री० छोटा गढ़। संज्ञा पुं० १. गढ़पति। २. प्रधान।

मवेशी–संज्ञा पुं० पशु।

मवेशीखाना–संज्ञा पुं० वह बाड़ा जिसमें मवेशी रखे जाते हैं।

मशक–संज्ञा पुं० मच्छड़। संज्ञा स्त्री० चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।

मशक्कत–संज्ञा स्त्री० परिश्रम।

मशगूल–वि० काम में लगा हुआ।

मशविरा–संज्ञा पुं० सलाह।

मशहूर–वि० प्रख्यात।

मशाल–संज्ञा स्त्री० डंडे में लगी हुई एक प्रकार की बहुत मोटी बत्ती।

मशालची–संज्ञा पुं० [स्त्री० मशालचिन] मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला।

मश्क–संज्ञा पुं० अभ्यास।

मसः†–संज्ञा स्त्री० रोशनाई। संज्ञा स्त्री० मोछ निकलने से पहले उसके स्थान पर की रोमावली।

मसक–संज्ञा पुं० मसा। संज्ञा स्त्री० मसकने की क्रिया।

मसकना–क्रि० स० १. कपड़े को इस प्रकार दबाना कि बुनावट के सब तंतु टूटकर अलग हो जायँ। २. ज़ोर से दबाना या मलना।

मसकरा–संज्ञा पुं० दे० "मसखरा"।

मसखरा–संज्ञा पुं० हँसोड़।

मसखरापन–संज्ञा पुं० दिल्लगी।

मसखरी–संज्ञा स्त्री० दिल्लगी।

मसखवा†–संज्ञा पुं० वह जो मांस खाता हो।

मसजिद–संज्ञा स्त्री० मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज़ पढ़ने तथा ईश्वर-वंदना करने का स्थान या घर।

मसनद–संज्ञा स्त्री० बड़ा तकिया।

मसमुंद०†–वि० धकमधका।

का लड़का जो लैला नाम की कन्या पर आसक्त होकर उसके लिये पागल हो गया था। ३. प्रेमी। ४. एक प्रकार का वृक्ष।
मज़बूत–वि० दृढ़। पुष्ट।
मजबूर–वि० विवश। लाचार।
मजबूरी–संज्ञा स्त्री० असमर्थता। बे-बसी।
मजमा–संज्ञा पुं० बहुत से लोगों का जमाव। जमघट।
मज़मून–संज्ञा पुं० १. विषय, जिस पर कुछ कहा या लिखा जाय। २. लेख।
मजलिस–संज्ञा स्त्री० १. सभा। जलसा। २. महफ़िल। नाच-रंग का स्थान।
मज़हब–संज्ञा पुं० धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत।
मज़ा–संज्ञा पुं० १. स्वाद। लज़्ज़त। २. आनंद।
मज़ाक़–संज्ञा पुं० हँसी। ठट्ठा।
मज़ार–संज्ञा पु० १. समाधि। मक्-बरा। २. क़ब्र।
मजारी–संज्ञा स्त्री० बिल्ली।
मजाल–संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य। शक्ति।
मजीठ–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता। इसकी जड़ और डंठलों से लाल रंग निकलता है।
मजीठी–संज्ञा पुं० मजीठ के रंग का। लाल। सुर्ख़।
मजीरा–संज्ञा पुं० बजाने के लिये काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी।
मजूरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "मज़दूरी"।
मज़ेदार–वि० १. स्वादिष्ट। ज़ायके-दार। २. बढ़िया।
मज्ज–संज्ञा स्त्री० दे० "मज्जा"।
मज्जन–संज्ञा पुं० स्नान। नहाना।
मज्जा–संज्ञा स्त्री० नली की हड्डी के भीतर का गूदा।
मझधार–संज्ञा स्त्री० नदी के मध्य की धारा।
मझला–वि० बीच का।
मझार*†–क्रि० वि० बीच में।
मझियाना*†–क्रि० अ० नाव खेना। मल्लाही करना।
क्रि० अ० बीच से होकर निकलना।
मझोला–वि० १. मझला। बीच का। २. जो न बहुत बड़ा हो और न बहुत छोटा।
मझोली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बैलगाड़ी।
मटक–संज्ञा स्त्री० १. गति। चाल। २. मटकने की क्रिया या भाव।
मटकना–क्रि० अ० अंग हिलाते हुए चलना। लचककर नखरे से चलना।
मटकनि*–संज्ञा स्त्री० १. दे० "मटक"। २. नाचना। नृत्य। ३. नखरा।
मटका–संज्ञा पुं० मिट्टी का बड़ा घड़ा। मट। माट।
मटकाना–क्रि० स० नखरे के साथ अंगों का संचालन करना। चमकाना। क्रि० स० दूसरे को मटकने में प्रवृत्त करना।
मटकी–संज्ञा स्त्री० छोटा मटका। संज्ञा स्त्री० मटकने या मटकाने का भाव।
मटकीला–वि० मटकनेवाला।
मटकौअल–संज्ञा स्त्री० मटकाने की क्रिया या भाव। मटक।
मटमैला–वि० मिट्टी के रंग का। ख़ाकी। धूलिया।

मसयारा*†–संज्ञा पुं० १. मशाल । २. मशालची ।
मसरफ़–संज्ञा पुं० उपयोग ।
मसल–संज्ञा स्त्री० कहावत ।
मसलन्–वि० उदाहरणार्थ ।
मसलना–क्रि० स० मलना ।
मसलहत–संज्ञा स्त्री० अप्रकट शुभ हेतु ।
मसला–संज्ञा पुं० कहावत ।
मसविदा–संज्ञा पुं० दे० "मसौदा" ।
मसहरी–संज्ञा स्त्री० पलंग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छड़ों आदि से बचने के लिये होता है ।
मसा–संज्ञा पुं० शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मांस का छोटा दाना । संज्ञा पुं० मच्छड़ ।
मसान–संज्ञा पुं० मरघट ।
मसाला–संज्ञा पुं० वे चीज़ें जिनकी सहायता से कोई चीज़ तैयार होती हो ।
मसालेदार–वि० जिसमें किसी प्रकार का मसाला हो ।
मसि–संज्ञा स्त्री० १. रोशनाई । २. काजल । ३. कालिख ।
मसिदानी–संज्ञा स्त्री० दावात ।
मसिपात्र–संज्ञा पुं० दावात ।
मसिमुख–वि० जिसके मुँह में स्याही लगी हो । दुष्कर्म करनेवाला ।
मसियारा*–संज्ञा पुं० दे० "मशालची" ।
मसिबिंदु–संज्ञा पुं० काजल का बुंदा जो नज़र से बचने के लिये बच्चों को लगाया जाता है ।
मसी–संज्ञा स्त्री० दे० "मसि" ।
मसीह, मसीहा–संज्ञा पुं० [वि० मसीही] ईसाइयों के धर्मगुरु हज़रत ईसा ।
मसूड़ा–संज्ञा पुं० मुँह के अंदर का वह मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं ।
मसूर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का द्विदल और चिपटा अन्न ।
मसूरा–संज्ञा स्त्री० १. मसूर की दाल । २. मसूर की बनी हुई बरी ।
मसूरिका–संज्ञा स्त्री० १. शीतला । २. छोटी माता ।
मसूसना–क्रि० अ० किसी मनोवेग को रोकना ।
मसेवरा†–संज्ञा पुं० मांस की बनी हुई खाने की चीज़ें ।
मसोसना–क्रि० अ० दे० "मसूसना" ।
मसौदा–संज्ञा पुं० १. मसविदा । खर्रा । २. उपाय ।
मसौदेबाज़–संज्ञा पुं० १. अच्छी युक्ति सोचनेवाला । २. धूर्त ।
मस्करा*–संज्ञा पुं० दे० "मसख़रा" ।
मस्त–वि० १. जो नशे आदि के कारण मत्त हो । २. प्रसन्न ।
मस्तक–संज्ञा पुं० सिर ।
मस्तगी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बढ़िया गोंद ।
मस्ताना–वि० १. मस्तों का सा । २. मस्त ।
क्रि० अ० मस्त होना ।
क्रि० स० मस्ती पर लाना ।
मस्तिष्क–संज्ञा पुं० १. मग़ज़ । २. दिमाग़ ।
मस्ती–संज्ञा स्त्री० मतवालापन ।
मस्तूल–संज्ञा पुं० बड़ी नावों आदि के बीच का वह बड़ा शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं ।

मटर–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मोटा अन्न। इसकी लंबी फलियों को छीमी या छींबी कहते हैं, जिनमें गोल दाने रहते हैं।
मटरगश्त–संज्ञा पुं० १. टहलना। २. सैर-सपाटा।
मटिआना†–क्रि० स० मिट्टी लगाकर माँजना।
मटिया मसान–वि० गया-बीता। नष्टप्राय।
मटियाला–वि० दे० "मटमैला"।
मटुका–संज्ञा पुं० दे० "मटका"।
मटुकी*†–संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।
मट्टी–संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।
मट्ठर†–वि० सुस्त। काहिल।
मट्ठा–संज्ञा पुं० मथा हुआ दही जिसमें से नैनूँ निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।
मठ–संज्ञा पुं० वह मकान जिसमें साधु आदि रहते हों।
मठधारी–संज्ञा पुं० वह साधु या महंत जिसके अधिकार में कोई मठ हो।
मठा–संज्ञा पुं० दे० "मट्ठा"।
मठाधीश–संज्ञा पुं० दे० "मठधारी"।
मठिया–संज्ञा स्त्री० छोटी कुटी या मठ।
मठी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मठ। २. मठ का महंत। मठधारी।
मड़ई†–संज्ञा स्त्री० १. छोटा मंडप। २. कुटिया।
मड़वा–संज्ञा पुं० दे० "मंडप"।
मड़ुआ–संज्ञा पुं० बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।
मढ़–वि० अड़कर बैठनेवाला।
मढ़ना–क्रि० स० १. आवेष्टित करना। २. किसी के गले लगाना।
मढ़वाना–क्रि० स० मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ाई–संज्ञा स्त्री० मढ़ने का भाव, काम या मजदूरी।
मढ़ाना–क्रि० स० दे० "मढ़वाना"।
मढ़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा मठ।
मणि–संज्ञा स्त्री० १. बहुमूल्य रत्न। २. जवाहिर।
मणिधर–संज्ञा पुं० सर्प। साँप।
मणिपुर–संज्ञा पुं० एक चक्र जो नाभि के पास माना जाता है। (तंत्र)
मणिबंध–संज्ञा पुं० कलाई। गट्टा।
मणिमाला–संज्ञा स्त्री० मणियों की माला।
मणी–संज्ञा पुं० सर्प।
संज्ञा स्त्री० दे० "मणि"।
मतंग–संज्ञा पुं० हाथी।
मतंगी–संज्ञा पुं० हाथी का सवार।
मत–संज्ञा पुं० १. निश्चित सिद्धांत। २. सम्मति।
क्रि० वि० न। नहीं। (निषेध)
मतलब–संज्ञा पुं० १. तात्पर्य। अभिप्राय। २. स्वार्थ।
मतलबी–वि० स्वार्थी।
मतली–संज्ञा स्त्री० दे० "मिचली"।
मतवार, मतवारा*–वि० दे० "मतवाला"।
मतवाला–वि० पुं० [स्त्री० मतवाली] नशे आदि के कारण मस्त।
मता†–संज्ञा पुं० दे० "मत"।
मताधिकार–संज्ञा पुं० मत या वोट देने का अधिकार।
मतानुयायी–संज्ञा पुं० किसी के मत को माननेवाला। मतावलंबी।

मस्सा–संज्ञा पुं० दे० "मसा"।
महँ॰†–अव्य० में।
महँगा–वि० जिसका मूल्य साधारण या उचित की अपेक्षा अधिक हो।
महँगी–संज्ञा स्त्री० १. महँगापन। २. अकाल।
महंत–संज्ञा पुं० साधुमंडली या मठ का अधिष्ठाता।
वि० श्रेष्ठ।
महंती–संज्ञा स्त्री० १. महंत का भाव। २. महंत का पद।
मह–अव्य० दे० "महँ"।
वि० १. महा। २. श्रेष्ठ।
महक–संज्ञा स्त्री० गंध।
महकना–क्रि० अ० गंध देना।
महकमा–संज्ञा पुं० किसी विशिष्ट कार्य्य के लिये अलग किया हुआ विभाग।
महकान॰–संज्ञा स्त्री० दे० "महक"।
महज़–वि० १. शुद्ध। २. केवल।
महत–वि० १. महान्। २. सर्वश्रेष्ठ।
महता–संज्ञा पुं० गाँव का मुखिया।
॰संज्ञा स्त्री० अभिमान।
महताब–संज्ञा स्त्री० चाँदनी।
संज्ञा पुं० चाँद।
महताबी–संज्ञा स्त्री० १. मोटी बत्ती के आकार की एक प्रकार की आतिशबाज़ी। २. बाग आदि के बीच में बना हुआ गोल या चौकोर ऊँचा चबूतरा।
महतारी॰†–संज्ञा स्त्री० माँ।
महत्तम–वि० सबसे अधिक श्रेष्ठ।
महत्तर–वि० दो पदार्थों में से बड़ा या श्रेष्ठ।
महत्त्व–संज्ञा पुं० १. बड़ाई। २. श्रेष्ठता।
महफ़िल–संज्ञा स्त्री० १. सभा। जलसा। २. नाच-गाना होने का स्थान।
महबूब–संज्ञा पुं० [स्त्री० महबूबा] प्रिय।
महमंत॰–वि० मस्त।
महमद॰–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।
मह मह–क्रि० वि० खुशबू के साथ।
महमहा–वि० सुगंधित।
महमहाना–क्रि० अ० सुगंधि देना।
महमा॰†–संज्ञा स्त्री० दे० "महिमा"।
महम्मद–संज्ञा पुं० दे० "मुहम्मद"।
महरा–संज्ञा पुं० [स्त्री० महरी.] १. कहार। २. सरदार।
महराई॰†–संज्ञा स्त्री० प्रधानता।
महराज–संज्ञा पुं० दे० "महाराज"।
महराब–संज्ञा स्त्री० दे० "मेहराब"।
महरूम–वि० जिसे न मिले।
महर्षि–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि।
महल–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा और बढ़िया मकान।
महल्ला–संज्ञा पुं० शहर का कोई विभाग या टुकड़ा जिसमें बहुत से मकान हों।
महसूल–संज्ञा पुं० १. कर। २. भाड़ा।
महा–वि० १. अत्यंत। २. भारी।
महाअरंभ–वि० बहुत शोर।
महाई†–संज्ञा स्त्री० मथने का काम या मज़दूरी।
महाउत॰–संज्ञा पुं० दे० "महावत"।
महाउर–संज्ञा पुं० दे० "महावर"।
महाकल्प–संज्ञा पुं० पुराणानुसार उतना काल जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है।

मतावलंबी-संज्ञा पुं० किसी एक मत या संप्रदाय का अवलंबन करनेवाला।
मति-संज्ञा स्त्री० बुद्धि। समझ। ⊙† क्रि० वि० दे० "मत"। अव्य० समान। सदृश।
मतिमंत-वि० बुद्धिमान्।
मतिमान-वि० बुद्धिमान्।
मतीरा-संज्ञा पुं० तरबूज़। कलिंदा।
मतीस-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।
मतेई⊙†-संज्ञा स्त्री० विमाता।
मत्कुण-संज्ञा पुं० खटमल।
मत्त-वि० १. मस्त। २. पागल।
मत्तता⊙-संज्ञा स्त्री० मतवालापन।
मत्था†-संज्ञा पुं० दे० "माथा"।
मत्सर-संज्ञा पुं० १. डाह। जलन। २. क्रोध।
मत्सरता-संज्ञा स्त्री० डाह। हसद।
मत्सरी-संज्ञा पुं० मत्सरपूर्ण व्यक्ति।
मत्स्य-संज्ञा पुं० १. मछली। २. प्राचीन विराट् देश का नाम। ३. विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।
मत्स्य पुराण-संज्ञा पुं० अट्ठारह पुराणों में से एक महापुराण।
मत्स्येंद्रनाथ-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध साधु और हठ-योगी जो गोरखनाथ के गुरु थे।
मथन-संज्ञा पुं० मथने का भाव या क्रिया। बिलोना।
मथना-क्रि० स० तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना या चलाना। बिलोना।
मथनियाँ⊙†-संज्ञा स्त्री० दे० "मथनी"।
मथनी-संज्ञा स्त्री० वह मटका जिसमें दही मथा जाता है।
मथानी-संज्ञा स्त्री० काठ का एक प्रकार का दंड जिससे दही से मथकर मक्खन निकाला जाता है।
मथुरा-संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार सात पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना के किनारे पर है।
मथुरिया-वि० मथुरा से संबंध रखनेवाला। मथुरा का।
मदंध⊙-वि० दे० "मदांध"।
मद-संज्ञा पुं० १. हर्ष। आनंद। २. वह गंधयुक्त द्रव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहता है। ३. वीर्य्य। ४. कस्तूरी। ५. मद्य। ६. गर्व। अहंकार। संज्ञा स्त्री० विभाग। सीग़ा। सरिश्ता।
मदक-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफ़ीम के सत से बनता है। इसे चिलम पर रखकर पीते हैं।
मदकची-वि० जो मदक पीता हो। मदक पीनेवाला।
मदकल-वि० मत्त। मतवाला।
मदद-संज्ञा स्त्री० १. सहायता। २. मज़दूर और राज आदि जो किसी काम के ऊपर लगाए जाते हैं।
मददगार-वि० मदद करनेवाला।
मदन-संज्ञा पुं० कामदेव।
मदनकदन-संज्ञा पुं० शिव।
मदनगोपाल-संज्ञा पुं० श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।
मदनबान-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बेला। (फूल)
मदनमस्त-संज्ञा पुं० चंपे की जाति का एक प्रकार का फूल।
मदन-महोत्सव-संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक उत्सव जो चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत होता था।

महाकाल-संज्ञा पुं० महादेव।

महाकाली-संज्ञा स्त्री० १. महाकाल (शिव) की पत्नी। २. दुर्गा की एक मूर्ति।

महाकाव्य-संज्ञा पुं० वह बहुत बड़ा सर्गबद्ध काव्य जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृत दृश्यों तथा सामाजिक कृत्यों आदि का वर्णन हो।

महाखर्व-संज्ञा पुं० सौ खर्व की संख्या या अंक।

महागौरी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

महाजन-संज्ञा पुं० १. धनवान्। २. बनिया।

महाजनी-संज्ञा स्त्री० १. रुपए के लेने-देने का व्यवसाय। २. मुड़िया।

महाजल-संज्ञा पुं० समुद्र।

महातत्त्व-संज्ञा पुं० दे० "महत्तत्त्व"।

महातम्‌य-संज्ञा पुं० दे० "माहात्म्य"।

महातल-संज्ञा पुं० चौदह भुवनों में से पृथ्वी के नीचे का पाँचवाँ भुवन या तल।

महात्मा-संज्ञा पुं० १. महानुभाव। २. बहुत बड़ा साधु या संन्यासी।

महादंडधारी-संज्ञा पुं० यमराज।

महादान-संज्ञा पुं० १. वे बहुत बड़े दान जिनसे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। २. वह दान जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है।

महादेव-संज्ञा पुं० शिव।

महादेवी-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी।

महाद्वीप-संज्ञा पुं० पृथ्वी का वह बड़ा भाग जिसमें अनेक देश हों।

महाधन-वि० १. बहुमूल्य। २. बहुत धनी।

महान्-वि० विशाल।

महानंद-संज्ञा पुं० मगध देश का एक प्राचीन प्रतापी राजा।

महानिद्रा-संज्ञा स्त्री० मृत्यु।

महानिशा-संज्ञा स्त्री० १. आधी रात। २. कल्पांत या प्रलय की रात्रि।

महानुभाव-संज्ञा पुं० महापुरुष।

महानुभावता-संज्ञा स्त्री० बड़प्पन।

महापथ-संज्ञा पुं० १. लंबा और चौड़ा रास्ता। २. मृत्यु।

महापद्म-संज्ञा पुं० १. नौ निधियों में से एक। २. सफ़ेद कमल।

महापातकी-संज्ञा पुं० वह जिसने महापातक किया हो।

महापात्र-संज्ञा पुं० १. श्रेष्ठ ब्राह्मण। (प्राचीन) २. महाब्राह्मण या कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक-कर्म का दान लेता है।

महापुरुष-संज्ञा पुं० १. नारायण। २. श्रेष्ठ पुरुष।

महाप्रभु-संज्ञा पुं० ईश्वर।

महाप्रलय-संज्ञा पुं० वह काल, जब संपूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाता है और अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता है।

महाप्रसाद-संज्ञा पुं० १. ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। २. मांस। (व्यंग्य)

महाप्रस्थान-संज्ञा पुं० १. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना। २. देहांत।

महाप्राण-संज्ञा पुं० व्याकरण के अनुसार वह वर्ण जिसके उच्चारण में प्राण वायु का विशेष व्यवहार करना पड़ता है।

महाबल-वि० अत्यंत बलवान्।

मदनमोहन-संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र।
मदनोत्सव-संज्ञा पुं० मदन-महोत्सव।
मदमत्त-वि० मस्त।
मदरसा-संज्ञा पुं० पाठशाला।
मदांध-वि० मदमत्त।
मदार-संज्ञा पुं० आक।
मदारी-संज्ञा पुं० १. वह जो बंदर, भालू आदि नचाते और छाग के तमाशे दिखाते हैं। २. बाज़ीगर।
मदालसा-संज्ञा स्त्री० एक गंधर्व-कन्या जिसे पातालकेतु दानव पाताल ले गया था। (पुराण)
मदिया-संज्ञा स्त्री० दे० "मादा"।
मदिरा-संज्ञा स्त्री० शराब।
मदीला-वि० नशीला।
मदोन्मत्त-वि० मद में पागल।
मद्धिम०†-वि० १. मध्यम। २. मंदा।
मद्धे-अव्य० १. बीच में। २. विषय में।
मद्य-संज्ञा पुं० मदिरा।
मद्यप-वि० शराबी।
मद्र-संज्ञा पुं० रावी और झेलम के बीच का प्राचीन देश।
मधिम०-वि० दे० "मध्यम"।
मधु-संज्ञा पुं० १. शहद। २. वसंत ऋतु।
वि० १. मीठा। २. स्वादिष्ठ।
मधुकर-संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुकरी-संज्ञा स्त्री० वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ अन्न लिया जाता हो।
मधुकैटभ-संज्ञा पुं० दो दैत्य जिन्हें विष्णु ने मारा था। (पुराण)
मधुचक्र-संज्ञा पुं० शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुजा-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
मधुप-संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुपति-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
मधुपर्क-संज्ञा पुं० दही, घी, जल, शहद और चीनी का समूह जो देवताओं को चढ़ाया जाता है।
मधुपुरी-संज्ञा स्त्री० मथुरा नगरी।
मधुप्रमेह-संज्ञा पुं० दे० "मधुमेह"।
मधुमक्खी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्रसिद्ध मक्खी जो फूलों का रस चूसकर शहद एकत्र करती है।
मधुमक्षिका-संज्ञा स्त्री० दे० "मधु-मक्खी"।
मधुमालती-संज्ञा स्त्री० मालती लता।
मधुमेह-संज्ञा पुं० प्रमेह का एक बड़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है।
मधुर-वि० मीठा।
मधुरता-संज्ञा स्त्री० मधुर होने का भाव।
मधुराई०-संज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।
मधुराज-संज्ञा पुं० भौंरा।
मधुरान्न-संज्ञा पुं० मिठाई।
मधुरिमा-संज्ञा स्त्री० १. मिठास। २. सुंदरता।
मधुवन-संज्ञा पुं० मथुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन।
मधुशर्करा-संज्ञा स्त्री० शहद से बनाई हुई चीनी।
मधुसखा-संज्ञा पुं० कामदेव।
मधुसूदन-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
मधूक-संज्ञा पुं० महुआ।
मध्य-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के बीच का भाग।
मध्यता-संज्ञा स्त्री० मध्य का भाव।
मध्य देश-संज्ञा पुं० भारतवर्ष का

महाबाहु–वि० १. लंबी भुजावाला। २. बली।
महाब्राह्मण–संज्ञा पुं० दे० "महापात्र"।
महाभारत–संज्ञा पुं० १. अठारह पर्वों का एक परम प्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। २. कोई बड़ा युद्ध।
महाभाष्य–संज्ञा पुं० पाणिनि के व्याकरण पर पतंजलि का लिखा भाष्य।
महामंत्र–संज्ञा पुं० १. बहुत बड़ा और प्रभावशाली मंत्र। २. अच्छी सलाह।
महामंत्री–संज्ञा पुं० प्रधान मंत्री।
महामति–वि० बड़ा बुद्धिमान्।
महामहोपाध्याय–संज्ञा पुं० १. गुरुओं का गुरु। २. एक प्रकार की उपाधि जो भारत में संस्कृत के विद्वानों को सरकार की ओर से मिलती है।
महामांस–संज्ञा पुं० १. गोमांस। २. मनुष्य का मांस।
महामात्य–संज्ञा पुं० महामंत्री।
महामाया–संज्ञा स्त्री० १. प्रकृति। २. दुर्गा।
महामारी–संज्ञा स्त्री० वह संक्रामक भीषण रोग जिससे एक साथ ही बहुत से लोग मरें।
महामृत्युंजय–संज्ञा पुं० शिव।
महायज्ञ–संज्ञा पुं० धर्मशास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले कर्म।
महायात्रा–संज्ञा स्त्री० मृत्यु।
महायान–संज्ञा पुं० बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय।
महायुग–संज्ञा पुं० चारों युगों का समूह।
महारथ–संज्ञा पुं० भारी योद्धा।
महारथी–संज्ञा पुं० दे० "महारथ"।
महाराज–संज्ञा पुं० [स्त्री० महारानी] बहुत बड़ा राजा।
महाराजाधिराज–संज्ञा पुं० बहुत बड़ा राजा।
महाराणा–संज्ञा पुं० मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि।
महारात्रि–संज्ञा स्त्री० महाप्रलयवाली रात।
महारावण–संज्ञा पुं० पुराणानुसार वह रावण जिसके हज़ार मुख और दो हज़ार भुजाएँ थीं।
महाराष्ट्र–संज्ञा पुं० १. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २. इस देश के निवासी। ३. बहुत बड़ा राष्ट्र।
महाराष्ट्री–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की प्राकृत भाषा। २. दे० "मराठी"।
महारुद्र–संज्ञा पुं० शिव।
महारौरव–संज्ञा पुं० एक नरक।
महार्घ–वि० १. बहुमूल्य। २. महँगा।
महाल–संज्ञा पुं० १. मुहल्ला। २. पट्टी।
महालक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति।
महावत–संज्ञा पुं० हाथी हाँकनेवाला।
महावर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पाँवों को चित्रित कराती हैं।
महावरी–संज्ञा पुं० महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।
महावारुणी–संज्ञा स्त्री० गंगा-स्नान का एक योग।
महाविद्या–संज्ञा स्त्री० तंत्र में मानी

हुई दस देवियाँ।
महावीर–संज्ञा पुं० १. हनुमानजी। २. जैनियों के चौबीसवें और अंतिम जिन या तीर्थंकर।
वि० बहुत बड़ा बहादुर।
महाशय–संज्ञा पुं० महानुभाव। सज्जन।
महाश्वेता–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।
महि–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
महिदेव–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
महिपाल☆–संज्ञा पुं० दे० "महीप"।
महिमा–संज्ञा स्त्री० महत्त्व।
महिम्न–संज्ञा पुं० शिव का एक प्रधान स्तोत्र।
महिरावण–संज्ञा पुं० एक राक्षस जो रावण का लड़का था।
महिला–संज्ञा स्त्री० भली स्त्री।
महिष–संज्ञा पुं० [स्त्री० महिषी] १. भैंसा। २. एक राक्षस का नाम जिसे दुर्गाजी ने मारा था।
महिषमर्दनी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
महिषासुर–संज्ञा पुं० एक असुर जिसे दुर्गाजी ने मारा था।
महिषी–संज्ञा स्त्री० रानी। पटरानी।
मही–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. देश।
महीतल–संज्ञा पुं० पृथ्वी।
महीधर–संज्ञा पुं० १. पर्वत। २. शेषनाग।
महीन–वि० १. पतला। २. धीमा। मंद। (शब्द या स्वर)
महीना–संज्ञा पुं० १. काल का एक परिमाण जो प्रायः साधारणतया तीस दिन का होता है। २. मासिक वेतन। ३. स्त्रियों का मासिक धर्म।
महीप, महीपति–संज्ञा पुं० राजा।
महीसुर–संज्ञा पुं० ब्राह्मण।
महुअर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।
महुआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे, मीठे, गोल फलों से शराब बनती है।
महूरत☆–संज्ञा पुं० दे० "मुहूर्त"।
महेंद्र–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. इंद्र।
महेश–संज्ञा पुं० १. शिव। २. ईश्वर।
महेशी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
महेश्वर–संज्ञा पुं० [स्त्री० महेश्वरी] ईश्वर।
महेस☆–संज्ञा पुं० दे० "महेश"।
महोखा–संज्ञा पुं० एक पक्षी जो तेज़ दौड़ता है, पर उड़ नहीं सकता।
महोगनी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।
महोत्सव–संज्ञा पुं० बड़ा उत्सव।
महोदधि–संज्ञा पुं० समुद्र।
महोदय–संज्ञा पुं० [स्त्री० महोदया] महाशय।
माँ–संज्ञा स्त्री० जन्म देनेवाली माता।
†अव्य० में।
माँखी☆†–संज्ञा स्त्री० दे० "मक्खी"।
माँग–संज्ञा स्त्री० १. माँगने की क्रिया या भाव। २. बिक्री या खपत आदि के कारण किसी पदार्थ के लिये होनेवाली आवश्यकता या चाह।
संज्ञा स्त्री० सिर के बालों के बीच की रेखा जो बालों को विभक्त करके बनाई जाती है।
माँग-टीका–संज्ञा पुं० स्त्रियों का माँग पर का एक गहना।

मुज़क्कर–वि० पुल्लिंग।
मुजरा–संज्ञा पुं० वेश्या का बैठकर गाना।
मुजरिम–संज्ञा पुं० जिस पर अभियोग लगाया गया हो।
मुझ–सर्व० मैं का वह रूप जो उसे कर्त्ता और संबंध कारक के। छोड़कर शेष कारकों में, विभक्ति लगने से पहले, प्राप्त होता है। जैसे—मुझको, मुझसे।
मुझे–सर्व० "मैं" का वह रूप जो उसे कर्म और संप्रदान कारक में प्राप्त होता है।
मुटाई–संज्ञा स्त्री० १. मोटापन। स्थूलता। २. घमंड। शेखी।
मुटाना–क्रि० अ० मोटा हो जाना।
मुटासा–वि० वह जो कुछ धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो।
मुटिया–संज्ञा पुं० बोझ ढोनेवाला। मज़दूर।
मुट्ठा–संज्ञा पुं० अंगुल भर वस्तु।
मुट्ठी–संज्ञा स्त्री० १. बँधी हुई हथेली। २. उतनी वस्तु जितनी हथेली बंद करने से हाथ में आ सके।
मुठभेड़–संज्ञा स्त्री० १. टक्कर। २. भेंट।
मुठिया–संज्ञा स्त्री० औज़ारों का दस्ता। बेंट।
मुड़ना–क्रि० अ० सीधी वस्तु का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना।
क्रि० अ० दे० "मूँड़ना"।
मुड़ला०†–वि० [स्त्री० मुड़ली] जिसके सिर पर बाल न हों।
मुड़धारी–संज्ञा स्त्री० अटारी की दीवार का सिरा।
मुड़हर†–संज्ञा पुं० स्त्रियों की साड़ी या चादर का वह भाग जो ठीक सिर पर रहता है।
मुतअल्लिक़–वि० संबंध में। विषय में।
मुतबन्ना–संज्ञा पुं० दत्तक पुत्र।
मुतलक़–क्रि० वि० ज़रा भी। तनिक भी।
वि० बिलकुल।
मुताबिक़–क्रि० वि० अनुसार।
वि० अनुकूल।
मुतालबा–संज्ञा पुं० उतना धन जितना पाना वाजिब हो। बाक़ी रुपया।
मुद–संज्ञा पुं० हर्ष। आनंद।
मुदगर–संज्ञा पुं० दे० "मुगदर"।
मुदर्रिस–संज्ञा पुं० अध्यापक।
मुदा०†–अव्य० १. तात्पर्य यह कि। २. मगर। लेकिन।
संज्ञा स्त्री० हर्ष। आनंद।
मुदाम–क्रि० वि० १. सदा। हमेशा। २. ठीक-ठीक।
मुदामी–वि० जो सदा होता रहे।
मुदित–वि० प्रसन्न। ख़ुश।
मुदिर–संज्ञा पुं० बादल। मेघ।
मुद्दई–संज्ञा पुं० १. दावा करनेवाला। २. दुश्मन।
मुद्दत–संज्ञा स्त्री० [वि० मुद्दती] १. अवधि। २. बहुत दिन।
मुद्दाअलेह, मुद्दालेह–संज्ञा पुं० वह जिसके ऊपर कोई दावा किया जाय। प्रतिवादी।
मुद्रक–संज्ञा पुं० छापनेवाला।
मुद्रण–संज्ञा पुं० किसी चीज़ पर अक्षर आदि अंकित करना। छपाई।
मुद्रांकित–वि० मोहर किया हुआ।

मांगन०†–संज्ञा पुं० मांगने की क्रिया या भाव।

मांगना–क्रि० स० याचना करना।

मांगलिक–वि० मंगल करनेवाला।
संज्ञा पुं० नाटक का वह पात्र जो मंगलपाठ करता है।

मांगल्य–वि० शुभ।
संज्ञा पुं० मंगल का भाव।

मांचा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० मांची] १. पलंग। २. मचान।

मांछ†–संज्ञा पुं० मछली।

मांजना–क्रि० स० १. किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २. सरेस और शीशे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को दृढ़ करना।
क्रि० अ० अभ्यास करना।

मांजा–संज्ञा पुं० पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिये मादक होता है।

मांझ०†–अव्य० भीतर।
०† संज्ञा पुं० अंतर।

मांझा–संज्ञा पुं० १. नदी में का टापू। २. पतंग या गुड्डी के डोरे या नख पर चढ़ाया जानेवाला कलफ। ३. दे० "मंझा"।

मांझिल०†–क्रि० वि० बीच का।

मांझी–संज्ञा पुं० नाव खेनेवाला। केवट।

मांट०†–संज्ञा पुं० १. मटका। २. अटारी।

मांठ–संज्ञा पुं० मटका।

मांड़–संज्ञा पुं० पकाए हुए चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी।

मांड़ना०†–क्रि० स० १. मलना। २. अन्न की बाल में से दाने झाड़ना।

मांडलिक–संज्ञा पुं० मंडल या छोटे प्रदेश का मालिक।

मांड़व–संज्ञा पुं० विवाह आदि शुभ कृत्यों के लिये छाया हुआ मंडप।

मांडवी–संज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत को ब्याही थी।

मांड़ा–संज्ञा पुं० आंख का एक रोग जिसमें उसके अंदर महीन झिल्ली सी पड़ जाती है।
संज्ञा पुं० मंडप।
संज्ञा पुं० एक प्रकार की रोटी।

मांड़ी–संज्ञा स्त्री० १. भात का पसावन। २. कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।

मांड़ो०†–संज्ञा पुं० दे० "मांड़व"।

मांत०–वि० १. मस्त। २. उदास।

मांतना०†–क्रि० अ० पागल होना।

मांत्रिक–संज्ञा पुं० वह जो तंत्र-मंत्र का काम करता हो।

मांद–संज्ञा स्त्री० गुफा।

मांदगी–संज्ञा स्त्री० बीमारी।

मांदर–संज्ञा पुं० मर्दल। (बाजा)

मांदा–वि० १. थका हुआ। २. रोगी।

मांद्य–संज्ञा पुं० मंद होने का भाव।

मांपना०†–क्रि० अ० नशे में चूर होना।

मांयँ–अव्य० में।

मांस–संज्ञा पुं० १. शरीर का वह प्रसिद्ध, मुलायम, लचीला, लाल पदार्थ जो रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ होता है। २. गोश्त।

मांसभक्षी–संज्ञा पुं० दे० "मांसाहारी"।

मांसल–वि० [संज्ञा मांसलता] १. मांस से भरा हुआ। २. मोटा-ताज़ा।

मुद्रा–संज्ञा स्त्री० १. किसी के नाम की छाप। मोहर। २. रुपया, अशरफ़ी आदि। सिक्का।
मुद्रातत्त्व–संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं।
मुद्रायंत्र–संज्ञा पुं० छापने या मुद्रण करने का यंत्र। छापे आदि की कल।
मुद्रिक–संज्ञा स्त्री० दे० "मुद्रिका"।
मुद्रिका–संज्ञा स्त्री० अँगूठी।
मुद्रित–वि० १. मुद्रण या अंकित किया हुआ। २. मुँदा हुआ। बंद।
मुधा–क्रि० वि० व्यर्थ। वृथा।
संज्ञा पुं० असत्य। मिथ्या।
मुनक्का–संज्ञा पुं० एक प्रकार की बड़ी किशमिश।
मुनादी–संज्ञा स्त्री० ढिंढोरा। डुग्गी।
मुनाफ़ा–संज्ञा पुं० लाभ। नफ़ा।
मुनासिब–वि० उचित। वाजिब।
मुनि–संज्ञा पुं० १. ईश्वर, धर्म और सत्यासत्य आदि का सूक्ष्म विचार करनेवाला व्यक्ति। २. तपस्वी। त्यागी।
मुनियाँ–संज्ञा स्त्री० लाल नामक पक्षी की मादा।
मुनीब, मुनीम–संज्ञा पुं० साहूकारों का हिसाब-किताब लिखनेवाला।
मुनीश, मुनीश्वर–संज्ञा पुं० मुनियों में श्रेष्ठ।
मुन्ना–संज्ञा पुं० छोटों के लिये प्रेम-सूचक शब्द।
मुफ़लिस–वि० निर्धन। दरिद्र।
मुफ़स्सल–वि० ब्योरेवार। विस्तृत।
संज्ञा पुं० किसी केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के कुछ दूर के स्थान।
मुफ़ीद–वि० फ़ायदेमंद। लाभकारी।
मुफ़्त–वि० बिना दाम का। सेंत का।
मुफ़्ती–संज्ञा पुं० धर्म-शास्त्री। (मुस०)
वि० मुफ़्त का।
मुबारक–वि० १. जिसके कारण बरकत हो। २. शुभ।
मुमकिन–वि० संभव।
मुमुक्षु–वि० मुक्ति पाने का इच्छुक।
मुमूर्षा–संज्ञा स्त्री० मरने की इच्छा।
मुमूर्षु–वि० जो मरने के समीप हो।
मुर–संज्ञा पुं० वेठन।
अव्य० फिर। दोबारा।
मुरक–संज्ञा स्त्री० मुरकने की क्रिया या भाव।
मुरकना–क्रि० अ० १. लचककर किसी ओर झुकना। २. मोच खाना।
मुरगा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मुर्गी] एक प्रसिद्ध पक्षी।
मुरगाबी–संज्ञा स्त्री० मुरगे की जाति का एक पक्षी।
मुरचंग–संज्ञा पुं० मुँह से बजाने का एक प्रकार का बाजा।
मुरछना, मुरछाना०–क्रि० अ० १. शिथिल होना। २. अचेत होना।
मुरज–संज्ञा पुं० मृदंग। पखावज।
मुरझाना–क्रि० अ० १. फूल या पत्ती आदि का कुम्हलाना। २. सुस्त या उदास होना।
मुरदा–संज्ञा पुं० मरा हुआ प्राणी। मृत।
वि० १. मरा हुआ। २. मुरझाया हुआ।
मुरदार–वि० मरा हुआ।

मांसाहारी–संज्ञा पुं० मांस भोजन करनेवाला।
मांह०†–अव्य० में। बीच। अंदर।
मांहा०†–अव्य० दे० "मांह"।
मा–संज्ञा स्त्री० माता।
माइ०†–संज्ञा स्त्री० दे० "माई"।
माइका–संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
माई–संज्ञा स्त्री० १. माता। २. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिये संबोधन।
माकूल–वि० १. उचित। वाजिब। २. योग्य।
माख०–संज्ञा पुं० १. अप्रसन्नता। २. अभिमान।
माखन–संज्ञा पुं० दे० "मक्खन"।
माखना०†–क्रि० अ० नाराज़ होना।
माखी०†–संज्ञा स्त्री० मक्खी।
मागध–संज्ञा पुं० एक प्राचीन। जाति।
वि० मगध देश का।
मागधी–संज्ञा स्त्री० मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।
माघ–संज्ञा पुं० वह चांद्र मास जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है।
माघी–संज्ञा स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा।
वि० माघ का।
माचा†–संज्ञा पुं० बड़ी मचिया।
माची–संज्ञा स्त्री० छोटा माचा।
माछ†–संज्ञा पुं० मछली।
माछी†–संज्ञा स्त्री० मक्खी।
माजरा–संज्ञा पुं० हाल।
माट–संज्ञा पुं० १. मिट्टी का वह बर-तन जिसमें रँगरेज़ रंग बनाते हैं। २. बड़ी मटकी।
माटी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "मिट्टी"।
माठ–संज्ञा पुं० एक प्रकार की मिठाई।
माड़ना–क्रि० स० पैर या हाथ से मसलना।
माणिक–संज्ञा पुं० दे० "माणिक्य"।
माणिक्य–संज्ञा पुं० लाल रंग का एक रत्न।
वि० सर्वश्रेष्ठ।
मातंग–संज्ञा पुं० हाथी।
मात–संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
संज्ञा स्त्री० पराजय।
वि० पराजित।
मातदिल–वि० जो गुण के विचार से न बहुत ठंढा हो, न बहुत गरम।
मातना०†–क्रि० अ० मस्त होना।
मातबर–वि० विश्वसनीय।
मातबरी–संज्ञा स्त्री० विश्वसनीयता।
मातम–संज्ञा पुं० वह रोना-पीटना आदि जो किसी के मरने पर होता है।
मातमपुर्सी–संज्ञा स्त्री० मृतक के संबं-धियों को सांत्वना देना।
मातलि–संज्ञा पुं० इंद्र का सारथी।
मातहत–वि० [संज्ञा मातहती] किसी की अधीनता में काम करनेवाला।
माता–संज्ञा स्त्री० १. जन्म देनेवाली स्त्री। २. कोई पूज्य या आदर-णीय स्त्री। ३. चेचक।
वि० [स्त्री० माती] मतवाला।
मातामह–संज्ञा पुं० [स्त्री० मातामही] नाना।
मातु०–संज्ञा स्त्री० माता।
मातुल–संज्ञा पुं० [स्त्री० मातुला, मातु-लानी] मामा।
मातुली–संज्ञा स्त्री० मामा की स्त्री।
मातृ–संज्ञा स्त्री० दे० "माता"।
मातृका–संज्ञा स्त्री० १. दाई। धाय। २. माता। जननी।
मातृपूजा–संज्ञा स्त्री० विवाह की एक

मुरदासंख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का औषध जो फूँके हुए सीसे और सिंदूर से बनता है।

मुरब्बा–संज्ञा पुं० चीनी या मिसरी आदि की चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक।

मुरमुराना–क्रि० अ० मुरमुर होना।

मुरलिका–संज्ञा स्त्री० मुरली। वंशी।

मुरलिया†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।

मुरली–संज्ञा स्त्री० बाँसुरी। वंशी।

मुरलीधर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

मुरवा–संज्ञा पुं० एड़ी के ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घेरा।
† संज्ञा पुं० दे० "मोर"।

मुरवी०–संज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी।

मुरशिद–संज्ञा पुं० गुरु।

मुरहा†–वि० [स्त्री० मुरही] १. (बालक) जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो। २. नटखट। उपद्रवी।

मुराड़ा–संज्ञा पुं० जलती लकड़ी।

मुराद–संज्ञा स्त्री० १. अभिलाषा। २. अभिप्राय।

मुरारि–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

मुरारी–संज्ञा पुं० दे० "मुरारि"।

मुरासा†–संज्ञा पुं० कर्णफूल।

मुरीद–संज्ञा पुं० शिष्य। चेला।

मुरुझना०†–क्रि० अ० दे० "मुरझाना"।

मुरैठा–संज्ञा पुं० पगड़ी। साफ़ा।

मुरौवत–संज्ञा स्त्री० शील। संकोच।

मुर्ग़–संज्ञा पुं० दे० "मुरग़ा"।

मुर्दनी–संज्ञा स्त्री० मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न।

मुर्रा–संज्ञा पुं० पेट में ऐंठन होकर बार बार दस्त होना।

मुर्री–संज्ञा स्त्री० दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया जिसमें दोनों सिरों को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं।

मुर्रीदार–वि० जिसमें मुर्री पड़ी हो। ऐंठनदार।

मुर्शिद–संज्ञा पुं० मार्गदर्शक। गुरु।

मुलकी–वि० १. शासन या व्यवस्था संबंधी। २. देशी।

मुलज़िम–वि० जिस पर कोई अभियोग हो।

मुलतवी–वि० जिसका समय टाल दिया गया हो। स्थगित।

मुलतानी–संज्ञा स्त्री० १. एक रागिनी। २. एक प्रकार की बहुत कोमल और चिकनी मिट्टी।

मुलम्मा–संज्ञा पुं० किसी चीज़ पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह। गिलट। कलई।

मुलहा†–वि० जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो।

मुलाक़ात–संज्ञा स्त्री० आपस में मिलना। भेंट।

मुलाक़ाती–संज्ञा पुं० वह जिससे जान-पहचान हो।

मुलाज़िम–संज्ञा पुं० नौकर। सेवक।

मुलायम–वि० 'सख्त' का उलटा। जो कड़ा न हो।

मुलायमियत–संज्ञा स्त्री० मुलायम होने का भाव। नर्मी।

मुलाहज़ा–संज्ञा पुं० १. देख-भाल। २. रियायत।

रीति जिसमें पुत्रों से पितरों का पूजन किया जाता है।

मातृभाषा–संज्ञा स्त्री० वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए बोलना सीखता है।

मात्र–अव्य० केवल। सिर्फ़।

मात्रा–संज्ञा स्त्री० १. परिमाण। २. उतना काल जितना एक ह्रस्व अक्षर के उच्चारण में लगता है।

मात्रिक–वि० १. मात्रा-संबंधी। २. जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य–संज्ञा पुं० ईर्ष्या। डाह।

माथा–संज्ञा पुं० सिर का ऊपरी भाग। मस्तक।

माथुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० माथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २. ब्राह्मणों की एक जाति। ३. कायस्थों की एक जाति।

माथे–क्रि० वि० १. मस्तक पर। २. भरोसे।

मादक–वि० नशा उत्पन्न करनेवाला।

मादकता–संज्ञा स्त्री० मादक होने का भाव। नशीलापन।

मादर–संज्ञा स्त्री० माँ। माता।

मादरज़ाद–वि० १. जन्म का। पैदाइशी। २. बिलकुल नंगा।

मादा–संज्ञा स्त्री० स्त्री जाति का प्राणी। नर का उलटा। (जीव-जंतु)

माद्दा–संज्ञा पुं० १. मूल तत्त्व। २. योग्यता।

माद्री–संज्ञा स्त्री० पांडु राजा की पत्नी और नकुल तथा सहदेव की माता।

माधव–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वैशाख मास। ३. वसंत ऋतु।

माधवी–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं।

माधुरी–संज्ञा स्त्री० १. मिठास। २. शोभा।

माधुर्य–संज्ञा पुं० १. मधुरता। २. सुंदरता।

माधो–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. श्री रामचंद्रजी।

माध्यम–वि० मध्य का। बीचवाला। संज्ञा पुं० कार्यसिद्धि का उपाय या साधन।

माध्यमिक–संज्ञा पुं० १. बौद्धों का एक भेद। २. मध्य देश।

माध्याकर्षण–संज्ञा पुं० पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है।

माध्व–संज्ञा पुं० वैष्णवों के चार मुख्य संप्रदायों में से एक जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माध्वी–संज्ञा स्त्री० मदिरा। शराब।

मान–संज्ञा पुं० १. माप, तौल या नाप आदि। २. पैमाना। ३. अभिमान। ४. प्रतिष्ठा।

मानगृह–संज्ञा पुं० कोप-भवन।

मानचित्र–संज्ञा पुं० किसी स्थान का बना हुआ नक्शा।

मानता–संज्ञा स्त्री० दे० "मन्नत"।

मानना–क्रि० अ० १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. कल्पना करना। ३. ध्यान में लाना। क्रि० स० १. स्वीकृत करना। २. आदर करना। ३. देवता आदि की भेंट करने का प्रण करना।

माननीय–वि० [स्त्री० माननीया] जो मान करने के योग्य हो। पूजनीय।

मान-मनौती–संज्ञा स्त्री० १. मन्नत। मनौती। २. रूठने और मानने की क्रिया।

मुलेठी–संज्ञा स्त्री० घुँघची नाम की लता की जड़ जो औषध के काम में आती है। जेठी मधु। मुलट्ठी।

मुल्क–संज्ञा पुं० [वि० मुल्की] १. देश। २. प्रांत। प्रदेश।

मुल्ला–संज्ञा पुं० दे० "मौलवी"।

मुवक्किल–संज्ञा पुं० वह जो अपने किसी काम के लिये कोई वकील नियुक्त करे।

मुश्क–संज्ञा पुं० कस्तूरी। मृगमद। संज्ञा स्त्री० कंधे और कोहनी के बीच का भाग।

मुश्कदाना–संज्ञा पुं० एक प्रकार की लता का बीज जिससे कस्तूरी की सी सुगंध निकलती है।

मुश्किल–वि० कठिन। दुष्कर। संज्ञा स्त्री० कठिनता। दिक्कत।

मुश्की–वि० कस्तूरी के रंग का। काला।

मुश्त–संज्ञा पुं० मुट्ठी।

मुष्टि–संज्ञा स्त्री० १. मुट्ठी। २. मुक्का।

मुष्टिक–संज्ञा पुं० मुक्का। घूँसा।

मुष्टिका–संज्ञा स्त्री० मुट्ठी।

मुष्टियुद्ध–संज्ञा पुं० घूँसेबाज़ी।

मुसकराना–क्रि० अ० बहुत ही मंद रूप से हँसना। मृदु हास।

मुसकराहट–संज्ञा स्त्री० मुसकराने की क्रिया या भाव। मंद हास।

मुसकान–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

मुसक्यान–संज्ञा स्त्री० दे० "मुसकराहट"।

मुसना–क्रि० अ० मूसा जाना। चुराया जाना। (धन आदि)

मुसब्बर–संज्ञा पुं० जमाया हुआ घी-कुवाँर का रस जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

मुसम्मात–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

मुसलधार–क्रि० वि० दे० "मूसलधार"।

मुसलमान–संज्ञा पुं० [स्त्री० मुसलमानी] वह जो मुहम्मद साहब के चलाए हुए संप्रदाय में हो।

मुसलमानी–वि० मुसलमान संबंधी।
संज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रस्म जिसमें छोटे बालक की इंद्रिय पर का कुछ चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत।

मुसल्लम–वि० जिसके खंड न किए गए हों।

मुसल्ला–संज्ञा पुं० नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई।
संज्ञा पुं० दे० "मुसलमान"।

मुसव्विर–संज्ञा पुं० चित्रकार।

मुसहर–संज्ञा पुं० एक जंगली जाति जिसका व्यवसाय जंगली जड़ी-बूटी आदि बेचना है।

मुसाफ़िर–संज्ञा पुं० यात्री। पथिक।

मुसाफ़िरखाना–संज्ञा पुं० यात्रियों के, विशेषतः रेल के यात्रियों के, ठहरने का स्थान।

मुसाफ़िरी–संज्ञा स्त्री० यात्रा। प्रवास।

मुसाहब–संज्ञा पुं० धनवान् या राजा आदि का दरबारी।

मुसाहबी–संज्ञा स्त्री० मुसाहब का पद या काम।

मुसीबत–संज्ञा स्त्री० १. तकलीफ़। २. विपत्ति।

मानमरोर॰†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मन-मुटाव"।
मानमोचन-संज्ञा पुं॰ रूठे हुए प्रिय को मनाना।
मानव-संज्ञा पुं॰ मनुष्य। आदमी।
मानवशास्त्र-संज्ञा पुं॰ वह शास्त्र जिसमें मानव-जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है।
मानवी-संज्ञा स्त्री॰ स्त्री। नारी।
वि॰ मानव-संबंधी।
मानस-संज्ञा पुं॰ १. मन। २. मान-सरोवर।
वि॰ १. मन से उत्पन्न। २. मन का विचारा हुआ।
क्रि॰ वि॰ मन के द्वारा।
मानसपुत्र-संज्ञा पुं॰ पुराणानुसार वह पुत्र जिसकी उत्पत्ति इच्छा मात्र से हो।
मानसर-संज्ञा पुं॰ दे॰ "मानसरोवर"।
मानसरोवर-संज्ञा पुं॰ हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।
मानस शास्त्र-संज्ञा पुं॰ मनोविज्ञान।
मानसिक-वि॰ मन की कल्पना से उत्पन्न।
मानसी-संज्ञा स्त्री॰ वह पूजा जो मन ही मन की जाय।
वि॰ मन का।
मानहानि-संज्ञा स्त्री॰ अप्रतिष्ठा। अपमान। बेइज्ज़ती। हतक इज़्ज़त।
मानहुँ॰-अव्य॰ दे॰ "मानो"।
मानिंद-वि॰ समान। तुल्य।
मानिक-संज्ञा पुं॰ लाल रंग का एक मणि। पद्मराग।
मानिकचंदी-संज्ञा स्त्री॰ साधारण छोटी सुपारी।
मानित-वि॰ सम्मानित। प्रतिष्ठित।
मानिनी-वि॰ स्त्री॰ मानवती।
संज्ञा स्त्री॰ साहित्य में वह नायिका जो नायक का दोष देखकर उससे रूठ गई हो।
मानी-वि॰ [स्त्री॰ मानिनी] १. अहंकारी। २. सम्मानित।
संज्ञा स्त्री॰ अर्थ। मतलब। तात्पर्य।
मानुषिक-वि॰ मनुष्य का।
मानुषी-वि॰ मनुष्य-संबंधी।
माने-संज्ञा पुं॰ अर्थ। मतलब।
मानो-अव्य॰ जैसे। गोया।
मान्य-वि॰ [स्त्री॰ मान्या] १. मानने योग्य। २. पूजनीय।
माप-संज्ञा स्त्री॰ मापने की क्रिया या भाव।
मापक-संज्ञा पुं॰ १. पैमाना। २. वह जो मापता हो।
मापना-क्रि॰ स॰ किसी पदार्थ के विस्तार या घनत्व आदि का किसी नियत मान से परिमाण करना। नापना।
माफ़-वि॰ जो क्षमा कर दिया गया हो। क्षमित।
माफ़क़त-संज्ञा स्त्री॰ १. अनुकूलता। २. मेल। मैत्री।
माफ़िक़†-वि॰ अनुकूल। अनुसार।
माफ़ी-संज्ञा स्त्री॰ क्षमा।
मामता-संज्ञा स्त्री॰ अपनापन। आत्मीयता।
मामलत, मामलति॰†-संज्ञा स्त्री॰ मामला। व्यवहार की बात।
मामला-संज्ञा पुं॰ १. झगड़ा। विवाद। २. मुकदमा।
मामा-संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ मामी] माता

मुस्क्यान॰†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मुसकराहट"।
मुस्टंडा-वि॰ १. मोटा-ताज़ा। २. गुंडा।
मुस्तक़िल-वि॰ अटल। स्थिर।
मुस्तैद-वि॰ तत्पर।
मुस्तैदी-संज्ञा स्त्री॰ १. तत्परता। २. फ़ुरती।
मुहकमा-संज्ञा पुं॰ सरिश्ता। विभाग।
मुहताज-वि॰ १. दरिद्र। कंगाल। २. आकांक्षी।
मुहब्बत-संज्ञा स्त्री॰ १. प्रीति। प्रेम। २. दोस्ती। ३. इश्क़।
मुहम्मद-संज्ञा पुं॰ अरब के एक प्रसिद्ध धर्म्माचार्य्य जिन्होंने इस्लाम या मुसलमानी धर्म्म का प्रवर्त्तन किया था।
मुहम्मदी-संज्ञा पुं॰ मुसलमान।
मुहर-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "मोहर"।
मुहरा-संज्ञा पुं॰ १. सामने का भाग। आगा। २. शतरंज की गोटी।
मुहर्रम-संज्ञा पुं॰ अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे।
मुहर्रमी-वि॰ १. मुहर्रम-संबंधी। २. शोक-व्यंजक। ३. मनहूस।
मुहर्रिर-संज्ञा पुं॰ लेखक। मुंशी।
मुहर्रिरी-संज्ञा स्त्री॰ मुहर्रिर का काम।
मुहाफ़िज़-वि॰ १. हिफ़ाज़त करनेवाला। २. अदालत का एक कर्मचारी।
मुहाल-वि॰ १. असंभव। नामुमकिन। २. कठिन।
मुहावरा-संज्ञा पुं॰ १. रोज़मर्रा। बोलचाल। २. अभ्यास। आदत।
मुहासिब-संज्ञा पुं॰ १. गणितज्ञ। २. जाँचने या हिसाब लेनेवाला।
मुहिम-संज्ञा स्त्री॰ कठिन या बड़ा काम।
मुहुः-अव्य॰ बार बार।
मुहूर्त्त-संज्ञा पुं॰ १. दिन-रात का तीसवाँ भाग। २. शुभ समय।
मूँग-संज्ञा स्त्री॰, पुं॰ एक अन्न जिसकी दाल बनती है।
मूँगफली-संज्ञा स्त्री॰ १. एक प्रकार का क्षुप जिसकी खेती फलों के लिये की जाती है। २. चिनिया बादाम।
मूँगा-संज्ञा पुं॰ समुद्र में रहनेवाले एक प्रकार के कृमियों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में की जाती है।
मूँछ-संज्ञा स्त्री॰ ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं।
मूँज-संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार का तृण जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं और बहुत पतली लंबी पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं।
मूँड़†-संज्ञा पुं॰ सिर।
मूँड़न-संज्ञा पुं॰ चूड़ाकरण संस्कार। मुंडन।
मूँड़ना-क्रि॰ स॰ १. सिर के बाल बनाना। २. धोखा देकर माल उड़ाना।
मूँड़ी-संज्ञा स्त्री॰ सिर।
मूँदना-क्रि॰ स॰ ऊपर से कोई वस्तु फैलाकर छिपाना।
मूक-वि॰ १. गूँगा। अवाक्। २. विवश।

का भाई। माँ का भाई।
संज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. नौकरानी।
मामूल–संज्ञा पुं० रीति। रवाज।
मामूली–वि० १. नियमित। नियत। २. सामान्य।
माय*†–संज्ञा स्त्री० माता।
मायका–संज्ञा पुं० स्त्री के लिये उसके माता-पिता का घर। नैहर। पीहर।
मायन*†–संज्ञा पुं० वह दिन या तिथि जिसमें विवाह में मातृका-पूजन और पितृ-निमंत्रण होता है।
मायल–वि० झुका हुआ। रुजू।
माया–संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. दौलत। ३. अविद्या। ४. ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब काम करती हुई मानी गई है।
मायादेवी–संज्ञा स्त्री० बुद्ध की माता का नाम।
मायावाद–संज्ञा पुं० ईश्वर के अतिरिक्त सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और असत्य मानने का सिद्धांत।
मायावादी–संज्ञा पुं० वह जो सारी सृष्टि को माया या भ्रम समझे।
मायाविनी–संज्ञा स्त्री० छल या कपट करनेवाली स्त्री। ठगिनी।
मायावी–संज्ञा पुं० [स्त्री० मायाविनी] १. बहुत बड़ा चालाक। २. जादूगर। ३. एक दानव जो मय का पुत्र था।
मायिक–वि० माया से बना हुआ। बनावटी।
मार–संज्ञा पुं० १. कामदेव। २. विष। ज़हर। ३. धतूरा।
संज्ञा स्त्री० १. मारने की क्रिया या भाव। २. चोट।
मारकंडेय–संज्ञा पुं० दे० "मार्कंडेय"।
मारक–वि० मार डालनेवाला।
मारका–संज्ञा पुं० चिह्न। निशान।
मार काट–संज्ञा स्त्री० १. युद्ध। २. मारने काटने का काम या भाव।
मारकीन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा।
मारग*†–संज्ञा पुं० रास्ता।
मारगन–संज्ञा पुं० बाण। तीर।
मारण–संज्ञा पुं० १. मार डालना। हत्या करना। २. एक तांत्रिक प्रयोग।
मारतंड–संज्ञा पुं० दे० "मार्तंड"।
मारना–क्रि० स० १. वध करना। हनन करना। प्राण लेना। २. कुश्ती या मल्लयुद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना। ३. किसी शारीरिक आवेग या मनोविकार आदि को रोकना। ४. धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना।
मारपेच–संज्ञा पुं० धूर्तता। चालबाज़ी।
मारफ़त–अव्य० द्वारा। ज़रिये से।
मारवाड़–संज्ञा पुं० मारवाड़ राज्य।
मारवाड़ी–संज्ञा पुं० [स्त्री० मारवाड़िन] मारवाड़ देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० मारवाड़ देश की भाषा।
मारा*–वि० जो मार डाला गया हो।
मारामार–क्रि० वि० अत्यंत शीघ्रता से। बहुत जल्दी।
मारी–संज्ञा स्त्री० महामारी।
मारीच–संज्ञा पुं० वह राक्षस जिसने सोने का हिरन बनकर रामचंद्र को धोखा दिया था।

मूकता–संज्ञा स्त्री० गूँगापन।

मूका†–संज्ञा पुं० १. छोटा गोल झरोखा। मोखा। २. दे० "मुक्का"।

मूज़ी–संज्ञा पुं० १. कष्ट पहुँचानेवाला। २. दुष्ट। खल।

मूठ–संज्ञा स्त्री० १. मुष्टि। २. किसी औज़ार या हथियार का वह भाग जो हाथ में रहता है।

मूठी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मूड़–संज्ञा पुं० दे० "मूँड़"।

मूढ़–वि० मूर्ख। जड़बुद्धि।

मूढ़गर्भ–संज्ञा पुं० गर्भ का बिगड़ना जिससे गर्भ-स्राव आदि होता है।

मूढ़ता–संज्ञा स्त्री० मूर्खता।

मूत–संज्ञा पुं० दे० "मूत्र"।

मूतना–क्रि० अ० पेशाब करना।

मूत्र–संज्ञा पुं० शरीर के विषैले पदार्थ को लेकर उपस्थ-मार्ग से निकलनेवाला जल। पेशाब।

मूत्रकृच्छ्र–संज्ञा पुं० एक रोग जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रुक-रुककर होता है।

मूत्राघात–संज्ञा पुं० पेशाब बंद होने का रोग।

मूत्राशय–संज्ञा पुं० नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है।

मूर०†–संज्ञा पुं० १. मूल। जड़। २. मूलधन।

मूरख०†–वि० दे० "मूर्ख"।

मूरत०†–संज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।

मूरतिवंत०–वि० मूर्तिमान्। सशरीर।

मूरि, मूरी०–संज्ञा स्त्री० १. मूल। २. जड़ी।

मूरुख०†–वि० दे० "मूर्ख"।

मूर्ख–वि० बेवकूफ़। अज्ञ।

मूर्खता–संज्ञा स्त्री० मूढ़ता। नासमझी।

मूर्च्छन–संज्ञा पुं० बेहोश करना।

मूर्च्छना–संज्ञा स्त्री० संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह।

मूर्च्छा–संज्ञा स्त्री० वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है।

मूर्च्छित, मूर्छित–वि० जिसे मूर्च्छा आई हो। अचेत।

मूर्त्त–वि० जिसका कुछ रूप या आकार हो।

मूर्त्ति–संज्ञा स्त्री० १. शरीर। देह। २. प्रतिमा।

मूर्त्तिकार–संज्ञा पुं० मूर्त्ति बनानेवाला।

मूर्त्तिपूजक–संज्ञा पुं० वह जो मूर्त्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो।

मूर्त्तिपूजा–संज्ञा स्त्री० मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना।

मूर्त्तिमान्–वि० [स्त्री० मूर्त्तिमती] १. जो रूप धारण किए हो। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

मूर्द्ध–संज्ञा पुं० सिर।

मूर्द्धन्य–वि० मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला।

मूर्द्धन्य वर्ण–संज्ञा पुं० वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्द्धा से होता है। यथा—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धा–संज्ञा पुं० सिर।

मूर्द्धाभिषेक–संज्ञा पुं० [वि० मूर्द्धा-

मारुत–संज्ञा पुं० वायु। हवा।
मारुति–संज्ञा पुं० १. हनुमान। २. भीम।
मारू–संज्ञा पुं० एक राग जो युद्ध के समय बजाया और गाया जाता है।
मारे–अव्य० वजह से।
मार्कंडेय–संज्ञा पुं० मृकंड ऋषि के पुत्र। कहते हैं कि ये अपने तपो-बल से सदा जीवित रहते हैं और रहेंगे।
मार्का–संज्ञा पुं० दे० "मारका"।
मार्ग–संज्ञा पुं० रास्ता।
मार्गण–संज्ञा पुं० अन्वेषण। ढूँढ़ना।
मार्गशीर्ष–संज्ञा पुं० अगहन मास। कार्तिक के बाद का महीना।
मार्गी–संज्ञा पुं० मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। यात्री।
मार्जन–संज्ञा पुं० १. सफ़ाई। २. क्षमा।
मार्जनी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
मार्जार–संज्ञा पुं० [स्त्री० मार्जारी] बिल्ली।
मार्जित–वि० साफ़ किया हुआ।
मार्तंड–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
मार्दव–संज्ञा पुं० अहंकार का त्याग।
मार्फ़त–अव्य० द्वारा। ज़रिए से।
मार्मिक–वि० जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े।
मार्मिकता–संज्ञा स्त्री० मार्मिक होने का भाव।
माल–संज्ञा पुं० पहलवान। कुश्ती लड़नेवाला।
† संज्ञा स्त्री० माला।
संज्ञा पुं० १. संपत्ति। धन। २. सामग्री। ३. क्रय-विक्रय का पदार्थ। ४. उत्तम और सुस्वादु भोजन।
मालकोश–संज्ञा पुं० संपूर्ण जाति का एक राग।
मालख़ाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ माल-असबाब रहता हो। भंडार।
मालगाड़ी–संज्ञा स्त्री० रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल लादा जाता है।
मालगुज़ार–संज्ञा पुं० मालगुज़ारी देनेवाला पुरुष।
मालगुज़ारी–संज्ञा स्त्री० वह भूमि-कर जो ज़मींदार से सरकार लेती है।
माल-गोदाम–संज्ञा पुं० स्टेशन पर वह स्थान जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है।
मालती–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध लता जो बड़े वृक्षों पर घटाटोप फैलती है।
मालदार–वि० धनी।
मालद्वीप–संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पश्चिम ओर का एक द्वीपपुंज।
मालपूआ–संज्ञा पुं० पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान।
मालव–संज्ञा पुं० १. मालवा देश। २. एक राग जिसे भैरव भी कहते हैं। ३. मालव देश-वासी या मालव का पुरुष।
वि० मालव देश-संबंधी। मालवे का।
मालवा–संज्ञा पुं० एक प्राचीन देश जो अब मध्य भारत में है।
मालवीय–वि० मालव देश का निवासी।
माला–संज्ञा स्त्री० फूलों का हार। गजरा।
मालामाल–वि० बहुत संपन्न।
मालिक–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। अधिपति। २. स्वामी। ३. पति। शौहर।

मिषिक्त] सिर पर अभिषेक या जल-सिंचन।

मूर्वा–संज्ञा स्त्री० मरोड़फली।

मूल–संज्ञा पुं० १. पेड़ों का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है। २. पूँजी।

मूलक–संज्ञा पुं० १. मूली। २. मूल स्वरूप।

मूलद्रव्य–संज्ञा पुं० आदिम द्रव्य या भूत जिससे और द्रव्य बने हों।

मूल धन–संज्ञा पुं० वह असल धन जो किसी व्यापार में लगाया जाय। पूँजी।

मूलपुरुष–संज्ञा पुं० किसी वंश का आदि-पुरुष जिससे वंश चला हो।

मूलस्थली–संज्ञा स्त्री० थाला। थाल-वाल।

मूलस्थान–संज्ञा पुं० बाप-दादा की जगह।

मूलाधार–संज्ञा पुं० मानव शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र। (योग)

मूली–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ मीठी, चरपरी और तीक्ष्ण होती और खाई जाती है।

मूल्य–संज्ञा पुं० किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाला धन। कीमत।

मूल्यवान्–वि० जिसका दाम अधिक हो। कीमती।

मूष, मूषक–संज्ञा पुं० चूहा।

मूस–संज्ञा पुं० चूहा।

मूसदानी–संज्ञा स्त्री० चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना–क्रि० स० चुराकर ले जाना।

मूसर, मूसल–संज्ञा पुं० १. धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। २. एक अस्त्र जिसे बलराम धारण करते थे।

मूसलधार–क्रि० वि० मूसल के समान मोटी धार से। (वृष्टि)

मूसला–संज्ञा पुं० मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर सूत या शाखाएँ न फूटी हों।

मूसली–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

मूसा–संज्ञा पुं० १. चूहा। २. यहूदियों के एक पैगंबर जिनको खुदा का नूर दिखाई पड़ा था।

मृग–संज्ञा पुं० [स्त्री० मृगी] १. पशु-मात्र, विशेषतः वन्य पशु। २. हिरन।

मृगचर्म–संज्ञा पुं० हिरन का चमड़ा जो पवित्र माना जाता है।

मृगछाला–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म"।

मृगजल–संज्ञा पुं० मृगतृष्णा की लहर।

मृगतृषा, मृगतृष्णा–संज्ञा स्त्री० जल की लहरों की वह मिथ्या प्रतीति जो कभी कभी ऊसर मैदानों में, कड़ी धूप पड़ने के समय होती है।

मृगदाव–संज्ञा पुं० काशी के पास 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।

मृगनाथ–संज्ञा पुं० सिंह।

मृगनाभि–संज्ञा पुं० कस्तूरी।

मृगनैनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचनी"।

मृगमद–संज्ञा पुं० कस्तूरी।

मृगमरीचिका–संज्ञा स्त्री० मृगतृष्णा।

मृगया–संज्ञा पुं० शिकार। आखेट।

मृगरोचन–संज्ञा पुं० कस्तूरी।

मृगलोचना–वि० स्त्री० हरिण के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)।

का प्राचीन नाम।
मिथुन—संज्ञा पुं० १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २. संयोग।
मिथ्या—वि० असत्य। झूठ।
मिथ्यात्व—संज्ञा पुं० मिथ्या होने का भाव।
मिथ्याहार—संज्ञा पुं० अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।
मिनती†—संज्ञा स्त्री० दे० "विनति"।
मिनहा—वि० जो काट या घटा लिया गया हो।
मिन्नत—संज्ञा स्त्री० प्रार्थना। निवेदन।
मिमियाना—क्रि० अ० भेड़ या बकरी का बोलना।
मियाँ—संज्ञा पुं० १. मुसलमान। २. पति। ३. महाशय।
मियाँ मिट्ठू—संज्ञा पुं० १. मीठी बोली बोलनेवाला। मधुर-भाषी। २. तोता।
मियान—संज्ञा स्त्री० दे० "म्यान"।
मियाना—संज्ञा पुं० एक प्रकार की पालकी।
मिरगी—संज्ञा स्त्री० अपस्मार रोग।
मिरचा—संज्ञा पुं० लाल मिर्च।
मिरज़ई—संज्ञा स्त्री० कमर तक का एक प्रकार का बंददार अंगा।
मिरज़ा—संज्ञा पुं० १. मीर या अमीर का लड़का। २. मुग़लों की एक उपाधि।
मिर्च—संज्ञा स्त्री० कुछ प्रसिद्ध तिक्त फलों और फलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत काली मिर्च, लाल मिर्च आदि हैं।
मिलक†—संज्ञा स्त्री० ज़मीन-जायदाद।
मिलन—संज्ञा पुं० मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप।
मिलनसार—वि० [संज्ञा मिलनसारी] सद्व्यवहार रखनेवाला और सुशील।
मिलना—क्रि० स० १. सम्मिलित होना। २. भेंट होना। मुलाक़ात होना। ३. प्राप्त होना।
मिलनी—संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रस्म। इसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नक़द देते हैं।
मिलवाना—क्रि० स० मिलने का काम दूसरे से कराना।
संज्ञा स्त्री० मिलाने की क्रिया या भाव।
मिलान—संज्ञा पुं० १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. तुलना।
मिलाना—क्रि० स० १. भिन्न भिन्न पदार्थों को एक करना। २. ठीक होने की जाँच करना। ३. भेंट या परिचय कराना।
मिलाप—संज्ञा पुं० मिलने की क्रिया या भाव।
मिलावट—संज्ञा स्त्री० १. मिलाए जाने का भाव। २. खोट।
मिलिक‡†—संज्ञा स्त्री० ज़मींदारी।
मिलित—वि० मिला हुआ। युक्त।
मिलौना†—क्रि० स० १. दे० "मिलाना"। २. गौ का दूध दुहना।
मिल्कियत—संज्ञा स्त्री० १. ज़मींदारी। २. जायदाद।
मिल्लत—संज्ञा स्त्री० मेल-जोल। घनिष्ठता।
मिश्र—वि० १. मिला या मिलाया हुआ। २. जिसमें कई भिन्न भिन्न प्रकार की रक़मों की संख्या हो। (गणित)

मृगलोचनी–संज्ञा स्त्री० दे० "मृगलोचना"।
मृगवारि–संज्ञा पुं० मृगतृष्णा का जल।
मृगशिरा–संज्ञा पुं० सत्ताइस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।
मृगांक–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
मृगाशन–संज्ञा पुं० सिंह।
मृगिनी–संज्ञा स्त्री० हरिणी।
मृगी–संज्ञा स्त्री० १. हरिणी। हिरनी। २. अपस्मार नामक रोग।
मृगेंद्र–संज्ञा पुं० सिंह।
मृड़ा, मृड़ानी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
मृणाल–संज्ञा स्त्री० कमल का डंठल।
मृणालिका–संज्ञा स्त्री० दे० "मृणाल"।
मृणालिनी–संज्ञा स्त्री० कमलिनी।
मृत–वि० मरा हुआ। मुर्दा।
मृतक–संज्ञा पुं० मरा हुआ प्राणी।
मृतक कर्म–संज्ञा पुं० अंत्येष्टि।
मृतकधूम–संज्ञा पुं० राख। भस्म।
मृतसंजीवनी–संज्ञा स्त्री० एक बूटी जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मुर्दा भी जी उठता है।
मृत्तिका–संज्ञा स्त्री० मिट्टी। खाक।
मृत्युंजय–संज्ञा पुं० शिव का एक रूप।
मृत्यु–संज्ञा स्त्री० प्राण छूटना। मरण।
मृत्युलोक–संज्ञा पुं० १. यमलोक। २. मर्त्यलोक।
मृदंग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा जो ढोलक से कुछ लंबा होता है।
मृदु–वि० [स्त्री० मृद्वी] १. कोमल। २. सुकुमार। ३. धीमा।
मृदुता–संज्ञा स्त्री० मुलायमियत।
मृदुल–वि० कोमल। नरम।
मृन्मय–वि० मिट्टी का बना हुआ।
मृषा–अव्य० झूठमूठ।
वि० असत्य। झूठ।
में–अव्य० अधिकरणकारक का चिह्न। आधार या अवस्थान-सूचक शब्द।
मेकल–संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत का एक भाग जिसमें अमरकंटक है।
मेख–संज्ञा पुं० दे० "मेष"।
संज्ञा स्त्री० गाड़ने के लिये एक ओर नुकीली गढ़ी हुई कील। खूँटी।
मेखल–संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।
मेखला–संज्ञा स्त्री० १. वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य के भाग में उसे चारों ओर से घेरे हुए पड़ी हो। २. करधनी।
मेखली–संज्ञा स्त्री० एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं।
मेघ–संज्ञा पुं० आकाश में घनीभूत जलवाष्प जिससे वर्षा होती है। बादल।
मेघडंबर–संज्ञा पुं० १. मेघगर्जन। २. बड़ा शामियाना।
मेघनाद–संज्ञा पुं० १. मेघ का गर्जन। २. रावण का पुत्र इंद्रजित्।
मेघमाला–संज्ञा स्त्री० बादलों की घटा। कादंबिनी।
मेघराज–संज्ञा पुं० इंद्र।
मेघा–संज्ञा पुं० मेढक।
मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित–वि० बादलों से ढका या छाया हुआ।
मेचकता–संज्ञा स्त्री० कालापन।
मेचकताई–संज्ञा स्त्री० दे० "मेचकता"।

संज्ञा पुं० सरयूपारीय, कान्यकुब्ज और सारस्वत आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।
मिश्रण-संज्ञा पुं० दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया।
मिश्रित-वि० एक में मिलाया हुआ।
मिष-संज्ञा पुं० १. छल। कपट। २. बहाना।
मिष्ट-वि० मीठा। मधुर।
मिष्टभाषी-संज्ञा पुं० वह जो मीठा बोलता हो।
मिष्टान्न-संज्ञा पुं० मिठाई।
मिस-संज्ञा पुं० बहाना।
मिसकीन-वि० बेचारा। दीन।
मिसना†-क्रि० अ० माँजा या मला जाना।
मिसरा-संज्ञा पुं० उर्दू या फ़ारसी आदि की कविता का एक चरण।
मिसरी-संज्ञा स्त्री० १. दोबारा बहुत साफ़ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी। २. मिस्र देश का निवासी।
मिसाल-संज्ञा स्त्री० उपमा।
मिसिल-संज्ञा स्त्री० किसी एक मुक़दमे या विषय से संबंध रखनेवाले कुल काग़ज़-पत्र।
मिस्तर-संज्ञा पुं० काठ का वह औज़ार जिससे राज लोग छत पीटते हैं। पिटना।
संज्ञा पुं० दे० "मेहतर"।
मिस्तरी-संज्ञा पुं० वह जो हाथ का बहुत अच्छा कारीगर हो।
मिस्तरीखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ लोहार, बढ़ई आदि काम करते हैं।
मिस्र-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध देश जो अफ़्रिका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।
मिस्री-संज्ञा स्त्री० दे० "मिसरी"।
मिस्ल-वि० समान। तुल्य।
मिस्सी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो सधवा स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।
मिहिर-संज्ञा पुं० सूर्य्य।
मींजना†-क्रि० स० हाथों से मलना।
मींड़-संज्ञा स्त्री० संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाय। गमक।
मींड़ना†-क्रि० स० हाथों से मलना।
मीआद-संज्ञा स्त्री० अवधि।
मीआदी-वि० जिसके लिये कोई अवधि नियत हो।
मीचना-क्रि० स० (आँखें) बंद करना। मूँदना।
मीज़ान-संज्ञा स्त्री० कुल संख्याओं का योग। जोड़। (गणित)
मीठा-वि० १. चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर। २. स्वादिष्ट।
संज्ञा पुं० १. मिठाई। २. गुड़।
मीठा तेल-संज्ञा पुं० तिल का तेल।
मीठा नीबू-संज्ञा पुं० जमीरी नीबू।
मीठा पानी-संज्ञा पुं० नीबू का अँगरेज़ी सत मिला हुआ पानी। लेमनेड।
मीठी छुरी-संज्ञा स्त्री० वह जो देखने में मित्र, पर वास्तव में शत्रु हो।
मीन-संज्ञा पुं० मछली।
मीनकेतन-संज्ञा पुं० कामदेव।

मेज़–संज्ञा स्त्री० लंबी-चौड़ी ऊँची चौकी। टेबुल।
मेज़वान–संज्ञा पुं० आतिथ्य करने-वाला। मेहमानदार।
मेट–संज्ञा पुं० मज़दूरों का अफ़सर या सरदार। टंडैल। जमादार।
मेटनहारा॰†–संज्ञा पुं० मिटानेवाला।
मेटना†–क्रि० स० दे० "मिटाना"।
मेड़–संज्ञा पुं० मिट्टी डालकर बनाया हुआ खेत या ज़मीन का घेरा।
मेड़िया–संज्ञा स्त्री० मड़ी।
मेढक–संज्ञा पुं० एक जलस्थलचारी जंतु। मंडूक। दर्दुर।
मेढ़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० भेड़] सींगवाला एक चौपाया जो घने रोयों से ढका होता है।
मेढ़ी†–संज्ञा स्त्री० तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी।
मेथी–संज्ञा स्त्री०-एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ साग की तरह खाई जाती हैं।
मेथौरी–संज्ञा स्त्री० मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई बरी।
मेद–संज्ञा पुं० शरीर के अंदर की वसा नामक धातु। चरबी।
मेदा–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध ओषधि। संज्ञा पुं० पाकाशय। पेट।
मेदिनी–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरती।
मेध–संज्ञा पुं० यज्ञ।
मेधा–संज्ञा स्त्री० बात को स्मरण रखने की मानसिक शक्ति।
मेधावी–वि० [स्त्री० मेधाविनी] १. जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो। २. बुद्धिमान्।
मेनका–संज्ञा स्त्री० स्वर्ग की एक अप्सरा।
मेना–क्रि० स० पकवान में मोयन डालना।
मेम–संज्ञा स्त्री० १. युरोप या अमेरिका आदि की स्त्री। २. ताश का एक पत्ता।
मेमना–संज्ञा पुं० भेड़ का बच्चा।
मेमार–संज्ञा पुं० इमारत बनानेवाला। थवई। राजगीर।
मेय–वि० जो नापा जा सके।
मेरवना†–क्रि० स० मिश्रित करना। मिलाना।
मेरा–सर्व० [स्त्री० मेरी] "मैं" के संबंधकारक का रूप।
मेराउ, मेराव†–संज्ञा पुं० मेल। मिलाप।
मेरु–संज्ञा पुं० एक पुराणोक्त पर्वत जो सोने का कहा गया है।
मेरुदंड–संज्ञा पुं० रीढ़।
मेरे–सर्व० 'मेरा' का बहुवचन।
मेल–संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया या भाव। २. एकता। सुलह। ३. दोस्ती।
मेलना॰†–क्रि० स० मिलाना।
मेला–संज्ञा पुं० भीड़-भाड़। जमावड़ा।
मेली–संज्ञा पुं० मुलाक़ाती। वि० जल्दी हिल-मिल जानेवाला।
मेव–संज्ञा पुं० राजपूताने की ओर बसनेवाली एक लुटेरी जाति।
मेवा–संज्ञा पुं० किशमिश, बादाम, अखरोट आदि सुखाए हुए बढ़िया फल।
मेवाटी–संज्ञा स्त्री० एक पकवान जिसके अंदर मेवे भरे रहते हैं।
मेवाड़–संज्ञा पुं० राजपूताने का एक

(कली) ३. आधा खुला, आधा बंद। ४. झपकता हुआ। (नेत्र)

मुक्का-संज्ञा पुं० बँधी मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय या जिससे मारा जाय।

मुक्की-संज्ञा पुं० १. मुक्का। घूँसा। २. शरीर की शिथिलता दूर करने के लिये मुट्ठियाँ बाँधकर धीरे धीरे आघात।

मुक्केबाज़ी-संज्ञा स्त्री० मुक्कों की लड़ाई। घूँसेबाज़ी।

मुक्त-वि० जिसे मुक्ति मिल गई हो।

मुक्तकंठ-वि० जिसे कहने में आगा-पीछा न हो।

मुक्तक-संज्ञा पुं० वह कविता जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग कुछ दूर तक न चले। फुटकर कविता।

मुक्तहस्त-वि० [संज्ञा मुक्तहस्ता] जो खुले हाथों दान करता हो।

मुक्ता-संज्ञा स्त्री० मोती।

मुक्ताफल-संज्ञा पुं० मोती।

मुख-संज्ञा पुं० मुँह।

मुखड़ा-संज्ञा पुं० मुख। चेहरा।

मुख़्तार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का क़ानूनी सलाहकार और काम करनेवाला।

मुख़्तारी-संज्ञा स्त्री० मुख़्तार होकर दूसरे के मुक़दमे लड़ने का काम या पेशा।

मुखबंध-संज्ञा पुं० ग्रंथ की प्रस्तावना या भूमिका।

मुख़बिर-संज्ञा पुं० जासूस। गोइंदा।

मुख़बिरी-संज्ञा स्त्री० ख़बर देने का काम। मुख़बिर का काम।

मुखर-वि० १. जो अप्रिय बोलता हो। २. बकवादी।

मुखशुद्धि-संज्ञा स्त्री० भोजन के उपरांत पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।

मुखस्थ-वि० दे० "मुखाग्र"।

मुखाग्र-वि० जो ज़बानी याद हो। कंठस्थ।

मुखापेक्षा-संज्ञा स्त्री० दूसरों का मुँह ताकना। दूसरों के आश्रित रहना।

मुखापेक्षी-संज्ञा पुं० वह जो दूसरों का मुँह ताकता हो।

मुख़ालिफ़-वि० जो ख़िलाफ़ हो। विरोधी।

मुखिया-संज्ञा पुं० १. नेता। २. अगुआ।

मुख़्तसर-वि० संक्षिप्त।

मुख्य-वि० [संज्ञा मुख्यता] सब में बड़ा। प्रधान।

मुगदर-संज्ञा पुं० एक प्रकार की गावदुमी, भारी मुँगरी जिसका प्रायः जोड़ा होता है और जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है।

मुग़ल-संज्ञा पुं० [स्त्री० मुग़लानी] १. मंगोल देश का निवासी। २. मुसलमानों का एक वर्ग।

मुग्गम-वि० (बात) जो बहुत खोलकर या स्पष्ट करके न कही जाय।

मुग्ध-वि० [संज्ञा मुग्धता] आसक्त। मोहित।

मुचकुंद-संज्ञा पुं० एक बड़ा पेड़।

मुचलका-संज्ञा पुं० वह प्रतिज्ञापत्र जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो।

मुछंदर-संज्ञा पुं० जिसकी मूछें बड़ी बड़ी हों।

प्रांत जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी।
मेवात–संज्ञा पुं० राजपूताने और सिंध के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।
मेवाती–संज्ञा पुं० मेवात का रहनेवाला।
मेवाफ़रोश–संज्ञा पुं० मेवे बेचनेवाला।
मेवासाॐ–संज्ञा पुं० किला। गढ़।
मेवासी–संज्ञा पुं० घर का मालिक।
मेष–संज्ञा पुं० भेड़।
मेष संक्रांति–संज्ञा स्त्री० मेष राशि पर सूर्य के आने का योग या काल। (पर्व)
मेहँदी–संज्ञा स्त्री० एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने से लाल रंग आता है। इसी से स्त्रियाँ इसे हाथ-पैर में लगाती हैं।
मेह–संज्ञा पुं० १. प्रस्राव। २. प्रमेह रोग।
संज्ञा पुं० १. मेघ। २. वर्षा।
मेहतर–संज्ञा पुं० [स्त्री० मेहतरानी] मुसलमान भंगी।
मेहनत–संज्ञा स्त्री० श्रम। प्रयास।
मेहनताना–संज्ञा पुं० किसी काम का पारिश्रमिक या मज़दूरी।
मेहनती–वि० मेहनत करनेवाला।
मेहमान–संज्ञा पुं० अतिथि। पाहुना।
मेहमानदारी–संज्ञा स्त्री० अतिथि-सत्कार।
मेहमानी–संज्ञा स्त्री० आतिथ्य। पहुनाई।
मेहर–संज्ञा स्त्री० कृपा। दया।
मेहरबान–वि० कृपालु। दयालु।
मेहरबानी–संज्ञा स्त्री० दया। कृपा।
मेहरा–संज्ञा पुं० स्त्रियों की सी चेष्टावाला।
मेहराब–संज्ञा स्त्री० द्वार के ऊपर का अर्द्धमंडलाकार बनाया हुआ भाग।
मेहरी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. पत्नी।
मैं–सर्व० सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप।
मैंॐ–अव्य० दे० "मय"।
मैका–संज्ञा पुं० दे० "मायका"।
मैगल–संज्ञा पुं० मस्त हाथी।
वि० मस्त। (हाथी के लिये)
मैजलॐ–संज्ञा स्त्री० १. पड़ाव। २. सफ़र।
मैत्री–संज्ञा स्त्री० मित्रता। दोस्ती।
मैत्रेयी–संज्ञा स्त्री० १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २. अहल्या।
मैथिल–वि० मिथिला देश का।
संज्ञा पुं० मिथिला देश का निवासी।
मैथिली–संज्ञा स्त्री० जानकी। सीता।
मैथुन–संज्ञा पुं० स्त्री के साथ पुरुष का समागम।
मैदा–संज्ञा पुं० बहुत महीन आटा।
मैदान–संज्ञा पुं० १. लंबा-चौड़ा समतल स्थान। सपाट भूमि। २. वह लंबी चौड़ी भूमि जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३. युद्धक्षेत्र।
मैन–संज्ञा पुं० कामदेव।
मैनफल–संज्ञा पुं० मझोले आकार का एक कँटीला वृक्ष।
मैनसिल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली धातु।
मैना–संज्ञा स्त्री० काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की सी बोली बोलने लगता है।
मैनाक–संज्ञा पुं० एक पर्वत जो हिमा-

सय का पुत्र माना जाता है।
मैमंत†–वि० मदोन्मत्त।
मैया–संज्ञा स्त्री० माता। माँ।
मैर†–संज्ञा स्त्री० साँप के विष की लहर।
मैल–संज्ञा स्त्री० गर्द, धूल आदि जिसके पड़ने या जमने से किसी वस्तु की चमक-दमक नष्ट हो जाती है।
मैलखोरा–वि० (रंग आदि) जिस पर जमी हुई मैल जल्दी दिखाई न दे।
मैला–वि० १. मलिन। अस्वच्छ। २. विकार-युक्त।
संज्ञा पुं० गलीज़।
मैला-कुचैला–वि० जो बहुत मैले कपड़े पहने हुए हो।
मैलापन–संज्ञा पुं० मलिनता।
मोंं†–अव्य० दे० "मैं"।
मोछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ"।
मोंढ़ा–संज्ञा पुं० घास आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा गोलाकार आसन।
मो⊙–सर्व० १. मेरा। २. अवधी और ब्रजभाषा में "मैं" का वह रूप जो उसे कर्त्ता कारक के अतिरिक्त और किसी कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।
मोक्ष–संज्ञा पुं० १. बंधन से छूट जाना। २. शास्त्रों के अनुसार जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना।
मोक्षद–संज्ञा पुं० मोक्ष देनेवाला।
मोखा–संज्ञा पुं० बहुत छोटी खिड़की। झरोखा।
मोगरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला। (पुष्प)
मोगल–संज्ञा पुं० दे० "मुग़ल"।
मोघ–वि० निष्फल। चूकनेवाला।
मोच–संज्ञा स्त्री० शरीर के किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से इधर-उधर खिसक जाना।
मोचन–संज्ञा पुं० बंधन आदि से छुड़ाना।
मोचना–क्रि० स० १. छोड़ना। २. छुड़ाना।
मोची–संज्ञा पुं० वह जो जूते आदि बनाने का व्यवसाय करता हो।
वि० [स्त्री० मोचिनी] छुड़ानेवाला।
मोछ–संज्ञा स्त्री० दे० "मूँछ"।
मोज़ा–संज्ञा पुं० पैरों में पहनने का एक प्रकार का बुना हुआ कपड़ा।
मोट–संज्ञा स्त्री० गठरी। मोटरी।
संज्ञा पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिये कूएँ से पानी निकालते हैं।
⊙†वि० दे० "मोटा"।
मोटरी–संज्ञा स्त्री० गठरी।
मोटा–वि० [स्त्री० मोटी] जिसका शरीर चरबी आदि के कारण बहुत फूल गया हो।
मोटाई–संज्ञा स्त्री० १. मोटे होने का भाव। २. शरारत। पाजीपन।
मोटाना–क्रि० अ० १. मोटा होना। २ अभिमानी होना।
मोटिया–संज्ञा पुं० १. मोटा और खुरखुरा देशी कपड़ा। खद्दड़। खादी। २. बोझ ढोनेवाला।
मोठ–संज्ञा स्त्री० मूँग की तरह का एक मोटा अन्न।
मोड़–संज्ञा पुं० रास्ते आदि में घूम जाने का स्थान।

का भाव। स्वामित्व।

रउरे—सर्व० आप। जनाब।

रक़बा—संज्ञा पुं० क्षेत्रफल।

रक़म—संज्ञा स्त्री० १. धन। संपत्ति। २. प्रकार। तरह।

रकाब—संज्ञा स्त्री० घोड़े की काठी का पावदान जिससे बैठने में सहारा लेते हैं।

रकाबी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छिछली छोटी थाली। तश्तरी।

रक़ीब—संज्ञा पुं० प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

रक्त—संज्ञा पुं० लहू। रुधिर। ख़ून। वि० १. रँगा हुआ। २. लाल।

रक्तकंठ—संज्ञा पुं० कोयल।

रक्तकमल—संज्ञा पुं० लाल कमल।

रक्तचंदन—संज्ञा पुं० लाल चंदन।

रक्तता—संज्ञा स्त्री० लाली। सुर्खी।

रक्तपात—संज्ञा पुं० ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें लोग ज़ख़्मी हों। ख़ून-खराबी।

रक्तपित्त—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह, नाक आदि इंद्रियों से रक्त गिरता है। २. नकसीर।

रक्तबीज—संज्ञा पुं० एक राक्षस जो शुंभ और निशुंभ का सेनापति था।

रक्तस्राव—संज्ञा पुं० किसी अंग से रक्त का बहना या निकलना।

रक्तातिसार—संज्ञा पुं० एक प्रकार का अतिसार जिसमें लहू के दस्त आते हैं।

रक्तिका—संज्ञा स्त्री० घुंघची। रत्ती।

रक्ष—संज्ञा पुं० रक्षक। रखवाला। संज्ञा पुं० राक्षस।

रक्षक—संज्ञा पुं० रक्षा करनेवाला।

रक्षण—संज्ञा पुं० रक्षा करना।

रक्षा—संज्ञा स्त्री० आपत्ति, कष्ट या नाश आदि से बचाना।

रक्षागृह—संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ प्रसूता प्रसव करे। सूतिकागृह।

रक्षाबंधन—संज्ञा पुं० हिंदुओं का एक त्योहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है।

रक्षित—वि० १. जिसकी रक्षा की गई हो। २. पाला-पोसा।

रक्ष्य—वि० रक्षा करने के योग्य।

रखना—क्रि० स० १. एक वस्तु पर या दूसरी वस्तु में स्थित करना। ठहराना। २. रेहन करना। ३. स्त्री से संबंध करना।

रखनी—संज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली।

रखवाई—संज्ञा स्त्री० [हिं० रखना, या रखाना] खेतों की रखवाली।

रखवाना—क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

रखवाला—संज्ञा पुं० १. रक्षक। २. पहरेदार।

रखवाली—संज्ञा स्त्री० रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफ़ाज़त।

रखाई—संज्ञा स्त्री० रक्षा करने का भाव, क्रिया या मज़दूरी।

रखाना—क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

रखेली—संज्ञा स्त्री० दे० "रखनी"।

रखैया—संज्ञा पुं० दे० "रक्षक"।

रग—संज्ञा स्त्री० शरीर में की नस या नाड़ी।

रगड़—संज्ञा स्त्री० १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्षण। २. भारी श्रम।

रगड़ना—क्रि० स० घर्षण करना। क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़वाना—क्रि० स० रगड़ने का काम

मोड़ना-क्रि० स० १. फेरना । २. तह लगाना ।

मोतिया-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का बेला । २. एक प्रकार का सलमा । वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का (रंग)। २. छोटे गोल दानों का ।

मोतियाबिंद-संज्ञा पुं० आँख का एक रोग जिसमें उसके एक परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती है ।

मोती-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो छिछले समुद्रों में सीपी में से निकलता है ।
संज्ञा स्त्री० बाली जिसमें मोती पड़े रहते हैं ।

मोतीचूर-संज्ञा पुं० छोटी बुँदियों का लड्डू ।

मोतीझिरा-संज्ञा पुं० छोटी शीतला का रोग ।

मोती-बेल-संज्ञा स्त्री० मोतिया बेला । (फूल)

मोथा-संज्ञा पुं० नागरमोथा नामक घास या उसकी जड़ ।

मोद-संज्ञा पुं० १. आनंद । २. सुगंध । महक ।

मोदक-संज्ञा पुं० लड्डू नामकी मिठाई ।

मोदी-संज्ञा पुं० आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया । परचूनिया ।

मोदीखाना-संज्ञा पुं० अन्न आदि रखने का घर । भंडारा ।

मोना०†-क्रि० स० भिगोना ।
संज्ञा पुं० झाबा । पिटारा ।

मोम-संज्ञा पुं० वह चिकना नरम पदार्थ जिससे शहद की मक्खियाँ छत्ता बनाती हैं ।

मोमजामा-संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ाया गया हो ।

मोमबत्ती-संज्ञा स्त्री० मोम या ऐसे ही किसी और पदार्थ की बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है ।

मोमियाई-संज्ञा स्त्री० नकली शिलाजीत ।

मोयन-संज्ञा पुं० माँड़े हुए आटे में घी या चिकना देना जिसमें उससे बनी वस्तु खसखसी और मुलायम हो ।

मोरंग-संज्ञा पुं० नैपाल का पूर्वी भाग ।

मोर-संज्ञा पुं० [स्त्री० मोरनी] एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध पक्षी ।
०† सर्व० दे० "मेरा" ।

मोरचंद्रिका-संज्ञा स्त्री० मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी ।

मोरचा-संज्ञा पुं० १. लोहे की सतह पर चढ़नेवाली लाल या पीले रंग की बुकनी । जंग । २. वह स्थान जहाँ से सेना, गढ़ या नगर आदि की रक्षा की जाती है ।

मोरछल-संज्ञा पुं० मोर के परों से बनाया हुआ चँवर जो देवताओं और राजाओं आदि के मस्तक के पास डुलाया जाता है ।

मोरन०-संज्ञा स्त्री० बिलोया हुआ दही जिसमें मिठाई और सुगंधित वस्तुएँ डाली गई हों । शिखरन ।

मोरनी-संज्ञा स्त्री० मोर पक्षी की मादा ।

मोरपंख-संज्ञा पुं० मोर का पर ।

मोरपंखा०†-संज्ञा पुं० मोर का पर ।

मोरपंखी-संज्ञा स्त्री० वह नाव जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना

दूसरे से कराना।
रगड़ा–संज्ञा पुं० रगड़ने की क्रिया या भाव।
रगर०†–संज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।
रग-रेशा–संज्ञा पुं० पत्तियों की नस।
रगेदना–क्रि० स० भगाना। दौड़ाना।
रघु–संज्ञा पुं० सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा हो गए हैं।
रघुकुल–संज्ञा पुं० राजा रघु का वंश।
रघुनंदन–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।
रघुनाथ–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।
रघुपति–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।
रघुराई०–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।
रघुवंश–संज्ञा पुं० १. महाराज रघु का वंश या खानदान। २. महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।
रघुवंशी–संज्ञा पुं० वह जो रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो।
रघुवीर–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्रजी।
रचक–संज्ञा पुं० रचना करनेवाला।
रचना–संज्ञा स्त्री० १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव। २. निर्मित वस्तु।
क्रि० स० १. बनाना। २. विधान करना। ३. ग्रंथ आदि लिखना।
रचयिता–संज्ञा पुं० रचनेवाला।
रचवाना–क्रि० स० १. रचना कराना। २. मेहँदी या महावर लगवाना।
रचाना†०–क्रि० अ० मेहँदी, महावर आदि से हाथ-पैर रँगाना।
रचित–वि० बनाया हुआ। रचा हुआ।
रज–संज्ञा पुं० १. वह रक्त जो स्त्रियों और स्तनपायी जाति के मादा प्राणियों के योनि-मार्ग से प्रति मास तीन-चार दिन तक निकलता है। आर्त्तव। २. फूलों का पराग।
संज्ञा स्त्री० धूल। गर्द।
संज्ञा पुं० रजक। धोबी।
रजक–संज्ञा पुं० [स्त्री० रजकी] धोबी।
रजत–संज्ञा स्त्री० चाँदी। रूपा।
वि० सफेद। शुक्ल।
रजताई०–संज्ञा स्त्री० सफेदी।
रजना०–क्रि० अ० रँगा जाना।
रजनी–संज्ञा स्त्री० १. रात। २. हल्दी।
रजनीकर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
रजनीचर–संज्ञा पुं० राक्षस।
रजनीमुख–संज्ञा पुं० संध्या।
रजनीश–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
रजपूत०†–संज्ञा पुं० दे० "राजपूत"।
रजपूती†–संज्ञा स्त्री० १. क्षत्रियत्व। २. वीरता।
रजवाड़ा–संज्ञा पुं० राज्य। देशी रियासत।
रजस्वला–वि० स्त्री० जिसका रज प्रवाहित होता हो। ऋतुमती।
रज़ा–संज्ञा स्त्री० मरज़ी। इच्छा।
रजाइ, रजाइय०–संज्ञा स्त्री० आज्ञा। हुक्म।
रजाई–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। लिहाफ़।
संज्ञा स्त्री० राजा होने का भाव।
संज्ञा स्त्री० दे० "रजाइ"।
रज़ामंद–वि० [संज्ञा रज़ामंदी] जो किसी बात पर राज़ी हो गया हो।
रजाय, रजायस०†–संज्ञा स्त्री० आज्ञा।
रज़ील–वि० छोटी जाति का। नीच।
रजोगुण–संज्ञा पुं० प्रकृति का वह

और रँगा हुआ हो।
मोरमुकुट–संज्ञा पुं० मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।
मोरवा॰†–संज्ञा पुं० दे० "मोर"।
मोराना॰†–क्रि० स० चारों ओर घुमाना। फिराना।
मोरी–संज्ञा स्त्री० वह नाली जिसमें गंदा और मैला पानी बहता हो। पनाली।
मोल–संज्ञा पुं० क़ीमत। दाम। मूल्य।
मोह–संज्ञा पुं० १. अज्ञान। भ्रम। २. प्रेम। मुहब्बत।
मोहक–वि० १. मोह उत्पन्न करनेवाला। २. मनोहर।
मोहड़ा–संज्ञा पुं० किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।
मोहन–संज्ञा पुं० जिसे देखकर जी लुभा जाय।
मोहनभोग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलुआ।
मोहनमाला–संज्ञा स्त्री० सोने की गुरियों या दानों की बनी हुई माला।
मोहना–क्रि० अ० मोहित होना। रीझना।
क्रि० स० मोहित करना। लुभा लेना।
मोहनी–संज्ञा स्त्री० १. भगवान् का वह स्त्री-रूप जो उन्होंने समुद्र-मंथन के उपरांत अमृत बाँटते समय धारण किया था। २. माया।
वि० स्त्री० मोहित करनेवाली। अत्यंत सुंदरी।
मोहर–संज्ञा स्त्री० अक्षर, चिह्न आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा या उसकी छाप।
मोहरा–संज्ञा पुं० १. कोई छेद या द्वार जिससे कोई वस्तु बाहर निकले। २. शतरंज की कोई गोटी।
मोहरी–संज्ञा स्त्री० १. बरतन आदि का छोटा मुँह। २. पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं।
मोहर्रिर–संज्ञा पुं० लेखक। मुंशी।
मोहलत–संज्ञा स्त्री० फ़ुरसत। अवकाश। छुट्टी।
मोहार†–संज्ञा पुं० १. द्वार। २. मुँहड़ा।
मोहि॰–सर्व० मुझको। मुझे।
मोहित–वि० १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। २. मोहा हुआ। आसक्त।
मोहिनी–वि० स्त्री० मोहनेवाली।
मोही–वि० १. मोहित करनेवाला। २. मोह करनेवाला। ३. लोभी। लालची।
मौंड़ा†–संज्ञा पुं० [स्त्री० मौंड़ी] लड़का। बालक।
मौक़ा–संज्ञा पुं० १. घटनास्थल। २. अवसर। समय।
मौक़ूफ़–वि० [संज्ञा मौक़ूफ़ी] नौकरी से अलग किया गया। बरख़ास्त।
मौखिक–वि० ज़बानी।
मौज–संज्ञा स्त्री० १. लहर। २. मन की उमंग। ३. सुख। आनंद। मज़ा।
मौज़ा–संज्ञा पुं० गाँव। ग्राम।
मौजी–वि० जो जी में आवे, वही करनेवाला।
मौजूद–वि० उपस्थित। हाज़िर।
मौजूदगी–संज्ञा स्त्री० उपस्थिति।
मौजूदा–वि० वर्तमान काल का। प्रस्तुत।
मौड़ा॰†–संज्ञा पुं० दे० "मौंड़ा"।

स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग-विलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।

रजोदर्शन–संज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक धर्म्म।

रजोधर्म–संज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक धर्म।

रज्जु–संज्ञा स्त्री० रस्सी। जेवरी।

रट–संज्ञा स्त्री० किसी शब्द को बार बार उच्चारण करने की क्रिया।

रटना–क्रि० स० १. किसी शब्द को बार बार कहना। २. ज़बानी याद करना।

रण–संज्ञा पुं० लड़ाई। जंग।

रणक्षेत्र–संज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान।

रणरंग–संज्ञा पुं० लड़ाई का उत्साह।

रणलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० दे० "विजय-लक्ष्मी"।

रणसिंघा–संज्ञा पुं० तुरही। नरसिंघा।

रणस्तंभ–संज्ञा पुं० विजय के स्मारक में बनवाया हुआ स्तंभ।

रणांगण–संज्ञा पुं० युद्ध-क्षेत्र।

रत–संज्ञा पुं० मैथुन।

वि० १. अनुरक्त। २. लिप्त।

रतजगा–संज्ञा पुं० उत्सव या विहार आदि के लिये सारी रात जागना।

रतन–संज्ञा पुं० दे० "रत्न"।

रतनजोत–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मणि।

रतनार, रतनारा–वि० कुछ लाल। सुर्खी लिए हुए।

रतनारी–संज्ञा स्त्री० लाली। लालिमा।

रतानाक्ष–क्रि० अ० रत होना।

क्रि० स० किसी को अपनी ओर रत करना।

रति–संज्ञा स्त्री० १. कामदेव की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या और सौंदर्य्य की साक्षात् मूर्त्ति मानी जाती है। २. प्रीति। प्रेम। ३. संभोग।

रतिक–क्रि० वि० बहुत थोड़ा।

रतिदान–संज्ञा पुं० संभोग। मैथुन।

रतिनायक–संज्ञा पुं० कामदेव।

रतिपति–संज्ञा पुं० कामदेव।

रतिभवन–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका रतिक्रीड़ा करते हों।

रतिराज–संज्ञा पुं० कामदेव।

रतिशास्त्र–संज्ञा पुं० काम शास्त्र।

रतौंधी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रोग जिसमें रोगी को रात के समय बिलकुल दिखाई नहीं देता।

रत्ती–संज्ञा स्त्री० १. आठ चावल का मान या बाट। २. घुँघची। ३. बहुत थोड़ा।

रत्थी–संज्ञा स्त्री० वह ढाँचा या संदूक आदि जिसमें शव को रखकर अंतिम संस्कार के लिये ले जाते हैं। टिकटी।

रत्न–संज्ञा पुं० १. मणि। जवाहिर। २. मानिक।

रत्नगर्भा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी। भूमि।

रत्ननिधि–संज्ञा पुं० समुद्र।

रत्नपारखी–संज्ञा पुं० जौहरी।

रत्नाकर–संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. खान।

रत्नावली–संज्ञा स्त्री० मणियों की श्रेणी या माला।

रथ–संज्ञा पुं० एक प्रकार की पुरानी सवारी जिसमें चार या दो पहिए हुआ करते थे।

रथयात्रा–संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है।

मौत–संज्ञा स्त्री० मरण। मृत्यु।
मौन–संज्ञा पुं० चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।
वि० जो न बोले। चुप।
मौनव्रत–संज्ञा पुं० मौन धारण करने का व्रत।
मौनी–वि० चुप रहनेवाला।
मौर–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० मौरी] विवाह के समय का एक शिरोभूषण जो ताड़पत्र या खुखड़ी आदि का बनाया जाता है।
संज्ञा पुं० मंजरी। बौर।
मौरना–क्रि० स० वृक्षों पर मंजरी लगना। बौर लगना।
मौरूसी–वि० बाप-दादा के समय से चला आया हुआ। पैतृक।
मौर्य्य–संज्ञा पुं० क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट् चंद्रगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।
मौलवी–संज्ञा पुं० मुसलमान धर्म्म का आचार्य्य जो अरबी, फ़ारसी आदि का पंडित होता है।
मौलसिरी–संज्ञा स्त्री० एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। बकुल।
मौलि–संज्ञा पुं० १. चोटी। २. मस्तक।
मौसा–संज्ञा पुं० [स्त्री० मौसी] माता की बहिन का पति।
मौसिम–संज्ञा पुं० [वि० मौसिमी] ऋतु।
मौसी–संज्ञा स्त्री० [वि० मौसेरा] माता की बहिन। मासी।
म्याँव–संज्ञा स्त्री० बिल्ली की बोली।
म्यान–संज्ञा पुं० तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना।
म्यौं–संज्ञा स्त्री० बिल्ली की बोली।
म्योंढ़ी–संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार झाड़ जिसमें पीले छोटे फूलों की मंजरियाँ लगती है।
म्लान–वि० [भाव० संज्ञा म्लानता] १. मलिन। २. मैला।
म्लेच्छ–संज्ञा पुं० मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म्म न हो।
वि० नीच।

य

य–हिंदी वर्णमाला का २६ वाँ अक्षर।
यंत्र–संज्ञा पुं० १. जंतर। २. औज़ार। ३. वाद्य।
यंत्रणा–संज्ञा स्त्री० क्लेश। तकलीफ़।
यंत्र मंत्र–संज्ञा पुं० जादू-टोना।
यंत्रविद्या–संज्ञा स्त्री० कलों के चलाने और बनाने की विद्या।
यंत्रालय–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ कलें हों। २. छापाख़ाना।
यंत्रित–वि० १. यंत्र आदि की सहायता से रोका या बंद किया हुआ। २. ताले में बंद।
यंत्री–संज्ञा पुं० यंत्र-मंत्र करनेवाला। तांत्रिक।
यकता–वि० जो अपनी विद्या या विषय में एक ही हो। अद्वितीय।

रथवाह–संज्ञा पुं० रथ चलानेवाला। सारथी।
रथिक–संज्ञा पुं० रथी।
रथी–संज्ञा पुं० १. रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। २. एक हज़ार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला। वि० रथ पर चढ़ा हुआ।
रद–संज्ञा पुं० दंत। दाँत।
रदच्छद–संज्ञा पुं० ओंठ। संज्ञा पुं० रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न।
रदन–संज्ञा पुं० दशन। दाँत।
रदपट–संज्ञा पुं० ओष्ठ। ओंठ।
रद्द–वि० जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो। संज्ञा स्त्री० कै। वमन।
रद्दा–संज्ञा पुं० १. ईंटों की एक पंक्ति जो दीवार पर चुनी जाती है। २. नीचे-ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।
रद्दी–वि० निकम्मा। बेकार।
रनकना०|–क्रि० अ० घुँघुरू आदि का मंद शब्द होना।
रनथंका, रनबाँकुरा–संज्ञा पुं० शूरवीर।
रनधादी०–संज्ञा पुं० योद्धा।
रनवास–संज्ञा पुं० रानियों के रहने का महल।
रनित०–वि० बजता हुआ।
रनिवास–संज्ञा पुं० दे० "रनवास"।
रपट|–संज्ञा स्त्री० रपटने की क्रिया या भाव। संज्ञा स्त्री० सूचना। इत्तला।
रपटना|–क्रि० अ० नीचे या आगे की ओर फिसलना।
रपट्टा|–संज्ञा पुं० १. फिसलने की क्रिया। २. झपट्टा।
रफल–संज्ञा पुं० जाड़े में ओढ़ने की मोटी गरम चादर।
रफ़ा–वि० दूर किया हुआ।
रफ़ा दफ़ा–वि० दे० "रफ़ा"।
रफ़ू–संज्ञा पुं० फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।
रफ़ूगर–संज्ञा पुं० रफ़ू बनानेवाला।
रफ़ूचक्कर–वि० चंपत। ग़ायब।
रफ़्नी–संज्ञा स्त्री० माल का बाहर जाना।
रफ़्ता रफ़्ता–क्रि० वि० धीरे धीरे।
रब–संज्ञा पुं० ईश्वर। परमेश्वर।
रबड़–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से बनता है।
रबड़ी–संज्ञा स्त्री० औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध।
रबर–संज्ञा पुं० दे० "रबड़"।
रबी–संज्ञा स्त्री० १. वसंत ऋतु। २. वह फ़सल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।
रब्त–संज्ञा पुं० १. अभ्यास। २. संबंध।
रमक–संज्ञा स्त्री० झूले की पेंग।
रमकना–क्रि० अ० १. हिंडोले पर झूलना। २. झूमते या इतराते हुए चलना।
रमज़ान–संज्ञा पुं० एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोज़ा रखते हैं।
रमण–संज्ञा पुं० विलास। क्रीड़ा। वि० १. मनोहर। २. प्रिय।
रमणी–संज्ञा स्त्री० नारी।
रमणीक–वि० सुंदर।

यक-यक, यकबारगी–क्रि० वि० अचानक। एकाएक।
यकसाँ–वि० एक समान। बराबर।
यक़ीन–संज्ञा पुं० विश्वास।
यकृत्–संज्ञा पुं० १. पेट में दाहिनी ओर की एक थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है। २. वह रोग जिसमें यह अंग दूषित होकर बढ़ जाता है।
यक्ष–संज्ञा पुं० एक प्रकार के देवता जो कुबेर की निधियों के रक्षक माने जाते हैं।
यक्षपति–संज्ञा पुं० कुबेर।
यक्षिणी–संज्ञा स्त्री० यक्ष की पत्नी।
यक्ष्मा–संज्ञा पुं० क्षयी रोग। तपेदिक्।
यजन–संज्ञा पुं० यज्ञ करना।
यजमान–संज्ञा पुं० वह जो यज्ञ करता हो।
यजमानी–संज्ञा स्त्री० यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।
यजु–संज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।
यजुर्वेद–संज्ञा पुं० चार प्रसिद्ध वेदों में से एक वेद जिसमें विशेषतः यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवरण है।
यजुर्वेदी–संज्ञा पुं० यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करनेवाला।
यज्ञ–संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था।
यज्ञकुंड–संज्ञा पुं० हवन करने की वेदी या कुंड।
यज्ञपशु–संज्ञा पुं० वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाय।
यज्ञपात्र–संज्ञा पुं० यज्ञ में काम आनेवाले काठ के बने हुए बरतन।
यज्ञपुरुष–संज्ञा स्त्री० विष्णु।
यज्ञभूमि–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो।
यज्ञशाला–संज्ञा पुं० यज्ञमंडप।
यज्ञसूत्र–संज्ञा पुं० यज्ञोपवीत।
यज्ञेश्वर–संज्ञा पुं० विष्णु।
यज्ञोपवीत–संज्ञा पुं० १. जनेऊ। २. उपनयन-संस्कार।
यति–संज्ञा पुं० संन्यासी।
संज्ञा स्त्री० छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय, लय ठीक रखने के लिये, थोड़ा विश्राम हो।
यतिधर्म–संज्ञा पुं० संन्यास।
यतिभंग–संज्ञा पुं० काव्य का वह दोष जिसमें यति अपने उचित स्थान पर न पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।
यतीम–संज्ञा पुं० अनाथ।
यत्किंचित्–क्रि० वि० थोड़ा। कुछ।
यत्न–संज्ञा पुं० १. उद्योग। कोशिश। २. उपाय।
यत्नवान्–वि० यत्न करनेवाला।
यत्रतत्र–क्रि० वि० जहाँ-तहाँ।
यथा–अव्य० जिस प्रकार। जैसे।
यथाक्रम–क्रि० वि० तरतीबवार।
यथातथ्य–अव्य० ज्यों का त्यों। हू-ब-हू।
यथापूर्व–अव्य० जैसा पहले था, वैसा ही।
यथायोग्य–अव्य० जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।
यथार्थ–अव्य० ठीक। वाजिब।
यथार्थता–संज्ञा स्त्री० सचाई। सत्यता।
यथालाभ–वि० जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर निर्भर।

रमणीय-वि० सुंदर।
रमणीयता-संज्ञा स्त्री० सुंदरता।
रमता-वि० एक जगह जमकर न रहनेवाला।
रमना-क्रि० अ० चलता होना। चल देना।
रमल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।
रमा-संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।
रमाना-क्रि० स० मोहित करना।
रमानिवास-संज्ञा पुं० विष्णु।
रमित॰-वि० लुभाया हुआ। मुग्ध।
रमैनी-संज्ञा स्त्री० कबीरदास के बीजक का एक भाग।
रमैया†॰-संज्ञा पुं० १. राम। २. ईश्वर।
रम्माल-संज्ञा पुं० रमल फेंकनेवाला।
रम्य-वि० [स्त्री० रम्या] मनोहर। सुंदर।
रयन॰†-संज्ञा स्त्री० रात।
रय्यत†-संज्ञा स्त्री० प्रजा।
ररंकार-संज्ञा पुं० रकार की ध्वनि।
ररकना†-क्रि० अ० [संज्ञा ररक] कसकना। पीड़ा देना।
ररना†-क्रि० अ० लगातार एक ही बात कहना। रटना।
ररी-संज्ञा पुं० १. बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २. अधम।
रलना॰†-क्रि० अ० एक में मिलना।
रलाना॰†-क्रि० स० एक में मिलाना।
रली-संज्ञा स्त्री० १. विहार। २. आनंद।
रव-संज्ञा पुं० १. गुंजार। २. आवाज़।
रवकना-क्रि० अ० १. दौड़ना। २. उमगना।
रवताई॰-संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व। स्वामित्व।
रवा-संज्ञा पुं० बहुत छोटा टुकड़ा। कण। वि० प्रचलित।
रवाज-संज्ञा स्त्री० परिपाटी। प्रथा।
रवादार-वि० १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. जिसमें कण या दाने हों।
रवानगी-संज्ञा स्त्री० रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान।
रवाना-वि० जो कहीं से चल पड़ा हो।
रवा-रवी-संज्ञा स्त्री० जल्दी। शीघ्रता।
रवि-संज्ञा पुं० सूर्य्य।
रविकुल-संज्ञा पुं० सूर्य्यवंश।
रवितनया-संज्ञा स्त्री० यमुना।
रविनंदिनी-संज्ञा स्त्री० यमुना।
रविमंडल-संज्ञा पुं० सूर्य्य के चारों ओर का लाल मंडल या गोला।
रविवार-संज्ञा पुं० एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पड़ता है।
रविश-संज्ञा स्त्री० गति। चाल।
रवैया†-संज्ञा पुं० १. चलन। २. ढंग।
रश्क-संज्ञा पुं० ईर्ष्या। डाह।
रश्मि-संज्ञा पुं० किरण।
रस-संज्ञा पुं० १. खाने की चीज़ का स्वाद। हमारे यहाँ वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छः रस माने गए हैं। २. साहित्य का आनंद। ३. आनंद। ४. जल। पानी। ५. शरबत।
रसकपूर-संज्ञा पुं० सफ़ेद रंग की एक प्रसिद्ध उपधातु।
रसकेलि-संज्ञा स्त्री० विहार।
रसगुनी†-संज्ञा पुं० काव्य या संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

यथावत्–अव्य॰ ज्यों का त्यों।
यथाशक्ति–अव्य॰ सामर्थ्य के अनुसार।
यथासंभव–अव्य॰ जहाँ तक हो सके।
यथेच्छ–अव्य॰ इच्छा के अनुसार।
यथेच्छाचार–संज्ञा पुं॰ जो जी में आवे, वही करना।
यथेष्ट–वि॰ जितना इष्ट हो। जितना चाहिए, उतना।
यथोक्त–अव्य॰ जैसा कहा गया हो।
यथोचित–वि॰ मुनासिब। ठीक।
यदाकदा–अव्य॰ कभी कभी।
यदि–अव्य॰ अगर। जो।
यदुपति–संज्ञा पुं॰ श्रीकृष्ण।
यदुराई–संज्ञा पुं॰ दे॰ "यदुराज"।
यदुराज–संज्ञा पुं॰ श्रीकृष्ण।
यदुवंशी–संज्ञा पुं॰ यदुकुल में उत्पन्न। यादव।
यद्यपि–अव्य॰ अगरचे। हरचंद।
यदृच्छा–संज्ञा स्त्री॰ १. स्वेच्छाचार। २. आकस्मिक संयोग।
यम–संज्ञा पुं॰ १. भारतीय आर्यों के एक प्रसिद्ध देवता जो मृत्यु के देवता माने जाते हैं। २. मन, इंद्रिय आदि को वश या रोक में रखना। निग्रह।
यमज–संज्ञा पुं॰ १. एक साथ जन्म लेनेवाले दो बच्चों का जोड़ा। २. अश्विनीकुमार।
यमदग्नि–संज्ञा पुं॰ दे॰ "जमदग्नि"।
यम-यातना–संज्ञा स्त्री॰ नरक की पीड़ा।
यमराज–संज्ञा पुं॰ यमों के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे दंड या उत्तम फल देते हैं।
यमल–संज्ञा पुं॰ युग्म। जोड़ा।
यमलार्जुन–संज्ञा पुं॰ कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव जो नारद के शाप से पेड़ हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।
यमलोक–संज्ञा पुं॰ वह लोक जहाँ मरने पर मनुष्य जाते हैं। यमपुरी।
यमी–संज्ञा स्त्री॰ यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी होकर बही।
यमुना–संज्ञा स्त्री॰ उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी।
ययाति–संज्ञा पुं॰ राजा नहुष के पुत्र जिनका विवाह शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।
यव–संज्ञा पुं॰ १. जौ नामक अन्न। २. एक नाप।
यवद्वीप–संज्ञा पुं॰ जावा द्वीप।
यवन–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ यवनी] १. यूनान देश का निवासी। २. मुसलमान।
यवनाल–संज्ञा स्त्री॰ जुआर।
यवनिका–संज्ञा स्त्री॰ नाटक का परदा।
यश–संज्ञा पुं॰ नेकनामी। कीर्त्ति।
यशस्वी–वि॰ [स्त्री॰ यशस्विनी] जिसका खूब यश हो।
यशी–वि॰ यशस्वी।
यशुमति–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "यशोदा"।
यशोदा–संज्ञा स्त्री॰ नंद की स्त्री जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।
यशोधरा–संज्ञा स्त्री॰ गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।
यष्टि–संज्ञा स्त्री॰ लाठी। छड़ी।
यष्टिका–संज्ञा स्त्री॰ छड़ी। लकड़ी।
यह–सर्व॰ एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग निकट के सब मनुष्यों तथा पदार्थों के लिये होता है।

रथवाह–संज्ञा पुं० रथ चलानेवाला। सारथी।
रथिक–संज्ञा पुं० रथी।
रथी–संज्ञा पुं० १. रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। २. एक हज़ार योद्धाओं से अकेला युद्ध करनेवाला। वि० रथ पर चढ़ा हुआ।
रद–संज्ञा पुं० दंत। दाँत।
रदच्छद–संज्ञा पुं० ओंठ।
संज्ञा पुं० रति आदि के समय दाँतों के लगने का चिह्न।
रदन–संज्ञा पुं० दशन। दाँत।
रदपट–संज्ञा पुं० ओष्ठ। ओंठ।
रद्द–वि० जो काट, छाँट, तोड़ या बदल दिया गया हो।
संज्ञा स्त्री० कै। वमन।
रद्दा–संज्ञा पुं० १. ईंटों की एक पंक्ति जो दीवार पर चुनी जाती है। २. नीचे-ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।
रद्दी–वि० निकम्मा। बेकार।
रनकना७–क्रि० अ० घुँघुरू आदि का मंद शब्द होना।
रनबंका, रनबाँकुरा–संज्ञा पुं० शूर-वीर।
रणवादी०–संज्ञा पुं० योद्धा।
रनवास–संज्ञा पुं० रानियों के रहने का महल।
रनित०–वि० बजता हुआ।
रनिवास–संज्ञा पुं० दे० "रनवास"।
रपट।–संज्ञा स्त्री० रपटने की क्रिया या भाव।
संज्ञा स्त्री० सूचना। इत्तला।
रपटना।–क्रि० अ० नीचे या आगे की ओर फिसलना।
रपट्टा।–संज्ञा पुं० १. फिसलने की क्रिया। २. झपट्टा।
रफल–संज्ञा पुं० जाड़े में ओढ़ने की मोटी गरम चादर।
रफ़ा–वि० दूर किया हुआ।
रफ़ा दफ़ा–वि० दे० "रफ़ा"।
रफ़ू–संज्ञा पुं० फटे हुए कपड़े के छेद में तागे भरकर उसे बराबर करना।
रफ़ूगर–संज्ञा पुं० रफ़ू बनानेवाला।
रफ़ूचक्कर–वि० चंपत। ग़ायब।
रफ़्तनी–संज्ञा स्त्री० माल का बाहर जाना।
रफ़्ता रफ़्ता–क्रि० वि० धीरे धीरे।
रब–संज्ञा पुं० ईश्वर। परमेश्वर।
रबड़–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ जो अनेक वृक्षों के दूध से बनता है।
रबड़ी–संज्ञा स्त्री० औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध।
रबर–संज्ञा पुं० दे० "रबड़"।
रबी–संज्ञा स्त्री० १. वसंत ऋतु। २. वह फ़सल जो वसंत ऋतु में काटी जाती है।
रब्त–संज्ञा पुं० १. अभ्यास। २. संबंध।
रमक–संज्ञा स्त्री० झूले की पेंग।
रमकना–क्रि० अ० १. हिंडोले पर झूलना। २. झूमते या इतराते हुए चलना।
रमज़ान–संज्ञा पुं० एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोज़ा रखते हैं।
रमण–संज्ञा पुं० विलास। क्रीड़ा।
वि० १. मनोहर। २. प्रिय।
रमणी–संज्ञा स्त्री० नारी।
रमणीक–वि० सुंदर।

यहाँ–क्रि॰ वि॰ इस स्थान में। इस जगह पर।
यही–अव्य॰ निश्चित रूप से यह। यह ही।
यहूद–संज्ञा पुं॰ वह देश जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए थे।
यहूदी–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ यहूदिन] यहूद देश का निवासी।
याँ†–क्रि॰ वि॰ दे॰ "यहाँ"।
या–अव्य॰ अथवा। वा।
सर्व॰, वि॰ 'यह' का वह रूप जो उसे व्रजभाषा में कारक-चिह्न लगने के पहले प्राप्त होता है।
याग–संज्ञा पुं॰ यज्ञ।
याचक–संज्ञा पुं॰ १. जो माँगता हो। २. भिक्षुक।
याचना–क्रि॰ स॰ [वि॰ याच्य, याचक] पाने के लिये विनती करना।
संज्ञा स्त्री॰ माँगने की क्रिया।
याजक–संज्ञा पुं॰ यज्ञ करनेवाला।
याजन–संज्ञा पुं॰ यज्ञ की क्रिया।
याज्ञवल्क्य–संज्ञा पुं॰ एक प्रसिद्ध ऋषि।
याज्ञिक–संज्ञा पुं॰ यज्ञ करने या करानेवाला।
यातना–संज्ञा स्त्री॰ तकलीफ़।
याता–संज्ञा स्त्री॰ पति के भाई की स्त्री। जेठानी या देवरानी।
यातायात–संज्ञा पुं॰ गमनागमन।
यातुधान–संज्ञा पुं॰ राक्षस।
यात्रा–संज्ञा स्त्री॰ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया।
यात्री–संज्ञा पुं॰ यात्रा करनेवाला। मुसाफ़िर।
याद–संज्ञा स्त्री॰ स्मरण-शक्ति। स्मृति।
यादगार–संज्ञा स्त्री॰ स्मृति-चिह्न।
याददाश्त–संज्ञा स्त्री॰ स्मरण-शक्ति। स्मृति।
यादव–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ यादवी] १. यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।
यान–संज्ञा पुं॰ गाड़ी, रथ आदि सवारी।
यानी, याने–अव्य॰ अर्थात्।
यापन–संज्ञा पुं॰ [वि॰ यापित, याप्य] व्यतीत करना। बिताना।
याम–संज्ञा पुं॰ तीन घंटे का समय। पहर।
यामल–संज्ञा पुं॰ यमज संतान। जोड़ा।
यामिनी–संज्ञा स्त्री॰ रात। रात्रि।
यार–संज्ञा पुं॰ १. मित्र। दोस्त। २. उपपति। जार।
याराना–संज्ञा पुं॰ मित्रता। मैत्री।
वि॰ मित्र का सा।
यारी–संज्ञा स्त्री॰ १. मित्रता। २. स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।
यावनी–वि॰ यवन-संबंधी।
यासु†–सर्व॰ दे॰ "जासु"।
यास्क–संज्ञा पुं॰ वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।
याहि†–सर्व॰ इसको। इसे।
युक्त–वि॰ १. जुड़ा हुआ। २. मिलित। ३. उचित।
युक्ति–संज्ञा स्त्री॰ १. उपाय। ढंग। २. चातुरी। ३. चाल। रीति।
युक्तियुक्त–वि॰ उपयुक्त तर्क के अनुकूल।
युग–संज्ञा पुं॰ १. जोड़ा। युग्म। २. जुआ। ३. बारह वर्ष का काल। ४ पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण, जैसे-सत्य युग। कलियुग।

रमणीय–वि० सुंदर।
रमणीयता–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।
रमता–वि० एक जगह जमकर न रहनेवाला।
रमना–क्रि० अ० चलता होना। चल देना।
रमल–संज्ञा पुं० एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पासे फेंककर शुभाशुभ फल जाना जाता है।
रमा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।
रमाना–क्रि० स० मोहित करना।
रमानिवास–संज्ञा पुं० विष्णु।
रमित॰–वि० लुभाया हुआ। मुग्ध।
रमैनी–संज्ञा स्त्री० कबीरदास के बीजक का एक भाग।
रमैया†॰–संज्ञा पुं० १. राम। २. ईश्वर।
रम्माल–संज्ञा पुं० रमल फेंकनेवाला।
रम्य–वि० [स्त्री० रम्या] मनोहर। सुंदर।
रयन॰†–संज्ञा स्त्री० रात।
रय्यत†–संज्ञा स्त्री० प्रजा।
ररंकार–संज्ञा पुं० रकार की ध्वनि।
ररकना†–क्रि० अ० [संज्ञा ररक] कसकना। पीड़ा देना।
ररना†–क्रि० अ० लगातार एक ही बात कहना। रटना।
ररा–संज्ञा पुं० १. बहुत गिड़गिड़ाकर माँगनेवाला। २. अधम।
रलना॰†–क्रि० अ० एक में मिलना।
रलाना॰†–क्रि० स० एक में मिलाना।
रली–संज्ञा स्त्री० १. विहार। २. आनंद।
रव–संज्ञा पुं० १. गुंजार। २. आवाज़।
रवकना–क्रि० अ० १. दौड़ना। २. उमंगना।
रवताई॰–संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व। स्वामित्व।
रवा–संज्ञा पुं० बहुत छोटा टुकड़ा। कण। वि० प्रचलित।
रवाज–संज्ञा स्त्री० परिपाटी। प्रथा।
रवादार–वि० १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. जिसमें कण या दाने हों।
रवानगी–संज्ञा स्त्री० रवाना होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान।
रवाना–वि० जो कहीं से चल पड़ा हो।
रवा-रवी–संज्ञा स्त्री० जल्दी। शीघ्रता।
रवि–संज्ञा पुं० सूर्य।
रविकुल–संज्ञा पुं० सूर्यवंश।
रवितनया–संज्ञा स्त्री० यमुना।
रविनंदिनी–संज्ञा स्त्री० यमुना।
रविमंडल–संज्ञा पुं० सूर्य के चारों ओर का लाल मंडल या गोला।
रविवार–संज्ञा पुं० एक वार जो शनिवार के बाद तथा सोमवार के पहले पड़ता है।
रविश–संज्ञा स्त्री० गति। चाल।
रवैया†–संज्ञा पुं० १. चलन। २. ढंग।
रश्क–संज्ञा पुं० ईर्ष्या। डाह।
रश्मि–संज्ञा पुं० किरण।
रस–संज्ञा पुं० १. खाने की चीज़ का स्वाद। हमारे यहाँ वैद्यक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ये छः रस माने गए हैं। २. साहित्य का आनंद। ३. आनंद। ४. जल। पानी। ५. शरबत।
रसकपूर–संज्ञा पुं० सफ़ेद रंग की एक प्रसिद्ध उपधातु।
रसकेलि–संज्ञा स्त्री० विहार।
रसगुनी†–संज्ञा पुं० काव्य या संगीत शास्त्र का ज्ञाता।

युगपत्-अव्य० साथ साथ।
युगल-संज्ञा पुं० युग्म। जोड़ा।
युगांतर-संज्ञा पुं० दूसरा युग।
युगाद्या-संज्ञा स्त्री० वह तिथि जिससे किसी युग का आरंभ हुआ हो।
युग्म-संज्ञा पुं० जोड़ा।
युत-वि० युक्त। सहित।
युद्ध-संज्ञा पुं० लड़ाई। संग्राम। रण।
युधिष्ठिर-संज्ञा पुं० पाँच पांडवों में एक जो सबसे बड़े और बहुत धर्म-परायण थे।
युयुत्सा-संज्ञा स्त्री० युद्ध करने की इच्छा।
युयुत्सु-वि० लड़ने की इच्छा रखने-वाला।
युयुधान-संज्ञा पुं० इंद्र।
युवक-संज्ञा पुं० जवान। युवा।
युवति, युवती-संज्ञा स्त्री० जवान स्त्री।
युवराई॰-संज्ञा स्त्री० युवराज का पद।
युवराज-संज्ञा पुं० [स्त्री० युवराज्ञी] राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जिसे आगे चलकर राज्य मिलने-वाला हो।
युवा-वि० [स्त्री० युवती] जवान। युवक।
यूँ†-अव्य० दे० "यों"।
यूथ-संज्ञा पुं० समूह। झुंड।
यूथप, यूथपति-संज्ञा पुं० सेनापति।
यूथिका-संज्ञा स्त्री० जूही का फूल।
यूनान-संज्ञा पुं० यूरोप का एक प्रदेश जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिये प्रसिद्ध था।
यूनानी-वि० यूनान देश-संबंधी।
यूप-संज्ञा पुं० यज्ञ में वह खंभा जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।
ये-सर्व० यह सब।
येई॰†-सर्व० यही।
येऊ†-सर्व० यह भी।
येहू॰†-अव्य० यह भी।
यों-अव्य० इस तरह पर। इस भाँति।
योंही-अव्य० १. इसी प्रकार से। २. बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।
योग-संज्ञा पुं० १. मिलना। संयोग। २ जोड़ (गणित)। ३. छः दर्शनों में से एक। ४. इस दर्शन की साधना।
योगक्षेम-संज्ञा पुं० कुशल मंगल। ख़ैरियत।
योगतत्त्व-संज्ञा पुं० एक उपनिषद्।
योगनिद्रा-संज्ञा स्त्री० युग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा, जो दुर्गा मानी जाती है।
योगफल-संज्ञा पुं० दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या।
योगबल-संज्ञा पुं० वह शक्ति जो योग की साधना से प्राप्त हो।
योगमाया-संज्ञा स्त्री० १. भगवती। २. वह कन्या जो यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिसे कंस ने मार डाला था।
योगरूढ़ि-संज्ञा स्त्री० दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे।
योगशास्त्र-संज्ञा पुं० पतंजलि ऋषि-कृत योग-साधन पर एक दर्शन जिसमें चित्तवृत्ति को रोकने के उपाय बतलाए हैं।
योगसूत्र-संज्ञा पुं० महर्षि पतंजलि के बनाए हुए योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह।
योगात्मा-संज्ञा पुं० योगी।

रसगुल्ला–संज्ञा पुं० एक प्रकार की छेने की मिठाई।

रसज्ञ–वि० [भाव० रसज्ञता] १. वह जो रस का ज्ञाता हो। २. काव्य-मर्मज्ञ।

रसता–संज्ञा स्त्री० रस का भाव या धर्म्म।

रसद–वि० आनंददायक।
संज्ञा स्त्री० बाँट। बखरा।

रसदार–वि० जिसमें किसी प्रकार का रस हो।

रसन–संज्ञा पुं० स्वाद लेना।

रसना–संज्ञा स्त्री० जिह्वा। जीभ।
क्रि० अ० १. धीरे धीरे बहना या टपकना। २. रस में मग्न होना। ३. तन्मय होना।

रसनेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० रसना। जीभ।

रसभरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का स्वादिष्ट फल।

रसमसा–वि० [स्त्री० रसमसी] १. आनंदमग्न। २. तर। गीला।

रसराज–संज्ञा पुं० १. पारद। पारा। २. शृंगार रस।

रसरी†–संज्ञा स्त्री० दे० "रस्सी"।

रसवंत–संज्ञा पुं० रसिक। प्रेमी।

रसवाद–संज्ञा पुं० १. प्रेम या आनंद की बात-चीत। २. छेड़छाड़।

रसा–संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. जीभ।
संज्ञा पुं० तरकारी आदि का झोल।

रसाई–संज्ञा स्त्री० पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।

रसातल–संज्ञा पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से छठा लोक।

रसायन–संज्ञा पुं० वैद्यक के अनुसार वह औषध जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो।

रसायनशास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें यह विवेचन हो कि पदार्थों में कौन कौन से तत्त्व होते हैं और उनके परमाणुओं में परिवर्त्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्त्तन होता है।

रसाल–संज्ञा पुं० १. ऊख। गन्ना। २. आम।
वि० [स्त्री० रसाला] मधुर। मीठा।

रसाव–संज्ञा पुं० रसने की क्रिया या भाव।

रसिक–संज्ञा पुं० १. वह जो रस या स्वाद लेता हो। २. काव्य-मर्मज्ञ।

रसिकता–संज्ञा स्त्री० रसिक होने का भाव या धर्म्म।

रसिकविहारी–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

रसित–संज्ञा पुं० ध्वनि। शब्द।

रसिया–संज्ञा पुं० रसिक।

रसीद–संज्ञा स्त्री० किसी चीज़ के पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र।

रसील–वि० दे० "रसीला"।

रसीला–वि० [स्त्री० रसीली] रस में भरा हुआ।

रसूम–संज्ञा पुं० रस्म का बहुवचन।

रसूल–संज्ञा पुं० ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेस॰–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

रसोइया–संज्ञा पुं० रसोई बनानेवाला।

रसोई, रसोँई–संज्ञा स्त्री० १. पका हुआ खाद्य पदार्थ। २. चौका।

रसोईघर–संज्ञा पुं० खाना बनाने की जगह।

रसौत–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध औषध

योगाभ्यास-संज्ञा पुं० योग शास्त्र के अनुसार योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।
योगाभ्यासी-संज्ञा पुं० योगी।
योगासन-संज्ञा पुं० योग साधन के आसन, अर्थात् बैठने के ढंग।
योगिनी-संज्ञा स्त्री० रण-पिशाचिनी।
योगिराज, योगींद्र-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी।
योगी-संज्ञा पुं० आत्मज्ञानी।
योगीश, योगीश्वर-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा योगी।
योगीश्वरी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
योगेश्वर-संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. शिव।
योगेश्वरी- संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
योग्य-वि० ठीक (पात्र)। काबिल।
योग्यता-संज्ञा स्त्री० १. क्षमता। लियाकत। २. सामर्थ्य।
योजक-वि० मिलाने या जोड़नेवाला।
योजन-संज्ञा पुं० दूरी की एक नाप जो किसी के मत से दो कोस की, किसी के मत से चार कोस की और किसी के मत से आठ कोस की होती है।
योजना-संज्ञा स्त्री० [वि० योजनीय, योजित] १. नियुक्त करने की क्रिया। २. भावी कार्यों की व्यवस्था। आयोजन।
योद्धा-संज्ञा पुं० सिपाही।
योनि-संज्ञा स्त्री० १. आकर। खानि। २. स्त्रियों की जननेंद्रिय। ३. प्राणियों के विभाग, जातियाँ या वर्ग जिनकी संख्या ८४ लाख कही गई है।
यौं-अव्य० दे० "यों"।
यौगिक-संज्ञा पुं० १. मिला हुआ। २. दो शब्दों से मिलकर बना हुआ शब्द।
यौतक, यौतुक-संज्ञा पुं० दाइजा। जहेज। दहज।
यौधेय-संज्ञा पुं० योद्धा।
यौवन-संज्ञा पुं० १. अवस्था का वह मध्य भाग जो बाल्यावस्था के उपरांत और वृद्धावस्था के पहले होता है। २. जवानी।

र

र-हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन।
रंक-वि० धनहीन। गरीब।
रंग-संज्ञा पुं० १. नृत्य-गीत आदि। नाचना-गाना। २. आकार से भिन्न किसी दृश्य पदार्थ का वह गुण जिसका अनुभव केवल आँखों से ही होता है। वर्ण। जैसे—लाल, काला।
रंगत-संज्ञा स्त्री० १. रंग का भाव। २. मज़ा। आनंद। ३. हालत।
रँगना-क्रि० स० रंग में डुबाकर किसी चीज़ को रंगीन करना।
रंगबिरंगा-वि० अनेक रंगों का।
रंगभवन-संज्ञा पुं० दे० "रंगमहल"।
रंगभूमि-संज्ञा स्त्री० १. वह स्थान जहाँ कोई जलसा हो। २. नाट्य-

जो दारु हल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में औटाकर तैयार की जाती है।

रसौर-संज्ञा पुं० ऊख के रस में पके हुए चावल।

रसौली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर में गिल्टी निकल आती है।

रस्ता-संज्ञा पुं० दे० "रास्ता"।

रस्तोगी-संज्ञा पुं० वैश्यों की एक जाति।

रस्म-संज्ञा स्त्री० १. मेल-जोल। २. रवाज।

रस्सा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी-संज्ञा स्त्री० डोरी। गुण। रज्जु।

रहँकला-संज्ञा पुं० एक प्रकार की हलकी गाड़ी।

रहँचटा-संज्ञा पुं० प्रीति की चाह। लिप्सा।

रहँट-संज्ञा पुं० कूँए से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र।

रहटा-संज्ञा पुं० सूत कातने का चर्खा।

रहचह-संज्ञा स्त्री० चिड़ियों का बोलना।

रहन-संज्ञा स्त्री० रहने की क्रिया या भाव।

रहन-सहन-संज्ञा स्त्री० जीवन-निर्वाह का ढंग। तौर।

रहना-क्रि० अ० १. स्थित होना। २. रुकना। थमना।

रहनि०-संज्ञा स्त्री० १. दे० "रहन"। २. प्रेम।

रहम-संज्ञा पुं० करुणा। दया।

रहमत-संज्ञा स्त्री० कृपा। दया।

रहस-संज्ञा पुं० १. गुप्त भेद। २. आनंदमय क्रीड़ा।

रहसना-क्रि० अ० आनंदित होना।

रहसि०-संज्ञा स्त्री० गुप्त स्थान। एकांत स्थान।

रहस्य-संज्ञा पुं० १. गुप्त भेद। गोप्य विषय। २. वह जिसका तत्व सहज में समझ में न आ सके।

रहाई-संज्ञा स्त्री० १. दे० "रहन"। २. कल। चैन।

रहावन†-संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ गाँव भर के सब पशु एकत्र होकर खड़े हों।

रहित-वि० बिना। बग़ैर।

रहिला-संज्ञा पुं० चना।

रहीम-वि० कृपालु।
संज्ञा पुं० रहीम ख़ाँ ख़ानख़ानाँ का उपनाम।

राँक†-वि० दे० "रंक"।

राँगा-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम और रंग में सफ़ेद होती है।

राँचना०†-क्रि० अ० अनुरक्त होना।
क्रि० स० रंग चढ़ाना। रँगना।

राँजना†-क्रि० अ० काजल लगाना।
क्रि० स० रंजित करना। रँगना।

राँटा†-संज्ञा पुं० टिटिहरी चिड़िया।

राँड़-वि० स्त्री० विधवा।

राँध-संज्ञा पुं० निकट। पास।

राँधना-क्रि० स० (भोजन आदि) पकाना।

राँभना-क्रि० अ० (गाय का) बोलना या चिल्लाना।

राइ-संज्ञा पुं० छोटा राजा।

राई-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों। २. बहुत थोड़ी

शाला। ३. रणभूमि।
रंगमहल–संज्ञा पुं० भोग-विलास करने का स्थान।
रंग-रली–संज्ञा स्त्री० आमोद-प्रमोद।
रंगरस–संज्ञा पुं० दे० "रँगरली"।
रंगरसिया–संज्ञा पुं० भोग-विलास करनेवाला।
रँगराता–वि० अनुरागपूर्ण।
रँगरूट–संज्ञा पुं० सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही।
रँगरेज़–संज्ञा पुं० [स्त्री० रँगरेजिन] वह जो कपड़े रँगने का काम करता हो।
रंगरेली†–संज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली"।
रँगवाना–क्रि० स० रँगने का काम दूसरे से कराना।
रंगशाला–संज्ञा स्त्री० नाटक खेलने का स्थान।
रंगसाज़–संज्ञा पुं० वह जो चीज़ों पर रंग चढ़ाता हो।
रँगाई–संज्ञा स्त्री० रँगने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
रंगी–वि० आनंदी। मौजी।
रंगीन–वि० [भाव० संज्ञा रंगीनी] १. रँगा हुआ। २. आमोद-प्रिय।
रँगीला–वि० [स्त्री० रँगीली] १. रसिया। रसिक। २. सुंदर।
रंच, रंचकः–वि० थोड़ा। अल्प।
रंज–संज्ञा पुं० [वि० रंजीदा] १. दुःख। खेद। २. शोक।
रंजक–वि० प्रसन्न करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है।
रंजन–संज्ञा पुं० चित्त प्रसन्न करने की क्रिया।
रंजित–वि० रँगा हुआ।
रंजिश–संज्ञा स्त्री० रंज होने का भाव।
रंजीदा–वि० [भाव० संज्ञा रंजीदगी] १. दुःखित। २. नाराज़।
रँडापा–संज्ञा पुं० विधवा की दशा। वैधव्य।
रंडी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
रँडुआ, रँडुवा–संज्ञा पुं० वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो।
रँदना–क्रि० स० रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी करना।
रंदा–संज्ञा पुं० एक औज़ार जिससे लकड़ी की सतह छीलकर चिकनी की जाती है।
रंधन–संज्ञा पुं० रसोई बनाना।
रंध्र–संज्ञा पुं० छेद। सूराख़।
रंभा–संज्ञा स्त्री० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अप्सरा।
संज्ञा पुं० लोहे का वह मोटा भारी डंडा जिससे दीवारें आदि को खोदते हैं।
रँभाना–क्रि० अ० गाय का बोलना।
रँहचटा–संज्ञा पुं० मनोरथ-सिद्धि की लालसा।
रअय्यत–संज्ञा स्त्री० प्रजा। रिआया।
रइकौः†–क्रि० वि० ज़रा भी। कुछ भी।
रइनिः†–संज्ञा स्त्री० रात।
रई–संज्ञा स्त्री० मथानी।
वि० स्त्री० १. डूबी हुई। २. अनुरक्त।
रईस–संज्ञा पुं० १. जिसके पास रियासत या इलाका हो। २. बड़ा आदमी।
रउताईः†–संज्ञा स्त्री० मालिक होने

माशा या परिमाण।
राउ⊛–संज्ञा पुं० राजा। नरेश।
राउत†–संज्ञा पुं० राजवंश का कोई व्यक्ति।
राउर⊛†–वि० श्रीमान् का। आपका।
राकस⊛†–संज्ञा पुं० [स्त्री० राकसिन] राक्षस।
राका–संज्ञा स्त्री० पूर्णिमा की रात।
राकेश–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
राक्षस–संज्ञा पुं० [स्त्री० राक्षसी] १. निशिचर। २. कोई दुष्ट प्राणी।
राख–संज्ञा स्त्री० भस्म। खाक।
राखना⊛†–क्रि० स० रक्षा करना।
राखी–संज्ञा स्त्री० रक्षाबंधन का डोरा। संज्ञा स्त्री० दे० "राख"।
राग–संज्ञा पुं० १. सांसारिक सुखों की चाह। २. अनुराग। ३. अंगराग। ४. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर। (संगीत)
रागिनी–संज्ञा स्त्री० संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री। प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं।
रागी–संज्ञा पुं० [स्त्री० रागिनी] प्रेमी। वि० १. रँगा हुआ। २. लाल। ३. विषय-वासना में फँसा हुआ।
राघव–संज्ञा पुं० श्रीरामचंद्र।
राचना⊛–क्रि० स० दे० "रचना"। क्रि० अ० रचा जाना। बनना। क्रि० अ० १. रँगा जाना। रंजित होना। २. अनुरक्त होना। प्रेम करना। ३. प्रसन्न होना।
राज–संज्ञा पुं० १. हुकूमत। शासन। २. एक राजा द्वारा शासित देश। राज्य।
राज़–संज्ञा पुं० रहस्य। भेद।
राजकर–संज्ञा पुं० वह कर जो प्रजा से राजा लेता है।
राजकीय–वि० राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।
राजकुँवर⊛†–संज्ञा पुं० दे० "राजकुमार"।
राजकुमार–संज्ञा पुं० [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।
राजगद्दी–संज्ञा स्त्री० १. राजसिंहासन। २. अभिषेक।
राजगिरि–संज्ञा पुं० १. मगध देश के एक पर्वत का नाम। २. दे० "राजगृह"।
राजगीर–संज्ञा पुं० मकान बनानेवाला कारीगर। राज।
राजगृह–संज्ञा पुं० १. राजा का महल। २. एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है।
राजतरंगिणी–संज्ञा स्त्री० कल्हण-कृत काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास।
राजत्व–संज्ञा पुं० राजा का भाव या धर्म।
राजदंड–संज्ञा पुं० वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय।
राजद्रोह–संज्ञा पुं० [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। बगावत।
राजद्वार–संज्ञा पुं० १. राजा की ड्योढ़ी। २. न्यायालय।
राजधानी–संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।
राजना⊛–क्रि० अ० १. उपस्थित होना। २. शोभित होना।
राजनीति–संज्ञा स्त्री० वह नीति जिसका अवलंबन करके राजा अपने

राज्य की रक्षा और शासन दृढ़ करता है।
राजनीतिक–वि॰ राजनीति-संबंधी।
राजन्य–संज्ञा पुं॰ क्षत्रिय।
राजपंखी–संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजहंस"।
राजपथ–संज्ञा पुं॰ बड़ी सड़क।
राजपुत्र–संज्ञा पुं॰ १. राजकुमार। २. एक जाति।
राजपूत–संज्ञा पुं॰ राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।
राजबाहा–संज्ञा पुं॰ वह बड़ी नहर जिसमें से अनेक छोटी छोटी नहरें निकाली जाती हैं।
राजभोग–संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का महीन धान।
राजमहल–संज्ञा पुं॰ राजा का महल।
राजमार्ग–संज्ञा पुं॰ चौड़ी सड़क।
राजयक्ष्मा–संज्ञा पुं॰ क्षय रोग। तपेदिक।
राजयोग–संज्ञा पुं॰ वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है।
राजरोग–संज्ञा पुं॰ क्षय रोग।
राजर्षि–संज्ञा पुं॰ वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।
राजलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री॰ १. राजश्री। २. राजा की शोभा।
राजवंश–संज्ञा पुं॰ राजा का कुल या वंश।
राजस–वि॰ [स्त्री॰ राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी।
राजसभा–संज्ञा स्त्री॰ दरबार।
राजसमाज–संज्ञा पुं॰ राजाओं का दरबार या समाज।
राजसिंहासन–संज्ञा पुं॰ राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।
राजसी–वि॰ राजा के योग्य। वि॰ स्त्री॰ जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो।
राजसूय–संज्ञा पुं॰ एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो।
राजस्थान–संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजपूताना"।
राजस्व–संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजकर"।
राजहंस–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ राजहंसी] एक प्रकार का हंस।
राजा–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ रानी, रानी] १. किसी देश या जाति का प्रधान शासक जो उस देश या जाति की, दूसरों के आक्रमण से, रक्षा करता है। बादशाह। २. एक उपाधि।
राजाधिराज–संज्ञा पुं॰ राजाओं का राजा। शाहंशाह।
राजि–संज्ञा स्त्री॰ १. पंक्ति। कतार। २. रेखा।
राजिका–संज्ञा स्त्री॰ राई।
राजित–वि॰ शोभित।
राजिव–संज्ञा पुं॰ कमल।
राजी–संज्ञा स्त्री॰ पंक्ति। श्रेणी।
राज़ी–वि॰ १. कही हुई बात मानने को तैयार। २. प्रसन्न।
राज़ीनामा–संज्ञा पुं॰ वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।
राजीव–संज्ञा पुं॰ कमल।
राज्ञी–संज्ञा स्त्री॰ रानी। राजमहिषी।
राज्य–संज्ञा पुं॰ १. राजा का काम। शासन। २. वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो।

रुनुकझुनुक–संज्ञा स्त्री० दे० "रुन-झुन"।
रुपना–क्रि० अ० १. रोपा जाना। २. डटना। अड़ना।
रुपया–संज्ञा पुं० १. भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोलह आने का सिक्का। २. संपत्ति।
रुपहला–वि० [स्त्री० रुपहली] चाँदी के रंग का। चाँदी का सा।
रुमाली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लँगोट।
रुराई॰–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।
रुरुआ–संज्ञा पुं० बड़ी जाति का उल्लू।
रुलना†–क्रि० अ० इधर-उधर मारा फिरना।
रुलाई–संज्ञा स्त्री० रोने की क्रिया या भाव।
रुलाना–क्रि० स० दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।
रुवां†–संज्ञा पुं० सेमल के फूल में का घूआ।
रुष्ट–वि० क्रुद्ध।
रुष्टता–संज्ञा स्त्री० अप्रसन्नता।
रुसना॰–क्रि० अ० दे० "रूसना"।
रुसवा–वि० [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो।
रुस्तम–संज्ञा पुं० १. फ़ारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २. वीर।
रुहठि॰†–संज्ञा स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव।
रुहेलखंड–संज्ञा पुं० अवध के उत्तर पश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश।
रुहेला–संज्ञा पुं० पठानों की एक जाति जो प्रायः रुहेलखंड में बसी है।
रूँध–वि० रुका हुआ। अवरुद्ध।
रूँधना–क्रि० स० १. काँटों से घेरना। २. चारों ओर से
रू–संज्ञा पुं० मुँह। चेहरा।
रूई–संज्ञा स्त्री० कपास के ढोंढे या कोष के अंदर का घूआ जिसे बट या कातकर सूत बनाते अथवा जिसे गद्दे, रज़ाई या जाड़े के पहनने के कपड़ों में भरते हैं।
रूईदार–वि० जिसमें रूई भरी गई हो।
रूख–संज्ञा पुं० पेड़। वृक्ष।
वि० दे० "रूखा"।
रूखा–वि० १. जो चिकना न हो। २. सूखा। ३. नीरस। उदासीन।
रूखापन–संज्ञा पुं० रूखे होने का भाव।
रूझना॰–क्रि० अ० दे० "उलझना"।
रूठ, रूठन–संज्ञा स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव।
रूठना–क्रि० अ० नाराज़ होना।
रूड़, रूड़ा–वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
रूढ़–वि० [स्त्री० रूढ़ा] चढ़ा हुआ।
रूढ़ि–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ाई। चढ़ाव। २. प्रथा। चाल।
रूप–संज्ञा पुं० १. शकल। सूरत। २. सौंदर्य।
वि० रूपवान्। खूबसूरत।
रूपक–संज्ञा पुं० १. मूर्त्ति। प्रतिकृति। २. दृश्य काव्य। ३. एक प्रसिद्ध काव्य-अलंकार।
रूपगर्विता–संज्ञा स्त्री० वह गर्विता नायिका जिसे अपने रूप का अभिमान हो।
रूपमंजरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का फूल। २. एक प्रकार का धान।
रूपमनी॰–वि० रूपवती।

मात्रा या परिमाण।

राउ॰–संज्ञा पुं॰ राजा। नरेश।

रावत†–संज्ञा पुं॰ राजवंश का कोई व्यक्ति।

राउर॰†–वि॰ श्रीमान् का। आपका।

राकस॰†–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ राकसिन] राक्षस।

राका–संज्ञा स्त्री॰ पूर्णिमा की रात।

राकेश–संज्ञा पुं॰ चंद्रमा।

राक्षस–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ राक्षसी] १. निशिचर। २. कोई दुष्ट प्राणी।

राख–संज्ञा स्त्री॰ भस्म। खाक।

राखना॰†–क्रि॰ स॰ रक्षा करना।

राखी–संज्ञा स्त्री॰ रक्षाबंधन का डोरा। संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "राख"।

राग–संज्ञा पुं॰ १. सांसारिक सुखों की चाह। २. अनुराग। ३. अंगराग। ४. किसी खास धुन में बैठाए हुए स्वर। (संगीत)

रागिनी–संज्ञा स्त्री॰ संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री। प्रत्येक राग की पाँच या छः रागिनियाँ मानी गई हैं।

रागी–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ रागिनी] प्रेमी। वि॰ १. रँगा हुआ। २. लाल। ३. विषय-वासना में फँसा हुआ।

राघव–संज्ञा पुं॰ श्रीरामचंद्र।

राचना॰–क्रि॰ स॰ दे॰ "रचना"। क्रि॰ अ॰ रचा जाना। बनना। क्रि॰ अ॰ १. रँगा जाना। रंजित होना। २. अनुरक्त होना। प्रेम करना। ३. प्रसन्न होना।

राज–संज्ञा पुं॰ १. हुकूमत। शासन। २. एक राजा द्वारा शासित देश। राज्य।

राज़–संज्ञा पुं॰ रहस्य। भेद।

राजकर–संज्ञा पुं॰ वह कर जो प्रजा से राजा लेता है।

राजकीय–वि॰ राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुँवर॰†–संज्ञा पुं॰ दे॰ "राजकुमार"।

राजकुमार–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राजगद्दी–संज्ञा स्त्री॰ १. राजसिंहासन। २. अभिषेक।

राजगिरि–संज्ञा पुं॰ १. मगध देश के एक पर्वत का नाम। २. दे॰ "राजगृह"।

राजगीर–संज्ञा पुं॰ मकान बनानेवाला कारीगर। राज।

राजगृह–संज्ञा पुं॰ १. राजा का महल। २. एक प्राचीन स्थान जो बिहार में पटने के पास है।

राजतरंगिणी–संज्ञा स्त्री॰ कल्हण-कृत कारमीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत इतिहास।

राजत्व–संज्ञा पुं॰ राजा का भाव या धर्म।

राजदंड–संज्ञा पुं॰ वह दंड जो राजा की आज्ञा से दिया जाय।

राजद्रोह–संज्ञा पुं॰ [वि॰ राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। बगावत।

राजद्वार–संज्ञा पुं॰ १. राजा की ड्योढ़ी। २. न्यायालय।

राजधानी–संज्ञा स्त्री॰ किसी प्रदेश का वह नगर जहाँ उस देश के शासन का केंद्र हो।

राजना॰–क्रि॰ अ॰ १. उपस्थित होना। २. शोभित होना।

राजनीति–संज्ञा स्त्री॰ वह नीति जिसका अवलंबन करके राजा अपने

रुख–संज्ञा पुं० १. कपोल। गाल। २. मुख। ३. शतरंज का एक मोहरा।
क्रि० वि० तरफ़। ओर।
रुखसत–संज्ञा स्त्री० रवानगी। कूच।
रुखसती–संज्ञा स्त्री० बिदाई, विशेषतः दुलहिन की बिदाई।
रुखाई–संज्ञा स्त्री० १. रूखापन। २. शुष्कता। ३. बेमुरौवती।
रुखानी–संज्ञा स्त्री० बढ़इयों का लोहे का एक औज़ार।
रुखौहाँ–वि० [स्त्री० रुखौहीं] रुखाई लिए हुए। रूखा सा।
रुग्न–वि० रोगी। बीमार।
रुचना–क्रि० अ० रुचि के अनुकूल होना।
रुचि–संज्ञा स्त्री० १. प्रवृत्ति। २. अनुराग। ३. शोभा। ४. स्वाद।
वि० फबता हुआ। योग्य।
रुचिकर–वि० अच्छा लगनेवाला।
रुचिर–वि० सुंदर।
रुचिराई॥–संज्ञा स्त्री० सुंदरता। मनोहरता।
रुचिवर्द्धक–वि० भूख बढ़ानेवाला।
रुज–संज्ञा पुं० १. वेदना। २. घाव।
रुजाली–संज्ञा स्त्री० कष्टों का समूह।
रुजी–वि० अस्वस्थ। बीमार।
रुजू–वि० जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो।
रुठ–संज्ञा पुं० क्रोध। गुस्सा।
रुठाना–क्रि० स० नाराज़ करना।
रुणित–वि० झनकारता या बजता हुआ।
रुतबा–संज्ञा पुं० १. ओहदा। २. प्रतिष्ठा।
रुदन–संज्ञा पुं० रोना।
रुदित–वि० जो रो रहा हो।
रुद्ध–वि० १. घेरा हुआ। २. जिसकी गति रोक ली गई हो।
रुद्र–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार के गण-देवता जो कुल मिलाकर ग्यारह हैं। २. शिव का एक रूप।
वि० भयंकर।
रुद्रका–संज्ञा पुं० रुद्राक्ष।
रुद्रगण–संज्ञा पुं० पुराणानुसार शिव के बहुत से परिषद्।
रुद्रट–संज्ञा पुं० साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका बनाया हुआ 'काव्यालंकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है।
रुद्रतेज–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।
रुद्रपति–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
रुद्रपत्नी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा।
रुद्रलोक–संज्ञा पुं० वह लोक जिसमें शिव का निवास माना जाता है।
रुद्रवंती–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध वनौषधि जो दिव्यौषधि-वर्ग में है।
रुद्रविंशति–संज्ञा स्त्री० रुद्र-बीसी।
रुद्राक्ष–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष। २. इस वृक्ष का गोल बीज। प्रायः शैव लोग जिनकी मालाएँ पहनते हैं।
रुद्राणी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
रुद्री–संज्ञा स्त्री० वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ।
रुधिर–संज्ञा पुं० शरीर में का रक्त। शोणित। लहू।
रुधिराशी–वि० लहू पीनेवाला।
रुनझुन–संज्ञा स्त्री० नूपुर, किंकिणी आदि का शब्द। कलरव। झनकार।
रुनित७–वि० बजता हुआ।

राज्य की रक्षा और शासन दृढ़ करता है।
राजनीतिक–वि० राजनीति-संबंधी।
राजन्य–संज्ञा पुं० क्षत्रिय।
राजपंखी–संज्ञा पुं० दे० "राजहंस"।
राजपथ–संज्ञा पुं० बड़ी सड़क।
राजपुत्र–संज्ञा पुं० १. राजकुमार। २. एक जाति।
राजपूत–संज्ञा पुं० राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।
राजबाहा–संज्ञा पुं० वह बड़ी नहर जिसमें से अनेक छोटी छोटी नहरें निकाली जाती हैं।
राजभोग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन धान।
राजमहल–संज्ञा पुं० राजा का महल।
राजमार्ग–संज्ञा पुं० चौड़ी सड़क।
राजयक्ष्मा–संज्ञा पुं० क्षय रोग। तपेदिक।
राजयोग–संज्ञा पुं० वह प्राचीन योग जिसका उपदेश पतंजलि ने योगशास्त्र में किया है।
राजरोग–संज्ञा पुं० क्षय रोग।
राजर्षि–संज्ञा पुं० वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।
राजलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० १. राजश्री। २. राजा की शोभा।
राजवंश–संज्ञा पुं० राजा का कुल या वंश।
राजस–वि० [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न। रजोगुणी।
राजसभा–संज्ञा स्त्री० दरबार।
राजसमाज–संज्ञा पुं० राजाओं का दरबार या समाज।
राजसिंहासन–संज्ञा पुं० राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।
राजसी–वि० राजा के योग्य। वि० स्त्री० जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो।
राजसूय–संज्ञा पुं० एक यज्ञ जिसके करने का अधिकार केवल ऐसे राजा को होता है, जो सम्राट् पद का अधिकारी हो।
राजस्थान–संज्ञा पुं० दे० "राजपूताना"।
राजस्व–संज्ञा पुं० दे० "राजकर"।
राजहंस–संज्ञा पुं० [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का हंस।
राजा–संज्ञा पुं० [स्त्री० रानी, रानी] १. किसी देश या जाति का प्रधान शासक जो उस देश या जाति की, दूसरों के आक्रमण से, रक्षा करता है। बादशाह। २. एक उपाधि।
राजाधिराज–संज्ञा पुं० राजाओं का राजा। शाहंशाह।
राजि–संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार। २. रेखा।
राजिका–संज्ञा स्त्री० राई।
राजित–वि० शोभित।
राजिव–संज्ञा पुं० कमल।
राजी–संज्ञा स्त्री० पंक्ति। श्रेणी।
राज़ी–वि० १. कही हुई बात मानने को तैयार। २. प्रसन्न।
राज़ीनामा–संज्ञा पुं० वह लेख जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।
राजीव–संज्ञा पुं० कमल।
राज्ञी–संज्ञा स्त्री० रानी। राजमहिषी।
राज्य–संज्ञा पुं० १. राजा का काम। शासन। २. वह देश जिसमें एक राजा का शासन हो।

रुनुकझुनुक–संज्ञा स्त्री० दे० "रुन-झुन"।
रुपना–क्रि० अ० १. रोपा जाना। २. डटना। अड़ना।
रुपया–संज्ञा पुं० १. भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोलह आने का सिक्का। २. संपत्ति।
रुपहला–वि० [स्त्री० रुपहली] चाँदी के रंग का। चाँदी का सा।
रुमाली–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लँगोट।
रुराई॰–संज्ञा स्त्री० सुंदरता।
रुरुआ–संज्ञा पुं० बड़ी जाति का उल्लू।
रुलना†–क्रि० अ० इधर-उधर मारा फिरना।
रुलाई–संज्ञा स्त्री० रोने की क्रिया या भाव।
रुलाना–क्रि० स० दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।
रुवाँ†–संज्ञा पुं० सेमल के फूल में का घूआ।
रुष्ट–वि० क्रुद्ध।
रुष्टता–संज्ञा स्त्री० अप्रसन्नता।
रुसना॰–क्रि० अ० दे० "रूसना"।
रुसवा–वि० [भाव० रुसवाई] जिसकी बहुत बदनामी हो।
रुस्तम–संज्ञा पुं० १. फ़ारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २. वीर।
रुहठि॰†–संज्ञा स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव।
रुहेलखंड–संज्ञा पुं० अवध के उत्तर पश्चिम पड़नेवाला एक प्रदेश।
रुहेला–संज्ञा पुं० पठानों की एक जाति जो प्रायः रुहेलखंड में बसी है।
रूँध–वि० रुका हुआ। अवरुद्ध।
रूँधना–क्रि० स० १. काँटों से घेरना। २. चारों ओर से
रू–संज्ञा पुं० मुँह। चेहरा।
रूई–संज्ञा स्त्री० कपास के ढोंडे या कोष के अंदर का घूआ जिसे बट या कातकर सूत बनाते अथवा जिसे गद्दे, रज़ाई या जाड़े के पहनने के कपड़ों में भरते हैं।
रूईदार–वि० जिसमें रूई भरी गई हो।
रूख–संज्ञा पुं० पेड़। वृक्ष।
वि० दे० "रूखा"।
रूखा–वि० १. जो चिकना न हो। २. सूखा। ३. नीरस। उदासीन।
रूखापन–संज्ञा पुं० रूखे होने का भाव।
रूझना॰–क्रि० अ० दे० "उलझना"।
रूठ, रूठन–संज्ञा स्त्री० रूठने की क्रिया या भाव।
रूठना–क्रि० अ० नाराज़ होना।
रूड़, रूड़ा–वि० श्रेष्ठ। उत्तम।
रूढ़–वि० [स्त्री० रूढ़ा] चढ़ा हुआ।
रूढ़ि–संज्ञा स्त्री० १. चढ़ाई। चढ़ाव। २. प्रथा। चाल।
रूप–संज्ञा पुं० १. शकल। सूरत। २. सौंदर्य।
वि० रूपवान्। ख़ूबसूरत।
रूपक–संज्ञा पुं० १. मूर्ति। प्रतिकृति। २. दृश्य काव्य। ३. एक प्रसिद्ध काव्य-अलंकार।
रूपगर्विता–संज्ञा स्त्री० वह गर्विता नायिका जिसे अपने रूप का अभिमान हो।
रूपमंजरी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का फूल। २. एक प्रकार का धान।
रूपमनी॰–वि० रूपवती।

राज्यतंत्र–संज्ञा पुं० राज्य की शासन-प्रणाली।
राज्यव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० राज्य-नियम। नीति। कानून।
राट्–संज्ञा पुं० राजा। बादशाह।
राठौर–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश।
राड़–वि० नीच।
राढ़‡–संज्ञा स्त्री० रार। झगड़ा।
राढ़ि–संज्ञा पुं० बंग के उत्तरी भाग का नाम।
राणा–संज्ञा पुं० राजा।
रात–संज्ञा स्त्री० संध्या से प्रातःकाल तक का समय। रजनी।
रातना⊙–क्रि० अ० १. लाल रंग से रँग जाना। २. अनुरक्त होना।
राता⊙–वि० [स्त्री० राती] १. लाल। सुर्ख। २. रँगा हुआ।
रातिव–संज्ञा पुं० पशुओं का भोजन।
रात्रि–संज्ञा स्त्री० रात।
रात्रिचारी–संज्ञा पुं० राक्षस।
राधन–संज्ञा पुं० साधने की क्रिया।
राधना⊙†–क्रि० स० आराधना करना। पूजा करना।
राधा–संज्ञा स्त्री० वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी।
राधावल्लभी–संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।
राधिका–संज्ञा स्त्री० वृषभानु गोप की कन्या, राधा।
रान–संज्ञा स्त्री० जंघा। जाँघ।
राना–संज्ञा पुं० दे० "राणा"।
रानी–संज्ञा स्त्री० १. राजा की स्त्री। २. स्वामिनी।
रानी-काजर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
राब–संज्ञा स्त्री० औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
राम–संज्ञा पुं० १. परशुराम। २. बलराम। ३. श्रीरामचंद्र। ४. ईश्वर।
रामगिरि–संज्ञा पुं० नागपुर ज़िले की एक पहाड़ी।
रामचंद्र–संज्ञा पुं० अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं।
रामजना–संज्ञा पुं० [स्त्री० रामजनी] एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती हैं।
रामटेक–संज्ञा पुं० नागपुर ज़िले की एक पहाड़ी। रामगिरि।
रामतरोई–संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।
रामदल–संज्ञा पुं० रामचंद्रजी की बंदरोंवाली सेना।
रामदाना–संज्ञा पुं० मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा।
रामदास–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।
रामधाम–संज्ञा पुं० साकेत लोक।
रामनवमी–संज्ञा स्त्री० चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था।
रामनामी–संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है।
रामरज–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं।
रामरस–संज्ञा पुं० नमक।
रामराज्य–संज्ञा पुं० अत्यंत सुखदायक शासन।

रूपमय–वि० [स्त्री० रूपमयी] अति सुंदर।
रूपवंत–वि० [स्त्री० रूपवंती] खूबसूरत। सुंदर।
रूपवती–संज्ञा स्त्री० सुंदरी। खूबसूरत। (स्त्री०)
रूपवान्, रूपवान–वि० [स्त्री० रूपवती] सुंदर।
रूपा–संज्ञा पुं० १. चाँदी। २. घटिया चाँदी।
रूपी–वि० [स्त्री० रूपिणी] १. रूपधारी। २. तुल्य।
रूपोश–वि० [संज्ञा रूपोशी] छिपा हुआ। गुप्त।
रूप्यक–संज्ञा पुं० रुपया।
रू-बरू–क्रि० वि० सम्मुख। सामने।
रूम–संज्ञा पुं० टर्की या तुर्की देश का एक नाम।
रूमाल–संज्ञा पुं० कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जिससे हाथ-मुँह पोंछते हैं।
रूमी–वि० रूम देश-संबंधी।
रूरना॰–क्रि० अ० चिल्लाना।
रूरा–वि० [स्त्री० रूरी] १. श्रेष्ठ। २. सुंदर।
रूसना–क्रि० अ० दे० "रूठना"।
रूसा–संज्ञा पुं० एक सुगंधित घास जिसका तेल निकाला जाता है।
रूसी–वि० रूस देश का निवासी।
संज्ञा स्त्री० १. रूस देश की भाषा। २. सिर के चमड़े पर जमा हुआ भूसी के समान छिलका।
रूह–संज्ञा स्त्री० १. आत्मा। जीवात्मा। २. सार।
रेंकना–क्रि० अ० गदहे का बोलना।
रेंगना–क्रि० अ० च्यूँटी आदि कीड़ों का चलना।
रेंड़–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसके बीजों का तेल दस्तावर होता है।
रेंड़ी–संज्ञा स्त्री० रेंड़ के बीज।
रे–अव्य० एक तुच्छ संबोधन शब्द।
रेख–संज्ञा स्त्री० १. लकीर। २. चिह्न। ३. नई निकलती हुई मूँछें।
रेखता–संज्ञा पुं० एक प्रकार की ग़ज़ल।
रेखा–संज्ञा स्त्री० लकीर।
रेखागणित–संज्ञा पुं० गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं।
रेगिस्तान–संज्ञा पुं० बालू का मैदान। मरु देश।
रेचक–वि० जिसके खाने से दस्त आवें।
संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया जिसमें खींचे हुए श्वास को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।
रेचन–संज्ञा पुं० १. दस्त लाना। २. जुलाब।
रेचना॰–क्रि० स० वायु या मल बाहर निकालना।
रेज़ा–संज्ञा पुं० बहुत छोटा टुकड़ा।
रेणु–संज्ञा स्त्री० १. धूल। २. कण।
रेणुका–संज्ञा स्त्री० १. बालू। रज। २. परशुराम की माता का नाम।
रेत–संज्ञा स्त्री० १. बालू। २. भूमि।
रेतना–क्रि० स० रेती से रगड़कर किसी वस्तु में से छोटे छोटे कण गिराना।

रामलीला–संज्ञा स्त्री० राम के चरित्रों का अभिनय।

रामवाण–वि० तुरंत प्रभाव दिखानेवाला। (औषध)

रामसनेही–संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक संप्रदाय।

रामसेतु–संज्ञा पुं० रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

रामा–संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री। २. सीता।

रामानंद–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य। ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे।

रामानंदी–वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

रामानुज–संज्ञा पुं० श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

रामायण–संज्ञा पुं० वाल्मीकि-कृत रामायण जो आदिकाव्य भी कहलाता है।

रामायणी–संज्ञा पुं० वह जो रामायण की कथा कहता हो।

रामावत–संज्ञा पुं० वैष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

रामेश्वर–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक शिवलिंग।

राय–संज्ञा पुं० १. राजा। २. भाट। संज्ञा स्त्री० सम्मति।

रायज–वि० जिसका रवाज हो। चलनसार।

रायता–संज्ञा पुं० दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या बुँदिया आदि।

रायसा–संज्ञा पुं० दे० "रासो"।

रार–संज्ञा पुं० झगड़ा। टंटा।

राल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा पेड़। धूना। धूप।

राव–संज्ञा पुं० दे० "राय"।

रावटी–संज्ञा स्त्री० १. छोलदारी। २. कोई छोटा घर। ३. बारहदरी।

रावण–संज्ञा पुं० लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था। दशानन।

रावत–संज्ञा पुं० १. छोटा राजा। २. सामंत। सरदार।

रावल–संज्ञा पुं० अंतःपुर। राजमहल। रनिवास।

संज्ञा पुं० [स्त्री० रावलि, रावली] १. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। २. प्रधान।

राशि–संज्ञा स्त्री० १. ढेर। पुंज। २. क्रांतिवृत्त के विशिष्ट तारासमूह।

राशिचक्र–संज्ञा पुं० मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल।

राशिनाम–संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म-समय की राशि के अनुसार होता है।

राष्ट्र–संज्ञा पुं० १. राज्य। २. देश। ३. एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय।

राष्ट्रकूट–संज्ञा पुं० दे० "राठौर"।

राष्ट्रतंत्र–संज्ञा पुं० राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रपति–संज्ञा पुं० आधुनिक प्रजातंत्र शासन-प्रणाली में वह व्यक्ति जो शासन करने के लिये चुना जाता है।

राष्ट्रीय–वि० राष्ट्र-संबंधी। राष्ट्र का।

रास–संज्ञा स्त्री० गोपों की प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें वे सब घेरा बाँधकर नाचते थे।

रेता-संज्ञा पुं० १. बालू। २. बालू का मैदान।
रेती-संज्ञा स्त्री० १. एक औज़ार जिसे किसी वस्तु पर रगड़ने से उसके महीन कण छूटकर गिरते हैं। २. नदी या समुद्र के किनारे पड़ी हुई बलुई ज़मीन।
रेतीला-वि० [स्त्री० रेतीली] बलुआ।
रेफ-संज्ञा पुं० हलंत रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके मस्तक पर रहता है।
रेल-संज्ञा स्त्री० १. दो लोहे की लाइन जिसपर रेलगाड़ी चलती है। २. रेलगाड़ी। ३. भरमार।
रेलना-क्रि० स० आगे की ओर ढकेलना।
क्रि० अ० ठसाठस भरा होना।
रेलपेल-संज्ञा स्त्री० भारी भीड़।
रेला-संज्ञा पुं० १. जल का प्रवाह। बहाव। २. अधिकता। बहुतायत।
रेवड़ी-संज्ञा स्त्री० तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई।
रेवती-संज्ञा स्त्री० बलराम की पत्नी जो राजा रेवत की कन्या थीं।
रेवतीरमण-संज्ञा पुं० बलराम।
रेवा-संज्ञा स्त्री० नर्मदा नदी।
रेशम-संज्ञा पुं० एक प्रकार का महीन, चमकीला और दृढ़ तंतु जिससे कपड़े बुने जाते हैं। कौशेय।
रेशमी-वि० रेशम का बना हुआ।
रेशा-संज्ञा पुं० तंतु या महीन सूत जो पौधों की छालों आदि से निकलता है।
रेह-संज्ञा स्त्री० खार मिली हुई एक मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है।
रेहन-संज्ञा पुं० बंधक। गिरवी।
रेहनदार-संज्ञा पुं० वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो।
रेहननामा-संज्ञा पुं० वह कागज़ जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।
रैदास-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध चमार भक्त जो रामानंद का शिष्य और कबीर का समकालीन था। २. चमार।
रैन, रैनि॰-संज्ञा स्त्री० रात्रि।
रैयत-संज्ञा स्त्री० प्रजा। रिआया।
रैयाराव-संज्ञा पुं० छोटा राजा।
रैवतक-संज्ञा पुं० गुजरात का एक पर्वत जो अब गिरनार कहलाता है।
रोंगटा-संज्ञा पुं० सारे शरीर पर के बाल।
रोंगटी-संज्ञा स्त्री० खेल में बुरा मानना या बेईमानी करना।
रोंव॰-संज्ञा पुं० रोआँ। लोम।
रोआब†-संज्ञा पुं० रोब। आतंक।
रोक-संज्ञा स्त्री० १. गति में बाधा। २. मनाही। ३. रोकनेवाली वस्तु। संज्ञा पुं० दे० "रोकड़"।
रोक-टोक-संज्ञा स्त्री० बाधा।
रोकड़-संज्ञा स्त्री० १. नगद रुपया पैसा आदि। २. जमा।
रोकड़िया-संज्ञा पुं० खज़ानची।
रोकना-क्रि० स० १. चलने या बढ़ने न देना। २. कहीं जाने से मना करना।
रोग-संज्ञा पुं० [वि० रोगी, रुग्न] व्याधि। मर्ज़।
रोगन-संज्ञा पुं० १. तेल। २. पालिश।
रोगनी-वि० रोगन किया हुआ।

राज्यतंत्र–संज्ञा पुं० राज्य की शासन-प्रणाली।
राज्यव्यवस्था–संज्ञा स्त्री० राज्य-नियम। नीति। कानून।
राट्–संज्ञा पुं० राजा। बादशाह।
राठौर–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश।
राड़–वि० नीच।
राढ़†–संज्ञा स्त्री० रार। झगड़ा।
राढ़ि–संज्ञा पुं० बंग के उत्तरी भाग का नाम।
राणा–संज्ञा पुं० राजा।
रात–संज्ञा स्त्री० संध्या से प्रातःकाल तक का समय। रजनी।
रातना॰–क्रि० अ० १. लाल रंग से रँग जाना। २. अनुरक्त होना।
राता॰–वि० [स्त्री० राती] १. लाल। सुर्ख। २. रँगा हुआ।
रातिब–संज्ञा पुं० पशुओं का भोजन।
रात्रि–संज्ञा स्त्री० रात।
रात्रिचारी–संज्ञा पुं० राक्षस।
राधन–संज्ञा पुं० साधने की क्रिया।
राधना॰†–क्रि० स० आराधना करना। पूजा करना।
राधा–संज्ञा स्त्री० वृषभानु गोप की कन्या और श्रीकृष्ण की प्रेयसी।
राधावल्लभी–संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक प्रसिद्ध संप्रदाय।
राधिका–संज्ञा स्त्री० वृषभानु गोप की कन्या, राधा।
रान–संज्ञा स्त्री० जंघा। जाँघ।
राना–संज्ञा पुं० दे० "राणा"।
रानी–संज्ञा स्त्री० १. राजा की स्त्री। २. स्वामिनी।
रानी-काजर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
राब–संज्ञा स्त्री० औटाकर खूब गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।
राम–संज्ञा पुं० १. परशुराम। २. बलराम। ३. श्रीरामचंद्र। ४. ईश्वर।
रामगिरि–संज्ञा पुं० नागपुर ज़िले की एक पहाड़ी।
रामचंद्र–संज्ञा पुं० अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं।
रामजना–संज्ञा पुं० [स्त्री० रामजनी] एक संकर जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती हैं।
रामटेक–संज्ञा पुं० नागपुर ज़िले की एक पहाड़ी। रामगिरि।
रामतरोई–संज्ञा स्त्री० दे० "भिंडी"।
रामदल–संज्ञा पुं० रामचंद्रजी की बंदरोंवाली सेना।
रामदाना–संज्ञा पुं० मरसे या चौलाई की जाति का एक पौधा।
रामदास–संज्ञा पुं० १. हनुमान्। २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महात्मा जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे।
रामधाम–संज्ञा पुं० साकेत लोक।
रामनवमी–संज्ञा स्त्री० चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था।
रामनामी–संज्ञा पुं० वह कपड़ा जिस पर "राम राम" छपा रहता है।
रामरज–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक लगाते हैं।
रामरस–संज्ञा पुं० नमक।
रामराज्य–संज्ञा पुं० अत्यंत सुख-दायक शासन।

विभीषण।
लंगड़-वि० दे० "लँगड़ा"।
लँगड़ा-वि० जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो।
लँगड़ाना-क्रि० अ० लंग करते हुए चलना।
लंगर-संज्ञा पुं० लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा काँटा जिसका व्यवहार बड़ी बड़ी नावों या जहाज़ों को एक ही स्थान पर ठहराए रखने के लिये होता है।
लंगूर-संज्ञा पुं० १. बंदर। २. पूछ। दुम। (बंदर की)
लँगूल-संज्ञा पुं० पूँछ।
लँगोट, लँगोटा-संज्ञा पुं० [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र जिससे केवल उपस्थ ढका जाता है।
लगोटी-संज्ञा स्त्री० कौपीन।
लंघन-संज्ञा पुं० १. उपवास। २. लाँघना।
लंठ-वि० मूर्ख। उजड्ड।
लंडूरा-वि० जिसकी सब पूँछ कट गई हो।
लंतरानी-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें। शेखी।
लंपट-वि० व्यभिचारी। कामी।
लंपटता-संज्ञा स्त्री० दुराचार।
लंब-संज्ञा पुं० वह रेखा जो किसी दूसरी रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसके साथ समकोण बनावे।
वि० लंबा।
लंबकर्ण-वि० जिसके कान लंबे हों।
लंबतड़ंग-वि० ताड़ के समान लंबा। बहुत लंबा।
लंबा-वि० [स्त्री० लंबी] जो किसी एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो।
लंबाई-संज्ञा स्त्री० लंबा होने का भाव।
लंबान-संज्ञा स्त्री० लंबाई।
लंबी-वि० स्त्री० लंबा का स्त्रीलिंग रूप।
लंबोदर-संज्ञा पुं० गणेश।
लकड़बग्घा-संज्ञा पुं० एक मांसाहारी जंगली जंतु जो भेड़िए से कुछ बड़ा होता है।
लकड़हारा-संज्ञा पुं० जंगल से लकड़ी तोड़कर बेचनेवाला।
लकड़ा-संज्ञा पुं० लकड़ी का मोटा कुंदा।
लकड़ी-संज्ञा स्त्री० १. पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर उससे अलग हो गया हो। २. गतका। ३. छड़ी।
लक़वा-संज्ञा पुं० एक वातरोग जिसमें प्रायः चेहरा टेढ़ा हो जाता है।
लकीर-संज्ञा स्त्री० वह सीधी आकृति जो बहुत दूर तक एक ही सीध में चली गई हो।
लकुच-संज्ञा पुं० बड़हर।
लकुट-संज्ञा स्त्री० लाठी। छड़ी।
लकुटी-संज्ञा स्त्री० लाठी। छड़ी।
लक्कड़-संज्ञा पुं० काठ का बड़ा कुंदा।
लक्का-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर जिसकी पूँछ पंखे सी होती है।
लक्खी-वि० लाख के रंग का। लाखी।
लक्ष-वि० एक लाख। सौ हज़ार।
लक्षण-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निशान। आसार।

रामलीला–संज्ञा स्त्री० राम के चरित्रों का अभिनय।

रामबाण–वि० तुरंत प्रभाव दिखानेवाला। (औषध)

रामसनेही–संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक संप्रदाय।

रामसेतु–संज्ञा पुं० रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।

रामा–संज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री। २. सीता।

रामानंद–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य्य। ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे।

रामानंदी–वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी।

रामानुज–संज्ञा पुं० श्रीवैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य।

रामायण–संज्ञा पुं० वाल्मीकि-कृत रामायण जो आदिकाव्य भी कहलाता है।

रामायणी–संज्ञा पुं० वह जो रामायण की कथा कहता हो।

रामावत–संज्ञा पुं० वैष्णव आचार्य्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय।

रामेश्वर–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक शिवलिंग।

राय–संज्ञा पुं० १. राजा। २. भाट। संज्ञा स्त्री० सम्मति।

रायज–वि० जिसका रवाज हो। चलनसार।

रायता–संज्ञा पुं० दही में पड़ा हुआ नमकीन साग या बुँदिया आदि।

रायसा–संज्ञा पुं० दे० "रासो"।

रार–संज्ञा पुं० झगड़ा। टंटा।

राल–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा पेड़। धूना। धूप।

राव–संज्ञा पुं० दे० "राय"।

रावटी–संज्ञा स्त्री० १. छोलदारी। २. कोई छोटा घर। ३. बारहदरी।

रावण–संज्ञा पुं० लंका का प्रसिद्ध राजा जो राक्षसों का नायक था और जिसे युद्ध में भगवान् रामचंद्र ने मारा था। दशानन।

रावत–संज्ञा पुं० १. छोटा राजा। २. सामंत। सरदार।

रावल–संज्ञा पुं० अंतःपुर। राजमहल। रनिवास।

संज्ञा पुं० [स्त्री० रावलि, रावली] १. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि। २. प्रधान।

राशि–संज्ञा स्त्री० १. ढेर। पुंज। २. क्रांतिवृत्त के विशिष्ट तारासमूह।

राशिचक्र–संज्ञा पुं० मेष, वृष, मिथुन आदि राशियों का चक्र या मंडल।

राशिनाम–संज्ञा पुं० किसी व्यक्ति का वह नाम जो उसके जन्म-समय की राशि के अनुसार होता है।

राष्ट्र–संज्ञा पुं० १. राज्य। २. देश। ३. एक देश या राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय।

राष्ट्रकूट–संज्ञा पुं० दे० "राठौर"।

राष्ट्रतंत्र–संज्ञा पुं० राज्य का शासन करने की प्रणाली।

राष्ट्रपति–संज्ञा पुं० आधुनिक प्रजातंत्र शासन-प्रणाली में वह व्यक्ति जो शासन करने के लिये चुना जाता है।

राष्ट्रीय–वि० राष्ट्र-संबंधी। राष्ट्र का।

रास–संज्ञा स्त्री० गोपों की प्राचीनकाल की एक क्रीड़ा जिसमें वे एक घेरा बाँधकर नाचते थे।

लक्षणा–संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।

लक्षि–संज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लक्षित–वि० बतलाया हुआ। निर्दिष्ट।

लक्ष्मण–संज्ञा पुं० राजा दशरथ के दूसरे पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

लक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० १. हिंदुओं की एक प्रसिद्ध देवी जो विष्णु की पत्नी और धन की अधिष्ठात्री मानी जाती है। कमला। २. धन-संपत्ति। ३. गृहस्वामिनी।

लक्ष्मीधर–संज्ञा पुं० विष्णु।

लक्ष्य–संज्ञा पुं० वह वस्तु जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना।

लक्ष्यभेद–संज्ञा पुं० एक प्रकार का निशाना जिसमें चलते या उड़ते हुए लक्ष्य को भेदते हैं।

लखन⊛†–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।

लखना⊛†–क्रि० स० लक्षण देखकर अनुमान कर लेना। ताड़ना।

लखपती–संज्ञा पुं० जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लखलखा–संज्ञा पुं० मूर्छा दूर करने का कोई सुगंधित द्रव्य।

लखाउ⊛–संज्ञा पुं० १. लक्षण। पहचान। २. चिह्न के रूप में दिया हुआ कोई पदार्थ।

लखाना⊛†–क्रि० अ० दिखाई पड़ना।

लखी–संज्ञा पुं० लाख के रंग का घोड़ा। लाखी।

लखेरा–संज्ञा पुं० वह जो लाख की चूड़ी आदि बनाता हो।

लखौटा–संज्ञा स्त्री० लाख की चूड़ी जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं।

लखौरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी पतली ईंट। नौ-तेरही ईंट। कागदी ईंट।

लग–क्रि० वि० तक। पर्यंत।

संज्ञा स्त्री० लगन।

अव्य० वास्ते। लिये।

लगन–संज्ञा स्त्री० १. किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया। २. लगाव। संबंध।

संज्ञा पुं० ब्याह का मुहूर्त या साइत।

लगनपत्री–संज्ञा स्त्री० विवाह-समय के निर्णय की चिट्ठी जो कन्या का पिता वर के पिता को भेजता है।

लगनवट–संज्ञा स्त्री० प्रेम।

लगना–क्रि० अ० १. दो पदार्थों के तल आपस में मिलना। २. मिलना। जुड़ना।

लगनि⊛–संज्ञा स्त्री० दे० "लगन"।

लगनी–संज्ञा स्त्री० छोटी थाली।

लगभग–क्रि० वि० प्रायः।

लगव⊛†–वि० झूठ। मिथ्या।

लगवाना–क्रि० स० लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगवार†–संज्ञा पुं० उपपति। यार।

लगातार–क्रि० वि० एक के बाद एक।

लगान–संज्ञा पुं० भूमि पर लगनेवाला कर। पोत।

लगाना–क्रि० स० १. सतह पर सतह रखना। २. दृश्य आदि आरोपित करना। ३. गाय आदि को दुहना। ४. नियुक्त करना।

लगाम–संज्ञा स्त्री० बाग। रास।

लगालगी–संज्ञा स्त्री० १. लाग।

संज्ञा स्त्री० लगाम।
रासधारी-संज्ञा पुं० वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।
रासभ-संज्ञा पुं० [स्त्री० रासभी] १. गधा। २. खच्चर।
रासमंडल-संज्ञा पुं० रास क्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली।
रासमंडली-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का समाज या टोली।
रासलीला-संज्ञा स्त्री० रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय।
रासायनिक-वि० रसायनशास्त्र का ज्ञाता।
रासो-संज्ञा पुं० किसी राजा का वह पद्यमय जीवन-चरित्र जिसमें उसके युद्धों और वीरता आदि का वर्णन हो।
रास्ता-संज्ञा पुं० मार्ग। राह।
राह-संज्ञा स्त्री० रास्ता।
राहगीर-संज्ञा पुं० मुसाफ़िर। पथिक।
राहचलता-संज्ञा पुं० १. पथिक। २. अजनबी। ग़ैर।
राहचौरंगी†-संज्ञा स्त्री० दे० "चौमुहानी"।
राहत-संज्ञा स्त्री० आराम। सुख।
राहदारी-संज्ञा स्त्री० सड़क का कर।
राही-संज्ञा पुं० मुसाफ़िर। यात्री।
राहु-संज्ञा पुं० पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक।
राहुल-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।
रिंगन-संज्ञा स्त्री० घुटनों के बल चलना। रेंगना।
रिंद-संज्ञा पुं० १. धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष। २. मनमौजी आदमी।
रिंदा†-वि० निरंकुश। उद्दंड।
रिआयत-संज्ञा स्त्री० १. नरमी। २. ख़याल। विचार।
रिआया-संज्ञा स्त्री० प्रजा।
रिकवँछ-संज्ञा स्त्री० एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बनता है।
रिक्त-वि० ख़ाली। शून्य।
रिक्ष-संज्ञा पुं० दे० "ऋक्ष"।
रिच्छ∞†-संज्ञा पुं० भालू।
रिजाली-संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता। बेहयाई।
रिजु-वि० दे० "ऋजु"।
रिझकवार, रिझवार†-संज्ञा पुं० १. किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। २. प्रेमी।
रिझाना-क्रि० स० किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना।
रिझाव-संज्ञा पुं० प्रसन्न होने या रीझने का भाव।
रितवना∞-क्रि० स० ख़ाली करना।
रिद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "ऋद्धि"।
रिनिआँ, रिनी†-वि० जिसने ऋण लिया हो।
रिपु-संज्ञा पुं० शत्रु।
रिपुता-संज्ञा स्त्री० वैर। दुश्मनी।
रिमझिम-संज्ञा स्त्री० वर्षा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना।
रियासत-संज्ञा स्त्री० राज्य। अमलदारी।
रिवाज-संज्ञा पुं० प्रथा। रस्म।
रिश्ता-संज्ञा पुं० नाता। संबंध।
रिश्तेदार-संज्ञा पुं० संबंधी।
रिश्वत-संज्ञा स्त्री० घूस।

लगन। २. संबंध। मेल-जोल।
लगाव–संज्ञा पुं० संबंध। वास्ता।
लगावट–संज्ञा स्त्री० १. संबंध। वास्ता। २. प्रेम। प्रीति।
लगि०†–अव्य० दे० "लग"।
संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गी"।
लगुड़–संज्ञा पुं० डंडा। लाठी।
लग्गा–संज्ञा पुं० १. लंबा बाँस। २. लकसी।
संज्ञा पुं० कार्य्य आरंभ करना।
लग्गी–संज्ञा स्त्री० दे० "लग्गा"।
लग्घड़–संज्ञा पुं० बाज़। शचान।
लग्न–संज्ञा पुं० १. कोई शुभ कार्य्य करने का मुहूर्त्त। २. विवाह का समय।
वि० लगा हुआ। मिला हुआ।
लघिमा–संज्ञा स्त्री० एक सिद्धि जिसे प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है।
लघु–वि० १. छोटा। २. थोड़ा। कम।
संज्ञा पुं० व्याकरण में वह स्वर जो एक ही मात्रा का होता है। जैसे—अ, इ।
लघुचेता–संज्ञा पुं० वह जिसके विचार तुच्छ और बुरे हों।
लघुता–संज्ञा स्त्री० लघु होने का भाव।
लघुपाक–संज्ञा पुं० वह खाद्य पदार्थ जो सहज में पच जाय।
लघुमति–वि० कम-समझ। मूर्ख।
लघुशंका–संज्ञा स्त्री० पेशाब करना।
लचक–संज्ञा स्त्री० लचकने की क्रिया या भाव।
लचकना–क्रि० अ० लंबे पदार्थ का दबने आदि के कारण बीच से झुकना। लचना।
लचकनि॰–संज्ञा स्त्री० १. लची-लापन। २. लचक।
लचना–क्रि० अ० दे० "लचकना"।
लच्छ०–संज्ञा पुं० सौ हज़ार की संख्या। लाख।
लच्छन॰–संज्ञा पुं० दे० "लक्षण"।
लच्छा–संज्ञा पुं० १. गुच्छे या झुप्पे आदि के रूप में लगाए हुए तार। २. हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना।
लच्छि८–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।
लच्छित॰–वि० आलोचित।
लच्छी–संज्ञा स्त्री० छोटा लच्छा। अंटी।
लच्छेदार–वि० १. (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे पड़े हों। २. (बात-चीत) मज़ेदार या श्रुतिमधुर।
लछमन–संज्ञा पुं० दे० "लक्ष्मण"।
लछमन झूला–संज्ञा पुं० रस्सों या तारों आदि से बना पुल।
लजना–क्रि० अ० दे० "लजाना"।
लजाधुर†–वि० जो बहुत लज्जा करे। शर्मीला।
लजाना–क्रि० अ० लज्जित होना।
क्रि० स० लज्जित करना।
लजारू†–संज्ञा पुं० दे० "लजालू"।
लजालू–संज्ञा पुं० एक कांटेदार छोटा पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़कर बंद हो जाती हैं। लज्जावती।
लजीला–वि० दे० "लज्जाशील"।
लजुरी‡–संज्ञा स्त्री० कूएँ से पानी भरने की डोरी। रस्सी।
लजोहा, लजौहाँ–वि० [स्त्री० लजौहीं] जिसमें लज्जा हो। लज्जाशील।
लज्ज़त–संज्ञा स्त्री० स्वाद।
लज्जा–संज्ञा स्त्री० [वि० लज्जित] १.

रिष्यमूक–संज्ञा पुं० दक्षिण भारत का एक पर्वत।
रिस–संज्ञा स्त्री० क्रोध। गुस्सा।
रिसना†–क्रि० स० छन-छनकर बाहर निकल जाना। रसना।
रिसहा†–वि० क्रोधी।
रिसाना†–क्रि० अ० क्रुद्ध होना।
रिसाल†–संज्ञा पुं० राज्यकर।
रिसालदार–संज्ञा पुं० घुड़सवार सेना का एक अफ़सर।
रिसाला–संज्ञा पुं० घुड़सवारों की सेना।
रिसिआना, रिसियाना†–क्रि० अ० क्रुद्ध या कुपित होना।
रिसौंहाँ–वि० १. क्रुद्ध सा। २. क्रोध से भरा।
रिहल–संज्ञा स्त्री० काठ की चौकी जिस पर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।
रिहा–वि० [संज्ञा रिहाई] (बंधन या बाधा आदि से) मुक्त। छूटा हुआ।
रींधना–क्रि० स० दे० "राँधना"।
री–अव्य० सखियों के लिये संबोधन। अरी। एरी।
रीछ–संज्ञा पुं० भालू।
रीछराज–संज्ञा पुं० जामवंत।
रीझ–संज्ञा स्त्री० किसी की किसी बात पर प्रसन्नता।
रीझना–क्रि० अ० १. किसी बात पर प्रसन्न होना। २. मोहित होना।
रीठा–संज्ञा पुं० १. एक बड़ा जंगली वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल जो बेर के बराबर होता है।
रीढ़–संज्ञा स्त्री० पीठ के बीचोबीच की लंबी खड़ी हड्डी जिससे पसलियाँ मिली रहती हैं। मेरुदंड।
रीत–संज्ञा स्त्री० दे० "री[illegible]"
रीतना‡†–क्रि० अ० खाली रिक्त होना।
रीता–वि० खाली। रिक्त। शून्य।
रीति–संज्ञा स्त्री० १. ढंग। प्रकार। २. परिपाटी।
रीस–संज्ञा स्त्री० दे० "रिसि"।
संज्ञा स्त्री० १. डाह। २. स्पर्द्धा। बराबरी।
रुंज–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा।
रुंड–संज्ञा पुं० बिना सिर का धड़।
रुँदवाना–क्रि० स० पैरों से कुचलवाना।
रुंधती‡–संज्ञा स्त्री० दे० "अरुंधती"।
रुँधना–क्रि० अ० १. उलझना। फँस जाना। २. घेरा जाना।
रुआब–संज्ञा पुं० दे० "रोब"।
रुकना–क्रि० अ० १. मार्ग आदि न मिलने के कारण ठहर जाना। अटकना। २. अपनी इच्छा से ठहर जाना।
रुकमिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी"।
रुकवाना–क्रि० स० रोकने का काम दूसरे से कराना।
रुक्का–संज्ञा पुं० छोटा पत्र या चिट्ठी। पुरज़ा।
रुक्म–संज्ञा पुं० स्वर्ण। सोना।
रुक्मिणी–संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की बड़ी पटरानी जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी।
रुक्मी–संज्ञा पुं० राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।
रुक्ष–वि० १. जिसमें चिकनाहट न हो। २. सूखा। शुष्क।
रुक्षता–संज्ञा स्त्री० रुखाई।

लाज। २. मान-मर्य्यादा।
लज्जावती–वि० स्त्री० शर्मीली।
लज्जावान्–वि० [स्त्री० लज्जावती] दे० "लज्जाशील"।
लज्जित–वि० शर्म में पड़ा हुआ। शर्माया हुआ।
लट–संज्ञा स्त्री० बालों का गुच्छा। केशपाश।
लटक–संज्ञा स्त्री० १. लटकने की क्रिया या भाव। २. अंगों की मनोहर चेष्टा।
लटकन–संज्ञा पुं० नाक में पहनने का एक गहना।
लटकना–क्रि० अ० ऊँचे स्थान से लगकर नीचे की ओर कुछ दूर तक फैला रहना।
लटका–संज्ञा पुं० बातचीत का बना-वटी ढंग।
लटकाना–क्रि० स० किसी को लट-कने में प्रवृत्त करना।
लटकीला–वि० [स्त्री० लटकीली] लट-कता या झूमता हुआ।
लटना–क्रि० अ० १. थककर गिर जाना। २. दुबला और कमज़ोर होना।
लटपटा– वि० [स्त्री० लटपटी] गिरता-पड़ता। लड़खड़ाता हुआ।
लटपटाना–क्रि० अ० १. गिरना-पड़ना। २. डिगना। ३. लुभाना। मोहित होना।
लटा–वि० [स्त्री० लटी] १. लोलुप। २. लंपट।
लटापटी–संज्ञा स्त्री० लटपटाने की क्रिया या भाव।
लटापोट–वि० मोहित।
लटी–संज्ञा स्त्री० १. साधुनी। भक्तिन। २. वेश्या। रंडी।
लट्ट–संज्ञा पुं० दे० "लट्टू"।
लटूरी–संज्ञा स्त्री० सिर के बालों का लटकता हुआ गुच्छा। केश।
लट्टू–संज्ञा पुं० एक गोल खिलौना जिसे सूत के द्वारा ज़मीन पर फेंक-कर नचाते हैं।
लट्ठ–संज्ञा पुं० बड़ी लाठी।
लट्ठबाज़–वि० लाठी लड़नेवाला। लठैत।
लट्ठमार–वि० अप्रिय और कठोर। कर्कश। कड़वा।
लट्ठा–संज्ञा पुं० लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा। बल्ला। शहतीर।
लठैत–संज्ञा पुं० दे० "लट्ठबाज़"।
लड़ंत–संज्ञा स्त्री० लड़ाई। भिड़ंत।
लड़–संज्ञा स्त्री० एक ही प्रकार की वस्तुओं की पंक्ति। माला।
लड़काई–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लड़कखेल–संज्ञा पुं० बालकों का खेल।
लड़कपन–संज्ञा पुं० १. वह अवस्था जिसमें मनुष्य बालक हो। २. चप-लता। चंचलता।
लड़कबुद्धि–संज्ञा स्त्री० नासमझी।
लड़का–संज्ञा पुं० [स्त्री० लड़की] १. बालक। २. पुत्र।
लड़का-बाला–संज्ञा पुं० संतान।
लड़कौरी–वि० स्त्री० जिसकी गोद में लड़का हो।
लड़खड़ाना–क्रि० अ० पूर्ण रूप से स्थित न रहने के कारण इधर-उधर झुक पड़ना।
लड़ना–क्रि० अ० १. भिड़ना। २. मल्ल-युद्ध करना। ३. हुज्जत करना।

संज्ञा स्त्री० लगाम।
रासधारी–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति या समाज जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।
रासभ–संज्ञा पुं० [स्त्री० रासभी] १. गधा। २. खच्चर।
रासमंडल–संज्ञा पुं० रास क्रीड़ा करनेवालों का समूह या मंडली।
रासमंडली–संज्ञा स्त्री० रासधारियों का समाज या टोली।
रासलीला–संज्ञा स्त्री० रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय।
रासायनिक–वि० रसायनशास्त्र का ज्ञाता।
रासो–संज्ञा पुं० किसी राजा का वह पद्यमय जीवन-चरित्र जिसमें उसके युद्धों और वीरता आदि का वर्णन हो।
रास्ता–संज्ञा पुं० मार्ग। राह।
राह–संज्ञा स्त्री० रास्ता।
राहगीर–संज्ञा पुं० मुसाफ़िर। पथिक।
राहचलता–संज्ञा पुं० १. पथिक। २. अजनबी। ग़ैर।
राहचौरंगी†–संज्ञा स्त्री० दे० "चौमुहानी"।
राहत–संज्ञा स्त्री० आराम। सुख।
राहदारी–संज्ञा स्त्री० सड़क का कर।
राही–संज्ञा पुं० मुसाफ़िर। यात्री।
राहु–संज्ञा पुं० पुराणानुसार नौ ग्रहों में से एक।
राहुल–संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम।
रिंगन–संज्ञा स्त्री० घुटनों के बल चलना। रेंगना।
रिंद–संज्ञा पुं० १. धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष। २. मनमौजी आदमी।
रिंदा†–वि० निरंकुश। उद्दंड।
रिआयत–संज्ञा स्त्री० १. नरमी। २. ख़याल। विचार।
रिआया–संज्ञा स्त्री० प्रजा।
रिकवँछ–संज्ञा स्त्री० एक भोज्य पदार्थ जो उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बनता है।
रिक्त–वि० ख़ाली। शून्य।
रिच्छ–संज्ञा पुं० दे० "ऋच"।
रिच्छराज†–संज्ञा पुं० भालू।
रिजाली–संज्ञा स्त्री० निर्लज्जता। बेहयाई।
रिजु–वि० दे० "ऋजु"।
रिझवार, रिझवार†–संज्ञा पुं० १. किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला। २. प्रेमी।
रिझाना–क्रि० स० किसी को अपने ऊपर प्रसन्न कर लेना।
रिझाव–संज्ञा पुं० प्रसन्न होने या रीझने का भाव।
रितवना⊛–क्रि० स० ख़ाली करना।
रिद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "ऋद्धि"।
रिनिआँ, रिनी†–वि० जिसने ऋण लिया हो।
रिपु–संज्ञा पुं० शत्रु।
रिपुता–संज्ञा स्त्री० वैर। दुश्मनी।
रिमझिम–संज्ञा स्त्री० वर्षा की छोटी छोटी बूँदों का लगातार गिरना।
रियासत–संज्ञा स्त्री० राज्य। अमलदारी।
रिवाज–संज्ञा पुं० प्रथा। रस्म।
रिश्ता–संज्ञा पुं० नाता। संबंध।
रिश्तेदार–संज्ञा पुं० संबंधी।
रिश्वत–संज्ञा स्त्री० घूस।

लड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे पर वार। २. संग्राम। ३. अनबन। विरोध। वैर।
लड़ाका–वि० १. योद्धा। २. झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
लड़ाना–क्रि० स० १. दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २. लाड़-प्यार करना। दुलार करना।
लड़ायता†–वि० दे० "लड़ैता"।
लड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।
लड़ुआ–संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।
लड़ैता–वि० [स्त्री० लड़ैती] लाडला।
लड्डू–संज्ञा पुं० गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।
लढ़िया†–संज्ञा स्त्री० बैलगाड़ी।
लत–संज्ञा स्त्री० बुरी आदत। दुर्व्यसन।
लतर–संज्ञा स्त्री० बेल।
लतरी–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है।
लता–संज्ञा स्त्री० वह पौधा जो डोरी के रूप में ज़मीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। वल्ली।
लताकुंज, लतागृह–संज्ञा पुं० लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।
लताड़ना–क्रि० स० पैरों से कुचलना।
लता-पता–संज्ञा पुं० पेड़-पत्ते।
लता-मंडप–संज्ञा पुं० लतागृह।
लतिका–संज्ञा स्त्री० छोटी लता। बेल।
लतियाना†–क्रि० स० खूब लातें मारना।
लत्ता–संज्ञा पुं० फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा।
लत्ती–संज्ञा स्त्री० १. पशुओं का पाद-प्रहार। लात। २. कपड़े की लंबी धज्जी।
लथपथ–वि० भींगा हुआ।
लथाड़–संज्ञा स्त्री० ज़मीन पर पटककर लोटाने या घसीटने की क्रिया। चपेट।
लथेड़ना–क्रि० स० १. कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना। २. डाँटना-डपटना।
लदना–क्रि० अ० सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना।
लदाव–संज्ञा पुं० १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार।
लदुवा, लद्दू–वि० बोझ ढोनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।
लद्धड़–वि० सुस्त। आलसी।
लप–संज्ञा स्त्री० १. लचीली चीज़ को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २. छुरी, तलवार आदि की चमक की गति।
लपक–संज्ञा स्त्री० १. लपट। लौ। २. चमक। ३. तेज़ी।
लपकना–क्रि० अ० झपट पड़ना।
लपट–संज्ञा स्त्री० अग्नि। शिखा।
लपटना†–क्रि० अ० दे० "लिपटना"।
लपटाना†–क्रि० स० १. दे० "लिपटाना"। २. उलझना। फँसना।
लपना†–क्रि० अ० झोंक के साथ इधर-उधर लचना।
लपलपाना–क्रि० अ० १. लपना। २. लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर हिलना-डोलना।
लपसी–संज्ञा स्त्री० थोड़े घी का हलुआ।
लपाना–क्रि० स० लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना।
लपेट–संज्ञा स्त्री० १. लपटने की क्रिया

का भाव। २. घेरा। ३. घुमाव।
लपेटना–क्रि० स० घुमाव या फेरे के साथ चारों ओर फँसाना।
लफंगा–वि० १. लंपट। २. शोहदा।
लफ्ज़–संज्ञा पुं० शब्द।
लबड़-धोंधों–संज्ञा स्त्री० १. झूठमूठ का हल्ला। २. गड़बड़ी।
लबादा–संज्ञा पुं० रूईदार चोगा।
लबार†–वि० झूठा। मिथ्यावादी।
लबारी–संज्ञा स्त्री० झूठ बोलने का काम।
लबालब–क्रि० वि० मुँह या किनारे तक। छलकता हुआ।
लबेदा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० लबेदी] मोटा भद्दा डंडा।
लब्ध–वि० १. मिला हुआ। २. भाग करने से आया हुआ फल। (गणित)
लब्धप्रतिष्ठ–वि० प्रतिष्ठित।
लभ्य–वि० पाने योग्य।
लमकना†–क्रि० अ० उत्कंठित होना।
लमतड़ंग–वि० [स्त्री० लमतड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा।
लमधी†–संज्ञा पुं० समधी का बाप।
लमाना✲†–क्रि० स० लंबा करना।
लय–संज्ञा पुं० १. एक पदार्थ का दूसरे में मिलना। २. विलीन होना। ३. संगीत में नृत्य, गीत और वाद्य की समता।
संज्ञा स्त्री० १. गीत गाने का ढंग या तर्ज़। धुन। २. संगीत में सम।
लरकई✲–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लरकिनी✲†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़की"।
लरजना–क्रि० अ० १. काँपना। २. डरना।
लरभर✲†–वि० बहुत अधिक।
लरिकई✲†–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़कपन"।
लरिक-सलोरी†–संज्ञा स्त्री० लड़कों का खेल। खेलवाड़।
लरिका✲†–संज्ञा पुं० दे० "लड़का"।
लरी✲–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़ी"।
ललक–संज्ञा स्त्री० प्रबल अभिलाषा।
ललकना–क्रि० अ० पाने की गहरी इच्छा करना।
ललकार–संज्ञा स्त्री० ललकारने की क्रिया या भाव।
ललकारना–क्रि० स० युद्ध या प्रतिद्वंद्विता के लिये उच्च स्वर से आह्वान करना।
ललचना–क्रि० अ० लालच करना।
ललचाना–क्रि० स० किसी के मन में लालच उत्पन्न करना।
ललचौहाँ–वि० लालच से भरा। ललचाया हुआ।
ललन–संज्ञा पुं० १. प्यारा बालक। २. प्रिय नायक या पति।
ललना–संज्ञा स्त्री० स्त्री। कामिनी।
लला–संज्ञा पुं० [स्त्री० लली] १. प्यारा या दुलारा लड़का। २. प्रिय नायक या पति।
ललाई–संज्ञा स्त्री० दे० "लाली"।
ललाट–संज्ञा पुं० भाल। मस्तक।
ललाट-रेखा–संज्ञा स्त्री० कपाल का लेख।
ललाना✲†–क्रि० अ० लोभ करना। ललचना।
ललाम–वि० रमणीय। सुंदर।
ललित–वि० सुंदर। मनोहर।
ललित कला–संज्ञा स्त्री० वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा हो। जैसे—

लुरकी–संज्ञा स्त्री० कान में पहनने की बाली। मुरकी।

लुरना॰†–क्रि० अ० १. झूलना। लहराना। २. झुक पड़ना।

लुरी–संज्ञा स्त्री० वह गाय जिसे बच्चा दिए थोड़े ही दिन हुए हों।

लुहार–संज्ञा पुं० [स्त्री० लुहारिन, लुहारी] १. लोहे की चीज़ें बनानेवाला। २. वह जाति जो लोहे की चीज़ें बनाती है।

लुहारी–संज्ञा स्त्री० लुहार जाति की स्त्री।

लू–संज्ञा स्त्री० गरमी के दिनों की तपी हुई हवा।

लूक–संज्ञा स्त्री० १. आग की लपट। २. लू। गर्म हवा।

लूकना॰–क्रि० स० आग लगाना। जलाना।

लूका–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० लूकी] आग की लौ या लपट।

लूकी†–संज्ञा स्त्री० आग की चिनगारी। स्फुलिंग।

लूगा†–संज्ञा पुं० १. वस्त्र। कपड़ा। २. धोती।

लूट–संज्ञा स्त्री० किसी के माल का ज़बरदस्ती छीना जाना।

लूटना–क्रि० स० मार-पीटकर या छीन-झपटकर ले लेना।

लूत–संज्ञा स्त्री० मकड़ी।

लूता–संज्ञा स्त्री० मकड़ी।

लूमना॰–क्रि० अ० लटकना।

लूरना॰–क्रि० अ० दे० "लुरना"।

लूला–वि० [स्त्री० लूली] जिसका हाथ कट गया हो। लुंजा।

लेंड़–संज्ञा पुं० दे० "लेंडी"।

लेंड़ी–संज्ञा स्त्री० १. मल की बत्ती। २. बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़, लेंहड़ा–संज्ञा पुं० झुंड दल। समूह। (चौपायों के लिये)

ले–अव्य० आरंभ होकर। ‡ अव्य० तक। पर्यंत।

लेई–संज्ञा स्त्री० किसी चूर्ण को गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ।

लेख–संज्ञा पुं० १. लिखे हुए अक्षर। २. निबंध।

लेखक–संज्ञा पुं० [स्त्री० लेखिका] १. लिखनेवाला। २. ग्रंथकार।

लेखन–संज्ञा पुं० [वि० लेखनीय, लेख्य] लिखने का कार्य।

लेखना॰–क्रि० स० १. अक्षर या चित्र बनाना। लिखना। २. गिनना।

लेखनी–संज्ञा स्त्री० कलम।

लेखा–संज्ञा पुं० १. गणना। गिनती। २. ठीक ठीक अंदाज़। ३. आय-व्यय का विवरण।

लेखिका–संज्ञा स्त्री० १. लिखनेवाली। २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेख्य–वि० लिखने योग्य।

लेज़म–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नरम और लचकदार कमान।

लेज़ुर, लेज़ुरी†–संज्ञा स्त्री० १. डोरी। २. कूएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लेटना–क्रि० अ० पौढ़ना। सोना।

लेटाना–क्रि० स० दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लेन–संज्ञा पुं० लेने की क्रिया या भाव।

लेनदार–संज्ञा पुं० जिसका कुछ बाकी हो। महाजन।

लेन-देन–संज्ञा पुं० १. लेने और देने

लड़ाई–संज्ञा स्त्री० १. एक दूसरे पर वार। २. संग्राम। ३. अनबन। विरोध। वैर।
लड़ाका–वि० १. योद्धा। २. झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
लड़ाना–क्रि० स० १. दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना। २. लाड़-प्यार करना। दुलार करना।
लड़ायता†–वि० दे० "लड़ैता"।
लड़ी–संज्ञा स्त्री० दे० "लड़"।
लड़ुआ–संज्ञा पुं० दे० "लड्डू"।
लड़ैता–वि० [स्त्री० लड़ैती] लाडला।
लड्डू–संज्ञा पुं० गोल बनी हुई मिठाई। मोदक।
लढ़िया†–संज्ञा स्त्री० बैलगाड़ी।
लत–संज्ञा स्त्री० बुरी आदत। दुर्व्यसन।
लतर–संज्ञा स्त्री० बेल।
लतरी–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी फलियों से दाल निकलती है।
लता–संज्ञा स्त्री० वह पौधा जो डोरी के रूप में ज़मीन पर फैले अथवा वृक्ष के साथ लिपटकर ऊपर चढ़े। वल्ली।
लताकुंज, लतागृह–संज्ञा पुं० लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान।
लताड़ना–क्रि० स० पैरों से कुचलना।
लता-पता–संज्ञा पुं० पेड़-पत्ते।
लता-मंडप–संज्ञा पुं० लतागृह।
लतिका–संज्ञा स्त्री० छोटी लता। बेल।
लतियाना†–क्रि० स० खूब लातें मारना।
लत्ता–संज्ञा पुं० फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा।
लत्ती–संज्ञा स्त्री० १. पशुओं का पाद-प्रहार। लात। २. कपड़े की लंबी धज्जी।
लथपथ–वि० भींगा हुआ।
लथाड़–संज्ञा स्त्री० ज़मीन पर पटककर लोटाने या घसीटने की क्रिया। चपेट।
लथेड़ना–क्रि० स० १. कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना। २. डाँटना-डपटना।
लदना–क्रि० अ० सामान ढोनेवाली सवारी पर बोझ भरा जाना।
लदाव–संज्ञा पुं० १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार।
लदुवा, लद्दू–वि० बोझ ढोनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।
लद्धड़–वि० सुस्त। आलसी।
लप–संज्ञा स्त्री० १. लचीली चीज़ को पकड़कर हिलाने का व्यापार। २. छुरी, तलवार आदि की चमक की गति।
लपक–संज्ञा स्त्री० १. लपट। लौ। २. चमक। ३. तेज़ी।
लपकना–क्रि० अ० झपट पड़ना।
लपट–संज्ञा स्त्री० अग्नि। शिखा।
लपटना†–क्रि० अ० दे० "लिपटना"।
लपटाना†–क्रि० स० १. दे० "लिपटाना"। २. उलझना। फँसना।
लपना†–क्रि० अ० झोंक के साथ इधर-उधर लपना।
लपलपाना–क्रि० अ० १. लपना। २. लंबी कोमल वस्तु का इधर-उधर हिलना-डोलना।
लपसी–संज्ञा स्त्री० थोड़े घी का हलुआ।
लपाना–क्रि० स० लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना।
लपेट–संज्ञा स्त्री० १. लपटने की क्रिया

का व्यवहार । २. ऋण देने और लेने का व्यवहार ।
लेनहार-वि० लेनेवाला ।
लेना-क्रि० स० १. दूसरे के हाथ से अपने हाथ में करना । २. थामना । ३. मोल लेना । ४. अगवानी करना ।
लेप-संज्ञा पुं० लेई के समान पोतने, छोपने या चुपड़ने की चीज़ ।
लेपना-क्रि० स० गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना ।
ले-पालक-संज्ञा पुं० गोद लिया हुआ पुत्र । दत्तक ।
लेरुषा-संज्ञा पुं० बछड़ा ।
लेव-संज्ञा पुं० लेप ।
लेवा-संज्ञा पुं० १. गिलावा । २. मिट्टी का गिलावा ।
वि० लेनेवाला ।
लेवाल-संज्ञा पुं० लेने या खरीदने-वाला ।
लेश-संज्ञा पुं० अणु ।
वि० अल्प । थोड़ा ।
लेसना-क्रि० स० १. जलाना । २. किसी चीज़ पर लेस लगाना ।
लेहन-संज्ञा पुं० चाटना ।
लेहाज़ा-क्रि० वि० इसलिए । इस वास्ते ।
लेह्य-वि० चाटने के योग्य ।
लैं:-अव्य० तक । पर्यंत ।
लैस-वि० वर्दी और हथियारों से सजा हुआ ।
संज्ञा पुं० कपड़े पर चढ़ाने का फ़ीता ।
लो-अव्य० दे० "लौं" ।
लोंदा-संज्ञा पुं० किसी गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा अंश ।
लोई-संज्ञा स्त्री० १. गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं । २. एक प्रकार का कम्मल ।
लोकंजन:-संज्ञा पुं० दे० "लोपांजन"।
लोकंदा†-संज्ञा पुं० विवाह में कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना ।
लोकंदी†-संज्ञा स्त्री० वह दासी जो कन्या के ससुराल जाते समय उसके साथ भेजी जाती है ।
लोक-संज्ञा पुं० १. स्थान-विशेष जिसका बोध प्राणी को हो । २. संसार ।
लोकधुनि:-संज्ञा स्त्री० अफ़वाह ।
लोकना-क्रि० स० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथों से पकड़ लेना ।
लोकप, लोकपति-संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा । २. लोकपाल ।
लोकपाल-संज्ञा पुं० १. दसों दिशाओं के स्वामी । २. राजा ।
लोकलीक:-संज्ञा स्त्री० लोक की मर्यादा ।
लोकसंग्रह-संज्ञा पुं० संसार के लोगों को प्रसन्न करना ।
लोकहार-वि० लोक या संसार को नष्ट करनेवाला ।
लोकांतर-संज्ञा पुं० वह लोक जहाँ मरने पर जीव जाता है ।
लोकांतरित-वि० मरा हुआ । मृत ।
लोकाचार-संज्ञा पुं० संसार में बरता जानेवाला व्यवहार ।
लोकोक्ति-संज्ञा स्त्री० कहावत । मसल ।
लोकोत्तर-वि० बहुत ही अद्भुत और विलक्षण ।
लोखर-संज्ञा स्त्री० १. नाई के

औज़ार। २. लोहारों या बढ़इयों आदि के औज़ार।

लोग-संज्ञा पुं० बहु० [स्त्री० लुगाई] जन। मनुष्य।

लोच-संज्ञा स्त्री० १. लचक। २. कोमलता।

लोचन-संज्ञा पुं० आँख।

लोट-संज्ञा स्त्री० लोटने का भाव। संज्ञा पुं० उतार।

लोटन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का कबूतर।

लोटना-क्रि० अ० १. सीधे और उलटे लेटते हुए किसी ओर को जाना। २. विश्राम करना।

लोटा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० लुटिया] धातु का एक गोल पात्र जो पानी रखने के काम में आता है।

लोटिया-संज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।

लोढ़ना-क्रि० स० चुनना। छाँटना।

लोढ़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० लोढ़िया] पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर किसी चीज़ को रखकर पीसते हैं। बट्टा।

लोढ़िया-संज्ञा स्त्री० छोटा लोढ़ा।

लोथ, लोथि-संज्ञा स्त्री० मृत शरीर। लाश।

लोथड़ा-संज्ञा पुं० मांसपिंड।

लोध-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल और लकड़ी दवा के काम में आती है।

लोन०†-संज्ञा पुं० लवण। नमक।

लोना-वि० [भाव० लोनाई] १. नमकीन। सलोना। २. सुंदर। संज्ञा पुं० दीवारों का एक प्रकार का रोग जिसमें वे झड़ने लगती और कमज़ोर हो जाती हैं।

लोनार†-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ नमक होता है।

लोनिया-संज्ञा पुं० एक जाति जो लोन या नमक बनाने का व्यवसाय करती है। नोनियाँ।

लोनी-संज्ञा स्त्री० कुलफे की जाति का एक प्रकार का साग।

लोप-संज्ञा पुं० [संज्ञा लोपन] [वि० लुप्त, लोपक, लोपा, लोप्य] १. नाश। क्षय। २. छिपना। अंतर्धान होना।

लोपन-संज्ञा पुं० लुप्त करना। तिरोहित करना।

लोपना०†-क्रि० स० १. लुप्त करना। २. छिपाना। क्रि० अ० लुप्त होना। मिटना।

लोपांजन-संज्ञा पुं० वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोबान-संज्ञा पुं० एक वृक्ष का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।

लोबिया-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा बोड़ा। (फली)

लोभ-संज्ञा पुं० [वि० लुब्ध, लोभी] लालच। लिप्सा।

लोभना, लोभाना०†-क्रि० स० मोहित करना। मुग्ध करना। क्रि० अ० मोहित होना। मुग्ध होना।

लोभित-वि० लुब्ध। मुग्ध।

लोभी-वि० जिसे किसी बात का लोभ हो। लालची।

लोम-संज्ञा पुं० शरीर पर के छोटे

संगीत, चित्रकला, वास्तुकला आदि।
ललिता–संज्ञा स्त्री० राधिका की प्रधान आठ सखियों में से एक।
लली–संज्ञा स्त्री० १. लड़की के लिये प्यार का शब्द। २. नायिका।
ललौहाँ–वि० [स्त्री० ललौहीं] ललाई लिए हुए।
लल्ला–संज्ञा पुं० दे० "लला"।
लल्लो-चप्पो–संज्ञा स्त्री० चिकनी-चुपड़ी बात। ठकुरसोहाती।
लल्लोपत्तो†–संज्ञा स्त्री० दे० "लल्लो-चप्पो"।
लवंग–संज्ञा पुं० लौंग।
लव–संज्ञा पुं० १. बहुत थोड़ी मात्रा। २. श्री रामचंद्र के दो यमज पुत्रों में से एक।
लवण–संज्ञा पुं० नमक। नोन।
लवणासुर–संज्ञा पुं० मधु नामक असुर का पुत्र जिसे शत्रुघ्न ने मारा था।
लवन–संज्ञा पुं० १. काटना। २. खेत की कटाई। लुनाई।
लवनाई०–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लवनि, लवनी–संज्ञा स्त्री० खेत में अनाज की पकी फसल की कटाई। लुनाई।
लवर†–संज्ञा स्त्री० अग्नि की लपट।
लवलीन–वि० तन्मय। तल्लीन। मग्न।
लवलेश–संज्ञा पुं० अत्यंत अल्प मात्रा।
लवा†–संज्ञा पुं० भुने हुए धान या ज्वार की खील।
संज्ञा पुं० तीतर की जाति का एक पक्षी।
लवाई–वि० वह गाय जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो।
लवारा–संज्ञा पुं० गौ का बच्चा।
लवासी०†–वि० १. गप्पी। २. लंपट।
लशकर–संज्ञा पुं० सेना। फ़ौज।
लशकरी–वि० १. फ़ौज का। २. जहाज़ पर काम करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० जहाज़ियों या खलासियों की भाषा।
लषन०–संज्ञा पुं० दे० "लखन"।
लस–संज्ञा पुं० १. चिपकने या चिपकाने का गुण। २. वह जिसके लगाव से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय।
लसदार–वि० लसीला।
लसना–क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना।
० क्रि० अ० शोभित होना।
लसलसा–वि० दे० "लसदार"।
लसी–संज्ञा स्त्री० दूध और पानी मिला शरबत।
लसीला–वि० [स्त्री० लसीली] १. लसदार। २. सुंदर।
लसोड़ा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़ जिसके फल औषध के काम में आते हैं।
लस्टम-पस्टम†–क्रि० वि० किसी न किसी तरह से। ज्यों-त्यों।
लस्त–वि० थका हुआ।
लस्सी–संज्ञा स्त्री० चिपचिपाहट। लसी।
लहँगा–संज्ञा पुं० कमर के नीचे का सारा अंग ढाँकने के लिये स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा।
लहक–संज्ञा स्त्री० १. लहकने की क्रिया या भाव। २. आग की लपट।

वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में मुद्दई या मुद्दालय की ओर से बहस करे।
वकुल-संज्ञा पुं० अगस्त का पेड़ या फूल।
वक्त-संज्ञा पुं० १. समय। २. अवसर।
वक्तव्य-वि० कहने योग्य।
संज्ञा पुं० कथन। वचन।
वक्ता-वि० वाग्मी। बोलनेवाला।
संज्ञा पुं० कथा कहनेवाला पुरुष। व्यास।
वक्तृता-संज्ञा स्त्री० १. व्याख्यान। २. भाषण।
वक्तृत्व-संज्ञा पुं० वक्तृता। वाग्मिता।
वक्त्र-संज्ञा पुं० मुख।
वक्फ़-संज्ञा पुं० वह संपत्ति जो धर्मार्थ दान कर दी गई हो।
वक्र-वि० १. टेढ़ा। बाँका। २. तिरछा।
वक्रगामी-वि० १. टेढ़ी चाल चलनेवाला। २. शठ।
वक्रतुंड-संज्ञा पुं० गणेश।
वक्रदृष्टि-संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ी दृष्टि। २. क्रोध की दृष्टि।
वक्री-संज्ञा पुं० १. वह प्राणी जिसके अंग जन्म से टेढ़े हों। २. बुद्धदेव।
वक्ष-संज्ञा पुं० छाती। उरस्थल।
वक्षःस्थल-संज्ञा पुं० उर। छाती।
वग़ैरह-अव्य० इत्यादि। आदि।
वच-संज्ञा पुं० वाक्य।
वचन-संज्ञा पुं० मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द।
वज़न-संज्ञा पुं० १. भार। २. तौल।
वज़नी-वि० जिसका बहुत बोझ हो। भारी।
वजह-संज्ञा स्त्री० कारण। हेतु।
वज़ा-संज्ञा स्त्री० बनावट। रचना।
वज़ादार-वि० जिसकी बनावट आदि बहुत अच्छी हो।
वज़ीफ़ा-संज्ञा पुं० वह वृत्ति या आर्थिक सहायता जो विद्वानों, छात्रों और संन्यासियों आदि को दी जाती है।
वज़ीर-संज्ञा पुं० मंत्री। दीवान।
वज़ीरी-संज्ञा स्त्री० वज़ीर का काम या पद।
वज़ू-संज्ञा पुं० नमाज़ पढ़ने के पूर्व शौच के लिये हाथ-पाँव आदि धोना।
वज्र-संज्ञा पुं० पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इंद्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश।
वि० बहुत कड़ा या मज़बूत।
वज्रलेप-संज्ञा पुं० एक मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि मज़बूत हो जाती हैं।
वज्रसार-संज्ञा पुं० हीरा।
वज्रासन-संज्ञा पुं० हठयोग के चौरासी आसनों में से एक।
वज्री-संज्ञा पुं० इंद्र।
वट-संज्ञा पुं० बरगद का पेड़।
वटसावित्री-संज्ञा स्त्री० एक व्रत का नाम जिसमें स्त्रियाँ वट का पूजन करती हैं।
वटिका, वटी-संज्ञा स्त्री० गोली या टिकिया। वटी।
वटु-संज्ञा पुं० १. बालक। २. ब्रह्मचारी।
वटुक-संज्ञा पुं० १. बालक। २. ब्रह्मचारी।
वणिक-संज्ञा पुं० १. रोज़गार करनेवाला। २. वैश्य।
वतन-संज्ञा पुं० जन्मभूमि।

लहकना–क्रि० अ० १. लहराना। २. दहकना।
लहकौर, लहकौरि–संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा और दुलहिन एक दूसरे के मुँह में कौर (ग्रास) डालते हैं।
लहजा–संज्ञा पुं० गाने या बोलने का ढंग।
लहनदार–संज्ञा पुं० ऋण देनेवाला। महाजन।
लहना–क्रि० स० प्राप्त करना। संज्ञा पुं० उधार दिया हुआ रुपया-पैसा।
लहनी–संज्ञा स्त्री० प्राप्ति।
लहबर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लंबा पहनावा। लबादा। चोगा।
लहर–संज्ञा स्त्री० ऊँची उठती हुई जल की राशि।
लहरदार–वि० जो सीधा न जाकर बल खाता हुआ गया हो।
लहर पटोर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।
लहरा–संज्ञा पुं० लहर। तरंग।
लहराना–क्रि० अ० हवा के झोंके से इधर-उधर हिलना-डोलना। क्रि० स० हवा के झोंके में इधर-उधर हिलाना।
लहरिया–संज्ञा पुं० १. लहरदार चिह्न। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें रंग-बिरंगी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी होती हैं।
लहरी–संज्ञा स्त्री० लहर। तरंग।
लहलहा–वि० [स्त्री० लहलही] १. हरा-भरा। २. आनंद से पूर्ण।
लहलहाना–क्रि० अ० १. हरी पत्तियों से भरना। २. प्रफुल्लित होना।
लहसुन–संज्ञा पुं० एक पौधा जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और मसाले के काम में आती है।
लहाछेह–संज्ञा पुं० १. नाच की एक गति। २. नाचने में तेज़ी और झपट।
लहालह†॰–वि० दे० "लहलहा"।
लहालोट–वि० १. हँसी से लोटता हुआ। २. लट्टू। मोहित।
लहुरा†–वि० [स्त्री० लहुरी] छोटा।
लहू–संज्ञा पुं० रक्त। खून।
लहेरा–संज्ञा पुं० लाह का पक्का रंग चढ़ानेवाला।
लाँक†–संज्ञा स्त्री० कमर। कटि।
लाँग–संज्ञा स्त्री० धोती का वह भाग जो पीछे की ओर कमर में खोंस लिया जाता है। काछ।
लांगल–संज्ञा पुं० खेत जोतने का हल।
लांगली–संज्ञा पुं० बलराम।
लांगूली–संज्ञा पुं० बंदर।
लाँघना–क्रि० स० इस पार से उस पार जाना।
लांछन–संज्ञा पुं० १. चिह्न। निशान। २. कलंक।
लाँबा†॰–वि० दे० "लंबा"।
लाइ–संज्ञा पुं० अग्नि।
लाई–संज्ञा स्त्री० धान का लावा।
लाक्षणिक–वि० जिससे लक्षण प्रकट हो।
लाक्षा–संज्ञा स्त्री० लाख। लाह।
लाक्षागृह–संज्ञा पुं० लाख का वह घर जिसे दुर्योधन ने पांडवों को जला देने की इच्छा से बनवाया था।
लाक्षारस–संज्ञा पुं० महावर।

वत्–संज्ञा पुं० समान।
वत्स–संज्ञा पुं० १. गाय का बच्चा। २. बालक।
वत्सनाभ–संज्ञा पुं० एक विष जिसे 'बछनाग' या 'बच्छनाग' भी कहते हैं।
वत्सर–संज्ञा पुं० वर्ष। साल।
वत्सल–वि० [स्त्री० वत्सला] बच्चे के प्रेम से भरा हुआ।
वदतोव्याघात–संज्ञा पुं० कथन का एक दोष जिसमें कोई एक बात कहकर फिर उसके विरुद्ध बात कही जाती है।
वदन–संज्ञा पुं० मुख। मुँह।
वदान्य–वि० अतिशय दाता। उदार।
वदि–संज्ञा पुं० कृष्ण पक्ष। जैसे—जेठ वदि ४।
वध–संज्ञा पुं० जान से मार डालना। हत्या।
वधिक–संज्ञा पुं० घातक। हिंसक।
वधू–संज्ञा स्त्री० १. नव-विवाहिता स्त्री। २. पुत्र की बहू।
वधूटी–संज्ञा स्त्री० दे० "वधू"।
वध्य–वि० मार डालने योग्य।
वन–संज्ञा पुं० १. वन। जंगल। २. वाटिका।
वनचर–वि० वन में भ्रमण करने या रहनेवाला।
वनज–संज्ञा पुं० १. वह जो वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न हो। २. कमल।
वनदेव–संज्ञा पुं० [स्त्री० वनदेवी] वन का अधिष्ठाता देवता।
वनमाला–संज्ञा स्त्री० वन के फूलों की माला।
वनमाली–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
वनलक्ष्मी–संज्ञा स्त्री० वन की शोभा। वनश्री।
वनवास–संज्ञा पुं० जंगल में रहना।
वनवासी–वि० [स्त्री० वनवासिनी] बस्ती छोड़कर जंगल में निवास करनेवाला।
वनस्थली–संज्ञा स्त्री० वनभूमि।
वनस्पति–संज्ञा स्त्री० वृक्षमात्र। पेड़-पौधे।
वनस्पतिशास्त्र–संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें पौधों और वृक्षों आदि के रूपों, जातियों और भिन्न भिन्न अंगों का विवेचन होता है।
वनिता–संज्ञा स्त्री० १. प्रिया। प्रियतमा। २. स्त्री।
वनौषध–संज्ञा स्त्री० जंगली जड़ी-बूटी।
वन्य–वि० १. वन में उत्पन्न होनेवाला। २. जंगली।
वपन–संज्ञा पुं० बीज बोना।
वपु–संज्ञा पुं० शरीर। देह।
वफ़ा–संज्ञा स्त्री० १. वादा पूरा करना। २. सुशीलता।
वफ़ादार–वि० [संज्ञा वफ़ादारी] वचन या कर्त्तव्य का पालन करनेवाला।
वबाल–संज्ञा पुं० १. बोझ। भार। २. आपत्ति। कठिनाई।
वमन–संज्ञा पुं० कै करना। उलटी करना।
वमि–संज्ञा स्त्री० वमन का रोग।
वयःक्रम–संज्ञा पुं० अवस्था। उम्र।
वयःसंधि–संज्ञा स्त्री० बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति।
वय–संज्ञा स्त्री० अवस्था। उम्र।
वयस्क–वि० [स्त्री० वयस्का] पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ। सयाना।
वयोवृद्ध–वि० बड़ा-बूढ़ा।
वरंच–अव्य० १. ऐसा न होकर

लाख–वि॰ सौ हज़ार।
संज्ञा स्त्री॰ एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो अनेक प्रकार के वृक्षों की टहनियों पर कई प्रकार के कीड़ों से बनता है। लाह।

लाखना–क्रि॰ अ॰ लाख लगाकर कोई छेद बंद करना।

लाखी–वि॰ लाख के रंग का। मटमैला लाल।

लाग–संज्ञा स्त्री॰ १. संबंध। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। ३. चढ़ा-ऊपरी।

लाग-डाँट–संज्ञा स्त्री॰ १. शत्रुता। २. चढ़ा-ऊपरी।

लागत–संज्ञा स्त्री॰ वह खर्च जो किसी चीज़ की तैयारी या बनाने में लगे।

लागि*†–अव्य॰ १. कारण। हेतु। २. निमित्त।

लागू†–वि॰ जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त या चरितार्थ होनेवाला।

लागे†–अव्य॰ वास्ते। लिये।

लाघव–संज्ञा पुं॰ लघु होने का भाव। अव्य॰ फुर्ती से। सहज में।

लाचार–वि॰ जिसका कुछ वश न चलता हो। मजबूर।
क्रि॰ वि॰ विवश या मजबूर होकर।

लाचारी–संज्ञा स्त्री॰ मजबूरी।

लाज–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लज्जा"।

लाजना*†–क्रि॰ अ॰ लज्जित होना। शरमाना।

लाजवंती–संज्ञा स्त्री॰ लजालू नाम का पौधा। छुई-मुई।

ला-जवाब–वि॰ १. अनुपम। बेजोड़। २. चुप।

लाज़िम–वि॰ उचित। मुनासिब। वाजिब।

लाज़िमी–वि॰ ज़रूरी। आवश्यक।

लाट–संज्ञा स्त्री॰ मोटा और ऊँचा खंभा।
संज्ञा पुं॰ एक प्राचीन देश जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं।

लाठ–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "लाट"।

लाठी–संज्ञा स्त्री॰ डंडा। लकड़ी।

लाड़–संज्ञा पुं॰ बच्चों का लालन। प्यार। दुलार।

लाड़लड़ैता–वि॰ दे॰ "लाडला"।

लाड़ला–वि॰ [स्त्री॰ लाड़ली] प्यारा। दुलारा।

लात–संज्ञा स्त्री॰ १. पैर। २. पैर से किया हुआ आघात।

लादना–क्रि॰ स॰ किसी चीज़ पर बहुत सी वस्तुएँ रखना।

लादी–संज्ञा स्त्री॰ वह गठरी जो किसी पशु पर लादी जाती है।

लानत–संज्ञा स्त्री॰ धिक्कार।

लाना–क्रि॰ अ॰ कोई चीज़ उठाकर या अपने साथ लेकर आना।

लाने*†–अव्य॰ वास्ते। लिये।

लापता–वि॰ १. जिसका पता न लगे। २. गुप्त।

लापरवा, लापरवाह–वि॰ १. जिसे किसी बात की परवा न हो। २. असावधान।

लापरवाही–संज्ञा स्त्री॰ १. बेफ़िक्री। २. असावधानी।

लाभ–संज्ञा पुं॰ १. मिलना। प्राप्ति। २. नफ़ा।

लाभकारी, लाभदायक–वि॰ गुणकारक।

लाम–संज्ञा पुं॰ सेना। फ़ौज।

लामा–संज्ञा पुं॰ तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य।

ऐसा। बल्कि। २. परंतु।

वर–संज्ञा पुं० १. किसी देवता या बड़े से माँगा हुआ मनोरथ। २. पति या दूलहा।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे—प्रियवर।

वरक़–संज्ञा पुं० १. पुस्तकों का पन्ना। २. सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर।

वरण–संज्ञा पुं० १. किसी को किसी काम के लिये चुनना या मुकर्रर करना। २. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने की रीति।

वरद–वि० [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला।

वरदान–संज्ञा पुं० किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना।

वरदानी–संज्ञा पुं० वर देनेवाला।

वरदी–संज्ञा स्त्री० वह पहनावा जो किसी खास महकमे के अफ़सरों और नौकरों के लिये मुकर्रर हो।

वरन्–अव्य० ऐसा नहीं। बल्कि।

वरना:–अव्य० नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो।

वरम–संज्ञा पुं० दे० "वर्म"।

वरयात्रा–संज्ञा स्त्री० दूलहे का बाजे-गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना।

वररुचि–संज्ञा पुं० एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित, वैयाकरण और कवि।

वराटिका–संज्ञा स्त्री० कौड़ी।

वरानना–संज्ञा स्त्री० सुंदर स्त्री।

वराह–संज्ञा पुं० शूकर। सूअर।

वराहमिहिर–संज्ञा पुं० ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य।

वरिष्ठ–वि० श्रेष्ठ। पूजनीय।

वरुण–संज्ञा पुं० १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति कहा गया है। २. जल।

वरुणानी–संज्ञा स्त्री० वरुण की स्त्री।

वरुणालय–संज्ञा पुं० समुद्र।

वरूथिनी–संज्ञा स्त्री० सेना।

वर्ग–संज्ञा पुं० एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। जाति। कोटि। श्रेणी।

वर्गफल–संज्ञा पुं० वह गुणन-फल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो।

वर्गमूल–संज्ञा पुं० किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन वही वर्गांक हो। जैसे—२५ का वर्गमूल ५ होगा।

वर्गलाना–क्रि० स० बहकाना। फुसलाना।

वर्जन–संज्ञा पुं० [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] मनाही। मुमानियत।

वर्जित–वि० १. त्यागा हुआ। त्यक्त। २. निषिद्ध।

वर्ज्य–वि० छोड़ने योग्य। त्याज्य।

वर्ण–संज्ञा पुं० १. पदार्थों के लाल, पीले आदि भेदों का नाम। रंग। २. जन-समुदाय के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—जो प्राचीन आर्य्यों ने किए थे। जाति। ३. अक्षर।

वर्णन–संज्ञा पुं० [वि० वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित] १. चित्रण। २. कथन।

वर्णमाला–संज्ञा स्त्री० अक्षरों के रूपों की यथा-श्रेणी लिखित सूची।

वर्णविचार–संज्ञा पुं० आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि

वि० दे० "लंबा"।
लामें†-क्रि० वि० दूर।
लाय*-संज्ञा स्त्री० लपट।
लायक़-वि० १. उचित। ठीक। २. सुयोग्य। गुणवान्।
लायकी-संज्ञा स्त्री० लायक होने का भाव या धर्म्म।
लार-संज्ञा स्त्री० वह पतला लसदार थूक जो मुँह में से तार के रूप में निकलता है।
लाल-संज्ञा पुं० १. छोटा और प्रिय बालक। २. एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया।
संज्ञा पुं० दे० "मानिक"।
वि० १. रक्तवर्ण। २. बहुत अधिक क्रुद्ध।
लालच-संज्ञा पुं० [वि० लालची] कोई चीज़ पाने की बहुत बुरी तरह इच्छा करना।
लालची-वि० लोभी।
लालटेन-संज्ञा स्त्री० किसी प्रकार का वह खाना आदि जिसमें तेल का खज़ाना और जलाने के लिये बत्ती लगी रहती है, और जिसके चारों ओर शीशा या कोई पारदर्शी पदार्थ लगा रहता है। कंदील।
लालड़ी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल नगीना।
लालन-संज्ञा पुं० प्रेमपूर्वक बालकों का आदर करना।
संज्ञा पुं० प्रिय पुत्र। प्यारा बच्चा।
लालना*-क्रि० स० दुलार करना। प्यार करना।
लाल-बुझक्कड़-संज्ञा पुं० बातों का अटकलपच्चू मतलब लगानेवाला।
लालमिर्च-संज्ञा स्त्री० दे० "मिर्च"।
लालसा-संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक इच्छा या चाह।
लाल सागर-संज्ञा पुं० भारतीय महासागर का वह अंश जो अरब और अफ्रिका के मध्य में पड़ता है।
लालसिखी†-संज्ञा पुं० मुर्ग़ा।
लालसी*-वि० अभिलाषा या इच्छा करनेवाला।
लाला-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का संबोधन। महाशय। २. कायस्थ जाति का सूचक एक शब्द। ३. छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन।
संज्ञा पुं० पोस्त का लाल रंग का फूल।
लालायित-वि० ललचाया हुआ।
लालित-वि० दुलारा। प्यारा।
लालित्य-संज्ञा पुं० ललित का भाव। सौंदर्य।
लालिमा-संज्ञा स्त्री० लाली।
लाली-संज्ञा स्त्री० १. लाल होने का भाव। सुर्खी। २. इज़्ज़त।
लाव*†-संज्ञा स्त्री० आग।
लावक-संज्ञा पुं० लवा पक्षी।
लावण्य-संज्ञा पुं० १. लवण का भाव या धर्म। २. अत्यंत सुंदरता।
लावदार-वि० (तोप) जो छोड़ी जाने या रंजक देने के लिये तैयार हो।
लावनी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद। ख्याल।
लावल्द-वि० निःसंतान।
लावा-संज्ञा पुं० भूना हुआ धान, या रामदाना आदि जो भुनने के कारण फूटकर फूल जाता है। खील।
लावा-परछन-संज्ञा पुं० विवाह के समय की एक रीति।
लावारिस-संज्ञा पुं० [वि० लावारिसी] वह जिसका कोई उत्तराधिकारी या

के नियमों का वर्णन हो।
वर्णवृत्त–संज्ञा पुं० वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।
वर्णसंकर–संज्ञा पुं० वह व्यक्ति या जाति जो दो भिन्न भिन्न जातियों के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हो। दोगला।
वर्णित–वि० १. कथित। २. जिसका वर्णन हो चुका हो।
वर्ण्य–वि० वर्णन के योग्य।
वर्त्तन–संज्ञा पुं० [वि० वर्त्तित] बर-ताव। व्यवहार।
वर्त्तमान–वि० १. चलता हुआ। २. मौजूद।
संज्ञा पुं० व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक, जिससे सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है।
वर्त्तिका–संज्ञा स्त्री० १. बत्ती। २. शलाका।
वर्त्तित–वि० १. संपादित किया हुआ। २. चलाया हुआ।
वर्त्ती–वि० [स्त्री० वर्त्तिनी] बरतने-वाला।
वर्त्तुल–वि० गोल। वृत्ताकार।
वर्त्म–संज्ञा पुं० मार्ग। पंथ।
वर्दी–संज्ञा स्त्री० दे० "वरदी"।
वर्द्धन–संज्ञा पुं० [वि० वर्द्धित] १. बढ़ाना। २ वृद्धि।
वर्द्धमान–वि० जो बढ़ता जा रहा हो। संज्ञा पुं० जैनियों के २४वें जिन, महावीर।
वर्द्धित–वि० बढ़ा हुआ।
वर्म–संज्ञा पुं० कवच। बकतर।
वर्मा–संज्ञा पुं० क्षत्रियों आदि की उपाधि जो उनके नाम के अंत में लगाई जाती है।
वर्य्य–वि० श्रेष्ठ। जैसे—विद्वद्वर्य्य।
वर्वर–वि० १. असभ्य। २. नीच।
वर्ष–संज्ञा पुं० काल का एक मान जिसमें बारह महीने होते हैं।
वर्षगाँठ–संज्ञा स्त्री० दे० "बरस गाँठ"।
वर्षण–संज्ञा पुं० [वि० वर्षित] वृष्टि। बरसना।
वर्षफल–संज्ञा पुं० फलित ज्योतिष में वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।
वर्षा–संज्ञा स्त्री० १. वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है। २. पानी बरसने की क्रिया या भाव।
वर्षाकाल–संज्ञा पुं० बरसात।
वर्हो–संज्ञा पुं० मयूर। मोर।
वलय–संज्ञा पुं० १. मंडल। २. चूड़ी।
वलवला–संज्ञा पुं० उमंग। आवेश।
वलाहक–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।
वलि–संज्ञा पुं० १. देवता को चढ़ाने की वस्तु। २. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था।
वलित–वि० १. बल खाया हुआ। २. जिसमें झुर्रियाँ पड़ी हों।
वली–संज्ञा स्त्री० झुर्री। शिकन।
संज्ञा पुं० मालिक। स्वामी।
वल्कल–संज्ञा पुं० वृक्ष की छाल।
वल्द–संज्ञा पुं० पुत्र।
जैसे—"गोकुल वल्द बलदेव" अर्थात् 'गोकुल, बेटा बलदेव का'।

वारिस न हो।

लाश-संज्ञा स्त्री० किसी प्राणी का मृतक देह। शव।

लासा-संज्ञा पुं० कोई लसदार चीज़। लुआब।

लासानी-वि० अद्वितीय। बेजोड़।

लास्य-संज्ञा पुं० १. नृत्य। नाच। २. वह नृत्य जो कोमल अंगों के द्वारा हो और जिससे शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन होता हो।

लाह॰-संज्ञा स्त्री० लाख। चपड़ा। संज्ञा पुं० लाभ। नफ़ा।

लाहु॰-संज्ञा पुं० नफ़ा। लाभ।

लाहौल-संज्ञा पुं० एक अरबी वाक्य का पहला शब्द जिसका व्यवहार प्रायः भूत-प्रेत आदि को भगाने या घृणा प्रकट करने के लिये किया जाता है।

लिंग-संज्ञा पुं० १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. गुप्त इंद्रिय। ३. शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति। ४. व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है।

लिंगदेह-संज्ञा पुं० वह सूक्ष्म शरीर जो इस स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्मों के फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है। (अध्यात्म)

लिंगायत-संज्ञा पुं० एक शैव संप्रदाय जिसका प्रचार दक्षिण में बहुत है।

लिंगेंद्रिय-संज्ञा पुं० पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

लिए-हिंदी का एक कारक-चिह्न जो संप्रदान में आता है।

लिक्खाड़-संज्ञा पुं० बहुत लिखनेवाला। भारी लेखक। (व्यंग्य)

लिखधार॰-संज्ञा पुं० लिखनेवाला। मुहर्रिर या मुंशी।

लिखना-क्रि० स० १. चिह्न करना। २. स्याही में डूबी हुई कलम से अक्षरों की आकृति बनाना।

लिखाई-संज्ञा स्त्री० १. लेख। २. लिखने का ढंग। ३. लिखने की मज़दूरी।

लिखाना-क्रि० स० दूसरे के द्वारा लिखने का काम कराना।

लिखापढ़ी-संज्ञा स्त्री० १. लिखने-पढ़ने का काम। २. पत्र-व्यवहार। ३. किसी विषय को कागज़ पर लिखकर निश्चित या पक्का करना।

लिखावट-संज्ञा स्त्री० लिखने का ढंग।

लिखित-वि० लिखा हुआ। अंकित।

लिच्छवि-संज्ञा पुं० एक इतिहास-प्रसिद्ध राजवंश जिसका राज्य नैपाल, मगध और कोशल में था।

लिटाना-क्रि० स० दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लिट्ट-संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० लिट्टी] मोटी रोटी। बाटी।

लिपटना-क्रि० अ० एक वस्तु का दूसरी को घेरकर उससे खूब सट जाना। चिमटना।

लिपटाना-क्रि० स० १. चिमटाना। २. आलिंगन करना।

लिपना-क्रि० अ० लीपा या पोता जाना।

लिपाई-संज्ञा स्त्री० लीपने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

लिपाना-क्रि० स० रंग या किसी

वल्दियत–संज्ञा स्त्री० पिता के नाम का परिचय।

वल्मीक–संज्ञा पुं० १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। २. वाल्मीकि मुनि।

वल्लभ–वि० प्रियतम। प्यारा। संज्ञा पुं० १. पति। २. वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य्य।

वल्लभा–संज्ञा स्त्री० प्रिय स्त्री।

वल्लभाचार्य्य–संज्ञा पुं० दे० "वल्लभ" २.।

वल्लरि, वल्लरी–संज्ञा स्त्री० १. वल्ली। २. लता।

वल्ली–संज्ञा स्त्री० लता। बेल।

वश–संज्ञा पुं० क़ाबू। अधिकार।

वशवर्ती–वि० जो दूसरे के वश में रहे।

वशिता–संज्ञा स्त्री० १. अधीनता। २. तावेदारी।

वशित्व–संज्ञा पुं० वशता।

वशिष्ठ–संज्ञा पुं० दे० "वसिष्ठ"।

वशी–वि० [स्त्री० वशिनी] १. अपने को वश में रखनेवाला। २. अधीन।

वशीकरण–संज्ञा पुं० [वि० वशीकृत] १. वश में लाने की क्रिया। २. मणि, मंत्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।

वशीभूत–वि० दूसरे की इच्छा के अधीन।

वश्य–वि० वश में आनेवाला।

वश्यता–संज्ञा स्त्री० अधीनता।

वसंत–संज्ञा पुं० [वि० वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से प्रधान। बहार का मौसिम। २. शीतला रोग।

वसंतदूत–संज्ञा पुं० १. आम का वृक्ष। २. कोयल।

वसंतदूती–संज्ञा स्त्री० कोकिला। कोयल।

वसंत पंचमी–संज्ञा स्त्री० माघ महीने की शुक्लपंचमी।

वसंती–संज्ञा पुं० दे० "बसंती"।

वसंतोत्सव–संज्ञा पुं० एक उत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था। मदनोत्सव।

वसन–संज्ञा पुं० वस्त्र।

वसवास–संज्ञा पुं० [वि० वसवासी] १. भ्रम। संदेह। २. प्रलोभन या मोह।

वसह–संज्ञा पुं० बैल।

वसिष्ठ–संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि जिनका उल्लेख वेदों से लेकर रामायण, महाभारत और पुराणों आदि तक में है।

वसीक़ा–संज्ञा पुं० वह धन जो इस उद्देश्य से सरकारी ख़ज़ाने में जमा किया जाय कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करे।

वसीयत–संज्ञा स्त्री० अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के संबंध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है।

वसीयतनामा–संज्ञा पुं० वह लेख जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि मेरी संपत्ति का विभाग और प्रबंध मेरे मरने के पीछे किस प्रकार हो।

वसीला–संज्ञा पुं० ज़रिया। द्वार।

वसुंधरा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

वसु–संज्ञा पुं० १. देवताओं का एक

गीली वस्तु की तह चढ़वाना। पुताना।

लिपि–संज्ञा स्त्री० १. अक्षर या वर्ण के अंकित चिह्न। २. अक्षर लिखने की प्रणाली। जैसे—ब्राह्मी लिपि, फ़ारसी लिपि।

लिपिबद्ध–वि० लिखा हुआ। लिखित।

लिप्त–वि० १. लिपा हुआ। २. खूब तत्पर। अनुरक्त।

लिप्सा–संज्ञा स्त्री० लालच। लोभ।

लिफ़ाफ़ा–संज्ञा पुं० काग़ज़ की बनी हुई वह चौकोर थैली जिसके अंदर काग़ज़-पत्र रखकर भेजे जाते हैं।

लियड़ी–संज्ञा स्त्री० १. पुलिसवालों का सामान। २. असबाब।

लिबास–संज्ञा पुं० पहनने का कपड़ा। पोशाक।

लियाक़त–संज्ञा स्त्री० योग्यता।

लिलाट, लिलार०†–संज्ञा पुं० दे० "ललाट"।

लिवाना–क्रि० स० लेने या लाने का काम दूसरे से कराना।

लिसोड़ा–संज्ञा पुं० एक मँझोला पेड़ जिसके फल छोटे बेर के बराबर होते हैं।

लिहाज़–संज्ञा पुं० १. व्यवहार या बरताव में किसी बात का ध्यान। २. मुरव्वत।

लिहाड़ा–वि० १. वाहियात। गिरा-हुआ। २. खराब।

लिहाड़ी†–संज्ञा स्त्री० उपहास। निंदा।

लिहाफ़–संज्ञा पुं० रात को सोते समय ओढ़ने का रूईदार कपड़ा।

लिहित०–वि० चाटता हुआ।

लीक–संज्ञा स्त्री० लकीर। रेखा।

लीख–संज्ञा स्त्री० जूँ का अंडा।

लीचड़–वि० सुस्त। काहिल।

लीची–संज्ञा स्त्री० एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसका फल मीठा होता है।

लीझी–संज्ञा स्त्री० सीठी।

वि० १. नीरस। निस्सार। २. निकम्मा।

लीद–संज्ञा स्त्री० घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन–वि० [भाव० लीनता] १. जो किसी वस्तु में समा गया हो। २. तन्मय।

लीपना–क्रि० स० किसी गीली वस्तु की पतली तह चढ़ाना।

लीला†–संज्ञा पुं० नील।

वि० नीला।

लीलना–क्रि० स० गले के नीचे पेट में उतारना।

लीला–संज्ञा स्त्री० १. वह व्यापार जो केवल मनोरंजन के लिये किया जाय। २. मनुष्यों के मनोरंजन के लिये किए हुए ईश्वरावतारों का अभिनय।

वि० नीला।

लीलापुरुषोत्तम–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।

लीलावती–संज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य्य की पत्नी जिसने लीलावती नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी।

लुँगाड़ा–संज्ञा पुं० शोहदा। लुच्चा।

लुंगी–संज्ञा स्त्री० धोती के स्थान पर कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा। तहमत।

लुंचन–संज्ञा पुं० चुटकी से पकड़कर

गण जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। २. रत्न।

वसुदा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

वसुदेव–संज्ञा पुं० यदुवंशियों के शूर-कुल के एक राजा जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

वसुधा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

वसुधारा–संज्ञा स्त्री० जैनों की एक देवी।

वसुमती–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

वसूल–वि० १. मिला हुआ। २. जो चुका लिया गया हो।

वसूली–संज्ञा स्त्री० दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम।

वस्ति–संज्ञा स्त्री० १. पेड़ू। २. मूत्राशय।

वस्तिकर्म–संज्ञा पुं० लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों में पिचकारी देना।

वस्तु–संज्ञा स्त्री० [वि० वास्तव, वास्तविक] १ वह जिसका अस्तित्व या सत्ता हो। २. गोचर पदार्थ। चीज़।

वस्तुतः–अव्य० यथार्थतः। सचमुच।

वस्त्र–संज्ञा पुं० कपड़ा।

वस्ल–संज्ञा पुं० दो चीज़ों का मेल। मिलन।

वह–सर्व० एक शब्द जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है।

वहन–संज्ञा पुं० [वि० वहनीय, वहमान, वहित] खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना।

वहम–संज्ञा पुं० मिथ्या धारणा। झूठा ख़याल।

वहमी–वि० वहम करनेवाला।

वहशत–संज्ञा स्त्री० जंगलीपन। असभ्यता।

वहशी–वि० जंगल में रहनेवाला।

वहाँ–अव्य० उस जगह।

वहाबी–संज्ञा पुं० अब्दुल वहाब नज्दी का चलाया हुआ मुसलमानों का एक संप्रदाय।

वहिः–अव्य० जो अंदर न हो। बाहर।

वहित्र–संज्ञा पुं० जहाज़।

वहिरंग–संज्ञा पुं० १. शरीर का बाहरी भाग। २. बाहरी भाग।

वहिर्गत–वि० जो बाहर गया हो। निकला हुआ।

वहिष्कृत–वि० १. बाहर निकाला हुआ। २. त्यागा हुआ।

वहीं–अव्य० उसी जगह।

वही–सर्व० उस तृतीय व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो।

वह्नि–संज्ञा पुं० अग्नि।

वांछनीय–वि० चाहने योग्य।

वांछा–संज्ञा स्त्री० [वि० वांछित, वांछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

वांछित–वि० इच्छित। चाहा हुआ।

वा–अव्य० विकल्प या संदेहवाचक शब्द। या। अथवा।

⚹† सर्व० व्रजभाषा में प्रथम पुरुष का वह एकवचन रूप जो कारक-चिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे—वाको, वासों।

वाक्–संज्ञा पुं० १. वाणी। २ सरस्वती।

वाक़ई–वि० सच। वास्तव। अव्य० सचमुच। यथार्थ में।

वाक़फ़ियत–संज्ञा स्त्री० १. जानकारी। २. परिचय।

उखाड़ना। नोचना।
लुंज–वि० बिना हाथ-पैर का।
लुंठन–क्रि० स० [वि० लुंठित] लुढ़कना।
लुंड–संज्ञा पुं० बिना सिर का धड़। रुंड।
लुंड-मुंड–वि० जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों; केवल धड़ का लोथड़ा रह गया हो।
लुंबिनी–संज्ञा स्त्री० कपिलवस्तु के पास का एक वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।
लुआठा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० लुआठी] सुलगती हुई लकड़ी।
लुआब–संज्ञा पुं० लसदार गूदा।
लुक–संज्ञा पुं० चमकदार रोगन। वार्निश।
लुकठी–संज्ञा स्त्री० लुआठा।
लुकना–क्रि० अ० आड़ में होना। छिपना।
लुक़मा–संज्ञा पुं० ग्रास। कौर।
लुकाना–क्रि० स० आड़ में करना। छिपाना।
† क्रि० अ० लुकना। छिपना।
लुकेठा†–संज्ञा पुं० दे० "लुआठा"।
लुगदी–संज्ञा स्त्री० गीली वस्तु का पिंड या गोला।
लुगरा†–संज्ञा पुं० १. कपड़ा। २. ओढ़नी।
लुगरी–संज्ञा स्त्री० फटी पुरानी धोती।
लुगाई–संज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।
लुग्गा†–संज्ञा पुं० दे० "लूगा"।
लुचुई†–संज्ञा स्त्री० मैदे की पतली पूरी। लूची।
लुच्चा–वि० [स्त्री० लुची] १. दुराचारी। २. शोहदा।
लुटंत*†–संज्ञा स्त्री० लूट।
लुटना–क्रि० अ० दूसरे के द्वारा लूटा जाना।
* क्रि० अ० दे० "लुठना"।
लुटाना–क्रि० स० १. दूसरे को लूटने देना। २. बहुतायत से बाँटना। अंधाधुंध दान करना।
लुटिया–संज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।
लुटेरा–संज्ञा पुं० लूटनेवाला। डाकू।
लुठना*–क्रि० अ० भूमि पर पड़ना। लोटना।
लुठाना*–क्रि० स० भूमि पर डालना।
लुढ़कना–क्रि० अ० गेंद की तरह नीचे-ऊपर चक्कर खाते हुए गमन करना।
लुढ़काना–क्रि० स० इस प्रकार फेंकना या छोड़ना कि चक्कर खाते हुए कुछ दूर चला जाय।
लुत्थ*–संज्ञा स्त्री० दे० "लोथ"।
लुत्फ़–संज्ञा पुं० १. मज़ा। आनंद। २. रोचकता।
लुनना–क्रि० स० खेत की तैयार फ़सल काटना।
लुनाई*–संज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।
लुनेरा–संज्ञा पुं० खेत की फ़सल काटनेवाला। लुननेवाला।
लुप्त–वि० १. छिपा हुआ। २. अदृश्य।
लुब्ध–वि० १. लुभाया हुआ। ललचाया हुआ। २. मोहित।
लुब्धक–संज्ञा पुं० व्याध। बहेलिया।
लुब्धना*–क्रि० अ० दे० "लुबुधना"।
लुब्बलुबाब–संज्ञा पुं० किसी बात का तत्त्व। सारांश।
लुभाना–क्रि० अ० लुब्ध होना। क्रि० स० मोहित करना। रिझाना।

वाक़या–संज्ञा पुं० १. घटना । २. समाचार ।
वाक़िफ़–वि० १. जानकार । ज्ञाता । २. जानकारी रखनेवाला । अनुभवी ।
वाक्छल–संज्ञा पुं० न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक ।
वाक्पटु–वि० बात करने में चतुर ।
वाक़फ़ियत–संज्ञा स्त्री० जानकारी ।
वाक्य–संज्ञा पुं० वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो । जुमला ।
वाक्सिद्धि–संज्ञा स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे ।
वागीश–संज्ञा पुं० १. बृहस्पति । २. कवि ।
वि० अच्छा बोलनेवाला ।
वागीश्वरी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती ।
वाग्दत्त–वि० जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों ।
वाग्दत्ता–संज्ञा स्त्री० वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो ।
वाग्दान–संज्ञा पुं० कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा ।
वाग्मी–संज्ञा पुं० १. अच्छा वक्ता । २. पंडित ।
वाग्विलास–संज्ञा पुं० आनंदपूर्वक परस्पर बात-चीत करना ।
वाङ्मय–वि० वचन द्वारा किया हुआ ।
संज्ञा पुं० साहित्य ।
वाच–संज्ञा स्त्री० वाचा । वाणी ।
वाचा–संज्ञा स्त्री० दे० "वाच" ।
वाचक–वि० बतानेवाला ।
वाचन–संज्ञा पुं० पढ़ना ।
वाचनालय–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचार पत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों ।
वाचस्पति–संज्ञा पुं० बृहस्पति ।
वाचा–संज्ञा स्त्री० १. वाणी । २. वचन ।
वाचाबंध–वि० प्रतिज्ञाबद्ध ।
वाचाल–वि० १. बोलने में तेज़ । २. बकवादी ।
वाची–वि० प्रकट करनेवाला । सूचक ।
वाच्य–वि० कहने योग्य ।
संज्ञा पुं० १. अभिधेयार्थ । २. दे० "वाच्यार्थ" ।
वाच्यार्थ–संज्ञा पुं० वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो । मूल शब्दार्थ ।
वाच्यावाच्य–संज्ञा पुं० भली-बुरी या कहने न कहने योग्य बात ।
वाजपेई–संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी" ।
वाजपेय–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है ।
वाजपेयी–संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो । २. ब्राह्मणों की एक उपाधि । ३. अत्यंत कुलीन पुरुष ।
वाजसनेय–संज्ञा पुं० यजुर्वेद की एक शाखा ।
वाजिब–वि० उचित । ठीक ।
वाजिबी–वि० उचित । ठीक ।
वाजी–संज्ञा पुं० घोड़ा ।
वाजीकरण–संज्ञा पुं० वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य्य की वृद्धि हो ।
वाट–संज्ञा पुं० मार्ग । रास्ता ।

वाटिका-संज्ञा स्त्री० बाग। बगीचा।
वाड़वाग्नि-संज्ञा स्त्री० समुद्र के अंदर की आग।
वाण-संज्ञा पुं० धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खींचकर छोड़ा जाता है। तीर।
वाणिज्य-संज्ञा पुं० दे० "वाणिज्य"।
वाणी-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. वचन।
वात-संज्ञा पुं० १. वायु। २. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।
वातज-वि० वायु द्वारा उत्पन्न।
वातजात-संज्ञा पुं० हनुमान्।
वात-प्रकोप-संज्ञा पुं० वायु का बढ़ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।
वातापि-संज्ञा पुं० एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।
वातायन-संज्ञा पुं० झरोखा। छोटी खिड़की।
वातुल-संज्ञा पुं० बावला। उन्मत्त।
वात्सल्य-संज्ञा पुं० माता-पिता का संतति के प्रति प्रेम।
वात्स्यायन-संज्ञा पुं० १. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २. कामसूत्र-प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।
वाद-संज्ञा पुं० १. वह बात-चीत जो किसी तत्त्व के निर्णय के लिये हो। २. कोई निश्चित सिद्धांत।
वादक-संज्ञा पुं० बाजा बजानेवाला।
वादन-संज्ञा पुं० बाजा बजाना।
वाद-प्रतिवाद-संज्ञा पुं० बहस।
वादरायण-संज्ञा पुं० वेदव्यास।
वाद-विवाद-संज्ञा पुं० बहस।
वादा-संज्ञा पुं० प्रतिज्ञा। इकरार।
वादी-संज्ञा पुं० १. वक्ता। २. फ़रियादी। मुद्दई। ३. पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।
वाद्य-संज्ञा पुं० बाजा।
वानप्रस्थ-संज्ञा पुं० प्राचीन भारतीय आर्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।
वानर-संज्ञा पुं० बंदर।
वापस-वि० लौटा हुआ। फिरता।
वापसी-वि० लौटा हुआ या फेरा हुआ।
वापिका, वापी-संज्ञा स्त्री० छोटा जलाशय। बावली।
वाम-वि० १. बायाँ। २. टेढ़ा। कुटिल।
वामदेव-संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. एक ऋषि।
वामन-वि० बौना। छोटे डील का। संज्ञा पुं० विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये हुआ था।
वाम-मार्ग-संज्ञा पुं० तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि का विधान है।
वामा-संज्ञा स्त्री० स्त्री।
वायव्य-संज्ञा पुं० उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा।
वायस-संज्ञा पुं० कौआ। काक।
वायु-संज्ञा स्त्री० हवा। वात।
वायुकोण-संज्ञा पुं० पश्चिमोत्तर दिशा।
वायुमंडल-संज्ञा पुं० आकाश।
वारंवार-अव्य० दे० "बारंबार"।

नव देवताओं के गण।
विश्वेश्वर-संज्ञा पुं० ईश्वर।
विष-संज्ञा पुं० ज़हर।
विषण्ण-वि० दुखी।
विषधर-संज्ञा पुं० साँप।
विषमंत्र-संज्ञा पुं० १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। २. सँपेरा।
विषम-वि० १. असमान। २. बहुत कठिन।
विषम ज्वर-संज्ञा पुं० जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।
विषमता-संज्ञा स्त्री० १. विषम होने का भाव। २. वैर।
विषमवाण-संज्ञा पुं० कामदेव।
विषय-संज्ञा पुं० १. वह जिस पर कुछ विचार किया जाय। २. स्त्री संभोग।
विषयक-अव्य० विषय का।
विषयी-संज्ञा पुं० कामी।
विषाक्त-वि० जिसमें विष मिला हो। ज़हरीला।
विषाण-संज्ञा पुं० पशु का सींग।
विषाद-संज्ञा पुं० [वि० विषादी] खेद।
विषुवतरेखा-संज्ञा स्त्री० ज्योतिष के कार्य्य के लिये कल्पित एक रेखा जो पृथ्वी-तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर मानी जाती है।
विष्टंभ-संज्ञा पुं० बाधा।
विष्ठा-संज्ञा स्त्री० मल।
विष्णु-संज्ञा पुं० हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो सृष्टि का भरण-पोषण और पालन करनेवाले माने जाते हैं।
विष्णुगुप्त-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध ऋषि और वैयाकरण जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे।
विष्णुपदी-संज्ञा स्त्री० गंगा नदी।
विष्णुलोक-संज्ञा पुं० वैकुंठ।
विसदृश-वि० विपरीत।
विसर्ग-संज्ञा पुं० १. दान। २. त्याग। ३. व्याकरण में एक वर्ण जिसमें ऊपर नीचे दो बिंदु होते हैं और जिनका उच्चारण प्रायः अर्ध ह के समान होता है।
विसर्जन-संज्ञा पुं० १. परित्याग। २. विदा होना।
विसर्पी-वि० फैलनेवाला।
विसाल-संज्ञा पुं० १. संयोग। २. मृत्यु।
विसूचिका-संज्ञा स्त्री० वैद्यक के अनुसार एक रोग जिसे कुछ लोग "हैज़ा" मानते हैं।
विस्तार-संज्ञा पुं० फैलाव।
विस्तीर्ण-वि० १. विस्तृत। २. विशाल।
विस्तृत-वि० [संज्ञा विस्तार, विस्तृति] १. लंबा-चौड़ा। २. विशाल।
विस्फोट-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ का गरमी आदि के कारण उबल या फूट पड़ना। २. ज़हरीला और ख़राब फोड़ा।
विस्फोटक-संज्ञा पुं० १. ज़हरीला फोड़ा। २. भभकनेवाला पदार्थ।
विस्मय-संज्ञा पुं० आश्चर्य।
विस्मरण-संज्ञा पुं० भूल जाना।
विस्मित-वि० चकित।
विस्मृत-वि० भूला हुआ।
विस्मृति-संज्ञा स्त्री० विस्मरण।
विहंग-संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. बाण।
विहग-संज्ञा पुं० दे० "विहंग"।
विहार-संज्ञा पुं० १. टहलना। २.

वाक़या–संज्ञा पुं० १. घटना। २. समाचार।
वाक़िफ़–वि० १. जानकार। ज्ञाता। २. जानकारी रखनेवाला। अनुभवी।
वाक्छल–संज्ञा पुं० न्यायशास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक।
वाक्पटु–वि० बात करने में चतुर।
वाक़फ़ियत–संज्ञा स्त्री० जानकारी।
वाक्य–संज्ञा पुं० वह पद समूह जिससे श्रोता को वक्ता के अभिप्राय का बोध हो। जुमला।
वाक्सिद्धि–संज्ञा स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।
वागीश–संज्ञा पुं० १. बृहस्पति। २. कवि।
वि० अच्छा बोलनेवाला।
वागीश्वरी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।
वाग्दत्त–वि० जिसे दूसरे को देने के लिये कह चुके हों।
वाग्दत्ता–संज्ञा स्त्री० वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।
वाग्दान–संज्ञा पुं० कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें ब्याहूँगा।
वाग्मी–संज्ञा पुं० १. अच्छा वक्ता। २. पंडित।
वाग्विलास–संज्ञा पुं० आनंदपूर्वक परस्पर बात-चीत करना।
वाङ्मय–वि० वचन द्वारा किया हुआ।
संज्ञा पुं० साहित्य।
वाच–संज्ञा स्त्री० वाचा। वाणी।
वाचा–संज्ञा स्त्री० दे० "वाच"।
वाचक–वि० बतानेवाला।
वाचन–संज्ञा पुं० पढ़ना।
वाचनालय–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ बैठकर लोग समाचार पत्र या पुस्तकें आदि पढ़ते हों।
वाचस्पति–संज्ञा पुं० बृहस्पति।
वाचा–संज्ञा स्त्री० १. वाणी। २. वचन।
वाचाबंध*–वि० प्रतिज्ञाबद्ध।
वाचाल–वि० १. बोलने में तेज़। २. बकवादी।
वाची–वि० प्रकट करनेवाला। सूचक।
वाच्य–वि० कहने योग्य।
संज्ञा पुं० १. अभिधेयार्थ। २. दे० "वाच्यार्थ"।
वाच्यार्थ–संज्ञा पुं० वह अभिप्राय जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। मूल शब्दार्थ।
वाच्यावाच्य–संज्ञा पुं० भली-बुरी या कहने न कहने योग्य बात।
वाजपेई*–संज्ञा पुं० दे० "वाजपेयी"।
वाजपेय–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रौत यज्ञों में पाँचवाँ है।
वाजपेयी–संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २. ब्राह्मणों की एक उपाधि। ३. अत्यंत कुलीन पुरुष।
वाजसनेय–संज्ञा पुं० यजुर्वेद की एक शाखा।
वाजिब–वि० उचित। ठीक।
वाजिबी–वि० उचित। ठीक।
वाजी–संज्ञा पुं० घोड़ा।
वाजीकरण–संज्ञा पुं० वह आयुर्वेदिक प्रयोग जिससे मनुष्य में वीर्य की वृद्धि हो।
वाट–संज्ञा पुं० मार्ग। रास्ता।

व्यवसाय–संज्ञा पुं० १. जीविका। २. रोज़गार।
व्यवसायी–संज्ञा पुं० १. व्यवसाय करनेवाला। २. रोज़गारी।
व्यवस्था–संज्ञा स्त्री० १. किसी कार्य्य का वह विधान जो शास्त्रों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित हुआ हो। २. प्रबंध।
व्यवस्थापक–संज्ञा पुं० १. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला। २. प्रबंधकर्त्ता। इंतज़ामकार।
व्यवस्थापत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था हो।
व्यवहार–संज्ञा पुं० बरताव।
व्यष्टि–संज्ञा स्त्री० एक अंश। समाज की एकाई।
व्यसन–संज्ञा पुं० १. विपत्ति। २. किसी प्रकार का शौक़।
व्यसनी–संज्ञा पुं० वह जिसे किसी प्रकार का व्यसन या शौक़ हो।
व्यस्त–वि० १. घबराया हुआ। २. काम में लगा या फँसा हुआ।
व्याकरण–संज्ञा पुं० वह विद्या या शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शुद्ध रूपों और वाक्यों के प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है।
व्याकुल–संज्ञा पुं० [भाव० व्याकुलता] घबराया हुआ।
व्याक्रोश–संज्ञा पुं० तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना।
व्याख्या–संज्ञा स्त्री० टीका।
व्याख्याता–संज्ञा पुं० १. व्याख्या करनेवाला। २. भाषण करनेवाला।
व्याख्यान–संज्ञा पुं० १. किसी विषय की व्याख्या या टीका करने अथवा विवरण बतलाने का काम। २. वक्तृता।
व्याघात–संज्ञा पुं० १. विघ्न। २. आघात।
व्याघ्र–संज्ञा पुं० बाघ।
व्याघ्रचर्म्म–संज्ञा पुं० बाघ या शेर की खाल जिस पर प्रायः लोग बैठते हैं।
व्याघ्रनख–संज्ञा पुं० शेर का नाख़ून।
व्याज–संज्ञा पुं० १. कपट। २. देर। संज्ञा पुं० दे० "ब्याज"।
व्याजनिंदा–संज्ञा स्त्री० ऐसी निंदा जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निंदा न जान पड़े।
व्याजोक्ति–संज्ञा स्त्री० कपट भरी बात।
व्याध–संज्ञा पुं० वह जो जंगली पशुओं आदि का शिकार करता हो।
व्याधि–संज्ञा स्त्री० १. रोग। २. आफ़त।
व्यापक–वि० १. चारों ओर फैला हुआ। २. घेरने या ढकनेवाला।
व्यापना–क्रि० अ० किसी चीज़ के अंदर फैलना।
व्यापार–संज्ञा पुं० १. कर्म। २. रोज़गार।
व्यापारी–संज्ञा पुं० रोज़गारी। वि० व्यापार-संबंधी।
व्याप्ति–संज्ञा स्त्री० १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव। २. न्याय के अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना।
व्यामोह–संज्ञा पुं० मोह।

वाटिका–संज्ञा स्त्री॰ बाग। बगीचा।
वाड़वाग्नि–संज्ञा स्त्री॰ समुद्र के अंदर की आग।
वाण–संज्ञा पुं॰ धारदार फल लगा हुआ एक छोटा अस्त्र जो धनुष की डोरी पर खींचकर छोड़ा जाता है। तीर।
वाणिज्य–संज्ञा पुं॰ दे॰ "वाणिज्य"।
वाणी–संज्ञा स्त्री॰ १. सरस्वती। २. वचन।
वात–संज्ञा पुं॰ १. वायु। २. वैद्यक के अनुसार शरीर के अंदर पक्वाशय में रहनेवाली वह वायु जिसके कुपित होने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं।
वातज–वि॰ वायु द्वारा उत्पन्न।
वातजात–संज्ञा पुं॰ हनुमान्।
वात-प्रकोप–संज्ञा पुं॰ वायु का बढ़ जाना जिससे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।
वातापि–संज्ञा पुं॰ एक असुर का नाम जो आतापि का भाई था और जिसे अगस्त्य ऋषि ने खा डाला था।
वातायन–संज्ञा पुं॰ झरोखा। छोटी खिड़की।
वातुल–संज्ञा पुं॰ बावला। उन्मत्त।
वात्सल्य–संज्ञा पुं॰ माता-पिता का संतति के प्रति प्रेम।
वात्स्यायन–संज्ञा पुं॰ १. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २. कामसूत्र-प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।
वाद–संज्ञा पुं॰ १. वह बात-चीत जो किसी तत्त्व के निर्णय के लिये हो। २. कोई निश्चित सिद्धांत।
वादक–संज्ञा पुं॰ बाजा बजानेवाला।
वादन–संज्ञा पुं॰ बाजा बजाना।
वाद-प्रतिवाद–संज्ञा पुं॰ बहस।
वादरायण–संज्ञा पुं॰ वेदव्यास।
वाद-विवाद–संज्ञा पुं॰ बहस।
वादा–संज्ञा पुं॰ प्रतिज्ञा। इकरार।
वादी–संज्ञा पुं॰ १. वक्ता। २. फ़रियादी। मुद्दई। ३. पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।
वाद्य–संज्ञा पुं॰ बाजा।
वानप्रस्थ–संज्ञा पुं॰ प्राचीन भारतीय आर्यों के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।
वानर–संज्ञा पुं॰ बंदर।
वापस–वि॰ लौटा हुआ। फिरता।
वापसी–वि॰ लौटा हुआ या फेरा हुआ।
वापिका, वापी–संज्ञा स्त्री॰ छोटा जलाशय। बावली।
वाम–वि॰ १. बायाँ। २. टेढ़ा। कुटिल।
वामदेव–संज्ञा पुं॰ १. शिव। महादेव। २. एक ऋषि।
वामन–वि॰ बौना। छोटे डील का। संज्ञा पुं॰ विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार जो बलि को छलने के लिये हुआ था।
वाम-मार्ग–संज्ञा पुं॰ तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस आदि का विधान है।
वामा–संज्ञा स्त्री॰ स्त्री।
वायव्य–संज्ञा पुं॰ उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा।
वायस–संज्ञा पुं॰ कौआ। काक।
वायु–संज्ञा स्त्री॰ हवा। वात।
वायुकोण–संज्ञा पुं॰ पश्चिमोत्तर दिशा।
वायुमंडल–संज्ञा पुं॰ आकाश।
वारंवार–अव्य॰ दे॰ "बारंबार"।

व्यायाम–संज्ञा पुं० १. कसरत। २. परिश्रम।
व्याल–संज्ञा पुं० १. साँप। २. बाघ। ३. राजा।
व्यालू†–संज्ञा स्त्री०, रात के समय का भोजन।
व्यावहारिक–वि० व्यवहार-संबंधी।
व्यासंग–संज्ञा पुं० बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।
व्यास–संज्ञा पुं० १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संग्रह, विभाग और संपादन किया था। २. कथावाचक। ३. वृत्त के मध्य में एक सिरे से दूसरे सिरे तक खींची गई सरल रेखा।
व्याहार–संज्ञा पुं० वाक्य।
व्याहृति–संज्ञा स्त्री० कथन।
व्यूह–संज्ञा पुं० १. समूह। २. निर्माण। ३. शरीर। ४. सेना।
व्योम–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. जल। ३. बादल।
व्योमचारी–संज्ञा पुं० १. देवता। २. पक्षी।
व्योमयान–संज्ञा पुं० हवाई जहाज़।
व्रज–संज्ञा पुं० १. गमन। २. समूह।
व्रजन–संज्ञा पुं० चलना।
व्रजभाषा–संज्ञा स्त्री० मथुरा, आगरा और इसके आस-पास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा।
व्रज-मंडल–संज्ञा पुं० व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।
व्रजराज–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण।
व्रज्या–संज्ञा स्त्री० १. घूमना। २. गमन।
व्रत–संज्ञा पुं० संकल्प।
व्रती–संज्ञा पुं० वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो।
व्रात्य–संज्ञा पुं० १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. दोगला।
व्रीड़ा–संज्ञा स्त्री० लज्जा।
व्रीहि–संज्ञा पुं० धान। चावल।

श

श–हिंदी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण।
शं–संज्ञा पुं० कल्याण। मंगल।
शंक–संज्ञा पुं० भय।
शंकना॰–क्रि० अ० शंका करना।
शंकर–वि० १. मंगल करनेवाला। २. शुभ।
संज्ञा पुं० शिव।
शंकर-शैल–संज्ञा पुं० कैलास।
शंकरस्वामी–संज्ञा पुं० दे० "शंकराचार्य"।
शंकराचार्य्य–संज्ञा पुं० अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य्य।
शंका–संज्ञा स्त्री० १. डर। २. संदेह।
शंकित–वि० [स्त्री० शंकिता] १. डरा हुआ। २ जिसे संदेह हुआ हो।
शंकु–संज्ञा पुं० १. कोई नुकीली वस्तु। २. मेख।
शंख–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है। इसका कोष बहुत पवित्र समझा जाता और देवताओं के आगे बाजे

वार–संज्ञा पुं० १. द्वार। दरवाज़ा। २. रोक। रुकावट। ३. दफ़ा। मरतबा। ४. सप्ताह का दिन। संज्ञा पुं० चोट। आक्रमण।
वारण–संज्ञा पुं० किसी बात को न करने की आज्ञा। मनाही।
वारतिय०–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
वारदात–संज्ञा स्त्री० कोई भीषण कांड। दुर्घटना।
वारन०–संज्ञा स्त्री० निछावर। बलि।
वारना–क्रि० स० निछावर करना।
वार-पार–संज्ञा पुं० (नदी आदि का) यह किनारा और वह किनारा। अव्य० इस किनारे से उस किनारे तक।
वारफेर–संज्ञा पुं० निछावर। बलि।
वारमुखी–संज्ञा स्त्री० वेश्या।
वारांगना–संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी।
वाराणसी–संज्ञा स्त्री० काशी नगरी।
वारा-न्यारा–संज्ञा पुं० फ़ैसला।
वाराह–संज्ञा पुं० दे० "वराह"।
वारि–संज्ञा पुं० जल। पानी।
वारिज–संज्ञा पुं० १. कमल। २. शंख।
वारिद–संज्ञा पुं० मेघ। बादल।
वारिधि–संज्ञा पुं० समुद्र।
वारियाँ–संज्ञा स्त्री० निछावर। बलि।
वारिस–संज्ञा पुं० वह पुरुष जो किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी हो।
वारींद्र–संज्ञा पुं० समुद्र।
वारुणी–संज्ञा स्त्री० १. मदिरा। शराब। २. पश्चिम दिशा। ३. एक पर्व जिसमें गंगा-स्नान करते हैं।
वार्ता–संज्ञा स्त्री० १. जनश्रुति। अफ़-वाह। २. संवाद।
वार्त्तालाप–संज्ञा पुं० बात-चीत।
वार्त्तिक–संज्ञा पुं० किसी ग्रंथ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ।
वार्द्धक्य–संज्ञा पुं० बुढ़ापा।
वार्षिक–वि० सालाना।
वार्ष्णेय–संज्ञा पुं० कृष्णचंद्र।
वाला–प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक संबंध-सूचक प्रत्यय। जैसे—मकानवाला।
वालिद–संज्ञा पुं० पिता। बाप।
वालिदा–संज्ञा स्त्री० माता। माँ।
वाल्मीकि–संज्ञा पुं० एक भृगुवंशी मुनि जो रामायण के रचयिता और आदिकवि कहे जाते हैं।
वावैला–संज्ञा पुं० १. विलाप। रोना-पीटना। २. हल्ला।
वाष्प–संज्ञा पुं० १. आँसू। २. भाप।
वासंतिक–वि० वसंत-संबंधी।
वासंती–संज्ञा स्त्री० १. माधवी लता। २. मदनोत्सव।
वास–संज्ञा पुं० १. रहना। २. गृह। ३. सुगंध।
वासकसज्जा–संज्ञा स्त्री० वह नायिका जो नायक से मिलने की तैयारी किए हुए घर आदि सजाकर और आप भी सजकर बैठी हो।
वासन–संज्ञा पुं० १. सुगंधित करना। २ वस्त्र।
वासना–संज्ञा स्त्री० १. भावना। संस्कार। २. इच्छा। कामना।
वासर–संज्ञा पुं० दिन। दिवस।
वासव–संज्ञा पुं० इंद्र।
वासित–वि० सुगंधित किया हुआ।
वासी–संज्ञा पुं० रहनेवाला।
वासुकी–संज्ञा पुं० आठ नागों में से

की भाँति बजाया जाता है।
शंखधर—संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।
शंखपाणि—संज्ञा पुं० विष्णु।
शंखिनी—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की वनौषधि। २. स्त्रियों के चार कल्पित भेदों में से एक भेद।
शंठ—संज्ञा पुं० १. नपुंसक। २. मूर्ख।
शंड—संज्ञा पुं० १. नपुंसक। २. साँड़।
शंतनु—संज्ञा पुं० दे० "शांतनु"।
शंतनु-सुत—संज्ञा पुं० दे० "भीष्म पितामह"।
शंबर—संज्ञा पुं० युद्ध।
शंबरारि—संज्ञा पुं० कामदेव। मदन।
शंबुक—संज्ञा पुं० घोंघा।
शंबूक—संज्ञा पुं० १. घोंघा। २. शंख।
शंभु—संज्ञा पुं० शिव।
शंभुगिरि—संज्ञा पुं० कैलास।
शंभुबीज—संज्ञा पुं० पारा।
शंभुभूषण—संज्ञा पुं० चंद्रमा।
शंभुलोक—संज्ञा पुं० कैलास।
शऊर—संज्ञा पुं० १. काम करने की योग्यता। २. बुद्धि।
शऊरदार—संज्ञा पुं० जिसमें शऊर हो।
शक—संज्ञा पुं० एक प्राचीन जाति। संज्ञा पुं० शंका।
शकट—संज्ञा पुं० १. बैलगाड़ी। २. भार।
शकठ—संज्ञा पुं० मचान।
शकर—संज्ञा स्त्री० दे० "शक्कर"।
शकरकंद—संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।
शकरपारा—संज्ञा पुं० चौकोर कटा हुआ एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान।
शकल—संज्ञा स्त्री० १. ढाँचा। २. आकृति।
शकाब्द—संज्ञा पुं० राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।
शकार—संज्ञा पुं० शक-वंशीय व्यक्ति।
शकारि—संज्ञा पुं० विक्रमादित्य।
शकुंत—संज्ञा पुं० पक्षी।
शकुंतला—संज्ञा स्त्री० राजा दुष्यंत की स्त्री जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी।
शकुन—संज्ञा पुं० १. किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण जो उस काम के संबंध में शुभ या अशुभ माने जाते हैं। २. पक्षी।
शकुनि—संज्ञा पुं० १. पक्षी। २. कौरवों के मामा। दुर्योधन के मंत्री।
शक्कर—संज्ञा स्त्री० चीनी।
शक्की—वि० जिसे हर बात में संदेह हो।
शक्त—संज्ञा पुं० शक्तिसंपन्न।
शक्ति—संज्ञा स्त्री० १. बल। २. दुर्गा। ३. एक प्रकार का शस्त्र। ४. वश।
शक्तिधर—संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।
शक्तिपूजक—संज्ञा पुं० १. शाक्त। २. तांत्रिक।
शक्तिमान्—वि० [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्।
शक्तिहीन—वि० १. बलहीन। २. नामर्द।
शक्र—संज्ञा पुं० इंद्र।
शक्रप्रस्थ—संज्ञा पुं० इंद्रप्रस्थ।
शक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० "शकल"।
शख्स—संज्ञा पुं० व्यक्ति।
शगल—संज्ञा पुं० १. व्यापार। २. मनोविनोद।
शगुन—संज्ञा पुं० दे० "शकुन"।

दूसरा नागराज।
वासुदेव-संज्ञा पुं० वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचंद्र।
वास्तव-वि० यथार्थ।
वास्तविक-वि० यथार्थ। ठीक।
वास्तव्य-वि० रहने या बसने योग्य।
वास्ता-संज्ञा पुं० संबंध। लगाव।
वास्तु-संज्ञा पुं० १. वह स्थान जिस पर घर उठाया जाय। २. इमारत।
वास्तुविद्या-संज्ञा स्त्री० वह विद्या जिससे इमारत के संबंध की सारी बातों का ज्ञान होता है।
वास्ते-अव्य० १. लिये। २. हेतु। सबब।
वाह-अव्य० १. प्रशंसासूचक शब्द। २. आश्चर्यसूचक शब्द।
वाहक-संज्ञा पुं० १. बोझ ढोने या खींचनेवाला। २. सारथी।
वाहन-संज्ञा पुं० सवारी।
वाह-वाही-संज्ञा स्त्री० लोगों की प्रशंसा।
वाहिनी-संज्ञा स्त्री० सेना।
वाहियात-वि० १. व्यर्थ। २. ख़राब।
वाही-तबाही-वि० १. बेहूदा। २. अंडबंड।
-संज्ञा स्त्री० अंडबंड बातें। गाली-गलौज।
वाह्य-क्रि० वि० बाहर। अलग।
वाह्यांतर-वि० भीतर और बाहर का।
वाह्येंद्रिय-संज्ञा स्त्री० आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा।
विंदु-संज्ञा पुं० १. जलकण। बूँद। २. रेखा-गणित के अनुसार वह जिसका स्थान नियत हो, पर विभाग न हो सके।
विंदुमाधव-संज्ञा पुं० काशी की एक प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम।
विंध्य-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैली है।
विंध्यकूट-संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत।
विंध्यवासिनी-संज्ञा स्त्री० देवी की एक प्रसिद्ध मूर्त्ति जो मिर्ज़ापुर ज़िले में है।
विंध्याचल-संज्ञा पुं० विंध्य पर्वत।
वि-उप० एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर अर्थ में विशेषता उत्पन्न करता है।
विकट-वि० १. भयंकर। भीषण। २. कठिन। ३. दुर्गम।
विकराल-वि० भीषण। डरावना।
विकर्षण-संज्ञा पुं० आकर्षण।
विकल-वि० विह्वल। व्याकुल।
विकलांग-वि० जिसका कोई अंग टूटा या ख़राब हो।
विकल्प-संज्ञा पुं० १. भ्रम। धोखा। २. एक बात मन में बैठाकर फिर उसके विरुद्ध सोच-विचार। ३. दो में से एक।
विकसन-संज्ञा पुं० प्रस्फुटन। फूटना। खिलना।
विकसना-क्रि० अ० दे० "विकसना"।
विकार-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। २. बिगड़ना। ख़राबी।
विकाश-संज्ञा पुं० १. प्रकाश। २. प्रसार। फैलाव।
विकास-संज्ञा पुं० १. प्रसार। २. खिलना।
विकीर्ण-वि० चारों ओर फैला या छितराया हुआ।
विकृत-वि० जिसमें किसी प्रकार का

शगूफा–संज्ञा पुं० १. बिना खिला हुआ फूल। कली। २. पुष्प।
शचि, शची–संज्ञा स्त्री० इंद्र की पत्नी, इंद्राणी जो पुलोमा की कन्या थी।
शचीपति–संज्ञा पुं० इंद्र।
शठ–वि० धूर्त्त।
शठता–संज्ञा स्त्री० धूर्त्तता।
शत–वि० दस का दस गुना। संज्ञा पुं० सौ की संख्या।
शतक–संज्ञा पुं० [स्त्री० शतिका] १. सौ का समूह। २. शताब्दी।
शतघ्नी–संज्ञा स्त्री० प्राचीन काल का एक नाशक शस्त्र।
शतदल–संज्ञा पुं० पद्म।
शतद्रु–संज्ञा स्त्री० सतलज नदी।
शतपत्र–संज्ञा पुं० कमल।
शतरंज–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौंसठ खानों की बिसात पर खेला जाता है।
शतरंजी–संज्ञा स्त्री० १. वह दरी जो कई प्रकार के रंग-बिरंगे सूतों से बनी हो। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।
शतानीक–संज्ञा पुं० १. वृद्ध पुरुष। २. सौ सिपाहियों का नायक।
शताब्दी–संज्ञा स्त्री० १ सौ वर्षों का समय। २. किसी संवत् के सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय।
शतायु–संज्ञा पुं० वह जिसकी आयु सौ वर्षों की हो।
शतावधान–संज्ञा पुं० वह मनुष्य जिसकी स्मरणशक्ति प्रखर हो।
शती–संज्ञा स्त्री० सौ का समूह। सैकड़ा।
शत्रु–संज्ञा पुं० दुश्मन।
शत्रुघ्न–संज्ञा पुं० राम के एक भाई।
शत्रुता–संज्ञा स्त्री० वैरभाव।
शत्रुदमन–संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।
शत्रुसाल–वि० शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करनेवाला।
शनि–संज्ञा पुं० १ सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। २. दुर्भाग्य।
शनिवार–संज्ञा पुं० रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद का वार।
शनिश्चर–संज्ञा पुं० दे० "शनि"।
शनैः–अव्य० धीरे।
शपथ–संज्ञा स्त्री० कसम।
शफ़तालू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा आड़ू।
शफ़ा–संज्ञा स्त्री० आरोग्य।
शफ़ाखाना–संज्ञा पुं० चिकित्सालय।
शब–संज्ञा स्त्री० रात।
शबनम–संज्ञा स्त्री० १. ओस। २. एक प्रकार का बहुत बारीक कपड़ा।
शबाब–संज्ञा पुं० १. यौवन-काल। २. बहुत अधिक सौंदर्य।
शबीह–संज्ञा स्त्री० चित्र।
शब्द–संज्ञा पुं० १ ध्वनि। २. लफ़्ज़।
शब्द-प्रमाण–संज्ञा पुं० वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के ही आधार पर हो।
शब्दब्रह्म–संज्ञा पुं० वेद।
शब्दवेधी–संज्ञा पुं० वह जो बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारता हो।
शब्दशक्ति–संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसका कोई विशेष भाव प्रदर्शित होता है।
शब्दशास्त्र–संज्ञा पुं० व्याकरण।

विनसाना*–क्रि० स० १. नष्ट करना। २. बिगाड़ना।
विना–अव्य० १. बग़ैर। २. छोड़कर।
विनाती*†–संज्ञा स्त्री० विनय।
विनायक–संज्ञा पुं० गणेश।
विनाश–संज्ञा पुं० [वि० विनाशक] नाश। बरबादी।
विनाशन–संज्ञा पुं० नष्ट करना।
विनासना*–क्रि० स० नष्ट करना।
विनिमय–संज्ञा पुं० परिवर्त्तन।
विनियोग–संज्ञा पुं० प्रयोग। इस्तेमाल।
विनीत–वि० नम्र।
विनु*†–अव्य० दे० "विना"।
विनोद–संज्ञा पुं० १. कुतूहल। २. खेल-कूद। ३. हँसी-दिल्लगी।
विनोदी–वि० [स्त्री० विनोदिनी] १. आमोद-प्रमोद करनेवाला। २. चुहलबाज़।
विन्यास–संज्ञा पुं० १. स्थापना। २. यथास्थान स्थापन।
विपंची–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की वीणा।
विपक्ष–संज्ञा पुं० १. विरुद्ध पक्ष। २. विरोधी।
विपक्षी–संज्ञा पुं० विरुद्ध पक्ष का।
विपत्ति–संज्ञा स्त्री० १. आफ़त। २. संकट की अवस्था।
विपद्–संज्ञा स्त्री० विपत्ति।
विपदा–संज्ञा स्त्री० विपत्ति।
विपन्न–वि० १. जिस पर विपत्ति पड़ी हो। २. दुःखी।
विपरीत–वि० उलटा।
विपर्यय–संज्ञा पुं० १. उलट-पलट। २. गड़बड़ी।
विपर्यस्त–वि० १. जिसका विपर्यय हुआ हो। २. अस्त-व्यस्त।
विपल–संज्ञा पुं० एक पल का साठवाँ भाग।
विपाक–संज्ञा पुं० पकना।
विपादिका–संज्ञा स्त्री० बिवाई नामक रोग।
विपिन–संज्ञा पुं० १. वन। २. उपवन।
विपिनपति–संज्ञा पुं० सिंह।
विपिनविहारी–संज्ञा पुं० १. वन में विहार करनेवाला। २. श्रीकृष्ण।
विपुल–वि० बृहत्।
विपुलता–संज्ञा स्त्री० आधिक्य।
विपुला–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
विप्र–संज्ञा पुं० १. ब्राह्मण। २. पुरोहित।
विप्रराम–संज्ञा पुं० परशुराम।
विप्रलंभ–संज्ञा पुं० १. चाही हुई वस्तु का न मिलना। २. वियोग।
विप्लव–संज्ञा पुं० १. उपद्रव। २. विद्रोह।
विफल–वि० १. जिसमें फल न लगा हो। २. निष्फल। ३. नाकामयाब।
विबुध–संज्ञा पुं० १. पंडित। २. देवता। ३. चंद्रमा।
विबुधविलासिनी–संज्ञा स्त्री० १. देवांगना। २. अप्सरा।
विबुधवेलि–संज्ञा स्त्री० कल्पलता।
विबोध–संज्ञा पुं० जागरण।
विभक्त–वि० बँटा हुआ।
विभक्ति–संज्ञा स्त्री० १. विभाग। २. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है। (व्याकरण)
विभव–संज्ञा पुं० १. धन। २. ऐश्वर्य।
विभवशाली–वि० १. विभववाला। २. प्रतापवाला।
विभांति–संज्ञा स्त्री० प्रकार।

शब्दाडंबर–संज्ञा पुं० शब्दजाल।
शब्दानुशासन–संज्ञा पुं० व्याकरण।
शब्दालंकार–संज्ञा पुं० वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय।
शम–संज्ञा पुं० [भाव० शमता] १. शांति। २. क्षमा।
शमन–संज्ञा पुं० १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान। २. यम।
शमशेर–संज्ञा स्त्री० तलवार।
शमा–संज्ञा स्त्री० मोमबत्ती।
शमादान–संज्ञा पुं० वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं।
शमित–वि० १. जिसका शमन किया गया हो। २. शांत।
शयन–संज्ञा पुं० १. सोना। २. शय्या।
शयन आरती–संज्ञा स्त्री० देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है।
शयनगृह–संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।
शयनागार–संज्ञा पुं० सोने का स्थान। शयनगृह।
शय्या–संज्ञा स्त्री० १. बिस्तर। २. पलंग।
शय्यादान–संज्ञा पुं० मृतक के उद्देश्य से महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना।
शर–संज्ञा पुं० १. बाण। २. सरकंडा।
शरअ–संज्ञा स्त्री० [वि० शरई] १. कुरान में दी हुई आज्ञा। २. मज़हब। ३. मुसलमानों का धर्मशास्त्र।
शरण–संज्ञा स्त्री० १. रक्षा। २. घर।
शरणागत–संज्ञा पुं० १. शरण में आया हुआ व्यक्ति। २. शिष्य।
शरणी–वि० शरण देनेवाली।
शरण्य–वि० शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला।
शरत्–संज्ञा स्त्री० एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है।
शरत्काल–संज्ञा पुं० दे० "शरत्"।
शरद्–संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।
शरद्पूर्णिमा–संज्ञा स्त्री० कुआर मास की पूर्णमासी।
शरच्चंद्र–संज्ञा पुं० शरद् ऋतु का चंद्रमा।
शरबत–संज्ञा पुं० १. पीने की मीठी वस्तु। रस। २. पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड़।
शरबती–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका पीला रंग।
शरभ–संज्ञा पुं० टिड्डी।
शरम–संज्ञा स्त्री० १. लज्जा। २. लिहाज़। ३. प्रतिष्ठा।
शरमाना–क्रि० अ० लज्जित होना। क्रि० स० शर्मिंदा करना।
शरमिंदगी–संज्ञा स्त्री० लाज।
शरमिंदा–वि० लज्जित।
शरमीला–वि० [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे।
शरह–संज्ञा स्त्री० १. टीका। २. दर।
शराकत–संज्ञा स्त्री० १. शरीक होने का भाव। २. साझा।
शराफत–संज्ञा स्त्री० भलमनसी।
शराब–संज्ञा स्त्री० मदिरा।
शराबखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।
शराबखोरी–संज्ञा स्त्री० मदिरा-पान।
शराबी–संज्ञा पुं० वह जो शराब पीता हो।

वि० अनेक प्रकार का।
अव्य० अनेक प्रकार से।
विभाग-संज्ञा पुं० १. बँटवारा। २. भाग। ३. मुहकमा।
विभाजित-वि० जिसका विभाग किया गया हो।
विभाज्य-वि० १. विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो।
विभाति-संज्ञा स्त्री० शोभा।
विभावरी-संज्ञा स्त्री० रात्रि।
विभासना-क्रि० अ० चमकना।
विभिन्न-वि० १. बिलकुल अलग। २. अनेक प्रकार का।
विभीति-संज्ञा स्त्री० १. डर। २. शंका।
विभीषण-संज्ञा पुं० रावण का भाई।
विभीषिका-संज्ञा स्त्री० डर दिखाना।
विभु-वि० जो सर्वत्र वर्तमान हो।
विभूति-संज्ञा स्त्री० १. बहुतायत। २. विभव। ३. संपत्ति।
विभूषना-क्रि० स० १. गहने आदि से सजाना। २. सुशोभित करना।
विभूषित-वि० गहनों आदि से सजाया हुआ।
विभेद-संज्ञा पुं० १. विभिन्नता। २. अनेक भेद।
विभेदना-क्रि० स० १. छेदना। २. घुसना।
विभ्रम-संज्ञा पुं० १. भ्रमण। २. भ्रांति।
विभ्राट-संज्ञा पुं० १. आपत्ति। २. उपद्रव।
विमंडन-संज्ञा पुं० सजाना।
विमंडित-वि० १. अलंकृत। २. सुशोभित।
विमत-संज्ञा पुं० विरुद्ध मत।
विमत्सर-संज्ञा पुं० अधिक अहंकार।
विमन-वि० अनमना।
विमर्दन-संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह मलना-दलना। २. नष्ट करना।
विमर्श-संज्ञा पुं० १. आलोचना। २. परामर्श।
विमल-वि० [स्त्री० विमला] १. निर्मल। २. निर्दोष।
विमलापति-संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
विमाता-संज्ञा स्त्री० सौतेली माँ।
विमान-संज्ञा पुं० वायुयान।
विमुक्त-वि० १. अच्छी तरह मुक्त। २. स्वतंत्र।
विमुक्ति-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। २. मुक्ति।
विमुख-वि० [भाव० विमुखता] १. मुख-रहित। २. विरुद्ध। खिलाफ़।
विमुद-वि० उदास।
विमूढ़-वि० [स्त्री० विमूढ़ा] नासमझ।
विमोचन-संज्ञा पुं० [वि० विमोचनीय, विमोचित, विमोच्य] १. बंधन से छुड़ाना। २. छोड़ना।
विमोचना-क्रि० स० १. बंधन आदि खोलना। २. निकालना।
विमोह-संज्ञा पुं० मोह।
विमोहन-संज्ञा पुं० मोहित करना।
विमोहना-क्रि० अ० मोहित होना। क्रि० स० मोहित करना।
विमोहित-वि० लुभाया हुआ।
विमोही-वि० १. मोहित करनेवाला। २. कठोर-हृदय।
वियo-वि० दो।
वियुक्त-वि० बिछुड़ा हुआ।
वियो-वि० दूसरा।
वियोग-संज्ञा पुं० १. विच्छेद। २. विरह।

शराबोर–वि० जल आदि से बिलकुल भीगा हुआ।
शरारत–संज्ञा स्त्री० पाजीपन।
शरासन–संज्ञा पुं० धनुष।
शरीअत–संज्ञा स्त्री० मुसलमानों का धर्म-शास्त्र।
शरीक–वि० शामिल।
संज्ञा पुं० १. साथी। २. साझी। ३. सहायक।
शरीफ़–संज्ञा पुं० १. कुलीन मनुष्य। २. सभ्य पुरुष।
वि० पवित्र।
शरीफ़ा–संज्ञा पुं० १. मझोले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष। २. इस वृक्ष का खाकी रंग का फल जो गोल होता है।
शरीर–संज्ञा पुं० देह।
वि० [संज्ञा शरारत] दुष्ट।
शरीरपात–संज्ञा पुं० मृत्यु।
शरीररक्षक–संज्ञा पुं० अंगरक्षक।
शरीरशास्त्र–संज्ञा पुं० शरीर-विज्ञान।
शरीरांत–संज्ञा पुं० मृत्यु।
शरीरी–संज्ञा पुं० १. शरीरवाला। २. आत्मा।
शर्करा–संज्ञा स्त्री० १. शक्कर। २. बालू का कण।
शर्त्त–संज्ञा स्त्री० दाँव।
शर्तिया–क्रि० वि० शर्त्त बदकर।
वि० बिलकुल ठीक।
शर्म–संज्ञा स्त्री० दे० "शरम"।
शर्म्म–संज्ञा पुं० १. सुख। २. गृह।
शर्म्मद–वि० [स्त्री० शर्म्मदा] आनंद देनेवाला।
शर्म्मा–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की उपाधि।
शर्मिष्ठा–संज्ञा स्त्री० दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो देवयानी की सखी थी।
शर्वरी–संज्ञा स्त्री० १. रात। २. संध्या। ३. स्त्री।
शलजम–संज्ञा पुं० गाजर की तरह का एक कंद।
शलभ–संज्ञा पुं० १. टिड्डी। २. पतंग।
शलाका–संज्ञा स्त्री० १. लोहे आदि की लंबी सलाई। २. बाण। तीर।
शलूका–संज्ञा पुं० आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।
शल्य–संज्ञा पुं० १. अस्त्र-चिकित्सा। २. एक अस्त्र।
शल्यक्रिया–संज्ञा स्त्री० चीर-फाड़ का इलाज।
शव–संज्ञा पुं० मृत शरीर।
शवदाह–संज्ञा पुं० मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया या भाव।
शवभस्म–संज्ञा पुं० चिता की भस्म।
शवरी–संज्ञा स्त्री० १. शवर जाति की श्रमणा नाम की एक तपस्विनी। २. शवर जाति की स्त्री।
शश–संज्ञा पुं० खरहा।
शशक–संज्ञा पुं० खरगोश।
शशधर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
शशांक–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
शशा–संज्ञा पुं० दे० "शश"।
शशि–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
शशिकला–संज्ञा स्त्री० चंद्रमा की कला।
शशिधर–संज्ञा पुं० शिव।
शशिभाल–संज्ञा पुं० शिव।
शशिमंडल–संज्ञा पुं० चंद्रमंडल।
शशिमुख–वि० [स्त्री० शशिमुखी] जिसका मुख चंद्रमा के सदृश सुंदर हो।
शशिवदना–वि० स्त्री० शशिमुखी।
शशिशाला–संज्ञा स्त्री० वह घर जिसमें

वियोगिनी–वि० स्त्री० जो अपने पति या प्रिय से अलग हो।
वियोगी–वि० [स्त्री० वियोगिनी] जो प्रिया से दूर या वियुक्त हो।
वियोजक–संज्ञा पुं० दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला।
विरंग–वि० १. बुरे रंग का। २. अनेक रंगों का।
विरंचि–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
विरंचिसुत–संज्ञा पुं० नारद।
विरक्त–वि० १. जिसका जी हटा हो। २. उदासीन।
विरक्ति–संज्ञा स्त्री० १. अनुराग का अभाव। २. उदासीनता।
विरचना*–क्रि० स० रचना।
क्रि० अ० विरक्त होना।
विरचित–वि० १. बनाया हुआ। २. रचा हुआ।
विरत–वि० १. जो अनुरक्त न हो। २. वैरागी।
विरति–संज्ञा स्त्री० चाह का न होना।
विरद–संज्ञा पुं० १. ख्याति। २. यश।
विरदावली–संज्ञा स्त्री० यश की कथा।
विरल–वि० १. जो घना न हो। २. थोड़ा।
विरस–वि०[संज्ञा विरसता] रसहीन।
विरह–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु से रहित होने का भाव। २. वियोग।
विरहिणी–वि० स्त्री० दे० "वियोगिनी"।
विरहित–वि० रहित।
विरही–वि०[स्त्री० विरहिणी] वियोगी।
विराग–संज्ञा पुं० [वि० विरागी] १. चाह का न होना। २. वैराग्य।
विराजना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. मौजूद रहना। ३. बैठना।
विराजमान–वि० १. चमकता हुआ। २. उपस्थित।
विराट्–वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।
विराट–संज्ञा पुं० मत्स्य देश।
विराध–संज्ञा पुं० पीड़ा।
विराम–संज्ञा पुं० १. रुकना या थमना। २. वाक्य के अंतर्गत वह स्थान जहाँ बोलते समय ठहरना पड़ता हो।
विराव–संज्ञा पुं० १. शब्द। २. हल्ला-गुल्ला।
विरुद–संज्ञा पुं० यश।
विरुदावली–संज्ञा स्त्री० यश-वर्णन। प्रशंसा।
विरुद्ध–वि० प्रतिकूल।
क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में।
विरुद्धता–संज्ञा स्त्री० १. विरुद्ध होने का भाव। २. प्रतिकूलता।
विरूप–वि० [स्त्री० विरूपा] १. कुरूप। २. शोभाहीन।
विरूपाक्ष–संज्ञा पुं० शिव।
विरेचक–वि० दस्तावर।
विरेचन–संज्ञा पुं० १. जुलाब। २. दस्त लाना।
विरोचन–संज्ञा पुं० चमकना।
विरोध–संज्ञा पुं० [वि० विरोधक] १. मेल में न होना। २. वैर।
विरोधन–संज्ञा पुं० [वि० विरोधी, विरोधित, विरोध्य] १. विरोध करना। २. नाश।
विरोधी–वि० [स्त्री० विरोधिनी] १. विरोध करनेवाला। २. वैरी।
विलंब–वि० देर।
विलंबना–क्रि० अ० देर करना।
विलंबित–वि० १. लटकता हुआ।

शब्दाडंबर–संज्ञा पुं० शब्दजाल ।
शब्दानुशासन–संज्ञा पुं० व्याकरण।
शब्दालंकार–संज्ञा पुं० वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों के विन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय ।
शम–संज्ञा पुं० [भाव० शमता] १. शांति । २. क्षमा ।
शमन–संज्ञा पुं० १. यज्ञ में पशुओं का बलिदान । २. यम ।
शमशेर–संज्ञा स्त्री० तलवार ।
शमा–संज्ञा स्त्री० मोमबत्ती ।
शमादान–संज्ञा पुं० वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं ।
शमित–वि० १. जिसका शमन किया गया हो । २. शांत ।
शयन–संज्ञा पुं० १. सोना। २. शय्या।
शयन आरती–संज्ञा स्त्री० देवताओं की वह आरती जो रात को सोने के समय होती है ।
शयनगृह–संज्ञा पुं० दे० "शयनागार"।
शयनागार–संज्ञा पुं० सोने का स्थान। शयनगृह ।
शय्या–संज्ञा स्त्री० १. बिस्तर । २. पलंग ।
शय्यादान–संज्ञा पुं० मृतक के उद्देश्य से महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना ।
शर–संज्ञा पुं० १. बाण। २. सरकंडा।
शरअ–संज्ञा स्त्री० [वि० शरई] १. क़ुरान में दी हुई आज्ञा । २. मज़हब । ३. मुसलमानों का धर्मशास्त्र ।
शरण–संज्ञा स्त्री० १. रक्षा । २. घर ।
शरणागत–संज्ञा पुं० १. शरण में आया हुआ व्यक्ति । २. शिष्य ।
शरणी–वि० शरण देनेवाली ।
शरण्य–वि० शरण में आए हुए की रक्षा करनेवाला ।
शरत्–संज्ञा स्त्री० एक ऋतु जो आजकल आश्विन और कार्तिक मास में मानी जाती है ।
शरत्काल–संज्ञा पुं० दे० "शरत्" ।
शरद्–संज्ञा स्त्री० दे० "शरत्" ।
शरदपूर्णिमा–संज्ञा स्त्री० कुआर मास की पूर्णमासी ।
शरदचंद्र–संज्ञा पुं० शरद् ऋतु का चंद्रमा ।
शरबत–संज्ञा पुं० १. पीने की मीठी वस्तु । रस । २. पानी में घोली हुई शकर या खाँड़ ।
शरबती–संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका पीला रंग ।
शरभ–संज्ञा पुं० टिड्डी ।
शरम–संज्ञा स्त्री० १. लज्जा । २. लिहाज़ । ३. प्रतिष्ठा ।
शरमाना–क्रि० अ० लज्जित होना । क्रि० स० शर्मिंदा करना ।
शर्मिंदगी–संज्ञा स्त्री० लाज ।
शर्मिंदा–वि० लज्जित ।
शरमीला–वि० [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आवे ।
शरह–संज्ञा स्त्री० १. टीका । २. दर ।
शराकत–संज्ञा स्त्री० १. शरीक होने का भाव । २. साझा ।
शराफ़त–संज्ञा स्त्री० भलमनसी ।
शराब–संज्ञा स्त्री० मदिरा ।
शराबखाना–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो ।
शराबखोरी–संज्ञा स्त्री० मदिरा-पान ।
शराबी–संज्ञा पुं० वह जो शराब पीता हो ।

२. जिसमें देर हुई हो।
विलक्षण–वि० [संज्ञा विलक्षणता] अनोखा।
विलखना–क्रि० अ० दे० "बिलखना"। ✲क्रि० अ० ताड़ना।
विलग–वि० अलग।
विलगाना–क्रि० अ० अलग होना। क्रि० स० पृथक् करना।
विलच्छन–वि० दे० "विलक्षण"।
विलपना✲–क्रि० अ० रोना।
विलपाना✲–क्रि० स० रुलाना।
विलम✲–संज्ञा पुं० देर।
विलाप–संज्ञा पुं० क्रंदन।
विलापना✲–क्रि० अ० शोक करना।
विलायत–संज्ञा पुं० पराया देश।
विलायती–वि० विलायत का।
विलास–संज्ञा पुं० १. मनोविनोद। २. आनंद। ३. अतिशय सुख-भोग।
विलासिनी–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री। २. वेश्या।
विलासी–संज्ञा पुं० [स्त्री० विलासिनी] १. कामी। २. आराम-तलब।
विलीन–वि० १. लुप्त। २. छिपा हुआ।
विलेशय–संज्ञा पुं० १. बिल या दरार में रहनेवाले जीव। २. सर्प।
विलोकना–क्रि० स० देखना।
विलोचन–संज्ञा पुं० नेत्र।
विलोम–वि० विपरीत। संज्ञा पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आना।
विलोल–वि० चंचल।
विल्व–संज्ञा पुं० बेल का पेड़।
विल्वपत्र–संज्ञा पुं० बेलपत्र।
विल्वमंगल–संज्ञा पुं० महाकवि सूरदास का अंधे होने से पूर्व का नाम।
विवक्षा–संज्ञा स्त्री० कोई बात कहने की इच्छा।
विवक्षित–वि० अपेक्षित। जिसकी आवश्यकता हो।
विवर–संज्ञा पुं० १. छिद्र। २. कंदरा।
विवरण–संज्ञा पुं० १. विवेचन। २. वृत्तांत।
विवर्ण–वि० १. नीच। २. बुरे रंग का। ३. कांतिहीन।
विवत–संज्ञा पुं० १. समुदाय। २. आकाश।
विवर्तन–संज्ञा पुं० घूमना।
विवश–वि० १. जिसका कुछ वश न चले। २. पराधीन।
विवस्त्र–वि० नग्न।
विवाद–संज्ञा पुं० १. किसी बात पर ज़बानी झगड़ा। २. झगड़ा।
विवादास्पद–वि० विवाद योग्य।
विवादी–संज्ञा पुं० १. कहा-सुनी या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक पक्ष।
विवाह–संज्ञा पुं० शादी।
विवाहना–क्रि० स० दे० "ब्याहना"।
विवाहित–वि० पुं० [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो।
विवाही–वि० स्त्री० जिसका विवाह हो चुका हो।
विविचार–वि० १. विचार-रहित। २. आचार-रहित।
विविध–वि० बहुत प्रकार का।
विविर–संज्ञा पुं० १. खोह। २. बिल।
विवृत–वि० विस्तृत।
विवेक–संज्ञा पुं० १. भली-बुरी वस्तु का ज्ञान। २. बुद्धि।
विवेकी–संज्ञा पुं० १. वह जिसे विवेक हो। २. बुद्धिमान्।
विवेचन–संज्ञा पुं० १. जाँचना। २.

शिक्षागुरु–संज्ञा पुं० विद्या पढ़ानेवाला गुरु।

शिक्षार्थी–संज्ञा पुं० विद्यार्थी।

शिक्षालय–संज्ञा पुं० विद्यालय।

शिक्षा-विभाग–संज्ञा पुं० वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।

शिक्षित–वि० पुं० १. जिसने शिक्षा पाई हो। २. विद्वान्।

शिखंड–संज्ञा पुं० १. मोर की पूँछ। २. चोटी। शिखा। ३. काकपक्ष।

शिखंडिनी–संज्ञा स्त्री० मोरनी।

शिखंडी–संज्ञा पुं० मोर।

शिखर–संज्ञा पुं० १. सिरा। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। ३. जैनियों का एक तीर्थ।

शिखरन–संज्ञा स्त्री० दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।

शिखरिणी–संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों में श्रेष्ठ। २. संस्कृत की एक वर्ण-वृत्ति।

शिखा–संज्ञा स्त्री० १. चोटी। चुटैया। २. पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी।

शिखि–संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. अग्नि।

शिखी–वि० शिखावाला। संज्ञा पुं० मोर। मयूर।

शिगाफ़–संज्ञा पुं० १. चीरा। नश्तर। २. सूराख़।

शिगूफ़ा–संज्ञा पुं० दे० "शगूफ़ा"।

शिताब–क्रि० वि० जल्द। शीघ्र।

शितिकंठ–संज्ञा पुं० शिव।

शिथिल–वि० १. ढीला। २. थका हुआ।

शिथिलता–संज्ञा स्त्री० १. ढीलापन। २. थकावट।

शिनाख़्त–संज्ञा स्त्री० १. पहचान। २. परख।

शिया–संज्ञा पुं० हज़रत अली को पैग़ंबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।

शिर–संज्ञा पुं० सिर।

शिरकत–संज्ञा स्त्री० साझा। हिस्सा।

शिरनेत–संज्ञा पुं० १. गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियों की एक शाखा।

शिरमौर–संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. प्रधान।

शिरस्त्राण–संज्ञा पुं० युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी।

शिरहन्‌श्‌–संज्ञा पुं० उसीसा।

शिरा–संज्ञा स्त्री० रक्त की छोटी नाड़ी।

शिरीष–संज्ञा पुं० सिरस। (पेड़)

शिरोधार्य्य–वि० सिर पर धरने या आदर-पूर्वक मानने के योग्य।

शिरोभूषण–संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोमणि–संज्ञा पुं० श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिला–संज्ञा स्त्री० पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा।

शिलाजीत–संज्ञा पुं०, स्त्री० काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक औषधि जो शिलाओं का रस है।

शिलादित्य–संज्ञा पुं० दे० "हर्षवर्धन"।

शिलालेख–संज्ञा पुं० पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख।

शिलीमुख–संज्ञा पुं० भ्रमर।

शिल्प–संज्ञा पुं० १. हाथ से कोई चीज़ बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। २. कला-संबंधी व्यवसाय।

शिल्पकला–संज्ञा स्त्री० हाथ से चीज़ें

मीमांसा।
विवेचनीय–वि० विवेचन करने योग्य।
विशद–वि० १. स्वच्छ। साफ़। २. खूबसूरत।
विशाखा–संज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से एक।
विशारद–संज्ञा पुं० १. वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान् हो। २. कुशल।
विशाल–वि० [संज्ञा विशालता] बहुत बड़ा और विस्तृत।
विशालाक्ष–संज्ञा पुं० महादेव।
विशिख–संज्ञा पुं० वाण।
विशिष्ट–वि० [संज्ञा विशिष्टता] १. मिला हुआ। २. विलक्षण।
विशुद्ध–वि० [भाव० विशुद्धता] १. जिसमें किसी प्रकार की मिलावट आदि न हो। २. सत्य।
विशुद्धि–संज्ञा स्त्री० शुद्धता।
विशृंखल–वि० जिसमें क्रम या शृंखला न हो।
विशेष–संज्ञा पुं० १. भेद। २. ज्यादती।
विशेषज्ञ–संज्ञा पुं० वह जिसे किसी विषय का विशेष ज्ञान हो।
विशेषण–संज्ञा पुं० व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी संज्ञा की कोई विशेषता सूचित होती है।
विशेषता–संज्ञा स्त्री० विशेष का भाव या धर्म।
विशेष्य–संज्ञा पुं० व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा होता है।
विश–संज्ञा स्त्री० प्रजा।
विशपति–संज्ञा पुं० राजा।
विश्रांति–संज्ञा स्त्री० विश्राम।
विश्राम–संज्ञा पुं० श्रम मिटाना।
विश्रुत–वि० प्रसिद्ध।
विश्लिष्ट–वि० १. जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २. विकसित।
विश्वंभर–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
विश्वंभरा–संज्ञा स्त्री० पृथ्वी।
विश्व–संज्ञा पुं० १. समस्त ब्रह्मांड। २. संसार।
वि० १. समस्त। २. बहुत।
विश्वकर्मा–संज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. बढ़ई।
विश्वकोश–संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो।
विश्वनाथ–संज्ञा पुं० शिव। महादेव।
विश्वविद्यालय–संज्ञा पुं० वह संस्था जिसमें सभी प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है। यूनिवर्सिटी।
विश्वव्यापी–संज्ञा पुं० ईश्वर।
वि० जो सारे विश्व में व्याप्त हो।
विश्वसनीय–वि० जिसका एतबार किया जा सके।
विश्वस्त–वि० विश्वसनीय।
विश्वाधार–संज्ञा पुं० परमेश्वर।
विश्वामित्र–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध महर्षि।
विश्वास–संज्ञा पुं० एतबार।
विश्वासघात–संज्ञा पुं० [वि० विश्वासघातक] धोखा।
विश्वासपात्र–संज्ञा पुं० विश्वसनीय।
विश्वासी–संज्ञा पुं० १. विश्वास करनेवाला। २. विश्वसनीय।
विश्वेदेव–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २.

शार्दूल–संज्ञा पुं० १. चीता। २. सिंह।
वि० सर्वश्रेष्ठ।
शाल–संज्ञा पुं० साखू।
संज्ञा स्त्री० दुशाला।
शालग्राम–संज्ञा पुं० विष्णु की पत्थर की मूर्ति।
शाला–संज्ञा स्त्री० १. घर। २. जगह।
शालि–संज्ञा पुं० जड़हन धान।
शालिधान–संज्ञा पुं० बासमती चावल।
शालिहोत्र–संज्ञा पुं० घोड़ा।
शालीन–वि० [भाव० शालीनता] १. विनीत। २. चतुर।
शाल्व–संज्ञा पुं० १. सौभराज्य के एक राजा जो श्रीकृष्ण द्वारा मारे गए थे। २. एक प्राचीन देश का नाम।
शावक–संज्ञा पुं० बच्चा, विशेषतः पशु या पक्षी का बच्चा।
शाश्वत–वि० नित्य।
शासक–संज्ञा पुं० [स्त्री० शासिका] १. वह जो शासन करता हो। २. हाकिम।
शासन–संज्ञा पुं० १. आज्ञा। २. हुकूमत।
शासित–वि० [स्त्री० शासिता] १. जिसका शासन किया जाय। २. जिसे दंड दिया जाय।
शास्ति–संज्ञा स्त्री० १. शासन। २. दंड।
शास्त्र–संज्ञा पुं० वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं।
शास्त्रकार–संज्ञा पुं० वह जिसने शास्त्रों की रचना की हो।
शास्त्रज्ञ–संज्ञा पुं० शास्त्रवेत्ता।
शास्त्री–संज्ञा पुं० शास्त्रज्ञ।
शास्त्रीय–वि० शास्त्र-संबंधी।
शाहंशाह–संज्ञा पुं० बादशाहों का बादशाह।
शाहंशाही–संज्ञा स्त्री० शाहंशाह का कार्य्य या भाव।
शाह–संज्ञा पुं० १. महाराज। २. मुसलमान फ़कीरों की उपाधि।
शाहज़ादा–संज्ञा पुं० [स्त्री० शाहज़ादी] बादशाह का लड़का।
शाहाना–वि० राजसी।
शाही–वि० शाहों या बादशाहों का।
शिंशपा–संज्ञा स्त्री० १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।
शिंशुपा–संज्ञा स्त्री० दे० "शिंशपा"।
शिकंजा–संज्ञा पुं० दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र।
शिकन–संज्ञा स्त्री० सिकुड़ने से पड़ी हुई धारी।
शिकम–संज्ञा पुं० पेट। उदर।
शिकमी काश्तकार–संज्ञा पुं० वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।
शिकायत–संज्ञा स्त्री० १. बुराई करना। चुगली। २. उलाहना।
शिकार–संज्ञा पुं० १. जंगली पशुओं को मारने का कार्य्य या क्रीड़ा। अहेर। २. वह जानवर जो मारा गया हो।
शिकारगाह–संज्ञा स्त्री० शिकार खेलने का स्थान।
शिकारी–वि० शिकार करनेवाला।
शिक्षक–संज्ञा पुं० शिक्षा देनेवाला। सिखानेवाला। गुरु।
शिक्षण–संज्ञा पुं० तालीम। शिक्षा।
शिक्षा–संज्ञा स्त्री० सीख। तालीम।

शिक्षागुरु-संज्ञा पुं० विद्या पढ़ानेवाला गुरु।
शिक्षार्थी-संज्ञा पुं० विद्यार्थी।
शिक्षालय-संज्ञा पुं० विद्यालय।
शिक्षा-विभाग-संज्ञा पुं० वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा शिक्षा का प्रबंध होता है।
शिक्षित-वि० पुं० १. जिसने शिक्षा पाई हो। २. विद्वान्।
शिखंड-संज्ञा पुं० १. मोर की पूँछ। २. चोटी। शिखा। ३. काकपक्ष।
शिखंडिनी-संज्ञा स्त्री० मोरनी।
शिखंडी-संज्ञा पुं० मोर।
शिखर-संज्ञा पुं० १. सिरा। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। ३. जैनियों का एक तीर्थ।
शिखरन-संज्ञा स्त्री० दही और चीनी का बनाया हुआ शरबत।
शिखरिणी-संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों में श्रेष्ठ। २. संस्कृत की एक वर्ण-वृत्ति।
शिखा-संज्ञा स्त्री० १. चोटी। चुटैया। २. पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी।
शिखि-संज्ञा पुं० १. मोर। मयूर। २. अग्नि।
शिखी-वि० शिखावाला। संज्ञा पुं० मोर। मयूर।
शिगाफ़-संज्ञा पुं० १. चीरा। नश्तर। २. सूराख।
शिगूफ़ा-संज्ञा पुं० दे० "शगूफ़ा"।
शिताब-क्रि० वि० जल्द। शीघ्र।
शितिकंठ-संज्ञा पुं० शिव।
शिथिल-वि० १. ढीला। २. थका हुआ।
शिथिलता-संज्ञा स्त्री० १. ढीलापन। २. थकावट।
शिनाख़्त-संज्ञा स्त्री० १. पहचान। २. परख।
शिया-संज्ञा पुं० हज़रत अली को पैग़ंबर का ठीक उत्तराधिकारी माननेवाला एक मुसलमान संप्रदाय।
शिर-संज्ञा पुं० सिर।
शिरकत-संज्ञा स्त्री० साझा। हिस्सा।
शिरनैत-संज्ञा पुं० १. गढ़वाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियों की एक शाखा।
शिरमौर-संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. प्रधान।
शिरस्त्राण-संज्ञा पुं० युद्ध में पहनी जानेवाली लोहे की टोपी।
शिरहतश्त-संज्ञा पुं० डलीला।
शिरा-संज्ञा स्त्री० रक्त की छोटी नाड़ी।
शिरीष-संज्ञा पुं० सिरस। (पेड़)
शिरोधार्य-वि० सिर पर धारने या आदर-पूर्वक मानने के योग्य।
शिरोभूषण-संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरोमणि-संज्ञा पुं० श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिला-संज्ञा स्त्री० पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा।
शिलाजीत-संज्ञा पुं०, स्त्री० काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक ओषधि जो शिलाओं का रस है।
शिलादित्य-संज्ञा पुं० दे० "हर्षवर्धन"।
शिलालेख-संज्ञा पुं० पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलीमुख-संज्ञा पुं० भ्रमर।
शिल्प-संज्ञा पुं० १. हाथ से कोई चीज़ बनाकर तैयार करने का काम। दस्तकारी। २. कला-संबंधी व्यवसाय।
शिल्पकला-संज्ञा स्त्री० हाथ से चीज़

श्रोत्र–संज्ञा पुं० वेदज्ञान।
श्रोत्रिय–संज्ञा पुं० १. वेद-वेदांग में पारंगत। २. ब्राह्मणों का एक भेद।
श्रौत–वि० १. श्रवण-संबंधी। २. जो वेद के अनुसार हो।
श्रौतसूत्र–संज्ञा पुं० कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमें यज्ञों का विधान है।
श्लथ–वि० १. शिथिल। २. अशक्त।
श्लाघनीय–वि० प्रशंसनीय। तारीफ़ के लायक़।
श्लाघा–संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा। तारीफ़। २. खुशामद। चापलूसी।
श्लाघ्य–वि० १. प्रशंसनीय। २. श्रेष्ठ। अच्छा।
श्लिष्ट–वि० मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ।
श्लील–वि० उत्तम। नफ़ीस।
श्लेष–संज्ञा पुं० मिलना। जुड़ना।
श्लेषक–वि० जोड़नेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।
श्लेषण–संज्ञा पुं० आलिंगन।
श्लेष्मा–संज्ञा पुं० १. बलगम। २. लिसोढ़े का फल।
श्लोक–संज्ञा पुं० १. शब्द। आवाज़। २. संस्कृत का कोई पद्य।
श्वपच–संज्ञा पुं० चांडाल। डोम।
श्वफल्क–संज्ञा पुं० यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।
श्वशुर–संज्ञा पुं० ससुर।
श्वश्रू–संज्ञा स्त्री० सास।
श्वान–संज्ञा पुं० कुत्ता।
श्वास–संज्ञा पुं० १. नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। २. दम फूलने का रोग। दमा।
श्वासा–संज्ञा स्त्री० प्राण। प्राणवायु।
श्वासोच्छ्वास–संज्ञा पुं० वेग से साँस खींचना और निकालना।
श्वेत–वि० १. सफ़ेद। २. उज्ज्वल। साफ़।
संज्ञा पुं० १. सफ़ेद रंग। २. चाँदी।
श्वेत-कृष्ण–संज्ञा पुं० सफ़ेद और काला। एक बात और दूसरी बात।
श्वेतगज–संज्ञा पुं० ऐरावत हाथी।
श्वेतता–संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी।
श्वेतद्वीप–संज्ञा पुं० एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं।
श्वेतवाराह–संज्ञा पुं० वराह भगवान् की एक मूर्ति।
श्वेतांबर–संज्ञा पुं० जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक।
श्वेता–संज्ञा स्त्री० १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. कौड़ी। ३ शंखिनी।
श्वेताश्वतर–संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। २. कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

बनाने की कला। कारीगरी।
शिल्पकार–संज्ञा पुं० १. शिल्पी। कारीगर। २. राज।
शिल्पशास्त्र–संज्ञा पुं० गृह-निर्माण का शास्त्र।
शिल्पी–संज्ञा पुं० राज। बढ़ई।
शिव–संज्ञा पुं० १. मंगल। कल्याण। २. हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता।
शिव-निर्माल्य–संज्ञा पुं० वह पदार्थ जो शिवजी को अर्पित किया गया हो। (ऐसी चीज़ों के ग्रहण करने का निषेध है।)
शिवपुराण–संज्ञा पुं० अठारह पुराणों में से एक।
शिवपुरी–संज्ञा स्त्री० काशी।
शिवरात्रि–संज्ञा स्त्री० फाल्गुन बदी चतुर्दशी।
शिवलिंग–संज्ञा पुं० महादेव का लिंग या पिंडी जिसका पूजन होता है।
शिवलोक–संज्ञा पुं० कैलास।
शिवा–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. श्रृगाली। सियारिन।
शिवालय–संज्ञा पुं० १. शिवजी का मंदिर। २. कोई देव-मंदिर।
शिवाला–संज्ञा पुं० देव-मंदिर।
शिवि–संज्ञा पुं० राजा उशीनर के पुत्र तथा ययाति के दौहित्र एक राजा, जो अपनी दानशीलता के लिये प्रसिद्ध हैं।
शिविका–संज्ञा स्त्री० पालकी। डोली।
शिविर–संज्ञा पुं० डेरा। खेमा।
शिशिर–संज्ञा पुं० १. एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है। २. हिम।
शिशु–संज्ञा पुं० छोटा बच्चा, विशेषतः आठ वर्ष तक की अवस्था का बच्चा।
शिशुता–संज्ञा स्त्री० बचपन।
शिशुनाग–संज्ञा पुं० दे० "शैशुनाग"।
शिशुपाल–संज्ञा पुं० चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।
शिष्ट–वि० पुं० १. अच्छे स्वभाव और आचरणवाला। २. सभ्य। सज्जन। ३. भला।
शिष्टता–संज्ञा स्त्री० १. सभ्यता। सज्जनता। २. उत्तमता। श्रेष्ठता।
शिष्टाचार–संज्ञा पुं० १. दिखावटी सभ्य व्यवहार। २. आव-भगत।
शिष्य–संज्ञा पुं० [स्त्री० शिष्या] १. विद्यार्थी। २. शागिर्द। चेला।
शिस्त–संज्ञा स्त्री० मछली पकड़ने का काँटा।
शीघ्र–क्रि० वि० बिना विलंब। चट-पट। फ़ौरन।
शीघ्रता–संज्ञा स्त्री० जल्दी। फुरती।
शीत–वि० ठंढा। सर्द।
संज्ञा पुं० १. जाड़ा। ठंढ। २. तुषार। ३. जाड़े का मौसिम।
शीत कटिबंध–संज्ञा पुं० पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमि-खंड के वे कल्पित विभाग जो भूमध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं।
शीतल–वि० ठंढा। सर्द।
शीतल-चीनी–संज्ञा स्त्री० कबाब चीनी।
शीतलता–संज्ञा स्त्री० ठंढापन।
शीतला–संज्ञा स्त्री० १. विस्फोटक रोग। चेचक। २. एक देवी जो इस रोग की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं।
शीरा–संज्ञा पुं० चाशनी।

संज्ञा पुं० वैष्णवों का एक संप्रदाय।
श्रीकंठ-संज्ञा पुं० शिव।
श्रीकांत-संज्ञा पुं० विष्णु।
श्रीकृष्ण-संज्ञा पुं० दे० "कृष्ण" (१)।
श्रीक्षेत्र-संज्ञा पुं० जगन्नाथ पुरी।
श्रीखंड-संज्ञा पुं० हरि-चंदन। मलयागिरि चंदन।
श्रीखंड शैल-संज्ञा पुं० मलय पर्वत।
श्रीदाम-संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण के एक बाल-सखा का नाम। सुदामा।
श्रीधर-संज्ञा पुं० विष्णु।
श्रीनिकेतन-संज्ञा पुं० वैकुंठ।
श्रीनिवास-संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. वैकुंठ।
श्रीपंचमी-संज्ञा स्त्री० वसंत-पंचमी।
श्रीपति-संज्ञा पुं० विष्णु।
श्रीपाद-संज्ञा पुं० पूज्य। श्रेष्ठ।
श्रीफल-संज्ञा पुं० १. बेल। २. नारियल। ३. खिरनी। ४. आँवला।
श्रीमंत-वि० श्रीमान्। धनवान्। धनी।
श्रीमत-वि० १. धनवान्। अमीर। २. जिसमें श्री या शोभा हो। ३. सुंदर।
श्रीमती-संज्ञा स्त्री० १. "श्रीमान्" का स्त्रीलिंग। २. लक्ष्मी। ३. राधा।
श्रीमान्-संज्ञा पुं० १. आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। श्रीयुत। २. धनवान्। अमीर।
श्रीमुख-संज्ञा पुं० शोभित या सुंदर मुख।
श्रीयुक्त-वि० १. जिसमें श्री या शोभा हो। २. बड़े आदमियों के लिये एक आदरसूचक विशेषण।
श्रीयुत-वि० दे० "श्रीयुक्त"।
श्रीरंग-संज्ञा पुं० विष्णु।
श्रीरमण-संज्ञा पुं० विष्णु।
श्रीवत्स-संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. विष्णु के वक्षःस्थल पर का एक चिह्न।
श्रीहत-वि० शोभा-रहित।
श्रीहर्ष-संज्ञा पुं० १. नैषध काव्य के रचयिता संस्कृत के प्रसिद्ध पंडित और कवि। २. रत्नावली, नागानंद और प्रियदर्शिका नाटकों के रचयिता जो संभवतः कान्यकुब्ज के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन थे।
श्रुत-वि० सुना हुआ।
श्रुतकीर्ति-संज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न को ब्याही थी।
श्रुति-संज्ञा स्त्री० १. सुनने की इंद्रिय। कान। २. वेद।
श्रुतिपथ-संज्ञा पुं० १. श्रवण-मार्ग। २. वेद-विहित मार्ग।
श्रुवा-संज्ञा पुं० दे० "स्रुवा"।
श्रेणी-संज्ञा स्त्री० १. पंक्ति। कतार। २. सेना।
श्रेणीबद्ध-वि० पंक्ति के रूप में स्थित। कतार बाँधे हुए।
श्रेय-वि० १. अधिक अच्छा। २. मंगलदायक। शुभ।
संज्ञा पुं० १. अच्छापन। २. कल्याण।
श्रेयस्कर-वि० शुभदायक।
श्रेष्ठ-वि० १. सर्वोत्तम। बहुत अच्छा। २. प्रधान।
श्रेष्ठता-संज्ञा स्त्री० उत्तमता।
श्रेष्ठी-संज्ञा पुं० महाजन। सेठ।
श्रोता-संज्ञा पुं० सुननेवाला।

शीरीं–वि० मीठा।
शीरीनी–संज्ञा स्त्री० १. मिठास। २. मिठाई।
शीर्ण–वि० १. टूटा-फूटा हुआ। २. जीर्ण। फटा पुराना। ३. दुबला। पतला।
शीर्ष–संज्ञा पुं० १. सिर। २. सिरा। चोटी।
शीर्षक–संज्ञा पुं० १. दे० "शीर्ष"। २. वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख के ऊपर हो।
शीर्षबिंदु–संज्ञा पुं० सिर के ऊपर ओर ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।
शील–संज्ञा पुं० १. स्वभाव। प्रकृति। २. संकोच का स्वभाव। मुरौवत।
शीलवान्–वि० १. अच्छे आचरण का। २. सुशील।
शीशम–संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसका तना भारी, सुंदर और मजबूत होता है।
शीशमहल–संज्ञा पुं० वह कोठरी जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।
शीशा–संज्ञा पुं० १. काँच। २. दर्पण। आइना।
शीशी–संज्ञा स्त्री० शीशे का छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।
शुंग–संज्ञा पुं० एक क्षत्रिय वंश जो मौर्यों के पीछे मगध के सिंहासन पर बैठा था।
शुंठि, शुंठी–संज्ञा स्त्री० सोंठ।
शुंड–संज्ञा पुं० हाथी की सूँड़।
शुंडी–संज्ञा पुं० १. हाथी। २. कलवार।
शुंभ–संज्ञा पुं० एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।
शुक–संज्ञा पुं० १. तोता। सुआ। २. शुकदेव।
शुकदेव–संज्ञा पुं० कृष्णद्वैपायन के पुत्र जो पुराणों के वक्ता और ज्ञानी थे।
शुक्ति–संज्ञा स्त्री० सीप। सीपी।
शुक्र–संज्ञा पुं० १. वीर्य्य। २. सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार से पहले पड़ता है।
संज्ञा पुं० धन्यवाद।
शुक्रगुज़ार–वि० आभारी। कृतज्ञ।
शुक्राचार्य्य–संज्ञा पुं० एक ऋषि जो दैत्यों के गुरु थे।
शुक्रिया–संज्ञा पुं० धन्यवाद।
शुक्ल–वि० सफेद। उजला।
संज्ञा पुं० ब्राह्मणों की एक पदवी।
शुक्ल पक्ष–संज्ञा पुं० अमावास्या के उपरांत प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक का पक्ष।
शुचि–वि० १. शुद्ध। पवित्र। २. साफ।
शुतुरमुर्ग–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह बहुत लंबी होती है।
शुद्ध–वि० १. पवित्र। साफ। २. जिसमें किसी प्रकार की अशुद्धि न हो। ठीक। ३. खालिस।
शुद्धि–संज्ञा स्त्री० वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुचि व्यक्ति के शुद्ध होने के समय होता है।
शुद्धिपत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।
शुद्धोदन–संज्ञा पुं० एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा जो बुद्धदेव के पिता थे।

श्रोत्र–संज्ञा पुं० वेदज्ञान।
श्रोत्रिय–संज्ञा पुं० १. वेद-वेदांग में पारंगत। २. ब्राह्मणों का एक भेद।
श्रौत–वि० १. श्रवण-संबंधी। २. जो वेद के अनुसार हो।
श्रौतसूत्र–संज्ञा पुं० कल्प ग्रंथ का वह अंश जिसमें यज्ञों का विधान है।
श्लथ–वि० १. शिथिल। २. अशक्त।
श्लाघनीय–वि० प्रशंसनीय। तारीफ़ के लायक़।
श्लाघा–संज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा। तारीफ़। २. ख़ुशामद। चापलूसी।
श्लाघ्य–वि० १. प्रशंसनीय। २. श्रेष्ठ। अच्छा।
श्लिष्ट–वि० मिला हुआ। एक में जुड़ा हुआ।
श्लील–वि० उत्तम। नफ़ीस।
श्लेष–संज्ञा पुं० मिलना। जुड़ना।
श्लेषक–वि० जोड़नेवाला।
संज्ञा पुं० दे० "श्लेष"।
श्लेषण–संज्ञा पुं० आलिंगन।
श्लेष्मा–संज्ञा पुं० १. बलगम। २. लिसोड़े का फल।
श्लोक–संज्ञा पुं० १. शब्द। आवाज़। २. संस्कृत का कोई पद्य।
श्वपच–संज्ञा पुं० चांडाल। डोम।
श्वफल्क–संज्ञा पुं० यादव वृष्णि के पुत्र और अक्रूर के पिता।
श्वशुर–संज्ञा पुं० ससुर।
श्वश्रू–संज्ञा स्त्री० सास।
श्वान–संज्ञा पुं० कुत्ता।
श्वास–संज्ञा पुं० १. नाक से हवा खींचने और बाहर निकालने का व्यापार। साँस। २. दम फूलने का रोग। दमा।
श्वासा–संज्ञा स्त्री० प्राण। प्राणवायु।
श्वासोच्छ्वास–संज्ञा पुं० वेग से साँस खींचना और निकालना।
श्वेत–वि० १. सफ़ेद। २. उज्ज्वल। साफ़।
संज्ञा पुं० १. सफ़ेद रंग। २. चाँदी।
श्वेत-कृष्ण–संज्ञा पुं० सफ़ेद और काला। एक बात और दूसरी बात।
श्वेतगज–संज्ञा पुं० ऐरावत हाथी।
श्वेतता–संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी।
श्वेतद्वीप–संज्ञा पुं० एक उज्ज्वल द्वीप जहाँ विष्णु रहते हैं।
श्वेतवाराह–संज्ञा पुं० वराह भगवान् की एक मूर्ति।
श्वेतांबर–संज्ञा पुं० जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक।
श्वेता–संज्ञा स्त्री० १. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. कौड़ी। ३. शंखिनी।
श्वेताश्वतर–संज्ञा स्त्री० १. कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। २. कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

शुनःशेफ–संज्ञा पुं० वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।
शुनासीर–संज्ञा पुं० इंद्र।
शुबहा–संज्ञा पुं० संदेह। शक।
शुभ–वि० १. अच्छा। भला। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद।
संज्ञा पुं० मंगल। कल्याण।
शुभचिंतक–वि० हितैषी। खैरख्वाह।
शुभ्र–वि० सफ़ेद। श्वेत।
शुरू–संज्ञा पुं० आरंभ।
शुल्क–संज्ञा पुं० फ़ीस।
शुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० सेवा। परिचर्या।
शुष्क–वि० १. सूखा। खुश्क। २. नीरस।
शूकर–संज्ञा पुं० सूअर। वाराह।
शूकरक्षेत्र–संज्ञा पुं० एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। (आजकल का सोरों।)
शूद्र–संज्ञा पुं० १. आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण। २. शूद्र जाति का पुरुष।
शूद्री–संज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री।
शून्य–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. सिफ़र। ३. कुछ न होना।
वि० १. खाली। २. निराकार।
शून्यवाद–संज्ञा पुं० बौद्धों का एक सिद्धांत।
शून्यवादी–संज्ञा पुं० १. बौद्ध। २. नास्तिक।
शूप–संज्ञा पुं० सूप जिसमें अन्न आदि पछोरा जाता है। फटकनी।
शूर–संज्ञा पुं० वीर। बहादुर।
शूरता–संज्ञा स्त्री० बहादुरी। वीरता।
शूरवीर–संज्ञा पुं० सूरमा।
शूरसेन–संज्ञा पुं० मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे
शूर्पणखा–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी।
शूर्पनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
शूल–संज्ञा पुं० १. सूली, जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था। २. दे० "त्रिशूल"। ३. पीड़ा। दर्द।
शूलधारी–संज्ञा पुं० महादेव।
शूलपाणि–संज्ञा पुं० महादेव।
शूलि–संज्ञा पुं० महादेव।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
शूली–संज्ञा पुं० शिव।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
शृंखल–संज्ञा पुं० १. मेखला। २. साँकल। सिकड़। ३. हथकड़ी-बेड़ी।
शृंखलता–संज्ञा स्त्री० सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।
शृंखला–संज्ञा स्त्री० १. क्रम। २. ज़ंजीर। ३. कटिवस्त्र। मेखला। ४. श्रेणी। कतार।
शृंखलाबद्ध–वि० सिलसिलेवार।
शृंग–संज्ञा पुं० १. पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। २. गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग।
शृंगवेरपुर–संज्ञा पुं० एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निषाद राजा गुह की राजधानी थी।
शृंगार–संज्ञा पुं० १. नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। २. सजावट। बनाव-चुनाव। ३. वह जिससे किसी चीज़ की शोभा हो।
शृंगारना–क्रि० स० सजाना। सँवारना।

ष

ष–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१वाँ वर्ण या अक्षर।

षंड–संज्ञा पुं० १. नामर्द। २. शिव का एक नाम।

षट्–वि० गिनती में ६। छः। संज्ञा पुं० छः की संख्या।

षट्क–संज्ञा पुं० ६ वस्तुओं का समूह।

षट्कर्म–संज्ञा पुं० ब्राह्मणों के छः कर्म–यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना और दान लेना।

षट्चक्र–संज्ञा पुं० षड्यंत्र।

षट्पद्–वि० छः पैरोंवाला। संज्ञा पुं० भ्रमर। भौंरा।

षट्पदी–संज्ञा स्त्री० भ्रमरी।

षट्मुख–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।

षट्राग–संज्ञा पुं० १. संगीत के छः राग–भैरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २. बखेड़ा।

षट्रिपु–संज्ञा पुं० दे० "षड्रिपु"।

षट्शास्त्र–संज्ञा पुं० हिंदुओं के छः दर्शन।

षट्वांग–संज्ञा पुं० षट्वांग नामक राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

षडंग–संज्ञा पुं० वेद के छः अंग। वि० जिसके छः अंग या अवयव हों।

षडानन–वि० जिसे छः मुँह हों। संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय।

षड्गुण–संज्ञा पुं० छः गुणों का समूह।

षड्दर्शन–संज्ञा पुं० न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छः दर्शन।

षड्दर्शनी–संज्ञा पुं० दर्शनों को जाननेवाला। ज्ञानी।

षड्यंत्र–संज्ञा पुं० १. किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कार्रवाई। २. जाल। कपटपूर्ण आयोजन।

षड्रस–संज्ञा पुं० छः प्रकार के रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षड्रिपु–संज्ञा पुं० काम, क्रोध आदि मनुष्य के छः विकार।

षष्ठ–वि० जिसका स्थान पाँचवें के उपरांत हो। छठा।

षष्ठी–संज्ञा स्त्री० १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २. कात्यायनी। दुर्गा।

षोड़श–वि० १. सोलहवाँ। २. जो गिनती में दस से छः अधिक हो। सोलह। संज्ञा पुं० सोलह की संख्या।

षोड़श कला–संज्ञा स्त्री० चंद्रमा के सोलह भाग जो क्रम से एक एक करके निकलते और क्षीण होते हैं।

षोड़श पूजन–संज्ञा पुं० दे० "षोडशोपचार"।

षोड़श शृंगार–संज्ञा पुं० पूर्ण शृंगार जो सोलह प्रकार का है।

षोड़शी–वि० स्त्री० सोलह वर्ष की (लड़की या स्त्री)। संज्ञा स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक।

षोड़शोपचार–संज्ञा पुं० पूजन के पूर्ण अंग—आवाहन, आसन, अर्घ्य-पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प,

शृंगारित–वि० सजाया हुआ।
शृंगि–संज्ञा पुं० १. सिंगी मछली। २. सींगवाला जानवर।
शृंगी–संज्ञा पुं० १. हाथी। २. एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। ३. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा।
शृगाल–संज्ञा पुं० गीदड़। सियार।
शेख़–संज्ञा पुं० १ पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २. इसलाम धर्म का आचार्य।
शेख़ चिल्ली–संज्ञा पुं० बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला।
शेखर–संज्ञा पुं० १. सिर। २. मुकुट। ३. (पर्वत आदि का) शिखर।
शेखावत–संज्ञा पुं० कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।
शेख़ी–संज्ञा स्त्री० १. गर्व। अहंकार। २. डींग।
शेख़ीबाज़–वि० १. अभिमानी। २. डींग मारनेवाला व्यक्ति।
शेर–संज्ञा पुं० १. व्याघ्र। नाहर। २. उर्दू कविता के दो चरण।
शेर-पंजा–संज्ञा पुं० बघनहा।
शेर बबर–संज्ञा पुं० सिंह। केसरी।
शेरवानी–संज्ञा स्त्री० अँगरेज़ी ढंग की काट का एक प्रकार का अँगा।
शेष–संज्ञा पुं० १. बाकी। २. समाप्ति। ३. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्प-राज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है। वि० १. बचा हुआ। २ समाप्त। ख़तम।
शेषधर–संज्ञा पुं० शिवजी।
शेषनाग–संज्ञा पुं० दे० "शेष" (३)।
शेषशायी–संज्ञा पुं० विष्णु।
शेषाचल–संज्ञा पुं० दक्षिण का एक पर्वत।
शैतान–संज्ञा पुं० १. तमोगुण-मय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है। २. दुष्ट देवयोनि।
शैतानी–संज्ञा स्त्री० दुष्टता। शरारत। वि० नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण।
शैथिल्य–संज्ञा पुं० शिथिलता।
शैल–संज्ञा पुं० पर्वत। पहाड़।
शैलकुमारी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
शैलजा–संज्ञा स्त्री० १ पार्वती। २. दुर्गा।
शैलतटी–संज्ञा स्त्री० पहाड़ की तराई।
शैलसुता–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
शैली–संज्ञा स्त्री० १. प्रणाली। तर्ज़। तरीका। २. रीति।
शैलेंद्र–संज्ञा पुं० हिमालय।
शैलेय–वि० पहाड़ी। पथरीला।
शैव–संज्ञा पुं० शिव का अनन्य उपासक।
शैवलिनी–संज्ञा स्त्री० नदी।
शैवाल–संज्ञा पुं० सिवार।
शैव्या–संज्ञा स्त्री० राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम।
शैशव–संज्ञा पुं० १. बचपन। २. लड़कपन।
शोक–संज्ञा पुं० रंज। गम।
शोख़–वि० १. ढीठ। २. चंचल।
शोच–संज्ञा पुं० १. दुःख। अफ़सोस। २. चिंता।
शोचनीय–वि० जिसकी दशा देखकर दुःख हो।
शोण–संज्ञा पुं० १. लाल रंग। २. रक्त। ३. एक नद का नाम।
शोणित–वि० लाल। संज्ञा पुं० ख़ून।
शोथ–संज्ञा पुं० किसी अंग का फूलना। सूजन।
शोध–संज्ञा पुं० १. जाँच। २. खोज।

धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और वंदना।

षोड़श संस्कार—संज्ञा पुं० गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के १६ संस्कार।

स

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन।

सइतना†—क्रि० स० १. संचय करना। २. सहेजना।

सउपना‡—क्रि० स० दे० "सौंपना"।

संकट—संज्ञा पुं० विपत्ति। आफत। मुसीबत।

संकटा—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध देवी। २. ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

संकर—संज्ञा पुं० १. दो चीजों का आपस में मिलना। २. दोगला। संज्ञा पुं० दे० "शंकर"।

सकरा†—वि० पतला और तंग। संज्ञा पुं० कष्ट। दुःख। विपत्ति।

संकर्षण—संज्ञा पुं० १. खींचने की क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३. कृष्ण के भाई बलराम।

संकल†—संज्ञा स्त्री० सिकड़ी। जंजीर।

संकलन—संज्ञा पुं० १. संग्रह करना। जमा करना। २. अनेक ग्रंथों से अच्छे अच्छे विषय चुनने की क्रिया।

संकलपना‡—क्रि० स० किसी धार्मिक कार्य के निमित्त कुछ दान देना। संकल्प करना। क्रि० अ० विचार करना।

संकलित—वि० १. चुना हुआ। २. इकट्ठा किया हुआ।

संकल्प—संज्ञा पुं० १. कोई देवकार्य करने से पहले एक निश्चित मंत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ़ निश्चय करना। २. ऐसे समय पढ़ा जानेवाला मंत्र। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का विचार।

सँकाना‡—क्रि० अ० डरना।

संकीर्ण—वि० १. संकुचित। सँकरा। २. क्षुद्र। संज्ञा पुं० संकट। विपत्ति।

संकीर्त्तन—संज्ञा पुं० किसी की कीर्ति का वर्णन करना।

सँकुचना—क्रि० अ० दे० "सकुचना"।

संकुचित—वि० १. संकोचयुक्त। लज्जित। २ सिकुड़ा हुआ।

संकुल—वि० १. संकीर्ण। घना। २. परिपूर्ण।

संकेत—संज्ञा पुं० १. भाव प्रकट करने के लिये कायिक चेष्टा। इशारा। इंगित। २. चिह्न। निशान। ३. पते की बातें।

सँकेत†—वि० दे० "सँकरा"।

सँकेतना—क्रि० स० संकट में डालना। कष्ट में डालना।

संकोच—संज्ञा पुं० १. सिकुड़ने की क्रिया। खिंचाव। २. लज्जा। ३. आगा पीछा। हिचकिचाहट।

शुनःशेफ–संज्ञा पुं० वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।
शुनासीर–संज्ञा पुं० इंद्र।
शुबहा–संज्ञा पुं० संदेह। शक।
शुभ–वि० १. अच्छा। भला। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद।
संज्ञा पुं० मंगल। कल्याण।
शुभचिंतक–वि० हितैषी। ख़ैरख़्वाह।
शुभ्र–वि० सफ़ेद। श्वेत।
शुरू–संज्ञा पुं० आरंभ।
शुल्क–संज्ञा पुं० फ़ीस।
शुश्रूषा–संज्ञा स्त्री० सेवा। परिचर्या।
शुष्क–वि० १. सूखा। ख़ुश्क। २. नीरस।
शूकर–संज्ञा पुं० सूअर। वाराह।
शूकरक्षेत्र–संज्ञा पुं० एक तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है। (आजकल का सोरों।)
शूद्र–संज्ञा पुं० १. आर्यों के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण। २. शूद्र जाति का पुरुष।
शूद्री–संज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री।
शून्य–संज्ञा पुं० १. आकाश। २. सिफ़र। ३. कुछ न होना।
वि० १. ख़ाली। २. निराकार।
शून्यवाद–संज्ञा पुं० बौद्धों का एक सिद्धांत।
शून्यवादी–संज्ञा पुं० १. बौद्ध। २. नास्तिक।
शूप–संज्ञा पुं० सूप जिसमें अन्न आदि पछोरा जाता है। फटकनी।
शूर–संज्ञा पुं० वीर। बहादुर।
शूरता–संज्ञा स्त्री० बहादुरी। वीरता।
शूरवीर–संज्ञा पुं० सूरमा।
शूरसेन–संज्ञा पुं० मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह थे
शूर्पणखा–संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध राक्षसी जो रावण की बहन थी।
शूर्पनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
शूल–संज्ञा पुं० १. सूली, जिससे प्राचीन काल में प्राण-दंड दिया जाता था। २. दे० "त्रिशूल"। ३. पीड़ा। दर्द।
शूलधारी–संज्ञा पुं० महादेव।
शूलपाणि–संज्ञा पुं० महादेव।
शूलि–संज्ञा पुं० महादेव।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
शूली–संज्ञा पुं० शिव।
संज्ञा स्त्री० दे० "सूली"।
शृंखल–संज्ञा पुं० १. मेखला। २. साँकल। सिकड़। ३. हथकड़ी-बेड़ी।
शृंखलता–संज्ञा स्त्री० सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।
शृंखला–संज्ञा स्त्री० १. क्रम। २. ज़ंजीर। ३. कटिवस्त्र। मेखला। ४. श्रेणी। कतार।
शृंखलाबद्ध–वि० सिलसिलेवार।
शृंग–संज्ञा पुं० १. पर्वत का ऊपरी भाग। शिखर। २. गौ, भैंस, बकरी आदि के सिर के सींग।
शृंगवेरपुर–संज्ञा पुं० एक प्राचीन नगर जहाँ रामचंद्र के समय निषाद राजा गुह की राजधानी थी।
शृंगार–संज्ञा पुं० १. नौ रसों में से एक रस जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। २. सजावट। बनाव-चुनाव। ३. वह जिससे किसी चीज़ की शोभा हो।
शृंगारना–क्रि० स० सजाना। सँवारना।

संकोचित–संज्ञा पुं० तलवार चलाने का एक ढंग या प्रकार।
संकोची–संज्ञा पुं० १. सिकुड़नेवाला। २. शर्म करनेवाला।
संक्रमण–संज्ञा पुं० गमन। चलना।
संक्रांति–संज्ञा स्त्री० सूर्य्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करना या प्रवेश करने का समय।
संक्रामक–वि० जो संसर्ग या छूत आदि के कारण फैलता हो।
संक्षिप्त–वि० १. जो संक्षेप में हो। २. थोड़ा। अल्प।
संक्षिप्त लिपि–संज्ञा स्त्री० एक लेखन-प्रणाली जिसमें थोड़े काल और स्थान में बहुत सी बातें लिखी जा सकती हैं।
संक्षेप–संज्ञा पुं० १. थोड़े में कोई बात कहना। २. कम करना।
संक्षेपतः–अव्य० संक्षेप में। थोड़े में।
संखिया–संज्ञा पुं० एक बहुत ज़हरीली प्रसिद्ध सफ़ेद उपधातु या पत्थर।
संख्यक–वि० संख्यावाला।
संख्या–संज्ञा स्त्री० १. तादाद। शुमार। २. अदद।
संग–संज्ञा पुं० १. मिलन। २. सहवास। सोहबत।
क्रि० वि० साथ। हमराह।
संग जराहत–संज्ञा पुं० एक सफ़ेद चिकना पत्थर जो घाव भरने के लिये बहुत उपयोगी होता है।
संगठन–संज्ञा पुं० बिखरी हुई शक्तियों या लोगों आदि को इस प्रकार मिलाकर एक करना कि उनमें नवीन बल आ जाय।
संगठित–वि० जो भली भाँति व्यवस्था करके एक में मिलाया हुआ हो।
संगत–संज्ञा स्त्री० १. संग रहना। संगति। २. वह मठ जहाँ उदासी या निर्मले साधु रहते हैं। ३. संसर्ग।
संग-तराश–संज्ञा पुं० पत्थर काटने या गढ़नेवाला मज़दूर।
संगति–संज्ञा स्त्री० १. मिलने की क्रिया। मेल। २. संग। साथ। ३. प्रसंग।
संगदिल–वि० कठोरहृदय। निर्दय। दयाहीन।
संगम–संज्ञा पुं० १. मिलाप। सम्मेलन। संयोग। २. दो नदियों के मिलने का स्थान।
संग-मर्मर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत चिकना, मुलायम और सफ़ेद प्रसिद्ध क़ीमती पत्थर।
संग-मूसा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का काला चिकना, क़ीमती पत्थर।
संगाती–संज्ञा पुं० १. साथी। २. दोस्त।
संगी–संज्ञा पुं० संग रहनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा।
वि० संगीन।
संगीत–संज्ञा पुं० वह कार्य्य जिसमें नाचना, गाना और बजाना तीनों हों।
संगीन–संज्ञा पुं० लोहे का एक नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है।
वि० १. पत्थर का बना हुआ। २. मोटा।
संगृहीत–वि० एकत्र किया हुआ। सङ्कलित।
संग्रह–संज्ञा पुं० १. एकत्र करना। संचय। २. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बात एकत्र की गई हों।

शृंगारित–वि० सजाया हुआ।
शृंगि–संज्ञा पुं० १. सिंगी मछली। २. सींगवाला जानवर।
शृंगी–संज्ञा पुं० १. हाथी। २. एक ऋषि जो शमीक के पुत्र थे। ३. सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा।
शृगाल–संज्ञा पुं० गीदड़। सियार।
शेख–संज्ञा पुं० १ पैगंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। २. इसलाम धर्म का आचार्य।
शेख चिल्ली–संज्ञा पुं० बड़े बड़े मंसूबे बाँधनेवाला।
शेखर–संज्ञा पुं० १. सिर। २. मुकुट। ३. (पर्वत आदि का) शिखर।
शेखावत–संज्ञा पुं० कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।
शेखी–संज्ञा स्त्री० १. गर्व। अहंकार। २. डींग।
शेखीबाज़–वि० १. अभिमानी। २. डींग मारनेवाला व्यक्ति।
शेर–संज्ञा पुं० १. व्याघ्र। नाहर। २. उर्दू कविता के दो चरण।
शेर-पंजा–संज्ञा पुं० बघनहा।
शेर बबर–संज्ञा पुं० सिंह। केसरी।
शेरवानी–संज्ञा स्त्री० अँगरेजी ढंग की काट का एक प्रकार का अँगा।
शेष–संज्ञा पुं० १. बाकी। २. समाप्ति। ३. पुराणानुसार सहस्र फनों के सर्पराज जिनके फनों पर पृथ्वी ठहरी है। वि०१. बचा हुआ। २ समाप्त। खतम।
शेषधर–संज्ञा पुं० शिवजी।
शेषनाग–संज्ञा पुं० दे० "शेष" (३)।
शेषशायी–संज्ञा पुं० विष्णु।
शेषाचल–संज्ञा पुं० दक्षिण का एक पर्वत।
शैतान–संज्ञा पुं० १. तमोगुण-मय देवता जो मनुष्यों को बहकाकर धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है। २. दुष्ट देवयोनि।
शैतानी–संज्ञा स्त्री० दुष्टता। शरारत। वि० नटखटी से भरा। दुष्टतापूर्ण।
शैथिल्य–संज्ञा पुं० शिथिलता।
शैल–संज्ञा पुं० पर्वत। पहाड़।
शैलकुमारी–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
शैलजा–संज्ञा स्त्री०१ पार्वती। २. दुर्गा।
शैलतटी–संज्ञा स्त्री० पहाड़ की तराई।
शैलसुता–संज्ञा स्त्री० पार्वती।
शैली–संज्ञा स्त्री० १. प्रणाली। तर्ज़। तरीका। २. रीति।
शैलेंद्र–संज्ञा पुं० हिमालय।
शैलेय–वि० पहाड़ी। पथरीला।
शैव–संज्ञा पुं० शिव का अनन्य उपासक।
शैवलिनी–संज्ञा स्त्री० नदी।
शैवाल–संज्ञा पुं० सिवार।
शैव्या–संज्ञा स्त्री० राजा हरिश्चंद्र की रानी का नाम।
शैशव–संज्ञा पुं० १. बचपन। २. लड़कपन।
शोक–संज्ञा पुं० रंज। ग़म।
शोख–वि० १. ढीठ। २. चंचल।
शोच–संज्ञा पुं० १. दुःख। अफ़सोस। २. चिंता।
शोचनीय–वि० जिसकी दशा देखकर दुःख हो।
शोण–संज्ञा पुं० १. लाल रंग। २. रक्त। ३. एक नद का नाम।
शोणित–वि० लाल। संज्ञा पुं० खून।
शोथ–संज्ञा पुं० किसी अंग का फूलना। सूजन।
शोध–संज्ञा पुं० १. जाँच। २. खोज।

संग्रहणी–संज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें खाद्य पदार्थ बराबर पाखाने के रास्ते निकल जाता है।
संग्राम–संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।
संग्राह्य–वि० संग्रह करने योग्य।
संघ–संज्ञा पुं० १. समूह। समुदाय। दल। २. समाज। ३. प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। ४. बौद्ध श्रमणों आदि का धार्मिक समाज। संगत।
संघट–संज्ञा पुं० १. संघटन। २. युद्ध। ३. समूह। ढेर। राशि।
संघटन–संज्ञा पुं० १. मेल। संयोग। २. रचना।
संघट्ट, संघट्टन–संज्ञा पुं० १. बनावट। २. मिलन।
संघर्ष, संघर्षण–संज्ञा पुं० १. रगड़ खाना। रगड़। घिस्सा। २. प्रतियोगिता। स्पर्धा। ३. रगड़ना। घिसना।
संघात–संज्ञा पुं० १. समूह। समष्टि। २. आघात। ३. हत्या।
संघाती–संज्ञा पुं० १. साथी। सहचर। २. मित्र।
संघार@†–संज्ञा पुं० दे० "संहार"।
संघारना@–क्रि० स० १. नाश करना। २. मार डालना।
संघाराम–संज्ञा पुं० बौद्ध भिक्षुओं आदि के रहने का मठ। विहार।
संचकर@–संज्ञा पुं० १. संचय करनेवाला। २. कंजूस।
संचना@†–क्रि० स० संग्रह करना। संचय करना।
संचय–संज्ञा पुं० १. समूह। २. एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।
संचरण–संज्ञा पुं० संचार करने की क्रिया। चलना।
संचरना@†–क्रि० अ० प्रसारित होना।
संचार–संज्ञा पुं० १. गमन। २. फैलना।
संचारना@†–क्रि० स० १. किसी वस्तु का संचार करना। २. प्रचार करना। ३. जन्म देना।
संचारिका–संज्ञा स्त्री० दूती। कुटनी
संचारी–वि० गतिशील।
संचालक–संज्ञा पुं० चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।
संचालन–संज्ञा पुं० १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २. काम जारी रखना।
संचित–वि० संचय या जमा किया हुआ।
संजय–संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र का मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय धृतराष्ट्र को वह युद्ध का विवरण सुनाता था।
संजात–वि० १. उत्पन्न। २. प्राप्त।
संजाफ़–संज्ञा स्त्री० १. झालर। किनारा। २. गोट। मगजी।
संजाफ़ी–संज्ञा पुं० आधा लाल और आधा हरा घोड़ा।
संजाब–संज्ञा पुं० दे० "संजाफ़"।
संजीदा–वि० १. गंभीर। २. समझदार।
संजीवन–संज्ञा पुं० १. भली भाँति जीवन व्यतीत करना। २. जीवन देनेवाला।
संजीवनी–वि० स्त्री० जीवन देनेवाली। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित ओषधि।
संजीवनी विद्या–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कल्पित विद्या। कहते हैं कि मरे हुए व्यक्ति को इस विद्या के

तलाश।
शोधक-संज्ञा पुं० १. शोधनेवाला। २. खोजनेवाला।
शोधन-संज्ञा पुं० १. छान-बीन। २. जाँच। तलाश करना। ३. विरेचन।
शोधना-क्रि० स० १. शुद्ध करना। २. दुरुस्त करना। ३. औषध के लिये धातु का संस्कार करना।
शोभन-वि० सुंदर।
शोभना-संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री। २. हलदी।
☼ क्रि० स० शोभित होना।
शोभांजन-संज्ञा पुं० सहिंजन।
शोभा-संज्ञा स्त्री० छवि। सुंदरता। छटा।
शोभायमान-वि० सोहता हुआ। सुंदर।
शोभित-वि० १. सुंदर। २. अच्छा लगता हुआ।
शोर-संज्ञा पुं० ज़ोर की आवाज़।
शोरबा-संज्ञा पुं० किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। जूस। रसा।
शोरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में निकलता है।
शोला-संज्ञा पुं० आग की लपट।
शोष-संज्ञा पुं० १. सूखने का भाव। खुश्क होना। २. राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी।
शोषक-संज्ञा पुं० १. जल, रस या तरी खींचनेवाला। २. क्षीण करनेवाला।
शोषण-संज्ञा पुं० सोखना। खुश्क करना।
शोहदा-संज्ञा पुं० १. व्यभिचारी। २. गुंडा।
शोहरत-संज्ञा स्त्री० नामवरी। ख्याति। जनरव।
शोहरा-संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।
शौक़-संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग की तीव्र अभिलाषा। २. व्यसन। चसका।
शौकत-संज्ञा स्त्री० दे० "शान"।
शौक़ीन-संज्ञा पुं० १. शौक करनेवाला। २. सदा बना-ठना रहनेवाला।
शौक़ीनी-संज्ञा स्त्री० शौक़ीन होने का भाव या काम।
शौच-संज्ञा पुं० १. शुद्धता। पवित्रता। २. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। ३. पाखाने जाना।
शौत-संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
शौनक-संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि।
शौर्य्य-संज्ञा पुं० वीरता। बहादुरी।
शौहर-संज्ञा पुं० स्त्री का पति। स्वामी। खाविंद।
श्मशान-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। मरघट।
श्मशानपति-संज्ञा पुं० शिव।
श्याम-संज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. मेघ। ३. स्याम नामक देश।
वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। साँवला।
श्यामकर्ण-संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफ़ेद और एक कान काला हो।
श्याम-जीरा-संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धान। २. काला जीरा।
श्यामता-संज्ञा स्त्री० १. श्याम का भाव या धर्म्म। साँवलापन। २. उदासी।
श्यामल-वि० जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला।

द्वारा जिलाया जा सकता है।
संजुक्त०–वि० दे० "संयुक्त"।
संजुग०–संज्ञा पुं० संग्राम। युद्ध।
संजुत०–वि० दे० "संयुक्त"।
सँजोइ०–क्रि० वि० साथ में।
सँजोइल०–वि० अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित।
सँजोग–संज्ञा पुं० दे० "संयोग"।
सँजोगी–संज्ञा पुं० दे० "संयोगी"।
सँजोना†–क्रि० स० सजाना।
सँजोवल०†–वि० १. सुसज्जित। २. सेना सहित। ३. सावधान।
संज्ञक–वि० संज्ञावाला। जिसकी संज्ञा हो। (यौगिक में)
संज्ञा–संज्ञा स्त्री० १. चेतना। २. बुद्धि। ३. व्याकरण में वह विकारी शब्द जिससे किसी वस्तु या भाव आदि का बोध होता है।
संज्ञाहीन–वि० बेहोश। बेसुध।
सँझला‡–वि० संध्या का।
सँझवाती–संज्ञा स्त्री० १. संध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। २. वह गीत जो संध्या समय गाया जाता है।
सँझा†–संज्ञा स्त्री० संध्या। शाम।
संड मुसंड–वि० हट्टा-कट्टा। बहुत मोटा।
सँड़सा–संज्ञा पुं० लोहे का एक औज़ार।
संडा–वि० मोटा-ताज़ा। हृष्ट-पुष्ट।
संडास–संज्ञा पुं० कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा पाखाना।
संत–संज्ञा पुं० १. साधु, संन्यासी या त्यागी पुरुष। २. ईश्वर-भक्त। धार्म्मिक पुरुष।
संतत–अव्य० सदा। निरंतर। बराबर।
संतति–संज्ञा स्त्री० बाल-बच्चे।
संतपन–संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह तपना। २. बहुत दुःख देना।
संतप्त–वि० १. जला हुआ। दग्ध। २. दुखी। पीड़ित।
संतरण–संज्ञा पुं० अच्छी तरह से तैरना या पार होना।
संतरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू।
संतरी–संज्ञा पुं० १. पहरेदार। २. द्वारपाल।
संतान–संज्ञा पुं० बाल-बच्चे। संतति। औलाद।
संताप–संज्ञा पुं० १. ताप। जलन। २. दुःख। कष्ट।
संतापन–संज्ञा पुं० संताप देना।
संतापना०†–क्रि० स० दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।
संतापित–वि० दे० "संतप्त"।
संतापी–संज्ञा पुं० संताप देनेवाला।
संती‡–अव्य० १. बदले में। एवज़ में। २. द्वारा।
संतुष्ट–वि० १. तृप्त। २. जो मान गया हो।
संतोख–संज्ञा पुं० दे० "संतोष"।
संतोष–संज्ञा पुं० १. सब्र। २. तृप्ति। ३. प्रसन्नता। सुख।
संतोषित–वि० दे० "संतुष्ट"।
संतोषी–संज्ञा पुं० वह जो सदा संतोष रखता हो। सब्र करनेवाला।
संदर्भ–संज्ञा पुं० १. रचना। बनावट। २. निबंध। लेख।
संदल–संज्ञा पुं० श्रीखंड। चंदन।

श्यामसुंदर–संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।
श्यामा–संज्ञा स्त्री० १. राधा। २. एक गोपी का नाम। ३. कोयल नामक पक्षी।
वि० श्याम रंगवाली। काली।
श्याल–संज्ञा पुं० पत्नी का भाई। साला।
संज्ञा पुं० गीदड़। सियार।
श्येन–संज्ञा पुं० शिकरा या बाज़ पक्षी।
श्येनी–संज्ञा स्त्री० कश्यप की एक कन्या जो पक्षियों की जननी थी।
श्रद्धा–संज्ञा स्त्री० १. बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव। २. वेदादि शास्त्रों और आप्त पुरुषों के वचनों पर विश्वास। आस्था।
श्रद्धालु–वि० जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धायुक्त।
श्रद्धावान्–संज्ञा पुं० १. श्रद्धालु पुरुष। २. धर्मनिष्ठ।
श्रद्धास्पद–वि० जिसके प्रति श्रद्धा की जा सके। पूजनीय।
श्रद्धेय–वि० श्रद्धास्पद।
श्रम–संज्ञा पुं० १. परिश्रम। मेहनत। २. थकावट।
श्रमकण–संज्ञा पुं० पसीने की बूँदें।
श्रमजल–संज्ञा पुं० पसीना। स्वेद।
श्रमजित–वि० जो बहुत परिश्रम करने पर भी न थके।
श्रमजीवी–वि० मेहनत करके पेट पालनेवाला। श्रमजीवी।
श्रमण–संज्ञा पुं० बौद्ध मतावलंबी संन्यासी।
श्रमसीकर–संज्ञा पुं० पसीना।
श्रमित–वि० थका हुआ। श्रांत।
श्रमी–संज्ञा पुं० १. मेहनती। २. श्रमजीवी।
श्रवण–संज्ञा पुं० १. वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। २. देवताओं आदि के चरित्र सुनना। ३. वैश्य तपस्वी अंधक मुनि के पुत्र का नाम। ४. बाइसवाँ नक्षत्र।
श्रवन*–संज्ञा पुं० श्रवण। कान।
श्रवित*–वि० बहा हुआ।
श्रव्य–वि० जो सुना जा सके।
श्रांत–वि० १. जितेंद्रिय। २. परिश्रम से थका हुआ।
श्रांति–संज्ञा स्त्री० १. थकावट। २. विश्राम।
श्राद्ध–संज्ञा पुं० १. वह कार्य जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. वह कृत्य जो पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।
श्राप–संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
श्रावक–संज्ञा पुं० १. बौद्ध साधु या संन्यासी। २. नास्तिक।
वि० सुननेवाला।
श्रावग–संज्ञा पुं० दे० "श्रावक"।
श्रावगी–संज्ञा पुं० जैनी।
श्रावण–संज्ञा पुं० आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना। सावन।
श्रावणी–संज्ञा स्त्री० सावन मास की पूर्णमासी। 'रक्षा-बंधन'।
श्रावस्ती–संज्ञा स्त्री० उत्तर कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत-महेत कहलाती है।
श्राव्य–वि० सुनने के योग्य।
श्रिय–संज्ञा स्त्री० मंगल। कल्याण।
श्री–संज्ञा स्त्री० १. विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। २. सरस्वती। ३. प्रभा, शोभा। ४. कांति।

संदली–वि० १. संदल के रंग का हलका पीला (रंग)। २. चंदन का।

संदिग्ध–वि० १. जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। २. जिस पर संदेह हो।

संदीपन–संज्ञा पुं० १. उद्दीप्त करने की क्रिया। उद्दीपन। २. कृष्ण के गुरु का नाम। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० उद्दीपन या उत्तेजन करनेवाला।

संदूक–संज्ञा पुं० पेटी। बक्स।

संदूकड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा संदूक।

संदूर–संज्ञा पुं० दे० "सिंदूर"।

संदेश–संज्ञा पुं० १. समाचार। हाल। खबर। २. एक प्रकार की बँगला मिठाई।

संदेसा–संज्ञा पुं० खबर। हाल।

संदेसी–संज्ञा पुं० सँदेसा ले जानेवाला। दूत। बसीठ।

संदेह–संज्ञा पुं० संशय। शंका। शक।

संध०†–संज्ञा स्त्री० दे० "संधि"।

संधान–संज्ञा पुं० १. लक्ष्य करने का व्यापार। निशाना लगाना। २. अन्वेषण। खोज।

संधानना†–क्रि० स० १. निशाना लगाना। २. बाण छोड़ना।

संधि–संज्ञा स्त्री० १. मेल। संयोग। २. जोड़। ३. राजाओं आदि में होनेवाली वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार युद्ध बंद किया जाता है। ४. सुलह। ५. गाँठ। ६. चोरी आदि करने के लिये दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ७. बीच की खाली जगह। अवकाश।

संध्या–संज्ञा स्त्री० १. दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधिकाल। २. शाम। ३. आर्यों की एक विशिष्ट उपासना।

संन्यास–संज्ञा पुं० भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम।

संन्यासी–संज्ञा पुं० संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला।

संपति–संज्ञा स्त्री० दे० "संपत्ति"।

संपत्ति–संज्ञा स्त्री० १. ऐश्वर्य्य। वैभव। २. धन। दौलत। जायदाद।

संपद्–संज्ञा स्त्री० १. सिद्धि। पूर्णता। २. ऐश्वर्य्य। वैभव। गौरव। ३. सौभाग्य।

संपदा–संज्ञा स्त्री० १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

संपन्न–वि० १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। २. सहित। ३. दौलतमंद।

संपर्क–संज्ञा पुं० १. मिश्रण। २. लगाव। संसर्ग। वास्ता।

संपा–संज्ञा स्त्री० विद्युत्। बिजली।

संपात–संज्ञा पुं० एक साथ गिरना या पड़ना।

संपाति–संज्ञा पुं० १. एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नामक राक्षस का एक पुत्र।

संपाती–संज्ञा पुं० दे० "संपाति"।

संपादक–संज्ञा पुं० १. कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २. तैयार करनेवाला।

संपादकीय–वि० संपादक का।

संपादन–संज्ञा पुं० १. काम को पूरा करना। २. किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगा-

तलाश।
शोधक–संज्ञा पुं० १. शोधनेवाला। २. खोजनेवाला।
शोधन–संज्ञा पुं० १. छान-बीन। २. जाँच। तलाश करना। ३. विरेचन।
शोधना–क्रि० स० १. शुद्ध करना। २. दुरुस्त करना। ३. औषध के लिये धातु का संस्कार करना।
शोभन–वि० सुंदर।
शोभना–संज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री। २. हलदी।
ॐ क्रि० स० शोभित होना।
शोभांजन–संज्ञा पुं० सहिंजन।
शोभा–संज्ञा स्त्री० छवि। सुंदरता। छटा।
शोभायमान–वि० सोहता हुआ। सुंदर।
शोभित–वि० १. सुंदर। २. अच्छा लगता हुआ।
शोर–संज्ञा पुं० ज़ोर की आवाज़।
शोरबा–संज्ञा पुं० किसी उबाली हुई वस्तु का पानी। जूस। रसा।
शोरा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में निकलता है।
शोला–संज्ञा पुं० आग की लपट।
शोष–संज्ञा पुं० १. सूखने का भाव। खुश्क होना। २. राजयक्ष्मा का भेद। क्षयी।
शोषक–संज्ञा पुं० १. जल, रस या तरी खींचनेवाला। २. क्षीण करनेवाला।
शोषण–संज्ञा पुं० सोखना। खुश्क करना।
शोहदा–संज्ञा पुं० १. व्यभिचारी। २. गुंडा।
शोहरत–संज्ञा स्त्री० नामवरी। ख्याति। जनरव।
शोहरा–संज्ञा पुं० दे० "शोहरत"।
शौक़–संज्ञा पुं० १. किसी वस्तु की प्राप्ति या भोग की तीव्र अभिलाषा। २. व्यसन। चसका।
शौकत–संज्ञा स्त्री० दे० "शान"।
शौक़ीन–संज्ञा पुं० १. शौक़ करनेवाला। २. सदा बना-ठना रहनेवाला।
शौक़ीनी–संज्ञा स्त्री० शौक़ीन होने का भाव या काम।
शौच–संज्ञा पुं० १. शुद्धता। पवित्रता। २. वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किए जाते हैं। ३. पाखाने जाना।
शौत–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
शौनक–संज्ञा पुं० एक प्राचीन ऋषि।
शौर्य–संज्ञा पुं० वीरता। बहादुरी।
शौहर–संज्ञा पुं० स्त्री का पति। स्वामी। खाविंद।
श्मशान–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हों। मरघट।
श्मशानपति–संज्ञा पुं० शिव।
श्याम–संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. मेघ। ३. स्याम नामक देश।
वि० १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। साँवला।
श्यामकर्ण–संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका सारा शरीर सफ़ेद और एक कान काला हो।
श्यामजीरा–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का धान। २. काला जीरा।
श्यामता–संज्ञा स्त्री० १. श्याम का भाव या धर्म। साँवलापन। २. उदासी।
श्यामल–वि० जिसका वर्ण कृष्ण हो। काला।

कर प्रकाशित करना।
संपादित–वि० पूरा किया हुआ।
संपुट–संज्ञा पुं० १. पात्र के आकार की कोई वस्तु। २. डिब्बा। ३. अंजली। ४. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि फूँकते हैं।
संपूर्ण–वि० १. खूब भरा हुआ। २. सब।
संपूर्णतः–क्रि० वि० पूरी तरह से।
संपूर्णतया–क्रि० वि० पूरी तरह से।
संपूर्णता–संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण होने का भाव। २. समाप्ति।
सँपेरा–संज्ञा पुं० साँप पालनेवाला। मदारी।
सँपोला–संज्ञा पुं० साँप का बच्चा।
संप्रति–अव्य० इस समय। अभी।
संप्रदान–संज्ञा पुं० १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा। मंत्रोपदेश।
संप्रदाय–संज्ञा पुं० १. कोई विशेष धर्म-संबंधी मत। २. किसी मत के अनुयायियों की मंडली।
संप्राप्त–वि० १. पहुँचा हुआ। २. पाया हुआ।
संबंध–संज्ञा पुं० १. एक साथ बँधना। २. लगाव। ३. नाता। रिश्ता। ४. विवाह।
संबंधी–वि० १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. विषयक।
संज्ञा पुं० १. रिश्तेदार। २.
दे० "संवत्"
बँधा हुआ
का

सफ़र-खर्च।
संबुद्ध–संज्ञा पुं० ज्ञानी।
संबोधन–संज्ञा पुं० १. जगाना। २. पुकारना। ३. विदित कराना।
संबोधना–क्रि० स० समझाना-बुझाना।
सँभरना–क्रि० अ० दे० "सँभलना"।
सँभलना–क्रि० अ० १. किसी सहारे पर रुका रह सकना। २. होशियार होना। सावधान होना।
संभव–संज्ञा पुं० १. उत्पत्ति। जन्म। २. होना। ३. हो सकने के योग्य होना।
संभवतः–अव्य० हो सकता है। मुमकिन है। ग़ालिबन्।
संभार–संज्ञा पुं० १. संचय। २. तैयारी। ३. धन। संपत्ति। ४. पालन।
सँभार–संज्ञा पुं० देख-रेख। खबरदारी।
सँभारना–क्रि० स० दे० "सँभालना"।
सँभाल–संज्ञा स्त्री० १. रक्षा। हिफ़ाज़त। २. देख-रेख। निगरानी। ३. तन-बदन की सुध।
सँभालना–क्रि० स० १. भार ऊपर ले सकना। २. रक्षा करना। ३. निर्वाह करना। ४. कोई वस्तु ठीक ठीक है, इसका इतमीनान कर लेना।
–संज्ञा स्त्री० १. कल्पना।
हो सकना।
वि० १. कल्पित। मन में
–आ। २. संभव।

संभाषण-संज्ञा पुं० कथोपकथन। बातचीत।
संभाषी-वि० कहनेवाला। बोलनेवाला।
संभाष्य-वि० जिससे बातचीत करना उचित हो।
संभूत-वि० १. एक साथ उत्पन्न। २. उत्पन्न। उद्‌भूत।
संभोग-संज्ञा पुं० १. सुखपूर्वक व्यवहार। २. रति-क्रीड़ा। ३. संयोग शृंगार। मिलाप की दशा।
संभ्रम-संज्ञा पुं० १. घबराहट। २. सिटपिटाना। ३. आदर। गौरव।
संभ्रांत-वि० १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २. सम्मानित। प्रतिष्ठित।
संभ्राजना॰-क्रि० अ० पूर्णतः सुशोभित होना।
संमत-वि० दे० "सम्मत"।
संयत-वि० १. बँधा हुआ। २. बंद किया हुआ। ३. जिसने इंद्रियों और मन को वश में किया हो। निग्रही।
संयम-संज्ञा पुं० १. रोक। दाब। २. इंद्रियनिग्रह। चित्तवृत्ति का निरोध। ३. बुरी वस्तुओं से बचने की क्रिया। परहेज़। ४. योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।
संयमी-वि० १. आत्मनिग्रही। योगी। २. परहेज़गार।
संयुक्त-वि० १. जुड़ा हुआ। २. मिला हुआ। ३. संबद्ध। ४. सहित।
संयुत-वि० १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ। २. सहित।
संयोग-संज्ञा पुं० १. इत्तफ़ाक़। २. मेल।
संयोगी-संज्ञा पुं० संयोग करनेवाला।
संयोजक-संज्ञा पुं० मिलानेवाला।
संयोजन-संज्ञा पुं० जोड़ने या मिलाने की क्रिया।
सँयोना॰-क्रि० स० दे० "सँजोना"।
संरक्षक-संज्ञा पुं० १. रक्षा करनेवाला। २. देख-रेख और पालन-पोषण करनेवाला। ३. आश्रय देनेवाला।
संरक्षण-संज्ञा पुं० १. हिफ़ाज़त। २. देख-रेख। ३. अधिकार। क़ब्ज़ा।
संरक्षित-वि० अच्छी तरह से बचाया हुआ।
संलक्ष्य-वि० जो लखा जाय।
संलग्न-वि० सटा हुआ।
संलाप-संज्ञा पुं० वार्तालाप। बातचीत।
संवत्-संज्ञा पुं० १. वर्ष। साल। २. सन्। ३. महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई मानी जानेवाली वर्ष-गणना।
संवत्सर-संज्ञा पुं० वर्ष।
सँवर-संज्ञा स्त्री० स्मरण। याद।
संवरण-संज्ञा पुं० १. हटाना। २. बंद करना। ३. आच्छादित करना। ४. छिपाना। ५. निग्रह। ६. पसंद करना। ७. कन्या का विवाह के लिये वर या पति चुनना।
सँवरना-क्रि० अ० सजना। अलंकृत होना।
॰ क्रि० स० स्मरण करना।
सँवरिया-वि० दे० "साँवला"।
संवर्द्धक-संज्ञा पुं० बढ़ानेवाला।
संवर्द्धन-संज्ञा पुं० १. बढ़ना। २. बढ़ाना।
संवाद-संज्ञा पुं० १. बात-चीत। कथोपकथन। २. ख़बर। समाचार।
संवादी-वि० संवाद या बात-चीत

कश्यप और अत्रि। २. उत्तर दिशा के सात तारे जो ध्रुव के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं।
सप्तशती-संज्ञा स्त्री० १. सात सौ का समूह। २. सतसई।
सप्ताह-संज्ञा पुं० १. सात दिनों का काल। हफ्ता। २. भागवत की कथा जो सात ही दिनों में सब पढ़ी या सुनी जाय।
सफ़र-संज्ञा पुं० प्रस्थान। यात्रा।
सफ़रमैना-संज्ञा स्त्री० सेना के वे सिपाही जो खाई आदि खोदने को आगे चलते हैं।
सफ़री-वि० सफ़र में काम आनेवाला। संज्ञा पुं० १. राह-खर्च। २. अमरूद।
सफरी-संज्ञा स्त्री० सौरी मछली।
सफल-वि० १. जिसमें फल लगा हो। २. सार्थक।
सफलता-संज्ञा स्त्री० सफल होने का भाव। कामयाबी।
सफलीभूत-वि० जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।
सफ़हा-संज्ञा पुं० पृष्ठ। पन्ना।
सफ़ा-वि० १. साफ़। २. पाक। ३. चिकना।
सफ़ाई-संज्ञा स्त्री० १. स्वच्छता। २. मैल या कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया।
सफ़ाचट-वि० एकदम स्वच्छ। बिलकुल साफ़ या चिकना।
सफ़ीना-संज्ञा पुं० परवाना।
सफ़ीर-संज्ञा पुं० एलची। राजदूत।
सफ़ेद-वि० चूने के रंग का। धौला। श्वेत।
सफ़ेदपोश-संज्ञा पुं० साफ़ कपड़े पहननेवाला।
सफ़ेदा-संज्ञा पुं० १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा रँगाई के काम में आता है। २. आम का एक भेद। ३. खरबूजे का एक भेद।
सफ़ेदी-संज्ञा स्त्री० सफ़ेद होने का भाव। धवलता।
सब-वि० १. जितने हों, कुल। २. सारा।
सबक़-संज्ञा पुं० पाठ।
सबज़-वि० दे० "सब्ज़"।
सबद-संज्ञा पुं० १. दे० "शब्द"। २. किसी महात्मा के वचन।
सबब-संज्ञा पुं० कारण। वजह।
सबर-संज्ञा पुं० दे० "सब्र"।
सबल-वि० १. बलवान्। २. जिसके साथ सेना हो।
सब्ज़-वि० १. कच्चा और ताज़ा (फल-फूल आदि)। २. हरा।
सब्ज़ी-संज्ञा स्त्री० १. हरियाली। २. हरी तरकारी। ३. भाँग।
सब्र-संज्ञा पुं० संतोष। धैर्य्य।
सभा-संज्ञा स्त्री० १. परिषद्। मजलिस। २. वह संस्था जो किसी विषय पर विचार करने के लिये संघटित हो।
सभागा-वि० भाग्यवान्।
सभागृह-संज्ञा पुं० बहुत से लोगों के एक साथ बैठने का स्थान।
सभापति-संज्ञा पुं० सभा का मुखिया।
सभासद-संज्ञा पुं० वह जो किसी सभा में सम्मिलित हो। सदस्य।
सभ्य-संज्ञा पुं० वह जिसका आचार-व्यवहार उत्तम हो। भला आदमी।
सभ्यता-संज्ञा स्त्री० १. सभ्य होने का भाव। २. सदस्यता। ३.

करनेवाला।

सँवार–संज्ञा स्त्री० सँवारने की क्रिया या भाव।

सँवारना–क्रि० स० १. सजाना। अलंकृत करना। २. ठीक करना। ३. क्रम से रखना।

संवाहन–संज्ञा पुं० उठाकर ले चलना। ढोना।

संवेद–संज्ञा पुं० १. अनुभव। वेदना। २. बोध।

संवेदन–संज्ञा पुं० १. अनुभव करना। २. जताना।

संवेद्य–वि० १. अनुभव करने योग्य। २. बताने लायक।

संशय–संज्ञा पुं० १. संदेह। शक। २. आशंका।

संशयात्मक–वि० जिसमें संदेह हो।

संशयात्मा–संज्ञा पुं० जो किसी बात पर विश्वास न करे।

संशयी–वि० शक्की।

संशोधक–संज्ञा पुं० सुधारनेवाला।

संशोधन–संज्ञा पुं० शुद्ध करना।

संशोधित–वि० सुधारा हुआ।

संश्रय–संज्ञा पुं० १. संयोग। २. संबंध। ३. अवलंब। ४. मकान।

संश्लिष्ट–वि० १. मिला हुआ। २. आलिंगित। परिरंभित।

संस, संसइ–संज्ञा पुं० आशंका।

संसर्ग–संज्ञा पुं० संबंध। लगाव।

संसर्ग-दोष–संज्ञा पुं० वह बुराई जो किसी के साथ रहने से आवे।

संसर्गी–वि० संसर्ग या लगाव रखनेवाला।

संसार–संज्ञा पुं० १. जगत्। सृष्टि। २. मर्त्यलोक। ३. गृहस्थी।

संसारी–वि० १. संसार-संबंधी। लौकिक। २. संसार की माया में फँसा हुआ।

संसृति–संज्ञा स्त्री० १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। २. संसार।

संसृष्ट–वि० १. मिश्रित। २. शामिल।

संसृष्टि–संज्ञा स्त्री० १. मिलावट। २. घनिष्ठता।

संस्करण–संज्ञा पुं० १. सुधारना। २. द्विजातियों के लिये विहित संस्कार करना। ३. पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति। (आधुनिक)

संस्कार–संज्ञा पुं० १. संगत आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। २. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना।

संस्कारहीन–वि० जिसका संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

संस्कृत–वि० १. शुद्ध किया हुआ। २. परिमार्जित। ३. साफ किया हुआ। ४. सुधारा हुआ। ५. जिसका उपनयन आदि संस्कार हुआ हो। संज्ञा स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा जिसमें उनके धर्मग्रंथ आदि हैं। देववाणी।

संस्कृति–संज्ञा स्त्री० १. शुद्धि। २. सुधार। ३. सभ्यता। शाइस्तगी।

संस्था–संज्ञा स्त्री० संघटित समुदाय। मंडल। सभा।

संस्थान–संज्ञा पुं० १. जीवन। २. डेरा। घर। ३. बस्ती।

संस्थापक–संज्ञा पुं० संस्थापन करनेवाला।

संस्थापन–संज्ञा पुं० १. खड़ा करना।

सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था। ४. शराकृत।
समंत–संज्ञा पुं० सीमा।
समंद–संज्ञा पुं० घोड़ा।
सम–वि० समान। तुल्य।
समकालीन–वि० जो एक ही समय में हों।
समकोण–वि० (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दो कोण समान हों।
समक्ष–अव्य० सामने।
समग्र–वि० कुल।
समचर–वि० समान आचरण करनेवाला।
समझ–संज्ञा स्त्री० बुद्धि। अक्ल।
समझदार–वि० बुद्धिमान्।
समझना–क्रि० अ० किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना।
समझाना–क्रि० स० दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना।
समझौता–संज्ञा पुं० आपस का निपटारा।
समतल–वि० जिसकी सतह बराबर हो।
समता–संज्ञा स्त्री० सम या समान होने का भाव। बराबरी।
समदर्शी–संज्ञा पुं० सबको एक सा देखनेवाला।
समधियाना–संज्ञा पुं० समधी का घर।
समधी–संज्ञा पुं० पुत्र या पुत्री का ससुर।
समन्वय–संज्ञा पुं० संयोग। मिलाप।
समन्वित–वि० मिला हुआ। संयुक्त।
समय–संज्ञा पुं० १. वक्त। २. अवसर।
समर–संज्ञा पुं० युद्ध। लड़ाई।
समरथ–वि० दे० "समर्थ"।
समरभूमि–संज्ञा स्त्री० लड़ाई का मैदान।
समरांगण–संज्ञा पुं० दे० "समरभूमि"।
समर्थ–वि० जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। योग्य।
समर्थक–वि० जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला।
समर्थता–संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य। शक्ति।
समर्थन–संज्ञा पुं० यह कहना कि अमुक बात ठीक है। किसी के मत का पोषण करना।
समर्पक–वि० समर्पण करनेवाला।
समर्पण–संज्ञा पुं० १. आदरपूर्वक भेंट करना। २. दान देना।
समर्पित–वि० समर्पण किया हुआ।
समल–वि० मलीन। गंदा।
समवर्ती–वि० जो समान रूप से स्थित हो।
समवेत–वि० इकट्ठा किया हुआ।
समष्टि–संज्ञा स्त्री० सब का समूह।
समस्त–वि० सब। कुल।
समस्थली–संज्ञा स्त्री० गंगा और यमुना के बीच का देश। अंतर्वेद।
समस्या–संज्ञा स्त्री० १. मिलाने की क्रिया। मिश्रण। २. कठिन अवसर या प्रसंग।
समस्यापूर्ति–संज्ञा स्त्री० किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।
समागत–वि० आया हुआ।
समागम–संज्ञा पुं० मिलना।
समाचार–संज्ञा पुं० संवाद। खबर।
समाचारपत्र–संज्ञा पुं० वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। अखबार।

बठाना। (भवन आदि) २. जमाना। बैठाना।
संस्मरण-संज्ञा पुं० पूर्व स्मरण। खूब याद।
संहरना-क्रि० अ० नष्ट होना। क्रि० स० संहार करना।
संहार-संज्ञा पुं० १. नाश। ध्वंस। २. समाप्ति। अंत।
संहारक-संज्ञा पुं० संहार करनेवाला। नाशक।
संहार-काल-संज्ञा पुं० प्रलय-काल।
संहारना☆-क्रि० स० मार डालना।
संहिता-संज्ञा स्त्री० वह ग्रंथ जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो। जैसे—धर्म-संहिताएँ या स्मृतियाँ।
सई-संज्ञा स्त्री० वृद्धि। बढ़ती।
सउँ☆-अव्य० दे० "सौं"।
सकट-संज्ञा पुं० गाड़ी। छकड़ा।
सकत†-संज्ञा स्त्री० बल। शक्ति।
सकता-संज्ञा स्त्री० शक्ति। ताकत।
सकपकाना-क्रि० अ० १. आश्चर्य-युक्त होना। २. हिचकना। ३. हिलना-डोलना।
सकरपाला-संज्ञा पुं० दे० "शकरपारा"।
सकल-वि० सब। समस्त। कुल। संज्ञा पुं० निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति।
सकाना☆†-क्रि० अ० १. शंका करना। २. भय के कारण संकोच करना।
सकाम-संज्ञा पुं० १. वह व्यक्ति जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. वह जो कोई कार्य फल मिलने की इच्छा से करे।
सकारना-क्रि० अ० स्वीकार करना। मंजूर करना।
सकारे†-क्रि० वि० सवेरे।
सकिलना†-क्रि० अ० फिसलना। सरकना।
सकुच☆†-संज्ञा स्त्री० लाज। शर्म।
सकुचना-क्रि० अ० १. लज्जा करना। २. (फूलों का) संपुटित होना। बंद होना।
सकुचाई☆-संज्ञा स्त्री० लज्जा।
सकुचाना-क्रि० अ० संकोच करना। क्रि० स० १. सिकोड़ना। २. किसी को संकुचित या लज्जित करना।
सकुची-संज्ञा स्त्री० कछुए के आकार की एक प्रकार की मछली।
सकुन☆-संज्ञा पुं० पक्षी। चिड़िया। संज्ञा पुं० दे० "शकुन"।
सकुनी☆†-संज्ञा स्त्री० चिड़िया।
सकूनत-संज्ञा स्त्री० निवास-स्थान।
सकेलना†-क्रि० स० एकत्र करना। इकट्ठा करना।
सकेला-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की तलवार।
सकोरा-संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।
सक्का-संज्ञा पुं० भिश्ती।
सक्ति-संज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।
सखरी-संज्ञा स्त्री० कच्ची रसोई। जैसे—दाल भात।
सखा-संज्ञा पुं० १. साथी। २. मित्र।
सखावत-संज्ञा स्त्री० दानशीलता।
सखी-संज्ञा स्त्री० १. सहेली। सहचरी। २. संगिनी। *वि० दाता। दानी। दानशील।*
सखुआ-संज्ञा पुं० दे० "साल"। (वृक्ष)

समाज–संज्ञा पुं० १. समूह। गरोह। २. सभा। ३. समुदाय।
समादर–संज्ञा पुं० आदर। सम्मान।
समाधान–संज्ञा पुं० १. किसी प्रकार का विरोध दूर करना। २. निराकरण।
समाधि–संज्ञा स्त्री० १. योग का चरम फल। २. किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव ज़मीन में गाड़ना। ३. दे० "समाधान"।
समाधि-क्षेत्र–संज्ञा पुं० १. वह स्थान जहाँ योगियों आदि के मृत-शरीर गाड़े जाते हों। २. क़ब्रिस्तान।
समाधित–वि० जिसने समाधि लगाई या ली हो।
समाधिस्थ–वि० जो समाधि लगाए हुए हो।
समान–वि० जो रूप, गुण, मान, मूल्य, महत्त्व आदि में एक से हों। बराबर।
समानता–संज्ञा स्त्री० समान होने का भाव। तुल्यता।
समाना–क्रि० अ० अंदर आना। अटना।
क्रि० स० अंदर करना।
समानार्थ–संज्ञा पुं० वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय।
समापक–संज्ञा पुं० पूरा करनेवाला।
समापन–संज्ञा पुं० समाप्त करना।
समापित–वि० ख़तम या पूरा किया हुआ।
समाप्त–वि० जो ख़तम या पूरा हो गया हो।
समाप्ति–संज्ञा स्त्री० किसी कार्य्य या बात आदि का ख़तम या पूरा होना।
समारंभ–संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह आरंभ होना। २. समारोह। (क्व०)
समारोह–संज्ञा पुं० कोई ऐसा कार्य्य या उत्सव जिसमें बहुत धूमधाम हो।
समालोचक–संज्ञा पुं० समालोचना करनेवाला।
समालोचन–संज्ञा पुं० दे० "समालोचना"।
समालोचना–संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना।
समावर्त्तन–संज्ञा पुं० वापस आना। लौटना।
समाविष्ट–वि० समाया हुआ।
समावेश–संज्ञा पुं० एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना।
समास–संज्ञा पुं० संक्षेप।
समाहार–संज्ञा पुं० १. संग्रह। २. राशि। ढेर। ३. मिलना।
समिति–संज्ञा स्त्री० सभा। समाज।
समिध–संज्ञा पुं० अग्नि।
समिधा–संज्ञा स्त्री० हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।
समीकरण–संज्ञा पुं० समान या बराबर करना।
समीक्षा–संज्ञा स्त्री० १. अच्छी तरह देखना। २. आलोचन। समालोचना। ३. बुद्धि। ४. यत्न। कोशिश। ५. मीमांसा शास्त्र।
समीचीन–वि० यथार्थ। वाजिब।
समीप–वि० पास। नज़दीक।
समीपवर्त्ती–वि० पास का।
समीर–संज्ञा पुं० वायु। हवा।
समीरण–संज्ञा पुं० वायु। हवा।
समुंदर–संज्ञा पुं० दे० "समुद्र"।

स.खुन–संज्ञा पुं० १. क़ौल। वचन। २. कथन। उक्ति।

स.खुन-तकिया–संज्ञा पुं० तकिया कलाम।

सग-पहती–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दाल जो साग मिलाकर बनाई जाती है।

सगबगाना–क्रि० अ० १. भीगना या सराबोर होना। २. सकपकाना। शंकित होना।

सगर–संज्ञा पुं० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो बड़े धर्मात्मा तथा प्रजा-रंजक थे।

सगरा†–वि० सब। कुल।

सगल⊙†–वि० दे० "सकल"।

सगा–वि० १. एक माता से उत्पन्न। सहोदर। २. जो संबंध में अपने ही कुल का हो।

सगाई–संज्ञा स्त्री० १. विवाह संबंधी निश्चय। मँगनी। २. संबंध। नाता। रिश्ता।

सगापन–संज्ञा पुं० सगा होने का भाव। संबंध की आत्मीयता।

सगुण–संज्ञा पुं० परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त है। साकार ब्रह्म।

सगुन–संज्ञा पुं० १. दे० "शकुन"। २. दे० "सगुण"।

सगुनिया–संज्ञा पुं० शकुन विचारने और बतलानेवाला।

सगोत्र–संज्ञा पुं० १. एक गोत्र के लोग। २. कुल। जाति।

सघन–वि० घना। गझिन। अविरल।

सच–वि० जो यथार्थ हो। सत्य। वास्तविक। दे० "सत्य"।

सचमुच–अव्य० यथार्थतः। ठीक ठीक।

सचरना⊙–क्रि० अ० १. फैलना। २. बहुत प्रचलित होना।

सचराचर–संज्ञा पुं० संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ।

सचाई–संज्ञा स्त्री० १. सत्यता। २. वास्तविकता।

सचान–संज्ञा पुं० श्येन पक्षी। बाज़।

सचारना⊙†–क्रि० स० फैलाना।

सचिंत–वि० जिसे चिंता हो।

सचिक्कण–वि० अत्यंत चिकना।

सचिव–संज्ञा पुं० मंत्री। वज़ीर।

सची–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।

सचेत–वि० दे० "सचेतन"।

सचेतन–संज्ञा पुं० वह जिसमें चेतना हो। चेतन।

वि० १. चेतनायुक्त। २. सावधान। होशियार।

सचेष्ट–वि० १. जिसमें चेष्टा हो। २. जो चेष्टा करे।

सच्चा–वि० १. सच बोलनेवाला। सत्यवादी। २. असली। विशुद्ध।

सच्चाई–संज्ञा स्त्री० सच्चा होने का भाव। सत्यता।

सच्चापन–संज्ञा पुं० दे० "सच्चाई"।

सच्चिदानंद–संज्ञा पुं० (सत्, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा। ईश्वर।

सज–संज्ञा स्त्री० शोभा।

संज्ञा पुं० एक प्रकार का वृक्ष।

सजग–वि० सावधान। होशियार।

सजदार–वि० सुंदर।

सज-धज–संज्ञा स्त्री० बनाव-सिंगार। सजावट।

सजन–संज्ञा पुं० १. पति। २. प्रियतम। यार।

समुंदरफूल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का विधारा।
समुचित-वि० १. उचित। २. जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।
समुच्चय-संज्ञा पुं० १. मिलान। २. समूह। राशि।
समुभ०ं-संज्ञा स्त्री० दे० "समझ"।
समुत्थान-संज्ञा पुं० १. उठने की क्रिया। २. उत्पत्ति। ३. आरंभ।
समुदाय-संज्ञा पुं० १. समूह। २. झुंड।
समुद्र-संज्ञा पुं० वह जल-राशि जो पृथ्वी के चारों ओर है। सागर। अंबुधि। उदधि।
समुद्रफेन-संज्ञा पुं० समुद्र के पानी का फेन या झाग जिसका व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। समुंदर-फेन।
समुद्रयात्रा-संज्ञा स्त्री० समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।
समुद्रयान-संज्ञा पुं० जहाज़।
समुद्रलवण-संज्ञा पुं० करकच लवण जो समुद्र के जल से बनता है।
समुन्नति-संज्ञा स्त्री० काफ़ी तरक्की।
समुल्लास-संज्ञा पुं० १. उल्लास। खुशी। २. ग्रंथ का प्रकरण या परिच्छेद।
समुहाना-क्रि० अ० सामने आना।
समूल-वि० १. जिसमें मूल या जड़ हो। २. कारण सहित।
क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित।
समूह-संज्ञा पुं० बहुत सी चीज़ों का ढेर।
समृद्ध-वि० संपन्न। धनवान्।
समृद्धि-संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक संपन्नता। अमीरी।
समेटना-क्रि० स० बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठा करना।
समेत-अव्य० सहित। साथ।
सम्मत-वि० जिसकी राय मिलती हो। अनुमत।
सम्मति-संज्ञा स्त्री० सलाह। राय।
सम्मन-संज्ञा पुं० अदालत का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को हाज़िर होने का हुक्म दिया जाता है।
सम्मान-संज्ञा पुं० इज़्ज़त। मान। गौरव। प्रतिष्ठा।
सम्मानित-वि० प्रतिष्ठित। इज़्ज़तदार।
सम्मिलन-संज्ञा पुं० मिलाप। मेल।
सम्मिलित-वि० मिला हुआ। मिश्रित।
सम्मिश्रण-संज्ञा पुं० १. मिलने की क्रिया। २. मिलावट।
सम्मुख-अव्य० सामने। समक्ष।
सम्मेलन-संज्ञा पुं० १. मनुष्यों का किसी निमित्त एकत्र हुआ समाज। २. जमावड़ा। ३. मिलाप।
सम्मोहन-संज्ञा पुं० १. मोहित या मुग्ध करना। २. एक प्राचीन अस्त्र जिससे शत्रु को मोहित कर लेते थे।
सम्राज्ञी-संज्ञा स्त्री० १. सम्राट् की पत्नी। २. साम्राज्य की अधीश्वरी।
सम्राट्-संज्ञा पुं० बहुत बड़ा राजा।
सयन॰-संज्ञा पुं० दे० "शयन"।
सयानपन-संज्ञा पुं० चालाकी।
सयाना-संज्ञा पुं० १. अधिक अवस्था-वाला। २. बुद्धिमान्। ३. धूर्त।
सर-संज्ञा पुं० ताल। तालाब।
संज्ञा स्त्री० चिता।
संज्ञा पुं० सिर।
वि० जीता हुआ।

सजना–क्रि० स० शृंगार करना। क्रि० अ० सुसज्जित होना।
सजल–वि० १. जल से युक्त या पूर्ण। २. आँसुओं से पूर्ण। (आँख)
सजवाई–संज्ञा स्त्री० सजवाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
सजवाना–क्रि० स० किसी के द्वारा सुसज्जित कराना।
सज़ा–संज्ञा स्त्री० दंड।
सजाई–संज्ञा स्त्री० सजाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।
सजातीय–वि० एक जाति या गोत्र का।
सजाना–क्रि० स० १. वस्तुओं को यथास्थान रखना। तरतीब लगाना। २. अलंकृत करना।
सजायऽ†–संज्ञा स्त्री० दे० "सज़ा"।
सज़ायाफ़्ता, सज़ायाब–संज्ञा पुं० वह जो क़ैद की सज़ा भोग चुका हो।
सजाव–संज्ञा पुं० एक प्रकार का दही।
सजावट–संज्ञा स्त्री० सज्जित होने का भाव या धर्म।
सजीला–वि० १. सजधज के साथ रहनेवाला। २. सुंदर। मनोहर।
सजीव–वि० १. जिसमें प्राण हों। २. ओजयुक्त।
सजीवन–संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी"।
सजीवनमूलऽ–संज्ञा पुं० दे० "संजीवनी"।
सजीवनी मंत्र–संज्ञा पुं० वह कल्पित मंत्र जिसके संबंध में लोगों का विश्वास है कि मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है।
सजूरी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
सजोना†–क्रि० स० दे० "सजाना"।
सज्जऽ–संज्ञा पुं० दे० "साज"।
सज्जन–संज्ञा पुं० भला आदमी। शरीफ़।
सज्जनता–संज्ञा स्त्री० सज्जन होने का भाव। भलमंसाहत। सौजन्य।
सज्जनताईऽ–संज्ञा स्त्री० दे० "सज्जनता"।
सज्जा–संज्ञा स्त्री० १. वेष-भूषा। २. सोने की चारपाई। शय्या। ३. दे० "शय्यादान"।
सज्जित–वि० १. सजा हुआ। २. आवश्यक वस्तुओं से युक्त।
सज्जी–संज्ञा स्त्री० भूरे रंग का एक प्रसिद्ध खार।
सज्जीखार–संज्ञा पुं० दे० "सज्जी"।
सज्ञान–वि० १. ज्ञान-युक्त। २. चतुर।
सटक–संज्ञा स्त्री० तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा।
सटकना–क्रि० अ० धीरे से खिसक जाना। चंपत होना।
सटकाना–क्रि० स० छड़ी, कोड़े आदि से मारना।
सटकारी–संज्ञा स्त्री० पतली छड़ी।
सटना–क्रि० अ० चिपकना।
सटपटाना–क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना"।
सटर पटर–वि० तुच्छ। मामूली। संज्ञा स्त्री० बखेड़े का या तुच्छ काम।
सटाना–क्रि० स० दो चीज़ों के पार्श्वों को आपस में मिलाना।
सटीक–वि० १. व्याख्या सहित। २. बिलकुल ठीक।
सट्टा–संज्ञा पुं० इकरारनामा।
सट्टी–संज्ञा स्त्री० वह बाज़ार जिसमें एक ही मेल की चीज़ें लोग लाकर बेचते हों। हाट।

सरंजाम–संज्ञा पुं० सामग्री।
सरकंडा–संज्ञा पुं० सरपत की जाति का एक पौधा।
सरकना–क्रि० अ० खिसकना।
सरकश–वि० उद्दत। उद्दंड।
सरकार–संज्ञा स्त्री० १. मालिक। २. राज्य-संस्था।
सरकारी–वि० राज्य का। राजकीय।
सरखत–संज्ञा पुं० १. वह दस्तावेज़ जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं। २. दिए और चुकाए हुए ऋण आदि का ब्यौरा। ३. आज्ञापत्र। परवाना।
सरग:–संज्ञा पुं० दे० "स्वर्ग"।
सरगना–संज्ञा पुं० सरदार। अगुआ।
सरगर्म–वि० जोशीला। आवेशपूर्ण।
सरघा–संज्ञा स्त्री० मधुमक्खी।
सरजा–संज्ञा पुं० १. सरदार। २. सिंह।
सरणी–संज्ञा स्त्री० मार्ग। रास्ता।
सरद–वि० दे० "सर्द"।
सरदई–वि० सरदे के रंग का। हरापन लिए पीला।
सरदा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बढ़िया खरबूज़ा।
सरदार–संज्ञा पुं० नायक। अगुवा।
सरदारी–संज्ञा स्त्री० सरदार का पद या भाव।
सरन:†–संज्ञा स्त्री० दे० "शरण"।
सरनदीप–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल द्वीप"।
सरनाम–वि० प्रसिद्ध। मशहूर।
सरनामा–संज्ञा पुं० १. शीर्षक। २. पत्र का आरंभ या संबोधन। ३. पत्र पर लिखा जानेवाला पता।
सरपंच–संज्ञा पुं० पंचों में बड़ा व्यक्ति। पंचायत का सभापति।
सरपट–क्रि० वि० बहुत तेज़ दौड़।
सरपत–संज्ञा पुं० कुश की तरह की एक घास जो छप्पर आदि छाने के काम में आती है।
सर-परस्त–संज्ञा पुं० अभिभावक। संरक्षक।
सरपेच–संज्ञा पुं० पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।
सरपोश–संज्ञा पुं० थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।
सरबंधी:–संज्ञा पुं० तीरंदाज़। धनुर्धर।
सर-बराह–संज्ञा पुं० प्रबंधकर्ता। कारिंदा।
सरबराहकार–संज्ञा पुं० किसी कार्य्य का प्रबंध करनेवाला। कारिंदा।
सरबस:†–संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।
सरमा–संज्ञा स्त्री० १. देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया। (वैदिक) २. कुतिया।
सरयू–संज्ञा स्त्री० उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
सरराना†–क्रि० अ० हवा में किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।
सरल–वि० १. सीधा। २. निष्कपट। ३. आसान।
सरलता–संज्ञा स्त्री० १. टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। २. सुगमता।
सरल-निर्य्यास–संज्ञा पुं० १. गंधाबिरोजा। २. तारपीन का तेल।
सरवन–संज्ञा पुं० अंधक मुनि के पुत्र जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।
:† संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
सरवर–संज्ञा पुं० दे० "सरोवर"।

सठ–संज्ञा पुं० दे० "शठ"।
सठता–संज्ञा स्त्री० १. शठ होने का भाव। शठता। २. मूर्खता।
सठियाना–क्रि० अ० १. साठ बरस का होना। २. बुड्ढा होना।
सड़क–संज्ञा स्त्री० आने-जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ।
सड़ना–क्रि० अ० किसी पदार्थ में ऐसा विकार हो जाय जिससे उसमें दुर्गंध आने लगे।
सड़ाना–क्रि० स० किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।
सड़ायँध–संज्ञा स्त्री० सड़ी हुई चीज़ की गंध।
सड़ासड़–अव्य० सड़ शब्द के साथ। जिसमें सड़ शब्द हो।
सत–संज्ञा पुं० १. ब्रह्म। २. मूल-तत्त्व। ३. जीवनी शक्ति। ताकत।
वि० १. शुद्ध। २. दे० "सत्"। ३. दे० "शत"।
सतगुरु–संज्ञा पुं० १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा। परमेश्वर।
सतजुग–संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।
सतत–अव्य० सदा। हमेशा।
सतफेरा–संज्ञा पुं० विवाह के समय का सप्तपदी कर्म।
सतमासा–संज्ञा पुं० वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो।
सतयुग–संज्ञा पुं० दे० "सत्ययुग"।
सतर–संज्ञा स्त्री० १. लकीर। रेखा। २. पंक्ति। अवली। कतार।
वि० टेढ़ा। वक्र।
सतराना–क्रि० अ० १. क्रोध करना। २. चिढ़ना।
सतर्क–वि० १. युक्ति से पुष्ट। २. सावधान।
सतलज–संज्ञा स्त्री० पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।
सतवंती–वि० स्त्री० सतवाली। सती। पतिव्रता।
सतसई–संज्ञा स्त्री० सप्तशती।
सतह–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु का ऊपरी भाग।
सतानंद–संज्ञा पुं० गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।
सताना–क्रि० स० संताप देना। दुःख देना।
सतालू–संज्ञा पुं० शफ्तालू।
सतावर–संज्ञा स्त्री० एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। शतमूली।
सतिवन–संज्ञा पुं० छतिवन।
सती–वि० स्त्री० साध्वी। पतिव्रता।
संज्ञा स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को व्याही थी। २. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले।
सतीत्व–संज्ञा पुं० सती होने का भाव। पातिव्रत्य।
सतीत्व-हरण–संज्ञा पुं० पर-स्त्री के साथ बलात्कार। सतीत्व बिगाड़ना।
सतुआ–संज्ञा पुं० दे० "सत्तू"।
सतून–संज्ञा पुं० स्तंभ। खंभा।
सतोगुण–संज्ञा पुं० दे० "सत्त्वगुण"।
सतोगुणी–संज्ञा पुं० सत्त्वगुणवाला। सात्त्विक।
सत्कर्म–संज्ञा पुं० १. अच्छा काम। २. धर्म का काम। पुण्य।

सरघरिः†–संज्ञा स्त्री० घाघरी।
सरघाक–संज्ञा पुं० १. संपुट। प्याला। २. दीया। कसोरा।
सरघान–संज्ञा पुं० तंबू। खेमा।
सरस–वि० १. रसयुक्त। रसीला। २. गीला। ३. सुंदर। ४. जिसमें भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण। ५. बढ़कर।
सरसई०–संज्ञा स्त्री० सरस्वती नदी या देवी।
ःसंज्ञा स्त्री० १. सरसता। रसपूर्णता। २. हरापन। ताज़ापन।
सरसना–क्रि० अ० १. हरा होना। पनपना। २. बढ़ना। ३. भाव की उमंग से भरना।
सरसब्ज़–वि० हरा-भरा। लह-लहाता हुआ।
सर-सर–संज्ञा पुं० १. ज़मीन पर रेंगने का शब्द। २. वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि।
सरसराना–क्रि० अ० वायु की ध्वनि। सनसनाना।
सरसराहट–संज्ञा स्त्री० १. साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २. वायु बहने का शब्द।
सरसरी–वि० १. जल्दी में। २. मोटे तौर पर।
सरसाई–संज्ञा स्त्री० १. सरसता। २. शोभा। सुंदरता। ३. अधिकता।
सरसाना–क्रि० स० १. रसपूर्ण करना। २. हरा-भरा करना।
ः क्रि० अ० दे० १. "सरसना"। २. शोभा देना। सजना।
सरसार–वि० १. मग्न। २. चूर। मदमस्त। (नशे में)
सरसिज–संज्ञा पुं० १. वह जो ताल में होता हो। २. कमल।
सरसिरुह–संज्ञा पुं० कमल।
सरसी–संज्ञा स्त्री० १. छोटा सरोवर। तलैया। २. पुष्करिणी। बावली।
सरसीरुह–संज्ञा पुं० कमल।
सरसेटना–क्रि० स० खरी-खोटी सुनाना। फटकारना।
सरसों–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसके छोटे गोल बीजों से तेल निकलता है।
सरस्वती–संज्ञा स्त्री० १. पंजाब की एक प्राचीन नदी। २. विद्या या वाणी की देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा। ३. विद्या। इल्म।
सरस्वती-पूजा–संज्ञा स्त्री० सरस्वती का उत्सव जो कहीं वसंतपंचमी को और कहीं आश्विन में होता है।
सरह–संज्ञा पुं० १. पतंग। २. टिड्डी।
सरहज–संज्ञा स्त्री० साले की स्त्री।
सरहटी–संज्ञा स्त्री० सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।
सरहद–संज्ञा स्त्री० सीमा।
सरहद्दी–वि० सीमा-संबंधी।
सरहरी–संज्ञा स्त्री० मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।
सराः–संज्ञा स्त्री० १. चिता। २. दे० "सराय"।
सराई†–संज्ञा स्त्री० शलाका।
सराधः†–संज्ञा पुं० दे० "श्राद्ध"।
सराप–संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
सरापनाः†–क्रि० स० बद दुआ देना।
सराफ़–संज्ञा पुं० १. सोने-चाँदी का व्यापारी। २. रुपए पैसे रखकर बैठनेवाला दूकानदार।
सराफ़ा–संज्ञा पुं० १. रुपए-पैसे या सोने-चाँदी के लेन-देन का काम।

सत्कार-संज्ञा पुं० आदर। सम्मान। खातिरदारी।
सत्कार्य्य-संज्ञा पुं० उत्तम कार्य्य। अच्छा काम।
सत्कीर्त्ति-संज्ञा स्त्री० यश। नेकनामी।
सत्कुल-संज्ञा पुं० उत्तम कुल। अच्छा या बड़ा खानदान।
सत्त-संज्ञा पुं० १. सार भाग। असली जुज़। २. तत्त्व।
†संज्ञा पुं० १. सत्य। सच बात। २. सतीत्व।
सत्ता-संज्ञा स्त्री० १. होने का भाव। हस्ती। २. शक्ति। ३. अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत।
संज्ञा पुं० ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।
सत्ताधारी-संज्ञा पुं० अधिकारी। अफ़सर।
सत्तू-संज्ञा पुं० भुने हुए जौ और चने का चूर्ण। सतुआ।
सत्पथ-संज्ञा पुं० १. उत्तम मार्ग। २. सदाचार। अच्छी चाल।
सत्पात्र-संज्ञा पुं० १. दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी।
सत्पुरुष-संज्ञा पुं० भला आदमी।
सत्य-वि० १. यथार्थ। सही। २. असल।
संज्ञा पुं० ठीक बात। यथार्थ तत्त्व।
सत्यकाम-वि० सत्य का प्रेमी।
सत्यतः-अव्य० वास्तव में। सचमुच।
सत्यता-संज्ञा स्त्री० सत्य होने का भाव। सचाई।
सत्यनारायण-संज्ञा पुं० विष्णु।
सत्यभामा-संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक।
सत्ययुग-संज्ञा पुं० चार युगों में से पहला जो सबसे उत्तम माना जाता है।
सत्यवती-संज्ञा स्त्री० मत्स्यगंधा नामक धीवर-कन्या जिसके गर्भ से कृष्ण द्वैपायन या व्यास की उत्पत्ति हुई थी।
सत्यवादी-वि० सत्य कहनेवाला।
सत्यवान-संज्ञा पुं० शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।
सत्यव्रत-संज्ञा पुं० सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।
सत्यसंध-वि० सत्य-प्रतिज्ञ। वचन को पूरा करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. रामचंद्र। २. जनमेजय।
सत्याग्रह-संज्ञा पुं० किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिये शांतिपूर्वक निरंतर हठ करना।
सत्यानास-संज्ञा पुं० सर्वनाश। मटियामेट।
सत्यानासी-वि० सत्यानास करनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक कँटीला पौधा।
सत्र-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। क्षेत्र। सदावर्त्त।
सत्रहन०†-संज्ञा पुं० दे० "शत्रुघ्न"।
सत्व-संज्ञा पुं० १. सत्ता। २. सार। तत्त्व।
सत्वगुण-संज्ञा पुं० अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण।
सत्संग-संज्ञा पुं० साधुओं या सज्जनों के साथ रहना-बैठना। भली संगत।
सत्संगति-संज्ञा स्त्री० दे० "सत्संग"।

२. सराफ़ों का बाज़ार।
सराफ़ी–संज्ञा स्त्री० चाँदी-सोने या रुपए-पैसे के लेन देन का रोज़गार।
सराबोर–वि० तरबतर। आप्लावित।
सराय–संज्ञा स्त्री० यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफ़िरख़ाना।
सराव०†–संज्ञा पुं० १. मद्यपात्र। २. दीया।
सरावग, सरावगी–संज्ञा पुं० जैन-धर्म माननेवाला। जैन।
सरासन०–संज्ञा पुं० दे० "शरासन"।
सरासर–अव्य० १. एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।
सरासरी–संज्ञा स्त्री० १. आसानी। २. शीघ्रता। ३. मोटा अंदाज़।
क्रि० वि० १. जल्दी में। हड़बड़ी में। २ मोटे तौर पर।
सराह०–संज्ञा स्त्री० प्रशंसा।
सराहना–क्रि० स० तारीफ़ करना। संज्ञा स्त्री० प्रशंसा।
सराहनीय०–वि० १. प्रशंसा के योग्य। २. अच्छा।
सरि०–संज्ञा स्त्री० १. नदी। २. बराबरी। समता।
सरित्–संज्ञा स्त्री० नदी।
सरिता–संज्ञा स्त्री० १. धारा। २. नदी। दरिया।
सरियाना†–क्रि० स० तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना।
सरिवन–संज्ञा पुं० शालपर्णी नाम का पौधा। त्रिपर्णी।
सरिवरि०†–संज्ञा स्त्री० बराबरी।
सरिश्ता–संज्ञा पुं० १. अदालत। २. कार्यालय का विभाग। महकमा।
सरिश्तेदार–संज्ञा पुं० १. किसी विभाग का प्रधान कर्मचारी। २. अदालतों में देशी भाषाओं में मुकद्मों की मिसलें रखनेवाला कर्मचारी।
सरिस०–वि० सदृश।
सरीखा–वि० तुल्य।
सरीफा–संज्ञा पुं० एक छोटा पेड़ जिसके गोल फल खाए जाते हैं।
सरीर०†–संज्ञा पुं० दे० "शरीर"।
सरुज–वि० रोगी।
सरुष–वि० क्रोध-युक्त।
सरुहाना–क्रि० स० रोगमुक्त करना।
सरूप–वि० १. आकारवाला। २. समान। ३. रूपवान्। सुंदर।
†संज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।
सरूर–संज्ञा पुं० १. ख़ुशी। २. हलका नशा।
सरेख†०–वि० चालाक। सयाना।
सरेखना–क्रि० स० दे० "सहेजना"।
सरे दस्त–क्रि० वि० इस समय। अभी।
सरे-बाज़ार–क्रि० वि० १. जनता के सामने। २. सबके सामने।
सरो–संज्ञा पुं० एक सीधा पेड़ जो बग़ीचों में शोभा के लिये लगाया जाता है। बनझाऊ।
सरोकार–संज्ञा पुं० १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २. लगाव।
सरोज–संज्ञा पुं० कमल।
सरोजना–क्रि० स० पाना।
सरोजिनी–संज्ञा स्त्री० १. कमलों से भरा हुआ ताल। २. कमलों का समूह। ३. कमल का फूल।
सरोद–संज्ञा पुं० बीन की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सरोरुह–संज्ञा पुं० कमल।
सरोवर–संज्ञा पुं० १. तालाब। २. झील।

सत्संगी–वि० अच्छी सोहबत में रहनेवाला।
सथिया–संज्ञा पुं० एक प्रकार का मंगल-सूचक या सिद्धिदायक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न 卐।
सदन–संज्ञा पुं० घर। मकान।
सदमा–संज्ञा पुं० आघात। धक्का।
सदय–वि० दयायुक्त। दयालु।
सदर–वि० प्रधान। मुख्य।
संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ कोई बड़ा हाकिम रहता हो।
सदर-आला–संज्ञा पुं० अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे का हो। छोटा जज।
सदरी–संज्ञा स्त्री० बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।
सदसद्विवेक–संज्ञा पुं० अच्छे और बुरे की पहचान। भले-बुरे का ज्ञान।
सदस्य–संज्ञा पुं० सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। मेंबर।
सदा–अव्य० नित्य। हमेशा।
सदाचरण, सदाचार–संज्ञा पुं० १. अच्छा आचरण। २. भलमनसाहत।
सदाचारी–संज्ञा पुं० १. अच्छे आचरणवाला पुरुष। २. धर्मात्मा।
सदाफल–वि० सदा फलनेवाला।
संज्ञा पुं० १. गूलर। २. श्रीफल। बेल। ३. नारियल। ४. एक प्रकार का नीबू।
सदावर्त–संज्ञा पुं० नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटना।
सदा-बहार–वि० १. जो सदा फूले। २. जो सदा हरा रहे। (वृक्ष)
सदाशय–वि० जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो।
सदाशिव–संज्ञा पुं० महादेव।
सदा-सुहागिन–संज्ञा स्त्री० वेश्या। रंडी। (विनोद)
सदिया–संज्ञा स्त्री० वह लाल पक्षी जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। लाल पक्षी की मादा।
सदी–संज्ञा स्त्री० सौ वर्षों का समूह। शताब्दी।
सदुपदेश–संज्ञा पुं० अच्छा उपदेश।
सदृश–वि० समान। अनुरूप।
सदेह–क्रि० वि० बिना शरीर-त्याग किए।
सदैव–अव्य० सदा। हमेशा।
सद्गति–संज्ञा स्त्री० मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति।
सद्गुण–संज्ञा पुं० अच्छा गुण।
सद्गुरु–संज्ञा पुं० १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा।
सद्ग्रंथ–संज्ञा पुं० अच्छा ग्रंथ।
सद्भाव–संज्ञा पुं० १. प्रेम और हित का भाव। २. सच्चा भाव।
सधना–क्रि० अ० १. सिद्ध होना। २. निशाना ठीक होना।
सधवा–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सुहागिन।
सन्–संज्ञा पुं० १. वर्ष। २. संवत्।
सन–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सियाँ आदि बनती हैं।
संज्ञा स्त्री० वेग से निकलने का शब्द।
सनई–संज्ञा स्त्री० छोटी जाति का सन।
सनक–संज्ञा स्त्री० किसी बात की धुन।
संज्ञा पुं० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
सनकना–क्रि० अ० पागल हो जाना। पगलाना।

सरोप–वि० क्रोधयुक्त।
सरो-सामान–संज्ञा पुं० सामग्री। उपकरण। असबाब।
सरौता–संज्ञा पुं० सुपारी काटने का एक प्रसिद्ध औज़ार।
सर्ग–संज्ञा पुं० १. गमन। गति। २. किसी ग्रंथ (विशेषतः काव्य) का अध्याय। प्रकरण।
सर्गबंध–वि० जो कई अध्यायों में विभक्त हो।
सर्गुन†–वि० दे० "सगुण"।
सर्ज–संज्ञा पुं० १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। २. राल। ३. सलई का पेड़।
सर्जू–संज्ञा स्त्री० दे० "सरयू"।
सर्द–वि० ठंढा।
सर्दी–संज्ञा स्त्री० सर्द होने का भाव। शीतलता।
सर्प–संज्ञा पुं० १. साँप। २. एक म्लेच्छ जाति।
सर्पकाल–संज्ञा पुं० गरुड़।
सर्पराज–संज्ञा पुं० १. शेषनाग। २. वासुकि।
सर्पविद्या–संज्ञा स्त्री० साँप को पकड़ने या वश में करने की विद्या।
सांपणी–संज्ञा स्त्री० १. साँपिन। २. भुजंगी लता।
सर्फ़–संज्ञा पुं० खर्च किया हुआ।
सर्फ़ा–संज्ञा पुं० व्यय।
सर्बस–संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।
सर्राफ–संज्ञा पुं० दे० "सराफ़"।
सर्व–वि० सब। कुल।
सर्वकाम–संज्ञा पुं० शिव।
सर्वगत–वि० सर्वव्यापक।
सर्वग्रास–संज्ञा पुं० चंद्र या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण।
सर्वज्ञ–वि० सब कुछ जाननेवाला। संज्ञा पुं० ईश्वर।
सर्वज्ञता–संज्ञा स्त्री० 'सर्वज्ञ' का भाव।
सर्वतंत्र–संज्ञा पुं० सब प्रकार के शास्त्र-सिद्धांत।
सर्वतः–अव्य० १. सब ओर। २. सब प्रकार से।
सर्वतोभद्र–वि० १. सब ओर से मंगल। २. जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़े हों।
सर्वतोभाव–अव्य० अच्छी तरह। भली भाँति।
सर्वतोमुख–वि० १. जिसका मुँह चारों ओर हो। २. व्यापक।
सर्वत्र–अव्य० सब कहीं।
सर्वथा–अव्य० सब प्रकार से।
सर्वदर्शी–संज्ञा पुं० सब कुछ देखनेवाला।
सर्वदा–अव्य० हमेशा। सदा।
सर्वनाश–संज्ञा पुं० सत्यानाश।
सर्वप्रिय–वि० जो सबको अच्छा लगे।
सर्वभक्षी–संज्ञा पुं० १. सब कुछ खानेवाला। २. अग्नि।
सर्वभोगी–वि० सबका आनंद लेनेवाला।
सर्वमंगला–संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।
सर्वरी०–संज्ञा स्त्री० दे० "शर्वरी"।
सर्वव्यापक–संज्ञा पुं० दे० "सर्वव्यापी"।
सर्वव्यापी–वि० सब में रहनेवाला।

सनकारना॰†-क्रि॰ स॰ संकेत करना। इशारा करना।
सनत्-संज्ञा पुं॰ ब्रह्मा।
सनत्कुमार-संज्ञा पुं॰ ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक। वैधात्र।
सनद-संज्ञा स्त्री॰ १. प्रमाण। सबूत। २. प्रमाण-पत्र। सर्टिफ़िकेट।
सनदयाफ्ता-वि॰ जिसे किसी बात की सनद मिली हो।
सनना-क्रि॰ अ॰ १. गीला होकर लोई के रूप में मिलना। २. लीन होना।
सनम-संज्ञा पुं॰ प्रिय। प्यारा।
सनमान-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सम्मान"।
सनमानना॰-क्रि॰ स॰ खातिर करना।
सनमुख॰-अव्य॰ दे॰ "सम्मुख"।
सनसनी-संज्ञा स्त्री॰ १. झनझनाहट। २. घबराहट।
सनहकी-संज्ञा स्त्री॰ मिट्टी का एक बरतन। (मुसलमान)
सनाढ्य-संज्ञा पुं॰ ब्राह्मणों की एक शाखा जो गौड़ों के अंतर्गत है।
सनातन-संज्ञा पुं॰ प्राचीन परंपरा। बहुत दिनों से चला आता हुआ क्रम।
वि॰ अत्यंत प्राचीन।
सनातन धर्म-संज्ञा पुं॰ १. प्राचीन या परंपरागत धर्म। २. वर्तमान हिंदू धर्म का वह स्वरूप जिसमें पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-माहात्म्य आदि सब समान रूप से माननीय हैं।
सनातन पुरुष-संज्ञा पुं॰ विष्णु भगवान्।
सनातनी-संज्ञा पुं॰ सनातन धर्म का अनुयायी।
सनाथ-वि॰ जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो।
सनाय-संज्ञा स्त्री॰ एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं। सोनामुखी।
सनाह-संज्ञा पुं॰ कवच। बकतर।
सनीचर-संज्ञा पुं॰ दे॰ "शनैश्चर"।
सनेह॰†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्नेह"।
सनेहिया॰†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सनेही"।
सनेही-वि॰ स्नेह या प्रेम रखनेवाला।
सनोवर-संज्ञा पुं॰ चीड़। (पेड़)
सन्न-वि॰ १. संज्ञा-शून्य। स्तब्ध। २. डर से चुप।
सन्नद्ध-वि॰ १. बँधा हुआ। २. उद्यत। ३. लगा हुआ।
सन्नाटा-संज्ञा पुं॰ १. निःशब्दता। नीरवता। निःस्तब्धता। २. निर्जनता।
सन्निकट-अव्य॰ समीप। पास।
सन्निकर्ष-संज्ञा पुं॰ १. संबंध। २. समीपता।
सन्निधान-संज्ञा पुं॰ १. निकटता। २. स्थापित करना।
सन्निधि-संज्ञा स्त्री॰ १. समीपता। २. आमने-सामने की स्थिति।
सन्निपात-संज्ञा पुं॰ कफ, वात और पित्त तीनों का एक साथ बिगड़ना। त्रिदोष।
सन्निविष्ट-वि॰ एक साथ बैठा हुआ। जमा हुआ।
सन्निवेश-संज्ञा पुं॰ १. एक साथ बैठना। २. बैठना। समाना।
सन्निहित-वि॰ एक साथ या पास रखा हुआ।
सन्मान-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सम्मान"।
सन्मुख-अव्य॰ दे॰ "सम्मुख"।

सर्वशक्तिमान्–वि॰ सब कुछ करने की सामर्थ्य रखनेवाला।
संज्ञा पुं॰ ईश्वर।

सर्वश्रेष्ठ–वि॰ सब से उत्तम।

सर्व-साधारण–संज्ञा पुं॰ जनता। आम लोग।
वि॰ जो सब में पाया जाय।

सर्व-सामान्य–वि॰ जो सब में एक सा पाया जाय। मामूली।

सर्वस्व–संज्ञा पुं॰ सब कुछ।

सर्वहर–संज्ञा पुं॰ १. महादेव। २. यमराज।

सर्वांग–संज्ञा पुं॰ १. सारा बदन। २. सब अवयव या अंश।

सर्वात्मा–संज्ञा पुं॰ शिव।

सर्वाधिकार–संज्ञा पुं॰ पूरा इख़्तियार।

सर्वाधिकारी–संज्ञा पुं॰ १. वह जिसके हाथ में पूरा इख़्तियार हो। २. हाकिम।

सर्वाशी–वि॰ सर्वभक्षी।

सर्वेश, सर्वेश्वर–संज्ञा पुं॰ १. सब का स्वामी। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्त्ती राजा।

सर्वौषधि–संज्ञा स्त्री॰ ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं।

सर्षप–संज्ञा स्त्री॰ १. चीढ़। २. कुंदुर।

सलगम–संज्ञा पुं॰ दे॰ "शलजम"।

सलज्ज–वि॰ जिसे लज्जा हो।

सलतनत–संज्ञा स्त्री॰ राज्य। बादशाहत।

सलमा–संज्ञा पुं॰ सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलहज–संज्ञा स्त्री॰ सरहज।

सलाई–संज्ञा स्त्री॰ १. धातु का बना हुआ कोई पतला छोटा छड़। २. सालने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

सलाक–संज्ञा पुं॰ तीर।

सलाख–संज्ञा स्त्री॰ धातु का बना हुआ छड़। शलाका।

सलाद–संज्ञा पुं॰ मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेज़ी ढंग से डाला हुआ अचार।

सलाम–संज्ञा पुं॰ प्रणाम करने की क्रिया। बंदगी। आदाब।

सलामत–वि॰ १. सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। २. बरकरार।
क्रि॰ वि॰ कुशलपूर्वक।

सलामती–संज्ञा स्त्री॰ १. तंदुरुस्ती। २. कुशल। क्षेम।

सलामी–संज्ञा स्त्री॰ १. प्रणाम करने की क्रिया। सलाम करना। २. सैनिकों की प्रणाम करने की प्रणाली। ३. तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।

सलार–संज्ञा पुं॰ एक प्रकार का पक्षी।

सलाह–संज्ञा स्त्री॰ सम्मति। मशविरा।

सलाहकार–संज्ञा पुं॰ राय देनेवाला।

सलाही–संज्ञा पुं॰ दे॰ "सलाहकार"।

सलिल–संज्ञा पुं॰ जल। पानी।

सलिलपति–संज्ञा पुं॰ १. वरुण। २. समुद्र।

सलीक़ा–संज्ञा पुं॰ १. शऊर। तमीज़।

सन्यास-संज्ञा पुं० १. त्याग। २. दुनिया के जंजाल से अलग की अवस्था। वैराग्य। ३. चतुर्थ आश्रम। यति-धर्म।

सन्यासी-संज्ञा पुं० १. वह पुरुष जिसने सैन्यास धारण किया हो। २. विरागी।

सपक्ष-वि० जो अपने पक्ष में हो। तरफ़दार।
संज्ञा पुं० १. मित्र। सहायक। २. न्याय में वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो।

सपत्नी-संज्ञा स्त्री० एक ही पति की दूसरी स्त्री। सौत।

सपत्नीक-वि० पत्नी के सहित।

सपना-संज्ञा पुं० वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। स्वप्न।

सपरदाई-संज्ञा पुं० तवायफ़ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। भँडुआ। समाजी।

सपरना-क्रि० अ० १. काम का पूरा होना। २. हो सकना।

सपरिकर-वि० अनुचर-वर्ग के साथ। ठाट-बाट के साथ।

सपाट-वि० १. बराबर। समतल। २. चिकना।

सपाटा-संज्ञा पुं० १. चलने या दौड़ने का वेग। २. तीव्र गति। झपट।

सपिंड-संज्ञा पुं० एक ही कुल का पुरुष जो एक ही पितरों को पिंड-दान करता हो।

सपिंडी-संज्ञा स्त्री० मृतक के निमित्त वह कर्म जिसमें वह और पितरों के साथ मिलाया जाता है।

सपूत-संज्ञा पुं० वह पुत्र जो अपने कर्त्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र।

सपूती-संज्ञा स्त्री० १. सपूत होने का भाव। लायकी। २. योग्य पुत्र उत्पन्न करनेवाली माता।

सपेद†-वि० दे० "सफ़ेद"।

सपोला-संज्ञा पुं० साँप का छोटा बच्चा।

सप्त-वि० गिनती में सात।

सप्तऋषि-संज्ञा पुं० दे० "सप्तर्षि"।

सप्तक-संज्ञा पुं० १. सात वस्तुओं का समूह। २. सात स्वरों का समूह।

सप्तद्वीप-संज्ञा पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े और मुख्य विभाग। जम्बू, कुश, प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप।

सप्तपदी-संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू अग्नि के चारों ओर ७ परिक्रमाएँ करते हैं। भाँवर।

सप्तपर्ण-संज्ञा पुं० छतिवन। (पेड़)

सप्तपर्णी-संज्ञा स्त्री० लजावंती लता।

सप्त-पाताल-संज्ञा पुं० पृथ्वी के नीचे के ये सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुरी-संज्ञा स्त्री० ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

सप्तम-वि० सातवाँ।

सप्तमी-संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की सातवीं तिथि।

सप्तर्षि-संज्ञा पुं० १. सात ऋषियों का समूह या मंडल। गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ,

२. तहज़ीब। सभ्यता।
सलीक़ामंद–वि० शऊरदार। तमीज़-दार।
सलोता–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।
सलूक–संज्ञा पुं० १. बरताव। २. भलाई। नेकी। उपकार।
सलोना–वि० १. जिसमें नमक पड़ा हो। नमकीन। २. रसीला। सुंदर।
सलोनापन–संज्ञा पुं० सलोना होने का भाव।
सल्लम–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।
सवत–संज्ञा स्त्री० दे० "सौत"।
सवत्स–वि० बच्चे के सहित।
सवर्ण–वि० १. समान। सदृश। २ समान वर्ण या जाति का।
सवाँग–संज्ञा पुं० दे० "स्वाँग"।
सवा–संज्ञा स्त्री० चौथाई सहित।
सवाई–संज्ञा स्त्री० [वि० सवा] १. ऋण का एक प्रकार जिसमें मूल धन का चतुर्थांश ब्याज में देना पड़ता है। २. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।
सवाद–संज्ञा पुं० दे० "स्वाद"।
सवादिक⊙।–वि० स्वादिष्ठ।
सवाब–संज्ञा पुं० नेकी।
सवार–संज्ञा पुं० वह जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही।
वि० किसी चीज़ पर चढ़ा या बैठा हुआ।
सवारी–संज्ञा स्त्री० १. किसी चीज़ पर विशेषतः चलने के लिये चढ़ने की क्रिया। २. चढ़ने की चीज़। ३. जलूस।
सवाल–संज्ञा पुं० १. प्रश्न। २. माँग।
सवाल-जवाब–संज्ञा पुं० बहस। वाद-विवाद।
सविकल्प–वि० संदेह-युक्त।
सविता–संज्ञा पुं० सूर्य्य।
सवितापुत्र–संज्ञा पुं० सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।
सवितासुत–संज्ञा पुं० शनैश्चर।
सविनय अवज्ञा–संज्ञा स्त्री० राज्य की किसी आज्ञा या क़ानून को न मानना।
सवेरा–संज्ञा पुं० प्रातःकाल। सुबह।
सवैया–संज्ञा पुं० तौलने का सवा सेर का बाट।
सव्य–वि० बायाँ।
संज्ञा पुं० यज्ञोपवीत।
सव्यसाची–संज्ञा पुं० अर्जुन।
सशंक–वि० जिसे शंका हो। भय-भीत।
ससिधर⊙–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सची⊙–संज्ञा स्त्री० दे० "शची"।
ससुर–संज्ञा पुं० पति या पत्नी का पिता।
ससुराल–संज्ञा स्त्री० पति या पत्नी के पिता का घर।
सस्ता–वि० थोड़े मूल्य का।
सस्ताना।–क्रि० अ० किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना।
सस्ती–संज्ञा स्त्री० १. सस्ता होने का भाव। २. वह समय जब कि सब चीज़ें सस्ती मिलें।
सह–अव्य० सहित।
सहकार–संज्ञा पुं० सहायक।
सहकारता–संज्ञा स्त्री० सहायता।
सहकारिता–संज्ञा स्त्री० सहायता।
सहकारी–संज्ञा पुं० सहायक। मदद-गार।

सहगमन-संज्ञा पुं० पति के शव के साथ पत्नी का सती होना।
सहगामिनी-संज्ञा स्त्री० स्त्री।
सहगामी-संज्ञा पुं० साथी।
सहगौन ‡-संज्ञा पुं० दे० "सहगमन"।
सहचर-संज्ञा पुं० सेवक। नौकर।
सहचरी-संज्ञा स्त्री० १. सहचर का स्त्री० रूप। २. पत्नी। जोरू। ३. सखी।
सहचार-संज्ञा पुं० संग। सोहबत।
सहचारिणी-संज्ञा स्त्री० साथ में रहनेवाली।
सहचारिता-संज्ञा स्त्री० सहचारी होने का भाव।
सहचारी-संज्ञा पुं० १. संगी। २. सेवक।
सहज-वि० १. साधारण। २. सरल। आसान।
सहज पंथ-संज्ञा पुं० गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग।
सहजात-वि० सहोदर।
सहताना©†-क्रि०अ०दे०"सुस्ताना"।
सहदानी©†-संज्ञा स्त्री० निशानी। पहचान।
सहदेई-संज्ञा स्त्री० क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनौषधि।
सहदेव-संज्ञा पुं० राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र।
सहधर्म्मचारिणी-संज्ञा स्त्री० पत्नी।
सहन-संज्ञा पुं० सहने की क्रिया। बरदाश्त करना।
संज्ञा पुं० १. मकान के बीच में या सामने का खुला छोड़ा हुआ भाग। आँगन। २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
सहनभंडार-संज्ञा पुं० १. कोष। खजाना। २. धन-राशि।
सहनशील-वि० बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु।
सहना-क्रि० स० बरदाश्त करना। झेलना। भोगना।
सहनीय-वि० सहन करने योग्य।
सहपाठी-संज्ञा पुं० वह जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।
सहभोज, सहभोजन-संज्ञा पुं० एक साथ बैठकर भोजन करना।
सहभोजी-संज्ञा पुं० वे जो एक साथ बैठकर खाते हों।
सहम-संज्ञा पुं० १. डर। भय। २. संकोच।
सहमत-वि० एक मत का।
सहमना-क्रि० अ० भयभीत होना। डरना।
सहमरण-संज्ञा पुं० स्त्री का मृत पति के शव के साथ सती होना।
सहमृता-संज्ञा स्त्री० सती।
सहयोग-संज्ञा पुं० १. साथ मिलकर काम करने का भाव। २. सहायता।
सहयोगी-संज्ञा पुं० सहायक। मददगार।
सहराना©†-क्रि० स० दे० "सहलाना"।
©† क्रि० अ० डर से काँपना।
सहरी-संज्ञा स्त्री० १. सफरी मछली। २. दे० "सहरगही"।
सहल-वि० जो कठिन न हो।
सहलाना-क्रि० स० धीरे धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सुहराना।
क्रि० अ० गुदगुदी होना। खुजलाना।
सहवास-संज्ञा पुं० १. संग। साथ। २. संभोग।

हो। हिम्मती।

साहाय्य-संज्ञा पुं० [illegible] सहायता।

साहिब-[illegible] होना। राजा।

साहित्य-संज्ञा पुं० १. एकत्र होना। सम्मिलन। २. गद्य और पद्य सब प्रकार के उन ग्रंथों का समूह जिनमें सार्वजनीन हित-संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं। वाङ्मय।

साहित्यिक-वि० साहित्य-संबंधी। संज्ञा पुं० साहित्य-सेवी।

साहिब-संज्ञा पुं० दे० "साहब"।

साही-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जंतु जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं।

साहु-संज्ञा पुं० १. सज्जन। २. महाजन। साहूकार।

साहूकार-संज्ञा पुं० बड़ा महाजन या व्यापारी।

साहूकारा-संज्ञा पुं० रुपयों का लेन-देन। महाजनी।

साहूकारी-संज्ञा स्त्री० साहूकार होने का भाव।

साहेब-संज्ञा पुं० दे० "साहब"।

सिउँ†-प्रत्य० दे० "से"।

सिंकना-क्रि० अ० आँच पर गरम होना या पकना।

सिंगा-संज्ञा पुं० तुरही। रणसिंगा। (बाद्य)

सिंगार-संज्ञा पुं० १. सजावट। २. शोभा।

सिंगारदान-संज्ञा पुं० वह छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखी जाती है।

सिंगारना-क्रि० स० सुसज्जित करना।

सिंगारहाट-संज्ञा स्त्री० वेश्याओं के रहने का स्थान। चकला।

सिंगारहार-संज्ञा पुं० हरसिंगार नामक फूल। परजाता।

सिंगारिया-वि० देवमूर्त्ति का सिंगार करनेवाला पुजारी।

सिंगारी-वि० पुं० शृंगार करनेवाला। सजानेवाला।

सिंगिया-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध स्थावर विष।

सिंगी-संज्ञा पुं० फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा। संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मछली। २. सींग की नली जिससे देहाती जर्राह शरीर का रक्त चूसकर निकालते हैं।

सिंगौटी-संज्ञा स्त्री० १. बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण। २. सिंदूर, कंघी आदि रखने की स्त्रियों की पिटारी।

सिंघा†-संज्ञा पुं० दे० "सिंह"।

सिंघल-संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

सिंघाड़ा-संज्ञा पुं० १. पानी में फैलनेवाली एक लता जिसके तिकोने फल खाए जाते हैं। २. एक नमकीन पकवान।

सिंघासन-संज्ञा पुं० दे० "सिंहासन"।

सिंघी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की छोटी मछली। २. सोंठ।

सिंघेला-संज्ञा पुं० शेर का बच्चा।

सिंचन-संज्ञा पुं० [वि० सिंचित] जल छिड़कना। सींचना।

सिँचना-क्रि० अ० सींचा जाना।

सिँचाई-संज्ञा स्त्री० १. सींचने का काम। २. सींचने का कर या मजदूरी।

सहस–वि० दे० "सहस्र"।

सहसकिरन–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

सहसा–अव्य० एकाएक। अचानक।

सहसाखी*–संज्ञा पुं० इंद्र।

सहसासन*–संज्ञा पुं० शेषनाग।

सहस्र–वि० जो गिनती में दस सौ हो।

सहस्रकर–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

सहस्रकिरण–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

सहस्रदल–संज्ञा पुं० पद्म। कमल।

सहस्रनाम–संज्ञा पुं० वह स्तोत्र जिसमें किसी देवता के हज़ार नाम हों।

सहस्रनेत्र–संज्ञा पुं० इंद्र।

सहस्रपाद–संज्ञा पुं० १. सूर्य्य। २. विष्णु। ३. सारस पक्षी।

सहस्रबाहु–संज्ञा पुं० १. शिव। २. कार्त्तवीर्य्यार्जुन। राजा कृतवीर्य्य का पुत्र।

सहस्रभुजा–संज्ञा स्त्री० देवी का एक रूप।

सहस्ररश्मि–संज्ञा पुं० सूर्य्य।

सहस्रशीर्ष–संज्ञा पुं० विष्णु।

सहस्राक्ष–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. विष्णु।

सहाइ, सहाई*†–संज्ञा पुं० सहायक। मददगार।
संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

सहाध्यायी–संज्ञा पुं० दे० "सहपाठी"।

सहानुभूति–संज्ञा स्त्री० हमदर्दी।

सहाय–संज्ञा पुं० मदद।

सहायक–वि० सहायता करनेवाला। मददगार।

सहायता–संज्ञा स्त्री० किसी के कार्य्य में शारीरिक या और किसी प्रकार का योग देना। मदद।

सहायी–संज्ञा पुं० मददगार।

सहारा–संज्ञा पुं० मदद।

सहिजन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी होती है। शोभांजन। मुनगा।

सहित–अव्य० समेत। संग।

सहिदान*†–संज्ञा पुं० दे० "सहिदानी"।

सहिदानी†–संज्ञा स्त्री० चिह्न। पहचान।

सहिष्णु–वि० सहनशील।

सहिष्णुता–संज्ञा स्त्री० सहनशीलता।

सही–वि० १. सत्य। सच। २. प्रामाणिक।

सही-सलामत–वि० १. आरोग्य। २. जिसमें कोई दोष या न्यूनता न आई हो।

सहूलियत–संज्ञा स्त्री० १. आसानी। २. अदब।

सहृदय–वि० १. जो दूसरे के दुःख-सुख आदि समझता हो। २. दयालु। ३. रसिक।

सहेजना–क्रि० स० अच्छी तरह कह-सुनकर सपुर्द करना।

सहेजवाना–क्रि० स० सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेतुक–वि० जिसका कुछ हेतु, उद्देश्य या मतलब हो।

सहेली–संज्ञा स्त्री० १. साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। २. दासी।

सहैया*†–वि० सहन करनेवाला।

सहोदर–संज्ञा पुं० १. एक ही माता के उदर से उत्पन्न संतान। २. सगा।

सह्य–संज्ञा पुं० दे० "सह्याद्रि"।

सिँचाना–क्रि० स० सींचने का काम दूसरे से कराना।

सिंजित–संज्ञा स्त्री० शब्द। ध्वनि। झनक।

सिंदूर–संज्ञा पुं० ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ माँग में भरती हैं।

सिंदूरदान–संज्ञा पुं० विवाह में वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना।

सिंदूरपुष्पी–संज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीर-पुष्पी।

सिंदूरिया–वि० १. सिंदूर के रंग का। २. खूब लाल।

सिंदूरी–वि० सिंदूर के रंग का।

सिंध–संज्ञा पुं० भारत के पश्चिम का एक प्रदेश।

संज्ञा स्त्री० पंजाब की एक प्रधान नदी।

सिंधी–संज्ञा स्त्री० सिंध देश की बोली। संज्ञा पुं० सिंध देश का निवासी।

सिंधु–संज्ञा पुं० १. नद। नदी। २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिमी भाग में है। ३. समुद्र। ४. चार की संख्या। ५. सात की संख्या। ६. सिंध प्रदेश। ७. एक राग।

सिंधुजा–संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

सिंधुपुत्र–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

सिंधुर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सिंधुरी] हाथी।

सिंधुरमणि–संज्ञा पुं० गजमुक्ता।

सिंधुरवदन–संज्ञा पुं० गणेश।

सिंधुविष–संज्ञा पुं० हलाहल विष।

सिंधोरा–संज्ञा पुं० सिंदूर रखने का लकड़ी का पात्र।

सिंह–संज्ञा पुं० बिल्ली की जाति का एक हिंसक पशु जो बहुत शक्तिशाली होता है और जिसका शिकार किया जाय। ... की जाति ... सचेत। होशियार। ... मी और भव्य ... स्त्री० सतर्कता। ... नरों की गरदन दूर तक के बाल होते हैं। शेर बबर। २. महीना।

सिंहद्वार–संज्ञा पुं० सदर फाटक। ... भवन

सिंहनाद–संज्ञा पुं० १. सिंह गरज। २. युद्ध में वीरों की ललकार

सिंहनी–संज्ञा स्त्री० सिंह की मादा। शेरनी।

सिंहपौर–संज्ञा पुं० दे० "सिंहद्वार"।

सिंहल–संज्ञा पुं० एक द्वीप जो भारत-वर्ष के दक्षिण में है।

सिंहलद्वीप–संज्ञा पुं० दे० "सिंहल"।

सिंहला–वि० १. सिंहल द्वीप का। २. सिंहल द्वीप का निवासी।

सिंहवाहिनी–संज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी।

सिंहावलोकन–संज्ञा पुं० १. सिंह के समान पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन।

सिंहासन–संज्ञा पुं० राजा या देवता के बैठने का आसन या चौकी।

सिंही–संज्ञा स्त्री० सिंह की मादा। शेरनी।

सिंहोदरी–वि० स्त्री० सिंह के समान पतली कमरवाली।

सिंआरा–वि० ठंढा।

संज्ञा पुं० छाया। छाहँ।

सिआना–क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिआर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सिआरी] शृगाल। गीदड़।

सिकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. किवाड़ की कुंडी। साँकल। २. एक सोने का आभूषण।

सिकता–संज्ञा स्त्री० बालू। रेत।

वि० सहने योग्य। बर्दाश्त करने लायक।

सह्याद्रि–संज्ञा पुं० बंबई प्रांत का एक प्रसिद्ध पर्वत।

साँई–संज्ञा पुं० १. स्वामी। २. ईश्वर। ३. पति। ४. मुसलमान फ़कीरों की एक उपाधि।

साँकड़ा–संज्ञा पुं० पैरों में पहनने का एक आभूषण।

साँकर⊕†–संज्ञा स्त्री० शृंखला। ज़ंजीर। सीकड़।
संज्ञा पुं० संकट। कष्ट।
वि० १. संकीर्ण। तंग। २. दुःखमय।

साँकरा†–वि० दे० "सँकरा"।

साँग–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बरछी जो फेंककर मारी जाती है। शक्ति।

साँगी–संज्ञा स्त्री० बरछी। साँग।

साँगोपांग–अव्य० अंगों और उपांगों सहित। संपूर्ण।

साँच⊕†–वि० पुं० सत्य। यथार्थ। ठीक।

साँचा–संज्ञा पुं० फरमा।

साँची–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का पान जो खाने में ठंढा होता है। २. पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं।

साँझ†–संज्ञा स्त्री० संध्या।

साँझी–संज्ञा स्त्री० देवमंदिरों में ज़मीन पर की हुई फूल-पत्तों आदि की सजावट जो प्रायः सावन में होती है।

साँटा–संज्ञा पुं० १. कोड़ा। २. ईख। गन्ना।

साँटिया–संज्ञा पुं० डुग्गी पीटनेवाला।

साँटी–संज्ञा स्त्री० पतली छोटी छड़ी।

साँड़–संज्ञा पुं० १. वह बैल (या घोड़ा) जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। २. वह बैल जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं।

साँड़नी–संज्ञा स्त्री० ऊँटनी या मादा ऊँट जो बहुत तेज़ चलता है।

साँड़िया–संज्ञा पुं० बहुत तेज़ चलनेवाला एक प्रकार का ऊँट।

सांत्वना–संज्ञा स्त्री० ढारस। आश्वासन।

सांदीपनि–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा दी थी।

सांध्य–वि० संध्या-संबंधी। संध्या का।

साँप–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला लंबा कीड़ा। भुजंग।

सांपत्तिक–वि० आर्थिक।

साँपिन–संज्ञा स्त्री० साँप की मादा।

सांप्रत–अव्य० इसी समय। तत्काल।

सांप्रदायिक–वि० किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का।

सांब–संज्ञा पुं० जांबवती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र।

साँभर–संज्ञा पुं० १. राजपूताने की एक झील जिसके पानी से साँभर नमक बनता है। २. उक्त झील के जल से बना हुआ नमक। ३. भारतीय मृगों की एक जाति।

साँमुहे†–अव्य० सामने।

साँवत†–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।

साँवर†–वि० दे० "साँवला"।

साँवलताई†–संज्ञा स्त्री० साँवला होने का भाव। श्यामता।

साँवला–वि० जिसका रंग कुछ

हो। हिम्मती। संस्था या
साहाय्य-संज्ञा० म०
साहि…-हा होना। धीका।
साहिमाना-संज्ञा स्त्री० संकोच। शिकन।
सिमिटना-क्रि० अ० १. सिमटकर
… स्थान में होना। २. बल
सिमा। शिकन पड़ना।
सिकुरना-क्रि० अ० दे० "सिकु-
ड़ना"।
सिकोड़ना-क्रि० स० संकुचित करना।
सिकोरा-संज्ञा पुं० दे० "कसोरा"।
सिकोली-संज्ञा स्त्री० कास, मूँज,
बेंत आदि की बनी डलिया।
सिकोही-वि० आन-बानवाला।
सिक्कड़-संज्ञा पुं० दे० "सीकड़"।
सिक्का-संज्ञा पुं० १. मुहर। २. टक-
साल में ढला हुआ धातु का टुकड़ा।
रुपया, पैसा आदि। मुद्रा।
सिक्ख-संज्ञा पुं० दे० "सिख"।
सिक्त-वि० सींचा हुआ। तर। गीला।
सिखंड-संज्ञा पुं० दे० "शिखंड"।
सिख-संज्ञा स्त्री० सीख।
संज्ञा पुं० गुरु नानक आदि दस गुरुओं
का अनुयायी। नानकपंथी।
सिखना-क्रि० स० दे० "सीखना"।
सिखरन-संज्ञा स्त्री० दही मिला हुआ
चीनी का शरबत।
सिखलाना-क्रि० स० दे० "सिखाना"।
सिखाना-क्रि० स० शिक्षा देना।
सिखावन-संज्ञा पुं० उपदेश।
सिखी-संज्ञा पुं० दे० "शिखी"।
सिगरा, सिगरो-वि० [स्त्री०
सिगरी] सब। सारा।
सिचान-संज्ञा पुं० बाज़ पक्षी।
सिजदा-संज्ञा पुं० प्रणाम। दंडवत।
सिझना-क्रि० अ० आँच पर पकना।
सिझाना-क्रि० स० आँच पर पकाकर
गलाना।
सिटकिनी-संज्ञा स्त्री० किवाड़ों के बंद
करने के लिये लोहे या पीतल का
छड़। चटकनी।
सिटपिटाना-क्रि० अ० दब जाना।
मंद पड़ जाना।
सिट्टी-संज्ञा स्त्री० बहुत बढ़-बढ़कर
बोलना। चालाकी।
सिठाई-संज्ञा स्त्री० फीकापन। नीरसता।
सिड़-संज्ञा स्त्री० १. पागलपन। २.
सनक।
सिड़ी-वि० [स्त्री० सिड़िन] १. पागल।
२. सनकी।
सित-वि० १. श्वेत। २. उज्ज्वल।
संज्ञा पुं० शुक्ल पक्ष।
सितकंठ-वि० सफ़ेद गर्दनवाला।
संज्ञा पुं० महादेव।
सितता-संज्ञा स्त्री० सफ़ेदी।
सितपक्ष-संज्ञा पुं० हंस।
सितभानु-संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सितम-संज्ञा पुं० ग़ज़ब। अनर्थ।
सितमगर-संज्ञा पुं० ज़ालिम। अ-
न्यायी।
सितसागर-संज्ञा पुं० क्षीरसागर।
सिता-संज्ञा स्त्री० चीनी। शक्कर।
सिताखंड-संज्ञा पुं० शहद से बनाई
हुई शक्कर।
सिताब-क्रि० वि० जल्दी। झटपट।
सितार-संज्ञा पुं० एक प्रकार का
प्रसिद्ध बाजा जो तारों को उँगली
से झनकारने से बजता है।
सितारा-संज्ञा पुं० १. तारा। नक्षत्र।
२. भाग्य। ३. चाँदी या सोने के
पत्तर की बनी हुई छोटी गोल
बिंदी जो शोभा के लिये चीज़ों पर

कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।
संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. पति या प्रेमी आदि का बोधक एक नाम। (गीतों में)

साँवलापन-संज्ञा पुं० साँवला होने का भाव। वर्ण की श्यामता।

साँवाँ-संज्ञा पुं० कँगनी या चेना की जाति का एक अन्न।

साँस-संज्ञा स्त्री० १. नाक या मुँह के द्वारा बाहर से हवा खींचकर अंदर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम। २. अवकाश। फ़ुरसत। ३. दम फूलने का रोग। श्वास। दमा।

साँसत-संज्ञा स्त्री० १. दम घुटने का सा कष्ट। २. झंझट। बखेड़ा।

साँसनाॐ†-क्रि० स० शासन करना। दंड देना।

सांसारिक-वि० इस संसार का। लौकिक। ऐहिक।

सा-अव्य० १. समान। तुल्य। २. एक मानसूचक शब्द। जैसे—थोड़ा सा।

साइत-संज्ञा स्त्री० मुहूर्त्त। शुभ लग्न।

साइयाँ-संज्ञा पुं० दे० "साईं"।

साइर†-संज्ञा पुं० दे० "सायर"।

साई-संज्ञा स्त्री० बयाना।

साईस-संज्ञा पुं० वह नौकर जो घोड़े की खबरदारी और सेवा करता है।

साईसी-संज्ञा स्त्री० साईस का काम, भाव या पद।

साकंभरी-संज्ञा पुं० साँभर झील या उसके आसपास का प्रांत।

साकचेरि†-संज्ञा स्त्री० मेहँदी।

साका-संज्ञा पुं० १. संवत्। शाका। २. ख्याति।

साकार-वि० मूर्त्तिमान्। साक्षात्। संज्ञा पुं० ईश्वर का साकार रूप।

साकारोपासना-संज्ञा स्त्री० ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर उसकी उपासना करना।

साकिन-वि० निवासी। रहनेवाला।

साक़ी-संज्ञा पुं० १. शराब पिलानेवाला। २. माशूक़।

साकेत-संज्ञा पुं० अयोध्या नगरी।

साक्षर-वि० शिक्षित।

साक्षात्-अव्य० सामने। सम्मुख। वि० मूर्त्तिमान्। साकार। संज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा-देखी।

साक्षात्कार-संज्ञा पुं० १. भेंट। मुलाकात। २. पदार्थों का इंद्रियों द्वारा होनेवाला ज्ञान।

साक्षी-संज्ञा पुं० १. चश्मदीद गवाह। २. देखनेवाला। दर्शक। संज्ञा स्त्री० गवाही। शहादत।

साख-संज्ञा पुं० १. मर्यादा। २. लेन-देन की प्रामाणिकता।

साखाॐ†-संज्ञा स्त्री० दे० "शाखा"।

साखी-संज्ञा पुं० गवाह। संज्ञा स्त्री० साक्षी।

साखू-संज्ञा पुं० शाल वृक्ष।

साग-संज्ञा पुं० १. पौधों की खाने योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २. पकाई हुई भाजी। तरकारी।

सागर-संज्ञा पुं० १. समुद्र। उदधि। २. बड़ा तालाब। झील। ३. संन्यासियों का एक भेद।

सागू-संज्ञा पुं० १. ताड़ की जाति का एक पेड़। २. दे० "सागूदाना"।

लगाई जाती है। चमकी।

सितारिया–संज्ञा पुं० सितार बजाने-वाला।

सितारेहिंद–संज्ञा पुं० एक उपाधि जो सरकार की ओर से दी जाती है।

सितासित–संज्ञा पुं० श्वेत और श्याम। सफ़ेद और काला।

सितिकंठ–संज्ञा पुं० महादेव।

सिदिक़–वि० सच्चा। सत्य।

सिद्ध–वि० १. जिसका साधन हो चुका हो। २. कृतकार्य्य। ३. जिसने योग या तप द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि प्राप्त की हो।

सिद्धकाम–वि० जिसकी कामना पूरी हुई हो।

सिद्धता–संज्ञा स्त्री० सिद्ध होने की अवस्था।

सिद्धपीठ–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ योग, तप या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त हो।

सिद्धरस–संज्ञा पुं० पारा।

सिद्धहस्त–वि० १. जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २. निपुण।

सिद्धांजन–संज्ञा पुं० वह अंजन जिसे आँख में लगा लेने से भूमि में गड़ी वस्तुएँ भी दिखाई देती हैं।

सिद्धांत–संज्ञा पुं० भली भाँति सोच-विचारकर स्थिर किया हुआ मत।

सिद्धा–संज्ञा स्त्री० सिद्ध की स्त्री।

सिद्धाई–संज्ञा स्त्री० सिद्ध होने की अवस्था।

सिद्धार्थ–वि० जिसकी कामनाएँ पूर्ण हो गई हों।

संज्ञा पुं० १. गौतम बुद्ध। २. जैनों के २४वें अर्हंत् महावीर के पिता का नाम।

सिद्धि–[...]का शिकार किया जाय।

होना। २. [...]वि० सचेत। होशियार।

होना। ४. [...]संज्ञा स्त्री० सतर्कता।

सिद्धिदाता–संज्ञा [...]गपाड़ के बाद

सिद्धेश्वर–संज्ञा पुं० [...]स्त्री० [...] महीना।

१. बड़ा सिद्ध। २. महादेव [...]सावन

सिधाई–संज्ञा स्त्री० सीधापन।

सिधारना–क्रि० अ० १. जाना। [...]

मरना। स्वर्गवास होना।

सिन–संज्ञा पुं० उम्र। अवस्[...]

सिन्नी–संज्ञा स्त्री० वह मिठाई जो किसी पीर या देवता को चढ़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जाय।

सिपर–संज्ञा स्त्री० ढाल।

सिपहगरी–संज्ञा स्त्री० सिपाही का काम।

सिपहसालार–संज्ञा पुं० सेनापति।

सिपाह–संज्ञा स्त्री० फ़ौज। सेना।

सिपाहियाना–वि० सिपाहियों या सैनिकों का सा।

सिपाही–संज्ञा पुं० सैनिक। शूर।

सिपुर्द–संज्ञा पुं० दे० "सुपुर्द"।

सिप्पा–संज्ञा पुं० १. निशाने पर किया हुआ वार। २. तदबीर।

सिप्रा–संज्ञा स्त्री० मालवा की एक नदी जिसके किनारे उज्जैन बसा है।

सिफ़त–संज्ञा स्त्री० विशेषता। गुण।

सिफ़र–संज्ञा पुं० शून्य। सुन्ना।

सिफ़ारिश–संज्ञा स्त्री० किसी के दोष क्षमा करने के लिये या किसी के पक्ष में कुछ कहना सुनना। अनुरोध।

सिफ़ारिशी–वि० जिसमें सिफ़ारिश हो।

सिफ़ारिशी टट्टू–संज्ञा पुं० वह जो केवल सिफ़ारिश से किसी पद पर

सागौन-संज्ञा पुं० दे० "शाल"।
साज-संज्ञा पुं० १. सजावट का काम। २. सजावट का सामान। उपकरण। सामग्री।
साजन-संज्ञा पुं० १. पति। २. प्रेमी। ३. ईश्वर। ४. भला आदमी।
साजना०†-क्रि० स० दे० "सजाना"। संज्ञा पुं० दे० "साजन"।
साज-बाज-संज्ञा पुं० तैयारी।
साज-सामान-संज्ञा पुं० १. सामग्री। उपकरण। असबाब। २. ठाट-बाट।
साजिश-संज्ञा स्त्री० किसी के विरुद्ध कोई काम करने में सहायक होना। षड्यंत्र।
साझा-संज्ञा पुं० शराकत। हिस्सेदारी।
साझी-संज्ञा पुं० दे० "साझेदार"।
साझेदार-संज्ञा पुं० शरीक होनेवाला। हिस्सेदार।
साटन-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
साटना०†-क्रि० स० दे० "सटाना"।
साठ-वि० पचास और दस। संज्ञा पुं० पचास और दस के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।
साठा-संज्ञा पुं० ईख। गन्ना। ऊख। वि० साठ वर्ष की उम्रवाला।
साठी-संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
साड़ी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की या बेलदार धोती। सारी। संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़ी"।
साढ़साती-संज्ञा स्त्री० दे० "साढ़े-साती"।
साढ़ी-संज्ञा स्त्री० १. वह फसल जो असाढ़ में बोई जाती है। असाढ़ी। २. दूध के ऊपर जमनेवाली बालाई। मलाई। ३. दे० "साड़ी"।
साढ़ू-संज्ञा पुं० साली का पति।
साढ़ेसाती-संज्ञा स्त्री० शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात मास या साढ़े सात दिन आदि की दशा। (अशुभ)
सात-वि० पाँच और दो। संज्ञा पुं० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।
सातला-संज्ञा पुं० एक प्रकार का थूहर। सप्तला। स्वर्णपुष्पी।
सात्मक-वि० आत्मा के सहित।
सात्म्य-संज्ञा पुं० सारूप्य। सरूपता।
सात्यकि-संज्ञा पुं० एक यादव जिसने महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था। युयुधान।
सात्वत-संज्ञा पुं० १. बलराम। २. श्रीकृष्ण। ३. विष्णु। ४. यदुवंशी।
सात्वती-संज्ञा स्त्री० १. शिशुपाल की माता का नाम। २. सुभद्रा।
सात्विक-वि० १. सतोगुणी। २. सत्वगुण से उत्पन्न।
साथ-संज्ञा पुं० १. मिलकर या संग रहने का भाव। २. बराबर पास रहनेवाला। साथी।
साथी-संज्ञा पुं० १. साथ रहनेवाला। हमराही। २. दोस्त। मित्र।
सादगी-संज्ञा स्त्री० १. सादापन। सरलता। २. सीधापन। निष्कपटता।
सादा-वि० १. जिसकी बनावट आदि बहुत संक्षिप्त हो। २. जिसके ऊपर कोई अतिरिक्त काम न बना हो।

हो। हिम्मती।
साहाय्य-संज्ञा पुं० १. सिकुड़ना।
साहि[illegible]-[illegible] होना। बटुरना।
सालियाना†-संज्ञा पुं० सिवाना। हद।
सिमिटना†ः-क्रि० अ० दे० "सिमटना"।
सियः-संज्ञा स्त्री० जानकी।
सियराः-वि० [स्त्री० सियरी] ठंढा। शीतल।
सियरानाः-क्रि० अ० ठंढा होना।
सिया-संज्ञा स्त्री० जानकी।
सियापा-संज्ञा पुं० मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।
सियार†-संज्ञा पुं० [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़। जंबुक।
सियाल-संज्ञा पुं० गीदड़।
सियाहा-संज्ञा पुं० १. आय-व्यय की बही। २. सरकारी खजाने का वह रजिस्टर जिसमें ज़मींदारों से प्राप्त मालगुजारी लिखी जाती है।
सियाहानवीस-संज्ञा पुं० सरकारी खजाने में सियाहा लिखनेवाला।
सियाही-संज्ञा स्त्री० दे० "स्याही"।
सिर-संज्ञा पुं० शरीर के सबसे अगले या ऊपरी भाग का गोल तल। कपाल। खोपड़ी।
सिरकटा-वि० [स्त्री० सिरकटी] १. जिसका सिर कट गया हो। २. दूसरों का अनिष्ट करनेवाला।
सिरका-संज्ञा पुं० धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख आदि का रस।
सिरकी-संज्ञा स्त्री० १. सरकंडा। सरई। २. सरकंडे की घनी हुई टट्टी।
सिरजनहारः-संज्ञा पुं० १. रचनेवाला। २. परमेश्वर।
सिरजनाः-क्रि० स० रचना। उत्पन्न करना।
सिरताज-संज्ञा पुं० १. मुकुट। २. शिरोमणि।
सिरनामा-संज्ञा पुं० १. लिफ़ाफ़े पर लिखा जानेवाला पता। २. शीर्षक।
सिरनेत-संज्ञा पुं० १. पगड़ी। २. क्षत्रियों की एक शाखा।
सिरपेच-संज्ञा पुं० पगड़ी।
सिरपोश-संज्ञा पुं० सिर पर का आवरण।
सिरफूल-संज्ञा पुं० सिर पर पहना जानेवाला एक आभूषण।
सिरबंद-संज्ञा पुं० साफ़ा।
सिरमौर-संज्ञा पुं० १ सिर का मुकुट। २. शिरोमणि।
सिरस-संज्ञा पुं० शीशम की तरह का लंबा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।
सिरहाना-संज्ञा पुं० चारपाई में सिर की ओर का भाग।
सिरा-संज्ञा पुं० लंबाई का अंत। छोर।
सिराना‡†-क्रि० अ० ठंढा होना। शीतल होना।
क्रि० स० १. ठंढा करना। २. जल में प्रवाहित करना। (प्रतिमा)
सिरिश्ता-संज्ञा पुं० विभाग।
सिरिश्तेदार-संज्ञा पुं० अदालत का एक कर्मचारी।
सिरोमनि-संज्ञा पुं० दे० "शिरोमणि"।
सिरोरुह-संज्ञा पुं० दे० "शिरोरुह"।
सिरोही-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की काली चिड़िया।
संज्ञा पुं० १. राजपूताने में एक स्थान

सादापन-संज्ञा पुं० सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।
सादी-संज्ञा स्त्री० १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २. सदिया।
संज्ञा पुं० १. शिकारी। २. घोड़ा।
सादृश्य-संज्ञा पुं० १. समानता। एकरूपता। २. बराबरी। तुलना।
संज्ञा स्त्री० इच्छा।
साधक-संज्ञा पुं० १. साधना करनेवाला। २. योगी। तपस्वी। ३. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो।
साधन-संज्ञा पुं० १. काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. सामग्री। उपकरण। ३. उपाय। ४. उपासना।
साधनहार०-संज्ञा पुं० १. साधनेवाला। २. जो साधा जा सके।
साधना-संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना। ३. दे० "साधन"।
क्रि० स० १. कोई कार्य्य सिद्ध करना। पूरा करना। २. निशाना लगाना। ३. अभ्यास करना। ४. वश में करना।
साधारण-वि० मामूली।
साधारणतः-अव्य० बहुधा। प्रायः।
साधित-वि० जो सिद्ध किया या साधा गया हो।
साधु-संज्ञा पुं० १. कुलीन। आर्य्य। २. धार्मिक पुरुष। महात्मा। संत। ३. भला आदमी। सज्जन।
वि० १. अच्छा। भला। २. सच्चा।
साधुता-संज्ञा स्त्री० १. साधु होने का भाव या धर्म्म। २. सज्जनता। भलमनसाहत।
साधुवाद-संज्ञा पुं० किसी के कोई उत्तम कार्य्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना।
साधु साधु-अव्य० धन्य धन्य। वाह वाह। बहुत खूब।
साधू-संज्ञा पुं० दे० "साधु"।
साधो-संज्ञा पुं० संत। साधु।
साध्य-वि० १. सिद्ध करने योग्य। २. जो सिद्ध हो सके। ३. सहज। आसान।
संज्ञा पुं० १. देवता। २. न्याय में वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। ३. शक्ति। सामर्थ्य।
साध्वी-वि० स्त्री० १. पतिव्रता। (स्त्री) २. शुद्ध चरित्रवाली। (स्त्री)
सानंद-वि० आनंद के साथ। आनंदपूर्वक।
सान-संज्ञा पुं० वह पत्थर जिस पर शस्त्र आदि तेज़ किए जाते हैं। कुरंड।
सानना†-क्रि० स० १. चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। २. उत्तरदायी बनाना। ३. मिलाना।
सानी-संज्ञा स्त्री० वह भोजन जो पानी में सानकर पशुओं को देते हैं।
वि० १. दूसरा। द्वितीय। २. बराबरी का। मुकाबले का।
सानु-संज्ञा पुं० १. पर्वत की चोटी। शिखर। २. अंत। सिरा।
सान्निध्य-संज्ञा पुं० १. समीपता। २. एक प्रकार की मुक्ति। मोक्ष।
साप०-संज्ञा पुं० दे० "शाप"।

वहाँ की तलवार बहुत बढ़िया होती है। २. तलवार।
सिर्फ़–क्रि० वि० केवल। मात्र। वि० एकमात्र।
सिल–संज्ञा स्त्री० पत्थर। चट्टान।
सिलकी–संज्ञा पुं० बैल।
सिलखड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर।
सिलपट–वि० १. चौरस। २. घिसा हुआ। ३ चौपट।
सिलपोहनी–संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति।
सिलबट–संज्ञा स्त्री० पत्थर की सिल जिस पर मसाला आदि पीसा जाता है।
सिलसिला–संज्ञा पुं० बँधा हुआ क्रम।
सिलसिलेवार–वि० तरतीबवार। क्रमानुसार।
सिलहारा–संज्ञा पुं० खेत में गिरा हुआ अनाज बीननेवाला।
सिलहिला–वि० [स्त्री० सिलहिली] जिस पर पैर फिसले।
सिला–संज्ञा स्त्री० दे० "शिला"। संज्ञा पुं० कटे खेत में से चुना हुआ दाना।
सिलाई–संज्ञा स्त्री० १. सीने का काम या ढंग। २. सीने की मजदूरी।
सिलाजीत–संज्ञा पुं० दे० "शिलाजतु"।
सिलाना–क्रि० स० सीने का काम दूसरे से कराना।
सिलारस–संज्ञा पुं० सिल्हक वृक्ष और उसका गोंद।
सिलावट–संज्ञा पुं० पत्थर काटने और गढ़नेवाला। संगतराश।
सिलाह–संज्ञा पुं० जिरह बकतर। कवच।
सिलाहबंद–वि० सशस्त्र।
सिलाही–संज्ञा पुं० सैनिक।
सिलीमुख–संज्ञा पुं० दे० "शिलीमुख"।
सिलौट, सिलौटा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० सिलौटी] १. सिल। २. सिल तथा बट्टा।
सिल्ली–संज्ञा स्त्री० १. हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। २. सान।
सिल्हक–संज्ञा पुं० सिलारस।
सिव०‡–संज्ञा पुं० दे० "शिव"।
सिवईं–संज्ञा स्त्री० गुँधे हुए आटे के सूत से—सूखे लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।
सिवा–अव्य० अतिरिक्त। अलावा। वि० अधिक। ज्यादा। फालतू।
सिवाइ–अव्य० दे० "सिवा", "सिवाय"।
सिवान–संज्ञा पुं० हद। सीमा।
सिवाय–क्रि० वि० अतिरिक्त। अलावा। वि० अधिक। ज्यादा।
सिवार–संज्ञा स्त्री० पानी में लच्छों की तरह फैलनेवाली एक तृण।
सिवाल–संज्ञा स्त्री० पुं० दे० "सिवार"।
सिवाला–संज्ञा पुं० दे० "शिवालय"।
सिविर–संज्ञा पुं० दे० "शिविर"।
सिसकना–क्रि० अ० भीतर ही भीतर रोना।
सिसकारना–क्रि० अ० सीटी का सा शब्द मुँह से निकालना।
सिसकारी–संज्ञा स्त्री० सिसकारने का शब्द।
सिसकी–संज्ञा स्त्री० खुलकर न रोने

सापना॰†-क्रि॰ स॰ १. शाप देना। बद्दुआ देना। २. कोसना।

साफ़-वि॰ १. जिसमें किसी प्रकार की मैल आदि न हो। स्वच्छ। २. शुद्ध। ३. स्पष्ट। ४. उज्ज्वल।

साफल्य-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सफलता"।

साफ़ा-संज्ञा पुं॰ १. पगड़ी। २. मुरेठा।

साफ़ी-संज्ञा स्त्री॰ १. रूमाल। दस्ती। २. वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। ३. भाँग छानने का कपड़ा। छनना।

साबर-संज्ञा पुं॰ १. दे॰ "साँभर"। २. साँभर मृग का चमड़ा। ३. मिट्टी खोदने का एक औज़ार। सबरी। ४. शिव-कृत एक प्रकार का सिद्ध मंत्र।

साबस†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "शाबाश"।

साबिक़-वि॰ पूर्व का। पहले का।

साबिक़ा-संज्ञा पुं॰ १. मुलाक़ात। २. सरोकार।

साबित-वि॰ जिसका सबूत दिया गया हो। प्रमाणित। सिद्ध।
वि॰ १. साबूत। पूरा। २. दुरुस्त। ठीक।

साबुन-संज्ञा पुं॰ रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और वस्त्र आदि साफ़ किए जाते हैं।

साबूदाना-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सागूदाना"।

सामंजस्य-संज्ञा पुं॰ १. औचित्य। २. उपयुक्तता। ३. अनुकूलता।

सामंत-संज्ञा पुं॰ १. वीर। योद्धा। २. बड़ा ज़मींदार या सरदार।

साम-संज्ञा पुं॰ १. वे वेद-मंत्र जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे। २. दे॰ "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। ४. राजनीति में अपने वैरी या विरोधी को मीठी बातें करके अपनी ओर मिला लेना।
संज्ञा पुं॰ दे॰ "श्याम" और "शाम"।

सामग्री-संज्ञा स्त्री॰ १. वे पदार्थ जिनका किसी विशेष कार्य्य में उपयोग होता हो। २. असबाब। सामान। ३. आवश्यक द्रव्य। ज़रूरी चीज़। ४. साधन।

सामना-संज्ञा पुं॰ किसी के समक्ष होने की क्रिया या भाव।

सामने-क्रि॰ वि॰ १. सम्मुख। समक्ष। २. आगे।

सामयिक-वि॰ १. समय-संबंधी। २. समय के अनुसार।

सामरथ†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सामर्थ्य"।

सामरिक-वि॰ समर-संबंधी।

सामर्थ-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सामर्थ्य"।

सामर्थी-संज्ञा पुं॰ सामर्थ्य रखनेवाला।

सामर्थ्य-संज्ञा पुं॰, स्त्री॰ १. शक्ति। २. योग्यता।

सामवायिक-वि॰ समूह या झुंड-संबंधी।

सामवेद-संज्ञा पुं॰ भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा।

सामसाली-संज्ञा पुं॰ राजनीतिज्ञ।

सामहिं॰-अव्य॰ सामने।

सामाजिक-वि॰ समाज से संबंध रखनेवाला।

सामान-संज्ञा पुं॰ माल। असबाब।

सामान्य-वि॰ जिसमें कोई विशेषता न हो। साधारण। मामूली।

का शब्द ।
सिसिर॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "शिशिर" ।
सिसोदिया-संज्ञा पुं॰ गुहलौत राजपूतों की एक शाखा ।
सिहरना†-क्रि॰ अ॰ १. ठंढ से काँपना । २ काँपना ।
सिहरी-संज्ञा स्त्री॰ कँपकँपी । कंप ।
सिहाना†-क्रि॰ अ॰ ईर्ष्या करना । क्रि॰ स॰ अभिलाषा की दृष्टि से देखना । ललचना ।
सिहारना॰†-क्रि॰ स॰ तलाश करना । ढूँढ़ना ।
सींक-संज्ञा स्त्री॰ १ तिनका । २. नाक का एक गहना । लौंग । कील ।
सींका-संज्ञा पुं॰ पेड़-पौधों की बहुत पतली डाल या टहनी ।
सींग-संज्ञा पुं॰ खुरवाले कुछ पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए कड़े नुकीले अवयव ।
सींगरी-संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार का लोबिया या फली ।
सींगी-संज्ञा स्त्री॰ हिरन के सींग का बना बाजा ।
सींचना-क्रि॰ स॰ १ आबपाशी करना । २. पानी छिड़ककर तर करना ।
सींव॰-संज्ञा पुं॰ सीमा । हद ।
सी-वि॰ स्त्री॰ समान । तुल्य । सदृश ।
सीउ॰-संज्ञा पुं॰ शीत । ठंढ ।
सीकर-संज्ञा पुं॰ जल-कण । पानी की बूँद ।
॰†-संज्ञा स्त्री॰ ज़ंजीर ।
सीकल-संज्ञा स्त्री॰ हथियारों का मोरचा छुड़ाने की क्रिया ।
सीकुर-संज्ञा पुं॰ गेहूँ, जौ आदि की बाल के ऊपर के कड़े सूत ।
सीख-संज्ञा स्त्री॰ १. शिक्षा । तालीम । २ वह बात जो सिखाई जाय ।
सीखचा-संज्ञा पुं॰ लोहे का छड़ ।
सीखना-क्रि॰स॰ १ ज्ञान प्राप्त करना । २.काम करने का ढंग आदि जानना ।
सीझ-संज्ञा स्त्री॰ सीझने की क्रिया या भाव । गरमी से गलाव ।
सीझना-क्रि॰ अ॰ आँच या गरमी पाकर गलना । पकना ।
सीटना-क्रि॰ स॰ डींग मारना ।
सीटी-संज्ञा स्त्री॰ वह महीन शब्द जो ओठों को सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है ।
सीठा-वि॰ नीरस । फीका ।
सीठी-संज्ञा स्त्री॰ किसी फल, पत्ते आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ निकम्मा अंश ।
सीड़-संज्ञा स्त्री॰ तरी । नमी ।
सीढ़ी-संज्ञा स्त्री॰ ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिए एक के ऊपर एक बना हुआ पैर रखने का स्थान । ज़ीना ।
सीत॰†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "शीत" ।
सीतल॰-वि॰ दे॰ "शीतल" ।
सीतलपाटी-संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की बढ़िया चटाई ।
सीता-संज्ञा स्त्री॰ मिथिला के राजा जनक की कन्या जो श्रीरामचंद्रजी की पत्नी थीं । वैदेही ।
सीताध्यक्ष-संज्ञा पुं॰ वह राज-कर्मचारी जो राजा की निज की भूमि में खेती-बारी आदि का प्रबंध करता है ।
सीतापति-संज्ञा पुं॰ श्रीरामचंद्र ।
सीताफल-संज्ञा पुं॰ शरीफ़ा ।
सीत्कार-संज्ञा पुं॰ सिसकारी ।

सादापन–संज्ञा पुं० सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।
सादी–संज्ञा स्त्री० १. लाल की जाति की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २. सदिया।
संज्ञा पुं० १. शिकारी। २. योद्धा।
सादृश्य–संज्ञा पुं० १. समानता। एकरूपता। २. बराबरी। तुलना।
संज्ञा स्त्री० इच्छा।
साधक–संज्ञा पुं० १. साधना करनेवाला। २. योगी। तपस्वी। ३. वह जो किसी दूसरे के स्वार्थ-साधन में सहायक हो।
साधन–संज्ञा पुं० १. काम को सिद्ध करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २. सामग्री। उपकरण। ३. उपाय। ४. उपासना।
साधनहार॰–संज्ञा पुं० १. साधनेवाला। २. जो साधा जा सके।
साधना–संज्ञा स्त्री० १. कोई कार्य्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। सिद्धि। २. देवता आदि को सिद्ध करने के लिये उसकी उपासना। ३. दे० "साधन"।
क्रि० स० १. कोई कार्य्य सिद्ध करना। पूरा करना। २. निशाना लगाना। ३. अभ्यास करना। ४. वश में करना।
साधारण–वि० मामूली।
साधारणतः–अव्य० बहुधा। प्रायः।
साधित–वि० जो सिद्ध किया या साधा गया हो।
साधु–संज्ञा पुं० १. कुलीन। आर्य्य। २. धार्मिक पुरुष। महात्मा। संत। ३. भला आदमी। सज्जन।
वि० १. अच्छा। भला। २. सच्चा।
साधुता–संज्ञा स्त्री० १. साधु का भाव या धर्म्म। २. सज्जन भलमनसाहत।
साधुवाद–संज्ञा पुं० किसी के उत्तम कार्य्य करने पर "साधु सा कहकर उसकी प्रशंसा करना।
साधु साधु–अव्य० धन्य धन्य। वाह। बहुत खूब।
साधू–संज्ञा पुं० दे० "साधु"।
साधो–संज्ञा पुं० संत। साधु।
साध्य–वि० १. सिद्ध करने योग २. जो सिद्ध हो सके। ३. सह आसान।
संज्ञा पुं० १. देवता। २. न्या वह पदार्थ जिसका अनुमान कि जाय। ३. शक्ति। सामर्थ्य।
साध्वी–वि० स्त्री० १. पति (स्त्री) २. शुद्ध चरित्रवाली।
सानंद–वि० आनंद के साथ। पूर्वक।
सान–संज्ञा पुं० वह पत्थर जिस अस्त्र आदि तेज़ किए जाते हैं।
सानना†–क्रि० स० १. चूर्ण को तरल पदार्थ में मिलाकर करना। २. उत्तरदायी बनाना मिलाना।
सानी–संज्ञा स्त्री० वह भोजन जो में सानकर पशुओं को देते हैं
वि० १. दूसरा। द्वितीय। बरी का। मुकाबले का।
सानु–संज्ञा पुं० १. पर्वत शिखर। २. अंत। सिरा
सान्निध्य–संज्ञा पुं० १. २. एक प्रकार की मु
साप॰–संज्ञा पुं० दे०

सीथ–संज्ञा पुं० पके हुए अन्न का दाना।

सीदना–क्रि० अ० दुःख पाना।

सीध–संज्ञा स्त्री० वह लंबाई जो बिना इधर-उधर मुड़े एक-तार चली गई हो।

सीधा–वि० [स्त्री० सीधी] १. जो टेढ़ा न हो। २. सरल प्रकृति का। भोला-भाला। ३. आसान।

सीधापन–संज्ञा पुं० सीधा होने का भाव। सिधाई।

सीधे–क्रि० वि० बराबर सामने की ओर। सम्मुख।

सीना–क्रि० स० कपड़े, चमड़े आदि के दो टुकड़ों को सूई तागों से जोड़ना।
संज्ञा पुं० छाती। वक्षःस्थल।

सीनाबंद–संज्ञा पुं० अँगिया। चोली।

सीप–संज्ञा पुं० कड़े आवरण के भीतर रहनेवाला शंख, घोंघे आदि की जाति का एक जलजंतु।

सीपज–संज्ञा पुं० मोती।

सीपिज–संज्ञा पुं० मोती।

सीपी–संज्ञा स्त्री० दे० "सीप"।

सीमंत–संज्ञा पुं० १. स्त्रियों की माँग। २. हड्डियों का संधि-स्थान।

सीमंतिनी–संज्ञा स्त्री० स्त्री। नारी।

सीम–संज्ञा पुं० सीमा। हद।

सीमांत–संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो। सरहद।

सीमा–संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान। हद।

सीमाबद्ध–संज्ञा पुं० हद के भीतर किया हुआ।

सीमोल्लंघन–संज्ञा पुं० सीमा का उल्लंघन करना।

सीय–संज्ञा स्त्री० जानकी।

सीर–संज्ञा स्त्री० वह ज़मीन जिसे भू-स्वामी या ज़मींदार स्वयं जोतता आ रहा हो।
⊙†वि० ठंढा। शीतल।

सीरख⊙–संज्ञा पुं० दे० "शीर्ष"।

सीरध्वज–संज्ञा पुं० राजा जनक।

सीरनी–संज्ञा स्त्री० मिठाई।

सीरा–संज्ञा पुं० पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस।

सील–संज्ञा स्त्री० भूमि में जल की आर्द्रता। सीड़।
⊙† संज्ञा पुं० दे० "शील"।

सीला–संज्ञा पुं० अनाज के वे दाने जो खेत में से तपस्वी या गरीब चुनते हैं।

सीवन–संज्ञा पुं०, स्त्री० १. सीने का काम। २. सीने से पड़ी हुई लकीर।

सीस–संज्ञा पुं० सिर। माथा।

सीसक–संज्ञा पुं० सीसा (धातु)।

सीसताज–संज्ञा पुं० वह टोपी जो शिकारी जानवरों के सिर पर रहती और शिकार के समय खोली जाती है।

सीसफूल–संज्ञा पुं० सिर पर पहनने का फूल। (गहना)।

सीसमहल–संज्ञा पुं० वह मकान जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों।

सीसा–संज्ञा पुं० नीलापन लिए काले रंग की एक मूल धातु।

सीसी–संज्ञा स्त्री० शीत, पीड़ा या आनंद के समय मुँह से निकला हुआ शब्द।
⊙†संज्ञा स्त्री० दे० "शीशी"।

सीसौदिया–संज्ञा पुं० दे० "सिसोदिया"।

भ्रमर। १८. विष्णु का धनुष। १९. कपूर। २०. आकृष्ण। २१. चंद्रमा। २२. समुद्र। २३. पानी। २४. पाण। तीर। २५. दीपक। दीया। २६. मृग। २७. मेघ। २८. खंजन पक्षी। २९. मेंढक।

सारंगपाणि-संज्ञा पुं० विष्णु।

सारंगिया-संज्ञा पुं० सारंगी बजानेवाला।

सारंगी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध तारवाला बाजा।

सार-संज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ में का मूल या असली भाग। तत्त्व। २ निष्कर्ष। ३. रस। ४ जूआ खेलने का पासा। ५. तलवार।

†संज्ञा पुं० पत्नी का भाई। साला।

सारगर्भित-वि० जिसमें तत्त्व भरा हो।

सारथि-संज्ञा पुं० [भाव० सारथ्य] रथादि का चलानेवाला।

सारद०-संज्ञा स्त्री० सरस्वती।

संज्ञा पुं० शरद् ऋतु।

सारदा-संज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।

सारना-क्रि० स० पूर्ण करना। समाप्त करना।

सारभाटा-संज्ञा पुं० ज्वारभाटा का उलटा। समुद्र की वह बाढ़ जिसमें पानी पहले समुद्र के तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है।

सारमेय-संज्ञा पुं० [स्त्री० सारमेयी] १. सरमा की संतान। २ कुत्ता।

सारल्य-संज्ञा पुं० सरलता।

सारस-संज्ञा पुं० [स्त्री० सारसी] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध सुंदर पक्षी। २. हंस।

सारस्वत-संज्ञा पुं० १. दिल्ली के उत्तर पश्चिम प्रदेश के ब्राह्मण। २. एक प्रसिद्ध व्याकरण।

सारांश-संज्ञा पुं० १. खुलासा। संक्षेप। २. तात्पर्य।

सारा-वि० [स्त्री० सारी] समस्त। संपूर्ण।

सारि-संज्ञा पुं० १. पासा या चौपड़ खेलनेवाला। २. जूआ खेलने का पासा।

सारिका-संज्ञा स्त्री० मैना पक्षी।

सारिखा०†-वि० दे० "सरीखा"।

सारी-संज्ञा स्त्री० १. सारिका पक्षी। मैना। २. पासा।

संज्ञा पुं० अनुकरण करनेवाला।

सारूप्य-संज्ञा पुं० [भाव० सारूप्यता] १. एक प्रकार की मुक्ति जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। २ एकरूपता।

सारो०†-संज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

सार्थ-वि० अर्थ सहित।

सार्थक-वि० [भाव० सार्थकता] १. अर्थ सहित। २. सफल।

सार्दूल-संज्ञा पुं० दे० "शार्दूल"।

सार्द्ध-वि० जिसमें पूरे के साथ आधा भी मिला हो। डेवढ़ा।

सार्वकालिक-वि० जो सब कालों में हो।

सार्वजनिक, सार्वजनीन-वि० सब लोगों से संबंध रखनेवाला।

सार्वत्रिक-वि० सर्वत्र-व्यापी।

सार्वभौम-संज्ञा पुं० चक्रवर्ती राजा।

सार्वराष्ट्रीय-वि० जिसका संबंध अनेक राष्ट्रों से हो।

सु०†-प्रत्य० दे० "सो"।
सुँघनी-संज्ञा स्त्री० तंबाकू के पत्ते की बारीक बुकनी जो सूँघी जाती है।
सुँघाना-क्रि० स० आघ्राण कराना।
सुंड भुसुंड-संज्ञा पुं० हाथी जिसका अस्त्र सूँड़ है।
सुंडाल-संज्ञा पुं० हाथी।
सुंदर-वि० [स्त्री० सुंदरी] जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्।
सुंदरता-संज्ञा स्त्री० सुंदर होने का भाव।
सुंदरी-संज्ञा स्त्री० सुंदर स्त्री।
सु-उप० एक उपसर्ग जो संज्ञा के साथ लगकर श्रेष्ठ, सुंदर, बढ़िया आदि का अर्थ देता है।
सर्व० सो। वह।
सुअटा†-संज्ञा पुं० सुग्गा।
सुअन०-संज्ञा पुं० पुत्र। बेटा।
सुआ-संज्ञा पुं० दे० "सूआ"।
सुआर†-संज्ञा पुं० रसोइया।
सुआसिनी०†-संज्ञा स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री।
सुकंठ-वि० १. जिसका कंठ सुंदर हो। २. सुरीला।
संज्ञा पुं० सुग्रीव।
सुक-संज्ञा पुं० दे० "शुक"।
सुकनासा०-वि० जिसकी नाक शुक पक्षी की ठोर के समान सुंदर हो।
सुकर-वि० सहज।
सुकरता-संज्ञा स्त्री० सहज में होने का भाव।
सुकर्म-संज्ञा पुं० अच्छा काम।
सुकर्मी-वि० १. अच्छा काम करनेवाला। २. धार्मिक।
सुकाना०-क्रि० स० दे० "सुखाना"।
सुकाल-संज्ञा पुं० १. उत्तम समय। २. अकाल का उलटा।
सुकी-संज्ञा स्त्री० तोते की मादा। सुग्गी।
सुकुआर-वि० दे० "सुकुमार"।
सुकुति०†-संज्ञा स्त्री० सीप।
सुकुमार-वि० जिसके अंग बहुत कोमल हों। नाजुक।
संज्ञा पुं० कोमलांग बालक।
सुकुमारता-संज्ञा स्त्री० कोमलता।
सुकुमारी-वि० कोमल अंगोंवाली। कोमलांगी।
सुकुल-संज्ञा पुं० १. उत्तम कुल। २. दे० "शुक्र"।
सुकृत्-वि० १. उत्तम और शुभ कार्य्य करनेवाला। २ धार्म्मिक।
सुकृत-संज्ञा पुं० १. पुण्य। २. दान।
सुकृतात्मा-वि० धर्मात्मा।
सुकृति-संज्ञा स्त्री० [भाव० सुकृतित्व] शुभ कार्य्य।
सुकृती-वि० धार्म्मिक।
सुकृत्य-संज्ञा पुं० पुण्य। धर्मकार्य्य।
सुकेशी-संज्ञा स्त्री० उत्तम केशोंवाली स्त्री।
सुखंडी-संज्ञा स्त्री० बच्चों का एक रोग जिसमें शरीर सूख जाता है।
वि० बहुत दुबला-पतला।
सुख-संज्ञा पुं० वह अनुकूल और प्रिय वेदना जिसकी सबको अभिलाषा रहती है। आराम।
सुखकंद-वि० सुखद।
सुखकंदर-वि० सुख का घर।
सुखकर-वि० सुख देनेवाला।
सुखद-वि० सुख देनेवाला। सुखदायी।
सुखद-गीत-वि० प्रशंसनीय।

साल–संज्ञा स्त्री० १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। ३. दुःख। पीड़ा।
संज्ञा पुं० वर्ष। बरस।
सालक–वि० दुःख देनेवाला।
सालगिरह–संज्ञा स्त्री० बरस-गाँठ। जन्म-दिन।
सालग्रामी–संज्ञा स्त्री० गंडक नदी।
सालन–संज्ञा पुं० मांस, मछली या साग-सब्ज़ी की मसालेदार तरकारी।
सालना–क्रि० अ० १. दुःख देना। २. चुभना।
सालममिश्री–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का क्षुप जिसका कंद पौष्टिक होता है। वीरकंदा।
सालस–संज्ञा पुं० वह जो दो पक्षों के झगड़े का निपटारा करे। पंच।
सालसा–संज्ञा पुं० ख़ून साफ़ करने का एक प्रकार का अँगरेज़ी ढंग का काढ़ा।
सालसी–संज्ञा स्त्री० पंचायत।
साला–संज्ञा पुं० [स्त्री० साली] १. पत्नी का भाई। २. एक प्रकार की गाली।
संज्ञा स्त्री० दे० "शाला"।
सालाना–वि० वार्षिक।
सालिम–वि० संपूर्ण। पूरा।
सालियाना–वि० दे० "सालाना"।
सालु:‡–संज्ञा पुं० १. ईर्ष्या। २. कष्ट।
सालू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लाल कपड़ा। (मांगलिक)
सावंत–संज्ञा पुं० दे० "सामंत"।
साव–संज्ञा पुं० दे० "साहु"।
सावकाश–संज्ञा पुं० अवकाश। फ़ुर्सत।
सावज–संज्ञा पुं० वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाय।
सावधान–वि० सचेत। होशियार।
सावधानता–संज्ञा स्त्री० सतर्कता।
सावन–संज्ञा पुं० आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना।
सावनी–वि० सावन संबंधी। सावन का।
सावर–संज्ञा पुं० शिव-कृत एक प्रसिद्ध तंत्र।
सावित्र–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. यज्ञोपवीत।
सावित्री–संज्ञा स्त्री० १. मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और सत्यवान् की सती पत्नी। २. सधवा स्त्री।
साष्टांग–वि० आठों अंग सहित।
सास–संज्ञा स्त्री० पति या पत्नी की माँ।
सासा:‡–संज्ञा पुं०, स्त्री० दे० "श्वास" या "साँस"।
सासुर‡–संज्ञा पुं० १. ससुर। २. ससुराल।
साह–संज्ञा पुं० १. भला आदमी। २. व्यापारी।
साहचर्य–संज्ञा पुं० संग। साथ।
साहनी–संज्ञा स्त्री० सेना। फ़ौज।
साहब–संज्ञा पुं० [स्त्री० साहिबा] १. एक सम्मानसूचक शब्द। महाशय। २. गोरी जाति का कोई व्यक्ति।
साहबज़ादा–संज्ञा पुं० [स्त्री० साहबज़ादी] पुत्र। बेटा।
साहब-सलामत–संज्ञा स्त्री० परस्पर अभिवादन। बंदगी।
साहबी–संज्ञा स्त्री० मालिकपन। बड़प्पन।
साहस–संज्ञा पुं० हिम्मत। हियाव।
साहसिक–संज्ञा पुं० डाकू। चोर।
साहसी–वि० वह जो साहस करता

वि० जो देखने में सुंदर हो। मनोरम।
सुदामा–संज्ञा पुं० एक दरिद्र ब्राह्मण जिन पर कृष्ण ने कृपा की थी।
सुदिन–संज्ञा पुं० शुभ दिन।
सुदी–संज्ञा स्त्री० किसी मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष।
सुदीपति–संज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति"।
सुदीप्ति–संज्ञा स्त्री० बहुत अधिक प्रकाश।
सुदूर–वि० बहुत दूर।
सुदृढ़–वि० बहुत दृढ़। खूब मज़बूत।
सुदेश–संज्ञा पुं० १. सुंदर देश। २. उपयुक्त स्थान।
वि० सुंदर। खूबसूरत।
सुदेह–वि० सुंदर। कमनीय।
सुद्ध–वि० दे० "शुद्ध"।
सुद्धां–अव्य० सहित। समेत।
सुद्धि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।
सुध–संज्ञा स्त्री० स्मृति। याद। चेत।
सुधरना–क्रि० अ० बिगड़े हुए का बनना।
सुधराई–संज्ञा स्त्री० सुधरने की क्रिया।
सुधर्म–संज्ञा पुं० उत्तम धर्म। पुण्य कर्तव्य।
सुधर्मी–वि० धर्मनिष्ठ।
सुधवाना–क्रि० स० दोष या त्रुटि दूर कराना। शोधन कराना।
सुधांशु–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सुधा–संज्ञा स्त्री० अमृत। पीयूष।
सुधाई–संज्ञा स्त्री० सीधापन। सरलता।
सुधाकर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सुधाघट–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सुधाधर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सुधाधार–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सुधाधी–वि० सुधा के समान।
सुधानिधि–संज्ञा पुं० १. चंद्रमा। २. समुद्र।
सुधापाणि–संज्ञा पुं० धन्वंतरि।
सुधार–संज्ञा पुं० सुधारने की क्रिया या भाव। संशोधन।
सुधारक–संज्ञा पुं० १. वह जो दोषों या त्रुटियों का सुधार करता हो। २. वह जो धार्मिक, या सामाजिक सुधार के लिये प्रयत्न करता हो।
सुधारना–क्रि० स० दोष या बुराई दूर करना। संशोधन करना।
सुधि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।
सुधी–संज्ञा पुं० विद्वान्। पंडित।
वि० बुद्धिमान्।
सुन-गुन–संज्ञा स्त्री० १. भेद। टोह। २. कानाफूसी।
सुनत, सुनति–संज्ञा स्त्री० दे० "सुन्नत"।
सुनना–क्रि० स० कानों के द्वारा शब्द का ज्ञान प्राप्त करना।
सुनहरी–संज्ञा स्त्री० फ़ीलपा। (रोग)
सुनय–संज्ञा पुं० उत्तम नीति।
सुनवाई–संज्ञा स्त्री० सुनने की क्रिया या भाव।
सुनवैया–वि० १. सुननेवाला। २. सुनानेवाला।
सुनसान–वि० १. जहाँ कोई न हो। निर्जन। २. उजाड़।
संज्ञा पुं० सन्नाटा।
सुनहरा–वि० दे० "सुनहला"।
सुनहला–वि० सोने के रंग का।
सुनाना–क्रि० स० १. दूसरे को सुनने में प्रवृत्त करना। २. खरी-खोटी कहना।

सुनाम-संज्ञा पुं० यश। कीर्त्ति।
सुनार-संज्ञा पुं० सोने, चाँदी के गहने आदि बनानेवाली जाति। स्वर्णकार।
सुनारी-संज्ञा स्त्री० १ सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री।
सुनीति-संज्ञा स्त्री० उत्तम नीति।
सुनैया-वि० सुननेवाला।
सुन्न-वि० निर्जीव। स्पंदन-हीन। निःस्तब्ध।
संज्ञा पुं० शून्य। सिफ़र।
सुन्नत-संज्ञा स्त्री० खतना। मुसलमानी।
सुन्ना-संज्ञा पुं० बिंदी। सिफ़र।
सुन्नी-संज्ञा पुं० मुसलमानों का एक भेद जो चारों खलीफ़ाओं को प्रधान मानता है।
सुपक्व-वि० अच्छी तरह पका हुआ।
सुपच-संज्ञा पुं० चांडाल। डोम।
सुपथ-संज्ञा पुं० उत्तम पथ। सदाचरण।
वि० समतल। हमवार।
सुपन, सुपना-संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।
सुपर्ण-संज्ञा पुं० १. गरुड़। २. पक्षी।
सुपर्णी-संज्ञा स्त्री० १. गरुड़ की माता। २. कमलिनी।
सुपात्र-संज्ञा पुं० वह जो किसी कार्य्य के लिये योग्य या उपयुक्त हो।
सुपारी-संज्ञा स्त्री० नारियल की जाति का एक पेड़। इसके फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं। पूग।
सुपार्श्व-संज्ञा पुं० जैनियों के २४ तीर्थंकरों में से सातवें तीर्थंकर।
सुपास-संज्ञा पुं० सुख। आराम।
सुपुर्द-संज्ञा पुं० दे० "सपुर्द"।
सुपूत-संज्ञा पुं० दे० "सपूत"।
सुपूती-संज्ञा स्त्री० सुपूत होने का भाव।
सुपेती-संज्ञा स्त्री० दे० "सफ़ेदी"।
सुपेद†-वि० दे० "सफ़ेद"।
सुपेदी†-संज्ञा स्त्री० १. सफ़ेदी। २. उज्ज्वलता।
सुपेली-संज्ञा स्त्री० छोटा सूप।
सुप्त-वि० सोया हुआ। निद्रित।
सुप्ति-संज्ञा स्त्री० निद्रा। नींद।
सुप्रज्ञ-वि० बहुत बुद्धिमान्।
सुप्रसिद्ध-वि० बहुत प्रसिद्ध।
सुबह-संज्ञा स्त्री० प्रातःकाल। सबेरा।
सुबहान अल्ला-अव्य० अरबी का एक पद जिसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।
सुबास-संज्ञा स्त्री० अच्छी महक। सुगंध।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।
सुबासना-संज्ञा स्त्री० ख़ुशबू।
क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।
सुबासिक-वि० सुगंधित।
सुबिस्ता, सबीता-संज्ञा पुं० दे० "सुभीता"।
सुबुक-वि० १. हलका। २. सुंदर। ख़ूबसूरत।
सुबुद्धि-संज्ञा स्त्री० उत्तम बुद्धि। अच्छी अक़्ल।
सुबू-संज्ञा पुं० दे० "सुबह"।
सुबूत-संज्ञा पुं० १. दे० "सबूत"। २. वह जिससे कोई बात साबित हो। प्रमाण।
सुबोध-वि० जो कोई बात सहज में समझ सके।
सुब्रह्मण्य-संज्ञा पुं० १. शिव। २.

सूतक–संज्ञा पुं० १. जन्म। २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है।

सूतकी–वि० परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतना†–क्रि० अ० दे० "सोना"।

सूतपुत्र–संज्ञा पुं० १. सारथि। २. कर्ण।

सूता–संज्ञा पुं० तंतु। सूत।

सूति–संज्ञा स्त्री० १. जन्म। २. प्रसव। जनन।

सूतिका–संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। जच्चा।

सूतिकागार, सूतिकागृह–संज्ञा पुं० सौरी। प्रसव-गृह।

सूती–संज्ञा स्त्री० सीपी।

सूत्र–संज्ञा पुं० १. सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे।

सूत्रकार–संज्ञा पुं० १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा।

सूत्रग्रंथ–संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो; जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रधार–संज्ञा पुं० नाट्यशाला का व्यवस्थापक।

सूत्रपात–संज्ञा पुं० प्रारंभ। शुरू।

सूथनी–संज्ञा स्त्री० पायजामा।

सूद–संज्ञा पुं० १. लाभ। २. ब्याज।

सूदन–वि० विनाश करनेवाला।

सूधा–वि० दे० "सीधा"।

सूधे–क्रि० वि० सीधे से।

सून–संज्ञा पुं० १. प्रसव। जनन। २. कली। कलिका। ३. फूल। ४. पुत्र।

†संज्ञा पुं० वि० दे० "शून्य"।

सूना–वि० सुनसान।

संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

संज्ञा स्त्री० पुत्री। बेटी।

सूनापन–संज्ञा पुं० सन्नाटा।

सूनु–संज्ञा पुं० पुत्र। संतान।

सूप–संज्ञा पुं० रसोइया।

संज्ञा पुं० अनाज फटकने का सरई या सींक का छाज।

सूपकार–संज्ञा पुं० रसोइया। पाचक।

सूपनखा–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूपशास्त्र–संज्ञा पुं० पाकशास्त्र।

सूफ–संज्ञा पुं० पशम। ऊन।

सूफी–संज्ञा पुं० मुसलमानों का एक धार्मिक उदार संप्रदाय।

सूबा–संज्ञा पुं० किसी देश का कोई भाग। प्रांत।

सूबेदार–संज्ञा पुं० १. किसी सूबे या प्रांत का शासक। २. एक छोटा फौजी ओहदा।

सूबेदारी–संज्ञा स्त्री० सूबेदार का ओहदा या पद।

सूम–वि० कंजूस।

सूर–संज्ञा पुं० अंधा।

संज्ञा पुं० वीर। बहादुर।

संज्ञा पुं० दे० "शूल"।

सूरकुमार–संज्ञा पुं० वसुदेव।

सूरज–संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. दे० "सूरदास"।

विष्णु।
सुभग-वि० १. सुंदर। मनोहर। २ सुखद।
सुभगा-वि० १. सुंदरी। खूबसूरत (स्त्री)। २. (स्त्री) सौभाग्यवती।
सुभट-संज्ञा पु० भारी योद्धा।
सुभद्र-संज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण के एक पुत्र। २. सौभाग्य। ३. कल्याण। मंगल।
वि० १. भाग्यवान्। २. सज्जन।
सुभद्रा-संज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी।
सुभाइ, सुभाउ॰†-संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।
क्रि० वि० सहज भाव से।
सुभाग॰†-संज्ञा पुं० दे० "सौभाग्य"।
सुभागी-वि० भाग्यवान्।
सुभाय॰†-संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।
सुभाव॰†-संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।
सुभाषित-वि० सुंदर रूप से कहा हुआ। अच्छी तरह कहा हुआ।
सुभाषी-वि० उत्तम रूप से बोलनेवाला। मिष्टभाषी।
सुभिक्ष-संज्ञा पुं० ऐसा समय जिसमें अन्न खूब हो। सुकाल।
सुभीता-संज्ञा पुं० १. सुगमता। सहूलियत। २. सुअवसर।
सुभ्र-वि० दे० "शुभ्र"।
सुमंत-संज्ञा पुं० दे० "सुमंत्र"।
सुमंत्र-संज्ञा पुं० राजा दशरथ का मंत्री और सारथि।
सुम-संज्ञा पुं० घोड़े या दूसरे चौपायों के खुर। टाप।
सुमति-संज्ञा स्त्री० १. सुंदर मति। अच्छी बुद्धि। २ मेल-जोल।
वि० अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।
सुमन-संज्ञा पुं० पुष्प। फूल।
सुमनचाप-संज्ञा पुं० कामदेव।
सुमनस-संज्ञा पुं० १. देवता। २. पुष्प।
सुमरन॰-संज्ञा पुं० दे० "स्मरण"।
सुमरना॰†-क्रि० स० स्मरण करना। ध्यान करना।
सुमरनी-संज्ञा स्त्री० नाम जपने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।
सुमार्ग-संज्ञा पुं० उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता।
सुमाली-संज्ञा पुं० एक राक्षस, जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण हुए थे।
सुमित्रा-संज्ञा स्त्री० दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थीं।
सुमिरनी-संज्ञा स्त्री० दे० "सुमरनी"।
सुमुख-वि० १. सुंदर मुखवाला। २. प्रसन्न।
सुमुखी-संज्ञा स्त्री० सुंदर मुखवाली स्त्री।
सुमृत, सुमृति॰-संज्ञा स्त्री० दे० "स्मृति"।
सुमेधा-वि० बुद्धिमान्।
सुमेर-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
सुमेरु-संज्ञा पु० १. एक पुराणोक्त पर्वत जो सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। २. जप-माला के बीच का बड़ा और ऊपरवाला दाना।
वि० बहुत ऊँचा।
सुमेरुवृत्त-संज्ञा पुं० वह रेखा जो

सूरजमुखी–संज्ञा पुं० एक प्रकार का पौधा जिसका पीले रंग का फूल दिन के समय ऊपर की ओर रहता और सूर्यास्त के बाद झुक जाता है।
सूरजसुत–संज्ञा पुं० सुग्रीव।
सूरजसुता–संज्ञा स्त्री० दे० "सूर्यसुता"।
सूरत–संज्ञा स्त्री० रूप। आकृति। शक्ल।
सूरता, सूरताई*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूरता"।
सूरति–संज्ञा स्त्री० १. दे० "सूरत"। २. सुध। स्मरण।
सूरदास–संज्ञा पुं० उत्तर भारत के एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे। ये हिंदी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं।
सूरन–संज्ञा पुं० एक प्रकार का कंद। ज़मींकंद। ओल।
सूपनखा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
सूरपुत्र–संज्ञा पुं० सुग्रीव।
सूरमा–संज्ञा पुं० योद्धा। वीर।
सूरमापन–संज्ञा पुं० वीरत्व। शूरता।
सूरमुखी मनि†–संज्ञा पुं० दे० "सूर्यकांतमणि"।
सूरवाँ†–संज्ञा पुं० दे० "सूरमा"।
सूर-सावंत–संज्ञा पुं० १. युद्धमंत्री। २. नायक। सरदार।
सूरसुत–संज्ञा पुं० शनि ग्रह।
सूरसुता–संज्ञा स्त्री० यमुना।
सूरसेन*–संज्ञा पुं० दे० "शूरसेन"।
सूरसेनपुर*–संज्ञा पुं० दे० "मथुरा"।
सूराख़–संज्ञा पुं० छेद। छिद्र।
सूरि–संज्ञा पुं० १. यज्ञ करानेवाला। ऋत्विज्। २. पंडित। ३. कृष्ण का एक नाम।
सूर्पनखा*–संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।
सूर्य–संज्ञा पुं० सूरज। आफ़ताब।
सूर्यकांत–संज्ञा पुं० एक प्रकार का स्फटिक या बिल्लौर।
सूर्यग्रहण–संज्ञा पुं० सूर्य का ग्रहण या चंद्रमा की छाया में आना।
सूर्यतनया–संज्ञा स्त्री० यमुना।
सूर्यपुत्र–संज्ञा पुं० १. शनि। २. सुग्रीव। ३. कर्ण।
सूर्यपुत्री–संज्ञा स्त्री० यमुना।
सूर्यप्रभ–वि० सूर्य के समान दीप्तिमान्
सूर्यमणि–संज्ञा पुं० दे० "सूर्यकांत मणि"।
सूर्यमुखी–संज्ञा पुं० दे० "सूरजमुखी"।
सूर्यवंश–संज्ञा पुं० क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान कुलों में से एक।
सूर्यवंशी–वि० सूर्यवंश का। जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो।
सूर्यसंक्रांति–संज्ञा स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।
सूर्यसुत–संज्ञा पुं० दे० "सूर्यपुत्र"।
सूर्या–संज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी संज्ञा।
सूर्यावर्त–संज्ञा पुं० १. हुलहुल का पौधा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आधासीसी।
सूर्यास्त–संज्ञा पुं० १. सूर्य का छिपना या डूबना। २. सायंकाल।
सूर्योदय–संज्ञा पुं० १. सूर्य का उदय या निकलना। २. प्रातःकाल।

उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।
सुयश–संज्ञा पुं० अच्छी कीर्ति। सुख्याति। वि० यशस्वी। कीर्तिमान्।
सुयोग–संज्ञा पुं० सुंदर योग। संयोग।
सुयोधन–संज्ञा पुं० दे० "दुर्योधन"।
सुरंग–संज्ञा स्त्री० १. ज़मीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २ किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३. सेंध।
सुर–संज्ञा पुं० १. देवता। २. स्वर। ध्वनि।
सुरकना–क्रि० स० हवा के साथ ऊपर की ओर धीरे धीरे खींचना।
सुरकरी–संज्ञा पुं० देवताओं का हाथी।
सुरकेतु–संज्ञा पुं० देवताओं या इंद्र की ध्वजा।
सुरक्षित–वि० जिसकी भली भाँति रक्षा की गई हो।
सुरख, सुरखा–वि० दे० "सुर्ख"।
सुरखाब–संज्ञा पुं० चकवा।
सुरखी–संज्ञा स्त्री० १. ईंटों का महीन चूरा जो इमारत बनाने के काम में आता है। २. दे० "सुर्खी"।
सुरखुरु–वि० दे० "सुर्खरू"।
सुरगिरि–संज्ञा पुं० सुमेरु।
सुरगुरु–संज्ञा पुं० बृहस्पति।
सुरगैया–संज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।
सुरचाप–संज्ञा पुं० इंद्रधनुष।
सुरजन–संज्ञा पुं० देव-समूह।
सुरझना–क्रि० अ० दे० "सुलझना"।

सुरझाना–क्रि० स० दे० "सुलझाना"।
सुरत–संज्ञा पुं० संभोग। संज्ञा स्त्री० ध्यान।
सुरतरंगिणी–संज्ञा स्त्री० गंगा।
सुरतरु–संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।
सुरति–संज्ञा स्त्री० १. कामकेलि। २. स्मरण। सुधि। ३. दे० "सूरत"।
सुरतिवंत–वि० कामातुर।
सुरती–संज्ञा स्त्री० तंबाकू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ या यों ही खाया जाता है। खैनी।
सुरत्राता–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. इंद्र।
सुरदार–वि० जिसके गले का स्वर सुंदर हो। सुस्वर।
सुरदीर्घिका–संज्ञा स्त्री० आकाश-गंगा।
सुरद्रुम–संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।
सुरधाम–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
सुरधुनी–संज्ञा स्त्री० गंगा।
सुरधेनु–संज्ञा स्त्री० कामधेनु।
सुरनदी–संज्ञा स्त्री० १. गंगा। २. आकाश-गंगा।
सुरनारी–संज्ञा स्त्री० देववधू।
सुरनिलय–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
सुरपति–संज्ञा पुं० १. इंद्र। २. विष्णु।
सुरपथ–संज्ञा पुं० आकाश।
सुरपुर–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
सुरबहार–संज्ञा पुं० सितार की तरह का एक बाजा।
सुरबाला–संज्ञा स्त्री० देवांगना।
सुरबेल–संज्ञा स्त्री० कल्पलता।
सुरभवन–संज्ञा पुं० १. मंदिर। २.

सूल-संज्ञा पुं० १. भाला । २. दर्द । पीड़ा ।
सूलना-क्रि० स० १. भाले से छेदना । २. पीड़ित करना ।
सूलपानि॰-संज्ञा पुं० दे० "शूल-पाणि" ।
सूली-संज्ञा स्त्री० १. प्राणदंड देने की एक प्राचीन प्रथा जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके ऊपर मुँगरा मारा जाता था । २. फाँसी । ॰ संज्ञा पुं० महादेव ।
सूस-संज्ञा पुं० मगर की तरह का एक बड़ा जलजंतु । सूँइस ।
सूसि॰†-संज्ञा पुं० दे० "सूस" ।
सृंखला॰-संज्ञा स्त्री० दे० "शृंखला" ।
सृंग॰-संज्ञा पुं० दे० "शृंग" ।
सृंगवेरपुर॰-संज्ञा पुं० दे० "शृंग-वेरपुर" ।
सृंगी-संज्ञा पुं० दे० "शृंगी" ।
सृक-संज्ञा पुं० १. शूल । २. बाण ।
सृजक॰-संज्ञा पुं० सृष्टि करनेवाला । उत्पन्न करनेवाला ।
सृजन॰-संज्ञा पुं० सृष्टि करने की क्रिया । उत्पादन ।
सृजनहार॰-संज्ञा पुं० सृष्टिकर्त्ता ।
सृष्ट-वि० उत्पन्न । पैदा ।
सृष्टि-संज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति । पैदा-इश । २. निर्माण । रचना । ३. दुनिया की पैदाइश । ४. संसार ।
सृष्टिकर्त्ता-संज्ञा पुं० ईश्वर ।
सृष्टिविज्ञान-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार हो ।
सेंक-संज्ञा स्त्री० सेंकने की क्रिया या भाव ।
सेंकना-क्रि० स० १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना । २. आँच के द्वारा गरमी पहुँचाना ।
सेंगर-संज्ञा पुं० १. एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है । २. एक प्रकार का अगहनी धान । ३. क्षत्रियों की एक जाति ।
सेंत-संज्ञा स्त्री० कुछ खर्च न होना ।
सेंत-मेंत-क्रि० वि० १. बिना दाम दिए । मुफ्त में । २. व्यर्थ ।
सेंदुर॰†-संज्ञा पुं० ईंगुर की बुकनी । सिंदूर ।
सेंदुरिया-संज्ञा पुं० एक सदाबहार पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं । वि० सिंदूर के रंग का । खूब लाल ।
सेंध-संज्ञा स्त्री० चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद । सुरंग ।
सेंधा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का खनिज नमक । सैंधव ।
सेंधिया-वि० दीवार में सेंध लगा-कर चोरी करनेवाला । संज्ञा पुं० ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजवंश की उपाधि ।
सेंधुर†-संज्ञा पुं० दे० "सेंदुर" ।
सेंवई-संज्ञा स्त्री० मैदे के सुखाए हुए सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं ।
सेंवर॰†-संज्ञा पुं० दे० "सेमल" ।
सेंहुड़-संज्ञा पुं० दे० "थूहर" ।
से-प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न ।
सेउ॰†-संज्ञा पुं० दे० "सेब" ।
सेख॰-संज्ञा पुं० १. दे० "शेष" । २. दे० "शेख" ।

सुरपुरी। अमरावती।
सुरभान-संज्ञा पुं० सूर्य।
सुरभि-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. गौ। ३. सुगंधि।
सुरभित-वि० सुगंधित।
सुरभी-संज्ञा स्त्री० गाय।
सुरभोग-संज्ञा पुं० अमृत।
सुरमंडल-संज्ञा पुं० १. देवताओं का मंडल। २. एक प्रकार का बाजा।
सुरमई-वि० सुरमे के रंग का। हलका नीला।
संज्ञा पुं० एक प्रकार का हलका नीला रंग।
सुरमणि-संज्ञा पुं० चिंतामणि।
सुरमा-संज्ञा पुं० नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण स्त्रियाँ आँखों में लगाती हैं।
सुरमादानी-संज्ञा स्त्री० वह शीशी-नुमा पात्र जिसमें सुरमा रखते हैं।
सुरम्य-वि० अत्यंत मनोरम। सुंदर।
सुरराज-संज्ञा पुं० इंद्र।
सुररिपु-संज्ञा पुं० असुर। राक्षस।
सुरश्रेष्ठ-संज्ञा पुं० १. देवताओं में श्रेष्ठ। २. विष्णु। ३ इंद्र।
सुरस-वि० स्वादिष्ट। मधुर।
सुरसती⊙†-संज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।
सुरसर-संज्ञा पुं० मानसरोवर।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।
सुरसरसुता-संज्ञा स्त्री० सरयू नदी।
सुरसरि, सुरसरी-संज्ञा स्त्री० १. गंगा। २. गोदावरी।
सुरसरिता-संज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।
सुरसा-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध नाग-माता जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था।
सुरसाईं-संज्ञा पुं० इंद्र।
सुरसालु-वि० देवताओं को सताने-वाला।
सुरसुंदरी-संज्ञा स्त्री० अप्सरा।
सुरसुंभी-संज्ञा स्त्री० कामधेनु।
सुरसुराना-क्रि० अ० १. कीड़ों आदि का रेंगना। २. खुजली होना।
सुरही†-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जूआ खेलते हैं। २. इन कौड़ियों से होनेवाला जूआ।
सुरांगना-संज्ञा स्त्री० १. देवपत्नी। २. अप्सरा।
सुरा-संज्ञा स्त्री० मदिरा। शराब।
सुराई⊙-संज्ञा स्त्री० वीरता। बहा-दुरी।
सुराख-संज्ञा पुं० छेद।
सुराग-संज्ञा पुं० १. सुंदर राग। २. टोह। पता।
सुरागाय-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दो-नस्ली गाय जिसकी पूँछ से चँवर बनता है।
सुराज-संज्ञा पुं० १. दे० "सुराज्य"। २. दे० "स्वराज्य"।
सुराज्य-संज्ञा पुं० १ वह राज्य या शासन जिसमें सुख और शांति विरा-जती हो। २. दे० "स्वराज्य"।
सुराधिप-संज्ञा पुं० इंद्र।
सुरानीक-संज्ञा पुं० देवताओं की सेना।
सुरापगा-संज्ञा स्त्री० गंगा।
सुरारि-संज्ञा पुं० राक्षस। असुर।
सुरालय-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. सुमेरु।

सेखर॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "शेखर"।
सेज-संज्ञा स्त्री॰ शय्या। पलंग।
सेजपाल-संज्ञा पुं॰ राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। शयनागार-रक्षक।
सेजरिया॰†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सेज"।
सेज्या॰-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "शय्या"।
सेठ-संज्ञा पुं॰ १. बड़ा साहूकार। महाजन। कोठीवाल। २. मालदार आदमी।
सेतदुति॰-संज्ञा पुं॰ चंद्रमा।
सेतिका-संज्ञा स्त्री॰ अयोध्या।
सेतु-संज्ञा पुं॰ १. बाँध। २. नदी आदि के आर-पार जाने का रास्ता।
सेतुबंध-संज्ञा पुं॰ १. पुल की बँधाई। २ वह पुल जो लंका पर चढ़ाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर बँधवाया था।
सेतुवा†-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सूस"।
सेद॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "स्वेद"।
सेदज॰-वि॰ दे॰ "स्वेदज"।
सेन-संज्ञा पुं॰ १. एक भक्त नाई। २. बाज़ पक्षी।
॰ संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सेना"।
सेनजित्-वि॰ सेना को जीतनेवाला। संज्ञा पुं॰ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।
सेनप, सेनपति॰-संज्ञा पुं॰ दे॰ "सेनापति"।
सेनवंश-संज्ञा पुं॰ बंगाल का एक हिंदू राजवंश जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक राज्य किया था।
सेना-संज्ञा स्त्री॰ युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए मनुष्यों का बड़ा समूह। फौज। पलटन।
क्रि॰ स॰ सेवा करना। ख़िदमत करना।
सेनानी-संज्ञा पुं॰ १. सेनापति। २. कार्त्तिकेय।
सेनापति-संज्ञा पुं॰ १. सेना का नायक। फौज का अफ़सर। २. कार्त्तिकेय।
सेनामुख-संज्ञा पुं॰ सेना का अग्रभाग।
सेनावास-संज्ञा पुं॰ वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी।
सेनाव्यूह-संज्ञा पुं॰ युद्ध के समय भिन्न भिन्न स्थानों पर की हुई सेना के भिन्न भिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य-विन्यास।
सेनी-संज्ञा स्त्री॰ १. तश्तरी। २. सीढ़ी।
सेब-संज्ञा पुं॰ नाशपाती की जाति का, मझोले आकार का, एक पेड़ जिसका फल मेवों में गिना जाता है।
सेम-संज्ञा स्त्री॰ एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेमई॰†-संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "सेवई"।
सेमल-संज्ञा पुं॰ एक बहुत बड़ा पेड़ जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं और जिसके फलों में केवल रूई होती है।
सेर-संज्ञा पुं॰ १. सोलह छटाँक या अस्सी तोले की एक तौल। २. एक प्रकार का धान। ३. दे॰ "शेर"।
सेरसाहि-संज्ञा पुं॰ दिल्ली का बादशाह शेरशाह।
सेराना॰†-क्रि॰ अ॰ ठंडा होना। क्रि॰ स॰ मूर्त्ति आदि जल में प्रवाह करना।

सुरावती-संज्ञा स्त्री० कश्यप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति।
सुराष्ट्र-संज्ञा पुं० एक प्राचीन देश। किसी के मत से यह सूरत और किसी के मत से काठियावाड़ है।
सुरासुर-संज्ञा पुं० सुर और असुर। देवता और दानव।
सुराही-संज्ञा स्त्री० जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध पात्र।
सुराहीदार-वि० सुराही की तरह का गोल और लंबोतरा।
सुरी-संज्ञा स्त्री० देवांगना।
सुरीला-वि० मीठे सुरवाला। सुस्वर। सुकंठ।
सुरुख-वि० १. अनुकूल। २. दे० "सुर्ख"।
सुरुजमुखी†-संज्ञा पुं० दे० "सूर्य-मुखी"।
सुरूप-वि० सुंदर रूपवाला।
सुरूपता-संज्ञा स्त्री० सुंदरता।
सुरूपा-वि० स्त्री० सुंदरी।
सुरेंद्र-संज्ञा पुं० इंद्र।
सुरेंद्रचाप-संज्ञा पुं० इंद्रधनुप।
सुरेश-संज्ञा पुं० सूँस। शिंशुमार।
सुरेश्वरी-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।
सुरैत-संज्ञा स्त्री० रखेली। उपपत्नी।
सुरैतिन-संज्ञा स्त्री० रखेली।
सुर्ख-वि० रक्त वर्ण का। लाल।
सुर्खरू-वि० १. तेजस्वी। २. सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।
सुर्खी-संज्ञा स्त्री० लाली। अरुणता।
सुलक्षण-वि० १. अच्छे लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्।
संज्ञा पुं० शुभ लक्षण। शुभ चिह्न।
सुलक्षणा-वि० स्त्री० अच्छे लक्षणोंवाली।
सुलगना-क्रि० अ० (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना।
सुलगाना-क्रि० स० जलाना। प्रज्वलित करना।
सुलच्छन-वि० दे० "सुलक्षण"।
सुलच्छनी-वि० दे० "सुलक्षणा"।
सुलछ-वि० सुंदर।
सुलझन-संज्ञा स्त्री० सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव।
सुलझना-क्रि० अ० उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना।
सुलझाना-क्रि० स० उलझन या गुत्थी खोलना। जटिलताओं को दूर करना।
सुलझाव-संज्ञा पुं० दे० "सुलझन"।
सुलतान-संज्ञा पुं० बादशाह।
सुलतानी-संज्ञा स्त्री० १. बादशाहत। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। वि० लाल रंग का।
सुलप*-वि० दे० "स्वल्प"।
सुलफ-वि० १. लचीला। २. नाजुक। कोमल।
सुलफा-संज्ञा पुं० १. वह तमाकू जो चिलम में बिना तवा रखे भरकर पिया जाता है। २. चरस।
सुलफेबाज़-वि० गाँजा या चरस पीनेवाला।
सुलभ-वि० १ सहज में मिलनेवाला। २. सहज।
सुलह-संज्ञा स्त्री० मेल। मिलाप।
सुलहनामा-संज्ञा पुं० वह कागज़ जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें

सेल-संज्ञा पुं० बरछा। भाला।
सेलखड़ी-संज्ञा स्त्री० दे० "खड़िया"।
सेलना-क्रि० अ० मर जाना।
सेला-संज्ञा पुं० रेशमी चादर।
सेली-संज्ञा स्त्री० १. छोटा भाला। २. छोटा दुपट्टा।
सेल्हा†-संज्ञा पुं० दे० "सेला"।
सेवई-संज्ञा स्त्री० गुँधे हुए मैदे के सूत के से लच्छे जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।
सेवँर⊙†-संज्ञा पुं० दे० "सेमल"।
सेव-संज्ञा पुं० सूत या डोरी के रूप में बेसन का एक पकवान।
⊙ संज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।
संज्ञा पुं० दे० "सेब"।
सेवक-संज्ञा पुं० १. सेवा करनेवाला। नौकर। २. भक्त।
सेवकाई-संज्ञा स्त्री० सेवा। टहल।
सेवड़ा-संज्ञा पुं० १. जैन साधुओं का एक भेद। २. मदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।
सेवती-संज्ञा स्त्री० सफेद गुलाब।
सेवन-संज्ञा पुं० १. परिचर्या। खिद-मत। २. नियमित व्यवहार।
सेवनीय-वि० १. सेवा योग्य। २. व्यवहार के योग्य।
सेवरा⊙†-संज्ञा पुं० दे० "सेवड़ा"।
सेवरी⊙†-संज्ञा स्त्री० दे० "शबरी"।
सेवा-संज्ञा स्त्री० दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। खिदमत। परि-चर्या।
सेवा-टहल-संज्ञा स्त्री० परिचर्या। सेवा शुश्रूषा।
सेवा-बंदगी-संज्ञा स्त्री० आराधना। पूजा।
सेवार, सेवाल-संज्ञा स्त्री० पानी में फैलनेवाली एक घास।
सेवावृत्ति-संज्ञा स्त्री० नौकरी। चाकरी की जीविका।
सेविका-संज्ञा स्त्री० सेवा करनेवाली। दासी। नौकरानी।
सेवित-वि० १. जिसकी सेवा की गई हो। २. जिसका प्रयोग किया गया हो। व्यवहृत।
सेवी-वि० १. सेवा करनेवाला। २. संभोग करनेवाला।
सेव्य-वि० १ जिसकी सेवा करना उचित हो। २ जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। ३. काम में लाने लायक।
सेव्य-सेवक-संज्ञा पुं० स्वामी और सेवक।
सेष⊙-संज्ञा पुं० १. दे० "शेष"। २. दे० "शेख"।
सेस⊙-संज्ञा पुं०, वि० दे० "शेष"।
सेसनाग⊙†-संज्ञा पुं० दे० "शेषनाग"।
सेहत-संज्ञा स्त्री० १. सुख। चैन। २ रोग से छुटकारा।
सेहतखाना-संज्ञा पुं० पाखाने-पेशाब आदि की कोठरी।
सेहरा-संज्ञा पुं० १. फूल की या तार और गोटों की घनी मालाओं की पंक्ति जो दूल्हे के मौर के नीचे रहती है। २. विवाह का मुकुट। मौर। ३. वे मांगलिक गीत जो विवाह के अवसर पर वर के यहाँ गाए जाते हैं।
सेहुँड⊙†-संज्ञा पुं० थूहर।
सेहुआँ-संज्ञा पुं० एक प्रकार का चर्म-रोग।
सैंतना-क्रि० स० संचित करना। बटोरना।

लिखी रहती हैं। संधिपत्र।

सुलाना–क्रि० स० सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना।

सुलेमान–संज्ञा पुं० १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह। २. एक पहाड़ जो बलोचिस्तान और पंजाब के बीच में है।

सुलेमानी–संज्ञा पुं० १. वह घोड़ा जिसकी आँखें सफेद हों। २. एक प्रकार का दोरंगा पत्थर।

सुलोचना–संज्ञा स्त्री० १. एक अप्सरा। २. मेघनाद की पत्नी।

सुल्तान–संज्ञा पुं० दे० "सुलतान"।

सुवक्ता–वि० उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाग्मी।

सुवचन–वि० सुंदर बोलनेवाला।

सुवन–संज्ञा पुं० दे० "सुअन"।

सुवर्ण–संज्ञा पुं० सोना। स्वर्ण।
वि० १. सुंदर वर्ण या रंग का। उज्ज्वल। २. सोने के रंग का। पीला।

सुवर्णरेखा–संज्ञा स्त्री० एक नदी जो बिहार के राँची ज़िले से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

सुवा–संज्ञा पुं० दे० "सुआ"।

सुवार॰|–संज्ञा पुं० १. रसोइया। २. अच्छा दिन।

सुवास–संज्ञा पुं० १. सुगंध। २. सुंदर घर।

सुवासिका–वि० स्त्री० सुवास करनेवाली। सुगंध करनेवाली।

सुवासिनी–संज्ञा स्त्री० १. युवावस्था में भी पिता के यहाँ रहनेवाली स्त्री। २. सधवा स्त्री।

सुविज्ञ–वि० बहुत चतुर।

सुविधा–संज्ञा स्त्री० दे० "सुभीता"।

सुवेश–वि० वस्त्रादि से सुसज्जित।

सुशील–वि० उत्तम शील या स्वभाववाला।

सुशोभन–वि० अत्यंत शोभायुक्त।

सुशोभित–वि० उत्तम रूप से शोभित।

सुश्राव्य–वि० जो सुनने में अच्छा लगे।

सुश्री–वि० बहुत सुंदर। शोभायुक्त।

सुश्रुत–संज्ञा पुं० आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्र के एक प्रसिद्ध आचार्य।

सुषमना॰–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

सुषमनि–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुम्ना"।

सुषमा–संज्ञा स्त्री० परम शोभा। अत्यंत सुंदरता।

सुषिर–संज्ञा पुं० १. बाँस। २. बेत।

सुषुप्त–वि० गहरी नींद में सोया हुआ। घोर निद्रित।
संज्ञा स्त्री० दे० "सुषुप्ति"।

सुषुप्ति–संज्ञा स्त्री० १. घोर निद्रा। गहरी नींद। २. अज्ञान। (वेदांत)

सुषुम्ना–संज्ञा स्त्री० हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक।

सुषेण–संज्ञा पुं० १. परीक्षित के एक पुत्र का नाम। २. एक वानर जो वरुण का पुत्र, बालि का ससुर और सुग्रीव का वैद्य था।

सुष्ठ–वि० अच्छा। भला।

सुष्ठु–क्रि० वि० अच्छी तरह।
वि० सुंदर। उत्तम।

सुसंगति–संज्ञा स्त्री० अच्छी सोहबत। सत्संग।

सुसकना–क्रि० अ० दे० "सिसकना"।

सुसताना–क्रि० अ० थकावट दूर करना। विश्राम करना।

सुसमा–संज्ञा स्त्री० दे० "सुषमा"

सैंधव–संज्ञा पुं० १. सेंधा नमक। २. सिंध देश का घोड़ा।
सैंधवी–संज्ञा स्त्री० संपूर्ण जाति की एक रागिनी।
सैंवर†–संज्ञा पुं० दे० "साँभर"।
सैंह०†–क्रि० वि० दे० "सौंह"।
सै†–वि०, संज्ञा पुं० सौ।
संज्ञा स्त्री० १. तत्त्व। २. वीर्य। शक्ति। ३. बढ़ती। बरकत।
सैकड़ा–संज्ञा पुं० सौ का समूह। शत-समष्टि।
सैकड़े–क्रि० वि० प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फी सदी।
सैकड़ों–वि० १. कई सौ। २. बहु-संख्यक।
सैकत–वि० रेतीला। बलुआ।
सैक़ल–संज्ञा पुं० हथियारों को साफ़ करने और उन पर सान चढ़ाने का काम।
सैक़लगर–संज्ञा पुं० तलवार, छुरी आदि पर बाढ़ रखनेवाला।
सैथी–संज्ञा स्त्री० बरछी।
सैद०†–संज्ञा पुं० दे० "सैयद"।
सैद्धांतिक–संज्ञा पुं० सिद्धांत को जाननेवाला।
वि० सिद्धांत-संबंधी। तत्त्व-संबंधी।
सैन–संज्ञा स्त्री० संकेत। इशारा।
०†संज्ञा पुं० १. दे० "शयन"। २. दे० "श्येन"।
०†संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
सैना०†–संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
सैनापत्य–संज्ञा पुं० सेनापति का पद या कार्य्य। सेनापतित्व।
वि० सेनापति-संबंधी।
सैनिक–संज्ञा पुं० १. सेना या फौज का आदमी। सिपाही। २. संतरी।
वि० सेना-संबंधी।
सैनी–संज्ञा पुं० हज्जाम।
०†संज्ञा स्त्री० दे० "सेना"।
सैनू–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा। नैनू।
सैनेश–संज्ञा पुं० सेनापति।
सैन्य–संज्ञा पुं० सेना। फ़ौज।
सैफ़–संज्ञा स्त्री० तलवार।
सैमंतिक–संज्ञा पुं० सिंदूर। सेंदुर।
सैयद–संज्ञा पुं० १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।
सैयाँ०†–संज्ञा पुं० पति।
सैरंध्री–संज्ञा स्त्री० १. सैरंध्र नामक संकर जाति की स्त्री। २. द्रौपदी।
सैर–संज्ञा स्त्री० मन बहलाने के लिये घूमना-फिरना।
सैल†–संज्ञा पुं० दे० "शैल"।
संज्ञा स्त्री० बाढ़। जल-प्लावन।
सैलजा०–संज्ञा स्त्री० दे० "शैलजा"।
सैलानी–वि० सैर करनेवाला। मन-माना घूमनेवाला।
सैलूख०–संज्ञा पुं० दे० "शैलूष"।
सैव०†–संज्ञा पुं० दे० "शैव"।
सैवलिनी०–संज्ञा स्त्री० दे० "शैव-लिनी"।
सों–प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
सोंचर नमक–संज्ञा पुं० दे० "काला नमक"।
सोंटा–संज्ञा पुं० मोटी छड़ी। डंडा।
सोंठ–संज्ञा स्त्री० सुखाया हुआ अद-रक। शुंठि।

सुसर, सुसरा-संज्ञा पुं० दे० "ससुर"।

सुसराल-संज्ञा स्त्री० ससुर का घर। ससुराल।

सुसुकना-क्रि० अ० दे० "सिसकना"।

सुस्त-वि० १. चिंता आदि के कारण निस्तेज। उदास। हतप्रभ। २. धीमी चालवाला।

सुस्तना-संज्ञा स्त्री० सुंदर स्तनों से युक्त स्त्री।

सुस्ताना-क्रि० अ० दे० "सुसताना"।

सुस्ती-संज्ञा स्त्री० १. सुस्त होने का भाव। २. आलस्य।

सुस्थ-वि० १. भला-चंगा। नीरोग। तंदुरुस्त। २. भली भाँति स्थिर।

सुस्थिर-वि० अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल।

सुस्वर-वि० जिसका सुर मधुर हो। सुकंठ। सुरीला।

सुस्वादु-वि० अत्यंत स्वाद-युक्त। बहुत स्वादिष्ठ।

सुहराना†-क्रि० स० दे० "सहलाना"।

सुहाग-संज्ञा पुं० स्त्री की सधवा रहने की अवस्था। अहिवात। सौभाग्य।

सुहागा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का क्षार जो गरम गंधकी सोतों से निकलता है।

सुहागिन-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसका पति जीवित हो। सधवा स्त्री।

सुहागिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सुहाना-क्रि० अ० शोभायमान होना। शोभा देना।

सुहाया०-वि० दे० "सुहावना"।

सुहारी†-संज्ञा स्त्री० सादी पूरी।

सुहाल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का नमकीन पकवान।

सुहावना-वि० देखने में भला। सुंदर। प्रियदर्शन।

क्रि० अ० दे० "सुहाना"।

सुहासी-वि० मधुर मुसकानवाला। चारुहासी।

सुहृद्-संज्ञा पुं० १. अच्छे हृदयवाला। २. मित्र।

सुहृद्-संज्ञा पुं० दे० "सुहृत्"।

सुहेला-वि० सुहावना। सुंदर।

सूँघना-क्रि० स० नाक द्वारा गंध का अनुभव करना। बास लेना।

सूँड़-संज्ञा स्त्री० हाथी की लंबी नाक जो प्रायः ज़मीन तक लटकती है। शुंड।

सूँस-संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जंतु। सूस। सूसमार।

सूअर-संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध स्तन्यपायी जंतु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। २. एक प्रकार की गाली।

सूआ†-संज्ञा पुं० १. सुग्गा। तोता। २. बड़ी सूई। सूजा।

सूई-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पतला तार जिसके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा सिया जाता है।

सूक†-संज्ञा पुं० दे० "शुक"। (नक्षत्र)

सूकर-संज्ञा पुं० सूअर। शूकर।

सूकरक्षेत्र-संज्ञा पुं० एक प्राचीन तीर्थ जो मथुरा ज़िले में है। सोरों।

सूकरी-संज्ञा स्त्री० मादा सूअर।

सूका†-संज्ञा पुं० चार आने के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

सूक्त-संज्ञा पुं० १. वेदमंत्रों या ऋचाओं का समूह। २. उत्तम कथन।

वि० भली भाँति कहा हुआ।

सूक्ति-संज्ञा स्त्री० उत्तम उक्ति या

सोंठौरा†–संज्ञा पुं० एक प्रकार का लड्डू जिसमें मेवों के सिवा सोंठ भी पड़ती है। (प्रसूति स्त्री के लिये)

सोंध*–अव्य० दे० "सौंह"।

सोंधा–वि० १. सुगंधित। २. मिट्टी के नए बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ केश धोती हैं। २. सुगंध।

सोंह*†–संज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "सौंह"।

सोंही*–अव्य० दे० "सौंह"।

सो–सर्व० वह।

* वि० दे० "सा"।

अव्य० अतः। इसलिये। निदान।

सोआ–संज्ञा पुं० एक प्रकार का साग।

सोई–सर्व० दे० "वही"।

अव्य० दे० "सो"।

सोकित*–वि० शोकयुक्त।

सोखक*–वि० शोषण करनेवाला।

सोखता–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोख्ता"।

सोखन्–संज्ञा पुं० एक प्रकार का जंगली धान।

सोखना–क्रि० स० शोषण करना। चूस लेना।

सोख्ता–संज्ञा पुं० एक प्रकार का खुरदुरा कागज़ जो स्याही सोख लेता है।

वि० जला हुआ।

सोग*–संज्ञा पुं० दुःख। रंज।

सोगिनी*–वि० स्त्री० शोक करनेवाली। शोकाकुला।

सोगी–वि० दुःखित।

सोच–संज्ञा पुं० १. सोचने की क्रिया या भाव। २. चिंता। फ़िक्र। ३. पछतावा।

सोचना–क्रि० अ० १. मन में किसी बात पर विचार करना। गौर करना। २. चिंता करना।

सोच-विचार–संज्ञा पुं० समझ-बूझ। गौर।

सोचु*–संज्ञा पुं० दे० "सोच"।

सोजन–संज्ञा पुं० सूई।

सोज़िश–संज्ञा स्त्री० सूजन।

सोझ, सोझा–वि० [स्त्री० सोझी] सीधा।

सोत–संज्ञा पुं० दे० "स्रोत" या "सोता"।

सोता–संज्ञा पुं० झरना।

सोति–संज्ञा स्त्री० स्रोत।

सोदर–संज्ञा पुं० [स्त्री० सोदरा, सोदरी] सगा भाई।

वि० एक गर्भ से उत्पन्न।

सोध*†–संज्ञा पुं० १. खोज। २. चुकता होना।

सोधन–संज्ञा पुं० ढूँढ़।

सोधना†–क्रि० स० १. शुद्ध करना। २. खोजना। ३. अदा करना।

सोधाना†–क्रि० स० सोधने का काम दूसरे से कराना।

सोन–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिला है। २. दे० "सोना"। ३. एक प्रकार का जलपक्षी।

सोनकीकर–संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला–संज्ञा पुं० पीला केला।

सोनचिरी–संज्ञा स्त्री० नटी।

सोनजुही–संज्ञा स्त्री० पीली जुही।

सोनभद्र–संज्ञा पुं० दे० "सोन"।

सोनहार–संज्ञा पुं० एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

कथन।
सूक्ष्म–वि० १. बहुत छोटा। २. बारीक या महीन।
संज्ञा पुं० १. परमाणु। २. परब्रह्म।
सूक्ष्मता–संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन।
सूक्ष्मदर्शक यंत्र–संज्ञा पुं० एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। खुर्दबीन।
सूक्ष्मदर्शिता–संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।
सूक्ष्मदर्शी–वि० बारीक बात को सोचने-समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।
सूक्ष्मदृष्टि–संज्ञा स्त्री० वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायँ।
संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।
सूक्ष्म शरीर–संज्ञा पुं० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।
सूखं‡–वि० दे० "सूखा"।
सूखना–क्रि० अ० १. नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। २. जल का न रहना या कम हो जाना। ३. दुबला होना।
सूखा–वि० १. जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। २. तेज-रहित।
संज्ञा पुं० पानी न बरसना। अनावृष्टि।
सूचक–वि० सूचना देनेवाला। बतानेवाला।
संज्ञा पुं० १. सूई। २. सीनेवाला।
सूचना–संज्ञा स्त्री० १. वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। विज्ञापन। २. इश्तहार।
सूचनापत्र–संज्ञा पुं० विज्ञापन।
सूचिका–संज्ञा स्त्री० सूई।
सूचिकाभरण–संज्ञा पुं० एक प्रकार की औषध जो सन्निपात आदि प्राणनाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।
सूचित–वि० जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ।
सूचीकर्म–संज्ञा पुं० सिलाई का काम।
सूचीपत्र–संज्ञा पुं० तालिका। फेहरिस्त। सूची।
सूच्छिम‡–वि० दे० "सूक्ष्म"।
सूजन–संज्ञा स्त्री० सूजने की क्रिया या भाव।
सूजना–क्रि० अ० रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।
सूजा–संज्ञा पुं० बड़ी मोटी सूई। सूआ।
सूजाक–संज्ञा पुं० मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग।
सूजी–संज्ञा स्त्री० १. गेहूँ का दरदरा आटा जिससे पकवान बनाते हैं। २. सूई।
सूझ–संज्ञा स्त्री० १. सूझने का भाव। २. दृष्टि।
सूझना–क्रि० अ० दिखाई देना। नज़र आना।
सूत–संज्ञा पुं० १. रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। सूता। २. तागा। डोरा। सूत्र। ३. दे० "सुत"।

सोना–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। कनक। २. बहुत सुंदर वस्तु।
क्रि० अ० १ नींद लेना। २. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।
सोनागेरू–संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद।
सोनार–संज्ञा पुं० दे० "सुनार"।
सोनित॰–संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।
सोनी†–संज्ञा पुं० सुनार।
सोपान–संज्ञा पुं० सीढ़ी।
सोपानित–वि० सोपान से युक्त।
सोफ़ियाना–वि० १. सूफ़ियों का। २. जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।
सोभ॰–संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।
सोभना॰†–क्रि० अ० शोभित होना।
सोभाकारी–वि० सुंदर।
सोभित–वि० दे० "शोभित"।
सोम–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। २. चंद्रमा। ३. सोमवार।
सोमनाथ–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।
सोमपान–संज्ञा पुं० सोम पीना।
सोमपायी–वि० [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।
सोमयाजी–संज्ञा पुं० सोम यज्ञ करनेवाला।
सोमरस–संज्ञा पुं० सोमलता का रस।
सोमराज–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सोमवंश–संज्ञा पुं० चंद्रवंश।
सोमवंशीय–वि० चंद्रवंश में उत्पन्न।
सोमवती अमावस्या–संज्ञा स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी जाती है।
सोमवल्लरी–संज्ञा स्त्री० १. ब्राह्मी। २. चामर।
सोमवार–संज्ञा पुं० एक वार जो रविवार के बाद पड़ता है।
सोमवारी–संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।
वि० सोमवार-संबंधी।
सोमसुत–संज्ञा पुं० बुध।
सोमेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "सोमनाथ"।
सोय॰–सर्व० वही।
सर्व० दे० "सो"।
सोर॰–संज्ञा पुं० १. शोर। २. प्रसिद्धि।
संज्ञा स्त्री० जड़।
सोरठ–संज्ञा पुं० १. गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी। सूरत।
सोरठा–संज्ञा पुं० अड़तालीस मात्राओं का एक छंद।
सोरनी†–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
सोरह†॰–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।
सोरही–संज्ञा स्त्री० जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियाँ।
सोलंकी–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।
सोलह–वि० जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोड़श।
सोवन॰†–संज्ञा पुं० सोने की क्रिया या भाव।
सोवा–संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।
सोसन–संज्ञा पुं० फ़ारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा।
सोसनी–वि० सोसन के फूल के

सूतक-संज्ञा पुं० १. जन्म। २. वह अशौच जो संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को होता है।

सूतकी-वि० परिवार में किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण जिसे सूतक लगा हो।

सूतना†-क्रि० अ० दे० "सोना"।

सूतपुत्र-संज्ञा पुं० १. सारथि। २. कर्ण।

सूता-संज्ञा पुं० तंतु। सूत।

सूति-संज्ञा स्त्री० १. जन्म। २. प्रसव। जनन।

सूतिका-संज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। ज़च्चा।

सूतिकागार, सूतिकागृह-संज्ञा पुं० सौरी। प्रसव-गृह।

सूती-संज्ञा स्त्री० सीपी।

सूत्र-संज्ञा पु० १ सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. थोड़े अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करे।

सूत्रकार-संज्ञा पुं० १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २. बढ़ई। ३. जुलाहा।

सूत्रग्रंथ-संज्ञा पुं० वह ग्रंथ जो सूत्रों में हो; जैसे—सांख्यसूत्र।

सूत्रधार-संज्ञा पुं० नाट्यशाला का व्यवस्थापक।

सूत्रपात-संज्ञा पुं० प्रारंभ। शुरू।

सूथनी-संज्ञा स्त्री० पायजामा।

सूद-संज्ञा पुं० १. लाभ। २. ब्याज।

सूदन-वि० विनाश करनेवाला।

सूधा-वि० दे० "सीधा"।

सूधे-क्रि० वि० सीधे से।

सून-संज्ञा पु० १. प्रसव। जनन। २. कली। कलिका। ३. फूल। ४. पुत्र।

†संज्ञा पुं० वि० दे० "शून्य"।

सूना-वि० सुनसान।

संज्ञा पुं० एकांत। निर्जन स्थान।

संज्ञा स्त्री० पुत्री। बेटी।

सूनापन-संज्ञा पुं० सन्नाटा।

सूनु-संज्ञा पु० पुत्र। संतान।

सूप-संज्ञा पु० रसोइया।

संज्ञा पु० अनाज फटकने का सरई या सींक का छाज।

सूपकार-संज्ञा पुं० रसोइया। पाचक।

सूपनखा-संज्ञा स्त्री० दे० "शूर्पणखा"।

सूपशास्त्र-संज्ञा पुं० पाकशास्त्र।

सूफ-संज्ञा पु० पशम। ऊन।

सूफी-संज्ञा पुं० मुसलमानों का एक धार्मिक उदार संप्रदाय।

सूबा-संज्ञा पुं० किसी देश का कोई भाग। प्रांत।

सूबेदार-संज्ञा पुं० १. किसी सूबे या प्रांत का शासक। २. एक छोटा फौजी ओहदा।

सूबेदारी-संज्ञा स्त्री० सूबेदार का ओहदा या पद।

सूम-वि० कंजूस।

सूर-संज्ञा पुं० अंधा।

संज्ञा पुं० वीर। बहादुर।

संज्ञा पुं० दे० "शूल"।

सूरकुमार-संज्ञा पुं० वसुदेव।

सूरज-संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. दे० "सूरदास"।

रंग का।

सोहगी–संज्ञा स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं।

सोहन–वि० [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।

सोहन पपड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

सोहन हलवा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. अच्छा लगना।
†वि० सुंदर।

सोहनी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
वि० स्त्री० सुंदर।

सोहबत–संज्ञा स्त्री० संग-साथ।

सोहराना–क्रि० स० दे० "सहलाना"।

सोहला–संज्ञा पुं० १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।

सोहाग†–संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।

सोहागिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहागिल–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहाता–वि० [स्त्री० सोहाती] सुहावना।

सोहाना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २ रुचिकर होना।

सोहाया–वि० [स्त्री० सोहाई] शोभित।

सोहारी–संज्ञा स्त्री० पूरी।

सोहावना–वि० दे० "सुहावना"।
क्रि० अ० दे० "सोहाना"।

सोहिनी–वि० स्त्री० सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

सोहिल–संज्ञा पुं० अगस्त्य तारा।

सोहीं†*–क्रि० वि० सामने।

सोहैं*–क्रि० वि० सामने।

सौंचना†–क्रि० स० मल-त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना।

सौंचाना†–क्रि० स० शौच कराना।

सौंदन–संज्ञा स्त्री० धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।

सौंदना–क्रि० स० आपस में मिलाना।

सौंदर्य–संज्ञा पुं० सुंदरता।

सौंध–संज्ञा स्त्री० सुगंध।

सौंधना–क्रि० स० सुगंधित करना।

सौंपना–क्रि० स० १. सपुर्द करना। २. सहेजना।

सौंफ–संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।

सौंफिया, सौंफी–संज्ञा स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।

सौंरई†–संज्ञा स्त्री० साँवलापन।

सौंह*†–संज्ञा स्त्री० शपथ।
संज्ञा पुं०, क्रि० वि० सामने।

सौ–वि० नब्बे और दस।

सौकर्य–संज्ञा पुं० सुभीता।

सौकुमार्य–संज्ञा पुं० सुकुमारता।

सौख्य–संज्ञा पुं० १. सुखत्व। २. सुख।

सौगंद–संज्ञा स्त्री० शपथ।

सौगंध–संज्ञा पुं० खुशबू।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।

सौगात–संज्ञा स्त्री० भेंट। उपहार।

सौघा†–वि० कम दाम का।

सौच*–संज्ञा पुं० दे० "शौच"।

सौज–संज्ञा स्त्री० सामग्री।

सौजना–क्रि० अ० दे० "सजना"।

सौजन्य–संज्ञा पुं० सुजनता।

सौजन्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य"।

कथन।

सूक्ष्म–वि० १. बहुत छोटा। २. बारीक या महीन।
संज्ञा पुं० १. परमाणु। २. परब्रह्म।

सूक्ष्मता–संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म होने का भाव। बारीकी। महीनपन।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र–संज्ञा पुं० एक यंत्र जिससे देखने पर सूक्ष्म पदार्थ बड़े दिखाई देते हैं। खुर्दबीन।

सूक्ष्मदर्शिता–संज्ञा स्त्री० सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी–वि० बारीक बात को सोचने-समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।

सूक्ष्मदृष्टि–संज्ञा स्त्री० वह दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी समझ में आ जायँ।
संज्ञा पुं० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।

सूक्ष्म शरीर–संज्ञा पुं० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन और बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समूह।

सूखट†–वि० दे० "सूखा"।

सूखना–क्रि० अ० १. नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। २. जल का न रहना या कम हो जाना। ३. दुबला होना।

सूखा–वि० १. जिसका पानी निकल, उड़ या जल गया हो। २. तेज-रहित।
संज्ञा पुं० पानी न बरसना। अनावृष्टि।

सूचक–वि० सूचना देनेवाला। बतानेवाला।
संज्ञा पुं० १. सूई। २. सीनेवाला।

सूचना–संज्ञा स्त्री० १. वह बात जो किसी को बताने, जताने या सावधान करने के लिये कही जाय। विज्ञापन। २. इश्तहार।

सूचनापत्र–संज्ञा पुं० विज्ञापन।

सूचिका–संज्ञा स्त्री० सूई।

सूचिकाभरण–संज्ञा पुं० एक प्रकार की औषध जो सन्निपात आदि प्राणनाशक रोगों की अंतिम औषध मानी गई है।

सूचित–वि० जिसकी सूचना दी गई हो। जताया हुआ।

सूचीकर्म–संज्ञा पुं० सिलाई का काम।

सूचीपत्र–संज्ञा पुं० तालिका। फेहरिस्त। सूची।

सूच्छिम†–वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूजन–संज्ञा स्त्री० सूजने की क्रिया या भाव।

सूजना–क्रि० अ० रोग, चोट आदि के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। शोथ होना।

सूजा–संज्ञा पुं० बड़ी मोटी सूई। सूआ।

सूजाक–संज्ञा पुं० मूत्रेंद्रिय का एक प्रदाहयुक्त रोग।

सूजी–संज्ञा स्त्री० १. गेहूँ का दरदरा आटा जिससे पकवान बनाते हैं। २. सूई।

सूझ–संज्ञा स्त्री० १. सूझने का भाव। २. दृष्टि।

सूझना–क्रि० अ० दिखाई देना। नजर आना।

सूत–संज्ञा पुं० १. रूई, रेशम आदि का महीन तार जिससे कपड़ा बुना जाता है। सूता। २. तागा। डोरा। सूत्र। ३. दे० "सुत"।

सोना–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। कनक। २. बहुत सुंदर वस्तु।
क्रि० अ० १ नींद लेना। २. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।
सोनागेरू–संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद।
सोनार–संज्ञा पुं० दे० "सुनार"।
सोनित॰–संज्ञा पु० दे० "शोणित"।
सोनी।–संज्ञा पुं० सुनार।
सोपान–संज्ञा पु० सीढ़ी।
सोपानित–वि० सोपान से युक्त।
सोफ़ियाना–वि० १. सूफ़ियों का। २. जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।
सोभ॰–संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।
सोभना॰।–क्रि० अ० शोभित होना।
सोभाकारी–वि० सुंदर।
सोभित–वि० दे० "शोभित"।
सोम–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। २. चंद्रमा। ३. सोमवार।
सोमनाथ–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।
सोमपान–संज्ञा पुं० सोम पीना।
सोमपायी–वि० [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।
सोमयाजी–संज्ञा पुं० सोम यज्ञ करनेवाला।
सोमरस–संज्ञा पुं० सोमलता का रस।
सोमराज–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सोमवंश–संज्ञा पुं० चंद्रवंश।
सोमवंशीय–वि० चंद्रवंश में उत्पन्न।
सोमवती अमावस्या–संज्ञा स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी जाती है।
सोमवल्लरी–संज्ञा स्त्री० १. ब्राह्मी। २. चामर।
सोमवार–संज्ञा पुं० एक वार जो रविवार के बाद पड़ता है।
सोमवारी–संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।
वि० सोमवार-संबंधी।
सोमसुत–संज्ञा पुं० बुध।
सोमेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "सोमनाथ"।
सोय॰–सर्व० वही।
सर्व० दे० "सो"।
सोर॰–संज्ञा पुं० १. शोर। २. प्रसिद्धि।
संज्ञा स्त्री० जड़।
सोरठ–संज्ञा पुं० १. गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी। सूरत।
सोरठा–संज्ञा पुं० अड़तालीस मात्राओं का एक छंद।
सोरनी।–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
सोरह।॰–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।
सोरही–संज्ञा स्त्री० जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियाँ।
सोलंकी–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।
सोलह–वि० जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोड़श।
सोवन॰।–संज्ञा पुं० सोने की क्रिया या भाव।
सोवा–संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।
सोसन–संज्ञा पुं० फ़ारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा।
सोसनी–वि० सोसन के फूल के

रंग का।
सोहगी–संज्ञा स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं।
सोहन–वि० [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।
सोहन पपड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।
सोहन हलवा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई।
सोहना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. अच्छा लगना।
†वि० सुंदर।
सोहनी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
वि० स्त्री० सुंदर।
सोहबत–संज्ञा स्त्री० संग-साथ।
सोहराना–क्रि० स० दे० "सहलाना"।
सोहला–संज्ञा पुं० १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।
सोहाग–संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।
सोहागिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सोहागिल–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।
सोहाता–वि० [स्त्री० सोहाती] सुहावना।
सोहाना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. रुचिकर होना।
सोहाया–वि० [स्त्री० सोहाई] शोभित।
सोहारी–संज्ञा स्त्री० पूरी।
सोहावना–वि० दे० "सुहावना"।
क्रि० अ० दे० "सोहाना"।
सोहिनी–वि० स्त्री० सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।
सोहिल–संज्ञा पुं० अगस्त्य तारा।
सोहीं†‡–क्रि० वि० सामने।
सोहैं‡–क्रि० वि० सामने।
सौंचना†–क्रि० स० मल-त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना।
सौंचाना†–क्रि० स० शौच कराना।
सौंदन–संज्ञा स्त्री० धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।
सौंदना–क्रि० स० आपस में मिलाना।
सौंदर्य–संज्ञा पुं० सुंदरता।
सौंध–संज्ञा स्त्री० सुगंध।
सौंधना–क्रि० स० सुगंधित करना।
सौंपना–क्रि० स० १. सपुर्द करना। २. सहेजना।
सौंफ–संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।
सौंफिया, सौंफी–संज्ञा स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।
सौंरई†–संज्ञा स्त्री० साँवलापन।
सौंह‡†–संज्ञा स्त्री० शपथ।
संज्ञा पुं०, क्रि० वि० सामने।
सौ–वि० नब्बे और दस।
सौकर्य–संज्ञा पुं० सुभीता।
सौकुमार्य–संज्ञा पुं० सुकुमारता।
सौख्य–संज्ञा पुं० १. सुखत्व। २. सुख।
सौगंद–संज्ञा स्त्री० शपथ।
सौगंध–संज्ञा पुं० सुवास।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।
सौगात–संज्ञा स्त्री० भेंट। उपहार।
सौघा†–वि० कम दाम का।
सौच‡–संज्ञा पुं० दे० "शौच"।
सौज–संज्ञा स्त्री० सामग्री।
सौजना–क्रि० अ० दे० "सजना"।
सौजन्य–संज्ञा पुं० सुजनता।
सौजन्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य"।

२. सावधान।
स्वाँग–संज्ञा पुं० मज़ाक़ का खेल या तमाशा। नक़ल।
स्वाँगना*–क्रि० स० स्वाँग बनाना।
स्वाँगी–संज्ञा पुं० १. वह जो स्वाँग सजकर जीविका उपार्जन करता हो। २. बहुरूपिया।
स्वाँत–संज्ञा पुं० अंतःकरण।
स्वाँस–संज्ञा स्त्री० दे० "साँस"।
स्वाँसा–संज्ञा पुं० दे० "साँस"।
स्वाक्षर–संज्ञा पुं० हस्ताक्षर। दस्तख़त।
स्वाक्षरित–वि० अपने हस्ताक्षर से युक्त।
स्वागत–संज्ञा पुं० अतिथि आदि के पधारने पर उसका सादर अभिनंदन करना। अगवानी। अभ्यर्थना।
स्वागतकारिणी सभा–संज्ञा स्त्री० वह सभा जो किसी विराट् सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिये संघटित हो।
स्वातंत्र्य–संज्ञा पुं० दे० "स्वतंत्रता"।
स्वाति–संज्ञा स्त्री० पंद्रहवाँ नक्षत्र जो फलित में शुभ माना गया है।
स्वातिपंथ–संज्ञा पुं० आकाश-गंगा।
स्वातिसुत–संज्ञा पुं० मोती।
स्वाती–संज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।
स्वाद–संज्ञा पुं० किसी पदार्थ के खाने या पीने से रसनेंद्रिय को होनेवाला अनुभव।
स्वादन–संज्ञा पुं० १. चखना। स्वाद लेना। २. मज़ा लेना।
स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ–वि० ज़ायकेदार। सुस्वादु।
स्वादु–संज्ञा पुं० मीठा रस। मधुरता। वि० १. मीठा। २. स्वादिष्ठ।
स्वाद्य–वि० स्वाद लेने योग्य।
स्वाधीन–वि० १. जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। २. निरंकुश।
स्वाधीनता–संज्ञा स्त्री० स्वाधीन होने का भाव। आज़ादी।
स्वाध्याय–संज्ञा पुं० १. वेदों का निरंतर और नियमपूर्वक अभ्यास करना। २. अनुशीलन। अध्ययन।
स्वान–संज्ञा पुं० दे० "श्वान"।
स्वापन–संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे शत्रु निद्रित किए जाते थे। वि० नींद लानेवाला।
स्वाभाविक–वि० १. जो आप ही आप हो। २. नैसर्गिक।
स्वाभाविकी–वि० दे० "स्वाभाविक"।
स्वामि*–संज्ञा पुं० दे० "स्वामी"।
स्वामिकार्त्तिक–संज्ञा पुं० शिव के पुत्र कार्त्तिकेय।
स्वामित्व–संज्ञा पुं० स्वामी होने का भाव। प्रभुत्व।
स्वामिनी–संज्ञा स्त्री० १. मालकिन। २. गृहिणी।
स्वामी–संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वामिनी] १. मालिक। २. घर का प्रधान पुरुष। ३. पति। ४. भगवान्। ५. साधु-संन्यासी आदि की उपाधि।
स्वायत्त–वि० जो अपने अधीन हो। जिस पर अपना ही अधिकार हो।
स्वायत्त शासन–संज्ञा पुं० वह शासन जो अपने अधिकार में हो।
स्वारथ*†–संज्ञा पुं० दे० "स्वार्थ"। वि० सफल।
स्वारथी–वि० दे० "स्वार्थी"।
स्वारस्य–वि० १. सरसता। २.

सोना–संज्ञा पुं० १. स्वर्ण। कनक। २. बहुत सुंदर वस्तु। क्रि० अ० १ नींद लेना। २. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना।
सोनागेरू–संज्ञा पुं० गेरू का एक भेद।
सोनार–संज्ञा पुं० दे० "सुनार"।
सोनित–संज्ञा पुं० दे० "शोणित"।
सोनी–संज्ञा पुं० सुनार।
सोपान–संज्ञा पुं० सीढ़ी।
सोपानित–वि० सोपान से युक्त।
सोफ़ियाना–वि० १. सूफ़ियों का। २. जो देखने में सादा, पर बहुत भला लगे।
सोभ–संज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।
सोभना–क्रि० अ० शोभित होना।
सोभाकारी–वि० सुंदर।
सोभित–वि० दे० "शोभित"।
सोम–संज्ञा पुं० १. प्राचीन काल की एक लता जिसका रस मादक होता था और जिसे प्राचीन वैदिक ऋषि पान करते थे। २. चंद्रमा। ३. सोमवार।
सोमनाथ–संज्ञा पुं० १. एक प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड़ के पश्चिम तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग है।
सोमपान–संज्ञा पुं० सोम पीना।
सोमपायी–वि० [स्त्री० सोमपायिनी] सोम पीनेवाला।
सोमयाजी–संज्ञा पुं० सोम यज्ञ करनेवाला।
सोमरस–संज्ञा पुं० सोमलता का रस।
सोमराज–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
सोमवंश–संज्ञा पुं० चंद्रवंश।
सोमवंशीय–वि० चंद्रवंश में उत्पन्न।
सोमवती अमावस्या–संज्ञा स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणानुसार पुण्य तिथि मानी जाती है।
सोमवल्ली–संज्ञा स्त्री० १. ब्राह्मी। २. चामर।
सोमवार–संज्ञा पुं० एक वार जो रविवार के बाद पड़ता है।
सोमवारी–संज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"। वि० सोमवार-संबंधी।
सोमसुत–संज्ञा पुं० बुध।
सोमेश्वर–संज्ञा पुं० दे० "सोमनाथ"।
सोय–सर्व० वही। सर्व० दे० "सो"।
सोर–संज्ञा पुं० १. शोर। २. प्रसिद्धि। संज्ञा स्त्री० जड़।
सोरठ–संज्ञा पुं० १. गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम। २. सोरठ देश की राजधानी। सूरत।
सोरठा–संज्ञा पुं० अड़तालीस मात्राओं का एक छंद।
सोरनी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
सोरह–वि०, संज्ञा पुं० दे० "सोलह"।
सोरही–संज्ञा स्त्री० जूआ खेलने के लिये सोलह चित्ती कौड़ियाँ।
सोलंकी–संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश।
सोलह–वि० जो गिनती में दस से छः अधिक हो। षोडश।
सोवन–संज्ञा पुं० सोने की क्रिया या भाव।
सोवा–संज्ञा पुं० दे० "सोआ"।
सोसन–संज्ञा पुं० फ़ारस की ओर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा।
सोसनी–वि० सोसन के फूल के

स्वाभाविकता।

स्वाराज्य–संज्ञा पुं० स्वाधीन राज्य।

स्वार्थ–संज्ञा पुं० अपना उद्देश्य या मतलब।
वि० सार्थक। सफल।

स्वार्थत्याग–संज्ञा पुं० किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

स्वार्थपर–वि० स्वार्थी।

स्वार्थपरता–संज्ञा स्त्री० स्वार्थपर होने का भाव।

स्वार्थपरायण–वि० [संज्ञा स्वार्थपरायणता] स्वार्थपर। खुदगरज़।

स्वार्थांध–वि० जो अपने स्वार्थ के वश होकर सब कुछ भूल जाय।

स्वार्थी–वि० अपना ही मतलब देखनेवाला।

स्वास–संज्ञा पुं० साँस। श्वास।

स्वासा–संज्ञा स्त्री० साँस। श्वास।

स्वास्थ्य–संज्ञा पुं० नीरोग या स्वस्थ होने की अवस्था।

स्वास्थ्यकर–वि० तंदुरुस्त करनेवाला।

स्वाहा–अव्य० एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय किया जाता है।

स्वीकरण–संज्ञा पुं० अपनाना। अंगीकार करना।

स्वीकारोक्ति–संज्ञा स्त्री० वह बयान जिसमें अभियुक्त अपना अपराध स्वयं ही स्वीकृत कर ले।

स्वीकार–संज्ञा पुं० अपनाने की क्रिया। अंगीकार।

स्वीकार्य–वि० स्वीकार करने या मानने के योग्य।

स्वीकृत–वि० स्वीकार किया हुआ। मंजूर।

स्वीकृति–संज्ञा स्त्री० स्वीकार का भाव। सम्मति।

स्वीय–वि० अपना।
संज्ञा पुं० स्वजन।

स्वेच्छा–संज्ञा स्त्री० अपनी इच्छा।

स्वेच्छाचार–संज्ञा पुं० [भाव० स्वेच्छाचारिता] जो जी में आवे, वही करना।

स्वेच्छाचारी–वि० [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] निरंकुश।

स्वेच्छासेवक–संज्ञा पुं० दे० "स्वयंसेवक"।

स्वेत–वि० दे० "श्वेत"।

स्वेद–संज्ञा पुं० १. पसीना। २. भाप। वाष्प।

स्वेदज–वि० पसीने से उत्पन्न होनेवाला। (जूँ, खटमल, मच्छर आदि)

स्वेदन–संज्ञा पुं० पसीना निकलना।

स्वेदित–वि० १. पसीने से युक्त। २. सेंका हुआ।

स्वैर–वि० मनमाना काम करनेवाला।

स्वैरचारी–वि० [स्त्री० स्वैरचारिणी] १. निरंकुश। २. व्यभिचारी।

स्वैरता–संज्ञा स्त्री० यथेच्छाचारिता।

स्वैरिणी–संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

रंग का।

सोहगी–संज्ञा स्त्री० तिलक चढ़ने के बाद की एक रस्म जिसमें लड़की के लिये कपड़े, गहने आदि जाते हैं।

सोहन–वि० [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला।
संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बड़ी चिड़िया।

सोहन पपड़ी–संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

सोहन हलवा–संज्ञा पुं० एक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. अच्छा लगना।
†वि० सुंदर।

सोहनी–संज्ञा स्त्री० झाड़ू।
वि० स्त्री० सुंदर।

सोहबत–संज्ञा स्त्री० संग-साथ।

सोहराना–क्रि० स० दे० "सहलाना"।

सोहला–संज्ञा पुं० १. वह गीत जो घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। २. मांगलिक गीत।

सोहाग–संज्ञा पुं० दे० "सुहाग"।

सोहागिन–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहागिल–संज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।

सोहाता–वि० (स्त्री० सोहाती) सुहावना।

सोहाना–क्रि० अ० १. शोभित होना। २. रुचिकर होना।

सोहाया–वि० (स्त्री० सोहाई) शोभित।

सोहारी–संज्ञा स्त्री० पूरी।

सोहावना–वि० दे० "सुहावना"।
क्रि० अ० दे० "सोहाना"।

सोहिनी–वि० स्त्री० सुहावनी।
संज्ञा स्त्री० करुण रस की एक रागिनी।

सोहिल–संज्ञा पुं० अगस्त्य तारा।

सोहीं‡–क्रि० वि० सामने।

सोहैं‡–क्रि० वि० सामने।

सौंचना†–क्रि० स० मल-त्याग करना या उसके बाद हाथ-पैर धोना।

सौंचाना†–क्रि० स० शौच कराना।

सौंदन–संज्ञा स्त्री० धोबियों का कपड़ों को धोने से पहले रेह मिले पानी में भिगोना।

सौंदना–क्रि० स० आपस में मिलाना।

सौंदर्य–संज्ञा पुं० सुंदरता।

सौंध–संज्ञा स्त्री० सुगंध।

सौंधना–क्रि० स० सुगंधित करना।

सौंपना–क्रि० स० १. सपुर्द करना। २. सहेजना।

सौंफ–संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसके बीजों का औषध के अतिरिक्त मसाले में भी व्यवहार करते हैं।

सौंफिया, सौंफी–संज्ञा स्त्री० सौंफ की बनी हुई शराब।

सौंरई†–संज्ञा स्त्री० साँवलापन।

सौंह‡†–संज्ञा स्त्री० शपथ।
संज्ञा पुं०, क्रि० वि० सामने।

सौ–वि० नब्बे और दस।

सौकर्य–संज्ञा पुं० सुभीता।

सौकुमार्य–संज्ञा पुं० सुकुमारता।

सौख्य–संज्ञा पुं० १. सुखत्व। २. सुख।

सौगंद–संज्ञा स्त्री० शपथ।

सौगंध–संज्ञा पुं० सुगंध।
संज्ञा स्त्री० दे० "सौगंद"।

सौगात–संज्ञा स्त्री० भेंट। उपहार।

सौघा†–वि० कम दाम का।

सौच‡–संज्ञा पुं० दे० "शौच"।

सौज–संज्ञा स्त्री० सामग्री।

सौंजना–क्रि० अ० दे० "सजना"।

सौजन्य–संज्ञा पुं० सुजनता।

सौजन्यता–संज्ञा स्त्री० दे० "सौजन्य"।

हु

हु–संस्कृत या हिंदी वर्णमाला का तेंतीसवाँ और अंतिम व्यंजन।
हुँकड़ना–क्रि० अ० दर्प के साथ बोलना। ललकारना।
हुँकारना०†–क्रि० स० १. हाँक देकर बुलाना। २. पुकारना।
हुँकवा–संज्ञा पुं० शेर के शिकार का एक ढंग जिसमें बहुत से लोग शेर को हाँककर शिकारी की ओर ले जाते हैं।
हुँकवाना–क्रि० स० १. हाँक लगवाना। २. हाँकने का काम दूसरे से कराना।
हुँकवैया०†–संज्ञा पुं० हाँकनेवाला।
हुँकाई–संज्ञा स्त्री० हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
हुँकाना–क्रि० स० पुकारना। बुलाना।
हुंकार–संज्ञा स्त्री० १. आवाज़ लगाकर बुलाना। २. पुकार।
हुंकार०†–संज्ञा पुं० दे० १. "अहंकार"। २. ललकार।
हुँकारना–क्रि० स० १. ज़ोर से पुकारना। २. ललकारना।
हुँकारी–संज्ञा पुं० दूत।
हुंगामा–संज्ञा पुं० १. उपद्रव। लड़ाई-झगड़ा। २. हल्ला।
हुंडा–संज्ञा पुं० पीतल या ताँबे का बहुत बड़ा बरतन जिसमें पानी रखते हैं।
हुँड़िया–संज्ञा स्त्री० बड़े लोटे के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँडी।
हुंडी–संज्ञा स्त्री० दे० "हँड़िया", "हाँडी"।
हुंत–अव्य० खेद या शोकसूचक शब्द।
हुंता–संज्ञा पुं० [स्त्री० हंत्री] वध करनेवाला।
हुँफनि–संज्ञा स्त्री० हाँफने की क्रिया या भाव।
हुंस–संज्ञा पुं० १. बत्तख के आकार का एक जलपक्षी जो बड़ी बड़ी झीलों में रहता है। २. जीवात्मा।
हुंसक–संज्ञा पुं० १. हंस पक्षी। २. पैर की उँगलियों में पहनने का बिछुआ।
हुंसगति–संज्ञा स्त्री० हंस के समान सुंदर धीमी चाल।
हुंसगामिनी–वि० स्त्री० हंस के समान सुंदर मंद गति से चलनेवाली।
हुँसता-मुखी–संज्ञा पुं० हँसते चेहरेवाला। प्रसन्नमुख।
हुँसन–संज्ञा स्त्री० हँसने की क्रिया।
हुँसना–क्रि० अ० खुशी के मारे मुँह फैलाकर आवाज़ करना। खिलखिलाना।
क्रि० स० किसी का उपहास करना। अनादर करना।
हुँसनि०†–संज्ञा स्त्री० दे० "हँसन"।
हुंसनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।
हुंसपदी–संज्ञा स्त्री० एक लता।
हुँसमुख–वि० १. प्रसन्नवदन। २. विनोदशील।
हुंसराज–संज्ञा पुं० १. एक प्रकार की पहाड़ी बूटी। २. एक प्रकार का अगहनी धान।
हुँसली–संज्ञा स्त्री० गले में पहनने का, स्त्रियों का, एक मंडलाकार गहना।

सौजा–संज्ञा पुं० वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाय।
सौत–संज्ञा स्त्री० सपत्नी। सवत।
सौतन, सौतिन–संज्ञा स्त्री०। दे० "सौत"।
सौतेला–वि० [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। २. जिसका संबंध सौत के रिश्ते से हो।
सौदा–संज्ञा पुं० १. चीज़। २. लेन-देन। ३. क्रय-विक्रय।
सौदाई–संज्ञा पुं० पागल। दीवाना।
सौदागर–संज्ञा पुं० व्यापारी।
सौदागरी–संज्ञा स्त्री० व्यापार।
सौदामनी–संज्ञा स्त्री० बिजली।
सौध–संज्ञा पुं० १. भवन। २. चाँदी।
सौधना–क्रि० स० दे० "सोधना"।
सौन*–क्रि० वि० सामने।
सौभग–संज्ञा पुं० १. सौभाग्य। २. सुख।
सौभद्र–संज्ञा पुं० सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु।
वि० सुभद्रा-संबंधी।
सौभागिनी–संज्ञा स्त्री० सधवा स्त्री। सोहागिन।
सौभाग्य–संज्ञा पुं० १. अच्छा भाग्य। २. अहिवात। ३. वैभव।
सौभाग्यवती–वि० स्त्री० सुहागिन।
सौभाग्यवान्–वि० [स्त्री० सौभाग्यवती] १. अच्छे भाग्यवाला। २. सुखी और संपन्न।
सौम*–वि० दे० "सौम्य"।
सौमित्र–संज्ञा पुं० १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. मित्रता।
सौम्य–वि० [स्त्री० सौम्या] शांत।
सौम्यता–संज्ञा स्त्री० १. सौम्य होने का भाव या धर्म। २. सुशीलता।
सौम्यदर्शन–वि० सुंदर।
सौर–वि० सूर्य का।
सौर दिवस–संज्ञा पुं० एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।
सौरभ–संज्ञा पुं० सुगंध।
सौर मास–संज्ञा पुं० एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक का समय।
सौराष्ट्र–संज्ञा पुं० गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम।
सौरी–संज्ञा स्त्री० १. वह कोठरी या कमरा जिसमें स्त्री बच्चा जने। २. एक प्रकार की मछली।
सौर्य–वि० सूर्य-संबंधी।
सौष्ठव–संज्ञा पुं० १. उपयुक्तता। २. सुंदरता।
सौहँ–संज्ञा स्त्री० शपथ।
क्रि० वि० सामने।
सौहार्द, सौहार्द्य–संज्ञा पुं० मित्रता।
सौहीं–क्रि० वि० सामने।
सौहृद–संज्ञा पुं० [भाव० सौहृद्य] मित्रता।
स्कंद–संज्ञा पुं० कार्त्तिकेय, जो शिव-जी के पुत्र थे।
स्कंदगुप्त–संज्ञा पुं० गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध सम्राट्।
स्कंध–संज्ञा पुं० १. कंधा। २. शाखा।
स्कंधावार–संज्ञा पुं० १. छावनी। सेनानिवास। २. सेना।
स्कंभ–संज्ञा पुं० खंभा।
स्खलित–वि० गिरा हुआ। पतित।
स्तंभ–संज्ञा पुं० खंभा।
स्तंभक–वि० रोकनेवाला।
स्तंभन–संज्ञा पुं० रुकावट।
स्तंभित–वि० १. सुन्न। २. अवरुद्ध।
स्तन–संज्ञा पुं० स्त्रियों या मादा पशुओं

हंसवंश–संज्ञा पुं० सूर्यवंश।
हंसवाहन–संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
हंसवाहिनी–संज्ञा स्त्री० सरस्वती।
हंससुता–संज्ञा स्त्री० यमुना नदी।
हँसाई–संज्ञा स्त्री० १. हँसने की क्रिया या भाव। २. निंदा।
हँसाना–क्रि० स० दूसरे को हँसने में प्रवृत्त करना।
हंसालि–संज्ञा स्त्री० ३७ मात्राओं का एक छंद।
हंसिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हंसी"।
हँसिया–संज्ञा स्त्री० एक औज़ार जिससे खेत की फ़सल या तरकारी आदि काटी जाती है।
हंसी–संज्ञा स्त्री० हंस की मादा।
हँसी–संज्ञा स्त्री० १. हँसने की क्रिया या भाव। २. मज़ाक़। दिल्लगी। ३. उपहास। ४. बदनामी।
हँसुआ, हँसुवा–संज्ञा पुं० दे० "हँसिया"।
हँसोड़–वि० हँसी-ठट्ठा करनेवाला। दिल्लगीबाज़।
हँसौहाँ*–वि० [स्त्री० हँसौहीं] १. कुछ हँसी लिए। २. हँसने का स्वभाव रखनेवाला।
हउँ*–क्रि० अ०, सर्व० दे० "हौं"।
हक़–वि० १. सत्य। २. उचित। संज्ञा पुं० १. स्वत्व। २. वह वस्तु जिसे पाने, पास रखने या काम में लाने का न्याय से अधिकार प्राप्त हो। ३. ख़ुदा। ईश्वर। (मुसलमान)
हक़दार–संज्ञा पुं० स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।
हक़-नाहक़–अव्य० १. ज़बरदस्ती। धींगा-धींगी से। २. व्यर्थ।
हकबकाना–क्रि० अ० घबरा जाना।
हकला–वि० रुकरुक कर बोलनेवाला।
हकलाना–क्रि० अ० बोलने में अटकना। रुक रुककर बोलना।
हक़सफ़ा–संज्ञा पुं० किसी ज़मीन को ख़रीदने का औरों से ऊपर या अधिक वह हक़ जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को प्राप्त होता है।
हक़ीक़त–संज्ञा स्त्री० १. तत्त्व। सचाई। २. असल हाल।
हकीम–संज्ञा पुं० यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला। वैद्य।
हकीमी–संज्ञा स्त्री० १. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। २. हकीम का पेशा या काम।
हक्का-बक्का–वि० भौचक। ठक।
हगना–क्रि० अ० मलत्याग करना। पाख़ाना फिरना।
हगाना–क्रि० स० हगने की क्रिया कराना।
हगास–संज्ञा स्त्री० मलत्याग का वेग या इच्छा।
हचकोला–संज्ञा पुं० वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई आदि पर हिलने-डोलने से लगे।
हज–संज्ञा पुं० मुसलमानों का काबे के दर्शन के लिये मक्के जाना।
हज़म–संज्ञा पुं० पाचन। वि० पेट में पचा हुआ।
हज़रत–संज्ञा पुं० १. महात्मा। महापुरुष। २. नटखट या खोटा आदमी। (व्यंग्य)
हजामत–संज्ञा स्त्री० १. हज्जाम का काम। २. सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए

की छाती जिसमें दूध रहता है।
स्तनपान–संज्ञा पुं० स्तन में के दूध का पीना।
स्तनपायी–वि० जो माता के स्तन से दूध पीता हो।
स्तब्ध–वि० जो जड़ या अचल हो गया हो।
स्तब्धता–संज्ञा स्त्री० स्तब्ध का भाव।
स्तर–संज्ञा पुं० तह।
स्तरण–संज्ञा पुं० फैलाने या बिखेरने की क्रिया।
स्तव–संज्ञा पुं० स्तुति।
स्तवन–संज्ञा पुं० स्तुति।
स्तीर्ण–वि० विस्तृत।
स्तुत–वि० जिसकी स्तुति या प्रार्थना की गई हो।
स्तुति–संज्ञा स्त्री० प्रशंसा।
स्तुतिवाचक–संज्ञा पुं० खुशामदी।
स्तुत्य–वि० प्रशंसनीय।
स्तूप–संज्ञा पुं० १. ऊँचा ढूह या टीला। २. वह ढूह या टीला जिसके नीचे भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा के स्मृति-चिह्न संरचित हों।
स्तेय–संज्ञा पुं० चोरी।
स्तोता–वि० स्तुति करनेवाला।
स्तोत्र–संज्ञा पुं० स्तुति।
स्तोम–संज्ञा पुं० स्तुति।
स्त्री–संज्ञा स्त्री० १. नारी। २. पत्नी।
स्त्रीत्व–संज्ञा पुं० स्त्रीपन। ज़नानापन।
स्त्रीधन–संज्ञा पुं० वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो।
स्त्रीधर्म–संज्ञा पुं० रजोदर्शन।
स्त्रीप्रसंग–संज्ञा पुं० मैथुन।
स्त्रीलिंग–संज्ञा पुं० हिंदी व्याकरण के अनुसार दो लिंगों में से एक जो

स्त्री-वाचक होता है।
स्त्रीव्रत–संज्ञा पुं० पत्नीव्रत।
स्त्रीसमागम–संज्ञा पुं० मैथुन।
स्थ–प्रत्य० एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगता है।
स्थगित–वि० १. थका हुआ। २. रोका हुआ। ३. जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो।
स्थल–संज्ञा पुं० १. भूमि। २. मौका।
स्थलचर, स्थलचारी–वि० स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।
स्थलज–वि० स्थल या भूमि में उत्पन्न।
स्थलयुद्ध–संज्ञा पुं० वह युद्ध या संग्राम जो स्थल या भूभाग पर होता है।
स्थविर–संज्ञा पुं० १. वृद्ध। २. बौद्ध भिक्षु।
स्थाई–वि० दे० "स्थायी"।
स्थाणु–संज्ञा पुं० १. स्तंभ। २. शिव।
स्थान–संज्ञा पुं० १. ठहराव। २. भूमिभाग। ३. जगह। ४. मौका।
स्थानच्युत–वि० जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।
स्थानभ्रष्ट–वि० दे० "स्थानच्युत"।
स्थानापन्न–वि० एवज़ी।
स्थानीय–वि० स्थानिक।
स्थापक–वि० स्थापनकर्त्ता।
स्थापत्य–संज्ञा पुं० १. भवन-निर्माण। राजगीरी। २. वह विद्या जिसमें भवन-निर्माण-संबंधी सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है।
स्थापन–संज्ञा पुं० [वि० स्थापनीय] १. खड़ा करना। २. रखना।
स्थापना–संज्ञा स्त्री० प्रतिष्ठित या स्थित करना।
स्थापित–वि० जिसकी स्थापना की

बाल जिन्हें कटाना या मुड़ाना हो।
हज़ार–वि० जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र।
संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या या अंक।
हज़ारा–वि० (फूल) जिसमें हज़ार या बहुत अधिक पंखड़ियाँ हों। सहस्र-दल।
संज्ञा पुं० फुहारा।
हज़ारी–संज्ञा पुं० एक हज़ार सिपाहियों का सरदार।
हज़ूरी–संज्ञा पुं० बादशाह या राजा के पास सदा रहनेवाला सेवक।
हज़ो–संज्ञा स्त्री० निंदा। बुराई।
हज्ज–संज्ञा पुं० दे० "हज"।
हज्जाम–संज्ञा पुं० हजामत बनानेवाला। नाई।
हटक*†–संज्ञा स्त्री० वारण। मना करने की क्रिया।
हटकन–संज्ञा स्त्री० १. दे० "हटक"। २. चौपायों को हाँकने की छड़ी या लाठी।
हटकना–क्रि० स० मना करना। निषेध करना।
हटना–क्रि० अ० १. एक जगह से दूसरी जगह पर जा रहना। २. सामने से दूर होना।
हटवा–संज्ञा पुं० दूकानदार।
हटवाई*†–संज्ञा स्त्री० सौदा लेना या बेचना।
हटवाना–क्रि० स० हटाने का काम दूसरे से कराना।
हटवार*†–संज्ञा पुं० हाट में सौदा बेचनेवाला। दूकानदार।
हटाना–क्रि० स० एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना।
हट्ट–संज्ञा पुं० बाज़ार।
हट्टा-कट्टा–वि० [स्त्री० हट्टी-कट्टी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताज़ा।
हट्टी–संज्ञा स्त्री० दूकान।
हठ–संज्ञा पुं० [वि० हठी, हठीला] १. किसी बात के लिये अड़ना। ज़िद। २. ज़बरदस्ती।
हठधर्म–संज्ञा पुं० अपने मत पर, सत्य-असत्य का विचार छोड़कर, जमा रहना। दुराग्रह।
हठधर्मी–संज्ञा स्त्री० उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। कट्टरपन।
हठना–क्रि० अ० हठ करना। ज़िद पकड़ना।
हठयोग–संज्ञा पुं० वह योग जिसमें शरीर को साधने के लिये बड़ी कठिन कठिन मुद्राओं और आसनों आदि का विधान है।
हठात्–अव्य० १. हठपूर्वक। दुराग्रह के साथ। २. अवश्य।
हठी–वि० ज़िद्दी। टेकी।
हठीला–वि० [स्त्री० हठीली] १. हठी। २. दृढ़-प्रतिज्ञ। ३. धीर।
हड़–संज्ञा स्त्री० एक बड़ा पेड़ जिसका फल औषध के रूप में काम में लाया जाता है।
हड़कंप–संज्ञा पुं० भारी हलचल। तहलका।
हड़क–संज्ञा स्त्री० १. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिये गहरी आकुलता। २. रट। धुन।
हड़कना–क्रि० अ० किसी वस्तु के अभाव से दुःखी होना। तरसना।
हड़काना–क्रि० स० १. आक्रमण करने या तंग करने आदि के लिये पीछे लगा देना। २. तरसाना।
हड़काया–वि० पागल। (कुत्ता)

गई हो।

स्थायित्व–संज्ञा पुं० १. स्थायी होने का भाव। २. स्थिरता।

स्थायी–वि० १. ठहरनेवाला। २. बहुत दिन चलनेवाला।

स्थायी समिति–संज्ञा स्त्री० वह समिति जो किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के मध्य के काल में उसके कार्यों का संचालन करती है।

स्थावर–वि० [भाव० संज्ञा स्थावरता] अचल।

संज्ञा पुं० पहाड़।

स्थावर विष–संज्ञा पुं० स्थावर पदार्थों में होनेवाला ज़हर।

स्थित–वि० अपने स्थान पर ठहरा हुआ।

स्थितता–संज्ञा स्त्री० ठहराव।

स्थितप्रज्ञ–वि० १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. समस्त मनोविकारों से रहित।

स्थिति–संज्ञा स्त्री० १. टिकाव। २. निवास। ३. अवस्था।

स्थिर–वि० १. निश्चल। २. निश्चित। ३. शांत।

स्थिरचित्त–वि० दृढ़चित्त।

स्थिरता–संज्ञा स्त्री० स्थिर होने का भाव।

स्थिरबुद्धि–वि० जिसकी बुद्धि स्थिर हो।

स्थूल–वि० मोटा।

स्थूलता–संज्ञा स्त्री० १. स्थूल होने का भाव। २. मोटापन।

स्थैर्य–संज्ञा पुं० १. स्थिरता। २. दृढ़ता।

स्नात–वि० नहाया हुआ।

स्नातक–संज्ञा पुं० वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया हो।

स्नान–संज्ञा पुं० शरीर को स्वच्छ करने के लिये उसे जल से धोना। नहाना।

स्नानागार–संज्ञा पुं० वह कमरा जिसमें स्नान किया जाता है।

स्नायविक–वि० स्नायु-संबंधी।

स्नायु–संज्ञा स्त्री० शरीर के अंदर की वे नसें जिनसे स्पर्श और वेदना आदि का ज्ञान होता है।

स्निग्ध–वि० जिसमें स्नेह या तेल हो।

स्निग्धता–संज्ञा स्त्री० चिकनापन।

स्नेह–संज्ञा पुं० प्रेम।

स्नेहपात्र–संज्ञा पुं० प्रेमपात्र।

स्नेही–संज्ञा पुं० प्रेमी। मित्र।

स्पंदन–संज्ञा पुं० धीरे धीरे हिलना। काँपना।

स्पर्द्धा–संज्ञा स्त्री० [वि० स्पर्द्धिन्] १. संघर्ष। २. साहस।

स्पर्द्धी–वि० स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्श–संज्ञा पुं० छूना।

स्पर्शजन्य–वि० संक्रामक।

स्पर्शेंद्रिय–संज्ञा स्त्री० त्वचा।

स्पर्शी–वि० छूनेवाला।

स्पष्ट–वि० साफ़ दिखाई देने या समझ में आनेवाला।

स्पष्ट कथन–संज्ञा पुं० वह कथन जिसमें किसी की कही हुई बात ठीक उसी रूप में कही जाती है, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हुई होती है।

स्पष्टतया–क्रि० वि० स्पष्ट रूप से।

स्पष्टता–संज्ञा स्त्री० स्पष्ट होने का भाव।

स्पष्टीकरण–संज्ञा पुं० स्पष्ट करने की

हड़ताल-संज्ञा स्त्री० किसी बात से असंतोष प्रकट करने के लिये दूकानदारों का दूकानें बंद कर देना।
संज्ञा स्त्री० दे० "हरताल"।
हड़प-वि० १. निगला हुआ। २. गायब किया हुआ।
हड़पना-क्रि० स० १. मुँह में डाल लेना। २. अनुचित रीति से ले लेना।
हड़बड़-संज्ञा स्त्री० जल्दबाज़ी प्रकट करनेवाली गति-विधि।
हड़बड़ाना-क्रि० अ० जल्दी करना। आतुर होना।
क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिये कहना।
हड़बड़िया-वि० हड़बड़ी करनेवाला। जल्दबाज़।
हड़बड़ी-संज्ञा स्त्री० उतावली।
हड़ावरि,हड़ावल-संज्ञा स्त्री० हड्डियों का ढाँचा। ठठरी।
हड्डा-संज्ञा पुं० मधुमक्खियों की तरह का एक कीड़ा। बरें।
हड्डी-संज्ञा स्त्री० शरीर के अंदर की वह कठोर वस्तु जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि।
हत-वि० १. वध किया हुआ। २. विहीन।
हतक-संज्ञा स्त्री० हेठी। बेइज़्ज़ती।
हतक इज़्ज़ती-संज्ञा स्त्री० अप्रतिष्ठा। मानहानि।
हतदैव-वि० अभागा।
हतना-क्रि० स० १. वध करना। २. मारना। पीटना।
हतबुद्धि-वि० मूर्ख।
हतभागा, हतभागी-वि० [स्त्री० हतभागिन, हतभागिनी] अभागा।
हतभाग्य-वि० भाग्यहीन।
हता०†-क्रि० स० था।
हताश-वि० निराश। नाउम्मीद।
हताहत-वि० मारे गए और घायल।
हतोत्साह-वि० जिसे कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।
हत्थ०-संज्ञा पुं० दे० "हाथ"।
हत्था-संज्ञा पुं० औज़ार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है। दस्ता।
हत्थी-संज्ञा स्त्री० औज़ार या हथियार का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता है।
हत्थे-क्रि० वि० हाथ में।
हत्या-संज्ञा स्त्री० १. मार डालने की क्रिया। वध। २. झंझट।
हत्यारा-संज्ञा पुं० [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करनेवाला।
हत्यारी-संज्ञा स्त्री० प्राणवध का दोष।
हथ-संज्ञा पुं० 'हाथ' का संक्षिप्त रूप।
हथकंडा-संज्ञा पुं० १. हाथ की सफ़ाई। २. चालाकी का ढंग।
हथकड़ी-संज्ञा स्त्री० लोहे का वह कड़ा जो क़ैदी के हाथ में पहनाया जाता है।
हथनाल-संज्ञा पुं० वह तोप जो हाथी पर चलती थी। गजनाल।
हथनी-संज्ञा स्त्री० हाथी की मादा।
हथफूल-संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना।
हथफेर-संज्ञा पुं० थोड़े दिनों के लिये लिया या दिया हुआ क़र्ज़।
हथलेवा-संज्ञा पुं० विवाह में वर का कन्या का हाथ अपने हाथ में लेने की रीति। पाणिग्रहण।
हथवास-संज्ञा पुं० नाव चलाने के सामान; जैसे—पतवार, डाँड़ा।

क्रिया ।
स्पृश-वि० स्पर्श करनेवाला ।
स्पृश्य-वि० जो स्पर्श करने के योग्य हो।
स्पृष्ट-वि० छूआ हुआ ।
स्पृहणीय-वि० वांछनीय ।
स्पृहा-संज्ञा स्त्री० इच्छा।
स्पृही-वि० इच्छा करनेवाला ।
स्फटिक-संज्ञा पुं० एक प्रकार का सफ़ेद बहुमूल्य पत्थर जो काँच के समान पारदर्शी होता है ।
स्फार-वि० प्रचुर।
स्फीत-वि० १. वर्द्धित। २. फूला हुआ।
स्फुट-वि० १. प्रकाशित । २. खिला हुआ । ३. फुटकर ।
स्फुटित-वि० विकसित ।
स्फुरण-संज्ञा पुं० किसी पदार्थ का ज़रा ज़रा हिलना ।
स्फुरित-वि० जिसमें स्फुरण हो ।
स्फुलिंग-संज्ञा पुं० चिनगारी ।
स्फूर्त्ति-संज्ञा स्त्री० तेज़ी ।
स्फोट-संज्ञा पुं० १. फूटना। २. धड़ाका ।
स्फोटक-संज्ञा पुं० फोड़ा ।
स्फोटन-संज्ञा पुं० १. अंदर से फोड़ना । २. विदारण ।
स्मर-संज्ञा पुं० कामदेव ।
स्मरण-संज्ञा पुं० याद आना ।
स्मरणशक्ति-संज्ञा स्त्री० याददाश्त।
स्मरणीय-वि० स्मरण रखने योग्य ।
स्मरारि-संज्ञा पुं० महादेव ।
स्मशान-संज्ञा पुं० दे० "श्मशान" ।
स्मारक-वि० स्मरण करानेवाला । संज्ञा पुं० यादगार ।
स्मित-संज्ञा पुं० धीमी हँसी । वि० खिला हुआ ।
स्मृत-वि० याद किया हुआ ।
स्मृति-संज्ञा स्त्री० १. स्मरण । २. हिंदुओं के धर्म्मशास्त्र।
स्मृतिकार-संज्ञा पुं० स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला ।
स्यंदन-संज्ञा पुं० १. रथ । २. युद्ध में काम आनेवाला रथ ।
स्यमंतक-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण को लगा था। (पुराण)
स्यात्-अव्य० कदाचित्।
स्याद्वाद-संज्ञा पुं० जैन दर्शन । अनेकांतवाद ।
स्यानप-संज्ञा पुं० दे० "स्यानपन" ।
स्यानपन-संज्ञा पुं० चतुरता । बुद्धिमानी ।
स्याना-वि० [स्त्री० स्यानी] १. चतुर। २. चालाक । ३. वयस्क ।
स्यापा-संज्ञा पुं० मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति ।
स्यावास॰-अव्य० दे० "शाबाश" ।
स्याम॰-संज्ञा पुं०, वि० दे० "श्याम"। संज्ञा पुं० भारतवर्ष के पूर्व का एक देश ।
स्यामल-वि० दे० "श्यामल" ।
स्यामा॰-संज्ञा स्त्री० दे० "श्यामा" ।
स्यार†-संज्ञा पुं० [स्त्री० स्यारनी] गीदड़। श्रृगाल ।
स्यारी-संज्ञा स्त्री० सियार की मादा। गीदड़ी ।
स्याल-संज्ञा पुं० पत्नी का भाई। साला। संज्ञा पुं० दे० "सियार" या "स्यार"
स्यालिया†-संज्ञा पुं० गीदड़ ।
स्याह-वि० काला । कृष्ण वर्ण का।

हथसार–संज्ञा स्त्री० वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। फीलखाना।

हथाहथी०†–अव्य० १. हाथों-हाथ। २. शीघ्र।

हथिनी–संज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

हथिया–संज्ञा पुं० हस्त नक्षत्र।

हथियाना–क्रि० स० १. हाथ में करना। २. धोखा देकर ले लेना।

हथियार–संज्ञा पुं० १. हाथ से पकड़कर काम में लाने की साधन-वस्तु। औज़ार। २. अस्त्र-शस्त्र।

हथियारबंद–वि० जो हथियार बाँधे हो। सशस्त्र।

हथेरी०†–संज्ञा स्त्री० दे० "हथेली"।

हथेली–संज्ञा स्त्री० हाथ की कलाई का चौड़ा सिरा जिसमें उँगलियाँ लगी होती हैं। करतल।

हथौटी–संज्ञा स्त्री० किसी काम में हाथ लगाने का ढंग।

हथौड़ा–संज्ञा पुं० [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] वह औज़ार जिससे कारीगर किसी धातुखंड को तोड़ते, पीटते या गढ़ते हैं। मारतौल।

हथौड़ी–संज्ञा स्त्री० छोटा हथौड़ा।

हथ्यार०†–संज्ञा पुं० दे० "हथियार"।

हद–संज्ञा स्त्री० १. सीमा। मर्यादा। २. किसी वस्तु या बात का सबसे अधिक परिणाम जो ठहराया गया हो।

हदीस–संज्ञा स्त्री० मुसलमानों का वह धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है।

हनन–संज्ञा पुं० [वि० हननीय, हनित] १. मार डालना। २. आघात करना।

हनना†०–क्रि० स० १. वध करना। २. प्रहार करना।

हनिवंत०†–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुँव–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनु–संज्ञा स्त्री० १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। ०२. ठुड्डी। चिबुक।

हनुमंत–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हनुमान्–संज्ञा पुं० पंपा के एक वीर जिन्होंने सीता-हरण के उपरांत रामचंद्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी। महावीर।

हनूमान्–संज्ञा पुं० दे० "हनुमान्"।

हप–संज्ञा पुं० मुँह में चट से लेकर ओंठ बंद करने का शब्द।

हफ़्ता–संज्ञा पुं० सप्ताह।

हबकना†–क्रि० अ० खाने या दाँत काटने के लिये झट से मुँह खोलना।

हबर हबर–क्रि० वि० जल्दी जल्दी। उतावली से।

हबराना†०–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हबशी–संज्ञा पुं० हबश देश का निवासी जो बहुत काला होता है।

हबूब–संज्ञा पुं० पानी का बबूला। बुल्ला।

हब्बा-डब्बा–संज्ञा पुं० ज़ोर ज़ोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है।

हब्स–संज्ञा पुं० क़ैद।

हम–सर्व० "मैं" का बहुवचन।

हमजोली–संज्ञा पुं० साथी। संगी।

हमता०–संज्ञा स्त्री० अहंभाव। अहंकार।

हमदर्द–संज्ञा पुं० दुःख में सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी–संज्ञा स्त्री० सहानुभूति।

हमराह–अव्य० साथ। संग में।

हमल–संज्ञा पुं० स्त्री के पेट में बच्चे

स्याहा–संज्ञा पुं० दे० "सियाहा"।
स्याही–संज्ञा स्त्री० १. रोशनाई। २. कालापन। कालिमा।
संज्ञा स्त्री० साही। (जंतु)
स्यों, स्यो–अव्य० १. सहित। २. पास।
स्रक्–संज्ञा स्त्री०, पुं० फूलों की माला।
स्रग–संज्ञा स्त्री०, पुं० दे० "स्रक्"।
स्रज–संज्ञा स्त्री० माला।
स्रमित–वि० दे० "श्रमित"।
स्रवण–संज्ञा पुं० १. बहाव। प्रवाह। २. कच्चे गर्भ का गिरना।
स्रवना–क्रि० अ० बहना। चूना। क्रि० स० बहाना। टपकाना।
स्रष्टा–संज्ञा पुं० सृष्टि या विश्व की रचना करनेवाले, ब्रह्मा।
वि० सृष्टि रचनेवाला।
स्राप–संज्ञा पुं० दे० "शाप"।
स्रापित–वि० दे० "शापित"।
स्राव–संज्ञा पुं० बहना। झरना। क्षरण।
स्रावक–वि० बहाने, चुआने या टपकानेवाला।
स्रावी–वि० बहानेवाला।
स्रुत–वि० दे० "श्रुत"।
स्रुतिमाथ–संज्ञा पुं० विष्णु।
स्रुवा–संज्ञा स्त्री० लकड़ी की एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में घी की आहुति देते हैं।
स्रेनी–संज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणी"।
स्रोत–संज्ञा पुं० पानी का बहाव या झरना। धारा।
स्रोतस्विनी–संज्ञा स्त्री० नदी।
स्रोन–संज्ञा पुं० दे० "श्रवण"।
स्वः–संज्ञा पुं० स्वर्ग।
स्व–वि० अपना।
स्वकीया–संज्ञा स्त्री० अपने ही पति में अनुराग रखनेवाली स्त्री।
स्वगत–क्रि० वि० आप ही आप। अपने आप से। (कहना या बोलना)
स्वगत-कथन–संज्ञा पुं० नाटक में पात्र का आप ही आप इस प्रकार बोलना कि मानों वह किसी को सुनाना नहीं चाहता और न कोई उसकी बात सुनता ही है।
स्वच्छंद–वि० १. जो अपनी इच्छा के अनुसार सब कार्य्य करे। २. निरंकुश।
स्वच्छंदता–संज्ञा स्त्री० स्वतंत्रता।
स्वच्छ–वि० जिसमें किसी प्रकार की गंदगी न हो। निर्मल।
स्वच्छता–संज्ञा स्त्री० स्वच्छ होने का भाव। विशुद्धता।
स्वजन–संज्ञा पुं० १. अपने परिवार के लोग। २. रिश्तेदार।
स्वजन्मा–वि० अपने आप से उत्पन्न। (ईश्वर)
स्वजात–वि० अपने से उत्पन्न।
संज्ञा पुं० पुत्र।
स्वजाति–संज्ञा स्त्री० अपनी जाति।
स्वजातीय–वि० अपनी जाति का।
स्वतंत्र–वि० १. जो किसी के अधीन न हो। स्वाधीन। २. मनमानी करनेवाला।
स्वतंत्रता–संज्ञा स्त्री० स्वतंत्र होने का भाव। आज़ादी।
स्वतः–अव्य० अपने आप।
स्वत्व–संज्ञा पुं० १. अधिकार। हक। २. "स्व" या अपने होने का भाव।
स्वत्वाधिकारी–संज्ञा पुं० स्वामी। मालिक।

का होना। गर्भ।

हमला–संज्ञा पुं० १. लड़ाई करने के लिये चढ़ दौड़ना। धावा। २. आक्रमण।

हमवार–वि० जिसकी सतह बराबर हो। समतल।

हमसर–संज्ञा पुं० गुण, बल या पद में समान व्यक्ति।

हमसरी–संज्ञा स्त्री० बराबरी।

हमाम–संज्ञा पुं० दे० "हम्माम"।

हमारा–सर्व० [स्त्री० हमारी] 'हम' का संबंध कारक रूप।

हमाल–संज्ञा पुं० १. बोझ उठानेवाला। २. मज़दूर। कुली।

हमाहमी–संज्ञा स्त्री० अपने अपने लाभ का आतुर प्रयत्न।

हमीर–संज्ञा पुं० दे० "हम्मीर"।

हमें–सर्व० 'हम' का कर्म और संप्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेल–संज्ञा स्त्री० सिक्कों आदि की माला जो गले में पहनी जाती है।

हमेव☼†–संज्ञा पुं० अहंकार।

हमेशा–अव्य० सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा।

हमेस☼–अव्य० दे० "हमेशा"।

हम्माम–संज्ञा पुं० नहाने की वह कोठरी जिसमें गरम पानी रखा रहता है। स्नानागार।

हम्मीर–संज्ञा पुं० रणथंभोरगढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था।

हय–संज्ञा पुं० [स्त्री० हया, हयी] घोड़ा। अश्व।

हयना☼–क्रि० स० वध करना। मार डालना।

हयनाल–संज्ञा स्त्री० वह तोप जिसे घोड़े खींचते हैं।

हयमेध–संज्ञा पुं० अश्वमेध यज्ञ।

हया–संज्ञा स्त्री० लज्जा। शर्म।

हयात–संज्ञा स्त्री० ज़िंदगी। जीवन।

हयादार–संज्ञा पुं० [भाव० हयादारी] लज्जाशील। शर्मदार।

हर–वि० हरण करनेवाला।
संज्ञा पुं० १. शिव। महादेव। २. वह संख्या जिसमें भाग दें। (गणित)
† संज्ञा पुं० हल।
वि० प्रत्येक।

हरकत–संज्ञा स्त्री० १. गति। चाल। २. चेष्टा। ३. दुष्ट व्यवहार।

हरकना☼†–क्रि० स० दे० "हटकना"।

हरकारा–संज्ञा पुं० १. चिट्ठी-पत्री ले जानेवाला। २. डाकिया।

हरख☼‡–संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

हरखना–क्रि० अ० हर्षित होना।

हरखाना–क्रि० अ० दे० "हरखना"।
क्रि० स० प्रसन्न करना।

हरगिज़–अव्य० किसी दशा में भी। कदापि।

हरचंद–अव्य० कितना ही। बहुत या बहुत बार।

हरज–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज"।

हरजा–संज्ञा पुं० दे० "हर्ज" व "हरजाना"।

हरजाई–संज्ञा पुं० १. हर जगह घूमनेवाला। २. आवारा।
संज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

हरजाना–संज्ञा पुं० हानि का बदला। क्षतिपूर्ति।

हरट्ट☼–वि० हृष्ट-पुष्ट। मज़बूत।

हरण–संज्ञा पुं० छीनना, लूटना या चुराना।

स्वदेश-संज्ञा पुं० मातृभूमि। वतन।
स्वदेशी-वि० अपने देश का।
स्वधर्म-संज्ञा पुं० अपना धर्म।
स्वधा-अव्य० एक शब्द जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है।
स्वन-संज्ञा पुं० शब्द। आवाज़।
स्वपच०-संज्ञा पुं० दे० "श्वपच"।
स्वपन, स्वपना०†-संज्ञा पुं० दे० "स्वप्न"।
स्वप्न-संज्ञा पुं० १. निद्रा। २. निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना।
स्वप्नगृह-संज्ञा पुं० शयनागार।
स्वप्नदोष-संज्ञा पुं० निद्रावस्था में वीर्यपात होना, जो एक प्रकार का रोग है।
स्वभाउ०-संज्ञा पुं० दे० "स्वभाव"।
स्वभाव-संज्ञा पुं० १. सदा रहनेवाला मूल या प्रधान गुण। तासीर। २. प्रकृति।
स्वभावज-वि० प्राकृतिक। स्वाभाविक।
स्वभावतः-अव्य० स्वभाव से। सहज ही।
स्वभावसिद्ध-वि० सहज।
स्वभू-संज्ञा पुं० ब्रह्मा।
स्वयं-अव्य० १. आप। २. आप से आप।
स्वयंप्रकाश-संज्ञा पुं० १. वह जो बिना किसी दूसरे की सहायता के प्रकाशित हो। २. परमात्मा।
स्वयंभू-संज्ञा पुं० ब्रह्मा। वि० जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो।
स्वयंवर-संज्ञा पुं० प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध विधान जिसमें कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिये स्वयं वर चुनती थी।
स्वयंवरण-संज्ञा पुं० दे० "स्वयंवर"।
स्वयंवरा-संज्ञा स्त्री० अपने इच्छानुसार अपना पति नियत करनेवाली स्त्री। पतिंवरा।
स्वयंसिद्ध-वि० (बात) जिसकी सिद्धि के लिये किसी तर्क या प्रमाण की आवश्यकता न हो।
स्वयंसेवक-संज्ञा पुं० [स्त्री० स्वयंसेविका] वह जो बिना किसी पुरस्कार के किसी कार्य में अपनी इच्छा से योग दे। स्वेच्छासेवक।
स्वयमेव-क्रि० वि० स्वयं ही।
स्वर्-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. आकाश।
स्वर-संज्ञा पुं० १. प्राणी के कंठ से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। २. संगीत में वह शब्द जिसका कोई निश्चित रूप हो; यह सात प्रकार का माना गया है। सुर। ३. वह अक्षर जिसमें व्यंजन का मेल न हो। (व्या०)। ४. आकाश।
स्वरभंग-संज्ञा पुं० आवाज़ का बैठना जो एक रोग माना गया है।
स्वरमंडल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का वाद्य जिसमें तार लगे होते हैं।
स्वरशास्त्र-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें स्वर-संबंधी बातों का विवेचन हो।
स्वरस-संज्ञा पुं० पत्ती आदि को कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस।
स्वरांत-वि० (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो; जैसे—माला, टोपी।
स्वराज्य-संज्ञा पुं० वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी स्वयं ही अपने

हरता धरता–संज्ञा पुं० सब बातों का अधिकार रखनेवाला।

हरताल–संज्ञा स्त्री० पीले रंग का एक खनिज पदार्थ जो लिखे अक्षर मिटाने और दवा आदि के काम में आता है।

हरद॰–संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरद्वान–संज्ञा पुं० एक प्राचीन स्थान जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वार–संज्ञा पुं० दे० "हरिद्वार"।

हरना–क्रि० स० १. छीनना। २. उठाकर ले जाना।
॰।संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

हरनाकस॰‡–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हरनाच्छ।॰–संज्ञा पुं० "हिरण्याक्ष"।

हरनी–संज्ञा स्त्री० हिरन की मादा। मृगी।

हरनौटा–संज्ञा पुं० हिरन का बच्चा।

हरफ़–संज्ञा पुं० अक्षर। वर्ण।

हरफ़ा रेवड़ी–संज्ञा स्त्री० कमरख की जाति का एक पेड़ और उसका फल।

हरबराना॰।–क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हरबा–संज्ञा पुं० हथियार।

हरबोंग–वि० १. गँवार। अक्खड़। २. मूर्ख।

हरम–संज्ञा पुं० अंतःपुर। जनानखाना।

हरमज़दगी–संज्ञा स्त्री० शरारत। नटखटी।

हरवल॰–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।

हरवली–संज्ञा स्त्री० सेना की अध्यक्षता। फ़ौज की अफ़सरी।

हरवा‡–संज्ञा पुं० दे० "हार"।

हरवाना–क्रि० अ० जल्दी करना।
क्रि० स० 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप।

हरवाहा–संज्ञा पुं० दे० "हलवाही"।

हरष॰‡–संज्ञा पुं० दे० "हर्ष"।

हरखना॰–क्रि० अ० १. हर्षित होना। २. पुलकित होना।

हरषाना॰–क्रि० अ० १. प्रसन्न होना। २. रोमांच से प्रफुल्ल होना।
क्रि० स० हर्षित करना।

हरसिंगार–संज्ञा पुं० एक पेड़ जिसके फूल में उत्तम भीनी महक और नारंगी रंग की डाँड़ी होती है। परजाता।

हरहाई–वि० स्त्री० नटखट (गाय)।

हरहार–संज्ञा पुं० १. (शिव का हार) सर्प। साँप। २ शेषनाग।

हरा–वि० [स्त्री० हरी] १. घास या पत्ती के रंग का। हरित। २. प्रफुल्ल।
॰‡संज्ञा पुं० हार। माला।

हराई–संज्ञा स्त्री० हारने की क्रिया या भाव।

हराना–क्रि० स० १. युद्ध में प्रतिद्वंद्वी को पीछे हटाना। २. थकाना।

हराम–वि० निषिद्ध। विधि-विरुद्ध। बुरा।
संज्ञा पुं० १. वह वस्तु या बात जिसका धर्म्म-शास्त्र में निषेध हो। २. अधर्म।

हरामखोर–संज्ञा पुं० पाप की कमाई खानेवाला। मुफ़्तखोर।

हरामज़ादा–संज्ञा पुं० १. दोगला। २. दुष्ट।

हरामी–वि० १. व्यभिचार से उत्पन्न। २. पाजी।

हरारत–संज्ञा स्त्री० १. गर्मी। २. हलका ज्वर।

हरावल–संज्ञा पुं० सिपाहियों का वह दल जो सबके आगे रहता है।

हरास–संज्ञा पुं० १. भय। डर। २.

देश का सब प्रबंध करते हों।
स्वरित-संज्ञा पुं० वह स्वर जिसका उच्चारण न बहुत ज़ोर से हो और न बहुत धीरे से हो।
वि० १. स्वर से युक्त। २. गूँजता हुआ।
स्वरूप-संज्ञा पुं० १. आकार। २. मूर्त्ति या चित्र आदि।
वि० खूबसूरत।
अव्य० तौर पर।
स्वरूपज्ञ-संज्ञा पुं० तत्त्वज्ञ।
स्वरूपवान्-वि० [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुंदर।
स्वरोद-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा जिसमें तार लगे होते हैं।
स्वरोदय-संज्ञा पुं० वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं।
स्वर्गंगा-संज्ञा स्त्री० मंदाकिनी।
स्वर्ग-संज्ञा पुं० नाक। देवलोक।
स्वर्गगमन-संज्ञा पुं० मरना।
स्वर्गगामी-वि० १. स्वर्ग जानेवाला। २. मृत।
स्वर्गतरु-संज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।
स्वर्गनदी-संज्ञा स्त्री० आकाशगंगा।
स्वर्गपुरी-संज्ञा स्त्री० अमरावती।
स्वर्गवधू-संज्ञा स्त्री० अप्सरा।
स्वर्गवास-संज्ञा पुं० स्वर्ग को प्रस्थान करना।
स्वर्गवासी-वि० [स्त्री० स्वर्गवासिनी] जो मर गया हो। मृत।
स्वर्गारोहण-संज्ञा पुं० १. स्वर्ग की ओर जाना। २. मरना।
स्वर्गीय-वि० [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २. जो मर गया हो। मृत।
स्वर्ण-संज्ञा पुं० सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु।
स्वर्णकमल-संज्ञा पुं० लाल कमल।
स्वर्णकार-संज्ञा पुं० सुनार।
स्वर्णगिरि-संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
स्वर्णमय-वि० जो बिलकुल सोने का हो।
स्वर्णमाक्षिक-संज्ञा पुं० दे० "सोना-मक्खी"।
स्वर्णमुद्रा-संज्ञा स्त्री० अशरफ़ी।
स्वर्णयूथिका-संज्ञा स्त्री० पीली जूही।
स्वर्धुनी-संज्ञा स्त्री० गंगा।
स्वर्नदी-संज्ञा स्त्री० स्वर्गंगा।
स्वर्वैद्य-संज्ञा पुं० अश्विनीकुमार।
स्वल्प-वि० बहुत थोड़ा।
स्ववरनः-संज्ञा पुं० दे० "सुवर्ण"।
स्वसा-संज्ञा स्त्री० बहिन।
स्वस्ति-अव्य० कल्याण हो। मंगल हो। (आशीर्वाद)
संज्ञा स्त्री० कल्याण।
स्वस्तिक-संज्ञा पुं० प्राचीन काल का एक मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों पर मांगलिक द्रव्यों से अंकित किया जाता था। आज-कल इसका मुख्य आकार यह प्रचलित है 卐।
स्वस्तिवाचन-संज्ञा पुं० [वि० स्वस्ति-वाचक] कर्मकांड के अनुसार पूजन और मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ।
स्वस्त्ययन-संज्ञा पुं० एक धार्मिक कृत्य जो किसी विशिष्ट कार्य्य में शुभ की स्थापना के विचार से किया जाता है।
स्वस्थ-वि० १. नीरोग। तंदुरुस्त।

नैराश्य। नाउम्मेदी।
हरि-संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. घोड़ा। ३. बंदर। ४. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण।
हरिअर॰‡-वि० हरा। सब्ज़।
हरिअरी‡॰-संज्ञा स्त्री० दे० "हरिआली"।
हरिआली-संज्ञा स्त्री० घास और पेड़-पौधों का फैला हुआ समूह।
हरिकीर्त्तन-संज्ञा पुं० भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान।
हरिचंद-संज्ञा पुं० दे० "हरिश्चंद्र"।
हरिजन-संज्ञा पुं० १. ईश्वर का भक्त। २. अंत्यज। (आधुनिक)
हरिण-संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिणी] मृग। हिरन।
हरिणाक्षी-वि० स्त्री० हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखोंवाली। सुंदरी।
हरिणी-संज्ञा स्त्री० हिरन की मादा।
हरित्, हरित-वि० हरा। सब्ज़।
हरितमणि-संज्ञा पुं० मरकत। पन्ना।
हरितालिका-संज्ञा स्त्री० भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया। तीज। (स्त्रियों का व्रत)
हरिद्रा-संज्ञा स्त्री० हलदी।
हरिद्वार-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ से गंगा पहाड़ों को छोड़कर मैदान में आती है।
हरिधाम-संज्ञा पुं० वैकुंठ।
हरिन-संज्ञा पुं० [स्त्री० हरिनी] खुर और सींगवाला एक चौपाया जो प्रायः सुनसान मैदानों, जंगलों और पहाड़ों में रहता है। मृग।
हरिनग-संज्ञा पुं० सर्प का मणि।
हरिनाक्ष-संज्ञा पुं० दे० "हिरण्याक्ष"।
हरिनाम-संज्ञा पुं० भगवान् का नाम।
हरिनी-संज्ञा स्त्री० स्त्री जाति का मृग।
हरिपद-संज्ञा पुं० विष्णु का लोक। वैकुंठ।
हरिपुर-संज्ञा पुं० वैकुंठ।
हरिप्रिया-संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. तुलसी।
हरिप्रीता-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शुभ मुहूर्त्त। (ज्योतिष)
हरिभक्त-संज्ञा पुं० ईश्वर का प्रेमी।
हरिभक्ति-संज्ञा स्त्री० ईश्वर-प्रेम।
हरियर‡-वि० दे० "हरा"।
हरियाई‡॰-संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली"।
हरियाना-संज्ञा पुं० हिसार और रोहतक के आस-पास का प्रांत।
हरियाली-संज्ञा स्त्री० १. हरे रंग का फैलाव। २. हरे हरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार। ३. दूब।
हरिवंश-संज्ञा पुं० एक ग्रंथ जिसमें कृष्ण तथा उनके कुल के यादवों का वृत्तांत है।
हरिवासर-संज्ञा पुं० १. रविवार। २. विष्णु का दिन, एकादशी।
हरिशयनी-संज्ञा स्त्री० आषाढ़ शुक्ल एकादशी।
हरिश्चंद्र-संज्ञा पुं० सूर्यवंश का प्रसिद्ध दानी और सत्यव्रती राजा।
हरिस-संज्ञा स्त्री० हल का वह लट्ठा जिसके एक छोर पर फालवाली लकड़ी और दूसरे छोर पर जूआ रहता है। ईषा।
हरिहर क्षेत्र-संज्ञा पुं० बिहार में एक तीर्थस्थान जहाँ कार्त्तिक पूर्णिमा को भारी मेला होता है।
हरीतकी-संज्ञा स्त्री० हड़। हर्रे।
हरीरा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पेय

पदार्थ जो दूध में मसाले और मेवे डालकर औटाने से बनता है।
हरुग्रा†०–वि० हलका।
हरुग्रा†०–वि० दे० "हलका"।
हरुआई†–संज्ञा स्त्री० १. हलकापन। २. फुरती।
हरुआना†–क्रि० अ० १. हलका होना। २. फुरती करना।
हरुए†०–क्रि० वि० धीरे धीरे। आहिस्ता से।
हरूफ०–संज्ञा पुं० अक्षर।
हरे०–क्रि० वि० धीरे से। आहिस्ता से। मंद।
हरेव–संज्ञा पुं० मंगोलों का देश।
हरेवा–संज्ञा पुं० हरे रंग की एक चिड़िया। हरी बुलबुल।
हरौल–संज्ञा पुं० दे० "हरावल"।
हर्ज–संज्ञा पुं० काम में रुकावट। बाधा। अड़चन।
हर्ता–संज्ञा पुं० [स्त्री० हर्त्री] हरण करनेवाला।
हर्फ–संज्ञा पुं० दे० "हरफ़"।
हर्र–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।
हर्रे–संज्ञा स्त्री० दे० "हड़"।
हर्ष–संज्ञा पुं० १. प्रफुल्लता या भय के कारण रोंगटों का खड़ा होना। २. खुशी।
हर्षण–संज्ञा पुं० प्रफुल्लता या भय से रोंगटों का खड़ा होना।
हर्षवर्द्धन–संज्ञा पुं० भारत का वैस क्षत्रिय-वंशी एक बौद्ध सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे।
हर्षाना०–क्रि० अ० आनंदित होना। प्रसन्न होना।
क्रि० स० हर्षित करना।
हर्षित–वि० आनंदित।
हल्–संज्ञा पुं० शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो।
हलंत–संज्ञा पुं० दे० "हल्"।
हल–संज्ञा पुं० १. वह औज़ार जिससे ज़मीन जोती जाती है। सीर। २. गणित करना। ३. किसी समस्या का समाधान।
हलकंप–संज्ञा पुं० १. हलचल। २. चारों ओर फैली हुई घबराहट।
हलक़–संज्ञा पुं० गले की नली। कंठ।
हलकई†–संज्ञा स्त्री० १. हलकापन। २. हेठी।
हलकना†०–क्रि० अ० १. छलकना। २ हिलोरें लेना।
हलका–वि० [स्त्री० हलकी] १. जो तौल में भारी न हो। २. जो गहरा या चटकीला न हो। ३. घटिया।
हलक़ा–संज्ञा पुं० १. मंडल। गोलाई। २. घेरा। ३. कई गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो।
हलकान†–वि० दे० "हैरान"।
हलकाना†–क्रि० अ० हलका होना। बोझ कम होना।
क्रि० स० हिलोरा देना।
हलकापन–संज्ञा पुं० हलका होने का भाव। लघुता।
हलकारा†–संज्ञा पुं० दे० "हरकारा"।
हलकोरा†–संज्ञा पुं० तरंग। लहर।
हलचल–संज्ञा स्त्री० लोगों के बीच फैली हुई अधीरता, घबराहट, दौड़-धूप, शोर-गुल आदि। खलबली। धूम।

संज्ञा पुं० १. हिमालय । २. कैलाश पर्वत ।

हिमांशु–संज्ञा पुं० चंद्रमा ।

हिमाक़त–संज्ञा स्त्री० १. बेवकूफ़ी । २. दुस्साहस ।

हिमाचल–संज्ञा पुं० हिमालय ।

हिमाद्रि–संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़ ।

हिमामदस्ता–संज्ञा पुं० खरल और बट्टा ।

हिमायत–संज्ञा स्त्री० पक्षपात ।

हिमायती–वि० १. समर्थन या मंडन करनेवाला । २. मददगार ।

हिमालय–संज्ञा पुं० भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है ।

हिम्मत–संज्ञा स्त्री० कठिन या कष्ट-साध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता । साहस ।

हिम्मती–वि० साहसी ।

हिय–संज्ञा पुं० हृदय । मन ।

हियरा–संज्ञा पुं० हृदय ।

हियाँ†–अव्य० दे० "यहाँ" ।

हिया–संज्ञा पुं० हृदय । मन ।

हियाव–संज्ञा पुं० साहस । हिम्मत ।

हिरकना†ॐ–क्रि० अ० पास होना । निकट जाना ।

हिरण*†–संज्ञा पुं० दे० "हिरन" ।

हिरण्य–संज्ञा पुं० सोना । स्वर्ण ।

हिरण्यकशिपु–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था । भगवान् ने नृसिंहा-वतार धारण करके इसे मारा था ।

हिरण्यकश्यप–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु" ।

हिरण्यगर्भ–संज्ञा पुं० १. वह ज्योति-र्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है । २. विष्णु ।

हिरण्यनाभ–संज्ञा पुं० १. विष्णु । २. मैनाक पर्वत ।

हिरण्यरेता–संज्ञा पुं० १. अग्नि । २. सूर्य । ३. शिव ।

हिरण्याक्ष–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था ।

हिरन–संज्ञा पुं० हरिन । मृग ।

हिरनाकुस–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्य-कशिपु" ।

हिरफ़त–संज्ञा स्त्री० १. हाथ की कारी-गरी । २ चालबाज़ी । धूर्तता ।

हिरमज़ी–संज्ञा स्त्री० लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी ।

हिरसा*†–संज्ञा स्त्री० दे० "हिर्स" ।

हिराना†–क्रि० अ० १. खो जाना । २. न रह जाना ।

क्रि० स० भूल जाना । ध्यान में न रहना ।

हिरासत–संज्ञा स्त्री० १. पहरा । चौकी । २. क़ैद । नज़रबंदी ।

हिर्स–संज्ञा स्त्री० १. लालच । तृष्णा । लोभ । २. स्पर्धा ।

हिलकी†ॐ–संज्ञा स्त्री० हिचकी ।

हिलकोर, हिलकोरा–संज्ञा पुं० हिलोर । लहर ।

हिलग–संज्ञा स्त्री० लगाव । संबंध ।

हिलगना–क्रि० अ० १. अटकना । २. फँसना । ३. पास होना । सटना ।

हिलगाना–क्रि० स० १. अटकाना । २. फँसाना ।

हिलना–क्रि० अ० १. चलायमान होना । २. काँपना । ३. परिचित और अनुरक्त होना ।

हलदी–संज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी जड़, जो गाँठ के रूप में होती है, मसाले के रूप में और रँगाई के काम में भी आती है। २. उक्त पौधे की गाँठ जो मसाले आदि के काम में आती है।

हलधर–संज्ञा पुं० बलरामजी।

हलना†⊛–क्रि० अ० १. हिलना डोलना। २. पानी में पैठना। (पूर्वी)

हलफ़–संज्ञा पुं० किसी पवित्र वस्तु की शपथ। क़सम।

हलबल†⊛–संज्ञा पुं० खलबली। हलचल।

हलबी, हलब्बी–वि० हलब देश का (शीशा)। बढ़िया (शीशा)।

हलराना–क्रि० स० (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना।

हलवा–संज्ञा पुं० एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा भोजन। मोहनभोग।

हलवाई–संज्ञा पुं० [स्त्री० हलवाइन] मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह, हलवाहा–संज्ञा पुं० वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो।

हलहलाना†–क्रि० स० खूब ज़ोर से हिलाना-डुलाना। झकझोरना।

हलाकान†–वि० [संज्ञा हलाकानी] परेशान। हैरान।

हला-भला–संज्ञा पुं० १. निबटारा। २. परिणाम।

हलायुध–संज्ञा पुं० बलराम।

हलाल–संज्ञा पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।

हलालख़ोर–संज्ञा पुं० १. मिहनत करके जीविका करनेवाला। २. भंगी।

हलाहल–संज्ञा पुं० १. वह प्रचंड विष जो समुद्र-मथन के समय निकला था। २. एक ज़हरीला पौधा।

हलुक†⊛–वि० दे० "हलका"।

हलोरना–क्रि० स० १. पानी में हाथ डालकर उसे हिलाना-डुलाना। २. मथना। ३. अनाज फटकना।

हलोरा†⊛–संज्ञा पुं० दे० "हिलोरा"।

हल्दी–संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला–संज्ञा पुं० १. चिल्लाहट। शोरगुल। २. आक्रमण। हमला।

हवन–संज्ञा पुं० किसी देवता के निमित्त मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का कृत्य। होम।

हवलदार–संज्ञा पुं० १. बादशाही ज़माने का वह अफ़सर जो राजकर की ठीक ठीक वसूली और फ़सल की निगरानी के लिये तनात रहता था। २. फ़ौज में एक सबसे छोटा अफ़सर।

हवस–संज्ञा स्त्री० लालसा। कामना।

हवा–संज्ञा स्त्री० वायु। पवन।

हवाई–वि० १. हवा का। वायु-संबंधी। २. हवा में चलनेवाला। ३. कल्पित या झूठ। निर्मूल। संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाज़ी

हवाचक्की–संज्ञा स्त्री० आटा पीसने की वह चक्की जो हवा के ज़ोर से चलती हो।

हवादार–वि० जिसमें हवा आने-जाने के लिये खिड़कियाँ या दरवाज़े हों। संज्ञा पुं० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हलका तख्त।

हवाल–संज्ञा पुं० १. हाल। दशा। २. समाचार।

हुलहुल–संज्ञा पुं० एक छोटा पौधा।
हुलास–संज्ञा पुं० आनंद की उमंग।
हुलिया–संज्ञा पुं० शकल। आकृति।
हुल्लड़–संज्ञा पुं० शोरगुल। हल्ला।
हुश्–अव्य० अनुचित बात मुँह से निकालने पर रोकने का शब्द।
हुसियार‡–वि० दे० "होशियार"।
हुसैन–संज्ञा पुं० मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान में मारे गए थे।
हुस्न–संज्ञा पुं० सौंदर्य। लावण्य।
हूँ–अव्य० स्वीकार-सूचक शब्द।
अव्य० दे० "हू"।
सर्व० वर्त्तमान-कालिक क्रिया "है" का उत्तम पुरुष एकवचन का रूप।
हूँकना–क्रि० अ० गाय का दुःख सूचित करने के लिये धीरे धीरे बोलना।
हूँठा–संज्ञा पुं० साढ़े तीन का पहाड़ा।
हू‡–अव्य० एक अतिरेक-बोधक शब्द। भी।
हूक–संज्ञा स्त्री० १. छाती या कलेजे का दर्द। २. कसक।
हूकना–क्रि० अ० सालना। दर्द करना।
हूटना‡–क्रि० अ० मुड़ना। पीठ फेरना।
हूठा–संज्ञा पुं० अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा।
हूण–संज्ञा पुं० एक प्राचीन मंगोल जाति जो प्रबल होकर एशिया और योरप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई फैली थी।
हू-बहू–वि० ज्यों का त्यों। ठीक वैसा ही।
हूर–संज्ञा स्त्री० मुसलमानों के स्वर्ग की अप्सरा।
हूल–संज्ञा स्त्री० भाले, डंडे आदि की नोक को ज़ोर से ठेलना अथवा भोंकना।
हूलना–क्रि० स० लाठी, भाले आदि की नोक को ज़ोर से ठेलना या घुसाना।
हूला–संज्ञा पुं० हूलने की क्रिया या भाव।
हूश–वि० असभ्य। उजड्ड।
हूह–संज्ञा स्त्री० हुंकार। कोलाहल। युद्धनाद।
हूहू–संज्ञा पुं० अग्नि के जलने का शब्द। धायँ धायँ।
हृत–वि० १. पहुँचाया हुआ। २. हरण किया हुआ।
हृति–संज्ञा स्त्री० ले जाना। हरण।
हृत्कंप–संज्ञा पुं० हृदय की कँपकँपी।
हृत्पिंड–संज्ञा पुं० कलेजा।
हृद्–संज्ञा पुं० हृदय।
हृदयंगम–वि० मन में बैठा हुआ।
हृदय–संज्ञा पुं० १. दिल। कलेजा। २. अंतःकरण।
हृदयग्राही–संज्ञा पुं० [स्त्री० हृदयग्राहिणी] मन को मोहित करनेवाला।
हृदयनिकेत–संज्ञा पुं० कामदेव।
हृदयवेधी–वि० [स्त्री० हृदयवेधिनी] अत्यंत शोक करनेवाला।
हृदयस्पर्शी–वि० [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी] हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।
हृदयहारी–वि० [स्त्री० हृदयहारिणी] मन को लुभानेवाला।
हृदयेश, हृदयेश्वर–संज्ञा पुं० [स्त्री० हृदयेश्वरी] १. प्यारा। २. पति।
हृद्गत–वि० हृदय का। आंतरिक।
हृद्य–वि० १. हृदय का। २. सुंदर।

हवालदार–संज्ञा पुं० दे० "हवलदार"।
हवाला–संज्ञा पुं० १. प्रमाण का उल्लेख। २. मिसाल। ३. ज़िम्मेदारी।
हवालात–संज्ञा स्त्री० पहरे के भीतर रखे जाने की क्रिया या भाव। नज़रबंदी।
हवास–संज्ञा पुं० चेतना। संज्ञा। होश।
हवि–संज्ञा पुं० वह द्रव्य जिसकी आहुति दी जाय। हवन की वस्तु।
हविष्य–वि० हवन करने योग्य। संज्ञा पुं० वह वस्तु जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय। बलि। हवि।
हविष्यान्न–संज्ञा पुं० वह आहार जो यज्ञ के समय किया जाय।
हवेली–संज्ञा स्त्री० पक्का बड़ा मकान। प्रासाद।
हव्य–संज्ञा पुं० हवन की सामग्री।
हशमत–संज्ञा स्त्री० १. गौरव। बड़ाई। २. वैभव।
हसन–संज्ञा पुं० १. हँसना। २. परिहास। दिल्लगी। ३. विनोद।
हसरत–संज्ञा स्त्री० १. रंज। अफ़सोस। २. हार्दिक कामना।
हसित–वि० १. जिस पर लोग हँसते हों। २. जो हँसा हो। संज्ञा पुं० १. हँसना। २. हँसी-ठट्ठा।
हसीन–वि० सुंदर। खूबसूरत।
हस्त–संज्ञा पुं० १. हाथ। २. एक नाप जो २४ अंगुल की होती है। ३. एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है।
हस्तकौशल–संज्ञा पुं० किसी काम में हाथ चलाने की निपुणता।
हस्तक्रिया–संज्ञा स्त्री० हाथ का काम। दस्तकारी।
हस्तक्षेप–संज्ञा पुं० किसी होते हुए काम में कुछ कार्रवाई कर बैठना। दखल देना।
हस्तगत–वि० हाथ में आया हुआ। प्राप्त। हासिल।
हस्तत्राण–संज्ञा पुं० अस्त्रों के आघात से रक्षा के लिये हाथ में पहना जानेवाला दस्ताना।
हस्तरेखा–संज्ञा स्त्री० हथेली में पड़ी हुई लकीरें जिनके अनुसार सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार किया जाता है।
हस्तलाघव–संज्ञा पुं० हाथ की फ़ुरती। हाथ की सफ़ाई।
हस्तलिपि–संज्ञा स्त्री० हाथ की लिखावट।
हस्ताक्षर–संज्ञा पुं० अपना नाम जो किसी लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा जाय। दस्तख़त।
हस्तामलक–संज्ञा पुं० वह चीज़ या बात जिसका हर एक पहलू साफ़ साफ़ ज़ाहिर हो गया हो।
हस्ति–संज्ञा पुं० दे० "हस्ती"।
हस्तिनापुर–संज्ञा पुं० कौरवों की राजधानी जो वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूरी पर थी।
हस्तिनी–संज्ञा स्त्री० १. मादा हाथी। २. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्री के चार भेदों में से सबसे निकृष्ट भेद।
हस्ती–संज्ञा पुं० हाथी। संज्ञा स्त्री० अस्तित्व।
हस्ते–अव्य० मारफ़त।
हहर–संज्ञा स्त्री० १. थरथराहट। कँपकँपी। २. भय। डर।

हृषीकेश–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।
हृष्ट–वि० अत्यंत प्रसन्न।
हृष्ट-पुष्ट–वि० मोटा-ताज़ा। तगड़ा।
हैं हैं–संज्ञा पुं० गिड़गिड़ाने का शब्द।
हेंगा†–संज्ञा पुं० जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। पहटा।
हे–अव्य० संबोधन का शब्द।
†क्रि० अ० ब्रजभाषा के 'हो' (=था) का बहुवचन। थे।
हेकड़–वि० १. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताज़ा। २. ज़बरदस्त।
हेकड़ी–संज्ञा स्त्री० १. अक्खड़पन। २. ज़बरदस्ती।
हेच–वि० तुच्छ। नाचीज़।
हेठा–वि० १. नीचा। २. घटकर।
हेठापन–संज्ञा पुं० तुच्छता।
हेठी–संज्ञा स्त्री० प्रतिष्ठा में कमी। मानहानि।
हेतु–संज्ञा पुं० कारक या उत्पादक विषय। कारण।
हेतुवाद–संज्ञा पुं० १. तर्कविद्या। २. नास्तिकता।
हेतुशास्त्र–संज्ञा पुं० तर्कशास्त्र।
हेतुहेतुमद्भाव–संज्ञा पुं० कार्य्य-कारण भाव।
हेतुहेतुमद्भूत काल–संज्ञा पुं० क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो बातों का न होना सूचित होता है जिनमें दूसरी पहली पर निर्भर होती है। (व्या०)
हेत्वाभास–संज्ञा पुं० किसी बात को सिद्ध करने के लिये उपस्थित किया हुआ वह कारण जो कारण सा प्रतीत होता हुआ भी ठीक न हो।
हेमंत–संज्ञा पुं० छः ऋतुओं में से एक। अगहन और पूस।
हेम–संज्ञा पुं० १. हिम। २. सोना।
हेमकूट–संज्ञा पुं० हिमालय के उत्तर का एक पर्वत। (पुराण)
हेमगिरि–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
हेमचंद्र–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध जैन आचार्य्य जो ईसवी सन् १०८६ और ११७३ के बीच हुए थे और गुजरात के राजा कुमारपाल के गुरु थे। इन्होंने व्याकरण और कोश के कई ग्रंथ लिखे हैं।
हेमपर्वत–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
हेमाद्रि–संज्ञा पुं० सुमेरु पर्वत।
हेय–वि० १. त्याज्य। २. निकृष्ट।
हेरंब–संज्ञा पुं० गणेश।
हेर†⊙–संज्ञा स्त्री० ढूँढ़। तलाश।
हेरना†⊙–क्रि० स० १. ढूँढ़ना। २. देखना। ताकना।
हेरना-फेरना–क्रि० स० १. इधर का उधर करना। २. बदलना।
हेर-फेर–संज्ञा पुं० १. घुमाव। २. अदल-बदल।
हेरवाना†–क्रि० स० गँवाना।
क्रि० स० ढुँढ़वाना।
हेराना†–क्रि० अ० खो जाना।
क्रि० स० तलाश करना।
हेराफेरी–संज्ञा स्त्री० हेर-फेर। अदल-बदल।
हेलना⊙–क्रि० अ० १. क्रीड़ा करना। २. हँसी-ठट्ठा करना।
†क्रि० अ० प्रवेश करना। घुसना।
हेल-मेल–संज्ञा पुं० मिलने जुलने आदि का संबंध। मित्रता।
हेला–संज्ञा स्त्री० १. तुच्छ समझना। तिरस्कार। २. क्रीड़ा। ३. प्रेम की

हहरना–क्रि० अ० १. काँपना। २. डर के मारे काँप उठना। दहलना। ३. डाह करना। सिहाना।
हहराना–क्रि० अ० काँपना। थरथराना।
क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।
हहा–संज्ञा स्त्री० हँसने का शब्द।
हाँ–अव्य० १. स्वीकृति-सूचक शब्द। २. एक शब्द जिसके द्वारा यह प्रकट किया जाता है कि वह बात जो पूछी जा रही है, ठीक है।
हाँक–संज्ञा स्त्री० १. किसी को बुलाने के लिये ज़ोर से निकाला हुआ शब्द। २. ललकार। ३. सहायता के लिये की हुई पुकार। दुहाई।
हाँकना–क्रि० स० १. बढ़ बढ़कर बोलना। २. मुँह से बोलकर या चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे बढ़ाना। ३. जानवरों को चलाना। ४. मारकर या बोलकर चौपायों को भगाना। ५. पंखे से हवा पहुँचाना।
हाँगी–संज्ञा स्त्री० हामी। स्वीकृति।
हाँड़ी–संज्ञा स्त्री० १. मिट्टी का मँझोला बरतन जो बटलोई के आकार का हो। हँड़िया। २. इसी आकार का शीशे का वह पात्र जो सजावट के लिये कमरे में टाँगा जाता है।
हाँपना, हाँफना–क्रि० अ० कड़ी मिहनत करने, दौड़ने या रोग आदि के कारण ज़ोर ज़ोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना। तीव्र श्वास लेना।
हाँफा–संज्ञा पुं० हाँफने की क्रिया या भाव। तीव्र और क्षिप्र श्वास।
हाँसना‡–क्रि० अ० दे० "हँसना"।
हाँसल–संज्ञा पुं० वह घोड़ा जिसका रंग मेहँदी सा लाल और चारों पैर कुछ काले हों। कुम्मैत हिनाई।
हाँसी–संज्ञा स्त्री० १. हँसी। हँसने की क्रिया या भाव। २. परिहास। हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी। मज़ाक़। ३. उपहास। निंदा।
हाँ हाँ–अव्य० निषेध या वारण करने का शब्द।
हा–अव्य० १. शोक या दुःखसूचक शब्द। २. आश्चर्य या आह्लादसूचक शब्द। ३. भयसूचक शब्द।
हाइ‡–अव्य० दे० "हाय"।
हाऊ–संज्ञा पुं० हौवा। भकाऊँ।
हाकिम–संज्ञा पुं० १. हुकूमत करनेवाला। शासक। २. बड़ा अफ़सर।
हाकिमी–संज्ञा स्त्री० हाकिम का काम। हुकूमत। प्रभुत्व।
वि० हाकिम का। हाकिम-संबंधी।
हाजत–संज्ञा स्त्री० १. ज़रूरत। २. पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।
हाज़मा–संज्ञा पुं० भोजन पचने की क्रिया।
हाज़िम–वि० पाचक।
हाज़िर–वि० १. सम्मुख। २. मौजूद। विद्यमान।
हाज़िर-जवाब–वि० बात का चटपट अच्छा जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न-मति।
हाजी–संज्ञा पुं० वह जो हज कर आया हो। (मुसल०)
हाट–संज्ञा स्त्री० बाज़ार।
हाटक–संज्ञा पुं० सोना। स्वर्ण।
हाटकपुर–संज्ञा पुं० लंका।
हाड़‡–संज्ञा पुं० हड्डी। अस्थि।
हाता–संज्ञा पुं० १. घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २. देश-विभाग।

क्रीड़ा। केलि।
हेली॰–अव्य॰ हे सखी!
संज्ञा स्त्री॰ सहेली। सखी।
हेवंत॰–संज्ञा पुं॰ दे॰ "हेमंत"।
हैं–क्रि॰ अ॰ सत्तार्थक क्रिया 'होना' के वर्तमान रूप "है" का बहुवचन।
है–क्रि॰ अ॰ हिं॰ क्रि॰ 'होना' का वर्तमानकालिक एकवचन रूप।
†॰ संज्ञा पुं॰ दे॰ "हय"।
हैकड़–वि॰ दे॰ "हेकड़"।
हैज़ा–संज्ञा पुं॰ दस्त और के की बीमारी। विशूचिका।
हैफ़–अव्य॰ अफ़सोस। हाय।
हैयर॰–संज्ञा पुं॰ अच्छा घोड़ा।
हैम–वि॰ सोने का। स्वर्णमय।
वि॰ हिम-संबंधी।
हैमवत–वि॰ [स्त्री॰ हैमवती] हिमालय का।
संज्ञा पुं॰ हिमालय का निवासी।
हैमवती–संज्ञा स्त्री॰ १. पार्वती। २. गंगा।
हैरत–संज्ञा स्त्री॰ आश्चर्य। अचंभा।
हैरान–वि॰ [संज्ञा हैरानी] १. आश्चर्य से स्तब्ध। २. परेशान।
हैवान–संज्ञा पुं॰ १. पशु। जानवर। २. गँवार।
हैवानी–वि॰ पशु के करने के योग्य।
हैसियत–संज्ञा स्त्री॰ योग्यता। सामर्थ्य।
हैहय–संज्ञा पुं॰ एक क्षत्रियवंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है और कलचुरि के नाम से प्रसिद्ध है।
है है–अव्य॰ शोक या दुःख-सूचक शब्द।
हों–क्रि॰ अ॰ सत्तार्थक क्रिया 'होना' का बहुवचन संभाव्य-काल का रूप।
होंठ–संज्ञा पुं॰ मुख-विवर का उभरा हुआ किनारा जिससे दाँत ढँके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।
हो–संज्ञा पुं॰ पुकारने का शब्द या संबोधन।
क्रि॰ ब्रज की वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप। था।
होड़–संज्ञा स्त्री॰ १. शर्त। बाज़ी। २. एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न।
होड़ाबादी–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "होड़ाहोड़ी"।
होड़ाहोड़ी–संज्ञा स्त्री॰ लाग-डाँट।
होतब, होतव्य–संज्ञा पुं॰ दे॰ "होनहार"।
होतव्यता–संज्ञा स्त्री॰ दे॰ "होनहार"।
होता–संज्ञा पुं॰ [स्त्री॰ होत्री] यज्ञ में आहुति देनेवाला।
होनहार–वि॰ जिसके बढ़ने या श्रेष्ठ होने की आशा हो।
संज्ञा पुं॰ १. वह बात जो होने को हो। २. वह बात जो अवश्य हो। होनी।
होना–क्रि॰ अ॰ प्रधान सत्तार्थक क्रिया। अस्तित्व रखना।
होनी–संज्ञा स्त्री॰ १. उत्पत्ति। २. होनेवाली बात या घटना। भावी।
होम–संज्ञा पुं॰ देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृत, जौ आदि डालना। हवन।
होमकुंड–संज्ञा पुं॰ होम की अग्नि रखने का गड्ढा।
होमना–क्रि॰ स॰ १. देवता के उद्देश्य से अग्नि में डालना। हवन करना। २. उत्सर्ग करना।
होरसा–संज्ञा पुं॰ पत्थर की गोल छोटी चौकी जिस पर चंदन घिसते

हातिम-संज्ञा पुं० १. निपुण। चतुर। २. किसी काम में पक्का आदमी। उस्ताद। ३. एक प्राचीन अरब सरदार जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार प्रसिद्ध है।

हाथ-संज्ञा पुं० १. बाहु से लेकर पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पंजा। कर। हस्त। २. लंबाई की एक नाप जो मनुष्य की कुहनी से लेकर पंजे के छोर तक की मानी जाती है। ३. ताश, जूए आदि के खेल में एक एक आदमी के खेलने की बारी। दाँव।

हाथपान-संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथफूल-संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा- संज्ञा पुं० मुठिया।

हाथाजोड़ी-संज्ञा स्त्री० एक पौधा जो औषध के काम में आता है।

हाथापाई, हाथाबाँही-संज्ञा स्त्री० वह लड़ाई जिसमें हाथ-पैर चलाए जायँ। भिड़ंत। धौल-धप्पड़।

हाथी-संज्ञा पुं० एक बहुत बड़ा स्तन-पायी चौपाया जो सूँड़ के रूप में बढ़ी हुई नाक के कारण और सब जान-वरों से विलक्षण दिखाई पड़ता है।

हाथीखाना-संज्ञा पुं० वह घर जिसमें हाथी रखा जाय। फीलखाना।

हाथीदाँत-संज्ञा पुं० हाथी के मुँह के दोनों ओरों पर निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते हैं।

हाथीनाल-संज्ञा स्त्री० हाथी पर चलने-वाली तोप। हथनाल। गजनाल।

हाथीवान-संज्ञा पुं० महावत। फील-वान।

हादसा-संज्ञा पुं० दुर्घटना।

हान*†-संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

हानि-संज्ञा स्त्री० १. नाश। २. नुक-सान। क्षति। घाटा।

हानिकर-वि० १. हानि करनेवाला। जिससे नुकसान पहुँचे। २. बुरा परिणाम उपस्थित करनेवाला।

हानिकारक-वि० दे० "हानिकर"।

हानिकारी-वि० दे० "हानिकर"।

हाफ़िज़-संज्ञा पुं० वह धार्म्मिक मुसल-मान जिसे क़ुरान कंठ हो।

हामी-संज्ञा स्त्री० "हाँ" करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति।

हाय-अव्य० शोक, दुःख या कष्ट सूचित करनेवाला शब्द।
संज्ञा स्त्री० कष्ट। पीड़ा। दुःख।

हाय हाय-अव्य० शोक, दुःख या शारीरिक कष्टसूचक शब्द। दे० "हाय"।
संज्ञा स्त्री० १. कष्ट। दुःख। शोक। २. घबराहट।

हार-संज्ञा स्त्री० लड़ाई, खेल, बाज़ी या चढ़ा-ऊपरी में जोड़ या प्रतिद्वंद्वी के सामने न जीत सकने का भाव। पराजय। शिकस्त।
संज्ञा पुं० सोने, चाँदी या मोतियों आदि की माला जो गले में पहनी जाय।
प्रत्य० दे० "हारा"।

हारक-संज्ञा पुं० १. हरण करनेवाला। २. मनोहर। सुंदर। ३. चोर। लुटेरा।

हारद*-वि० दे० "हार्दिक"।

हारना-क्रि० अ० १. प्रतिद्वंद्विता आदि में शत्रु के सामने विफल होना। पराजित होना। शिकस्त

या रोटी येलते हैं।

होरहा–संज्ञा पुं० चने का पौधा।

होरा–संज्ञा पुं० दे० "होला"।
संज्ञा स्त्री० एक अहोरात्र का २४वाँ भाग। घंटा।

होरिल–संज्ञा पुं० नवजात बालक।

होरिहार[॰]–संज्ञा पुं० होली खेलने-वाला।

होरी–संज्ञा स्त्री० दे० "होली"।

होला–संज्ञा स्त्री० होली का त्योहार।
संज्ञा पुं० सिखों की होली जो होली के दूसरे दिन होती है।

होलाष्टक–संज्ञा पुं० होली के पहले के आठ दिन जिनमें विवाह-कृत्य नहीं किया जाता।

होलिका–संज्ञा स्त्री० होली का त्योहार।

होली–संज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार जो फाल्गुन के अंत में मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालते हैं और होलिकादहन करते हैं।

होश–संज्ञा पुं० बोध या ज्ञान की वृत्ति। चेतना। चेत।

होशियार–वि० १. चतुर। समझदार। २. कुशल।

होशियारी–संज्ञा स्त्री० १. समझदारी। २. निपुणता। ३. सावधानी।

होस[॰]–संज्ञा पुं० दे० "होश" व "हौस"।

हौं[॰]–सर्व० व्रजभाषा का उत्तम पुरुष एकवचन सर्वनाम। मैं।
क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप। हूँ।

हौंस–संज्ञा स्त्री० दे० "हौस"।

हौ[॰]–क्रि० अ० १. होना क्रिया का मध्यम पुरुष एकवचन का वर्तमान-कालिक रूप। हो। २. होना का भूत काल। था।

हौआ–संज्ञा पुं० लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ।
संज्ञा स्त्री० दे० "हौवा"।

हौज़–संज्ञा पुं० पानी जमा रहने का चहबच्चा।

हौद–संज्ञा पुं० दे० "हौज़"।

हौदा–संज्ञा पुं० हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन।

हौरा[॰]–संज्ञा पुं० शोर। हल्ला। कोलाहल।

हौल–संज्ञा पुं० डर। भय।

हौलदिल–संज्ञा पुं० १. कलेजा धड़कना। २. दिल धड़कने का रोग।
वि० जिसका दिल धड़कता हो।

हौलदिला–वि० डरपोक।

हौली–संज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी।

हौलू–वि० जिसके मन में जल्दी हौल या भय उत्पन्न हो।

हौले–क्रि० वि० १. धीरे। आहिस्ता। २. हलके हाथ से।

हौवा–संज्ञा स्त्री० पैगंबरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री जो मनुष्य-जाति की आदि माता मानी जाती है।
संज्ञा पुं० दे० "हौआ"।

हौस–संज्ञा स्त्री० १. चाह। लालसा। कामना। २. उमंग।

हौसला–संज्ञा पुं० किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा। उत्कंठा।

ह्यां[॰]–अव्य० दे० "यहाँ"।

खाना। २. थक जाना।

क्रि० स० लड़ाई, बाज़ी आदि को सफलता के साथ न पूरा करना।

हारसिंगार–संज्ञा पुं० दे० "परजाता."

हारा–प्रत्य० एक पुराना प्रत्यय जो किसी शब्द के आगे लगाकर कर्त्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है। वाला।

हारिल–संज्ञा पुं० एक प्रकार की चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में कोई लकड़ी या तिनका लिए रहती है।

हारी–वि० १. हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला। ३. चुरानेवाला।

हारीत–संज्ञा पुं० १. चोर। लुटेरा। २. लुटेरापन। ३. कण्व ऋषि के एक शिष्य।

हार्दिक–वि० १. हृदय संबंधी। २. सच्चा।

हाल–संज्ञा पुं० १. दशा। २. संवाद। समाचार। ३. ब्योरा। कैफ़ियत।

वि० वर्त्तमान।

अव्य० १. इस समय। अभी। २. तुरंत।

संज्ञा स्त्री० १. हिलने की क्रिया या भाव। कंप। २. लोहे का वह बंद जो पहिए के चारों ओर घेरे में चढ़ाया जाता है।

हालगोला–संज्ञा पुं० गेंद।

हालडोल–संज्ञा पुं० हिलने की क्रिया या भाव। गति।

हालत–संज्ञा स्त्री० दशा

हालना–क्रि० अ० हिलना। डोलना।

हालांकि–अव्य० यद्यपि। गो कि।

हालाहल–संज्ञा पुं० दे० "हलाहल"।

हाली–अव्य० जल्दी। शीघ्र।

हाव–संज्ञा पुं० संयोग समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो पुरुष को आकर्षित करती हैं।

हावभाव–संज्ञा पुं० स्त्रियों की वह मनोहर चेष्टा जिससे पुरुषों का चित्त आकर्षित होता है। नाज़-नखरा।

हाशिया–संज्ञा पुं० १. किनारा। कोर। पाढ़। २. गोट। मगज़ी। ३. हाशिए या किनारे पर का लेख। नोट।

हास–संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. दिल्लगी।

हासिल–वि० प्राप्त। पाया हुआ। मिला हुआ।

संज्ञा पुं० १. गणित करने में किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेष भाग के कहीं रखे जाने पर बच रहे। २. उपज। ३. लाभ। ४. गणित की क्रिया का फल।

हासी–वि० हँसनेवाला।

हास्य–वि० १. जिस पर लोग हँसें। २. उपहास के योग्य।

संज्ञा पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. नौ स्थायी भावों और रसों में से एक। ३. निंदापूर्ण हँसी। ४. दिल्लगी। मज़ाक़।

हास्यास्पद–संज्ञा पुं० वह जिसके बेढंगेपन पर लोग हँसी उड़ावें।

हा हंत–अव्य० अत्यंत शोकसूचक शब्द।

हा हा–संज्ञा पुं० १. हँसने का शब्द। २. बहुत विनती की पुकार। दुहाई।

हाहाकार–संज्ञा पुं० घबराहट की चिल्लाहट। कुहराम।

हाहू–संज्ञा पुं० हल्लागुल्ला।

ह्योरू–संज्ञा पुं० दे० "हियो","हिया"।

ह्रद–संज्ञा पुं० बड़ा ताल। झील।

ह्रदिनी–संज्ञा स्त्री० नदी।

ह्रस्व–वि० १. छोटा। २. कम। थोड़ा।

संज्ञा पुं० दीर्घ की अपेक्षा कम खींच-कर बोला जानेवाला स्वर।

ह्रस्वता–संज्ञा स्त्री० छोटाई। लघुता।

ह्रास–संज्ञा पुं० १. कमी। घटती। २. शक्ति, वैभव, गुण आदि की कमी।

ह्री–संज्ञा स्त्री० १. लज्जा। २. दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।

हाहूबेर-संज्ञा पुं० जंगली बेर। झड़-बेरी।
हिंकरना-क्रि० अ० दे० "हिन-हिनाना"।
हिंकार-संज्ञा पुं० गाय के रँभाने का शब्द।
हिंगलाज-संज्ञा स्त्री० दुर्गा या देवी की एक मूर्त्ति जो सिंध में है।
हिंगु-संज्ञा पुं० हींग।
हिंछा०‡-संज्ञा स्त्री० दे० "इच्छा"।
हिंडोरा-संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।
हिंडोल-संज्ञा पुं० १. हिंडोला। २. एक प्रकार का राग।
हिंडोलना‡-संज्ञा पुं० दे० "हिंडोला"।
हिंडोला-संज्ञा पुं० १. पालना। २. झूला।
हिंद-संज्ञा पुं० हिंदोस्तान। भारतवर्ष।
हिंदवाना‡-संज्ञा पुं० तरबूज़। कलींदा।
हिंदवी-संज्ञा स्त्री० हिंदी भाषा।
हिंदी-वि० हिंदुस्तान के उत्तरी या प्रधान भाग की भाषा जिसके अंतर्गत कई बोलियाँ हैं और जो बहुत से अंशों में सारे देश की एक सामान्य भाषा मानी जाती है।
हिंदुस्तान-संज्ञा पुं० भारतवर्ष।
हिंदुस्तानी-वि० हिंदुस्तान का। संज्ञा पुं० हिंदुस्तान का निवासी। भारतवासी।
संज्ञा स्त्री० हिंदुस्तान की भाषा।
हिंदुस्थान-संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हिंदू-संज्ञा पुं० भारतवर्ष में बसनेवाली आर्य्य जाति के वंशज।
हिंदूपन-संज्ञा पुं० हिंदू होने का भाव या गुण।
हिंदोस्तान-संज्ञा पुं० दे० "हिंदुस्तान"।
हियाँ‡०-अव्य० दे० "यहाँ"।
हिंव-संज्ञा पुं० दे० "हिम"।
हिंवार-संज्ञा पुं० हिम। बर्फ़। पाला।
हिंस-संज्ञा स्त्री० घोड़ों के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट।
हिंसक-संज्ञा पुं० १. हिंसा करनेवाला। हत्यारा। २. जीवों को मारनेवाला पशु।
हिंसा-संज्ञा स्त्री० प्राण लेना या कष्ट देना।
हिंसात्मक-वि० जिसमें हिंसा हो।
हिंसालु-वि० हिंसा करनेवाला।
हिंस्र-वि० ख़ूँख़ार।
हिअ, हिआ-संज्ञा पुं० दे० "हृदय"।
हिआव-संज्ञा पुं० दे० "हियाव"।
हिकमत-संज्ञा स्त्री० १. युक्ति। तदबीर। उपाय। २. चतुराई का ढंग।
हिकमती-वि० १. कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। कार्य्य-पटु। २. किफ़ायती।
हिकायत-संज्ञा स्त्री० कथा। कहानी।
हिक्का-संज्ञा स्त्री० १. हिचकी। २. बहुत हिचकी आने का रोग।
हिचक-संज्ञा स्त्री० किसी काम के करने में वह रुकावट जो मन में मालूम हो। आगा-पीछा।
हिचकना-क्रि० अ० १. हिचकी लेना। २. किसी काम के करने में कुछ अनिच्छा, भय या संकोच के कारण प्रवृत्त न होना। आगा-पीछा करना।
हिचकिचाना-क्रि० अ० दे० "हिचकना"।

हिचकी–संज्ञा स्त्री० १. पेट की वायु का झोंके के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना। २. रह रहकर सिसकने का शब्द।
हिजड़ा–संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा"।
हिजरी–संज्ञा पुं० मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख़ (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०)।
हिज्जे–संज्ञा पुं० किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना।
हिज्र–संज्ञा पुं० जुदाई। वियोग।
हिडिंब–संज्ञा पुं० एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था।
हिडिंबा–संज्ञा स्त्री० हिडिंब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।
हित–वि० भलाई करने या चाहनेवाला।
संज्ञा पुं० १. लाभ। २. कल्याण। ३. प्रेम।
अव्य० (किसी के) लाभ के हेतु।
हितकर, हितकारक–संज्ञा पुं० भलाई करनेवाला।
हितकारी–वि० दे० "हितकर"।
हितचिंतक–संज्ञा पुं० भला चाहनेवाला। ख़ैरख़ाह।
हितचिंतन–संज्ञा पुं० किसी की भलाई की कामना या इच्छा।
हितवादी–वि० हित की बात कहनेवाला।
हिताई–संज्ञा स्त्री० नाता। रिश्ता।
हितानाः–क्रि० अ० १. हितकारी होना। २. प्रेमयुक्त होना। ३. प्यारा या अच्छा लगना।
हिताहित–संज्ञा पुं० भलाई-बुराई। लाभ-हानि। नफ़ा-नुक़सान।
हिती, हितू–संज्ञा पुं० १. भलाई करने या चाहनेवाला। ख़ैरख़ाह। २. संबंधी। ३. स्नेही।
हितैषिता–संज्ञा स्त्री० भलाई चाहने की वृत्ति।
हितैषी–वि० भला चाहनेवाला।
हिदायत–संज्ञा स्त्री० अधिकारी की शिक्षा। आदेश। निर्देश।
हिनहिनाना–क्रि० अ० घोड़े का बोलना। हींसना।
हिना–संज्ञा स्त्री० मेंहदी।
हिफ़ाज़त–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे। रक्षा।
हिमंचल‡ः–संज्ञा पुं० दे० "हिमाचल"।
हिमंत‡ः–संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"।
हिम–संज्ञा पुं० १. पाला। बर्फ़। २. जाड़ा। ३. जाड़े की ऋतु।
वि० ठंढा। सर्द।
हिम-उपल–संज्ञा पुं० ओला। पत्थर।
हिमकण–संज्ञा पुं० बर्फ़ या पाले के महीन टुकड़े।
हिमकर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
हिमकिरण–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
हिमयानी–संज्ञा स्त्री० रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।
हिमवत्–संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्"।
हिमवान्–वि० बर्फ़वाला। जिसमें बर्फ़ या पाला हो।

संज्ञा पुं० १. हिमालय। २. कैलाश पर्वत।

हिमांशु–संज्ञा पुं० चंद्रमा।

हिमाकृत–संज्ञा स्त्री० १. बेवकूफी। २ दुस्साहस।

हिमाचल–संज्ञा पुं० हिमालय।

हिमाद्रि–संज्ञा पुं० हिमालय पहाड़।

हिमामदस्ता–संज्ञा पुं० खरल और बट्टा।

हिमायत–संज्ञा स्त्री० पक्षपात।

हिमायती–वि० १. समर्थन या मंडन करनेवाला। २. मददगार।

हिमालय–संज्ञा पुं० भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर का पहाड़ जो संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा है।

हिम्मत–संज्ञा स्त्री० कठिन या कष्ट-साध्य कर्म करने की मानसिक दृढ़ता। साहस।

हिम्मती–वि० साहसी।

हिय–संज्ञा पुं० हृदय। मन।

हियरा–संज्ञा पुं० हृदय।

हियाँ–अव्य० दे० "यहाँ"।

हिया–संज्ञा पुं० हृदय। मन।

हियाव–संज्ञा पुं० साहस। हिम्मत।

हिरकना॥–क्रि० अ० पास होना। निकट जाना।

हिरणॐ–संज्ञा पुं० दे० "हिरन"।

हिरण्य–संज्ञा पुं० सोना। स्वर्ण।

हिरण्यकशिपु–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद का पिता था। भगवान् ने नृसिंहावतार धारण करके इसे मारा था।

हिरण्यकश्यप–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हिरण्यगर्भ–संज्ञा पुं० १. वह ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २. विष्णु।

हिरण्यनाभ–संज्ञा पुं० १. विष्णु। २. मैनाक पर्वत।

हिरण्यरेता–संज्ञा पुं० १. अग्नि। २. सूर्य। ३ शिव।

हिरण्याक्ष–संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्यकशिपु का भाई था।

हिरन–संज्ञा पुं० हरिन। मृग।

हिरनाकुस–संज्ञा पुं० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हिरफत–संज्ञा स्त्री० १. हाथ की कारीगरी। २ चालबाज़ी। धूर्तता।

हिरमज़ी–संज्ञा स्त्री० लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी।

हिरसॐ–संज्ञा स्त्री० दे० "हिर्स"।

हिराना॥–क्रि० अ० १. खो जाना। २. न रह जाना।

क्रि० स० भूल जाना। ध्यान में न रहना।

हिरासत–संज्ञा स्त्री० १. पहरा। चौकी। २. कैद। नज़रबंदी।

हिर्स–संज्ञा स्त्री० १. लालच। तृष्णा। लोभ। २. स्पर्धा।

हिलकी॥–संज्ञा स्त्री० हिचकी।

हिलकोर, हिलकोरा–संज्ञा पुं० हिलोर। लहर।

हिलग–संज्ञा स्त्री० लगाव। संबंध।

हिलगना–क्रि० अ० १. अटकना। २. फँसना। ३. पास होना। सटना।

हिलगाना–क्रि० स० १. अटकाना। २. फँसाना।

हिलना–क्रि० अ० १. चलायमान होना। २. काँपना। ३. परिचित और अनुरक्त होना।

हिचकी–संज्ञा स्त्री० १. पेट की वायु का झोंके के साथ ऊपर चढ़कर कंठ में धक्का देते हुए निकलना। २. रह रहकर सिसकने का शब्द।
हिजड़ा–संज्ञा पुं० दे० "हीजड़ा"।
हिजरी–संज्ञा पुं० मुसलमानी सन् या संवत् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०)।
हिज्जे–संज्ञा पुं० किसी शब्द में आए हुए अक्षरों को मात्राओं सहित कहना।
हिज्र–संज्ञा पुं० जुदाई। वियोग।
हिडिंब–संज्ञा पुं० एक राक्षस जिसे भीम ने पांडवों के वनवास के समय मारा था।
हिडिंबा–संज्ञा स्त्री० हिडिंब राक्षस की बहिन जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।
हित–वि० भलाई करने या चाहनेवाला।
संज्ञा पुं० १. लाभ। २. कल्याण। ३. प्रेम।
अव्य० (किसी के) लाभ के हेतु।
हितकर, हितकारक–संज्ञा पुं० भलाई करनेवाला।
हितकारी–वि० दे० "हितकर"।
हितचिंतक–संज्ञा पुं० भला चाहनेवाला। खैरख्वाह।
हितचिंतन–संज्ञा पुं० किसी की भलाई की कामना या इच्छा।
हितवादी–वि० हित की बात कहनेवाला।
हिताई–संज्ञा स्त्री० नाता। रिश्ता।
हिताना–क्रि० अ० १. हितकारी होना। २. प्रेमयुक्त होना। ३. प्यारा या अच्छा लगना।
हिताहित–संज्ञा पुं० भलाई-बुराई। लाभ-हानि। नफ़ा-नुकसान।
हिती, हितू–संज्ञा पुं० १. भलाई करने या चाहनेवाला। खैरख्वाह। २. संबंधी। ३. स्नेही।
हितैपिता–संज्ञा स्त्री० भलाई चाहने की वृत्ति।
हितैषी–वि० भला चाहनेवाला।
हिदायत–संज्ञा स्त्री० अधिकारी की शिक्षा। आदेश। निर्देश।
हिनहिनाना–क्रि० अ० घोड़े का बोलना। हींसना।
हिना–संज्ञा स्त्री० मेंहदी।
हिफ़ाज़त–संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को इस प्रकार रखना कि वह नष्ट न होने पावे। रक्षा।
हिमंचल‡–संज्ञा पुं० दे० "हिमाचल"।
हिमंत‡–संज्ञा पुं० दे० "हेमंत"।
हिम–संज्ञा पुं० १. पाला। बर्फ। २. जाड़ा। ३. जाड़े की ऋतु।
वि० ठंढा। सर्द।
हिम-उपल–संज्ञा पुं० ओला। पत्थर।
हिमकण–संज्ञा पुं० बर्फ या पाले के महीन टुकड़े।
हिमकर–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
हिमकिरण–संज्ञा पुं० चंद्रमा।
हिमयानी–संज्ञा स्त्री० रुपया पैसा रखने की जालीदार लंबी थैली जो कमर में बाँधी जाती है।
हिमवत्–संज्ञा पुं० दे० "हिमवान्"।
हिमवान्–वि० बर्फवाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।